Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INDIA TODAY

1990 Apr-Jul

G K V LIB
HARDWAR

078595

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AT-1312

078 595

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30 अप्रैल 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

1990

078595

कश्मीर

वादी में विनाश

घाटी में राज्य व्यवस्था की पकड़ ढीली पड़ी है. सरकार के पास वक्त कम है और कोई आसान रास्ता नहीं बचा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिव लाइफ़ किंगसाइज़

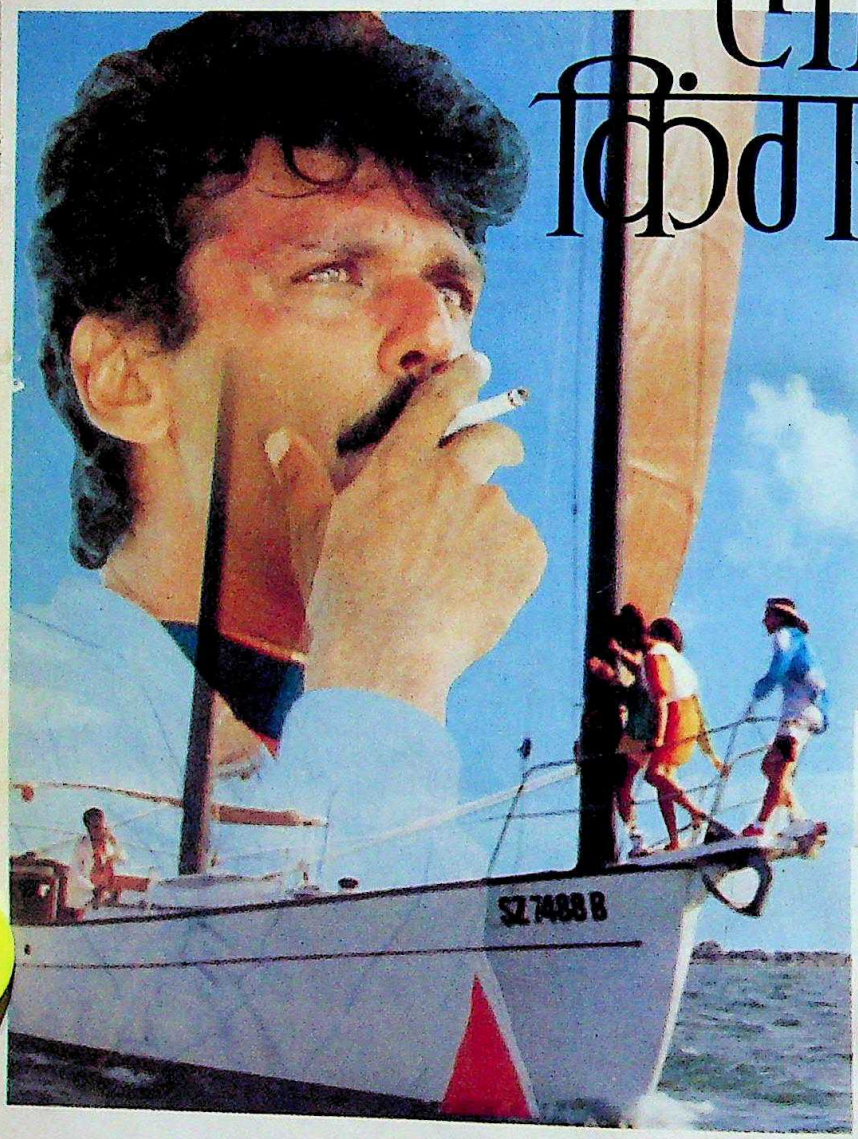

FOUR SQUARE
KINGS

वैधानिक चेतावनी : सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है
STATUTORY WARNING : CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

आख़िरी कश तक वही भरपूर स्वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले पखवाड़े मुझे पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए बी.डी. गोयनका पुरस्कार से सम्मानित होने का सौभाग्य मिला. इस मौके पर मैंने जो कुछ कहा, नीचे वही दुहरा रहा हूं क्योंकि इससे 'इंडिया टुडे' के आधारभूत सिद्धांतों की कुछ झलक मिलती है.

मेरे प्रति उदार और हितचिंतक शब्दों के लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूं. पर मैं पूरी विनम्रता से कहना चाहूंगा कि यह पुरस्कार मेरे लिए नहीं बल्कि उन अनेक प्रतिभाशाली लोगों के लिए है जो 'इंडिया टुडे' को आज की हैसियत में ला खड़ा करने में समर्पणभाव, कर्त्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से मेरे साथ काम करते आए हैं. उनकी ओर से मैं यह सम्मान स्वीकार करता हूं.

बी.डी. गोयनका पुरस्कार

अच्छी पत्र-पत्रिका अनेक प्रतिभाओं का संयुक्त प्रयास होती है. जिस पत्र-पत्रिका में कोई व्यक्ति काम करता है, उस पर वह छा नहीं जाना चाहिए—मैं शुरू से यह मानता और इस पर अमल करता आया हूं. व्यक्ति पूजा पर आधारित पत्रकारिता टिकाऊ नहीं होती.

दूसरे उद्यमों के विपरीत हर पत्र-पत्रिका का एक और आयाम है. हर पत्र-पत्रिका में अपनी ही ओजस्विता तथा स्फूर्ति पाई जाती है और कई मायनों में उसका रुतबा उसमें काम कर रहे लोगों से भी बड़ा होता है. उसमें अपने ही नियम-कायदे चलते हैं और अपनी बाध्यताएं होती हैं जो मालिक, संपादक या संवाददाता की निजी पसंदगियों और नापसंदगियों से परे होती हैं या होनी चाहिए.

हमें याद रखना चाहिए कि पाठक किसी का सगा नहीं होता. अनेक मामलों में तो वह पक्षपाती रिपोर्टों या सिद्धांतों पर समझौता करने वाली संपादकीय टिप्पणियों को पत्रकारों से भी ज्यादा फुर्ती से भांप लेता है. यह बात मैंने गांठ बांध रखी है. इसी के चलते हमें वह विश्वसनीयता हासिल हुई है जो किसी पत्र-पत्रिका की आधारशिला होनी चाहिए.

विश्वसनीयता से मेरा अभिप्राय यह है कि पाठक हमारे लिखे पर भरोसा करे. दरअसल वह हम पर यह भरोसा कर रहा होता है कि हम अपनी समूची पेशेवराना योग्यताओं के लिहाज से जो सही मानते हैं, उसे बताएं. इस भरोसे को मैं इस कदर पवित्र मानता हूं कि किसी पत्र-पत्रिका को हर कीमत पर इसे बनाए रखना चाहिए. सो, काम के दौरान मेरे जेहन में दो सवाल रहते हैं. पहला, क्या यह निष्पक्ष और सही है? दूसरा, छपा हुआ पृष्ठ पाठक के मन पर छाप कैसे छोड़े?

मैं यह भी कहूंगा कि श्री रामनाथ गोयनका सरीखे व्यक्ति द्वारा संस्थापित पुरस्कार पाते हुए मैं दोहरे रूप में सम्मानित महसूस करता हूं. अदम्य साहस से उन्होंने भारतीय प्रेस को जता दिया है कि लिखने की आजादी किसी का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है, इसे पाने के लिए निरंतर लड़ाई लड़नी पड़ती है. मेरा मानना है कि आजाद प्रेस के बिना यह देश मौजूदा रूप में कायम नहीं रह सकता. मुझे इस समुदाय का सदस्य होने का गर्व है जिसका अपनी तमाम खामियों के बावजूद प्रगति में अपना योगदान है.

अरुण पुरी

इस पखवाड़े

वादी में विनाश

कश्मीर घाटी पूरी तरह कट्टरवादियों की गिरफ्त में है और वहां देश का प्रशासनिक नियंत्रण लगभग खत्म हो गया है. हालात नाजुक हैं. नरम उपायों का वक्त अब बीत चुका.

आवरण कथा.....14

आखिर लोग ले आए अपना तंत्र

नेपाल में दमनचक्र के बाद लोकतांत्रिक आंदोलन को कुछ नाटकीय विजय मिली है. पर देखना है कि क्या शाह बीरेंद्र नई जन्म ले रही व्यवस्था में खुद भी बच पाते हैं या नहीं.

खास रपट.....30

भारी भिड़ंत के आसार

लार्सन ऐंड टूब्रो पर नियंत्रण को लेकर देश का एक बड़ा औद्योगिक घराना अंबानी समूह सरकार से भिड़ गया है. आरोप-प्रत्यारोप जारी हैं. दोनों पक्ष लड़ाई में कसर नहीं छोड़ेंगे.

कारोबार.....58

अगले पन्नों पर

कसौटी.....8
राजरंग.....10
हिंदोस्तां हमारा.....12
आवरण कथा
कश्मीर: वादी में विनाश.....14
खास रपट
पंजाब: फिर अंधेरी सुरंग में.....23
जनता दल: नया संकट, नई चुनौती.....26
नेपाल: आखिर लोग ले आए अपना तंत्र....30
आजकल.....37
मुलाकात.....50
कारोबार.....54
पड़ताल.....70
खेलकूद.....74
जगबीती.....85
कहानी.....88
परदे के उस पार.....94
चर्चित चेहरे.....96

आवरण संयोजन: **पियली दत्त गुप्त**
चित्रांकन: **नलिनी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हवा ने पेड़ों के कान में धीरे से कुछ कहा''

एक सुखद दिन। दोपहर का वक्त। पत्तों से छनकर आती सूर्य की किरणें।
पैरों के नीचे ठंडी-ठंडी घास की हरी चादर। कितना आनन्दमय है सबकुछ।
ऐसे आराम के पल में ग्वालियर के आरामदायक कपड़ों में
पेड़ों से आती आवाज शायद मुझे गीत सुना रही है।

— एम. ए. के. पटौदी

GRASIM
GWALIOR
SUITING
IN A CLASS OF ITS OWN
A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD.
40
FOUR DECADES OF CLASS

MAPP-GR-90-1226

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पफ़ से पहले सभी रेफ़्रिजरेटर एक जैसे थे. एकदम नयी तकनीक अपनाकर पफ़ ने आज रेफ़्रिजरेटरों में सचमुच एक चमत्कार कर दिया है.

चमत्कार का नाम है पफ़

पफ़ वह अनोखी इंस्युलेशन सामग्री है जो रेफ़्रिजरेटर की बाहरी और भीतरी दीवारों के बीच भरी रहती है. अंदर की ठंडक को पफ़ ही बरक़रार रखता है. ज़्यादातर भारतीय रेफ़्रिजरेटरों में गये ज़माने के ग्लासवूल इंस्युलेशन का इस्तेमाल होता है, जबकि गोदरेज इस्तेमाल करते हैं केवल पफ़–
पॉलीयूरीथेन फ़ोम– जगप्रसिद्ध इंस्युलेशन सामग्री.

पफ़ की बदौलत बेहतर ठंडक

ठंडक को पूरी तरह बंद रख कर पफ़ नये मज़बूत कम्प्रेसर की कार्यक्षमता को और भी बेहतर बना देता है.

पफ़ पैसे बचाये

चूंकि पफ़ ठंडक को ज़्यादा समय तक बरक़रार रखता है, कम्प्रेसर को कम मेहनत करनी पड़ती है. इससे बिजली भी कम ख़र्च होती है.

पफ़ जगह भी बचाये

पफ़ के कारण रेफ़्रिजरेटर की दीवारें पतली होती हैं जिससे आपका रेफ़्रिजरेटर होता है बाहर से छोटा और अंदर से बड़ा.

पफ़ रेफ़्रिजरेटर को हट्टा-कट्टा बनाये

पफ़ एक मज़बूत कवच की तरह रेफ़्रिजरेटर को और भी सुदृढ़ बनाता है.

पफ़– महान रक्षक

पफ़ के कारण रेफ़्रिजरेटर बाहर से उतना पसीजता नहीं. फलस्वरूप उसकी रंगीन एपॉक्सी पाउडर कोटेड फ़िनिश सालोंसाल नयी जैसी चमकती रहती है.

फ़ायदे का सौदा

पफ़ रेफ़्रिजरेटरों के सबसे बड़े निर्माता हैं गोदरेज. बड़े पैमाने पर तैयार किये जाने के कारण लगभग सामान्य रेफ़्रिजरेटरों के दाम में ही गोदरेज आपको देते हैं अत्याधुनिक पफ़ तकनीक.

जी हां. गोदरेज ने रेफ़्रिजरेटर में खूबियाँ ही खूबियाँ भर दी है. पफ़ की बदौलत.

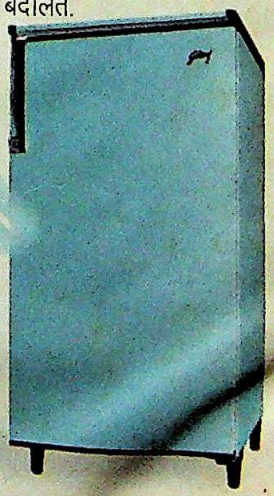

पफ़ की ताकत का कौन करे मुक़ाबला!

पफ़ से लैस Godrej®

अत्याधुनिक तकनीक का चमत्कार

HTA 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

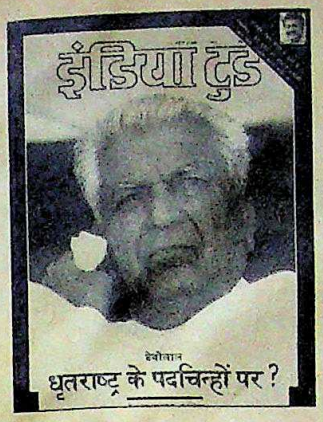

भला धृतराष्ट्र का क्या दोष!

बेचारे ताऊ पर 'धृतराष्ट्र के पदचिन्हों पर' (15 अप्रैल) चलने का दोष! न, न, यह तो सरासर ज्यादती है. आपकी सरकार का क्या है? बनती और बिगड़ती रहेगी. जनता की भावनाएं होती कहां हैं जो पांच वर्ष तक जिंदा रहे. कहते हैं कि मोह अंधा होता है. यदि इसके परिणाम धृतराष्ट्र को दिखाई नहीं देते तो इसमें बेचारे धृतराष्ट्र का क्या दोष? दोष तो उसको देखने वालों का है. —**सुरेशचंद्र सिंहल**, अलवर (राज.)

■ ताऊ के पुत्रमोह के परिणाम भी महाभारत के समान ही हो सकते हैं. जनता दल एवं किसान जनता का हित देखते हुए उन्हें दुर्योधन पुत्र (ओमप्रकाश चौटाला) के बारे में उचित निर्णय लेना चाहिए.

—**आनंद एन. दायमा**, नासिक (महाराष्ट्र)

नया जोश

'भाजपा के सफल सारथि' (31 मार्च) लालकृष्ण आडवाणी भारतीय संस्कृति की महान परंपराओं को सुरक्षित रखने का सपना आज भी संजोए हुए हैं. आपकी यह धारणा कि यहां एक समय दो मध्यमार्गी दल टिक नहीं सकते और न ही दक्षिणपंथी दल केंद्र में सत्तासीन होंगे, गले नहीं उतरती. —**राम खेलावन साह**, मुंगेर (बिहार)

■ भाजपा को मिली करिश्माई सफलता आडवाणी की 'विचारों की स्पष्टता' से ही नहीं मिली है वरन इसमें धर्म की बैसाखी और बदलाव की लहर दोनों की भी बराबर की हिस्सेदारी रही है. रोजमर्रा के मुद्दों और राष्ट्रीय समस्याओं पर भले ही उनके तर्क और व्याख्याएं अधिक पैनी हों लेकिन देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक वर्ग (जो बदकिस्मती से घोर उपेक्षित और मजलूम वर्ग भी है) से जुड़े मुद्दों पर उनकी दलीलें एकदम घटिया और तर्कहीन प्रतीत होती हैं.

—**मुहम्मद असलम**, मेरठ (उ.प्र.)

बदनुमा दाग

महम में चुनाव के दौरान हुई हिंसा सिर्फ चौटाला के लिए ही 'आफत को बुलावा' (31 मार्च) नहीं है बल्कि समूचे भारत के लिए बदनुमा दाग है. उप-प्रधानमंत्री पद की गरिमा की अनोखी नींव रखनेवाले चौधरी देवीलाल का यह कहना कि 'यह पूंजीपतियों का रचा षड्यंत्र था,' अपने बेटे और पोते की बुरी करतूतों पर हल्का आवरण चढ़ाने की एक निर्लज्ज कोशिश भर है.

—**अरविंद प्रसाद**, दिल्ली

■ देवीलाल बार-बार कहते हैं कि वे प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के पक्के समर्थक हैं परंतु घटनाक्रम कुछ दूसरी ही कहानी कह रहा है. इस घटनाक्रम से सिर्फ यही उजागर होता है कि वे 'चौटाला समर्थक' हैं अन्यथा आज पुत्रमोह में अंधे होकर वे सरकार तक गिराने के लिए उद्धत न होते. प्रेसवालों पर आरोप मढ़ने से पहले देवीलाल अपने गिरेबान में झांकें.

—**विजय प्रताप सिंह**, सहारनपुर (उ.प्र.)

■ महम की घटना का दोष बिड़ला, गोयनका और अंबानी परिवार पर थोपना, खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे जैसी बात लगती है. फिर इनमें और इंका में आखिर अंतर ही क्या है. महम में हुई धांधली को देखते हुए क्या वी.पी. सिंह को इस्तीफा नहीं दे देना चाहिए?

—**प्रदीप कुमार माहेश्वरी**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

पाठकों से

सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार की योजना के तहत पत्र आमंत्रित हैं. इस अंक के किसी भी लेख पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु. और दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी के साथ इस पेज पर पहले कॉलम में छपा आवरण पृष्ठ का फोटो काटकर भेजें. आपके पत्र हमें 5 मई तक मिल जाने चाहिए.

—संपादक

उपेक्षा से उन्माद

'उपेक्षा का नरक, उन्माद का स्वर्ग' (31 मार्च) लोगों को जागृति की ओर मोड़ने वाला लगा. आजादी के बाद से नकली मुखौटा पहने, कश्मीर के हमदर्द होने का ढोंग करने वाले शासकों की ढुलमुल नीतियों का परिणाम आज हमारे सामने आग की लपटों के रूप में है.

—**महावीर शर्मा**, रावतभाटा (राज.)

■ कोई कैसे विश्वास करे पाकिस्तान पर? अगर पाकिस्तान भारतीय मुसलमानों की भलाई चाहता है तो हिंद की आंतरिक समस्याओं व सीमाओं में घुसपैठ करना छोड़ दे. विभाजन के वक्त पाकिस्तान गए उन करोड़ों हिंदी मुसलमानों की भलाई के बारे में सोचे जो आज वहां महाज़रीन बनकर जी रहे हैं और आए दिन जुल्मोसितम के शिकार होते हैं.

—**जहान भारती 'फ़ैज़'**, जरमुंडी (बिहार)

■ पाक अधिकृत कश्मीर के पिछड़ेपन, वहां के मजहबी उन्माद और उसी तर्ज पर श्रीनगर में उग्रवादियों की गतिविधियों का मतलब तो यही निकलता है कि देश का बंटवारा ही गलत था. इससे आम लोगों की तकलीफें बढ़ती ही गईं. इसलिए श्रीनगर के उग्रवादियों को सोचना चाहिए कि भारत से अलग होकर या पाकिस्तान से मिलकर आम कश्मीरियों की जिंदगी में कोई रौनक शायद ही ला सकेंगे. साधन और शक्ति से विहीन छोटे राज्य चाहकर भी अपने लोगों को कुछ ज्यादा नहीं दे पाते हैं.

—**शितिकंठ**, कुमारबाग (बिहार)

वर्ष: 4, अंक: 12, 16-30 अप्रैल 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273, टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726. टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमित बुद्धि

'अंधविश्वासों की ओट' (31 मार्च) पढ़कर विस्मय हुआ कि शत-प्रतिशत साक्षरता से विभूषित तिरुवनंतपुरम का जन-मानस पाषाणयुगीन ओझाओं और गुनियों की दुनिया में भटक रहा है.

—**बबीता द्विवेदी**, इंदौर (म.प्र.)

■ जादू-टोना, ओझा आदि कई परिवारों की खुशियां छीन चुके हैं. चेतना का अभाव तथा प्रशासनिक लापरवाही के कारण यह कुचक्र भयानक होता जा रहा है.

—**सुनित कुमार धोका**, पाली (राज.)

सत्य को न भूलें

'फूटे करम, टूटे दिल' (31 मार्च) पढ़ा

प्रथम पुरस्कार

भाजपा के सफल सारथि के रूप में लालकृष्ण आडवाणी के चेहरे पर सौम्यता, पलकों के बीच पड़ी तीन-चार सलवटें गहन चिंतन, और उठी तर्जनी पक्के इरादे का बोध देती है. निस्संदेह उनका निर्देशन पार्टी को अनुपम उपहार है. पर पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता और उनकी निष्ठा का कहीं कोई मुकाबला नहीं. वास्तव में पार्टी के लचीलेपन और देश की जनता की नब्ज पहचानने की क्षमता ने उसे पहली पंक्ति में ला खड़ा किया है. चिमनभाई पटेल को गुजरात में मुख्यमंत्री स्वीकार करना लचीलेपन का और चौटाला को हटाने की मांग व राम जन्मभूमि पर इसका रुख जनता की नब्ज पहचानने के उदाहरण हैं. पार्टी मध्य प्रदेश में नेता चुनने पर कांग्रेसी परंपरा न निभाती तो बेहतर रहता.

—**शशांक त्यागी**, मेरठ (उ.प्र.)

'भारतीय धर्मनिरपेक्षता मुर्दाबाद' कहने वाले जिंदाबाद किसे कहना चाहते हैं? हिंदूवाद को, इस्लाम को या ईसाइयत को! लेकिन ऐसा कहने वाले यह कटु सत्य क्यों भूल जाते हैं कि जब तक 'भारतीय धर्मनिरपेक्षता जिंदाबाद' रहेगी तभी तक इस देश की एकता, अखंडता जीवित रहेगी.

—**पवन व्यास 'साहबवाला'**, श्रीगंगानगर (राज.)

■ कैसी विडंबना है कि अपने देश को अपनी मां कहकर पूजना भी सांप्रदायिक माना जा रहा है. वंदे मातरम में सांप्रदायिकता कैसी? अंग्रेजी दासता के समय इस नारे ने जो सम्मान पाया था, आज स्वतंत्र भारत में इसे सांप्रदायिक मानना हमारा दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है?

—**रूपनारायण भारद्वाज**, लखनऊ (उ.प्र.)

बोर्ड सबक ले

'कुछ कर दिखाने का हौसला ढीला' (31 मार्च) पढ़ा. हाल के टेस्ट मैचों और एकदिवसीय मैचों के परिणामों ने हर खेलप्रेमी को झकझोर दिया है. हमारी बल्लेबाजी ज्यादा असफल रही है बनिस्बत गेंदबाजी के. टीम को पुनर्गठित करना समय की मांग है. श्रीकांत की वापसी टीम की आधी विजय के बराबर है.

—**अमृतलाल मारू 'रवि'**, धार (म.प्र.)

'कनु' बनना पड़ेगा

कहानी 'वजूद' (31 मार्च) की पात्र 'कनु' के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की गई है कि स्त्री मात्र पुरुष की हां में हां करने वाली ही नहीं होती बल्कि वह स्वयं के बारे में निर्णय लेने में भी सक्षम है. उम्मीद है आगे भी ऐसी स्त्री समानता की कहानियां छापकर नारी को पुरुष की वास्तविक अर्द्धांगिनी बनाने की छवि की कोशिश को सामाजिक सहयोग देते रहेंगे.

—**मधु मालपानी**, भीलवाड़ा (राज.)

■ 'वजूद' आज के बदले सामाजिक परिवेश और पुत्रों के प्रति ललक को उजागर करती है. यह समाज कब समझेगा कि पुत्र और पुत्री में भेद की मानसिकता बदलनी होगी.

—**कमलेश कुमार**, कानपुर (उ.प्र.)

■ यह सिलसिला तो तब तक चलता रहेगा जब तक हर मां इस कहानी की 'कनु' नहीं बन जाती. भ्रूण हत्या के खिलाफ होने वाले आंदोलन क्या कर सकेंगे जब खुद मां ही इस काम में सहभागी होगी.

—**वीणा अग्रवाल**, बिलासपुर (म.प्र.)

सही परिवर्तन

'एकछत्र साम्राज्य का अंत' (31 मार्च) पढ़ा. भारतीय जनता परिवर्तन की इच्छुक थी और जनता की सही अर्थों में इच्छा की पूर्ति हुई. इसमें कार्टून विशेष आकर्षण का केंद्र रहा. —**अरविंद श्रीवास्तव**, सारनी (म.प्र.)

सामयिक चेतावनी

'आस्तीन के सांपों से निबटिए' (कसौटी: 31 मार्च) में आपके विचार

द्वितीय पुरस्कार

महम उपचुनाव के साथ ही चुनावी इतिहास में एक त्याज्य पृष्ठ और जुड़ गया. लेकिन इस बार स्याही का रंग सुर्ख लाल था. महमवासियों को यह गुमान भी न था कि इस बार होली में उनका शरीर केसरिया की जगह उनके अपने ही खून से रंग जाएगा. क्या गुनाह था उनका? शायद यही कि वे लोकतंत्र में अपनी मर्जी का प्रतिनिधि चुनना चाहते थे. लेकिन पैतृक अधिकारों की रक्षा के लिए निरीह व्यक्तियों की बलि ले ली गई. गुनाहगार अभी भी अपनी शक्तिशाली कुर्सी से बंधे बैठे हैं. उनका बाल भी बांका न हुआ.

—**अशोक सिंह**, सोनीपत (हरियाणा)

सामयिक चेतावनी हैं. यह राष्ट्र के नेताओं के लिए ही नहीं पूर भारत के लिए विचारणीय मुद्दा है. आज जबकि देश क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता, जातीयता व अलगाववाद के लपटों में घिरा है, देश के नेतागण देश के भीतर बैठे सांपों (शत्रुओं) को कुचलने की जगह पूरा दोष विदेशी ताकतों पर थोपकर अपनी जिम्मेवारी से बचते रहे हैं.

—**चंद्र प्रकाश बुद्धिराजा**, रोहतक (हरियाणा)

सच यह है

'गवर्नरी की आस में' (15 अप्रैल) पढ़कर आश्चर्य और दुख हुआ. 1 फरवरी '90 को मैं अपने जिला मुख्यालय औरंगाबाद (बिहार) में था. वहीं गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद का दो-तीन बार फोन गया. अंत में मेरी जब उनसे बात हुई तो उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने आपको गुजरात का गवर्नर नामजद किया है, मेरी हार्दिक बधाई लें. देश के गृहमंत्री की बात को कोई असत्य कैसे माने ? मैंने कोई प्रेस सम्मेलन नहीं किया. व्यक्तिगत मित्रों और आत्मीयजनों का अभिनंदन और विदाई जरूर स्वीकार की. गुजरात और बिहार के मुख्यमंत्रियों तथा केंद्र के अनेक मंत्रियों ने भी बधाई दी. इसके बाद भी मैं शंका करता?

दिल्ली हवाई अड्डे पर गुजरात भवन के कतिपय अधिकारी स्वागत में उपस्थित थे. उनके अनुरोध पर गुजरात भवन गया जरूर, जहां मात्र एक दिन रुका. वहीं से गृहमंत्री से पुनः बात हुई. उन्होंने कहा कि एक-दो दिन में नोटिफिकेशन होने जा रहा है. मैं उसके बाद दिल्ली में नहीं रुका.

बाद में प्रधानमंत्री की ओर से संदेश मिला कि मैं पटना जाकर राज्यसभा के लिए पर्चा भरूं. उन्होंने मेरी उपयोगिता दिल्ली और सक्रिय राजनीति में ज्यादा समझी.

—**शंकर दयाल सिंह**, संसद सदस्य, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे पड़ौसियों ने अपना घर कैसा सजाया-संवारा है. पेंटिंग, नए बाथरूम आधुनिक किचन... क्या मेरा घर भी कभी ऐसा बन सकेगा?"

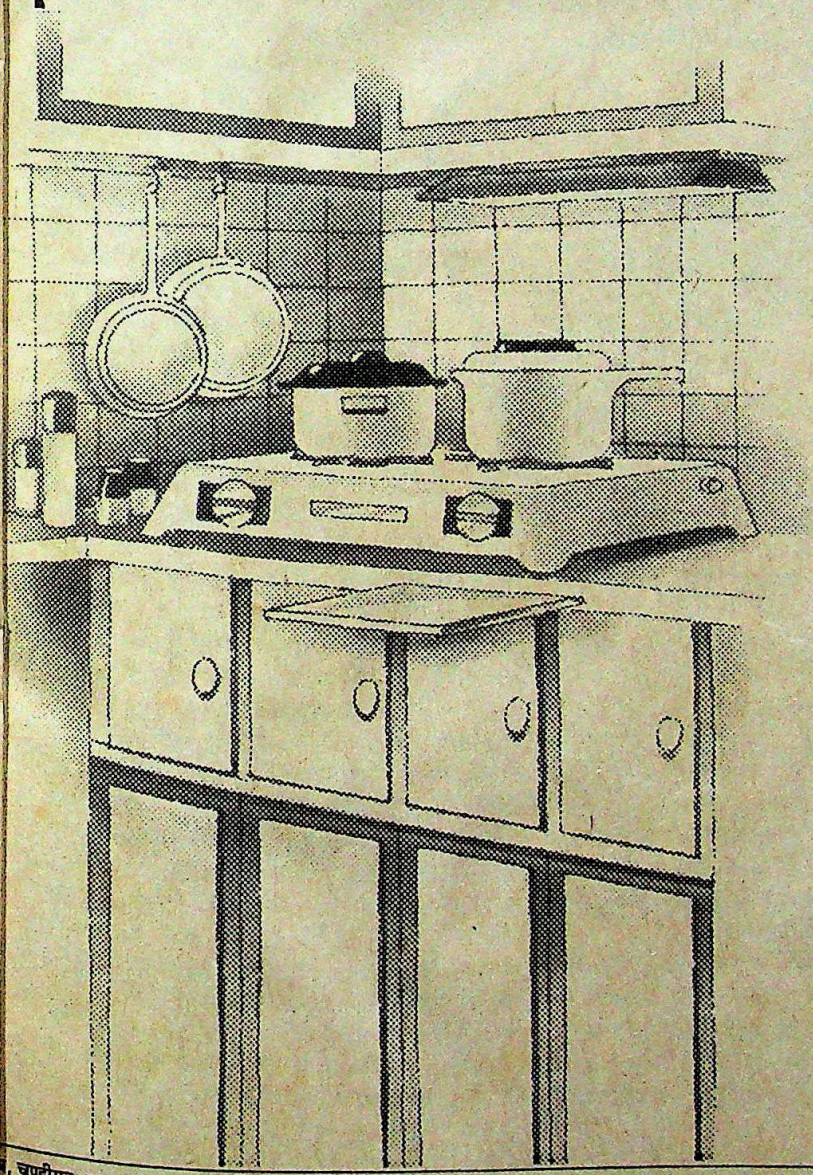

जी हां, बड़ी आसानी से.

बचत करना शुरू कीजिए और उ
पर 6% वार्षिक ब्याज लीजिए.
भविष्य में हम आपकी बचत का
दुगने से ज़्यादा क़र्ज़ आपको देंगे.
वह भी सिर्फ़ 8½% वार्षिक
ब्याज पर.

कम से कम 25 महीनों के दौरान रु. 3000 से रु. 1.05 लाख के बीच बचाइए बदले में रु. 7000 से रु. 2.45 लाख का क़र्ज़ हम से पाइए.

याद रखिए, गृह बचत योजना उन लोगों लिए भी लाभदायक है जो भविष्य में अप घर ख़रीदना या बनाना चाहते हैं, मौजूदा को नए सिरे से संवारना-सजाना/ बढ़ाना चाहते हैं, या फ़िर पहले ऊंचे ब्याज पर लिया हुआ क़र्ज़ चुकाना चाहते हैं.

जल्दी कीजिए, अधिक जानकारी के लिए हमें यह कूपन भेजिए.

कृपया मुझे एक मुफ्त गृ.ब.यो. पुस्तिका भेज दीजिए.
नाम : _____
पता : _____
H5/ITH

HOME
SAVINGS PLAN

एच·डी·एफ़·सी
हाउसिंग डिवेलपमेंट फाइनेंस कार्पोरेशन लिमि
रजि. कार्यालय : बंबई

, चण्डीगढ़: दूसरा तल, एस सी ओ 1110.1111, सेक्टर 22-बी, चण्डीगढ़ 160 022. फोन : 24843 इन्दौर: 9/1/1 एम.जी. रोड, निकट फिल एण्ड फ्लाई पेट्रोल पम्प, इन्दौर 452001. फोन : 7784, 7376 नई फ सी हाउस बी-6/3, सफदरजंग एन्क्लेव.डी डी ए कमर्शियल कॉम्पलेक्स, (डीयर पार्क के सामने) नई दिल्ली 110 029 फोन : 603146, 603147 जयपुर: सी-96, जगन पथ, सरदार पटेल मार्ग, सी-स्कीम,जयपु न : 77557 लखनऊ: कोहली हाउस, 4-ई, रामतीर्थ मार्ग, ऐश बाग, 894 लखनऊ 226 001. फोन : 35055, 247505.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसौटी

आम सहमति का महंगा मोह

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह इन दिनों यह जताने का कोई मौका नहीं छोड़ते कि गंभीर राजनैतिक चुनौतियों से निबटने की मेरी कार्रवाई उलझनपूर्ण भले लगे परंतु यह उलझन ही मेरी शक्ति का स्रोत है. वे अक्सर कहा करते हैं कि हमने राजीव गांधी को गद्दी से उतारा, अलग-अलग राजनैतिक 'धातुओं' को मिलाकर जनता दल बनाया. क्या यह सब उलझन का ही नतीजा है?

ये तमाम बातें विपक्षी आंदोलन चलाने के लिए या सरकार के गठन से पहले की स्थिति में अच्छी लग सकती हैं. लेकिन अब जबकि वे प्रधानमंत्री बन गए हैं, वे किसी तरह की उलझन का आसरा नहीं ले सकते. प्रधानमंत्रित्व के सौ दिन पूरे करते हुए वे आम सहमति की खातिर साफगोई और निर्णायक कार्रवाई से बचते दिखते रहे हैं. आम सहमति उनके लिए जैसे खब्त-सी हो गई है.

यह सब लिखने के पीछे मंशा आम सहमति की जरूरत को नकारने की नहीं है. विभिन्न सामाजिक और राजनैतिक हितों के टकराव वाली बहुदलीय राज्य-व्यवस्था में आम सहमति आवश्यक भी है. लेकिन यह आम सहमति लोगों को स्पष्ट राजनैतिक परिवर्तन की दिशा में साथ लेकर चलने का साधन होना चाहिए. यह अपने आप में साध्य नहीं हो सकता. जिस माहौल में राजनैतिक पार्टियों के बीच मतभेद उद्देश्य को लेकर नहीं बल्कि लक्ष्य तक पहुंचने के मार्गों या साधनों को लेकर हों, उसमें आम सहमति आवश्यक भी होती है और प्रशंसनीय भी.

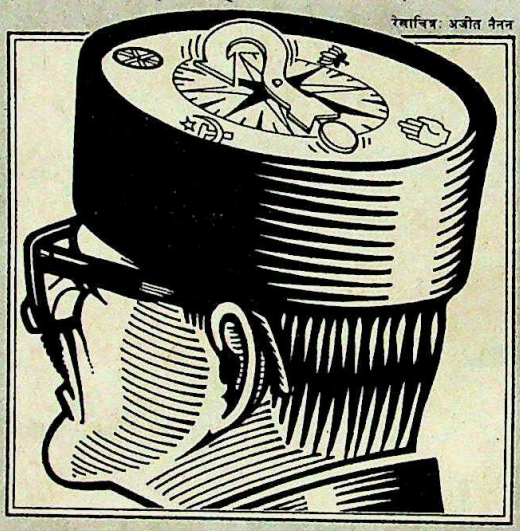
रेखाचित्र: अजीत नैनन

लेकिन, उदाहरण के लिए, कश्मीर के सवाल पर सर्वदलीय सहमति के लिए जूझते रहने का क्या मतलब है अगर कांग्रेसी नेतृत्व का रवैया शुद्ध पक्षपातपूर्ण हो, जब यह स्पष्ट दिख रहा हो कि उस राज्य में गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार दल समस्या का स्थायी हल ढूंढ़ने के बदले अपने किए-कराए का कलंक नई सरकार पर थोपना चाहता हो?

शुरू में लगा था कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार कश्मीर के सवाल पर कम-से-कम अलग रवैया तो अपना रही है, कि यह अपने कार्यक्रम पूरी हिम्मत के साथ लागू करने के लिए कृतसंकल्प है. लेकिन सर्वदलीय बैठक के बाद और राजीव गांधी के उलटे-सीधे बयानों के बाद ऐसा लग रहा है कि मामला उलझ गया है और नई सरकार का राजनैतिक संकल्प कमजोर पड़ गया है. अब कश्मीर के मामले में कोई स्पष्ट नीति नजर नहीं आ रही. क्या यह केवल कानून और व्यवस्था का मामला है? उग्रवादियों के आंदोलन को क्या भारत की अखंडता के खिलाफ युद्ध माना जा सकता है? क्या यह पंजाब जैसा ही मामला है? कुल मिलाकर उलझन-ही-उलझन है. आम सहमति के प्रति वी.पी. सिंह के मोह के लिए क्या देश को इस तरह कीमत चुकानी पड़ेगी?

पंजाब के मामले में भी यही स्थिति है. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने वहां चुनाव कराने, पिछली सरकार से हटकर कुछ अलग करने का वादा किया था. लेकिन यहां भी मामला आम सहमति के सवाल पर आकर उलझ गया दिखता है. वास्तव में यह आम सहमति एक मृग-मरीचिका ही है. इसके कारण कई मामले बस अटककर रह जाते हैं. और तो और, पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक के लिए बहुमत जुटाने में भी सरकार विफल रही.

हाल की घटनाओं से वी.पी. सिंह को सबक लेना चाहिए कि आम सहमति के नए बिंदुओं को तलाशने की जगह जब-जब उन्होंने मौजूदा राष्ट्रीय सहमति के आधार पर काम किया है तब-तब वे सफल रहे हैं. उदाहरण के लिए, राष्ट्र इस बात पर सहमत है कि भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता से लड़ा जाना चाहिए. इसलिए रक्षा सौदों के लिए जांच आयोग बिठाने के लिए या राम जन्मभूमि विवाद पर भड़की सांप्रदायिक भावनाओं को शांत करने की कोशिश के लिए उन्हें किसी की राजनैतिक सलाह की जरूरत नहीं पड़ी. जब-जब उन्होंने निर्णायक कदम उठाए, वह-वह क्षण उनके लिए सर्वोत्तम साबित हुआ. 59वें संविधान संशोधन को रद्द करने के लिए उन्हें आम सहमति तलाशने की जरूरत नहीं पड़ी. ऑपरेशन ब्लू स्टार के कारण सेना से भागे सैनिकों के पुनर्वास का फैसला करने के लिए उन्हें राजीव गांधी की मंजूरी का इंतजार नहीं करना पड़ा. अमृतसर के दौरे के लिए उन्हें हरकिशन सिंह सुरजीत या अपनी ही पार्टी के किसी नेता से इजाजत लेने की जरूरत नही पड़ी. उन्होंने वही किया जो लोकप्रिय जनादेश से चुने गए नेता को करना चाहिए था.

सत्ता का उपयोग न करना सत्ता के दुरुपयोग जितना ही खतरनाक हो सकता है. और वी.पी. सिंह अक्सर इस उलझन में पड़े दिखते हैं कि इस देश की जनता ने उन्हें जो सत्ता सौंपी है उसका कितना उपयोग करें. किसी भी नेता का मौलिक दायित्व यह होता है कि वह जो ठीक समझे वही काम करे और लोगों को अपने साथ ले चलने की कोशिश करे. इस दायित्व से वह बच नहीं सकता. भारत जैसे जटिल देश में आम सहमति को संकल्पवान नेतृत्व का विकल्प नहीं माना जा सकता. लोगों ने पिछले चुनाव में परिवर्तन के पक्ष में फैसला सुनाया—नीतियों में परिवर्तन, शासन की शैली में परिवर्तन के पक्ष में और साथ ही भ्रष्ट नेताओं को दुरुस्त करने की कार्रवाई के पक्ष में. तो अब यही लोग यह सवाल उठा सकते हैं कि परिवर्तन कहां हुआ? फिलहाल तो वी.पी. सिंह इस तथ्य का लाभ उठा सकते हैं कि वे नए हैं. लोगों के दिमाग में उनके चुनाव अभियान की स्मृतियां अभी ताजा हैं. इसलिए अगर वे अपनी पार्टी को चुस्त बनाने या पंजाब और कश्मीर के मामले में कोई निर्णायक कदम उठाने का फैसला करते हैं तो लोगों का समर्थन उन्हें हासिल होगा. मगर सीधे टकराव से जितना वे बचेंगे, समय उनके लिए उतनी ही तेजी से चुकता जाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काक, नवभारत टाइम्स

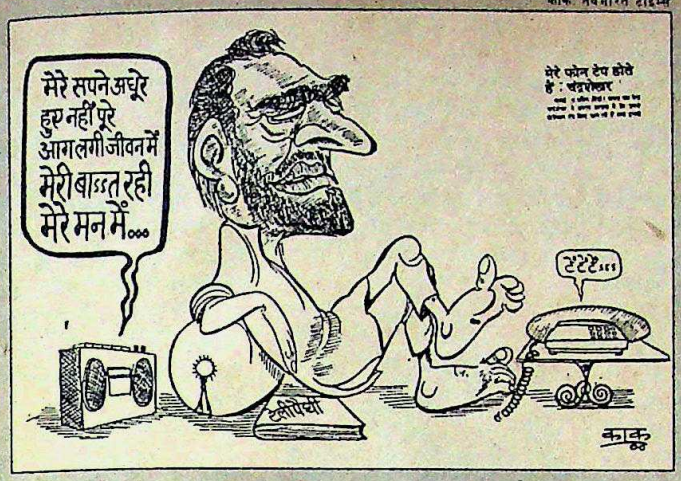

● यदि मैं सचाई बयान करना शुरू कर दूं तो यह सरकार मुसीबत में फंस जाएगी.
■ **चंद्रशेखर**, *इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया*

● किसलिए? आप भी सरकार में रह चुके हैं. आपको पता होगा (कि सरकार ने सीबीआई को टेलीफोन टैप करने का अधिकार किसलिए दिया है).
■ **पी. उपेंद्र**, लोकसभा में एक कांग्रेसी सांसद को जवाब देते हुए

● इससे पहले कि कांग्रेस देवीलाल से हाथ मिलाए, मैं मर जाना पसंद करूंगा.
■ **बलराम जाखड़**, *पंजाब केसरी*

● महम के मामले में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह महाभारत की गांधारी जैसा आचरण कर रहे हैं.
■ **स्वामी अग्निवेश**, *आज*

● मैं नर्मदा कछारवासियों को बचा नहीं सकूंगा तो उनके साथ डूब तो सकूंगा.
■ **बाबा आमटे**, *नई दुनिया*

● यह लालू यादव जमीन से जुड़ा आदमी है, संघर्षों में तपा आदमी है और किसी की बैसाखी पर नहीं बल्कि अपने आत्मविश्वास की शक्ति के सहारे चलता है.
■ **लालू प्रसाद यादव**, *माया*

● कश्मीर तथा पंजाब में आतंकवाद की समस्या के निवारण के लिए पाकिस्तान की कमर तोड़ना आवश्यक है और यह समस्या केवल युद्ध से ही हल हो सकती है.
■ पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य **स्वामी निरंजन देव तीर्थ**, *दैनिक ट्रिब्यून*

● मैं इस मकान को नहीं खाली करने वाली. इसके लिए सरकार जो करना चाहे करे.
■ **इंद्राणी देवी** (स्व. जगजीवन राम की पत्नी), *हिंदुस्तान*

● जिस तरह का रवैया क्रिकेट संघ एवं सरकार हम लोगों के प्रति अपना रही है उससे तो बस यही अपेक्षा की जा सकती है कि आगामी कुछ वर्षों में न तो राष्ट्रीय महिला क्रिकेट टीम रह जाएगी और न ही इसका कोई नाम लेने वाला रह जाएगा.
■ **डायना इदुल्जी**, *दैनिक जागरण*

● मैं इसलिए भी कभी-कभी अक्खड़पन दिखाती हूं ताकि लोग मुझे लॉलीपॉप न समझें. दरअसल इंडस्ट्री में कमजोर लोगों का बहुत फायदा उठाया जाता है.
■ **सोनम**, *धर्मयुग*

● आखिर मैंने एक्टर बनकर साबित कर दिखाया कि जिसके चेहरे पर चेचक के दाग हों वह एक्टर भी बन सकता है और दुनिया भर के पुरस्कार भी जीत सकता है.
● **ओम पुरी**, *नवभारत टाइम्स*

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे — नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बखेड़े वाला बंगला

● भारतीय नेताओं से ज्यादा अंधविश्वासी दूसरी कोई जमात दुनिया में शायद ढूंढे न मिले. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह भी अलबत्ता इसी जमात में शामिल हैं. रेसकोर्स वाले बंगले में जाना उन्होंने इसलिए टाल रखा है क्योंकि

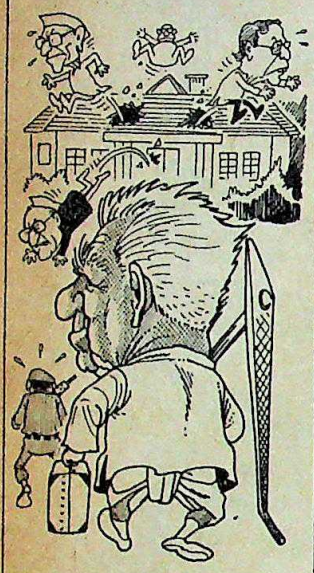

किसी ने उन्हें ज्यादा शुभ समय का इंतजार करने की सलाह दी है. लेकिन फिलहाल किस्सा दिग्गज उप-प्रधानमंत्री देवीलाल का.

राजनैतिक पंडितों के अनुसार महम कांड के बाद उन्होंने जो नाटकबाजी की उसके चलते उनका राजनैतिक भविष्य डगमगा गया है. कहा जा रहा है कि उन्हें जल्दी ही अपना बोरिया-बिस्तर समेटना होगा. इसकी वजह यह बताई जा रही है कि फिलहाल वे जिस 1, विलिंग्डन क्रीसेंट वाले बंगले में रह रहे हैं उसमें रहने वाले नेताओं का राजनैतिक भविष्य हमेशा अनिश्चित रहा है. इन जानकारों का कहना है कि ताऊ जब से इस बंगले में गए हैं तभी से उनके लिए परेशानियां शुरू हुई हैं. ये जानकार लोग अपनी बात को वजनी बनाने के लिए उन लोगों का उदाहरण देते हैं जो पहले इस बंगले में रह चुके हैं.

इस सूची में सबसे ऊपर राजकुमारी अमृत कौर का नाम है जिन्हें नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना पड़ा था. दूसरे लोग हैं—टी.टी. कृष्णमाचारी, मोरारजी देसाई, ए. के. सेन, बंसीलाल और विद्याचरण शुक्ल. अगर खुदा-न-खास्ते ताऊ इन्हीं लोगों के नक्शेकदम पर चलते पाए गए तो इस बंगले में शायद ही कोई नेता रहने को तैयार हो.

टेपरिकार्डर का खौफ

● देवीलाल के राजनैतिक भविष्य का ऊंट आगे चाहे जिस करवट बैठे, उनके खिलाफ जिस तरह से माहौल बन रहा है उसने ताऊ के रंग-बिरंगे व्यक्तित्व में एक नया रंग और जोड़ दिया है. यह तत्व है—असुरक्षा की भावना.

सामान्य तौर पर ताऊ ठेठ देसी मिजाज के व्यक्ति हैं, जो नतीजे की परवाह किए बिना अपनी बातें कहता रहता है. लेकिन इधर वे अचानक बहुत सावधान-से दिखने लगे हैं और यह खयाल रखने लगे हैं कि किससे क्या कहना चाहिए.

लगता है इंडियन एक्सप्रेस के पहले पन्ने पर अरुण शौरी ने उनके साथ टेलीफोन वार्ता का जो ब्यौरा छापा उसके बाद से ताऊ का यह हाल हुआ है. इस वार्तालाप ने ताऊ की छवि मलिन करके रख दी. इसलिए पिछले पखवाड़े राम जेठमलानी जब उनसे मिलने गए तो उन्हें भारी सदमा झेलना पड़ा. ताऊ अभी भी जेठमलानी को इंडियन

सभी कार्टून: अजीत नैनन

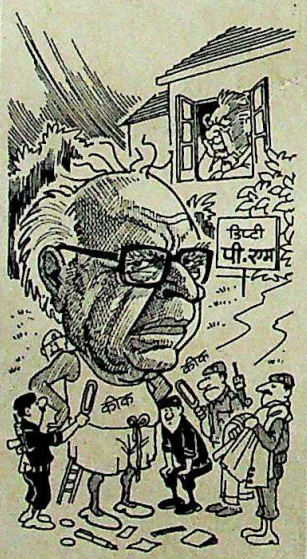

एक्सप्रेस से जोड़कर देखते हैं. जिससे वे इन दिनों नाराज हैं. इसलिए उन्होंने अपने सुरक्षा कर्मचारियों को निर्देश दिया था कि वे जेठमलानी की तलाशी ले लें ताकि वे कोई टेपरिकार्डर छिपाकर न ला पाएं. बेचारे जेठमलानी को खाना-तलाशी का यह अपमान जलते-भुनते हुए झेलना पड़ा.

खतरे के मद्देनजर

● खास लोगों की जमातों के सदस्यों में खास एकता भी होती है. भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) का भी यही हाल है. शायद इसी कारण नई सरकार के गठन के बाद भी इसमें कोई बड़ा उलटफेर नहीं हुआ. लेकिन चूंकि कई वरिष्ठ

अधिकारियों को राजीव सरकार का करीबी माना जाता रहा है इसलिए खतरा बरकरार है. इसके मद्देनजर आईएफएस अधिकारियों का शक्तिशाली गुट पिछली सरकार से खुल्लमखुल्ला जुड़े अधिकारियों के लिए उपयुक्त नियुक्तियों की जोड़-तोड़ में लगा हुआ है.

विदेश सचिव एस.के. सिंह, वाणिज्य सचिव एस.पी. शुक्ल और विदेश मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव प्रकाश शाह की सदस्यता वाले सिविल सर्विस बोर्ड ने मास्को स्थित भारतीय दूतावास में दूसरे नंबर के अधिकारी के लिए जी. पार्थसारथी को चुना. पार्थसारथी राजीव गांधी के जमाने में प्रधानमंत्री कार्यालय में संयुक्त सचिव हुआ करते थे. विदेश सेवा के दोनों अधिकारियों ने पार्थसारथी का चयन इस आधार पर किया कि प्रधानमंत्री कार्यालय ने इसकी मंजूरी दे रखी है. लेकिन शुक्ल ने आपत्ति कर दी और फाईल विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल को भेज दी गई. गुजराल ने प्रधानमंत्री कार्यालय से इस बारे में तफतीश की तो वहां से जवाब मिला कि विदेश में नियुक्तियों के लिए यहां से किसी की सिफारिश नहीं की गई है. यानी पार्थसारथी को, जो इन दिनों छुट्टी पर हैं, राजनयिक नियुक्ति के लिए इंतजार करना पड़ेगा.

वफादारी का जायका

● बेदाग वफादारी मुसीबत भी बन सकती है इसका जायका इन दिनों राजीव गांधी को मिल रहा है. पिछले दिनों उनके निवास के सामने हर सुबह करीब आधा दर्जन पार्टी कार्यकर्ताओं की भीड़ जुट जाती और नारे लगाने लगती—'राजीव गांधी जिंदाबाद, राजीव के लिए हम गोली खाएंगे.' अपने कार्यकर्ता हों और जिंदाबाद के नारे लगा रहे हों तो बुरा क्या है. मगर मुसीबत का कारण यह था कि कुछ देर के बाद इन वफादारों के मुंह से ये नारे निकलने लगते—'सीताराम केसरी मुर्दाबाद, आर.के धवन मुर्दाबाद.'

जाहिर है, सुनने वालों को ये दोरंगे नारे अटपटे लगे होंगे. किंतु इन नारों की वजह भी है. ये नारे वे लोग लगा रहे थे जिन्हें विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह ने लोकसभा चुनाव के दौरान पार्टी के कामकाज के लिए नियुक्त किया था मगर जिन्हें कोषाध्यक्ष सीताराम केसरी ने अब निकाल दिया है.

और आर.के. धवन के खिलाफ इन लोगों की नाराजगी की वजह यह थी कि उन्होंने इन लोगों को राजीव गांधी से सीधे अपनी फरियाद करने का मौका नहीं दिया. बहरहाल, यह कहना मुश्किल है कि इन छह लोगों को राजीव फिर से बहाल करेंगे या हर सुबह अपनी शांति भंग करते रहने देंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ दिन चोर के

● पिछले दशक के दौरान बदलने वाले राजनैतिक माहौल में आतंकवादियों के हौसले जिस तरह बुलंद हुए हैं उसे देखकर कुछ चोर-उचक्कों तथा जेबतराशों को भी यह गलतफहमी होने लगी है कि

सभी कार्टून: जयंतो

उनके लिए भी शायद स्वर्ण युग आ गया है. कुछ इसी तरह की गलतफहमी के शिकार एक चोर ने हाल ही में राजधानी दिल्ली की एक बस्ती में अच्छा-खासा आतंक पैदा कर दिया लेकिन अपने धंधे के प्रति उसके अति उत्साह और जरूरत से ज्यादा बढ़ चुके आत्मविश्वास ने मझधार में ही उसकी नैया डुबो दी.

इस चोर ने पहले तो एक खास घर में कई बार चोरी करके पुलिस को ऐसा छकाया कि स्थानीय पुलिस अधिकारी भी सकते में आ गए. अपने इस बढ़ते हुए आत्मविश्वास के कुछ करतब उसने दूसरे कई घरों में भी दिखाए. हर बार साफ-साफ बच निकलने की उसकी सफलता ने उसके आत्मविश्वास को यहां तक बढ़ा दिया कि उसने चोरी करने से पहले घर के मालिकों को फोन पर चौकस रहने की चुनौतियां देनी भी शुरू कर दी. और अपनी होशियारी का झंडा सबसे ऊंचा गाड़ने की फिराक में उसने एक घर में तो फोन पर यहां तक बता दिया कि वह फलां दिन फलां वक्त पर आकर उनका वीसीआर उड़ा ले जाएगा. चोर ने वादा निभाया और पहले से बताए वक्त पर घर में दाखिल भी हो गया. लगभग सुनसान पड़े घर में उसने अपना कमाल दिखा दिया होता लेकिन कमरे में पहले से छिपकर बैठे पुलिस अधिकारी ने उसका खेल खत्म कर दिया.

गधों का कमाल

● कहावत है—डूबते को तिनके का सहारा. और अगर सहारा देने के लिए लाखों तिनकों का बोझा ढोने की हैसियत रखने वाला साक्षात गधा ही उपस्थित होकर अपनी दोस्ताना दुम पेश कर दे तो संकट की वैतरणी पार होना निश्चित है. ठीक ऐसा ही सुखद अनुभव लखनऊ नगरपालिका के सफाई कर्मचारियों का रहा है.

लंबे अरसे से अपनी मांगें मनवा पाने में असमर्थ इन कर्मचारियों के संघर्ष में पिछले पखवाड़े उनके गधों ने भी हाथ बंटाने का फैसला किया और देखते ही देखते संघर्ष की यह बाजी कर्मचारियों के पक्ष में पलटा खा गई. इस आंदोलन को चलाने वाले दो संगठनों उत्तर प्रदेश मजदूर परिषद और उत्तर प्रदेश सफाई कर्मचारी संघ ने जब देखा कि पालिका के अधिकारीगण उनकी मांगों की निरंतर उपेक्षा करते जा रहे हैं तब उन्होंने अपनी दलीलों का वजन बढ़ाने के लिए अपने प्रदर्शन में 250 गधों को भी शामिल कर लिया. प्रदर्शनकारियों का यह जत्था धड़धड़ाता हुआ पालिका मुख्यालय के भीतर ही पहुंच गया.

दुलत्तियां झाड़ते और गर्दभ राग में अपनी उपस्थिति जताते हुए गधों को देखकर पालिका के लगभग सभी अधिकारी अपने कमरे छोड़कर भाग खड़े हुए. एक गधे के गले में तो स्वास्थ्य अधि-

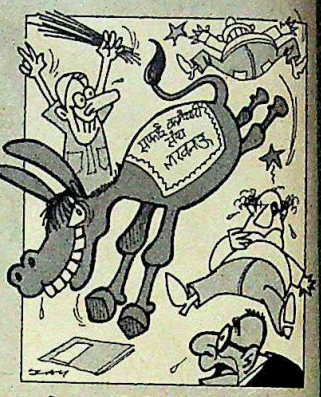

कारी का टेलीफोन भी लटका दिया गया. यहां तक कि लिफ्ट के रास्ते कई गधे कार्यालय की ऊपरी मंजिलों तक भी जा पहुंचे. मौके की नजाकत देखते हुए महापौर डॉ दाऊजी गुप्त ने प्रदर्शनकारियों की मांगें मानने का फैसला कर डाला.

असली स्वर्गवासी

● ऐसे किस्से हजारों और लाखों में हैं जब किसी ने स्वर्ग पाने की इच्छा से यज्ञ, उपवास और तपस्या के नए-पुराने रिकार्ड तोड़ डाले हों. अपने किसी मृत संबंधी की आत्मा को मोक्ष दिलवाने के

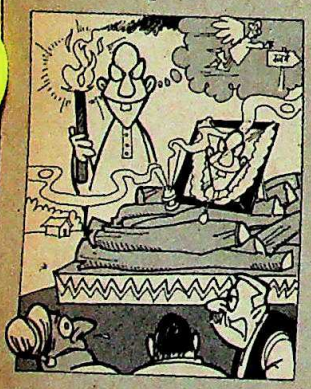

लिए शास्त्रीय तरीके से दाह संस्कार, श्राद्ध और पितरों की पूजा की परंपरा तो आज भी कायम है. लेकिन ऐसे किस्से अब इक्के-दुक्के ही सुनने में आते हैं जब किसी ने अपनी 'आत्मा' की 'शांति' और अपने प्रेत की 'मुक्ति' के लिए अपने जीते जी ही अपना क्रिया-कर्म करा डाला हो.

ठीक ऐसा ही एक किस्सा पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र के विश्वेश्वरगंज में देखने को मिला. वहां के एक निवासी हृदय राम गोस्वामी सत्तर की उम्र पार करने वाले थे. ऐसे में परलोक की चिंता स्वाभाविक ही सताने लगती है. यह भी लगता है कि मरने के बाद घरवाले पता नहीं किस तरह अंतिम संस्कार करें. सो इस चिंता में उन्होंने मरने का इंतजार करने के बदले अपने सामने अपनी ही देखरेख में अपना क्रिया-कर्म कराने का फैसला कर डाला. मोक्ष प्राप्ति के इस अभियान के तहत पहले तो उन्होंने अपने एक फोटो का अंतिम संस्कार किया और उसके बाद पूरी धार्मिक रीति के अनुसार अपनी तेरहवीं और ब्राह्मण भोज का आयोजन भी कर डाला. अपने पीछे अपनी स्थायी याद छोड़ जाने की आशा से उन्होंने अपनी एक समाधि भी बनवाई. इतना ही नहीं, इस समारोह को रोचकता और परंपरा का रंग देने के लिए उन्होंने नौटंकी का रंगारंग आयोजन भी कराया.

नेता या अभिनेता?

● केंद्रीय बजट में पेट्रोल के दाम बढ़ाकर सरकार ने निजी वाहन मालिकों के लिए तो संकट बढ़ाया ही है, उन लोगों की जेबों पर भी खासा हमला कर दिया है जो ऑटोरिक्शा और टैक्सी का इस्तेमाल करते हैं. सरकार गलती करे और उसके विरोधी उसे माफ कर दें, भला ऐसा कैसे हो सकता है? आंध्र प्रदेश की इंका सरकार के एक मंत्री ने इस मौके का पूरा राजनैतिक फायदा उठाने का फैसला किया. लेकिन एक रिक्शेवाले ने उनके अभियान की ही हवा निकाल दी.

राज्य के खेलमंत्री वी. हनुमंत राव ने, जो कि अपनी कार से सफर करने के अलावा हैदराबाद में ऑटोरिक्शा और टैक्सी का भी इस्तेमाल करते हैं, अपने इस राजनैतिक अभियान को नाटकीय बनाने का फैसला किया. इस फैसले के तहत उन्होंने बजट की घोषणा के बाद रिक्शे से ही विधानसभा जाने का फैसला किया. इसकी खबर उन्होंने अखबारवालों को भी कर दी. नतीजा यह हुआ कि रास्ते भर न सिर्फ प्रेस फोटोग्राफर उनकी तस्वीरें खींचते रहे बल्कि लोगों की भीड़ ने भी रिक्शे को कई बार घेर लिया. अपनी सवारी की इस लोकप्रियता को देखते हुए रिक्शेवाले ने सोचा कि उसकी सवारी कोई फिल्मी हीरो है. लिहाजा जब नेता जी ने उसे दरियादिली दिखाते हुए

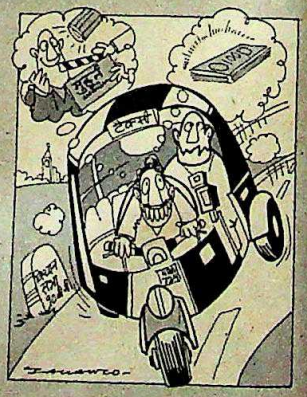

दस का नोट थमाया तो उसने इससे भी कई गुना अधिक पैसों की मांग कर दी. आखिर तंग आकर नेता जी को झुकना ही पड़ा. नतीजा यह हुआ कि अगले दिन उन्होंने अपनी कार में ही सफर करने का फैसला किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

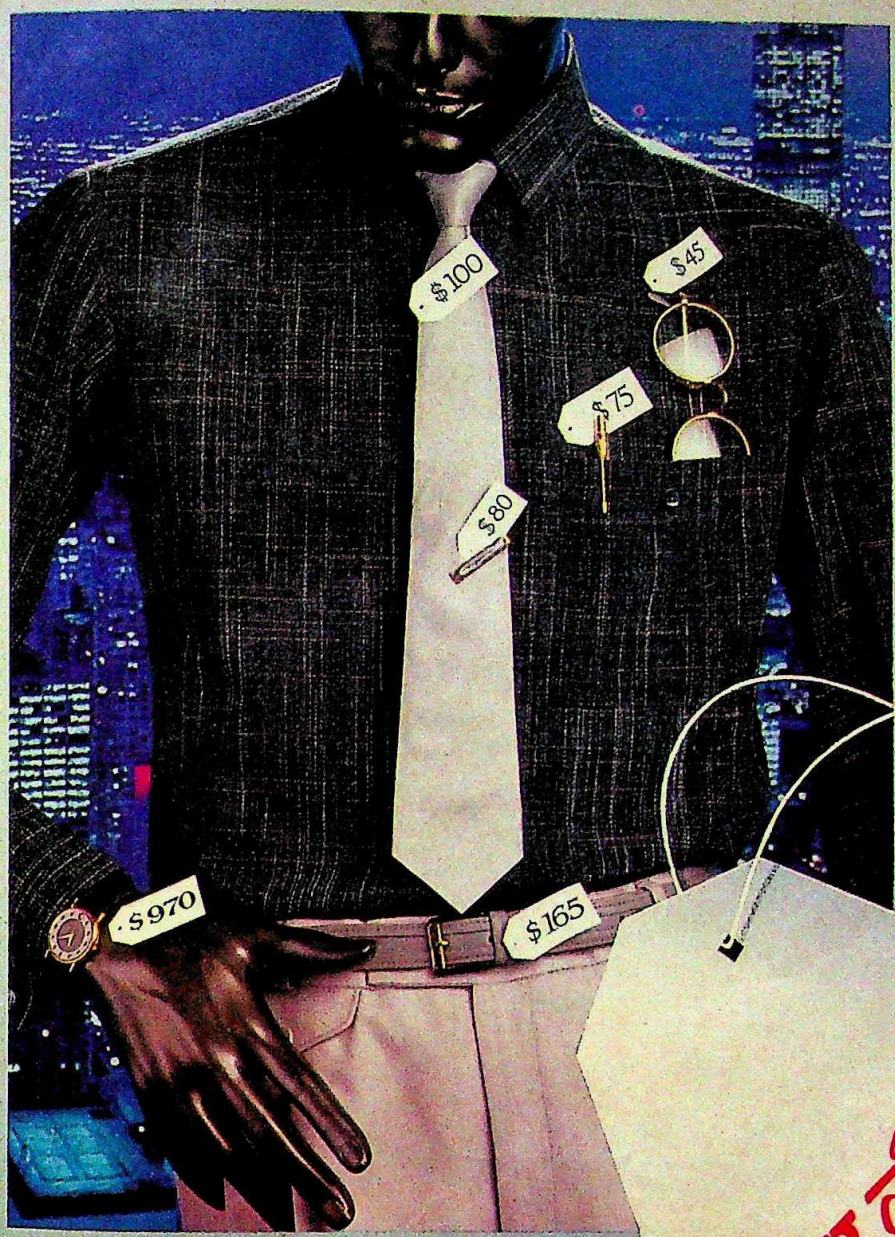

ब्लू चिप.
महंगी
आन-बान,
पर
मुनासिब
दाम.

डॉलर की ज़रूरत नहीं!

ब्लू चिप

शर्ट्स-ट्राउज़र्स

VIP का
एक उत्कृष्ट
उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

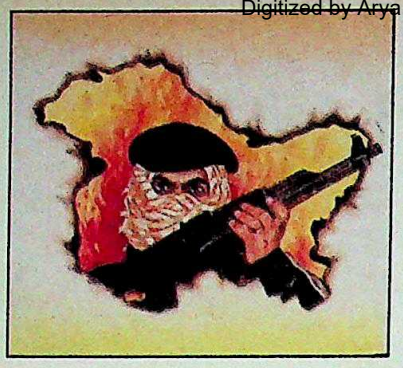

कश्मीर :

इस्लाम की बुनियाद पे यह मुल्क बना है, आएगा इस मुल्क में इस्लाम का दस्तूर; इस मुल्क में तूफान आएगा.

–एक नाजायज कैसेट से

कश्मीर ने भारत के खिलाफ जंग छेड़ दी है. और इस घोषित जंग को पाकिस्तान से नैतिक, वित्तीय और दूसरी मदद मिल रही है.

इसका पहला दौर खत्म हो गया है. और कड़वी सचाई यह है कि इस पहले दौर में जीत आतंकवादियों की हुई है. लगता है, नई दिल्ली या यहां तक कि बाकी मुल्क ने भी अभी तक स्थिति की गंभीरता को— जिससे भारत की धर्मनिरपेक्षता पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं—पूरी तरह महसूस नहीं किया है. पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज (पीयूसीएल) जैसे संगठन भले ही प्रशासन पर दमन और 'आतंक के शासन' के आरोप लगाएं, कटु सत्य यह है कि भारतीय राज्य व्यवस्था शायद ही कश्मीरी आतंकवादियों का सामना कर पाने में कामयाब हो रही हैं. कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मुशीर-उल-हक, उनके सहायक अब्दुल गनी और एचएमटी के महाप्रबंधक एच.एल. खेड़ा की हत्या से यही जाहिर होता है.

आतंक के शासन की बागडोर पूरी तरह से अलगाववादियों के हाथों में है. उन्होंने अपहरणों, बम विस्फोटों, हत्याओं, भड़काऊ मजहबी तकरीरों और प्रेस सेंसरशिप के जरिए घाटी को प्रशासनिक और मनोवैज्ञानिक रूप से भारत से अलग कर दिया है. अलगाववादियों की गतिविधियां अब डोडा, किश्टवाड़, राजौरी और पुंछ तक फैल गई हैं.

भौगोलिक और सैनिक दृष्टि से कश्मीर भारत के साथ बना हुआ है. उत्तर में लद्दाख और दक्षिण में जम्मू है. समूची वास्तविक नियंत्रण रेखा के किनारे भारतीय सेना जमी हुई है. लेकिन इस परिधि के भीतर कश्मीर नाम का टापू है जहां भारतीय सत्ता नाम की कोई चीज नहीं रह गई है और जो पाकिस्तानी जोड़तोड़ का आसानी से शिकार हो गया है. आज कश्मीर की स्थिति यह है कि वहां डर या अलगाव की भावना के कारण कोई भी आदमी न तो भारत के समर्थन की बात करता है, और न ही केंद्र से समझौते की. वहां के आंदोलन ने अब एक नया मोड़ ले लिया है और बहस का मुद्दा यह बन गया है कि वे आजाद रहें या पाकिस्तान के साथ जुड़ें.

ज्यादातर 'भारतीय कुत्ते' (कश्मीरी अन्य भारतीयों को कुत्ता ही कहते हैं) कश्मीर से पलायन कर गए हैं. व्यवसायियों, बैंकरों, अवकाशप्राप्त सैनिकों, होटल मालिकों, यात्रा संचालकों और कश्मीरी पंडितों ने श्रीनगर, बारामूला, त्राल, पुलवामा, अनंतनाग, कुपवाड़ा, हंदवाड़ा और बांडीपोर छोड़ दिया है. वहां बाकी बचे लोग या तो वर्दीधारी सैनिक या पुलिसवाले हैं या फिर श्रीनगर के राजभवन या लघु शीतकालीन सचिवालय में बैठे भारतीय अधिकारी.

घाटी के लगभग 1,40,000 कश्मीरी पंडितों और दूसरे

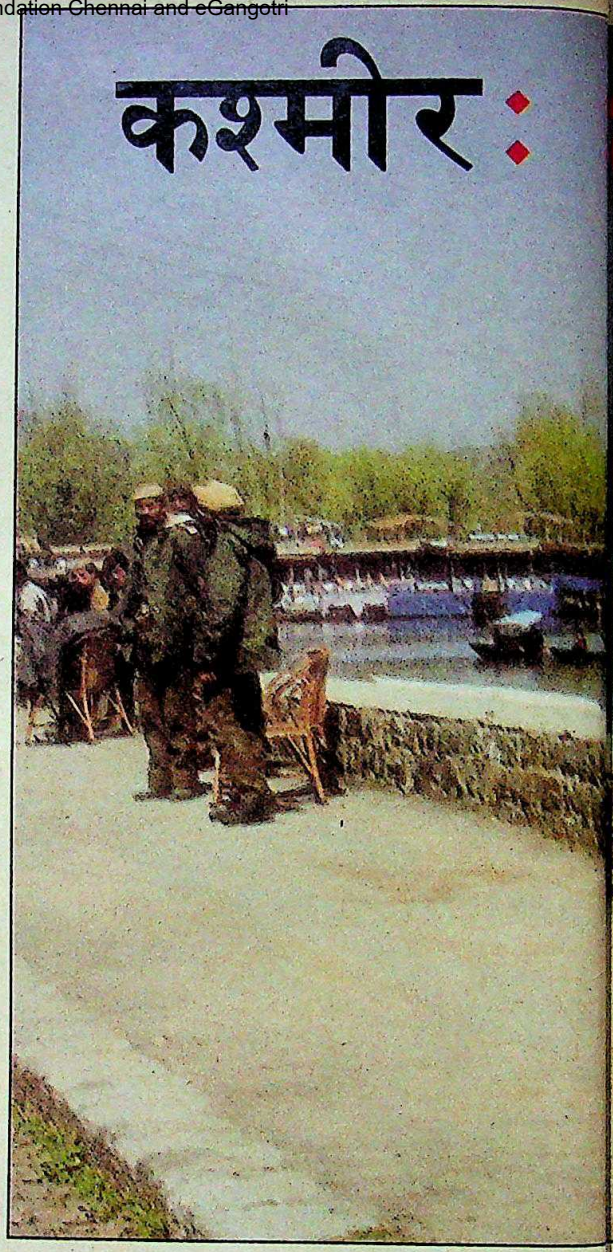

■ श्रीनगर में डल झील के किनारे कभी पर्यटकों और वाह

■ उग्रवादियों के वीडियो कैसेट के दृश्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो भवान सिंह

वादी में विनाश

और वाह गहमी रहती थी मगर आज वीरानी है, अलबत्ता बंदूकधारी दिखते हैं

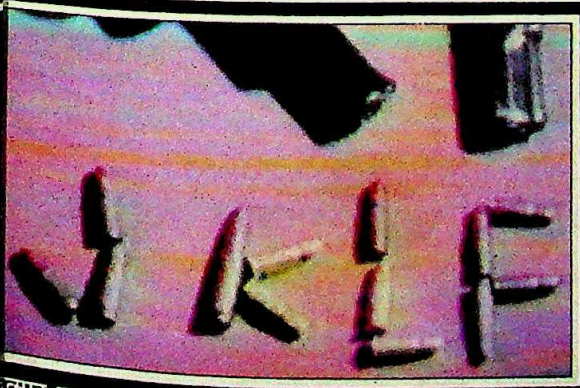

ट के दृश्य त्साह बढ़ाता पुलिस अधिकारी; गोलियों से जेकेएलएफ और श्रीनगर में अलगाववादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पसंख्यकों (जो कुल आबादी की 4 फीसदी हैं) में से कोई 90,000 लोग अपना घर-बार और करोड़ों की संपत्ति छोड़कर पलायन कर गए हैं. हाल के भारतीय इतिहास में यह निश्चित रूप से सबसे बड़ा पलायन है. मुंशीबाग और रावलपुरा में मकान के मकान उजाड़ पड़े हैं. उधर त्राल, सोपोर और बारामूला के 30,000 से अधिक सिख दुकानदारों और किसानों ने मांग की है कि उन्हें पलायन से रोकने के लिए सुरक्षा मुहैया कराई जाए.

आतंकवादियों की कृपा से चलने वाले कुछ स्थानीय अखबार इस पलायन की वजह अतिशयोक्तिपूर्ण भारतीय प्रचार बता रहे हैं. शिक्षित अभिजात वर्ग, जो कल तक नरमपंथी था और आज अलगाववादी बन गया है, पीयूसीएल के व्यग्र विचारकों को वही सब कुछ बता रहा है जो वे सुनना चाहते हैं. यानी वे कह रहे हैं कि उनका आंदोलन धर्मनिरपेक्ष है और पलायन कर रहे हिंदू भाजपा के प्रचार के शिकार हैं. लेकिन अपनी जड़ें, संपत्ति, मूल्य-प्रणाली और रोजमर्रा के जीवन की अंतरंगता छोड़कर भागने वाले किसी भी परिवार से पूछिए तो वह इसे एकदम सफेद झूठ बताएगा.

डॉ. (श्रीमती) धर से पूछिए जिनका परिवार पीढ़ियों से श्रीनगर में रहता आया था. कट्टरपंथियों की धमकी के कारण एक महीने पहले वे अपने परिवार के साथ जम्मू चली गईं. वे और उनकी बहनें पिछले पखवाड़े बुर्का ओढ़कर वापस आईं (मर्द इतने डरे हुए थे कि उनके साथ नहीं आए). या फिर उस अवकाशप्राप्त सूबेदार मेजर से पूछ लीजिए जिनके किराएदार के. कौल को 5 अप्रैल को बड़ी बेरहमी से गोलियों से भून दिया गया. उसके कुछ ही दिन बाद सूबेदार को मार डालने की धमकी दे दी गई. सूबेदार काम पर था और डर वापस घर नहीं आया. उसकी बेटियों ने कुछ ही घंटों के भीतर ट्रक किराए पर लिया और उस पर अपना सारा सामान लाद लि इसके बाद तय स्थान पर अपने पिता से मिलीं और सीधे जम्मू के शरणार्थी शिविर की ओर रवाना हो गईं.

उसी दिन सूबेदार भूषण लाल श्रीनगर की छावनी में कमांडिंग अफसर के कमरे में घुसकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रहे थे. वे छुट्टी लेकर बिजबेहाड़ा में अपने परिवार से मिलने गए लेकिन वहां मंडरा रहे आतंकवादी उनके पीछे पड़ गए. वे तड़के छोड़कर छावनी आ गए और अधिकारियों से अनुरोध किया बिजबेहाड़ा में उनकी मां और दो बेटियों की सुरक्षा की व्यवस्था जाए. वे सिर्फ इतना ही चाहते थे कि उनके परिवार के लोगों को से सुरक्षित निकाल लिया जाए. और अगर ऐसा हुआ तो वे फिर क वापस नहीं जाएंगे, भले ही उनकी सारी कमाई—एक छोटा बगी और एक घर—मिट्टी में मिल जाए.

वे बेवजह नहीं भाग रहे हैं. कश्मीर में 1953 और 1964 में उथल-पुथल हुई थी. लेकिन लोगों ने पलायन नहीं किया. इसकी स बड़ी वजह यह थी कि अलगाववादी ताकतों के नेता धर्मनिरपेक्षता समर्थक थे और वे बेकसूरों की हत्या नहीं करते थे. लेकिन आज उ आंदोलन पर पाकिस्तान समर्थक कट्टरपंथी जमात-ए-इस्लामी अ इसके हिजबुल मुजाहिदीन व अल्ला टाइगर आतंकवादी गुटों प्रभुत्व कायम हो गया और पाकिस्तान तथा सऊ अरब उसे धन मुहैया क रहे हैं.

जो आंदोलन क जातीय पहचान या कश्मीरियत की रक्षा जनआंदोलन हुआ करता (और धारा 370 कश्मीरियत की सांकेति संरक्षक मानी जाती थी उसी आंदोलन को कट्टरप उन्माद ने निगल लिया कट्टरपंथियों ने आंदोलन बागडोर अपने हाथ में ले है. कभी उदारवादी सू मत के प्रभाव में रही घा का आध्यात्मिक मार्गद भी आज यही तत्व रहे हैं.

आज आंदोलन मस्जि से संचालित हो रहा है उन पर लगे हजारों लाउ स्पीकरों से जेहाद छेड़ने पाठ पढ़ाया जा रहा है. नहीं, रोजमर्रा के जीवन भी कट्टरपंथी संस्कृति हमला होने लगा है. लोगों कहा जा रहा है कि वे दा रखें, पारंपरिक कश्मी लिबास पहनें, पाकिस्तानि की तरह घड़ियां दाहि कलाई पर बांधें और वहां

■ कश्मीर के दक्षिणी जिले अलगाववादी सरगर्मी के मुख्य केंद्र रहे हैं

चार्ट: बी.के. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समयानुसार उन्हें आधा घंटा पीछे कर ले. भारतीय 'पतन' के प्रतीक सिनेमा घर, ब्यूटी पार्लर और वीडियो पार्लर पिछले छह महीने से बंद पड़े हैं. अब वहां रविवार के बदले शुक्रवार को छुट्टी मनाई जाती है. भारतीय अखबार भी अब वहां नहीं बंटते. कुपवाड़ा की गलियों के कुत्तों के गलों में तख्तियां लटकाई हुई हैं जिन पर 'भारतीय कुत्ते' लिखा हुआ है. और बगल के खाक में पेड़ों पर भारतीय सैनिकों के पुतले लटकाए हुए हैं. पास के सोपोर में आतंकवादियों ने नागरिकों के वाहनों पर अपना रोड टैक्स लगाया हुआ है.

घाटी में लगभग हर जगह भारतीय संस्थान वीरान पड़े हुए हैं. पूरी घाटी में बैंकिंग प्रणाली ठप है. डाकघरों में चिट्ठियों का ढेर लगा हुआ है. वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया हुआ है. और शीतकालीन राजधानी जम्मू में कार्यरत मुस्लिम सरकारी कर्मचारियों ने धमकी दी है कि अगर उन्हें वापस श्रीनगर न भेजा गया तो वे हड़ताल कर देंगे. इसी तरह अल्पसंख्यक समुदाय के अफसरों का कहना है कि गर्मियों में राजधानी भले ही श्रीनगर चली जाए मगर वे वहां नहीं जाएंगे.

राज्य में खेती का कामकाज यथावत चल रहा है और धान की फसल ज़ोरों पर है. लेकिन वाणिज्य और व्यापार ठप पड़ा है. परिवहन, मशीनों और काष्ठ उद्योगों ने काम करना बंद कर दिया है. होटल खाली पड़े हैं, शहर के प्रतिष्ठित होटल ओबेरॉय पैलेस के आधे कर्मचारियों ने शहर छोड़ दिया है. मतलब साफ है कि पर्यटकों का मौसम शुरू होने के पहले ही खत्म हो गया है.

कर्फ्यू से जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है. कर्फ्यू में जैसे ही थोड़ी ढील मिलती है कि लोग खरीदारी के लिए चोरी-छिपे गलियों में निकल आते हैं. सिगरेट, गोश्त और ताजा सब्जी तो दुर्लभ हैं. हालांकि लोगों ने तंगहाली महसूस करनी शुरू कर दी है, लेकिन उनके पास अभी खाने के लिए है. वैसे, पाकिस्तान के इस प्रचार से भी उनके हौसले बने हुए हैं कि प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो राहत रकम के रूप में करोड़ों रु. इकट्ठा करेंगी. कर्फ्यू में ढील के दौरान जनजीवन सतही तौर पर सामान्य दिखता है. लेकिन हकीकत यह है कि सैनिक छावनी के अभयारण्य में भी जीवन सामान्य नहीं है. सैनिक स्कूल बंद कर दिए गए हैं और अभिभावकों को उनके बच्चों के स्थानांतरण प्रमाणपत्र दे दिए गए हैं.

कर्फ्यू में ढील के दौरान बंदूकधारी हमला करते हैं. उनकी रणनीति साफ है. सुरक्षा कर्मचारियों पर गोली चलाओ या बम फेंको, किसी सरकारी कर्मचारी की हत्या कर दो और भाग जाओ. अपनी इस रणनीति के तहत वे जवाबी कार्रवाई के लिए सुरक्षा बलों को मजबूर कर देते हैं और जब सुरक्षा बलों की गोली से बेकसूर नागरिक मारे जाते हैं तो भारत विरोधी भावनाएं और भड़क जाती हैं.

सरकारी अनुमान के मुताबिक, घाटी में 2,000 से 5,000 के बीच स्वचालित हथियारों की तस्करी हुई है. इनमें से ज्यादातर चीन निर्मित एके-47 राइफलें हैं. प्रशिक्षित बागियों की संख्या 600 के आसपास है. लेकिन घाटी के लगभग हर गांव में उनसे सहानुभूति रखने वालों की तादाद बढ़ रही है. इससे बागियों का सूचनातंत्र मजबूत हो गया है. इस तरह ये लोग अर्द्ध-सैनिक बलों, पुलिस तथा सीआरपीएफ के 20,000 जवानों के लिए समस्या बन गए हैं.

सुरक्षा बलों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उग्रवादी गतिविधियों में लगे लोगों में सरकारी कर्मचारी, शिक्षक, डॉक्टर, वकील, पूर्व विधायक और पुलिस के जवान भी शामिल हैं.

अलगाववादियों के निशाने अब सैनिक ठिकाने हो गए हैं. उनके पास टैंकभेदी बारूदी सुरंग, रॉकेट लांचर और दूर से विस्फोट कराने वाले उपकरण पहुंच गए हैं. अनेक जगहों पर सेना की संचार व्यवस्था भंग कर दी गई है. कुपवाड़ा में सैनिक ठिकानों पर काम कर रहे गैर-सैनिक लोगों को जान से मारने की धमकियां मिली हैं.

लोगों का मानना है कि ऐसा अचानक नहीं हुआ. सरकारी दस्तावेजों से पता चलता है कि जगमोहन ने 1988-89 के दौरान राजीव गांधी को संदेश भेजा था कि फारूक अब्दुल्ला सरकार की पकड़ समाप्त हो चुकी है और अलगाववादी-उग्रवादी मजबूत हो रहे हैं. लेकिन उनकी चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया गया.

बगावत जैसी यह स्थिति लाने में जो घटनाएं सहायक बनीं उनकी ओर इशारा करना असंभव नहीं है. सबसे पहले तो फारूक सरकार ने उस दौर में पाक प्रशिक्षित 70 उग्रवादियों को छोड़ दिया जब उग्रवाद उभर ही रहा था. अलगाववादियों ने इसे अपनी महत्वपूर्ण विजय माना. उनका मनोबल उस समय और भी बढ़ गया जब वी.पी. सिंह की सरकार डॉ. रूबाइया सईद की रिहाई के

हताहतों की श्रेणी और संख्या

श्रेणी-1	
आतंकवादियों के हाथों मारे गए बेगुनाह लोग जिनमें सुरक्षाकर्मी भी शामिल	54
श्रेणी-2	
पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों द्वारा आत्मरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के दौरान और मुठभेड़ों में मारे गए लोग/उग्रवादी	66
श्रेणी-3	
सैनिक काफिलों या सैनिकों के बच्चों को ले जा रही स्कूल बसों पर हमला करते वक्त सुरक्षा सैनिकों द्वारा मारे गए विध्वंसकारी/उग्रवादी	31
श्रेणी-4	
सीमा पार करते वक्त मारे गए अलगाववादी	23
श्रेणी-5	
राष्ट्रसंघ अधिकारी की जीप का बचाव करते सुरक्षा सैनिकों द्वारा मारे गए लोग	2

पहली बार 'तलाश है' वाली सूचियां घुमाई जा रही हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदले में 42 कट्टर आतंकवादियों को छोड़ने पर सहमत हो गई. फाइलें देखने से पता चलता है कि फारूक सरकार ने इन्हें छोड़ने का फैसला आतंकवादियों से समझौता वार्ता के बाद नहीं बल्कि रूबाइया के अपहरण के दिन ही कर लिया था.

सरकार में बैठे कुछ नरमपंथियों को उम्मीद थी कि इस कदम से उग्र आतंकवादी समझौते की बातचीत के लिए राजी हो जाएंगे. लेकिन हुआ इसका उलटा. इससे उनका हौसला और बुलंद हो गया. अलगाववादियों ने भारत के खिलाफ अपनी पहली लड़ाई जीत ली थी. समझौते की बातचीत के लिए कुछ भी नहीं बचता था. उन्होंने अपना आतंक तेज कर दिया.

जगमोहन की नियुक्ति से स्थिति हाथ से खिसक गई. इसकी वजह यह थी कि नई दिल्ली के पास कश्मीर के बारे में कोई स्पष्ट नीति नहीं थी और उसने 21 जनवरी को झड़पों के बाद, जिसमें सुरक्षा कर्मचारियों ने हिंसा पर उतारू पाकिस्तान समर्थक प्रदर्शनकारियों को मार डाला था, नए प्रशासन के हाथ बांध दिए थे. सरकार पस्त दिखी. इससे आतंकवादियों के नापाक इरादों को ताकत मिली.

अलगाववादियों ने भारत सरकार को उस मुकाम पर ला खड़ा कर दिया है जहां वे चाहते थे. यानी समस्या के निबटारे को लेकर सरकार बंट गई. फिलहाल सत्ता में बैठी तीन हस्तियां कश्मीर की समस्या को अपने-अपने तरीके से सुलझाने की कोशिश में हैं. पहली हस्ती हैं, गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद, जिनकी अपने ही गृहराज्य में कोई साख नहीं है. वे कभी कानून-व्यवस्था बहाल करने के लिए कड़े कदम उठाने की बात करते हैं तो कभी विधानसभा को पुनरुज्जीवित करने की. दूसरी हस्ती हैं कश्मीर मामलों के मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस. कश्मीर की राजनीति की जटिलताओं से अपरिचित फर्नांडीस का मानना है कि केंद्र को आतंकवादियों के साथ-साथ नेशनल कांफ्रेंस के कुछ नेताओं से भी बात करनी चाहिए. और तीसरी हस्ती हैं राज्यपाल जगमोहन जो राज्य की प्रशासनिक मशीनरी को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए खुली छूट मांग रहे हैं. मुफ्ती और फर्नांडीस में कोई तालमेल नहीं है और फर्नांडीस जगमोहन को खुलेआम अपमानित करते हैं.

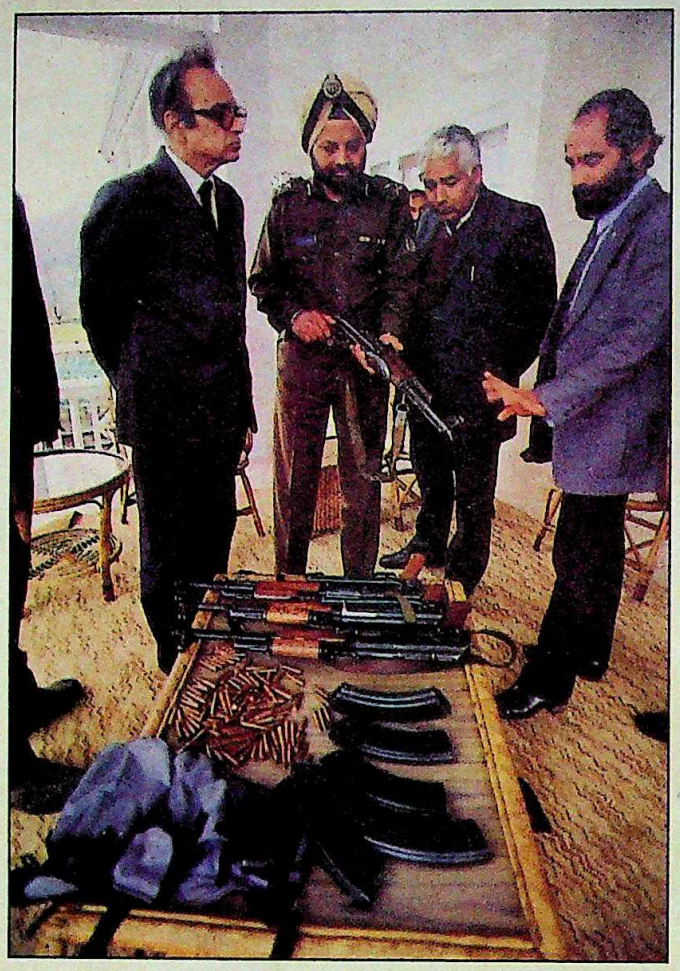

■ जब्त हथियारों का मुआयना करते जगमोहन और सैन्याधिकारी

आतंकवादियों से संपर्क करने के लिए फर्नांडीस जब भी घाटी जाते हैं, राजभवन को न तो उनकी गतिविधियों की जानकारी दी जाती है और न ही यह बताया जाता है कि उन्होंने किस-किस से बात की. यही नहीं, उनके कुछ कदमों से तो जगमोहन प्रशासन को अपने कठोर फैसले तक बदलने पड़े. मसलन, 2 अप्रैल को जब राज्य प्रशासन ने मारे गए आतंकवादी अशफाक मजीद को दफनाने के लिए जुलूस निकालने की इजाजत नहीं दी तो फर्नांडीस ने आतंकवादियों के स्वयंभू प्रतिनिधियों के एक दल से बातचीत करने के बाद उन्हें जुलूस निकालने की इजाजत दे दी. इसमें तीन लाख लोग शामिल हुए. इन्हें संबोधित करने वालों में कुछ कुख्यात आतंकवादी भी थे जिनकी प्रशासन को तलाश है. फर्नांडीस ने राज्यपाल द्वारा बरखास्त जेल अधीक्षक सहित कुछ विवादास्पद सरकारी अधिकारियों से भी मुलाकात की.

केंद्र का मानना है कि उसने बातचीत के सभी माध्यमों को खुला रखने के लिए ही दुलार-फटकार की नीति अपनाई है. लेकिन इससे राज्य के प्रशासकों के लिए बड़ी विकट स्थिति पैदा हो गई है. उनका मानना है कि जब लाबिइंग करने वाले व्यवस्था की अनदेखी कर फर्नांडीस से बातचीत या मुफ्ती से अपील कर सकते हैं तो भ्रष्ट अधिकारियों और उनके सहयोगियों के खिलाफ कार्रवाई करना बहुत मुश्किल काम है.

यहां तक कि आज की स्थिति में कोई कामचलाऊ राजनैतिक समाधान भी नहीं दिखता. नेशनल कांफ्रेंस जीर्ण-शीर्ण हो गई है और उसके सदस्य उससे नाता तोड़ रहे हैं. उसके सांसद मजबूत सुरक्षा दस्ते के बिना घाटी में घुसने की हिम्मत नहीं करते. और उसके संस्थापक शेख अब्दुल्ला की कब्र की दो सुरक्षा कंपनियां रात-दिन चौकसी कर रही हैं क्योंकि आतंकवादियों ने उसे खोद देने की धमकी दी है. मौलवी फारूक भी किले जैसी सुरक्षा वाले मकान में रह रहे हैं और इस बात पर जोर दे रहे हैं कि इसकी चौकसी का जिम्मा केंद्रीय सुरक्षा बलों को सौंपा जाए न कि राज्य पुलिस को.

फर्नांडीस जब घाटी में आते हैं तो आतंकवादी खुलेआम उनके बहिष्कार का

मारे गए कश्मीरी पंडितों की सूची

पी.एन. भट्ट	27.12.89
एम.एल. भान	15.1.90
एस.के. टिक्कू	2.2.90
टी.वी. राजदान	12.2.90
लस्सा कौल	13.2.90
एन. सप्रू	27.2.90
पी.एन. हंडू	1.3.90
बी.के. गंजू	19.3.90
ए.के. रैना	20.3.90
के.के. कौल	5.4.90
ए.के. वजी	(तिथि अपुष्ट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078595

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chennai and eGangotri

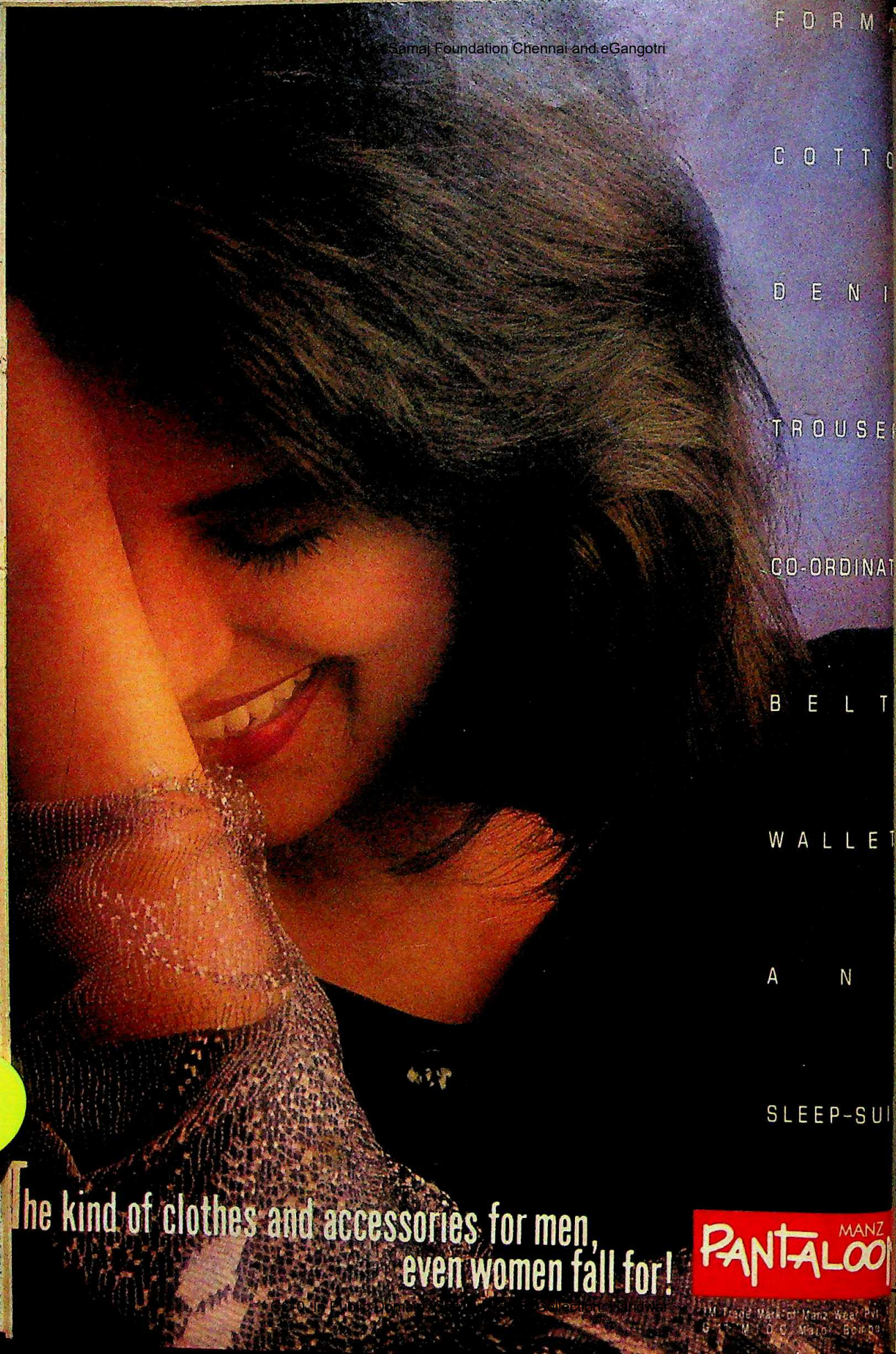

CC-0. In Public Domain. Sri Pratap College, Srinagar. Collection: Panjab

TM Trade Mark of Manz Wear Pvt. Ltd. Bombay

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फतवा जारी करते हैं. वकील मियां कयूम, बटमालू के इमाम गुल बख्शी, नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले जी.एन. हागरू और पत्रकार सानउल्ला बट्ट, जिनसे फर्नांडीस ने संपर्क करने की कोशिश की, भारत के समर्थक तो कतई नहीं हैं. कयूम का कहना है कि कश्मीर को शिमला समझौते के तहत बंधक बनाकर नहीं रखा जा सकता. उनकी बस एक ही मांग है—कश्मीर को आजाद करो. लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि ये किन लोगों के प्रतिनिधि हैं. और किस हैसियत से बात कर रहे हैं.

■ एचएमटी के महाप्रबंधक खेड़ा का शव उनके निवास पर

आतंकवादी आजादी से कम किसी भी चीज पर राजी नहीं हैं. और भारत सरकार संविधान के दायरे के बाहर कुछ भी करने को तैयार नहीं. ये दोनों स्थितियां एक-दूसरे के एकदम प्रतिकूल हैं. सिद्धांत बघारने, विश्लेषण करने और ऐतिहासिक कारणों की दुहाई देने का समय खत्म हो गया है. घाटी में नई दिल्ली की हुकूमत सिर्फ राजभवन से गुपकार रोड होते हुए बगल के शीतकालीन सचिवालय तक चलती है. इस मार्ग के दोनों तरफ 200 गज तक आतंकवादी क्षेत्र है. मिसाल के लिए सिर्फ एक तथ्य पर गौर फरमाइए. प्रशासन जब सुबह 6 बजे से 10 बजे तक कर्फ्यू में ढील देता है तो आतंकवादी वहां अपना कर्फ्यू लगा देते हैं. नतीजतन सड़कों पर एक भी आदमी नहीं निकलता. दुकानदार अपनी दुकानें नहीं खोलते.

जनजीवन में जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होती है. लोग उसी की सुनते हैं जो अपने हुक्म की तामील करवाने

फारूक अब्दुल्ला सरकार द्वारा रिहा किए गए आतंकवादी

जुलाई और दिसंबर 1989 के बीच फारूक अब्दुल्ला सरकार ने 70 कट्टर आतंकवादी रिहा किए. उनमें कुछ के नाम नीचे दिए गए हैं. सभी नजरबंदियों की पुष्टि जम्मू-कश्मीर हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली सलाहकार समिति ने की थी.

मुहम्मद अफजल शेख (त्रेहगाम)
सीमा पार चला गया. पाक अधिकृत कश्मीर के अथमुकाम में अपने रिश्तेदार मुहम्मद वानी के घर ठहरा. प्रशिक्षण के लिए पेशावर पहुंचा. जेकेएलएफ के फांसी चढ़े नेता मकबूल बट के बेटों जावेद और शौकत से मुजफ्फराबाद में भेंट की. अपने खून से अंगूठा लगाकर पाक अधिकृत कश्मीर के प्रति वफादारी की कसम खाई. बम विस्फोट से दो बसों को क्षतिग्रस्त किया.

रफीक अहमद एहंगर
22 अगस्त 1988 को बरास्ता लीपा पाकिस्तान पहुंचा. विस्फोटकों का प्रशिक्षण लिया. उनके विस्फोटों में शामिल.

मुहम्मद अयूब नाजर
25 अगस्त 1989 को जामिया मस्जिद के नजदीक मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार हुआ. सार्वजनिक सुरक्षा कानून के तहत नजरबंद. डॉ. रूबाइया सईद के अपहरण के दिन, 8 दिसंबर 1989 को कृषिमंत्री मुहम्मद शफी के दफ्तर में उसे 45 दूसरे लोगों के साथ रिहा करने का फैसला किया गया.

फारूक अहमद गनई
खालिद छद्मनाम के तहत पाकिस्तान गया. अंदरूनी गड़बड़ी का प्रशिक्षण लिया. मुजफ्फराबाद में राजा मुजफ्फर खां के घर अमानुल्ला खां से भेंट की. बम विस्फोटों, आगजनी और लूट-मार में शामिल रहा.

गुलाम मुहम्मद गुजरी
अत्याधुनिक हथियारों के प्रशिक्षण के लिए अगस्त 1988 में कुपवाड़ा जिले के बुंगना बाला के रास्ते पाकिस्तान पहुंचा. वहां उसका प्रशिक्षण पूरा होने पर उसे एक कलाश्निकोव बंदूक, दो मैगजीनें, 200 गोलियां तथा विस्फोट पदार्थ दिए गए. बम विस्फोट की एक घटना के बाद गिरफ्तार.

फारूक अहमद मलिक
हथियारों और विस्फोटों के प्रशिक्षण के लिए अब्दुल अहद वाजा की मदद से रोशनपुर के रास्ते पाकिस्तान पहुंचा. अमानुल्ला खां से भेंट की. श्रीनगर के तारघर में बम विस्फोट के बाद गिरफ्तार.

नजीर अहमद शेख
हथियारों के प्रशिक्षण के लिए पाकिस्तान पहुंचा. राजा मुजफ्फर खां के घर ले जाया गया. अमानुल्ला खां से भेंट की. लौटने पर अनंतनाग बम विस्फोट में भूमिका के लिए गिरफ्तार.

गुलाम मोहिउद्दीन तेली
जमात-ए-इस्लामी का कट्टर कार्यकर्ता. एक जासूसी तंत्र में प्रमुख सहभागी. उसके निर्देशन में हंदवाड़ा के दो निवासी भारतीय सेना की जासूसी का प्रशिक्षण लेने के लिए पाकिस्तान गए. पाकिस्तान गुप्तचरों को सूचनाएं देता रहा.

रियाज अहमद लोन
पाकिस्तान में प्रशिक्षित. अनेक बम विस्फोटों में शामिल.

फारूक अहमद ठाकुर
25 अगस्त 1989 को जामिया मस्जिद के नजदीक सुरक्षा सेनाओं के साथ मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार. उससे भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ताकत रखा है. आज यह ताकत उग्रवादियों के पास है. सरकार के सामने प्रमुख समस्या अपनी सत्ता का सिक्का फिर जमाने की है. साथ ही यह जता देना भी निहायत जरूरी है कि देश अपनी रत्ती भर जमीन भी नहीं छोड़ने वाला. फारूक सरकार के समय इस तरह के रुख की कमी और अब वी.पी सिंह की सरकार में उद्देश्य के प्रति स्पष्टता न होने की वजह से ही राज्य प्रशासन अस्तव्यस्तता के हाल में पहुंच गया है. और इस सब का फायदा निश्चित रूप से अलगाववादियों को मिला है.

कश्मीर के प्रशासनिक ढांचे पर से खत्म हो चुकी भारत की पकड़ फिर से कायम करने में हो रही देरी और असमंजस की स्थिति से पाकिस्तान और उग्रवादियों दोनों को मनमांगी मुराद मिल गई है. वे समय चाहते थे और वह उन्हें मिल गया है. वैसे भी उनकी चाल यही है कि नई दिल्ली को इस हद तक परेशान कर दिया जाए कि कश्मीर पर हो रहा बेतहाशा खर्च उठाना असंभव जान पड़े, या फिर भारत की सीमा के अंदर ही एक बना-बनाया पाकिस्तान हरदम तैयार रहे ताकि पाकिस्तान अपनी मर्जी से जब-जब चाहे मुश्किलें खड़ी करता रहे.

केंद्र का खयाल है कि आखिर में तो जीत उसी की होगी क्योंकि जब घाटी के कट्टरपंथियों के आर्थिक स्रोत सूखने लगेंगे और जब वे भली-भांति जान लेंगे कि वे भारत की पकड़ ढीली नहीं कर सकते, तब वे थक-हारकर केंद्र के साथ मिलकर समाधान ढूंढ़ना चाहेंगे. लेकिन इसी तरह के सोच का पंजाब में ठीक विपरीत अंजाम हुआ है.

कश्मीर में बरसों तक मूक दृष्टा रहने के बाद अब इस तरह का रुख रखने से हालात और भी खतरनाक साबित हो सकते हैं. घाटी में दूरदराज के गांवों में बने प्रशिक्षण केंद्रों को तहस-नहस करने के लिए सुरक्षा बल जितनी ज्यादा देर तक ऊपर से आदेश के मिलने का इंतजार करेंगे, उतनी देर में आतंकवादियों के कई झुंड ज्यादा तैयारी के साथ कहर बरपाने निकल चुकेंगे. कार्रवाई में इधर से जितनी देरी होगी, उधर उतने ही जानलेवा हथियार जमा होते जाएंगे. और अब तो उनके पास स्टिंगर मिसाइलें भी हैं. यही नहीं, उनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होती जाएगी, तादाद बढ़ेगी और उनके लिए अंतरराष्ट्रीय जनमत भी तैयार होता जाएगा.

केंद्र जितनी देर से चेतेगा, उतनी ही ज्यादा हिंसात्मक अलगाववादी भिड़ंत का अंदेशा रहेगा. इस देरी के नतीजे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तो बुरे होंगे ही, साथ ही देश के 9.8 करोड़ मुसलमानों के नजरिए पर भी अवांछित असर पड़ेगा.

■ कश्मीर विवि कुलपति हक के शव के साथ उनके संबंधी

इस समय धीरे-धीरे, पर लगातार पड़ने वाले दबाव से बहुत कुछ हासिल हो सकता है. पिछले सप्ताह राज्यपाल ने अलगाववादी क्रियाकलापों में शामिल 75 सरकारी कर्मचारियों की बरखास्तगी, हथियारों के लिए घरों की तलाशी, प्रशिक्षण केंद्र पर छापे, अनिश्चित काल के कर्फ्यू और सीमा पार करने की कोशिश कर रहे 200 से भी ज्यादा लोगों की गिरफ्तारी जैसे उपायों के जरिए उग्रवादियों पर दबाव बना लिया है. राज्य सरकार ने तो कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति, उनके सहायक और एचएमटी के महाप्रबंधक के अपहरण के मामले में भी घुटने टेकने से इनकार कर दिया. हालांकि इसके नतीजे दुखद निकले.

इस समय केंद्र कड़ी कार्रवाई के पक्ष में दिखता है. लेकिन आगे का काम इतना सरल नहीं है. केंद्र को हर हालत में कश्मीर में अपनी सत्ता और अधिकार जताने होंगे. सरकारी दफ्तर, बैंक, होटल, डाकघर खोलने होंगे. परिवहन सेवाएं सामान्य करने की कोशिश करनी होगी, चाहे इसके लिए बल प्रयोग ही क्यों न करना पड़े.

साथ में, केंद्र को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सस्ती दरों से पेट्रोल और टेलीफोन नेटवर्क की सुविधा अलगाववादियों के लिए एक तरह से वरदान ही साबित हो रही है. अब सवाल यह उठता है कि जो लोग मुल्क के खिलाफ लड़ाई छेड़ चुके हैं, उनको परिवहन और संचार की सुविधा देना क्या जरूरी है? जो सरकारी कर्मचारी संविधान में आस्था जताने को तैयार नहीं उन्हें नौकरी पर क्योंकर रखा जाए? उन्हें सरकारी खजाने से पैसा क्यों दिया जाए? जिन मस्जिदों से लाउडस्पीकरों पर देश के खिलाफ जेहाद छेड़ने का ऐलान होता रहता है, उन्हें बिजली क्यों दी जाए? घाटी में भारत का शासन फिर से चलाने के लिए ऐसे ही कड़े फैसलों की जरूरत है.

कश्मीर में, जहां केंद्र सरकार अनुदानों के रूप में 70,000 करोड़ रु. खर्च कर चुकी है और जिसकी खातिर दो लड़ाइयों में भारतीय सैनिकों का खून बहा है, राष्ट्र को आज सबसे गंभीर चुनौती से जूझना पड़ रहा है. यह चुनौती है उस आधार और उन मूल्यों की जिन पर इस राष्ट्र की एकता-अखंडता का ढांचा खड़ा हुआ है. आसान विकल्प अब काम के नहीं रहे. और जो तात्कालिक सदमे लगे हैं उनकी वजह से हालात ठीक करने की सतत चलने वाली प्रक्रिया नहीं रुकनी चाहिए. देश अब उस किराएदार की तरह व्यवहार नहीं कर सकता जिसे मकान खाली करने का नोटिस दे दिया गया हो.

—इंद्रजीत बधवार, श्रीनगर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

फिर अंधेरी सुरंग में

दमन की नीति छोड़े बगैर किसी कार्ययोजना के सफल होने की उम्मीद नहीं

संकेत स्थिति का स्पष्ट वर्णन कर देते हैं. पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने वाला विधेयक लोकसभा में पर्याप्त समर्थन के अभाव में गिर गया और राष्ट्रीय मोर्चा सरकार संवैधानिक संकट में फंस गई. फिर 3 अप्रैल को बटाला में रामनवमी के जुलूस पर बम फेंका गया जिसमें 33 लोग मरे और 100 से अधिक लोग जख्मी हुए.

ये दोनों घटनाएं बताती हैं कि सरकार पंजाब समस्या के समाधान के लिए प्रभावी राजनैतिक उपाय ढूंढ़ पाने में किस तरह नाकाम रही है और आतंकवादी हिंसा में किस कदर तेजी आई है. इनसे स्पष्ट हो गया कि नई सरकार के आने पर बंधी शुरुआती उम्मीदों के बाद पंजाब फिर उसी अंधेरी सुरंग में पहुंच चुका है जहां से आगे का कोई रास्ता नहीं दिखाई पड़ता.

केंद्र सरकार ने पंजाब में जल्दी चुनाव करवाकर लोकप्रिय सरकार गठित कराने का वादा किया था. लेकिन कई हफ्तों तक असमंजस में पड़े रहने के बाद पंजाब में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने का संविधान संशोधन विधेयक लाना इस मामले में उसकी असफलता का प्रमाण है. इससे भी बड़ी बात यह है कि विवादास्पद 59वें संविधान संशोधन खारिज करने के कुछ ही महीने के भीतर सरकार को राष्ट्रपति शासन बढ़ाने की जरूरत पड़ गई.

किसी तरह, इंका के समर्थन से, पारित हुआ यह विधेयक बता देता है कि पंजाब में आगे क्या कुछ होने वाला है. इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण था बटाला में फैली अफरातफरी और तनाव जिसके चलते शहर में कर्फ्यू लगाना पड़ा. ऐसी ही स्थिति 1986 में आई थी जब आसपास के गांववालों ने शहर घेर लिया था. इस अंदेशे को टालने के लिए भी कर्फ्यू जरूरी था. बटाला और अमृतसर के अस्पतालों में भर्ती इस बम कांड के घायलों को देखने के लिए जब गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद और राज्यपाल निर्मल कुमार मुकर्जी पहुंचे तो वहां मौजूद लोगों ने उनके खिलाफ नारे लगाए और रोकने की कोशिश की. दो दिन बाद दिल्ली आ रही बस में हुए विस्फोट से हालत की गंभीरता और उजागर हुई.

पीटीआई

पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने के फैसले की अकालियों ने निंदा की है. कई लोगों को पंजाब समस्या सुलझा पाने की सरकार की क्षमता पर भी संदेह है

शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिगड़ती हालत से चिंतित प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने तुरंत राज्यपाल को दिल्ली बुलाया. इस बातचीत में गृहमंत्री, पंजाब के नवनियुक्त मुख्य सचिव एस.एल कपूर और पंजाब पुलिस प्रमुख कंवरपाल सिंह गिल भी शामिल हुए. राज्यपाल ने स्वीकार किया कि पिछले तीन महीने में आतंकवादी गतिविधियां 70 फीसदी बढ़ गई हैं.

केंद्र सरकार को दिए गए एक और विवरण में उन्होंने लिखा, "आतंकवाद विरोधी मोर्चे पर चुनाव के बाद सुरक्षा बलों के आत्मविश्वास में आई गिरावट के कारण ढिलाई आई है. अर्द्धसैनिक बलों पर कम भरोसा करना, सीमा पार से हथियारों और विस्फोटकों का लगातार आते रहना तथा राज्य में विधानसभा चुनाव को लेकर राजनैतिक अनिश्चितता कायम रहना इसके लिए जिम्मेवार है."

6 अप्रैल को दिल्ली में हुई बैठक में प्रधानमंत्री ने पंजाब के लिए बनी समयबद्ध कार्ययोजना को (देखें बॉक्स) सिद्धांततः मंजूरी दी जिससे राज्य में छह महीने के अंदर विधानसभा चुनाव करा सकने

अमृतसर अस्पताल में बटाला बम कांड के घायलों से मिलते मुफ्ती

पंजाब के राजनैतिक नेतृत्व का मतभेद यह बताता है कि वे उग्रवादियों की चुनौती मंजूर कर सकने की स्थिति में नहीं हैं और इससे निराशा होती है

आतंकवाद विरोधी कार्ययोजना

अंकुश की कोशिश

सरकार ने अगले छह महीनों के लिए आतंकवाद के विरोध में व्यापक प्रशासनिक और राजनैतिक रणनीति बनाई है. यह समयबद्ध 'कार्ययोजना' तीन चरणों में सामने आएगी.

पहला चरण आतंकवाद को घेरकर करीब दो महीनों के भीतर समाप्त करने का है. अनुमान है कि 178 पक्के और 733 'साधारण' आतंकवादी 85 गिरोहों में बंटे हैं. उनके पास 728 हथियार—एके-47, एके-54, एके-74 और एके-94 हैं. इन गिरोहों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए इस योजना में व्यक्तियों की सुरक्षा मजबूत करने की जगह आम लोगों पर आतंकवादी हमले रोकने को प्राथमिकता दी गई है. जवानों को यहां-वहां ड्यूटी पर जमाने की जगह पंजाब पुलिस की आतंकवाद विरोधी मारक क्षमता बढ़ाने पर लगाया जाएगा. आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित इलाकों में अर्द्धसैनिक बलों तथा पंजाब पुलिस के मारक दस्ते भी तैनात किए जाएंगे.

सीमा पर चौकसी बढ़ाने और सीमा से होकर आतंकवादियों के आने-जाने पर रोक लगाने के लिए अर्द्धसैनिक बलों और पंजाब पुलिस के दस्ते सीमा सुरक्षा बल के ठिकानों से भी आगे मोर्चा लगाएंगे. सीमा पर खास तौर से ध्यान देने लायक ये छह इलाके चुने गए हैं: गुरदासपुर क्षेत्र का ताश-पहाड़ीपुर इलाका, गुरदासपुर और अमृतसर जिले का पंजगढ़िया-मढ़ाई चीमा क्षेत्र, बुर्ज-फतेहपुर क्षेत्र, रानिया क्षेत्र और खेमकरण क्षेत्र (सभी अमृतसर जिला) तथा फिरोजपुर जिले का ममदोट-जलालाबाद क्षेत्र. सीमा से लगी 3 किलोमीटर पट्टी में शाम से भोर तक का कर्फ्यू लगाने का भी प्रस्ताव है.

योजना के पहले चरण की अन्य मुख्य बातें हैं:

- अर्द्धसैनिक बल पंजाब पुलिस प्रमुख के सीधे निर्देश पर काम करेंगे.
- बड़े आतंकवादियों के खिलाफ भेदियों और घुसपैठियों की सेवाएं अधिक प्रमुखता से ली जाएंगी.
- पुलिस के काम में मदद के लिए ग्रामीण स्वयंसेवक बलों को हथियार देकर विकसित किया जाएगा.
- पंजाब पुलिस को नवीनतम हथियारों से लैस किया जाएगा. पंजाब पुलिस ने बाबा आदम जमाने के थ्री नॉट थ्री राइफलों की जगह 10,000 सेल्फ लोडिंग राइफलों की मांग की है. साथ ही उसने एके-47 का मुकाबला करने के लिए तेजी से गोलियां छोड़ने वाली राइफलें भी मांगी हैं.

योजना का दूसरा चरण उग्रवादियों का वैचारिक मुकाबला करने का है. प्रशासन गांवों के लोगों में फैले इस भ्रम को तोड़ने की कोशिश करेगा कि आतंकवादियों का 'राज' कायम हो गया है. स्कूल तथा गुरद्वारों में लड़कों को आतंकवादियों द्वारा 'पाठ पढ़ाने' पर रोक लगाने तथा सीमा से लगे गुरद्वारों में नौजवानों को आतंकवाद का रास्ता अपनाने के लिए मनाने-फुसलाने पर रोक लगाने की कोशिश भी की जाएगी. आतंकवादियों द्वारा की जा रही लूट-खसोट बंद कराने पर भी ध्यान दिया जाएगा (केवल सीमावर्ती क्षेत्र में बंधक बनाने और लूट के काम में 2,000 अपराधी लगे हुए हैं). ऐसे लोगों को विभिन्न कानूनों के तहत बंद करके आतंकवादियों द्वारा धन जुटाने के धंधे पर रोक लगाने का भी प्रस्ताव है.

आतंकवाद पर अंकुश लगने के बाद शुरू होने वाला योजना का तीसरा चरण सुधार और पुनर्वास का है. आतंकवादियों द्वारा दिग्भ्रमित किए गए नौजवानों को मुख्य धारा में लाने के लिए यह काम होगा. इस दौरान आतंकवादियों से आत्मसमर्पण कराया जाएगा और ग्रामीण इलाकों में बड़े पैमाने पर जनसंपर्क अभियान चलाया जाएगा.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लायक माहौल बन सके. इस कार्ययोजना को तैयार करने के लिए दिल्ली और चंडीगढ़ में वरिष्ठ अधिकारियों की कई बैठकें हुईं. यह फैसला भी किया गया कि सरकार पाकिस्तान के खिलाफ कूटनीतिक पहल भी साथ-साथ करेगी.

पंजाब में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने की वहां की विभिन्न राजनैतिक पार्टियों ने जमकर आलोचना की. अकाली दल (मान) अध्यक्ष सिमरनजीत सिंह मान ने कहा, "शासक दल और विपक्ष लोकसभा चुनाव में जनता के सुनाए फैसले का निरादर कर रहे हैं और उनके लोकतांत्रिक अधिकार छीन रहे हैं."

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से अकेले मान ही निराश नहीं हैं. पिछले एक पखवाड़े में कई जनसभाओं को संबोधित करने वाले प्रकाश सिंह बादल ने लोगों से कहा, "नई सरकार से हमारी उम्मीदें खत्म होती जा रही हैं." शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक समिति के अध्यक्ष गुरचरण सिंह तोहड़ा ने भी प्रधानमंत्री से पंजाब पर एकपक्षीय घोषणा करने की अपील की. लेकिन कई लोग ऐसे भी हैं जो अब मानने लगे हैं कि पंजाब समस्या सुलझाना विश्वनाथ प्रताप सिंह के बस की बात नहीं है.

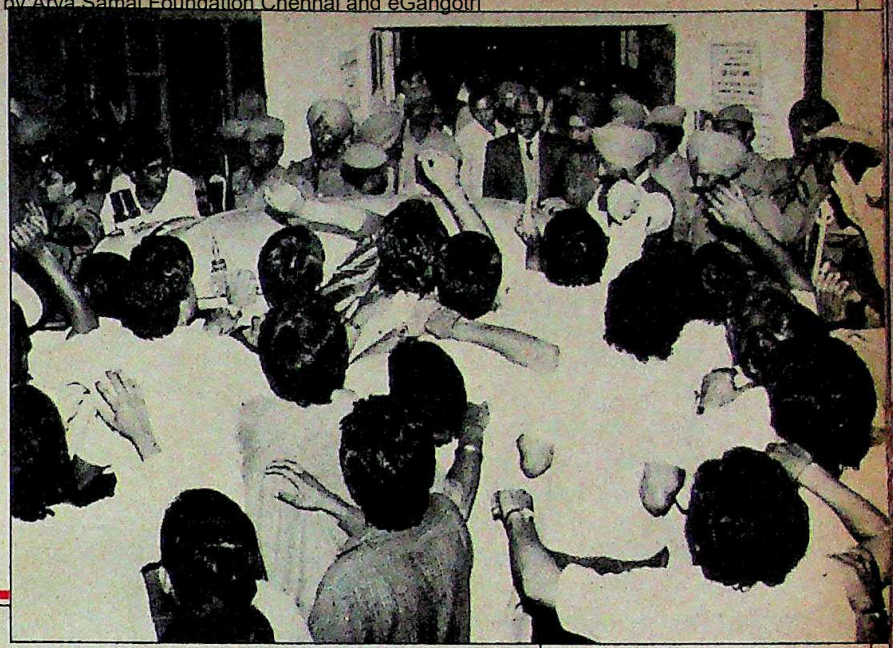

मुकर्जी के खिलाफ प्रदर्शन करते लोग

यह भावना जोर पकड़ती जा रही है कि जब तक राज्यपाल को बदला नहीं जाता तब तक पुलिस आतंकवादियों के खिलाफ कड़ाई नहीं कर सकती

पंजाब के राजनैतिक नेतृत्व में मतभेद होने से स्थिति और भी विकट हो गई है. मान और बादल के वाक्युद्ध में भिड़े होने से दोनों गुटों में एकता की कोई उम्मीद नहीं दिखती. फिर मान और उनकी पार्टी को मिलने वाला समर्थन तेजी से कम होता जा रहा है और उनके बेमतलब हो जाने का खतरा पैदा हो गया है. इस वजह से राजनैतिक बातचीत शुरू करने की सरकार की कोशिश पर पानी फिरता जा रहा है. राज्य की राजनीति में वापस आने की अकाली दल (बादल) की कोशिश भी बहुत सफल होती नहीं दिख रही. बादल गुट अंदरूनी लड़ाई से त्रस्त है.

इसके अलावा शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक समिति और सिख ग्रंथी भी विवाद में उलझ गए हैं. अकाल तखत प्रमुख दर्शन सिंह ने तोहड़ा की अपमानजनक टिप्पणियों पर आपत्ति करते हुए पद से इस्तीफा दे दिया. बाद में पांचों मुख्य ग्रंथियों ने तोहड़ा को माफी मांगने के लिए कहा. इन सारी घटनाओं से जाहिर है कि यदि पंजाब में चुनाव करवाया भी जाए तो राज्य का राजनैतिक नेतृत्व आतंकवादियों का सामना करने की स्थिति में नहीं है.

यहां तक कि मान गुट भी, जो फिलहाल पंजाब की एकमात्र विश्वसनीय पार्टी है, संकट के दौर से गुजर रहा है. इसमें दिवंगत भिंडरांवाले और उनके शिष्य अमरीक सिंह के परिवारों के बीच सत्ता संघर्ष चल रहा है. यह संघर्ष ऑल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन (एआईएसएसएफ) की अंदरूनी लड़ाई के रूप में सामने आ रहा है. राजिंदर सिंह मेहता की अगुआई वाले गुट ने, जो भिंडरांवाले परिवार का करीबी है, मंजीत सिंह पर आरोप लगाया है कि एआईएसएसएफ नेता हरमिंदर सिंह संधू की हत्या में उनका हाथ था.

इस खींचतान का सबसे गंभीर पहलू यह है कि दोनों गुटों ने आतंकवादी संगठनों का समर्थन हासिल करने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई. इससे खुद आतंकवादियों में ही भयानक मारकाट शुरू हो जाएगी. पिछले महीने मारे गए 80 आतंकवादियों में से कम-से-कम 45 तो आपसी लड़ाई के शिकार हुए.

इन सारी बातों से जाहिर है कि पंजाब की स्थिति सुधारने के लिए राज्यपाल द्वारा उठाए जा रहे नए कदम निष्फल साबित होंगे. हालांकि 6 अप्रैल की बैठक में कार्रवाई का निश्चित तरीका अपनाने पर थोड़ी-बहुत प्रगति जरूर हुई.

प्रशासनिक ढांचे में भी कुछ परिवर्तन किए गए हैं. पी.एस. कोहली को राज्यपाल का तीसरा सलाहकार और एस.एल. कपूर को राज्य का नया सचिव नियुक्त किया गया है. राज्य के बाहर के लगभग 12 पुलिस अधिकारी भी यहां लाए जाने वाले हैं. इसके अलावा सरकार सिर्फ राज्य स्तर पर नहीं, बल्कि जिला स्तर पर भी सलाहकार समितियां बनाने पर विचार कर रही है. राज्यपाल सरकार की विश्वसनीयता फिर से कायम करने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने पुलिस कार्रवाई के खिलाफ दो जांच रिपोर्टों को, उनके पेश होने के एक हफ्ते के भीतर, सार्वजनिक कर दिया.

इन सबके बावजूद पंजाब में यह भावना घर करती जा रही है कि मुकर्जी राज्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं हैं. पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जब तक राज्यपाल को नहीं बदला जाता, पुलिस कड़ा रास्ता नहीं अपना सकती. दरअसल अकाली दल 'दमनकारी मशीनरी' पर लगाम लगाने की मांग कर रहे हैं.

राजनैतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि सरकार राजनैतिक पहल शुरू करने के पहले आतंकवादियों के दमन की नीति पर चलती दिख रही है. यह नीति आतंकवादियों के हाथ में हथियार देने जैसी है. जब तक इसमें परिवर्तन नहीं किया जाता, किसी भी कार्ययोजना से पंजाब समस्या नहीं सुलझाई जा सकती.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

नया संकट, नई चुनौती

सत्ताधारी राष्ट्रीय मोर्चे की एकजुटता को खतरा

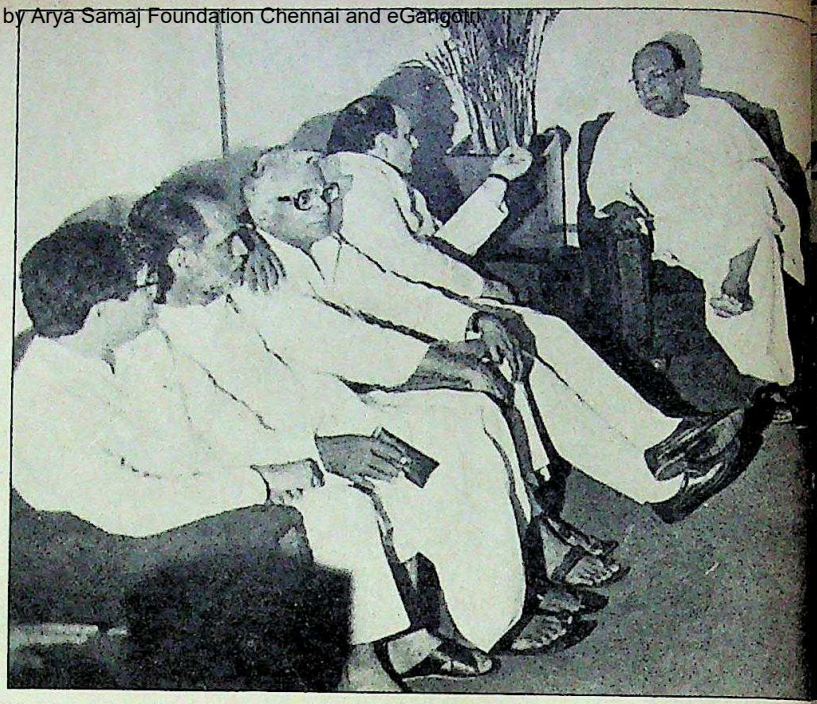

ताऊ के मिजाज अभी ठंडे भी नहीं हुए थे कि जनता दल एक और संकट में फंस गया. पिछले पखवाड़े प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की विश्वसनीयता दांव पर लग गई और अनुभवहीन सत्ताधारी मोर्चे को एकजुट रखने की उनकी क्षमता को नई चुनौती का सामना करना पड़ा. यह चुनौती उत्तर प्रदेश के रुष्ट नेता और वी.पी. सिंह के कट्टर राजनैतिक दुश्मन चंद्रशेखर (देखें बॉक्स) की ओर से मिली.

देवीलाल और उनके बेटे ओमप्रकाश चौटाला के गुल-गपाड़े के तुरंत बाद चंद्रशेखर ने जो कदम उठाया, उससे स्पष्ट हो गया कि पिछले चार महीने से देश की बागडोर संभाले रहने के बाद भी शासक दल का अंदरूनी झगड़ा अभी सुलटा नहीं है. स्थिति इतनी विकट है कि सामूहिक नेतृत्व के फैसले की भी कोई परवाह नहीं करता. नतीजतन, प चौटाला से छुटकारा पाने, मुख्यमंत्री बन राज्य इकाई अध्यक्षों को बदलने, केंद्र मंत्रिमंडल के विस्तार के लिए उपयुक्त ना

को सामने सांगठनिक को असमर्थ पार्टी

चंद्रशेखर

खुन्नस निकालने पर आमादा

विवादों के बाजीगर की प्रतिभा का शायद यह उत्कर्ष था. उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के झमेले से जनता दल अभी पूरी तरह उबर भी नहीं पाया था कि चंद्रशेखर ने धमाका कर दिया.

'इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया' के संपादक प्रीतीश नंदी से बातचीत के अंत में चंद्रशेखर ने उनसे टेप रिकार्डर को बंद करने को कहा. और फिर वे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की नैतिकता पर बरस पड़े. उन्होंने कहा कि उनका फोन टैप किया जाता है और उनके कमरे में गुप्त रूप से सुनने का यंत्र लगाया गया है. हालांकि यह सब उन्होंने अनौपचारिक बातचीत (ऑफ द रिकार्ड) के दौरान कहा लेकिन 'वीकली' ने इसे भी छाप दिया. इससे सरकार भारी विवाद में फंस गई.

पहली दफा यह विवाद पिछले महीने उस समय उभरा जब जनता पार्टी के सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद से पूछा था कि क्या उनका फोन टैप किया जाता है. मुफ्ती मुहम्मद ने उनकी इस आशंका को 'निराधार' बताया था.

कुछ दिनों बाद जनता दल सांसद तथा चंद्रशेखर के खासमखास सुबोधकांत सहाय ने मुफ्ती मुहम्मद से भेंटकर चंद्रशेखर के अंदेशे से उन्हें अगाह किया कि उनका टेलीफोन बीच में सुना जाता है. मुफ्ती मुहम्मद ने इसका खंडन किया और कहा कि ऐसी नाजुक कार्रवाई उनकी अनुमति के बिना नहीं की जा सकती. इसके बाद 'वीकली' में साक्षात्कार छपा और तूफान उठ खड़ा हुआ.

बाद में चंद्रशेखर ने 'इंडिया टुडे' से कहा कि टेलीफोन टैप किए जाने के बारे में सरकार में उनके कुछ मित्रों ने उन्हें बताया. एक दूसरे मित्र ने टेलीफोन गोपनीय रूप से सुने जाने का पता लगाने वाला यंत्र लाकर उन्हें दिखाया कि साउथ एवेन्यू के उनके निवास के दो टेलीफोन टैप किए जाते हैं. साथ ही उनके कमरे में होने वाली बातचीत चोरी-छिपे सुनने के यंत्र लगे होने के इलेक्ट्रॉनिक संकेत भी मिले. हालांकि इसका स्रोत नहीं खोज पाए. चंद्रशेखर बर "मैं जानता हूं कि सभी सरकारें ऐसी हरक करती हैं. पर यह सरकार तो वाकई नीच पर उतर आई है. मेरे परिवार पर आ किसलिए नजर रखी जाती है?"

लेकिन इंका तो सरकार को आड़े हा लेने का मुद्दा ही तलाश रही थी इसलि यह मामला आसानी से दफन नहीं हुआ इसके पहले ऐसे ही विवाद के चलते कर्नाट में रामकृष्ण हेगड़े की सरकार गिर गई थ संसद में बहस के दौरान इंका ने वी.पी. सि से इस्तीफे की मांग की. सुब्रमण्यम स्वामी कहा, "मैं मामले की जांच कर रहा हूं. इस सरकार की जमीन खिसक जाएगी."

उस दिन मुफ्ती मुहम्मद पंजाब के दौ पर थे इसलिए संसदीय कार्य और सूचन मंत्री पी. उपेंद्र ने प्रधानमंत्री की ओर कहा कि किसी राजनीतिक पर नजर न रखी जाती है. उन्होंने वादा किया कि सीबी आई चंद्रशेखर के आरोप की जांच करेगी

जनता दल में कई नेता चंद्रशेखर की इ बिना पर आलोचना कर रहे हैं कि वे इ के हाथों में खेल रहे हैं. उनके कुछ मित्रों क कहना है कि वी.पी. सिंह के प्रति उन विरोधी रवैये का फायदा असंतुष्ट तत्व उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

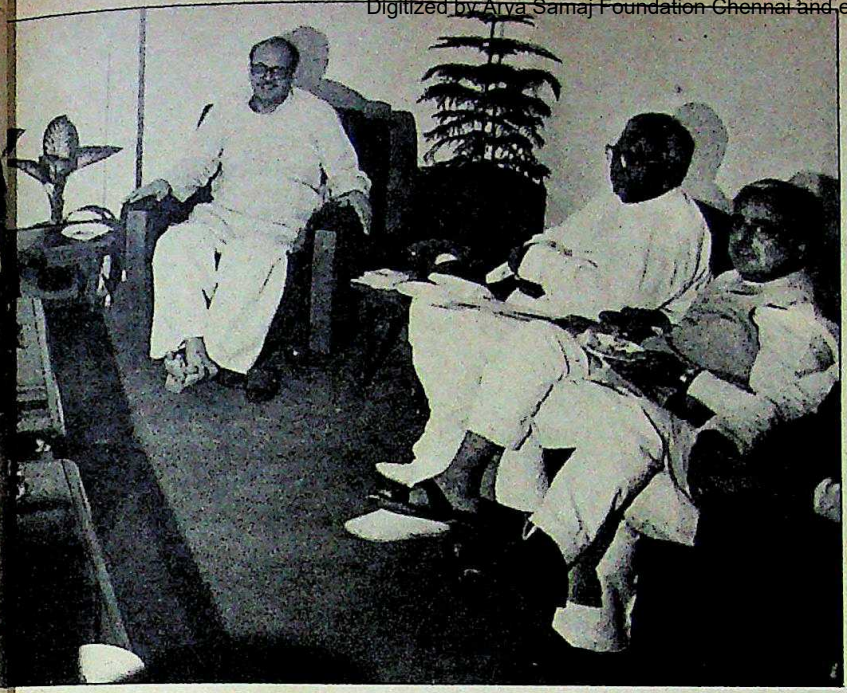

जेद राजनैतिक की मामलों की समिति की बैठक: जड़ता की गिरफ्त में

जतन, प
मंत्री बन
लने, केंद्र
पयुक्त ना

को सामने लाने और वरिष्ठ नेताओं को सांगठनिक मामलों में शामिल करने में खुद को असमर्थ पा रही है.

पार्टी की सर्वशक्तिमान राजनैतिक मामलों की समिति भी महम संबंधी अपने फैसले पर अमल नहीं करा पाई. मसलन, समिति ने पिछले पखवाड़े फैसला किया कि चौटाला को हरियाणा का मुख्यमंत्री पद छोड़ने के लिए कहा जाए. इस फैसले को देवीलाल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक को सौंपी गई. लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए. इसके पहले कपड़ामंत्री शरद यादव को चौटाला से इस्तीफा लेने का काम सौंपा गया था. लेकिन वे भी कुछ नहीं कर सके. पार्टी के महासचिव सुबोधकांत सहाय ने माना भी, "यह तो पार्टी में मजबूत तालमेल का वक्त है. अगर हमने हकीकत की अनदेखी की तो हम अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारेंगे."

जनता दल की साख उस समय तो और खतरे में पड़ गई जब पंजाब में और छह महीने के लिए राष्ट्रपति शासन बढ़ाए जाने संबंधी संविधान संशोधन विधेयक संसद में पेश किया गया. पार्टी अपने 142 में से 100 सांसद भी सदन में जुटाने में विफल रही. सांसदों की छोड़िए, उप-प्रधानमंत्री देवीलाल और उद्योगमंत्री अजित सिंह जैसे वरिष्ठ मंत्री भी गैरहाजिर थे. नतीजतन, विधेयक पास न हो सका और सरकार को अपमान का घूंट पीना पडा. बाद में अजित सिंह ने दावा किया, "जैसे ही मुझे सूचना मिली मैं सदन

हालांकि
शेखर बरा
ऐसी हरक
कई नीच
पर आ
"
आड़े हा
थी इसलि
नहीं हुअ
लते कर्नाट
गिर गई थ
वी.पी. सि
म स्वामी
हा हूं. इस
गी."
ाब के दौ
ौर सूचन
की ओर
नजर न
कि सीबी
च करेगी
खर की इ
कि वे इ
मित्रों क
पति उन
तत्व उ

कार्टून: अजीत नैनन

रहे हैं. अफवाह है कि चंद्रास्वामी और अंबानी जैसे अपने मित्रों के खिलाफ सरकारी कार्रवाई से चंद्रशेखर खिन्न हैं और चंद्रास्वामी ने ही चंद्रशेखर को भड़काया है. सहाय ने कहा, "चंद्रशेखर जी संवेदनशील व्यक्ति हैं. वे आरोप लगाते हैं तो सरकार को अपनी छवि साफ करनी चाहिए."

पर चंद्रशेखर खुद इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं. सीबीआई के निदेशक राजेंद्र शेखर ने जब उन्हें बयान देने के लिए आमंत्रित करने की खातिर उनके भोंडसी निवास पर फोन किया तो उन्होंने कहा कि "उनका इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है." वे बताते हैं, "मैं इसे सार्वजनिक मुद्दा नहीं बनाना चाहता था. लेकिन मामला सार्वजनिक हो गया है और सरकार ने इसे रोकने का अपना इरादा दोहराया है तो मामला यहीं खत्म हो जाना चाहिए. आखिर सीबीआई इसमें क्या कर सकती है?"

जाहिर है कि चंद्रशेखर अब इसे निकलना चाहते हैं. शायद उनके पास इसे सही ठहराने के सबूत न हों. बहरहाल, वे एक नैतिक मुद्दे पर सरकार को परेशान करने में कामयाब हुए. मूल्य आधारित राजनीति करने का दम भरने वाली सरकार को यह एक और चेतावनी है.

—पंकज पचौरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल राजनैतिक मामलों की अपनी सर्वशक्तिमान समिति के फैसले के बाद भी ओमप्रकाश चौटाला से इस्तीफा दिलाने में सफल नहीं हुआ

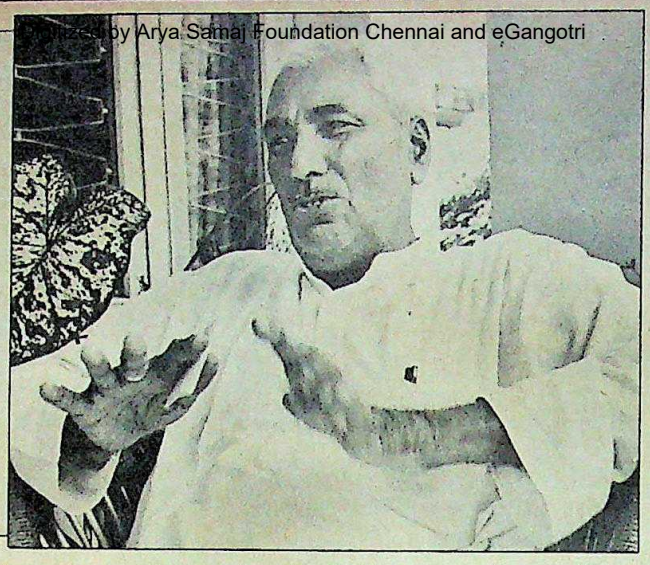

की ओर भागा. लेकिन मेरे पहुंचते-पहुंचते दरवाजे बंद हो गए."

इसके पहले प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ने शुक्रवार तक के लिए विधेयक को मुल्तवी करने का अनुरोध किया. उनकी दलील थी कि सरकार सांसद के रूप में सिमरनजीत सिंह मान के शपथ लेने की संभावना पर उनसे बातचीत कर रही है. लेकिन पार्टी नेतृत्व को यह नहीं समझ में आया कि शुक्रवार को ज्यादातर सांसद अपने चुनाव क्षेत्रों में चले जाया करते हैं.

दूसरे दिन सवेरे जब सचेतक जारी हुआ तो सचमुच 100 से अधिक सांसद दिल्ली से जा चुके थे. कहने को तो सरकार के समर्थन वाले 303 सदस्यों ने हाजिरी रजिस्टर पर दस्तखत किए थे लेकिन मतदान होने के ठीक पांच मिनट पहले 154 सदस्य ही सदन में मौजूद थे.

लोकसभा के अधिकारियों का कहना है कि शासक दल कार्यविधि संबंधी कुछ सवाल उठाकर मतदान और एक दिन के लिए मुल्तवी करवा सकता था और इस तरह अपनी नाक बचा सकता था. लेकिन अनुभव के अभाव में जनता दल ऐसा नहीं कर सका. उत्तर प्रदेश से पार्टी के युवा सांसद संतोष भारतीय कहते हैं, "हममें से ज्यादातर लोग इस खेल में नए हैं."

पार्टी की सबसे बड़ी विफलता तो यह है कि वह कश्मीर और पंजाब सरीखे नाजुक मुद्दों पर कोई स्पष्ट नीति नहीं बना पाई है. आम सहमति से भी कोई बात नहीं बन रही है. मसलन, जब सभी पार्टियों ने पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री पर दबाव डाला तो उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया. लेकिन कोरम के अभाव में विधेयक गिर गया तो जनता दल के लगभग सभी सांसदों ने सरकार से पंजाब में चुनाव कराने की मांग कर दी. कश्मीर में भी ज्यादातर पार्टी सांसदों ने कड़ी कार्रवाई की मांग की पर वी.पी. सिंह ने समझौता वार्ता का दरवाजा खुला रखा.

पार्टी के वरिष्ठ नेता इन खामियों को ज्यादा अहमियत नहीं देते. पार्टी महासचिव यशवंत सिन्हा कहते हैं, "मुसीबत के वक्त हम चट्टान की तरह एकजुट हो जाते हैं." पार्टी के नेता सबूत के तौर पर राज्यसभा चुनावों में पार्टी के उम्मीदवारों की कामयाबी का हवाला देते हैं, जिसमें एक भी वोट बेकार नहीं गया. वे इस तथ्य की ओर भी संकेत करते हैं कि देवीलाल और चंद्रशेखर के मामले पर किसी पार्टी सांसद या मुख्यमंत्री ने इसे सार्वजनिक विवाद का मुद्दा नहीं बनाया. दरअसल, जब देवीलाल ने देखा कि उनके व्यवहार से उनके दुश्मनों की संख्या बढ़ रही है तो उन्होंने अजित सिंह से मेलमिलाप तक की कोशिश की.

वी.पी. सिंह अब विकेंद्रीकरण के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं. उन्होंने सभी पार्टी सांसदों को नए पार्टी अध्यक्ष के साथ-साथ केंद्र तथा राज्य स्तर पर पार्टी के दूसरे पदाधिकारी चुनने के लिए चिट्ठी लिखी. उनकी यह चाल कामयाब रही और देवीलाल ने भी एक व्यक्ति, एक पद का सिद्धांत मानते हुए संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया. वी.पी. सिंह ने हर सोमवार को राजनैतिक मामलों की समिति की बैठक बुलाने का भी निर्देश दिया और पार्टी में 5 अक्तूबर को चुनाव कराने की भी घोषणा की गई है. वी.पी. सिंह ने 'इंडिया टुडे' से कहा, "मैं पूरी तरह से सामूहिक नेतृत्व और आम सहमति में विश्वास करता हूं. लोगों पर फैसले थोपे नहीं जाने चाहिए."

लेकिन अर्थहीन आम सहमति से पार्टी की साख घट सकती है. वी.पी. सिंह को अपने सारे पत्तों का इस्तेमाल करके देवीलाल और चंद्रशेखर के दोहरे खतरे से निबटते हुए इस फंदे से भी बचना होगा. —प्रभु चावला

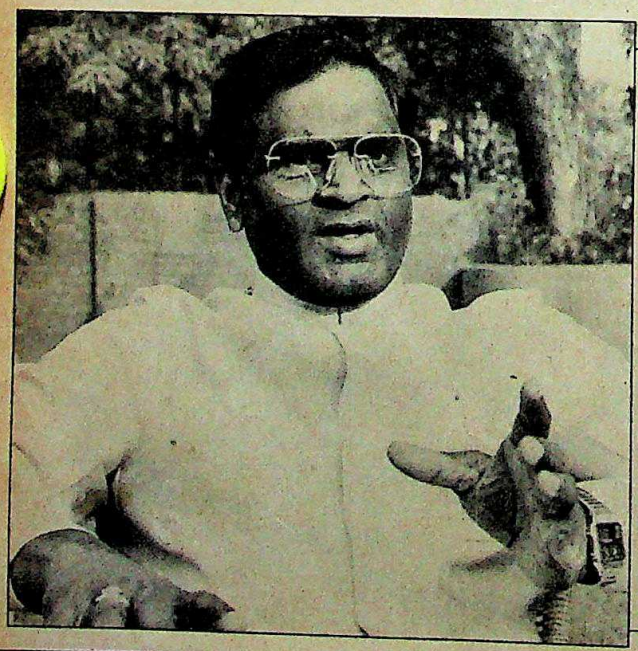

पंजाब विधेयक के लिए पर्याप्त संख्या में सांसदों की उपस्थिति पक्की न कर पाने के बाद संसदीय कार्यमंत्री उपेंद्र ने इस्तीफे की पेशकश की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर्शन (बाएं); और महाराज के घुटने टेकने के बाद जश्नः आखिर जीत हुई

लेकिन 9 अप्रैल की मध्य रात्रि को बहुदलीय प्रणाली लाने की तीन माह पुरानी लड़ाई जिस तरह एकाएक शुरू हुई, वैसे ही खत्म भी हो गई. टेलीविजन और रेडियो से जारी राजमहल की विज्ञप्ति के अनुसार महाराजा ने गैरकानूनी घोषित नेपाली कांग्रेस और सात कम्युनिस्ट पार्टियों के संयुक्त वामपंथी मोर्चे के आंदोलन की मुख्य मांगें मान ली. हिमालय की गोद में बसे इस नन्हे देश में 30 वर्षों के बाद लोकतंत्र की वापसी हो गई. राजमहल की घोषणा के अनुसार देश के संविधान से 'दलविहीन' शब्द हटा दिया जाएगा. शाह ने देश में अंतरिम सरकार के गठन पर सहमति जताई और नेपाल में राजनैतिक दलों पर लगे प्रतिबंध उठा लिए.

लोकतंत्र समर्थक आंदोलन के नेताओं के लिए, जिनमें से अनेक ने बीरेंद्र की राजशाही में लंबी जेल काटी, दमन सहा या देश-निकाला भोगा, यह एक शानदार जीत थी. इस जीत के लिए कम कुर्बानियां नहीं दी गईं, फिर भी नेपाल और वहां के राजा के भविष्य के लिहाज से इसका बहुत महत्व है. 16 फरवरी से शुरू हुए करो या मरो शैली के इस आंदोलन में असंख्य लोग मारे गए, जख्मी हुए और जेल गए. राजभवन की घोषणा के तुरंत बाद मुख्य राजनैतिक दलों के नेताओं ने तुरंत आंदोलन वापस ले लिया क्योंकि यह हर दिन स्वतःस्फूर्त ढंग से फैल ही नहीं रहा था. हिंसक भी होता जा रहा था.

मांगें मानकर महाराज बीरेंद्र ने न सिर्फ नेपाल की रक्तरंजित वीथियों की शांति लौटा दी है बल्कि डांवाडोल होता अपना सिंहासन भी बचा लिया है. लोकतंत्र समर्थक आंदोलन को मिल रहे अपार समर्थन को देखकर ही बीरेंद्र ने अपना जिद्दी रुख बदला. 6 अप्रैल को काठमांडो की सड़कों पर हजारों औरत, मर्द और बच्चे आंदोलन करने उतर आए. इस एकमात्र हिंदू राष्ट्र के दूसरे हिस्सों में भी ऐसे ही जबरदस्त प्रदर्शन हुए.

लेकिन बीरेंद्र के लिए इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात थी प्रदर्शनकारियों द्वारा राजवंश को ही अपना मुख्य निशाना बनाना. पिछले पूरे पखवाड़े काठमांडो घाटी "बीरे चोर, देश छोड़" और "स्वाश्ने पाम्फू, लोंगे लांफू" (बीबी मोटी, मियां मूर्ख) के नारों से गूंजती रही थी. जब लोग राजा के प्रति नाराजगी जाहिर करने लगे, उन पर अपना स्वार्थ पूरा करने के आरोप लगाने लगे तो राजशाही ने दमन का सहारा लिया.

हजारों लोग बंदी बनाए गए, लंबे समय तक कर्फ्यू रहा और पुलिस की गोलियों से अनगिनत लोग मारे गए. लेकिन इनके आगे झुके बगैर लोगों ने धरपकड़ के खिलाफ रातों में खुद ब्लैकआउट रखा और पाटन तथा कीर्तिपुर जैसे इलाकों को 'मुक्त क्षेत्र' घोषित कर दिया. नेपाली कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्ताओं ने तो पाटन और कीर्तिपुर को 'गणराज्य' भी घोषित कर दिया.

अगर इस पूरे प्रकरण में एक भव्यता, विशालता दिखती है तो उसके कारण ढूंढ़ने के लिए बहुत दूर नहीं जाना होगा. आंदोलन को अपूर्व समर्थन मिला. काठमांडो में टैक्सी, बस और ट्रॉलियां नजर भी नहीं आती थीं और जनता के इस 'कर्फ्यू' के आगे सरकारी कर्फ्यू बेमतलब हो जाता था. सरकारी दफ्तरों में

जिद्दी रुख बदलकर महाराज बीरेंद्र ने न सिर्फ नेपाल में शांति लौटा दी है बल्कि डांवाडोल होता अपना सिंहासन भी बचा लिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

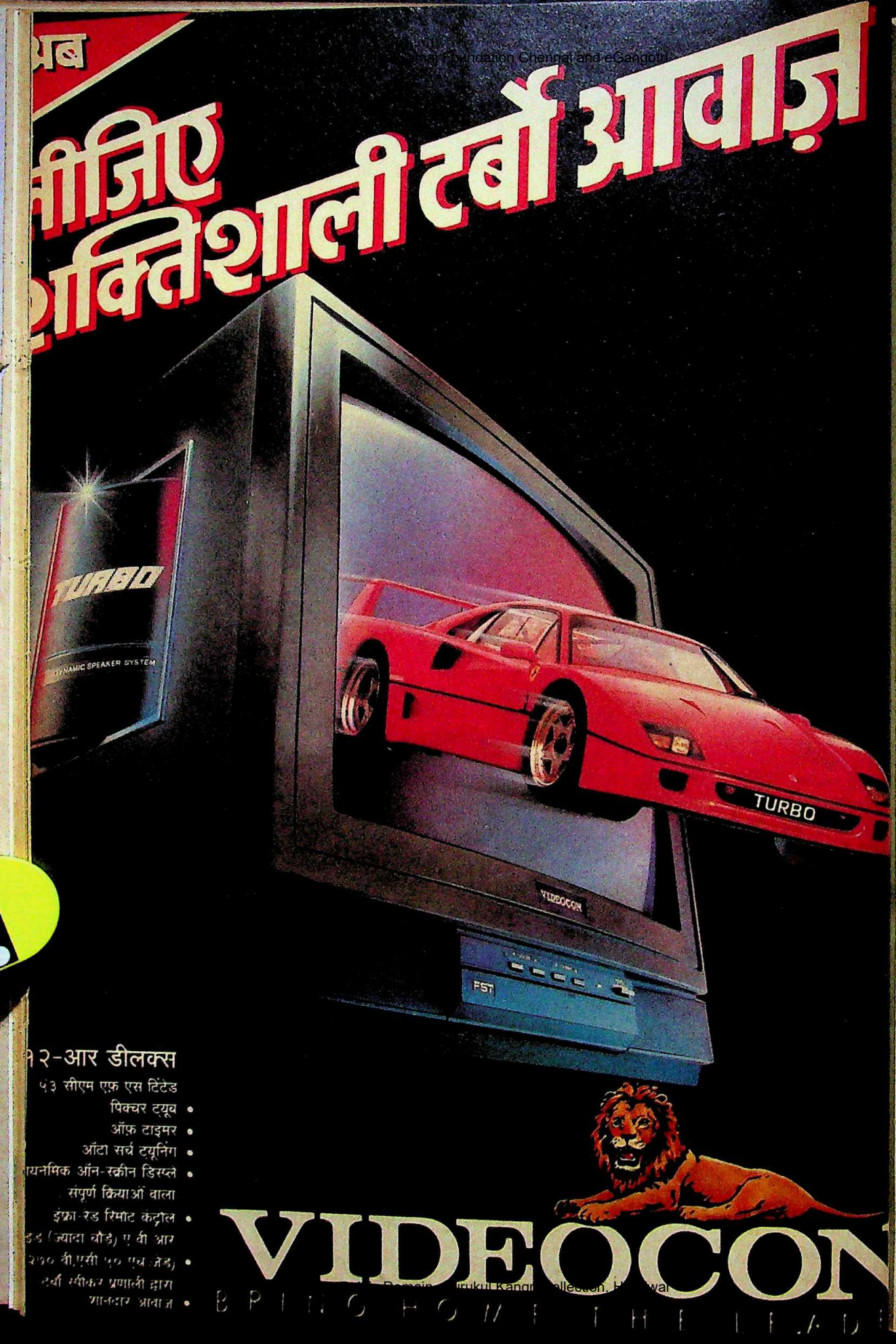

Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाल में असीम और निरंकुश अधिकार वाले राजा की हैसियत अब बदलकर मात्र संवैधानिक प्रमुख की रह जाएगी

गणेश मान सिंह (बाएं): आजादी की बुलंद आवाज

कामकाज ठप जैसा हो गया था; बिजली बोर्ड में कलमबंद हड़ताल हो गई; रॉयल नेपाल एअरलाइंस के चालकों ने काम बंद कर दिया और काठमांडो के त्रिभुवन हवाई अड्डे पर प्रदर्शन भी किया. साथ ही डॉक्टर, वकील और अध्यापक भी विरोध में उठ खड़े हुए. आंदोलनकारियों की नाराजगी एक विचार गोष्ठी में भाग ले रहे बुद्धिजीवियों की गिरफ्तारी से और भड़की.

नेपाल के मौजूदा संकट पर आयोजित की गई इस गोष्ठी में नेपाल मानवाधिकार संगठन के कार्यकारी अध्यक्ष देवेंद्र राज पांडे, राष्ट्रीय पंचायत के सदस्य द्रोण प्रसाद आचार्य और प्रसिद्ध विद्वान आनंद देव भट्ट भी गिरफ्तार हुए.

राज परिवार

हाथ सब तरफ

राजशाही पर खुला हमला ही इस बार के लोकतंत्र बहाली आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता थी. काठमांडो में राज परिवार के खिलाफ कार्टूनों, दीवार लेखनों और नारों की भरमार थी. एक नारा था, "पंफा देवी हाय, हाय; बीरेंद्र बाय, बाय." महारानी ऐश्वर्य को 'पंफा देवी' क्यों कहा जाता है? इसके बारे में लोगों का कहना है कि पंफा देवी छद्मनाम से ही महारानी ने अनेक गुप्त खातों में पैसे जमा कर रखे हैं.

महारानी सर्वशक्तिमान सामाजिक सेवा समन्वय परिषद की अध्यक्ष हैं जिसकी अनुमति के बिना किसी भी सामाजिक संस्था का गठन नहीं हो सकता. दरअसल लोगों का मानना है कि नेपाल पर रानी का ही राज है. महाराज के होंठों पर ताला लगा होने और उसकी चाबी महारानी के हाथ में दिखाने वाले कार्टून आम हैं.

राजशाही की पहुंच दूर-दूर तक है. नेपाल बाल समाज की प्रमुख महाराज की मां, नेपाल रेडक्रॉस की अध्यक्ष महाराज की भाभी हेलेन शाह, परिवार नियोजन संघ की अध्यक्ष उनकी साली प्रेक्षा शाही और कैंसर सोसाइटी की अध्यक्ष उनकी रिश्ते की बहन जयंती शाही हैं.

राजा की सबसे बड़ी बहन शांति सिंह कुष्ठरोग मिशन और टीबी रोकथाम संघ की प्रमुख हैं. उनके एक बहनोई खड्ग विक्रम शाही त्रिभुवन विश्वविद्यालय के 'वास्तविक' कुलपति हैं. उनके एक भाई नीर शाही नेपाल टीवी के निदेशक हैं. एक और भाई ललित विक्रम शाही नागरिक विमानन के प्रमुख हैं. राजा की तीसरी बहन के पति मोहन बहादुर शाही बड़े उद्योगपति हैं.

महारानी ऐश्वर्य की दो बहनें कोमन और प्रेक्षा राजा के दो भाइयों से ब्याही हैं. ये दोनों साल्टी होटल, हिमाल टी इस्टेट, एक ट्रक कंपनी, एक बिस्कुट कंपनी, दियासलाई कंपनियों और नमक व्यापार निगम की मालकिनें हैं. काठमांडो के एक प्रमुख बौद्धिक ने कहा, "इनका व्यवहार राजसी कम, बनियों वाला अधिक है."

महारानी ऐश्वर्य: सर्वशक्तिमान

राज परिवार के शाही भत्तों पर इस साल 4.44 करोड़ (नेपाली) रुपए खर्च हुए हैं जो पिछले साल से 33 फीसदी अधिक हैं. इसमें महाराज के महीनों तक चलने वाले निरीक्षण दौरों का खर्च शामिल नहीं है.

इतना ही नहीं, राज परिवार के अनेक लोग नशीले पदार्थों के व्यापार, तस्करी, विदेशी मुद्रा कानून के उल्लंघन और विदेशी पर्यटक लड़कियों को गायब कराने जैसे घोटालों में शामिल बताए जाते हैं. माना जाता है कि ऐसे अनेक घोटालों की खबर राजा के भाई धीरेंद्र ने 'लीक' की है. उनसे सारे राजसी विशेषाधिकार छीन लिए गए हैं और अब वे इंग्लैंड में रहते हैं.

दुनिया के इस एकमात्र हिंदू राष्ट्र की राजशाही की स्थिति क्या है, इसका उदाहरण हाल की एक घटना है. काठमांडो के प्रदर्शन के दौरान एक प्रदर्शनकारी दूसरे के कंधे पर चढ़ा और उसने एक होर्डिंग पर लगे राजसी प्रतीक चिन्ह को नोच डाला पर वहीं खड़ा सिपाही हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा.

—उत्तम सेनगुप्त, काठमांडो में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक बदहाली आग में घी का काम कर रही है. चावल और किरासिन की कीमत दोगुनी हो गई है; बैंकिंग व्यवस्था की हालत खराब है

चौतरफा बढ़ती अव्यवस्था के बीच राजा बीरेंद्र ने नाराजगी का उफान दबाने की एक हल्की कोशिश 6 अप्रैल को की. उस दिन राष्ट्र के नाम उन्होंने पांच मिनट का जो प्रसारण किया उसका रुख मान-मनौवल वाला था. जान-माल की क्षति के लिए अफसोस जताते हुए महाराजा ने अपने प्रधानमंत्री मारीच मान सिंह श्रेष्ठ को बरखास्त करने की घोषणा की. उन्होंने कहा कि नया मंत्रिमंडल अलग-अलग राजनैतिक विचारधारा वाले लोगों से विचार-विमर्श करेगा; व्यावहारिक सुधार सुझाने के लिए संविधान संशोधन आयोग गठित होगा और पुलिस गोलीबारी की जांच करने के लिए न्यायिक आयोग गठित किया जाएगा.

अब तक की कोई भी राजसी घोषणा अपने विषयवस्तु और लहजे से ऐसी नरम नहीं थी. नेपाली सरकार से बात करने पहुंची भारतीय टोली के वहां पहुंचने के एक दिन पहले ही विदेशमंत्री का पद छोड़ने वाले शैलेंद्र कुमार उपाध्याय कहते हैं, "नए प्रधानमंत्री लोकेंद्र बहादुर चंद खुले दिमाग के हैं. और अगर वे चाहेंगे तो मैं उनकी सरकार में शामिल हो सकता हूं." उधर, नए प्रधानमंत्री ने भी आत्मविश्वास से कहा, "मुझे उम्मीद है स्थिति जल्दी सुधरेगी."

उनकी यह आशावादिता निराधार भी नहीं थी. महाराज बीरेंद्र और नेपाली कांग्रेस तथा संयुक्त वामपंथी मोर्चे के नेताओं के बीच लंबी बातचीत शुरू हो गई थी. इनमें नेपाली कांग्रेस के गणेश मान सिंह (अभी अस्पताल में हैं), गिरजा प्रसाद कोइराला, कृष्ण प्रसाद भट्टराई और वाम मोर्चे के चार वरिष्ठ नेता शामिल थे. एक दिन बाद महाराज बीरेंद्र ने राजशाही के नियंत्रण वाली पंचायत प्रणाली को समाप्त कर दिया.

सैद्धांतिक रूप से तो कोई भी व्यक्ति 140 सदस्यों वाली इस पंचायत के लिए चुना जा सकता था. लेकिन व्यवहार में होता यह था कि हर सदस्य को सरकार की ओर से चलने वाले अनेक संगठनों में से किसी न किसी द्वारा प्रायोजित होना पड़ता था और उसे किसी राजनैतिक दल से रिश्ता न रखने की घोषणा करनी पड़ती थी. फिर, ऐसी संवैधानिक व्यवस्था थी कि राज परिवार से जुड़े किसी भी मसले पर पंचायत में बात नहीं हो सकती थी. ऊपरी सदन के सारे सदस्य राजा के ही मनोनीत किए होते थे.

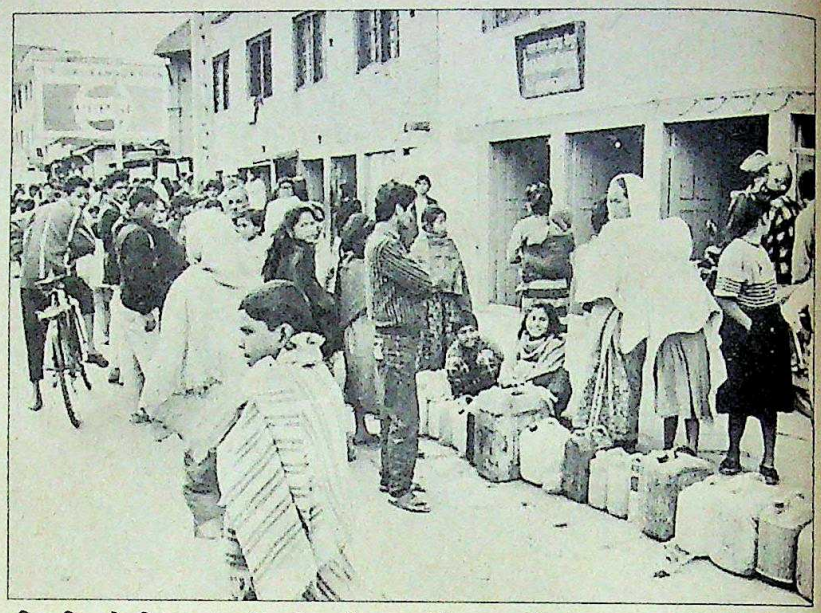

किरासिन के लिए कतार में लगे; और (नीचे) बैंकों से धड़ाधड़ पैसा निकलवाते लोग: दहशत की हालत

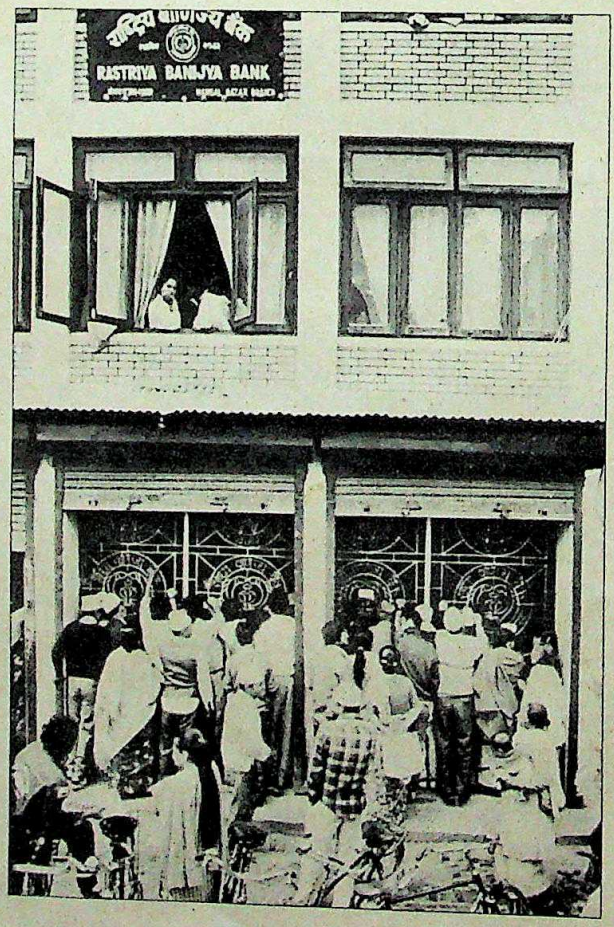

राजा के अधिकार असीम और निरंकुश थे. अब बदलती व्यवस्था में राजा मात्र संवैधानिक प्रमुख बनकर रह जाएगा. बीरेंद्र की 'प्रतिष्ठा' को यह गहरी चोट है. उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया है तो सिर्फ इसीलिए कि ऐसा न करने पर उन्हें अपनी गद्दी ही छिन जाने का अंदेशा दिखने लगा था.

6 अप्रैल की घटनाओं ने साफ जाहिर कर दिया कि यह स्थिति भी बहुत दूर नहीं रह गई थी. तीसरे पहर बीर अस्पताल के सामने वाले खेल मैदान में एक लाख लोग जुटे थे. ये लोग संयमित रहे पर उनमें जबरदस्त उबाल था. इसका एक हिस्सा तो पुलिस घेरे को तोड़कर राजमहल की ओर भी बढ़ने लगा था. पुलिस में खलबली मच गई और वह आंसू गैस के गोले छोड़ने लगी. लेकिन हवा प्रदर्शनकारियों की ओर से बह रही थी, सो पूरा धुंआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL-INDIA

Service

Pay for two check-ups. Get a full year's protection.

If the warranty on your BPL CTV or VCR has expired, here's good news. Complete Service Commitment - an annual service contract that protects your equipment for one full year. And it costs only Rs.275* for CTVs and Rs.350* for VCRs. Which, you'll admit, costs less than two routine check-ups.

Complete Service Commitment - nothing else is better for your system. Or easier on your pocket.

Contact the nearest service centre or write for details.

* *Sales Tax extra as applicable.*

Committed to giving you quality service - quickly

LEMAS

LEMAS HOUSE, No. 110, Lalbagh Road
Bangalore - 560 027. Ph: 233515/233527
233562/233563 Telex: 0845 8802

R.K.SWAMY/LEMAS/4780

E44/13, Okhla Industrial Area II, **New Delhi-20,** Ph: 6846573/636000/6846574/6841954. 282 Zone II, Maharanapratap Nagar, **Bhopal-11,** Ph: 64296. Plot No.A-11, Ratlam Kothi, **Indore-2,** Ph: 30755. SCO 2463/64, Sector 22-C, Near Chandigarh Hotel, **Chandigarh-22.** C/o BPL India Limited, Plot No. D/104-III, Meera Marg, Bani Park, **Jaipur-1,** Ph: 69984. C/o BPL India Limited, 13/386, (3) Civil Lines (Behind Green Park Stadium) **Kanpur-1,** Ph: 210505.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाल का अंदरूनी संकट अभी खत्म नहीं हुआ है. 30 वर्षों तक गैरकानूनी घोषित रहने के बाद अब विभिन्न नेताओं में सत्ता की होड़ शुरू होगी

पुलिसवालों की ओर ही जाने लगा और वे पीछे हटने पर बाध्य हो गए.

ईंट-पत्थर बरसाकर भीड़ ने पुलिस को उकसा दिया था और उसने गोलियां चलानी शुरू कर दी. तुरंत स्वचालित रायफलों से लैस फौजी दस्ते पहुंच गए और उन्होंने राजमहल के चारों ओर सुरक्षा घेरा डाल दिया. यहां तो मामला बहुत आगे नहीं बढ़ा लेकिन काठमांडो में कई स्थानों पर रुक-रुककर झड़पें चलती रहीं. सरकारी अखबार के दफ्तर—गोरखा पत्र संगठन में तोड़-फोड़ हुई. निगम भवन में आगजनी हुई. कई सौ लोगों के मरने की खबर को लोग सच मानने लगे. राजनयिक सूत्र भी 300 लोगों के मरने की बात करते हैं. मरने वालों में दो विदेशी भी थे जो दोतरफा गोलीबारी की चपेट में आ गए थे.

पुलिस बल में उभरती नाराजगी देखकर भी राजशाही के हाथ-पांव फूल गए. खबरों के अनुसार, आदेश न मानने पर कई सौ पुलिसवालों को गिरफ्तार किया गया जबकि अनेक ने इस्तीफा देने की अनुमति मांगी या लंबी छुट्टियों पर चले गए.

लोकतंत्र बहाली के समर्थन में शुरू हुआ निरापद-सा लगने वाला आंदोलन बड़े जनांदोलन का रूप ले चुका था. सेना भले ही राजा की ओर से जमी रही लेकिन गृहयुद्ध जैसे हालात बनने लगे. होटल 'द अन्नपूर्णा' के सामने तैनात एक थके-हारे गोरखा जवान ने कहा, "हमने महाराज का नमक खाया है और हमें उनका कर्ज तो उतारना ही होगा."

बिगड़ती आर्थिक स्थिति आग में घी का काम कर रही थी. मुद्रास्फीति की दर 40 फीसदी तक पहुंच गई है. चावल, दाल और मिट्टी के तेल की कीमत दोगुने से भी अधिक हो चुकी है, बसों का भाड़ा काफी बढ़ गया है और आंख मूंदकर आयात करते जाने की सरकारी नीति ने बैंकिंग व्यवस्था

दिवंगत महाराज महेंद्र की प्रतिमा पर लोकतंत्र समर्थक बैनर

की हालत खराब कर दी है. काठमांडो के एक प्रमुख उद्योगपति ने कहा, "व्यापार के फैसले भावना में बहकर नहीं लिए जा सकते. जो चीजें भारत से सस्ती दर पर मिल सकती थीं उन्हें भी दूसरे देशों से मंगाकर सरकार ने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार ली है."

इससे बीरेंद्र के सामने ज्यादा रास्ते नहीं बचे. लेकिन नेपाल का अंदरूनी संकट अभी खत्म नहीं हुआ है. 30 वर्षों तक गैरकानूनी घोषित रहने के बाद अब राजनैतिक दलों के नेताओं में सत्ता की होड़ शुरू होगी. वैसे अभी तक नेपाली कांग्रेस ही सबसे प्रमुख पार्टी है लेकिन संयुक्त वामपंथी मोर्चे ने हाल के वर्षों में स्थानीय राजनीति में तेजी से जड़ें जमाई है. वामपंथी पार्टियों और नेपाली कांग्रेस के बीच तीखे वैचारिक मतभेद भी हैं. इसके साथ ही नेपाली कांग्रेस में भी गुटबंदी है और इसके तीनों प्रमुख नेताओं—गणेश मान सिंह, कोइराला और भट्टराई में बहुत नहीं बनती.

राजा ने जो घोषणाएं की हैं उनसे भी आंदोलनकारियों की सभी मांगें पूरी नहीं होतीं. राष्ट्रीय पंचायत को अभी भी भंग नहीं किया गया है. प्रमुख कम्युनिस्ट नेता शाहना प्रधान कहती हैं, "हमने सिर्फ आधी लड़ाई जीती है और अभी संघर्ष जारी रखना होगा." गणेश मान सिंह कहते हैं, "असली काम तो अभी बाकी है. अब हम पर और बड़ी जिम्मेवारी सौंप दी गई है." बीरेंद्र के इरादों की परख इसी बात से होगी कि वे निष्पक्ष लोकतांत्रिक चुनाव कराने की घोषणा करते हैं या नहीं. कृष्ण प्रसाद भट्टराई कहते हैं, "चुनाव की घोषणा करना महाराजा पर ही निर्भर है."

ऐसी आशंकाएं भी हैं कि राजा ने आंदोलन ठंडा करने के लिए ये घोषणाएं की. राजनैतिक विशेषज्ञों के मुताबिक राजमहल की रणनीति का मकसद विपक्षी दलों में फूट डालना हो सकता है ताकि किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत न मिले और सत्ता राजा के ही हाथों में रहे.

शुरुआती अंधड़ गुजर जाने के बाद अब क्या समझौते होते हैं और कैसे दांवपेच चले जाते हैं यह तो बातचीत का मौजूदा दौर खत्म होने और अंतरिम सरकार के गठन के—जो बहुत आसान नहीं है—बाद ही स्पष्ट होगा. जहां तक नेपाल के लोगों की बात है, उन्हें अभी इन बातों की परवाह नहीं. अभी तो वे खुशियां मनाने और आतिशबाजी में मग्न हैं. उनके लिए यही आजादी है. आखिरकार 30 वर्षों के बाद नेपाल में लोकतंत्र की वापसी हुई है. जश्न मनाने के लिए इससे बड़ा कारण और क्या होगा.

—उत्तम सेनगुप्त, काठमांडो में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात

दंगों का दौर

मामूली घटना पर रक्तपात

गुजरात में इस साल तो 1985 के सांप्रदायिक दंगों का रिकार्ड टूटने का अंदेशा है. चिमनभाई पटेल की अगुआई वाली जनता दल-भाजपा सरकार को काम संभाले अभी महीना भर ही हुआ था कि राज्य सांप्रदायिक दंगों की चपेट में आ गया. पाटण, भालेज, आणंद, भड़ौच, वडोदरा, अहमदाबाद सभी जगह दंगे तेजी से भड़क उठे जिनमें 60 जानें गईं. अकेले अहमदाबाद में ही 45 लोग मारे गए, सैकड़ों घायल हुए और लाखों रु. की संपत्ति नष्ट हुई.

करीब एक महीना पहले पाटण में जो छोटी-सी चिंगारी भड़की वह पिछले पखवाड़े राज्य के सबसे बड़े शहर अहमदाबाद में आकर इंतहा पर पहुंच गई. खून-खराबे की शुरुआत मामूली-सी घटना से हुई. शहर में हिंदू-मुस्लिम तनाव किस कदर है इसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है. 3 अप्रैल को छुरेबाजी से एक मुसलमान की मौत हो गई. अफवाह फैली कि इसके लिए हिंदू जिम्मेदार हैं. हालांकि इसका कोई ठोस सबूत नहीं था. इस पूरे प्रकरण में दुखदायी मोड़ उस समय आया जब चार व्यक्तियों के एक गिरोह ने नगर परिवहन की बस में सफर कर रहे 11 हिंदुओं को छुरा घोंप दिया. अगले दिन क्रुद्ध हिंदू तोड़-फोड़ पर उतर आए. उन्होंने मुसलमानों की दुकानें लूटीं और आग लगा दी. मुसलमानों ने भी बदला निकाला.

अधिकारियों ने गड़बड़ी वाले इलाकों में कर्फ्यू लगाकर वही पुराना, जाना-पहचाना खेल खेला. पुलिस ने गोली भी चलाई जिससे मृतकों की संख्या और बढ़ गई. लेकिन चिमनभाई की परेशानी यह थी कि न सिर्फ उनकी सरकार पूरी तरह बेखबरी का शिकार हुई बल्कि वे खुद तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश करते पाए गए. मसलन, 6 अप्रैल को करीब 17 लोग मारे गए पर उस दिन के दूरदर्शन समाचारों में यह संख्या एक बताई गई. खुद चिमनभाई ने मरने वालों की गिनती तीन बताई.

जनता दल विधायक और पूर्व पुलिस आयुक्त जसपाल सिंह ने कहा, "समाचार जगत की आजादी में यकीन रखने वाली पार्टी के नेता के लिए जानकारी पर इस तरह से परदा डालना शोभा नहीं देता." दरअसल, पिछले महीने जसपाल सिंह ने विधानसभा में चेतावनी दी थी कि सांप्रदायिक उन्माद चरम पर पहुंच रहा है. 3 अप्रैल को उन्होंने यह चेतावनी दुहराई भी.

राज्य के दूसरे भागों में छोटे-मोटे दंगों से सरकार को सांप्रदायिक तौर पर नाजुक शहर अहमदाबाद में गड़बड़ी के अंदेशे के लिए तैयार रहना चाहिए था. इतना ही नहीं, अहमदाबाद में जब हिंसा भड़की तो नेता पुलिस के साथ तालमेल बनाने में नाकाम रहे. 4 अप्रैल को गड़बड़ी शुरू हुई ही थी कि पुलिस ने 40 असामाजिक तत्वों को धर लिया. लेकिन गृहमंत्री नरहरि अमीन के कहने पर अगले ही दिन उन्हें छोड़ दिया गया.

लगता है सरकार कोई सुराग नहीं लगा पाई कि दंगों की वजह क्या है. कहा गया कि शराब निर्माता, जिनकी हाल ही में धर-पकड़ हुई थी, शायद इस हिंसा के पीछे हों. इंका और भाजपा ने भी दंगों के लिए एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए.

इस चांदमारी में फंस गए चिमनभाई पटेल. उन्हें ध्यान रखना है कि मुसलमानों में जनता दल का नया पैदा हुआ असर खत्म न हो और फिर साझा सरकार की भागीदार भाजपा को भी संतुष्ट रखना है. भाजपा ने अपने हित आगे बढ़ाने की ठान रखी है, यह बात राज्य सरकार के अस्थायी मुख्यालय—अहमदाबाद सर्किट हाउस में हुई भद्दी घटना से स्पष्ट हो गई. भाजपा और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता अहमदाबाद के एक मुसलमान पुलिस उपायुक्त फज़ल गार्ड के पक्षपात के विरोध में उनका तबादला करने की मांग लेकर वहां पहुंचे. मगर मुख्यमंत्री के इनकार करने पर उन्होंने वहां की खिड़कियां और फर्नीचर तोड़ दिया.

दंगे की पहली वारदात होते ही पटेल ने कहा था, "हमें आतंकवाद विरोधी कानून की धाराओं का सहारा लेना पड़ा. हमारे पास अभी सबूत नहीं हैं पर इस सांप्रदायिक हिंसा के पीछे हम किसी राजनैतिक साजिश की संभावना से इनकार नहीं करते." दंगे स्वतः हुए हों या किसी साजिश के तहत पर मुख्यमंत्री अगर सांप्रदायिक लहर रोकने में नाकाम रहे तो उन्हें ही सबसे ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी.

—उदय माहूरकर

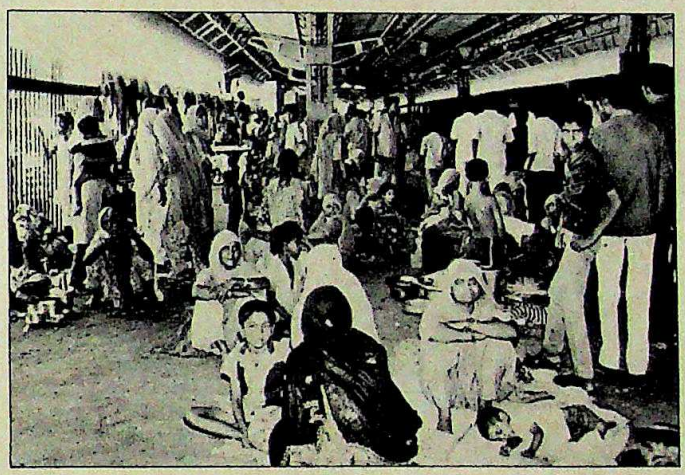

नरसंहार (ऊपर); और बेघर हुए लोगः त्रासदी की पुनरावृत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यसभा

अब वो बात नहीं रही

ऊपरी सदन में ऐरे-गैरों के भरने से स्तर में गिरावट

राज्यसभा को लोकसभा का 'ऊपरी सदन' कहा जाता है. लेकिन अब इसमें लोकसभा चुनावों में पिटे लोग और पार्टी के बड़े नेताओं के लग्गू-भग्गू जिस तरह से भरे जाने लगे हैं उससे तो इसे ऊपरी सदन मानना अपमानजनक ही लगता है. पहले यही सदन विद्वानों और गणमान्य हस्तियों से भरा रहता था.

राज्यसभा के हाल में हुए द्विवार्षिक चुनावों से जो 70 से अधिक नए सदस्य आए हैं वे राजीव गांधी द्वारा 1986 में शुरू की गई उस परंपरा को आगे बढ़ाते लगते हैं जिसके तहत उन्होंने अनेक ऐरे-गैरे लोगों को भी राज्यसभा में भिजवा दिया था. चुनाव में भारी पराजय के बावजूद इस बार भी राजीव ने अपना वही तौर-तरीका जारी रखा. आंध्र प्रदेश से आर.के. धवन को टिकट सिर्फ नेहरू-गांधी परिवार के प्रति उनकी सेवाओं के लिए ही दिया गया. और राज्यसभा के लिए चुने जाने के बाद धवन ने साफगोई से स्वीकार किया कि वे कोई बड़े दावे नहीं करते.

ऐसा भी नहीं है कि जनता दल ने ऊपरी सदन की पुरानी परंपराओं का खयाल करके बुजुर्ग, विद्वान लोगों को इसमें भेजा हो. इस पार्टी के क्षेत्रीय सूबेदार अपनी सूबेदारी की कीमत वसूलते दिखे. उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने कृषि मंत्रालय में अपने साथ लाए विशेष कार्य अधिकारी के.के. दीपक को राज्यसभा का सदस्य बनवा दिया. साथ ही उन्होंने अपने बेटे ओमप्रकाश चौटाला के लिए एक सुरक्षित विधानसभा सीट तलाशने के लिए दड़बा-कलां की विधायक विद्या बेनीवाल को भी राज्यसभा में पहुंचा दिया. और इस बात की कोई संभावना नहीं लगती कि इन दोनों में से कोई भी राज्यसभा में होने वाली बहस के स्तर को ऊंचा उठा सकेगा.

खुद प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह की पसंद से उत्तर प्रदेश से आए दो सदस्य अगर अपने पुराने लहजे में ही बोलते हैं तब तो पार्टी संकट में पड़ जाएगी. प्रधानमंत्री की पहल पर चुनकर आए ये दोनों सदस्य—मौलाना ओबेदुल्ला आजमी और मुहम्मद अफजल—पहले ही खासे विवादास्पद रहे हैं. बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के प्रमुख सदस्य मौलाना आजमी के भाषणों के कैसेट तो पार्टी की परेशानी का सबब बन ही चुके हैं. मुहम्मद अफजल एक उर्दू अखबार से जुड़े रहे हैं और दिल्ली के जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी के भी करीब माने जाते हैं.

प्रधानमंत्री के करीबी सूत्र इन दोनों लोगों के चुनाव के बारे में कहते हैं, "चूंकि नवंबर चुनाव में मुसलमानों ने एकजुट होकर हमारे पक्ष में वोट दिए इसलिए हमें उनकी आकांक्षाओं को पूरा करना है. इसके अलावा इन दो लोगों के आ जाने से भाजपा की तरफ झुकाव संतुलित हो जाता है."

इन विवादास्पद लोगों की ओर से ध्यान बंटाने की कोशिश के तहत ही जनता दल के प्रवक्ता एस. जयपाल रेड्डी उन उम्मीदवारों की ओर ध्यान दिलाते हैं जो अधिक योग्य हैं. वे कहते हैं कि राज्यसभा के चुनाव में हमारा मुख्य जोर बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों, अनुभवी सांसदों और पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं को सदन में पहुंचाने पर था. रेड्डी कहते हैं कि एम.जी.के. मेनन, राजा रामन्ना और राज मोहन गांधी जैसे लोगों को राज्यसभा में लाकर जनता दल ने इस सदन की गरिमा के प्रति अपनी निष्ठा जताई है. रेड्डी सोमपाल के चुने जाने को भी सही बताते हैं, जबकि उनका अपना कोई आधार नहीं है और वे वी.पी. सिंह के करीबी होने के कारण

राजा के दरबारी

चश्माधारी सोमपाल धूल-धूसरित राजनेता कम, किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी के अधिकारी अधिक दिखते हैं. राज्यसभा में उनके प्रवेश को लोग वी.पी. सिंह से उनके करीबी रिश्तों का फल मानते हैं लेकिन पाल का दावा है कि मैं 'स्वतंत्र विचारों और अपने जनाधार वाला' नेता हूं. 1985 के विधानसभा चुनाव में वे इंका के टिकट पर उत्तर प्रदेश के छपरौली से लड़े थे लेकिन चरण सिंह की बेटी ने उन्हें पराजित कर दिया था. वे दल के कुछ ब्राह्मणों में से है.

इंदिरा परिवार के भक्त

आर.के. धवन का अपना कोई जनाधार नहीं है. लेकिन पहले इंदिरा गांधी और फिर राजीव गांधी के 'करीबी' होने के कारण उनकी ताकत का लोहा सभी मानते थे. पिछले पखवाड़े संसद के ऊपरी सदन में पहुंचकर वे अब 'आदरणीय' भी बन जाने में सफल रहे हैं. लेकिन खुद उन्हें अपनी राजनैतिक हैसियत के बारे में गलतफहमी नहीं है. वे कहते हैं, "पिछले कई वर्षों से मैंने इंदिरा परिवार की सेवा की है. अब पार्टी नेतृत्व मेरे लिए जो भूमिका तय करेगा, मैं वहीं करूंगा."

शिवसेना की बाघिन

राज्यसभा में शिवसेना की अकेली प्रतिनिधि हैं महाराष्ट्र की राजनीति में छाई रहने वाली चंद्रिका केनिया. शरद पवार के मंत्रिमंडल से निकाले जाने के बाद कुछ समय तक राजनैतिक बियाबान में खोसी गईं केनिया जल्दी ही बाल ठाकरे की शरण में आकर फिर से चर्चित हो उठीं. कभी क्रिकेट खिलाड़ी रहीं केनिया अब अपने क्रिकेट दिनों की याद करके कहती हैं, "मुझे अपने विरोधियों को आउट करने में बहुत मजा आता है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यसभा के सदस्य बन गए हैं.

मध्यमार्गी पार्टियों के विपरीत भाजपा और वामपंथी दलों जैसी कार्यकर्ता आधारित पार्टियों द्वारा भेजे गए लोगों के चुनाव में एक साफ सोची-समझी रणनीति दिखती है. अपनी हिंदू पार्टी वाली छवि को कुछ हद तक धर्मनिरपेक्ष बनाने के लिए भाजपा ने अपने उपाध्यक्ष सिकंदर बख्त को राज्यसभा में भेजा है. समझदार और कुशल वक्ता बख्त सांप्रदायिकता जैसे मुद्दों पर राज्यसभा में होने वाली बहस के स्तर को ऊंचा उठाएंगे यह तय है. जनता दल से पुराने समाजवादियों को तोड़ने की रणनीति के तहत भाजपा ने मध्य प्रदेश से शिवप्रसाद चिनपुरिया को चुना. लेकिन डॉ. जे.के. जैन जैसे विवादास्पद व्यक्ति को चुनने से पार्टी में नाराजगी बढ़ी.

हिंदीभाषी सरला माहेश्वरी को राज्यसभा के लिए मनोनीत करके माकपा ने अपनी पार्टी के प्रभाव को केरल और पश्चिम बंगाल से बाहर लाने की मंशा जताई.

लेकिन राज्यसभा के नए सदस्यों में सबसे दिलचस्प हैं शिवसेना की चंद्रिका केनिया. वे कहती हैं, "राज्यसभा में मैं शिवसेना की वाघिन होऊंगी."

इस कथन से चाहे विद्वतापूर्ण बहस न छिड़े लेकिन सदन में इस पर चौतरफा हमला तो हो ही सकता है.

—भास्कर राय

विवादास्पद डॉक्टर

डॉ. जे.के. जैन दिल्ली स्थित शानदार वीडियो स्टुडियो, नर्सिंग होम और 'सूर्या' पत्रिका के लिए ही अधिक चर्चित हैं. भाजपा के अनेक लोगों को उनकी राजनैतिक निष्ठा पर भरोसा नहीं लेकिन राज्यसभा के चुनाव में राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने उनकी जोरदार वकालत की. कइयों का मानना है कि यह चुनाव भाजपा में भी कांग्रेस संस्कृति के प्रवेश का प्रमाण है.

अरुण सिंह

झोंपड़ी में ताकझांक

अल्मोड़ा के दूरस्थ इलाके बिनसर की पहाड़ी पर बनी लकड़ी और मिट्टी की झोंपड़ी के लिए चार किलोमीटर की सीधी चढ़ान है, जिसमें जगह-जगह पर घनी झाड़ियों और पत्थरों से उलझना पड़ता है. इलाके में आबादी भी नाममात्र की है.

लेकिन, 14 जनवरी की रात को सेंध मारकर इस झोंपड़ी की तलाशी ली गई. घुसपैठियों ने अलमारी की छानबीन की और ब्रीफकेस खोलकर सारे कागज बिखेर दिए. वे घर की छोटी-मोटी चीजें लेकर रफूचक्कर हो गए, पर लाइसेंसशुदा दो हथियारों और जेवरात जैसी कीमती चीजों को उन्होंने हाथ भी नहीं लगाया.

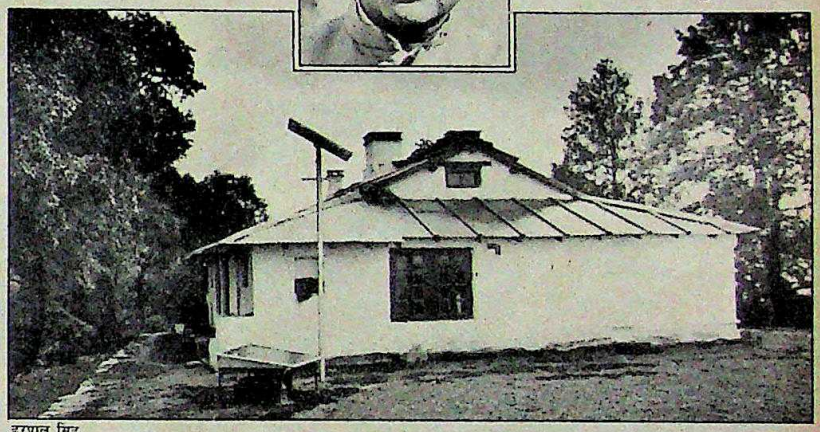

हरपाल सिंह

अरुण सिंह; और बिनसर की उनकी कुटिया

इस पूरे मामले में महत्वपूर्ण बात यह है कि यह झोंपड़ी पूर्व रक्षा राज्यमंत्री अरुण सिंह की है जिन्होंने बोफोर्स घोटाले पर उठे विवाद के बाद अपने पद से इस्तीफा दे दिया था. जब यह घटना हुई तो अरुण सिंह और उनकी मित्र रमोला दिल्ली में थी. हालांकि घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट दूसरे ही दिन सोमेश्वर थाने में दर्ज करा दी गई, परंतु स्थानीय पुलिस अभी तक कोई सुराग नहीं पा सकी है. अरुण सिंह पर एक संदेह यह है कि उनके पास कुछ अति महत्वपूर्ण गोपनीय कागजात हो सकते हैं इसलिए पहला शक खुफिया विभाग के जासूसों पर जाता है.

दत्ता एस्टेट में बनी यह झोंपड़ी अरुण सिंह ने विवेक दत्ता से 90 साल के पट्टे पर ली है. इस इलाके में विवेक दत्ता के सेव के बागान हैं. विवेक दत्ता, उनकी बेल्जियाई पत्नी मारिया थेरेसा दत्ता और उनकी बेटी व पर्यावरण कार्यमंत्री मुक्ति दत्ता पड़ोस के ही बंगले में रहते हैं.

पुलिस ने नियमानुसार और गहन छानबीन की पर अपराधी अब तक गुमनाम हैं. अल्मोड़ा के पुलिस उपाधीक्षक अशोक राघव का कहना है कि "हम तब तक कोई कार्रवाई नहीं कर सकते जब तक उंगलियों की छाप की जांच से अपराधियों की पहचान नहीं हो जाती." उंगलियों की छाप की जांच की पहली रिपोर्ट बरेली से चार हफ्ते में ही आ गई पर इससे किसी की पहचान नहीं हो सकी. तब पुलिस ने उंगलियों के ताजे छाप इलाहाबाद भेजे. वहां से रिपोर्ट अभी आनी है.

विवेक दत्ता मानते हैं कि यह काम खुफिया विभाग के जासूसों का है. दरअसल अभी 10 महीने पहले ही अल्मोड़ा में तैनात हुए राज्य खुफिया के डी.पी. त्रिपाठी अरुण सिंह की गतिविधियों पर नजर रखे हुए थे.

एक और संभावना यह भी है कि यह हरकत अरुण सिंह को डराने के लिए की गई हो ताकि वे यह जगह छोड़कर चले जाएं. कम-से-कम पुलिस ऐसा ही मानती है. लेकिन दत्ता इस बात का जोरदार खंडन करते हैं कि वे अरुण सिंह को यहां से निकालना चाहते हैं. मुक्ति कहती हैं, "हम क्यों ऐसा चाहेंगे? मैं चाहती हूं कि अरुण सिंह यहीं रहें." इसलिए जब तक उंगलियों के निशान की परीक्षण रपट नहीं आ जाती, यह मामला रहस्यमय ही बना रहेगा.

—हरपाल सिंह, अल्मोड़ा और बिनसर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

बेवजह टकराव

कोई पक्ष झुकने को तैयार नहीं

"डॉक्टर लोग जनता के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहे हैं. जनता उनसे खुद ही निबट लेगी." उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने डॉक्टरों की हड़ताल पर पहली प्रतिक्रिया यही व्यक्त की. अब हफ्ते भर में इसका मतलब समझ आने लगा है. करीब दर्जन भर जिलों में जद के कार्यकर्ताओं ने हड़ताली डॉक्टरों को धौंसपट्टी देने और मारपीट करने के कार्यक्रम शुरू कर दिए हैं. गोंडा में सांसद मुन्नन खां के नेतृत्व में जद कार्यकर्ताओं के हमले से तो दर्जन से ज्यादा डॉक्टरों व स्वास्थ्यकर्मियों के घायल होने की खबर है. जौनपुर में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा संघ, उत्तर प्रदेश के इकाई सचिव को पकड़कर पीटा गया.

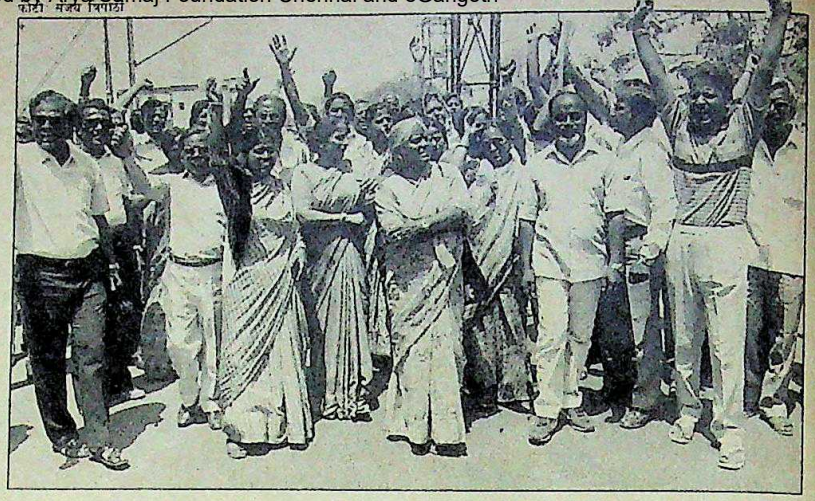

फोटो: संजय त्रिपाठी

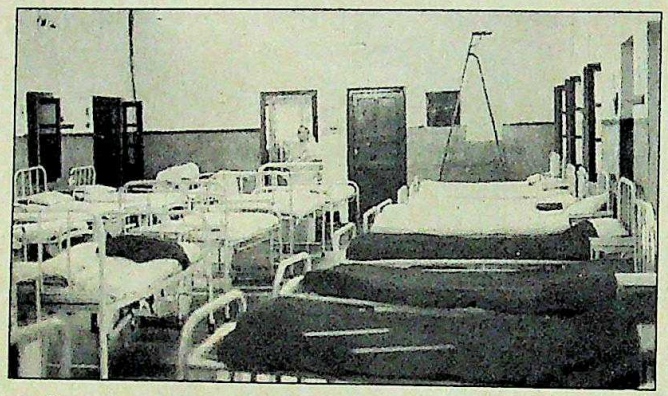

प्रदर्शन करते डॉक्टर; और खाली पड़ा वार्ड: बोझ आम आदमी पर

हड़ताल से निबटने के, इस अनूठे सरकारी प्रयोग ने अजीबोगरीब हालात पैदा कर दिए हैं. सरकार ने हफ्ते भर से ज्यादा चल चुकी इस हड़ताल को तोड़ने के लिए इसके नेताओं की जिलों-जिलों में आकस्मिक गिरफ्तारियां और निलंबन किए थे. जवाब में डॉक्टर खुद ही गिरफ्तारी देने लगे और निलंबन के जवाब में सामूहिक इस्तीफे अपने संघ के सचिव के पास भेजने लगे. इस क्रम में पांच सौ से ज्यादा की गिरफ्तारी और ढाई हजार डॉक्टरों के इस्तीफों की सूचना है.

इस हड़ताल की वजह तो नई सरकार को विरासत में मिली थी. पर यह अचानक नए स्वास्थ्यमंत्री के बड़बोलेपन से शुरू हुई. नए स्वास्थ्यमंत्री मुख्तार अनीस विधानसभा और दूसरे मंचों पर फरवरी के अंतिम सप्ताह से मार्च के पहले हफ्ते तक एक महीने में सब कुछ ठीक कर देने का ऐलान करते रहे. लेकिन चार अप्रैल को जारी शासनादेश से स्थिति बिगड़ गई और हड़ताल हो गई क्योंकि हड़ताली डॉक्टरों के अनुसार, "उन्हें कुछ नहीं मिला." मुख्यमंत्री का कहना है कि हड़ताली जितना मांग रहे हैं उससे राज्य के मुख्य सचिव के बराबर तनख्वाह पाने वाले दर्जनभर अफसर डॉक्टरों में से निकल आएंगे.

उत्तर प्रदेश में सरकारी सेवाओं में नए भर्ती स्नातक डॉक्टरों को 2200-4000 का वेतनमान मिलता है. नान-प्रैक्टिसिंग एलाउंस जोड़कर शुरुआत में ही करीब 4100 रु. उनके हाथ आते हैं. यही वेतनक्रम स्नातक इंजीनियरों का भी है. और लगभग यही शुरुआत नए भर्ती आईएएस अफसर को भी मिलती है. गैर आईएएस अफसरों में प्रतिस्पर्धा नौकरी में पांच साल बीतने के बाद जगती है. केंद्र की सेवाओं में पांच वर्ष की निरंतर सेवा के बाद सीनियर मेडिकल अफसर का प्रोन्नत पद डॉक्टरों को दिया जाता है. उत्तर प्रदेश में नए शासनादेश में निरंतर की जगह नियमित सेवा का प्रतिबंध लगा हुआ है. दरअसल ताजा विवाद के मूल में यही है. इसके चलते तमाम डॉक्टर 15 और 17 वर्षों तक की नौकरी के बाद ही सीनियर मेडिकल अफसर के पद तक पहुंच सकेंगे.

डॉक्टरों को खलनायक बनाने वाला मुद्दा नान-प्रैक्टिसिंग एलाउंस का है. लगभग यह स्वीकृत है कि सरकार से यह भत्ता झाड़ने के बावजूद वे प्राइवेट प्रैक्टिस बाकायदा करते हैं. और इसके लिए वे सरकारी कामकाज की उपेक्षा भी करते हैं. आम लोगों का डॉक्टरों के खिलाफ यह सर्वकालिक आरोप है. इस बार भी सरकारी प्रचारतंत्र में यह आगे-आगे है. इस पर डॉक्टरों के संघ के उत्तर प्रदेश इकाई महासचिव "फिलहाल इस मुद्दे को छोड़ने की जरूरत" बताकर हाथ झाड़ लेते हैं.

फिलहाल मौजूदा हालत पर स्वास्थ्यमंत्री का आक्रोश है कि "हमने इन (डॉक्टरों) से एक महीने की मोहलत मांगी थी. उन्होंने मौका ही नहीं दिया." दूसरी ओर हड़ताली डाक्टरों के नेता पंचम सिंह के अनुसार "स्वास्थ्यमंत्री झूठे हैं और सरकार को इससे पहले ही मोहलत दी जा चुकी है."

इस आपसी गतिरोध का सारा बोझ आम आदमी के मत्थे है. प्रदेश भर की आकस्मिक चिकित्सा सेवा बंद है. लाशों के पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कॉलेजों और बिहार के पड़ोसी जिलों में कतारें लगी हैं. वार्ड एकदम सूने हो गए हैं. यूनानी, होमियो और आयुर्वेदिक डॉक्टरों के रूप में जो वैकल्पिक व्यवस्था है उसका एक उदाहरण यह है कि लखनऊ के महानगर सिविल अस्पताल में एक मरीज को आइसोनिक्स 300 मि.ग्रा. की टिकिया दिन में तीन बार खाने को दे दी गई और एक और को लेसिक्स भी तीन बार. ये दोनों दवाएं सामान्य आदमी दिन में अधिकतम एक बार ले सकता है. नतीजा दोनों मरीजों को अप्रत्याशित खुश्की का प्राइवेट इलाज कराना पड़ा. दोनों पक्ष अड़े रहे तो ऐसे और वाकयात सामने आ सकते हैं. पर उम्मीद की जानी चाहिए कि अंततः जीत समझदारी की होगी.

—शीतल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

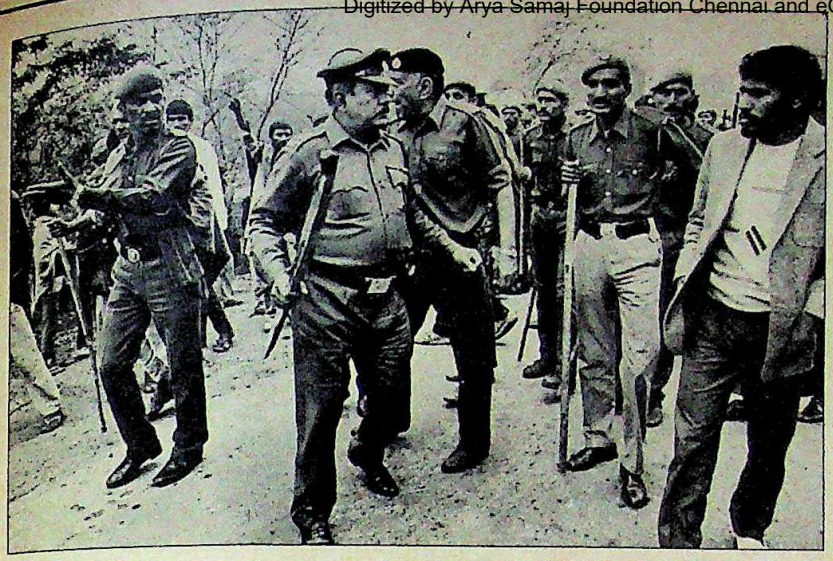

महम में पुलिसः बागी तेवर

हरियाणा पुलिस

सियासी रंगत

सरकार मामला छिपा रही

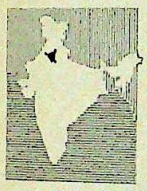

महम उपचुनाव के हो-हल्ले में इस चुनावी हिंसा के एक अत्यंत गंभीर पहलू की अनदेखी की गई. राज्य पुलिस के 400 से अधिक रंगरूटों ने सरकारी निर्देशों की खुली अवहेलना की. पर हरियाणा सरकार ने राज्य सशस्त्र पुलिस (एचएपी) के इन रंगरूटों को मधुबन स्थित अपने परिसर में लौटने और प्रशिक्षण जारी रखने की इजाजत दे दी.

इस पूरे मुद्दे को दबाने की भी कोशिश की गई. गृहमंत्री संपत सिंह के अनुसार, "कोई बगावत नहीं हुई. हां, एक हेड कांस्टेबल के भड़काने पर कोई 30-40 जवानों ने नारे लगाए थे." यह कहकर दरअसल गृहमंत्री ने उस बुराई को ही छुपाने की कोशिश की जिसकी जड़ें बहुत गहरी जम चुकी हैं. हरियाणा में पुलिस का ताबड़तोड़ राजनीतिकरण हो रहा है.

सरकारी सूत्रों के अनुसार हरियाणा सरकार ने महम में एचएपी के 30,000 में से 7,800 जवान ही तैनात किए थे. यह सब संपत सिंह, सतर्कता निदेशक तथा कार्यकारी पुलिस प्रमुख आर.आर. सिंह, आईजी सीआईडी बुधराम और कुछ दूसरे अफसरों की निगरानी में हुआ. 28 फरवरी को जब चुनाव आयोग ने पुनर्मतदान का निर्देश दिया तो उसने एचएपी के कुछ जवानों को महम से हटाने को कहा.

इन जवानों को रोहतक पुलिस लाइन में भेज दिया गया जहां वे सर्दी की रात में बिना भोजन के पड़े रहे. जब यह खबर पहुंची कि उनके सहकर्मी हरबंस सिंह को आनंद सिंह दांगी के समर्थकों ने मार डाला है तो वे उत्तेजित हो उठे. अफवाह उठी कि एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने जबरदस्ती हरबंस सिंह के कपड़े चौटाला के बेटे अभय सिंह से बदलवाए और भीड़ ने उसे अभय सिंह समझकर मार डाला. नारनौल से आए दो पुलिस 'नेताओं' हेड कांस्टेबल दिलावर सिंह और मोहिंदर सिंह ने उन्हें ज्यादा भड़का दिया.

आर.आर. सिंह और डीआईजी वाई.एस. नकई ने किसी तरह 400 उत्तेजित जवानों को शहर में जुलूस निकालने से रोका. आर.आर. सिंह मानते हैं, "जवानों ने खुद मुझे कहा कि वे गलत आदेश नहीं मानेंगे और वही करेंगे जो महम में उनसे करवाया गया." पर सरकार बागियों को दंड देने में हिचक रही है. लगता है इसके पीछे भी राजनीति है.

इससे पहले 1978 में रोहतक पुलिस लाइंस में और 1982 में मधुबन में भी पुलिस बगावत हो चुकी है. 1989 के संसदीय चुनाव में भिवानी और हिसार में बड़े पैमाने पर पुलिस का दुरुपयोग हुआ था. बदतर बात तो यह है कि तीन महीनों से पुलिस बल में कोई महानिदेशक नहीं है. पिछले महानिदेशक एस.एस. बराड़ ने पदभार छोड़ने से पहले दिसंबर '89 में मुख्यमंत्री को एक कड़ी चिट्ठी में चेतावनी दी थी कि अगर पुलिस बल को पेशेवराना ढंग से काम नहीं करने दिया गया तो भिवानी और हिसार के हादसे बार-बार होंगे. पर हरियाणा के गद्दीनशीन शायद यही चाहते हैं.

—कंवर संधू

बंबई

विस्फोटक वारदात

बम धमाकों से पुलिस चिंतित

ये अनिष्ट के ही संकेत हैं. पिछले छह महीनों में बंबई में बम विस्फोट या बम पाए जाने की करीब 16 वारदातें हो चुकी हैं. इस प्रकरण में सबसे खतरनाक बात यह है कि पहले चार बमों का निशाना सिख प्रतिष्ठान थे जबकि बाद के सारे बम पुलिस बल की ओर लक्षित थे.

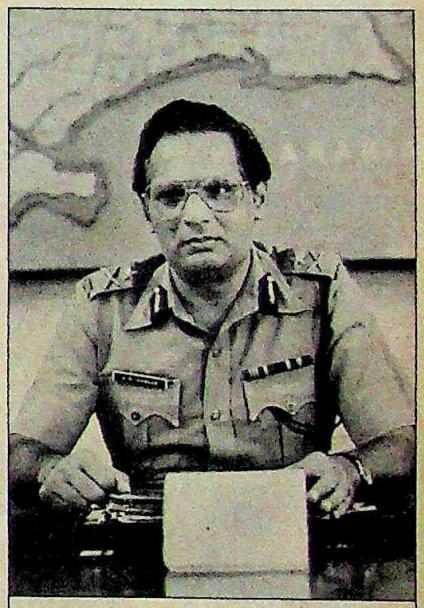

"बम विस्फोटों का निशाना पुलिस के बन जाने से हम परेशान हैं"

अरविंद इनामदार
संयुक्त पुलिस आयुक्त

सौभाग्य से इन विस्फोटों में दो ही लोगों की जानें गईं और संपत्ति का नुकसान भी बहुत अधिक नहीं हुआ.

लेकिन चिंताजनक बात यह है कि लाख सावधानी के बावजूद बम रखने का क्रम जारी है और ये बम एक ही जगह के बने हुए हैं. बदतर तो यह है कि अभी तक पक्के सबूत जुटाने की जगह पुलिस उलटे-सीधे विश्लेषण में ही लगी है. उसको संदेह है कि यह काम नगर में सक्रिय अपराधी गिरोहों या धार्मिक उग्रवादी संगठनों या फिर 1982 के दंगों में शामिल रहने के आरोप में नौकरी से निकाले गए पुलिस जवानों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. उसका मानना है कि पिछले वर्षों में अपराधी गिरोहों के खिलाफ कार्रवाई तेज किए जाने से बदले के लिए वे ऐसा कर सकते हैं. पुलिस के ही मुताबिक कुछ धार्मिक उग्रवादी संगठन भी ऐसा कर सकते हैं. पिछले साल सलमान रुश्दी की किताब 'सॅटेनिक वर्सेज' के खिलाफ हुआ प्रदर्शन जब हिंसक हो गया था तो पुलिस ने स्थिति पर नियंत्रण पाने के लिए गोली चलाई थी जिसमें 16 लोगों की जानें गई थीं.

लेकिन पुलिस आयुक्त सुधाकर भावे इन संभावनाओं के बारे में सीधी टिप्पणी करने से कतराते हैं. उनका कहना है, "अभी तक की स्थिति में तो मैं यही कह सकता हूं कि यह काम किसी ऐसे आदमी का है जिसे पुलिस से नाराजगी है."

जहां तक शुरुआती विस्फोटों की बात है, पुलिस को लगता है कि यह सिख संस्थाओं के संचालन को लेकर उलझी गुरु सिंह सभाओं और गुरद्वारा प्रबंधक कमेटियों के विवाद का नतीजा है. लेकिन इन बमों का निशाना खुद पुलिस के बन जाने से बड़े अधिकारी भी चिंतित हैं. संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) अरविंद इनामदार कहते हैं, "बम विस्फोटों का निशाना पुलिस के बन जाने से हम परेशान हैं."

दरअसल, 27 नवंबर को हुए पांचवें बम विस्फोट से अपराधियों के तौर-तरीकों में बदलाव आया और तब से पुलिस उनका निशाना बन गई. उस दिन लोकसभा चुनाव के मतों की गिनती चल रही थी कि पूर्व सांसद डॉ. दत्ता सामंत के कामगार आघाड़ी के दफ्तर में भारी बम विस्फोट हुआ. इसमें एक सिपाही मारा गया और दो गंभीर रूप से घायल हुए.

कोई पक्के सबूत न मिलने और सिर्फ अंधेरे में लाठी भांजने से बंबई पुलिस के पास अभी चौकसी बढ़ाने और अपराधियों पर नजर रखने के अलावा और कोई चारा भी नहीं है

उसके बाद 2 जनवरी को मध्य बंबई स्थित पुलिस आवास परिसर नाईगाम में बम विस्फोट हुआ और एक पुलिसवाले का बेटा मारा गया. इसके बाद माहिम थाना परिसर के भीतर ही बम विस्फोट हो गया. एक बम वरली पैरेड ग्राउंड में मिला; दादर और दादाभाई नौरोजी रोड की पुलिस चौकी में भी दो बम पाए गए.

23 मार्च को पुलिस उपायुक्त के दफ्तर में, जो पाकिस्तानी और बांग्लादेशी आप्रवासियों पर नजर रखने वाले काम को संचालित करता है, एक गुमनाम फोन आया. फोन करने वाले ने पूछा, "आपको पता है कि आपके दफ्तर में रखे पानी के बर्तन के पास बम रखा है?" फिर उसने पुलिस को चुन-चुनकर गंदी से गंदी गालियां सुनाईं और फोन रख दिया. पुलिस का बम विरोधी दस्ता तुरंत हरकत में आया और उसे ठीक उसी स्थान पर, जहां फोन करने वाले ने बताया था, बम मिला जिसे उसने डिफ्यूज कर दिया. तीन दिन बाद एक पुलिस जीप के ड्राइवर की सीट के नीचे भी बम पाया गया.

इसके बाद तो पुलिस ठिकानों के आसपास तत्काल चौकसी बढ़ाई गई और अखबारों में भी विज्ञापन दिए गए कि लोग संदिग्ध चीजों को न छुएं.

कोई पक्के सबूत न मिलने और सिर्फ अंधेरे में लाठी भांजने से बंबई पुलिस के पास अभी चौकसी बढ़ाने और अपराधियों पर नजर रखे रहने के अलावा कोई और चारा भी नहीं है.

—रघुनंदन धर

सपनों को सुहाना बनाये
सोये अरमां जगाये

कॉयरफ्लैक्स गद्दों पर रात भर के सम्पूर्ण विश्राम के बाद प्रातः काल आप अपने को पाते हैं एकदम स्वस्थ, तरोताज़ा, और महसूस करते हैं एक नई उमंग

क्योंकि शुद्ध नारियल के रेशों तथा प्राकृतिक रबड़ के सम्मिश्रण से बने गद्दे ग्रीष्म-ऋतु में आरामदायक शीतलता और शरद-ऋतु में सुखद गर्माहट प्रदान करते हैं

COIRFLEX

और अब कॉयरफ्लैक्स की नई भेंट
कॉयरफ्लैक्स-कोहिनूर
विशिष्ट व्यक्तियों के लिये बने विशेष गद्दे

कॉयर कुशन्स प्रा० लि०
सी-७, नोएडा, फेस- II, गाज़ियाबाद (उ०प्र०)
रजि० ऑफिस
३६, फंक्शनल इण्डस्ट्रीयल एस्टेट फॉर इलैक्ट्रोनिक्स
ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस- II, नई दिल्ली-११० ०२०.
फोन: ६३३१०५, ६८४१०२८, ६८३८४९५

आराम बेमिसाल-साल-दर-साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैबन दास

भारतीय जनता पार्टी

महत्वपूर्ण मोड़

ठीक एक दशक पहले भारतीय जनसंघ घटक ने दोहरी सदस्यता पर विवाद के चलते जनता पार्टी से नाता तोड़ लिया था. इसके दो दिन बाद भारतीय जनता पार्टी का जन्म हुआ जो 'अपने भाग्य की नियंता स्वयं' बन गई.

दस साल में पार्टी ने लंबी डगर नाप ली है. पिछले पखवाड़े इसने कलकत्ता में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी का तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित करके पूर्वी भारत में भी अपने अभियान को गति प्रदान की. यही नहीं, पार्टी ने वहां ब्रिगेड परेड ग्राउंड में विशाल रैली भी आयोजित की. माकपा अपनी ताकत दिखाने के लिए अक्सर इस मैदान का इस्तेमाल करती आई है. पार्टी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने कहा, "पश्चिम बंगाल के राजनैतिक परिदृश्य में यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है."

पश्चिम बंगाल और कलकत्ता इस दक्षिणपंथी पार्टी के ऐतिहासिक विकास में हमेशा मील के पत्थर रहे हैं. पश्चिम बंगाल के ही श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने महात्मा गांधी की हत्या के सिलसिले में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खिलाफ कठोर कार्रवाई के बाद एक नई राजनैतिक पार्टी—भारतीय जनसंघ का गठन किया. फिर, 1952 में यह पश्चिम बंगाल ही था जहां विधानसभा के पहले चुनाव में पार्टी के 13 विधायक चुने गए, हालांकि बाकी देश भर में इसके दो ही विधायक थे. अभी पांच साल पहले 1984 में भाजपा ने चुनावी हार के बाद यही वह रणनीति तैयार की जिससे वह प्रमुख हैसियत पाने में सफल रही.

पार्टी के नेताओं ने पश्चिम बंगाल की वाम मोर्चा सरकार की खिंचाई करने में हालांकि सावधानी बरती पर सम्मेलन की कार्यवाही और प्रस्तावों में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के खिलाफ, खासकर कश्मीर मुद्दे और बजट के मामले में जरूर गुस्से का इजहार किया गया. भाजपा ने स्पष्ट कर दिया कि वह कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 के उन्मूलन के लिए संघर्ष करेगी. कलकत्ता अधिवेशन इस मायने में महत्वपूर्ण रहा कि इसने अयोध्या और राम जन्मभूमि के बजाए कश्मीर को पार्टी का आधारभूत मुद्दा बना दिया. कश्मीर के सवाल पर उन्माद खड़ा करके पार्टी राष्ट्रवाद और हिंदुत्व को जोड़ सकती है और इस तरह सांप्रदायिक पत्ता खेलने के आरोप को बेबुनियाद ठहरा सकती है.

सम्मेलन में भाजपा का रवैया राष्ट्रीय मोर्चे से अलग पहचान बनाए रखने का ही स्पष्ट प्रयास था. यह बात बजट पर पारित प्रस्ताव से साफ हो गई. वाजपेयी ने कहा, "बजट में खुलापन चाहिए. इसमें इतनी गोपनीयता क्यों? और फिर अलग रेल बजट की क्या तुक है?"

पार्टी ने पंजाब की स्थिति की कुछ जिम्मेदारी 'मौजूदा सरकार की नरम नीति' पर भी डाली. वाजपेयी ने साफ कहा, "हम इस सरकार के पतन का निमित्त नहीं बनेंगे. अगर यह गिरी तो अपनी ही गलतियों से गिरेगी मगर भाजपा इसका फायदा इंका को नहीं उठाने देगी."

राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने पश्चिम बंगाल, उत्तर-पूर्व और दक्षिण को फतह करने की

रैली में भाजपा नेताः व्यापक योजना

रणनीति की देखरेख के लिए पंचवर्षीय योजना बनाई और 11 सदस्यीय अध्ययन दल भी गठित किया.

पश्चिम बंगाल में पार्टी अपना आधार फैलाती जा रही है. वाम मोर्चा सरकार के कड़े विरोध के बावजूद अनेक जगहों पर रामशिला पूजा आयोजित हुई. इसके बाद हुए आम चुनाव में पार्टी का मतदान प्रतिशत 1984 के 0.40 के मुकाबले बढ़कर 1.71 तक जा पहुंचा. और फिर, राज्य इंका वस्तुतः पंगु हो गई है.

पार्टी का फौरी निशाना 1992 के विधानसभा चुनाव को प्रभावित करना है. राज्य इकाई के सचिव पारस दत्त के मुताबिक इंका के 42 फीसदी वोटों में से 18-20 फीसदी ही प्रतिबद्ध हैं जबकि माकपा के 35 फीसदी वोटों में 15 फीसदी प्रतिबद्ध हैं. इस तरह राज्य कार्यकारिणी करीब 42 से 44 फीसदी 'नकारात्मक मतदाताओं' का वजूद मानती है जो परिवर्तन के लिए उत्सुक हैं.

व्यापक कार्ययोजना के मुताबिक राज्य इकाई निकट भविष्य में बड़े पैमाने पर लोगों को गोलबंद करेगी. पर माकपा नेता इन योजनाओं की खिल्ली उड़ाते हैं.

भाजपा की योजनाएं हकीकत पर आधारित हैं या नहीं, यह बहस का मुद्दा हो सकता है पर कलकत्ता अधिवेशन ने निश्चय ही पार्टी का हौसला बुलंद किया है. इससे इस राज्य की राजनीति को भी नया आयाम देने में मदद मिली है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीरी विस्थापित

दोहरी विपदा के शिकार

कश्मीर में लौटना संभव नहीं, और दिल्ली में बसना

पिछले दो महीने में 38 वर्षीय संजय रैना (बदला हुआ नाम) की जिंदगी में ऐसा जलजला आया जिसने उनका सब कुछ उलट-पलट दिया है. जनवरी के अंत तक श्रीनगर के निकटवर्ती कस्बे में उनका अपना दुमंजिला घर था, स्कूल की नौकरी थी और वह सब था जिसके आसपास एक मध्यवर्गीय कश्मीरी की जिंदगी घूमती है. लेकिन पिछले पखवाड़े चार सदस्यों वाले उनके परिवार की कुल पूंजी साउथ एक्सटेंशन के शरणार्थी कैंप में छह वर्ग फुट के फर्श पर बिछे दो बिस्तरों, चार प्लेटों, एक पतीली, एक कैरोसीन स्टोव और कुछ जोड़ी कपड़ों के घेरे में सिमट चुकी थी. इस सामान में से कपड़ों को छोड़ बाकी सब सामान रैना परिवार को सरकारी या गैर सरकारी प्रयासों से खैरात में मिला है.

बेतरतीब बढ़ी दाढ़ी के पीछे रुआंसी आंखों को बंद करके वे उदास आवाज में कहते हैं, "पिछले तीन महीने से मुझे तनख्वाह नहीं मिली. बचा-खुचा पैसा भी खत्म हो गया. अब तो मेरे पास न दाढ़ी बनवाने के पैसे हैं और न डीटीसी बस का टिकट खरीदकर रोजगार ढूंढने लायक रेजगारी."

पिछले सप्ताह यह रपट लिखे जाने तक रैना परिवार की तरह कश्मीर घाटी से भागकर आने वाले लोगों की संख्या एक लाख की सीमा रेखा को छू चुकी थी. घाटी से घर-बार छोड़कर भागे लगभग सभी लोगों की आर्थिक हालत रैना परिवार जैसी हो चुकी है. हालांकि इनमें से अधिकांश परिवार जम्मू के शरणार्थी कैंपों में ही टिके हुए हैं पर इन कैंपों में बढ़ती भीड़ और अनिश्चित भविष्य के प्रति गहराती आशंकाओं ने कई शरणार्थियों को दिल्ली और बंबई जैसे शहरों की ओर कूच करने पर मजबूर कर दिया है. मार्च शुरू होने के साथ ही बेहतर सुविधाओं और नए भविष्य की तलाश में राज्य छोड़कर बाहर जाने वाले लोगों की संख्या में अचानक बढ़ोतरी हो गई है.

पिछले हफ्ते तक दिल्ली प्रशासन के रजिस्टर में दर्ज आंकड़ों के अनुसार राजधानी आ बसे कश्मीरी शरणार्थी परिवारों की संख्या 5,200 तक पहुंच चुकी थी. प्रशासन ने इनमें से लगभग 50 परिवारों को साउथ एक्सटेंशन, कैलाश कालोनी और कृष्णा मार्केट के सामुदायिक भवनों में स्थापित शरणार्थी कैंपों में ठहराया है. 300 परिवारों के लिए दिल्ली प्रदेश भाजपा ने मंदिरों और धर्मशालाओं में व्यवस्था की है. बाकी लोग अपने परिचितों के यहां टिके हैं.

दिल्ली में अपने नाम दर्ज कराने वाले ये सभी लोग उन हिंदू या सिख परिवारों से हैं जो पीढ़ियों से कश्मीर में रहते आए हैं. हालांकि हिंसा और अशांति के इस माहौल के चलते कुछ गिने-चुने मुस्लिम परिवार भी दिल्ली और बंबई जैसे शहरों में जा बसे हैं लेकिन उनमें से अधिकांश ऐसे रईस कश्मीरी हैं जिन्हें डर सताने लगा है कि हिंदुओं के बाद आतंकवादियों का अगला निशाना उनकी दौलत हो सकती है. शायद यही वजह है कि दिल्ली के अपने बंगलों में, होटलों या किराए के घरों में आ बसे इन लोगों ने अपने नाम प्रशासन के रजिस्टर में दर्ज नहीं कराए हैं.

इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को इतिहास के संदर्भ में देखते हुए एक वयोवृद्ध कश्मीरी डॉक्टर काशीराम कहते हैं, "छह सौ साल पहले जब सिकंदर बुतशिकन का राज आया था तब भी कश्मीरी पंडितों के सिर्फ 11 परिवारों को छोड़ बाकी हिंदू घाटी से भाग गए थे." और मौजूदा आंकड़े बताते हैं कि 32 लाख आबादी वाली घाटी में बसे लगभग सवा लाख हिंदुओं और सिखों में से एक लाख लोग आतंकित होकर घाटी छोड़ चुके हैं.

शरणार्थियों के लिए सुविधाएं जुटाने और प्रशासन के साथ उनकी ओर से संपर्क साधने का काम राजधानी का कश्मीरी समाज कर रहा है. समाज के प्रवक्ता और शरणार्थियों की देखभाल संबंधी अभियान के संचालक ए.के. कौल कहते हैं, "अभी तक तो लोग अपने रिश्तेदारों के यहां इस भरोसे रहते चले आ रहे थे कि कुछ दिन में हालात सुधरने पर वे वापस चले जाएंगे. लेकिन अब तो लगता है कि लोगों को लंबे समय तक यहीं रहना होगा. इसलिए जरूरी हो गया है कि दिल्ली प्रशासन इन लोगों के पुनर्वास की स्थायी व्यवस्था करे."

लेकिन दिल्ली प्रशासन का इस मुद्दे पर नजरिया उतना उदार नहीं दिखता जितनी उम्मीद शरणार्थी लगाए हुए हैं.

प्रशासन के राहत विभाग के निदेशक चमन लाल कहते हैं, "कश्मीरी शरणार्थियों से हमें पूरी सहानुभूति है और उन्हें मानवीय सहायता पहुंचाने की जिम्मेदारी से हम पीछे नहीं हटेंगे, लेकिन हम उन्हें स्थायी रूप से दिल्ली में बसाने के लिए तैयार नहीं हैं." इस संदर्भ में वे पंजाब के उन दस हजार शरणार्थियों का उदाहरण देते हैं जिन पर प्रशासन हर महीने लगभग 65 लाख रु. के हिसाब से अब तक 25 करोड़ रु. खर्च कर चुका है. एक वरिष्ठ अधिकारी की टिप्पणी थी, "अगर स्थायी रूप से दिल्ली में बसाया जाएगी. इ... बहुत आस... दूसरी रवैया भी आए शरण... उठाने वाले... कहते हैं "... लोगों को... कराई जा... लोगों को...

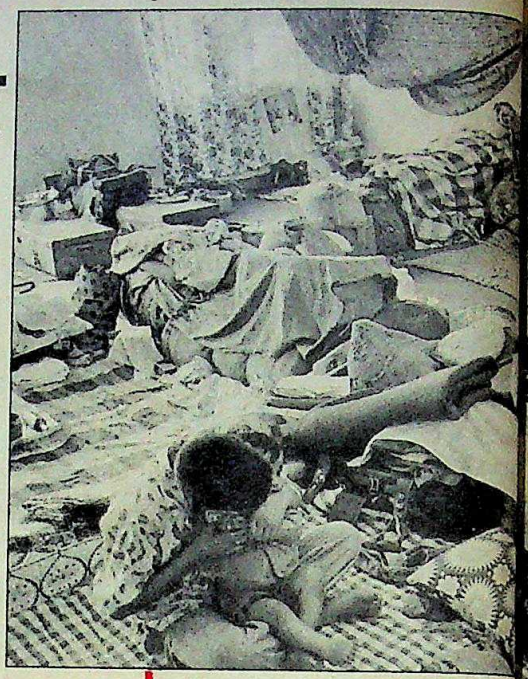

(ऊपर) एक सामुदायिक भवन में शरण... की भीड़, (नीचे) घटिया राशन दि... हुए एक शरणार्थी: अपने घर में बे...

आतंकवाद के कारण भागे शरणार्थी नए संकट से घिर गए हैं. उनके लिए न राज्य सरकार कुछ करने को तैयार है, न केंद्र सरकार और न दिल्ली प्रशासन. अब तो आत्मविश्वास और धैर्य का सहारा ही बचा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: शरद मक्सेना

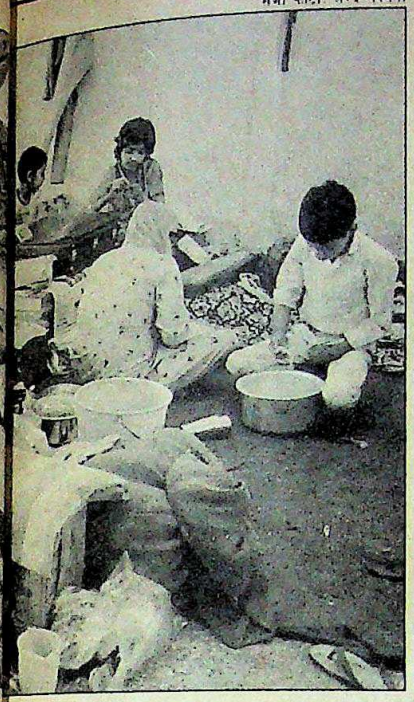

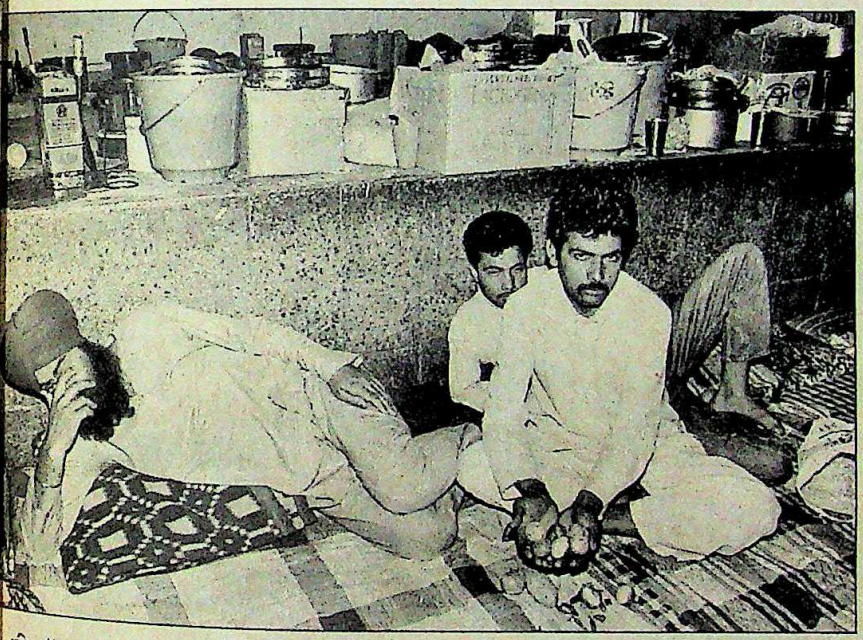

थी, "अगर हमने इन शरणार्थियों को यहां स्थायी रूप से बसाने की व्यवस्था कर दी तो दिल्ली में नए शरणार्थियों की बाढ़ आ जाएगी. इस हालत में जेकेएलएफ का काम बहुत आसान हो जाएगा."

दूसरी ओर केंद्र सरकार का अब तक का रवैया भी खास उत्साहवर्धक नहीं है. दिल्ली आए शरणार्थियों के लिए संसद में आवाज उठाने वाले भाजपा सांसद मदनलाल खुराना कहते हैं "हमने केंद्र सरकार से कहा है कि इन लोगों को भी ठीक वैसी ही सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं जैसी 1984 के दंगों से प्रभावित लोगों को दी गई थीं. इस पर केंद्रीय गृह मंत्री ने संसद को आश्वासन दिया था कि इन परिवारों को हर महीने 500 रु. और मुफ्त राशन दिया जाएगा. लेकिन दो हफ्ते बाद भी इस पर अमल नहीं किया गया है."

इस सरकारी रवैये को देखते हुए पिछले सप्ताह दिल्ली प्रदेश भाजपा नेताओं ने बाजारों और घरों में जाकर शरणार्थियों के लिए सहायता बटोरने का अभियान चलाया. पहले दिन 7 लाख रु. इकट्ठा हुए. खुराना बताते हैं कि जम्मू में शरणार्थियों के लिए भी भाजपा की दिल्ली शाखा एक ट्रक भरकर बर्तन और कपड़े भेजने जा रही है.

हालांकि शरणार्थियों के प्रदर्शनों और केंद्रीय मंत्रियों के साथ बातचीत के बाद केंद्र के आदेश पर दिल्ली प्रशासन ने शरणार्थियों के नाम दर्ज करने का काम शुरू कर दिया है लेकिन उन्हें बिस्तर, बर्तन और नाममात्र का राशन उपलब्ध कराने के बाद वह और आगे बढ़ने को तैयार नहीं दिखता.

दिल्ली प्रशासन मुसीबत के मारे अपने इन अनचाहे मेहमानों के बारे में अंतिम और स्पष्ट नीति कब अपनाता है यह अभी स्पष्ट नहीं. लेकिन फिलहाल यह स्पष्ट हो चुका है कि ये बेघर मेहमान अभूतपूर्व संकट से गुजर रहे हैं. श्रीनगर में कपड़े की दुकान चलाने वाले चंदर मलहोत्रा (46) कृष्णा मार्किट के कैंप में मिलने वाला चावल और सब्जी दिखाते हुए कहते हैं, "हमारे कश्मीर में तो जानवर भी इसे न खाएं."

मगर कड़वा सच है कि अचानक आ पड़ी मुफलिसी और खानाबदोशी ने अधिकांश लोगों का आत्मविश्वास डिगा दिया है. राजेंद्र (28) का परिवार पिछले एक सौ साल से श्रीनगर के दो प्रमुख बाजारों में सूखे मेवे और प्रोविजन के स्टोर चलाता आया है. इस परिवार की कुल पूंजी एक करोड़ रु. है. लेकिन फरवरी के शुरू में जब रात के अंधेरे में वे लोग जम्मू के लिए टैक्सी में सवार हुए तब घर में रखी थोड़ी-सी नकदी, फिक्स डिपाजिट के कुछ सार्टिफिकेट और नाम मात्र के गहनों के अलावा उनके पास सिर्फ दो-दो जोड़ी कपड़े ही थे. जेब का पैसा अब खत्म होने पर आ रहा है और फिक्स डिपाजिट पर कोई बैंक उन्हें पैसा देने को तैयार नहीं है. एकदम बुझी हुई आवाज में वे कहते हैं, "अगर अब भी सरकार ने कोई मदद न की तो खोमचा लगाने की नौबत आ जाएगी."

जम्मू और दिल्ली में प्रदर्शनकारी शरणार्थियों की मांग है कि उनके बैंक खाते और लॉकर घाटी से बाहर जम्मू लाए जाएं और नौकरीपेशा लोगों को जम्मू में ही वेतन दिया जाए. इन प्रदर्शनों के बाद राज्य सरकार ने अपने कर्मचारियों के लिए तो जम्मू में वेतन देने की व्यवस्था की घोषणा की है लेकिन प्राइवेट कर्मचारियों, बैंक खातों और लॉकरों के बारे में कोई ठोस कदम उठाया जाना बाकी है. और दिल्ली में आए शरणार्थियों को तो इस मामले में न राज्य सरकार के दिल्ली स्थित दफ्तर कोई सूचना देने को तैयार हैं और न स्थानीय प्रशासन. नतीजा यह है कि खाते-पीते घरों के लोग भी सरकारी राशन की कतारों में खड़े रहने पर मजबूर हो रहे हैं.

लेकिन इन मुसीबतों के बावजूद शरणार्थियों की गतिविधियों के मुख्य केंद्र कश्मीर भवन में जिस व्यवस्थित ढंग से कामकाज चल रहा है वह प्रभावित करने वाला है. समिति ने शरणार्थियों के नाम दर्ज करने, उनके स्थानीय पते, शिक्षा, व्यवसायिक अनुभव और रोजगार की जरूरतों संबंधी रिकार्ड तैयार करने का काम एक स्थानीय कंप्यूटर एजेंसी को सौंप दिया है. प्रिंटर पर छपी जानकारी भवन की दीवार पर चिपका दी गई है ताकि लोग अपने जानकारों के बारे में खोज-खबर कर सकें. इसी तरह पढ़े-लिखे लोगों के लिए नौकरियों के विज्ञापन और अखबार भी खूंटियों पर लटके रहते हैं ताकि अपने काम के विज्ञापन पढ़कर लोग नौकरियों के लिए आवेदन कर सकें.

'एंप्लायमेंट-न्यूज' में से अपने मतलब के पते नोट करते हुए सुदेश गंजू (27) की टिप्पणी थी, "सरकार जब नौकरी देगी तब देखा जाएगा. उसके इंतजार में खाली बैठे रहने का मतलब होगा अपनी आर्थिक हालत को और खराब करना और आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान से हाथ धो बैठना. हम कश्मीरियों के लिए यह महंगा सौदा होगा." लेकिन घाटी में चलने वाली अनिश्चितता को देखते हुए लगता है कि शरणार्थियों को अभी और अधिक आत्मविश्वास तथा धैर्य दिखाना होगा.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

अंजाम खुदा जाने

इंका व सहयोगी संगठन संकट में

मानो पराजित सेना के भीतर ही युद्ध छिड़ गया हो. राजस्थान कांग्रेस के बुजुर्गवार नेता इन दिनों राजीव गांधी के नजदीकी युवा तुर्क अशोक गहलोत से सीधी टकराहट पर उतर आए हैं. उन्होंने अब गहलोत की छाया तले बढ़ने वाली पौध को सड़क पर फेंक दिया है.

तीखे तेवर वाले बुजुर्ग प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष परसराम मदेरणा और उनके अनुभवी साथी युवाओं का 'नशा' उतारने में लगे हैं. अपनी पैनी निशानेबाजी से उन्होंने विधानसभा चुनावों में युवाओं के राजनैतिक महल को ध्वस्त किया. और इस बार तो उनका आशियाना भी उजाड़ दिया है. उन्होंने पार्टी के चारों अग्रिम संगठनों को 'बेघर' कर सड़क पर ला दिया है.

राजस्थान सरकार ने पिछले दिनों प्रदेश कांग्रेस से जयपुर की आलीशान बस्ती वनीपार्क में उसके सरकारी भवन स्थित कार्यालय के किराये के बकाया चार लाख रु. जमा कराने के लिए एक नोटिस जारी किया. मदेरणा ने किराया जमा कराने के बदले इस कार्यालय भवन को वापस राज्य सरकार को सौंपने का फैसला कर लिया.

इस फैसले से पार्टी के चारों अग्रिम संगठनों—युवक कांग्रेस, सेवादल, भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन और महिला कांग्रेस—की हालत अवश्य दयनीय हो गई है और इन चारों संगठनों के अध्यक्षों को अपना भविष्य धुंधला नजर आने लगा है.

दरअसल, यह मामला दफ्तर खाली करने और आर्थिक संकट का नहीं है. इसके पीछे कांग्रेस की गुटबाजी है. मदेरणा और गहलोत में 36 का आंकड़ा है. राजनैतिक प्रतिद्वंद्विता की वजह से दोनों नेता अपने-अपने तीर चलाते रहते हैं. जिला प्रमुख के चुनाव में मदेरणा के पुत्र के हारने और हरिदेव जोशी के मुख्यमंत्री के पद से हटने की वजह गहलोत गुट ही था. पर जब मदेरणा-जोशी की बारी आई तो इन्होंने विधानसभा चुनावों में गहलोत गुट के लोगों को टिकट ही नहीं दिए. गहलोत गुट के जिन तीन युवाओं को अग्रिम संगठनों के अध्यक्ष होने के नाते टिकट मिला था, उनमें एनएसयूआई के अध्यक्ष जुबेर खां ही विधायक बनने में सफल हो पाए.

चुनावों के बाद मदेरणा अगुआ संगठन के अध्यक्षों को हटाना चाहते थे और उन्होंने इसके लिए उन्हें इशारा भी कर दिया था. लेकिन तीनों युवा तुर्कों—सेवादल के अध्यक्ष महेश जोशी, युवक कांग्रेस के रघु शर्मा और एनएसयूआई के जुबेर खां—ने कुर्सी नहीं छोड़ी तो मदेरणा ने दूसरी चाल चली. उनके इशारे पर राज्य सरकार ने इन संगठनों के कार्यालय भवन का किराया जमा कराने का नोटिस भेजा और मदेरणा ने तुरत-फुरत फैसला कर दिया. यही नहीं, कार्यालय भवन में पानी, बिजली व टेलीफोन कनेक्शन भी काट दिए गए.

एक प्रवक्ता के अनुसार चारों सहयोगी संगठनों के अध्यक्ष मदेरणा के फैसले का प्रतीकात्मक तरीके से विरोध करने पर विचार कर रहे हैं. उनका इरादा है कि प्रदेश इंका के इंदिरा गांधी भवन के सामने तंबू लगाकर कार्यालय खोल लें ताकि जनता को भी मालूम हो कि गुटबाजी एक प्रतिष्ठित पार्टी को किस हालत तक पहुंचा देती है. एक अग्रिम संगठन के अध्यक्ष के मुताबिक, "अच्छा होता मदेरणा जी हमें पद से ही हटवा लेते. कम-से-कम इतनी जिल्लत तो नहीं झेलनी पड़ती."

प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता सूरज खत्री का कहना है, "यह प्रशासनिक निर्णय है और मदेरणा ने वरिष्ठ नेताओं की सहमति से ही यह फैसला किया है." खत्री ने बताया कि इंदिरा गांधी भवन में पीछे की ओर दो बड़े कमरे बनवाए गए हैं और आगे छह कमरे हैं. इनमें इन सहयोगी संगठनों के दफ्तर बनाए जा सकते हैं.

दूसरी ओर रघु शर्मा इस घटना से काफी नाराज हैं. उनका कहना है, "इंदिरा गांधी भवन इतना छोटा है कि उसमें तो पार्टी पदाधिकारियों की नेमप्लेट भी नहीं लग सकती. इस गुटबाजी के कारण पार्टी का चुनावों में यह हश्र हुआ और अब भी प्रदेश अध्यक्ष षड्यंत्र कर रहे हैं." शर्मा ने मदेरणा पर आरोप लगाया कि वे गहलोत की परछाईं पड़ने वालों की जड़ें काटना चाहते हैं. शर्मा ने यह आरोप भी लगाया कि विधानसभा में पार्टी के सारे दिग्गज पहुंच गए हैं लेकिन एक भी मसले पर कांग्रेस ने सशक्त विपक्ष की भूमिका नहीं निभाई.

शर्मा का वरिष्ठ नेताओं पर सरकार से मिलीभगत का आरोप कितना सही है, यह तो वक्त ही बताएगा पर बकौल उन्हीं के, अगर मदेरणा पार्टी को सक्रिय करने के बजाए गुटबाजी में मशगूल रहे तो प्रदेश कांग्रेस का अंजाम खुदा ही जाने.

तीखे तेवर वाले बुजुर्ग प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष युवाओं का 'नशा' उतारने में लगे हैं. उन्होंने पार्टी के चारों सहयोगी संगठनों को 'बेघर' कर सड़क पर ला दिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SATURDAY 25

चोट तो थी गहरी लेकिन बचाव भी था पूरा

दर्द तो अब नहीं। लेकिन हाथ और घुटने का प्लास्टर कटने में अभी भी एक हफ़्ता और लगेगा। अभी तो पैर भी ठीक से नहीं पकड़ा जा रहा। डॉक्टर तो कहते हैं कि सब कुछ ठीक है और परेशानी की कोई बात नहीं।

SUNDAY 26

डॉक्टर का बिल तो लम्बा-चौड़ा निकला। हाँ, याद आया, दुर्घटना बीमा पॉलिसी जो ले रखी है। फ़ौरन फ़ोन मिलाया-ओरिएण्टल वालों को। चलो, क्लेम तो मिल जायगा। सिर्फ़ प्लास्टर कटने की देर है और इलाज के बिल तथा फिटनेस सार्टिफ़िकेट उनके पास जमा करने की।

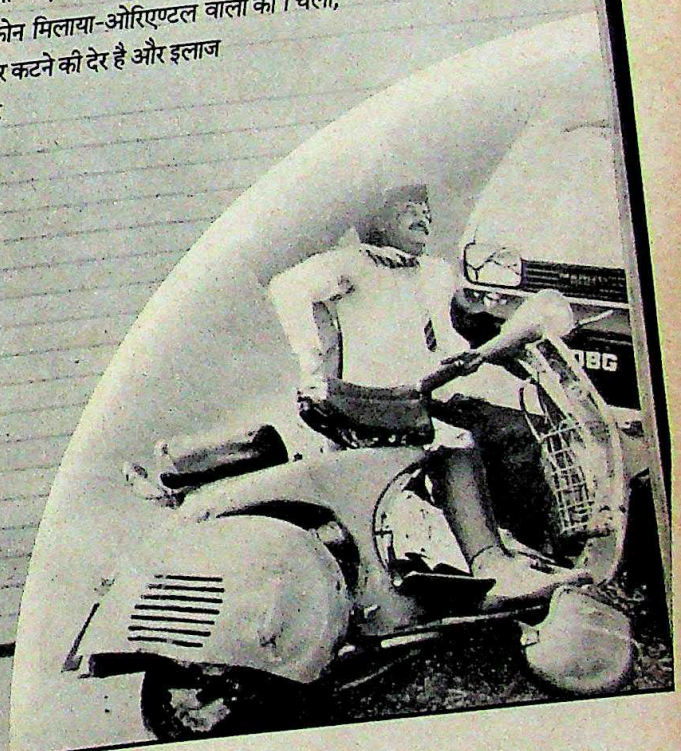

सम्पूर्ण परिवार के लिये:

दुर्घटना से अपंग होने पर या अंग-भंग होने की स्थिति में, घायल होने या दुर्भाग्यवश मृत्यु हो जाने पर, मुआवजा दिये जाने का प्रावधान। प्रीमियम बहुत मामूली। एक लाख की पॉलिसी के लिये केवल 200 रु०/- से 300 रु०/- तक (पेशे पर निर्भर)।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस की व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा पॉलिसी

ओरिएण्टल इंश्योरेंस

(भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कम्पनी)
'ओरिएण्टल हाउस', ए-25/27, आसफ़ अली रोड,
नई दिल्ली-110 002.

Advtg. Integrated/OIC/2490

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

हिंसा का आदी

राजनैतिक हत्याएं जारी

हिंसा, हमले और हत्याएं. हाल के हफ्तों में हुई राजनैतिक हिंसा ने समूचे आंध्र प्रदेश को हिलाकर रख दिया है. लेकिन यह बात विचित्र है कि राज्य में लोगों का रुख आम तौर पर तटस्थता का ही है. लगता है मानो राजनैतिक हिंसा आंध्र की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गई है.

चौंकाने वाली बात यह है कि हत्याएं चोरी-छिपे नहीं खुलेआम हो रही हैं. 25 मार्च को विजयवाड़ा इंका समिति के उपाध्यक्ष बंगा वेंकटेश्वरलु की हत्या पांच लोगों ने कर दी. वेंकटेश्वरलु, वंगवीति मोहन रंगा राव के काफी निकट थे, जिनकी हत्या तेलुगु देशम कार्यकर्ताओं ने दिसंबर 1988 में कर दी थी. इस हत्या के बाद राज्य के तटीय जिलों में हिंसा की भीषण लहर दौड़ गई थी. रंगा की विधवा और नवंबर में विधानसभा के लिए चुनी गई रत्नकुमारी कहती हैं, "चुनाव के बाद चार महीने में शहर में होने वाली यह चौथी हत्या है. पुलिस कानून और व्यवस्था बनाए रखने में अक्षम है."

करीब-करीब इसी समय सहकारिता मंत्री जे.सी. दिवाकर रेड्डी के भाई के नेतृत्व में इंका कार्यकर्ताओं ने अनंतपुर जिले ताडिपत्रि में तेलुगु देशम के पी. नागी रेड्डी के घर पर हमला कर दिया और पास के गांवों में उनके समर्थकों के साथ भी मारपीट की.

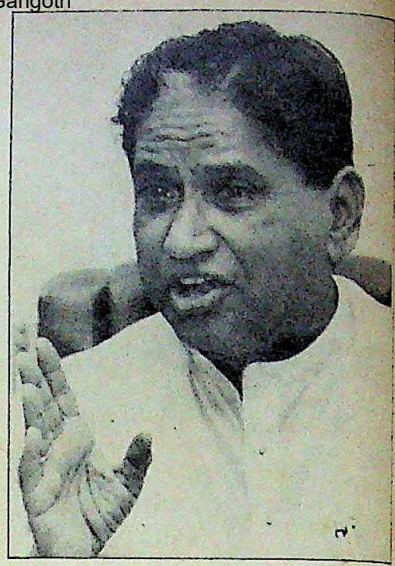

रामराव (बाएं) और रेड्डी

जैसी उम्मीद थी, तेलुगु देशम के नेताओं ने अपने कार्यकर्ताओं पर हुए हमले की निंदा की. पार्टी अध्यक्ष नंदमूरि तारक रामराव कहते हैं, "इंका हत्या की राजनीति चला रही है." उनका तो यहां तक कहना है कि इंका खुद अपने ही कार्यकर्ताओं की हत्या करवा रही है. तेलुगु देशम के सचिव जी मुड्डुकृष्णमा नायडु के अनुसार, "इंका के जो समर्थक मारे गए हैं, वे पार्टी के अपने किए धरे के ही शिकार हुए हैं."

वैसे बड़े इंका नेता तेलुगु देशम के इन आरोपों को बकवास बता रहे हैं. राजस्व मंत्री डी.के. समरसिंह रेड्डी कहते हैं, "वे लोग अपना राजनैतिक अस्तित्व बचाए रखने के लिए थोथे हथकंडों का सहारा लेने की नीति अपना रहे हैं."

लेकिन पिछले पखवाड़े पार्टी अध्यक्ष राजीव गांधी जब हैदराबाद होकर गुजरे तो इंका सांसद वाई.एस. राजशेखर रेड्डी ने उनसे शिकायत की कि राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति बहुत खराब है और हिंसा पूरे जोर पर है.

राज्य के प्रमुख नक्सलवादी संगठन पीपुल्स वार ग्रुप द्वारा तेलंगाना क्षेत्र में किसानों की मांग के समर्थन में 10 अप्रैल को किए गए बंद के बाद हालात और भी बेकाबू हो सकते हैं.

चेन्ना रेड्डी ने कहा है कि उनकी सरकार यह सब बर्दाश्त नहीं करेगी. लगता है नक्सलवादियों के साथ चार महीने तक चला उनका प्रेम संबंध खत्म हो गया है. इसका मतलब राज्य में हिंसा का एक और दौर हो सकता है.

—अमरनाथ के. मेनन

तिरुपति

श्रद्धा पर डाका

कई कर्मचारी पकड़े गए

सबसे धनी तीर्थ तिरुपति के व्यवस्थापकों तिरुमला-तिरुपति देवस्थानम् (टीटीडी) के सामने अजीबोगरीब समस्या उठ खड़ी हुई है. और वह है चढ़ावे में मिले सोने की चोरी.

कुछ बेईमान कर्मचारी लोगों द्वारा हुंडी में डाला गया सोना गिनती के समय चुरा लेते थे. बाद में मंदिर के खजाने में जमा करने के लिए भेजे जाने वाले सिक्कों के थैलों में डालकर सोना मंदिर से बाहर निकाल लिया जाता था.

पिछले महीने सिक्कों से भरे कुछ थैलों के भीतर से सोना निकला तो विधानसभा में राज्य सरकार को खासी मुसीबत का सामना करना पड़ा. धर्मादामंत्री रवींद्रनाथ चौधरी को यह मांग माननी पड़ी कि चढ़ावा और उसके हिसाब-किताब के तरीकों की जांच विधायकों की समिति करेगी. लेकिन तभी सीआईडी के अधीक्षक एम. रतन के नेतृत्व में विशेष पुलिस जांच दल ने गुत्थियों पर से परदा उठाना शुरू कर दिया.

पिछले पखवाड़े जांच के बाद पुलिस ने टीटीडी के 12 कर्मचारियों को गिरफ्तार किया. इनके घरों पर छापों से लाखों रु. मूल्य की पूंजी और संपत्ति के कागजात जब्त किए गए. पकड़े गए लोगों में सोने का मूल्यांकन करने वाला एक व्यक्ति भी है, जिसका वेतन मात्र 700 रु. प्रतिमाह है. यह चार इमारतों का मालिक है.

रतन कहते हैं, "इन लोगों की धोखाधड़ी बड़े व्यवस्थित ढंग से चल रही थी." इस बीच टीटीडी ने अपने सभी कर्मचारियों से कहा है कि वे अपनी संपत्ति का पूरा ब्यौरा दें. साथ ही यह अनिवार्य कर दिया गया है कि अगर वे 5,000 रु. से अधिक की अचल संपत्ति खरीदना, बेचना या उपहार स्वरूप देना चाहते हैं तो उन्हें कार्यपालक अधिकारी की अनुमति लेनी होगी. जाहिर है, यह सब करके चढ़ावे की हुंडी के सभी छेद बंद किए जा रहे हैं ताकि लोगों की श्रद्धा भगवान तक पहुंच सके.

—अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

भाषा की खातिर

लंबे संघर्ष को नया आयाम

भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के बीच चार दशक से चलता आ रहा टकराव अब एक नया आयाम लेता दिखाई दे रहा है. पिछले महीने हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सरकारों ने हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाने की घोषणा करके उन संगठनों और लोगों में नया उत्साह भर दिया है जो भारतीय भाषाओं को सम्मानित दर्जा दिलाने के संघर्ष में जुटे हुए हैं. इस बदले हुए माहौल में अब उस विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट उत्सुकता का केंद्र बन गई है जो सरकार को यह सलाह देगी कि केंद्रीय सेवाओं की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के प्रयोग की अनुमति दी जाए या नहीं.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर सतीश चंद्र की अध्यक्षता में गठित इस समिति ने अगर फिर से अपना कार्यकाल बढ़ाने के लिए नहीं कहा तो उसकी रिपोर्ट 30 अप्रैल तक केंद्र सरकार को मिल जानी चाहिए. इस समिति का गठन सितंबर 1988 में भारतीय भाषा संगठन और अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन जैसी संस्थाओं के लंबे आंदोलन के बाद किया गया था. इन संस्थाओं की मांग है कि केंद्रीय और संबंधित सेवाओं के लिए आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता खत्म की जाए और इन सभी परीक्षाओं को मान्य भारतीय भाषाओं में भी दे सकने की छूट दी जाए. इस समय संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली सिविल सेवा परीक्षाओं में आठवीं सूची में शामिल भाषाओं में पर्चे लिखने की छूट है. इन परीक्षाओं में अंग्रेजी का पर्चा अनिवार्य होने के अलावा साक्षात्कार अंग्रेजी में ही लिए जाते हैं. इस समिति को अपनी रिपोर्ट तैयार करने के लिए एक साल का समय दिया गया था. लेकिन सितंबर 1989 में समिति के आग्रह पर उसका कार्यकाल छह महीने के लिए बढ़ा दिया गया. तब आंदोलनकारी संगठनों को आश्वासन दिया गया था कि समिति का कार्यकाल और नहीं बढ़ाया जाएगा. लेकिन मार्च 1990 में समिति के कहने पर उसे 30 अप्रैल तक का और समय दे दिया गया. इस रवैए को टाल-मटोल बताते हुए भारतीय भाषा संगठन ने पिछले कुछ महीनों से आयोग के कार्यालय के सामने कई बार धरने और प्रदर्शन किए. अभी भी धारावाहिक धरना चल रहा है. इसी सिलसिले में 'सक्रिय नाटक मंच' ने अफसरशाही के अंग्रेजी मोह के विरोध में आयोग कार्यालय के सामने 'भारत बनाम इंडिया' नुक्कड़ नाटक भी खेला.

इन प्रदर्शनों में हिंदी साहित्य सम्मेलन, भारतीय लेखक मंच, हिंदी संघर्ष वाहिनी और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ जैसे कई संगठनों के अलावा राजेंद्र माथुर, डॉ. वेद प्रताप वैदिक और यशपाल जैसे वरिष्ठ पत्रकारों और साहित्यकारों तथा अटल बिहारी वाजपेयी, मदनलाल खुराना, विजय कुमार मल्होत्रा, वीणा वर्मा, सैफुद्दीन चौधरी और ब्रजभूषण तिवारी समेत कई राजनेताओं ने भाग लिया और मांगों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया. इस आंदोलन ने पिछले सप्ताह तब विवादास्पद मोड़ ले लिया जब रूपनगर थाने की पुलिस ने संगठन के चार कार्यकर्ताओं को दीवारों पर अंग्रेजी विरोधी नारे लिखते समय गिरफ्तार कर लिया.

हालांकि हिंदी प्रदेशों की तीन राज्य सरकारों के क्रांतिकारी भाषाई फैसलों ने भारतीय भाषाओं के सम्मान के लिए संघर्षरत लोगों को नया नैतिक बल तो अवश्य दिया है लेकिन सतीश चंद्र समिति के मामले में उनका उत्साह बहुत बुझा-बुझा हुआ है. समिति अध्यक्ष के साथ भारतीय भाषा संगठन के प्रतिनिधिमंडल की फरवरी में हुई बातचीत के बाद संगठन ने उसका जो विवरण जारी किया उसमें समिति के कार्यक्षेत्र संबंधी अधिकार को ही चुनौती दी गई है. इस विवरण के अनुसार सतीश चंद्र कहते हैं कि समिति यह फैसला करेगी कि आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाया जाए या नहीं. जबकि आंदोलनकारी संगठनों का कहना है कि इस बारे में अंतिम फैसला तो 1968 के संसदीय संकल्प में लिया जा चुका है. समिति को तो सिर्फ यह बताने के लिए कहा गया था कि परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल कैसे किया जाए.

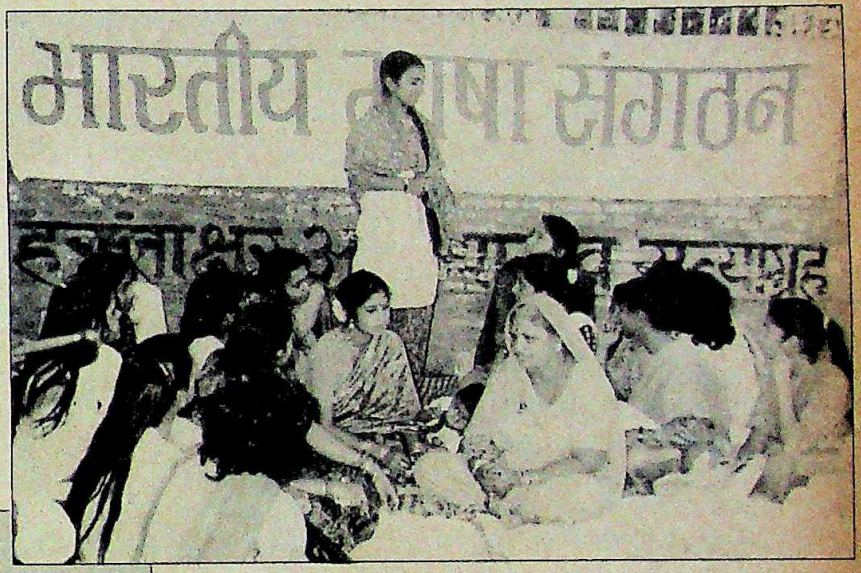

धरने पर बैठीं वि.वि. की छात्राएं

हिंदी प्रदेशों की नई सरकारों के भाषा संबंधी फैसलों ने भारतीय भाषाओं के लिए संघर्षरत लोगों के आंदोलन में नया उत्साह भर दिया है

भाषा संगठन के संयोजक अनिल जोशी जैसे जुझारू लोगों का मानना है कि हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं को उनका जायज स्थान दिलाने में आनाकानी के लिए अफसरशाही जिम्मेदार है. जोशी कहते हैं, "हमारा आंदोलन अंग्रेजी के खिलाफ नहीं है. लेकिन हम यह भी नहीं चाहते कि भारतीय भाषाओं के जानकार युवाओं को इस कारण ऊंचे पदों पर बैठने से रोका जाए कि अपने ज्ञान को वे अंग्रेजी में अच्छी तरह नहीं व्यक्त कर सकते."

देश में बदले हुए राजनैतिक माहौल में भारतीय भाषा समर्थकों को मिलने वाला नया उत्साह कब तक टिका रह पाएगा यह इस महीने के अंत में समिति की रिपोर्ट ही तय करेगी.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णास्वामी सुंदरजी

"अगर वे मानते हैं कि हम किसी बाधा के आगे हार मान लेंगे तो वे मुगालते में हैं"

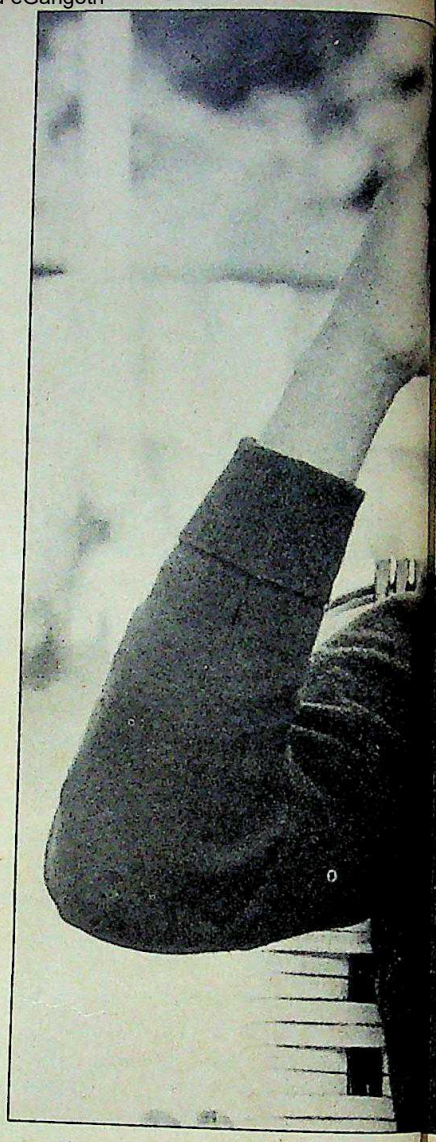

*कश्मीर के सवाल पर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव जिस कदर बढ़ता जा रहा है उसी कदर युद्ध की आशंका भी प्रबल होती जा रही है. पूर्व थल सेनाध्यक्ष जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी अब हालांकि मोर्चाबंदी के खेल से अवकाश ले चुके हैं मगर रक्षा संबंधी मामलों पर उनकी पैनी नजर रहती है. डिप्टी एडीटर **दिलीप बॉब** और विशेष संवाददाता **राज चेंगप्पा** के साथ बातचीत में उन्होंने युद्ध के खतरों और संभावित नतीजों की चर्चा की बातचीत के अंश.*

● ***युद्ध की क्या संभावनाएं हैं?***

मेरे हिसाब से तो सभावना बहुत कम है. मेरे अनुसार इसके कई कारण हैं. आप इसे दो तरह से देख सकते हैं—एक पहलू तो दोनों देशों की पारंपरिक युद्ध क्षमताओं से संबंधित है. और दूसरा पहलू परमाणु अस्त्रों की संभावित क्षमता और इसके कारण सामरिक संतुलन पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है. वैसे भी, हमारी रणनीति यह रही है कि हम कश्मीर में दूसरी ओर से किसी भी दुस्साहसिक अभियान को शुरू ही न होने दें. यानी कश्मीर में कोई कुछ भी न करे—न प्रत्यक्ष, न परोक्ष.

● ***सरकार मानती है कि पाकिस्तान ने कश्मीर में गुप्त कार्रवाई जोरों से शुरू कर दी है. ऐसे में प्रतिद्वंद्वी को डराए रखने की रणनीति कितनी माकूल होगी?***

कश्मीर में अपनी सुरक्षा के अधिकार का तो हम प्रयोग करेंगे ही मगर हमें एक सीमा से ज्यादा परेशान किया गया तो अपनी मर्जी का समय और स्थान चुनकर हम जवाबी कार्रवाई करने से भी नहीं हिचकेंगे. और हम उन्हें यह आगाह भी करना चाहेंगे कि अगर ऐसा कुछ हुआ तो नुकसान हमसे ज्यादा उनका ही होगा. यही हमारी रणनीति रही है. अब यह जरूर सोचा जा सकता है कि वर्तमान परिस्थिति में यह रणनीति कहीं बेमानी तो नहीं हो गई है. लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता.

● ***क्यों?***

मैं पहले पारंपरिक सैनिक क्षमता वाले पहलू पर विचार रखता हूं. 1972 से 1979 के दौरान हम पारंपरिक सैन्य शक्ति के मामले में गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों ही दृष्टियों से पाकिस्तान से बहुत आगे रहे. 1979 के बाद अफगानिस्तान के हालात और पाकिस्तान को मिली भारी सैनिक सहायता के मद्देनजर हमारी यह बढ़त निश्चित रूप से काफी कुछ घटी है. लेकिन मैं यह कतई नहीं मानता कि हमारी रणनीति का मूल आधार कमजोर पड़ा है.

● ***रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, पाकिस्तान यह मानने लगा है कि उसने कुछ सैनिक मामलों में बराबरी हासिल कर ली है. तो क्या वह कोई सैनिक दुस्साहस करेगा?***

देखिए कई बार आप अपने लोगों का हौसला बढ़ाए रखने के लिए कोई बात कहते हैं. और फिर बार-बार उसे दोहराते हैं. तो इससे इसके सच माने जाने का खतरा बढ़ता ही जाता है. मैं आशा करता हूं कि ऐसा कोई खतरा उस तरफ पैदा नहीं हुआ है इसलिए इसे युद्ध के लिए एकाएक कमर कसने या ताव दिखाने का कारण नहीं माना जा सकता. लिहाजा परमाणु अस्त्रों वाले पहलू पर गौर किया जा सकता है. इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि सीमा के इस पार बैठा कोई भी सैन्यनीति नियंता यह बात मानकर ही चलेगा कि पाकिस्तान के पास परमाणु अस्त्र क्षमता है. इसी हिसाब से, मेरी यह आशंका है कि दूसरा पक्ष भी ऐसा ही मान सकता है.

● ***यह धारणा है या नीति?***

नीतियां आखिर आधारभूत धारणाओं पर ही तो तय होती हैं! इसलिए मुझे दो संभावनाएं दिखती हैं. एक तो यह कि उस ओर ऐसे कुछ लोग हो सकते हैं जिन्हें यह मुगालता हो कि हमारे पास तो परमाणु अस्त्रों की क्षमता है, लेकिन भारत के पास नहीं है. तब इस अपेक्षित असंतुलन का फायदा उठाने का लालच भी जग सकता है और इससे हमारा हौसला पस्त हो सकता है. वे यह भी मान ले सकते हैं कि केवल उन्हीं के पास परमाणु अस्त्रों की क्षमता है, इसलिए हम चुपचाप देखते रहने के सिवा कुछ नहीं कर सकते. अगर इस संभावना के आधार पर उस ओर लोग काम कर रहे हैं तो यह निहायत ही बेवकूफी होगी. वे सचाई को जितनी जल्दी समझ लें, उतना ही अच्छा.

● ***अगर यह मानकर चलें कि उनके नीति नियंताओं ने यह मान रखा हो कि भारत भी परमाणु अस्त्रों की क्षमता रखता है, तब आप क्या कहेंगे?***

ऐसी स्थिति में सिद्धांततः यह तर्क दिया जा सकता है कि दोनों ही पक्ष एक-दूसरे की परमाणविक क्षमता के एहसास से कोई प्रत्यक्ष सैनिक कार्रवाई करने से हिचकेंगे.

● ***क्या आप यह कहना चाहते हैं कि अपनी परमाणविक क्षमता के कारण पाकिस्तान यह सोच सकता है कि भारत अपनी पारंपरिक रणनीति पर अमल नहीं कर पाएगा?***

एक विचारधारा के लोग यह मान सकते हैं कि पाकिस्तान की इस क्षमता के एहसास से भारत अपनी पारंपरिक रणनीति पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

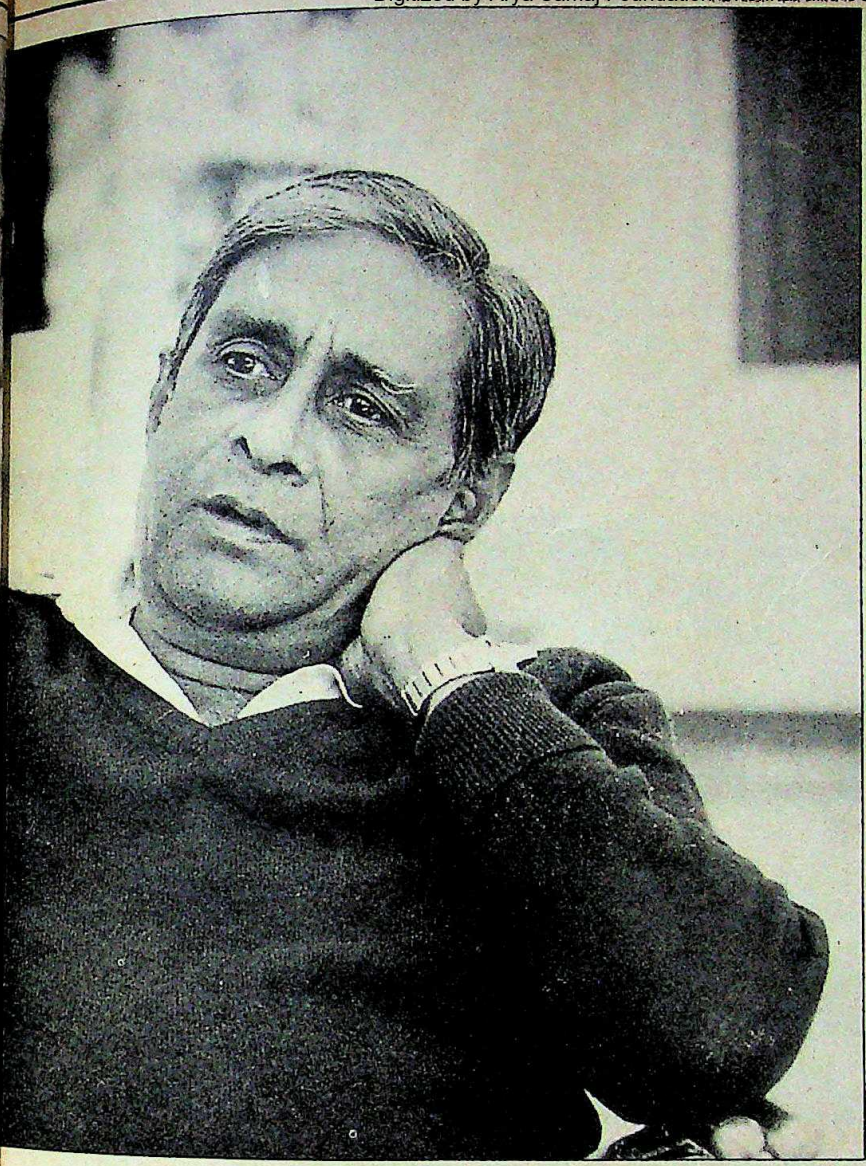

> हम 1972 से 1979 के दौरान हर क्षेत्र में उनसे बीस थे. हमारा इरादा पाकिस्तान को नुकसान पहुंचाने का होता तो हम यह बखूबी कर सकते थे

> अफगानिस्तान में हालात बिगड़ने के बाद हमारी बढ़त निस्संदेह घटी है पर इससे हमारी रक्षा रणनीति कमजोर नहीं हुई

अमल से झिझक सकता है. उन्हें लग सकता है कि यह रणनीति कामयाब न हो पाए इसलिए क्यों न अपनी परमाणविक क्षमता को यथा-संभव अप्रत्यक्ष रखा जाए. पर मेरे हिसाब से ऐसा सोचना भारी भूल होगी.

● ***क्या वे सचमुच इस संभावना में यकीन रखते हैं?***

यह सच है कि कई लोग ऐसा ही सोचते हैं. स्टीफन कोहन का कहना है कि कुछ पाकिस्तानी जनरलों के साथ बातचीत से लगा है कि वे यह मानते हैं कि अगर उनके पास परमाणु अस्त्र हों तो कश्मीर को भारत से अलग करने का मौका उन्हें मिल सकता है. यह हमारे दिमाग की कोरी कल्पना नहीं है. यह तो पाकिस्तानी जनरल का जानबूझकर दिया गया बयान है. और मैं यह कहना चाहता हूं कि ऐसी कल्पना आसान है. मगर मेरे खयाल से उनके लिए ऐसा सोचना गलत होगा क्योंकि भारत में कोई भी सरकार आए, वह कश्मीर में पाकिस्तान की प्रत्यक्ष मगर गुप्त कार्रवाइयों को हाथ पर हाथ धरे बैठी देखती नहीं रहेगी या अपनी पारंपरिक सैन्य नीति पर अमल से बचती नहीं रहेगी. अगर वे यह मानते हैं कि हम किसी बाधा या अड़चन के आगे हार मान लेंगे और अपनी रणनीति पर अमल नहीं करेंगे तो वे सचमुच मुगालते में हैं. अगर वे सचमुच प्रत्यक्ष सैनिक कार्रवाई करते हैं और वह जाने-अनजाने, छोटी-मोटी ही सही, परमाणु अस्त्रों के इस्तेमाल तक पहुंच जाती है तो जाहिर है दोनों पक्षों को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा. लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि तुलनात्मक दृष्टि से पाकिस्तान को ही कई गुना अधिक नुकसान होगा. अगर उनमें थोड़ी भी समझदारी होगी तो वे इस दिशा में सोचेंगे भी नहीं.

● ***लेकिन इस बार अंतर यह है कि आज कश्मीर में जिस हद तक असंतोष है, उतना पहले कभी नहीं रहा. और पाकिस्तान के भी अपने घरेलू कारण हैं. ये बातें क्या उसे पारंपरिक सैनिक कार्रवाई करने का पर्याप्त बहाना जुटा सकती हैं?***

ये बाहरी बहाने तो हैं ही लेकिन असली बात तो घरेलू दबावों की है. अलबत्ता कश्मीर के हालात इन बहानों को और मजबूत करते हैं. लेकिन उस ओर समझदार नीति नियंता अगर ठोस सचाइयों पर ध्यान देंगे तो उन्हें संभावित नतीजे का खयाल रखना होगा.

● ***आपकी राय में वह क्या होगा?***

मैं समझता हूं कि यह दो बातों पर निर्भर होगा. पहली तो यह कि उनमें कश्मीर घाटी को अपनी झोली में डाल लेने की क्षमता (गुप्त कार्रवाइयों सहित) कितनी है? अगर गुप्त कार्रवाई से यह संभव हो पाए तो फिर भारी नुकसान पहुंचाने वाली प्रत्यक्ष कार्रवाई वे क्यों करना चाहेंगे? पर मैं नहीं समझता कि ऐसा कभी होगा. तब दूसरी संभावना पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करना होगा. तब वे गुप्त कार्रवाइयों को थोड़ा खुला बना सकते हैं—पाकिस्तानी हथियारों, प्रशिक्षण, प्रेरणा और योजना पर काम करने वाले पाक अधिकृत कश्मीर के तथाकथित हथियारबंद 'स्वयंसेवकों' के जरिए या फिर बेरोजगार अफगान मुजाहिदीन का इस्तेमाल किया जा सकता है. तीसरी संभावना यह हो सकती है कि कश्मीर के लिए बेताब, पाकिस्तानी सेना के कुछ 'जांबाज' तत्व कार्रवाई कर सकते हैं.

● ***अगर यह कारगर नहीं हो, तो?***

अगर हम कश्मीर में कानून एव व्यवस्था की स्थिति पर फिर से काबू पा लेते हैं और हवा का रुख बेहतर हो जाता है तब वे क्या करेंगे यह विचारणीय है. क्या वे गुप्त कार्रवाई तक सीमित रहेंगे या इसे और प्रत्यक्ष बनाएंगे या सेना का इस्तेमाल कर बैठेंगे? इन संभावनाओं पर सोचने के लिए हमें ठोस हकीकतों पर विचार करना होगा कि उनके सफल होने की कितनी उम्मीद है. और ठोस हकीकत यह है कि उन्हें हमसे कहीं बहुत ज्यादा नुकसान उठाना पड़ेगा और उनका मकसद या तथाकथित मकसद भी पूरा नहीं होगा. तो सोचना होगा कि क्या यह खेल फायदे का होगा?

● ***क्या हम इस खेल में तेजी लाएं?***

हमारी नीति कभी भी उनको युद्ध में धकेलने या उनके साथ लड़ाई छेड़ने की नहीं रही है. 1972 से 1979-80 तक हम थल, वायु, समुद्र हर क्षेत्र में उनसे बीस रहे. अगर हमारा इरादा पाकिस्तान को हानि पहुंचाने या तोड़ने का होता तो हम यह बखूबी उसी समय पूरा कर सकते थे.

● ***इस वास्तविकता के मद्देनजर कि तुलनात्मक सैन्य शक्ति में हमारी बढ़त घटी है, लोग चिंतित हैं कि अगर पाकिस्तान के साथ आज टकराव हो तो हम स्वयं को किस तरह तैयार करेंगे?***

मैं तो मानता हूं कि हम अपनी सुरक्षा बखूबी कर सकते हैं. इसमें कोई शक नहीं है, अगर पाकिस्तान के मामले में हमारे इरादे नापाक होते तो उसे पूरा करने के बहुत अच्छे मौके रहे हैं. क्षमता और माकूल अवसर के बावजूद हमने ऐसा कुछ नहीं किया, यही हमारी नेकनीयती का सबूत है, और मैं इस बात से दुखी या खिन्न नहीं हूं कि हम पहले से पिछड़ गए हैं. उस बढ़त की हमें कोई जरूरत नहीं है क्योंकि हमारे इरादे खराब नहीं हैं.

● ***आप इस बारे में क्या सोचते हैं कि हमारे रक्षा बजट को जस का तस रहने दिया गया है या फिर कई क्षेत्रों में आर्थिक कारणों से कटौती भी की गई है?***

यह कहना बड़ा आसान है कि हमारे बजट में पिछले वर्ष इतने करोड़ रु. की कटौती की गई और इसलिए हमारी युद्ध क्षमता इतने प्रतिशत गिर गई. ऐसी किसी कटौती का असर तुरंत नहीं होता. इसका कई गुना असर पांच वर्ष बाद हो सकता है. और अधिक खर्च कर देने भर से बेहतर नतीजे हासिल नहीं हो जाते, खासतौर से तब जबकि खर्च गलत ढंग से किया जाए.

● ***एक धारणा यह भी रही है कि सवाल अस्त्र-शस्त्रों के अलावा नेतृत्व और मनोबल का भी होता है.***

भारतीय सेना इतनी विराट और महान है कि कुछ मुट्ठी भर अच्छे लोग न तो इसे सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा सकते हैं और न ही कुछ पिद्दी लोग इसके स्तर को नीचे गिरा सकते हैं. इसलिए मैं इस सवाल को प्रासंगिक नहीं मानता क्योंकि कुल मिलाकर नेतृत्व में खोट नहीं है. अधिकारियों का नेतृत्व कमोबेश अच्छा ही कहा जाएगा. मिसाल के तौर पर श्रीलंका में हमारी मौजूदगी को लेकर प्रेस का रुख भारी आलोचनात्मक रहा है कि हमारे अधिकारी बड़ी संख्या में मारे गए. हमें तो इस बात पर गर्व करना चाहिए. हमारी सेना के युवा अफसर आगे रहकर नेतृत्व करते हैं, वे पीछे किसी गड्ढे में छिपकर अपनी चमड़ी बचाने की कोशिश नहीं करते. लेकिन अखबारनवीसों में कुछ ऐसे महानुभाव भी हैं जिन्होंने यह लिखा है कि भारतीय सेना में कुछ गड़बड़ है क्योंकि मारे जाने वालों में अफसरो की संख्या बहुत अधिक है. विश्वास कीजिए, हमारे अधिकारियों का नेतृत्व बहुत उम्दा है. और लड़ाइयों में हार-जीत जूनियर अफसरों के बूते होती है, फितूरी जनरलों के बूते नहीं. इसलिए आपको चिंतित होने की कोई जरूरत नहीं है.

● ***दूसरे पक्ष के बारे में आपका क्या विचार है?***

अगर मैं छूटते ही कहूं कि वे किसी लायक नहीं हैं तो यह बेवकूफी ही होगी. वे किसी भी दूसरी पेशेवर सेना की तरह ही हैं. वैसे भी, युद्ध के मैदान में यह देखा जाता है कि कुछ क्षेत्रों में हौसला बुलंद होता है तो कुछ में कम. ऐसा हर पक्ष के साथ होता है. इसलिए किसी को भी यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि दूसरा कमजोर है, या कि नेतृत्व क्षमता या युद्ध कौशल या हौसले के मामले में हम बेहतर हैं. मेरे खयाल से पाकिस्तान ने 1965 में यह गलती की थी, जब उसने यह मुगालता पाल लिया था कि एक पाकिस्तानी दस भारतीयों के बराबर है.

> **हमारे अधिकारियों का नेतृत्व बहुत उम्दा है. लड़ाइयों में हार-जीत जूनियर अफसरों के बूते होती है, फितूरी जनरलों के बूते नहीं**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल्हड़ में कल्चर

इधर लोगों के नजरिए में खुशनुमा तबदीली आई है. धोती-कुर्ते वाले लोग पश्चिमी जीस से जुड़ रहे हैं, सफारी सूट वाले देसी परंपरा से. पहले बुजुर्ग अखबार पढ़ते थे, बच्चे किताबें. अब बड़े टीवी पर समाचार ताकते हैं, छोटे चित्रहार. एक गांधी ने चरखे की कताई को लोकप्रिय किया, दूसरे ने दूरदर्शन की 'तकाई' को. इस दिखाई माहौल में लिखाई-पढ़ाई की क्या दरकार? विज्ञापन सामान्य ज्ञान के लिए काफी हैं, महाभारत नैतिक आचरण के लिए. शुद्ध हिंदीभाषी परिवेश के मां-बाप सांस्कृतिक परिवर्तन से परेशान हैं— "देखो बेटा! हम पिता जी को बापू कहते थे. वे बाबू बनकर रिटायर हो गए. तुम हमें 'डैडी' बुलाया करो."

"पिता श्री! हमें 'डैडी' से फिल्मों के 'बैडी' का खयाल आता है."

"और पिता श्री से?" मां ने स्नेह से पूछा.

"रामायण के रावण का."

अपने देश में जब उस बापू की उनके ख़ास चेलों ने ही सुनी अनसुनी कर दी तो भला इस बाबू की सलाह सुनने का अपराध बेटा क्यों करे!

इंडियन कल्चर के कुछ युवा प्रवर्तक चिप्स और पॉपकॉर्न चबाते संगीत के कार्यक्रम से निकलकर बहस कर रहे हैं—

"यह गुरु-शिष्य परंपरा क्या बला है?"

"हमने तो भैरवी, जय-जयवंती का नाम सुना था. यह भी कोई राग होगा."

"तुमने महाभारत नहीं देखा. कृष्ण कभी 'कर्मा' और कभी 'फला' 'प्रीच' करते हैं. गुरु द्वारा चेलों को म्यूज़िक 'टीच' करने की 'प्रोसेस' को परंपरा कहते हैं."

"अपन ने तो कॉलेज में लेक्चरर को कभी 'लिफ्ट' दी नहीं. वही खुशामद करता है. संगीत में अलग चलन क्यों है?"

"तभी तो क्लासिकल म्यूजिक अनपॉपुलर है. हॉल खाली पड़ा था."

एक और जगह कल्चर के पक्षधर 'एथनिक' नौसिखुओं को भारतीय संस्कृति के मूल तत्व समझाते हैं—"अपनी पोशाक पर ध्यान दीजिए. महिलाएं हैंडलूम की साड़ियां पहनें. कांच की फीरोजाबादी या लाख की राजस्थानी चूड़ियां चढ़ाएं. दादी मां के वक्त का कड़ा भी चलेगा. माथे पर मोटी बिंदी लगाना न भूलें...!"

"हमें भी कुछ गुर दो गुरु!" एक पुरुष स्वर गूंजता है.

"आप अलीगढ़ी पाजामा, लखनवी कुर्ता और कोल्हापुरी चप्पल धारण कीजिए. सर्दियों में शाल और गर्मियों में उत्तरीय."

"यह उत्तरी-दक्खनी क्या है? कल्चर में भी क्षेत्रीयता?"

"मेरा मतलब सूती चादर से है," गुरु ने स्पष्ट किया.

सारी बातचीत कल्चर की क्रांति की तरह मातृभाषा अंग्रेजी में हो रही थी.

संस्कृति के प्राथमिक पाठ के बाद एक ने शिकायत की, "इधर न अपने-पराये उत्सव हो रहे हैं, न इंडिया फेस्टिवल."

"बहुत अच्छा है. यही तो मौका है."

"मुफ्त के तमाशे बंद होने में अच्छाई क्या है?"

"सरकार कल्चर नहीं 'एक्सपोर्ट' कर रही है तो हमें करना चाहिए."

"कल्चर भी कोई 'कमोडिटी' है जो एक्सपोर्ट होगी?"

"क्यों नहीं? कठपुतली वाले, सपेरे, नट-बाजीगर, जादूगर, लोक नर्तक, ढोल-ताशे, बंदर के तमाशे ले चलते हैं अमेरिका. बड़ा 'रिच' मार्केट है. देश सेवा और जेब सेवा दोनों ही हो जाएगी!"

भारतीय संस्कृति की बढ़ती लोकप्रियता से कुम्हारों के भी दिन फिरे हैं और देसी खेलों के भी. कबड्डी, कुश्ती और कुल्हड़-मटकों का बाज़ार चल निकला है. एक रेल के सफर से लौटे सज्जन कुल्हड़ के गुण गाते हैं,—"कुल्हड़ के पानी में केवड़े के जल का मजा आता है!"

"देसी और विदेशी उड़ानों में खाना पत्तल में और जल कुल्हड़ में देने से दुनिया और देश में अपनी निजी पहचान बनेगी," दूसरे फरमाते हैं.

"हाइजिनिक रहेगा," समर्थन का स्वर.

इस चर्चा से प्रेरित होकर हमारे कल्चर प्रेमी दोस्त दरयाफ्त करते हैं, "कुल्हड़ में हमारे पुरखे क्या पीते होंगे?"

"पानी, शरबत, ठंडाई, भांग," हमने गिनाया.

हमारे मित्र ने तत्काल जाकर दो दर्जन कुल्हड़ खरीद डाले. हमने उत्सुकता जताई, "इतने कुल्हड़ों का क्या करेंगे?"

"इनमें व्हिस्की पीकर भारतीयता का नया प्रयोग!" उन्होंने उत्तर दिया. नई पीढ़ी का संस्कृति प्रेम काबिले-तारीफ है. पेय के पात्र से लेकर पोशाक तक सब अपनी विरासत के रंग में रंगे हैं. कुल्हड़ में समानता और फलसफे के गूढ़ तत्व समाहित हैं. कुल्हड़ को देखकर बरबस कुम्हार का ध्यान आता है. कुम्हार से कबीर और उनकी साखी का.

इतिहास के छात्र कुम्हार और भारतीय कल्चर के ताल्लुकात पर शोध करके कोई भी निष्कर्ष निकालें, पर कुल्हड़ में व्हिस्की पीकर हमारे दोस्त इस नतीजे पर पहुंचे हैं, "इंसान महान हो या साधारण, कुल्हड़ के इस्तेमाल से अपनी जमीन से जुड़ा रहता है." कुल्हड़ वाकई हमारे कल्चर का वास्तविक प्रतीक है."

संस्कृति सदियों से लगातार तरक्की कर रही है. पहले दरबारी थी. धीरे-धीरे सरकारी हुई. मैनजरों और दुकानदारों की कृपा से कुल्हड़ और बाज़ार तक आ गई है. विज्ञापन दूरदर्शन और प्रदर्शन के युग में कल्चर केवल व्यवसाय का पर्याय है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी उद्योग

होड़ का समय

क्वार्ट्ज़ घड़ियों के आने, नए मॉडलों की भरमार और विपणन शैली के बदलाव ने घड़ी उद्योग को नई रफ्तार दी है

देश के घड़ी उद्योग की सुई ने रातोरात जैसे नई चाल पकड़ ली है. कलाई की शोभा बढ़ाने वाली घड़ियों की जो नई खेप बाजार में आई है, उसने मानो इंद्रधनुषी विस्फोट कर दिया है. कुछ नायाब पेश करने की जैसे होड़ लग गई है. इसके साथ ही विपणन शैली में भी क्रांतिकारी बदलाव आया है. कंपनियां अपनी खुदरा बिक्री व्यवस्था को संवार रही हैं. भव्य शोरूम खोले जा रहे हैं और आकर्षक पुरस्कार योजनाएं शुरू की जा रही हैं.

बाजार में मची इस उथलपुथल की शुरुआत टाटा और तमिलनाडु सरकार की संयुक्त कंपनी टाइटन वाचेज़ ने की है. इसने घड़ी उद्योग के कायदे-कानून ही बदल कर रख दिए हैं. एक जमाना था जब ग्राहकों के सामने बहुत ही सीमित विकल्प थे मगर आज टाइटन ने सजीली क्वार्ट्ज़ घड़ियों की ढेर सारी किस्में झोंक दी है. अब तक वह बाजार में 400 मॉडल ला चुकी है. और इनके पीछे विपणन की मजबूत व्यवस्था भी खड़ी की है.

इन सबसे हासिल क्या हुआ यह कंपनी के कारोबार के आंकड़ों से जाहिर है. 1988-89 में धंधा शुरू करने के तीन साल के अंदर ही क्वार्ट्ज़ घड़ियों के 150 करोड़ रु. के कारोबार में टाइटन की हिस्सेदारी 70 करोड़ रु. तक पहुंच गई. पिछले साल देश में बनीं 25 लाख क्वार्ट्ज़ घड़ियों में से 15 लाख घड़ियां टाइटन की थीं. टाइटन के कार्यकारी उपाध्यक्ष अनिल मनचंदा कहते हैं, "हम नए मॉडल ला रहे हैं और लोगों को वे चीजें दे रहे हैं जो उन्हें 40 साल में कभी नहीं मिलीं. हमारे प्रतिद्वंद्वियों के पास हमारे लिए कोई जवाब नहीं सूझ रहा."

वैसे, फिलहाल सार्वजनिक क्षेत्र की हिंदुस्तान मशीन टूल्स (एचएमटी) और हैदराबाद आल्विन दोनों ही टाइटन से बहुत पीछे हैं. दोनों में से प्रत्येक ने पिछले साल पांच-पांच लाख घड़ियां बनाईं. इस बाजार की दूसरी कंपनियां हैं—इंडो-फ्रेंच टाइम इंडस्ट्रीज व इसकी टी.एस. वाचेज और बंगलूर की बिफोरा जिसके फिलहाल बुरे दिन चल रहे हैं और जो बड़ी घड़ियों के बाजार में उतरने की तैयार कर रही है.

इस गलाकाट होड़ ने जबकि इन कंपनियों की नींद हराम कर रखी है, इनके फायदे की बात यह है कि घड़ियों का बाजार तेजी से फैल रहा है. तीन साल पहले तक इसकी विकास दर 8-10 फीसदी सालाना थी, आज यह 15-18 फीसदी है. इसका फायदा सिर्फ टाइटन ही नहीं उठा रही है. हैदराबाद आल्विन के प्रबंध निदेशक आर.पी. अग्रवाल बताते हैं, "घड़ियां अब फैशन की चीज हो गई हैं. डायल के साथ बदले जा सकने वाले बहुरंगी पट्टों वाली हमारी घड़ियां काफी अच्छा मुनाफा दे रही हैं." आल्विन ने 'ट्रेंडी' शृंखला में 3.3 लाख घड़ियों का उत्पादन किया और सभी बिक गईं.

घड़ी उद्योग की इस खुशहाली से तस्करी की हालत पतली हो रही है. छापों में पकड़े जाने वाली तस्करी की घड़ियों की संख्या में कमी से तो यही संकेत मिलता है. अनुमान है कि देश में सालाना 1.8 करोड़ घड़ियों की मांग है. भारतीय घड़ी उद्योग इस मांग का आधा ही पूरा कर पाता है. पिछले साल छापों में तस्करी की 42.75 करोड़ रुपए मूल्य की घड़ियां बरामद हुई थीं जबकि उससे पहले साल यह आंकड़ा था 135 करोड़ रु. (एक अनुमान के अनुसार हर साल तस्करी द्वारा ला गई घड़ियों में सिर्फ 10 फीसदी ही पकड़ी जाती हैं) टाइटन के प्रबंध निदेशक जेरक्सस देसाई बताते हैं, "जिस कीमत की घड़ियां हम बेच रहे हैं, तस्करों ने वैसी घड़ियों का धंधा छोड़ दिया है. अब वे सस्ती घड़ियों के धंधे को अपना रहे हैं."

और जबकि तड़क-भड़क वाली यह सारी सक्रियता क्वार्ट्ज़ घड़ियों के लिए चल रही है भारत में फिलहाल चाबी वाली घड़ियों का ही बोलबाला है. घड़ी बाजार में क्वार्ट्ज़ घड़ियों की हिस्सेदारी सिर्फ 14 फीसदी ही है. चाबी वाली घड़ियों के बाजार में 200 करोड़ रु. सालाना का कारोबार करने वाली एचएमटी निस्संदेह सबसे आगे है. सुदूर गांवों के लोग अभी भी 'चिमटी' घड़ियां ही पहनते हैं. एचएमटी के अध्यक्ष एम.आर. नायडू को अभी भी चाबी वाली घड़ियों से काफी उम्मीदें हैं. उनकी कंपनी की कामयाबी का एक कारण ग्रामीण क्षेत्रों तक उसकी पहुंच भी

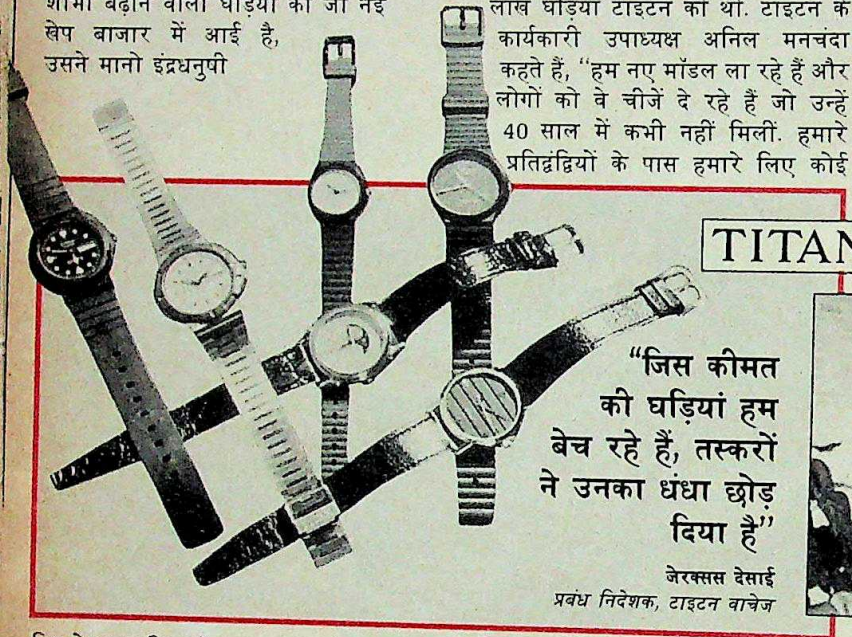

"जिस कीमत की घड़ियां हम बेच रहे हैं, तस्करों ने उनका धंधा छोड़ दिया है"

जेरक्सस देसाई
प्रबंध निदेशक, टाइटन वाचेज

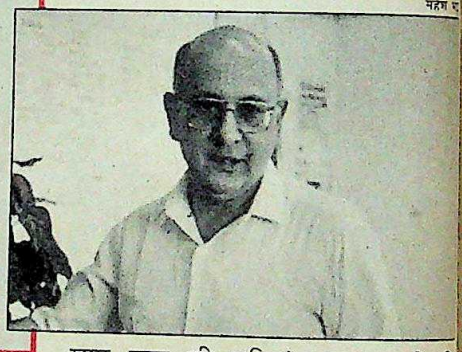

सौजन्य: जॉनसन ऐंड कंपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डायल के साथ बदले जा सकने वाले बहुरंगी पट्टों वाली हमारी घड़ियां अच्छा मुनाफा दे रही हैं"

आर. पी. अग्रवाल
प्रबंध निदेशक, हैदराबाद आल्विन

ए. प्रभाकर राव

है. एक और कारण भी है जिसे वे चाबी वाली घड़ियों का 'भावनात्मक मूल्य' कहते हैं. नायडू के अनुसार, "आपको इसकी हर रोज देखभाल करनी होती है, इसे ठीक रखना होता है. इससे जुड़ते हुए आप आगे बढ़ते हैं. भारतीय लोग मजबूत व भरोसेमंद घड़ियां पसंद करते हैं. और चाबी वाली घड़ियां ही ऐसी होती हैं. क्वार्ट्ज़ घड़ियां उपभोक्ता समाज में ही चलती हैं." वे बताते हैं कि उनकी कंपनी जापान की सहयोगी सिटीजन कंपनी को चाबी वाली 10 लाख घड़ियां निर्यात करने जा रही है.

एचएमटी का कहना है कि वह टाइटन की चकाचौंध से घबराई नहीं है. आल्विन का भी यही हाल है. वह चाबी वाली घड़ियों के उत्पादन में कोई कटौती नहीं करने जा रही, जबकि स्वचालित घड़ियों का उत्पादन 4.5 लाख से 12.5 लाख करने जा रही है.

फिर भी जब दुनिया क्वार्ट्ज़ घड़ियों की तरफ भागी जा रही है तो भारत अपवाद कैसे रह पाएगा. 20 साल पहले दुनिया भर में जो 20 करोड़ घड़ियां बनती थीं वे सब की सब चाबी वाली ही होती थीं. पर आज उत्पादित कुल 68.5 करोड़ घड़ियों में चाबी वाली घड़ियों की संख्या 11.5 करोड़ ही होती है. लेकिन एचएमटी हवा के खिलाफ चली. देसाई कहते हैं, "एचएमटी क्वार्ट्ज़ घड़ियों के उत्पादन से बचती रही. जब दुनिया की कोई भी कंपनी चाबी वाली घड़ियों के उत्पादन में पैसा नहीं लगा रही थी, एचएमटी इनके लिए नई उत्पादन इकाइयां लगा रही थी."

टाइटन यह माने बैठी है कि भारत भी उसी राह पर जाएगा जिस पर पूरी दुनिया जा रही है और इसीलिए उसने अपना पूरा दांव क्वार्ट्ज़ घड़ियों पर ही लगाया है. उसने उन निराशावादियों की सलाह को नजरअंदाज कर दिया है जो जोखिम कम करने के लिए चाबी वाली घड़ियों के भी उत्पादन की सलाह देते हैं. टाइटन के पास जो आंकड़े हैं वे उसके इस जुए को सही ठहराते हैं. भारत में सिर्फ 35 फीसदी घड़ियां ही ग्रामीण क्षेत्रों में बिकती हैं. घड़ियां ज्यादातर शहरी लोग ही पहनते हैं. टाइटन इन्हीं की खिदमत के लिए खुशी-खुशी तैयार है. पोशाक या जूतों आदि के रंग से मेल खाते रंगों की घड़ियां लेकर वह हाजिर है. मनचंदा कहते हैं, "एचएमटी ने अपना एकछत्र राज समझ रखा था. इसलिए वह कोई नई चीज पेश नहीं करती थी. उसने हमसे कहा कि आप लोग ग्राहकों को बिगाड़ रहे हैं. दरअसल एचएमटी ने बाजार की मांग को समझा ही नहीं."

टाइटन ने खुदरा बिक्री के मैदान में भी क्रांतिकारी बदलाव किया है. इसने 17 भव्य शोरूम खोले हैं. और इस साल के अंत तक ऐसे 33 और शोरूम खोलने की उसकी योजना है. बंबई में कंपनी का शोरूम भावी रणनीति का संकेत देता है. इस संगमरमरी शोरूम के शोकेसों में घड़ियां चमकती रहती हैं. और आकर्षक लड़कियां हमेशा सेवा के लिए तैयार दिखती हैं.

टाइटन की इस चकाचौंध के चलते एचएमटी ने भी क्वार्ट्ज़ क्रांति में हाथ आज-

"क्वार्ट्ज़ घड़ियां शहरी इलाके में ही बिकती हैं"

एम. आर. नायडू, *अध्यक्ष, एचएमटी*

महेश भट्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी बाजार में हिस्सेदारी: मुकाबले की घड़ी

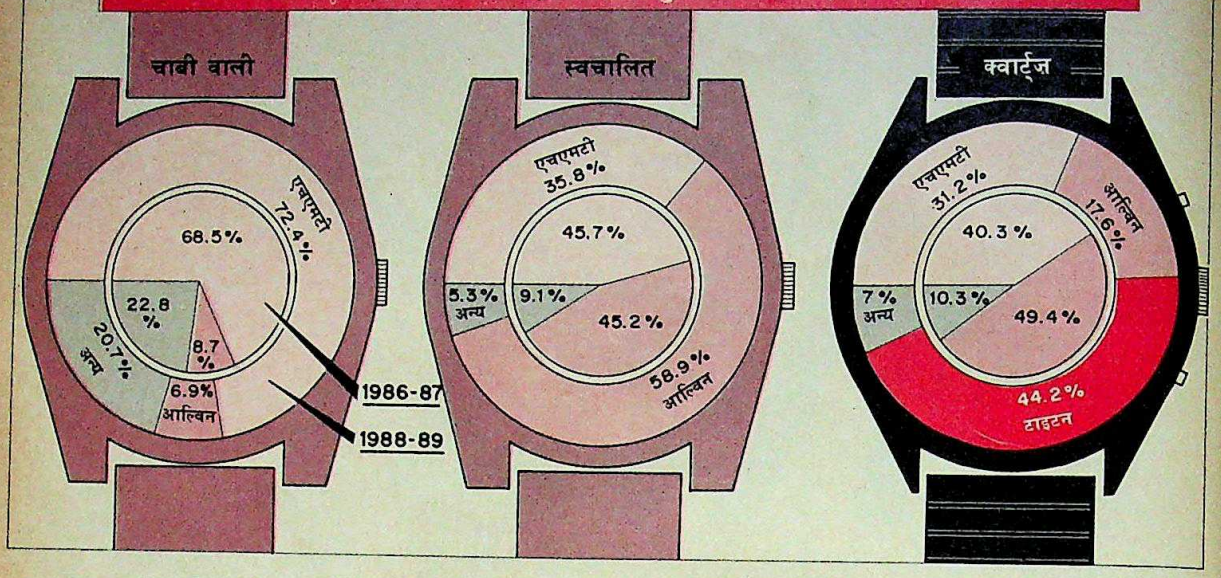

माना शुरू कर दिया है. इससे यह अब तक शायद इसलिए बचती रही थी कि एक दशक पहले इसने क्वार्ट्ज़ घड़ियों का धंधा शुरू करने की जो कोशिश की थी वह बुरी तरह नाकाम रही थी. पर अब कंपनी की समझ में आ गया है कि बाजार का मिजाज बदल गया है. उम्मीद है कि 1995 तक देश में बनने वाली 3.2 करोड़ घड़ियों में से 75 फीसदी घड़ियां क्वार्ट्ज़ वाली होंगी. इसलिए यह कर्नाटक की अपनी तुमकुर इकाई को क्वार्ट्ज़ घड़ियों की इकाई में बदल रही है. इसके बाद नैनीताल इकाई का नंबर आएगा.

साथ ही टाइटन की तरह एचएमटी को भी विपणन का महत्व समझ में आ गया है. अब वह कुछ नए तिकड़म सीख रही है. हाल ही में उसने फेस्टिवल ऑफ टाइम स्कीम शुरू की है जिसके तहत एचएमटी घड़ी खरीदने वाले लोग 1,250 पुरस्कारों के लिए भाग्य आजमा सकेंगे. सबसे बड़ा पुरस्कार है मारुति ओम्नी.

एचएमटी ने नई तरह का विज्ञापन अभियान भी शुरू किया है, जो कई लोगों को टाइटन के विज्ञापन की तरह ही लगता है. एचएमटी ने अपने विक्रेताओं से कहना शुरू कर दिया है कि वे उसके प्रतिद्वंद्वियों की घड़ियां अपने यहां न रखें.

इस कार्रवाई का नैतिक पक्ष चाहे जो भी हो, परंतु एचएमटी को इन कोशिशों का लाभ मिलने लगा है. खबर है कि इसकी 'एलिगेंस' श्रेणी की कीमती घड़ियों ने अच्छा कारोबार किया है. क्वार्ट्ज घड़ियों का उत्पादन बढ़ाकर एचएमटी ने दूसरे दौर में टाइटन को अच्छी टक्कर देने की नीयत भी जाहिर कर दी है.

आल्विन ने भी बाजार में अपनी हिस्सेदारी बनाए रखने और अगर मुमकिन हो तो इसे बढ़ाने की ठान ली है. कंपनी की शिकायत है कि उसके पास इतने संसाधन नहीं हैं कि वह एचएमटी और टाइटन (प्रत्येक का विज्ञापन बजट: 4 करोड़ रु. सालाना) के विज्ञापनों का मुकाबला कर सके. जापान की सीको से आल्विन का गठबंधन खत्म हो गया है, पर वह डिजाइनों के हस्तांतरण पर बातचीत चला रही है. कुछ मामलों में यह कंपनी टाइटन से बीस बैठती है. मसलन अच्छी बैटरी की वजह से आल्विन तीन साल की गारंटी देती है, जबकि टाइटन दो साल और एचएमटी एक साल की ही. कुछ लोगों की शिकायत है कि टाइटन घड़ियों के पट्टे काफी कमजोर हैं. टाइटन का कहना है कि इस मामले में वह मजबूर है क्योंकि पट्टों का उत्पादन लघु उद्योगों के संरक्षित क्षेत्र में आता है.

इन छोटी-मोटी शिकायतों के बावजूद टाइटन के हौसले बुलंद होने की कई वजहें हैं. इस साल के अंत तक इसका कैसियो से गठजोड़ होने की उम्मीद है. तब यह अत्याधुनिक किस्म की डिजीटल, एनालोग और एनाडिगी घड़ियों का उत्पादन भी करने लगेगी. इन गठबंधनों के बाद यह कंपनी अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी दखल की तैयारी भी करेगी. दुबई और फ्रांस को कुछ घड़ियां निर्यात करके इसने शुरुआत कर दी है.

भारत के बाजार में टाइटन नए मॉडल लाती रहेगी. उम्मीद है कि मई तक यह बाजार में 18 कैरेट की सोने की घड़ियां भी ले आएगी. दीवाली तक यह रत्नजटित सुनहली घड़ियां भी बनाने लगेगी. और इस साल के बीतते-बीतते वह औरतों के खास समूहों के लिए देसी किस्म की घड़ियां भी बनाने लगेगी.

यानी पहले की तरह यह कंपनी घड़ी उद्योग और बाजार की दिशा तय करती रहेगी.

—**सलिल त्रिपाठी**, बंगलूर में और होसुर में; **अमरनाथ के. मेनन**, हैदराबाद में.

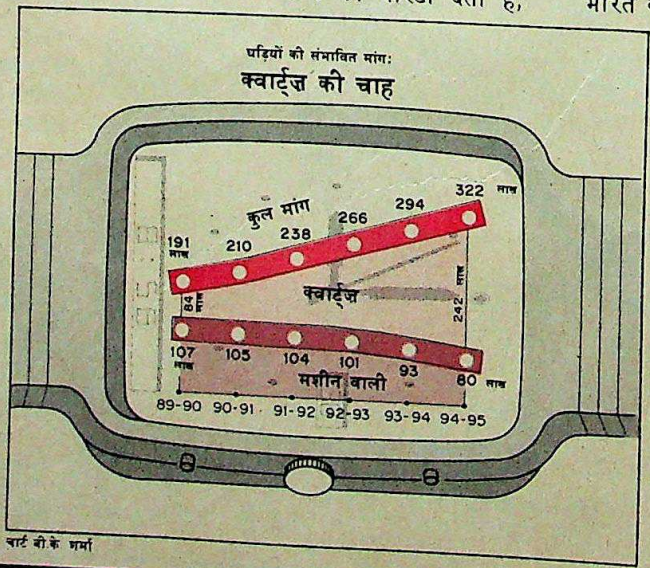

चार्ट बी.के. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोरदार होड़

ओडीसा के कोरापुट जिले में 1,300 करोड़ रु. की लागत से लगने वाली 10 लाख टन उत्पादन क्षमता वाली शत-प्रतिशत निर्यातोन्मुखी एल्यूमिना परियोजना हासिल करने के लिए लार्सन ऐंड टुब्रो व एस्सार समूह में जोरदार होड़ चल रही है.

पिछले साल के शुरू में एस्सार ने महाराष्ट्र में एल्यूमिना परियोजना लगाने की इजाजत हासिल करने के लिए सरकार को अर्जी दी थी. सितंबर में उसे इसका आशय पत्र भी मिल गया था. तब लार्सन ऐंड टुब्रो ने आंध्र प्रदेश के लिए ऐसी ही एक अर्जी दे दी. जनवरी में लार्सन ऐंड टुब्रो ने तय किया कि इस परियोजना के लिए ओडीसा ज्यादा बेहतर जगह रहेगी और उसने इसी के अनुसार अर्जी में बदलाव की इजाजत सरकार से मांगी. इसके तुरंत बाद एस्सार ने भी अपनी प्रस्तावित परियोजना की जगह बदलकर ओडीसा करने का फैसला किया. अब देखना है कि बाजी किसके हाथ आती है.

हम किसी से कम नहीं

पारले समूह हार मानकर बैठ जाने में विश्वास नहीं करता. और अब यह लगभग तय है कि शीतल पेय बाजार में पेप्सी और उसके बीच जमकर मुकाबला होगा. समूह ने हाल ही में दक्षिण भारत में नया टमाटर पेय परीक्षण के तौर पर बेचना शुरू किया है. यह पेय टेट्रा पैक में बंद होगा. आम और संतरे के बाद यह टमाटर पेय फ्रूटी शृंखला का तीसरा पेय होगा. पूरे भारत में इसकी बिक्री अप्रैल के अंत तक शुरू होने की उम्मीद है. पंजाब में पेप्सी ने भी टमाटर परिष्करण संयंत्र लगा लिया है. लगता है पारले के रमेश चौहान कह रहे हों कि हम किसी से कम नहीं.

मुक्ति की मुसीबतें

अस्सी के दशक की शुरुआत तक घरेलू नागरिक उड्डयन बाजार में इंडियन एअरलाइंस की तूती बोलती थी. यहां तक कि एअर इंडिया को भी घरेलू वायुमार्गों से अपनी कमाई का तीन-चौथाई हिस्सा इंडियन एअरलाइंस के हवाले करना पड़ता था. परंतु अस्सी के दशक के मध्य में हालात बदलने लगे. सदाशयता के झोंके में आकर इंडियन एअरलाइंस ने एअर इंडिया को अपनी घरेलू उड़ानों की 40 फीसदी आमदनी अपने पास रखने की इजाजत दे दी. लेकिन स्थिति अब फिर बदलने वाली है. दुनिया भर में जो परंपरा चल निकली है उसी के चलते नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने यह तय किया है कि अब ये दोनों कंपनियां घरेलू उड़ानों की कमाई में बंटवारा नहीं करेंगी. इस देसी बंधन-मुक्ति के कारण ही अब इंडियन एअरलाइंस को कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना होगा और वह भी एअर इंडिया से.

जंग की तैयारी

एशिया के दो महाबली—भारत और चीन—एक दिलचस्प जंग की तैयारी कर रहे हैं. मैदाने जंग है नई दिल्ली में मई में हो रही एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की सालाना बैठक. 1986 में भारत और चीन इस बात पर सहमत थे कि वे एडीबी की उदार कर्ज व्यवस्था—एशियाई विकास कोष—से वित्तीय मदद लेने की एकतरफा कोशिश नहीं करेंगे. इसके बाद मई 1989 में पेइचिंग के थ्येन आन मन चौक पर नरसंहार हो गया और चीन एडीबी के अधिकारियों की नजर में गिर गया. अब भारत को सुनहरा मौका दिख रहा है. इसलिए जब नई दिल्ली में एशियाई विकास बैंक की बैठक होगी तो उम्मीद है कि भारत आसान शर्तों पर उधार मिलने की उम्मीद में 1986 के समझौते से नाता तोड़ लेगा. लेकिन शायद चीन भी चुप न बैठे.

परिधान से मिलता धन

भारत से सिले-सिलाए वस्त्रों का निर्यात पिछले कुछ वर्षों में काफी तेजी से बढ़ा था. परिधान निर्यात देश में विदेशी मुद्रा की कमाई का सबसे बड़ा जरिया बन चुका है. यह भारत के कुल निर्यात का 11 फीसदी है. पिछले साल 2,400 करोड़ रु.

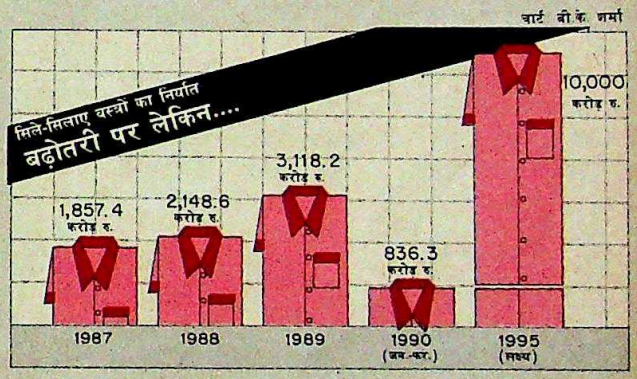

मूल्य के सिले-सिलाए वस्त्रों के निर्यात का लक्ष्य था. परंतु निर्यात इससे 700 करोड़ रु. का ज्यादा हुआ. ऐसा नहीं है कि यह रुपए के अवमूल्यन की वजह से हुआ. परिधान निर्यात प्रोत्साहन परिषद के अनुसार अगर अमेरिकी डॉलर के हिसाब से भी देखा जाए तो भी 1988 और 1989 के बीच में इसका निर्यात 24 फीसदी बढ़ा है.

लेकिन सिले-सिलाए वस्त्रों के निर्यात में बड़ी भूमिका निभाने वाले छोटे निर्माता सरकार की नई आयात-निर्यात नीति से नाराज हैं. उनका कहना है कि अच्छे कामकाज के बावजूद उनके लिए कुछ नहीं किया गया. इसलिए वे मानते हैं कि आठवीं योजना (1990-95) के आखिरी वर्ष में 10,000 करोड़ रु. के वस्त्र निर्यात करने का लक्ष्य छलावा भी साबित हो सकता है. परंतु सरकार का कहना है कि उसने छोटे परिधान निर्यातकों के साथ कोई भेदभाव नहीं किया और यह कि बातचीत के लिए दरवाजे खुले हैं.

अति गोपनीय खरीदारी

एक असामान्य-सी खबर पर भारतीय समाचार माध्यमों ने कोई ध्यान नहीं दिया. फरवरी के आखिर में अंतरराष्ट्रीय समाचार सेवा रॉयटर ने पेरिस से एक छोटी-सी खबर भेजी कि भारतीय सेना के एक कर्नल रक्षा संबंधी एक 'अति गोपनीय' खरीदारी के लिए फ्रांस आए हुए हैं. जानते हैं कि कर्नल ने क्या खरीदा? उन्होंने लद्दाख और सियाचिन पर तैनात भारतीय सैनिकों के लिए उम्दा नस्ल के 22 गधे खरीदे. रक्षा विभाग के सूत्रों का कहना है कि इस सौदे में कोई दलाली नहीं खाई गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लार्सन ऐंड टुब्रो

भारी भिड़ंत के आसार

अंबानी साम्राज्य के ताज के सबसे चमकीले हीरे को तोड़ने की सरकारी कोशिश

कमजोर, ढुलमुल, दुविधाग्रस्त—चार महीने पुरानी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के लिए ये ही शब्द बार-बार इस्तेमाल किए जाते हैं. लेकिन पिछले पखवाड़े अब तक का सबसे साहसिक कदम उठाकर विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार ने जता दिया कि वह कुछ करके भी दिखा सकती है. उसकी इस साहसिक कार्रवाई का निशाना थे— रिलायंस समूह के सर्वेसर्वा धीरूभाई अंबानी. और दांव पर लग गई निजी क्षेत्र की देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग कंपनी—1,000 करोड़ रु. के कारोबार वाली लार्सन ऐंड टुब्रो, जो अंबानी के ताज का चमकता हुआ हीरा है.

अंबानी ने इस हीरे को अक्तूबर 1980 में अपने ताज में सजाया था. इस विवादास्पद 'अधिग्रहण' में जीवन बीमा निगम (एलआईसी), भारतीय यूनिट ट्रस्ट (यूटीआई) और सामान्य बीमा निगम (जीआईसी) जैसे सरकारी वित्तीय संस्थानों ने उनकी कोई कम मदद नहीं की थी. और सबसे बढ़कर तो सरकारी बैंक ऑफ बड़ोदा की सहयोगी बॉब फिस्कल सर्विसेज ने कब्जे की इस कार्रवाई में संदेहास्पद ढंग से मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी. राजीव सरकार में बैठे बड़े लोगों की गुपचुप मदद के बिना यह सब नहीं हो सकता था.

तबसे बॉब फिस्कल मृतप्राय है और इसके पूर्व अध्यक्ष प्रेमजीत सिंह बदनाम भी हुए और बरखास्त भी. प्रेमजीत सिंह के बेटे के रिलायंस से व्यापारिक संबंध हैं. लेकिन इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि रिलायंस समूह की निवेश कंपनी तृष्णा इन्वेस्टमेंट के नाम शेयर औपचारिक रूप से हस्तगत होने से काफी पहले ही अंबानी लार्सन ऐंड टुब्रो के निदेशक मंडल में प्रवेश पा चुके थे (देखिए चार्ट). और इस बात के भी परिस्थितिजन्य सबूत हैं कि रिलायंस समूह की कंपनी रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स के सार्वजनिक ऋणपत्र निर्गम से प्राप्त कोष में से करीब 150 करोड़ रु. गुपचुप निकालकर लार्सन के शेयर खरीदे गए. रिलायंस के प्रवक्ता का कहना है कि यह पैसा 'आंतरिक जमा खाते' से लिया गया.

परंतु नई सरकार अंबानी के बयान पर विश्वास नहीं करने वाली. इसलिए मार्च के आखिरी दिन एलआईसी के अध्यक्ष एन.के. सिनकर ने लार्सन ऐंड टुब्रो के निदेशक मंडल को नोटिस जारी करते हुए उससे शेयरधारकों की असाधारण आम सभा (ईजीएम) बुलाने को कहा ताकि निदेशक मंडल से रिलायंस के चार मनोनीत निदेशकों को हटाकर उनकी जगह वित्तीय संस्थानों के निदेशकों को बिठाया जा सके.

इसके बाद रिलायंस की मुस्तैद प्रचार व्यवस्था ने अपना काम शुरू कर दिया. उसने इस कदम को गैरकानूनी, अलोकतांत्रिक और दुष्प्रेरित बताया. कंपनी ने यह आरोप भी लगाया कि "सरकार बदले और दमन की भावना से काम कर रही है."

राजधानी में हुए एक पत्रकार सम्मेलन में मुकेश अंबानी ने यह बताने के लिए जोरदार तर्क दिए कि एलआईसी का यह कदम किस तरह गैरकानूनी है. उन्होंने कहा कि एलआईसी को बताना चाहिए कि वह लार्सन ऐंड टुब्रो के चार निदेशकों को क्यों बदलना चाहती है (एलआईसी के प्रवक्ता ने कहा कि वह यह बताने के लिए बाध्य नहीं है). उन्होंने कहा कि यह कदम 'पिछले दरवाजे से राष्ट्रीयकरण' जैसा ही है.

सचमुच हालात बदल भी गए हैं. लार्सन

कार्टून: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐंड टुब्रो के 19 में से 4 निदेशक हटाए जाने के बाद इस कंपनी पर रिलायंस का प्रबंधकीय नियंत्रण खत्म हो जाएगा. पर इससे पहले भयंकर लड़ाई तो होगी ही. दोनों ही पक्ष बराबर की टक्कर के हैं—कम-से-कम वे दावा तो यही करते हैं. वित्तीय संस्थानों के पास लार्सन ऐंड टुब्रो के कुल मिलाकर 37 फीसदी शेयर हैं जबकि अंबानी समूह के प्रवक्ता ने 33-34 फीसदी पर हिस्सेदारी का दावा किया है. इसकी पुष्टि नहीं हुई है. इसलिए यह हैरत की बात नहीं है कि ईजीएम से पहले दोनों ही पक्ष प्रॉक्सीज (शेयरधारकों का मतदान अधिकार) बटोरने की कोशिश में हैं.

प्रॉक्सी की यह लड़ाई कोई नई नहीं है. लेकिन यह पहली बार हुआ है कि खुद वित्तीय संस्थाएं किसी कंपनी पर नियंत्रण हासिल करने की कोशिश में शामिल हो गई हैं. परंतु यहां महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या एलआईसी स्वतंत्र रूप से यह काम कर रही है या नई दिल्ली के दबाव में. एलआईसी के अधिकारियों का कहना है कि नोटिस जारी करने से पहले निदेशक मंडल की इजाजत ले ली गई थी.

घटनाओं का सिलसिला

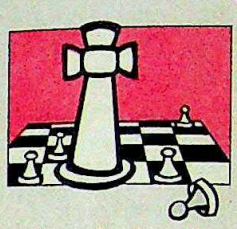

जंग की तैयारी

1988

मई
बॉब फिस्कल सर्विसेज शुरू.

जुलाई
लार्सन-टुब्रो पर नियंत्रण के लिए छाबरिया और अंबानी के बीच होड़ की अफवाहें.

15 जुलाई
बॉब फिस्कल का यूनिट ट्रस्ट और जीवन बीमा निगम से शेयर देने का आग्रह.

1-3 अगस्त
बॉब फिस्कल द्वारा इन दोनों से लार्सन-टुब्रो के 27 करोड़ रु. मूल्य के शेयरों की खरीद.

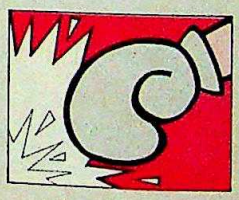

चपत लगना

5 अगस्त
बॉब फिस्कल और शेयर दलाली वाली कंपनी वी.बी. देसाई फाइनांशियल सर्विसेज के बीच लार्सन-टुब्रो के 25 लाख शेयर 29.75 करोड़ रु. में बेचने के करार पर दस्तखत.

अगस्त
आरोप कि देसाई को रिलायंस से जुड़ी चार अनुषंगी निवेश कंपनियों से 30 करोड़ रु. मिले हैं. रिलायंस पेट्रो. के 594 करोड़ रु. के सार्वजनिक निर्गम की बुकिंग कई गुना अधिक. लार्सन-टुब्रो को रिलायंस पेट्रो. से 300 करोड़ रु. का ठेका. आरोप कि तृष्णा इन्वेस्टमेंट ऐंड लीजिंग ने लार्सन-टुब्रो के शेयर लेने का सौदा देसाई से किया.

5 सितंबर
बॉब फिस्कल को साधारण बीमा निगम और उसकी सहयोगी कंपनियों से लार्सन-टुब्रो के 14 लाख शेयर मिलते हैं.

8 सितंबर
देसाई द्वारा बॉब को 29.75 करोड़ का चेक.

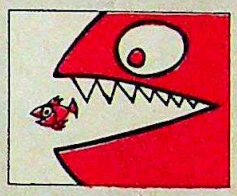

कंपनी पर कब्जा

सितंबर
लार्सन-टुब्रो द्वारा रिलायंस के दो प्रतिनिधियों— मुकेश अंबानी और एम.एल. भक्त— को प्रबंधक मंडल में शामिल करने का फैसला.

11 अक्तूबर
लार्सन-टुब्रो का प्रबंधक मंडल बॉब फिस्कल के नाम शेयर दर्ज करने का फैसला करता है. मुकेश और भक्त बोर्ड में शामिल.

अक्तूबर-नवंबर
देसाई द्वारा बॉब को किस्तों में भुगतान जबकि लार्सन-टुब्रो के 37 लाख शेयरों के सर्टिफिकेट ट्रांसफर के लिए गए.

30 दिसंबर
मुकेश उपाध्यक्ष, और अनिल अंबानी भी बोर्ड में. तृष्णा रिलायंस की सहयोगी कंपनी बनी.

1989

6 जनवरी
बॉब फिस्कल लार्सन-टुब्रो के 39 लाख शेयर तृष्णा को दे देती है.

30 अप्रैल
लार्सन-टुब्रो प्रबंधक मंडल की बैठक में देसाई अध्यक्ष पद छोड़ देते हैं और उनकी जगह धीरूभाई अंबानी आते हैं.

जून
लार्सन-टुब्रो द्वारा रिलायंस पेट्रो को ऋण उपलब्ध कराने तथा दूसरी परियोजनाओं का खर्च उठाने के लिए 920 करोड़ रु. के परिवर्तनशील डिबेंचरों का महा-निर्गम.

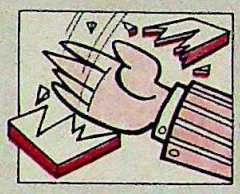

हमला

अगस्त
इंडियन एक्सप्रेस का रहस्योद्घाटन कि डिबेंचरों को शेयर में बदलने के बाद रिलायंस के शेयर बढ़कर 32 फीसदी हो जाएंगे जबकि वित्तीय संस्थाओं और आम निवेशकों का हिस्सा इसी अनुपात में कम हो जाएगा. लार्सन-टुब्रो के शेयरहोल्डरों की असाधारण आम सभा बुलाई गई. अंबानी निर्गम की मात्रा 820 करोड़ रु. कर देते हैं और वह शर्त हटा देते हैं जिससे लार्सन-टुब्रो को दूसरी कंपनियों को 1,000 करोड़ रु. तक उधार देने की अनुमति मिलती.

सितंबर
लार्सन-टुब्रो के निर्गम को चुनौती देता लोकहित मामला बंबई हाईकोर्ट में खारिज.

अक्तूबर
लार्सन-टुब्रो का सार्वजनिक निर्गम. सुप्रीम कोर्ट अंबानी द्वारा लार्सन-टुब्रो के उन शेयरों को वापस बॉब फिस्कल को बेचना जायज ठहराती है जो उन्होंने तृष्णा के माध्यम से हासिल किए थे. असाधारण आम बैठक द्वारा लार्सन-टुब्रो के प्रबंधक मंडल में रिलायंस के प्रतिनिधियों के रहने पर विचार की मांग.

दिसंबर
राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सत्ता में आती है. बैंक ऑफ बड़ोदा के अध्यक्ष को छुट्टी पर जाने को कहा जाता है.

1990

मार्च
बॉब फिस्कल बंद. फेरवाणी की जगह एस.ए. दवे यूनिट ट्रस्ट अध्यक्ष.

अप्रैल
एलआईसी द्वारा लार्सन-टुब्रो प्रबंधक मंडल में से धीरूभाई, मुकेश, अनिल और भक्त को हटाने के लिए लार्सन-टुब्रो की असाधारण आम बैठक बुलाने की मांग.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलआईसी वही संस्था है जिसकी खिचाई बंबई हाईकोर्ट ने दिसंबर 1984 में स्वराज पाल बनाम एस्कॉर्ट्स के मामले में की थी. परंतु बाद में हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने नहीं माना था. एलआईसी के प्रवक्ता के अनुसार, "एस्कॉर्ट्स के मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद अब किसी भी शेयरधारक को निदेशक को हटाने या नियुक्त करने के लिए ईजीएम बुलाने का अधिकार मिल गया है. हमने कानून का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है."

परंतु रिलायंस के प्रवक्ता एलआईसी की इस बात को नहीं मानते. मुकेश का कहना है, "जिस दिन हमने लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयर खरीदे उसी दिन बॉब फिस्कल ने एसीसी (एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी) के 5 फीसदी शेयर दरबारी सेठ को बेचे. उस बिक्री पर सवाल क्यों नहीं उठाया जाता?"

और जबकि रिलायंस मान रही है कि उसे परेशान किया जा रहा है, 'इंडियन एक्सप्रेस' के वित्तीय सलाहकार व अंबानी के आलोचक एस.गुरुमूर्ति का तर्क है कि संस्थाएं अपने उस 'कुकृत्य का प्रायश्चित' कर रही हैं जो बॉब फिस्कल ने कानूनों को धता बताते हुए तृष्णा को लार्सन ऐंड टुब्रो के 7 फीसदी शेयर बेचकर किया था और जिसके बाद अंबानी को इस कंपनी पर काबिज होने का मौका मिल गया था.

बैंक ऑफ बडोदा के अध्यक्ष पद से प्रेमजीत सिंह के हटाए जाने के तीन महीने बाद तक चुप्पी छाई रही. मुकेश अंबानी वित्तमंत्री मधु दंडवते और वित्त सचिव बिमल जालान से मार्च के शुरू में मुलाकात भी कर आए. मुलाकातों से उन्होंने यही नतीजा निकाला कि लार्सन ऐंड टुब्रो में उनके समूह की स्थिति यथावत बनी रहेगी. लेकिन, बाद की घटनाओं से वे गलत साबित हुए. मार्च के मध्य में सरकार ने बॉब फिस्कल को बंद कर दिया. बैंक समुदाय के लिए यह अपूर्व कदम था.

इसके बाद यूनिट ट्रस्ट के अध्यक्ष एम.जे. फेरवाणी को हटाया गया, जिनका बढ़ा हुआ कार्यकाल जुलाई 1991 में खत्म हो रहा था. बंबई के बैंकिंग सूत्रों का कहना है कि फेरवाणी निजी क्षेत्र, खासकर अंबानी के कुछ ज्यादा ही करीब थे. फेरवाणी टिप्पणी के लिए उपलब्ध नहीं हो सके. परंतु उनको हटाए जाने के दो दिन बाद ही एलआईसी ने लार्सन ऐंड टुब्रो को नोटिस जारी कर दिया.

कार्रवाई के समय का चुनाव विशेष महत्व रखता है. एलआईसी का नोटिस 2 अप्रैल को जारी हुआ. कंपनी कानून के तहत इसके 45 दिन के भीतर यानी 17 मई तक ईजीएम बुलानी होगी. इसके एक हफ्ते बाद यानी 23 मई को ही लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयर वितरण का ढंग बदल जाएगा क्योंकि तब इसके ऋणपत्र शेयरों में बदलने लगेंगे. रिलायंस का दावा है कि 'लाखों शेयरधारकों को मताधिकार से वंचित करने के लिए' ही ईजीएम इस समय बुलाई गई है. एलआईसी के प्रवक्ता इसका खंडन करते हैं.

वित्तीय संस्थाओं के आला सूत्रों के अनुसार अंबानी को रास्ते पर लाने के लिए सरकार के पास तीन विकल्प हैं. पहला यह कि रिलायंस से सौदेबाजी करके उसे लार्सन ऐंड टुब्रो में अपना प्रबंधकीय नियंत्रण छोड़ने के लिए राजी किया जाए, यानी उससे नरमी से पेश आया जाए. दूसरा यह कि रिलायंस को धीमे-धीमे परास्त किया जाए. यानी सरकार उसकी नई परियोजनाओं को इजाजत न दे और उसकी मौजूदा परियोजनाओं को लालफीताशाही में उलझा दे जिससे रिलायंस की रही-सही ताकत अगले दो साल में ही चुक जाए. तीसरा विकल्प वह है जो एलआईसी ने अपनाया है यानी अब शेयरधारक ही कंपनी में अंबानी की स्थिति का फैसला करें.

इस रणनीति के अपने जोखिम भी हैं. शेयरधारक अंबानी के पक्ष में भी वोट दे सकते हैं. परंतु संस्थाओं के सूत्रों का मानना है कि इस लड़ाई का चाहे जो भी नतीजा निकले, जीतेगी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार.

क्या लार्सन ऐंड टुब्रो का यह सारा नाटक सरकार की छवि बनाने के लिए ही है? मधु दंडवते ने अपने बजट भाषण में वित्तीय संस्थाओं को ज्यादा स्वायत्तता देने का वादा किया है. क्या यह कोरा वादा ही है? एक संस्था के सेवानिवृत्त प्रमुख के अनुसार, "वित्तीय संस्थाएं सरकार की कठपुतली रही हैं. वे कभी नहीं बदलेंगी."

जब लंदन के धुरंधर व्यवसायी स्वराज पाल ने एस्कॉर्ट्स के अधिग्रहण की कोशिश की थी तब वित्तीय संस्थाएं (आरोप है कि वे तब के वित्तमंत्री प्रणब मुकर्जी की शह पर काम कर रही थीं) कंपनी बोर्ड के नौ गैर-कार्यकारी निदेशकों को हटाना चाहती थीं. हालांकि कंपनी के अध्यक्ष एच.पी. नंदा और उनके बेटे की स्थिति को छुआ नहीं गया था. रिलायंस के अधिकारी एस्कॉर्ट्स और लार्सन ऐंड टुब्रो के मामलों को एक जैसा ही मानते हैं. लेकिन एस्कॉर्ट्स के अध्यक्ष एच.पी. नंदा इस तुलना को एक हद तक ही सही मानते हैं. वे कहते हैं, "हमारे मामले में उन्होंने प्रबंधन को हाथ नहीं लगाया था. पर क्या धीरूभाई अंबानी यह कह सकते हैं कि बतौर अध्यक्ष वे लार्सन ऐंड टुब्रो के प्रबंधन के ही अंग नहीं हैं."

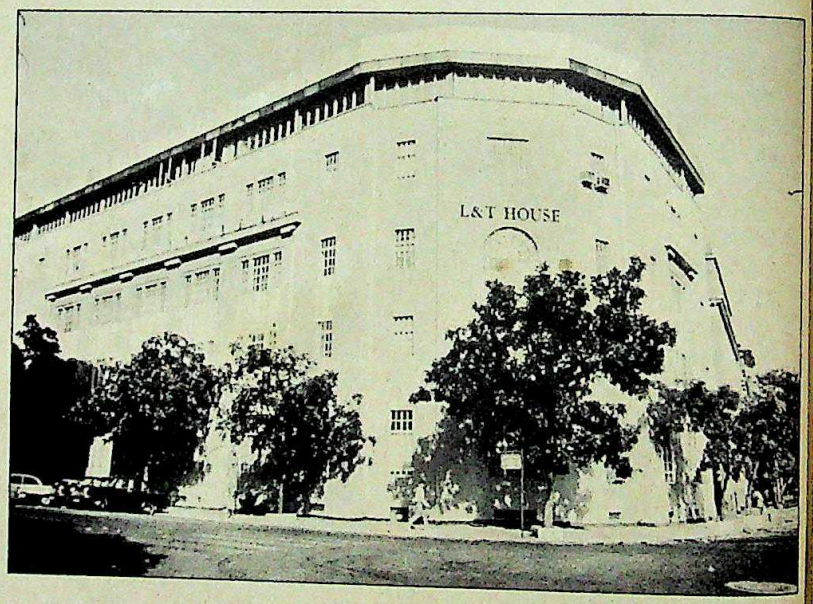

लार्सन ऐंड टुब्रो भवन: किसके हिस्से?

कंपनियों के अधिग्रहण में वित्तीय संस्थाओं की भूमिका कभी भी स्पष्टतः परिभाषित नहीं रही. इसी वजह से धीरूभाई अंबानी जैसे ऊंची पहुंच वाले किसी भी कंपनी के प्रबंधन पर कब्जा कर लेते हैं और ज्यादा सवाल भी नहीं उठाए जाते. अंबानी पूरी राजनैतिक व्यवस्था को पहले ही गंदा कर चुके हैं पर जब इसी व्यवस्था को उनके खिलाफ इस्तेमाल किया जा रहा है तो उनकी सारी चीख-चिल्लाहट ढोंग से ज्यादा नहीं लगती. इन संस्थाओं की निश्चित आचार संहिता होनी चाहिए और उन्हें सरकार से दिशा-निर्देश मिलने चाहिए. लार्सन ऐंड टुब्रो के मामले में सरकार को यह पहल करने का सही मौका मिला है.

—एस.एन. वासुकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

सी-डॉट

कटघरे में खासमखास

लेकिन सैम पित्रोदा अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिए तैयार

लगभग पांच साल तक सत्येन (सैम) गंगाराम पित्रोदा भारतीय दूरसंचार व्यवस्था के निर्विवाद शहंशाह बने रहे. राजीव गांधी के चहेते सैम देश में पहला स्वदेशी डिजिटल एक्सचेंज विकसित करने का संकल्प लेकर भारत लौटे थे.

पर अब दूरसंचार व्यवस्था का यह 'मसीहा' कई आरोपों के कारण अपने अस्तित्व की कठिन लड़ाई में उलझ गया है. उन पर भारी वित्तीय अनियमितताएं बरतने, 'सेंटर फॉर द डेवलपमेंट ऑफ टेलीमेटिक्स' (सी-डॉट) के जरिए अमेरिका में अपनी कंपनियों का व्यापारिक हित साधने, महत्वपूर्ण पदों पर अपने चहेतों की मनमानी नियुक्ति, कायदे-कानून के उल्लंघन और सी-डॉट की प्रगति के बारे में झूठी रिपोर्ट पेश करने के प्रमुख आरोप हैं.

पिछले पखवाड़े सरकार ने पित्रोदा के वफादारों—सी-डॉट के कार्यकारी निदेशक जी.वी. मीमांसी और निदेशक डी.आर. महाजन—को हटा दिया. ये आदेश तीन महीने पहले सी-डॉट के कार्यकलापों की जांच करने के लिए गठित विवादास्पद नांबियार समिति की रिपोर्ट आने के तुरंत बाद जारी हुए. 13 सदस्यों वाली इस समिति के 9 सदस्यों ने रिपोर्ट पर दस्तखत किए जबकि मीमांसी और महाजन समेत चार लोगों ने मूल रिपोर्ट से असहमति जताते हुए अलग रिपोर्ट पेश की.

यह लड़ाई दूरसंचार आयोग के अध्यक्ष तथा सी-डॉट के सलाहकार सैम पित्रौदा और दूरसंचारमंत्री के.पी. उन्नीकृष्णन के बीच की व्यक्तिगत खुंदक में तब्दील होने से सी-डॉट के कार्यकलापों का मुद्दा दरकिनार हो गया है. दूरसंचार के कई अधिकारियों का मानना है कि सी-डॉट के दो बड़े अधिकारियों को हटाकर उन्नीकृष्णन ने पित्रोदा की गरदन पकड़ने की कोशिश की है. उन्होंने सी-डॉट के वित्तीय मामलों की जांच का आदेश भी दिया है.

बावजूद इसके, उन्नीकृष्णन के पास विकल्प सीमित हैं. भीतरी सूत्र बताते हैं कि सेवा शर्तों के आधार पर हटाए जा सकने वाले दूसरे सचिवों के विपरीत पित्रोदा पर ये शर्तें लागू नहीं होतीं क्योंकि उनकी नियुक्ति कैबिनेट के एक प्रस्ताव से दूरसंचार आयोग के अध्यक्ष के रूप में की गई है. यह नहीं, उनकी नियुक्ति के नियम और शर्तें सरकारी फाइलों में भी नहीं हैं. इसलिए उपाय यही बचता है कि पित्रोदा के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया जाए. इस मामले में विधि मंत्रालय से सलाह मांगी गई है.

आरोप इस प्रकार हैं:

▸ पित्रोदा के परिवार की अमेरिकी कंपनी 'मार्टेक इन्कार्पोरेटेड' ने अगस्त 1985 में सी-डॉट को 1,14,675 डॉलर (18 लाख रु.) के डिस्केट्स, प्रिंटेड केबल्स और सॉफ्टवेयर बेचे.

▸ मार्टेक को फरवरी 1988 में 66,141 डॉलर (10 लाख रु.) के इंटिग्रेटेड सर्किट बेचने का भी आर्डर मिला. कंपनी का पुराना कारोबार अच्छा न होते हुए भी यह आर्डर दिया गया. भारतीय टेलीफोन उद्योग (आईटीआई) के अधिकारियों का मानना का कहना है कि कंपनी का माल भेजने का रिकार्ड अच्छा न रहने और उसके उत्पादों में ज्यादातर खराबी मिलने के कारण उन्होंने उसे और ऑर्डर देने से इनकार कर दिया था.

▸ 6 नवंबर 1985 को सी-डॉट परियोजना बोर्ड ने अपनी ओर से पित्रोदा को शिकागो में भारतीय स्टेट बैंक के चेक पर दस्तखत करने की अनुमति दे दी.

▸ उस समय पित्रोदा इसके शिकागो स्थित सलाहकार भर थे. और यह सी-डॉट सोसाइटी के नियमों का सरासर उल्लंघन था. इन नियमों में साफ तौर पर कहा गया है कि सभी चेकों पर इसके वित्तीय अधिकारी के हस्ताक्षर होने चाहिए और प्रतिहस्ताक्षर मुख्य वित्तीय अधिकारी या कार्यकारी निदेशक द्वारा अधिकृत किसी और अधिकारी को करने चाहिए.

▸ पित्रोदा परिवार की एक और अमेरिकी कंपनी 'माइक्रो टेक्नालॉजी इन्कार्पोरेटेड' ने 1,00,000 डॉलर (16 लाख रु.) के हाइब्रिड सर्किट सी-डॉट को बेचे. पर संसद में एक प्रश्न के उत्तर में कहा गया कि आयात सिर्फ 50,367 डॉलर (8 लाख रु.) का ही था. मीमांसी पर सही आंकड़े न बताने के लिए विशेषाधिकार हनन की कार्रवाई चलाई गई है. वे मानते हैं कि संसद में तथ्यों को रखते समय गड़बड़ी हुई.

▸ मार्टेक की जगह में सी-डॉट का दफ्तर रखा गया और इसके कर्मचारियों को अमेरिकी कंपनी वेतन देती थी.

हालांकि पित्रोदा का कहना है कि उन पर दोष मढ़ने के लिए तथ्यों को तोड़ा-मरोड़ा गया. वे बताते हैं कि उनके परिवार की कंपनियों से सी-डॉट की कुल खरीद 50 लाख रु. से ज्यादा की नहीं है. पित्रोदा कहते हैं, "सभी विदेशी कंपनी की दो मूल्य सूचियां होती हैं—एक स्थानीय बाजार के लिए और दूसरी निर्यात के लिए जिसमें कीमत 20 फीसदी अधिक रखी जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने अमेरिका में मार्टेक की मदद से सस्ती स्थानीय दरों पर कंप्यूटर के हार्डवेयर खरीदे. इस तरह हमने पैसा बचाया." उनका यह भी दावा है कि मार्टेक के अलावा कोई भी विदेशी कंपनी सी-डॉट को सॉफ्टवेयर की सोर्स कोड मुहैया कराने की इच्छुक नहीं थी, हालांकि इसके ठेके के लिए निविदाएं जारी की गई थीं.

हाइब्रिड सर्किट के आयात के मामले पर मीमांसी का कहना है कि कोई भारतीय कंपनी देश में यह उत्पाद नहीं बनाती थी. इसलिए मार्टेक ने यह उत्पाद बेचा और भारतीय कंपनियों को तकनीकी हस्तांतरण भी कर दिया.

वे यह भी बताते हैं कि अमेरिका में सी-डॉट का पंजीकरण नहीं था इसलिए कानूनी औपचारिकताओं से बचने के लिए उनके कर्मचारियों को वेतन मार्टेक के कर्मचारी मानकर दिया गया. ये बातें सही हो सकती हैं लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि पित्रोदा ने सरकारी सेवा के मूलभूत नियमों का उल्लंघन किया है.

वैसे, वित्तीय अनियमितताओं के प्रकाश में आने से वह मूल उद्देश्य ही दब गया जिसके लिए नांबियार समिति का गठन हुआ, यानी सी-डॉट के कार्य-कलापों का मूल्यांकन. विडंबना यह है कि रिपोर्ट में संस्था के वित्तीय कामकाज को सही करार दिया गया है. इसके मुताबिक वित्तीय कामकाज किसी 'गलत मंशा' से नहीं किया गया. इसमें सी-डॉट की खिंचाई वादे के मुताबिक 1987 तक 40,000 लाइनों के एक्सचेंज का काम पूरा न करने के लिए की गई है. रिपोर्ट में कहा गया है कि बड़े इलेक्ट्रॉनिक स्वीचिंग सिस्टम बनाने के लिए संस्था को फिर से काम शुरू करना होगा और 1992-93 के पहले 5,000 लाइनों का एक्सचेंज नहीं बनाया जा सकता.

मीमांसी इससे इनकार नहीं करते कि सी-डॉट अपने लक्ष्यों से काफी पीछे रहा है. वे कहते हैं, "आपको हमेशा ऊंचे लक्ष्य रखने पड़ते हैं. यही तरीका है कि आप लोगों को प्रेरित कर सकते हैं." फिर भी इससे यह पता नहीं चलता कि संस्था अभी तक बड़े एक्सचेंज के लिए महत्वपूर्ण कल-पुर्जे विकसित क्यों नहीं कर पाई.

समिति के सदस्यों ने सी-डॉट के बहु-प्रचारित ईपीएबीएक्स सिस्टम की नाकामी पर भी उंगली रखी है. संस्था ने 36 से अधिक उत्पादकों को उपकरण बनाने के लाइसेंस जारी किए जबकि यह उनके कार्यक्षेत्र में नहीं आता.

नांबियार समिति के एक सदस्य कहते हैं, "सी-डॉट के कई उत्पादकों ने कारोबार बंद कर दिया है. सी-डॉट के सिस्टम में उपभोक्ता के लिए आया टेलीफोन प्रतीक्षारत रखने या लंबित रखने जैसी सुविधाएं भी नहीं हैं. फिर, सी-डॉट उत्पादक संघ की 1988 से ही शिकायत थी कि सी-डॉट ने अभी भी 'डॉट की विशिष्टता के अनुरूप कोई ठोस डिजाइन पेश' नहीं किया है."

आत्मनिर्भरता के ये 'मसीहा' दूसरे मुद्दों को लेकर भी कटघरे में हैं. उनके आलोचक बताते हैं कि सी-डॉट ने विभिन्न तरह के सॉफ्टवेयर विकसित करनें में मदद के लिए 11 विदेशी सलाहकार नियुक्त किए और ये सभी पित्रोदा के करीबी मित्र हैं. मसलन, डिजिटल स्वीचिंग सिस्टम का सॉफ्टवेयर विकसित करने के लिए अमेरिका में पित्रोदा के मित्र राय मेहता को 41.64 लाख रु. शुल्क उनकी सलाह के लिए दिया गया.

दूसरे आरोपों में यह भी है कि विदेशी आयात को बुरा-भला बताने के बावजूद दूरसंचार आयोग ने फ्रांसीसी कंपनी 'एल्काटेल' के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जबकि कंपनी ने 1982 में आईटीआई के साथ हुए समझौते के मुताबिक 'निःशुल्क' मुहैया कराने वाली तकनीक में सुधार करने से इनकार कर दिया था. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सी-डॉट ने 'सेल्युलर फोन' विकसित करने के लिए अमेरिका स्थित कंपनी 'ट्रांस टेक' के साथ समझौता किया जबकि इसके पहले पित्रोदा ने इस व्यवस्था को 'नफीस लोगों का शगल' कहकर खुलकर आलोचना की थी. इसमें 24 लाख डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा.

पित्रोदा अपने खिलाफ अभियान का जवाब देने के लिए उद्धत हैं. सी-डॉट के 300 इंजीनियरों का एक दल पिछले पखवाड़े प्रधानमंत्री निवास तक गया. बंगलूर में सी-डॉट के अधिकारियों ने उन्नीकृष्णन का बहिष्कार किया. उसकी सामूहिक इस्तीफों की भी योजना है.

और तो और, दूरसंचार आयोग के सदस्य (सेवा) ए.एस. वाखले को 2 अप्रैल '90 को पत्र में मीमांसी ने साफ-साफ लिखा कि "मैं पद से नहीं हटूंगा" क्योंकि "कार्यकारी निदेशक को नियुक्त करने का अधिकार प्रशासकीय परिषद को है." वाखले ने ही मीमांसी को हटाने का आदेश दिया था. उसके बाद मीमांसी ने दूरसंचार आयोग के सदस्य का पद छोड़ने और 'स्थितियां बेहतर नहीं हुईं' तो पद्मश्री लौटाने की धमकी दी.

पिछले पखवाड़े पित्रोदा ने वी.पी. सिंह से मिलने के लिए समय भी मांगा. यह अजित सिंह, भाजपा और ज्योति बसु से राजनैतिक समर्थन प्राप्त करने की रणनीति का ही एक हिस्सा था. जाहिर है कि असली लड़ाई तो तकनीकी नहीं बल्कि राजनैतिक होगी जिसके बाद तय होगा कि दम किस में है—राजीव के सखा पित्रोदा में या उनके आलोचकों में.

—सुरजीत दासगुप्त

आरोप	जवाब
सी-डॉट ने 40,000 लाइनों वाला एक्सचेंज विकसित करने का वादा किया था जो पूरा होता नहीं दिखता.	परियोजना सिर्फ साल भर पिछड़ी है. बड़ा लक्ष्य कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए रखा जाता है.
पित्रोदा के परिवार की कंपनी मार्टेक ने सी-डॉट को 114675 डॉलर के कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर बेचे.	कोई भी दूसरी कंपनी सॉफ्टवेयर के सोर्स कोड देने को तैयार नहीं थीं. मार्टेक ने सस्ती दर पर हार्डवेयर खरीदकर सी-डॉट को उपलब्ध कराया.
सी-डॉट ने पित्रोदा को शिकागो में सोसाइटी सी-डॉट की ओर से चेक पर दस्तखत करने के लिए अधिकृत किया था जो कानून का उल्लंघन है.	चेक पर दस्तखत हों तो कनिष्ठ अधिकारी के प्रतिहस्ताक्षर की जरूरत नहीं, वरिष्ठ अधिकारी पर विश्वास करना होगा.
पित्रोदा के परिवार की ही एक अन्य कंपनी माइक्रो टेक्नोलॉजी ने सी-डॉट को 1000 डॉलर मूल्य के हाइब्रिड सर्किट दिए. संसद में इसकी कीमत कम बताई गई.	ऐसा गलती से हुआ. गलती जानबूझकर नहीं की गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

ठंडा भी गरम भी

राजनैतिक उलटफेर से बेअसर

नाजुकमिजाजी और अक्खड़पन ये दोनों गुण साथ-साथ भी पाए जा सकते हैं, कम-से-कम भारतीय शेयर बाजार में तो जरूर ही. बीते दिनों में राजनैतिक बदलाव के साथ ही शेयर मूल्य सूचकांकों की चंचलता बढ़ जाती थी. परंतु पिछले पखवाड़े जो हुआ वह एक अलग ही कहानी थी. राष्ट्रीय स्तर पर कई बड़ी घटनाएं हो गईं. एक बार तो लगा कि वी.पी. सिंह की सरकार भी गिरने ही वाली है पर बाजार के मिजाज ने टस से मस होने से ही इनकार कर दिया.

उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने इस्तीफा लिख मारा, कश्मीर की दुर्गति जारी रही और पंजाब में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने के लिए सरकार संसद में पर्याप्त बहुमत नहीं बटोर सकी. परंतु शेयर बाजार में तेजड़ियों की हलचल बरकरार रही.

बंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला नाजुकमिजाज शेयर मूल्य सूचकांक 800

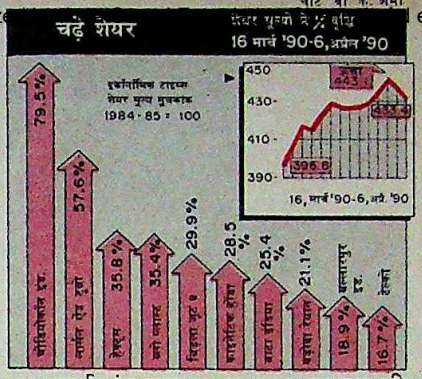

का जादुई अंक पार करता हुआ अब तक की सबसे बड़ी बुलंदी 805.6 पर पहुंच गया. इसी तरह का 100 शेयरों वाला राष्ट्रीय सूचकांक 425.27 की बुलंदी से उठकर 431.61 की ऊंचाई पर चढ़ गया. और 'इकॉनॉमिक टाइम्स' का अखिल भारतीय सूचकांक 442.9 के अंक से उठकर 443.1 के अंक पर जा बैठा.

अपने आप में यह बड़ी उपलब्धि है. और यह सब 19 मार्च के बाद तीन हफ्तों के अंदर ही हो गया. 19 मार्च को संसद में केंद्र सरकार का बजट पेश हुआ था जिसमें कंपनी क्षेत्र को कोई राहत नहीं दी गई थी. 1985 के बजट को एक ऐसे बजट के रूप में याद किया जाता है जिसने शेयर बाजार की पौ-बारह कर दी थी. पर तब भी शेयर कीमतों के शिखर पर पहुंचने में दो महीने से ज्यादा का वक्त लग गया था.

बाजार ने चुप बैठ जाने से इनकार कर दिया. हालांकि बाजार के एक बड़े तेजड़िए भारतीय यूनिट ट्रस्ट के अध्यक्ष एम.जे. फेरवाणी को हटा दिया गया. उनकी जगह मंदड़िए एस.ए. दवे को बैठा दिया गया. पर इस फेरबदल का बाजार पर खास असर नहीं पड़ा. यह सब 4 अप्रैल तक हुआ और उसके बाद दवे हरकत में आ गए. और अगले तीन दिन तक बाजार को स्थिर रखने के लिए यूनिट ट्रस्ट ने तबाड़तोड़ बिक्री अभियान शुरू किया तो तेजड़ियों की चाल भी मंद पड़ गई.

यूनिट ट्रस्ट के इस नए प्रमुख से शेयर दलालों ने सिर्फ तेजड़ियों से टकराने वाले की छवि ही नहीं देखी. सिक्योरिटीज ऐंड एक्सचेंज बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष दवे शेयर बाजार की गतिविधियों पर कड़ा नियंत्रण रखने के हिमायती रहे हैं. अगर दवे के पुराने बयानों पर गौर करेंगे तो साफ होगा कि वे शेयर बाजार को जुए का अड्डा नहीं बनने देना चाहते.

गरमी आ ही चुकी है और बाजार हार मानता नहीं दिख रहा. पर कहना मुश्किल है कि वह कब फिर अक्खड़पन छोड़कर नाजुकमिजाज हो जाएगा.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	बंद 6.4.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	69.50	77.00	4.00 +
एसोसिएटेड सीमेंट	443.00	325.00	420.00	43.50 +
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	225.00	6.25 —
एटलस कोप्को	48.00	33.00	33.00	4.00 —
बजाज ऑटो	450.00	355.00	427.50	35.00 +
बड़ौदा रेयॉन	910.00	617.50	847.50	125.00 +
बाटा इंडिया	83.00	62.50	81.50	4.50 +
बल्लारपुर	161.00	120.00	148.00	14.00 +
ब्लो प्लास्ट	57.50	34.50	48.75	4.75 +
बिरला जूट	72.00	50.50	69.50	9.50 +
बॉम्बे डाइंग	231.00	173.00	203.00	16.00 +
बिटानिया इंडिया	119.00	97.00	114.00	1.00 —
बुक बांड	118.00	91.00	116.00	2.00 +
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	3420.00	2420.00	3070.00	190.00 +
क्लोराइड इंडिया	92.00	82.50	91.00	2.00 +
कोलगेट पामो.	233.75	176.25	215.00	6.25 —
सायनामिड	115.00	87.50	95.00	7.50 —
डीसीएम	60.00	45.50	58.25	4.25 +
इनलप	75.50	51.75	57.50	3.50 +
ईआई होटल्स	65.25	58.00	60.00	3.00 —
एस्कार्ट्स	90.00	77.75	87.50	2.00 +
फिलेक्स केबल्स	282.50	202.50	230.00	40.00 —
फूड स्पेशिलिटीज	129.00	101.75	125.00	2.00 —
गरवारे नाइलोन	69.00	49.00	54.00	2.00 +
जी.ई. शिपिंग	54.75	44.00	49.75	1.25 +
गुजरात स्टेट फर्टि.	195.00	155.00	171.25	13.75 —
ग्रासिम इंडिया	130.00	106.00	122.50	4.00 +
हिंदु. एल्यूमिनियम	292.50	205.00	271.25	20.00 +
हिंदु. लीवर	1660.00	960.00	1250.00	30.00 +
कैडबरी इंडिया	172.50	133.75	153.00	7.00 —
हिंदुस्तान लीवर	125.00	101.00	113.00	3.00 —
हिंदुस्तान मोटर्स	31.30	19.80	26.00	3.00 +
आई.सी.आई.	49.50	35.25	40.00	4.00 —
इंडियन आर्गेनिक	58.75	47.00	49.50	4.50 —
इंडियन रेयन	113.50	84.00	105.00	10.00 +
इंड्रॉल	246.25	161.25	205.00	22.50 +
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	230.00	5.00 —
आई.टी.सी.	68.75	48.75	63.75	2.00 +
जे.के. सिंथेटिक्स	67.00	50.00	60.00	6.00 +
काइनेटिक इंजी.	155.00	130.00	150.00	15.00 +
किर्लोस्कर क्युमिंस	90.00	65.00	79.00	3.50 +
केएसबी पंप्स	227.50	190.00	225.00	10.00 +
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	93.00	30.00 +
लिप्टन	112.00	83.00	93.00	2.00 —
लोहिया-मशीन्स	21.00	15.00	17.50	0.50 —
मदुरा कोट्स	115.50	100.50	115.50	9.00 +
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	82.50	6.25 +
मिल्क फूड	280.00	190.00	205.00	25.00 —
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	785.00	860.00	—
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	131.00	3.00 —
नेशनल आर्गेनिक	1660.00	1070.00	1280.00	20.00 +
निरलॉन	22.00	14.00	17.00	0.50 +
ओरके सिल्क मिल्स	20.50	14.50	15.50	0.25 —
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	32.50	24.00	29.50	1.25 +
फाइजर	113.75	72.50	77.50	2.50 —
प्रीमियर ऑटो	74.50	53.50	60.00	2.00 +
रैनबैक्सी	110.00	86.25	97.50	2.50 —
रेमंड	87.50	70.00	81.00	1.50 —
रिलायंस इंडस्ट्रीज	90.00	50.00	60.00	5.00 +
सीमेंस इंडिया	123.50	96.00	116.00	10.00 +
शॉ वैलेस	92.00	65.00	82.00	12.50 +
श्रीराम फाइबर्स	71.00	51.25	57.00	1.00 +
एसकेएफ बेयरिंग्स	1570.00	1240.00	1360.00	30.00 —
स्पिक	62.00	50.75	59.00	0.75 —
टाटा स्टील	136.50	103.25	125.50	11.50 +
टेल्को	145.00	110.00	133.00	15.00 +
वाम ऑर्गेनिक	167.50	132.50	145.00	—
वीडियोकॉन	220.00	105.00	197.50	52.50 +
वोल्टास	78.50	63.00	76.50	6.50 +
विमको	32.50	16.75	19.00	1.25 —

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.2946	13.1458
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	144.0190	143.4169
बहरीन	दीनार	1	46.2161	45.1386
बांग्लादेश	टका	100	52.6779	51.9778
कनाडा	डालर	1	14.8471	14.6880
डेनमार्क	क्रोना	1	2.6766	2.6478
मिस्र	पौंड	1	6.7175	6.5972
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.0912	3.0120
हांगकांग	डालर	1	2.2216	2.1985
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9602	0.9451
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.3909	1.3744
जापान	येन	100	11.1607	11.8814
केन्या	शिलिंग	1	0.7878	0.7790
कुवैत	दीनार	1	59.1502	57.1755
मलेशिया	डालर	1	6.3523	6.2846
मारीशस	रुपया	1	1.1790	1.1629
नेपाल	रुपया	1	0.6049	0.5966
हालैंड	गिल्डर	1	9.0905	8.9922
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8175	0.8087
सिंगापुर	डालर	1	9.2467	9.1466
स्पेन	पेसो	1	0.1605	0.1581
श्रीलंका	रुपया	1	0.4338	0.4288
स्वीडन	क्रोना	1	2.8289	2.7988
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	11.5772	11.4504
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0963	0.0927
थाईलैंड	बहत	100	67.9648	66.4832
ब्रिटेन	पौंड	1	28.4131	28.2087
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.3310	17.1527
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.7211	4.6687
सोवियत संघ	रूबल	1	27.9307	27.6210
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.3842	10.1215

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली. 6.4.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरमीत ठकराल

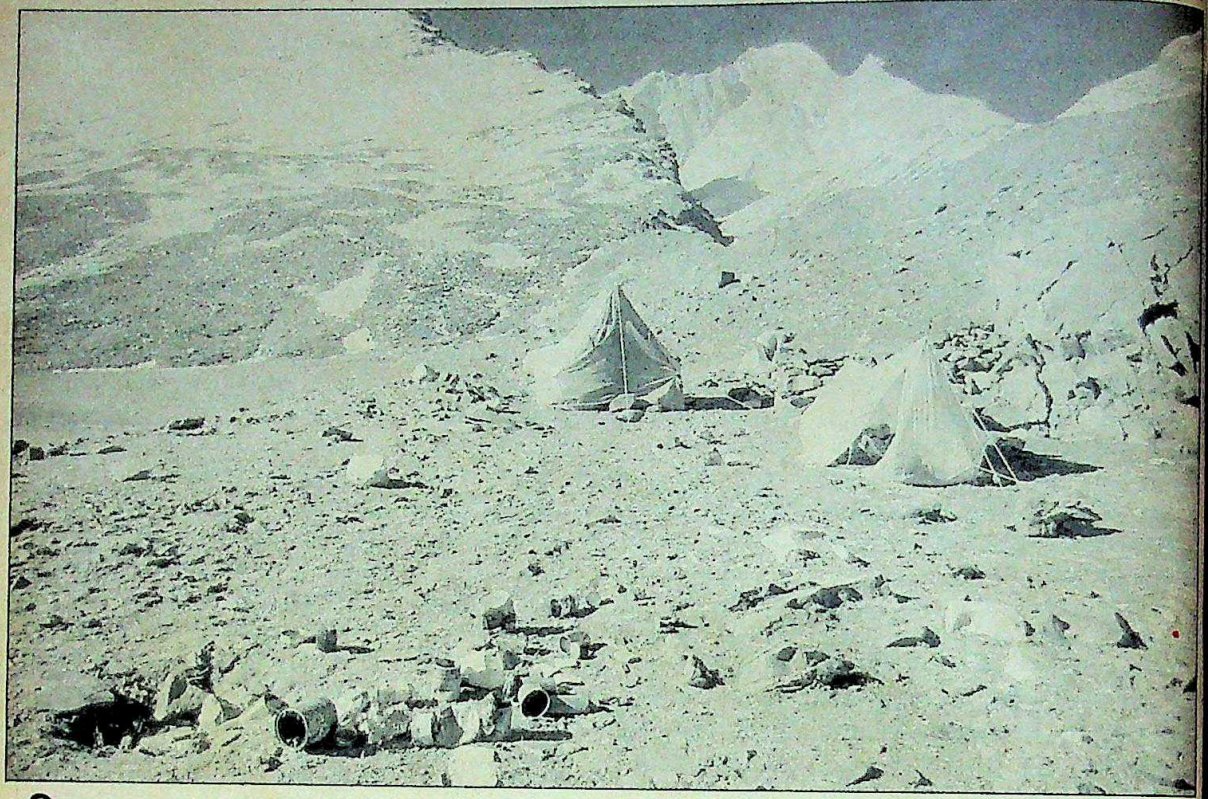

वासुकी ताल पर एक शिविर: कबाड़ के ढेर में

हिमालय

कबाड़ का बोझ

सफाई पर पर्वतारोही जरा भी ध्यान नहीं देते

धीरे-धीरे जूता बर्फ में धंसने लगता है और फिर पैर घुटनों तक धंस जाता है. इस यात्रा में हर कदम उठाने के लिए भगीरथ प्रयास करना पड़ता है. लेकिन यह सारी थकान कुछ सौ फुट ऊपर चढ़ते ही खत्म हो जाती है. आप सुध-बुध खोने लगते हैं. विशुद्ध हवा और दूर तक फैला नीला आकाश. ऐसे में आपका शरीर ही रोमांचित नहीं हो उठता बल्कि मन कहीं आध्यात्मिक जगत में भी पहुंचने लगता है.

कुछ ऐसा ही अनुभव हजारों पर्वतारोहियों को होता रहा है. लेकिन शायद भविष्य में पर्वतारोहियों को इस अनुभव से वंचित हो जाना पड़े क्योंकि उत्साही युवा पर्वतारोहियों की जमात जिस तादाद में बढ़ रही है, उसी अनुपात में उनका कूड़ा-कचरा भी वहां फैलता जा रहा है. खाद्य पदार्थों के टिन, तेल के कनस्तर, रस्से, टॉयलेट पेपर, सिगरेट की डिब्बियां, चॉकलेट के कागज वगैरह सब कुछ पहाड़ों की ढलान पर फेंक दिए जाते हैं. अभी एक या दो दशक पहले तक यह समस्या अपेक्षाकृत नगण्य थी. आज यह समस्या पर्वताकार होती जा रही है.

हिमालय के पर्यावरण की सुरक्षा पर पिछले पखवाड़े दिल्ली में हुए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में दूसरे लोगों के अलावा पर्वतारोही एडमंड हिलेरी, एम.एस. कोहली और पर्यावरण राज्यमंत्री मेनका गांधी ने इस क्षेत्र के पर्यावरण के असंतुलन पर चिंता प्रकट की. मेनका गांधी ने तो हिमालय के तराई वाले क्षेत्रों को हरा-भरा बनाने के लिए 300 करोड़ रु. की योजना का भी प्रस्ताव रखा.

इस गंदगी के ढेर के लिए ज्यादा जिम्मेदार दुस्साहसिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने वाले कारोबारी ही हैं. जब 1953 में तेंजिंग नोरगे और हिलेरी ने पहली दफा एवरेस्ट चोटी पर विजय पताका फहराई थी तब हिमालय पर साल भर में 100 बार से ज्यादा आरोहण नहीं होता था और पर्वतारोहियों की संख्या भी बमुश्किल 100 तक पहुंच पाती थी. आज लगभग 300 बार पर्वतारोहण होते हैं और पर्वतारोहियों की संख्या करीब एक लाख होती है. इनमें ज्यादातर एनसीसी या यूथ होस्टल्स एसोसिएशन से पहली दफा पर्वतारोहण करने वाले लोग होते हैं. ऐसे पर्वतारोहियों की भीड़ लगातार बढ़ती जा रही है. दुस्साहसिक पर्यटन का मुनाफे वाला कारोबार करने वाले, हाई ऑल्टिच्यूड वेल्फेयर स्कूल के पूर्व कप्तान कर्नल बी. कुमार का अनुमान है कि पर्यटकों की तादाद 50 फीसदी सालाना की दर से बढ़ रही है. आजकल 45 एडवेंचर क्लब तो अकेले बंबई में ही हैं और देश भर में रोज नए-नए क्लब उग रहे हैं.

इनके कबाड़ का ढेर भी बढ़ता जा रहा है. पिछले सितंबर में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के पर्यटक दल ने समुद्र तल से 4,400 मी. की ऊंचाई पर नन कुन चोटियों की आधारस्थली शफात ग्लेशियर के किनारे करीब एक टन कबाड़ को आग के हवाले किया.

नन कुन की राह में ही सबसे ज्यादा कबाड़ जमा है. हालांकि गंगोत्री के पास तपोवन के इलाके में अधिक कबाड़ है. नंदा देवी क्षेत्र को संरक्षित क्षेत्र घोषित किए जाने और इसे पर्वतारोहियों के लिए प्रतिबंधित किए जाने तक यही इलाका अधिक कबाड़ वाला माना जाता था.

पर्वतारोही संजीव सेठ याद करते हैं कि कुछ साल पहले एक विदेशी दल के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

U S H A

नए दशक के नए अंदाज़

अब भविष्य के नए-नए रंग और रूप आपके घर में – उषा के उत्कृष्ट, आधुनिक, कम्प्युटर-डिज़ाइन पंखे – स्टैला, पल्सर, कोहिनूर..... ऐसी विस्तृत रेंज!

40 वर्षों से अधिक की अग्रणी उत्तमता से गढ़े, भारत और विश्व के 60 अन्य देशों में नई हवाएँ लाने वाले पंखे। आपके उषा पंखे!

भारत का सर्वाधिक बिकने वाला पंखा

उषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्रकला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Thapar Group

नई प्रेरणा

सूटिंग्स • शर्टिंग्स • ड्रैस मैटीरियल्स

JCT FABRICS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही निर्णय का

अन्दरूनी राज़

प्रश्न जब त्वचा की सुरक्षा का है, तो सावधानी बरतने में ही समझदारी है। गलत निर्णय आपके लिये परेशानी का कारण बन सकता है। इसलिये रूपा फ्रन्टलाइन ही खरीदिये और निश्चित रहिये। भारतीय जलवायु के उपयुक्त, नवीनतम तकनीक से बना रूपा फ्रन्टलाइन आपकी त्वचा को बराबर सुरक्षा देता है।

शतप्रतिशत सुती धागे से बना। इसकी उत्कृष्ट फिनिश रेशम सी कोमलता का अहसास दिलाये। फिटिंग पूर्णतः आरामदायक। इम्पोर्टेड रबर से बना इलास्टिक। निराले रंगो में उपलब्ध। इन्हीं सब खूबियों के कारण रूपा फ्रन्टलाइन सही निर्णय लेने में आपका सहायक होता है।

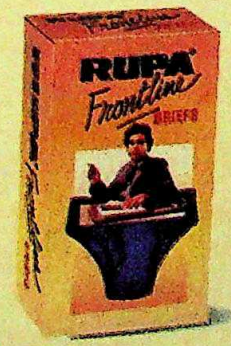

RUPA®

Frontline

BRIEFS

और अब–
नई रुपा फ्रन्टलाइन गंजी भी
मेचिंग कलर में!

'फ्रन्ट ऑपन' की स्पेशल सुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपर्क अधिकारी के बतौर जब वे एक पठार पर पहुंचे तो वहां बियर की बोतलें, सलामी (एक तरह का पकाया मांस) के पैकेट और कनस्तर बिखरे पड़े थे. उसके पहले दिन एक जर्मन दल वहां से गुजरा था. सेठ कहते हैं, "जाहिर है, खूब रंगरेलियां मनाई गई थीं."

वैसे जर्मन लोग आम तौर पर समझदार होते हैं. सबसे बुरा हाल तो भारतीयों का है. इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन (आईएमएफ) के सचिव, कमांडर जोगिंदर सिंह कहते हैं, "हम भारतीय घर साफ करते हैं और कबाड़ बाहर डाल देते हैं." लद्दाख जैसी जगहों पर सेना के जवान कबाड़ फैलाने वालों में सबसे आगे हैं.

तत्काल कार्रवाई की जरूरत महसूस करते हुए आईएमएफ ने भारत की ओर के हिमालय पर चढ़ने के लिए दिशा-निर्देश तय किए हैं. पिछले साल संस्था द्वारा प्रायोजित सभी पर्वतारोही दलों को कैंप उठने के बाद उस जगह को साफ करने का भत्ता देने की पेशकश करने का फैसला किया गया था. सेना ने भी लोगों में समझदारी बढ़ाने के लिए कुछ कार्यक्रम चलाए हैं.

पिछले अक्तूबर में हिमालयन एडवेंचर ट्रस्ट की भी स्थापना की गई. इसका मकसद 'कड़ी आचरण संहिता' बनाना और पर्यटन आयोजित करने वालों तथा पर्वतारोहियों पर कड़ी निगरानी रखना है. ट्रस्ट के संरक्षक एडमंड हिलेरी और अध्यक्ष एम.एस. कोहली हैं. इसके सदस्यों में क्रिस बोनिंग्टन और जुंगों तावेई जैसे जाने-माने पर्वतारोही हैं.

अब तक कबाड़ को साफ करने के लिए हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल किया जाता रहा है लेकिन हिमालय पर्वत श्रृंखला में यह काम काफी मुश्किल है. इसलिए जनजागरण पर ही जोर दिया जाता है. सेठ कहते हैं, "दरअसल शर्मिंदगी ही मायने रखती है. मसलन ऑक्सीजन को ही लें. अब यह कहने में लोग झेंप जाते हैं कि चढ़ा तो जरूर पर ऑक्सीजन के साथ."

हिमालयन क्लब के सचिव सुधीर साही का प्रस्ताव है कि सुरक्षा सीमा की तरह पर्यावरण सीमा बनाई जाए ताकि हर किसी को अनुमति लेना जरूरी हो. कुछ पर्वतारोहियों का खयाल है कि समस्या की जड़ भीड़भाड़ वाले समय में कुलियों का पर्याप्त संख्या में उपलब्ध न होना है. आइटीबीपी के डीआईजी हुकुम सिंह बताते हैं, "दूसरी समस्या टट्टू और खच्चरों की कमी की है."

बहरहाल, जिस अनुपात में कबाड़ फैलता जा रहा है, उससे विश्व की सबसे गौरवशाली पर्वत श्रृंखला कुछ दशकों बाद बदबूदार हिमालय के रूप में जानी जाने लगेगी.

—डेविड देवदास

भारतीय सेना

अनोखी लड़ाई

हरियाली फैलाने का प्रयास

भारतीय सेना का एक दस्ता लगभग आठ वर्षों से खास किस्म की लड़ाई लड़ रहा है. यह युद्ध किसी विदेशी सेना से नहीं बल्कि प्रकृति से है. पर्यावरण की इस लड़ाई को तीन मोर्चों पर लड़ा जा रहा है: राजस्थान के विशाल रेगिस्तान में, खदानों से पटी मसूरी की पहाड़ियों पर और जम्मू-कश्मीर में सांबा की उजाड़ जमीन पर.

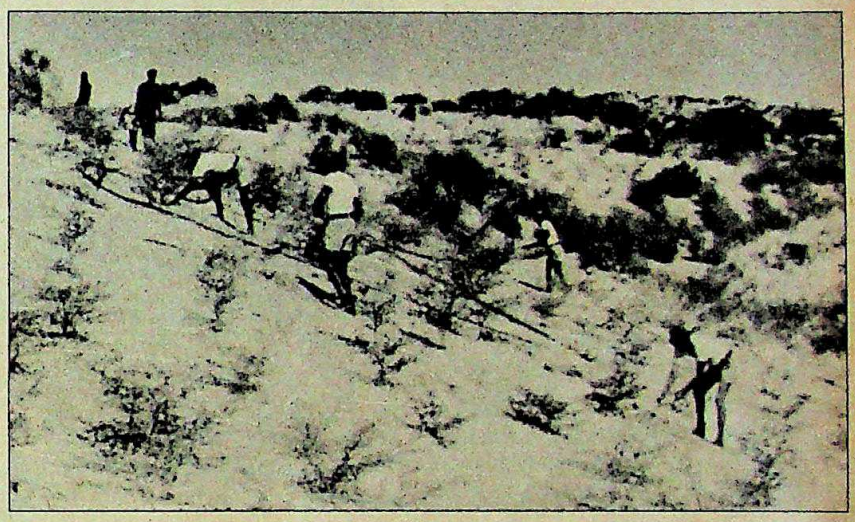

बीकानेर के रेगिस्तान में वृक्षारोपण

प्रादेशिक सेना के प्रमुख मेजर जनरल जसबीर सिंह कहते हैं, "दुनिया में पहली दफा किसी सेना ने जमीन हरी-भरी करने का बीड़ा उठाया है." पर्यावरण दस्ते की पहली बटालियन का गठन 1982 में प्रादेशिक सेना के तहत किया गया था. इसके बाद इसकी दो और बटालियनें बनाई गईं जिससे इसकी संख्या 1,000 हो गई.

थल सेना की 128 इन्फैंट्री बटालियन ने पर्यावरण दस्ते की पहली परियोजना 1983 में राजस्थान के बीकानेर से 80 किमी. दूर शुरू की. सात साल में 668 लोगों की बटालियन ने सुंदर बगीचा बना दिया. 50 किमी लंबे क्षेत्र में 63 लाख पौधे उग आए थे. बटालियन के कमांडर कर्नल पी.एस. कोचर बताते हैं, "जब आप हरा-भरा क्षेत्र देखें तो हमें याद करें."

इस अभियान में स्थानीय पूर्व सैनिकों और कुछ स्थानीय लोगों को भी शामिल किया गया है. किसान हवा सिंह कहते हैं, "उन लोगों ने हमें दिखाया कि हमारी जमीन से भी उम्मीद की जा सकती है."

इसके विपरीत 12 इन्फैंट्री बटालियन ने पहाड़ों में काम का जिम्मा लिया है. चार साल पहले इसने देहरादून के निकट शाहजहांपुर की 2,000 हेक्टेयर उजाड़ भूमि को हरा-भरा करने का काम हाथ में लिया. दो साले पहले 243 सैनिकों वाली इस बटालियन ने पहाड़ियों में जमीन की कटान रोकने के लिए 2,400 बांध बनाए. 13 में से 11 क्षेत्र पूरे चूने की खाइयों से पटे थे. इन सबको हरा-भरा कर दिया गया.

129 इन्फैंट्री बटालियन भी जम्मू-कश्मीर की पहाड़ियों पर वनीकरण और भू-क्षरण को रोकने का काम कर रही है. लेकिन पर्यावरण दस्ते को वन विभाग और पर्यावरण विभाग के कुछ अधिकारियों की आलोचना के चलते अपना काम समेटना भी पड़ सकता है. ये अधिकारी सेना से काम लेने के भारी खर्च की ओर इशारा करते हैं. उनकी दलील है कि जिस काम के लिए बीकानेर में प्रति हेक्टेयर 24,000 रु. और देहरादून में प्रति हेक्टेयर 9,000 रु. खर्च किए गए, उतना ही काम वन विभाग आधे खर्च में कर सकता है. हालांकि पर्यावरण दस्ते के समर्थक कार्य दल द्वारा रोपे गए 95 फीसदी पेड़ों के बचे रहने की ओर इशारा करते हैं.

जबकि पर्यावरण मंत्रालय अपनी मुट्ठी कसने लगा है, इस दस्ते का भविष्य उज्ज्वल नहीं दिखता. अभी तक मंत्रालय पर्यावरण दस्ते पर 8.5 करोड़ रु. खर्च कर चुका है. पर्यावरण मंत्रालय में वैज्ञानिक डॉ. बी.एस. अत्री कहते हैं, "मौजूदा कार्य दस्तों का कार्यकाल तो बढ़ा दिया जाएगा पर अतिरिक्त दस्ते के गठन की संभावना नहीं है." लेकिन मंत्रालय में मेनका गांधी के आगमन से शायद पर्यावरण दस्ते को फिर जीवन मिल सके.

—सुधीरेंद्र शर्मा, बीकानेर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई

पहुंचवालों की पांचों उंगलियां घी में

बड़े लोगों में औने-पौने दाम पर सरकारी जमीन की बंदरबाट

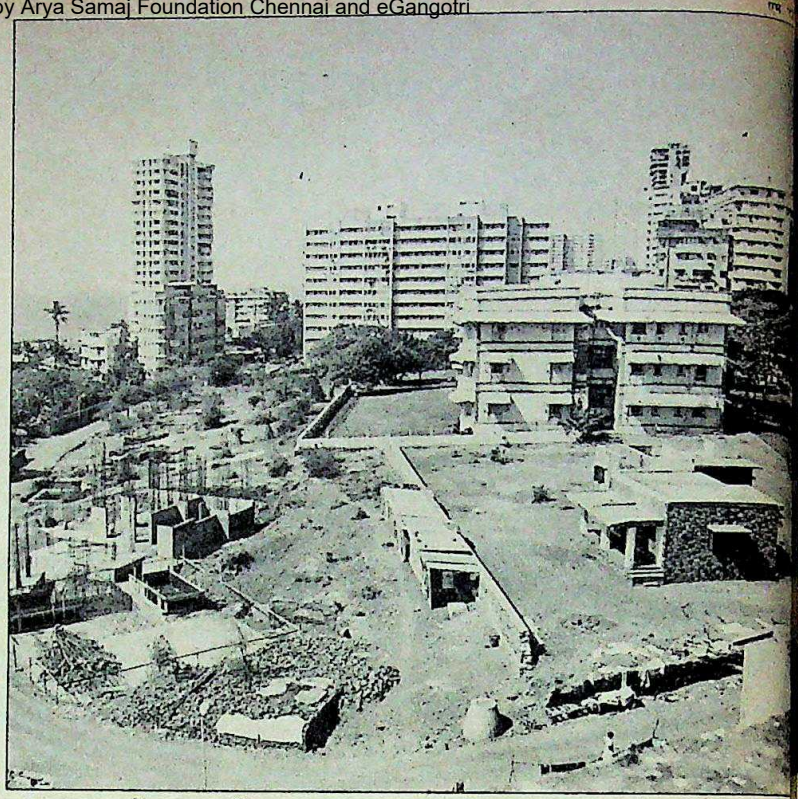

महात्मा गांधी ने अपने जीवनीकार डी.जी. तेंडुलकर को सरकारी जमीन का एक प्लॉट दिलाने की व्यवस्था की थी. इस प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी ने उस जमीन पर एक छोटा-सा बंगला बनवाया और कई खंडों में महात्मा गांधी की बृहत जीवनी लिखने के बाद वहीं आखिरी सांस ली. बंबई में आज वही जमीन का टुकड़ा विवाद का केंद्र बन गया है. करोड़ों रु. कीमत के सरकारी भूखंडों को बेहयाई से हथियाने की राजनेताओं, नौकरशाहों और यहां तक कि न्यायाधीशों तक की कामयाब कोशिशों से यह बवाल उठ खड़ा हुआ है. और जमीन का यह निंदनीय लेन-देन एकबार फिर शरद पवार सरकार पर अपशकुनी साये की तरह मंडराने लगा है.

तेंडुलकर का प्लॉट मालाबार पहाड़ी पर सरकारी 'रॉकी हिल' इलाके का एक हिस्सा है. यह बड़ी रमणीय जगह है जहां से अरब सागर का दृश्य दिखता है. इसके एक तरफ मंत्रियों और न्यायाधीशों के सरकारी अपार्टमेंट बने हैं. इन्हीं से लगकर महात्मा के जीवनीकार ने एक छोटा बंगला बनवाया था. उनकी इच्छा थी कि उनकी मृत्यु के बाद बंगले का उपयोग गांधीवादी विचारों के प्रसार के लिए किया जाए. नतीजतन 1974 में जमीन सहित तेंडुलकर के बंगले को राज्य सरकार ने गरीब बच्चों की शिक्षा और कल्याण को समर्पित स्वयंसेवी संस्था 'बाल कल्याणी' को 99 साल के पट्टे पर दे दिया. पट्टे का किराया भी महज 1 रु. प्रति महीने रखा गया.

आज 'बाल कल्याणी' के साथ 100 बच्चे जुड़े हुए हैं. नगर निगम के प्राथमिक स्कूलों में भर्ती के बाद इन बच्चों का पढ़ाई बीच में छोड़ने का प्रतिशत बहुत कम है. लकवाग्रस्त होने के बावजूद संस्था से जुड़ी रहने वाली पूर्व सांसद, 'बाल कल्याणी' की अध्यक्षा सुशीला अदिवरेकर कहती हैं, "हमारी योजना बंबई के झुग्गीवासियों के बच्चों की प्राथमिक स्तर की शिक्षा की खातिर शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की भी थी और हम अपने इस काम में सरकारी सहायता की उम्मीद कर रहे थे."

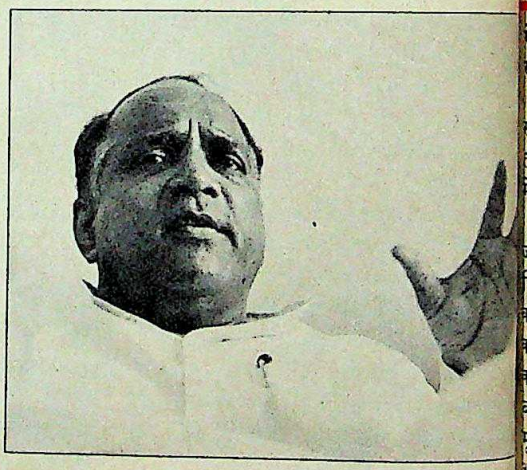

लेकिन राज्य सरकार ने इसके बदले सुविधाहीन बच्चों की इस संस्था पर 'मंत्रालय' के जमीन हड़पो अभियान में मशगूल शातिरों को दांत गड़ाने का मौका दे दिया. कुछ महीनों में ही ग्रामीण विकास सचिव वी. रंगनाथन की अगुआई में अफसरों का एक दल 'बाल कल्याणी' की जमीन के टुकड़े करने और 3.725 वर्ग मी. जमीन 'अंगरिका सहकारी आवास समिति' को पट्टे पर देने के लिए शरद पवार की मंजूरी लेने में कामयाब हो गया. समिति को पंजीकरण के पहले ही आशय पत्र भी थमा दिया गया. पूर्व विधायक तथा 'बाल कल्याणी' के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर प्रभु बताते हैं, "दस्तावेजों में हेराफेरी की गई और जब तक किसी को खबर लगे कि क्या हो रहा है, निर्माण कार्य शुरू हो गया." भवन निर्माण का काम ठीक-ठाक चलता रहे इसके लिए समिति में असरदार नौकरशाहों को सदस्य बनाया गया (देखें बॉक्स).

समिति के 26 सदस्यों के लिए यह भवन भारी मुनाफे का सौदा साबित होने जा रहा है. बाजार दर पर इस जमीन की कीमत 7 करोड़ रु. है. लेकिन सरकारी नियमों के त इन अफसरशाहों को महज 7 लाख रु. वर्ष का किराया चुकाना पड़ेगा. यह काम एक बैंक को भवन का कुछ हिस्सा किराए देकर आसान कर लिया गया. बैंक को ज किराए पर देने के लिए "व्यावसायिक योग" की महत्वपूर्ण अनुमति आसानी से ली गई (अंगरिका के मामले में यह सब परियोजना के खिलाफ बंबई हाईकोर्ट में रहे मुकदमे के बावजूद किया गया). कि पट्टे पर दी गई जमीन पर बने भवनों के निर्मित क्षेत्र की सीमा 1075 वर्गफुट तक है. पर जरूरत से ज्यादा बड़ी बाल्कनि बनाकर इस नियम को धता बताई गई. इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेंडुलकर का प्लॉट; बाल कल्याणी में बच्चे; और (बाएं) पवार: संगीन आरोप

सरकारी खैरात पाने वाले ये अफसर करीब 50 लाख रु. कीमत के अपार्टमेंट के औने-पौने में मालिक बन जाएंगे.

हालांकि अंगरिका को 'बाल कल्याणी' की जमीन दिए जाने के लगभग साल भर बाद पिछले नवंबर में बंबई हाईकोर्ट ने निर्माण कार्य पर स्थगन आदेश दे दिया. इस आदेश को फरवरी 1990 में एक खंडपीठ ने भी कायम रखा. 'बाल कल्याणी' और 'बंबई बचाओ समिति' की याचिका पर दिए गए मूल फैसले में न्यायाधीश ने समिति के अफसरशाहों की ओर से आए नौ बयानों पर विशेष आपत्ति प्रकट की. इन बयानों में सरकार द्वारा बेशकीमती जमीन अपने ही अफसरों में बांटने को चुनौती देने के नागरिकों के अधिकार पर सवाल खड़ा किया गया और इसे प्रशासन की 'आंतरिक व्यवस्था' बताया गया. और तो और, इसमें 'बाल कल्याणी' के अध्यक्ष और अब विधानसभा अध्यक्ष मधुकरराव चौधरी के गरीबों के प्रति करुणा भाव की भी खिल्ली उड़ाई गई है. उस समय चौधरी सत्ता में नहीं थे.

फरवरी में न्यायाधीश आर.ए. जहागीरदार की अगुआई में खंडपीठ ने टिप्पणी की कि 'बाल कल्याणी' के मामले में "खाली जमीन के आबंटन से संबंधित सार्वजनिक नीति के व्यापक मुद्दे जुड़े हुए हैं." उनका यह भी मानना था कि अगर अफसरों की समिति के खिलाफ याचिका मंजूर नहीं की गई तो "बंबई में उपलब्ध सीमित भूखंडों को हड़पने के लिए ऊंचे ओहदों पर आसीन लोगों में होड़ लग जाएगी."

मजेदार बात यह है कि जहागीरदार का तीखा फैसला एक अखबार की उस रिपोर्ट के महज पांच दिन बाद ही आया जिसमें बंबई हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के 28 मौजूदा या अवकाशप्राप्त न्यायाधीशों की आवासीय समिति द्वारा सरकारी जमीन लेने का रहस्योद्घाटन किया गया था.

न्यायाधीशों की समिति को पट्टे की दर में पवार सरकार ने जो असाधारण छूट दी उसकी खबर छपने को नौकरशाहों द्वारा न्यायपालिका के कान उमेठने की कोशिश माना गया. लेकिन गरीबों को आवास अधिकार दिलाने के लिए संघर्षरत संस्था 'निवारा हक्क सुरक्षा समिति' ने फौरन न्यायाधीशों की समिति के खिलाफ भी याचिका दायर कर दी. इसी बीच सिपाहियों की संस्था 'महाराष्ट्र पुलिस आवास कल्याण निगम' ने आलीशान इलाके वरली में 20,000 वर्ग मी. प्रमुख सरकारी भूमि पर बन रही राजनीतिकों की सहकारी आवास समिति के खिलाफ दायर अपनी याचिका के सिलसिले में आगे की न्यायिक कार्रवाई शुरू करने की मांग की.

लाभभोगी बड़े लोग

- ▶ वाई.वी. चंद्रचूड, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट.
- ▶ वी.डी. तुलजापुरकर, अवकाशप्राप्त न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट.
- ▶ वी.एस. देशपांडे, अवकाशप्राप्त मुख्य न्यायाधीश, बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ एम.एन. चांदूरकर, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, मद्रास हाईकोर्ट.
- ▶ एम.एच. कनिया, न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट.
- ▶ पी.बी. सावंत, न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट.
- ▶ एस सी प्रताप न्यायाधीश बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ बी.एस. कोतवाल, न्यायाधीश, बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ शरद मनोहर, न्यायाधीश, बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ एन.एच. कथरिया, न्यायाधीश, बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ सी.एस. धर्माधिकारी, पूर्व न्यायाधीश, बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ ए.डी. तांतेड, अवकाशप्राप्त न्यायाधीश, बंबई हाईकोर्ट.
- ▶ शिवाजीराव देशमुख, ग्रामीण विकासमंत्री.
- ▶ वी. रंगनाथन, सचिव, ग्रामीण विकास.
- ▶ बी.के. अग्रवाल, सचिव, आवास.
- ▶ सतीश त्रिपाठी, सचिव, शहरी विकास.
- ▶ जॉनी जोसेफ, महाराष्ट्र के राज्यपाल के सचिव.
- ▶ पी. सुब्रमण्यम, सचिव, पर्यावरण.
- ▶ पी.ए. माने, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, अलीबाग.
- ▶ एस. बोरणकर, आईपीएस अधिकारी.
- ▶ एम.एल. लखनपाल, आईएएस अधिकारी.
- ▶ मनमोहन सिंह, आईएएस अधिकारी.
- ▶ भास्कर पाटील, आईएएस अधिकारी.
- ▶ वसंत साठे, इंकाई सांसद.
- ▶ एन.के.पी. साल्वे, इंकाई सांसद.
- ▶ शिवाजीराव पाटील निलंगेकर, पूर्व मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र.
- ▶ बाबासाहब भोसले, पूर्व मुख्यमंत्री
- ▶ ए.आर. अंतुले, पूर्व मुख्यमंत्री.
- ▶ प्रतिभा पाटील, पूर्व महाराष्ट्र प्रदेश इंका अध्यक्ष.
- ▶ प्रभा राव, पूर्व महाराष्ट्र प्रदेश इंका अध्यक्ष.
- ▶ सुधाकर नाईक, राज्य के राजस्वमंत्री.
- ▶ जवाहरलाल दरडा, पूर्व राज्यमंत्री.
- ▶ आर.एस. गवई, पूर्व अध्यक्ष, विधान परिषद.
- ▶ दत्ता मेघे, पूर्व मंत्री.
- ▶ मधु देवलेकर, पूर्व भाजपाई विधायक.
- ▶ प्रेम कुमार शर्मा, भाजपाई विधायक.

चंद्रचूड

एस.आर. देशमुख

साठे

अंतुले

प्रतिभा पाटील

सुधाकर नाईक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायाधीशों की 'फोरशोर कोऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी' का प्रस्ताव पहली दफा 1980 में शरद पवार के पहले मुख्यमंत्रित्व काल में सामने आया. न्यायाधीशों को नरीमन प्वाइंट और कफ परेड जैसे लकदक इलाके के करीब जमीन दी गई है. पहले ही इस इलाके में वरिष्ठ आईएएस व आईपीएस अधिकारियों और कुछ राजनीतिकों तथा न्यायाधीशों की चार आवास समितियों की चार बहुमंजिली इमारतें हैं. अभी कुछ समय पहले ही इसी इलाके में प्रस्तावित एक और आवासीय समिति में रक्षा राज्यमंत्री राजा रमन्ना को लेकर बावेला मच चुका है.

निवारा हक्क सुरक्षा समिति ने अब न्यायाधीशों की सहकारी समिति को चुनौती दी है जिसने सड़क के उस पार 14 मंजिली इमारत 'समता' खड़ी कर ली है. इस जगह कभी झुग्गियां हुआ करती थीं और 1986 में इन्हें हटाने को लेकर खासा आंदोलन हुआ था. मुख्य न्यायाधीश चित्ततोष मुकर्जी की अगुआई में गठित विशेष खंडपीठ की अदालत में दायर याचिका में कई तरह की अनियमितताएं बरतने का आरोप है. इस याचिका पर सुनवाई जून में होनी है. इन आरोपों में से कुछ इस प्रकार हैं:

- जनवरी में हाईकोर्ट के न्यायाधीशों के लगातार कहने के बाद पवार सरकार ने पट्टे के सालाना किराए का फार्मूला बदल दिया. खुले बाजार में इस जमीन की कीमत 7 करोड़ रु. तक लग सकती थी. फार्मूला बदलने से सालाना पट्टे की दर करीब 6.5 लाख रु. से 2.4 लाख रु. हो गई (न्यायाधीशों ने तो और ज्यादा छूट की मांग की थी).
- पड़ोस के जिमखाना क्लब को मासिक पट्टे पर दी गई 900 वर्ग मी. सरकारी जमीन को भी विचित्र स्थितियों में न्यायाधीशों की समिति को दी गई जमीन में शामिल कर दिया गया.
- शहर में सख्ती से लागू 'फ्लोर स्पेस इंडेक्स' (भू-क्षेत्र सीमा सूचकांक) के उल्लंघन की भी दो गंभीर मिसालें हैं. इससे भवन का एक हिस्सा गैर कानूनी हो जाता है.
- समिति में सदस्यों के पांचवें हिस्से के बराबर अनुसूचित जाति-जनजाति के लोगों को शामिल किए जाने का नियम है. पर इसका उल्लंघन किया गया.

न्यायाधीशों ने इन आरोपों का ब्यौरेवार खंडन किया और पट्टे की दर में मिली छूट का बचाव पड़ोस के अफसरों की समिति की तर्ज पर दिए जाने के आधार पर किया.

लगता है कि मामला न्यायपालिका के लिए खतरनाक साबित होने वाला है. निवारा हक्क निवारण सुरक्षा समिति की

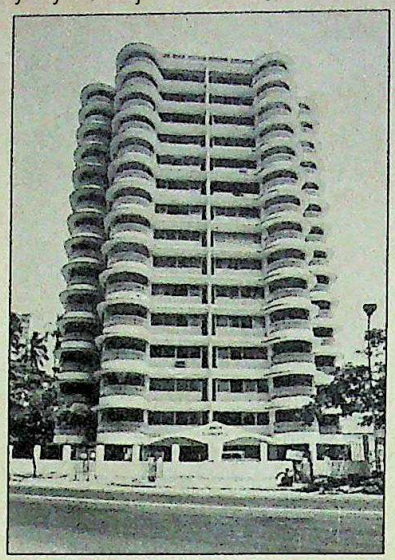

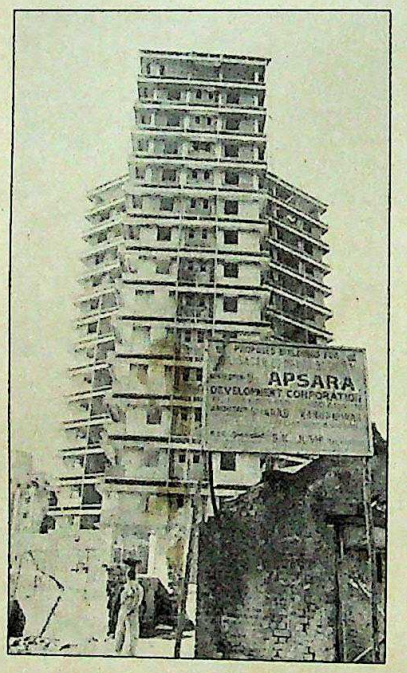

न्यायाधीशों की इमारत (ऊपर); विधायकों का अपार्टमेंट: पहुंच से पौ-बारह

याचिका सामान्य याचिकाओं की तरह किसी एक न्यायाधीश की अदालत में नहीं रखी जा सकी क्योंकि कई मौजूदा न्यायाधीश आवासीय समिति के सदस्य हैं. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश वाई.वी. चंद्रचूड समेत महाराष्ट्र से न्यायपालिका के कई दिग्गजों के समिति में शामिल रहने के कारण यह दलील भी दी जा सकती है कि मामला किसी दूसरे हाईकोर्ट को सुपुर्द किया जाए. सुरक्षा समिति के वकील पी.ए. सेबेस्तियन का सवाल है, "सवाल यह पूछा जाना चाहिए कि क्या न्यायाधीश समिति गठित करके और प्रशासन से सुविधाओं की मांग करके संविधान से खिलवाड़ कर सकते हैं और क्या वे अपनी ही अदालत की अवमानना कर सकते हैं."

सुरक्षा समिति ने इस मामले को सार्वजनिक बनाने के लिए एक कार्यसमिति बनाई है. इस अभियान में जिन चार मुद्दों को उठाया जाएगा उनमें न्यायाधीशों की समिति, भू-आरक्षण रद्द करने का घोटाला, राज्य की संपत्ति की बंदरबाट और झुग्गीवासियों को आवास का अधिकार दिलाना शामिल है.

बंबई हाईकोर्ट के कुछ न्यायाधीश 'समता' के विशाल फ्लैटों में रहने की तैयारी में जुटे हैं, उनके साथी न्यायाधीश एम.एल. पेडसे ने कहा है कि सार्वजनिक ओहदों पर कायम लोगों को सरकार से जमीन लेते समय सचेत रहना चाहिए. न्यायाधीश ने यह टिप्पणी शिवछत्रपति सहकारी आवास समिति के खिलाफ महाराष्ट्र पुलिस आवास कल्याण निगम की याचिका की सुनवाई के दौरान की. शिवछत्रपति समिति पूर्व तथा मौजूदा सांसदों—विधायकों के लिए वरली में छह बहुमंजिली इमारतें बना रही है. राजनीतिकों को ये प्लॉट 1981 के उस सरकारी प्रस्ताव के बावजूद दिए गए जिसमें स्वाधीनता सेनानियों, सशस्त्र बल तथा राज्य पुलिस के मौजूदा या अवकाशप्राप्त लोगों को प्लॉट आवंटन में प्राथमिकता देने की बात कही गई है. इन्हें जमीन लेने में प्राथमिकता तो नहीं दी गई, उलटे पुलिस बैरकें, एक अस्पताल और एक कल्याण केंद्र पर ढहा दिए जाने का खतरा मंडरा रहा है. इस इलाके में एक और सहकारी आवास समिति 'वरली सागर' ने राजनीतिकों के लिए कई बहुमंजिला इमारतें खड़ी कर दी हैं. इसके लाभभोगियों में पूर्व केंद्रीय मंत्री, कुछ पूर्व मुख्यमंत्री और कुछ पूर्व महाराष्ट्र प्रदेश इंका अध्यक्ष हैं.

कई वर्षों से एक के बाद एक मुख्यमंत्रियों ने बड़े लोगों को मनमाने ढंग से जमीन दी. हालांकि हमेशा यह रोना रोया जाता रहा है कि सार्वजनिक उपयोग के लिए जमीन उपलब्ध न होने से सरकार चिंतित है. लेकिन अब एकाएक सरकार को कई याचिकाओं का सामना करना पड़ रहा है जिनके मुताबिक राज्य के तीनों अंगों—प्रशासन, विधायिका और न्यायपालिका के लोगों में मनमाने ढंग से जमीन बांटी गई है. अब अदालतों के फैसलों से ही तय होगा कि क्या सरकार कानून में हेराफेरी की गुंजाइश बंद करने और राज्य की संपत्ति के बंटवारे का कोई ठोस फार्मूला बनाने पर मजबूर होगी.

—एम.रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देसी नाटक

नया आत्मविश्वास

कई नाटककार उभरे

भारतीय रंगमंच पर कुछ भाषाओं की हालत भले ही दूसरों के मुकाबले कुछ बेहतर हो पर कुल मिलाकर रंगमंच कई बरस से ठहराव के दौर में रहा है. इस दौरान अक्सर दर्शक को या तो घिसे-पिटे पुराने नाटक देखने को मिले या फिर देसी थाली में विदेशी माल मिला. ऐसे मौके बहुत कम आए जब कोई नया नाटक रंगमंच को अपनी अनूठी महक से सराबोर कर जाए.

लेकिन पिछले छह साल से इस क्षेत्र में आने वाले बदलाव को देखते हुए उम्मीद बंधने लगी है कि भारतीय रंगमंच कदमताल छोड़कर कुछ आगे बढ़ सकता है. चक्रव्यूह, पशु गायत्री, खेल गुरु का, चंदा बेड़नी, हरिशचंदर की लड़ाई, रामलीला, लक्षपति राजा ने कथे, जुल्वा, बाबा जित्तो, तुकिराअबलम और राजा भर्तृहरि जैसे कई नाटकों ने एक के बाद एक मंच पर आकर उजाला फैलाने का जो सिलसिला चलाया उससे भारतीय रंगमंच का एक नया व्यक्तित्व उभरता दिख रहा है. और यह इक्का-दुक्का प्रयासों का नहीं बल्कि नियोजित अभियान का नतीजा है.

पिछले पखवाड़े इस अभियान का छठा चरण राजधानी के कमानी सभागार में देखने में आया. पर युवा रंगकर्मियों को भारत के शास्त्रीय, पारंपरिक और लोक नाट्य रूपों के क्षेत्र में नए प्रयोग करने की सुविधाएं देने का यह अभियान छह साल पहले संगीत नाटक अकादमी ने शुरू किया था. भारत के विभिन्न क्षेत्रों से चुनकर लाए गए छह नाटकों के इस राष्ट्रीय समारोह में हिंदी के दो नाटक 'इसुरी' (अरुण पांडे) और 'दूर देश की कथा' (परवेज़ अख्तर), कन्नड़ का 'सांग्या बलया' (के.जी. कृष्णामूर्ति), मराठी का 'दगड का माती' (चंद्रकांत कुलकर्णी), डोगरी का 'महाभोज' (बलवंत ठाकुर) और मलयालम का 'कायक्कुत्ताप्पाडु' (के. कलाधरण) खेले गए.

अब तक के इन छह समारोहों में 36 नाटक खेले जा चुके हैं जिनका चुनाव युवा रंगकर्मियों द्वारा तैयार 116 नए नाटकों में से किया गया. अकादमी के आर्थिक सहयोग से तैयार किए गए इन सभी नाटकों की खूबी यह है कि इनका कथ्य और शिल्प पूरी तरह भारतीय है.

ये सभी नाटक अच्छे ही साबित हुए हों, ऐसी बात नहीं. बल्कि सच तो यह है कि इनमें से आधे से भी अधिक नाटक बुरी तरह फ्लॉप सिद्ध हुए और बाकी में से अधिकांश नाटक औसत स्तर के रहे. पर सच यह भी है कि इस अभियान के माध्यम से भारतीय दर्शक का परिचय चक्रव्यूह, पशु गायत्री, लक्षपति राजा ने कथे, बाबा जित्तो, जुल्वा और राजा भर्तृहरि जैसे नाटकों से हुआ जो आने वाले समय में मील का पत्थर होने की हैसियत रखते हैं. इसके अलावा इस अभियान ने रतन थियम, भानु भारती, बंसी कौल, उर्मिल थपलियाल और सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ जैसे चर्चित कलाकारों के रंग व्यक्तित्व के अब तक अचीन्हे पहलुओं से भी दर्शकों का परिचय कराया है. और बलवंत ठाकुर, वामन केंद्रे, बी. जयश्री, नीलम मानसिंह चौधरी, एम. रामास्वामी तथा प्रवीर गुहा जैसे अनाम कलाकारों को राष्ट्रीय रंगमंच पर स्थापित करने का श्रेय इसी अभियान को जाता है.

'महाभोज' (ऊपर); और 'दूर देश की कथा' के दृश्य:

पिछले छह साल से आए बदलाव के मद्देनजर उम्मीद बंधने लगी है कि भारतीय रंगमंच कदमताल छोड़कर आगे बढ़ सकता है

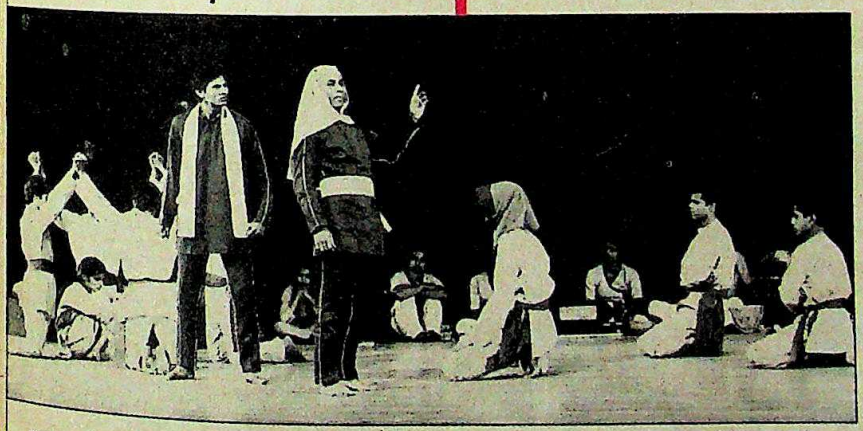

इस योजना के संचालक और अकादमी के सह-सचिव भारतरत्न भार्गव कहते हैं, "इस थोड़ी-सी अवधि में भारतीय रंगमंच को जितने अच्छे नए नाटक मिले हैं और जितने नए रंगकर्मियों को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मंच पर मान्यता मिली है वैसा पिछले बीस साल में नहीं हो पाया था. रंगमंच के ठेठ हिंदुस्तानी मुहावरे की ओर भी रंगकर्मियों का ध्यान गया है."

पहले 'बाबा जित्तो' और इस बार 'महाभोज' के डोगरी मंचन के माध्यम से भारतीय रंगमंच में अपनी खास पहचान बनाने वाले बलवंत ठाकुर (30) कहते हैं, "जम्मू जैसे अनजान शहर में रंगकर्म करने के बाद अब मुझे जो सम्मान और अवसर मिला है उसने मुझे एक नया आत्मविश्वास दिया है." लगता है कि अपनी इन नई उपलब्धियों के बूते पर भारतीय रंगमंच पर भी आत्मविश्वास के नए युग का प्रारंभ हो रहा है.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

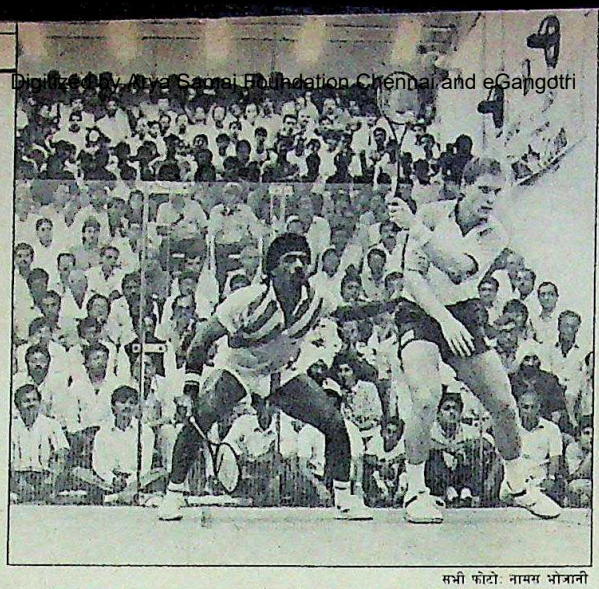

सभी फोटो: नामस भोजानी

स्क्वैश

प्रोत्साहन की आशा

भारतीयों को जहांगीर ने जौहर दिखाया

उबाऊ और एकरस माने जाने वाले स्क्वैश को टेनिस तथा क्रिकेट के बीच का खेल कहा जा सकता है. बरसों तक गुमनाम रहने के बाद भारतीय स्क्वैश के लिए शायद अब अच्छे दिन आ सकते हैं. कारण? स्क्वैश के बेताज बादशाह जहांगीर खां भारत में अपने जौहर दिखा गए हैं.

विश्व के पहले नंबर के खिलाड़ी और अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश के विबल्डन समझे जाने वाले ब्रिटिश ओपन के आठ बार विजेता रहे जहांगीर खां ने भारत में टाइटन शृंखला के तहत तीन मैचों में हिस्सा लिया. समकालीन स्क्वैश के इस सर्वोच्च खिलाड़ी ने इंदौर के डेली कॉलेज के उस कोर्ट में खेलना मंजूर कर लिया जहां कभी उनके दादा फैजुल्ला और पिता रोशन शीशे का कोर्ट बनाने के वास्ते धन इकट्ठा करने को खेल चुके हैं. लेकिन इससे पहले बंबई के स्क्वैशप्रेमियों को एक बिलकुल नए किस्म का अनुभव हुआ: भारतीय क्रिकेट क्लब के कोर्ट में दो दिनों में हुए दो मैच.

तीन मैचों में जहांगीर के खिलाफ खेल रहे थे आस्ट्रेलिया के क्रिस डिटमर. डिटमर विश्व के तीसरे नंबर के खिलाड़ी हैं. उन्होंने जहांगीर को हरा दिया. कई लोगों ने पहले दौर के खेल का टेलीविजन पर सीधा प्रसारण देखा और करीब 200 उत्साही दर्शकों ने प्रत्यक्ष मैच देखा.

इस टूर्नामेंट के खिलाड़ियों में तनाव भले ही न रहा हो पर इतना तो जरूर है कि ब्रिटिश ओपन के शुरू होने में जितना कम समय है उसे देखते हुए डिटमर और जहांगीर दोनों ने ही हर मौके का पूरा फायदा उठाया. पहले मैच के बाद थोड़े निराश डिटमर ने कहा, "मैं तो सीधे जीतने जा रहा था." खां भी इन मुकाबलों को बहुत गंभीरता से लेते रहे. उन्होंने कहा, "आज अच्छा खेलने से भी ज्यादा जरूरी है प्रशिक्षण के दौरान कड़ी मेहनत. शीर्ष पर लगातार टिके रहना अब काफी कठिन होता जा रहा है."

जिन मैचों में जहांगीर और डिटमर राष्ट्रीय चैंपियन एड्रियन एजरा और पूर्व राष्ट्रीय चैंपियन मेहरबान दारूवाला के विरुद्ध खेले, उनमें भारतीय खिलाड़ियों की कमजोर तैयारी उभरकर सामने आई. डिटमर के शब्दों में, "भारतीय खिलाड़ी अपने देश में शीर्ष पर पहुंच चुके हैं और इससे बेहतर वे तब तक नहीं खेल सकते जब तक विश्व के सर्वोत्तम खिलाड़ियों से उनका सामना न हो." जाहिर है कि अगर भारतीय स्क्वैश को पाकिस्तान के स्तर या सुदूर पूर्व जैसे बेहतर मुकाम तक पहुंचना है तो अभी बहुत कुछ करना होगा.

वैसे अभी की स्थिति में तो भारत उनसे काफी पीछे है. लेकिन खां और डिटमर की यात्रा और खेल टेलीविजन पर दिखाए जाने से जो जागरूकता बढ़ी है उससे काफी सुधार की आशा है शीशे के कई और कोर्ट तैयार होने की प्रक्रिया और बेहतर प्रदर्शन को देखते हुए लगता है, शुरुआत हो चुकी है.

—शिव तनेजा

जहांगीर खां

'अफसोस काहे का!'

जहांगीर खां की पहली भारत यात्रा के मौके पर वरिष्ठ संवाददाता शिव तनेजा ने उनसे बातचीत की. इसके अंश:

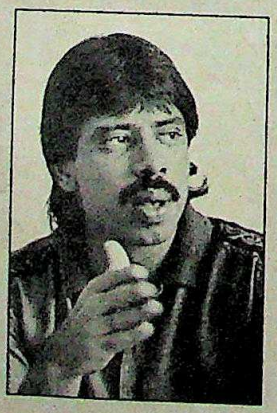

• *खुद आपके और स्क्वैश खेल दोनों के लिए पिछले 10 बरस कैसे रहे?*

खेल का स्तर काफी बेहतर हो गया है. खुद मैं भी खेल के अपने शुरुआती दिनों की तुलना में अब 50 प्रतिशत ज्यादा मेहनत कर रहा हूं.

• *लगातार 500 बार जीत चुकने के बाद आपको 1989 में पहली बार पराजय का मुंह देखना पड़ा.*

इसका मुझे कोई अफसोस नहीं. मुझे मालूम था कि एक-न-एक दिन तो ऐसा होगा ही. अब मेरा इरादा इस साल का ब्रिटिश ओपन जीतने का है. तब स्क्वैश के सारे रिकार्ड टूट जाएंगे.

• *कहा जाता है कि आप स्क्वैश के अब तक के सबसे पूर्ण खिलाड़ी हैं.*

मैं कड़ी मेहनत करता हूं और हरदम जीतने का पक्का इरादा रखता हूं.

• *पिछले कुछ वर्षों में एशिया में स्क्वैश के खेल में क्या विकास हुआ है?*

सुदूर पूर्व के देशों जैसे सिंगापुर और मलेशिया में तो यह खेल काफी चल निकला है लेकिन भारत और पाकिस्तान में वैसी तरक्की नहीं हुई.

• *लेकिन पाकिस्तान में विश्व स्तर के कई खिलाड़ी हुए?*

हमें सरकार और कई संगठनों से सहायता मिली हमने अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत भी की.

• *अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आप भारत के खिलाड़ियों को कहां रखेंगे?*

अफसोस कि वे अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश में शीर्ष तक नहीं पहुंच सकते. उनमें प्रतिभा तो है पर मेरे खयाल से उनको सही ढग से प्रशिक्षण नहीं मिल पा रहा या फिर प्रेरणा की कमी है.

• *स्थिति कैसे सुधारी जाए?*

उन्हें एक उच्च स्तर के प्रशिक्षक की जरूरत है जो उन्हें ठीक से संवार सके. और सबसे जरूरी है कड़ा अनुशासन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्बाध फर्राटा

दौड़ शुरू, गजब रफ्तार पर दमदार कदमों की लयकारी, अन्तिम चरण में विस्फोटक फर्राटा — पहला स्थान, और विजय मंच पर राष्ट्रीय सम्मान की पताका लहराई.

स्टेफी डिसूज़ा, वी॰ अनुसूया बाई, गीता जुत्शी, एंजेल मेरी जोसेफ, एम॰ डी॰ वालसम्मा, वन्दना शानबाग, आशा अग्रवाल, पी॰ टी॰ ऊषा. एम॰ सटन, जी॰ पी॰ भल्ला, गुलज़ारा सिंह, टी॰ आर॰ जोशी, के॰ एल॰ पावेल, जरनैल सिंह, आर॰ ज्ञानशेखरन्, गोपाल सैनी, साबिर अली, राज कुमार, बहादुर प्रसाद और उनके अनेकों साथी.

इनमें से हरेक एथलेटिक सितारे ने पिछले कुछ दशकों में बड़ी शान से रेलवे का प्रतिनिधित्व किया और देश को जीत का सेहरा पहनाया है. उनकी यशस्वी सफलता पुरानी यादों को ताजा करती हैं. उनका दृढ़ संकल्प हमें विजय के शिखरों पर पहुंचाने की प्रेरणा देता है.

क्रीड़ा-जगत में भारतीय रेल का कीर्तिमान अनोखा है. विभिन्न राष्ट्रीय चैम्पियनशिपों में रेलवे हर साल बीस से भी अधिक खिताब जीतती है. "अर्जुन" पुरस्कार से सम्मानित हर चौथा खिलाड़ी रेलवे का प्रतिनिधि होता है. यह प्रतीक है भारतीय रेल के विशाल परिवार के सोलह लाख लोगों की शक्ति, शारीरिक क्षमता और टीम-भावना का.

जी हाँ, भारतीय रेलवे का चिट्ठा अद्वितीय है. एशिया में रेल मार्गों के इस सबसे विस्तृत जाल पर हर रोज एक करोड़ दस लाख लोग सफर करते हैं. हर रोज दस लाख टन माल ढोया जाता है. हर रोज पृथ्वी से चांद की दूरी तय होती है, एक बार नहीं, चार बार. भारतीय रेल का लक्ष्य है बेहतर उत्पादकता और जनता की अधिकाधिक सेवा.

क्रीड़ा-जगत का आदर्श है—**'तीव्रतर, उच्चतर और दृढ़तर'** बनना. भारतीय रेल हर मैदान में इस स्वप्न को साकार बनाने में संलग्न है.

भारतीय रेल
सतत शिखर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-7

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

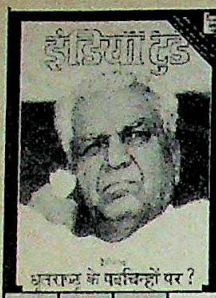

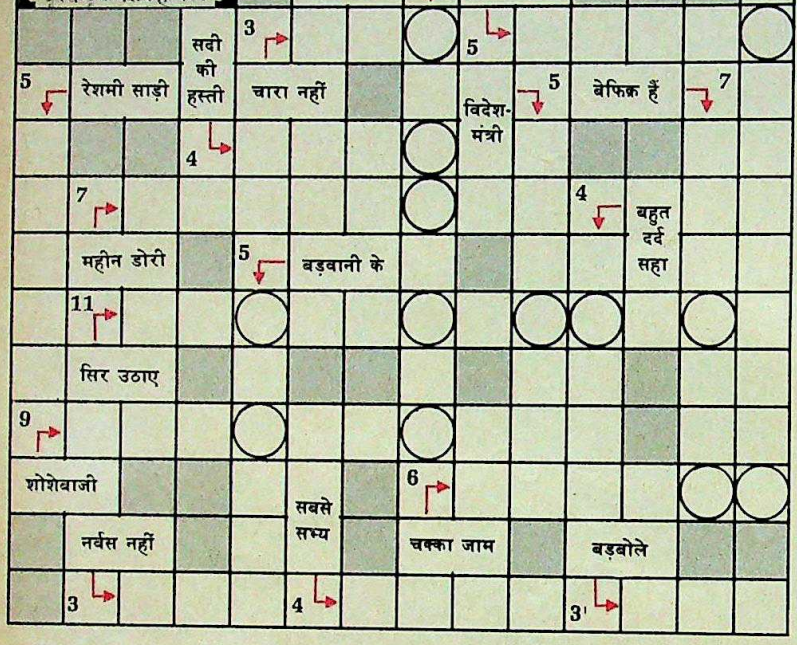

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-7, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 मई 1990

उत्तर के लिए देखें:
16-31 मई 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 15 अप्रैल 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

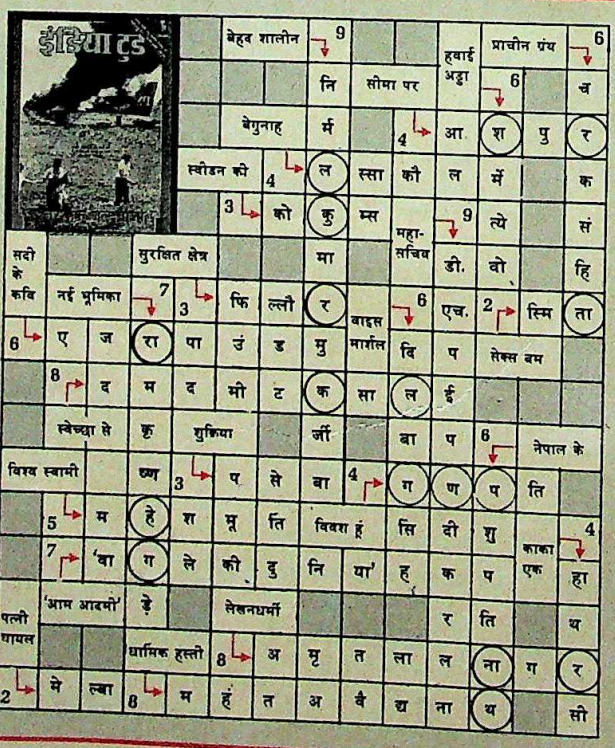

← **इंडिया टुडे वर्ग पहेली-5 का हल**

पुरस्कार विजेता

विनय सिंहल
वी.बी.-79, वीरेंद्र नगर,
नई दिल्ली-110058

मुहम्मद युसुफ छीपा
छीपा अहमद जी करीम जी,
जोधपुरिया पोल के पास,
पाली-306401 (राज.)

संजीव कुमार सिन्हा,
द्वारा—विजय कुमार सिन्हा,
बालिका उच्च
विद्यालय के निकट,
काशीपुर, समस्तीपुर 848101

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What did Madam Tussaud of London say to the Skypak Man?

"Your wax statue could look splendid! But would anyone ever recognize you in a static posture?"

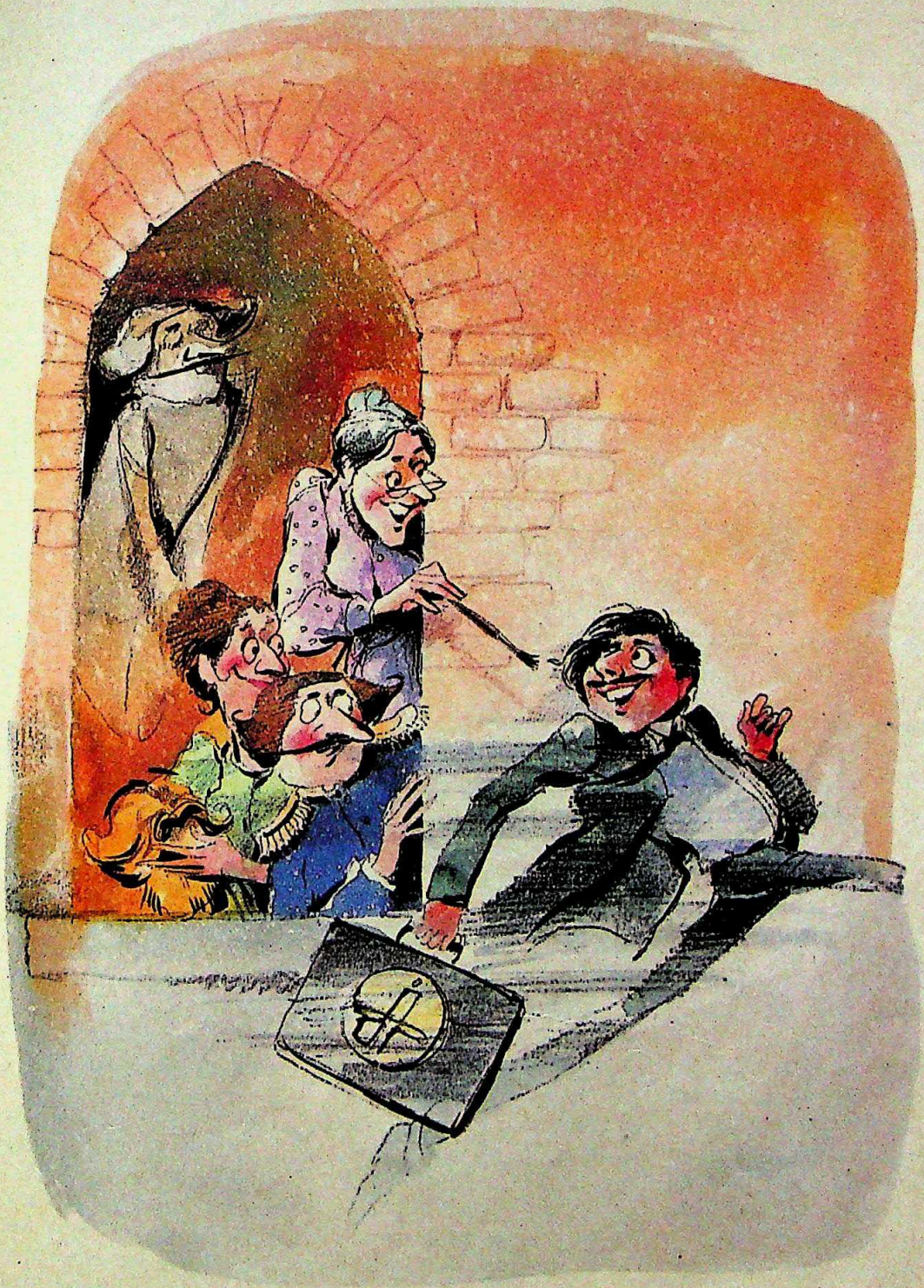

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues:SC:571 90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय टेनिस

वक्त के साथ बदलना जरूरी

दशकों से हमारी आदत किसी एक या कभी-कभार दो खिलाड़ियों पर निर्भर रहने की हो गई है. फिर भी हम भारतीयों के लिए यह संतोष की बात रही है कि हमारे पास एक या दो ऐसे खिलाड़ी रहे हैं जो विश्व टेनिस में खबरों में बने रहते थे. वैसे, अब इसमें भी बदलाव का खतरा पैदा हो गया है. इस संदर्भ में पिछले पखवाड़े चंडीगढ़ मे डेविस कप मुकाबले में जापान पर भारत की जीत उत्साह बढ़ाने वाली रही. यह जीत भारतीय टीम में नौजवानों की भरमार होने के चलते और भी उल्लेखनीय है जबकि जापानी टीम में उनसे अधिक अनुभवी खिलाड़ी थे.

इस युवा मंडली के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें एक, दो या तीन ही नौजवान नहीं, पूरे आठ लोग हैं और उन सबका स्तर करीब-करीब एक-सा है. यह भारतीय टेनिस के भविष्य के लिए शुभ संकेत है. अपने दोनों एकल मैच जीतकर इस प्रतियोगिता में भारत को आगे कर देने वाले 28 वर्षीय वासुदेवन को भले ही उतना नौजवान न माना जाए पर बाकी सभी खिलाड़ी किशोर हैं. या फिर उम्र के इस दौर से अभी-अभी निकले ही हैं.

नए लड़कों की टीम बनाना सही दिशा में उठाया गया हिम्मत भरा और सही कदम है. अब चयनकर्ता खिलाड़ियों को कम-से-कम अच्छी तरह तो जानते हैं—हम यह जानते हैं कि किस परिस्थिति में कौन खिलाड़ी क्या करेगा. मुझे लगता है अब हम एक नई टीम बनाने की ओर अग्रसर हैं.

पिछले साल भड़ौच में दक्षिण कोरिया के हाथों बुरी तरह पिटने के बाद इस साल अगले दौर में सिओल में जून में हम फिर उनसे टकरा रहे हैं. तब जिन भारतीय खिलाड़ियों ने डेविस कप में निराशाजनक

अमृतराज बनाम टेनिस संघ

कीचड़-उछाल

पिछले पखवाड़े चंडीगढ़ में हुए डेविस कप के एशिया-ओसियानिया क्षेत्र ग्रुप-1 के मुकाबले में भारत ने जापान को 4-1 से हराने का गौरव पाया ही था कि भारतीय टेनिस संघ ने दो 'स्मैश शॉट' मारकर इसे अवसाद के क्षणों में बदल दिया. उसने विजय अमृतराज और संघ के पूर्व मानद सचिव पी.एल रेड्डी को कारण बताओ नोटिस पकड़ा दिए.

अमृतराज को दिए नोटिस में छह आरोप हैं जिनमें संघ की अनुमति के बिना पूर्व डेविस कप खिलाड़ी प्रेमजीत लाल के सहायतार्थ मैच आयोजित करना भी शामिल है. संघ ने 20 साल पुराने उस मामले को भी खोद निकाला जिसमें अमेरिकी खिलाड़ी जिम मैकमेनिस की 1970 की आयकर कटौती संबंधी शिकायत पर विजय का अनुमोदन था. संघ के अध्यक्ष नटवर सिंह ने कहा, "हमें सख्ती करनी होगी, वरना दूसरे खिलाड़ी भी ऐसा ही करेंगे."

अगर अमृतराज इन आरोपों का जवाब नहीं देते तो संघ भारत में उनके टेनिस खेलने पर प्रतिबंध लगाने के अलावा अंतरराष्ट्रीय टेनिस संघ से भी उन्हें निलंबित करने का आग्रह कर सकता है. लेकिन विजय कहते हैं, "मैं कीचड़ उछालने के इस खेल में शामिल नहीं होने जा रहा."

रेड्डी के खिलाफ वित्तीय धांधली के आरोप हैं. उन पर मुख्य आरोप 1987 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हुए डेविस कप के दौरान निकाले गए 15,000 डॉलर और जनवरी 1988 में स्वीडन के खिलाफ मैच के समय निकाले गए 10,000 डॉलर के खर्च से जुड़े हैं. लेखा परीक्षकों की रिपोर्ट में कहा गया है, "न तो खर्च का विवरण दिया गया है, न खर्च से जुड़े वाउचर दिए गए हैं." रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि खिलाड़ियों को किए गए कुछ भुगतान के बारे में विदेशी मुद्रा कानून के तहत पूर्व अनुमति भी नहीं ली गई थी. रेड्डी ने संघ को खर्च का हिसाब दिया है लेकिन कोई बिल नहीं दिया है. पर पेशे से चार्टर्ड एकाउंटेंट खन्ना इस हिसाब से संतुष्ट नहीं हैं.

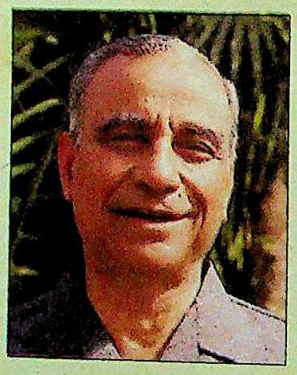

विजय अमृतराज और खन्ना: आरोप-प्रत्यारोप

रेड्डी और संघ के पूर्व मानद कोषाध्यक्ष अनिल जौहर न तो इन दोनों लेखा परीक्षकों को और न मानद कोषाध्यक्ष रमेश देसाई की नियुक्ति को मान्यता देते हैं. जौहर कहते हैं, "वार्षिक आम सभा ही लेखा परीक्षकों को नियुक्त कर सकती है." रेड्डी कहते हैं, "वित्तीय गड़बड़ी के आरोप झूठे हैं." खुद खन्ना बताएं कि वे किसके पैसे पर विंबलडन देखने जाते हैं."

इसी दौरान कलकत्ता बनाम मद्रास का पुराना झगड़ा भी उभर गया लगता है. जापान के खिलाफ मैच से रमेश कृष्णन द्वारा अपने को बाहर रखने को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है.

लेकिन यह लड़ाई भारतीय टेनिस के लिए कोई शुभ संकेत नहीं देती. इस झगड़े में उलझा टेनिस संघ अगले डेविस कप की तैयारी नहीं करा सकता और न ही वह अमृतराज परिवार की तरह युवा खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने की लंबी योजना ही बना सकता है. ब्रिटानिया-अमृतराज टेनिस योजना ने ही रोहित राजपाल और पायस जैसे खिलाड़ी पैदा किए हैं. मामला इतने पर ही नहीं रुका है. रेड्डी अब अदालत का दरवाजा खटखटाने जा रहे हैं और विजय टेनिस संघ से अपने पुराने बकाये की वसूली का काम शुरू कर चुके हैं. और इन सबसे साफ है कि भारतीय टेनिस अभी एक और ऐसे मुकाबले में फंसने जा रहा है जिसमें जीते चाहे कोई, हार उसी की होगी.

—बीनू के. जॉन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९८७ - ८८

रेमण्ड सीमेंट ने हासिल किया सर्वोत्तम ऊर्जा बचत के लिए नेशनल एवॉर्ड.

१९८७ - ८८

रेमण्ड सीमेंट ने हासिल किया गौरवशाली नेशनल प्रोडक्टिविटी एवॉर्ड.

१९८८ - ८९

रेमण्ड सीमेंट ने एक बार फिर जीत लिया!

१९८८-८९ के लिए नेशनल प्रोडक्टिविटी एवॉर्ड.

हमारे सभी कर्मचारियों, विक्रेताओं, वितरकों और संतुष्ट ग्राहकों का हार्दिक आभार! क्योंकि बिना आप सबके सतत सहयोग एवं उत्साह के हमारे लिए ये पुरस्कार जीतना मुश्किल ही नहीं, असंभव था. तो आइए, मिलकर हम एक ही लक्ष्य यानी उत्कृष्टता की खोज का दृढ़ संकल्प करें!

रेमण्ड

सीमेंट वर्क्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरुआत की थी उनके लिए अब अपने चुनाव को सही साबित करने का मौका आ गया है.

अच्छा परिणाम लाने की दृढ़ इच्छा और पहले की गलतियों को सुधारने की क्षमता ही किसी खिलाड़ी के विकास के जरूरी तत्व हैं. चंडीगढ़ में यही देखने को मिला जब रमेश की अनुपस्थिति में जीशान अली को काफी जिम्मेवारियां उठानी पड़ीं. वह इस अग्निपरीक्षा से कुंदन बनकर निकला.

पिछले साल जहां वह डरा-डरा सा और सहमा हुआ रहा, जिससे वह हार गया, इस बार उसका खेल सकारात्मक था. उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ सर्विस की, वॉली लगाई. हां, नेट पर उसका खेल ठीक नहीं था और इस मामले में अभी सुधार की बहुत गुंजाइश है. पिछले करीब साल भर में उसका खेल काफी अच्छी तरह निखरा है.

काफी समय से आत्मविश्वास की कमी के शिकार वासुदेवन ने जापान के नंबर एक शुजो मात्सुओका को धूल चटाकर जापान को करारा झटका दिया. युगल मुकाबला काफी लंबा खिंचा लेकिन जीशान ने डेविस कप की शुरुआत कर रहे किशोर लेंडर पायस के साथ मिलकर भारत को महत्वपूर्ण तीसरा अंक दिलाकर जीत हासिल की. मैच का आखिरी सेट 18-16 तक खिंचा लेकिन जीत भारत की हुई.

कुछ बातें पायस के बारे में. यह 16 वर्षीय किशोर खिलाड़ियों के परिवार से है—पिता विसि हॉकी के जानकारों के लिए अनजान नहीं हैं और मां जेनिफर बास्केटबाल की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी रही हैं. और खुद पायस भारी संभावनाओं वाला टेनिस खिलाड़ी है. उसका शरीर बहुत संतुलित है, ऊर्जा से भरा है और कोर्ट पर उसकी तेजी देखते बनती है. उसे वॉली लगाना पसंद है और ऊंची उठी गेंद पर स्मैश शॉट लेने के लिए वह बहुत बढ़िया ऊपर उछलता है.

ये तो उसके खेल की विशेषताएं हैं. लेकिन कुछ कमियां भी हैं—उसके ग्रांउड शॉट बहुत अच्छे नहीं हैं. लेकिन उसकी कम उम्र को देखते हुए कहा जा सकता है कि उसके प्रशिक्षक उसकी इन कमजोरियों पर ध्यान देते हुए उसे प्रशिक्षित करें तो वह बहुत अच्छा खिलाड़ी बन सकता है.

आधुनिक टेनिस में ग्राउंड शॉट का महत्व बहुत है क्योंकि कृत्रिम मैदान पर सर्विस और वॉली वाला खेल पुराना पड़ चुका है और काफी कुछ दारोमदार

नमो फोटो प्रेस मेघना/नमोनमो

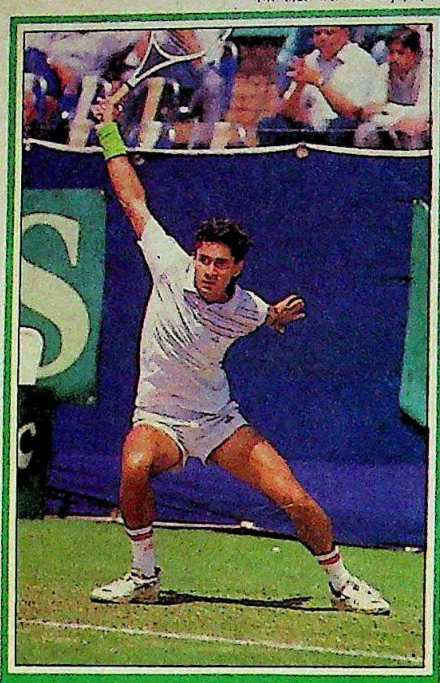

जीशान अली

चंडीगढ़ में जीशान अली और पायस के खेल से भारतीय टेनिस के भविष्य के प्रति उम्मीद जगती है

लेंडर पायस

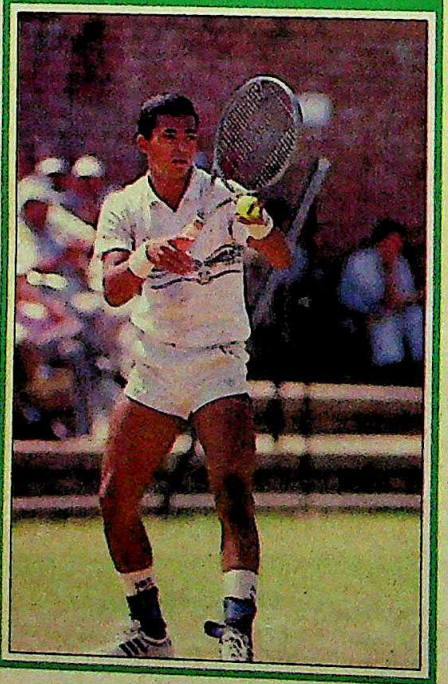

ग्राउंड शॉट पर आ गया है.

मैं भारतीय टेनिस के भविष्य को लेकर निराश नहीं हूं और चंडीगढ़ में हमारे नौजवानों की जीत बहुत आशा जगाती है. जूनियर खिलाड़ियों की यह बहुत अच्छी टोली है.

समय-समय पर इन खिलाड़ियों के आपसी मुकाबले भी कराते रहना चाहिए. भारतीय टेनिस संघ द्वारा आयोजित कैंपों में आठ-आठ खिलाड़ियों के राउंड-रोबिन मुकाबले कराए जा सकते हैं. ऐसे मुकाबले सोमवार से रविवार तक, सातों दिन चलने चाहिए. हर खिलाड़ी को हरेक से खेलना चाहिए. इस तरह के मुकाबलों से वे अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के लिए तैयार हो सकते हैं.

ऐसे प्रतियोगिताओं से अच्छे पुरस्कार और लाभों को जोड़ देने से खिलाड़ी भी आकर्षित होंगे. उन्हें अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी उतारना होगा. खिलाड़ियों को सबसे अधिक ध्यान अपनी एकाग्रता पर देना चाहिए.

साठ और सत्तर के दशक तथा अब के टेनिस में जो एक बड़ा बदलाव आया है वह है खेल मैदान की सतह में. आज खिलाड़ी किसी खास किस्म की सतह वाले मैदान पर खेलने में महारत हासिल करता है. पचास के दशक के ल्यू होड और साठ के दशक के राड लेवर सभी तरह के कोर्ट पर सामान कुशलता से खेल लेते थे. लेकिन आज पैट कैश जैसे खिलाड़ी को देखिए. 1987 में उसने ग्रास कोर्ट पर विंबलडन जीता लेकिन फ्रेंच ओपन के क्ले कोर्ट पर पहले ही राउंड में हार गया. सिंथेटिक कोर्ट पर होने वाले अमेरिकी ओपन के पहले राउंड में भी वह पिट गया. राड लेवर या होड किसी ग्रैंड स्लैम प्रतियोगिता के पहले दौर में हार जाएं उस समय यह करीब-करीब असंभव था.

आज के टेनिस में एक और बदलाव खिलाड़ियों के आपसी रिश्ते में भी आया है. पहले तो दो खिलाड़ी मैदान पर पांच सेट के मुकाबले में एक-एक प्वाइंट के लिए जूझते रहे हों लेकिन वे साथ ही क्लब जाते, खाते-पीते और गप्पें लड़ाते थे. उनके बीच प्रतिद्वंद्विता कम थी यह नहीं कहा जा सकता. आज तो खिलाड़ी आपस में दोस्ती बढ़ाते ही नहीं. ऐसे में चंडीगढ़ के डबल्स मुकाबले में खेल भावना को देखकर हमें आश्चर्यजनक खुशी होती है. लेकिन समय बदलने के साथ टेनिस भी बदला है और जिस खिलाड़ी को ऊपर उठना है उसे भी समयानुसार बदलना ही होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ज़ रफ़्तार
दगी का भरपूर अंदाज़
हिं जहां–पहने वहां
सवाल के शोख़,
चल कपड़े

OSWAL
PREMIUM
SUITINGS

आओ छा जाओ!

रहस्त फ़ेब्रिक्स लिमिटेड उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

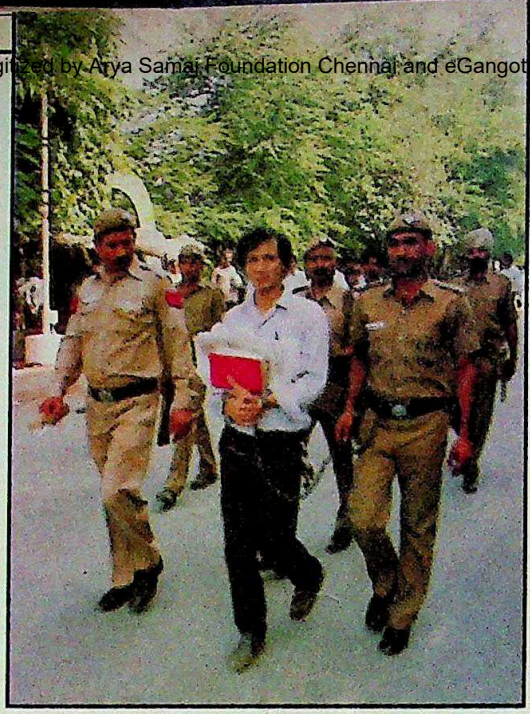

चार्ल्स शोभराज

शातिराना चाल

एक अभियुक्त सरकारी गवाह बना

राजधानी में तिहाड़ जेल की सलाखों के पीछे धूर्त बुद्धि एक बार फिर कुलबुलाने लगी है. पिछले पखवाड़े दिल्ली के सत्र न्यायालय से निकली एक मामूली-सी खबर ने हाल के इतिहास के सबसे चर्चित अपराधी चार्ल्स शोभराज को फिर चर्चा में ला दिया.

इस बार हालांकि जेल तोड़ने, हत्या या बैंक डकैती जैसी कोई बात नहीं हुई. यह एक ऐसा कुटिल षड्यंत्र था जिसका उद्देश्य भारतीय दंड संहिता की लंबी प्रक्रिया का लाभ उठाना रहा.

समाचार था: "डेविड हॉल सरकारी गवाह बनने को तैयार." यह वही हॉल है जिसने 16 मार्च 1986 को शोभराज को तिहाड़ जेल से फरार होने में मदद की थी. नशीली दवाओं के कुख्यात धंधेबाज, ब्रिटेन निवासी हॉल की 'चार्ली' (शोभराज को उसके सहयोगी यही कहकर बुलाते हैं) से भेंट 1985 में तिहाड में ही हुई थी. उस समय हॉल नशीले पदार्थ अधिनियम के तहत जेल में था. बाद में उसे जमानत पर रिहा किया गया. गोवा में शोभराज के साथ गिरफ्तार किए जाने के बाद अब सरकारी गवाह बनने का निर्णय लेकर हॉल ने पूरे मामले को अप्रत्याशित मोड़ दे दिया है.

अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश एच.आर. मल्होत्रा को 26 मार्च को दिए आवेदन में हॉल ने कहा, "मैं अपराध बोध से दब गया हूं. मामले से संबंधित जितनी बातें मुझे निजी तौर पर मालूम हैं, उन्हें मैं विस्तार से ज्यों का त्यों बताना चाहता हूं. बदले में मैं क्षमादान की आशा करता हूं."

वैसे, कोई भी आसानी से यह मानने को तैयार नहीं कि हॉल, जिसे पुलिस और जेल के कर्मचारी पूरी तरह शोभराज का 'पिट्ठू' समझते हैं, पश्चाताप की प्रचंड अग्नि में एकाएक झुलसने लगेगा. उसके एक सहायक के अनुसार, "वह सिर्फ क्षमादान की फिराक में नहीं है. यह आवेदन तो शोभराज के दिमाग की कारस्तानी है. वह मौत के डर से बेजार हो उठा है."

इस बात में दम है क्योंकि थाईलैंड की सरकार के सुपुर्द कर दिए जाने—जहां उसे मृत्युदंड दिया जाएगा—की संभावना होने से इस कदम का फायदा शोभराज को मिलेगा. थाईलैंड के कानूनों के मुताबिक आपराधिक आरोपों के मामलों में जुर्म की तारीख के 20 वर्षों के अंदर हो सजा मिल जानी चाहिए. इस लिहाज से शोभराज की कोशिश 1995 तक भारत में ही रहने की है ताकि उसके बाद थाईलैंड सरकार को सुपुर्द करने का मामला अपने आप ही बेमानी हो जाए.

वकीलों की सर्वसम्मत राय है कि इस तरह के आवेदन से यह मामला और भी पेचीदा और वक्त बरबाद करने का बहाना बनेगा. अगर सरकारी वकील ने हॉल को सरकारी गवाह बनने की बात मान ली तो मामले के 20 दूसरे अभियुक्तों में कई इस इकबालिया बयान के खिलाफ अपील दायर कर देंगे. जेल तोड़कर फरार होने की योजना के लिए धन जुटाने वाले राजेश सेठिया कहते हैं, "मैं इसे अविश्वसनीय बयान कहकर इसका विरोध करूंगा. हमारी सुनवाई ऐसे व्यक्ति की सूचना के आधार पर क्यों हो जो खुद अभियुक्त है?"

हॉल का यह आवेदन खास तौर से इसलिए चौंकाने वाला है क्योंकि सरकारी गवाह बन जाने से उसको कुछ विशेष लाभ नहीं होगा. नशीले पदार्थों की हेराफेरी के जुर्म में हॉल को कुल 10 वर्ष की सजा काटनी है. उसे अभी और 6 वर्षों तक सलाखें गिननी हैं. अगर सरकार उसे क्षमादान दे भी दे, तब भी उसे ढाई वर्ष और जेल में ही बिताने होंगे. हॉल के वकील राजन कहते हैं, "हॉल को क्षमादान मिल जाने की उम्मीद है."

हॉल के इस आवेदन के समय को लेकर भी काफी अटकलें लगाई जा रही हैं. यह आवेदन ठीक उसी दिन दिया गया जबकि सेठिया के विरुद्ध लगे आरोपों के मामले की आखिरी सुनवाई होनी थी. सूत्रों के अनुसार शोभराज और हॉल ने सेठिया को संदेश भेजकर करीब 2 लाख रु. की मांग की. सेठिया ने इस आरोप का खंडन किया है पर यह शोभराज की रु. ऐंठने की चाल लगती है.

पुलिस हॉल के इस कदम से खुश है और उसे सरकारी गवाह बनाने की जी-तोड़ कोशिश में लगी है. वैसे भी हॉल के इकबालिया बयान से पुलिस की दलील मजबूत होगी. पुलिस की अपराध शाखा के उपायुक्त आमोद कंठ मानते हैं कि हॉल संवेदनशील और सृजनात्मक बुद्धि का व्यक्ति है. वह अपनी पत्नी से मिलने की आस संजोए हुए है. लेकिन अगर इसके पीछे शोभराज का हाथ होने का अधिकतर लोगों का संदेह सही है तो उसे अभी और इंतजार करना होगा.

—हरिंदर बवेजा

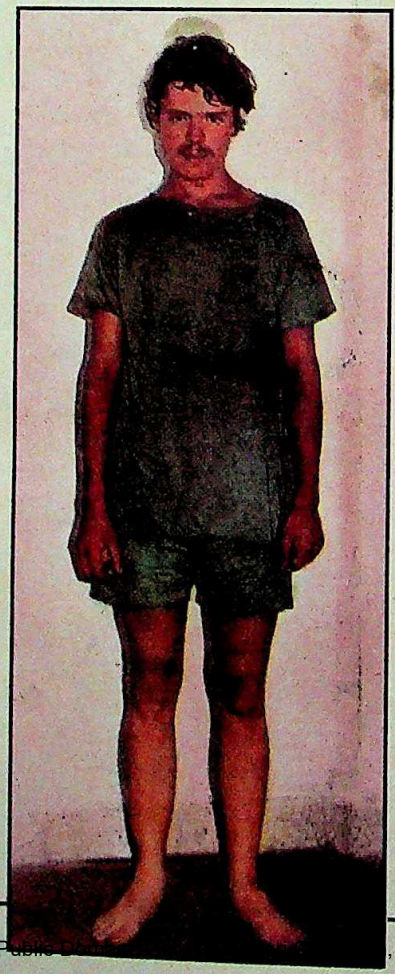

चार्ल्स (ऊपर) और हॉल: कुटिल चाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digi

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड
शार्टिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए, श्रेष्ठता के शिखर पर

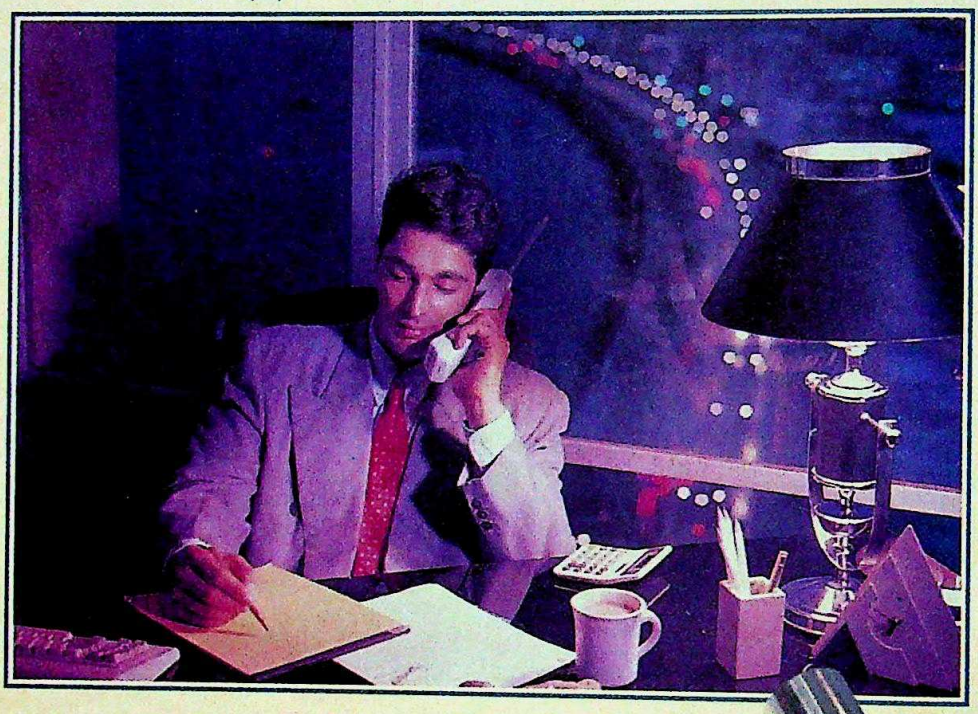

श्रेष्ठता के शिखर पर तो बिरले ही पहुँचते हैं.
जैसे कि आप. और हाँ, ब्लू स्ट्रैटोस भी.
यूरोप की ख़ास खुशबू, जो लिपटी रहे
आपके पहलू से, सारा दिन.

ब्लू स्ट्रैटोस आफ़्टर शेव और कोलोन.
साथ-साथ टाल्क और शेविंग क्रीम
की उत्कृष्ट जोड़ी.

आप की तरह ही, सामान्य से न्यारी.

ब्लू स्ट्रैटोस के साथ श्रेष्ठता का शिखर चूमिए

यूरोप की ख़ास खुशबू, अब आपके लिए भारत में.

Old Spice बनानेवालों की पेशकश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

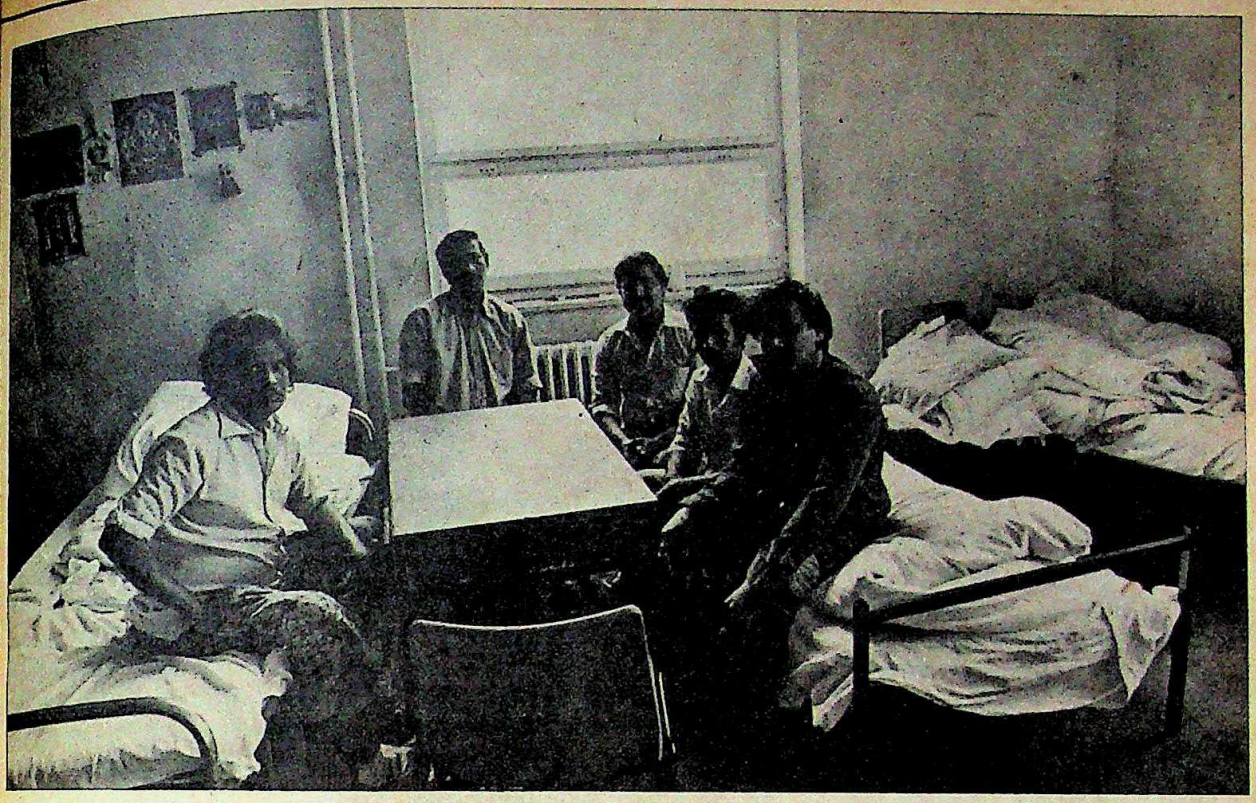

जर्मनी

आप्रवासियों की आशंकाएं

तीसरी दुनिया के शरणार्थियों पर गुस्सा

पश्चिम जर्मनी में रह रहे एक भारतीय ने दूसरे से पूछा, "तुम्हें जर्मनी कैसा लगता है?" दूसरे का जवाब था, "अच्छा तो है पर यहां जर्मनों की भरमार है."

जर्मनी में बसे आप्रवासियों के बीच प्रचलित इस चुटकुले पर अब ठहाके नहीं लगा करते. जर्मनों की बहुलता खतरे का निशान पार करने लगी है. पूर्वी जर्मनी और पूर्वी यूरोप के दूसरे देशों से यहां इतने लोग आने लगे हैं कि प. जर्मनी के निवासी डर गए हैं.

यहां रह रहे विदेशी लोग भी इस नए माहौल से आशंकित हैं. उन्हें लगता है कि अगर पश्चिम जर्मनी के लोगों में इस घुसपैठ के खिलाफ गुस्सा उभरा तो उनका पहला निशाना शायद गैर-जर्मन लोग ही बनें.

कानूनन शरणार्थी का दर्जा पाने की कोशिश में अनेक मुकदमे हारने से खीझे हुए मनिंदर सिंह ढिल्लों कहते हैं, "मैं यहां शरण लेने के लिए चार साल पहले भारत से आया था." यहां रुकने में अब उनकी दिलचस्पी नहीं रह गई है. उनका मानना है कि तीसरी दुनिया के शरणार्थियों के प्रति जर्मनों का रुख कठोर होता जा रहा है. श्रीलंका के एक तमिल, विजयमूर्ति (जिनकी शरणार्थी बनने की अर्जी ठुकरा दी गई है) तल्खी से कहते हैं, "कहीं भी चले जाइए—बेकरी में, फलों की दुकान पर, हज्जाम के यहां, हर जगह यही उग्रता दिखाई देती है."

बर्लिन में शरणार्थी; और (बाएं) शोनहुबर

विश्वयुद्ध के दौरान नाजियों के द्वारा की गई हत्याओं से जर्मनी के दामन पर जो दाग लगे थे, उन्हें धोने के लिए युद्ध बाद के जर्मन संविधान में कई उदार प्रावधान रखे गए थे. इनमें किसी भी विदेशी द्वारा राजनैतिक, धार्मिक, जातीय हिंसा से बचने के लिए जर्मनी में शरण लेने का प्रावधान भी रखा गया. इस प्रावधान को समाप्त करने की लगातार मांग उठती रही है. कहा जाता है कि राजनैतिक दमन का बहाना बनाकर 'आर्थिक शरणार्थी' यहां भरते जा रहे हैं.

विदेशी मजदूरों को भी स्थानीय लोगों के उग्र व्यवहार से शिकायत है. 15 वर्षों से यहां एक अस्पताल में नर्स का काम करने वाली सरस्वती गुंडप्पा कहती हैं, "सामान्य जर्मन नागरिक को यह कैसे समझाया जाए कि मैं यहां शरण मांगने नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई बल्कि देश के कायदे-कानून मानने और कर देने वाली नागरिक हूं."

और इसी माहौल के चलते रिपब्लिकन पार्टी जैसे दक्षिणपंथी दलों की बन आई है. फ्रांस वगैरह में इस तरह के आंदोलन पहले ही जोर पकड़ चुके हैं. संसद के पिछले चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी को, जिसका नेतृत्व 66 वर्षीय फ्रैंज शोनहुबर करते हैं, औसतन 10 फीसदी वोट मिले थे. उनकी इस सफलता से स्थापित पार्टियों पर भी आव्रजन कानून में और सख्ती लाने के लिए राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ा है.

अमेरिका और ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय तो संगठित हैं लेकिन यहां ऐसा नहीं है. ये आप्रवासी वीसा देने वाले अधिकारियों द्वारा अपमानित होते रहते हैं. स्टुटगार्ट में बस गए आप्रवासी भारतीय द्वारकेश शाह एक ट्रेडिंग कंपनी चलाते हैं. वे बताते हैं कि डसेलडोर्फ में आयोजित के '89 प्लास्टिक और रबर मेले में वे एक भारतीय को न्यौता देना चाहते थे तो कैसे उसे वीसा लेने में परेशानी हुई. वे कहते हैं, "आखिर-कार मुझे एक जर्मन सांसद से इस मामले में हस्तक्षेप करने को कहना पड़ा.

निस्संदेह जर्मनी ने वास्तविक लोकतंत्र के आदर्शों को पाने की दिशा में तेजी से प्रगति की है. लेकिन विदेशियों को लगता है कि कानूनों की मनमानी व्याख्या भी होती है. चर्च के लोग भी विदेशियों के प्रति उदारता दिखाने के पक्षधर हैं और देश की अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को मानते हैं. उनका कहना है अल्पसंख्यकों के प्रति व्यवहार और सहनशीलता से ही देश के लोकतंत्र की परीक्षा होती है.

—मानिक मेहता, बॉन

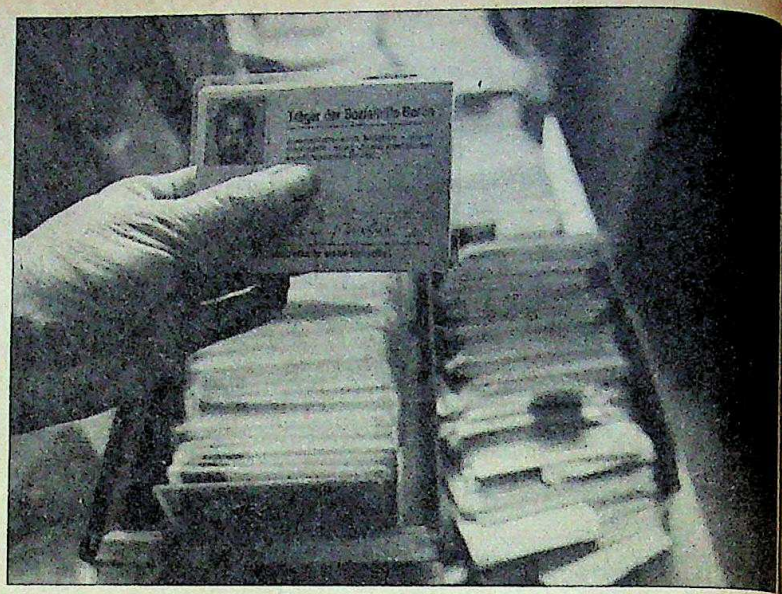

आप्रवासियों के परिचयपत्र

पूर्वी बर्लिन

नस्लवाद का दौर

आउसलैंडर राउस! (विदेशियो, दफा हो जाओ!)—यह मांग अब जोर पकड़ने लगी है. पूर्वी यूरोप के स्वतंत्र चुनावों के बाद जर्मनी के पुनः-एकीकरण की मांग उठते ही बर्लिन की दीवार के दोनों ओर रहने वाले विदेशियों के लिए संकट के बादल घुमड़ते दिख रहे हैं.

पूर्वी जर्मनी में लोकतंत्र के साथ ही नस्लवाद का दौर भी आ गया है. आज खास तौर से वियतनामी और अफ्रीकी लोगों से जुड़े नस्लवादी चुटकुले धड़ल्ले से सुने जा सकते हैं. उपनगरीय रेलों में गाली भरी टिप्पणियां भी सुनाई देती हैं. पूर्वी बर्लिन में रहने वाले और प्रसिद्ध हुमबोल्ट विश्वविद्यालय में पढ़ रहे 23 वर्षीय लियोनोर कहते हैं, "मेरे कुछ विदेशी दोस्तों का कहना है कि रात में गलियों में निकलने में उन्हें डर लगता है. विदेशियों और पूर्वी-जर्मन लोगों के बीच मारपीट की कुछ घटनाएं भी हुई हैं." जर्मन भाषा और साहित्य का अध्ययन कर रहे रूसी छात्र जुबोव क्रिजुचीना का कहना है कि सोवियत सेना के प्रति उपजा गुस्सा अब रूसी छात्रों पर भी उतरने लगा है. भारतीय मूल के तंजानियाई छात्र हरशद राय रावल भी पूर्वी बर्लिन में रहने वाले दूसरे विदेशी छात्रों की बातों का समर्थन करते हैं.

मारपीट और गाली-गलौज की बात छोड़ भी दें तो पूर्वी जर्मनी में पढ़ रहे 11,000 विदेशी छात्रों के भविष्य को लेकर भी काफी बेचैनी है. इनमें तीसरी दुनिया और कम्युनिस्ट देशों से आए अधिकांश छात्र पूर्वी जर्मनी सरकार की छात्रवृत्ति पर पढ़ रहे हैं. हुमबोल्ट विश्वविद्यालय के कैफे में बैठे अफ्रीकी, एशियाई और लातिनी अमेरिकी छात्र अपने भविष्य पर विचार कर रहे हैं.

कांस्टेटिनो उन 85,000 विदेशी मजदूरों में से हैं जो पूर्वी जर्मनी में काम कर रहे हैं. इनमें 60,000 वियतनामी, 15,000 अंगोलाई और 10,000 क्यूबाई हैं. अधिकांश मजदूर पांच साल के अनुबंध पर हैं. आज इनका भविष्य अंधकारमय है. बदलाव के क्रम में मुक्त व्यापार के लिए तैयार हो रही कंपनियों में लगे मजदूरों को अपने-अपने देश लौटा दिए जाने का डर है. सैक्सनी क्षेत्र के बिशप बेर्डा की एक फैक्टरी के पूर्वी जर्मन मजदूरों ने हाल में ही अपने प्रबंधकों को धमकी दी कि अगर वे अश्वेत मजदूरों को उनके देश वापस नहीं भेजेंगे तो वे लोग हड़ताल कर देंगे.

बढ़ते जातिद्वेष से डरे विदेशी लोग एकजुट हुए हैं. पूर्वी जर्मनी की इंडियन एसोसिएशन के अध्यक्ष महेश झा कहते हैं, "नियम-कानून, मुद्रा, सामाजिक व्यवस्था यानी हर चीज बदलती जा रही है. विदेशी होना अभिशाप हो गया है. अगर हम अपने अधिकारों की मांग नहीं करते या उन पर जोर नहीं देते तो हम पीछे छूट जाएंगे." पूर्वी बर्लिन (सरकारी) रेडियो की हिंदी सेवा में काम कर रहे झा कौंसिल ऑफ फारेनर्स एसोसिएशंस के प्रवक्ता भी हैं. विदेशी लोगों के 60 संगठनों को मिलाकर बनी इस कौंसिल का मकसद दबाव डालना ही है. यह अब पंजीकृत भी होने जा रही है.

इस संगठन ने विदेशियों से संबंधित आयोग बनाने की बातचीत के लिए सरकार विपक्षी दलों का गोलमेज सम्मेलन कराने में सफलता हासिल की है. इस आयोग ने उन कुछ वियतनामी मजदूरों की रक्षा की, जिन्हें 400 ईस्ट मार्क से कम की नौकरी करने या देश से चले जाने की धमकी दी गई थी.

लेकिन यह आयोग भी जर्मन उग्र राष्ट्रवाद और उच्छृंखलता का मुकाबला कर पाएगा, इसमें संदेह ही लगता है.

—पत्रलेखा चटर्जी, पूर्वी बर्लिन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व

फीका पकवान

गुड़ गोबर करने की कला

बिमल राय पर किताब हो, रिंकी भट्टाचार्य लेखिका हों, श्रीराम तिवारी एक प्रमुख अनुवादक-संपादक हों तथा यह मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम द्वारा प्रकाशित हो तो ऐसी किताब को तुरंत हाथ में लेने का मन होता ही है. लेकिन किताब पढ़ने के बाद पहली प्रतिक्रिया यही होती है कि इसका प्रकाशन ठीक से नहीं हुआ है.

बिमल राय
व्यक्तित्व
सं: रिंकी भट्टाचार्य
मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम, भोपाल
कुल पृष्ठ: 144
कीमत: पेपरबैक: 45 रु.
सजिल्द: 60 रु.

शिकायत लेखिका और विषय से नहीं, प्रस्तुति से ही है. अपने विख्यात पिता के जीवन, उनकी कला, उनके व्यक्तित्व, उनके सोच, उनके दृष्टिकोण पर रिंकी भट्टाचार्य जितने कोणों से प्रकाश डलवा सकती थीं, उन्होंने किया है. खुद लिखा है, मां से लिखवाया है, उनके सहयोगियों से लिखवाया है, फिल्म के विशेषज्ञों का इंटरव्यू किया है, बिमल राय से जुड़े कुछ पुराने लेख, समीक्षाएं दी हैं, उनकी फिल्मों की कहानियां दी हैं, खुद बिमल राय के कुछ भाषणों को छापा है.

बिमल राय का हिंदी फिल्मों में क्या स्थान है यह बताने की जरूरत नहीं है. कई लोग (जिनमें ऋत्विक घटक जैसे शोर मचाने वाले) मानते हैं कि 'दो बीघा जमीन' जैसी यथार्थवादी फिल्म बनाने वाले बिमल राय शुद्ध मुनाफे के लिए भूत के प्रेम वाली कहानी पर 'मधुमती' बनाकर भ्रष्ट हो गए. पर दोनों ही तरह की फिल्मों को सफल कर लेना बिमल राय की इस माध्यम पर पकड़ बताती है. पर इस बदलाव को बी.के. करंजिया जैसे जानकार ने सही रूप में पेश किया है.

करीब डेढ़ सौ पृष्ठों की इस किताब के वे अंश सबसे अच्छे हैं जिनमें तपन सिन्हा, प्रेमेंद्र मित्र, सत्यजित राय, दिलीप कुमार, शशि कपूर, नवेंदु घोष जैसे उनके सहयोगी, सहकर्मी और समकालीन उन्हें, उनकी कला, उनके तौर-तरीकों को याद करते हैं. संस्मरण-मूल्यांकन वाले ये छोटे-से टुकड़े बहुत ही अच्छे हैं—खास तौर से तपन सिन्हा वाले दो टुकड़े.

लेकिन उनके साथ कभी काम न करने के बावजूद प्रसिद्ध फिल्म निदेशक श्याम बेनेगल ने उनकी फिल्मों, उनके सोच और उनकी तकनीक के बारे में इतने विस्तार और बारीकी से एक-एक बात कही है कि इस इंटरव्यू को पढ़ने के बाद सिर्फ बिमल राय ही नहीं, श्याम बेनेगल के ज्ञान के प्रति भी श्रद्धा उमड़ पड़ती है.

पर इसे पढ़कर समझ लेना आसान नहीं है. एक तो बहुत ही तकनीकी बातें कही गई हैं और दूसरे बहुत ही भ्रष्ट अनुवाद किया गया है. जिस सज्जन ने यह अनुवाद किया है उन्होंने फिल्म निर्माण की कौन कहे, फिल्म देखने का काम भी किया हो और उस पर गौर किया हो, ऐसा नहीं लगता.

जितनी बुरी हालत अनुवाद की है उससे भी बुरी हालत प्रूफ की है. इस किताब को पढ़ते समय बार-बार साहित्य अकादमी द्वारा 'भारतीय साहित्य के निर्माता' शृंखला की किताबें याद आ रही थीं. बढ़िया लिखी, छनी ये किताबें मात्र चार और पांच रुपए में ही मिलती हैं जबकि यह किताब 45 रुपए की है.

—अरविंद मोहन

रचना संकलन

गीतार्थी का लोक

सत्यार्थी की सही समझ

असली नाम देव इंदर बत्ता, बदलकर रख लिया—देवेंद्र सत्यार्थी. लेकिन होना चाहिए था लोकगीतार्थी क्योंकि इस कालजयी साहित्यकार के जीवन का ध्येय लोकगीत इकट्ठे करना है. पांच लाख इकट्ठे कर चुके हैं, लेकिन मन नहीं भरा. कहां-कहां भटके, किसानों के साथ किसान और बंजारों के साथ बंजारे बने, इसका कोई हिसाब नहीं.

देवेंद्र सत्यार्थी की चुनी हुई रचनाएं
रचना संकलन
संपादक: प्रकाश मनु
लोक प्रकाशन, दिल्ली-110006
मूल्य: 200 रु.
कुल पृष्ठ: 272

81वां वर्ष पूरा होने को आया इस खानाबदोश साहित्यकार की जीवन यात्रा का, लेकिन अभी लिखे जा रहे हैं. सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले सत्यार्थी की हिंदी, उर्दू, और पंजाबी में पचास के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. लोकगीतों के संग्रह, कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, आत्मकथा, यात्रा संस्मरण और जाने क्या-क्या संपादन के साथ उन्होंने कई अनुवाद भी किए. कोई विधा ऐसी नहीं जो अछूती बची हो.

लोकगीतों में 'धरती गाती है', 'धीरे बहो गंगा', 'बाजत आवे ढोल', पंजाबी में 'गिद्धा', 'दीवा बले सारी रात', अंग्रेजी में 'मीट माई पीपुल'. कहानी संग्रह ग्यारह हैं: 'चट्टान से पूछ लो' (1950) से 'पेरिस दा आदमी' (1970) तक. निबंध संग्रहों में 'एक युग, एक प्रतीक' से लेकर 'कला के हस्ताक्षर' तक चार पुस्तकें हैं. उपन्यासों में 'रथ के पहिए' से लेकर 'सुई बाजार' तक आठ गिनवाए जा सकते हैं. इसके अतिरिक्त संपादन और अनुवाद भी बहुत किए हैं—हिंदी से पंजाबी, ओड़िया से पंजाबी, बंगला से पंजाबी, और जाने क्या-क्या.

लोक प्रकाशन की यह पुस्तक उनके संकलन से कुछ अधिक है. प्रकाश मनु ने सत्यार्थी की रचनाओं का चुनाव करने के साथ-साथ उनके जीवन का परिचय दिया है. उससे भी अधिक है सत्यार्थी का व्यक्तित्व, जो मनु और उनकी मुलाकातों के वर्णन में झलकता है. आज के युग में जब प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा है और साहित्यकार एक-दूसरे की टांग खींचने, महंत बनकर बैठ जाने और अपनी-अपनी डफली बजाने में ही अपने जीवन की इतिश्री मानते हैं, सत्यार्थी जैसे व्यक्ति विरले ही मिलेंगे. दो रंगों की दुनिया में अजनबी सत्यार्थी भीतर से, बाहर से एक और स्पष्टवादी हैं.

यह संकलन एक प्रतिनिधि संकलन कहा जा सकता है. आज की पीढ़ी चाहे इसे समसामयिक न माने लेकिन यह पिछली पीढ़ी का परिचय अवश्य है. इसी दृष्टि से इसकी उपादेयता है.

सत्यार्थी जी की अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं के साथ-साथ संकलन में महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, और राम नरेश त्रिपाठी के ऐतिहासिक महत्व के पत्र भी हैं, जिनसे सत्यार्थी के लिए इन महानुभावों का अपार प्रेम झलकता है. अमृता प्रीतम, साहिर लुधियानवी और अन्य प्रसिद्ध साहित्यकारों और कवियों के लेख भी हैं जिनमें सत्यार्थी के व्यक्तित्व के अनछुए पहलू उभारे गए हैं. प्रकाश मनु की लंबी भूमिका अपने आप में एक उपन्यास जैसी है.

—धर्मपाल पांडे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

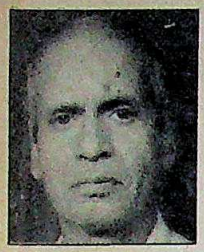

विवेकी राय

सन्नाटा

'सोना माटी', 'समर शेष है' जैसे उपन्यासों और 'चित्रकूट के घाट पर', 'बेटे की बिक्री' जैसे कहानी के रचनाकार विवेकी राय की कलम आंचलिकता की खास मिठास लिये हुए है. प्रस्तुत कहानी में भी जीवन को कथित सादगी का जामा पहनाने वाली पेचीदा मानसिकता को रोचक ढंग से उघाड़ा ग

चढ़ते चैत के महीने में सुबह वाली नरम, मुलायम धूप जब कड़ी पड़ जाती है तो ऐसी दोपहरी में एक चमचमाता सन्नाटा गांव की गलियों में भर जाता है. एक दिन ऐसे ही सन्नाटे को किसी की थरथराती रुलाई ने कंपन भरी हलचल में डाल दिया.

ऐसी रुलाई का संबंध तो सिर्फ मौत से होता है और मौत कितनी भयानक चीज होती है? जिसने भी सुना, घर से बाहर निकल आया.

वैसे, बाहर निकल आने वाले गांव में थे ही कितने? कटनी जोरों पर चल रही थी. किसान-मजदूर सुबह ही कुछ खा-पीकर खेतों की ओर निकल गए थे. रह गई थीं बड़े घरों की औरतें, बच्चे और कुछ थोड़े से अन्य लोग. सो, इनकी भारी भीड़ का कोलाहल उस करुण रुदन के इर्दगिर्द उठता चल रहा था और इस हाय-हाय से वातावरण का दर्द और बढ़ता जा रहा था. कौन किसी जान का गाहक बन बैठा? कहीं कोई मारपीट या खून-खराबा तो नहीं हो गया?

फागुन-चैत में अक्सर ऐसा होता है कि डांड़-मेढ़ पर मुट्ठी-दो-मुट्ठी पकी फसल के लिए भी लाठियां बज जाती हैं. आजकल के लोगों को क्रोध बहुत जल्दी आ जाता है. फिर, आदमी क्रोध में क्या नहीं कर देता है? तब, हे भगवान, कहां किसके सिर से आसमानी नागहानी गुजरी?

मैं छत पर जाकर गली की ओर देखने लगा. भारी भागमभाग मची थी. ऐसी एक-तरफा भागमभाग तो तब दीखती है जब कोई बारात बाहर से दुमेला खतम होने के बाद द्वारपूजा के लिए गांव में प्रवेश करती है. और भीड़ का रुख किसी मंगल चौक पूरे द्वार की ओर होता है. लेकिन, आज का तो यह माहौल ही कुछ और है? किसके द्वार पर जाकर रुकेगी यह अमंगल मूल भीड़?

ध्यान से देखने के बाद भी यह पता नहीं चल सका कि वह लगातार रोते-कलपते जाने वाला कौन है? शायद वह आगे निकल गया था. आवाज उसकी अब भी कानों से टकरा रही थी. सामने रमेश के द्वार पर बाबू घराने की औरतें गोल बनाकर, उखड़ी, उदास, आतंकित मुद्रा में बातें कर रही थीं. लेकिन, ऊपर छत पर से उनकी बातें सुनी नहीं जा सकती थीं.

सामने से आने वालों का तांता अब भी लगा था. उनकी बातों से भी मामला कुछ साफ नहीं होता था. दौड़ते-हांफते में मुंह से निकली बातें साफ होती भी कहां हैं? सिर्फ एक शब्द 'मर गया' अब तक स्पष्ट रूप से पकड़ में आया था और उसके पीछे 'कौन' की मंडराती दहशत बेचैन किए जा रही थी.

कितना बुरा है किसी का इस प्रकार मर जाना कि मरने के पीछे एक भारी हंगामा उठकर चल पड़े! जरूर कोई भारी हादसा है. पता नहीं इस मुहल्ले का कौन किसी दुर्भाग्य-चक्र में फंसा? किसके घर का चिराग गुल हुआ? किस परिवार पर बज्रपात हुआ? मैं छत से उतर आया.

नीचे जाकर देखा, कुलदीप के घर के सामने भीड़ डटी है. लगा, मामला इसी परिवार से संबंधित है. मगर, यह मामला क्या है, कैसा है, इसका जवाब भीड़ लगाने वाले ठीक से नहीं जानते थे. भीतर जाना लगभग असंभव था. रास्ता और सामने का सहन लोगों से ठसाठस भरा था. रंग-उखड़ी-पखड़ी और संदर्भ-शून्य बातों भनाहट ऊपर तैर रही थी. लगता, का बिसार लोग परम फुरसत में है.

भीड़ को देखकर लगा, लोग कि सहानुभूति में या पक्ष-विपक्ष में अथवा की मदद में नहीं, सिर्फ तमाशे में खड़े मानसिकता भी अजीब है कि कोई पीट-पीटकर रो रहा है और औरों तमाशा बना है. औरतों के चेहरों की

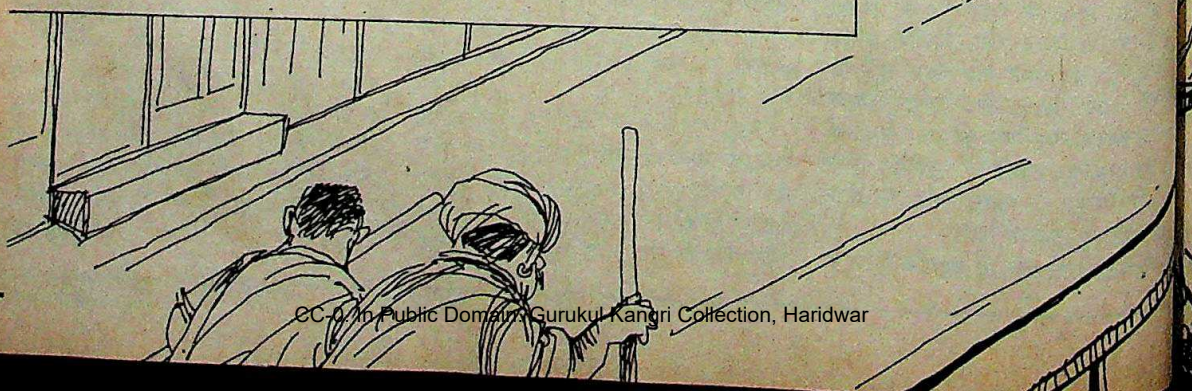

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वश्य भिन्नता है मगर वे भीड़ के बाहर हैं, या हुआ' के करुण कौतूहल में डूबी हैं. बहुत ठिनाई से अनेक मुंह की बातों को जोड़-टोरकर घटना का सूत्र हाथ लगा कि किसी टुआ का मात्र बीस दिन पूर्व का जन्मा च्चा कहीं खेत में कुलदीप की लाठी से चोट ाकर मर गया है और इसी बात पर नेटुओं का दल उनके द्वार पर आकर जम गया है. किसलिए जम गया है, पता नहीं. भीड़ के ाहर केवल एक की रुलाई भर सुनाई पड़ती —आह रे मुनवा!

भीड़ पार करना कठिन था परंतु किसी-किसी तरह उसे चीरता मैं उस व्यक्ति के पास पहुंच जाना चाहता था जो 'आह —आह रे—आह रे मुनवा' करके रुदन करता जा रहा था. अचानक यह कठिन काम ब आसान हो गया जब एक ऊंचे डील-डौल का हट्टा-कट्टा अधेड़-उम्री नेटुआ हाथ में लाठी लिये भीड़ में घुस पड़ा. लेकिन बहुत ोर लगाने पर भी उस क्षुब्ध नेटुआ के साथ अहाते के भीतर नहीं घुस सका और प्रवेश ार पर ही अटक गया.

प्रवेश द्वार से कुछ हटकर देखा, एक पचीस-तीस वर्ष का गोरा-चिट्टा स्वस्थ नेटुआ नंग-धड़ंग, पसरकर बैठे हुए, आंखें बंद किए, गरदन उचका-उचकाकर तथा दोनों हाथों से छाती पीट-पीटकर रो रहा था. मैंने जाना, यह वही व्यक्ति है जिसकी रुलाई गली में गूंज रही थी और जिसके पीछे भीड़ यहां तक चली आई थी. एक सांवले रंग की नेटुआ-पुत्री

अनेक मुंह की बातों को जोड़-बटोरकर घटना का सूत्र हाथ लगा कि किसी नेटुआ का मात्र बीस दिन पूर्व का जन्मा बच्चा कहीं खेत में कुलदीप की लाठी से चोट खाकर मर गया है और इसी बात पर नेटुओं का दल उनके द्वार पर आकर जम गया है

उसे संभाल रही थी और अपनी भाषा में उसे सांत्वना दिए जा रही थी. नौजवान दोनों हाथों से छाती के साथ धरती को भी पीटता था और जब भी वह धरती पीटता, बेहोश होने लगता. ऐसे में युवती उसे गिरने से संभालती और नाक दबा होश में ले आती थी. इसके साथ ही वह बच्चे के हत्यारे को शाप भी दिए जाती थी—"उसे कीड़े पड़ें, उसे भगवान का बान लगे, माता मइया चपोट लें."

बीच-बीच में युवती लोगों से जल की याचना करती जिसे लोग सुन भर लेते. कोई पानी के लिए नहीं हिलता. लगता, लोग समझते हैं कि उधर पानी लाने गए और इधर कहीं तमाशे में कोई बढ़िया खेल निकल न जाए. अर्थात वह रुलाई एक तमाशा बनी थी. गरीब की रुलाई और कुछ होती क्या? किसी-किसी तरह तो पुरोहित जी के लड़के को दया आई किंतु जब वह पानी लेकर आया तो उसके हावभाव से लगा, दया नहीं, उसके भीतर कुछ और माया उमड़ आई थी.

पंडित-पुत्र ने एकदम उसके कान के पास सटकर कहा, "बहुत मुश्किल से पानी आया है बचिया—और जरूरत हो तो कहना" और कुछ लोगों को मुस्कराते देख लजाकर हट गया.

युवती पानी चुल्लू में ले-लेकर उसे पिलाने का प्रयत्न करने लगी. वह उसके सिर और आंखों पर छींटा भी देती. पानी ने युवक की रुलाई को तेज कर दिया. अचानक वह कांपकर जमीन पर लोटने लगा और बेहोश पड़ गया.

पंडित-पुत्र मदन चिल्ला उठा, "भीड़ हटाओ—हवा दो—!" उसने युवती का हाथ पकड़ झकझोरते हुए कहा, "देखती क्या हो, नाक दबाओ."

"हाय हमार भइया—हाय रे मुनवा—" नाक दबाए-दबाए चिल्ला रही थी नेटुआ-पुत्री और गमछे से हवा हांक रहा था पंडित-पुत्र.

उसी समय अहाते के भीतर एक जबरदस्त हल्ला हुआ. कुछ नेटुआ लाठी से पीटकर कुलदीप का दरवाज तोड़ रहे थे और चिल्ला रहे थे, "कहां छिपा है हत्यारा मालिक उसे बुलाओ, उसे बाहर करो!"

लेकिन मालिक मकान—भीतर कहां था? फिर क्या करेंगे वे मालिक को पाकर? क्या मुआवजा मांगेंगे?—मौत का मुआवजा?—पैसा? वे मांग सकते हैं. शायद इसीलिए मृत बच्चे और उसके बाद से अधिक उनकी चिंता उस एक हत्यारे मालिक की है. कहां है वह? वह सामने आए. निकाले कुछ कागज के टुकड़े ताकि यह मौत का घहराया ग़म थमे, रुलाई रुके और हंगामा विदा हो!

—लेकिन क्या मुआवजा इस प्रकार बलपूर्वक दरवाजा तोड़कर लेंगे? कहां से आ गया यह बल? असली बल है या दिखावटी?

—असली भी हो सकता है. संभव है, अपने पूरे कुनबे के साथ, भैंसों पर मुर्गियों सहित, पूरी गृहस्थी का सामान लादे, कहीं बगीचे में चंद दिनों के लिए डेरा डालने वाले, मधु, जड़ी बूटी और बाई आदि को दवाएं बेचने वाले, कटनी के दिनों में खेत-खेत दो मुट्ठी पकी फसल के लिए गिड़गिड़ाते याचना करने वाले, अति दीन-हीन घुमंतू बंजारों के भीतर शिशु की इस दारुण मौत पर भीतर का असली बल जिसे आत्मसम्मान कहते हैं,

सभी रेखाचित्र : जयंतो

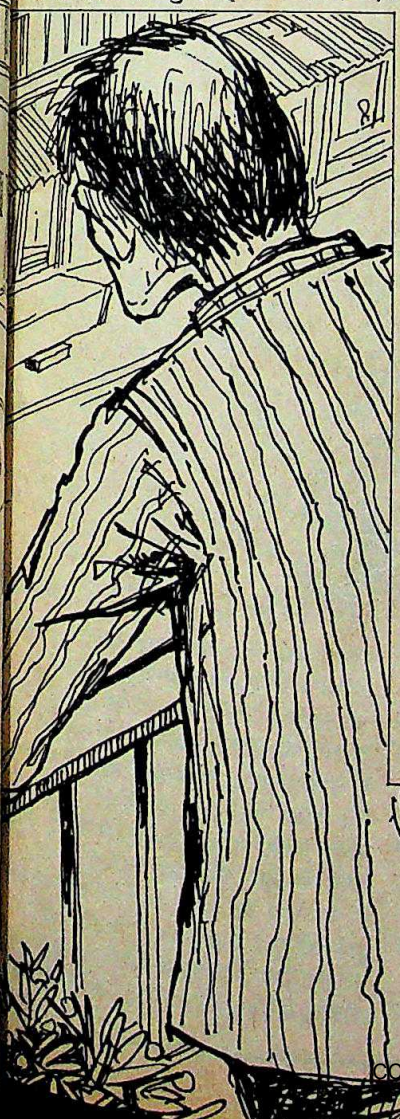

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाग गया हो!

—लेकिन असली होता तो ऐसा हट्टा-कट्टा जवान पिता इस प्रकार छाती फाड़-फाड़कर सिर्फ रोता क्यों? इन लोगों का आत्मसम्मान तो बचपन से कुचलते-कुचलते पूरी तरह नष्ट हो जाता है! तो, फिर यह सब क्या है?

मेरा मन ऊहापोह में फंस गया. उसके आगे एक कटते खेत का दृश्य उभर आया. अपने संग वालों से छिटककर एक जवान नेटुआइन अपने शिशु को गोद में लिये कुलदीप के खेत में पहुंचती है. बच्चे को दिखाते हुए भरपूर मुस्कानपूर्ण कटाक्ष फेंक अन्नयाचना करती है. कुलदीप झिड़ककर खदेड़ देता है. तब वह विलास की सहज नाट्य-मुद्रा में पैर पटकती हुई तथा गरदन मोड़ पुनः मुस्कान फेंकती मजदूरों के बीच पहुंचती है. शायद यहां कुछ हाथ लगे. खेत का मालिक तो पूरा नीसठ निकला. अपने अंगों के उभार सहित लहराती तथा चटकती-मटकती आगे बढ़ती वह कटी फसल में से दो मुट्ठी उठा लेती है. मजदूरों की आंखों में धूल झोंकने में तो वह सफल हो जाती है पर कुलदीप बहुत चौकन्ना निकलता है. वह लाठी लिये दौड़ता है. नेटुआइन उठाई हुई फसल नहीं फेंकती है. निर्लज्ज-सी खड़ी वह केवल गिड़गिड़ाती जाती है. डराने-धमकाने के लिए, कुलदीप लाठी तानता है, फेंको नहीं तो मार देंगे. असावधानी से लाठी उसके शरीर पर कहीं छू जाती है और तभी एक विस्फोट हो जाता है.

"दौड़ो, दौड़ो, कसाई ने बच्चे को मार डाला."

इस प्रकार चिल्लाती युवती जमीन पर गिर छटपटाने लगी. बच्चा कुछ दूर फिंक गया तो पूर्ववत रोती हुई सरकरकर उसे आंचल से ढक दिया.

उसी समय अचानक भगदड़ मच गई. आसपास से फसल की भीख मांगते कुछ नेटुआ लाठियां ताने दौड़ते हुए आते दिखाई पड़े. वे उसके संग वाले थे और शायद उस स्त्री का गिरना उन्होंने देख लिया था. उन्हें बौखलाहट में "मारो—मारो—मारो—" चिल्लाते और कुलदीप के खेत की ओर दौड़ते आते देख सबसे पहले तो कटनी करते मजदूर भाग चले; खून हो गया. खिसियाए हुए नेटुआ पता नहीं क्या कर डालें?

फिर, कुलदीप में कहां हिम्मत थी खेत में डटे रहने की? अपने गांव की उलटी दिशा में सिर पर पैर रख भागा. खून का मामला कितना संगीन होता है, साफ-साफ दफा 302 का केस. तनिक-सी असावधानी में तूने यह क्या कर दिया कुलदीप? लेकिन, लाठी कहां लगी बच्चे को? कैसे वह मर गया? संभव है घायल ही हो. तब भी भागो, मामला बहुत नाजुक हो गया.

मेरा ध्यान भंग किया भीतर से आए भीड़ के एक रेले ने. देखा, एक नेटुआ कुलदीप का बैल खोलकर लिये चला आ रहा है. मालिक नहीं मिला तो उसका बैल ही सही. किसी ने उसे रोका नहीं. अहाता पार कर बैल सहित नेटुआ दल भीड़ के बाहर रास्ते पर आ गया.

रोकता कौन? मौत की संवेदना ने सबको उच्चाटित-सा कर दिया था. उधर उस पिता की रुलाई और दारुण हो गई थी. "अरे बावरे! ई बैल का अब हमार मुनवा हो जाई?"

भीड़ भुनभुना रही थी, ले जाने दो बैल. कौन इन नंगों से भिड़े? फिर कितने खूंखार हो गए हैं? बच्चे की जान गई तो उसके मुकाबले बैल का क्या मोल है—दूसरे के लिए बैल. रोककर कौन इन बिगड़े हुए नेटुओं से रार बेसाह करे?—लेकिन दिनदहाड़े इस प्रकार यदि ये लोग इतने आदमियों के सामने बैल खोलकर ले जा रहे हैं तो पुलिस इन्हें बंद कर सकती है.

अंतिम भनक बैल का पगहा हाथ में थामे नेटुआ के कानों में पड़ी और पगहा उसके हाथों से इस प्रकार छूट गया जैसे वह आग हो! वह कहने वाले के आगे हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, "दोहाई बाबू की! मैंने आपका कहना मान लिया. नहीं ले जाएंगे बैल को थाना-पुलिस बुलाएंगे? थाने में तो जाना चाहिए था परंतु जिन बाबुओं के में रहना है उनसे लड़ाई क्या शोभा दे

"लेकिन आज तो तुम लोग सरासर पर उतारू दिखाई पड़ रहे हो," उस व्य जवाब दिया और आंखों-आंखों में उन्हें लगा.

वह कोई और नहीं, गांव का नेता व्यक्ति रामजग रहा. भुनभुनाकर वाली बात जो उछाल दी, उसका गहरा पड़ा. सभी बौखलाए नेटुआ सकते में आ पुलिस-भय इन अकिंचन जनों के कितने गंभीर असर के साथ घुला है?

अचानक पीछे खड़ा एक नेटुआ हाथ की लाठी जमीन पर रख स्वयं के आगे साष्टांग दंडवत की मुद्रा में लेट मैंने देखा, यह वही नंग-धड़ंग, चट्टान वाला अधेड़ नेटुआ है जिसने कसी घुसने के लिए मार्ग बनाया था.

रामजग के कहने पर वह खड़ा हो हाथ जोड़कर कहने लगा, "यह लड़ाई मालिक, मर गए उस चांद के टुकड़े औलाद का ग़म है—हम तो चाहते हैं

नेटुआइन उठाई हुई फसल नहीं फेंकती है.... डराने-धमकाने के लिए कुलदीप लाठी तानता है, फेंको नहीं तो मार देंगे. असावधानी से लाठी उसके शरीर पर कहीं छू जाती है और तभी एक विस्फोट हो जाता है. "दौड़ो, दौड़ो, कसाई ने बच्चे को मार डाला"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कोई बाबू-भइया फैसला कर दे!"

फैसला!

एकदम चौंका देने वाला शब्द था. रामजग पीछे खड़े सुदर्शन ने उसके कानों में कहा, "अरे यार, नेटुआ पैसा चाहते हैं. कुछ दिलवा दो. बावेला खतम हो. नेटुआ तो थाने पर नहीं जाएंगे परंतु किसी और ने इस कतल की इत्तिला कर दी तो तुम्हारा दोस्त कुलदीप टंग जाएगा."

"टंग जाने दो साले को और गल जाने दो बीस-पचास हजार. मक्खीचूस है. चंदा देने लगता है," रामजग ने उसी प्रकार

कर सुदर्शन से कहा. फिर सामने हाथ खड़े नेटुआ से कहा, "हम लोगों के से तुम्हारा काम नहीं चलेगा. तुम थाने जाओ. हम कह रहे हैं. तभी दस-पांच तुम्हारे पल्ले पड़ेंगे. ऐसे वह एक पाई काढ़ेगा."

नहीं मालिक," नेटुआ ने गिड़गिड़ाकर "नहीं, हम लोग थाने पर नहीं जाएंगे. लोग कुछ नहीं करेंगे तो हत्यारे के घर पर बच्चे की लाश खोदकर गाड़ देंगे. सारा गांव देखेगा कि क्या हो रहा है?" हां, यह भी एक रास्ता है," नेता रामजग ने कहा.

"लेकिन यार, इससे तो बात खतम नहीं होगी. कुछ ऐसा हो कि यह सब बावेला खतम हो," सुदर्शन ने कहा.

"खतम होने की जरूरत क्या है? देख नहीं रहे हो सभी लोग खड़े होकर तमाशा देख रहे हैं. तुम भी देखो. वैसे यदि मन हो तो जाओ ढूंढो कुलदीप को. भेंट हो तो कहो, कि जल्दी पैसा फेंके नहीं तो पानी नाक के ऊपर चला जाएगा."

"तो ठीक है. मैं साइकिल लेकर उसे खोजता हूं. तब तक तुम नेटुओं को रोको.

रामजग के पीछे खड़े सुदर्शन ने उसके कानों में कहा, "अरे यार, नेटुआ पैसा चाहते हैं. कुछ दिलवा दो. बावेला खतम हो. नेटुआ तो थाने पर नहीं जाएंगे परंतु किसी और ने इस कतल की इत्तिला कर दी तो तुम्हारा दोस्त कुलदीप टंग जाएगा"

लाश न गाड़ें यहां पर."

सुदर्शन के चले जाने पर रामजग ने नेटुआ सरदार से कहा कि वह लाश को मंगावे. और नेटुआ ने अपने लड़के को बगीचे में भेजा, "जाओ, मुनवा की मां से कहो कि बच्चे की लाश लेकर चली आवे. अब रोने से काम नहीं चलेगा. हां, देखना, लाश किसी और के हाथ न लगे."

बच्चे की लाश आ रही है. वह यहीं गाड़ी जाएगी!!

भीड़ में एक नई हलचल मच गई. रोते जवान की रुलाई में फिर तेजी आ गई. औरतों की आंखें एक बार फिर नम होकर झड़ने लगीं. फूल-सा आल्हर जिअरा कैसे लाठी की चोट खा क्या हो गया होगा?

नेटुए का लड़का लाश लाने का संदेश लेकर चला तो उसके पीछे बच्चों की एक भारी भीड़ चल पड़ी. चलो, चलो देखें लाश आ रही है. कैसी है लाश!

"अरे चांडालो! लाश क्या कोई तमाशा है? भागो तुम लोग. लड़के को जाने दो," कहते हुए एक नेटुआ लड़कों को खदेड़ने लगा. मगर, खदेड़ते-खदेड़ते भी लड़के गांव के बाहर तक आ गए. इसके बाद नेटुआ क्रुद्ध होकर उन्हें मारने लगा तो वे सहम गए. चलो, नहीं जाएंगे बगीचे में. रास्ते में ही बैठे रहेंगे. इसी रास्ते न आएगी बच्चे की लाश? फिर देखेंगे, कैसी है नेटुआ के बच्चे की लाश?

सुदर्शन जल्दी ही लौट आया, पसीने से तर!

"अरे कुलदीपवा तो थर-थर कांप रहा था," हांफते हुए सुदर्शन ने कहा और गमछे से पसीना पोंछने लगा.

"कहां मिला तुमसे?" नेता ने पूछा.

"मत पूछो. भागकर गांव के सीवान के बाहर वह जो रास्ते पर कुंआ और नीम का पेड़ है. वहीं सोया था. मुझे देखते ही हड़बड़ाकर उठा और सारा किस्सा सुनाकर पसीने-पसीने हो गया. कहने लगा, किसी प्रकार दस-पांच हजार जो मांगे, देकर हंगामे को द्वार पर से रफा कराओ," एक सांस में कह गया सुदर्शन.

"यह दस-पांच हजार मिलेगा कैसे?"

"यह जो लिखा है बीबी के नाम," कहते हुए सुदर्शन ने कटकर खेत से खलिहान में गए बोझों का हिसाब लिखी जाने वाली डायरी के एक फटे पन्ने पर लिखी पुर्जी जेब से निकालते हुए कहा, "इसे दिखाकर जितने की जरूरत हो मांग लेना."

झपटकर रामजग ने उस पुर्जी को हाथ में लेते हुए कहा, "बस एक मिनट रुको. मैं अभी आया" और कुलदीप के घर की ओर भीड़ चीरते हुए तेजी से बढ़ गया.

"क्या हुआ मालिक?" नेटुआ सरदार ने कुछ हक्के-बक्के की स्थिति में खड़े सुदर्शन से पूछा.

"वही, फैसला—रुपया लाने गए हैं ग्राम प्रधान के चाचा जी," सुदर्शन ने कहा.

नेटुआ सरदार फिर कुछ कहने जा रहा था कि उसकी दृष्टि अकेले आते लड़के पर पड़ी. बोला—"मुनवा की लाश आ रही है न?"

"हां, चाची लेकर आ रही है," लड़के ने कहा.

"जाओ दौड़कर, कुदाल भी लेते आओ. फैसला माफिक नहीं हुआ तो लाश यहीं दफना देंगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधर लड़का गया और इधर रामजग भीतर से निकला. उसने इशारे से नेटुआ सरदार को बुलाया और दोनों भीड़ से कुछ हटकर बरगद के नीचे बैठ गए.

"देखो, औरतों के पास पैसा नहीं है. तुम कितना रुपया लेकर हट जाओगे?" कहा रामजग ने.

"मालिक, पांच हजार से कम क्या होगा?"

"सुनो, कुलदीप के बारे में भी कुछ खबर मिली है. वह थाने पर इत्तिला करने गया है कि तुम लोग घर पर उसकी गैरहाजिरी में लूटपाट कर रहे हो. इसलिए पुलिस आने से पहले रफा-दफा हो जाओ. पांच हजार तो बहुत ही अधिक है. सोच-समझकर कहो."

"बाबू, तब दो हजार ही दिलवा दें."

भीड़ अब कुछ बिखरने लगी थी. उसे आशा थी कि कुछ होगा परंतु लगा कि कुछ होने का नहीं. युवक की रुलाई भी उतार पर आ गई थी. उसके पास बैठकर अब नेटुआ-पुत्री गांव के सरदारों को सराप देती जाती थी. लगता था, मामला ठंडा पड़ गया. इसी बीच नई गरमाहट का एक रेला फिर गली के भीतर से इधर उमड़ आया.

आगे-आगे एक रोती आती औरत बच्चे की लाश को एक गंदे फटे गमछे में लपेटे, दिखाई सिर्फ ललाट पड़ता—क्या करोगी मुर्दा बालक देखकर बहिनी? और हाय-हायकर रोती कुछ औरतें, और इसके पीछे एक नया विस्फोट करता बालकों का झुंड. झुंड में ग्राम प्रधान के चाचा रामजग का परमचंद दस-बारह वर्ष का लड़का मोहना सबसे आगे. वह हांफता जाता है और कहता जाता है, "पेड़ की आड़ से छिपकर मैंने खुद देखा, यह औरत इस गोद वाले बच्चे को दूध पिला रही थी. चलने लगी तो एक बूंद दूध इसके होंठों पर फैला था और उसे इसने पोंछ दिया! यह कहां मुर्दा लाश है?"

अब मचा हड़कंप!

दौड़ा-दौड़ा रामजग आया और मोहना के सामने चांटा तानकर खड़ा हो गया, "चुप साला, मुर्दा लड़का भला दूध पियेगा? बात गढ़ रहा है? अभी भाग जा यहां से!"

अब मोहना वहां कहां खड़ा रहता है?

पलटकर वहीं बैठे नेटुआ सरदार से रामजग ने कहा, "अब बोलो? पुलिस आएगी तो मैं जांच कराऊंगा कि जिंदे लड़के को मुर्दा बनाकर बवंडर खड़ा किए हो. बोलो, कितना लेकर जल्दी जाओगे?"

"हाय बाबू," नेटुआ रोकर छाती पीटने लगा, "आप भी यही कहेंगे? चांद के टुकड़े जैसे मुर्दा मुनवा के लिए क्या हजार-पांच सौ भी नहीं देंगे? इससे तो अच्छा है कि उसे हम यहीं दफना दें."

"बस तुम अब यही करो. रुको, मैं कुदाल ला रहा हूं. तब तक पुलिस भी आ जाती है," कहकर रामजग चलने को हुआ तो नेटुआ सरदार ने हाथ से धोती पकड़ लिया.

"नहीं प्रधान बाबू, हमारा फैसला कर दीजिए. हम लोग बहुत गरीब हैं."

"गरीब हो तो यह लो. अपने पास से रहा हूं. पांच मिनट के भीतर यहां से गायब हो जाओ और एक घंटे के भीतर गांव के सीवान से बाहर भाग जाओ," कहकर उसने सौ का एक नया पत्ता पुराने कुर्ते की जेब में डालते हुए चल दिए.

नेटुआ सरदार क्षण भर तक विचलित मुद्रा में रामजग को जाते देखता रहा और फिर चिल्लाकर बोला, "अरे उठ चल यहां से रे मुनवा का अभागा बाप. इस कसाई गांव में रहने लायक नहीं है. यहां कोई न्याय करने वाला चौधरी सरदार नहीं है," जाते-जाते उसकी आवाज

नेटुआ ने गिड़गिड़ाकर कहा, "नहीं, हम लोग थाने पर नहीं जाएंगे. आप लोग कुछ नहीं करेंगे तो हत्यारे के घर के द्वार पर बच्चे की लाश खोदकर गाड़ देंगे. फिर सारा गांव देखेगा कि क्या हो रहा है?"

सुदर्शन से टकराई.

"अरे यार, कितने में मामला सलटा?" सुदर्शन ने रामजग से पूछा.

"मत पूछो. नेटुआ बहुत क्रुद्ध थे. किसी तरह उन्हें मनाकर गांव-बाहर किया है," रामजग ने कहा.

"मगर यह केस तो एकदम फ्रॉड था."

"फ्रॉड कैसे था? लड़का मरा नहीं पर मारा तो गया था न? दफा 302 सही, दफा 323 में ही क्या कुलदीप की ऐसी-तैसी नहीं हो जाती?"

"तो भी कितना गलाना पड़ा?"

"शाम को बताऊंगा. कुलदीप को भी जाने दो.—तुम से भला क्या छिपाना है."

इसके बाद मेरे देखते-देखते दस-पांच मिनट में तमाशा खतम हो गया. गली में पूर्ववत सन्नाटा छा गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

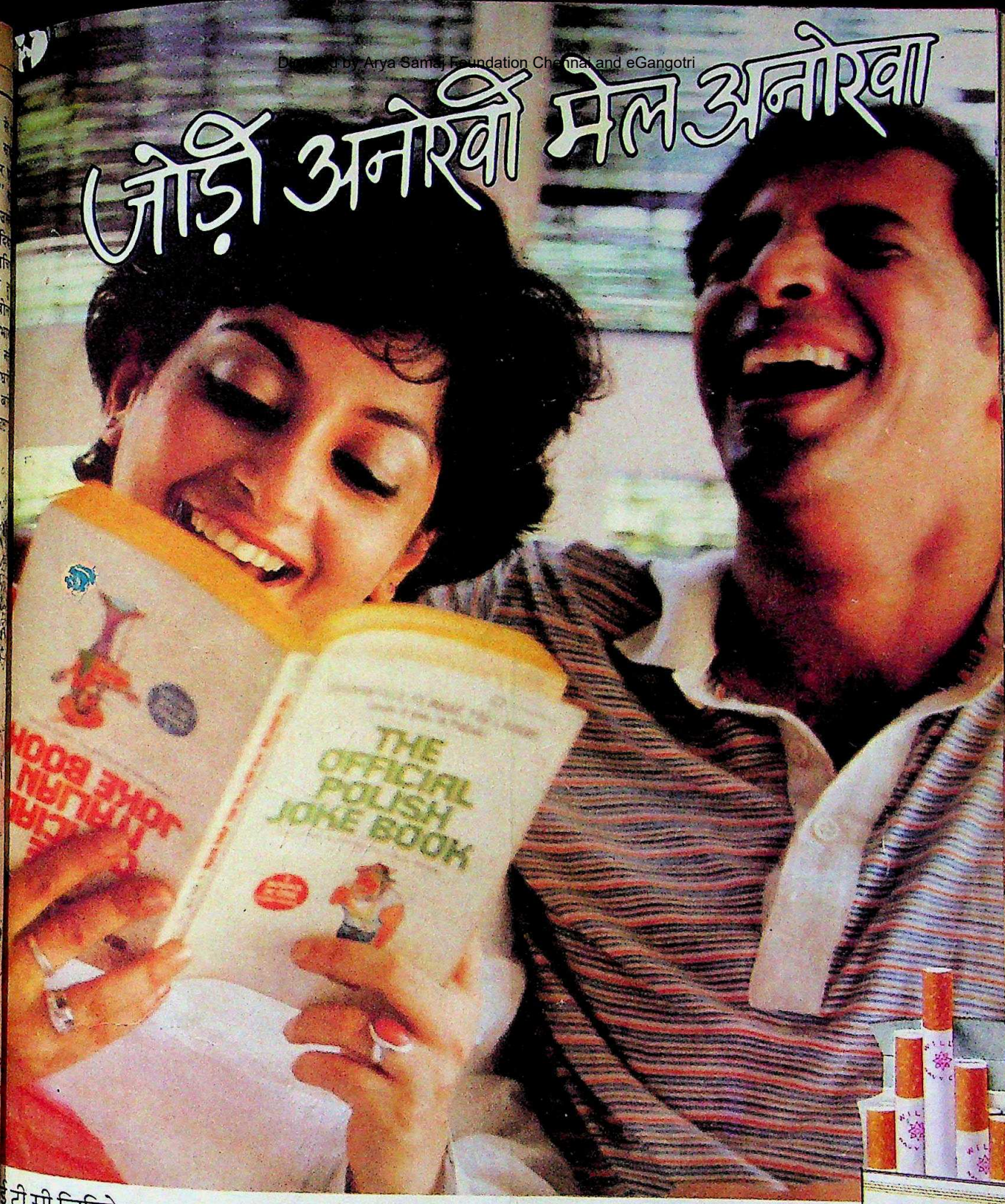

टी सी लिमिटेड
अपना एक ब्राण्ड
त में निर्मित

क चेतावनी:
रेट पीना स्वास्थ्य के लिए
कारक है

RY WARNING
RETTE SMOKING IS
RIOUS TO HEALTH

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया... फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER

WILLS
FILTER TIPPED
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING
IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फिल्टर और तम्बाकू का अनोखा मे

एक छोटा-सा कारण
एक सुरक्षित स्कूटर लेने के लिए

बेहतर स्थिरता के लिए बेहतर संतुलन

तुरंत रुके फ़िसले नहीं

ख़तरनाक स्थितियों से निकाल ले जाने के लिए शक्तिशाली इंजन

आगे तथा पीछे दिशासूचक इंडिकेटर

NO. 1 6,00,000 LML VESPAS ON THE ROAD

LML vespa

बेहतर सुरक्षा. बेहतर डिज़ाइन.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

15 मई 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

र्ड प्रसाद यादव: इरादे म
त-पाकिस्तान: बंदूकों का रुख
मंत्रिमंडल: सबको खुश रखने की चतुर

सिनेमा

फिर आया जवां प्यार का मौसम

मोनिषा कोइराला और सलमान खां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

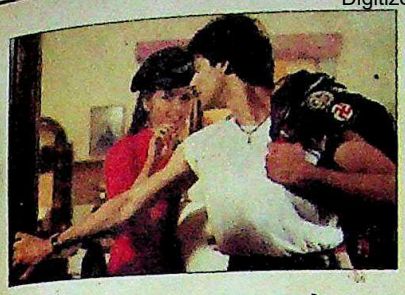

फिर आया जवां प्यार का मौसम

'कयामत से कयामत तक' और 'चांदनी' से शुरू हुआ रोमांटिक फिल्मों का दौर 'मैंने प्यार किया' के हिट होने के साथ अपने चरम पर पहुंच गया है. और फिल्म उद्योग में जैसे प्रेम-कथाओं का पिटारा खुल गया है. 60 से ज्यादा रोमांटिक फिल्मों का निर्माण जारी है.

आवरण कथा.....42

सबको खुश करने की चतुराई

मंत्रिमंडल में 18 नए मंत्रियों को शामिल करके प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने न सिर्फ गुटों को खुश रखने की अपनी क्षमता साबित कर दी वरन यह भी जता दिया कि पार्टी की लगाम किसके हाथ में है. मंत्रिमंडल के 40 में से 17 सदस्य उनके वफादार हैं.

खास रपट 14

मोर्चे से हटाकर मेज तक

कश्मीर का मसला दुनिया भर में चर्चित हो जाने से भारत और पाकिस्तान युद्ध के पैंतरे अपनाने लगे हैं. अमेरिका तनाव को शांत करने की कोशिश कर रहा है. साथ में उग्रवादियों की चुनौती से निबटने की कश्मीर प्रशासन की कोशिशों पर मौके से भेजी गई रपट.

खास रपट 20

अराजकता और आशंकाएं

हिंसा और पुलिस की गोलीबारी ने नेपाल में कई लोगों की जान ले ली है. अंतरिम सरकार भी संकट में घिर गई है. उसके समर्थक और विरोधी हथियारबंद होकर सड़कों पर आतंक फैलाते घूम रहे हैं. लोकतंत्र बहाली के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग गया है.

पास-पड़ोस.....29

मजबूत इरादों के साथ

लालू प्रसाद यादव ने जब देश के सबसे समस्याग्रस्त राज्य बिहार की बागडोर संभाली थी तब सब ओर लोग उनकी अनुभवहीनता को लेकर आशंकित थे. मगर एक महीने के अपने कार्यकाल में यादव ने दिखा दिया है कि वे संकल्प के साथ अपनी पकड़ मजबूत कर रहे हैं.

खास रपट 34

फिजां बदलने के जेहादी तेवर

पर्यावरण राज्यमंत्री के रूप में मेनका गांधी ने कई मोर्चों पर जंग छेड़ करके इस लुंजपुंज विभाग में जान फूंक दी है. लेकिन कुछ अहम मुद्दों पर उनकी चुप्पी और उनके अक्खड़ तौर-तरीकों के कारण कई विवाद भी खड़े हो गए हैं. साथ में इस युवा मंत्री से बातचीत.

विशेष लेख 76

अगले पन्नों पर

कसौटी.....8
तेवर.....9
राजरंग.....10
हिंदोस्तां हमारा.....12
खास रपट
मंत्रिमंडल विस्तार:
सबको खुश रखने की चतुराई.....14
भारत-पाकिस्तान:
मोर्चे से हटाकर मेज तक.....20
पास-पड़ोस
नेपाल: अराजकता और आशंकाएं.....29
खास रपट
बिहार: मजबूत इरादों के साथ.....34
असम: उल्फा का अपशकुनी साया.....37
आवरण कथा
सिनेमा:
फिर आया जवां प्यार का मौसम.....42
आजकल
कांग्रेस (इ): घर करेंगे ठीक.....57
दिल्ली: राज्य का रोना.....58
उत्तर प्रदेश: खतरनाक संकेत.....59
बस्ती: दावत में दर्दनाक हादसा.....60
बिहार: पल भर में सब स्वाहा.....62
दिल्ली: आग ही आग.....64
राजस्थान: परदे पर संकट.....65
किरण बेदी: कानूनी वज्रपात.....66
व्यापार चक्र.....71
कारोबार
लार्सन ऐंड टुब्रो: तलवारें म्यान में.....72
शेयर बाजार.....74
आरपार.....75
विशेष लेख
मेनका गांधी:
फिजां बदलने के जेहादी तेवर.....76
बिहार: देखी जात-कुजात.....81
संचार माध्यम
सुपर्स: आंख की किरकिरी.....85
कहानी.....88
किताबें.....92
परदे के उस पार.....94
चर्चित चेहरे.....96

आवरण: नामस मोजानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For the potential to weigh as much as 60 tons to the possibility of weighing 0.01 mg, organisations like B.A.R.C., Bajaj, Cadburys, Cipla, Colgate, Dr. Beck, Glaxo, Godrej, L&T, Parle, Reserve Bank, Tata, Tribhuvandas Bhimji Zaveri ... depend on

ATCO®

THE TRUTH BY WEIGHT

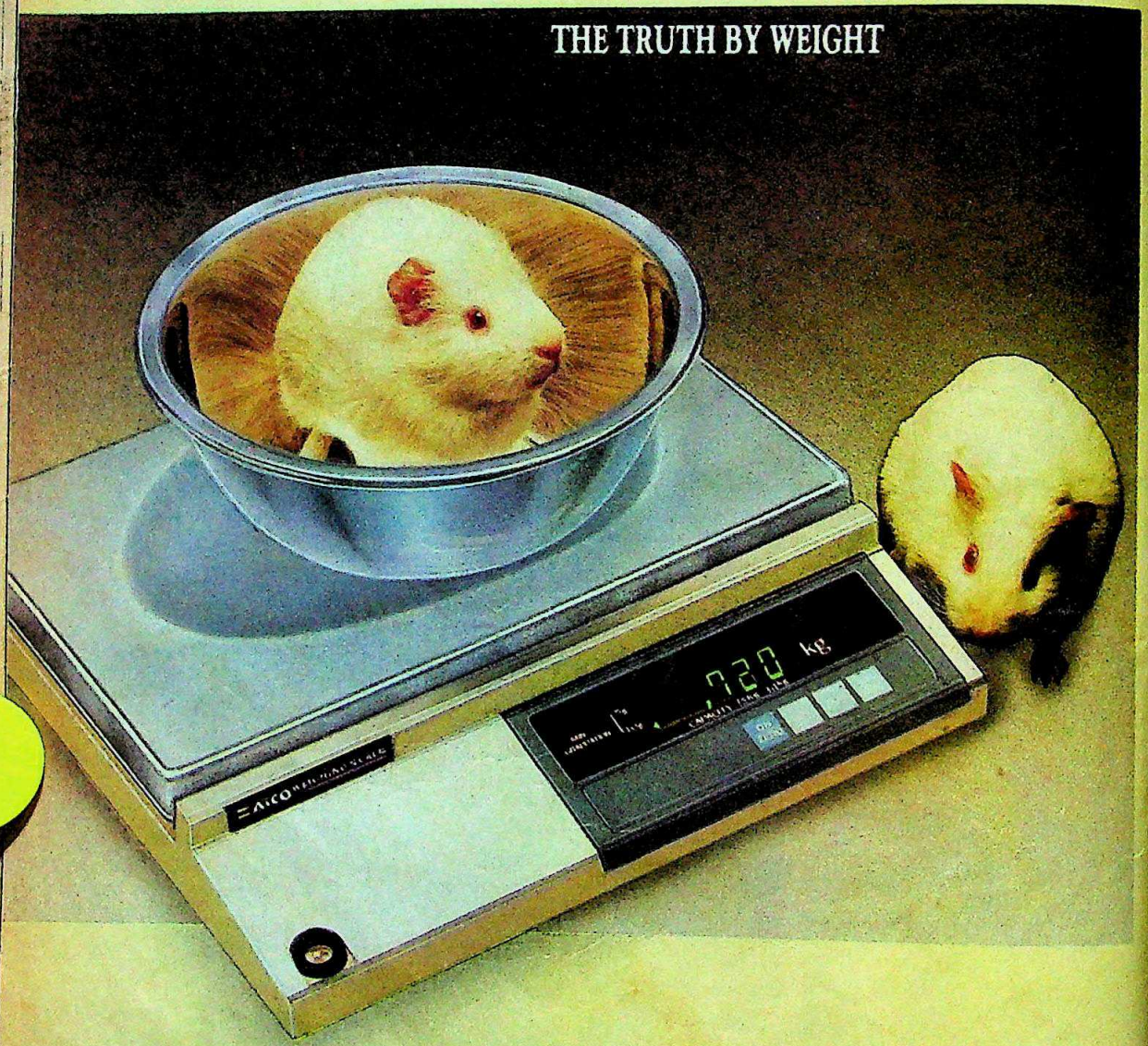

A T C O I N D U S T R I E S L I M I T E D

ENGINEERING □ ELECTRONIC WEIGHING □ INSTRUMENTATION

HEAD OFFICE: 6A, Lalwani Industrial Estate, 14, G.D. Ambekar Road, Wadala, Bombay - 400 031. ✆ 4121295 □ 4121298 □ 4121982 □ 4122258
Telex: 011 - 73944 ATCO IN □ Fax: 022 4140250

BRANCHES: B-5/158 Safdarjung Enclave, 1st Floor, NEW DELHI-110 029 ✆ 608749 ■ 41, T. Nagar, Ramanathapuram, COIMBATORE-641 045 ■ No. 45, 1 Main Road, C.I.T. Nagar, Nandanam, MADRAS - 600 035. ✆ 455912 □ 456205, □ 451986

SALES & SERVICE: ■ NEW DELHI: Avro Sales Pvt. Ltd. ✆ 3319010 □ 3318814 ■ Consolidated Machines P. Ltd. ✆ 6832636 □ 6843694 ■ CHANDIGARH: Arya Associates ✆ 40827 ■ INDORE: Instrumentation Engineers ✆ 39640 ■ BARODA: Pegasus Marketing Inc ✆ 558857 ■ AHMEDABAD: K.G.S. Marketing Sr Services ✆ 491199 ■ NAGPUR: Monarch Marketing Enterprises ✆ 24422 □ 2322 ■ CALCUTTA: Promises Marketing ✆ 445803 ■ K.S. Enterprises ✆ 260300 □ 273864

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

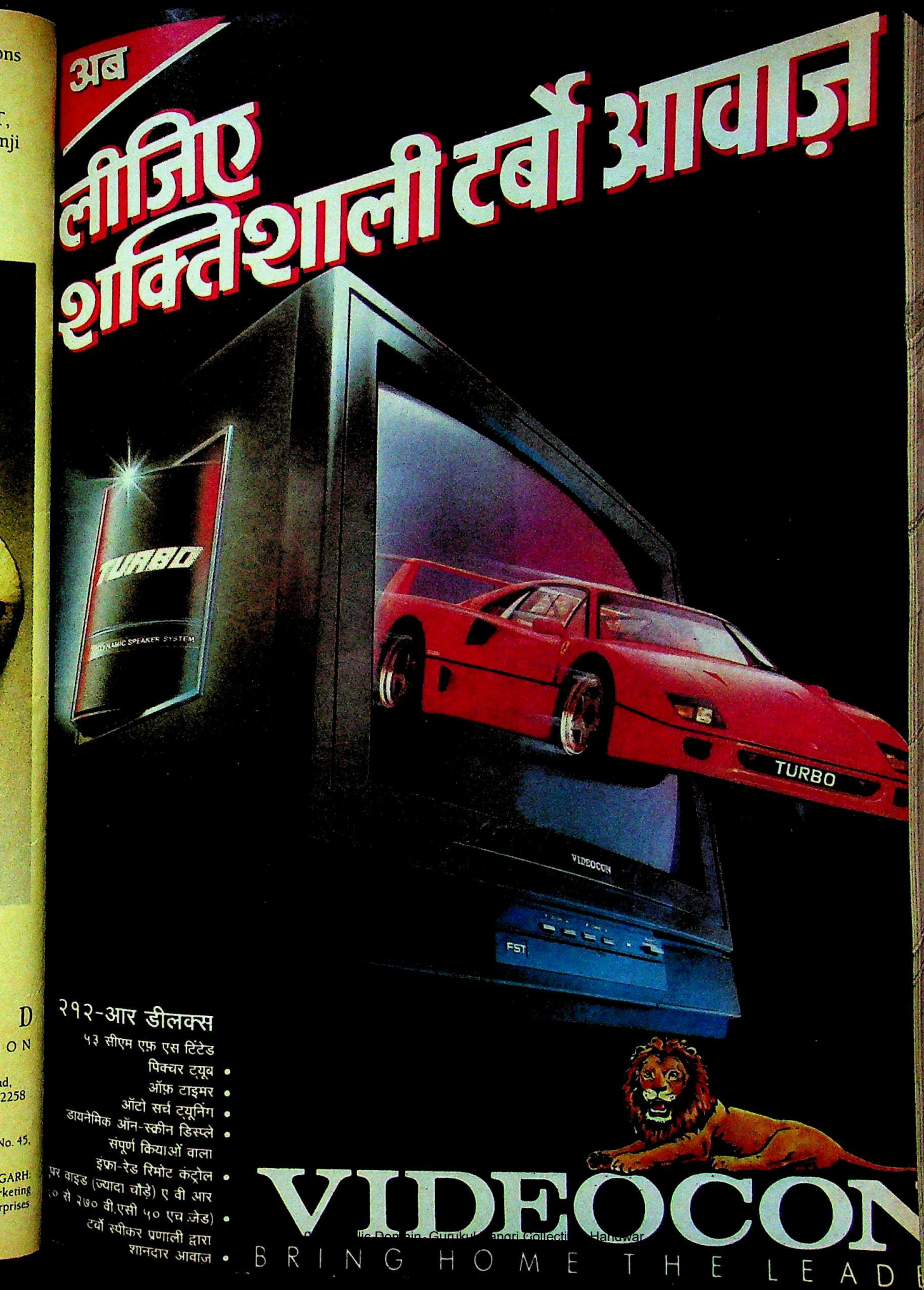
अब
लीजिए
शक्तिशाली टर्बो आवाज़
TURBO
TURBO
VIDEOCON
FST
२१२-आर डीलक्स
५३ सीएम एफ़ एस टिंटेड
पिक्चर ट्यूब •
ऑफ़ टाइमर •
ऑटो सर्च ट्यूनिंग •
डायनेमिक ऑन-स्क्रीन डिस्प्ले •
सपूर्ण क्रियाओं वाला
इंफ्रा-रेड रिमोट कंट्रोल •
सुपर वाइड (ज्यादा चौड़े) ए वी आर
१० से २७० वी.एसी ५० एच ज़ेड) •
टर्बो स्पीकर प्रणाली द्वारा
शानदार आवाज़ •
VIDEOCON
BRING HOME THE LEAD

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VIP BENZ

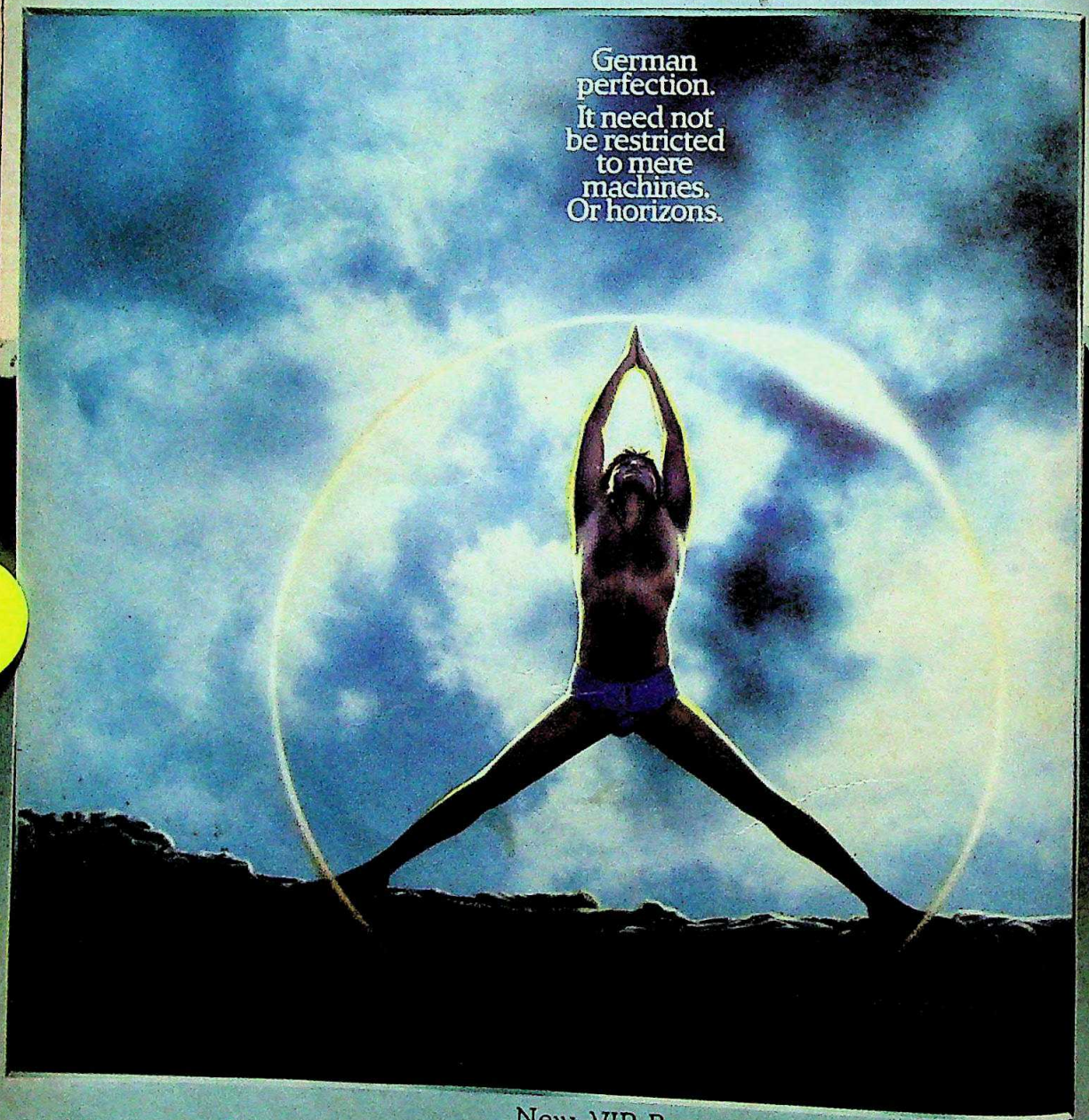

New VIP Benz steers a touch of German precision to men's underwear. You have the most comfortable stretchable fabric. And you have the most reliable imported rubber elastic. The rest is sheer styling. All perfect. All German.

VIP BENZ Great milestones in comfort.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Avenues

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीयकरण जरूरी

आवरण कथा 'वादी में विनाश' (30 अप्रैल) पढ़ी. यह कश्मीर का दुर्भाग्य ही है कि वहां पाकिस्तानपरस्ती हावी हो गई है. जरूरी है कि कश्मीर और भारत के बीच 1947 में पृथकता की जो दीवार केंद्र ने बना रखी है, उसे ध्वस्त किया जाए. कश्मीर समस्या का एकमात्र समाधान यही हो सकता है कि कश्मीर का पूरी तरह भारतीयकरण किया जाए.

—**डोंगर सिंह परिहार**, उज्जैन (म.प्र.)

धृतराष्ट्र या भीष्म

आवरण कथा 'धृतराष्ट्र के पदचिन्हों पर' (15 अप्रैल) पढ़ी. लेकिन जो व्यक्ति जनता दल का जनक रहा है, वह ऐसा नहीं हो सकता. क्या किसी राजनेता का बेटा अगर अपनी योग्यताओं के बल पर नेता के जीवनकाल में उच्च पद पर आसीन होता है तो उसके पिता पर धृतराष्ट्र या वंशवादी होने का मिथ्यारोप ठीक है? देवीलाल धृतराष्ट्र नहीं भीष्म हैं जो मीडिया और विघटनकारी तत्वों को झेलकर भी जनता दल का अभेद्य दुर्ग बनाने में सफल होकर रहेंगे.

—**चंद्रकांत यादव**, वाराणसी (उ.प्र.)

■ देवीलाल को भलीभांति समझ लेना चाहिए कि राजनैतिक उत्तराधिकारी बनाए तो जा सकते हैं मगर अपना रास्ता उन्हें खुद तय करना पड़ता है. महम के संगीन अपराधों को दबाने की बजाए चौधरी साहब पुत्रमोह से ऊपर उठकर अतीत की अपनी छवि के अनुरूप कार्य करते तो बेहतर होता.

—**अंगूरी देवी**, अध्यक्ष जागृत महिला संगठन, रोहतक (हरियाणा)

■ पराजय का आभास भी धृतराष्ट्र को महाभारत से अलग न कर सका था. अंततः उन्हें अपने पुत्रों के गाजर-मूली की तरह कटने की कहानी सुनने को विवश होना पड़ा. कहीं देवीलाल भी इसी दशा को प्राप्त न हो जाएं. —**मुस्तकीम आलम**, गया (बिहार)

घिसी-पिटी दलीलें

'अंग्रेजी के खिलाफ' (15 अप्रैल) में उत्तर प्रदेश सरकार के अभियान के बारे में पढ़ा. इसमें अंग्रेजी समर्थकों की उन्हीं घिसी-पिटी बातों का हवाला दिया गया है. इन्हें कौन बताए कि अंग्रेजी के अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने के पीछे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या रही है. यदि भारतीय भी अंग्रेजों की भांति साम्राज्यवादी स्वभाव के होते और धर्मनिरपेक्षता तथा सद्भाव का एकतरफा रुख अख्तियार नहीं करते तो बहुत संभव है आज हिंदी अंग्रेजी की जगह होती है.

—**अनिल चतुर्वेदी**, मंडला (म.प्र.)

पाठकों से

सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार की योजना के तहत पत्र आमंत्रित हैं. इस अंक के किसी भी लेख पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु. और दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी के साथ इस पेज पर पहले कॉलम में छपा पिछले अंक का फोटो काटकर भेजें. आपके पत्र हमें 20 मई तक मिल जाने चाहिए. चिट्ठी अधिकतम 150 शब्दों की हो.

—**संपादक**

■ मुख्यमंत्री द्वारा हिंदी लागू करने की घोषणा की रपट को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं लिखा गया. रपट प्रदेश की मूक जनता को वाणी देने के स्थान पर अंग्रेजी लॉबी के दबाव को प्रकट करती हैं.

—**भीमबली वर्मा**, नई दिल्ली

■ देश की गरिमा के लिए मुलायम सिंह यादव द्वारा चलाई जा रही अंग्रेजी उन्मूलन मुहिम सार्थक है. केवल उ.प्र. ही क्यों यह आंदोलन पूरे देश में जोरशोर से चलाने की जरूरत है. परंतु कार्यालयों व पाठ्यक्रमों में लागू करने से पहले ठोस आधार की जरूरत है. —**बिन्नू विनय**, रांची (बिहार)

■ बजाए इसके कि कांग्रेस सरकार के सराहनीय कार्य उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने के निर्णय को वर्तमान सरकार क्रियान्वित करती, उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी हटाओ अभियान चलाकर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने ध्यान को विकेंद्रित किया. आज यह गलतफहमी आम हो गई है कि अंग्रेजी और उर्दू जैसी लोकप्रिय भाषाओं का विरोध करके ही हिंदी को स्थान दिलाया जा सकता है.

—**अनसार हुसैन**, कानपुर (उ.प्र.)

■ उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी हटाओ अभियान का निर्णय सस्ती लोकप्रियता, सनक व राजनीति प्रेरित ही कहा जाएगा. हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत के संविधान ने विभिन्न 15 भाषाओं को मान्यता दे रखी है. फिर अंग्रेजी पर कुठाराघात या भेदभाव क्यों? —**सांवल सिंह भाटी**, जैसलमेर (राज.)

■ पीटर फैथम (प्रिंसिपल) फरमाते हैं कि 'अंग्रेजी के खिलाफ आंदोलन छेड़ना बेवकूफी भरी बात है.' देश को पिछले दो सौ साल से बेवकूफ कौन बना रहा है? मैकाले की संतानें भाषा की ओट में इस समाज के साथ बलात्कार कर रही हैं.

—**योगेंद्र कुमार भट्ट**, पुलगांव (महाराष्ट्र)

भौंडा प्रदर्शन

'नाज नखरों की निराली दुनिया' (15 अप्रैल) पढ़ा. किटी पार्टियां उन महिलाओं के अधकचरे शिक्षा ज्ञान की निशानी हैं जो अपने पति द्वारा अर्जित बेहिसाब रुपयों को उड़ाती हैं. यह आधुनिकता का भौंडा प्रदर्शन है जो आज की महिलाओं में अनायास ही व्याप्त हो गया है और जिसे महिलाओं की आजादी का जामा पहना दिया जाता है.

—**प्रेमनाथ मोदी**, पटना (बिहार)

वर्ष: 4, अंक: 13, 1-15 मई 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN. तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN. तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001 फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726. टेलेक्स: 021-3138 INTO IN. तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोरी मूर्खता

हमारे विकासशील राष्ट्र में अनुपयोगी कार्यों हेतु धन बरबाद करना परंपरा बन गई है. 'प्रतिमा पाताल में' (15 अप्रैल) इसका ताजा उदाहरण है. विकसित और समृद्ध देश अमेरिका की तर्ज पर विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति बनवाकर उसे प्रतिस्थापित करने पर साढ़े पांच करोड़ रु. से अधिक की भारी-भरकम धनराशि का व्यय करना कोरी मूर्खता है. आज आंध्र प्रदेश में अनेक बच्चे कुपोषण के शिकार हैं. काश यह इन बच्चों के पुष्टाहार पर व्यय किया जाता.

—पुनीत भारद्वाज, लखनऊ (उ.प्र.)

प्रथम पुरस्कार

हमें आशा थी कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पिछली सरकारों से अलग हटकर कार्य करेगी. परंतु देवीलाल के रवैए से सरकार ही डोलने लगी. दरअसल उन्हें भीष्म की तरह अपनी भूमिका का निर्वाह सरकार और पार्टी के स्थायित्व के लिए करना चाहिए था. परंतु पुत्रमोह के मायाजाल में फंसकर वे अपनी 'ताऊ' वाली छवि भी गंवा बैठे हैं और अब धृतराष्ट्र की तरह अपने पुत्रों का ही ध्यान रख रहे हैं. ऐसे समय में विदुर की महाभारत वाली सलाह मानिए, पुत्रों का नहीं, हस्तिनापुर (भारत) का ध्यान रखिए. और हस्तिनापुर के लिए धृतराष्ट्र नहीं, ताऊ जी! भीष्म बनिए भीष्म!

—संजय श्रीवास्तव (लल्ला), सागर (म.प्र.)

नया संदेश

'नई सुबह का आजाद उजाला' (15 अप्रैल) सार्थक लगा. उपनिवेशवाद की अंतिम दीवार को ढहाकर उदय हुआ नामीबिया जैसे एक नया संदेश लेकर आया. हालांकि नए राष्ट्र के रूप में उभरे नामीबिया को अभी आर्थिक और दूसरी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा लेकिन सबसे बड़ी चीज 'स्वतंत्रता' उन्हें प्राप्त हो गई है.

—अंजनी परिहार, संगरिया (राज.)

■ नामीबिया के स्वतंत्रता समारोह में प्रधानमंत्री ने अपनी दिलेरी का परिचय दिया है जबकि पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की बचकानी हरकतें 'लज्जास्पद' हैं. लगता है राजीव अपनी पार्टी की करारी हार से हताश होकर ही ऐसी छिछोरी हरकतें करने लगे हैं.

—प्रताप हजारी, पुणे (महाराष्ट्र)

आम पहुंच से दूर

'घाटा कम रखने का करतब' (15 अप्रैल) नए बजट का सही विश्लेषण है. जनोन्मुखी और समाजवादी बजट का नारा देने वाली सरकार ने बजट की राशि का साठ प्रतिशत सामान्य आदमी की पहुंच के बाहर रखा है. रक्षा खर्च के नाम पर बजट की राशि पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ाने का अर्थ है कि हम पड़ोसी देशों में संतुलन स्थापित नहीं कर पाए हैं.

—हरीश कुमार सिंह, उज्जैन (म.प्र.)

संबल मिलेगा

'अहिंसक संघर्ष का शंखनाद' (15 अप्रैल) में नर्मदा बांध के विषय में बाबा आमटे के मुखर स्वर सामयिक हैं. उनके डूब क्षेत्र में बस जाने से बांध विरोधी आंदोलन को संबल मिला है. इससे डूब क्षेत्र के वासियों में शक्ति का संचार हुआ है और वे आक्रामक रुख अपनाने की तैयारी में हैं.

—अशोक दुबे, हरसूद (म.प्र.)

■ नर्मदा पर बांध के निर्माण से आसपास के इलाकों की कायापलट हो सकती है पर इंसान की जान की कीमत पर विकास का कोई औचित्य नहीं है. बाबा आमटे कोई राजनीतिक प्राणी नहीं हैं जो अपने क्षुद्र स्वार्थों की खातिर हाय-तौबा मचा रहे हों.

—रामगोपाल जोशी, सुजानगढ़ (राज.)

■ यदि बाबा आमटे जैसा सुलझा संत और युगदृष्टा कहे, "जब तक मेरी सांस में सांस है, कोई बांध नहीं बनने दूंगा, जो भी सरकार हमें डुबाने की कोशिश करेगी वह खुद-ब-खुद डूब जाएगी," तो साधारण सांसारिक लोगों से क्या उम्मीद की जा सकती है? क्या उदारमना बाबा अपने निर्णय पर पुनर्विचार करेंगे क्योंकि पर्यावरण संरक्षण जितना महत्वपूर्ण है, उतने ही बड़े उद्योग-धंधे और बांध भी. हां विस्थापितों का समुचित पुनर्वास जरूरी है.

—जगत सिंह बिष्ट, भोपाल (म.प्र.)

प्रेमचंद की शैली

कहानी 'सीताराम सुकुल' (15 अप्रैल) में प्रेमचंद शैली का सुस्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है. 'कलम का सिपाही' की भांति ही प्रतिभाशाली लेखक इस कहानी के माध्यम से देश की नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के भलीभांति चित्रण में आद्योपांत सफल रहे हैं.

—देवेंद्रनाथ, गया (बिहार)

■ कहानी में कहीं भी प्रतीकों, बिंबों अथवा तत्सम शब्दावली का भीषण प्रयोग न होने से मुझे बहुत दिनों बाद हिंदी कहानी का कथासार समझ में आया. हिंदी के मुझ जैसे कई अज्ञानी पाठक तो आधुनिक कथा लोक में विचरने का बीसा ही नहीं ले पाते. अतः 'सीताराम सुकुल' पढ़कर सुकून मिला.

—अजीत ब. सप्रे, ग्वालियर (म.प्र.)

अंधकारमय भविष्य

'फिर चीतों के पंजों में' (15 अप्रैल) पढ़ा. भारतीय शांति सेना की वापसी के साथ ही एक विवादास्पद अध्याय की समाप्ति हुई. इस लड़ाई में 1155 सैनिक मारे गए और 2984 घायल हुए लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात. साथ ही उत्तर-पूर्वी प्रांतों में मुक्ति चीतों ने कमान थाम ली है और फिर इस मनोरम द्वीप का भविष्य अंधकारमय लग रहा है.

—सुरेश कुमार सतीजा, मालेरकोटला (पंजाब)

लाजवाब सवाल

'दूरदर्शन की स्वायत्तता' (15 अप्रैल) ऐसे तथ्यों को उजागर करता है जिसका जवाब किसी के पास नहीं. दरअसल प्रधानमंत्री पद की दौड़ के समय राम जेठमलानी पिटाई प्रकरण को दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया जाना स्वायत्तता का श्रीगणेश नहीं बल्कि पद के योग्यतम दावेदार चंद्रशेखर को बदनाम करने का षड्यंत्र था.

—शफीकुल्लाह गाजी, कानपुर (उ.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

'बिना नींव की इमारत' (जनता दल) में चूने और गारे का भी इस्तेमाल नहीं किया गया लगता है. और ऐसी कमजोर इमारत कितनी टिकाऊ होगी, दावे के साथ कोई नहीं कह सकता. जनता दल को जनता ने जिस उत्साह से सरकार बनाने का न्यौता दिया था, दल के गैर-जिम्मेदार पदाधिकारियों ने अपने फूहड़ क्रियाकलापों से उसकी मिट्टी पलीद कर दी है. जब दिशाहीनता से त्रस्त यह दल अपनी अंदरूनी सांगठनिक विपदाओं से ही नहीं ऊबर पा रहा है तो सरकार चलाने की उनकी क्षमता पर संदेह जताए जाने में स्वाभाविकता नजर आती है. दल को सरकस बनाने का श्रेय उप-प्रधानमंत्री देवीलाल को है क्योंकि उन्होंने कभी अनुशासन का सबक नहीं सीखा.

—आलोक खटेड़, कलकत्ता (प. बंगाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़न टूर्स TCI

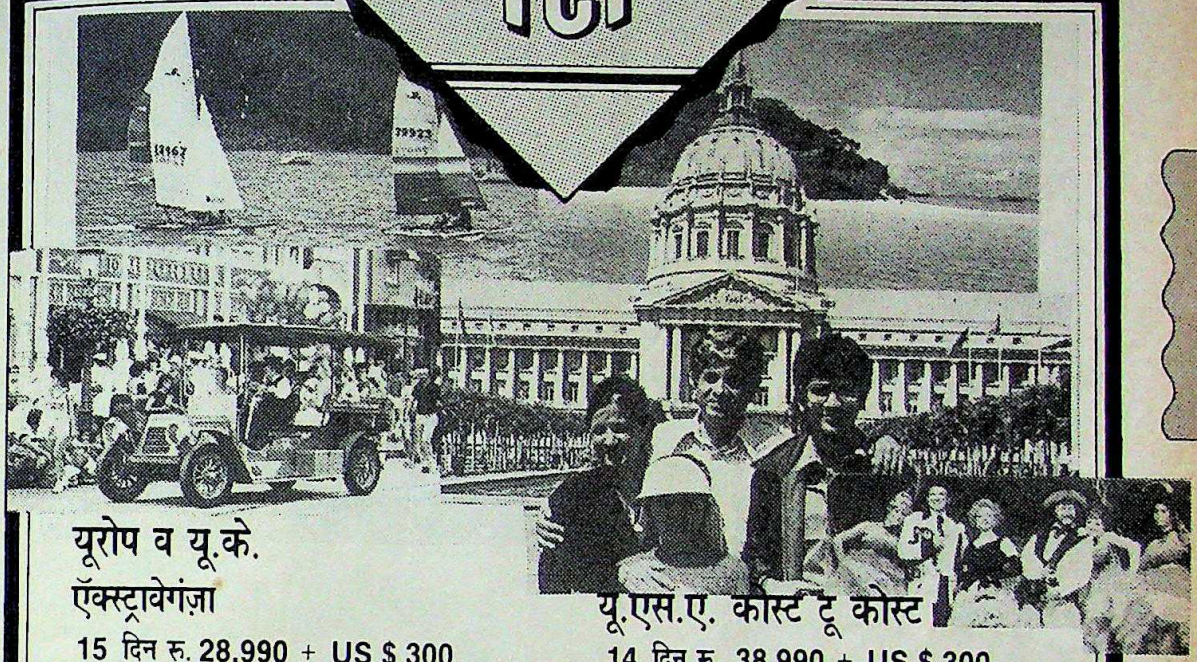

यूरोप व यू.के.

ऍक्स्ट्रावेगंज़ा

15 दिन रु. 28,990 + US $ 300

लंदन, ऍम्स्टरडम, कोलोन, फ्रैंकफ़र्ट, ज्युरिच, लुसेर्न, लुगानो, वेनिस, रोम, पीसा, जिनेवा व पेरिस.

यू.एस.ए. कोस्ट टू कोस्ट

14 दिन रु. 38,990 + US $ 300

न्यूयॉर्क, नियागरा फॉल्स, वॉशिंगटन, ऑर्लान्डो, सैन फ्रांसिसको, लास विगास व लॉस एन्जेलस.

नये पर्यटन स्थल

ऑस्ट्रेलिया के साथ-साथ सिंगापुर भी

16 दिन रु. 20,990 + US $ 280 (+ US $ 85 सिंगापुर सप्लिमेंट)

केनिया सफ़ारी व दुबई

12 दिन रु. 18,990 + US $ 300

तुर्की, ग्रीस, मिश्र (ईजिप्त) व दुबई

18 दिन रु. 17,990 + US $ 200

बैंकॉक * पट्टाया * सिंगापुर * हाँगकाँग * मॉरिशियस व हिन्दुस्तान के पर्यटन स्थलों के लिए भी टूर्स.
हमारे रंगीन ब्रॉशियर मंगवाएं.

साथ ही !

मुफ़्त ! एअर बैग
ट्रावेल किट
सफ़र से पहले दावत

आपके रुपयों की पूरी कीमत

नियमित प्रस्थान * टीसीआई के तजुर्बेकार ऍस्कॉर्टस, प्रथम श्रेणी की होटलें * भरपूर नाश्ता * हिन्दुस्तानी रात्रि भोजन * सभी टूर्स पर स्टे बॅक की सुविधा. * लाजवाब टीसीआई ऑफ़र.

आर.बी.आई/एन.टी.एस. नियमों के अर्तगत टूर्स में फेर-बदल किया जा सकता है

अपने ट्रावेल ऍजन्ट अथवा

ट्रावेल कॉर्पोरेशन (इंडिया) लि. से संपर्क करें

बम्बई : 'चंद्रमुखी' नरिमन पॉइंट, बम्बई : 400 021 फोन : 2021881/2028142. **चेम्बूर** : फोन : 529634 **आगरा** : फोन : 64111. **अहमदाबाद** : फोन : 407601. **औरंगाबाद** : फोन : 82211. **बेंगलोर** : फोन : 212826. **बड़ौदा** : फोन : 321801. **कलकत्ता** : फोन : 449971. **कोचिन** : फोन : 351646. **दार्जिलिंग** : फोन : 2694. **दिल्ली** : फोन : 3328363. **गोवा** : फोन : 5152. **हैदराबाद** : फोन : 212722/3/4. **जयपुर** : फोन : 65371. **जोधपुर** : फोन : 31910. **कानपुर** : फोन : 214226. **लखनऊ** : फोन : 33211. **मद्रास** : फोन : 868813. **पटना** : फोन : 221699. **पुणे** : फोन : 668872. **श्रीनगर** : फोन : 73525. **उदयपुर** : फोन : 26239. **वाराणसी** : फोन : 46209.

ADVERTS

2,50,000 से भी ज़्यादा लोगों ने अपनाया है टी.सी.आई. का सफ़र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौनेपन से उबरने का वक्त

राजनीति और इसके नेताओं के लिए यह परीक्षा की घड़ी है. संयम का और आत्मचिंतन का वक्त है यह. राजनैतिक कौशल, जोड़तोड़, दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति—सब कुछ को राष्ट्रहित की खातिर त्यागने का समय है यह. अखबारों की सुर्खियां हर दिन जनमानस को आहत कर जाती हैं. अब इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाना चाहिए कि आजादी के बाद यह देश शायद सबसे कठिन दौर से गुजर रहा है. इस दौर में न केवल इसके नेताओं की, बल्कि राष्ट्र के संकल्प की भी परीक्षा होगी.

आतंक, हिंसा, लूटपाट, अलगाववादी तोड़फोड़ और विदेशी खतरे सब कुछ इस देश को भीतर से झकझोर रहे हैं. लेकिन निंदनीय तथ्य यह है कि भारतीय नेतागण, जिन्होंने शायद न सुधरने की कसम खा रखी है, आपसी तू-तू-मैं-मैं या राजनैतिक टांगखिंचाई से बाज नहीं आ रहे हैं. उनके लिए देश में हो रही गड़बड़ी किसी आदमखोर के लिए मानुस गंध जैसी चीज लगती है. सत्ता की भूखी यह जमात राष्ट्रीय समस्याओं का उसी तरह फायदा उठा सकती है जिस तरह देश का कोई दुश्मन उठा सकता है. अपनी इस आदमखोर प्रवृत्ति के तहत अपने विरोधियों के सफाए के क्रम में वे यह भूल जाते हैं कि देश का भी अहित कर रहे हैं.

रेखांकन: अजीत नैनन

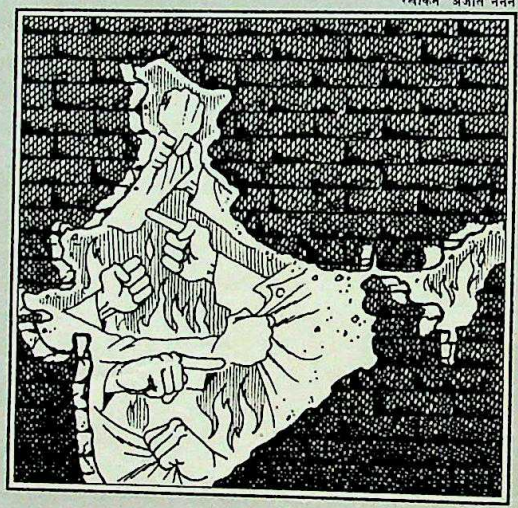

देश को आज जबकि एक नए संकल्प और निःस्वार्थ एकजुटता की जरूरत है, एक-दूसरे पर दोषारोपण या राजनैतिक मारामारी को नेतृत्व प्रदान करना नहीं कहा जा सकता. यह तो भेंड़-हंकाई जैसी बात है. संसद तथा विधानसभाओं के चुनाव खत्म हो गए हैं. हर जगह नई सरकार है. फिर भी शासक दल समेत सभी राजनैतिक पार्टियां देश में हो रही गड़बड़ियों के लिए एक-दूसरे पर इस तरह दोष मढ़ रही हैं मानो उन्हें और चुनाव जीतना हो. यह जनभावनाओं का शर्मनाक शोषण ही है.

इसका खुल्लमखुल्ला प्रदर्शन संसद में होता है जहां कश्मीर, पंजाब, आंध्र प्रदेश या असम से संबंधित समस्याओं पर बहस में सिर्फ यह सिद्ध करने की कोशिशें होती हैं कि इन समस्याओं के लिए कौन-सी पार्टी जिम्मेदार है. इन बहस-मुबाहिसों का स्तर ऐसा नहीं है जिनसे समस्याओं का समाधान तो दूर, इनसे निबटने के उपाय भी सामने आ सकें. उदाहरण के लिए, सरकार पंजाब तथा कश्मीर की समस्याओं के लिए राजीव सरकार को दोषी ठहराती है. लेकिन इसका रोना रोते रहने से क्या हासिल होने वाला है? असम या कश्मीर या पंजाब में पिछली सरकार ने जो पाप किए उनके कारण इन राज्यों में फैला आतंक एक-दूसरे की ओर उंगली उठाने से दूर नहीं होने वाला. समस्याएं जैसे-जैसे विकट होती जाएंगी, लोगों का संदेह बढ़ता ही जाएगा.

कश्मीर के मौजूदा संकट के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है. लेकिन अफसोस की बात यह है कि देश के नेतागण कश्मीर को भारतीय राजनैतिक समीकरणों के संदर्भ में ही आंकते हैं—कश्मीर समस्या का वामपंथी दलों पर या भाजपा पर या कांग्रेस और जनता दल के मुस्लिम वोट बैंक पर क्या असर पड़ेगा आदि संदर्भों में. ये नेतागण कश्मीर मसले को उसके कारण भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में, कट्टरपंथी आंदोलन की अप्रत्यक्ष चुनौतियों के संदर्भ में नहीं आंकते.

अब जबकि सीमा पार से पाकिस्तान चुनौतियों के स्वर में बातें कर रहा है और वी.पी. सिंह देश को लड़ाई के लिए हर तरह से तैयार रहने की हिदायतें दे रहे हैं, इंका प्रधानमंत्री पर युद्धोन्माद फैलाने के आरोप लगा रही है. यही इंका अभी हाल तक इस नई सरकार को कमजोर और नरमपंथी बता रही थी.

पंजाब में भी सरकार की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है. शुरुआत उसने राजनैतिक समाधान की उम्मीदें जगाते हुए की थी (वैसे, इंका ने भी चुनाव से पहले इसी तरह का वादा किया था) लेकिन लगता है सरकार भाजपा के दबाव में वहां चुनाव कराने से पीछे हट गई है. अब वही पार्टी, जो सरकार पर युद्धोन्माद फैलाने के आरोप लगा रही है, पंजाब पर श्वेतपत्र जारी करके सरकार को निकम्मी, कमजोर और अकुशल बता रही है और उस पर उन ताकतों के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाने के आरोप लगा रही है जो भारत को तोड़ना चाहती हैं.

असम में जिस 'उल्फा' नामक संगठन के आंदोलन के चलते अब तक 91 लोग मारे जा चुके हैं वह भी राजनैतिक दुष्चक्र का ही प्रतिफल है. इस नए 'स्वतंत्रता' आंदोलन से निबटने में असम सरकार इसलिए असफल रही है क्योंकि या तो वह बिलकुल निकम्मी है या फिर केंद्र सरकार अलगाववादी आंदोलनों से निबटने की कोई स्पष्ट रणनीति नहीं तय कर पाई है और अपनी सहयोगी असम गण परिषद (अगप) को कार्रवाई करने पर मजबूर नहीं कर पाई है. यहीं पर राजनीति का खेल दिखता है. इंका ने प्रचार शुरू कर दिया है कि अगप कोई कार्रवाई नहीं कर सकती क्योंकि इसके ताकतवर नेताओं के 'उल्फा' के साथ संबंध हैं और केंद्र सरकार अगप सरकार पर कोई दबाव नहीं डाल सकती क्योंकि वह खुद को खतरे में नहीं डालना चाहती.

कुल मिलाकर संकट यह नहीं है कि केंद्र कमजोर है या अनिर्णय का शिकार है या वी.पी. सिंह जिस आम सहमति के प्रति सम्मोहित-से हैं वह नहीं बन पा रही है. लेकिन इतना तय है कि लोगों में इस बात पर व्यापक सहमति है कि देश में जो आज समस्याएं हैं वे सबके लिए हैं, और यह कि जो भी नेता इनसे संकल्प, ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ मुकाबला करने की कोशिश करेगा उसे वे एकजुट होकर समर्थन देंगे. असली संकट यह है कि देश के नेतागण अपने बौनेपन से उबर नहीं पा रहे हैं. उन्हें इस बात का जरा भी एहसास नहीं होता कि जब वे राजनैतिक प्रतिशोध में लग जाते हैं तो इससे देश की जिजीविषा ही कमजोर होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● जब तक मैं किसी सार्वजनिक पद पर हूं, ईश्वर भी मुझे नहीं खरीद सकता.

■ **मधु दंडवते,** *हिंदुस्तान*

● सिखों के नेता को तो सिद्धांतों के लिए लड़ना चाहिए. कृपाण की लंबाई के लिए नहीं.

■ **राम जेठमलानी,** सिमरनजीत सिंह मान को पत्र में

● राजा साहब आपने घोषणापत्र में किए वायदों को पूरा नहीं किया. यह मत समझिए कि चुनाव एक बार ही आता है. आपको फिर अवाम के पास जाना होगा. तब हम आपसे पूछेंगे कि आपने क्या किया.

■ **शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी,** *नवभारत टाइम्स*

● क्यों उतर जाऊं जब कोई कारण ही नहीं है? पद मैंने किसी से मांग कर लिया है?

■ **ओमप्रकाश चौटाला,** *माया*

● हमारे पास इतना धन कहां है कि हम अशोक होटल में एअरकंडीशंड कारों में भरकर पत्रकारों को ले जाएं और मनमाफिक लिखवाएं. हम हुल्लड़बाज नहीं हैं.

■ **सुंदरलाल बहुगुणा** (चिपको आंदोलन नेता), *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

● यह सही है कि मैं राजनीति में हूं लेकिन खेल की राजनीति दूसरी होती है और खेल के क्षेत्र में राजनीति को नहीं घसीटना चाहिए.

■ **मुहम्मद असलम खां** (उ.प्र. के खेलमंत्री), *आज*

● गत दो वर्षों से कई लोग खिलाड़ियों को भड़का रहे हैं. वे कभी जूतों का मामला उठाते हैं तो कभी ट्रैक सूट का, कभी राशि की बात करते हैं तो कभी टी-शर्ट की. लेकिन कभी खिलाड़ी यह बात नहीं करते कि उनका प्रदर्शन कैसा है.

■ **आर. प्रसाद** (भारतीय हॉकी संघ के अध्यक्ष), *राजस्थान पत्रिका*

● राजा का बेटा राजा ही हो जैसी चीज यहां (फिल्म जगत में) नहीं चलती.

■ **अमरीश पुरी,** *धर्मयुग*

● देखिए, अभिनय मेरा पेशा है. और पेशे में शर्म काहे की? इसी बात (अंग प्रदर्शन) के तो हमें पैसे मिलते हैं.

■ **सोनिका गिल,** *दैनिक जागरण*

● इंतजार कर रही हूं, मेरा भी जमाना आएगा. जल्दबाजी क्या है?

■ **भानुप्रिया,** *स्क्रीन*

● मैं इतनी संवेदनशील नहीं हूं कि उपेक्षा से घबराकर आत्महत्या कर लूं. भरी जवानी में भला कौन खूबसूरत औरत खूबसूरत दुनिया छोड़कर मरना चाहेगी.

● **जयप्रदा,** *पंजाब केसरी*

आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

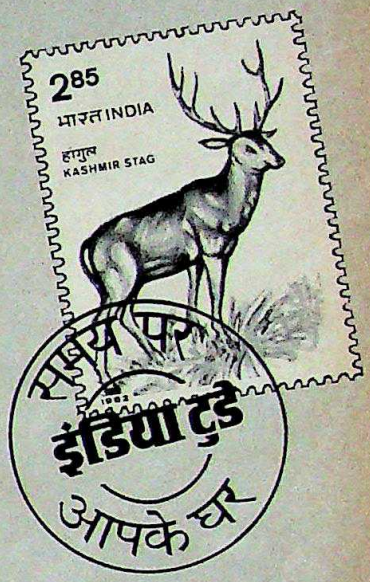

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ मिलाने का दर्द

● लगता है कि पिछले नवंबर के चुनावी 'महाभारत' में प्रधानमंत्री पद गंवा बैठने के बाद राजीव गांधी के लिए हाथ मिलाना सजा भुगतने जैसी बात बन गई है.

उन्हें ऐसी पहली सजा हार' के तुरंत बाद राष्ट्रपति भवन में विश्वनाथ प्रताप सिंह के शपथ

ग्रहण समारोह के दौरान भुगतनी पड़ी. वहां विश्वनाथ प्रताप सिंह के बेटे अजेय ने, जो सेंट किट्स कीचड़ उछाल अभियान का निशाना बने, अपना परिचय देते हुए राजीव की ओर हाथ बढ़ा दिया और राजीव भौचक रह गए!

पिछले पखवाड़े फिर वही हुआ. पर इस बार हाथ बढ़ाने वाले शख्स सिमरनजीत सिंह मान थे. रिहाई के बाद मान ने पहली दफा खुद को राजीव के साथ एक ही मंच पर पाया था. इस बार राजीव ने मान का हाथ पकड़कर वहां मौजूद लोगों को चकित कर दिया. इससे अचकचाए अधिकांश उपस्थित फोटोग्राफर कैमरे को क्लिक करने की बात भूल गए. इसलिए उन लोगों ने फिर एक बार वही दृश्य दुहराने की मांग की. लेकिन मान ने अपना तेवर दिखाया, "मैं कोई उनका अनुयायी नहीं हूं. उनसे कहिए कि मेरे साथ फोटो खिंचवाना हो तो यहां आएं."

अब उखड़ने की बारी राजीव की थी. कुछ ही क्षण पहले का माहौल एकाएक कैसे बदल गया शायद उन्हें समझ नहीं आया. इस नजारे के चश्मदीद एक सज्जन ने बताया: राजीव मान के चश्मे और लहराती सफेद दाढ़ी को देख उन्हें प्रकाश सिंह बादल समझ बैठे थे.

हर कोई सावधान

● बंबई से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक अंग्रेजी पत्रिका 'इलॅस्ट्रेटिड वीकली' में छपे चंद्रशेखर के भंडाफोड़ू साक्षात्कार और उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के साथ टेलीफोन पर हुई बातचीत को अरुण शौरी द्वारा जस का तस छापने का मिलाजुला असर राजधानी के राजनैतिक हलके में साफ-साफ दिखने लगा है.

आप माने या नहीं, अब राजनेता पत्रकारों के सामने पहले जितना बड़ा मुंह खोलकर नहीं बात करते बल्कि हर बात सोच-समझकर, तौलकर कहने की कोशिश करते हैं. संसद के केंद्रीय कक्ष में अब राजनीतिकों के मुंहफट, चुनींदा मुहावरे पहले की तरह सुनाई नहीं पड़ते.

यहां तक कि अनौपचारिक लहजे में बात करने वाले या यों कहें कि बड़बोले वसंत साठे भी अब सावधान हो गए हैं. अपनी लच्छेदार बयानबाजी की वजह से हमेशा पत्रकारों के प्रिय ये इंका नेता अब

सभी कार्टून अजीत नैनन

पत्रकारों को इंटरव्यू देने के दौरान अतिरिक्त रूप से चौकन्ने रहने लगे हैं. पिछले पखवाड़े एक पत्रकार उनसे मिलने गए. उनके घर पहुंचने पर उन्होंने पाया कि साठे की मेज पर टेप रिकार्डर पड़ा हुआ है. और साठे ने पत्रकार का अभिवादन करने के पहले ही रिकार्डर का बटन चालू कर दिया.

आखिरी बार?

● सत्ता रहे या जाए, राजसी ठाठबाट बरकरार रहता है. सत्ताच्युत नेता निश्चित रूप से महाराजा तो बना ही रह सकता है. सो, अपने विशाल रेल साम्राज्य को जॉर्ज फर्नांडीस नाम के समाजवादी के हाथ चले जाने से बेपरवाह '20वीं सदी के महाराजा' माधव-

राव सिंधिया हाल ही में पूरे शाही ठाठबाट में दिखे.

आखिर महाराजा ने अपनी कुर्ता-पाजामा वाली सामान्य वेशभूषा क्यों कर त्यागी? मौका था जापान के एक प्रतिष्ठित फोटोग्राफर से फोटो खिंचवाने का. यह फोटोग्राफर भारतीय राजाओं के बारे में किताब निकालने जा रहे हैं. उम्मीद के मुताबिक पुस्तक में ग्वालियर के जयविलास महल को विशेष स्थान मिला है. लेकिन महल महाराजा के बिना अधूरा होता है इसलिए सिंधिया को अपना पुराना स्वरूप धारण करना पड़ा.

खबर यह है कि पुराने स्वरूप में लौटने के लिए उनकी मान-मनौवल करने की जरूरत नहीं पड़ी. इसके पहले सिंधिया को अपनी बेटी की कर्ण सिंह के बेटे के साथ शादी के दौरान राजसी परिधान में देखा गया था. यह शादी देश भर में चर्चा का विषय बनी थी. लेकिन सिंधिया के लिए जापानी फोटोग्राफर के कैमरे के सामने ही सही, महल की शाही शानो-शौकत में राजा जैसा दिखने का यह अवसर आखिरी भी हो सकता है. ऐसा अंदेशा इसलिए है क्योंकि उनकी मां विजयाराजे सिंधिया ने उन्हें जयविलास पैलेस से बाहर करने के लिए पुरजोर अभियान छेड़ दिया है.

मंत्री बनाम डॉक्टर

● स्वास्थ्यमंत्री नीलमणि राउतराय ने जब स्वास्थ्य मंत्रालय का कार्यभार संभाला था तो उन्हें यह जरूर भान हो गया होगा कि वस्तुतः हर नागरिक के जीवन को प्रभावित करने वाले इस विशाल मंत्रालय में उन्हें कागज पर कलम घिसने से ज्यादा कुछ करने की जरूरत होगी. लेकिन उन्हें यह एहसास बमुश्किल ही रहा होगा कि उनसे चिकित्सक की भूमिका निभाने की भी मांग की जा सकती है.

उन्हें यह जानकर खासा आश्चर्य हुआ कि हर नागरिक इससे पूरी तरह वाकिफ नहीं है कि स्वास्थ्य मंत्री का मुख्य काम सरकारी चिकित्सालयों, परिवार कल्याण योजना, पोषण कार्यक्रमों और टीकाकरण अभियानों की देखरेख करना है.

उनके दफ्तर में दस्तक देने वाले कई लोगों की धारणा होती है कि राउतराय देश के 'हेड डॉक्टर

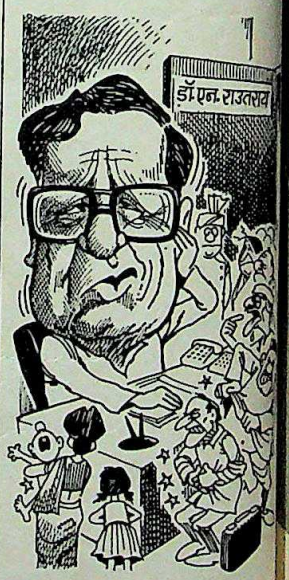

साहब' हैं. सो, राउतराय का लगभग हर दिन ऐसे लोगों से सामना हो जाता है जो उनसे सर्दी, जुकाम, डिस्पेप्सिया और बुखार के इलाज का पर्चा लिखने को कहते हैं. और उनके निजी सहायक दर्शनार्थियों से कहते सुने जाते हैं कि नॉर्थ ब्लॉक के दफ्तर का प्रतीक्षा कक्ष बाह्य रोगी चिकित्सा केंद्र नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान न दे

यदि रु.7000 का रिपेयर बिल आपके लिए ध्यान देने की बात नहीं

ऑयल,फ़्युअल और एअर फ़िल्टरों पर निर्भर करता है आपकी कार के इंजन का भविष्य. यदि फ़िल्टर काम करने में सक्षम नहीं हैं तो कार के वॉल्व्ज़ अपनी जगह से हिल जाएंगे, पिस्टन रिंग्स को नुक्सान पहुँचेगा, सिलिण्डर की भीतरी सतह नष्ट हो जाएगी, इंजन जाम हो जाएगा... और नतीजा, रु. 7000 का रिपेयर बिल.

और यदि आपकी कार के फ़िल्टर काम देते हैं, ऐसे जैसे कि प्यूरोलेटर—तो आपकां इंजन चलेगा दुरुस्त, आपको मिलेगी शानदार माईलेज, सर्विसिंग और रख-रखाव पर होगा कम से कम खर्च.

इसलिए प्यूरोलेटर पर ही ज़ोर दीजिए. आपका मैकेनिक भी आपको यही सलाह देगा.

Purolato

दुनिया में सबसे ज्यादा [illegible] फ़िल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-अपने मोर्चे

● महिलाओं के खिलाफ होने वाले अत्याचारों को लेकर जिस तरह की जागृति आ रही है उसमें उन बेचारे पतियों की आवाज तो दबकर रह गई है जो पत्नियों से पीड़ित हैं. ऐसे में अगर कुछ पति

सभी कार्टून जयंती

साहस बटोरकर अपनी बिरादरी के हकों की लड़ाई का झंडा बुलंद करने का फैसला कर भी लें तो उन्हें किस तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है इसका उदाहरण अभी हाल ही में नागपुर में देखने को मिला.

'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा' ने बचा-खुचा साहस बटोरकर नागपुर में अपना सम्मेलन करने का फैसला किया. सम्मेलन में पत्नी के हाथों तरह-तरह से पीड़ित होने वाले पति अपने अधिकारों की लड़ाई की रणनीति तय करने के लिए इकट्ठा हुए. लेकिन लगता है कि सम्मेलन के सितारे समय से पहले ही गर्दिश में आ गए और मोर्चे के पुर्जों में समय से पहले ही मोर्चा लग गया. अभी सम्मेलन की कार्रवाई शुरू ही हुई थी कि महिलाओं के एक दल ने वहां हल्ला बोल दिया. कहा जा रहा है कि झगड़ा तब शुरू हुआ जब एक उत्साही पीड़ित पुरुष ने माओ-त्से-तुंग की शैली में नारा लगाया "दुनिया के पतियो एक हो जाओ. तुम्हारे पास खोने के लिए पत्नी के अलावा अब कुछ नहीं बचा है." इस नारे से बिगड़ी महिलाओं ने अपने इस हमले में मुंह से चलने वाले बाणों के बदले सड़े टमाटर, अंडे और आलू प्याज की ऐसी धुआंधार फायरिंग की कि बेचारे पति अपने मोर्चे छोड़ भाग खड़े हुए. देखना है कि अगला मोर्चा अब कहां जमता है?

गणेश जी की गुमशुदगी

● विश्वास और श्रद्धा की अपनी ऊंचाई होती है. इन ऊंचाइयों को नापने का एक मौका अभी पिछले दिनों भारतीय और जर्मन वैज्ञानिकों के उस संयुक्त दस्ते को मिला जो मौसम का अध्ययन करने के लिए हवा में उड़ने वाले गुब्बारों का इस्तेमाल कर रहा है.

इन प्रयोगों के अंतर्गत पिछले दिनों मौसम विज्ञानियों ने हैदराबाद में हाइड्रोजन गैस से उड़ने वाला एक ऐसा गुब्बारा छोड़ा जिसमें वायुमंडल की विभिन्न ऊंचाइयों पर हवा का दाब, उसमें मौजूद गैसों का अनुपात, धूल की मात्रा और तापमान आदि की जांच के यंत्र रखे गए थे. लगभग 20 किलो वजन के यंत्रों के अलावा गुब्बारे से जुड़ी टोकरी में गणेश जी का फोटो भी रखा गया.

गुब्बारा छोड़ा गया. पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गुब्बारे के साथ गए यंत्रों ने अलग-अलग ऊंचाइयों पर जरूरी आंकड़े रिकार्ड किए. निर्धारित ऊंचाई तक पहुंचने पर वैज्ञानिकों ने जमीन से ही बेतार संदेश भेजकर गुब्बारे को फोड़ दिया और टोकरी में लगी छतरी के सहारे वैज्ञानिक यंत्र सुरक्षापूर्वक जमीन पर उतार लिए गए. लेकिन खोजबीन के बाद जब वैज्ञानिकों ने टोकरी में रखे सामान की जांच की तो पता चला कि गणेश जी का फोटो गायब है. कुछ वैज्ञानिकों को डर है कि गणेश जी

गुब्बारे से निकलकर आसमान में चले गए लेकिन दूसरों की मान्यता है कि गणेश जी को अपने साथ ले जाने का काम किसी श्रद्धालु का है जिसे यह गवारा नहीं हुआ कि उसके आराध्य देव का फोटो खेत में पड़ा रहे.

बैरंग वापसी

● बारात के समय समधियों के बीच तकरार हो जाना, मारपीट की नौबत आ जाना और बारात का बैरंग लौट जाना तो सुना गया है पर दूल्हे की बैरंग वापसी तो कम सुनी गई है. लेकिन पिछले

दिनों सोनीपत के निकट एक गांव में बारात को खाली हाथ लौटाए जाने का मामला कुछ नई रोचकता भरा रहा.

गाजे-बाजे के साथ गांव पधारी बारात की रौनक देखने के लिए जमा हुए लोग यह देखकर दंग रह गए कि सजी सजाई घोड़ी बिना दूल्हे के चली आ रही है. बिन दूल्हे की इस बारात को देखने वाले तब अचंभे में आ गए जब उन्होंने देखा कि दूल्हे मियां भी बाकी बारातियों के साथ मिलकर नाच रहे हैं. लोकलोज से डरे लड़कीवालों ने तुरंत आपत्ति उठाई. हारकर दूल्हे राजा को वापस घोड़ी पर बैठना पड़ा. लेकिन कुछ देर बीतने पर दूल्हे ने एक नया कमाल दिखाकर ससुराली रिश्तेदारों को फिर से परेशानी में डाल दिया. लड़कीवालों के यहां पहुंचने पर जब माला पहनाने की रस्म शुरू हुई तो दूल्हे ने दुलहन का घूंघट पलट दिया जिस पर लड़कीवालों ने हंगामा कर दिया. बड़े-बूढ़ों ने बीच में पड़कर इस हंगामे को भी किसी तरह ठंडा कर दिया. लेकिन बात तब हाथ से निकल गई जब फेरे के समय मंडप में दूल्हे मियां ने फरमाइश रख दी कि उनका एक दोस्त न सिर्फ फेरों में उसके साथ रहेगा बल्कि दुलहन के साथ आधे फेरे वह भी लेगा. दूल्हे की इस मांग से लड़कीवालों का गुस्सा ऐसा भड़का कि बारात को खाली हाथ वापस भागना पड़ा.

विरोध ऐसा भी

● जब प्रशासन लोगों की तकलीफों पर ध्यान देने के बदले कान में तेल डालकर सोने का फैसला कर ले तो ऐसी हालत में दो ही रास्ते हो सकते हैं. एक तो यह कि लोग अपनी तकलीफों के साथ जीना सीख लें और शिकायत करने के बजाए चुपचाप सहते रहें. और दूसरा रास्ता यह है कि नागरिक आपस में मिल जाएं और अपनी आवाज इतनी बुलंद करें कि प्रशासन के लिए सोना या सोने का नाटक करना भी दूभर हो जाए. राजस्थान के कोटा शहर के नागरिक इन दिनों दूसरा नुस्खा अपनाए हुए हैं.

टूटी सड़कों, खुले मैनहोलों, और रात के समय अंधेरा बिखेरने वाले खंभों से परेशान लोगों ने 'नगर परिषद प्रशासन जगाओ' अभियान चलाकर नागरिकों के चेहरों पर ऐसी रोशनी खिला दी है कि प्रशासन की निरंतर चलने वाली उपेक्षा के जवाब में कुछ स्थानीय संगठनों ने इस अभियान के तहत रंग-बिरंगा पोस्टर युद्ध छेड़ दिया है. उदाहरण के लिए सड़क के बीचोंबीच खुले मैनहोलों के सामने जो पोस्टर मिलेगा, उस पर लिखा होगा, "सावधान, नरक परिषद आपकी मृत्यु का इंतजाम कर चुकी है." इसी तरह सड़क को घेरकर बैठे जानवरों के बीच कोई युवक तख्ती लिये खड़ा हो जाएगा जिस पर लिखा होगा "पशुओं ने

रोका यातायात, सुअरों ने मचाया घमासान, मेरी नरक परिषद महान." और रात के समय गुल रहने वाले खंभों पर लगे पोस्टर की इबारत होगी "इज्जत-आबरू और जान-माल लुटाने का सही स्थान." बेचारा प्रशासन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि, अनन्त अनुराग ही जीवन है.

विशिष्ट. आप ही की तरह.

GRAVIERA SUITING GR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिमंडल विस्तार

सबको खुश रखने की चतुराई

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने हर गुट को नुमाइंदगी जरूर दी लेकिन कमान अपने ही हाथ रखी

राजनैतिक हलकों में पिछले कुछ हफ्तों से सरगर्मी-सी थी. केंद्रीय मंत्रिमंडल के विस्तार की संभावना के कारण जनता दल के कई सांसद इस उम्मीद से अपने-अपने फोन से चिपके बैठे थे कि क्या पता कब प्रधानमंत्री निवास से बुलावा आ जाए. और पिछले पखवाड़े जब फोन की घंटियां बजीं तो कई लोग जो एकदम आश्वस्त थे कि मंत्रिमंडल में तो शामिल हो ही जाएंगे, निराश हो गए. यही हाल पार्टी के विभिन्न गुटों के नेताओं का हुआ क्योंकि सूची उनसे भी छिपाकर रखी गई थी. शपथ ग्रहण समारोह के दिन प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने खुद ही सभी उम्मीदवारों को फोन किया और उन्हें 7, रेसकोर्स रोड के अपने निवास में बुला लिया.

राष्ट्रपति भवन के सुसज्जित अशोक हॉल में हुए समारोह में जब नामों की घोषणा की गई तो वहां आमंत्रित लोग और दल के दिग्गज हैरत में पड़ गए. 100 दावेदारों में से वी.पी. सिंह ने 18 ऐसे लोग छांटे जो कुछ हद तक पार्टी के गुटीय नेताओं से जुड़े हैं लेकिन वी.पी. सिंह के प्रति जिनकी वफादारी संदिग्ध नहीं है. संतुलन बनाए रखने की वी.पी. सिंह की करतबबाजी की इसे एक और मिसाल माना जा सकता है.

यह संतुलन उन्होंने सिर्फ पार्टी के दूसरे सत्ता केंद्रों के बीच ही नहीं बिठाया बल्कि वे मंत्रिमंडल में विभिन्न जातियों व समुदायों को जगह देने में भी कामयाब रहे. अब मंत्रिमंडल के सदस्यों की संख्या 40 हो गई है. इस विस्तार के बाद उद्योगमंत्री अजित सिंह ने कहा, "मैंने शिद्दत से महसूस किया है कि प्रधानमंत्री में सही लोगों के चयन की प्रतिभा और हर एक के हितों का खयाल रखने की भावना है." जनता दल के महासचिव एस. जयपाल रेड्डी के अनुसार, "प्रधानमंत्री ने फिर साबित कर दिया कि जनता दल सरकार की एक अलग पहचान होगी. यह युवा और तजुर्बेकार लोगों का सबसे अच्छा अनुपात है."

जनता दल के भीतरी असंतोष के प्रतीक बन चुके देवीलाल की उपस्थिति शपथ ग्रहण समारोह में महत्वपूर्ण थी. यह इस बात का सबूत था कि नए मंत्रियों की सूची से वे

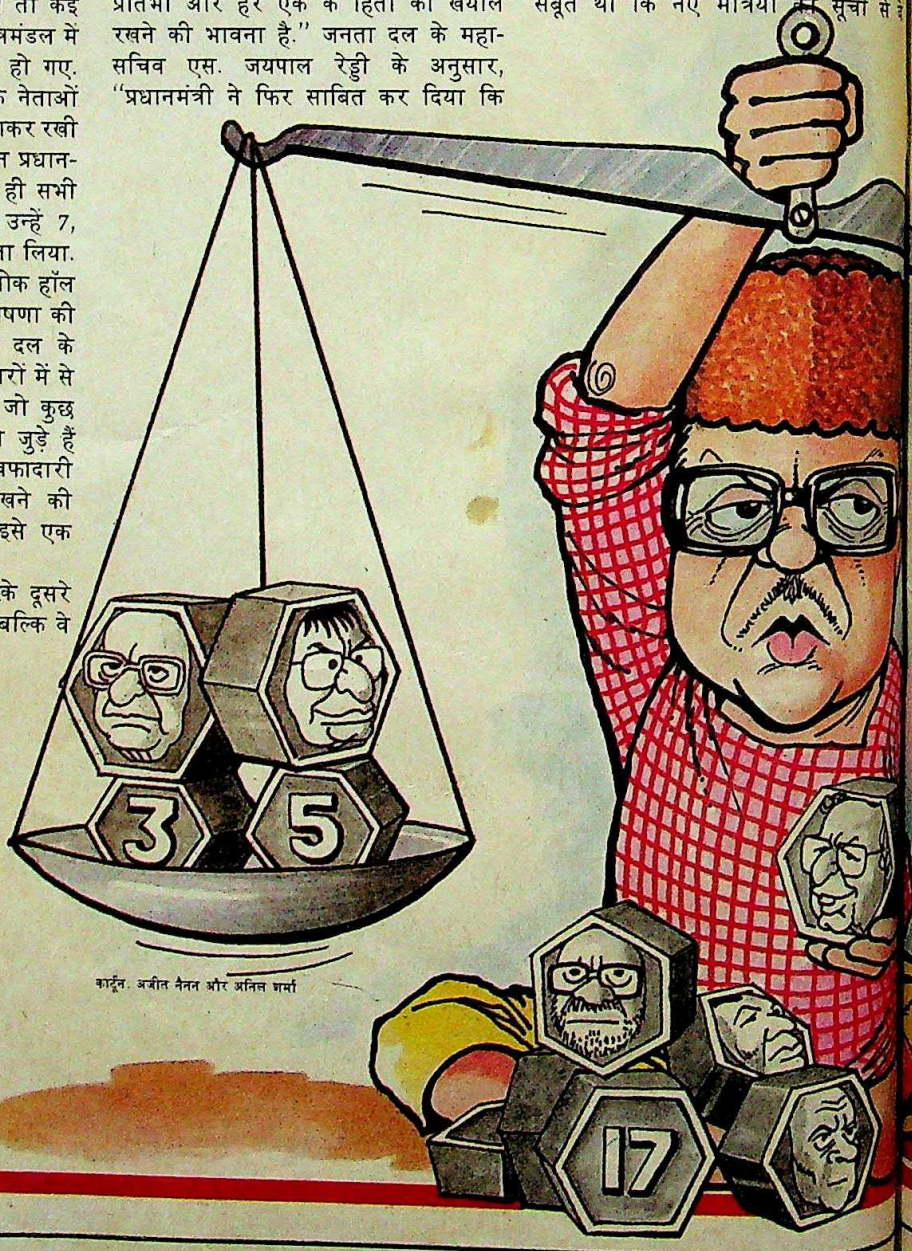

कार्टून: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

मंत्रिमंडल के 40 सदस्यों में वी.पी. सिंह के 17, देवीलाल के 6, अजित सिंह के 5, बीजू पटनायक के 3 और चंद्रशेखर के 3 वफादार माने जाते हैं. पर ये अपने नेताओं के कहने पर शायद ही चलें....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहमत हैं. मंत्रिमंडल के 40 सदस्यों में वी.पी. सिंह के 17, देवीलाल के 6, अजित सिंह के 5, बीजू पटनायक के 3 और चंद्रशेखर के 3 वफादार माने जाते हैं.

दरअसल मंत्रिमंडल के इस विस्तार की योजना प्रधानमंत्री ने बजट सत्र से पहले ही बना ली थी. लेकिन महम उपचुनाव के बाद उठे विवाद और कश्मीर के अलगाववादी आंदोलन से पैदा हुए राजनैतिक संकट ने उनके हाथ रोक दिए थे. इसके अलावा देवीलाल, अजित सिंह, रामकृष्ण हेगड़े जैसे क्षत्रपों; लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह यादव, चिमनभाई पटेल, बीजू पटनायक जैसे मुख्यमंत्रियों; और चिर-असंतुष्ट चंद्रशेखर जैसों की जोड़तोड़ के कारण भी प्रधानमंत्री के हाथ हुए बंधे थे.

हालांकि वी.पी. सिंह बार-बार कह रहे थे कि सरकार का मुखिया होने के नाते अपनी टीम चुनना उनका विशेषाधिकार है पर उन्होंने आम सहमति का आभास बनाए रखा. पिछले दो महीनों में उन्होंने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ 50 से भी ज्यादा बैठकें की और पार्टी सांसदों के कामकाज का भी जायजा लिया. उन्होंने गुटीय और जातीय नेताओं से 40 से ज्यादा ऐसे लोगों के नाम भी मांगे जिन्हें मंत्री बनाया जा सकता था.

परंतु इस सारी कसरत के बावजूद प्रधानमंत्री कैबिनेट स्तर के चार मंत्रियों के पद नहीं भर सके. इन चार पदों के लिए कम-से-कम 12 उम्मीदवार थे जिनमें विद्याचरण शुक्ल, यशवंत सिन्हा, रशीद मसूद, राजमंगल पांडे, समरेंद्र कुंडू, रामधन, पुरुषोत्तम कौशिक और माकपा तथा अंबानी समर्थित अशोक सेन के नाम प्रमुख हैं. प्रधानमंत्री इनमें से किसी को भी नाराज नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने कैबिनेट स्तर के नए मंत्रियों के चयन का विचार ही छोड़ दिया.

आखिर वी.पी. सिंह ने 30 नामों की सूची में से 18 नाम राष्ट्रपति के पास भेजे. कुछ नाम समझौतावादी मजबूरियों के परिणाम थे. उन्होंने राजनैतिक सत्ता का स्वाद हर गुट के नेता को चखा दिया.

जातीय समीकरणों के लिहाज से भारत के इस पहले राजपूत प्रधानमंत्री ने जानबूझकर अपनी जाति के लोगों को नजरअंदाज कर दिया. उन्होंने जाट और कुर्मी जैसी पिछड़ी जातियों को 50 फीसदी प्रतिनिधित्व दिया. यही जातियां जनता दल का मुख्य आधार हैं. ऑक्सफोर्ड में पढ़े और बिहार से लोकसभा सदस्य हरिकिशोर सिंह ही उनकी मंत्री परिषद के एकमात्र ठाकुर सदस्य हैं. उन्हें विदेश राज्यमंत्री बनाया गया है. इस एक चयन से एक तरफ तो उन्होंने दिखा दिया है कि वे राजनैतिक रूप से निष्कलंक बने रहना चाहते हैं, दूसरे हरिकिशोर सिंह चंद्रशेखर के समर्थक हैं और प्रधानमंत्री के भी नजदीकी माने जाते हैं.

आजादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ है जब केंद्रीय मंत्रिमंडल में छह जाट मंत्री शामिल किए गए हैं. गृह मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "अब केंद्रीय सत्ता की कुंजियां ग्रामीण बहुमत के हाथ में हैं." परंतु प्रधानमंत्री कार्यालय का कहना है कि इस बार जोर मंत्री बनाए जाने वाले व्यक्ति की अच्छी छवि से ज्यादा मंत्रालय को असरदार तरीके से चलाने की क्षमता पर दिया गया है. लेकिन यह तथ्य अभी साबित होना है क्योंकि 40 में से 22 मंत्री पहली बार कोई मंत्रालय संभाल रहे हैं.

लेकिन प्रधानमंत्री क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व देने में कामयाब नहीं हो पाए हैं. अभी भी देश के 25 में से 14 राज्य ऐसे हैं जिन्हें मंत्रिमंडल में कोई प्रतिनिधित्व नहीं मिला है. और जैसी उम्मीद थी, हर दूसरा मंत्री दो प्रमुख हिंदी राज्यों—उत्तर प्रदेश (15) और बिहार (7)—से ही है. इन दोनों राज्यों ने जनता दल के 85 लोकसभा सदस्य संसद में भेजे हैं. खुद वी.पी. सिंह ने भी स्वीकार किया है कि कुछ असंतुलन रह गया है जिसे ठीक किया जाना है. पर कई राज्यों से जनता दल का एक भी सांसद नहीं है इसलिए प्रधानमंत्री के लिए विकल्प सीमित ही रहेंगे. हिंदी क्षेत्र की पार्टी वाली छवि मिटाने के लिए उन्होंने दक्षिण से 6 मंत्री शामिल करके उसे जरूरत से ज्यादा प्रतिनिधित्व दिया है. जनता दल दक्षिण में लोकसभा की ज्यादा सीटें हासिल नहीं कर सका. इसलिए उन्होंने अपने मंत्रियों—एम.जी.के. मेनन, राजा रमन्ना और एम.एस. गुरुपदस्वामी—को दूसरे प्रदेशों से राज्यसभा सदस्य बनवा दिया. उनका कहना है, "समस्या सिर्फ यह है कि दक्षिण से हमारे बहुत कम सदस्य चुनाव जीत सके. लेकिन फिर भी संतुलित मंत्रिमंडल बनाने के लिए सभी क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व दिया गया है."

मंत्रालयों का बंटवारा करते समय वी.पी. सिंह ने चाणक्य नीति का सहारा लिया. निहित स्वार्थों को एकजुट होने से रोकने के लिए उन्होंने नए मंत्रियों को ऐसे विभाग दिए जिनकी उन्हें उम्मीद भी नहीं थी. मसलन, अजय सिंह पर्यटन विभाग की उम्मीद कर रहे थे पर उन्हें रेल भवन में जॉर्ज फर्नांडीस के साथ लगा दिया गया. रशीद मसूद नागरिक उड्डयन के दावेदार थे पर उन्हें स्वास्थ्य व परिवार कल्याण विभाग का स्वतंत्र कार्यभार थमा दिया गया.

अनिल शास्त्री को उप वित्तमंत्री बनाना सबसे महत्वपूर्ण फैसला था. इस महत्वपूर्ण विभाग के लिए सभी गुटों के नेताओं ने अपने-अपने आदमी के नाम की सिफारिश की थी. परंतु प्रधानमंत्री ने सभी सिफारिशों को नजरअंदाज कर दिया. अनिल शास्त्री न केवल उनके वफादार हैं वरन उनकी साख भी बेदाग है. यानी केंद्रीय मंत्रिमंडल में फिर एक बार लाल बहादुर शास्त्री के परिवार को प्रतिनिधित्व मिल गया है. एक और चालाकी

...बाकी 6 मंत्री मुख्यमंत्रियों और पार्टी के क्षेत्रीय नेताओं के वफादार भले ही माने जाते हैं पर उनसे अपने गुटीय हितों के लिए वी.पी. सिंह को दांव पर लगाने की उम्मीद नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What happens when a Skypak Courier meets a
to the girl from Singapore?

"Don't kill me with your charm! I have a job to do..."

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.
Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues SC 575.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरी नियुक्ति थी गृह राज्यमंत्री पद पर पूर्व छात्र नेता और चंद्रशेखर के पक्के समर्थक सुबोधकांत सहाय की. गृह मंत्रालय इस समय चंद्रशेखर के टेलीफोन टैपिंग के आरोप की जांच कर रहा है. सरकार के दावे के मुताबिक अगर चंद्रशेखर का आरोप गलत साबित हुआ तो गृह मंत्रालय की विश्वसनीयता पर आरोप लगाना चंद्रशेखर के लिए मुश्किल हो जाएगा.

वी.पी. सिंह ने बिहार के सांसद और 'ताऊ के आदमी' नीतीश कुमार को कृषि राज्यमंत्री बनाकर देवीलाल को काफी राहत दी है. इस विभाग के लिए एक और राज्यमंत्री भी नियुक्त किया गया है.

साथ ही मंत्रिमंडल की कार्यप्रणाली को न बदलने के वादे के विपरीत प्रधानमंत्री ने उसमें कुछ छोटे-मोटे लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं. इन बदलावों में एक संदेश भी छिपा है. उन्होंने नीलमणि राउतराय को पर्यावरण व वन मंत्रालय में कैबिनेट मंत्री बनाकर मेनका गांधी के पर कतर दिए हैं. अभी तक मेनका राज्यमंत्री के रूप में इस मंत्रालय का स्वतंत्र कार्यभार संभाले हुए थीं. मेनका ने अपने हठी तौर-तरीकों से

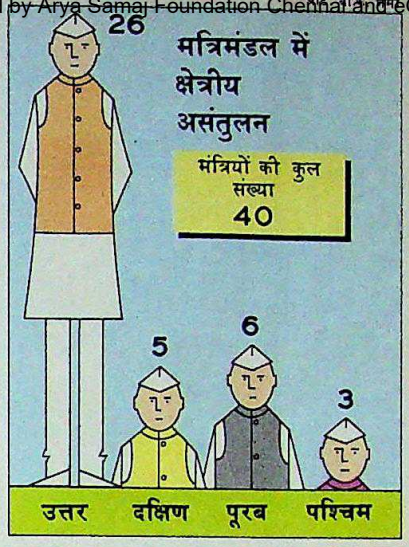

वी.पी. सिंह क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व नहीं दे पाए. 25 में से 14 राज्यों को ही कैबिनेट में नुमाइंदगी मिली है

वरिष्ठ अधिकारियों और मंत्रिमंडलीय सहयोगियों को नाराज कर दिया था. इसी तरह के.पी. उन्नीकृष्णन से संचार मंत्रालय का कार्यभार लेकर उन्होंने उन्नीकृष्णन और दूरसंचार आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा के बीच चल रहे विवाद को खत्म कर दिया. परंतु इसके साथ ही पित्रोदा के खिलाफ लगे आरोपों की सीबीआई द्वारा जांच कराने की घोषणा करके उन्होंने यह भी बता दिया कि यह उलटफेर पित्रोदा की जीत नहीं है. इन बदलावों के अलावा उन्होंने अरुण नेहरू, आरिफ और तेलुगु देशम तथा द्रमुक के नियंत्रण वाले मंत्रालयों को हाथ नहीं लगाया.

प्रधानमंत्री कार्यालय के हिसाब से संसद के मौजूदा सत्र के बाद मंत्रिमंडल का एक और विस्तार होगा. जनता दल के हालांकि लोकसभा में 142 और राज्यसभा में 38 सदस्य हैं परंतु मंत्रिपरिषद का आकार 55 सदस्यों तक बढ़ाया जा सकता है. प्रधानमंत्री जनता दल संगठन में भी उलटफेर का इंतजार कर रहे हैं. इसके बाद वे विभिन्न गुटों के बीच संतुलन बिठाने की तीसरी कसरत करेंगे.

—प्रभु चावला

जनता दल

नया मोर्चा खुला

जनता दल के लिए जैसे फिर चुनाव का मौसम आ गया है. पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के चुनाव का कार्यक्रम जब पिछले पखवाड़े घोषित हुआ तो जनता दल में एक और राजनैतिक जंग की जमीन तैयार हो गई. चंद्रशेखर, देवीलाल और अजित सिंह जैसे गुटीय नेताओं ने यों तो खुद को इस चुनाव से अलग रखा परंतु परदे के पीछे इन नेताओं की आपसी लड़ाई जारी है.

देवीलाल ने अगर अपने इरादों को अपने तक ही सीमित रखा होता तो पार्टी अध्यक्ष पद से विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस्तीफे से खाली हुई जगह भरने का सवाल ही न पैदा होता. चीन जाने से पहले देवीलाल ने कहा कि पार्टी का नया अध्यक्ष न सिर्फ दक्षिण से होना चाहिए बल्कि सर्वसम्मति के नाम पर कोई उम्मीदवार ऊपर से थोपा नहीं जाना चाहिए.

राष्ट्रीय अध्यक्ष की बात तो दूर, जनता दल उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, गुजरात और ओडीसा में पार्टी पदों के लिए योग्य व्यक्ति नहीं खोज पाया है. इन प्रदेशों में अध्यक्ष पद या तो मुख्यमंत्री के पास है या किसी और मंत्री के पास. और ये लोग पार्टी के कामकाज को नजरअंदाज किए हुए हैं. हालत यह है कि इसके केंद्रीय कार्यालय के पास महासचिवों के लिए हवाई जहाज के टिकट खरीदने तक के पैसे नहीं हैं. महासचिव यशवंत सिन्हा स्वीकार करते हैं. "पार्टी का ढांचा काफी कमजोर है. हम सब सरकार में शामिल हो गए हैं."

रेड्डी (बाएं); और बोम्मईः दावेदार

पार्टी की राजनैतिक मामलों की समिति ने तय किया है कि पार्टी अध्यक्ष पद का चुनाव 1 मई को होगा और उन सभी लोगों को, जिन्होंने जनता दल के टिकट पर लोकसभा या विधानसभा का चुनाव लड़ा था, इस पद के लिए वोट डालने का अधिकार होगा. अध्यक्ष पद का उम्मीदवार बनने के लिए ऐसे कम-से-कम 30 मतदाताओं का समर्थन पाना होगा.

इस चुनावी खेल की पहली चाल खुद देवीलाल ने चली. उन्होंने कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एस.आर. बोम्मई के पक्ष में हवा बांधनी शुरू कर दी. उनके बेटे ओमप्रकाश चौटाला तो बाकायदा उनके प्रचार में जुट गए. जवाब में रामकृष्ण हेगड़े और ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक ने राज्यसभा सदस्य एस. जयपाल रेड्डी को मैदान में खड़ा कर दिया. विश्वनाथ प्रताप सिंह के बड़े भाई संतबख्श सिंह और बिहार के सांसद हुकुम नारायण देव यादव ने भी उम्मीदवारी का पर्चा दाखिल कर दिया. लेकिन अगर समझौते का कोई फार्मूला नहीं उभरा और 'असली चुनाव' हुआ तो पार्टी में दरार गहरी हो सकती है.

—प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आग बुझाने के यंत्र की बनावट में बस एक बात का ध्यान नहीं रखा गया– आग का.

ज़रा रोज़मर्रा के हालात में आग लगने पर पारम्परिक आग बुझाने का यंत्र इस्तेमाल कर देखिये. तीन मिनिटों के अंदर, क्योंकि उसके बाद आग काबू के बाहर हो जाती है.

पहले तो आग बुझाने का यंत्र ढूँढिये. फिर उस भारी-भरकम यंत्र को उठाइये. घबराहट की उसी हालत में, पचासों निर्देशों को पढ़कर याद करने की कोशिश करिये, फिर दौड़िये वापस... लीजिये, तीन मिनिट यहीं हो गये.

अफ़सोस की बात यह है, कि असली ज़िंदगी में आग लगने पर पारम्परिक आग बुझाने का यंत्र किसी काम का नहीं रहता – ख़ास तौर से अप्रशिक्षित लोगों के हाथ में. तभी तो आपको चाहिये, इस्तेमाल में आसान – सीज़फ़ायर.

यह ऐसा आग बुझाने का यंत्र है, जो छोटा-सा पर जबरदस्त शक्ति से भरपूर है. बस इसका मुँह आग की लपटों की जड़ की तरफ़ करिये और नॉज़ल दबाइये.

सीज़फ़ायर में ऐसी और कई खूबियाँ है; जो इसे हम-आप जैसे लोगों द्वारा सचमुच की आग पर काबू पाने के लिये आदर्श बनाती हैं.

सीज़फ़ायर किसी दुकान में उपलब्ध नहीं है. कुछ दिनों में हमारा प्रतिनिधि आपके यहाँ आकर इसका प्रदर्शन करेगा. या हमें लिखें या फ़ोन करें.

हेड ऑफ़िस: *डायरेक्ट मार्केटिंग प्रा. लि., ८०१/२, तुलसियानी चेम्बर्स, नरीमन पॉइंट, बम्बई-४०० ०२१. टेलि: २१३०२४३ [illegible]*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

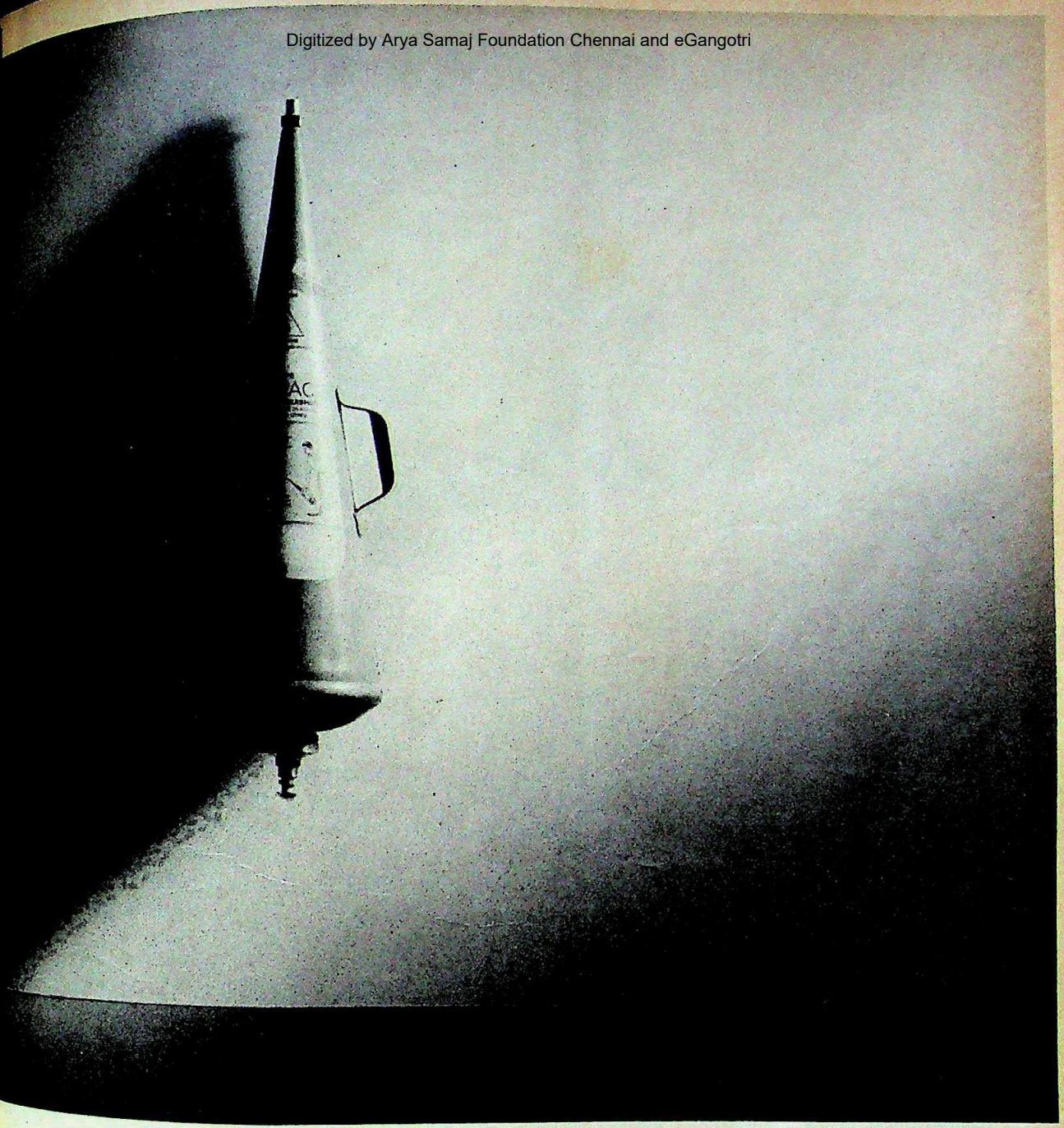

इसमें है हेलॉन 1211, संसार का सबसे शक्तिशाली आग बुझाने का साधन. ► इसे किसी भी तरह की सर्विसिंग या दोबारा भरने की ज़रूरत नहीं. ► साधारण आग बुझाने के यंत्र की तरह कम्प्यूटर या इलेक्ट्रॉनिक यंत्र को नुक्सान नहीं पहुँचाता. ► साधारण आग बुझाने के यंत्र की दोगुनी पहुँच. ► इतना बहुउपयोगी, कि सभी श्रेणियों की आग से लड़े ► कीमत – सिर्फ़ ३६० रुपये यानि साधारण आग बुझाने के यंत्र की एक-तिहाई !

जबरदस्त शक्ति
आपकी मुट्ठी में

Trikaya Grey D.M. 5 90 HN

क्षेत्रीय ऑफ़िस: कलकत्ता: टेलि.: ४६३९६५. **नई दिल्ली:** टेलि.: ५७२२२४०. **मद्रास:** टेलि.: ६१२२६०. **शाखाएँ: चंडीगढ़:** टेलि.: २०१५२. **कानपुर:** टेलि.: ६१८१३. **पटना:** टेलि.: ३१३०२. **अहमदाबाद:** टेलि. द्वारा: ७९४१७. **इंदौर:** टेलि.: २६६९१. **बैंगलूर:** टेलि.: ५६४३१३. **कोचीन:** टेलि.: ३५५३२६. **हैदराबाद:** टेलि.: २३१९५२.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-पाकिस्तान

मोर्चे से हटाकर मेज तक ले आए महाबली

अंतरराष्ट्रीय हालात के मद्देनजर दोनों देश वार्ता को राजी

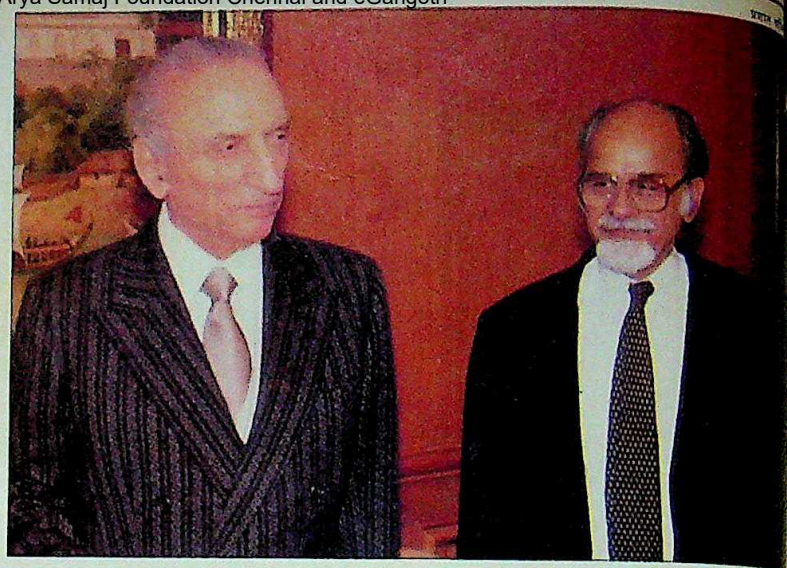

विश्व की बड़ी ताकतों की कूटनीतिक सरगर्मियों के बाद विदेशमंत्री इंद्रकुमार गुजराल और साहबजादा याकूब खां वार्ता की मेज तक पहुंचे

पिछले पखवाड़े भारतीय उपमहाद्वीप के दोनों तरफ का दृश्य किसी दंगल सरीखा था. लेकिन युद्धघोष से जैसे ही आकाश कांपा कि दोनों योद्धा अचानक ठहर गए. लगा, दंगल शुरू होने के पहले ही उनके पैर उखड़ने लगे हैं. भारत के विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल और पाकिस्तान के विदेश-मंत्री साहबजादा याकूब खां समझौता वार्ता के लिए जब न्यूयॉर्क रवाना हुए तो मैदाने जंग में खड़ी फौजों की भिड़ंत होते-होते रुकी और इस उपमहाद्वीप के निवासियों ने जैसे राहत की सांस ली.

रवानगी से पहले गुजराल ने कहा, "जब पूरी दुनिया युद्ध की धारणा को गलत ठहराने में लगी हो तो इस उपमहाद्वीप में युद्ध छिड़ना गलत होगा." सीमा पार से बेनज़ीर भुट्टो ने भी कहा, "दोनों देशों के सामने बड़ी चुनौती यह है कि संभावित जंग को टाला कैसे जाए."

लेकिन दोनों देशों की हमेशा सतर्क रहने वाली सेनाएं इस तरह के शब्दजाल में छिपा अर्थ भांपकर सीमाओं की तरफ कूच कर चुकी थीं (देखें चार्ट). कुछ छोटी-मोटी झड़पें भी हुई और जब सैनिकों ने एक-दूसरे की ओर बंदूकें तान लीं तो परिस्थितियां अत्यंत अशुभ संकेत देने लगीं.

शांति बनाए रखने की घोषणाओं के बीच दोनों पक्ष अपने मूड में आए इस अचानक बदलाव की वजह नहीं बता रहे थे. पिछले पखवाड़े भर युद्धघोष तेज होने के साथ-साथ लड़ाई रोकने के लिए नई दिल्ली, इस्लामाबाद और दूसरे कई देशों की राजधानियों में अभूतपूर्व कूटनीतिक गतिविधियां भी चलती रहीं. रूसियों, चीनियों और अमेरिकियों ने शांति प्रयासों में अपनी पूरी ताकत झोंक दी. लेकिन जितनी दिलचस्पी अमेरिका ने दिखाई, किसी और ने नहीं. अमेरिकी अधिकारियों और अमेरिकी सांसदों के भारी दबाव के चलते नई दिल्ली और इस्लामाबाद स्थित अमेरिकी राजदूतों ने भी दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों से भेंटकर अपनी सरकार की चिंता जताई और संकट खत्म करने का सुझाव दिया. सैनिक सहायकों समेत अमेरिकी कूटनयिकों ने स्थिति का जायजा लेने के लिए संवेदनशील सीमा का दौरा भी किया.

अमेरिकी प्रभाव के चलते ही बेनज़ीर भुट्टो की सऊदी अरब की गैर-सरकारी यात्रा के दौरान वहां के प्रशासन ने अपनी लफ्फाजी पर अंकुश लगाए रखा. भारत ने आशंका व्यक्त की थी कि बाकी दुनिया जहां संयम बरतने की सलाह दे रही है, वहीं इस्लामी देश खासकर ईरान, तुर्की और सऊदी अ पाकिस्तान को दुस्साहस भरा कदम उठाने लिए उकसा सकते हैं. दूसरे खाड़ी देशों तटस्थ रखने में कामयाब रहने के बाव भारत को आशंका थी कि अगर सऊदी अ ने पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया दूसरे इस्लामी देश भी इसमें पीछे नहीं र

नई दिल्ली और मास्को में रूसी भी भा को यही सलाह दे रहे थे कि फिलहाल वे कोई लड़ाई नहीं चाहते जिसमें उन्हें किसी पक्ष लेना पड़े. गुजराल ने 'इंडिया टुडे' कहा, "हां, महाशक्तियां लड़ाई रोकने

अमेरिकियों ने शांति प्रयासों में अपनी पूरी ताकत झोंक दी. सैनिक सहायकों समेत अमेरिकी कूटनयिकों ने स्थिति का जायजा लेने के लिए संवेदनशील सीमा का दौरा किया

रूस ने हालांकि भारत का समर्थन किया लेकिन भारत को वह यही सलाह दे रहा था कि फिलहाल वह ऐसी कोई लड़ाई नहीं चाहता जिससे उसे किसी का पक्ष लेना पड़े

चीनी, जो थ्येन-आन-मन चौक के झटके से अभी तक नहीं उबर पाए हैं, नेपाल के सफल जन-आंदोलन से डर गए हैं. वे कश्मीर में इस्लामी कट्टरपंथ की जीत नहीं चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशिश कर रही हैं. हमने उन्हें बता दिया है कि हम लड़ाई के पक्ष में नहीं हैं. हमने ऐसी कोई तैयारी नहीं की है."

यदि दोनों देश सचमुच लड़ने के बजाए नफ्जों की जंग (बेनज़ीर का एक हजार साल तक जंग का नारा और वी.पी. सिंह का यह व्यंग्य कि पाकिस्तान हजार घंटे भी नहीं टिकेगा) में मसरूफ हैं तो इसका श्रेय नए अंतरराष्ट्रीय माहौल को जाता है. लरकाना में 'हजार साल तक जंग करने' का बयान देने के बाद बेनज़ीर हफ्ते भर से ज्यादा समय तक चुप रहीं. उधर, वी.पी. सिंह भी अपने उस बयान से पीछे हट गए जिसमें उन्होंने देश को लंबी, खर्चीली और निर्णायक लड़ाई के लिए मानसिक रूप से तैयार रहने को कहा था.

अभी तक किसी भी महाशक्ति या तटस्थ देश ने वैसे बीच-बचाव की पेशकश नहीं की है जैसी कि मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक ने 1987 में ब्रासटैक्स संकट के दौरान की थी. लेकिन अमेरिकी और सोवियत विदेशमंत्रियों ने अपनी हाल की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा जरूर की. दोनों इस बात पर एकमत थे कि दक्षिण एशिया में लड़ाई टाली जानी चाहिए. इसलिए ताज्जुब नहीं कि कूटनैतिक हलकों में बातचीत का अगला दौर मास्को में होने की संभावना व्यक्त की जा रही है.

साउथ ब्लॉक में कुछ अधिकारी आज के परिदृश्य की तुलना 1965 की युद्ध पूर्व स्थिति से करते हैं जब दोनों महाशक्तियों ने इस उपमहाद्वीप के तनाव के बारे में कमोबेश एक जैसा रुख अपनाया था. बताया जाता है कि बाद में रूसियों ने भारत पर ताशकंद समझौते के लिए दबाव डाला और भारत को कश्मीर का सामरिक दृष्टि से वह अमूल्य हिस्सा छोड़ना पड़ा जिसे उसने भारी कीमत चुकाकर हासिल किया था. इसमें हाजी पीर का दर्रा भी शामिल था. हालांकि इस साल भारत-सोवियत संधि के दो दशक पूरे होने पर समारोह होने जा रहे हैं लेकिन सोवियत संघ के सशर्त समर्थन को देखते हुए इस तुलना में थोड़ी सचाई दिखती है.

सबसे गौरतलब रुख तो चीन का है. 1965 की लड़ाई में उसने आक्रामक रवैया अपनाया था. दोनों देशों की सेनाएं सीमा पर जमा हो गईं, कुछ झड़पें हुईं और चीन ने भारत को धमकी भी दी कि यदि उसने चीनी क्षेत्र से चुराए गए याक और बकरे वापस नहीं किए तो वह लड़ाई छेड़ देगा. 1971 में भी चीन ने भारी राजनैतिक दबाव डाला. लेकिन आज भारतीय राजनैतिक पंडितों का आकलन यह है कि अगर भारत-पाकिस्तान के बीच घमासान लड़ाई हुई तो चीन हस्तक्षेप नहीं करेगा. अधिक-से-अधिक वह बीच-बचाव

अरुण सक्सेना

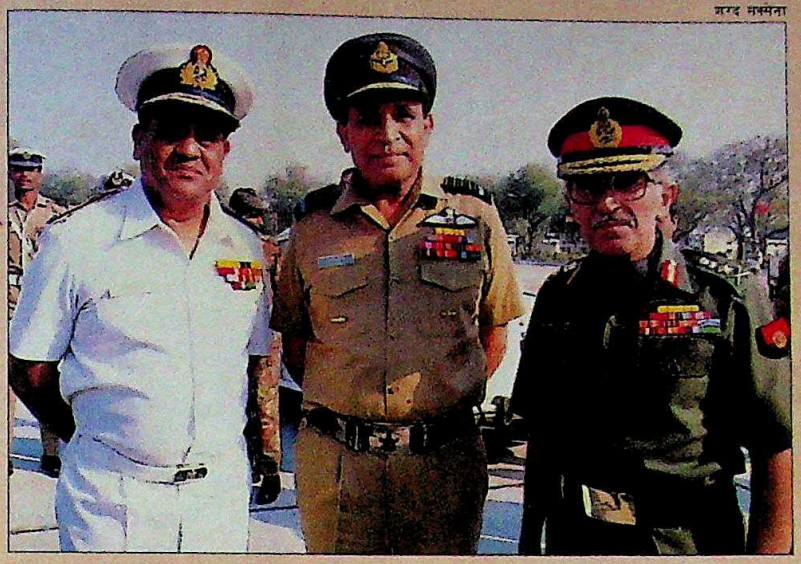

सैनिक तैयारी — भारत की तीनों सेनाओं के अध्यक्ष

सीमा पर मुस्तैद

युद्ध की तैयारियों के खास लक्षण अभी नजर नहीं आ रहे. कोई रेल सेवा रद्द नहीं हुई और कुछ खास श्रेणियों को छोड़कर बाकी कर्मचारियों की छुट्टियां भी बड़े पैमाने पर नामंजूर नहीं की गईं. रिजर्व में रखे गए फौजियों को भी काम पर नहीं बुलाया गया. फिर भी भारत और पाकिस्तान की सेनाएं संभावित युद्ध की तैयारियों में जुट गई हैं.

पाकिस्तान में सैनिकों की आवाजाही ज्यादा खुलकर दिखती है. ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि पाकिस्तान का अधिकतर सैन्य बल शांति के समय भी सीमाओं से लगकर ही तैनात होता है और इसलिए उनकी हर हलचल आसानी से देखी जा सकती है. भारतीय पक्ष भी सचेत हो गया है. हालांकि आपातकालीन व्यवस्थाओं को बिलकुल नहीं छेड़ा गया है. एक वरिष्ठ भारतीय जनरल बताते हैं, "वास्तविकता तो यह है कि न तो भारतीय और न पाकिस्तानी सेना मुख्यालय को अपने अपने राजनेताओं से इस बात के स्पष्ट संकेत मिले हैं कि वे युद्ध चाहते हैं या नहीं. इसीलिए दोनों ही पक्ष सुरक्षात्मक रुख अपनाने में लग गए हैं."

इन गतिविधियों का नतीजा यह हुआ है कि पिछले पखवाड़े से पाकिस्तानी सेना पंजाब, राजस्थान और गुजरात से लगी अपनी सीमाओं पर सुरक्षात्मक तैयारियों में व्यस्त हो गई हैं. देखादेखी भारत भी तैयारियों में लग गया है. पहले की तरह सुरक्षात्मक तैयारियों के लिए भारत को अब सीमा से दूर की छावनियों से फौज नहीं लानी पड़ती. जैसे अमृतसर, फिरोजपुर, पठानकोट या फाजिल्का की रक्षा के लिए तैनात टुकड़ियां अब या तो इन्हीं शहरों में बनी छावनियों में या बिलकुल पास की छावनियों में होती हैं. इनमें से कुछ तो अपनी रक्षात्मक जगहों पर चली गई हैं और कुछ जाने के लिए तैयार बैठी हैं. यानी सैनिक भाषा में पूर्ण सतर्क हो गई हैं.

और भी संकेत हैं जिनसे पता चलता है कि दोनों सेनाएं अगर हमला नहीं कर रहीं, तो बचाव के लिए मोर्चा तो संभाल ही रही हैं. भारतीय टुकड़ियों को अतिरिक्त गोला-बारूद और महत्वपूर्ण अतिरिक्त कलपुर्जे जमा कर लेने के लिए कहा गया है. सेना की कर्मशालाओं में दिन-रात काम चल रहा है. विदेश मंत्रालय ने सेना की इन आशंकाओं पर भी विचार किया है कि भारत-पाक युद्ध की स्थिति में इस्लामी देशों का नजरिया क्या रहेगा. रक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, "अगर सऊदी अरब पाकिस्तान को कुछ हॉक प्रक्षेपास्त्र या एफ-5 के तीन स्क्वाड्रन या हॉक प्रक्षेपास्त्रों की छह बैटरियां दे दे तो रातोरात स्थिति बदल सकती है."

वरिष्ठ सैनिक अधिकारियों का कहना है कि सेना आम तौर से अखबारों में छपी खबरों के अनुसार तैयारियां करने लगी हैं. संक्षेप में, सेना युद्ध भले ही नहीं चाहती हो पर उसकी गतिविधियां तो करीब उसी दिशा में बढ़ती दिखती हैं.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भूमिका निभाएगा. एक वरिष्ठ भारतीय अधिकारी ने कहा, "चीनी नेताओं से मिले इस संकेत पर विश्वास करने की वजह यह है कि जब तक उनके सामरिक हितों को सीधा खतरा नहीं पैदा होता—यानी भारतीय सेना काराकोरम राजमार्ग की तरफ खतरनाक तरीके से नहीं बढ़ती—वे चुप रहेंगे." और अगर स्थिति इसके उलट हुई तो वे भारतीय सेना को पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर की तरफ बढ़ने से रोकने की धमकी दे सकते हैं.

हालांकि सीमा पर तनाव जारी है, सेनाओं को राजनैतिक नेताओं की ओर से कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया है

चीन के इस हृदय परिवर्तन का कारण समझ पाना कठिन नहीं है. विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि चीनी, जो थ्येन-आन-मन चौक की घटनाओं के झटके से अभी तक नहीं उबर पाए हैं, नेपाल के सफल जन आंदोलन से डर गए हैं. क्योंकि उसका असर नेपाल से सटे तिब्बत पर भी पड़ सकता है. यही नहीं, सिकियांग में बढ़ते हुए इस्लामी उग्रवाद ने भी उन्हें झकझोर दिया है. चीन नहीं चाहता कि उसमें कश्मीर में इस्लामी पंथ की जीत हो.

बहरहाल, महत्व सवाल यह है कि जब दो पक्षों में बातचीत के मुद्दे लेकर बुनियादी मतभेद तो वे किस मुद्दे पर करेंगे. पाकिस्तान इस पर जोर दे रहा है बातचीत का मुख्य कश्मीर मामले का दीर्घ लिक समाधान होना चाहि जैसा कि शिमला समझौते प्रावधान है. दूसरी त भारत का कहना है पाकिस्तान कश्मीर में तोड़ फोड़ में मदद कर रहा इसलिए बातचीत उस पर होनी चाहि गुजराल ने कहा, "मैं अपने क्षेत्र पर किसी बात नहीं करूंगा. मैं सिर्फ शांति और त घटाने के बारे में बात करूंगा."

दोनों पक्षों के विपरीत रवैये

मेहमान का पन्ना: रवि रिखी

लड़ाई के नतीजों पर गौर करें

पिछले 20 साल से दक्षिण एशियाई सैनिक ताकतों का अध्येता होने की हैसियत से मैं आपसे जोर देकर कहूंगा कि युद्ध के लिए 'न' कर दीजिए. विजय का राज यह जान लेने में है कि लड़ाई कब लड़ी जाए और यह वक्त लड़ाई के लिए उपयुक्त नहीं है.

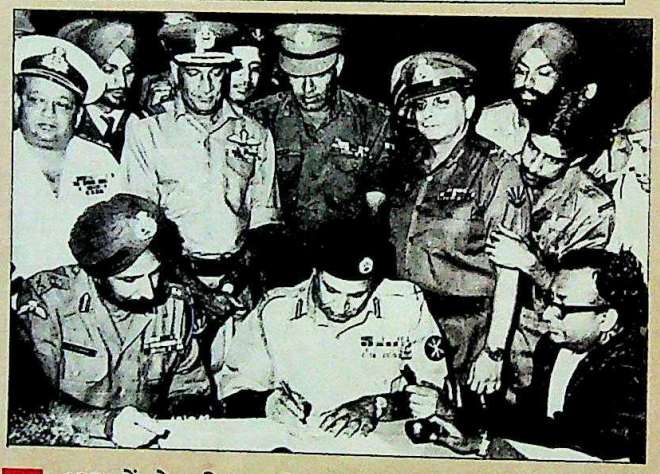

1971 में तो पाकिस्तान ने घुटने टेक दिए थे मगर इस बार लड़ाई लंबी और बेहद नुकसानदेह हो सकती है

पाकिस्तान के साथ हमारी मौजूदा समस्याओं का इलाज न तो गोलाबारी में है, न उसके इलाके के भीतर घुसकर आतंकवादियों को पकड़ लेने में और न आतंकवादियों के शिविर नष्ट कर देने में है. लोग कहेंगे कि ठीक है, फिर क्या किया जाए? एक बार हमेशा के लिए ही यह बवाल खत्म कर लेने दीजिए. पर जरा ठहरिए. क्या 1971 में भी हमने यही बात नहीं सोची थी? 1947-48 में, 1965 में और 1971 में हम कोई समस्या नहीं हल कर पाए और 1990 में भी नहीं कर पाएंगे. आज युद्ध न करने के पांच कारण हैं.

पहला यह कि हालांकि सैनिक रूप से हम पाकिस्तान से कहीं ज्यादा मजबूत हैं पर हमारी ज्यादातर ताकत बिखरी हुई है. हमारी 35 डिवीजनों में कम-से-कम 7 के लिए उत्तर में रहना जरूरी है. बाकी में 4 से 6 को पंजाब तथा जम्मू-पठानकोट के महत्वपूर्ण गलियारे में तैनात रहना होगा. और बाकी बची फौज से ही हम अपनी रक्षा करेंगे. पर हमला करने के लिए हमें अपने कई महत्वपूर्ण मोर्चों को खाली करना होगा या चीन के दावे वाला भाग उसे सौंपना होगा उस उथल-पुथल को नज अंदाज करना होगा जो के कारण देश के भीतर पै हो जाती है. हमारी सेना मोर्चों पर लड़ सकने लाय तो है पर तीन मोर्चों पर लड़ सकने लायक नहीं.

दूसरा कारण यह है कि युद्ध लंबा खिंच जाने सूरत में ही हमारी सेना कोई बड़ा नतीजा हासि कर सकेगी. पर लड़ाई ल नहीं खिंच सकती क्यों हमारे देश की सरक हमेशा ही पहले दौर के ठंडी पड़ जाती है.

तीसरी वजह यह है कि अब हम खुन्नस निकालने के लिए लड़ाई का बो नहीं उठा सकते. 1971 में दो हफ्तों लड़ाई ने 400 करोड़ रु. समेट लिए 1990 में अगर लड़ाई हुई तो 30,000 करोड़ रु. लील लेगी जो हमारे रक्षा बजट का दोगुना है. लेकि अगर यह एक ही बार में पाकिस्तान से झगड़े-टंटे निपटा लेने की कीमत हो लड़ाई सस्ती पड़ेगी. अनुभव से तो लगता है कि सन 2001 में भी हम आखि फैसला करने की बात कर रहे होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता नहीं कि निकट भविष्य में शांति का कोई ठोस फार्मूला उभरेगा. साउथ ब्लॉक के उच्च पदस्थ अधिकारियों का मानना है कि मौजूदा अंतरराष्ट्रीय माहौल जहां भारत के पक्ष में रहा है और पाकिस्तान को कश्मीर में जड़ें जमाने का मौका नहीं मिला, वहीं उससे भारत पर नया दबाव भी आन पड़ा है.

अमेरिका और सोवियत संघ दोनों ही भारत से यह रवैया छोड़ने की मांग कर रहे हैं कि कश्मीर पर कोई समझौता नहीं हो सकता. एक वरिष्ठ पश्चिमी राजनयिक ने कहा, "यदि यह कोई मुद्दा नहीं था तो इसे सुलझाने के लिए शिमला समझौते में द्विपक्षीय वार्ता का प्रावधान क्यों रखा गया. समय आ गया है कि भारत और पाकिस्तान कुछ करें ताकि इस उपमहाद्वीप के 93 करोड़ लोगों का भविष्य 70 लाख कश्मीरियों की मुट्ठी में बंद न रहे." लेकिन मौजूदा उन्मादपूर्ण माहौल में, जब शांति और मेल-मिलाप की बात को रेडक्लिफ रेखा के दोनों तरफ कायरता करार दिया जा रहा हो, समझौता वार्ता के कारण दोनों तरफ का क्रोधावेश ठंडा होने में मदद मिल जाएगी. —शेखर गुप्ता

उसके बाद 2011 तथा 2021 में भी यही हाल रहेगा.

चौथी वजह यह है कि हमारी जो कमजोरियां हैं उन्हें हमें ईमानदारी से स्वीकार कर लेना चाहिए. जनरल सुंदरजी कहते हैं कि चंद सिरफिरे सेना को तबाह नहीं कर सकते. लेकिन हुजूर यह सिर्फ मुट्ठी भर सिरफिरों का ही मामला नहीं है. ज्यादा समय तक यह मानकर नहीं चला जा सकता कि हमारे लोग उस सरकार के लिए जान की बाजी लगाते रहेंगे जो भीतर तक कमजोर और भ्रष्ट हो चुकी है, बुरी तरह टूट और सड़ चुकी है.

आखिरी कारण वह है जिसे हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं. युद्ध शुरू करने के फैसले का कोई नैतिक पक्ष भी होना चाहिए. हम अपनी आंतरिक समस्याएं नहीं हल कर पा रहे सिर्फ इसलिए युद्ध का आह्वान करना अनैतिक है. सेना राज्य की कर्मचारी है. पर इसी से राज्य को यह अधिकार नहीं मिल जाता कि वह अपने कर्मचारियों का दुरुपयोग करे. नैतिकता का तकाजा तो यह है कि अपनी गलतियों का भार सेना पर न डालकर खुद इन का हल खोजें. सिर्फ तभी दोनों मुल्कों का भला हो सकता है.

हो सकता है मैं गलत होऊं. हो सकता है भारत पाकिस्तान को कुचल डाले. पर अगर मैं सही हूं तो युद्ध की बात करने से पहले उसके नतीजों के बारे में जरूर सोच लें.

कश्मीर

आतंक के दैत्य की मुश्कें कसने की कोशिश

पर घाटी में अलगाववादियों की तूती अब भी बोलती है

कश्मीर में एक बार फिर मोर्चाबंदी हो गई है. लेकिन इस बार घाटी को आतंकवादियों ने नहीं बल्कि 128 अर्द्धसैनिक कंपनियों (38 बीएसएफ और 90 सीआरपीएफ की) ने अपनी घेरे में ले लिया है. सरकार की बदली हुई रणनीति के तहत गलियों, बाजारों, गलियारों और राजमार्गों पर चौकसी की जाने लगी है, इलाकों की घेराबंदी और घरों की तलाशी ली जा रही है और संदेहास्पद लोगों को गिरफ्तार किया जाने लगा है. घाटी को अलगाववादियों के नापाक चंगुल से मुक्त कराने के लिए राज्य सरकार की मशीनरी पहली बार पूरी शिद्दत से कोशिश करती दिख रही है.

अलगाववादियों को कुचलने का मौजूदा अभियान 5 अप्रैल को शुरू हुआ जब कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति मुशीर-उल-हक, उनके निजी सहायक अब्दुल गनी और एचएमटी के महाप्रबंधक एच.एल. खेड़ा के अपहरण के बाद घाटी में कर्फ्यू लगा दिया गया. पूरी घाटी भयाक्रांत हो गई. सेना की मदद से सुरक्षा बलों के जवान आतंकवादी गतिविधियों के केंद्र सोपोर, अनंतनाग और बारामुला में फैल गए. श्रीनगर में आतंकवादियों के गढ़ छनपोरा और बटमालू में घर-घर पर छापे मारने शुरू कर दिए.

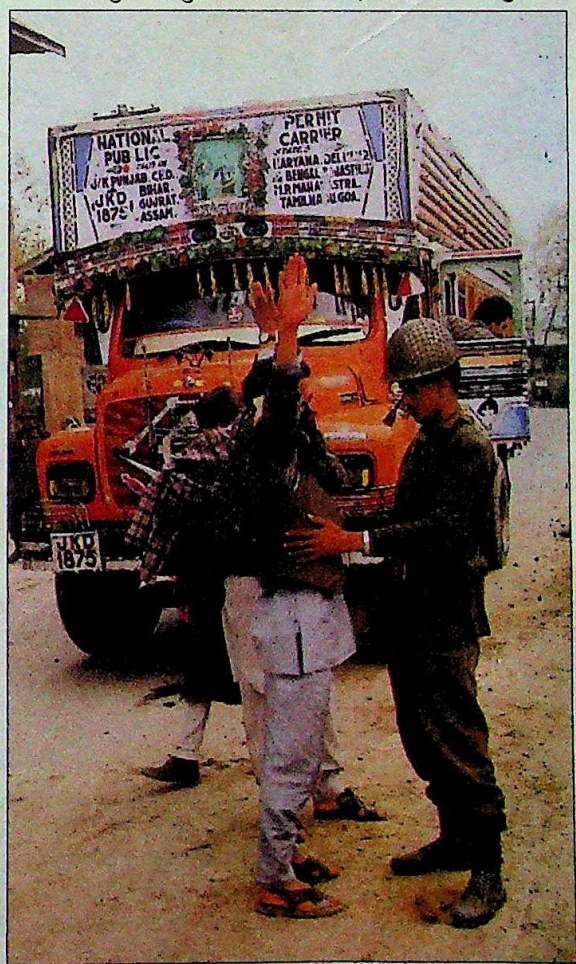

सुरक्षा कर्मचारियों ने घाटी में संदेहास्पद लोगों की तलाशी तेज कर दी है

जाहिर है, राज्यपाल जगमोहन ने प्रदर्शनों की अनुमति देने की अपनी शुरुआती नीति छोड़ दी है. उन्हें उम्मीद थी कि आतंकवादी आखिर बातचीत के लिए राजी हो जाएंगे. विभिन्न आतंकवादी गुटों को इस आशय के संकेत भी भेजे गए थे. लेकिन जवाब में उन्होंने हिंसक गतिविधियां तेज कर दीं. जम्मू ऐंड कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) ने कुलपति हक, उनके सहायक गनी और एचएमटी के महाप्रबंधक खेड़ा को मुक्त करने के लिए तीन आतंकवादियों की रिहाई और कर्फ्यू उठाने की मांग की.

राज्यपाल के एक वरिष्ठ सहायक ने कहा, "कोई भी जिम्मेदार सरकार आतंकवादियों को रिहा करते जाने का जोखिम मोल नहीं ले सकती. इस बार उनकी कमर तोड़नी ही थी." घाटी में चौबीसों घंटे का कर्फ्यू लगा दिया गया जो बिना ढील के 11 दिन तक जारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा. सुरक्षा बलों ने राज्य की सत्ता स्थापित करने के लिए शुरुआती दौर में अचानक दमन की कार्रवाई से आतंकवादियों को चौंका दिया. 20 अप्रैल यानी ईद से पहले के आखिरी जुमे तक उन्होंने 7,000 घरों पर छापे मारकर तलाशियां लीं और 370 उग्रवादियों तथा उनके समर्थकों को गिरफ्तार कर लिया.

घाटी में लगे कर्फ्यू में ढील देने की मांग करते हुए नेशनल कांफ्रेंस के क्रुद्ध सदस्य जब संसद से बहिर्गमन कर रहे थे तो गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद ने कहा, "कश्मीर में हमें शुरुआती कामयाबी मिली है और हमने कट्टर आतंकवादियों को धर-दबोचा है." दरअसल कर्फ्यू जारी रखना रणनीतिक फैसला था ताकि आतंकवादी अपने अड्डों से बाहर न निकल पाएं. उन्हें भाग निकलने का मौका नहीं मिला क्योंकि प्रशासन ने निजी वाहनों के चलने पर रोक लगा दी थी. सशस्त्र अर्द्धसैनिक बल आतंकवादियों की खोज में संकरे गली-कूचों में घुस गए. जामिया मस्जिद और हजरत बल के बाहर भी उन्होंने पोजीशन ले ली. जिससे यहां जेहाद और आजादी का शोर थम गया.

'आजाद' कश्मीर का परचम फहराने वाले आतंकवादियों का मनोबल तेजी से गिरने लगा क्योंकि उनकी उम्मीदों के मुताबिक बंधकों की रिहाई के लिए समझौता वार्ता आगे नहीं बढ़ी. तीन आदमियों के बजाए जेकेएलएफ एक आदमी की रिहाई की मांग पर उतर आया. बाद में वे कर्फ्यू में सिर्फ कुछ घंटों की छूट देने की मांग करने लगे. लेकिन इस बार सरकार ने किसी भी आतंकवादी को न छोड़ने का पक्का इरादा बना लिया था. एक तरफ तो वह उनसे बात कर रही थी और दूसरी तरफ उन घरों पर

प्रमोद पुष्करणा

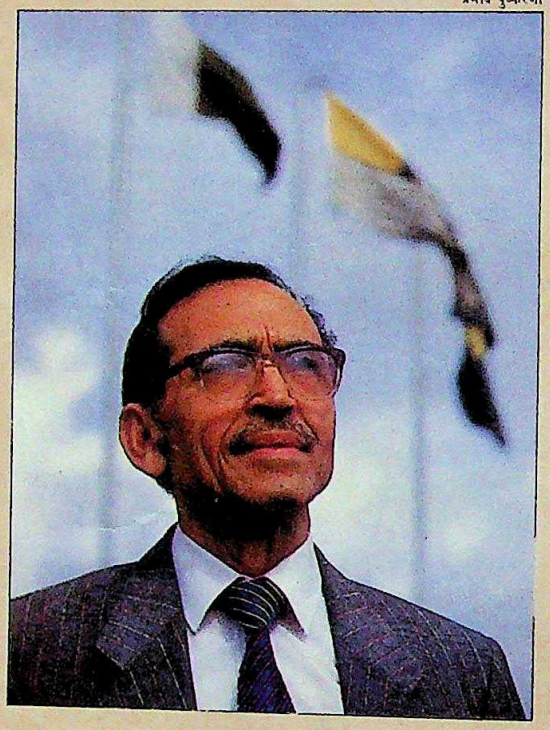

अमानुल्ला खां

नफरत का जायका

अमेरिका में आतंकवादियों को कतई पसंद नहीं किया जाता, खासकर इस्लामी आतंकवादियों को. इसकी वजह है कज्जाफी और अयातुल्ला जैसों की उग्र विचारधारा.

इस घृणा का कड़वा स्वाद जम्मू ऐंड कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के अध्यक्ष अमानुल्ला खां को भी 9 अप्रैल को चखना पड़ा. उस दिन उन्होंने चहकते हुए घोषणा की थी कि उनके संगठन ने कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति की हत्या की है. उनके इस बयान पर जो प्रतिक्रिया हुई, उससे वे जरूर चौंक गए होंगे.

भारत ने पाकिस्तानी पासपोर्टधारी अमानुल्ला के बयानों पर जब नाराजगी जताई तो अमेरिकी विदेश विभाग ने तुरंत कार्रवाई की और उनका वीसा रद्द कर दिया गया. यहां तक कि पाकिस्तान को भी इस कार्रवाई के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं हुई. वैसे, वीसा रद्द हो जाने के बावजूद अमानुल्ला किसी चुस्त वकील की मदद से लंबे समय तक अमेरिका में रह सकते हैं. लेकिन भारतीय सूत्रों का कहना है कि भारत सरकार ने उनके प्रत्यर्पण की मांग करते हुए उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर दी.

अमानुल्ला की अमेरिका यात्रा कुछ कश्मीरी मुस्लिम संगठनों द्वारा चलाए जा रहे उस नियोजित अभियान का हिस्सा है जिसका मकसद अपने लिए समर्थन जुटाना है. ये संगठन भारतीय सुरक्षा बलों पर मानवाधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाकर कांग्रेस और विदेश विभाग की सहानुभूति बटोरने की कोशिश में लगे हैं. इस साल के शुरू में कश्मीर घाटी में संकट बढ़ने के साथ उनकी गतिविधियों में अपूर्व तेजी आ गई है. मसलन, 'कश्मीरी अमेरिकन काउंसिल' नामक एक संगठन ने 'वाशिंगटन पोस्ट' में 6,500 डॉलर (1,10,500 रु.) का विज्ञापन देकर यह एलान किया था कि "अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने कश्मीर को भारत का अंग कभी नहीं माना."

एक और संगठन 'कनसर्ड सिटिजन फॉर ह्यूमन राइट्स इन कश्मीर' ने 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में 10,000 डॉलर का विज्ञापन छपवाया. 22 लोगों, जिनमें ज्यादातर डॉक्टर हैं, के हस्ताक्षरों वाले इस विज्ञापन में अपील की गई थी कि कश्मीरियों को "आत्मनिर्णय का अधिकार दिया जाए."

लेकिन विज्ञापन को बारीकी से देखने पर मानवाधिकारों के लिए की जाने वाली चिंता में थोड़ी खोट दिखाई पड़ती है क्योंकि इस पर दस्तखत करने वालों में एक को छोड़कर सभी लोग कश्मीरी मुसलमान हैं. एक हस्ताक्षरकर्ता डॉ. शौकत अशाई ने हिचकिचाते हुए कहा, "किसी कश्मीरी पंडित से संपर्क करने का मौका ही नहीं मिला."

लेकिन कश्मीरी पंडितों की इसमें कोई दिलचस्पी नहीं दिख रही. और वे अपने बेहद सीमित संसाधनों के जरिए इस अभियान का विरोध कर रहे हैं. कश्मीरी पंडितों के संगठन 'कश्मीरी ओवरसीज आर्गनाइजेशन' की झोली में सिर्फ दो हजार डॉलर हैं और वह इनका इस्तेमाल जम्मू और दिल्ली में कश्मीरी शरणार्थियों के पुनर्वास में करेगा. इसके निदेशक मंडल के सदस्य अशोक रैना पूछते हैं, "भड़काऊ विज्ञापनों से उन्हें क्या हासिल होगा?"

अमानुल्ला की स्थिति विकट होते जाने से कश्मीरी मुस्लिम संगठन अब शायद उनकी भरपूर मदद करेंगे. लेकिन उसके बयानों पर आम प्रतिक्रिया को देखते हुए यह संभावना नहीं दिखती कि अमेरिका में वे कश्मीरी अलगाववादियों के लिए सहानुभूति अर्जित कर सकेंगे.

—**अमृत काकरिया** न्यूयॉर्क में और **दीपा अरोड़ा** शिकागो में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटीक निशाना

परगट सिंह

अपने गोल की पक्की चौकसी, सुन्दर नियंत्रण के साथ गेंद अपने साथी को बढ़ाना, अवसरों का पूरा फायदा उठाते हुए सही निशाने से विपक्षी गोल का तख्ता खड़काना, और फिर विजय मंच पर राष्ट्रीय सम्मान की पताका लहराई.

एरिक पैनिगर, किशन लाल, बालकिशन सिंह, मोहिन्दर लाल, जोगिन्दर सिंह, जे॰ एंटिक, राजिन्दर सिंह, हरबिन्दर सिंह, पृथीपाल सिंह, मुखबैन सिंह, वरिन्दर सिंह, वी॰ जे॰ फ़िलिप्स,सुरजीत सिंह, वी॰ भास्करन, माईकल किन्दो, मोहम्द शाहिद, परगट सिंह, और उनके अनेकों साथी.

इनमें से हरेक हाकी हीरो ने पिछले कुछ दशकों में शान से भारतीय रेल का प्रतिनिधित्व किया और देश को जीत का सेहरा पहनाया है। उनकी यशस्वी सफलता पुरानी यादों को ताजा करती हैं. उनका दृढ़ संकल्प हमें विजय के शिखरों पर पहुंचाने की प्रेरणा देता है.

क्रीड़ा-जगत में भारतीय रेल का कीर्तिमान अनोखा है. विभिन्न राष्ट्रीय चैम्पियनशिपों में रेलवे हर साल बीस से भी अधिक खिताब जीतती है.

"अर्जुन" पुरस्कार से सम्मानित हर चौथा खिलाड़ी रेलवे का प्रतिनिधि होता है. यह प्रतीक है भारतीय रेल के विशाल परिवार के सोलह लाख लोगों की शक्ति, शारीरिक क्षमता और टीम-भावना का.

जी हाँ, भारतीय रेलवे का चिट्ठा अद्वितीय है. एशिया में रेल मार्गों के इस सबसे विस्तृत जाल पर हर रोज एक करोड़ दस लाख लोग सफर करते हैं. हर रोज दस लाख टन माल ढोया जाता है. हर रोज पृथ्वी से चांद की दूरी तय होती है, एक बार नहीं, चार बार. भारतीय रेल का लक्ष्य है बेहतर उत्पादकता और जनता की अधिकाधिक सेवा.

क्रीड़ा-जगत का आदर्श है —**'तीव्रतर, उच्चतर और दृढ़तर'** बनना. भारतीय रेल हर मैदान में इस स्वप्न को साकार बनाने में संलग्न है.

भारतीय रेल
सतत शिखर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छापे मार रही थी जहां बंधकों के रखे जाने का संदेह था.

इस दबिश का कुछ फायदा भी हुआ. शौकत बख्शी, जावेद ज़रगर और सैनिक सलाहकार इकबाल गांगरू (जिसकी पुलिस सरगर्मी से तलाश कर रही थी) समेत जेकेएलएफ के सात क्षेत्रीय कमांडर गिरफ्तार कर लिए गए. कैसर जान, अयूब बांगरू तथा इल्हास वानी मुठभेड़ों में मारे गए और दूसरे सबसे अधिक ताकतवर उग्रवादी गुट जमात-ए-इस्लामी के तीन वरिष्ठ सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया. व्यवस्था बनाए रखने के लिए सरकार ने कई फैसले किए. राज्य के बाहर नजरबंदी के लिए लोक सुरक्षा कानून में संशोधन किया गया. अपराध संशोधन कानून (1983) के तहत आठ आतंकवादी संगठनों पर रोक लगाकर उन्हें गैरकानूनी घोषित कर दिया गया. श्रीनगर और जम्मू डिवीजनों में विशेष आयुक्त के दो नए पद बनाए गए. और उन स्थानीय अखबारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई जिन्होंने आतंकवादियों की यह धमकी छापी थी कि गैर-कश्मीरी सरकारी कर्मचारी और कश्मीरी पंडित 48 घंटे के भीतर घाटी छोड़कर चले जाएं वरना उन्हें गोलियों से भून दिया जाएगा.

लेकिन पांच दिन के अनवरत कर्फ्यू के बाद पहल फिर जेकेएलएफ के हाथ में आ गई. दोपहर बाद की नमाज में जेकेएलएफ के सदस्यों ने लोगों से 11 अप्रैल को कर्फ्यू तोड़ने को कहा. इसी मारामारी में वे खेड़ा को एक कार में बैठाकर बटमालू स्थित पुलिस नियंत्रण कक्ष के ठीक सामने ले आए और बाहर निकलते ही उन्हें गोलियों से भूनकर गायब हो गए. दूसरे दिन पुलिस वर्दी में वे मारुति जिप्सी से कुलपति और उनके निजी सहायक के शव भी ठिकाने लगा आए.

इन बंधकों को छुड़ाने के मकसद से लगाया गया कर्फ्यू जारी रहा क्योंकि सरकार आतंकवादियों पर अपना दबाव बनाए रखना चाहती थी. आतंकवादियों को शरण देने वाले सरकारी कर्मचारियों के घरों की बड़ी मुस्तैदी से तलाशी ली गई.

सौरा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के 200 डॉक्टरों के घरों और दफ्तरों की भी तीन बार तलाशी ली गई. जमात का गढ़ माने जाने वाले इस संस्थान के डॉक्टरों के बारे में कहा जाता है कि वे निजी क्लिनिकों में आतंकवादियों का इलाज करते हैं. यहां तक कि उन्होंने सुरक्षा बलों के चंगुल से आतंकवादियों के भागने में भी मदद की है. संस्थान पर मारे गए छापे और उसके बाद ली गई तलाशियों में दो ट्रक दवाएं बरामद हुईं जो घायल आतंकवादियों के इलाज के लिए चुराई गई थीं.

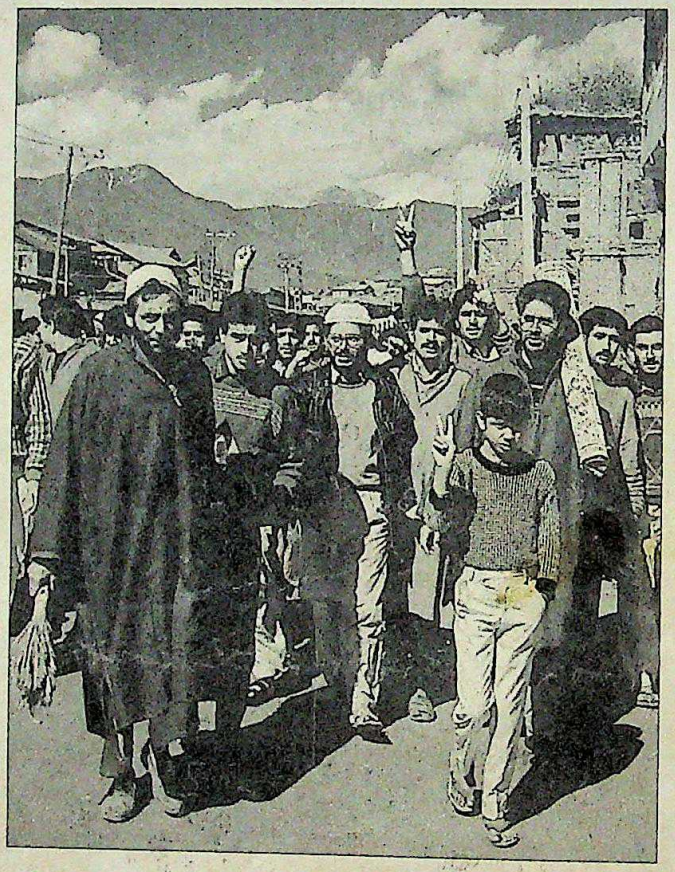

कश्मीर में सबसे बड़ा काम है लोगों को आतंकवादियों के नापाक चंगुल से बाहर निकालना

दमन चक्र चलने से आतंकवादी अब कुछ हद तक बचाव का रुख अपनाने पर मजबूर हुए हैं. लेकिन जेकेएलएफ के एक समर्थक के मुताबिक, "हमने अभी अपनी पूरी ताकत नहीं दिखाई है." उसकी ताकत का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि उसने कर्फ्यू के दौरान ही पूर्व मंत्री शेख अब्दुल जब्बार को गोलियों से छलनी कर दिया और एक नर्स सरला भट्ट की हत्या करके उसका शव लाल चौक में फेंक दिया. स्थिति इससे भी अधिक बदतर हो सकती है क्योंकि इस संगठन के 38 में से सात क्षेत्रीय कमांडर ही अभी तक गिरफ्तार किए गए हैं.

आतंकवादियों के दमन से पंडितों में एक दूसरे किस्म का डर समा गया है. घाटी से भागकर जम्मू के गीता भवन में ठहरे एम.एल. पंडिता ने शायद अपने समुदाय के लोगों की तरफ से ही यह कहा, "मुसलमान अपना गुस्सा हमीं पर निकलेंगे. पहले भी वे मुझे इस्लाम अपनाने और गौ मांस खाने को कहते आए हैं." यही वजह है कि सरकारी नौकरी वाले कश्मीरी पंडित सचिवालय को श्रीनगर से जाने का विरोध कर रहे हैं.

एक दूसरी समस्या जनता और सरकार के बीच की खाई का बढ़ना है. घरों की छतों से जेकेएलएफ के झंडे भले ही हटा दिए गए हों पर लोगों के दिलों में इस्लामी कानून की ही धाक है. लोग राष्ट्रीय चैनल के बजाए पाकिस्तान टीवी के कार्यक्रम देखते हैं. जामा मस्जिद के इमाम द्वारा घोषित तारीख के बजाए इस्लामाबाद द्वारा घोषित तारीख को ईद मनाते हैं. सरकारी अधिकारी वेतन तो राज्य से लेते हैं लेकिन हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेने पाकिस्तान जाते हैं. परिवार विशेष मेहंदी रस्म के बाद 15 साल के बेटों को यह कहकर पाकिस्तान भेजते हैं कि वहां बंदूक चलाना सीखो और आकर हमें आजाद कराओ.

अपने घरों में बंद निवासियों के मन में कड़वाहट भर गई है. एक वृद्ध मुसलमान ने कहा, "भारत सरकार हर कश्मीरी को पाकिस्तानी मानती है." यह बोलते हुए उसकी आंखों से चिनगारियां फूटने लगती हैं, "चाहे जितना कर्फ्यू लगा लो, फिर भी हम बिना काम किए अगले दो वर्षों तक जिंदा रह ही सकते हैं."

यही वह भावना है जिसके चलते जेकेएलएफ और दूसरे आतंकवादी संगठन लंबे समय तक लड़ाई जारी रखेंगे. कश्मीर में लड़ाई का नतीजा बंदूकों पर नहीं बल्कि इस बात पर निर्भर करेगा कि सरकार इन भावनाओं को बदलने में कितनी कामयाब हो पाती है.

—**हरिंदर बवेजा**, श्रीनगर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़िक्र किसे है ज़माने की!

ज रफ़्तार
दगी का भरपूर अंदाज़
हैं जहां–पहने वहां
सवाल के शोख़,
चल कपड़े

OSWAL®
PREMIUM
SUITINGS

आओ छा जाओ!

हन्त फ़ेब्रिक्स लिमिटेड उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण मुरारी किशन

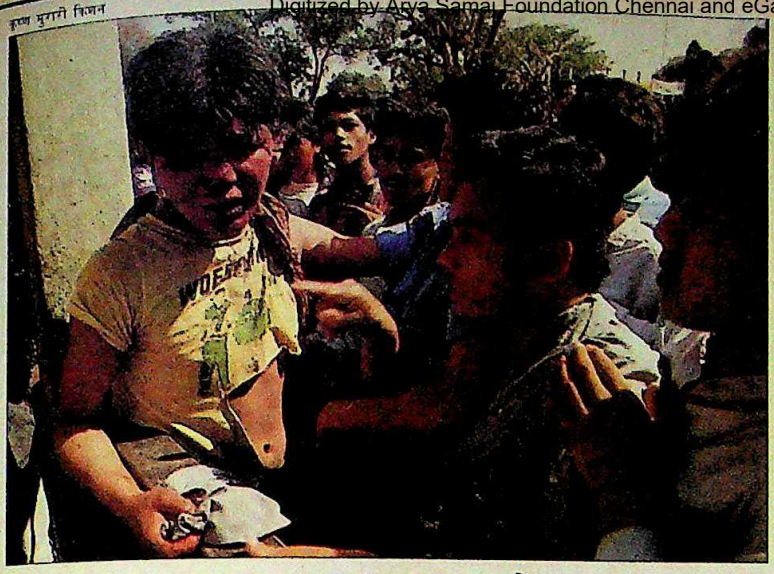

काठमांडो और दूसरी जगहों पर अराजकता छायी है. युवक गलियों में मानो अदालतें चला रहे हैं. फौरी न्याय किए जा रहे हैं. इनके लक्ष्य हैं राजशाही के कथित समर्थक

नेपाल

अराजकता और आशंकाएं

अंतरिम सरकार को एकबारगी कई मोर्चों से चुनौतियों का सामना

समारोहों का दौर खत्म हो गया है. वास्तविकताओं का सामना करने की घड़ी आ गई है. नई अंतरिम सरकार के गठन के एक हफ्ते के भीतर ही दिखने लगा है कि नेपाल में आया बहुदलीय लोकतंत्र किस कदर कमजोर है. काठमांडो और दूसरी जगहों पर अराजकता छायी है. युवकों की भीड़ गलियों में मानो अदालतें चला रही है. फौरी न्याय किए जा रहे हैं. इन युवकों के लक्ष्य बन रहे हैं—लोकतंत्र बहाली आंदोलन को कथित रूप से दबाने वाले पुलिस कर्मचारी, और पंचायत व्यवस्था के समर्थक. 22 अप्रैल को एक भीड़ ने पंचायत समर्थक दो व्यक्तियों को दिन दहाड़े नंगा करके सड़क पर घुमाया. उसी रात एक गुट ने दो गाड़ियों में सादे कपड़ों में बैठे हथियारबंद लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया जिन पर पुलिस कर्मचारी होने का संदेह था. इसके एक दिन पहले भीड़ ने एक युवक को पकड़ लिया जिसने बाद में कबूल

■ **राजशाही के कथित समर्थकों पर काठमांडो में भीड़ का कहर: अराजकता**

कृष्ण मुरारी किशन

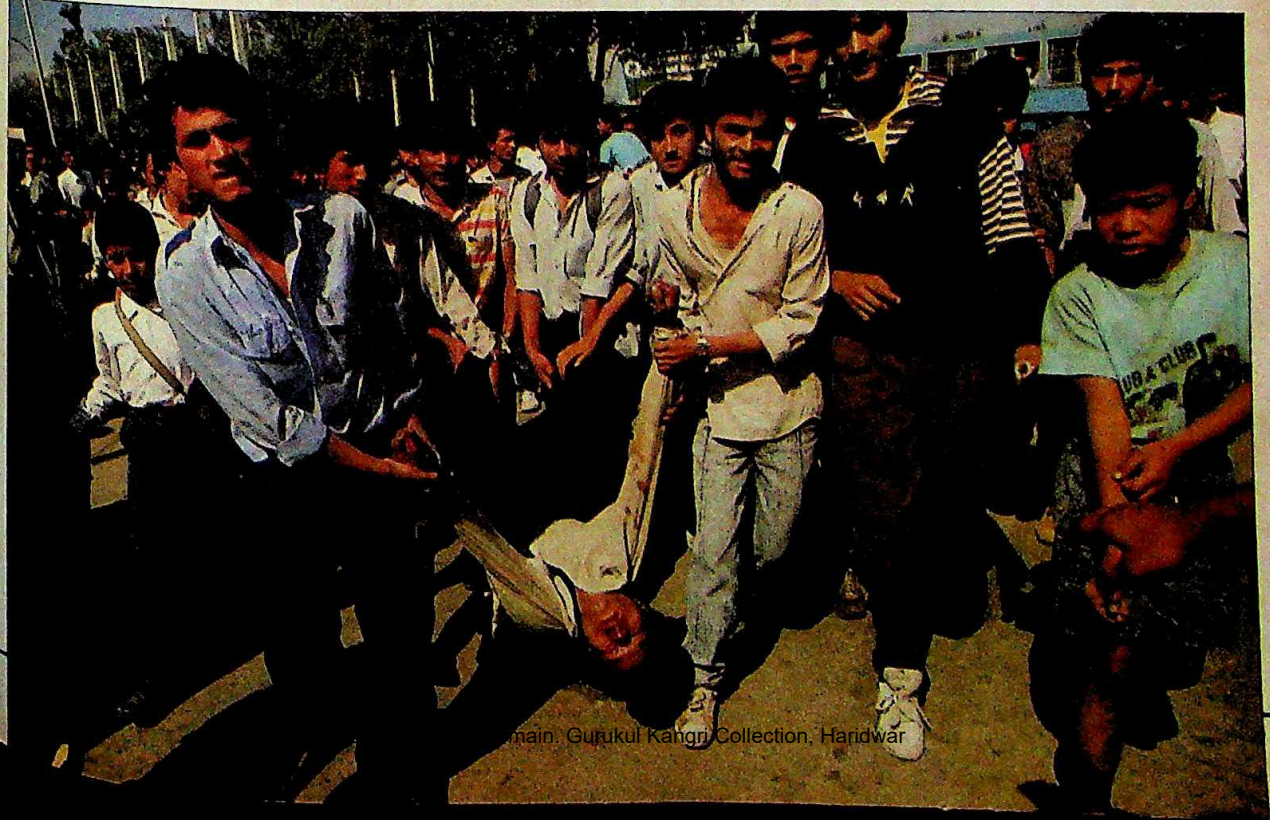

main. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिन बज्राछाया

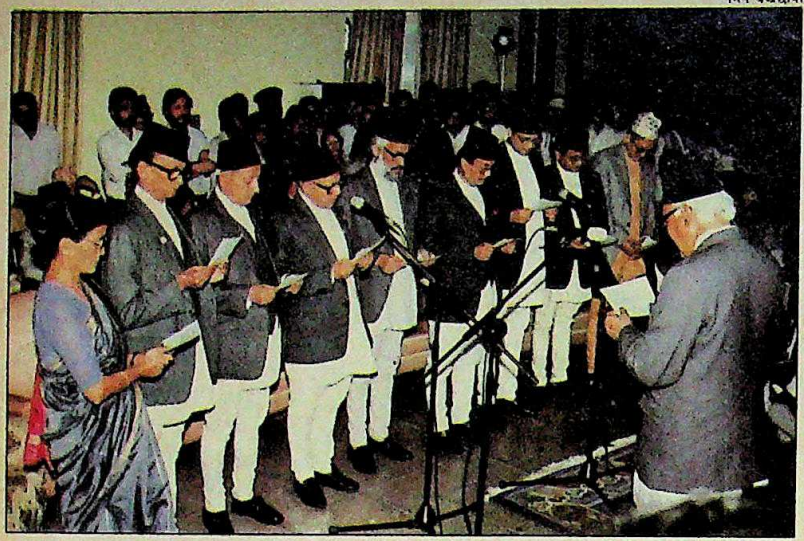

मिन बज्राछाया

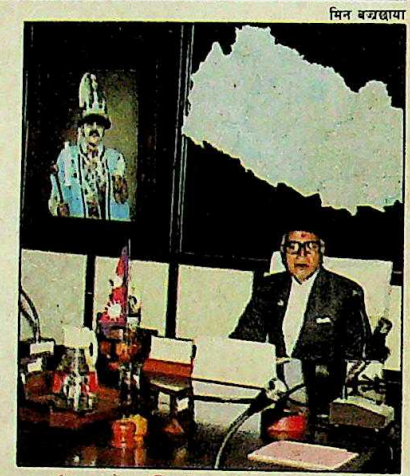

■ (ऊपर) मंत्रिमंडल का शपथ ग्रहण; और कार्यालय में भट्टराई

किया कि वह पिछली व्यवस्था के एक प्रमुख सदस्य का करीबी रहा है. इस युवक को टीवी पर भी दिखाया गया और 'इकबालिया' बयान दिलवाया गया.

इस तरह की अराजकता और गुंडाशाही नेपाल में पहले कभी नहीं देखी गई थी. सो, लोग दहशत में पड़ गए. पुलिस निष्क्रिय दिखी, जिससे मामला और संगीन हो गया. कुछ पुलिसवालों को मदद मांग रहे लोगों से यह कहते हुए भी सुना गया कि "तुम लोग तो बहुदलीय राज चाहते थे, वह तो मिल गया. अब जाओ, जाकर गणेश मान सिंह से मदद मांगो."

संयुक्त वाम मोर्चा की अध्यक्ष और उद्योग तथा व्यापारमंत्री शाहना प्रधान की सरकारी कार को नाराज लोगों ने घेर लिया और काठमांडो के कालीमाटी इलाके के लिए सुरक्षा की मांग की. स्थिति तब और बिगड़ गई जब कई दफ्तरों और कारखानों के कर्मचारी ज्यादा वेतन आदि की मांगों को लेकर हड़ताल पर चले गए. प्रधान कहती हैं, "ये तमाम गड़बड़ियां इस अंतरिम सरकार को बदनाम और कमजोर करने की साजिश का हिस्सा हैं." संकट का कारण भी यही लगता है. संदेह है कि नेपाल में हो रही गड़बड़ी के पीछे लोकतंत्र विरोधियों का हाथ है. रात में काठमांडो का नजारा कुछ अजीब ही होता है. छड़ों, डंडों, तीर-धनुष, पत्थरों और टायरों से लैस भीड़ सड़कों पर घूमती रहती है और लोगों से 'चंदा' वसूल करती है, दुकानदारों को बिजली जलाए रखने पर मजबूर करती है. इससे भी खतरनाक बात यह है कि ये पहरेदार अब 'अपराधियों' के खिलाफ कार्रवाई भी करने लगे हैं. नेपाल की पुलिस इन वारदातों के दौरान मूक दर्शक बनी दिखती है. जाहिर है वह नई सरकार से सहयोग नहीं करना चाहती.

इन सब कारणों से नई सरकार के भविष्य और नेपाल में लोकतंत्र बहाली की संभावना पर संदेह व्यक्त किया जा रहा है. स्थिति पर काबू पाने में प्रधानमंत्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई और उनके मंत्री सफल नहीं हो पा रहे हैं. नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चे के नेताओं ने हताश होकर लोगों से अपील की है कि वे जान-माल की रक्षा के लिए स्थानीय समितियां बनाएं.

नए मंत्रियों के प्रति नेपाल की नौकरशाही खुल्लमखुल्ला द्वेषपूर्ण व्यवहार कर रही है. एक अधिकारी ने कटाक्ष किया, "उन्हें तो फाइलों को पढ़ना भी नहीं आता." दूसरे अधिकारियों ने मजाक में कहा कि नए मंत्रियों ने पहला काम काली मर्सिडीज कारें हथियाने का किया. नेपाल में नेताओं की साख गिरते देर नहीं लगती. प्रधानमंत्री भट्टराई ही विवादों में फंस गए हैं. महाराजा को 'भद्र पुरुष' कहने के लिए उनकी खासी आलोचना हो रही है और उनकी प्रशासनिक क्षमताओं पर भी संदेह व्यक्त किया जाता है.

उनकी सरकार सचमुच कई समस्याओं से घिर गई है. हालांकि यह निर्वाचित सरकार नहीं है लेकिन उसे वैसा ही आचरण करना पड़ेगा. पुरानी व्यवस्था अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है लेकिन नई सरकार ने आदेश जारी किया है कि फाइलों पर मंत्री के दस्तखत को अंतिम माना जाए और उसे मंजूरी के लिए राजभवन न भेजा जाए. चूंकि महाराजा और अंतरिम सरकार के अधिकार अभी साफ-साफ तय नहीं किए गए हैं इसलिए अभी उलझन की स्थिति है.

राजनैतिक मोर्चे पर भी नई सरकार को फूंक-फूंककर कदम रखना पड़ रहा है. पिछली शासन व्यवस्था ने राजबंदियों को आम माफी देकर रिहा कर दिया है. इस कारण भी अंतरिम सरकार मुश्किल में है. तराई के नेता रामराजा प्रसाद सिंह के प्रति इसके बरताव से भी यह उजागर होता है. सिंह के खिलाफ वारंट जारी है और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई है. नई सरकार बनने के बाद भी वे भूमिगत हैं. सरकार उनके मामले में रहस्यमय चुप्पी साधे है.

यह सरकार जबकि अराजकता से निबटने में लगी है, यह स्पष्ट हो गया है कि कई सरकारी संगठनों ने उससे सहयोग करना बंद कर दिया है. नेपाली कांग्रेस के एक कार्यकर्ता का कहना है, "पुलिस का आईजी महाराजा का रिश्तेदार है और अतिरिक्त आईजी महारानी का. इसलिए जो कुछ हो रहा है उससे हमें आश्चर्य नहीं है." सरकार स्थिति को काबू में करने में विफल रही है तो इसका एक कारण यह भी है कि ज्यादातर नए मंत्री अभी हाल तक जेलों में बंद थे और उन्हें प्रशासन का कोई अनुभव नहीं है. एक कम्युनिस्ट नेता विष्णु बहादुर मनंधर कहते हैं, "सब कुछ अभी बदलाव की प्रक्रिया में है."

सर्वदलीय सरकार बनाने की कोशिशों ने पार्टियों के भीतरी मतभेदों को उजागर कर दिया. उदाहरण के लिए प्रमुख कम्युनिस्ट नेता राधाकृष्ण मैनाली को, जो महाराजा के साथ वार्ताओं में शामिल थे, मंत्रिमंडल में इसलिए नहीं लिया गया क्योंकि उनकी पार्टी ने युवा नेता झालनाथ खानाल को नामजद किया. और उम्मीद के विपरीत गिरिजा प्रसाद कोइराला ने मंत्री बनने से इनकार कर दिया, हालांकि कुछ लोग उन्हें भावी प्रधानमंत्री मान रहे थे. कोइराला ने कहा, "हमारे बीच कोई मतभेद नहीं है. आखिर किसी को पार्टी की देखभाल करने के लिए भी रहना चाहिए."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैक्स
एअरकूलर

मैक्स से लहराए समुंदर की सनसनाटी ताज़ी. ठंडी हवाएं...

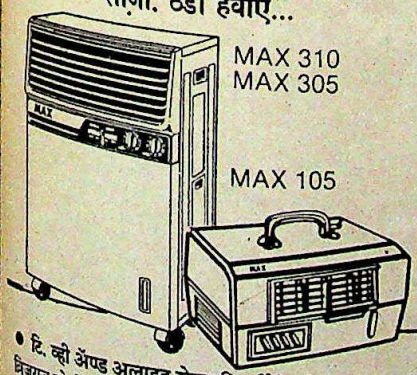

भारतीय मौसम के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन करके, बनाए गए. मैक्स एअर कूलर.

अब आप भारी-भरकम, जंग खाने वाले, शोर मचाने वाले एअर कूलर को कहिए अलविदा और ले आइए हाई-टैक मैक्स.

बेआवाज, खूबसूरत, सुगठित और पोर्टेबल मैक्स ए-बी-एस प्लास्टिक से बनाए जाते हैं. जिससे इसमें न तो जंग लगता है, न रखरखाव खर्च, और न ही रहता है बिजली का झटका लगने का डर!

सिन्थैटिक कूलिंग पैड्स युक्त, आसानी से यहां-वहां ले जाने के लिए पहियों पर बिठाया गया मैक्स एअर कूलर तिन मोडलों में उपलब्ध है.

मैक्स ३१०-हाई स्पीड मॉडल
ज्यादा हवा फेंके और ज्यादा ठंडा करे.

मैक्स ३०५-लो स्पीड मॉडल
आरोग्यदायक ठंडक के लिए.

मैक्स १०५-टेबल मॉडल
थ्री-इन-वन करिश्मा—जो कूलर, पंखे और हीटर तीनों का काम करे.

हर तरह की सजावट से मेल खाते आकर्षक रंगों में उपलब्ध.

बॉम्बे कुलर्स प्रा.लि.
१७ पाटिल टैरेस, पहली मंज़िल,
दादर (प. रेलवे) स्टेशन के सामने,
बम्बई ४०० ०२८.
फोन: ४२२ ३७३५, ४३० १४८९

पूरे भारत में अधिकृत डिस्ट्रीब्युटर्स्

● **टि. व्ही ॲण्ड अलाइड सेल्स** लिबर्टी बिल्डींग, पहला माला ३-६-३६४, बशिर बाग, हैद्राबाद-४०० ०२९ फोन: २३४४४८, २३३२६१. ● **नॅशनल एन्टरप्रायज़ेस** १ निलीमा फ्लॅट, बिजराज कोलोनी, सेंट झेवीयर स्कूल के सामने, नवरंगपूरा अहमदाबाद-३८० ००९ फोन: ४९१२४८ ● **सेलमोर इलेक्ट्रॉनिक्स** ४२, एम्.टि.एच. कंपाऊंड, इन्दौर-४५२ ००७ (एम्. पी.) फोन: ३७७६९. ● **सिंघल एन्टरप्रायज़ेस** टेक्सला हाऊस, १८, गोविंद मार्ग, पोलिस मेमोरीयल के पास, जयपूर-३०२ ००४ फोन: ४८०९१. ● **आयरन प्रॉडक्टस्** ५०, गौतमबुद्ध मार्ग लखनऊ-२२६ ०१८फोन: २४४५५१, २४८३९४ ● **चन्दा एन्टरप्रायज़ेस** बॉम्बे वाली गली, ऐअरफोर्स स्टेशन के सामने सिरसा-१२५ ०५५ फोन: २३९७८ ● **ओसवाल एन्टरप्रायज़ेस** १४ दि मॉल भटींडा: फोन: ४३०० ● **बेदी सेल्स कॉर्पोरेशन** १९-बी साइकल सोसायटी कास्टर गेट पुणे-११ हेड आफीस, १२५४, डेक्कन जिमखाना, पुणे-४ फोन: ५५६३८, ५७९९२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अंतरिम सरकार के दो प्रमुख घटकों के बीच मतभेदों की चर्चा आम है. ये दोनों ही घटक सैद्धांतिक स्तर पर एक-दूसरे के बिलकुल विपरीत हैं. संयुक्त वाम मोर्चा ने, जिसमें सात गुट शामिल हैं, चौदह सदस्यीय मंत्रिमंडल के गठन की मांग की थी. उसने यह शर्त रखी थी कि उसके सात सदस्य तथा सात नेपाली कांग्रेस के सदस्य मंत्री बनाए जाएं. लेकिन महाराजा द्वारा नामजद दो लोगों को मंत्रिमंडल में शामिल करने की बाध्यता के कारण तथा दो निर्दलियों को शामिल करने के गणेश मान सिंह के आग्रह के कारण 11 सदस्यीय मंत्रिमंडल बनाना पड़ा. इसमें चार मंत्री नेपाली कांग्रेस के और तीन वाम मोर्चा के हैं. वाम मोर्चा इसलिए भी नाराज है कि नेपाली कांग्रेस ने सभी महत्वपूर्ण विभाग अपने लोगों को सौंप दिए हैं. प्रधानमंत्री ने रक्षा और विदेश विभाग रखा, जबकि गृह विभाग नेपाली कांग्रेस के ही सदस्य को दिया गया. अब वाम मोर्चा के सात घटकों को मिलाकर एक पार्टी बनाने की कोशिश शुरू हो गई है.

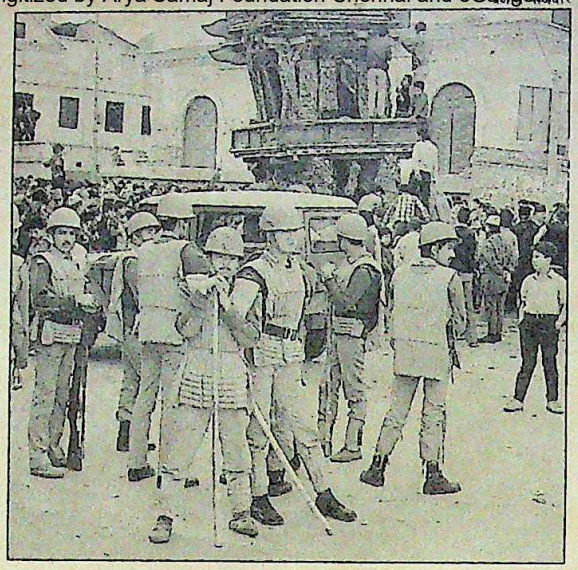

■ राजभवन की पहरेदारी करती पुलिस: नई सरकार से असंतुष्ट

दूसरी ओर पंचायत व्यवस्था में निष्ठा रखने वाले चुप नहीं बैठे हैं. राजनैतिक गतिविधियां जारी हैं और पूर्व प्रधानमंत्री सूर्यबहादुर थापा तथा डॉक्टर तुलसी गिरि के नेतृत्व में नई पार्टी बनाने की योजनाएं बन रही हैं. पूर्व प्रधानमंत्री लोकेंद्र बहादुर चंद ने कहा, "कई गुटों से वार्ताएं हुई हैं. पंचायत के पुराने सदस्य एकजुट होने के लिए तैयार हैं." लेकिन पंचायत व्यवस्था के समर्थकों को 'बदला' लेने पर उतारू भीड़ से निबटना पड़ेगा.

फिलहाल नई सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती लोगों की सुरक्षा और देश के स्थायित्व को बनाए रखना है. बिगड़ती आर्थिक स्थिति भी एक बड़ा मुद्दा है. नेपाल के प्रधानमंत्री ने भारत के साथ व्यापार आदि के मामले में यथास्थिति बहाल करने की अपील की है. भारत के सकारात्मक रुख से अंतरिम सरकार की स्थिति मजबूत हो सकती है. लेकिन भारत के प्रतिकूल रुख से नेपाल में बन रहा संदेह का वातावरण धीरे-धीरे मोहभंग में बदल सकता है. मनंधर कहते हैं, "जो क्रांति खुद को नहीं बचा सकती, वह क्रांति ही नहीं मानी जाएगी."

—उत्तम सेनगुप्त, काठमांडो में

अंतरिम सरकार

क्रांति अभी अधूरी

नेपाल में अंतरिम सरकार की हैसियत और ताकत पर कुछ लोगों को ही भरोसा है पर इसमें कोई शक नहीं कि राजा के पास आज भी बहुत अधिकार हैं. इससे नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चे में राजा की ताकत पर अंकुश लगाए बिना सरकार चलाने के गुण-दोष पर गरमागरम बहस छिड़ गई है.

नेपाली कांग्रेस के सर्वोच्च नेता गणेश मान सिंह भले ही बार-बार कह रहे हैं कि अब राजा संवैधानिक प्रमुख भर रह गए हैं कि मगर कई दूसरे लोग शाह बीरेंद्र द्वारा अंतरिम सरकार को बरखास्त किए जाने की संभावना को नहीं नकारते.

आखिर राजा ने संविधान, कैबिनेट या पंचायत तक की परवाह किए बिना अप्रैल में ही तीन प्रधानमंत्री बदल डाले, राजनैतिक दलों पर से प्रतिबंध उठा लिया और राष्ट्रीय पंचायत को भंग कर दिया है. पूर्व विदेशमंत्री ऋषिकेश शाह कहते हैं, "जापान के सर्वमान्य सम्राट को भी यह मानना पड़ा कि अंततः जनता ही सर्वोच्च सत्तासंपन्न है. सो, नेपाल नरेश भी अपनी सत्ता नहीं बनाए रख सकते लेकिन जब तक राजा यह स्वीकार नहीं करते तब तक आशंकाएं बनी रहेंगी." वाम मोर्चे की शाहना प्रधान कहती हैं, "मैं राजा द्वारा अंतरिम सरकार को बरखास्त किए जाने की संभावना से इनकार नहीं करती."

■ नेपाल नरेश बीरेंद्र और महारानी: क्रांति उलट देने की ताकत

रवीन्द्र मार्क

राजा के दो आदमियों को जिस तरह भट्टराई सरकार में शामिल कया गया, उससे यह धारणा और बलवती हुई है. राजा ने अपने दोनों आदमियों की घोषणा आखिरी वक्त पर की. इससे कई लोगों का मानना है कि ये गुप्तचर का काम करेंगे. गिरिजा प्रसाद कोइराला कहते हैं, "मुझे नहीं लगता कि राजा अंतरिम सरकार के साथ छेड़छाड़ करेंगे. लेकिन हमें चौकन्ना रहना होगा."

इसमें संदेह नहीं कि राजा लोगों में अपनी छवि गंवा बैठे हैं पर उनकी रणनीति उचित समय तक इंतजार करने की लगती है. काठमांडो में राजा विरोधी रैलियां हालांकि अभी जारी हैं लेकिन उनके अनेक प्रभावशाली शुभचिंतक भी हैं.

नेपाल में नया उद्घोष है 'क्रांति अभी पूरी नहीं हुई.' लेकिन राजा क्रांति को उलट देने की हैसियत रखते हैं.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनाइटेड®

माईक्रो ओवन की अपेक्षा 53% अधिक जल्दी पकाता है

प्रेशर कुकर व प्रेशर पॅन

उत्तमता में सब से आगे

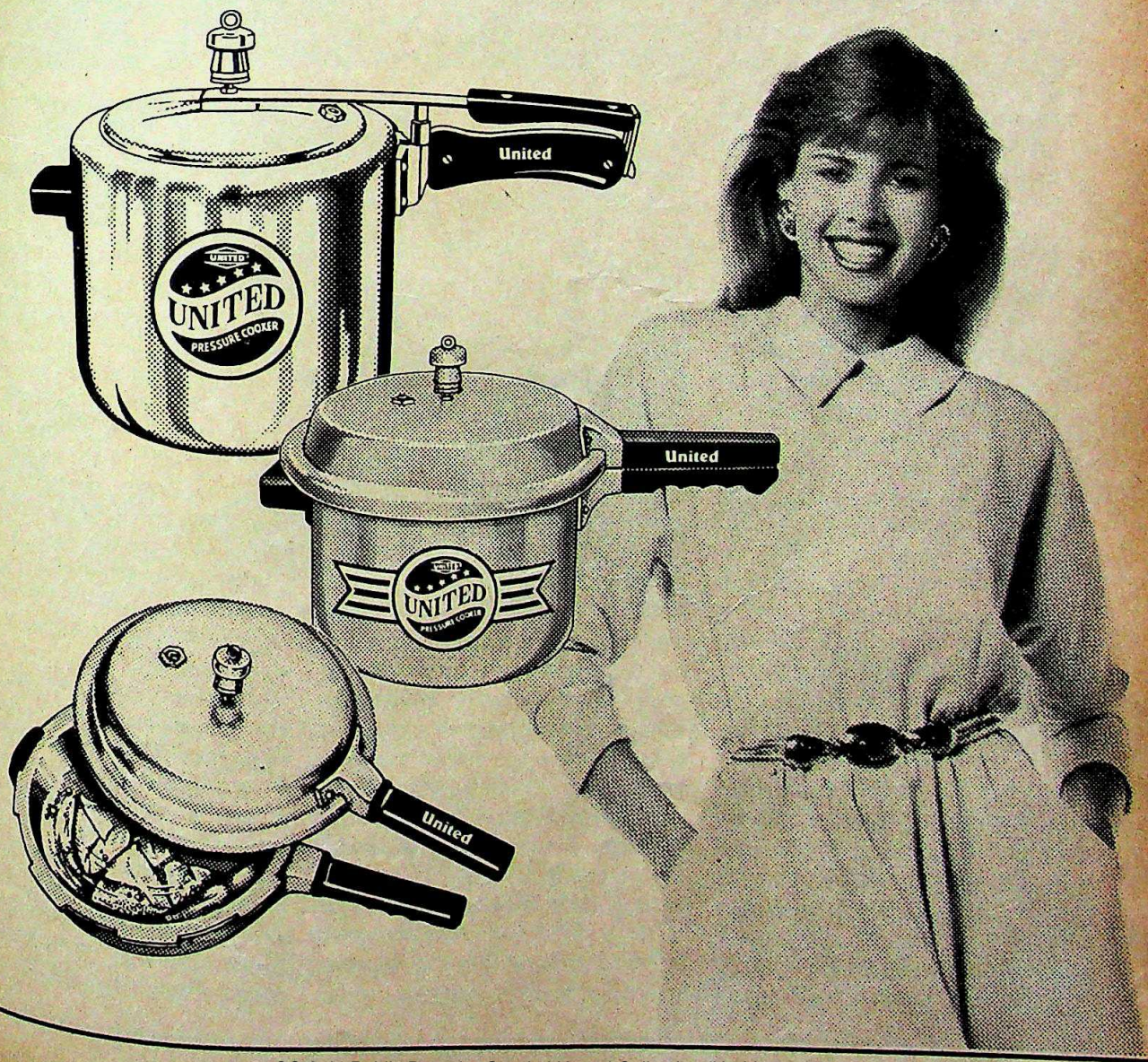

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़ने का करतब

एक महीने के कामकाज से लालू ने सिद्ध किया कि वे कोई लल्लू नहीं

बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के नाम को कुछ अखबार गलती से या शरारत से भले ही लल्लू प्रसाद यादव ही लिख रहे हों लेकिन अपने कार्यकाल के पहले महीने में यादव ने इतना तो साबित कर दिया है कि वे कोई 'लल्लू' नहीं हैं. राज्य के 25वें मुख्यमंत्री 42 वर्षीय लालू प्रसाद यादव 10 मार्च को शपथ लेने के पहले किसी भी सरकार में एक दिन के लिए भी शामिल नहीं हुए. राज्य का हर दूसरा आदमी यही सोच रहा था कि भूमिहीन किसान का यह बेटा क्या राज चला पाएगा.

लेकिन पिछले पखवाड़े अपने कार्यकाल का पहला महीना उन्होंने जब पूरा कर लिया है तब उनके बारे में लोगों की राय बदलने लगी है. उनसे काफी प्रभावित उनके एक मंत्री कहते हैं "फैसले करने की उनकी क्षमता को देखकर हमें सुखद आश्चर्य हुआ है. वे गलतियां तो कर सकते हैं पर उनकी मंशा बहुत साफ है."

भाजपा और वामपंथी दलों के समर्थन पर टिकी यादव की जनता दल सरकार के बारे में इतनी जल्दी कोई राय देना ठीक नहीं होगा लेकिन एकाध गलत संकेतों को छोड़ दें तो कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यादव और उनकी सरकार आबादी के हिसाब से देश के इस दूसरे सबसे बड़े राज्य पर धीरे-धीरे पकड़ बना रही है.

सरकार का पहला महीना तो प्रायः राजनैतिक जोड़तोड़ में बीता और प्रशासनिक मामलों पर वह पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाई. लेकिन सत्ता संभालने के 11 दिनों के अंदर ही इसने विधानसभा में विश्वास मत प्राप्त कर लिया. बजट पेश करना और राज्यपाल के अभिभाषण में अपनी सरकार की नीतियों को भी स्पष्ट करना इसके शुरू के कामों में शुमार था. फिर राज्यसभा और विधान परिषद के लिए उम्मीदवारों के चयन में दल के विभिन्न घटकों के दावों को भी संतुष्ट करना था. इन सबके बीच यादव को अपने राजनैतिक 'गुरु' देवीलाल के इस्तीफे के प्रकरण में मध्यस्थ की भूमिका निभाने के लिए दिल्ली भी दौड़ना पड़ा. यादव का कहना है, "विपक्षी एकता काफी त्याग के बाद कायम हुई है. अब अगर पार्टी टूटी तो लोग हमें माफ नहीं करेंगे."

यादव की अल्पमत सरकार को सत्ता संभालते ही राज्य में फूट पड़ी हिंसा से भी निबटना पड़ा. उनके शपथ ग्रहण करने के अगले ही दिन नवादा में दंगे में पांच लोगों की हत्या कर दी गई. चार दिन बाद जमशेदपुर में दंगा हुआ और तीन लोग मारे गए. इसके पांच दिन बाद मधुबनी में भाकपा प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की गोली से तीन लोग मरे. यह मामला शांत भी नहीं हुआ था कि जहानाबाद के एक गांव में हथियारबंद गिरोह ने पांच व्यक्तियों की हत्या कर दी.

अगर सरकार हिंसा के इस दौर से बेदाग निकल आई तो इसका कारण उसकी तत्परता थी. जहां जहां हिंसक वारदातें हुईं वहां सबसे पहले पहुंचने वालों में यादव ही होते थे. उन्होंने मधुबनी यात्रा में भाकपा नेताओं और जमशेदपुर यात्रा में भाजपा नेताओं को अपने साथ ले जाकर राजनैतिक चतुराई भी दिखाई. लेकिन इन नेताओं की उन्हें चलने नहीं दी.

इस सरकार ने उन लोगों को हैरत में डाल दिया जो यह मान बैठे थे कि पिछली इंका सरकार द्वारा किए गए अनगिनत घोटालों के कारण मुश्किल में पड़ी नई सरकार कोई नए काम करने के वादे नहीं कर पाएगी. सरकार ने इस वित्त वर्ष में कम-से-कम एक जिले में बेरोजगारी मिटाने का वादा किया है. उसने पहली बार गर्भवती महिला को पौष्टिक खुराक के लिए 300 रुपए का और दोबारा गर्भवती हुई महिला के लिए 500 रुपए का भत्ता देने की घोषणा की. वृद्धावस्था

लालू जनता के बीच (दाएं); और अपने घर में (नीचे): सादगी या दिखावा?

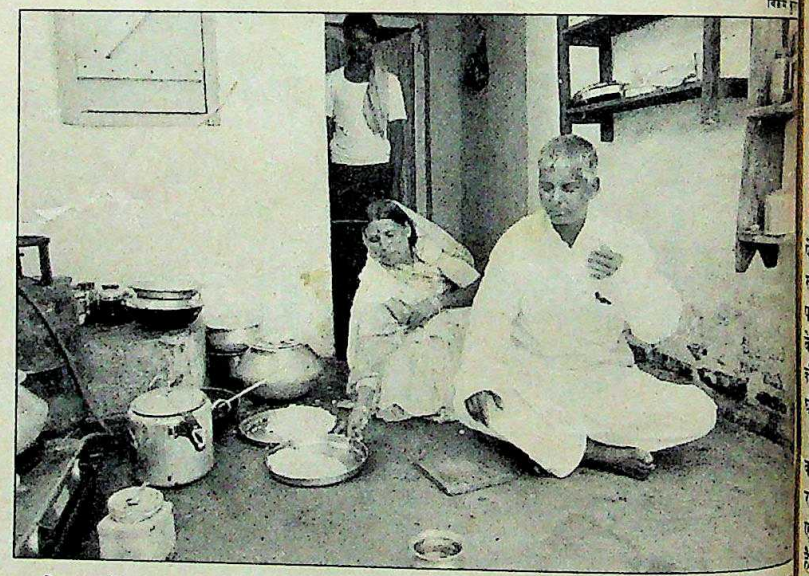

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

भाजपा और वामपंथी दलों के समर्थन पर टिकी लालू यादव की जनता दल सरकार के बारे में कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि देश के इस दूसरे सबसे बड़े राज्य पर वह धीरे-धीरे पकड़ बना रही है

पेंशन की राशि 30 रुपए से बढ़ाकर 100 रुपए कर दी. उसने सरकारी संस्थानों द्वारा परीक्षा या साक्षात्कार के लिए बुलाए जा रहे बेरोजगार युवकों को राज्य परिवहन निगम की बसों से मुफ्त यात्रा की सुविधा देने की घोषणा भी की.

नई सरकार के मंत्रियों ने भी संतुलित व्यवहार का ही परिचय दिया है. कृषिमंत्री रामजीवन सिंह अभी भी श्रीकृष्णपुरी में एक मित्र के घर में रह रहे हैं जहां फोन नहीं है. बिजली और सिंचाईमंत्री जगतानंद सिंह का डेरा अभी भी बेली रोड पर बना इंस्पेक्शन बंगला ही है. और यहां भी फोन नहीं है. वृषण पटेल, मंगल सिंह लमाई और रमई राम जैसे मंत्री भी अपने विधायक वाले छोटे फ्लैटों में ही रह रहे हैं. खुद मुख्यमंत्री का परिवार पटना वेटनरी कॉलेज के चपरासियों के क्वार्टर में रहता है. उनके दो भाई इस कॉलेज में चपरासी हैं.

उनके विरोधियों का कहना है कि वे यह सब केवल दिखावे के लिए कर रहे हैं. इन लोगों का कहना है कि पटना में उनके अपने दो शानदार मकान हैं और उन्हें चपरासी वाले क्वार्टर में रहने की जरूरत नहीं है. लेकिन हकीकत यह है कि यादव मुख्यमंत्री बनने के बाद ही इस क्वार्टर में रहने के लिए नहीं आए हैं. जब वे बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता थे तब भी वहीं रहते थे. लंबे अरसे से वे वहीं रह रहे हैं.

बहरहाल, इस सरकार की बड़ी कमजोरी इसकी अनुभवहीनता ही है. मुख्यमंत्री समेत आठ लोग पहली बार मंत्री बने हैं. उन्हें न तो मुद्दों की जानकारी है और न ही अधिकारियों के साथ उनका कोई तालमेल बैठा है. खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, कल्याण और परिवहनमंत्री रमई राम कहते हैं, "नौकरशाह हमारे साथ पूरा सहयोग नहीं कर रहे हैं. मैंने 17 मार्च को कुछ सूचनाएं मांगी थी और 16 अप्रैल तक मुझे ये नहीं मिल पाई हैं. ऐसे में हम कैसे काम कर पाएंगे?" लेकिन दूसरी ओर बिजली एवं जल संसाधनमंत्री जगतानंद सिंह जैसे लोग भी हैं जिनके इन दोनों विभागों से संबंधित ज्ञान से अधिकारी और इंजीनियर दंग हैं. अपनी ईमानदारी और ज्ञान से सबको प्रभावित करने के बावजूद सिंह पर व्यवहार कुशल न होने के आरोप लगने लगे हैं. कहा जा रहा है कि उन्होंने भ्रष्ट इंजीनियरों और ठेकेदारों के खिलाफ

पुराने समाजवादी, 58 वर्षीय रामजीवन सिंह दिवंगत कर्पूरी ठाकुर के पहले मंत्रिमंडल में भी थे. इस मृदुभाषी कृषि एवं सहकारितामंत्री का मानना है कि किसानों को समय से खाद-बीज-पानी उपलब्ध कराया जाए तो राज्य में खाद्यान्न की पैदावार काफी बढ़ाई जा सकती है.

पहली बार मंत्री बने 47 वर्षीय जगतानंद सिंह के जिम्मे बिजली, जल संसाधन और पर्यटन विभाग सौंपे गए हैं. सिंह ने अफसरों से कहा है, "मैं कृष्ण की तरह हाथ जोड़कर काम कराना चाहूंगा और अगर आप महाभारत ही कराना चाहेंगे तो वह भी होगा."

खान एवं वन विभाग किसी वनवासी मंत्री को देने का नियम-सा बन गया है. इस बार ये विभाग सौंपे गए हैं 54 वर्षीय करमचंद भगत को जो पहले भी मंत्री रह चुके हैं. अत्याधिक तेजी दिखाने में विश्वास न करने वाले भगत कहते हैं, "हड़बड़ में गड़बड़ होती है."

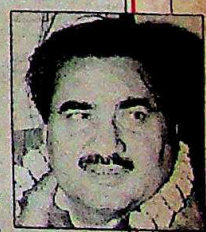

मुख्यमंत्री पद के दावेदार रहे 51 वर्षीय रघुनाथ झा को स्वास्थ्य और संसदीय कार्य जैसे महत्वपूर्ण विभाग सौंपे गए हैं. उनका मानना है कि "इस राज्य में अव्यवस्था को समाप्त करना बहुत मुश्किल काम है. इसलिए परिश्रम के अलावा और कोई चारा नहीं है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्रवाई करने में उतावलापन दिखाया है. लेकिन सिंह को इन आरोपों की परवाह नहीं है, "विभाग द्वारा आपूर्ति की गई चीजों के लिए भी ठेकेदारों को बड़े-बड़े भुगतान होने के मामले मैंने पाए हैं. यह सब देखकर भी मैं चुप रहूं?" वे कहते हैं, "अगर षड्यंत्रकारी लोग ही सरकार से मजबूत हो गए तो हमें सरकार चलाने का कोई हक नहीं रहेगा."

सिंह और उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगियों में तो यही उत्साह और विश्वास है लेकिन दूसरे लोग इतने आशावान नहीं हैं. एक वरिष्ठ अधिकारी अपना अनुभव सुनाते हैं कि पॉलीफाइबर संयंत्र के लिए बिहार पांच वर्षों से कोशिश कर रहा था लेकिन पिछले दिनों जब ऐसा संयंत्र लगाने का क़रार पश्चिम बंगाल की सरकार और अंबानी के बीच हो गया तो वे भागकर दिल्ली पहुंचे जहां मुख्यमंत्री यादव अपने (सांसद) निवास पर कई दिनों से रुके थे. पांच घंटे की प्रतीक्षा के बाद यादव से भेंट हुई तो यादव ने यह कहते हुए दो मिनट में ही बात खत्म कर दी कि पटना चलकर इस पर बात कीजिएगा. अधिकारी ने कहा कि यादव ने स्थिति की गंभीरता को नहीं समझा. दूसरे अधिकारी भी मानते हैं कि पश्चिम बंगाल और ओडीसा केंद्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से ढेर सारी रियायतें और फायदे ले रहे हैं, बिहार के मुख्यमंत्री इस मामले में पिछड़ते जा रहे हैं.

बिजली की कटौतियों के लिए और जरूरी जिंसों की महंगाई के लिए भी सरकार की खिंचाई हो रही है. मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारियों को जमाखोरों के खिलाफ छापे मारने का आदेश बड़े जोरशोर से दिया है लेकिन कोई सुधार नजर नहीं आता. एक इंका नेता ने कहा, "समस्या यह है कि मुख्यमंत्री और उनके सहयोगी अभी भी पुरानी सरकार की आलोचना में ही लगे हुए हैं. यह आलोचना का समय नहीं, फैसले करने और कदम उठाने का समय है."

सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जेहाद छेड़ने की घोषणा की है लेकिन इस दिशा में उठाया गया उसका पहला कदम ही बदले की भावना से प्रेरित लगा. खदान निदेशक के निलंबन और उनके खिलाफ खुफिया जांच के आदेश की तारीफ तो हुई लेकिन जब यादव ने आरोप लगाया कि इस अधिकारी को पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र का संरक्षण प्राप्त था, तो यह मामला बदला साधने वाला भी लगने लगा क्योंकि यह अधिकारी मिश्र का रिश्तेदार भी है. इसी प्रकार सात आईपीएस अधिकारियों के खिलाफ सीबीआई जांच की अनुमति देकर यादव ने जैसे बर्र के छत्ते में हाथ लगा दिया. इनमें से एक, डीआईजी रामचंद्र खां ने तुरंत एक संवाददाता सम्मेलन करके मुख्यमंत्री पर आरोप लगाया कि उन्होंने जबरन मेरा नाम भी इस विवाद में जोड़ दिया जबकि मुझे ऑडिट रिपोर्ट और हाईकोर्ट द्वारा निर्दोष करार दिया जा चुका है. इस पर यादव कुछ नहीं बोले लेकिन खां को सेवा शर्तों के उल्लंघन के आरोप वाला कारण बताओ नोटिस थमा दिया गया.

अपने घनिष्ठ मित्र रंजन यादव को राज्यसभा के लिए मनोनीत करवा करके भी मुख्यमंत्री ने कई लोगों की नाराजगी मोल ली. मुख्यमंत्री ने विधान परिषद के लिए उम्मीदवारों के चयन में भी किसी की नहीं चलने दी.

मुख्यमंत्री को सही मायने में पहली चुनौती राज्य जनता दल अध्यक्ष रामसुंदर दास से मिली जो खुद भी मुख्यमंत्री पद के दावेदार थे. उन्होंने राज्यस्तरीय बीस-सूत्री कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति का अध्यक्ष पद ठुकरा दिया. दास ने कहा, "इस मुद्दे पर मुझसे कभी सलाह-मशविरा नहीं किया गया और जब मैंने समिति में शामिल लोगों को देखा तो मैं समझ गया कि यह समिति कतई कारगर साबित नहीं हो सकती." दास की शिकायत है कि मुख्यमंत्री ने अपने मंत्रिमंडल के गठन, राज्यसभा और विधान परिषद चुनावों के लिए जनता दल उम्मीदवारों के चयन या किसी दूसरे मुद्दे पर उनसे सलाह-मशविरा नहीं किया. उन्होंने कहा, "यदि सरकार लोगों या पार्टी के हितों के खिलाफ काम करेगी तो मैं चुप नहीं बैठा रह सकता."

राज्य की खस्ता आर्थिक स्थिति और पार्टी के असंतुष्टों ने सरकार को परेशान करना शुरू कर दिया है. बिहार राज्य वित्त निगम और जल बोर्ड के कर्मचारियों की हड़ताल ने उसे पहले से ही परेशान कर रखा था. वैसे, अभी तक तो लोगों के बीच सरकार की साख कायम है लेकिन राज्य की स्थिति में गिरावट को रोकने और सार्वजनिक सेवाओं को सुधारने में अगर वह सफल नहीं हुई तो वह किसी भी समय मुश्किल में पड़ सकती है. हां, सरकार सिर्फ इसी बात से निश्चिंत हो सकती है कि विधानसभा में कोई और पार्टी उसे चुनौती देने की स्थिति में नहीं है, इसके 50 विधायक भी टूटे (जो संभव नहीं लगता) तब भी नहीं. लेकिन अगर इसने कुछ करके नहीं दिखाया तो दबा-छिपा विरोध मुखर हो सकता है. —उत्तम सेनगुप्त

61 वर्षीय राम-बिलास सिंह भी पुराने समाजवादी हैं. खुद को यादव नेता बताने में वे झिझकते हैं, "यह सरकार सिर्फ यादवों का प्रतिनिधित्व नहीं करती." राजस्व और भूमि सुधार-मंत्री के रूप में उनकी जिम्मेवारियां बड़ी मानी जाती हैं.

45 वर्षीय इलियास हुसैन पहली बार मंत्री बने हैं. लोक-निर्माण एवं सड़क निर्माणमंत्री के रूप में उन्होंने घोषणा कर दी है कि सड़कों के नाम उन्हें बनाने वाले मजदूरों के नाम पर होंगे और कितना काम हुआ के बजाए कैसा काम हुआ यह ध्यान रखा जाएगा.

रिक्शाचालक के बेटे, 56 वर्षीय रमई राम ने कल्याण, परिवहन, खाद्य एवं आपूर्ति-मंत्री बनते ही कर्मचारियों को अनुशासन का पाठ पढ़ाने का बीड़ा उठाया है. सो, उनकी शिकायत स्वाभाविक है कि "अधिकारी सहयोग नहीं कर रहे."

ईमानदारी के लिए विख्यात 42 वर्षीय वृषण पटेल भी विधायक तो 1980 से हैं पर पहली बार मंत्री बने हैं. ग्रामीण एवं नगर विकासमंत्री के रूप में वे फूंक-फूंककर कदम रखने लगे हैं. वे मानते हैं कि अभी वे अपने विभाग की कार्यविधि समझ रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम

उल्फा का अपशकुनी साया

अगप सरकार समस्या न सुलझा पाने के कारण मुसीबत में

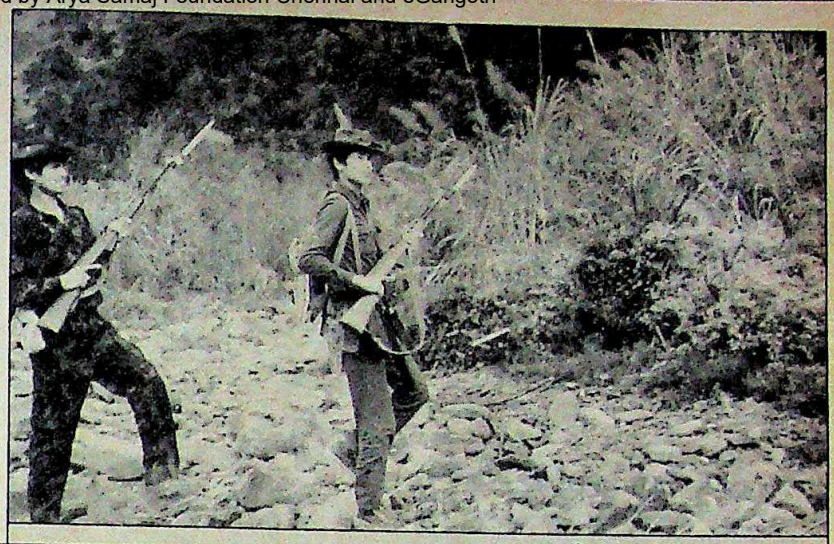

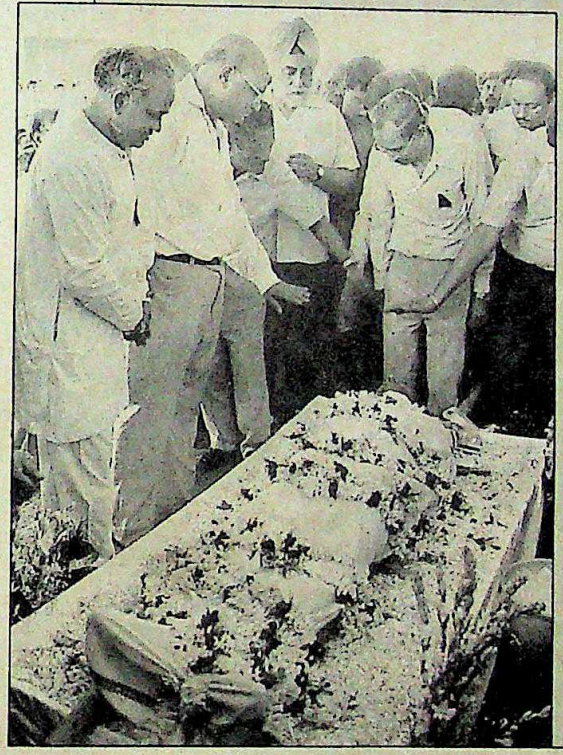

प्रशिक्षण पाते उल्फा छापामार; (बाएं) पाल की अंत्येष्टि: बड़ा खतरा

चार साल पहले जब प्रफुल्ल कुमार महंत और असम गण परिषद (अगप) के उनके साथी एक लंबे आंदोलन के बाद सिर ऊंचा किए सत्ता पर काबिज हुए तब उन्हें असम के सच्चे नायकों के रूप में देखा गया. लेकिन अब उन्हें जननायक के बजाए खलनायक माना जाने लगा है. और ऊपर से विडंबना यह कि कुछ लोगों की नजर में मूल असम गण परिषद से टूटकर बने युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) के भूमिगत, खूंखार बंदूकधारी उग्रवादी अब पूर्वोत्तर के इस राज्य के असली रक्षक हो गए हैं.

मुख्यमंत्री महंत और उनकी सरकार को उल्फा की कार्रवाइयों और उसके तहत बढ़ते प्रभाव ने अपशकुनी साये की तरह घेर रखा है. 'निकम्मेपन' की बदनामी झेल रही सरकार, राज्य से पूंजी पलायन की वजह से जर्जर अर्थव्यवस्था और सरकार के बड़े नेताओं में खुली प्रतिद्वंद्विता तो असम सरकार पहले ही झेल रही है. तिस पर उसे इसी साल मतदाताओं का सामना भी करना है. लेकिन उसका वोट बैंक लगभग दिवालिया होने की स्थिति में है.

बड़े खतरे के रूप में उभर रही उल्फा से निबटने में सरकार की असहायता से उसके खिलाफ जनाक्रोश भड़क उठा है. पिछले पखवाड़े उग्रवादियों ने प्रसिद्ध उद्योगपति एपीजे समूह के प्रमुख तथा असम फ्रंटियर टी कंपनी के अध्यक्ष 54 वर्षीय सुरेंद्र पाल की हत्या कर दी. पाल की हत्या ने राज्य और बाहर के उद्योगपतियों में भारी दहशत पैदा कर दी है.

महंत भी मानते हैं कि समस्या 'खतरनाक' स्थिति में पहुंच चुकी है. लेकिन इस संगठन के व्यापक जनसमर्थन को देखते हुए महंत ज्यादा कुछ कर सकते हैं, ऐसा नहीं लगता. अभी पाल की हत्या के दो दिन पहले ही इसका '12वां स्थापना दिवस' असम के लगभग हर जिले में मनाया गया.

दिल्ली में गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद ने संसद में कहा, "उल्फा का लंबा इतिहास है. कभी-कभी यह भ्रष्टाचार विरोध, जुआ विरोध, शराब बंदी का अभियान चलाकर लोगों को भरमाता भी रहा है." यही कारण है कि केंद्र और राज्य प्रशासन इस संगठन पर सख्त कार्रवाई से बचते रहे हैं. सबसे अधिक चिंतनीय तो असम के लोगों की यह व्यापक धारणा है कि उल्फा को अगप का वरदहस्त प्राप्त है. पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री संतोष मोहन देव कहते हैं, "राज्य में आम धारणा है कि उल्फा की गतिविधियों का अगप सरकार से प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध है." वैसे, अगप के नेता इस आरोप का खंडन करते हैं. पर यह मिटाए नहीं मिटता.

सबसे अधिक चिंतनीय तो असम के लोगों की यह व्यापक धारणा है कि उल्फा को अगप का वरदहस्त प्राप्त है. वैसे, अगप के नेता इस आरोप का खंडन करते हैं. पर यह मिटाए नहीं मिटता

और तो और, असम में आगामी चुनाव के मद्देनजर महंत के कामकाज में असमंजस की साफ-साफ झलक मिलती है. पिछले पखवाड़े राज्य के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक 'सेंटिनल' ने उल्फा से संबंधों के कारण अगप की खिंचाई की तो महंत ने स्थानीय प्रेस को बुरा-भला कहना शुरू किया. नतीजतन असम का लगभग पूरा प्रेस जगत अगप के खिलाफ हो गया.

उल्फा के व्यापक जनसमर्थन को देखते हुए अगर वह चुनाव के बहिष्कार का आह्वान करता है तो अगप की चुनाव जीतने की थोड़ी-बहुत उम्मीद भी धराशायी हो जाएगी. हालांकि उल्फा के प्रवक्ता सिद्धार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश ज़िंदगी में कुछ और चीज़ें स्पेक्ट्रावाइड-सी होतीं!

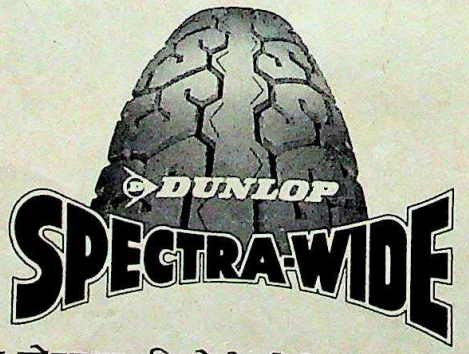

स्कूटरों और मोटरसाइकिलों के लिये सबसे ज़्यादा चौड़े टायर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुकन कहते हैं कि "हम भारतीय ढांचे के तहत कभी चुनाव नहीं लड़ेंगे और न ही हम लोगों से इसका बहिष्कार करने को कहेंगे."

लेकिन असम के ज्यादातर मतदाता उल्फा के उदय को अगप सरकार की नाकामियों से जोड़ते हैं. चुनाव के ऐन पहले अगप के निकम्मेपन के बारे में लोगों की आम धारणा से राज्य सरकार के हाथ-पांव फूल गए हैं. अगप के महासचिव अतुल बोरा मानते हैं कि अगप की चुनावी संभावना "अच्छी नहीं है" पर वे यह कहकर दिलासा देते हैं कि "मुझे यकीन कि किसी दूसरी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलेगा."

साइकियाः साफ रणनीति

लेकिन इंका ऐसा नहीं मानती. पार्टी आलाकमान द्वारा असम में पार्टी की बागडोर हितेश्वर साइकिया को सौंपने से अगप में निराशा फैल गई है. पूर्व इंकाई मुख्यमंत्री की छवि चतुर और मंजे हुए नेता की है. असम इंका के सचिव आकोन बोरा कहते हैं, "अगर उल्फा ने अगप का समर्थन नहीं किया तो हम सत्ता में लौट सकते हैं." उधर, साइकिया ने अपना राजनैतिक वजन भी दिखाना शुरू कर दिया है.

हाल में उल्फा के खिलाफ उठ खड़े होने वाले गुटों को साइकिया की जोड़तोड़ ही माना जा रहा है. माइनारिटीज ऑफ असम लिबरेशन आर्मी और असम ट्राइबल स्टुडेंट्स यूनियन से निकले ट्राइबल वालंटियर फोर्स का प्रत्यक्ष मकसद तो उल्फा के आतंक का मुकाबला करना ही है.

वैसे साइकिया की रणनीति सीधी है. उनकी योजना इंका के लिए अल्पसंख्यकों और वनवासियों का समर्थन जुटाना है. 1985 के चुनाव में अगप को भारी लोकप्रियता के बावजूद 32.50 (67 सीटें) फीसदी मत ही मिले थे.

साइकिया की यह रणनीति सफल होती नजर आती है. पिछले पखवाड़े आल बोडो स्टुडेंट्स यूनियन (उपेंद्र ब्रह्मा गुट) ने घोषणा की कि उल्फा से उसका कोई रिश्ता नहीं रहेगा. इस संगठन ने अलग राज्य की मांग के लिए फिर हिंसक संघर्ष शुरू कर दिया है. अगप मानती आई है कि बोडो आंदोलन के पीछे इंका का हाथ है. उल्फा का मुकाबला करने को प्रतिबद्ध दूसरे गुट भी अगर मैदान में कूद पड़ते हैं तो इंका निश्चित ही फायदे में रहेगी.

लगता है कि असम अब आखिरी राजनैतिक लड़ाई की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा है और इस लड़ाई में बंदूक की प्रधानता का अंदेशा ज्यादा है. —**फरजंद अहमद**, गुवाहाटी में

प्रफुल्ल कुमार महंत

'समस्या बहुत गंभीर है'

*'उल्फा' के समांतर प्रशासन के चलते और अपनी सरकार पर निकम्मेपन के आरोपों के मद्देनजर असम के मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत को राज्य के आगामी चुनावों में कड़ी चुनौती का सामना है. मुश्किलों से घिरे महंत से मुख्य संवाददाता **फरजंद अहमद** ने गुवाहाटी में बातचीत की. उसी के कुछ अंश:*

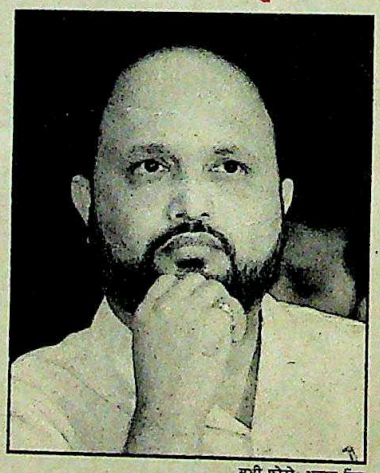

सभी फोटो: भवान सिंह

● ***उल्फा से आप कैसे निबटेंगे?***

समस्या संगीन है. मार्च में हमने सभी राजनैतिक दलों से इस पर विचार-विमर्श किया था. उन्होंने भी राजनैतिक और प्रशासनिक तरीके से इससे निबटने की सलाह दी. हम इस दिशा में काम कर रहे हैं. 10 लाख से अधिक शिक्षित बेरोजगार नौजवान हैं जो आसानी से उल्फा के प्रभाव में आ सकते हैं. हम केंद्र से अधिक परियोजनाएं मांगते आ रहे हैं ताकि उन्हें सचमुच रोजगार दिया जा सके.

● ***माना जाता है कि उल्फा को अगप से मदद मिल रही है.***

अगप अगर उल्फा के बारे में खामोश है तो राज्य की दूसरी पार्टियां भी कुछ नहीं बोल रहीं. इसका यह मतलब नहीं कि अगप उसकी मदद कर रही है.

● ***आपकी सरकार व्यापारियों को सुरक्षा देने में नाकाम रही है.***

व्यापारी लोग सरकार के पास शिकायत लेकर नहीं आते. इसलिए प्रशासन के लिए तुरंत कार्रवाई करना मुश्किल है.

● ***हाल ही में आप प्रेस पर इसलिए बरसे कि एक संपादकीय टिप्पणी में राज्य में राष्ट्रपति शासन की संभावना जताई गई थी.***

यह कुछ निहित स्वार्थों का दुष्प्रचार है. मुझे नहीं लगता कि राज्य में हालात राष्ट्रपति शासन लगाए जाने के अनुकूल हैं.

● ***अगप सरकार पर आरोप है कि साढ़े चार साल में उसने कुछ नहीं किया.***

यह सही नहीं है. दरअसल केंद्र की इंका सरकार ने हमें कोई मदद नहीं दी. अब केंद्र में दोस्ताना सरकार होने से हम बेहतर हालात की उम्मीद करते हैं.

● ***आपको केंद्र से सहायता का कोई आश्वासन मिला है?***

केंद्र ने हमें सख्ती से निबटने को कहा है और जल्द ही सुरक्षा बलों की 15 अतिरिक्त कंपनियां भेजने का वादा किया है. यही वक्त है जब राज्य को विकास में केंद्र की ज्यादा सहायता की जरूरत है.

● ***चुनाव में आपकी पार्टी के आसार कैसे हैं?***

यह असम समझौता लागू करने, खासकर मतदाता सूचियों को दुरुस्त करने पर निर्भर करता है. पिछली केंद्र सरकार के असहयोगपूर्ण रवैए के चलते इस समझौते की कुछ धाराओं को लागू नहीं किया जा सका. चार साल तक केंद्र ने कुछ नहीं किया. पर हमने लोगों की सहायता की.

● ***लोग अगप पर भरोसा खो चुके हैं?***

कुछ लोग, खासकर शहरी इलाकों में, स्वभाव से व्यवस्था विरोधी हैं. देहातों में अभी भी हमारा आधार मजबूत है.

● ***हितेश्वर साइकिया को राज्य इंका अध्यक्ष बनाए जाने से अगप के खेमे में भगदड़ मच गई बताई जाती है.***

साइकिया इस बार कुछ नहीं कर पाएंगे. 1985 के चुनाव में सत्ता में होते हुए भी वे हार गए थे. लोग उनकी कारस्तानियों को अभी भूले नहीं हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड

ट्राउज़र के लिए फ़ैंटालोनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिनेमा

फिर आया जवां प्यार का मौसम

हिंसा से लहूलुहान परदे पर प्रेम की कोंपलें

मुहब्बत के शोलों में जलते दो कमसिन, मासूम दिलों को मुसीबत में घिरा देखकर, उन्हें जुदाई में जार-जार रोता देखकर कौन सख्तदिल होगा जो जज्बात की रौ में नहीं बह जाएगा.

आज हिंदी फिल्मों में इन्हीं जज्बात को भुनाने की होड़ लग गई है. फिल्मों की इस नई खेप में युवा प्रेमी युवा ही बने रहते हैं, मासूम भी, और घबराए हुए से भी. और हां, बहुत बेबस-से भी. लेकिन उनकी इसी मासूमियत और बेबसी ने जैसे दर्शकों पर जादू कर दिया है. वे बस खिंचे चले आ रहे हैं और नतीजा यह कि पिछले दशक इन प्रेमकथाओं ने रिकार्डतोड़ कामयाबी हासिल की है. हिंदुस्तान में आम तौर पर बड़ा परदा प्रेममय रहा है लेकिन इस बार बात कुछ और ही है.

इस परदे पर प्यार की अनगिनत कथाएं

मासूम दिलों की मुसीबत पर बनी कयामत से कयामत तक ने रिकार्डतोड़ सफलता पाई

मंसूर खां की *कयामत से कयामत तक* में जुही चावला और आमिर खां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवंत हुई. इनमें से कुछ बेतुकी, भौंडी थीं तो कुछ बिलकुल अविश्वसनीय और कुछ बेहद निष्पाप-सी भी. कई जोड़े इन कथाओं को जीते नजर आए—राजकपूर और नरगिस, दिलीप कुमार और वहीदा, वहीदा और गुरुदत्त, शशि कपूर और नंदा, राजेश खन्ना और शर्मिला, धर्मेंद्र और हेमामालिनी वगैरह. लेकिन धीरे-धीरे परदे का तेवर बदलता-सा दिखा. ढिशुम-ढिशुम और फिर बंदूकों, स्टेनगनों की गरज, खून-खराबा, बलात्कार, लूटमार. यह परदा जैसे आग उगलने लगा. इस आग में वे झाड़ियां, वे पेड़ जल गए जिन के इर्दगिर्द मुहब्बत के नगमे गाए जाते थे. और फिर प्रेम का जैसे सूखा पड़ गया जो लगभग एक दशक तक कायम रहा.

फिर बरसात की पहली फुहारों की तरह पिछले नवंबर में आई फिल्म 'मैंने प्यार किया' और रुपहले परदे के बंजर पर प्रेम का पौधा हरा होने लगा. वैसे, इस बीच इक्का-दुक्का रोमांटिक फिल्में जरूर आईं. मगर रिकार्ड तोड़ने वाली 'बॉबी' और 'एक दूजे के लिए' को छोड़ दें तो बड़ा परदा लहूलुहान ही नजर आता रहा.

अब 'मैंने प्यार किया' ने इस धारा को बदला है (देखें बॉक्स). दोबारा अपनी जमीन पाकर प्रेम अब पूरे परदे को अपनी बांहों में समेट लेने को आतुर है. 'ट्रेड गाइड' के कार्यकारी संपादक तरुण आदर्श के मुताबिक 20 करोड़ रु. से ज्यादा का मुनाफा बटोरने की ओर अग्रसर यह फिल्म भारतीय फिल्म उद्योग के इतिहास में सबसे सफल फिल्म मानी जाने लगी है. इसके निर्माता राजश्री प्रोडक्शंस के ताराचंद बड़जात्या सही आंकड़ा बताने से, स्वाभाविक है, हिचकते हैं. लेकिन फिलहाल 'मैंने प्यार किया' के 250 प्रिंट बाजार में हैं और यह 25 हफ्ते से कई सिनेमाघरों में हाउसफुल चल रही है. और उम्मीद है यह अब तक की सफलतम फिल्म 'शोले' का, जो बंबई में लगातार तीन साल तक चली, रिकार्ड तोड देगी.

इस फिल्म की हैरतअंगेज और अप्रत्याशित सफलता ने प्रेमकथाओं का जैसे पिटारा खोल दिया है. फिलहाल 60 से अधिक रोमांटिक हिंदी फिल्में निर्माणाधीन हैं. ऐसी ही दो फिल्मों की तैयारी कर रहे फिल्म निर्माता मनमोहन देसाई कहते हैं, "यह फिल्म 'आलम आरा' के बाद सबसे हिट रही है. इसने अब तक के सारे रिकार्ड तोड़ डाले हैं."

इन फिल्मों के नायक-नायिका रोमियो और जूलियट की तरह ही किशोरावस्था की दहलीज पर होते हैं. पिता के अधूरे सपने 'हिना' को साकार करने में जुटे रणधीर कपूर कहते हैं, "वेस्ट साइड स्टोरी के अनेक रूप सामने आने वाले हैं. नाराज किशोर अब प्रेम में पागल नजर आएगा."

लिहाजा बिलकुल ताजा चेहरे तो सरासर जरूरी हैं. निर्देशक राजकुमार कोहली ने 'ताजा युवा चेहरों' के लिए राष्ट्रीय अखबारों में बड़े-बड़े विज्ञापन दिए. सिर्फ नया जोड़ा ही दर्शकों को भरोसा दिला सकता है कि उनका प्यार सच्चा है. सुभाष घई कहते हैं, "मुझे 'सौदागर' के लिए एकदम निष्कलुष, मासूम, पवित्र चेहरे की तलाश है क्योंकि मेरे नायक-नायिका का दुनियादारी से कुछ लेना-देना नहीं है. उन्हें तो अपने प्यार से मतलब है."

इस लाइलाज प्रेमरोग के लक्षण मंसूर खां की 'कयामत से कयामत तक' की कामयाबी के बाद से उभरने लगे थे. 1988 में दो नए किरदारों को लेकर बनाई गई इस फिल्म ने उस दौर में गोल्डन जुबली मनाई जिस दौर में मारधाड़ से भरपूर बड़े बजट की फिल्में पिट रही थीं. और पिछले साल यश चोपड़ा की 'चांदनी' 25 हफ्ते तक हाउसफुल चली.

लेकिन यह प्रेमरोग कुछ माह पहले 'मैंने प्यार किया' के बाद जैसे महामारी में बदल गया. सलमान खां-भाग्यश्री पटवर्धन की जोड़ी देश भर की चहेती बन गई. हर किसी की जुबान पर उनके ही गीत हैं. यहां तक कि जो लोग पहले इसे निरी भावुकता भरी प्रेमकथा कहकर खारिज कर चुके थे, वे भी अब अपने शब्द वापस ले रहे हैं. निर्देशक विनोद चोपड़ा पूछते हैं, "मैं धारा के विपरीत धारा में कैसे जा सकता हूं? यह फिल्म तो कर्णप्रिय संगीत की तरह है, जिसका हर कोई दीवाना होता है. आप इस पर नुक्ताचीनी कैसे कर सकते हैं?"

पूरा फिल्म उद्योग अब इस स्वर्णिम पथ का पथिक बनने की कोशिश में है. विनोद चोपड़ा खुद एक सीधी-सच्ची रोमांटिक

जवां दिलों के बिछड़ने और मिलने की कहानी चांदनी भी जबरदस्त हिट हुई

यश चोपड़ा की *चांदनी* में ऋषि कपूर और श्रीदेवी

c Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म बना रहे हैं. यह उनकी अपसंध जगत पर बनी हिंसा से भरपूर ताजा फिल्म 'परिंदा' से एकदम विपरीत होगी. महेश भट्ट समेत छह निर्देशक सुपर कैसेट्स के लिए प्रेम-कथाओं पर फिल्म बना रहे हैं. यही नहीं, 'शोले' बनाकर मारधाड़ फिल्मों के दौर की शुरुआत करने वाला जी.पी. सिप्पी बैनर भी अब प्यार-मुहब्बत में हाथ आजमाने जा रहा है. 'जोशीले' की बंदूकों का धुआं अभी माहौल में तिर ही रहा है कि इसके निर्देशक सिब्ते हसन ने दो नए सितारों को लेकर एक ग्रामीण प्रेमकथा पर 'आवाज दे कहां है' पूरी कर ली है. किशोर दिलों की धड़कन आमिर खां फिलहाल आधा दर्जन रोमांटिक फिल्मों में व्यस्त हैं. पिता ताहिर और चाचा नासिर हुसैन दोनों ने उन्हें कॉलेज का किशोर मजनूं बनाया है. कहीं बाजी हाथ से न छूटे, इस डर से फिल्मी दुनिया के मौजूदा 'मुगल' सुभाष घई दो फिल्मी धुरंधरों दिलीप कुमार और राजकुमार के फौलादी दिलों को पिघलाने के लिए अपनी नई फिल्म 'सौदागर' में किशोर प्रेमियों का नया जोड़ा-मोनिषा कोइराला और विवेक मुशरान-उतार रहे हैं. अनिल कपूर भी इसी मदहोशी में दिख रहे हैं. वे कहते हैं, "मैं रोमांटिक हुआ जा रहा हूं."

हिंसा से लबरेज माहौल में आखिर यह प्रेम अचानक क्यों कर आ टपका? एक बड़ी वजह शायद हिंसा की अति हो सकती है. क्रोध और प्रतिशोध अब बीते जमाने की बातें हो गई हैं. और 'क्रोध के अवतार' अमिताभ बच्चन की अब परदे से लगभग रवानगी हो चुकी है. 'एंग्री यंगमैन' का यह चरित्र रचने वाले सलीम-जावेद भी अब इससे ऊब चुके हैं. सलीम कहते हैं, "जंजीर उस निरीह नायक के खिलाफ बगावत थी जिसे बारिश में धकेल दिया जाता था या जिस पर जूते फेंक दिए जाते थे और वह सब कुछ सहता था. इस फिल्म ने 'जैसे को तैसा' वाले दौर की शुरुआत की. अब वह दौर बीत चुका है."

लेकिन इस सुखद बयार की प्रमुख वजह शायद संगीत ही है. यह प्रेम की चाह ही पूरा नहीं कर रहा है, बॉक्स ऑफिस की भूख भी शांत कर रहा है. निर्देशक यश चोपड़ा कहते हैं, "संगीत ने ही धारा मोड़ी है. सुरीले प्रेमगीतों का जमाना लौट रहा है." हाल की सभी सुपर हिट फिल्में—'तेजाब', 'त्रिदेव', 'रामलखन', 'चांदनी' और 'मैंने प्यार किया'—संगीत-प्रधान हैं. 'चांदनी' और 'मैंने प्यार किया' दोनों में ही नौ-नौ गाने हैं. 'मैंने प्यार किया' के तीन गाने तो बेहद लंबे, लगभग नौ-नौ मिनट तक चलते हैं.

पहले लोग फिल्मों में गानों के शुरू होते ही हॉल से बाहर सिगरेट वगैरह पीने चल देते थे. मगर अब वे धुन सुनते ही हॉल में दाखिल हो जाते हैं. मशहूर खलनायक अमरीश पुरी कहते हैं, "पहले लोग मारपीट वाले दृश्यों पर सीटियां बजाते थे. अब वे गानों के दौरान बजाते हैं." बदलाव की यह बयार इतनी तेज बह रही है कि अमरीश पुरी भी गाने लगे हैं. हाल में उन्होंने श्रीदेवी के साथ एक युगल गीत गाया है.

'मैंने प्यार किया', 'आशिकी', 'जो जीते वही सिकंदर' जैसी फिल्मों में जो किशोरवय नायक है उसके भीतर कोई महत्वाकांक्षा न है. वह बेरोजगार है और निरुद्देश्य भटक है. उसे मतलब है तो सिर्फ प्यार से. यहां 'आवारा' के नायक जैसा दिखता है. लेकि एक फर्क भी है. राजकपूर की 'आवारा' नायक का चरित्र बेहद नाटकीय और स्पर्शी तो है, वास्तविक नहीं लगता.

लेकिन आज का युवा नायक जाने पहचाना है. वह देश के अशिक्षित या शिक्षित बेरोजगारों की बढ़ती जमात में कोई एक है. वह बेहतर जीवन, अच्छे कपड़े सुंदर 'हेयर स्टाइल', रोमांस सब कुछ चाहता है पर उसमें यह सब हासिल करने के जीवट का नितांत अभाव है. राजकपूर या राजेश कुमार के समय में बी.ए. की डिग्री अच्छी नौकरी का पासपोर्ट हुआ करती थी. अब वह बात नहीं है—न जीवन में, न परदे पर. नब्बे के दशक की फिल्मों में राजेंद्र कुमार भागे भागे मां को यह बताने घर पहुंचते कि परीक्षा में अव्वल रहे हैं और फिर मां-बेटे की आंखों से खुशी के आंसू बह निकलते. सलीम खां बताते हैं, "हमारे जमाने में नौकरी पाना पहला लक्ष्य होता था. प्यार-मुहब्बत इसके बाद की बात थी. लेकिन अब माहौल उलट गया है." अपने परिवार और 'मैंने प्यार किया' से प्रसिद्धि पा चुके अपने बेटे सलमान के बारे में वे कहते हैं, "फिल्म में सलमान उस लड़के का प्रतिनिधित्व करता है जो प्यार करना चाहता है. उसकी और कोई आकांक्षा नहीं है."

लेकिन आज प्रेम का मतलब कड़ी मेहनत भी है. आज के युवा प्रेमी को सचमुच प्या

मुहब्बत ने भारत-पाक सरहद को भी तोड़ डाला

रणधीर कपूर की *हिना* में ऋषि कपूर और ज़ेबा बख्तियार

omain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने प्यार किया

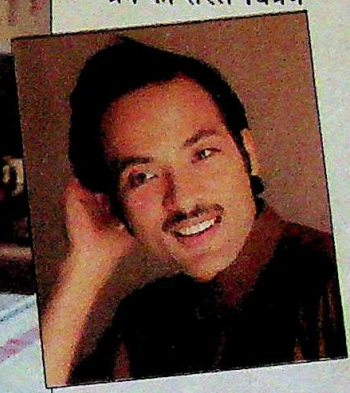

भाग्यश्री और सलमान खां 'मैंने प्यार किया' में; निर्देशक सूरज बड़जात्या: प्रेम का सरल चित्रण

दिल अपना, प्रीत अपनी

बंबई के वीर सावरकर मार्ग पर जैसे अनहोनी हो गई. 44 फिल्में बना चुका राजश्री प्रोडक्शंस बोरिया-बिस्तर समेटने लगा था. कर्जे चुकता करने के लिए इसका बंबई कार्यालय बिकने को था. तभी तारा-चंद बड़जात्या ने आखिरी कोशिश का फैसला किया. उन्होंने अपने पोते सूरज से एक फिल्म बनाने को कहा. फिल्म बन गई. और अब स्थिति यह है कि 'मैंने प्यार किया' की अभूतपूर्व सफलता के बाद बड़जात्या परिवार की अगली पीढ़ियों तक को अर्थ की चिंता करने की शायद जरूरत नहीं.

'ट्रेड गाइड' के अनुसार यह फिल्म आज तक की आठ सबसे अधिक लोकप्रिय फिल्मों में से है. दूसरे कई लोग तो इसे सबों में अव्वल भी मानते हैं. बड़जात्या कहते हैं, "इस फिल्म ने हमारी सभी कल्पनाओं को पछाड़ दिया है."

यह अपने आप में एक घटना है. छोटे शहरों में तो लोग सिनेमाघरों में कबूतर तक छोड़ने लगे. फिल्म में भी एक सफेद कबूतर संदेशवाहक बनकर प्रेमपत्र पहुंचाता है. गोरखपुर में तो कुछ नौजवान लड़के सिनेमाघर में सफेद चादर से ढंकी एक विशाल परात लेकर जा धमके. सुरक्षाकर्मी पशोपेश में पड़ गए. लेकिन, उस परात से बहुत बड़ा केक निकला. परदे पर नायिका अपना जन्मदिन मनाने लगी तो नौजवानों ने बालकनी के दर्शकों को अपने केक का आस्वादन कराया.

लगता है समूचे देश को इस फिल्म से प्यार हो गया है. लेकिन इसकी सफलता के क्या कारण हैं?

प्रमुख कारण तो इसका संगीत है. फिल्म के गीतों में अद्भुत सुरीलापन है. सूरज ने इन गीतों के जरिए ही कहानी को आगे बढ़ाया है. फिल्म की सरलता भी चुंबकीय है. साठ के दशक के रोमांटिक हीरो राजेंद्र कुमार 'भोलेपन' को फिल्म की सफलता का प्रधान कारण मानते हैं. "यह फिल्म शुरू से अंत तक साफ-सुथरी और निष्पाप है."

यह सीधी सपाट प्रेम कहानी है हालांकि इसका निर्माण खूबसूरत सेटों पर हुआ है लेकिन यह है पूरी तरह घरेलू. फिल्म में कई चीजें तो विशुद्ध भावुकता से भरी हैं. मसलन तख्तियों पर लिखा हुआ वाक्य, "मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूं कि पीड़ा होती है."

वैसे फिल्म की कई बातें इसके हितों के खिलाफ थीं. इसके निर्देशक नए थे और कलाकार भी. और वे भी साधारण शक्लों वाले. लेकिन नई जोड़ी की इसी साधारण-सी शक्ल ने नए कीर्तिमान बनाए. 20 वर्षीया भाग्यश्री पटवर्धन और 24 वर्षीय सलमान खां ने लाखों दर्शकों और कई दीवानों का दिल जीत लिया. निर्देशक और इनकी जोड़ी ने कथानक के प्रवाह में अपने आप को जैसे बेहिचक बह जाने दिया.

मसलन भाग्यश्री को ही लें. लगता है जैसे वे सचमुच ही प्यार में हैं. यह सही भी था. फिल्म के निर्माण के दौरान ही भाग्यश्री की शादी हुई. परदे पर जहां उनकी आंखें प्यार उड़ेलती रहीं, वहीं उनका मन कहीं और लगा रहा. वे परदे पर अपनी असली जिंदगी जी रही थीं. अधिकांश बचकानी प्रेम कहानियों की तरह इस फिल्म में पहली नजर के प्यार को हौवा नहीं बनाया गया है.

सलमान भी अपने वास्तविक रूप में हैं. उनके अनुसार, "परदे पर मैं ही था." शायद इसलिए नई उम्र के लड़कों को फिल्म में अपना व्यक्तित्व नजर आ रहा है. और लीक से हटकर इस फिल्म में मां का चरित्र भी अपेक्षाकृत कम उम्र का है जो एक दोस्त का-सा व्यवहार करती है. सलमान कहते हैं, "मैं अपनी मां के काफी नजदीक हूं. मैं हकीकत में भी उसके साथ बातचीत के दौरान बगैर संकोच के 'सेक्सी' शब्द का इस्तेमाल कर डालता हूं."

लेकिन इसकी सबसे बड़ी खूबी निर्देशक की पारदर्शिता है. फिल्म में संगीत के माध्यम से ही प्रेम का जादू जगाया गया है. उदाहरण के लिए जब इस नौजवान जोड़े को महसूस हो जाता है कि वे एक-दूसरे से प्यार करने लगे हैं, तो बड़जात्या के शब्दों में, "संगीत चारों ओर से इस तरह उठता है मानो उनके मिलन पर सहमति की मुहर लगा रहा हो."

पहले प्यार की परेशानियों को इस फिल्म में बेहद सूक्ष्मता से उभारा गया है. और इसका बहुत श्रेय भाग्यश्री के अभिनय को जाता है. शेखर कपूर उनके इस गुण को "स्वयं को न्यौछावर करने वाला" बताते हैं. शशि कपूर के अनुसार "वह शर्मीली जरूर है पर कैमरे से नहीं."

जो बात लोगों के भीतर तक उतर गई है वह है शर्म-हया के लिए फिल्म की जबरदस्त वकालत. इसकी मिसाल है वह दृश्य जहां नायक-नायिका छत पर हैं. सलमान एक के बाद एक कपड़े नायिका को पहनने के लिए देता जाता है. इन कपड़ों में शादी का एक जोड़ा भी है. इस दौरान जब नायिका सामने से कपड़े उतारती है तब कैमरा नायिका की पीठ पर चला जाता है. कैमरा उसकी ढंकी पीठ और सलमान की हर्षविह्वल आंखों के सिवा कुछ नहीं देखता. लेकिन वह तुरत संयत होकर उसके चारों ओर वस्त्र लपेट देता है. इस तरह मर्यादा की रक्षा हो जाती है.

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासिल करना पड़ता है. 'मैंने प्यार किया' का युवा नायक अपने प्यार की खातिर पत्थर तोड़ने का काम तक करता है. 'कयामत से कयामत तक' के हीरो को अपनी प्रेमिका के साथ छिपकर जीवन गुजारने के लिए जलावन बटोरना पड़ता है और पहाड़ों में पानी की तलाश में भटकना पड़ता है. 'आशिकी' में नायक को अपनी प्रेमिका, जो अनाथ लड़की से प्रसिद्ध मॉडल बन जाती है, की खातिर 'कुछ' बनने के लिए कष्टसाध्य परिश्रम करना पड़ता है. यह फिल्म साबित करना चाहती है कि प्यार में दुनिया को बदल देने की भी ताकत है. 'जो जीते वही सिकंदर' में आमिर ने निकम्मे नायक की भूमिका की है लेकिन प्रेमिका को उस पर पूरा भरोसा है.

यही नहीं, प्रेम का स्वरूप भी बदला है. उसमें भावुक कोमलता का तत्व भी दाखिल किया गया है. नायक नायिका का दिल जीतने के लिए विनम्र बनता है. सलीम खां कहते हैं, "पहले नायक नायिका को अपने अनुरूप ढालना चाहता था. आज इस तरह बदलने की बारी नायक की है." किशोर प्रेम के इस दौर के पीछे कुछ व्यावहारिक कारण भी हैं. बड़े सितारों की आवभगत से ऊबे फिल्म निर्माता अब कोई मांग पेश न करने वाले नए किरदारों की ओर मुड़ गए हैं. बड़े सितारों की अंतहीन फरमाइशों के बोझ से फिल्म उद्योग चरमराने लगा था. बड़े सितारे 15 लाख रु. से 50 लाख रु. के बीच कुछ भी मांगते हैं. उनसे काम लेना मुश्किल होता है, उनके मूड का ध्यान रखना होता है. इसके अलावा उनके चेहरे और व्यक्तित्व पर उम्र का असर भी झलकने लगा है. नए लड़के या नई लड़कियां सस्ते में मिल जाती हैं— 25,000 से 1 लाख रु. तक में. और वे पूरा समय देने को भी तैयार रहते हैं. तरुण आदर्श कहते हैं, "अनजान चेहरों की सफलता से बड़े सितारे सन्न रह गए हैं."

पुराने जमाने में मां-बाप का विरोध, लाज-संकोच का बंधन होता था या देवदास जैसा प्रेमी हुआ करता था जो लड़की से अपनी बात कहने में 12 रीलें गंवा देता था. लेकिन आज जबकि प्रेमियों की राह में परंपरा और रीति-रिवाज के बंधन नहीं रह गए हैं, फिल्म निर्माताओं के पास कृत्रिम बाधाएं खड़ी करने के सिवा कोई चारा नहीं बचा है. इसलिए आज प्रतिस्पर्धा नई-नई तरह की बाधाएं ईजाद करने की कल्पनाशीलता की है.

अब प्रेमियों को विभिन्न बाधाएं लांघनी पड़ती हैं—देश की सीमा जैसी बाधा भी. 'हिना' उस पाकिस्तानी लड़की की कहानी है जो भारतीय लड़के के प्रेमपाश में बंध जाती है. दरअसल राजकपूर की कहानी का सार है कि प्रेम किसी सीमा, किसी बंधन को नहीं मानता.

इसके अलावा अलौकिक सीमाएं भी पार करनी होती हैं. पुनर्जन्म का विचार आज के फिल्म निर्माताओं को सबसे मौजूं लगता है. 'प्रेम' फिल्म में, जिसमें बोनी कपूर अपने भाई संजय कपूर को उतार रहे हैं, पुनर्जीवन से एक बड़े कालखंड को तय करने का मौका मिल जाता है. बोनी कपूर कहते हैं, "हमारे पास ब्रिटिश काल से लेकर अब तक की दो सदियों के परिधानों और दृश्यों को दिखाने की सुविधा है." यश चोपड़ा कहते हैं कि उनकी नई फिल्म 'लमहे' पुनर्जीवन से संबंधित नहीं है बल्कि एक ऐसे आदमी के बारे में है जो अपनी मृत प्रेमिका को पा जाता है.

स्कूल-कॉलेजों में चलने वाले रोमांस की कहानियां भी फिल्मों में प्रवेश पा चुकी हैं. मंसूर खां ने अपनी ऐसी फिल्म के लिए देहरादून के राजपूत कॉलेज को चुना है. इस फिल्म में पांच मुख्य और आठ सह-पात्र हैं और ये सभी नए हैं.

ग्रामीण परिदृश्य में ही हीर-रांझा सरीखी जोड़ी जमती है

सिब्ते हसन रिजवी की *आवाज दे कहां है* में शिखा स्वरूप और अश्विनी वाधवान

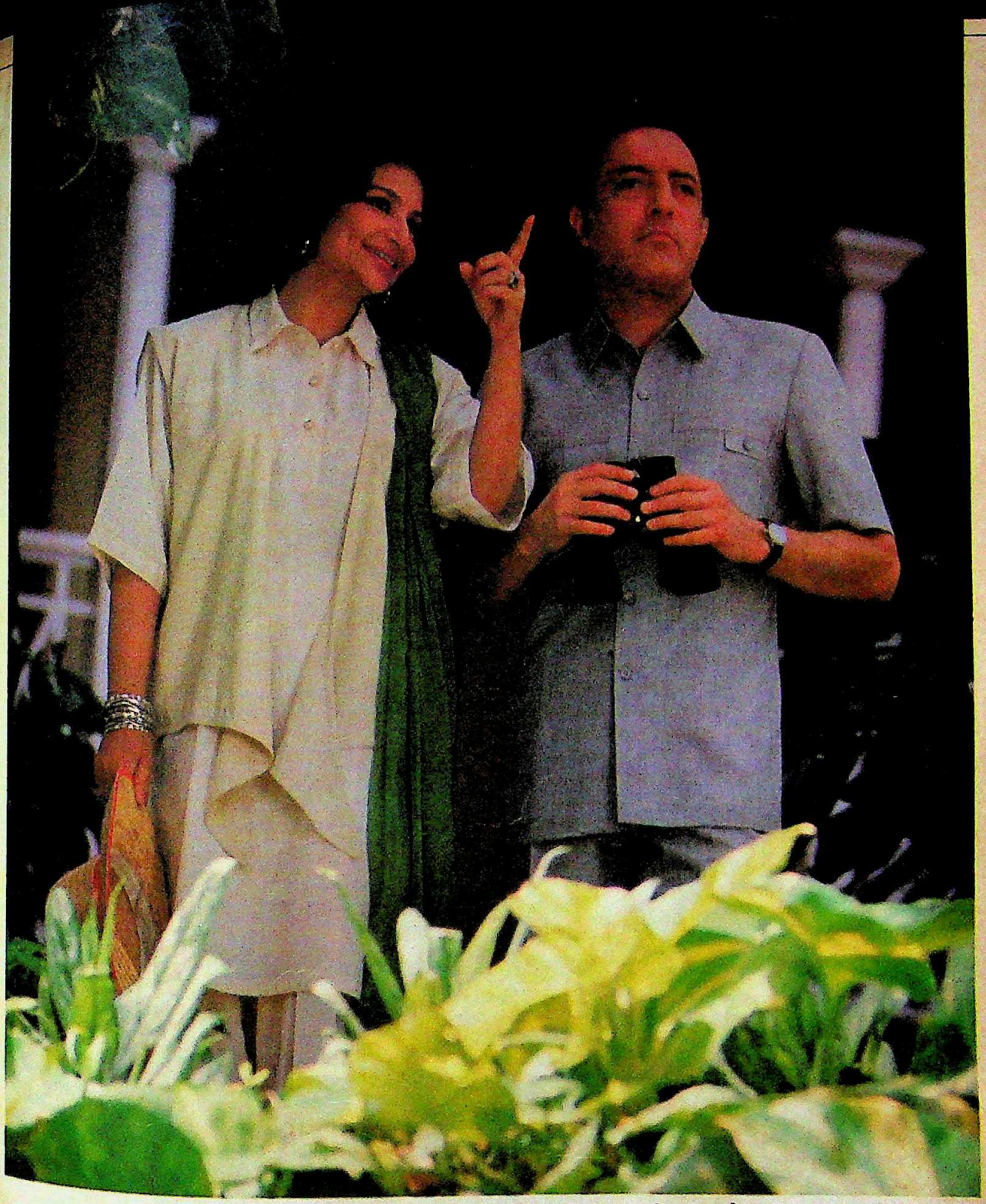

"उस पक्षी की उड़ान ने मन मोह लिया"

हालांकि मेरी बीवी चिड़ियों और पक्षियों को पहचानने में माहिर है। लेकिन उनकी चहचहाटों और मदमस्त उड़ान का लुत्फ उठाने के लिए कोई ज़रूरी नहीं कि उन्हें पहचाना जाए। कितना कोमल होगा उनका स्पर्श—मैं अपने इन पहने ग्वालियर के कपड़ों में महसूस कर रहा हूं।

—एम.ए.के. पटौदी

GRASIM GWALIOR SUITING

IN A CLASS OF ITS OWN

A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD.

FOUR DECADES OF CLASS

MAPP-GR-90-1225

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी मुस्कुराह

पूरा संतोष.

ये रहे खोज-बीन के कुछ परिणाम

भारत की प्रमुख ऑटो पत्रिका - **इंडियन ऑटो** के मार्च, १९९० के अंक में प्रकाशित, तीन महीनों में किए गए १२०० टू-व्हीलर मालिकों के सर्वेक्षण के अनुसार.

सारांश

संतोष का कारण	सबसे ज़्यादा संतुष्ट स्कूटर मालिक		
	श्रेणी १	श्रेणी २	श्रेणी ३
वाहन विक्रेता तथा मालकियत संबंधी हर तरह के अनुभव से पूरी तरह संतुष्ट	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम
वाहन संबंधी अनुभव अपेक्षा से कहीं अधिक बेहतर	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
वाहन के संबंध में अन्य व्यक्तियों को अधिक से अधिक की जाने वाली ठोस सिफ़ारिश	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
डीलर के संबंध में अन्य व्यक्तियों को अधिक से अधिक की जाने वाली ठोस सिफ़ारिश	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज

ग्राहकों का स
No. 1
KINETIC HON
SIMPLER • SAFER • SM

WAMS 043/90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पीछे क्या है!

इंडियन ऑटो
टू-व्हीलर मालिकों का सर्वेक्षण

संतोष का कारण	सबसे ज़्यादा संतुष्ट स्कूटर मालिक		
	श्रेणी १	श्रेणी २	श्रेणी ३
डिलीवरी संबंधी			
पहली बार मिलने पर वाहन के साथ कोई समस्या नहीं.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
जिन वाहनों के साथ परेशानी थी, धीरे-धीरे दूर कर दी गयी.	बजाज	एल एम एल	का. होंडा
सर्विस/मरम्मत/पुर्ज़ों संबंधी			
रोज़ाना रखरखाव संबंधी मरम्मत का कोई काम नहीं.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
डीलरों की कार्यकुशलता संबंधी			
कुल मिलाकर डीलरों की कार्यकुशलता से संतुष्ट.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
मरम्मत खर्च के संबंध में आवश्यक ब्यौरा दिया गया.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
मरम्मत शुल्क पूरी तरह मुनासिब.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
सर्विस का समय सबसे ज़्यादा मुनासिब.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
असंतोषकारक सर्विस के कारण डीलर के पास कभी वापस नहीं जाना पड़ा.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
पुर्ज़ों का स्टॉक न होने के कारण मरम्मत में कभी देर नहीं हुई.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
पुर्ज़ों का स्टॉक न होने पर भी कम से कम देर हुई.	बजाज	एल एम एल	का. होंडा
पुर्ज़ों का स्टॉक न होने पर भी वाहन इस्तेमाल करने मिला.	एल एम एल	बजाज	का. होंडा
वाहन के साथ मरम्मत की परेशानी कम से कम.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
मरम्मत के कारण वाहन कम से कम समय बंद रहा.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
सर्विस/मरम्मत संबंधी उत्कृष्ट कार्यकुशलता.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
अन्य स्कूटरों के मुकाबले मरम्मत/सर्विस का स्तर कहीं ज़्यादा बेहतर.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
मित्र/रिश्तेदार को डीलर के लिए निश्चित सिफ़ारिश की जा सकती है.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
वारंटी			
वारंटी अवधि के दौरान कोई परेशानी नहीं आई.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
वारंटी अवधि के दौरान समस्या को संतोषजनक तरीके से हल किया गया.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
वारंटी अवधि के दौरान मरम्मत का ज़्यादा से ज़्यादा काम मुफ़्त किया गया	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
वारंटी के दौरान मरम्मत खर्च लिया गया, परंतु कारण भी बताया गया.	बजाज	का. होंडा	एल एम एल
मालकियत संबंधी अनुभव			
रोज़ाना के रखरखाव पर कम से कम खर्च.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
अन्य मरम्मत के काम पर भी कम से कम खर्च.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
दुर्घटना के कारण होने वाली मरम्मत का खर्च भी कम से कम.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
निर्माता से मुलाकात करने का मौका कम से कम आया.	एल एम एल	का. होंडा	बजाज
यदि वाहन बदलना पड़े तो दोबारा फिर यही मेक/मॉडल खरीदेंगे.	कायनेटिक होंडा	बजाज	एल एम एल
बदलने से पहले ज़्यादा से ज़्यादा समय वाहन का इस्तेमाल	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज
वाहन बदलने की स्थिति में निश्चित तौर पर इसी डीलर से दोबारा वाहन खरीदेंगे.	कायनेटिक होंडा	एल एम एल	बजाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले की प्रेमकथाओं और आज की प्रेमकथाओं में कालानुरूप परिवर्तन किए गए हैं. मसलन 60 के दशक वाली फिल्मों में कव्वाली और नृत्य होते थे तो आज स्केटिंग और साइकलिंग होती है. प्रेम आज खेलकूद और प्रतियोगिताओं के साथ परवान चढ़ता है. सो, प्रेम की खातिर सलमान खां रॉलर स्केटिंग सीखते हैं. अब बॉक्सिंग, जल-क्रीड़ा और स्केटिंग के खूब दर्शन होंगे.

एक और दिलचस्प प्रवृत्ति यह दिख रही है कि धनी लड़का असहाय गरीब लड़की से प्रेम करता है जबकि पहले, मसलन राज-कपूर की हास्य तथा त्रासदी प्रधान फिल्मों में इससे उलटा होता था. आज मध्यवर्गीय नायक को, चाहे वह 'मैने प्यार किया' का हो या महेश भट्ट की आने वाली फिल्म 'आशिकी' का या फिर सदाशिवन की 'बागी' का, कम हैसियत वाली नायिका से प्रेम होता है.

कुछ फिल्म निर्माता अतीत में लौटने के मूड में भी दिखते हैं. उनके दिमाग में साठ के दशक की सुरीली प्रेमकथाएं गूंजती हैं. शेखर कपूर की नई फिल्म 'जान' के गीत आपको पुराने दिनों में लौटा ले जाएंगे.

वयस्क प्रेम

वर्जनाओं से परे

सिने जगत की मनोरंजन प्रधान फिल्मों में आजकल जहां कच्ची उम्र का प्यार जंगल की आग की तरह फैल चुका है, वहीं कला फिल्मो का झुकाव वयस्कों के प्रेम की ओर बढ़ता जा रहा है. मनोरंजन प्रधान फिल्मों में कथानक रोमांस को उस हद तक ले जाता है जहां दो प्रेमी या तो सदा के लिए बिछड जाते हैं, या फिर 'बाद में साथ रहने लगते हैं.' पर वयस्कों के प्रेम की कथा ही और है.

ये फिल्में मर्द और औरत के उस रिश्ते पर केंद्रित होती हैं जो विवाह की औपचारिक रस्मों के बाद बनता है. भारतीय सिनेमा में मर्दों की बेवफाई आम तौर पर एक स्वीकृत सचाई रही है. लेकिन फिल्मों में औरत को इससे बरी रखा जाता रहा है. अब कुछ निर्माता प्यार में फंसी और उससे निकल चुकी औरत की मनःस्थिति पर विचार करने लगे हैं.

इस धारा की फिल्मों में अरुणा राजे की 'रिहाई' काफी खुलापन लिए हुए है. इस पर कइयों ने भृकुटि टेढ़ी की. पर टिकट खिड़की पर फिल्म ठीकठाक चली. राजे बताती हैं, "मेरी फिल्म सेक्स को औरत की जिंदगी का एक हिस्सा और उसकी शारीरिक आवश्यकता मानकर चलती है."

पहले भी, 'अनुभव', 'आविष्कार', 'एक बार फिर' और कुछ पुरानी सदाबहार फिल्मों ने विवाह पर गौर से सोचा. लेकिन ये फिल्में दायरे से नहीं निकलीं. हालांकि अपर्णा सेन की 'परोमा' और कल्पना लाजमी की 'एक पल' में शादीशुदा औरत की रोमांस संबंधी जरूरतों पर विचार हुआ लेकिन उनमें 'रिहाई' जैसी साफगोई नहीं. यह बात जरूर दिलचस्प है कि 'एक पल', 'रिहाई' और बासु भट्टाचार्य की नई फिल्म 'पंचवटी' में विवाह के बिना ही मां बनने की बात है.

फिल्म के कुछ अत्यंत सशक्त दृश्यों में भट्टाचार्य व्यर्थ की दो शादियों पर विचार करते हैं. भट्टाचार्य अपनी अगली फिल्म 'आस्था' में भी ऐसा ही दृष्टिकोण रख रहे हैं.

बेवफाई के मसले पर फिल्म बनाने वाले और भी कई फिल्म निर्माता हैं. केतन मेहता 'मदाम बोवरी' के देसी संस्करण में व्यस्त हैं और कुमार शाहनी 'अन्ना कैरनिना' को भारत लाने में लगे हैं. पिछले पखवाड़े रिलीज हुई विनोद पांडेय की 'सच' में बेवफाई को औरत की आजादी की ओर उठा एक साहसिक कदम बताया गया है.

गोविंद निहालाणी जैसे दक्ष निर्माता भी अब सामाजिक और राजनैतिक मसलों के बजाए 'दृष्टि' में प्रेम और विवाह पर सोच रहे हैं. निहालाणी के अनुसार, "यह फिल्म उन्होंने दिल से बनाई है." निहालाणी डिंपल को एक ऐसी अभिनेत्री बताते हैं जो 'बॉबी' से 'दृष्टि' तक की यात्रा में 'एक सजे-सुरीले वाद्य' की तरह परिपक्व हो गई है. डिंपल कहती हैं, "औरत अब अपनी खुशी छीनने को तैयार है." गिरीश कसरावल्लि की नई फिल्म 'मन' औरत की उलझी मनःस्थिति का चित्रण करती है.

इसके लिए इस युगल के घर के बगल के कारखाने की आवाज को रूपक के रूप में प्रयोग किया गया है. "शारीरिक संबंध बिलकुल यांत्रिक बन जाते हैं. बिस्तर स्नेह प्रदर्शन की जगह नहीं रह जाता. जब भी मर्द प्रेम जताना चाहता है, औरत को कारखाने की आवाज नागवार लगती है." लगता है, प्रेम और विवाहित महिलाएं कई फिल्म निर्माताओं को बहका देंगी. —मधु जैन

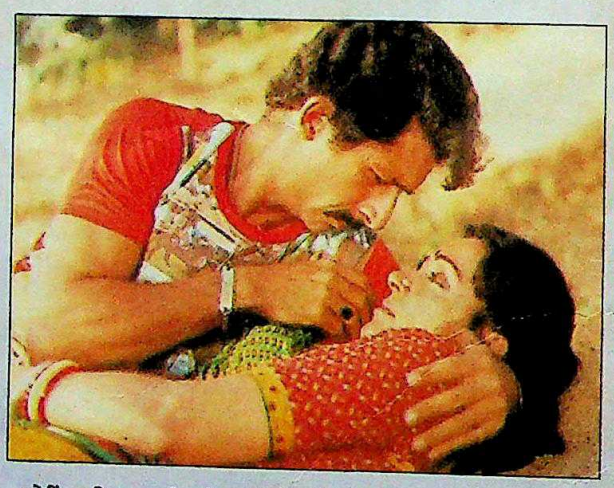

गोविंद निहालाणी की दृष्टि में डिंपल कापड़िया और इरफान; अरुणा राजे की रिहाई में नसीरुद्दीन शाह और हेमा मालिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाल्डी रेडीमेड की परीपूर्णता

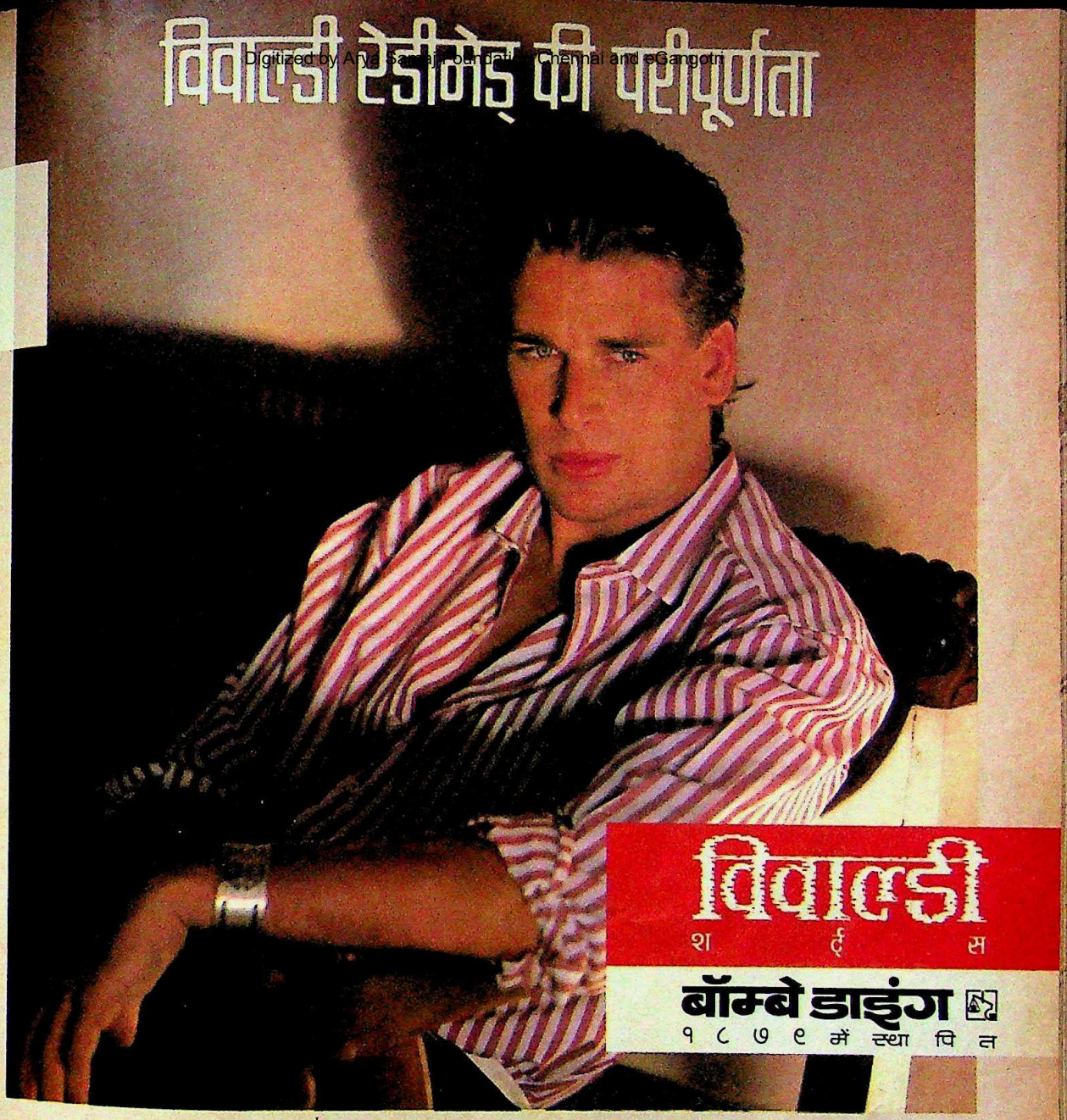

शर्टिंग कपड़ों के क्षेत्र में कामयाबी के झंडे गाड़ने वाले जब टेलरिंग के मैदान में क़दम रखें तो परिणाम: रेडीमेड परिपूर्णता. बॉम्बे डाइंग के विवाल्डी शर्ट्स. बेहतरीन कॉटन और पॉलिएस्टर कपड़ों के चुनाव से लेकर आखिरी बटन तक क्वालिटी के ऊंचे स्तर पर गहरी नज़र. क्योंकि कारोबारी होने के नाते हम अच्छी तरह जानते हैं आपकी पसन्द.

---------- विवाल्डी. एक एक टांका, जांचा परखा ----------

चुने हुए बॉम्बे डाइंग शोरूम्स में उपलब्ध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें धर्मेंद्र के दूसरे बेटे बॉबी और राजकपूर की पोती करिश्मा को लिया गया है. वे कहते हैं, "पुरानी फिल्में ढाई घंटे तक आपको प्रेम की सुखद और सुरीली दुनिया में विचरण कराती थीं." शेखर दुखी हैं कि वैसी फिल्में अब नहीं बनतीं जो "आपको कुछ रुलाती भी थीं, जिनके गीत आप गुनगुनाने लगते थे और जिन्हें देखने के बाद हॉल से निकलते हुए आप खुद को हीरो ही मान लेते थे.. देवानंद अपना हेयर स्टाइल बदलते और पूरा देश उनकी नकल ही करने लगता था."

शेखर "उस शैली को अपनाना चाहते हैं, न कि कहानी को." इसी तरह बोनी और अनिल भी साठ के दशक वाली बेफिक्री की नकल करना चाहते हैं. अनिल कहते हैं, "हम 'चलती का नाम गाड़ी' के किशोर कुमार और मधुबाला के जादू की वापसी चाहते हैं."

लेकिन पीछे लौटना संभव नहीं है. 90 के दशक का प्रेम कृत्रिम दुनिया में विचरण करता है. यह दर्शक पर अत्याधुनिक तकनीक और हाई-फाई का जादू तो चलाता है, उसकी आत्मा या संवेदनाओं को नहीं छूता.

हीरो

जमाने के साथ बदलती रंगत

भारतीय सिनेमा के बीते दशकों में रोमांस का आना जाना लगा रहा है. मूक फिल्मों के दौर में और फिर स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले के कुछ वर्षों में इसका स्वरूप बेबाक और सहज रहा.

लेकिन चालीस के दशक के आसपास प्रेम का उदात्तीकरण कर दिया गया और वह शारीरिक या सहज नहीं रहा. रोमांस का यह दौर दूर-दूर ही रहने का था. प्रेमी 30 फुट दूर खड़े रहने लगे. वे शायद ही कभी नजरें उठाकर एक दूसरे को देखते. नायक नायिका बिछड़ने भी लगे.

कई दशकों तक तो देवदास का चरित्र (1935 में के.एल. सहगल और 1955 में दिलीप कुमार) ही ट्रेजेडी या निराशा से भरे हुए प्रेमी का सर्वमान्य प्रतीक बनकर छाया रहा. पारो से बिछड़कर देवदास शराब में गम गलत करता है और पारो की शादी एक बूढ़े से कर दी जाती है.

तब बलिदान ही भावना की अंतिम कसौटी थी. नायक का मतलब था चुपचाप सह सकने की ताकत और अपने दोस्त या खानदान के उसूल के नाम पर प्रेमिका का बलिदान कर सकने का जज्बा. 'संगम' (1964) में राजेंद्र कुमार अपने दोस्त राजकपूर को नहीं बता पाते कि वे भी उसी लड़की वैजयंतीमाला से प्यार करते हैं. इस त्रिकोणात्मक द्वंद्व से निकलने के लिए वे खुद को मार डालते हैं. लगता है, उस समय प्रेम मृत्यु से ही किया जाता था.

1949 में जब राजकपूर ने 'बरसात' बनाई तो बलिदान का भाव थोड़ा गौण पड़ गया. निराश हीरो की जगह एक बुलंद नायक ने ले ली. निर्माता-निर्देशक मनमोहन देसाई कहते हैं, "राजकपूर ने 'बरसात' में आवेग और सहज मानवीय प्रवृत्ति के रूप में रोमांस दिखाकर क्रांति कर दी." नीली आंखों वाला नायक अपनी प्रेमिका को तमाचा भी मार सकता था. 1951 में बनी 'आवारा' में नरगिस को राजकपूर के तमाचे खाने पड़े.

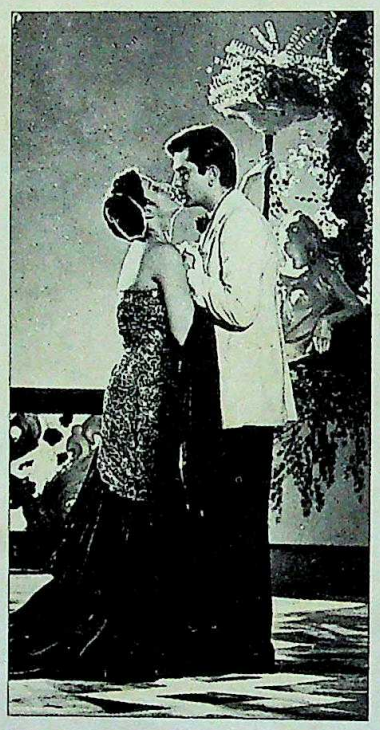

आवारा में नरगिस, राजकपूर

साठ के दशक में मितभाषी प्रेमी और अच्छे आदमी की छवि लोकप्रिय हुई. सामाजिक जागरूकता बढ़ चुकी थी और यह परिवर्तन मुस्लिम सामाजिक और बिमल राय की फिल्मों से शुरू हुआ. उस दौर के नायक के प्रतीक थे राजेंद्र कुमार जिनकी आंखें अक्सर भीगी होती थीं. वह दौर अच्छी और भली महिलाओं का भी था जो परदे पर शालीन थीं. जैसे नूतन, वहीदा रहमान वगैरह.

लेकिन इसी के आसपास हंगामाखेज अंदाज के साथ शम्मी कपूर का पदार्पण हुआ. 1961 में बनी 'जंगली' के याहू प्रेमी ने पुराने सभी बंधनों को तोड़कर रख दिया. प्रेम था तो अकड़ भी थी. देसाई कहते हैं, "शम्मी की पारो को घर के रास्ते में भी चिढ़ाया-छेड़ा जाता था." वह दौर हिरणी जैसी आंखों वाली आशा पारेख, साधना, नंदा और शर्मिला की नारीगत लज्जा और सौंदर्यबोध का रहा.

उस दौर में शम्मी कपूर अगर उछलते-नाचते नायक के प्रतीक थे तो देवानंद अंदाजों से भरे और गीतों को आहिस्ता से गुनगुनाने वाले शोख प्रेमी थे. उनकी छवि सुसंस्कृत प्रेमी की थी जो शहरी भी था और पाश्चात्य भी. लेकिन एक पूरे दशक तक अकेले छाए रहने वाले नायक राजेश खन्ना के प्रेमी व्यक्तित्व ने हिंदी सिनेमा को ताजगी से भर दिया. आम लोगों सरीखे नाक नक्श वाले इस नायक की फिल्म 'आराधना' (1970) ने उसे रातोरात सुपर स्टार बना दिया.

लेकिन बाद का दौर भारी आवाज वाले गुस्सैल, लंबे नायक का रहा. लंबू नायक के लिए केवल रोमांस काफी नहीं था. अमिताभ बच्चन ने क्रोध को व्यक्तिगत धरातल पर लाकर अभिनय के नए क्षितिज कायम किए. सातवें दशक के मध्य के बाद से नायिका की स्थिति महत्वहीन होती गई. नायिका का काम नृत्य में साथ देने तक का ही रह गया. जीनत अमान, परबीन बॉबी और अब तक की ग्लैमर नायिकाएं इसी सांचे में ढली हैं. हेमा और रेखा इसकी अपवाद हैं.

फिल्मी दुनिया के भाग्य नियंता अपनी प्रेम कहानियों के लिए अब नए चेहरे तलाशने में लगे हैं. मजबूत कद-काठी के पर चॉकलेटी चेहरे वाले हीरो का जमाना आ गया है. आमिर, सलमान खां और बॉबी देओल इसी श्रेणी के हैं. और जहां तक नायिकाओं का सवाल है वे मादकता और मासूमियत का अनोखा मिश्रण दिखाई देती हैं. चाहे माधुरी दीक्षित हों या जुही चावला या फिर सुदूर से आई मोनिषा कोइराला हों या जेबा बख्तियार या फिर करिश्मा और तब्बू सभी मीठी और मसालेदार हैं.

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही नहीं, रोमांस कथा से अब चंद्रमा भी बाहर हो गया है. अब नियोन बत्तियों की रोशनी खिलती है. 'आवारा' में चांदनी में नहाई नरगिस सौंदर्य और वासना की प्रतिमूर्ति लगती है.

बरसात अब महज पानी उड़ेलने का खेल रह गई है. या फिर इसकी उपयोगिता नायिका के शरीर की गोलाइयों को उभारने भर के लिए रह गई है. 'मिर्जा गालिब', 'बैजू बावरा' और 'बरसात की रात' जैसी सदाबहार फिल्मों में निराश प्रेमी की भूमिका निभा चुके भारतभूषण कहते हैं, "सेंसर से बचने के लिए बरसात के दृश्यों का सहारा उस जमाने में भी खूब लिया जाता था. लेकिन तब वह बरसात भी एक कविता-सी होती थी जो खास रोमांटिक माहौल बना देती थी." बरसात या झरने का उपयोग राजकपूर की फिल्मों में भी जमकर हुआ. 'श्री 420' में बारिश, छतरी, राजकपूर और नरगिस ने मिलकर परदे पर एक खूबसूरत समां बाध दिया था. लेकिन राजकपूर की ही 'राम तेरी गंगा मैली' में पानी यानी झरने का भौंडा उपयोग हुआ.

प्रकृति के नजारों की भी फिल्मों में अपनी भूमिका रही है. ठंडी हवा के झोंके, झरने, पहाड़ और फलों से लदे पेड़ों के दृश्य फिल्म में जान डाल देते थे. पर अब तो ठंडी हवा नायिका के बालों को उड़ाने के लिए होती है—विज्ञापन फिल्मों में डिंपल कापड़िया की लहराती जुल्फों की तरह.

यह दौर लटकों-झटकों का है. आज जो युवा प्रेमी का किरदार निभा रहे हैं वे कभी मॉडल रह चुके हैं. और उनका मॉडल वाला रूप छिप नहीं पाता. वे चरित्र को जीते नहीं, बस भंगिमाएं दिखलाते हैं. ऊटी, कुलू, मनाली और कश्मीर की वादियों में नीली जींस, ढीली पैंट या ग्रामीण वेशभूषा से भी उनका मॉडल वाला रूप ही झांकता है. दृश्य भी विज्ञापन फिल्मों से चुराए मालूम पड़ते हैं. प्रेम के लिए उत्कटता भी लुप्त हो गई है क्योंकि यह सहज सुलभ है. शशि कपूर कहते हैं, "दस वर्ष पहले नायिका बालकनी में खड़ी जूलियट-सी होती थी. अब वह जूली है जो बालकनी से चीखती है, भागकर नीचे आती है और कार की स्टियरिंग थाम लेती है."

विछोह से जो तड़प पैदा होती है, अप्राप्त प्रेम का जो मीठा-कड़वा अनुभव होता है; वह पुरानी मधुर तान जो रोमांस में प्राण फूंकती थी वह सब वक्त के साथ खत्म हो गई है. ऐसा शायद प्रेम के रास्ते में बंधनों के ढीला पड़ने के कारण हुआ है. पहले की फिल्मों में प्रेम के साथ थोड़ा दर्द भी मिला रहता था और थोड़ी उदासी भी. प्रेमी या प्रेमिका के एक इशारे-भर से रिश्ते का दर्द उजागर हो जाता था. अब तो प्रेमी-प्रेमिका आसानी से मिल बैठते हैं.

आधुनिक तकनीक के विकास के कारण रोमांस में रहस्यात्मकता का तत्व फीका पड गया है. शशि कपूर बताते हैं, "श्वेत-श्याम फिल्मों में रहस्यात्मकता का एक पुट हुआ करता था. प्यार का मतलब था 14-15 गाने, सुंदर क्लोज अप और रोशनी के नए प्रयोग. बांस के पेड़ों के झुंड के पीछे रोशनी की जाती थी. नायिका लता मंगेशकर के अलाप के साथ आगे बढ़ती दिखती थी."

अब कामदेव का जादू चढ़ा हुआ है तो कई रोमांटिक फिल्में बना ली जाएंगी. लेकिन फिल्मी दुनिया के महारथी इसे 'भेड़ चाल' मानते हैं. उनके अनुसार 'मैंने प्यार किया' की रिकार्डतोड़ सफलता के कारण जो पागलपन-सा सवार हुआ है वह शायद कुछ रोमांटिक फिल्मों के पिटते ही उतर जाएगा. लेकिन रोमांस के मारे कई ऐसे भी लोग हैं जो मानते हैं कि यह बुखार उतर भी गया तो क्या हुआ, इसने अपना काम कर दिया है. आलोचकों के मुंह से इस दौर के बारे में शायद उफ ही निकले और वे इसे मात्र लटकों-झटकों वाला दौर कहकर खारिज कर दें.

—मधु जैन, बंबई में

सितारों के भाई-बहनें और बेटियां प्रेम की खोज में माया नगरी में उमड़ पड़ी हैं

शेखर कपूर की *जान* में बॉबी देओल और करिश्मा कपूर; *प्रेम* में संजय कपूर और तब्बू

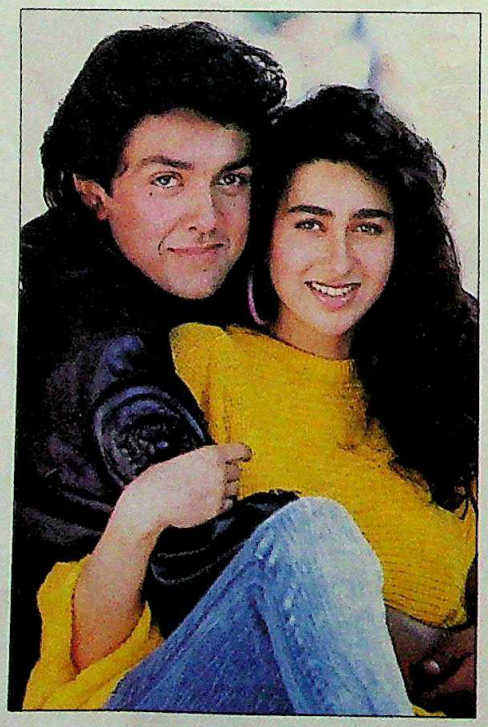

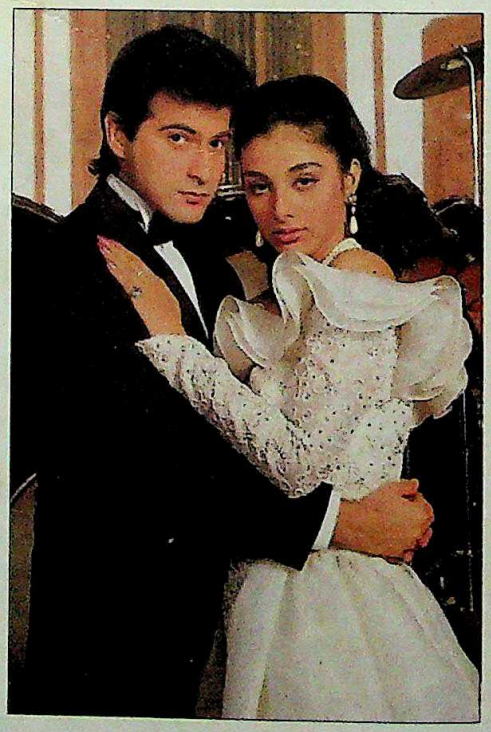

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंखों पे चली आएं...ताज़ी ठंडी हवाएं!

ओरिएन्ट पंखे

ये ताज़ी हवाएं, जीवनभर आपकी हो जाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज़ादी का अहसास है चार्म्स.
आपका अंदाज़ है चार्म्स.

उत्कृष्ट वर्जीनिया तम्बाकू का यादगार स्वाद.
और रेग्युलर साइज़ में बेजोड़ डेनिम पैक.

"इसका ज़ायका लाजवाब."

सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है.
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,

Enterprise

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

घर करेंगे ठीक

पार्टी चुनाव कराने का फैसला

इंका नेतृत्व अब वह करने को प्रयासरत है जो कल तक असंभव माना जाता रहा है यानी संगठन का चुनाव. पार्टी चलाने की अपनी 'तुगलकी' शैली के कारण बढ़ते रोष पर काबू पाने और चुनावी पराजयों से ध्यान हटाने के लिए इंका अध्यक्ष राजीव गांधी ने पिछले पखवाड़े इस साल के अंत तक पार्टी के चुनावों की घोषणा की.

हाल में इंका कार्यसमिति के विशेष अधिवेशन में फैसला किया गया कि संगठन चुनाव साल के अंत तक पूरे कर लिए जाएंगे. इसके पहले ये चुनाव 18 साल पहले 1972 में हुए थे. नियम के मुताबिक चुनाव की घोषणा के बाद नामांकन पत्र भरने और ताजा मतदाता सूची तैयार करने के लिए 145 दिन का समय दिया जाएगा. इस बैठक में उमाशंकर दीक्षित समिति ने भी अपनी रिपोर्ट पेश की. यह समिति 1987 में पार्टी संविधान में संशोधन के प्रस्ताव के लिए बनाई गई थी. फर्जी सदस्यों की समस्या से निबटने के लिए एक प्रमुख सुझाव 'सक्रिय सदस्यों' को फोटो सहित परिचय पत्र देने का है. दीक्षित कहते हैं, "यह विचार जोर पकड़ रहा है कि इंका में जान फूंकने के लिए सांगठनिक चुनाव जरूरी हो गए हैं."

पार्टी में बढ़ते असंतोष पर काबू पाने के लिए राजीव दूसरे मोर्चों पर भी काम कर रहे हैं. वे सांसदों और कार्यकर्ताओं से ज्यादा मिलने-जुलने लगे हैं. हर सुबह पार्टी की राजनैतिक मामलों की समिति संसद के दोनों सदनों में बहस के मुद्दों पर विचार करती है और राजीव खुद संसद स्थित इंका कार्यालय में पार्टी सांसदों से रोज मिलते हैं.

फिलहाल राजीव की बड़ी चिंता वरिष्ठ नेताओं में पार्टी के विभिन्न पदों का बंटवारा है. इसलिए उन्होंने बलराम जाखड़, हरकिशनलाल भगत, सी.के. जाफर शरीफ और महावीर प्रसाद जैसे वरिष्ठ नेताओं को महासचिव बनाकर इंका महासमिति को नया रूप देने की कोशिश की है. साथ ही असम में आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए राज्य में पार्टी के दिग्गज नेता हितेश्वर साइकिया को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया, महाराष्ट्र में राजेंद्र कुमार धवन के उम्मीदवार सुशील कुमार शिंदे को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया और ओडीसा में नंदिनी सत्पथी के स्थान पर गैर-विवादास्पद वनवासी नेता गिरिधर गोमांगो को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया.

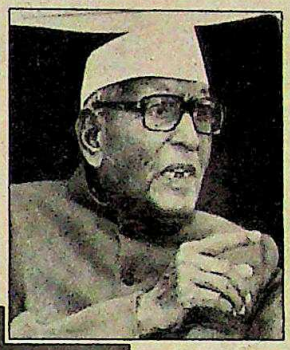

इंका कार्यसमिति की बैठक में राजीव; और (दाएं) दीक्षित

फ़ारूद मसीना

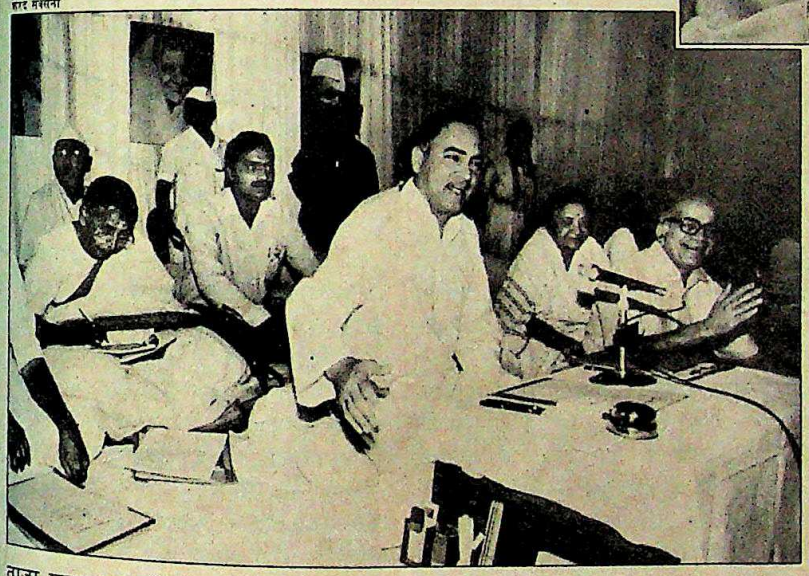

यही नहीं, ब्रिटिश संसदीय परंपराओं के अनुरूप राजीव ने छाया मंत्रिमंडल का भी गठन किया है. सांसदों के एक दल की मदद से पूर्व मंत्रियों को संसद में बहस के दौरान विशेष क्षेत्रों पर ध्यान देने को कहा गया है. पी.वी. नरसिंह राव विदेश विभाग, दिनेश सिंह गृह व सूचना, शंकर राव चव्हाण आर्थिक मामले, माधव सिंह सोलंकी रक्षा, वसंत साठे कृषि तथा उद्योग और पी. शिवशंकर संसदीय कार्य विभाग पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे. छाया मंत्रिमंडल संसद में इंका सांसदों के कार्यकलाप में सुधार से अधिक एक मनोवैज्ञानिक असर पैदा करेगा. पार्टी के एक दिग्गज सांसद ने बताया, "इससे सत्ता का भ्रम बना रहेगा." और साठे के लिए तो यह सचमुच 'विपक्ष की सरकार' की तरह है.

इन प्रयासों के बावजूद असंतोष सिर उठाने से बाज नहीं आ रहा. एक के बाद एक चुनावों में पराजय के लिए राजीव गांधी को दोषी मानने वाले पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं ने पिछले पखवाड़े 'कांग्रेस फोरम फॉर एक्शन' का गठन कर लिया असंतुष्टों का मंच माने जाने वाले इस फोरम के संयोजक महाराष्ट्र के सांसद बालासाहेब विखे पाटील हैं और इसमें नवलकिशोर शर्मा और जितेंद्र प्रसाद जैसे प्रमुख नेता शामिल हैं. सबसे महत्वपूर्ण तो मंच की घोषणा के समय कमलापति त्रिपाठी का यह कहना है कि "जवाहरलाल नेहरू के हाथों गढ़ी गई पार्टी का नाश किया जा रहा है."

इस बीच पार्टी के पुराने नेता बड़ी सूझ-बूझ के साथ अपनी हैसियत जताने लगे हैं. कार्यसमिति की बैठक में कई वरिष्ठ नेताओं ने राजीव की कार्यशैली और गुट विशेष पर उनकी निर्भरता की खुलकर आलोचना की. यहां तक कि अभी भी राजीव के करीबी माने जाने वाले साठे और विट्ठल नरहरि गाडगिल जैसे नेताओं ने भी उनकी आलोचना में कोई कसर नहीं छोड़ी. तीखे भाषण में साठे ने कहा, "आपको (राजीव को) पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं के सीधे संपर्क में रहना चाहिए, न कि कुछ खास लोगों को बीच में आने की इजाजत देनी चाहिए." गाडगिल ने भी जुबान पर अंकुश नहीं रखा, "आपको उन लोगों की बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए जो कहते हैं कि यह सरकार गिरने ही वाली है." इस बैठक को 'पुराने दिग्गजों की विजय' माना गया. इसमें देश भर से 250 प्रमुख नेता शामिल थे.

राजीव को तलवार की धार पर चलना पड़ रहा है. देश के मतदाताओं का एक बड़ा हिस्सा उन्हें खारिज कर ही चुका है और अब इंका को एकजुट रखने में वे नाकाम रहते हैं तो देर-सबेर उन्हें पार्टी के लोग भी खारिज कर देंगे. साथ ही इंका में विभिन्न गुटों और नेताओं के विरोधी हितों के मद्देनजर उनकी राह आसान नहीं है. खासकर जब सत्ता की बैसाखी उनके पास नहीं रही है तब यह भगीरथ कार्य ही साबित होगा.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

राज्य का रोना

सभी दल फायदा उठा रहे

राजधानी का बोट क्लब मैदान हमेशा से प्रदर्शनकारियों का प्रसिद्ध जमाव स्थल रहा है. पिछले पखवाड़े इसी जगह एक और धरना देखने को मिला. मांग थी: दिल्ली को राज्य का दर्जा दिलाने की. धरने का नेतृत्व भाजपा सांसद मदनलाल खुराना ने किया. आंदोलन दो दिन तक चला और संसद में भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी को प्रधानमंत्री के इस आश्वासन के बाद ही वापस लिया गया कि केंद्रीय मंत्रिमंडल इस बारे में जल्दी ही फैसला ले लेगा और इससे संबंधित विधेयक भी संसद के चालू सत्र में ही पेश कर दिया जाएगा.

इससे भाजपा में खुशी छा गई. खुराना के अनुसार, "मुझे पक्का यकीन है कि हमारी वर्षों की साधना और संघर्ष जल्दी ही रंग लाएगा और सितंबर तक दिल्ली में विधानसभा चुनाव हो जाएंगे."

वैसे भाजपा की रणनीति समझना बहुत कठिन नहीं. उत्तरी क्षेत्र में भाजपा के तीन मुख्यमंत्री तो हैं ही और अब पार्टी अपने पारंपरिक गढ़ दिल्ली में चौथी फतह भी दर्ज करना चाहती है. पार्टी को राष्ट्रीय विकल्प समझा जाने लगा है इसलिए वह 1995 के आम चुनाव के बाद केंद्र में सत्ताधारी पार्टी के रूप में उभर सकने की ताकत का प्रदर्शन करना चाह रही है.

पूर्वी दिल्ली से इंका सांसद और अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (इ) के नवनियुक्त महासचिव हरकिशनलाल भगत शिकायती लहजे में कहते हैं, "भाजपा सारा श्रेय लूट ले जाने पर तुली हुई है. अचरज इस बात से होता है कि यह आरोप उस पार्टी की तरफ से लगाया गया है जिसने अपने शासनकाल के दौरान इस बारे में कुछ भी नहीं किया." मामले का दिलचस्प पहलू यह है कि अगर दिल्ली को राज्य का दर्जा दिए जाने का विधेयक संसद में लाया जाता है तो इंका के लिए इसका विरोध कर पाना मुश्किल होगा. क्योंकि भगत इसके प्रति अपना 'रचनात्मक समर्थन' व्यक्त कर चुके हैं.

इस सबके बीच यह सवाल गौण हो गया है कि दिल्ली के लिए राज्य का दर्जा कहां तक हितकर होगा. राजनैतिक पार्टियां बस यही साबित करने की धुन में हैं कि किसने इस बारे में सबसे पहले सोचा और राज्य के रूप में दिल्ली का स्वरूप बाद में कैसा होना चाहिए. जनता दल की दिल्ली शाखा के अध्यक्ष वीरेश प्रताप चौधरी कहते हैं, "इस प्रस्ताव की पहल का श्रेय भाजपा को देना अनुचित है. यह तो शुरू से ही जनता दल के वादों में शामिल रहा है."

अभी तक राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने इस मामले पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की? इस पर गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद बताते हैं, "नई सरकार के सामने कामों की भारी सूची है. हर वादे को पलक झपकते ही पूरा नहीं किया जा सकता." भाजपा केंद्र सरकार के मंसूबों को लेकर तब अंदेशे में पड़ गई जब संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण और उस पर प्रधानमंत्री के जवाब में इस मसले का कोई जिक्र नहीं आया.

आडवाणी और पूर्व पार्टी अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी ने 12 अप्रैल को वी.पी. सिंह से भेंट की और इस मामले की पुरजोर वकालत की. इरादा यही है कि मंत्रिमंडल को भेजे जाने वाले गृह मंत्रालय के प्रस्ताव में कहा जाए कि कानून और व्यवस्था केंद्र के पास रहे और भूमि, इमारत-निर्माण और विकास समेत दूसरे मामलों की जिम्मेदारी राज्य को सौंपी जाएगी.

जिस बात ने सबसे ज्यादा तूल पकड़ा वह है चुनाव क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण की मांग. दिल्ली जनता दल ने सुझाव दिया कि पिछले लोकसभा चुनाव के मतों की कुल संख्या को प्रस्तावित विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों (इस मामले में 84) से विभाजित कर दिया जाए ताकि सभी निर्वाचन क्षेत्रों में जनसंख्या लगभग समान रहे. लेकिन भाजपा का मत है कि वर्तमान सात संसदीय चुनाव क्षेत्रों में से हरेक को 12 विधानसभा क्षेत्रों में बांटा जाए.

दिल्ली को राज्य का दर्जा देने के प्रस्ताव के कई आलोचक भी हैं. इनमें हाल तक दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद रहे जगप्रवेश चंद्र भी शामिल हैं. उनकी मान्यता है कि अगर दिल्ली केंद्रशासित प्रदेश नहीं रहेगी तो यह केंद्र से मिलने वाली सहायता के एक बड़े भाग से भी हाथ धो बैठेगी और नतीजतन इसे कई तरह की आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा. पर खुराना कहते हैं कि पूर्ण राज्य बनने पर दिल्ली को 300 करोड़ रु. का अतिरिक्त फायदा होगा.

लेकिन वीरेश प्रताप कहते हैं, "विधेयक इस सत्र में लाया तो जाएगा पर इसी सत्र में पारित होने की संभावना कम है."

भाजपा को यकीन है कि दिल्ली को राज्य का दर्जा देने पर विधानसभा चुनाव के ज्यादातर नतीजे उसके हक में जाएंगे. लेकिन यह पूछे जाने पर कि क्या वे मुख्यमंत्री पद के दावेदार हैं, खुराना एक अर्थपूर्ण चुप्पी साध लेते हैं. दूसरी तरफ वीरेश प्रताप जनता दल की सफलता के बारे में आश्वस्त हैं. उतनी ही आशा संजोए है इंका जिसका दावा है कि पिछले लोकसभा चुनाव में हालांकि उसे दिल्ली की सिर्फ दो सीटें ही मिलीं लेकिन कुल मत उसी के पक्ष में सबसे ज्यादा पड़े.

विभिन्न राजनैतिक पार्टियां अपना उल्लू सीधा करने और इस पूरे मामले का फायदा उठाने में लगी हैं. यह बात बार-बार उभरती है कि राज्य का दर्जा दे देने भर से क्या दिल्ली की अनगिनत समस्याओं का अंत हो जाएगा? क्या यहां की मकान, यातायात, नागरिक सुविधाओं, परिवहन, पानी की कमी और झुग्गियों के फैलाव तथा अब शरणार्थियों के सैलाब जैसी कठिनाइयां दूर हो जाएंगी?

—शर्मिला बंद्या

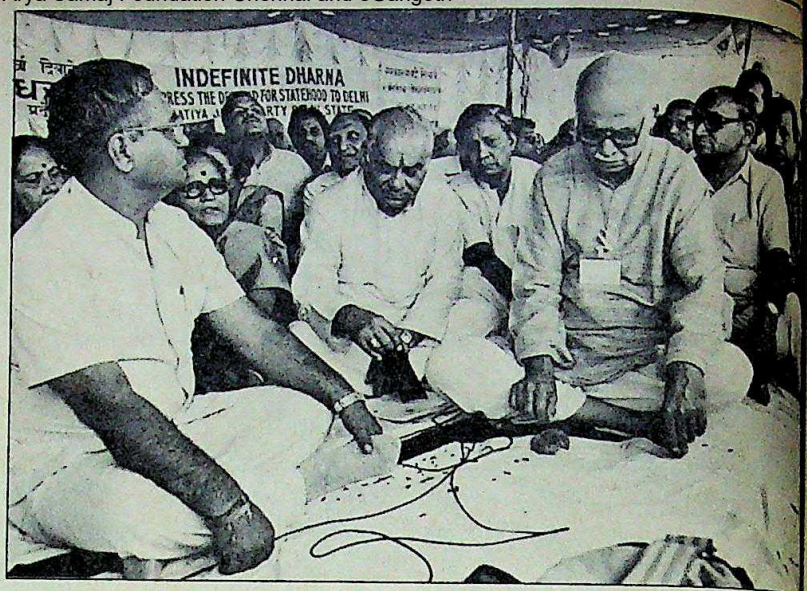

धरने पर भाजपा नेता: कठिन चुनौती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

खतरनाक संकेत

अयोध्या से शुरु हुई यात्रा मथुरा में पहुंचने से तनाव

अयोध्या से शुरू हुई हिंदूवादी लहर अब मथुरा पहुंच गई है. भगवान कृष्ण की जन्मभूमि को वहां पर बनी सोलहवीं सदी की मस्जिद से मुक्त कराने वाली 'धर्म जागरण यात्रा' पिछले पखवाड़े मथुरा पहुंची. इस यात्रा में भगवा वस्त्रधारी साधु तो थे ही, तलवार, त्रिशूल, चाकू, देसी पिस्तौलें लिए बजरंग दल के कार्यकर्ता भी थे जो भड़काने वाले नारे लगा रहे थे. सो, दंगा भड़कना ही था. यह यात्रा टोली कानपुर शहर होकर मथुरा पहुंची थी. कानपुर में अभी-अभी दंगा हुआ है. इसलिए सारे संकेत खतरनाक ही थे.

कानपुर में हुए दंगे में पांच लोग मारे गए और कई घायल हुए. गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद ने कानपुर दंगे के बाद चिंता के स्वर में कहा, "आज देश को जबकि बाहरी हमले का खतरा है, मैं कट्टरपंथी संगठनों से अपील करता हू कि वे दंगे भड़काने वाली कार्रवाइयां न करें."

इस अपील के एक ही दिन बाद हथियारबंद युवकों को मथुरा की गलियों में भड़काऊ नारे लगाते हुए घूमते देखा गया. यहां विश्व हिंदू परिषद के नेता कृष्ण जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए इकट्ठा हुए थे. उनकी रैली पर पत्थर फेंके गए और इसके बाद दंगा फैल गया.

दोनों शहरों के पुलिस अधिकारी सांप्रदायिक तनाव के कारण चिंतित दिखे. कानपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह ने कहा, "लगता है लोग भिड़ंत की तैयारी कर रहे थे." उधर मथुरा के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलजाकांत मिश्र ने कहा, "यहां की इस मस्जिद में भारी संख्या में लोग नमाज पढ़ते हैं. अगर इस मस्जिद को छेड़ने की कोशिश की गई तो और गड़बड़ी फैल सकती है." दोनों संप्रदायों के उग्र तेवर को देखते हुए इन पुलिस अधिकारियों की आशंकाएं वाजिब लगती हैं. मथुरा में विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित धर्म जागरण यात्रा में शामिल लोग हथियारों से पूरी तरह लैस थे और स्थानीय भाजपा विधायक रविकांत गर्ग को इन लोगों से अपने हथियार वगैरह छिपाने का अनुरोध करते हुए देखा गया. मुसलमानों की नाराजगी इस कारण से है कि यह यात्रा उन्हें भड़काने के लिए रमजान के महीने में शुरू की गई.

सांप्रदायिक तत्वों और कट्टरपंथी हिंदुओं की योजनाओं के प्रति केंद्र सरकार के रुख से लगता है कि स्थिति और बिगड़ने ही वाली है. उसने दिल्ली की जामा मस्जिद की मरम्मत के लिए पचास लाख रु. दिए और फिर वर्षों से बंद पड़ीं दिल्ली की 40 मस्जिदों को, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन थीं, नमाजियों के लिए खोल दिया. बजरंग दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.एल. शर्मा पूछते हैं, "हम आंदोलन शुरू करते हैं तो सरकार हमें नसीहत देती है लेकिन वह खुद संरक्षित स्मारकों से संबंधित कानून का उल्लंघन क्यों करती है?" कट्टरपंथी हिंदुओं की नाराजगी मथुरा में इस नारे से उजागर हो रही थी—'राम, कृष्ण, विश्वनाथ तीनों लेंगे एक साथ.'

शरद सक्सेना

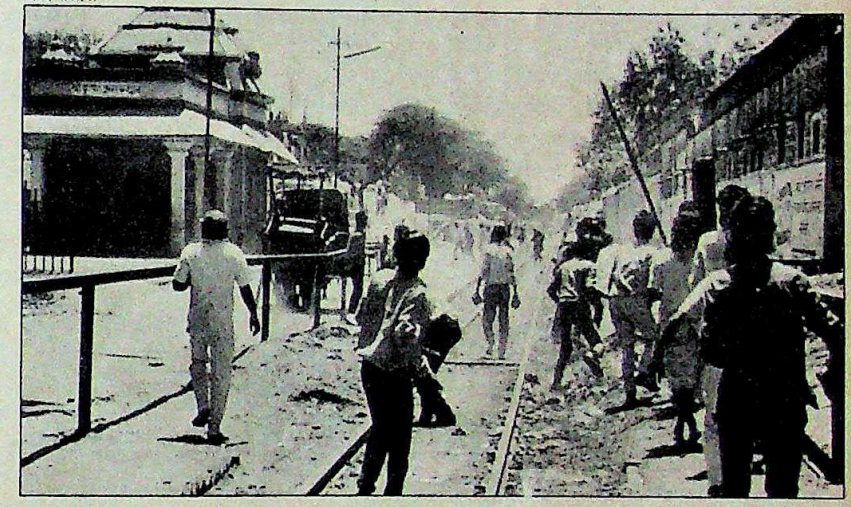

अयोध्या के उलट मथुरा में कथित कृष्ण जन्मभूमि पर बनी मस्जिद मुस्लिम इलाके में है और वहां अभी भी नमाज पढ़ी जाती है

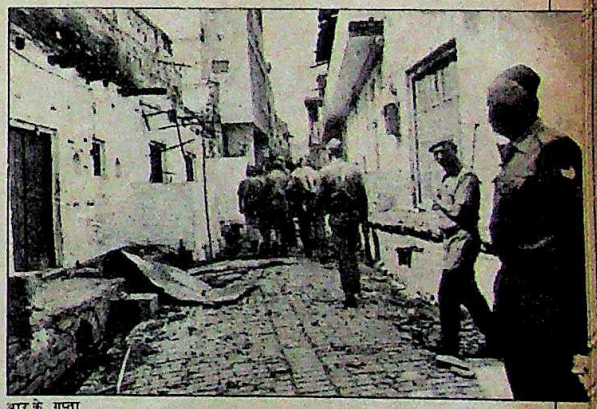

आर.के. गुप्ता

मथुरा में हिंसा (ऊपर); और, कानपुर में पुलिस की गश्त: अपशकुनी संकेत

अब चूंकि मोर्चा मथुरा में खुल गया है, दबाव प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह पर बढ़ गया है. मथुरा की विवादास्पद मस्जिद मुसलमानों के इलाके में है और बाबरी मस्जिद के विपरीत इस्तेमाल में है. विश्व हिंदू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया कहते हैं, "हमारी योजना स्पष्ट है. पहले हम अयोध्या चाहते हैं फिर मथुरा और वाराणसी. और तब हम गोहत्या के खिलाफ राष्ट्रीय अभियान चलाएंगे."

इन हालात के बावजूद मथुरा के जिलाधिकारी रमेश यादव आशावान नजर आते हैं. उनका कहना है, "हमें स्थानीय हिंदू और मुसलमान नेताओं का सहयोग हासिल है. समस्या हमारी ओर से भड़काने वाली कार्रवाई से उठ सकती है." लेकिन विश्व हिंदू परिषद मथुरा में जिस तरह युद्ध की मुद्रा में दिख रही है उसके मद्देनजर सरकार को जल्दी ही कुछ-न-कुछ करना होगा, वरना दो-दो जगह सांप्रदायिक विस्फोट उसके लिए भारी मुसीबत बन सकता है.

—**पंकज पचौरी** मथुरा में और **दिलीप अवस्थी** कानपुर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

दावत से दर्दनाक हादसा

तिलक के भोज में जहरीला भोजन खाने से 64 लोग मरे

तकरीबन 100 लोग दावत उड़ा चुके थे और 82 लोग उसका आनंद ले रहे थे. अवसर था स्थानीय ठेकेदार 23 वर्षीय मेवालाल और 16 वर्षीया सुनीता के तिलक का. सुनीता राजाराम की इकलौती बेटी है और वे इस मौके को यादगार बना देना चाहते थे.

रात 11 बजे तक सब कुछ ठीकठाक चला. तब अचानक ही दावत खा चुके पांच लड़कों के शरीर में कंपकंपी शुरू हो गई. गांववालों ने समझा कि इन लड़कों पर देवी आ गई हैं. कुछ लोगों ने देवी को प्रसन्न करने के लिए पूजा शुरू कर दी जबकि लड़के जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे थे. आधे घंटे के अंदर ही वे गिर पड़े और उनके प्राण पखेरू उड़ गए. इसके बाद रात तीन बजे तक बस्ती जिले के गांव रैपुरा के इस तिलक पंडाल में जीवित लोग कम थे और लाशें ज्यादा.

और अगले दिन सुबह तक जिला प्रशासन ने 64 लोगों के मरने की पुष्टि कर दी. लेकिन चश्मदीदों का कहना है कि हादसे में इससे कहीं ज्यादा लोग मरे. पूर्व मंत्री और बस्ती के इंका नेता जगदंबिका पाल कहते हैं, "ऐसे ज्यादातर मामलों में लोग पोस्टमार्टम की झंझटों से बचने के लिए अपने प्रियजनों के पार्थिव शरीर ले जाकर उनका अंतिम संस्कार कर देते हैं."

डॉक्टरों की राज्यव्यापी हड़ताल ने हालात और भी खराब कर दिए. स्थानीय अधिकारी निजी डॉक्टरों की खोज में दर-दर घूम रहे थे. आधी रात बीतते-बीतते उन्होंने एक दर्जन डॉक्टरों को इकट्ठा कर लिया पर तब तक दावत खाने वाले ज्यादातर लोग परलोक सिधार चुके थे. इसके बहुत बाद डॉक्टरों के राज्य संगठन ने हादसे के मद्देनजर स्थानीय सरकारी डॉक्टरों से हड़ताल वापस लेने को कहा.

जिलाधीश मंगलाप्रसाद मिश्र का मानना है कि लोगों की मौत गेहूं में कार्बनिक फास्फोरस मिला होने की वजह से हुई. इसे आम तौर पर खाद्यान्न के संरक्षण के लिए इस्तेमाल किया जाता है. मिश्र बताते हैं, "फास्फोरस आटे में मिल गया था, शायद गेहूं पीसने से पहले उसे अच्छी तरह से धोया नहीं गया." कुछ दूसरे लोग मानते हैं कि यह हादसा खाद्य तेल में मिलावट की वजह से हुआ. प्रभावित परिवारों को सांत्वना देने आए गोरखपुर विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के रीडर ए.के. सक्सेना के अनुसार, "हर कोई गेहूं में फास्फोरस मिलाता है. यहां लोगों से बातचीत करने के बाद मुझे लगता है कि तेल की वजह से ही यह दुर्घटना हुई."

पर सुनीता की मां 45 वर्षीया गजराजी को इन सबसे क्या लेना. उन्हें तो अभी तक विश्वास नहीं कि हादसे में गुजर जाने वालों में उनके पति राजाराम भी हैं. वहां जमा औरतों को उन्होंने अभी तक अपनी मांग का सिंदूर नहीं पोंछने दिया. वे सुबकती हुई कहतीं हैं, "ओह! वे ठीक हो जाएंगे, इतने सारे डॉक्टर उनका इलाज कर रहे हैं. अभी तो उन्हें शादी की तैयारियां पूरी करनी हैं." उनके दो बेटे अभी मौत से जूझ रहे हैं. मेवालाल के तीन रिश्तेदार भी इस हादसे में गुजर गए. वे कहते हैं "पता नहीं भगवान ने मुझे यह सजा क्यों दी!" अब यह शादी होगी? इसका जवाब सुनीता की मां देती है, "शादी तो होगी ही. इसमें किसी का क्या कसूर, भगवान की यही मर्जी थी."

पर 'भगवान की इसी मर्जी' के चलते बस्ती की छोटी-सी नदी कुआनो का किनारा जलते हुए घाट में बदल गया. रासायनिक परीक्षण और सरकारी जांच की रिपोर्ट अभी आनी है पर इतना स्पष्ट है कि बस्ती के लोग एक अरसे तक इस बदकिस्मत भोज को नहीं भूल सकेंगे.

—दिलीप अवस्थी, बस्ती में

सुनीता; जहरीला भोजन; और (नीचे) दूल्हा मेवालाल उजड़े पंडाल में

शीतल

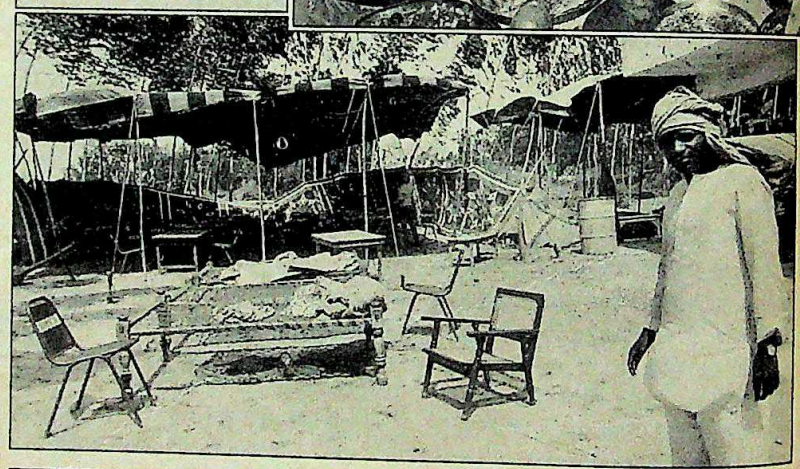

रासायनिक परीक्षण और सरकारी जांच की रिपोर्ट अभी आनी है पर इतना स्पष्ट है कि बस्ती के लोग एक अरसे तक इस बदकिस्मत भोज को नहीं भूल सकेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिम्का आज

जब आप कहें
"प्यार पर बस तो
नहीं है मेरा लेकिन फिर भी"

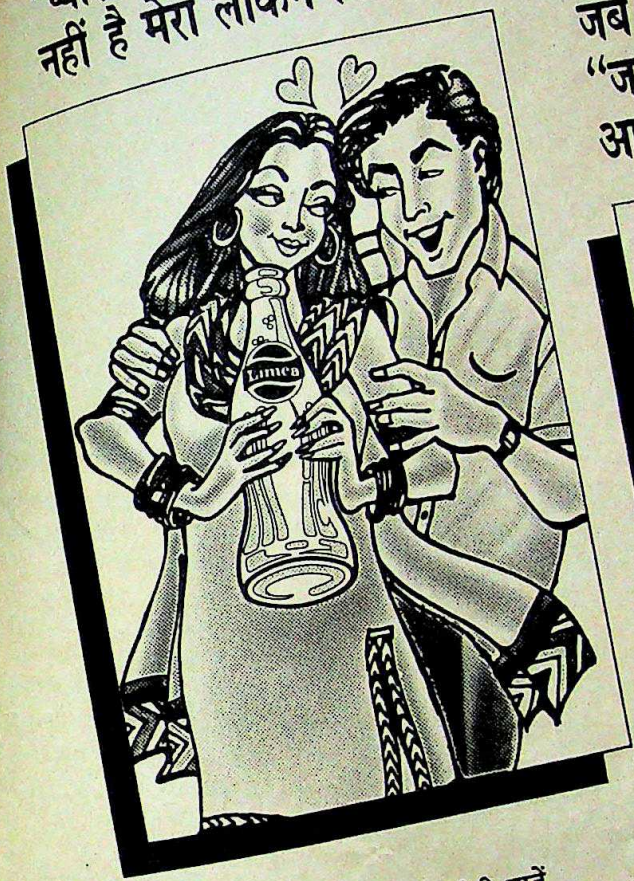

लिम्का कल

जब वह कहें
"जाओ बाज़ार
आज पहली तारीख़ है"

जब आप उनके कानों में मीठी-मीठी बातें
कहते-कहते या फिर उनके आदेशों को सुनते-सुनते
थक कर प्यास से बेहाल हो जाएं... तब
आयसोटॉनिक साल्ट वाले किटाणुरहित लिम्का
की बोतल उठाएं और अपनी प्यास बुझाएं

RADEUS/PE/L/1-90-HIN

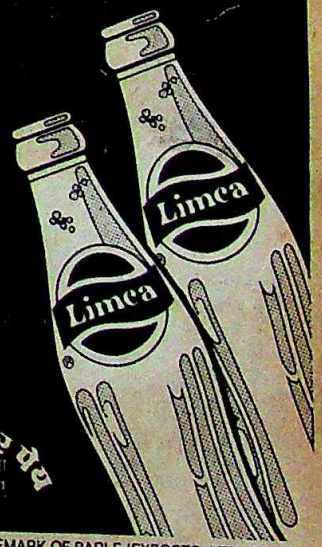

Limca®
नींबू जल-सा मज़ेदार पेय
ठंडा सफ़ीना
पिए-पिलाए

CONTAINS ADDED FLAVOUR. CONTAINS NO FRUIT JUICE/PULP

® THE REGISTERED TRADEMARK OF PARLE (EXPORTS) LTD., BOMBAY.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

पल भर में सब स्वाहा

रेलगाड़ी में लगी आग ने मिनटों में 72 लोगों को लील लिया

दृश्य भयावह था. चारों तरफ जली-झुलसी लाशें बिखरी थीं. इसमें एक किशोर की लाश भी थी जिसे पहचान पाना मुश्किल था और दो नन्हे-मुन्ने तो मां की गोद से चिपटे हुए ही जल गए थे. ये लाशें भारतीय रेल इतिहास के सबसे बड़े हादसे में मरे लोगों की थीं. पिछले पखवाड़े मोकामा-आरा पैसेंजर गाड़ी के एक डिब्बे में पटना के निकट आग लगने से यह त्रासदी हुई थी. सिर्फ सात मिनटों के अंदर ही इस आग ने जिस तरह 72 लोगों को लील लिया, उससे सभी हैरान हैं. नियमित रेलयात्री अवधेश कुमार ने कहा, "अगर इस अभागी ट्रेन के दरवाजे दूध के कनस्तरों और सब्जी की बोरियों से घिरे नहीं होते तो और लोग बचाए जा सकते थे."

अपराध प्रयोगशाला की जांच के मुताबिक इस आग की जड़ इसी डिब्बे में पाई गई एक गैस वेल्डिंग सिलिंडर था. और इस सिलिंडर को अपना बताकर लेने कौन आता? हादसे में बचे लोगों का कहना है कि उन्होंने रेल कर्मचारियों को ही यह सिलिंडर चढ़ाते हुए देखा था पर रेल अधिकारी कुछ और ही किस्सा सुनाते हैं. उनका कहना है कि अगर यह सिलिंडर रेलवे का होता तो उस पर कोई पहचान चिह्न जरूर होता.

इस मामले से हाथ झाड़ने की कोशिश के बावजूद रेलवे को इसकी कीमत चुकानी ही होगी. मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने प्रत्येक मृतक के परिवार को 2 लाख रु. का मुआवजा देने की मांग की. बाद में यह मांग मान ली गई.

आग कहां से लगी इस पर विवाद जारी है. अधिकारियों का मानना है कि डिब्बे में रिसते गैस सिलिंडर के अलावा दूसरे ज्वलनशील पदार्थ भी थे. एक रेलवे अधिकारी ने कहा, "जितनी बड़ी लपटें हमने देखीं, वह सिर्फ एक गैस सिलिंडर से नहीं उठ सकती थीं."

दुर्भाग्य से पटना के अस्पताल इतनी बड़ी आफत से निबटने के लिए तैयार नहीं थे. केंद्रीय रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस और मुख्यमंत्री के हस्तक्षेप के बाद ही रेलवे ने पटना के दो मेडिकल कॉलेज अस्पतालों को एयर कंडीशनर दिए. इसी प्रकार, पानी की लगातार सप्लाई और जीवन रक्षक दवाओं की आपूर्ति के लिए भी इन दो नेताओं को हस्तक्षेप करना पड़ा.

इस हादसे ने राज्य की समूची रेल व्यवस्था की बदहाली की पोल भी खोली. रेल के डिब्बों में लोग अमूमन ठसाठस भरे रहते हैं. यात्री अक्सर छतों पर भी लटके रहते हैं. कुछ पायदान पर लटककर यात्रा करते हैं.

कृष्ण मुरारी किशन

स्वपन बसु

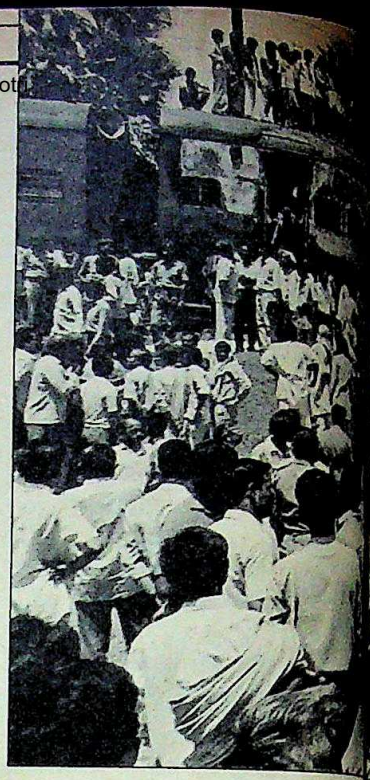

अभागी रेलगाड़ी (ऊपर); आग के बाद जो बचा (बाएं); और शिनाख्त की कोशिश में लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

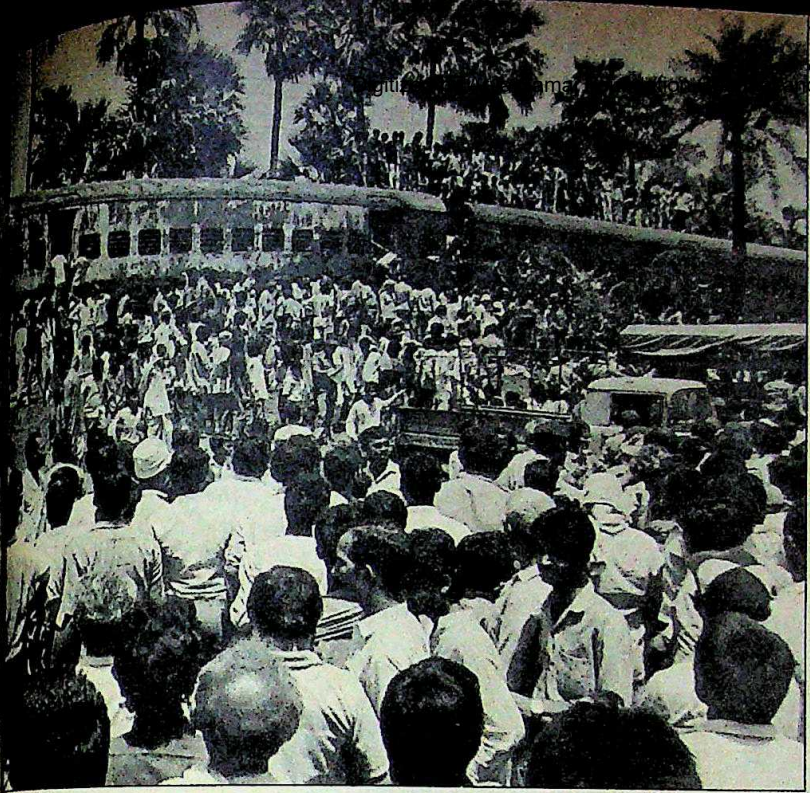

कुछ दो डिब्बों को जोड़ने वाले हुड पर पैर टिकाकर. इतना ही नहीं, छोटे व्यापारी फल-सब्जियों के टोकरों, अनाज की बोरियों, दूध के डिब्बों, कपड़े की गांठों और लकड़ी के कुंदों को बिना बुक कराए लादकर यहां से वहां ले जाते हैं. एक रेल अधिकारी ने कहा, "भीड़-भाड़ के चलते तो हमें दुर्घटना का अंदेशा लगा ही रहता है. हमने इतने बड़े अग्निकांड की कल्पना भी नहीं की थी."

लेकिन जनता दल सांसद नीतीश कुमार को, जिनके चुनाव क्षेत्र के अनेक लोग इस हादसे के शिकार हुए हैं, यह घटना आश्चर्य-जनक नहीं लगती. वे कहते हैं, "रेल विभाग राज्य के इस हिस्से में सबसे पुराने और कंडम डिब्बे ही भेजता है. गाड़ियों में दुर्घटना की स्थिति में रोक सकने वाली जंजीर जैसी जरूरी चीजें भी नहीं होतीं."

इस दुर्घटना से और कुछ हुआ हो या नहीं, कम-से-कम रेल अधिकारी इन बातों पर ध्यान देने के लिए तो विवश हुए ही हैं. उन्होंने और लोकल गाड़ियां चलाने की जरूरत महसूस की है. लेकिन वे यात्रियों द्वारा ज्वलनशील पदार्थों को गाड़ी में लादने, बिना टिकट यात्रा करने और मनमानी जगह पर जंजीर खींचकर गाड़ी रोकने की आदत की शिकायत भी करते हैं. इसी कारण मध्य बिहार में चलने वाली अनेक गाड़ियों से जंजीर वाली व्यवस्था समाप्त कर दी गई है.

इस हादसे के बाद यात्री भी चौकन्ने हो गए हैं. अब वे रास्ता रोकने वाले दूध के डिब्बे या सब्जियों के टोकरे लेकर नहीं चलते, न किसी को चलने देते हैं.

लेकिन गाड़ियों में अभी भी बोरियों की तरह लोग ठुंसे रहते हैं. रेल सुरक्षा आयुक्त द्वारा हादसे की जांच शुरू की जा चुकी है लेकिन बिहार की गाड़ियों में यात्रियों की ठेलमठेल कम नहीं हुई है. —उत्तम सेनगुप्त

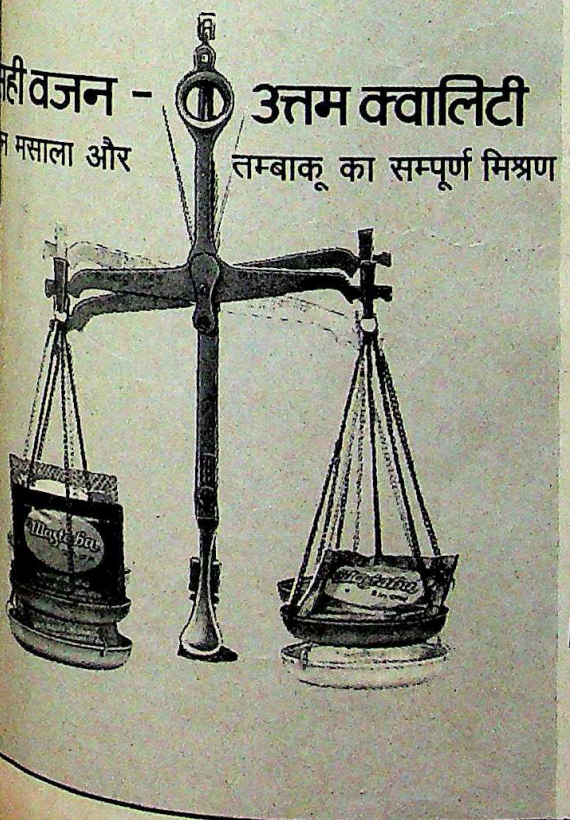

ना कम ना ज्यादा, सम्पूर्ण स्वाद का वादा

भस्ताबा
टू इन वन

मार्केटिंग एजेंट: धर्मपाल सत्यपाल
बी 18, सैक्टर 3, नौएडा, गाजियाबाद (यू०पी०)

BLISS/DEL

वैधानिक चेतावनी—तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

आग ही आग

हादसों से पुराने सवाल उभरे

देश की राजधानी को पिछले पखवाड़े लापरवाही की महंगी कीमत चुकानी पड़ी. एक के बाद एक हुए चार अग्निकांडों में न सिर्फ आठ बच्चों, दो महिलाओं समेत 10 लोग भस्मीभूत हो गए बल्कि करोड़ों रु. की संपत्ति भी राख हो गई. इससे यह सवाल शिद्दत से उभरा कि तमाम सुविधाओं से लैस होने के बावजूद यह महानगर अग्निदेवता के रहमो-करम पर टिका हुआ है.

16 अप्रैल की दोपहर बाद बिजली के तारों से शुरू हुई आग ने देखते-देखते विज्ञान भवन को अपने आगोश में ले लिया. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के इस सबसे प्रमुख मेजबान भवन को बचाने की भरपूर कोशिश की गई लेकिन शहर के कोने-कोने से बुलाए गए दिल्ली अग्निशमन सेवा (दिअशसे) के 36 दमकल अपनी 16 घंटे की लड़ाई में असफल रहे. देश की अंतरराष्ट्रीय साख का यह प्रतीक भवन अगली सुबह तक भीतर से राख, कोयले और ईंटों का ढेर बनकर रह गया.

तीन घंटे बाद उत्तर भारत के सबसे बड़े थोक बिक्री केंद्र सदर बाजार में भी आग का तांडव शुरू हो गया. प्लास्टिक, नाइलोन, होजरी के सामान, कास्मेटिक और कपड़े जैसे ज्वलनशील माल से पटे और संकरी गलियों वाले इस बाजार में आग के बेकाबू होने का मतलब था करोड़ों रुपए के माल का नुकसान.

अग्निशमन सप्ताह के दूसरे ही दिन सामने आ खड़ी हुई यह चुनौती दिअशसे के लिए अभूतपूर्व थी. लिहाजा इसका सामना करने के लिए सेना और गाजियाबाद जैसे कुछ बाहरी स्रोतों से भी दमकल मंगा लिए गए. लेकिन इन सारे प्रयासों के बावजूद आग पर अगले दिन जब काबू पाया गया तब तक लगभग 400 दुकानें जलकर राख हो चुकी थीं.

अगली सुबह इन दोनों स्थानों पर दमकल कर्मचारियों ने अभी अपना सामान लपेटा भी नहीं था कि उत्तरी दिल्ली में आदर्श नगर की एक झुग्गी-झोंपड़ी बस्ती में आग ने एक और खेल शुरू कर दिया. इसके छह दिन बाद ही पहाड़गंज इलाके से सटी मोतियाखान की झुग्गी बस्ती दोपहर को धू-धू करके जल उठी. ज्यादातर मर्द काम पर गए थे और बच्चे झुग्गियों में सो रहे थे. नतीजतन, आठ बच्चों और दो महिलाओं समेत दस जानें चली गईं.

गनीमत यह रही कि आग का यह सिलसिला कुछ देर के लिए रुक गया और दकमल कर्मचारियों को सांस लेने और उपकरणों को फिर से दुरुस्त करने का मौका मिल गया. वरना...? और यह सवाल आते ही प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी का आसमान की ओर हाथ जोड़ते हुए जवाब था, "अगर सदर बाजार या विज्ञान भवन जैसी आग चार-पांच जगह और लग गई होती तो सिवा तमाशा देखने के कुछ नहीं किया जा सकता था."

दिन-ब-दिन सुरसा के मुंह की तरह फैलती हुई दिल्ली में किया गया एक सर्वेक्षण बताता है कि शहर के 54 औद्योगिक इलाकों और लगभग पूरे पुराने शहरी क्षेत्र के अलावा 650 से अधिक झुग्गी-झोंपड़ी बस्तियां आग के मामले में 'खतरनाक' क्षेत्रों की श्रेणी में आती हैं. इसके अलावा 'दिअशसे' ने पिछले कुछ साल में जांच करने पर पाया कि राजधानी के 158 बड़े और बहुमंजिला भवन आग के मामले में इतने असुरक्षित हैं कि उन्हें रहने, व्यापारिक या दफ्तरी इस्तेमाल की छूट नहीं दी जानी चाहिए. ऐसे भवनों में से कम-से-कम आधे ऐसे हैं जिनकी मालिक खुद केंद्र सरकार है.

दिअशसे के प्रधान एस.के. ढेरी कहते हैं, "ये भवन तो माचिस की डिब्बियों जैसे खतरनाक हैं. छोटी-सी आग भी पूरे भवन को भक से जलाकर जान-माल का भयंकर नुकसान कर सकती है."

जहां तक दिल्ली में मौजूद अग्निशमन सुविधाओं की बात है, इस मामले में 1976 में किए गए एक तकनीकी आकलन में पाया गया था कि शहर के 1484 वर्ग किमी क्षेत्र के लिए कम-से-कम 65 दमकल केंद्रों और 450 दमकल गाड़ियों की जरूरत है. मगर आज 16 साल बाद का सच यह है कि दिल्ली में 23 दमकल केंद्रों के पास केवल 150 दमकल गाड़ियां हैं जिन्हें चलाने के लिए तकनीकी और दफ्तरी कर्मचारियों की कुल संख्या 1380 है.

विज्ञान भवन की आग के अगले दिन ही केंद्र सरकार ने दिअशसे के मौजूदा बजट को 4.5 करोड़ रु. से बढ़ाकर लगभग दोगुना कर दिया. पर असली सवाल दीर्घकालीन हल ढूंढ़ने का है.

—विजय झालि

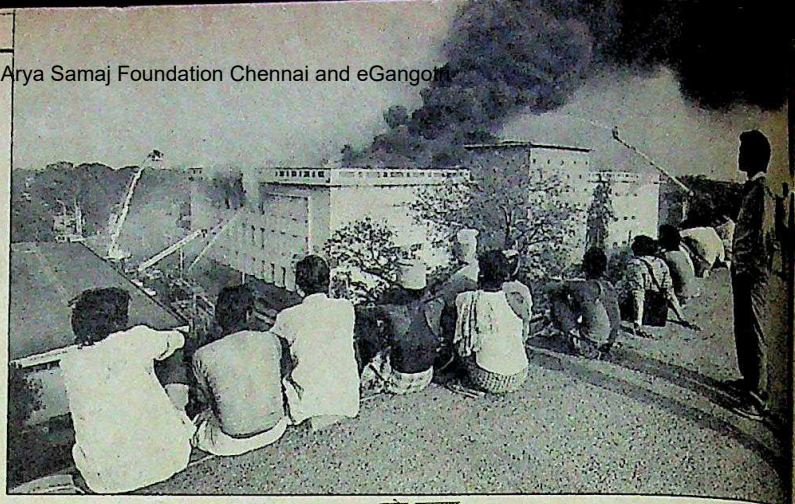

प्रमोद पुष्करणा

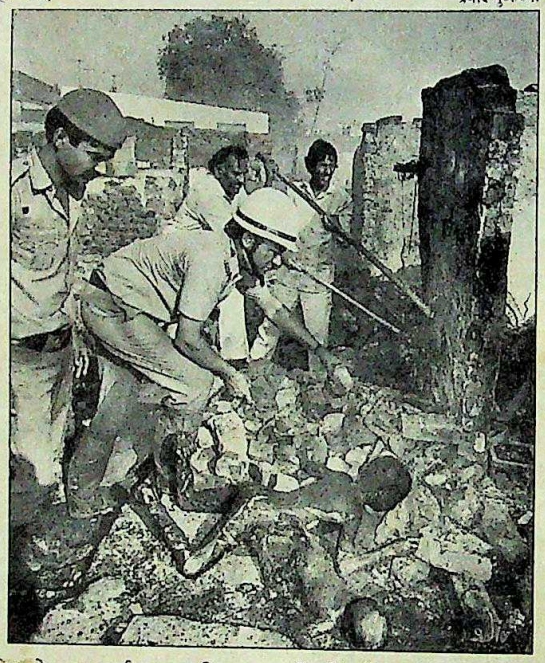

जलता विज्ञान भवन; और (बाएं) मोतियाखान का हादसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

परदे पर संकट

सिनेमाघर बंद होने लगे

यह ऊंची उड़ान ही कही जाएगी. जयपुर के अनेक सिनेमाघर आर्थिक संकट के चलते बंद होने लगे हैं और अब कुछ ही समय में इनकी जगह बहुमंजिली इमारतों वाले व्यावसायिक केंद्र ले लेंगे.

विडंबना यह है कि आर्थिक बदहाली का पहला शिकार इस वर्ष स्वर्ण जयंती मनाने वाला 'रामप्रकाश' सिनेमाघर हुआ है. मनोरंजन कर के लाखों रुपए के बकाए ने आखिर इस पर ताले लगवा दिए. डेढ़ दशक पहले बना 'अंबर' सिनेमाघर भी पिछले महीने बंद हो गया. व्यावसायिक केंद्र बनाने के लिए अब इसे तोड़ा जा रहा है. एक और पुराना सिनेमाघर 'पोलोविक्ट्री' भी बंद होने के कगार पर है. फिलहाल उसमें अंग्रेजी फिल्में ही दिखाई जाती हैं. उसके पिछले हिस्से में तो कई व्यावसायिक संस्थान खुल भी गए हैं.

'अंबर' को बंद करने की गुपचुप तैयारियां पिछले दो महीने से चल रही थीं. मालिकों ने सिनेमाघर के कर्मचारियों को पूर्व सूचना दिए बिना 10 मार्च को तालाबंदी कर दी और थोड़े दिनों बाद ही सिनेमाघर को तोड़ने का कार्य युद्धस्तर पर शुरू कर दिया. सिनेमा कर्मचारी यूनियन और दूसरे संगठनों ने इस आकस्मिक तालाबंदी का विरोध करते हुए कहा कि मालिकों को सिनेमाघर बनाने की मंजूरी जनता के मनोरंजन के लिए दी गई थी और अब इस स्थान पर व्यावसायिक केंद्र बनाना जनता से उसके मनोरंजन के अधिकार को छीनना है.

इस सारे विरोध के बावजूद जयपुर विकास प्राधिकरण की भवन निर्माण प्रारूप समिति ने रूपांतरण शुल्क लिए बिना ही गोयनका एकीवीटर्स को इस सिनेमाघर की जगह व्यावसायिक केंद्र बनाने की अनुमति प्रदान कर दी.

अंबर सिनेमा की देखादेखी शहर के कई मालिकों ने भी अपने सिनेमाघरों को व्यावसायिक केंद्र बनाने का इरादा कर लिया है. इससे सिनेमाघरों में काम करने वाले कर्मचारियों के बेरोजगार होने के अलावा सरकार को मनोरंजन कर के रूप में मिलने वाली रकम से भी हाथ धोना पड़ेगा. अकेले अंबर सिनेमा से ही मनोरंजन कर के रूप में 24 लाख रु. वार्षिक की आमदनी थी.

अंबर सिनेमा के मैनजेर विजय किशन व्यास कहते हैं, "शहर में 'राज मंदिर' के बाद इस सिनेमा का दूसरा स्थान रहा है. इसमें सदैव लाभ रहा है. न जाने प्रबंधकों को इसे तोड़कर व्यावसायिक केंद्र बनाने की क्या सूझी है." सिनेमा व्यवसाय से जुड़े लोगों के अनुसार अब राजधानी के पांच और सिनेमाघरों के भी निकट भविष्य में बंद हो जाने की आशंका है.

'राज मंदिर' सिनेमा के मालिक कुशलचंद सुराणा बताते हैं, "सिनेमाघरों की आमदनी कम और खर्चे बढ़ रहे हैं. राज्य सरकार 50 फीसदी राशि मनोरंजन कर के रूप में वसूल कर रही है जिससे कमाई का आधा हिस्सा राजकोष में चला जाता है. सिनेमा हाल के रखरखाव, बिजली के बिल और कर्मचारियों के प्रति वर्ष बढ़ते वेतन को चुकाने के बाद कुछ भी नहीं बचता. यही कारण है कि शहर के अधिकांश सिनेमाघर महीनों से घाटे की स्थिति से गुजर रहे हैं."

सिनेमाघरों के मालिकों ने टिकट दर बढ़ाने की अनुमति देने के लिए सरकार को कई बार कहा लेकिन सरकार का रवैया पूरी तरह नकारात्मक ही रहा है. सुराणा का कहना है कि पूरे भारत में राजस्थान और दिल्ली ही ऐसे राज्य हैं जहां टिकट दर बढ़ाने के लिए सरकार से मंजूरी लेनी पड़ती है.

इसीलिए सिनेमा मालिक मांग करते आए हैं कि अगर सरकार सिनेमा व्यवसाय को जीवित रखना चाहती है तो मनोरंजन कर में पूरी छूट दे अथवा टिकट दर बढ़ाने के लिए सरकार की पूर्व अनुमति लेने की अनिवार्यता को खत्म कर दे. 'सरोज' सिनेमा के मालिक और फिल्म वितरक ओमप्रकाश बंसल पूछते हैं, "सिनेमा मालिक घाटा सहन करके आखिर कब तक सिनेमा चलाएंगे? सरकार को दूसरे उद्योगों की भांति सिनेमा व्यवसाय को भी उद्योग का दर्जा प्रदान कर देना चाहिए."

'प्रेम प्रकाश' के मालिक सुरेंद्र गोलछा का मानना है, "सिनेमा उद्योग की हालत यही रही तो सिनेमाघरों को बंद करने के सिवा कोई उपाय नहीं रहेगा."

हालत यह है कि जयपुर के दो सिनेमाघर बिकाऊ हैं. जोधपुर के दो सिनेमाघरों को व्यावसायिक केंद्र बनाने की योजना है. दूसरी जगहों पर भी इसी प्रकार की स्थिति पैदा हो रही है. जब किसी धंधे में लागत पूंजी का रिटर्न नहीं मिलता और घाटे पर घाटा होता है तो यह हालत कितने दिन चलेगी? सिनेमाघरों के पास लंबी चौड़ी जमीन हैं जिनके बाजार भाव आज बहुत ऊंचे हैं. इसलिए बकौल गोलछा सिनेमा बंद करके भवन एवं जमीन के व्यापारिक उद्योग से लाभ कमाने की लालसा बढ़ना स्वाभाविक ही है.

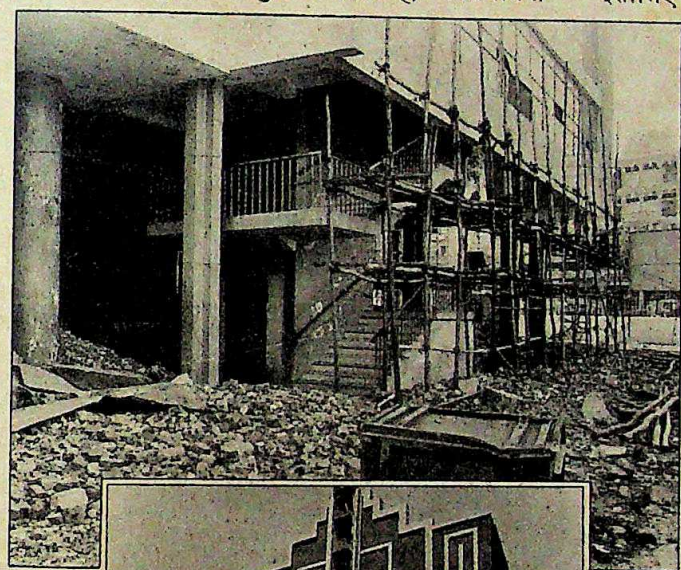

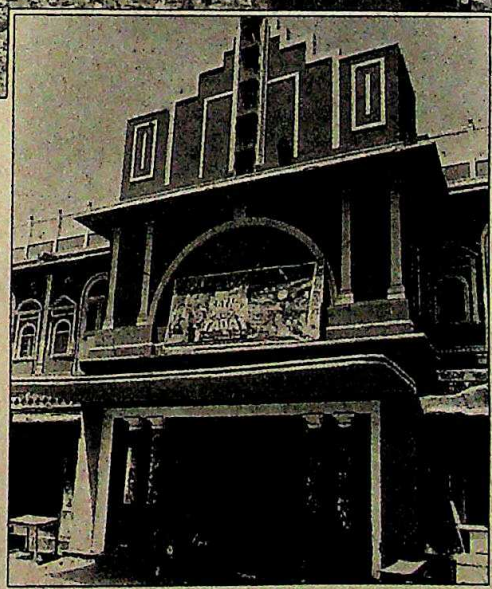

'अंबर' को तोड़कर बनाया जा रहा व्यावसायिक केंद्र (ऊपर); और बंद 'रामप्रकाश': घाटे का सौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरण बेदी

कानूनी वज्रपात

मामला सुलटने की संभावना कम

"यहां तक कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी पुलिस मुख्यालय के अपने चैंबर में बंद हो गए और उन्होंने 'न कुछ देखते हैं, न कुछ सुनते हैं और न कुछ करते हैं' वाला रवैया अख्तियार कर लिया जबकि यह साफ था कि भारी गड़बड़ी की गई है."

न्यायमूर्ति डी.पी. वधवा समिति की यह टिप्पणी उस 65 पृष्ठों की रिपोर्ट का महज एक नमूना भर है जिसमें उसने दो साल पहले तीस हजारी के हड़ताली वकीलों के साथ दिल्ली पुलिस और किरण बेदी के व्यवहार की कड़ी आलोचना की है.

प्रमोद पुष्करणा

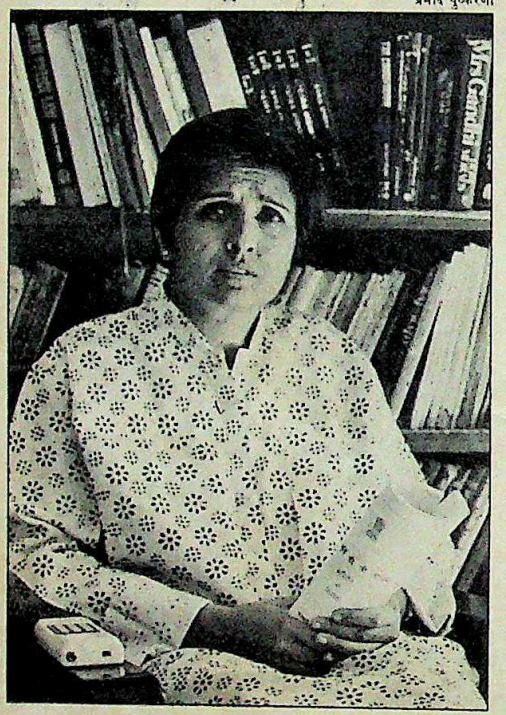

किरण बेदी: वकीलों का कहर

दिल्ली हाईकोर्ट के सेवारत न्यायाधीश वधवा की इस बेबाक रिपोर्ट में वकीलों द्वारा किरण बेदी और उत्तर जिला दिल्ली पुलिस के खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों को सही ठहराया गया है. समिति के कुछ प्रमुख नतीजे ये हैं:

▸ 1988 में चोरी के आरोप में वकील राजेश अग्निहोत्री की गिरफ्तारी जायज थी पर दिल्ली पुलिस द्वारा उन्हें हथकड़ी लगाना गैरकानूनी था.

▸ तत्कालीन पुलिस उपायुक्त (उत्तर क्षेत्र) किरण बेदी द्वारा घटना के हफ्ते बाद हड़ताली वकीलों पर लाठीचार्ज का आदेश देना 'निरंकुश और गलत' था.

▸ बेदी ने एक नगर पार्षद की सांठगांठ से तीस हजारी पर भीड़ जुटाई जिसने वकीलों के खिलाफ हिंसा की.

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने समिति की रिपोर्ट 'सामान्य रूप से स्वीकार' कर पिछले पखवाडे उसे संसद में भी पेश किया. मंत्रालय अब बेदी समेत इस मामले में शामिल सभी अधिकारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू कर रहा है. यानी अगर बेदी और उनके सहयोगियों को विभागीय समिति ने दोषी पाया तो उन्हें दंड दिया जा सकता है. यही नहीं उन्हें नौकरी से भी बरखास्त किया जा सकता है. वकीलों की पैरवी करने वाले के.के. वेणुगोपाल कहते हैं, "यह ऐसा फैसला है जिसमें वधवा समिति ने पुलिस की अराजक शैली को बेनकाब करने की पूरी कोशिश की है."

इस समय मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो में उप महानिरीक्षक किरण बेदी के लिए यह रिपोर्ट वज्रपात की तरह है. लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया है. वे कहती हैं, "हमें शुरू से ही मालूम था कि हम एक पूर्वाग्रह के खिलाफ लड़ रहे हैं. पर मैं हार मानने वाली नहीं." उनकी आशाएं अब सीबीआई पर टिकी हैं जिसे इन्हीं आरोपों की जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है.

लेकिन दिल्ली बार एसोसिएशन के वकील भी शांत नहीं बैठे हैं. वे सीबीआई जांच वापस लेने की मांग तो कर ही रहे हैं, एक दूसरे मोर्चे से भी हल्ला बोलने की तैयारी कर रहे हैं. वे किरण बेदी के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कराएंगे जिसमें उनके खिलाफ, "आपराधिक सांठगाठं, झूठे मुकदमे दर्ज करने, झूठे हलफनामे देने और वकीलों को गहरी चोट पहुंचाने" के आरोप होंगे. एसोसिएशन के सचिव राजीव खोसला कहते हैं, "जब तक उनके खिलाफ पूरी कार्रवाई नहीं होती हम चैन से नहीं बैठेंगे."

बहरहाल, वकील और पुलिस अधिकारी अभी भी एक दूसरे से भिड़ने के मूड में हैं इसलिए मामला जल्दी रफा-दफा होता नहीं दिखता.

—राज चेंगप्पा

सनद रहे

घोषणा: 57 वर्षीय ले. जनरल *एस.एफ. 'रॉकी' रोड्रिग्स* की अगले थल सेनाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति. वे 30 जून को जनरल वी.एन. शर्मा की जगह लेंगे. स्पष्टवादी रोड्रिग्स थल सेना प्रमुख के रूप में सबसे पसंदीदा लोगों में से हैं.

नियुक्त: *मुचकुंद दुबे* की नए विदेश सचिव के रूप में एस.के. सिंह की जगह नियुक्ति. एस.के. सिंह के बारे में माना जाता है कि उन्होंने कश्मीर पर पाकिस्तान के कूटनैतिक हमलों का बखूबी जवाब दिया था. अर्थशास्त्री दुबे में कूटनैतिक प्रतिभा की कमी मानी जाती है. उन्हें आठ वरिष्ठ आईएफएस अफसरों को नजरअंदाज कर नए पद पर लाया गया है.

इस्तीफा: भाकपा के महासचिव पद से 76 वर्षीय *सी. राजेश्वर राव* ने इस्तीफा दे दिया है. उस व्यक्ति पर आश्रित होते जा रहे थे जिसने अब उनकी जगह ली है. ये हैं इंद्रजीत गुप्त.

पुरस्कृत: 24 वर्षीया *मोनिषा वर्मा* शौर्य चक्र से सम्मानित. दिल्ली परिवहन निगम के पांच लफंगे कर्मचारियों ने एक खाली बस में उनसे छेड़खानी की कोशिश की तो उन्होंने कराटे का कमाल दिखाते हुए उनके छक्के छुड़ा दिए और चलती बस से कूद गई. तभी से उन्हें 'कराटे किड' कहा जाने लगा. यह पुरस्कार उन्हें इसी बहादुरी के लिए दिया गया.

इस्तीफा: 79 वर्षीया *मदर टेरेसा* का मिशनरीज ऑफ चैरिटीज के अध्यक्ष पद से. वे कुछ समय से बीमार हैं. उनकी जगह भरना नामुमकिन है. फिलहाल सिस्टर एग्नेस इस पद की प्रमुख दावेदार हैं.

मृत्यु: वीणा वादक और विवादास्पद संगीतज्ञ 63 वर्षीय *एस. बालचंदर* की हृदय गति रुक जाने से. वे त्रावनकोर के 79वीं सदी के महाराजा स्वाति त्रिरुनल के कृतित्व कार्य की प्रामाणिकता को लेकर चलने वाले घमासान विवाद के मुख्य केंद्र थे. यह विवाद अनसुलझा रह गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसम आयें - जायें

क्लासिक सदा साथ निभाये

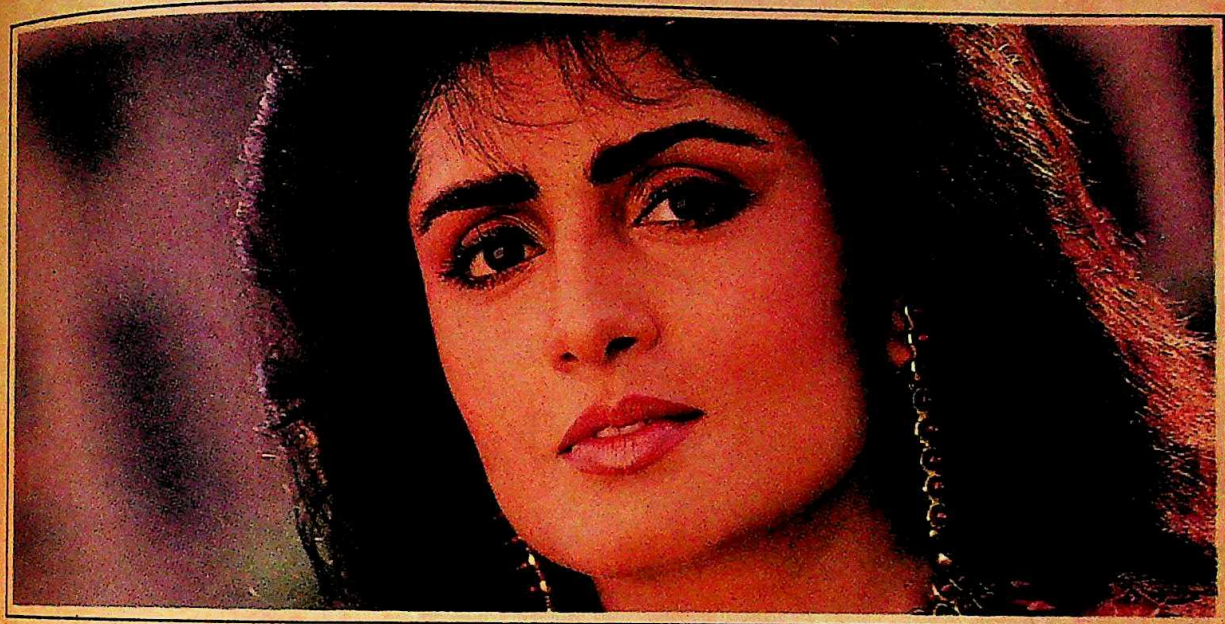

हर हाल, मैसूर सैंडल क्लासिक की
सौम्यता ज्यों की त्यों रहे पूरे साल।
आपकी त्वचा को कोमल और नर्म रखे।
उसे न रुखा होने दे न सूखा।

Mysore Sandal

Classic

सर्दी - गर्मी या बरसात, पूरे साल साथ

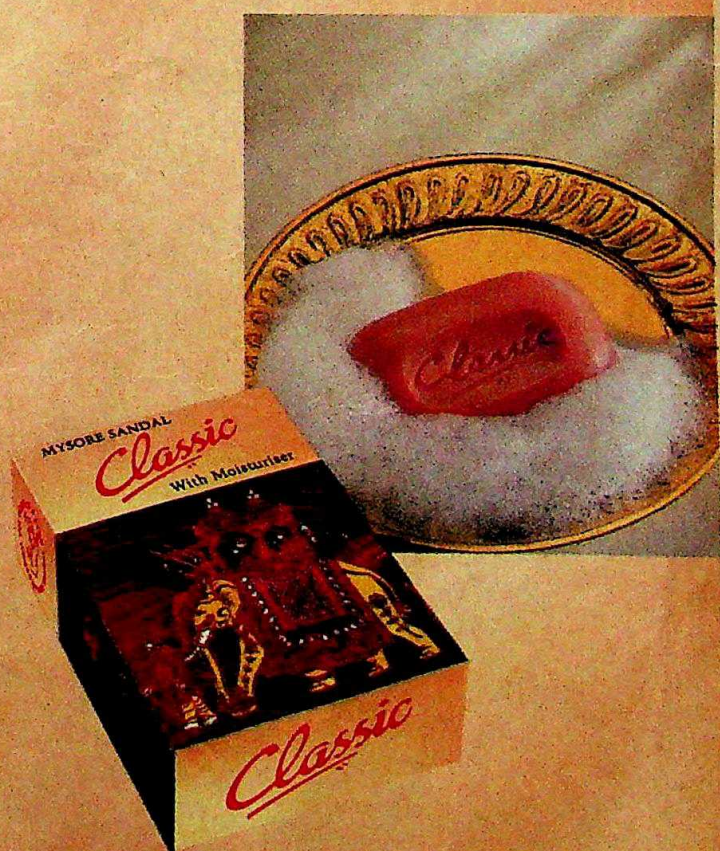

इस साबुन में प्राकृतिक चंदन का तेल, रिफाइंड ग्लीसरीन और 100% डिस्टिल्ड वैस है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:Blr:MSC:263:90:Hin

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमूल कॉम्फ़ी का जब मिला संग
मर्दानगी से खिल उठा अंग-अंग

Amul COMFY
बनियान • अंडरवियर

आज के जवांमर्दों की पहली पसन्द है अमूल कॉम्फ़ी अंडरवियर और बनियान। जिसे है त्वचा की कोमलता की सही पहचान। १००% कॉम्ब्ड सूती धागों से बना, एकदम सही फिटिंग के लिए चुस्ती-फुर्ती के ताने-बाने से बुना।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रेणी का अंडरवियर अमूल कॉम्फ़ी—जिसमें है आयातित रबर इलैस्टिक और नवीनतम सिलाई तकनीक।

एक बार पहन कर देखिए—फिर तो आपको दूसरा कोई जँचेगा ही नहीं।

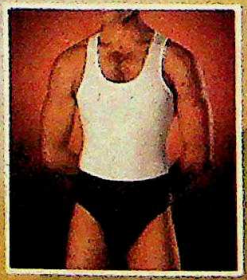

अमूल कॉम्फ़ी
बनियान • अंडरवियर

सचमुच बेजोड़

निर्माता जे. जी. इण्डस्ट्रीज़ तिरुपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Summer Addiction

This summer the male population will find a new addiction. For those people dedicated to good taste we offer the irresistible Park Avenue Casual Shirts Collection.

Made from 100% cotton and comfortable blends. Available in checks, stripes and plains, in a variety of attractive colour combinations.

The Park Avenue Casual Shirts Collection – a mid-summer's daydream.

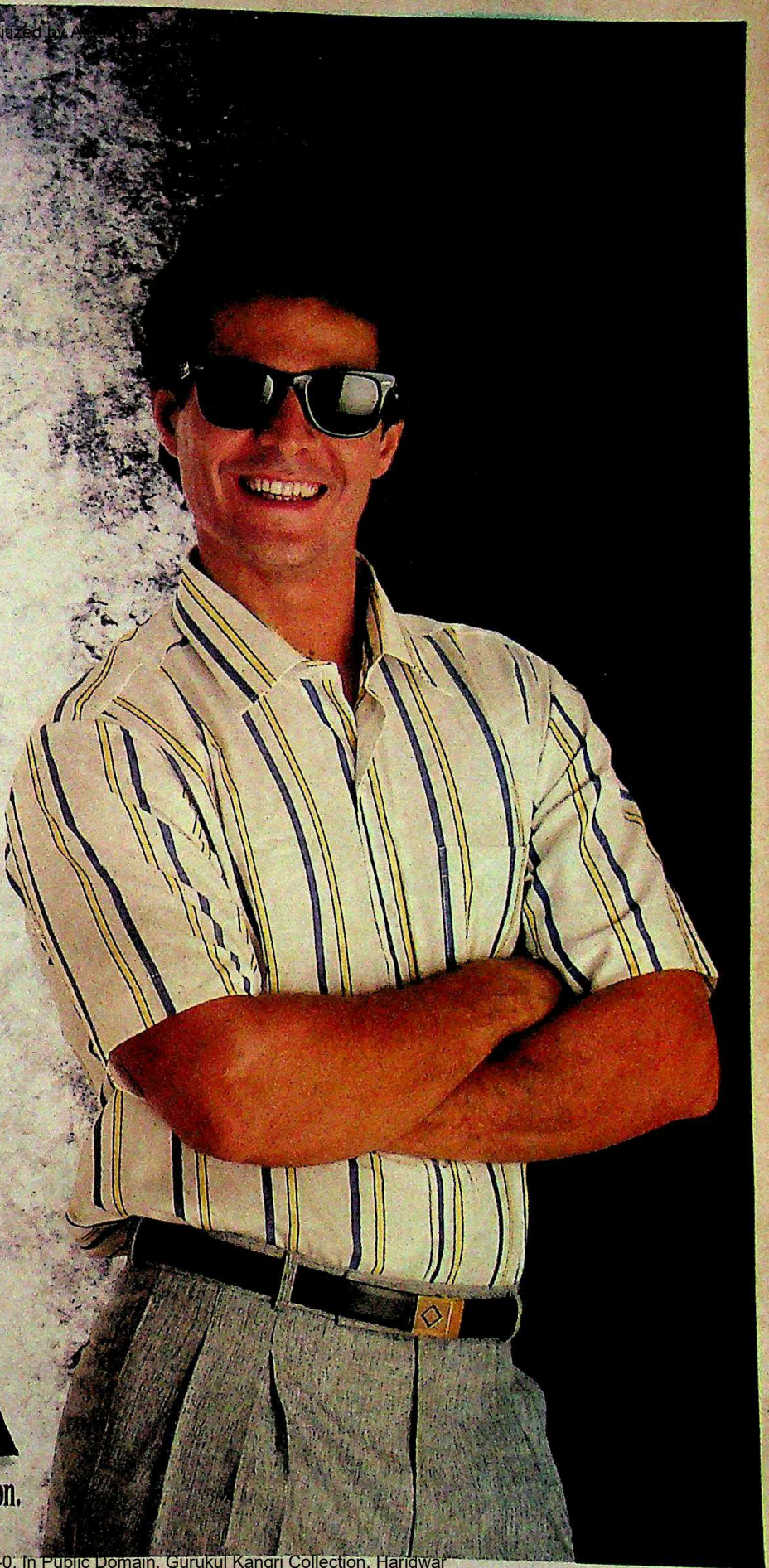

Park Avenue by Raymond's

Style... it never goes out of fashion.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS PA 135 2517

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

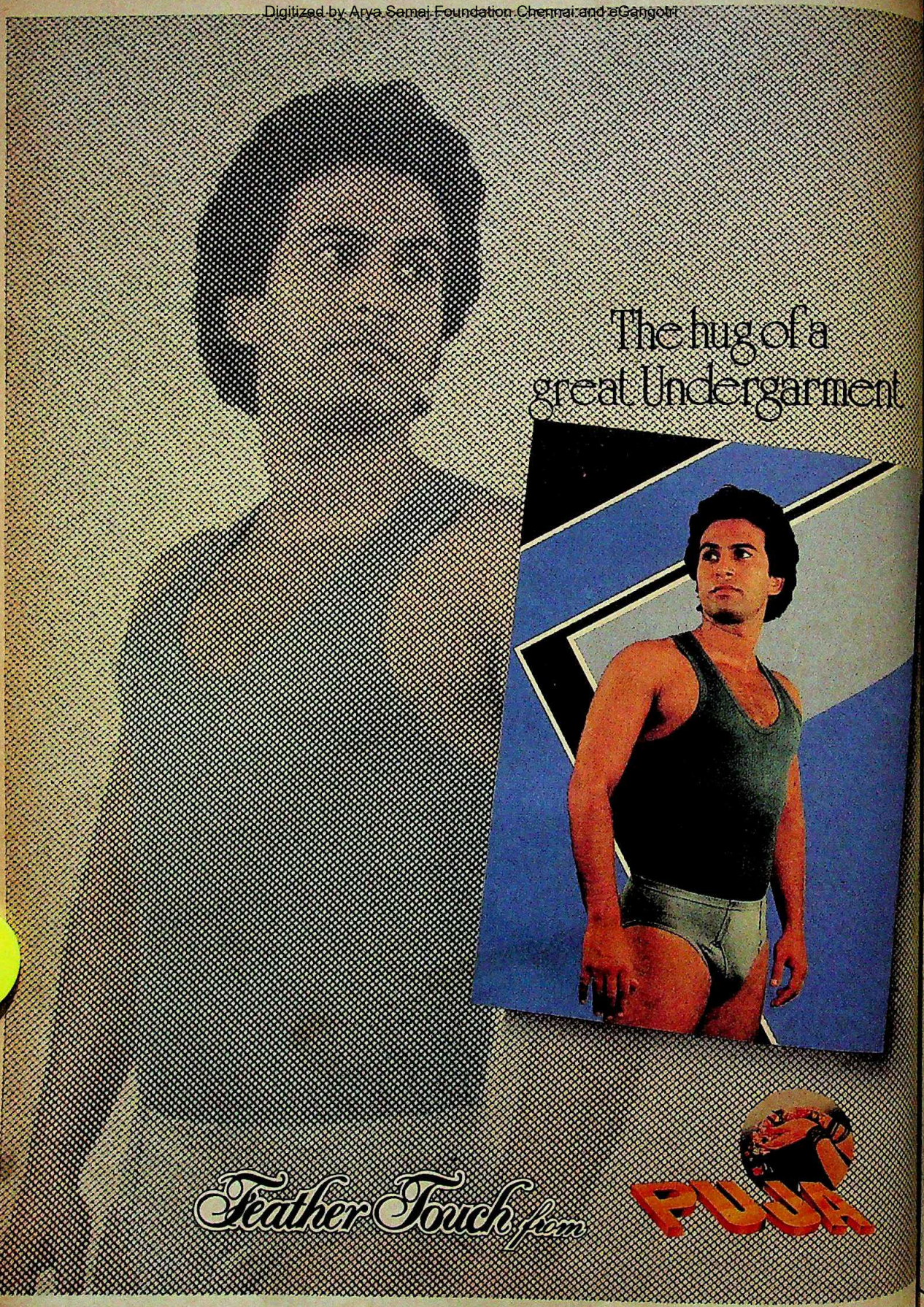

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठंडी बोतलों की गरम जंग

नींबू-संतरे के स्वाद वाले शीतल पेयों में ब्रोमीनयुक्त वनस्पति तेल (बीवीओ) के इस्तेमाल पर रोक लगाने के सरकारी फैसले से सबसे ज्यादा नुकसान रमेश चौहान के पारले समूह और चरणजीत सिंह की प्योर ड्रिंक्स को होगा. लिम्का, गोल्ड स्पॉट, ट्रिप और कैंपा ऑरेंज जैसे शीतल पेयों में वर्षों से बीवीओ का इस्तेमाल होता रहा है.

शीतल पेय निर्माताओं को बीवीओ के इस्तेमाल की इजाजत 16 अप्रैल तक के लिए दी गई थी और कहा गया था कि वे इसका विकल्प ढूंढ़ लें. मगर वे इसमें नाकाम रहे. पारले समूह और प्योर ड्रिंक्स ने खासी गुटबाजी करके सरकार से 'मोहलत' की अवधि बढ़वाने की कोशिश की मगर उनकी कोशिशों को नाकाम कर दिया परदे के पीछे से इसके खिलाफ माहौल बनाने वाली एक और शीतल पेय कंपनी ने. यह कंपनी बहुराष्ट्रीय पेप्सी फूड प्रा. लि. के अलावा और कौन हो सकती है? इसके शीतल पेय जल्द ही बाजार में आने वाले हैं जिनमें बीवीओ का प्रयोग नहीं है. ठंडी बोतलों की गरम जंग का अभी एक दौर और होगा.

इसे हाथ न लगाना

छाबरिया समूह बाजार से 1988 के शुरू में जब लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयर खरीदने में जुटा था तब राहुल बजाज की अगुआई वाला एक और प्रतिष्ठित औद्योगिक घराना लार्सन ऐंड टुब्रो पर काबिज होने में खासी दिलचस्पी ले रहा था. वित्त मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार बजाज ने इस कंपनी के 50 लाख रु. के शेयर खरीदकर तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी से संपर्क किया. उन्हें सबसे पहले उनके विशेष सचिव मोंटेक सिंह अहलूवालिया और फिर तत्कालीन वित्त सचिव एस. वेंकिटरमणन से मिलने का निर्देश दिया गया. उन्हें यह स्पष्ट संकेत कर दिया गया कि "कोई भी कंपनी, पर यह नहीं!" इस घटना से यही पता लगता है कि लार्सन ऐंड टुब्रो में अंबानी के घुसने से काफी पहले ही राज दरबार ने फैसला कर लिया था कि उसका वरदहस्त किस पर होगा.

लुभावनी योजनाएं

मद्रास का टीटीके समूह प्रेस्टिज ब्रांड नाम के प्रेशर कुकर की एक और श्रृंखला जारी करने जा रहा है. यह समूह 'इलेक्ट्रोमैटिक' प्रेशर कुकर का उत्पादन भी फिर से शुरू करने जा रहा है. भविष्य में यह समूह न चिपकने वाले तले के बर्तन भी बनाएगा. इस बीच, वह विक्रेताओं को आकर्षक उपहार देकर अपने विपणन तंत्र को पुख्ता बना रहा है. मसलन, पिछले महीने इसके 20 विक्रेताओं को सिंगापुर व गोवा की हवाई यात्रा का टिकट दिया गया. और पुराने प्रेशर कुकर देकर नए कुकर खरीदने वालों को भी 75 रु. से 100 रु. तक की छूट दी जा रही है.

मर्ज की दवा: निजीकरण?

भारतीय होटल निगम (भाहोनि) का एकमात्र इलाज क्या निजीकरण है? भ्रष्टाचार, कुप्रबंध और भारी लापरवाही के चलते 'भाहोनि' का संचित घाटा 23 करोड़ रु. से ज्यादा का हो गया. सूत्रों से पता चला है कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय इसके 60 फीसदी शेयर किसी विदेशी होटल श्रृंखला को बेचने पर विचार कर रहा है. अगर खरीदार मिल भी गया तो एअर इंडिया घाटे में चल रहे इस धंधे की कितनी कीमत वसूलेगा? एअर इंडिया ने इसमें 35 करोड़ रु. का निवेश किया है. दिल्ली व बंबई हवाई अड्डों के पास वाले इसके तीन होटलों की कीमत हाल के वर्षों में काफी तेजी से बढ़ी है. इसलिए अगर 'भाहोनि' के निजीकरण का फैसला हुआ भी तो इन होटलों से हाथ झाड़ने के एवज में एअर इंडिया जरूर मोटी रकम ऐंठना चाहेगा.

लुढ़कते रुपए ने ऊपर उठाया

भला हो रुपए की अंतरराष्ट्रीय कीमत के अवमूल्यन का कि पिछले दो साल में इंजीनियरिंग सामान का भारत से होने वाला निर्यात दूना हो गया. भारत के कई मशीनरी निर्माताओं को अब यह पता लग गया है कि रुपए के अवमूल्यन ने उनके सामान को अंतरराष्ट्रीय बाजार में स्पर्धा लायक बना दिया है. पिछले साल

चार्ट: बी.के. शर्मा

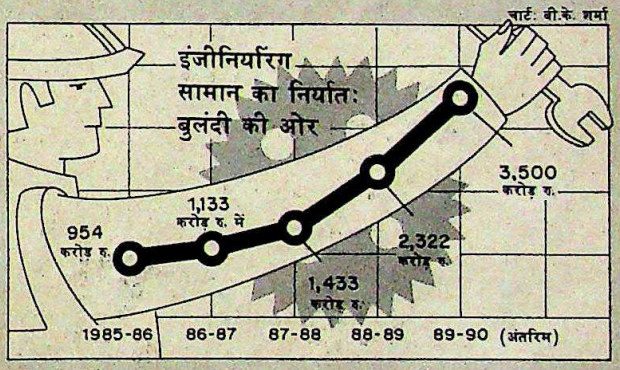

अप्रैल से सितंबर तक का निर्यात का आंकड़ा 1,300 करोड़ रु. से कुछ ऊपर था पर मार्च में खत्म होने वाले पूरे वर्ष के लिए इस आंकड़े के 3,500 करोड़ रु. से ज्यादा होने का अनुमान है (देखें चार्ट). टेल्को का निर्यात 1987-88 और 1988-89 के बीच 50 करोड़ रु. से बढ़कर 85 करोड़ रु. का हो गया. टाटा स्टील का निर्यात 22 करोड़ रु. से बढ़कर 95 करोड़ रु. का हो गया, मुकुंद आयरन के निर्यात ने 4 करोड़ रु. से छलांग लगाई और 22 करोड़ रु. तक पहुंच गया और किर्लोस्कर कमिंस का निर्यात 2.4 करोड़ रु. से बढ़कर 15.5 करोड़ रु. का हो गया. शायद ये घराने अपना ऐसा ही प्रभावशाली प्रदर्शन 1989-90 में भी जारी रखेंगे.

लालभाई की गोटी लाल

अहमदाबाद के लालभाई घराने की अरविंद मिल्स डेनिम (जींस) कपड़े की सबसे बड़ी उत्पादक और निर्यातक बनने जा रही है. कंपनी का 30 करोड़ रु. का नया कारखाना नागरी (गुजरात) में इस वर्ष के आखिरी दिनों में शुरू होने जा रहा है. इसमें बना माल केवल निर्यात के लिए होगा. पिछले साल तक अरविंद मिल्स डेनिम की 70 फीसदी बिक्री घरेलू बाजार में करती थी और बाकी 30 फीसदी का निर्यात होता था. पर 1991 तक इस अनुपात के उलट जाने की संभावना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लार्सन ऐंड टुब्रो

तलवारें म्यान में

लेकिन अलंबरदार कौन अभी भी अनिश्चित

अपने जुझारू तेवर के विपरीत अंबानी घराने ने विशाल इंजीनियरिंग कंपनी लार्सन ऐंड टुब्रो पर काबिज होने की लड़ाई बिना लड़े ही कदम खींच लिए. 19 अप्रैल को लार्सन ऐंड टुब्रो के निदेशक मंडल की दो घंटे चली बैठक में सारा किस्सा एक नए मोड़ पर पहुंच गया. आशंका थी कि इस बैठक में खासा बवाल होगा पर वह शांति से निबट गई. निदेशक मंडल से रिलायंस द्वारा मनोनीत चार लोगों को हटाने के लिए शेयरधारकों की विशिष्ट आमसभा बुलाने का नोटिस जीवन बीमा निगम (जीबीनि) अध्यक्ष एन.के. सिनकर ने वापस ले लिया. ये चार लोग थे— अध्यक्ष धीरूभाई अंबानी, उनके बेटे मुकेश व अनिल और उनके वकील एम.एल. भक्त.

इसके बदले 'जीबीनि' की अगुआई में वित्तीय संस्थाओं ने एक सर्वमान्य समझौता कर लिया. इसके तहत धीरूभाई ने कंपनी के अध्यक्ष व निदेशक का पद छोड़ दिया (उनकी जगह भारतीय स्टेट बैंक के पूर्व अध्यक्ष डी.एन. घोष को इन पदों पर बिठा दिया गया); मुकेश ने उपाध्यक्ष का पद छोड़ दिया परंतु वे निदेशक मंडल में बने रहेंगे; निदेशक मंडल के दो अन्य सदस्यों की स्थिति जस की तस रहेगी. लार्सन ऐंड टुब्रो के निदेशक आर.एम. गांधी ने कहा, "हर कोई समझौते के लिए तैयार था."

अपने प्रेस बयान में धीरूभाई अंबानी ने 'सीमाओं पर घिर रहे जंग के बादलों' का जिक्र करते हुए कहा कि 'आजादी के बाद कभी भी देश की एकता और अखंडता' इस कदर खतरे में नहीं रही, इसलिए 'इस समय सभी भारतीयों को मिल-जुलकर रचनात्मक काम करना चाहिए.' क्या इस लफ्फाजी का मतलब यह है कि अंबानी ने विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार से सुलह कर ली है. समझौते के विश्लेषण से ऐसा नहीं लगता.

निदेशक मंडल की बैठक के दो दिन पहले तक यही लग रहा था कि जीबीनि 'प्रॉक्सी' की लड़ाई की तैयारी कर रहा था. उसने बंबई उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाकर लार्सन ऐंड टुब्रो के लिए यह निर्देश तक हासिल कर लिया कि कंपनी अपने शेयरधारकों का रजिस्टर जीबीनि के पास जमा करा दे. फिर, भारतीय रिजर्व बैंक के निरीक्षकों ने बंबई के विदेशी बैंकों को जा पकड़ा और उनसे रिलायंस तथा लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयरों के बदले किए गए अग्रिम भुगतानों का ब्यौरा मांगा. समझा जाता है कि कुल भुगतान करीब 150 करोड़ रु. के किए गए. अटकलें लगाई जा रही थीं कि इनमें से कई बैंकों ने लार्सन ऐंड टुब्रो के बहुत शेयर अपने नाम करा लिए हैं ताकि शेयरधारकों की बैठक में उन्हें मताधिकार हासिल हो जाए.

माना जाता है कि अंबानी ने जीबीनि को बता दिया था कि लार्सन ऐंड टुब्रो में उनकी 25 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी नहीं है (इसके पहले रिलायंस के सूत्रों ने दावा किया था कि कंपनी में अंबानी की 33 फीसदी हिस्सेदारी है). पर वित्तीय संस्थाओं के सूत्रों के अनुसार जीबीनि जिस समय 'प्रॉक्सी' जंग की तैयारी कर रहा था, अंबानी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के आगे अपना दुखड़ा रो रहे थे. इसमें उन्हें कुछ कामयाबी भी मिली.

बताया जाता है कि पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने सरकार को अंबानी से मामला सुलटा लेने का सुझाव दिया. यही बात केंद्रीय उद्योगमंत्री अजित सिंह ने भी कही. उधर, महाराष्ट्र में भाजपा की चुनावी सहयोगी शिवसेना अंबानी के समर्थन में प्रदर्शनों की योजना बना रही थी.

कई लोग मानते हैं कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने इस मामले में अपना पैंतरा अचानक उलट लिया. इसने शुरुआत तो बड़े हमलावर अंदाज में की परंतु बाद में समझौतावादी रुख अपना लिया. लार्सन ऐंड टुब्रो के निदेशक मंडल की बैठक दो घंटे देरी से शुरू हुई क्योंकि वित्तीय संस्थाओं को शायद ऊपर से निर्देशों का इंतजार था.

इसके बाद वित्तमंत्री मधु दंडवते ने यह घोषणा कर दी कि वाच फिस्कल द्वारा रिलायंस समूह के लिए लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयर खरीदने के मामले की जांच सीबीआई करेगी. उन्होंने कहा कि सरकार कंपनी क्षेत्र की लड़ाई में नहीं पड़ेगी. पर अहम सवाल बरकरार रहा कि लार्सन ऐंड टुब्रो की लगाम किसके हाथ में रहेगी.

अंबानी घराने के पास धीरूभाई की जगह दूसरा निदेशक मनोनीत करने का विकल्प अभी भी मौजूद है. निदेशक मंडल में वित्तीय संस्थाओं की ओर से पांच निदेशक हैं. यह माना जाता है कि कंपनी के ज्यादातर अधिकारी अंबानी के समर्थक हैं. दो मुद्दों पर घोष का रवैया क्या होगा अभी पता नहीं. रिलायंस के शेयरों में लार्सन ऐंड टुब्रो द्वारा 75 करोड़ रु. के निवेश का वे क्या करेंगे, और हजीरा में 800 करोड़ रु. की लागत वाली रिलायंस पेट्रोकेमिकल परियोजना के लिए क्या वह लार्सन ऐंड टुब्रो को आपूर्तिकर्ता के रूप में 300 करोड़ से 600 करोड़ रु. के कर्ज देने की इजाजत देंगे? इन दो मुद्दों पर घोष के फैसलों से ही तय होगा कि लार्सन ऐंड टुब्रो का असली अलंबरदार कौन है.

—एस.एन. बाजपेई

चार्ट: बी.के. शर्मा

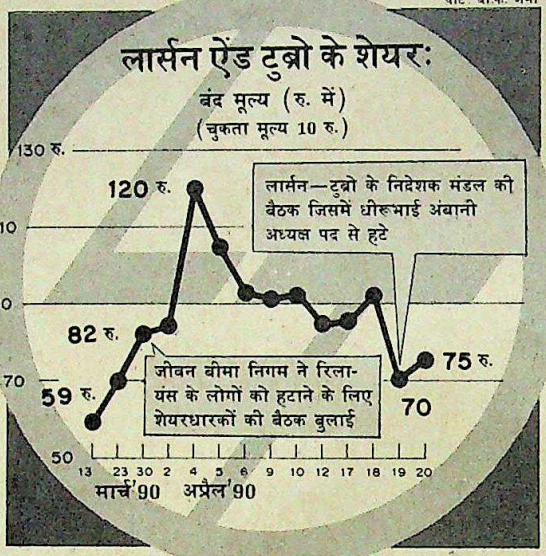

एन.के. सिनकर और धीरूभाई अंबानी: मामला सुलटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपट्रॉन पुरस्कार

इस वर्ष के अपट्रॉन पुरस्कार

कौन जीतेगा यह आप पर निर्भर करता है !

अपने मनपसंद दूरदर्शन कलाकारों को प्रोत्साहन दीजिए। मनपसंद कलाकार और दूरदर्शन धारावाहिक के पक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए। आपको बस इतना करना है कि नीचे दी जा रही सूचियों में किसी एक खाने ☐ के आगे "सही" का निशान लगाएं। और फिर यह फार्म हमें भेज दें।

विजेता देशभर में किए जा रहे इस मतदान के आधार पर चुने जाएंगे। कितना आसान, मगर कितना मजेदार ! और इससे स्वयं आपको भी पुरस्कार मिल सकता है !

याद रहे आपका मत महत्वपूर्ण है। इसलिए देर न करें, आज ही अपना मत प्रकट करें !

मेरा मनपसंद दूरदर्शन धारावाहिक*

- उत्तर रामायण 1 ☐
- विश्वामित्र 2 ☐
- मुजरिम हाज़िर 3 ☐
- साझा चूल्हा 4 ☐
- दिल दरिया 5 ☐
- किस्सा शांति का 6 ☐
- भारत एक खोज 7 ☐
- फौजी 8 ☐
- मालगुडी डेज़ 9 ☐
- जीवन रेखा 10 ☐

*नामांकित होने के बावजूद महाभारत को इस श्रेणी में शामिल नहीं किया गया, क्योंकि उसे 1989 में 'सर्वश्रेष्ठ धारावाहिक' पुरस्कार से पुरस्कृत किया जा चुका है।

मेरा मनपसंद अभिनेता

- अरुण गोविल (राम-उत्तर रामायण) 1 ☐
- मुकेश खन्ना (विश्वामित्र-विश्वामित्र) 2 ☐
- नितीश भारद्वाज (कृष्ण-महाभारत) 3 ☐
- मुकेश खन्ना (भीष्म पितामह-महाभारत) 4 ☐
- मोहन गोखले (मि० योगी-मि० योगी) 5 ☐
- ओम पुरी (कक्काजी-कक्काजी कहिन) 6 ☐
- वीरेन्द्र सिंह (सदानन्द-मुजरिम हाज़िर) 7 ☐
- परीक्षित साहनी (डॉक्टर-डॉक्टर साहिब) 8 ☐

मेरा मनपसंद अभिनेत्री

- दीपिका (सीता-उत्तर रामायण) 1 ☐
- रूपा गांगुली (द्रौपदी-महाभारत) 2 ☐
- भानुप्रिया (मेनका-विश्वामित्र) 3 ☐
- नाज़नीन (कुन्ती-महाभारत) 4 ☐
- अर्चना जोगलेकर (शांति-किस्सा शांति का) 5 ☐
- नवनी परिहार (नयनतारा-मुजरिम हाज़िर) 6 ☐
- रेणुका इसरानी (गांधारी-महाभारत) 7 ☐
- शांतिप्रिया (शकुंतला-विश्वामित्र) 8 ☐

मेरा मनपसंद सहायक अभिनेता

- शारुख़ ख़ान (अभिमन्यु-फौजी) 1 ☐
- सुनील लाहिरी (लक्ष्मण-उत्तर रामायण) 2 ☐
- ए० के० हंगल (डॉ० राव-जीवन रेखा) 3 ☐
- गुड्डी पेन्टल (शकुनि-महाभारत) 4 ☐
- अर्जुन (अर्जुन-महाभारत) 5 ☐
- अरुण गोविल (हरिश्चन्द्र-विश्वामित्र) 6 ☐
- बलवारी तनेजा (अनीता का पिता-पंछी) 7 ☐
- पुनीत इस्सर (दुर्योधन—महाभारत) 8 ☐

मेरा मनपसंद सहायक अभिनेत्री

- रमा विज (दीपो-साझा चूल्हा) 1 ☐
- सुषमा सेठ (मां-पंछी) 2 ☐
- चन्द्रा वस्तिवार (गौरव की मां-गौरव) 3 ☐
- तन्वी आज़मी (डॉक्टर माधुरी-जीवन रेखा) 4 ☐
- छैयाली वस्तिवार (टीना-गौरव) 5 ☐
- नूतन (कालीगंज की बहू-मुजरिम हाज़िर) 6 ☐
- सुरेखा (तारामती-विश्वामित्र) 7 ☐
- बिनी परांजपे (अनीता-पंछी) 8 ☐

मेरा मनपसंद हास्य-अभिनेता

- मोहन गोखले (मि० योगी-मि० योगी) 1 ☐
- ओम पुरी (कक्काजी-कक्काजी कहिन) 2 ☐
- ओम पुरी (सूत्रधार-मि० योगी) 3 ☐
- अजीत वाछानी (मामाजी-मुजरिम हाज़िर) 4 ☐
- शारुख़ ख़ान (अभिमन्यु-फौजी) 5 ☐
- मोहन चोटी (पण्डित-विश्वामित्र) 6 ☐

मेरा मनपसंद बाल कलाकार

- लव (लव-उत्तर रामायण) 1 ☐
- कुश (कुश-उत्तर रामायण) 2 ☐
- मलिक लवाक (भीम-महाभारत) 3 ☐
- मास्टर अंकुर (अर्जुन-महाभारत) 4 ☐
- अंतरिक्ष (बाल सदानन्द-मुजरिम हाज़िर) 5 ☐

केवल 1989 के दौरान राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किए गए कार्यक्रम ही भाग लेने के लिए पात्र होंगे। * कोई प्रवेश शुल्क नहीं * एक व्यक्ति केवल एक ही प्रविष्टि भेज सकता है * अपूर्ण फार्म नामंजूर कर दिए जाएंगे * निर्णायकों का फैसला अंतिम होगा * अपट्रॉन इंडिया लिमिटेड, उसकी सहायक कंपनियों और उसकी विज्ञापन कंपनियों के कर्मचारी भाग नहीं ले सकेंगे * प्रवेश फार्म अपट्रॉन के सभी कार्यालयों और उसके डीलरों के पास भी उपलब्ध हैं * किसी प्रकार का पत्राचार नहीं किया जाएगा।

मेरा मनपसंद शीर्षक गीत

- उत्तर रामायण 1 ☐
- विश्वामित्र 2 ☐
- मि० योगी 3 ☐
- पंछी 4 ☐
- जीवन रेखा 5 ☐
- फौजी 6 ☐
- मुजरिम हाज़िर 7 ☐
- साझा चूल्हा 8 ☐
- किस्सा शांति का 9 ☐
- मालगुडी डेज़ 10 ☐

आलोचक की पसंद

सर्वश्रेष्ठ निर्देशक
सर्वश्रेष्ठ पटकथा

पुरस्कार

अगर आप स्वयं भी पुरस्कार पाने के योग्य होना चाहते हैं तो बस इतना कीजिए : अपट्रॉन के रंगीन टी.वी. सेट के लिए एक शब्द का कोई "ब्राण्ड" नाम सुझाएं।

* प्रथम पुरस्कार : अपट्रॉन रंगीन टी.वी. सेट
* 20 सांत्वना पुरस्कार : 2-बैण्ड के अपट्रॉन ट्रांजिस्टर रेडियो

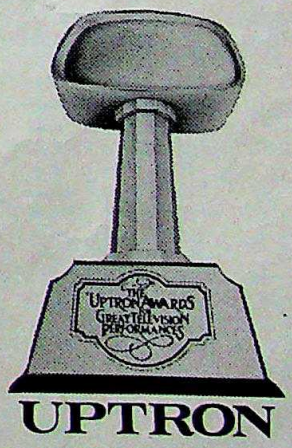

ब्राण्ड नाम _____

नाम _____

आयु _____

पता (पूरा) _____

अपनी प्रविष्टियां इस पते पर भेजें : अपट्रॉन अवॉर्ड्स, पोस्ट बैग नं. 4, पटेल नगर पो.ऑ., नई दिल्ली-110 008.

जल्दी करें !
मतदान 15 मई 1990 को समाप्त हो रहा है !

ULKA-D-UIL-961-HIN-2 R

ITH-DEL

UPTRON

★ कंप्यूटर शिक्षा ★ सॉफ्टवेयर कंसल्टेंसी ★ कंप्यूटर ★ संचार प्रणालियां ★ टीवी ★ वी सी आर ★ सर्विस एवं प्रशिक्षण केंद्र ★ कंपोनेन्ट ★ औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स ★ कंट्रोल सिस्टम्स.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उखड़ा मूड

निवेशकों का रुख ठंडा

देश के पूंजी बाजार के दो दिग्गज खिलाड़ियों—यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया और जीवन बीमा निगम—की कार्रवाइयों के कारण शेयर बाजार का मूड पिछले पखवाड़े कुछ उखड़ा-सा रहा. नतीजा यह रहा कि शेयर मूल्य सूचकांक नीचे आ गए और 19 अप्रैल को बाजार जब बंद हुआ था तब शेयरों के मूल्य अनिश्चित थे.

यूनिट ट्रस्ट के नए अध्यक्ष एस.ए. दवे ने आने के बाद जो पहली कार्रवाई की उसका शेयर मूल्यों पर प्रतिकूल असर पड़ा. बताया जाता है कि अकेले 5 अप्रैल को यूनिट ट्रस्ट ने 25 करोड़ रु. मूल्य के शेयर बेच डाले. यूनिट ट्रस्ट का यह फैसला हालांकि बजट प्रस्तावों की घोषणा के मद्देनजर शेयरों के मूल्यों को स्थिर बनाए रखने के लिए किया गया था. लेकिन बाजार के जानकारों का कहना है कि ऐसी दखलंदाजी नहीं की गई होती तो भी शेयरों के मूल्य नीचे आए होते. यानी तथाकथित 'दवे प्रभाव' के कारण मंदी को ही बढ़ावा मिला.

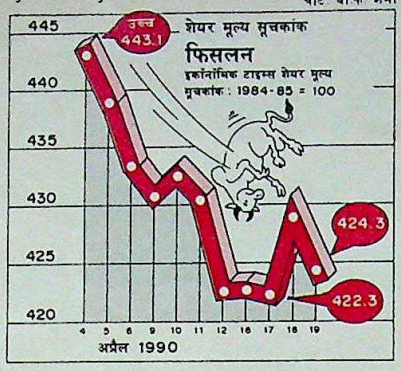

जीवन बीमा निगम ने लार्सन ऐंड टुब्रो पर नियंत्रण के मामले में रिलायंस समूह से अपने विवाद को अंततः सुलटा लिया. 19 अप्रैल को धीरूभाई अंबानी ने जब स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष डी.एन. घोष के लिए लार्सन ऐंड टुब्रो के अध्यक्ष पद की कुर्सी खाली कर दी तब उनके बेटे अनिल अंबानी की टिप्पणी थी कि अंत भला तो सब भला. इसके साथ ही जीवन बीमा निगम ने लार्सन ऐंड टुब्रो के निदेशक मंडल से रिलायंस द्वारा मनोनीत चार सदस्यों को हटाने के लिए शेयरधारकों की बैठक बुलाने का नोटिस वापस ले लिया.

लेकिन इन तमाम बातों से शेयर बाजार पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा. लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयरों की कीमत एक दिन थोड़ी सुधरने के बाद फिर गिर गई. एक पखवाड़े में इसके शेयरों की कीमत में 18 रु. की कमी आ गई. इस वर्ष के शुरू में इसकी कीमत 122 रु. के शिखर पर थी, जो अब 75 रुपए हो गई.

बजट पेश होने के बाद इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय शेयर मूल्य सूचकांक 4 अप्रैल को अपने सर्वोच्च अंक 443.1 पर पहुंचा. इसके दूसरे दिन यूनिट ट्रस्ट ने भारी बिक्री की. इसके बाद प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान के साथ लड़ाई के लिए तैयार रहने के लिए सावधान किया. नतीजा यह कि शेयर बाजार में गिरावट आ गई और उपरोक्त शेयर मूल्य सूचकांक 9 अप्रैल को 430.7 पर पहुंचा और इसके अगले दिन थोड़ा ऊपर उठा और फिर 17 अप्रैल को गिरकर 422.3 पर पहुंच गया. बंबई शेयर मूल्य सूचकांक की भी यही हालत रही. 4 से 9 अप्रैल के बीच यह 431.61 से गिरकर 414.93 पर पहुंच गया. यह सूचकांक 17 अप्रैल को 407.31 पर था.

यानी कुल मिलाकर यह अनिश्चितता का दौर ही रहा. देश पर जिस तरह युद्ध के बादल मंडराते रहे, उसके कारण निवेशकों का उत्साह मंदा रहा.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	नीचा	बंद 20.4.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	69.50	80.00	3.00 +
एसोसिएटेड सीमेंट	443.00	325.00	432.00	12.00 +
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	228.75	3.75 +
एटलस कोप्को	48.00	32.50	34.00	1.00 +
बजाज ऑटो	450.00	355.00	433.75	6.25 +
बड़ौदा रेयॉन	910.00	617.50	857.50	10.00 +
बाटा इंडिया	83.00	62.50	77.00	4.50 —
बल्लारपुर	161.00	120.00	145.00	3.00 —
बिरला जूट	72.00	50.50	69.50	—
ब्लो प्लास्ट	57.50	34.50	48.75	—
बॉम्बे डाइंग	231.00	173.00	201.00	2.00 —
ब्रिटानिया इंडिया	119.00	97.00	116.00	2.00 +
बुक बांड	118.00	91.00	114.00	2.00 —
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	3420.00	2420.00	3160.00	90.00 +
क्लोराइड इंडिया	92.00	82.50	88.000	3.00 —
कोलगेट पामो.	233.75	176.25	210.00	5.00 —
सायनामिड	115.00	87.50	95.00	—
डीसीएम	60.00	45.50	56.75	1.50 —
डनलप	75.50	51.75	56.00	1.50 —
ईआई होटल्स	65.25	57.50	60.00	—
एस्कार्ट्स	90.00	77.75	85.00	2.50 —
फिनोलेक्स केबल्स	282.50	202.50	212.50	17.50 —
नैस्ले इंडिया	129.00	101.75	119.00	6.00 —
गरवारे नाइलोन	69.00	49.00	52.00	2.00 —
जी.ई. शिपिंग	54.75	44.00	50.25	0.50 +
गुजरात स्टेट फर्टि.	195.00	155.00	173.75	2.50 +
ग्रासिम इंडिया	130.00	106.00	123.50	1.00 +
हिंदु. एल्यूमिनियम	292.50	205.00	281.25	10.00 +
हिंदु. सीबा	1660.00	960.00	1270.00	20.00 +
कैडबरी इंडिया	172.50	133.75	154.00	1.00 +
हिंदुस्तान लीवर	125.00	101.00	112.50	0.50 —
हिंदुस्तान मोटर्स	31.30	19.80	26.50	0.50 +
आई.सी.आई.	49.50	35.25	38.50	1.50 —
इंडियन आर्गेनिक	58.75	46.50	50.00	0.50 +
इंडियन रेयन	113.50	84.00	106.50	1.50 +
इंड्रॉल	246.25	161.25	207.50	2.50 +
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	220.00	10.00 —
आई.टी.सी.	69.00	48.75	69.00	5.25 +
जे.के. सिंथेटिक्स	67.00	50.00	57.00	3.00 —
काइनेटिक इंजी.	155.00	130.00	145.00	5.00 —
किर्लोस्कर क्युमिंस	90.00	65.00	75.00	4.00 —
केएसबी पंप्स	227.50	190.00	225.00	—
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	75.00	18.00 —
लिप्टन	112.00	83.00	91.00	2.00 —
लोहिया-मशीन्स	21.00	15.00	16.25	1.25 —
मदुरा कोट्स	115.50	100.50	114.00	1.50 —
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	87.50	5.00 +
मिल्क फूड	280.00	170.00	180.00	25.00 —
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	785.00	860.00	—
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	134.00	3.00 +
नेशनल आर्गेनिक	1660.00	1070.00	1280.00	—
निरलॉन	22.00	14.00	16.00	1.00 —
ओरके सिल्क मिल्स	20.50	14.50	16.00	0.50 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	32.50	24.00	28.00	1.50 —
फाइजर	113.75	72.50	76.00	1.50 —
प्रीमियर ऑटो	74.50	53.50	59.50	0.50 —
रैनबैक्सी	110.00	86.25	96.25	1.25 —
रेमंड	87.50	70.00	80.50	0.50 —
रिलायंस इंडस्ट्रीज	90.00	50.00	74.00	14.00 +
सीमेंस इंडिया	123.50	96.00	112.00	4.00 —
शॉ वैलेस	92.00	65.00	87.00	5.00 +
श्रीराम फाइबर्स	71.00	51.25	57.00	—
एसकेएफ बेयरिंग्स	1570.00	1240.00	1350.00	10.00 —
स्पिक	62.00	50.75	57.50	1.50 —
टाटा स्टील	136.50	103.25	124.50	1.00 —
टेल्को	145.00	110.00	145.00	12.00 +
वाम आर्गेनिक	167.50	132.50	142.50	2.50 —
वीडियोकॉन	220.00	105.00	212.50	15.00 +
वोल्टास	78.50	63.00	74.00	2.50 —
विमको	32.50	15.75	16.50	2.50 —

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	खरीद मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.4408	13.2[illegible]
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	146.9853	146.[illegible]
बहरीन	दीनार	1	46.4576	45.[illegible]
बांग्लादेश	टका	100	52.7927	52.[illegible]
कनाडा	डालर	1	14.9799	14.[illegible]
डेनमार्क	क्रोना	1	2.7255	2.[illegible]
मिस्र	पौंड	1	6.7526	6.[illegible]
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.1299	3.[illegible]
हांगकांग	डालर	1	2.2358	2.[illegible]
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9546	0.[illegible]
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.[illegible]
इटली	लीरा	100	1.4141	1.[illegible]
जापान	येन	100	11.2108	10.[illegible]
केन्या	शिलिंग	1	0.7641	0.[illegible]
कुवैत	दीनार	1	59.4594	57.[illegible]
मलेशिया	डालर	1	6.4015	6.[illegible]
मारीशस	रुपया	1	1.1851	1.[illegible]
नेपाल	रुपया	1	0.6081	0.[illegible]
हालैंड	गिल्डर	1	9.2324	9.[illegible]
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8179	0.[illegible]
सिंगापुर	डालर	1	9.2866	9.[illegible]
स्पेन	पेसो	1	0.1644	0.[illegible]
श्रीलंका	रुपया	1	0.4361	0.[illegible]
स्वीडन	क्रोना	1	2.8678	2.[illegible]
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	11.7396	11.[illegible]
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0942	0.[illegible]
थाईलैंड	बहत	100	67.5256	66.[illegible]
ब्रिटेन	पौंड	1	28.5551	28.[illegible]
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.4216	17.[illegible]
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.7457	4.[illegible]
सोवियत संघ	रूबल	1	28.0767	27.[illegible]
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.5263	10.[illegible]

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 20.4.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहुबल पर भरोसा

जब यू.पी. और बिहार के युवा परीक्षा के दौर से गुजरते हैं, देश की अग्नि-परीक्षा होती है. कश्मीर की केसर क्यारी और चीड़ वन सुलग रहे हैं. दिल्ली के विज्ञान भवन और सदर बाजार सुलग चुके हैं. पर विश्वविद्यालय हैं कि मुल्क का कतई खयाल नहीं करते. इम्तहान लेने से बाज नहीं आते. हम एक मित्र के पुत्र से उनकी तैयारी का हाल पूछते हैं. जवाब मिलता है, "बस अंकल! कलम तो बाबू जी ने खरीद दी है. पर जरा बाजार जाना है."

"कल तो पेपर है. इस समय क्या काम आ गया?"

"अब आपसे क्या छिपाना. बी.ए. प्रीविवस की परीक्षा 1987 में हुई थी. अब तीसरा साल है न, कुछ पुराना पड़ गया है."

"क्या किताबें ले जाने वाला बैग!"

"आप भी कैसी बात करते हैं. बैग-वैग तो बचपन में काम आते हैं!"

"तो क्या नया गेस पेपर खरीदना है?"

"किताब-कुंजी आपकी पीढ़ी इस्तेमाल करती होगी. हमें तो कलम और बाहुबल पर भरोसा है!" इतना कहकर उन्होंने जेब से एक चमचमाता चाकू निकाला. "इम्तहान के बियाबान को हम इससे पार करेंगे!"

हमें पता लग गया कि बुद्ध-गांधी के देश में आतंकवादी क्यों पनप रहे हैं! न परीक्षा होती, न अस्त्र-शस्त्र में युवाओं की दीक्षा होती.

सुबह हम घूमने निकले तो रास्ते में एक शामियाना दिखा. अंदर मेज-कुर्सी लगी थीं और बाहर लाउडस्पीकर. एक बुजुर्ग नीचे बिछी दरी पर झाड़ू लगवा रहे थे. हमने उत्सुकता जताई, "कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी है भैया?"

"नहीं तो!"

"शादी का रिसेप्शन या भजन-पूजन?"

"जी नहीं."

"किसी नए मोर्चे का गठन हो रहा है या यूनियन का जलसा?"

"आप कहीं बाहर से आए हैं?" उन्होंने जवाब की जगह सवाल पेश किया.

"जी हां! पर बात क्या है?"

"बताते हैं. वह जो सामने टुटही इमारत है, वहां लड़कों का एग्जाम है, यहां हमारा."

"इस उम्र में आपका कैसा इम्तहान?"

"हम माइक पर प्रश्नों के उत्तर बताएंगे, लड़के अंदर लिखेंगे. जिसने फर्स्ट डिवीजन की फीस दी है, उसकी कॉपी बदल देंगे."

इस ज्ञानी के दर्शन से हमें यकीन हो गया कि जीनियस पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते. हम चलने को हुए तो पुलिस की एक जीप पधारी. हमें डर लगा कि परीक्षार्थियों का भविष्य खतरे में है. जरूर किसी असामाजिक तत्व ने तंबू के कल्याणकारी आयोजन की सूचना पुलिस को दे दी है. खैर, इतने में कल्याण केंद्र के प्रबंधक और पुलिस अधिकारी गले मिलते दिखे. हमने राहत की सांस ली. हालचाल की औपचारिक चर्चा के बाद पुलिस अधिकारी ने जानना चाहा, "सब इंतजाम तो चौचक है रामप्रसाद!"

"दो-तीन साल से इम्तहान नहीं हुए हैं. बस थोड़ी-सी प्रैक्टिस कम है पांडे जी."

"फीस मिलने में कोई झगड़ा-टंटा तो नहीं है."

"हमने कच्ची गोलियां थोड़े ही खेली हैं. फिफ्टी पर्सेंट एडवांस लेकर ही लड़कों को यह सेंटर दिलवाया है."

"एकाध गार्ड छोड़ दें!"

"नहीं पांडे जी! अपने कल्याण केंद्र के रक्षक तो भगवान हैं," इतना कहकर उन्होंने झुककर निहायत विनम्रता से एक बंद लिफाफा अधिकारी को भेंट किया, "आपका अग्रिम है सर!"

हम आश्वस्त हुए. प्रगति की संपूर्ण क्रांति में ऐसे ही सौहार्द की कसर बाकी है.

हम यूनिवर्सिटी के पास से गुजरे तो वहां एक दुकान पर ऊंचा-सा बोर्ड लगा था "मनचाही डिग्री-डिवीजन शर्तिया पाइए. आइए मेहरबान! खुद ही आजमाइए. सफलता की गारंटी है. संतुष्ट न होने पर पूरा पैसा भी मय ब्याज वापस ले जाइए."

दुकान के सामने भारी भीड़ थी. भोंपू लेकर एक सज्जन बाहर आए. उन्होंने निर्देश दिया, "आप लोग मेहरबानी करके क्यू बनाइए. यह कोई सब्जी बाजार नहीं, ज्ञान का मंदिर है. वरना हम छात्र हित समिति का दफ्तर बंद कर देंगे."

उनके चमत्कारी व्यक्तित्व के जादू ने हमें चौंका दिया. अपने यू.पी., बिहार में पंक्तिबद्ध लोगों की अनुशासित कतार! यह सपना तो नहीं है! हमने आंखें मलकर एक अभिभावक से सवाल किया, "यहां क्या कल का पेपर आउट हो रहा है!"

"वह सब पुराना पड़ गया. इस डिग्री केंद्र में हम अपने बेटे का रोल नंबर लिखवाते हैं. रेट के हिसाब से पैसा जमा कराते हैं. इनका वादा है कि बाकी का काम यह करेंगे. नया कारोबार है. इसी साल शुरू हुआ है. कुछ दिनों बाद ही सचाई का पता लगेगा."

हमें यकायक पिताओं के डिसिप्लिन का राज समझ में आ गया. बाप अपनी औलाद के लिए सब कुछ कर सकता है. यहां तक कि पुरानी परंपराओं को तोड़ लाइन तक में लग सकता है. परीक्षा के संकट से जूझने के लिए मुल्क में पेशेवर परोपकारियों की संगठित संस्थाएं हैं. कुछ प्रश्नपत्र पता करती हैं, कुछ उत्तर डिक्टेट कराती हैं, कुछ नंबर बढ़वाने जैसे धर्म के काम कर डिग्री दिलवाती हैं नहीं तो खुद ही दे डालती हैं. पर एक बात अपने पल्ले आज तक नहीं पड़ी. इस सारी कवायद के बाद भी बेरोजगार बेकार ही रहता है. क्या कभी ऐसी शिक्षा नीति बनेगी जिससे यह बेकारी के कारखाने और डिग्री की दुकानें बंद हो सकें?

रेखाचित्र: बयतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेनका गांधी

फिजां बदलने के जेहादी तेवर

नौजवान मंत्री ने पर्यावरण मंत्रालय को नई ताकत तो दी मगर कई कट्टर आलोचक भी अपने लिए तैयार किए

केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय में उनके जैसा शायद न कोई आया था और न आएगा. दुबली-पतली 33 वर्षीया मेनका गांधी ने इस मंत्रालय का कायाकल्प कर दिया है. अब यह रिरियाने वाले कुत्ते जैसा नहीं रह गया है, बल्कि इसके तेवर अब पहरे पर बैठे चौकस कुत्ते जैसे हैं.

लेकिन मेनका की इस जेहादी शैली ने उनके लिए आशंका से ज्यादा मुसीबतें भी खड़ी की हैं. कई दूसरे मंत्रालयों को अपने ढंग से चलाने की उनकी कोशिशों को कामयाब नहीं होने दिया गया. टिहरी बांध और नर्मदा घाटी परियोजना जैसे दो महत्वपूर्ण मुद्दों पर उनके ढुलमुल रुख ने उनके कुछ समर्थकों को भी उनका आलोचक बना दिया है. पिछले हफ्ते जब नीलमणि राउतराय को पर्यावरण विभाग का कैबिनेट मंत्री बनाया गया तो इसे मेनका पर अंकुश लगाने की कोशिश माना गया.

मेनका ऐसी खबरों का झटके से सिर हिलाकर खंडन करती हुई कहती हैं, "यह तो प्रदूषण रोकने के मेरे प्रयासों की प्रतिक्रिया है." आलोचनाओं के सामने घुटने न टेकने का दम भरती हुई वे कहती हैं, "मैं तो जानती हूं कि पर्यावरण मंत्रालय का काम ही है हरेक के काम में दखल देना."

जनवरी में जब उन्हें राज्यमंत्री बनाया गया तब उनकी योग्यताओं के बारे में कोई संदेह नहीं था. पशुओं की हमदर्दी वाली उनकी प्रसिद्धि ने उन्हें यहां तक पहुंचा दिया.

इस मंत्रालय में उनके 100 दिन पूरे हो चुके हैं. अब तक के उनके कामकाज का असर मिला-जुला ही रहा है.

अपने फौलादी पंजों के इस्तेमाल से उन्हें कोई परहेज नहीं है, भले ही उनका इस्तेमाल अपनी ही पार्टीवालों के खिलाफ करना पड़े. गोवा के विधायकों के विरोधों के बावजूद वे उन 16 होटलवालों से सख्ती से पेश आईं जिन्होंने समुद्र तट से 200 गज तक कोई निर्माण न करने के नियम का उल्लंघन किया था. कानपुर के पास जाजमऊ में गंगा को प्रदूषित करने वाले चमड़े के कारखानों को उन्होंने रातोरात धर-दबोचा.

उनकी इस जेहादी शैली की कई लोगों ने तारीफ भी की है. पर्यावरण विज्ञान केंद्र के निदेशक अनिल अग्रवाल के अनुसार, "उन्होंने वास्तव में सबको झकझोर दिया है. यही वजह है कि बहुत से लोग उनके विरोध में खड़े हुए हैं."

लेकिन बड़े बांधों के निर्माण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर शुरू में मेनका के अनाड़ीपन ने उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगी नाखुश थे. यही में पर्यावरणवादी कार्यकर्ताओं को नाराज करके उन्होंने अपनी पार्टीवालों के दबाव के आगे झुकने के संकेत दिए. और फिर, आलोचकों का कहना है कि देश के पर्यावरण की पारिस्थितिकी से संबंधित समस्याओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

में उनके पास कोई समग्र दृष्टिकोण नहीं है. योजना आयोग में पर्यावरण संबंधी मामलों के प्रभारी सदस्य रजनी कोठारी कहते हैं, "वे निश्चित तौर पर धमाके के साथ आई थीं. पर अब पर्यावरणवादी उन्हें लेकर पशोपेश में हैं. इसलिए खतरा यह है कि मेनका कहीं अलग-थलग न पड़ जाएं."

लेकिन ज्यादातर समस्याएं मेनका द्वारा नहीं खड़ी की गई हैं. मसलन 3,000 करोड़ रु. की लागत से बनने वाले टिहरी बांध पर तकरीबन एक दशक से विवाद चल रहा है. जब मेनका गांधी ने इसका कार्यभार संभाला, तभी सुंदरलाल बहुगुणा ने इस परियोजना के विरोध में अनशन शुरू कर दिया था. मेनका ने बहुगुणा से वार्ता शुरू की. ऊर्जामंत्री आरिफ मुहम्मद खां को इस मामले में विश्वास में लेने की जगह औपचारिकताओं को नजरअंदाज करके मेनका ने उन्हें अपना दुश्मन बना लिया.

उस समय वे जरूर कुछ उत्साहित हुईं जब पर्यावरण मंत्रालय की एक समिति ने टिहरी परियोजना के खिलाफ रिपोर्ट दे दी. लेकिन ऊर्जा मंत्रालय ने मंत्रिमंडलीय सचिवालय को इस बात पर राजी कर लिया कि पिछली समिति की सिफारिशों पर विचार के लिए एक नई समिति नियुक्त की जाएगी. सरकार के इस फैसले से ज्यादातर पर्यावरणवादी बिगड़ गए. भारतीय राष्ट्रीय कला व सांस्कृतिक विरासत न्यास की निदेशक, पर्यावरणवादी नलिनी जयाल कहती हैं, "नई समिति के पांच में से तीन सदस्यों के तो परियोजना में निहित स्वार्थ हैं. यानी अपराधी और न्यायाधीश सब एक ही जगह इकट्ठा कर दिए गए हैं."

मेनका हालांकि इस बात का खंडन करती हैं लेकिन सच यह है कि इसी कार्रवाई के बाद उन्होंने टिहरी के मुद्दे से हाथ खींच लिया. उन्होंने विवादास्पद नर्मदा घाटी परियोजना पर जो चुप्पी साध रखी है वह भी बहुत खल रही है. मंत्री बनने से पहले वे इसमें काफी दिलचस्पी ले रही थीं. इस मामले में भी उनके सहयोगियों ने उन्हें कुछ करने के लायक नहीं छोड़ा. अपने चुनाव भाषणों में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भी यही संकेत दिया था कि परियोजना पूरी की जाएगी.

मेनका को जब महसूस हुआ कि टिहरी और नर्मदा परियोजना में उनकी भद पिट रही है तो उन्होंने नए क्षेत्रों में कोशिशें शुरू कर दीं. अब वे राष्ट्रीय बंजर भूमि विकास परियोजना में फेरबदल करने में जुटी हैं. उन्होंने 'हम पैसे देंगे, आप पेड़ लगाइए' वाला पुराना नारा छोड़ दिया है और उसकी जगह हरियाणा में एक नया कार्यक्रम शुरू किया है. उन्हें उम्मीद है कि यह कार्यक्रम बाकी देश के लिए मॉडल का काम करेगा. इसमें औद्योगिक घरानों से अनुरोध किया जाएगा कि वे गांवों को अपनाएं और पेड़ लगाने पर धन खर्च करें. मेनका की एक और अच्छी योजना 'पर्यावरण मित्र' चिह्न शुरू करने की है. यह भारतीय मानक संस्थान के आईएसआई चिह्न जैसा ही होगा और उन्हीं उत्पादों पर लगाया जाएगा जो पर्यावरण कानून के उल्लंघन के बिना तैयार होंगे.

लेकिन उन्होंने अपने कामकाज से कई लोगों को अपने से दूर कर दिया है. वे अपनी कैंची-सी जुबान का इस्तेमाल करते हुए अपने कर्मचारियों के साथ सख्ती से पेश आती हैं. और पर्यावरणवादी लोग यह महसूस करते हैं कि लोग अब उन्हें "सुनने के बदले झेलते हैं." दिल्ली के स्वयंसेवी संगठन 'कल्पवृक्ष' के शेखर सिंह कहते हैं, "पहली बार हमें एक ऐसा मंत्री मिला था जिसे वास्तव में पर्यावरण की चिंता है. परंतु उन्हें यही नहीं मालूम कि इस काम को किस तरह किया जाए. वे नौकरशाही की शिकार बन रही हैं."

उधर कुछ दूसरे लोगों का मानना है कि कानूनों को सख्त बनाना और पर्यावरण अदालतें कायम करना असली मुद्दों को दरकिनार करने का ही संकेत है. कोठारी

शाबाशियां

- पर्यावरण मंत्रालय को सक्रिय करके इसे ताकतवर बनाना
- पर्यावरण अदालतों का प्रस्ताव
- हरियाणा में व्यापक वृक्षारोपण
- पर्यावरण कानूनों को धारदार बनाना
- चमड़ा कारखानों, शराब फैक्टरियों, गोवा के तटीय होटलों के खिलाफ सख्ती करना
- वन्य पक्षियों और मेंढकों के निर्यात पर पाबंदी लगाना

आलोचनाएं

- छोटे-छोटे सवालों में उलझकर असली मुद्दे की अनदेखी
- नर्मदा घाटी परियोजना पर चुप्पी
- टिहरी बांध पर ढुलमुल रुख
- पार्टीवालों और पर्यावरणवादियों को नाराज करना
- दूरंदेशी की कमी
- अनाड़ीपन और अक्खड़पन
- बलप्रयोग पर जोर देना
- नौकरशाहों पर भरोसा करना

शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं, "यह बात तो इस दलील जैसी ही है कि सरकारी तंत्र समस्या से निबटने में अक्षम है." लोग यह भी कहते हैं कि कानूनी पचड़े बढ़ाने का मतलब होगा विकास परियोजनाओं की राह में रोड़े अटकाना, जिससे ज्यादातर दूसरे मंत्रालय दुश्मन बन जाएंगे.

यह भी महसूस किया जा रहा है कि अब वे विवादास्पद मसलों से किनाराकशी कर रही हैं और कानून व वन्यजीवन जैसे उन मुद्दों पर ज्यादा ध्यान दे रही हैं जिन्हें लागू करना ज्यादा आसान है. एक अधिकारी के अनुसार, "पर्यावरण संबंधी समस्याओं में औपचारिकता बहुत है. मसले की असली जड़ों को वे अभी पकड़ नहीं पाई हैं."

लेकिन उन तमाम खामियों के बावजूद कुछ पर्यावरणवादी उन्हें काम करते देखना चाहते हैं. उनके सबसे कट्टर विरोधी ऊर्जा मंत्रालय के अधिकारी भी स्वीकार करते हैं कि मेनका गांधी के कारण पर्यावरण मंत्रालय एक ताकत बन चुका है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. जयाल कहती हैं, "इतना तय है कि वे फिस्स साबित नहीं होने वाली."

—राज चेंगप्पा

बातचीत

'मेरे अधिकारों की भी आखिर सीमा है'

शरद सक्सेना

*पर्यावरण राज्यमंत्री बनने के बाद से मेनका गांधी कई विवादों के केंद्र में रही हैं. पिछले पखवाड़े उन्होंने विशेष संवाददाता **राज चेंगप्पा** के साथ बातचीत में अपनी प्राथमिकताओं और विभिन्न मसलों पर विस्तार से चर्चा की. बातचीत के अंश:*

• *आपको विरासत में किस तरह का मंत्रालय मिला और आपने उसमें किस तरह के बदलाव लाने की कोशिश की है?*

जब मैं इस मंत्रालय में आई, तब यह केवल कागज पर ही था. अब तो यह एक ऐसा मंत्रालय है जो सचमुच काम कर रहा है और वह भी निडर होकर. मैं तो यह मानती हूं कि पर्यावरण मंत्रालय को सबसे अधिक दखल देने वाला मंत्रालय होना चाहिए. अलोकप्रिय होने के खतरे के बावजूद हम हर काम में अपना दखल दिए जा रहे हैं.

• *लगता है इसी कारण आप एक साथ कई मोर्चों पर उलझ गई हैं.*

विरोधियों के अनुसार विकास का अर्थ सड़कें और म्युनिसिपल इमारतें हैं. लेकिन विकास से मेरा अभिप्राय जीवन को खुशहाल बनाना है. मेरी दूसरी बात जो सबको नापसंद है, वह है मुआवजे के तौर पर वृक्षारोपण का नियम.

• *समझा जा रहा है कि टिहरी परियोजना को लेकर आप भारी दबाव में हैं.*

टिहरी परियोजना को तो 1986 में एक मिनट में ही मंजूरी दे दी गई थी. और अब जिस समिति ने परियोजना का मूल्यांकन किया उसके काम में मैंने कोई हस्तक्षेप नहीं किया. अब वे कह रहे हैं कि अब तक 300 करोड़ रु. खर्च हो चुके हैं. लेकिन मेरे हिसाब से एक राष्ट्र के जीवन के लिए 300 करोड़ रुपए क्या चीज है. हम तो अपना उत्सव, मैराथन जैसे बकवास कार्यक्रमों पर उससे भी ज्यादा पैसे फूंक चुके हैं.

• *नर्मदा परियोजना के बारे में आपने चुप्पी साध रखी है.*

नहीं, मैं चुप नहीं हूं. पर्यावरण मंत्रालय ने इसे इस शर्त पर मंजूरी दी थी कि परियोजना प्राधिकरण हमें इस परियोजना के पर्यावरण संबंधी आकलन की रिपोर्ट देगा. पिछले दिनों हमने उन्हें स्पष्ट तौर पर बता दिया कि चूंकि उन्होंने अपनी रिपोर्ट अभी तक नहीं भेजी है, लिहाजा हम अपनी मंजूरी वापस भी ले सकते हैं. दूसरी बात यह है कि हमने पुनर्वास के लिए और अधिक जमीन देने के बारे में अपना दृढ़ निश्चय जता दिया है. मैं अपने निर्णय पर अटल हूं. वैसे ये दोनों परियोजनाएं मेरे अधिकार क्षेत्र से बहुत बाहर हैं. मेरे अधिकारों की भी आखिर सीमा है!

• *लेकिन ऊर्जा की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए आप दबावों से कैसे निबटेंगी?*

भारत में कोई भी बिजलीघर अपनी क्षमता के 50 से 58 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन नहीं कर पाता. इसे बढ़ाकर 90 प्रतिशत करना चाहिए. हमारी ऊर्जा समस्या का वहीं समाधान हो जाएगा. दूसरी बात जो मुझे नागवार लगती है वह भारत जैसे देश में गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के विभाग के साथ केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय का सौतेले बच्चे जैसा बरताव. हमें वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोतों का विकास कर लेना चाहिए. लेकिन दिक्कत यह है कि बांध के निर्माण में काली कमाई की जा सकती है या दूसरे देशों में बांध बनाने के तरीकों का अध्ययन करने के लिए विदेश का दौरा किया जा सकता है.

• *आपके अनुसार बुनियादी समस्या क्या है?*

मेरा खयाल है समस्या की जड़ है बेतरतीब योजनाएं. हम समूचे देश को अमेठी बनाने पर तुले हैं. मुश्किल यह है कि हम एक कृषिप्रधान देश को उद्योगप्रधान देश बनाना चाहते हैं. और हासिल कुछ भी नहीं होता—न माया, न राम.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj

रहस्यमयी साधिका, जो जासूस बनी

विश्वविख्यात महिला जासूस, "माताहारी" के रहस्यमय जीवन की नये खोजपूर्ण तथ्यों पर आधारित कथा

जनम-जनम का साथ

एक युवती के कई जन्मों की रहस्यमयी कथा

परीक्षा भवन में चिता का रहस्य

परीक्षा भवन में जलाकर मार डाली गई उल्हास नगर की रिकू की कहानी, विवादों और रहस्यों की जाँच-पड़ताल के साथ

स्मृतियों की गंध

निराश प्रेमी द्वारा आत्महत्या के बाद प्रेमिका के पास उसके पति का रूपधारण कर वापस आने की विचित्र कथा

रहस्य-कथा विशेषांक

जीवन के सुलझे-अनसुलझे रहस्यों की ७ कथाएं

आज ही खरीदिये

अन्य आकर्षण

- वह कौन था ?
- मौत के खिलाड़ी
- आविष्कारक की पीड़ा
- लहरों का ध्रुव तारा
- सवालों के बीच

वास्तविक जीवन की सुरुचिपूर्ण कथा पत्रिका

मनोहर कहानियाँ

२० से अधिक सत्यकथाएं तथा लघु कथाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

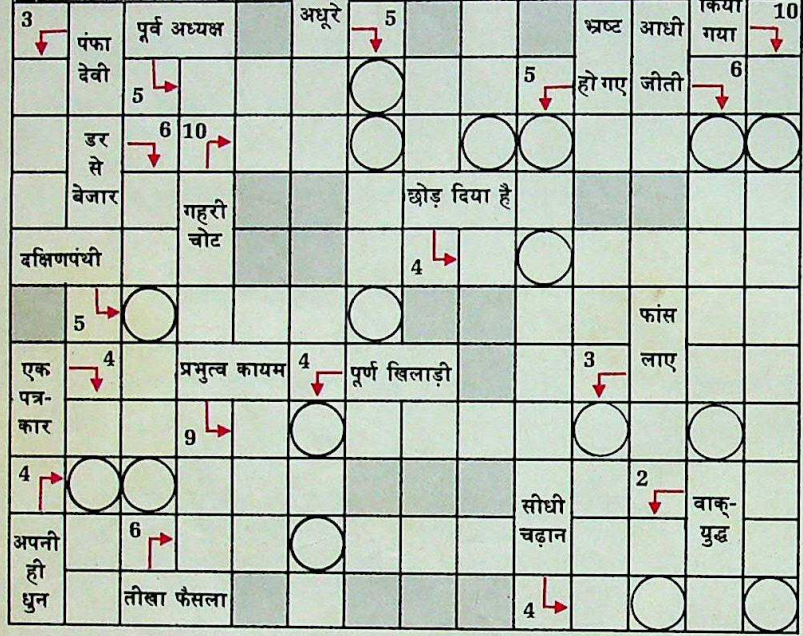

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-8, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि
20 मई 1990

उत्तर के लिए देखें
1-15 जून 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 30 अप्रैल 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

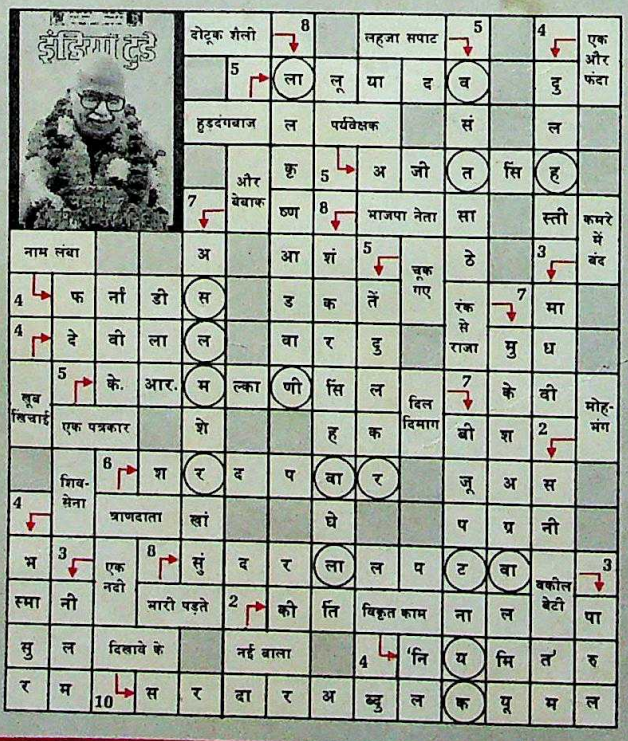

← 'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-6 का हल

पुरस्कार विजेता

चंद्र प्रकाश बुद्धिराजा
'राजू' मंडी गेट,
माल गोदाम रोड,
रोहतक (हरियाणा)
124001

जयकिशन डी टेवाणी
द्वारा, मंगलदास ब्रदर्स
पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर
(राज.) 305001

दीपाली जैन
757 बी, मॉडल कॉलोनी
रानीपुर मोड़, ज्वालापुर
हरिद्वार (उ.प्र.)
249407

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

देखी जात-कुजात

राज्य में अंतरजातीय विवाह करने वालों को नरक की यातना भुगतनी पड़ी

इस देश में जाति प्रथा सदियों से विवाह संबंधों में अड़चनें पैदा करती आई है. लेकिन बिहार में अंतरजातीय विवाह का विरोध इतना प्रबल है कि बंधन तोड़ने की कोशिश करने वाले क्रमोवेश सभी दंपतियों को मर्मांतक अनुभवों से गुजरना पड़ा है. इनके अनुभवों में सामाजिक बहिष्कार तथा मानसिक और शारीरिक यंत्रणा से लेकर हिंसा और कभी-कभी हत्या तक की व्यथा-कथा भी शामिल है.

मिसाल के तौर पर 24 वर्षीय सत्येंद्र सिंह और 21 वर्षीया मीरा कुमारी को ही लें. दोनों ही राजपूत थे लेकिन सत्येंद्र जहां धनबाद जिले के लोयाबाद नामक स्थान के गरीब निवासी थे, वहीं मीरा एक अमीर घराने से ताल्लुक रखती थीं. कोई डेढ़ साल पहले दोनों ने पश्चिम बंगाल के आसनसोल में गुपचुप शादी कर ली. लोयाबाद लौटने पर इस दंपती ने अपने विवाह के बारे में स्थानीय थाने को सूचित कर दिया. और यहीं पर उनकी वैवाहिक खुशियों का अंत हो गया, मीरा को तीन दिन तक थाने में रोके रखा गया और फिर जबरदस्ती मां-बाप के घर भेज दिया गया. सत्येंद्र के नाम एक पत्र में मीरा ने लिखा कि उसके घर पहुंचने पर परिवारवालों ने "बाल्टी भर पानी से मेरे माथे का सिंदूर धो डाला." एक और पत्र में मीरा ने आरोप लगाया कि उसके परिवार ने थाने को रिश्वत के तौर पर 35,000 रु. दिए.

सत्येंद्र ने मीरा के परिवार के खिलाफ मुकदमा दायर किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. इस साल 8 फरवरी को उनकी प्रेम कहानी का दारुण अंत हो गया. पुलिस की छानबीन के अनुसार मीरा के भाई विजय सिंह, अजय सिंह और उनके चार सहयोगी सत्येंद्र को बलपूर्वक एक वीरान जगह पर ले गए. वहां उन्होंने तेज धार वाले किसी हथियार से उसका सिर काट डाला.

सत्येंद्र की मां रानी देवी के अनुसार, "जब मैंने सुना कि मेरे बेटे को घसीटकर ले जाया गया है तो मैं तुरंत थाने गई. लेकिन वहां उपस्थित प्रभारी अधिकारी ने भद्दी जबान में बात की और मुझे बाहर निकलवा दिया. जाहिर है कि वह अपराधियों से मिला हुआ था." इस हत्याकांड के बाद से स्थानीय निवासियों ने थाना प्रभारी योगेंद्र चौधरी के खिलाफ कई बार प्रदर्शन किए. सबसे हैरतअंगेज बात तो यह है कि पुलिस ने मीरा के पिता और भाइयों को एक महीने तक गिरफ्तार ही नहीं किया. हालांकि चौधरी इस हत्या में शामिल रहने की बात से इनकार करते हैं लेकिन विवाह के बारे में उनका दृष्टिकोण बातचीत में उजागर होता है.

नयी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

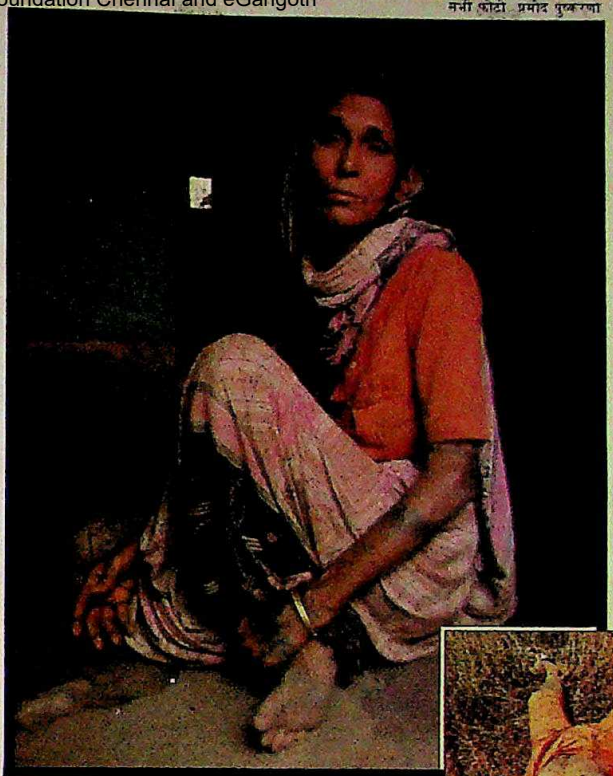

रानी देवी; (इनसेट) सत्येंद्र का शव

"जब मैंने सुना कि मेरे बेटे को घसीटकर ले जाया गया है तो मैं तुरंत थाने गई. लेकिन प्रभारी अधिकारी ने गाली देकर मुझे भगा दिया"

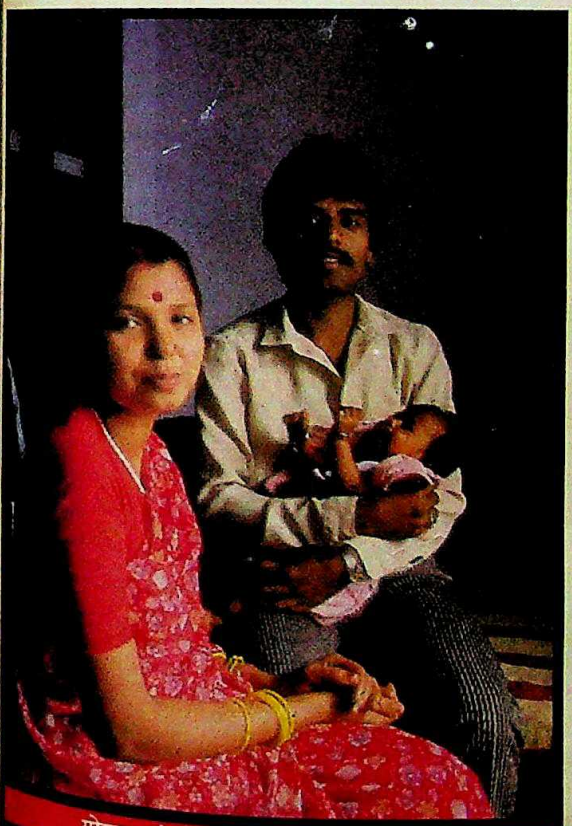

गोकुल और अनीता अपने बेटे के साथ

प्रेम विवाह के बाद ब्राह्मण जाति की अनीता और सूढ़ी जाति के गोकुल को जान से मार देने की धमकी दी गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगेंद्र चौधरी

"मेरा मानना है कि माता-पिता की मर्जी के बिना की गई शादी अवैध है. हमारी संस्कृति तो भारतीय ही है"

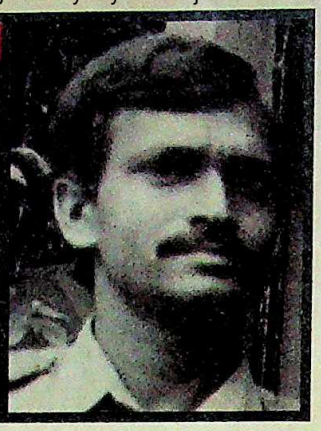

रणधीर वर्मा

"बिहार के लोगों की मनःस्थिति के कारणों को समझना दिल्ली में बैठे लोगों के बस की बात नहीं"

उनके अनुसार, "मैं इस शादी को नहीं मानता. माता-पिता की मर्जी के बिना की गई शादी अवैध है." बहरहाल लड़की तो 18 वर्ष की आयु सीमा पार कर चुकी थी और कानून उसके बाद मर्जी से विवाह करने की अनुमति देता है? नकारात्मक लहजे में चौधरी कहते हैं, "तो क्या? आखिर हमारी संस्कृति तो भारतीय ही है."

धनबाद के पुलिस अधीक्षक रणधीर वर्मा भी चौधरी के रुख को स्वाभाविक मानते हुए कहते हैं, "संबद्ध अधिकारी विशिष्ट परिवेश से आए हैं और उससे उन्हें अलग नहीं किया जा सकता. बिहार में जो कुछ भी होता है उस पर नाराजगी जाहिर करना तो दिल्लीवालों के लिए बहुत आसान है लेकिन यह बात समझ पाना दिल्लीवालों के बस की बात नहीं कि मोतीहारी और चंपारण के लोगों की मनःस्थिति ऐसी क्यों होती है?"

यह बात और भी चौंकाने वाली है कि मीरा की मां रामकुमारी देवी भी अविचलित लगती हैं, "हम अतरजातीय विवाह या अपनी ही जाति में प्रेम विवाह को नहीं मानते. दहेज और लेन-देन के आधार पर होने वाले विवाह को ही हमारे यहां मान्यता दी जाती है."

अगर मुट्ठी भर परिवार अंतरजातीय विवाह के लिए सहमत हो भी जाते हैं तो जाति पर आधारित कई ऐसे संगठन हैं जो अंतरजातीय विवाह संबंधों को गंभीर मुद्दा बना लेते हैं. तकरीबन सभी प्रमुख जातियों का अपना संगठन मौजूद है. इससे एक ऐसा सामाजिक ढांचा खड़ा हो गया है जिसमें शादी का मतलब है एक ही जाति के दो सदस्यों के बीच होने वाला अनुबंध यह किन्हीं दो व्यक्तियों के आजीवन साथ रहने का स्वनिर्णय नहीं बल्कि यह तो एक ऐसा सौदा होता है जहां समान जाति के दो खानदानों के बीच दहेज का लेन-देन मायने रखता है. और जो कोई परंपरा से चली आ रही इस सामाजिक व्यवस्था को तोड़ने का प्रयास करता है, उसे दंड का भागी बनना पड़ता है.

एक और मिसाल 26 वर्षीय गोकुल साव और 21 वर्षीय अनीता पांडेय की ली जा सकती है. इन्होंने 1987 में पटना की एक अदालत में शादी कर ली. लेकिन अनीता ब्राह्मण है और गोकुल एक पिछड़ी जाति सूढ़ी से ताल्लुक रखता है. लिहाजा लड़की वालों को यह बात हजम नहीं हो सकी. अनीता के पिता सिद्धेश्वर नाथ पांडेय पुलिस विभाग में दारोगा हैं. सो, उन्होंने अपने प्रभाव से अनीता को उसके ससुराल से बलपूर्वक निकलवा दिया और फिर सड़क पर ही एक सिपाही ने उसकी पिटाई की. उसके बाद अनीता को पास के शहर आरा में उसके चाचा के घर भेज दिया गया. गोकुल को जान से मार डालने की धमकी दी गई.

अनीता को उसके चाचा ने भी, जो आरा जिले के स्थानीय नेता हैं, शारीरिक यंत्रणाएं दीं. अनीता बताती हैं, "उन लोगों ने कई दिनों तक मुझे भूखा रखा. मेरी दाहिनी बांह तोड़ दी. चेहरे को बदनुमा बना दिया. मेरी दाहिनी आंख फोड़ दी और मेरे पृष्ठभाग में एक इंच का गड्ढा बना डाला. यह सब मेरे माता-पिता की मर्जी से हुआ."

इस बीच हताश गोकुल ने एक मुकदमा दायर कर दिया था. लेकिन अनीता के पिता ने अदालत में इस बात का सर्टिफिकेट पेश कर दिया कि उनकी बेटी की उम्र अभी सिर्फ 17 वर्ष है. इस कारण गोकुल पर नाबालिग लड़की से जबरन विवाह करने का इल्जाम लगाया गया. अदालत ने अनीता को विवादास्पद पटना महिला सुधार गृह के हवाले कर दिया. अनीता के अनुसार, "वहां पहुंचकर मुझे ऐसा लगा कि फिर कभी निकल नहीं सकूंगी. लेकिन मेरे पति की लगन का फल अच्छा निकला."

गोकुल ने अनुमंडल दंडाधिकारी की अदालत के सामने आमरण अनशन करने का निश्चय कर लिया था.

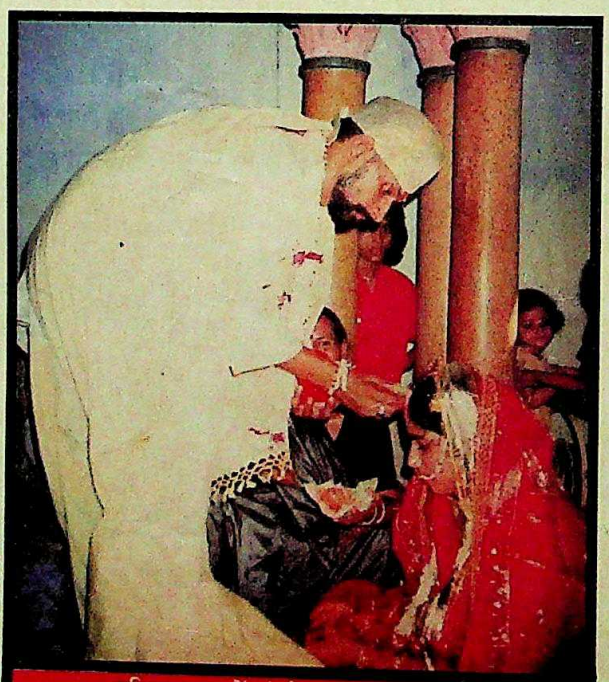

परिणय सूत्र में बंधते राकेश और रश्मि

कायस्थ जाति के राकेश को कुर्मी जाति की रश्मि से शादी करने के पहले हाईकोर्ट में लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

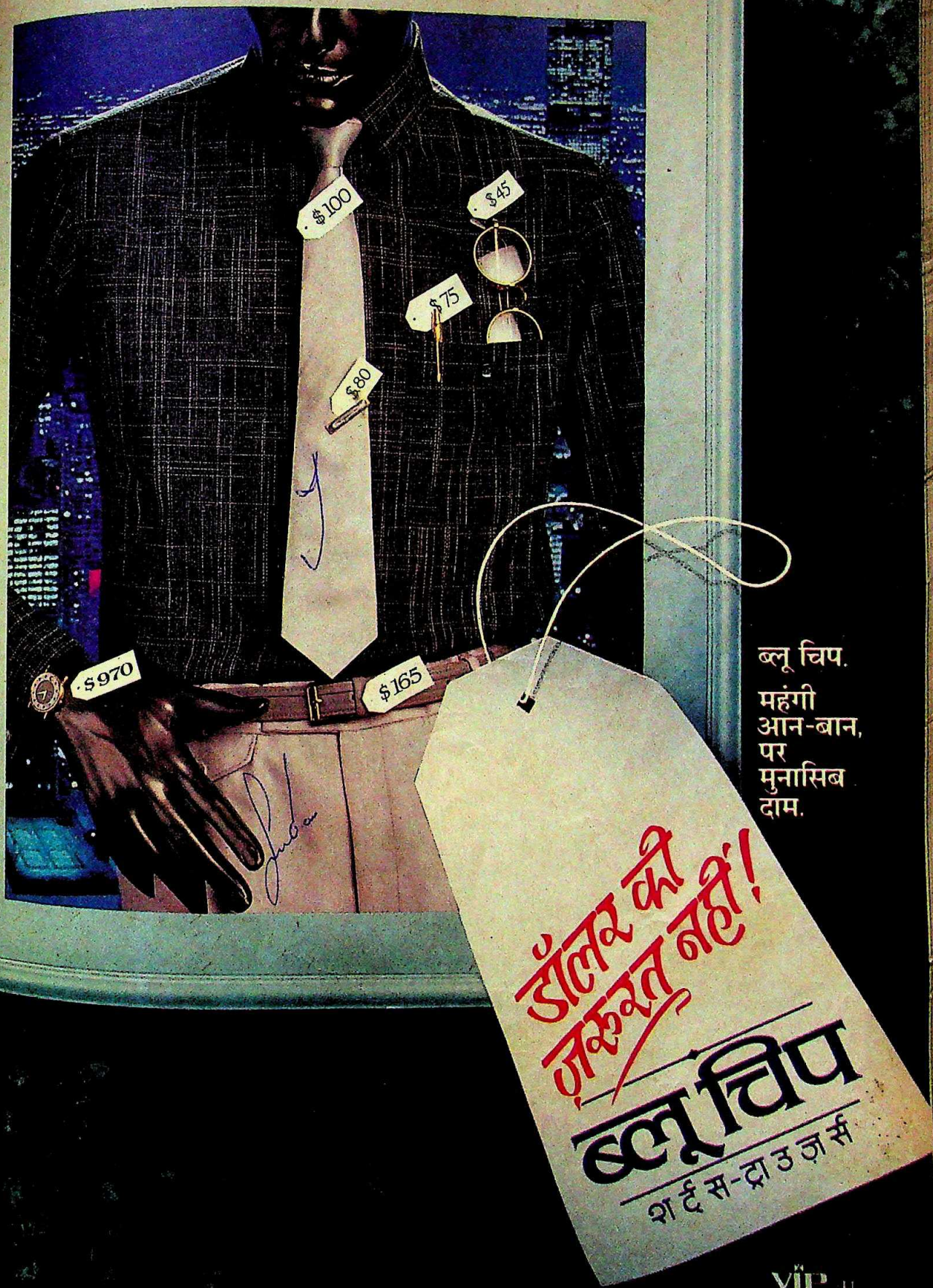

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

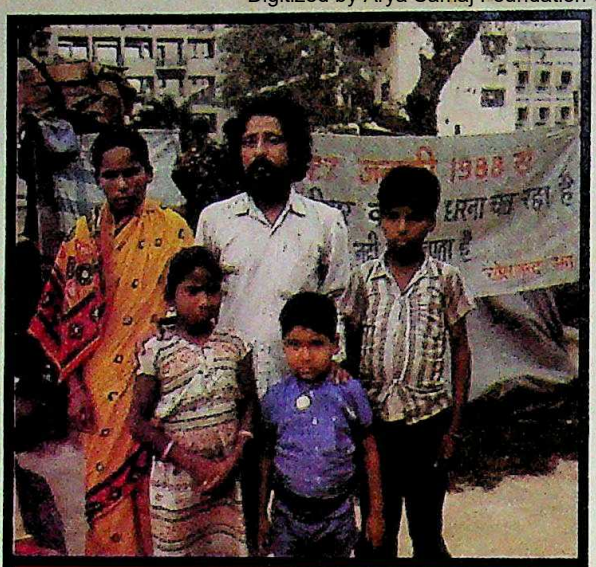

अपने परिवार के साथ खेलानंद झा

ब्राह्मण जाति के खेलानंद झा को हरिजन मिनोती पासवान से शादी करने के 11 साल बाद भी भटकना पड़ रहा है

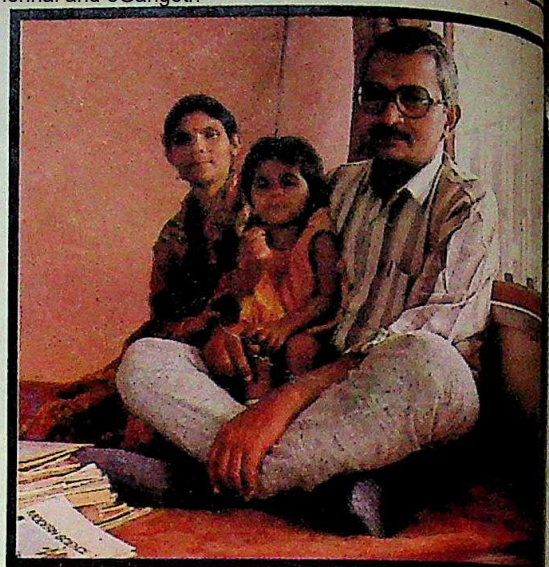

पत्नी और बच्चे के साथ आनंद भारती

कायस्थ जाति की अर्चना से शादी करने से पहले बनिया जाति के आनंद को भारी विरोध का सामना करना पड़ा

घटना का खूब प्रचार हुआ और मुख्यमंत्री ने अनीता को उसके पिता के घर भेजने का आदेश दिया. फिर अनीता ने अदालत को चिट्ठी लिखकर अपनी उम्र की चिकित्सकीय जांच का अनुरोध किया. इस पर सात सदस्यीय मेडिकल बोर्ड का गठन किया गया जिसने उसकी उम्र 18 से 19 के बीच बताई. तब अदालत ने फैसला दिया कि अनीता को पुलिस की सुरक्षा में उसके पति के घर भेज दिया जाए.

लेकिन इस दंपती की समस्याएं तब भी खत्म नहीं हुईं. अनीता के अनुसार, "जब मुझे पुलिस की जीप में पटना महिला सुधार गृह से बाहर लाया जा रहा था, तभी मेरे चाचा के गुंडे गाड़ियों में वहां पहुंच गए और मुझे भगा ले जाने की कोशिश की." अंत में एक स्वैच्छिक संगठन, छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के कुछ सदस्यों ने घटना का रुख मोड़ दिया. वे सड़क पर लेट गए और गुंडों की गाड़ियों को अनीता तक नहीं पहुंचने दिया. तब जाकर अनीता पति तक पहुंच सकी. उसके बाद से अनीता और गोकुल एक साथ हैं और उनका चार महीने का बेटा भी है.

32 वर्षीय राकेश कुमार कायस्थ हैं और कुर्मी लड़की 21 वर्षीया रश्मि सिंह से विवाह करने के लिए उन्हें पटना हाईकोर्ट में लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी. उनके अनुसार, "अंतरजातीय संबंध को रोकने के लिए यह समाज किसी भी हद तक जा सकता है. मुकदमे की सुनवाई के दौरान मामले के गुण-दोष पर विचार करने के बदले एक बार तो न्यायाधीश महोदय ने यहां तक कह डाला कि रश्मि के लिए मेरी भावनाएं प्रेम नहीं बल्कि विशुद्ध वासना हैं."

पटना सेंट्रल से भाजपा के विधायक सुशील कुमार मोदी को यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ कि हाल के विधानसभा चुनाव के दौरान उनके विरोधियों ने उनके अंतरजातीय विवाह को प्रमुख मुद्दा बनाया. मोदी की पत्नी गोवा की ईसाई हैं. बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के अनुसार, "यह समस्या बिहार में जटिल इसलिए है क्योंकि शिक्षा की कमी है और लोगों में जागरूकता भी नहीं. सबसे दुखद पहलू यह है कि पुलिस और प्रशासन अक्सर मिलकर ऊंची जाति वालों की मदद करते हैं और इस तरह ऐसे हर दंपती को सताया जाता है."

31 वर्षीय ब्राह्मण खेलानंद झा के साथ यही हुआ. उन्होंने वर्षीय हरिजन मिनोती देवी से 11 बरस पहले ब्याह रचाया उसके बाद दरभंगा के कमिश्नर दफ्तर में क्लर्क की उनकी नौकरी चली गई और गांव का उनका घर जला दिया गया. तब खेलानंद दिल्ली आकर बोट क्लब पर भूख हड़ताल शुरू कर दी. बिहार तत्कालीन मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी दुबे ने उन्हें मदद देने का वादा किया. लेकिन बिहार लौटकर खेलानंद ने पाया कि उनका घर हवाई था. 1988 में वे फिर दिल्ली चले गए और तब से वे सपरिवार धरने पर हैं. खेलानंद कहते हैं, "राजीव गांधी और वर्तमान केंद्रीय समाज कल्याणमंत्री रामबिलास पासवान समेत लोगों ने कार्रवाई का वादा किया लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ पर मुझे फिर भी उम्मीद है."

किसी भी दूसरी जगह की तरह ही बिहार की शादियों में दहेज की भूमिका अहम होती है. अपनी ही जाति में दोनों परिवारों के आशीर्वाद से होने वाली शादियों में ढेर सारी नकदी और चीजें लड़के वालों को मिल जाती हैं. जैसे 26 वर्षीय सुनील कुमार विश्वकर्मा ने लंबी लड़ाई के बाद बनिया लड़की से शादी की. उनके अनुसार, "जब मेरे माता-पिता को लगा कि उन्हें कोई दहेज नहीं मिलेगा तो वे बुरी तरह निराश हो गए." मजेदार बात यह है कि लड़की वाले भी दहेज का विरोध नहीं करते.

बनिया जाति के 33 वर्षीय आनंद भारती, जिन्होंने भारी विरोध के बावजूद कायस्थ लड़की से विवाह किया, बताते हैं, "बिहार में सामाजिक पहचान के तौर पर जाति व्यवस्था की खुलेआम की जाती है. यहां तक कि मरीज अपनी ही जाति के डॉक्टर से इलाज कराते हैं और प्रोफेसर भी अपनी जाति के छात्र को पीएचडी के लिए चुनते हैं."

ऐसे माहौल में अंतरजातीय विवाह के जरिए जाति प्रथा को तोड़ने की हर कोशिश का विरोध अगर बर्बर और क्रूर लहजे में होता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं.

—शर्मिला चंद्रा, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपर्स

आंख की किरकिरी

वीडियो फिल्मों में छोटे विज्ञापनों का बढ़ता धंधा

पूरा परिवार अमिताभ बच्चन की धमाकेदार ताजा फिल्म देखने के लिए टेलीविजन के सामने जम गया. दुष्टों के साथ अमिताभ की ढिशुम-ढिशुम से ही फिल्म शुरू हुई. पर जननायक की पिटाई शुरू ही हुई थी कि परदे पर एक छोटी-सी बोतल दिखाई दी जो तैरती हुई परदे के निचले हिस्से पर पहुंचकर थम गई. क्या यह कोई नया वीडियो गेम है. नहीं, ये ऊपर से थोपे गए वीडियो विज्ञापन हैं जिन्हें 'सुपर्स' कहा जाता है.

रोज-ब-रोज जैसे-जैसे 'सुपर्स' की संख्या बढ़ रही है, दर्शकों की खीझ इनसे बढ़ती जा रही है, क्योंकि उनका ध्यान परदे पर चल रहे मुख्य दृश्य और विज्ञापन के बीच बंट जाता है. वीडियो के एक शौकीन का कहना है, "जब पूरे परदे पर जुराबों का विज्ञापन घूम रहा हो तो फिल्म पर ध्यान केंद्रित रखना नामुमकिन है." बंबई की एक वीडियो लाइब्रेरी के मालिक आनंद मेहरा कहते हैं, "हर रोज मेरे पास नाराज ग्राहक आते हैं और परदे के निचले हिस्से में होने वाली इस हलचल की शिकायत करते हैं. कुछ ग्राहक तो ऐसे टेप मांगते हैं जिनमें इस तरह के विज्ञापन ही न हों."

पर मेहरा जैसे दुकानदारों के पास इस मर्ज का कोई इलाज़ नहीं है. 'सुपर्स' का धंधा अच्छा चल निकलने की वजह से वीडियो कैसेटों पर जारी होने वाली हर हिंदी फिल्म में ऐसे ढेर सारे विज्ञापन होते हैं. ऐसे विज्ञापन का 80 फीसदी धंधा करने वाली मल्टी-नैशनल एडवर्टाइजिंग ऐंड प्रोडक्शन प्रा. लि. के प्रेम शेट्टी बताते हैं, "पिछले साल वीडियो पर जारी की गई 180 फिल्मों में से 100 पर हमने ये विज्ञापन जारी किए. इस साल तो यह आंकड़ा और भी बढ़ जाने की संभावना है."

यह नया तरीका इसलिए भी चल निकला है क्योंकि यह बहुत आसान और सस्ता है, और इसीलिए तरह-तरह के विज्ञापनदाता इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं. इसके लिए सिर्फ कंप्यूटर ग्राफिक और छोटा-सा ऐसा प्रकरण तैयार करने की जरूरत होती है जो 10-15 सेकंड का हो. इस पर खर्च इतनी ही देर के पूरे विज्ञापन का दसवां हिस्सा ही आता है. और फिर इसे तैयार करने में कुछ ही घंटे लगते हैं. शेट्टी बताते हैं, "कम लागत और काम के जल्द ही पूरे हो जाने से तमाम छोटे विज्ञापनदाता प्रोत्साहित हुए हैं क्योंकि उनके लिए खर्च और दर्शक संख्या का अनुपात काफी महत्वपूर्ण है."

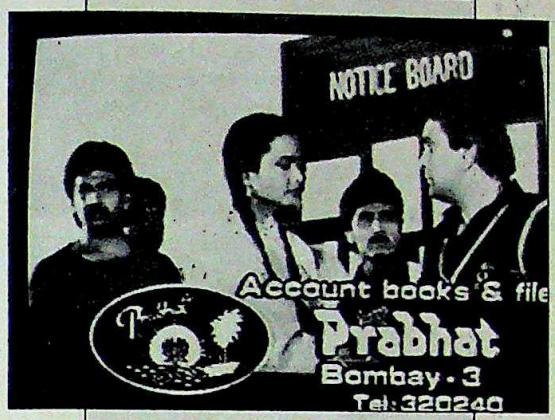

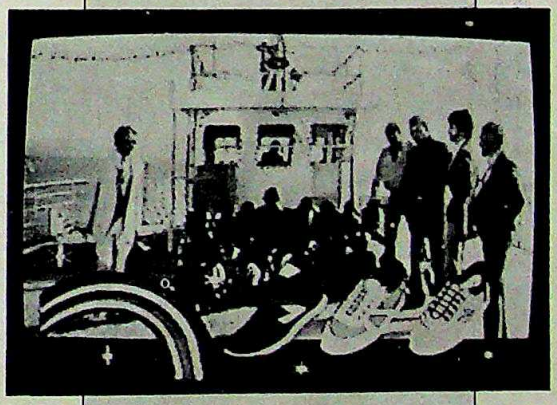

विज्ञापन से पटे फिल्मों के दृश्य

विज्ञापनदाताओं में 'सुपर्स' लोकप्रिय हैं. ये सस्ते हैं और इनमें 'जैपिंग' संभव नहीं

इसका गणित सारी कहानी कह जाता है. सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली हर फिल्म के पहली बार 25,000 वीडियो कैसेट तैयार होते हैं. और वीडियो लाइब्रेरियों में जाने वाले ऐसे हर कैसेट से नकल के औसतन पांच कैसेट तैयार होते हैं. यानी प्रसार संख्या सवा लाख हो जाती है. प्रत्येक कैसेट औसतन 25 घरों में देखा जाता है यानी एक फिल्म 31.25 लाख घरों तक पहुंचती है. इस तरह इसे देखने वाले लोगों की संख्या (प्रति घर चार लोगों के औसत से) 1.25 करोड़ तक होती है.

इस अर्थशास्त्र के अलावा भी दूसरे कई ऐसे कारण हैं जो विज्ञापनदाताओं के लिए 'सुपर्स' को आकर्षक बनाते हैं. मसलन 180 मिनट के वीडियो में यदि फिल्म 160 मिनट की हुई तो विज्ञापनदाता 20 मिनट में ही विज्ञापन भर सकते हैं. लेकिन अगर फिल्म लंबी हुई तो यह समय भी कम हो जाता है. इसका जवाब हैं ये 'सुपर्स'. और जब निर्माता दाम बढ़ा रहे हों तो निर्धारित समय सीमा में ज्यादा विज्ञापनों का जुगाड़ बनाने के लिए 'सुपर्स' से बढ़िया और कोई तरीका नहीं हो सकता है.

'सुपर्स' उन उत्पादकों के लिए भी अच्छा माध्यम है जो कोई नया माल बाजार में उतारना चाहते हैं या किसी पुराने उत्पाद को चर्चित कराना चाहते हैं.

'टाइम' और 'गोल्ड' वीडियो कंपनियों के प्रबंध निदेशक शाह के अनुसार नियमित विज्ञापनों में एक और खामी होती है जिसे 'जैपिंग' कहा जाता है. इसका मतलब यह है कि जब परदे पर विज्ञापन आता है तो दर्शक वीडियो को तेज (फास्ट फारवर्ड) चला देते हैं. शेट्टी कहते हैं, "इंटरमीडिया ने जब 'तूफान' में 'सुपर्स' की शुरुआत की तो यह मान लिया गया कि 'जैपिंग' मुमकिन नहीं है और विज्ञापनदाता को उसके पैसे का पूरा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा फायदा मिलता है."

'सुपर्स' के विज्ञापनदाताओं में प्रतिष्ठित कंपनियों से लेकर साड़ी की दुकान वाले तक शामिल हैं. इनमें सबसे लोकप्रिय उत्पाद हैं—बर्टन सिगरेट, पर्लपेट बोतलें, कमीजें और पतलूनें. 'सुपर्स' की सामान्य दर 5,000 रु. से 8,000 के बीच है.

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो 'सुपर्स' के नैतिक पहलू पर ही सवाल खड़े करते हैं. स्पियर एडवर्टाइजिंग के साजिद पीरभाई पूछते हैं, "आप क्या सोचते हैं कि किसी आदमी पर विज्ञापन थोपना ठीक है?" वे मानते हैं कि इस तरह विज्ञापन थोपकर एजेंसियां सरकार को कानून बनाने के लिए दावत दे रही हैं. वे कहते हैं, "यह वही संकुचित नजरिया है जिसे भारतीय व्यापारी वर्ग नतीजे के बारे में बिना कुछ सोचे-विचारे अपनाता है."

'सुपर्स' की एक और बड़ी खामी है कि उनमें ध्वनि प्रभाव नहीं होता. शेट्टी के अनुसार, "लोग विज्ञापनों के साथ [illegible] गीत-संगीत सुनना चाहते हैं." लेकिन [illegible] खामी से कोई खास फर्क नहीं पड़ता. 'सु[illegible] का हल्का असर भी विज्ञापनदाताओं के [illegible] की भरपाई कर देता है. इसलिए लगता [illegible] कि जब तक सरकार दखल नहीं [illegible] वीडियो के शौकीनों को अपने प्रिय [illegible] हीरोइन के साथ-साथ साबुन या सिगरे[illegible] इन विज्ञापनों को बरदाश्त करते र[illegible] पड़ेगा.

—रघुनंदन [illegible]

विज्ञापन

नगमों के सहारे

इन दिनों 'चित्रहार' के ठीक पहले दिखाए जाने वाले विज्ञापनों की तुकबंदियों को सुनकर ऐसा लगता है गोया ये फिल्मी गाने ही हों. पुराने हिंदी फिल्मी गाने अभी भी कितने लोकप्रिय हैं, इसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि विज्ञापन एजेंसियां जूतों, साबुनों, अंडों, चॉकलेट और दूध जैसे उत्पादों को बेचने के लिए इन्हीं गानों की तर्ज पर नई-नई तुकबंदियां कर रही हैं. त्रिकाया-ग्रे के सह-सृजनात्मक निदेशक आलोक नंदा कहते हैं, "यदि कोई गाना चल निकले तो विज्ञापनदाता के लिए लोगों का ध्यान खींचना आसान हो जाता है."

नेशनल एग्स कोआर्डिनेशन कमेटी (एनईसीसी) के विज्ञापन को पुरस्कार मिलने के बाद पुराने हिंदी फिल्मी गानों के प्रति विज्ञापनदाताओं का रुझान एकदम बढ़ गया. इस विज्ञापन में 'संडे के संडे' की तर्ज पर तुकबंदी कर दर्शकों को 'मुर्गी के अंडे' खाने की सलाह दी गई थी. विज्ञापन एजेंसी एंटरप्राइज द्वारा तैयार एनईसीसी का यह अभियान बेहद कामयाब रहा. इससे प्रोत्साहित होकर इस विज्ञापन एजेंसी ने विजिल साबुन के लिए भी इसी तरह का विज्ञापन बनाया. इसमें क्रिकेट खिलाड़ी दिलीप वेंगसरकर बाथटब में 'विजिल' से नहाते हैं और पृष्ठभूमि से 'इक प्यार का नगमा है' की तर्ज पर 'तंदुरुस्ती का साबुन' बजता है. एंटरप्राइज के प्रमुख मुहम्मद खां बताते हैं, "तुकबंदी का मुख्य मकसद अपने उत्पाद को लोगों के दिलो-दिमाग में बैठाना है."

यहां तक कि कॅडबरीज की नई चॉकलेट 'ट्विस्ट' भी 'भूत बंगला' की तर्ज पर बनाई गई तुकबंदी 'आओ ट्विस्ट करें' के जरिए बेची जाएगी. और लखानी 'मेरा जूता है जापानी' की मदद से अपने जूते बेचेंगे. बात यहीं खत्म नहीं हो जाती. बिनीज का बेहद सफल विज्ञापन 'हमको बिनीज मांगता' मिठुन चक्रवर्ती की फिल्म 'जीते है शान से' के एक गाने पर आधारित है. लखानी अपनी हवाई चप्पलों के लिए 'मि. इंडिया' के 'हवा हवाई' गाने का इस्तेमाल कर रहे हैं.

व्हील डिटर्जेंट 'एन इवनिंग इन पेरिस' के 'ऐसा मौका फिर कहां मिलेगा' गाने की तर्ज पर की गई तुकबंदी 'देखो देखो देखो' से लोगों को लुभा रहा है. टाटा अपना नारियल केश तेल बेचने के लिए राजेश खन्ना की फिल्म 'दो रास्ते' के 'ये रेशमी जुल्फें, ये शरबती आंखें', और उषा अपने पंखों के लिए 'ठंडी हवाएं, लहरा के आएं' का इस्तेमाल कर रहे हैं.

लेकिन नंदा चेतावनी भी देते हैं, "तुकबंदी लोगों को प्रभावित तभी करेगी जब वह उत्पाद की छवि से एकदम मेल खाती हो. आप उसका उलटा-सीधा इस्तेमाल नहीं कर सकते." आज आलम यह है कि पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले विज्ञापनों में भी तुकबंदी का धड़ल्ले से इस्तेमाल किया जा रहा है. मसलन, सईद जाफरी 'आज पहली तारीख है,' 'हवा हवा' और "ए जी ओ जी' जैसे लोकप्रिय गानों की तर्ज पर बनाए गए आकर्षक शीर्षकों के साथ प्रुडेंट टूथपेस्ट का विज्ञापन करते हैं.

लेकिन इस नए रुझान से हर कोई खुश नहीं है. रीडिफ्यूजन के कमलेश पांडेय कहते हैं, "सुस्त और सामान्य रचनाकारों का काम आसान बनाने के लिए ही हिंदी गानों का इस्तेमाल किया जाता है." उनका यह भी कहना है कि अंडों के विज्ञापन की तरह पूर्ण विज्ञापन बनाने में कोई बुराई नहीं है. नंदा कुछ विज्ञापनों का बचाव भी करते हैं, "तुकबंदियों से विज्ञापन उपभोक्ताओं के दिमाग में पैठ जाते हैं. फिल्मी गाने इसमें बहुत सहायक होते हैं. अपने विज्ञापन को विशिष्ट दिखाने के लिए उसमें गाने जोड़कर पेश करने में कोई बुराई नहीं है."

विज्ञापनों ने अभी पॉप संगीत का सहारा नहीं लिया है, फिर भी वे आज के फिल्मी गानों की बनिस्बत कहीं ज्यादा गुनगुनाए जाते हैं. यह कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है.

—सलिल त्रिपाठी

कार्टून: [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Chennai and eGangotri

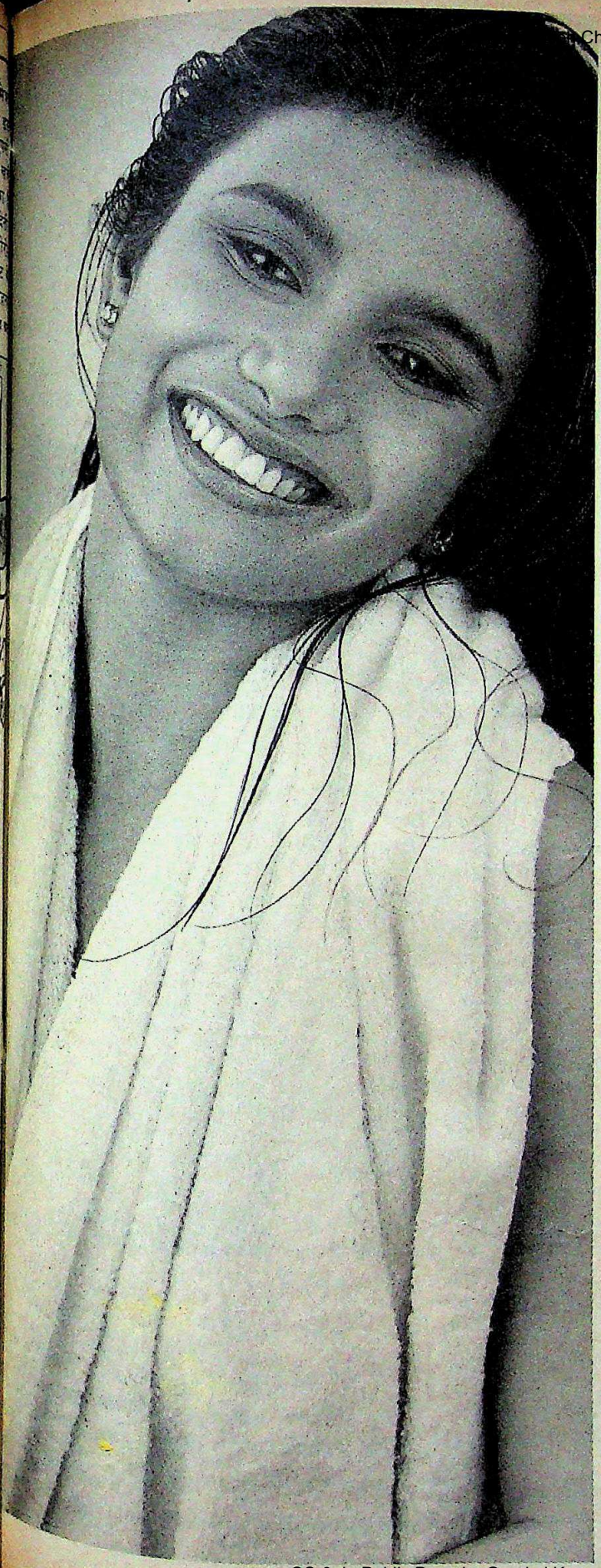

नीको वह कर दिखाता है जिसके बारे में बाकी साबुन बोलने से भी कतराते हैं

नीको में है टी सी सी, जो नहाने के बाद आपके शरीर पर एक अनोखी सुरक्षित परत बन कर छा जाती है.

नीको अधिक तेलों को धो डालता है ताकि मुँहासें पैदा ही न हों.

नीको शरीर की दुर्गंध को दूर करता है, ताकि आप सबके बीच पूरे आत्मविश्वास से उठें-बैठें.

नीको उन कीटाणुओं को हटाता है, जो त्वचा में इन्फेक्शन पैदा करते हैं.

नीको धूल और अन्य पदार्थ हटाता है, ताकि त्वचा पर झाइयाँ न हों.

नीको से नहाइये, लोग आपकी त्वचा के बारे में बोलते नहीं थकेंगे.

नीको®

आपकी त्वचा का रखवाला साबुन.

PARKE-DAVIS

पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड, साकी नाका,
बम्बई-४०० ०७२.
® पार्क-डेविस एंड कंपनी, यू.एस.ए. का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क
लाइसेंस उपयोगकर्ता:
पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Contract.PD.85.89.Hn

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमेशचंद्र शाह

किस्सा मालगांव का

'गोबर गणेश', 'किस्सा गुलाम' और 'पूर्वापर' जैसे उपन्यासों और 'जंगल में आग' तथा 'मुहल्ले का रावण' जैसे कहानी संग्रहों के रचनाकार रमेशचंद्र शाह ने कविता, निबंध, और आलोचना के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई है. प्रस्तुत है उनकी नई कहानी:

दर्शनशास्त्री प्रोफेसर नाथ को भला कौन नहीं जानता. किंतु जब कोई जानते-बूझते अनजान और अनाम बन जाने पर ही तुल जाए तो इसमें कोई क्या कर सकता है. बरसों देश और विदेश में उन्होंने धूम मचाई है. हैदराबाद में भी—जहां वे प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष थे, उनके कद्रदानों की कमी नहीं. मगर एकाएक उन्हें जाने क्या सूझी, वक्त से पहले ही रिटायरमेंट ले लिया और वापस अपने गांव लौट जाने और वहीं रहने की ठान ली. बात कुल मिलाकर बस इतनी ही है कि एक दिन सुबह उठते ही प्रोफेसर नाथ को यह इलहाम हुआ कि वे सारी उम्र झख मारते रहे हैं. दर्शन की दर्जनों समस्याएं उन्होंने अपनी समझ से सुलझाई. मगर अपने जीवन की समस्या पर ध्यान ही नहीं दिया. क्या फायदा इस सारी ज्ञान-मीमांसा का, यदि आत्मज्ञान ही नहीं हुआ? एकाएक अपनी सारी उपलब्धियों को लेकर एक गहरी ग्लानि ने उन्हें धर दबोचा. उन्होंने अपने सारे प्रमाणपत्र—यहां तक कि सारी पांडुलिपियां तक आग में झोंक दीं और एक सूटकेस में महज कामचलाऊ कपड़े ठूंसकर मालगांव की गाड़ी पकड़ ली. किताब के नाम पर बस एक 'पातंजलि योगसूत्र' को छोड़कर कुछ भी अपने साथ नहीं रखा.

प्रोफेसर नाथ अपने तीन भाइयों में सबसे बड़े हैं. मंझला मिलिटरी में भरती हो गया था और अभी दो बरस हुए, अपनी सिपाहीगिरी से छुट्टी पाकर घर लौट आया है. छोटे की एक छोटी-सी दुकान है चाय-वाय की—उसी में मंझला भी खप गया है. उसके हाथ में हुनर है: तरह-तरह के अचार-मुरब्बे बनाने में उसे महारत हासिल है. नाथ लोगों के पास कभी गुजारे लायक जमीन थी. नाथ की पढ़ाई की खातिर नाथ के पिता को उसे गिरवी रख देना पड़ा था. छोटे के बस का तो था नहीं उसे छुड़वाना. मगर हवलदार मंझले ने उसे छुड़ा-कर ही छोड़ा और काफी-कुछ बढ़ाकर भी. मंझले की दूरदर्शिता अब रंग ला रही थी. इतनी साग-सब्जी हो जाती थी कि घर के बाद दुकान पर भी बिकने पहुंच जाती थी. यह पुरखों का घर भी मंझले के पराक्रम से ही तिमंजिला हुआ है. प्रोफेसर नाथ को मगर अपनी वही पुरानी कोठरी पसंद है जिसमें उनका पूरा बचपन बीता था. भाइयों को उन्होंने साफ हिदायत कर रखी थी कि चाहे जो हो मेरी कोठरी ज्यों की त्यों रहनी चाहिए. मुझे कच्चा फर्श ही भाता है. मैं अपने आखिरी दिन, हो सकता है, वहीं, उसी कोठरी में बिताने आऊं.

बड़े भाई का यह विचार छोटे को बिलकुल नहीं जमा था क्योंकि वह उनके साथ काफी रह चुका था और उनके ठाठबाट देख चुका था. बरसों में कभी-कभार दर्शन देने वाले सैलानी साहब को दो एक दिन जैसे मकई और मुडवे की रोटी भी स्वादिष्ट लग जाती है, उसी तरह गोबर की गंध भी सुहा सकती है. मगर सचमुच रहना पड़ जाए तो बिलकुल चलेगा नहीं, ऐसी छोटू की मान्यता थी. मगर मंझले ने उसे घुड़क दिया था—"तू चुप रौ. तेरा क्या जाता है! भाई साहब कौन यहां सचमुच में रहने आने वाले हैं..." मंझला गोपू बड़े भाई का भक्त था. अब भक्त तो यों छोटे लाल भी कम नहीं थे. मगर छोटे होने के कारण ही थोड़ा मुंह लगे हुए थे. लड़ियाते-लड़ियाते कभी-कभी 'आप' से 'तू' पर आ जाते थे. प्रोफेसर नाथ को इसमें मजा ही आता था.

मालगांव की पहली रात करवट बदलते ही बीती. लगता था, रोम-रोम में पिनें चुभी हैं. खुजलाते-खुजलाते बुरा हाल था. मुंह अंधेरे ही नींद टूट गई. घड़ी देखी. साढ़े पांच बजे थे. घर में कहीं कोई आहट न थी. प्रोफेसर नाथ उठ बैठे. उजाला हो गया था फिर भी टार्च जलाकर देखा—रणभूमि की तरह रक्तरंजित अपनी हैदराबादी सफेद चादर को देखकर प्रोफेसर नाथ सिहर उठे. 'हे भगवान! इस कोठरी में ध्यान कैसे होगा?' एक गिलास ठंडा पानी अपने पेट में उड़ेलकर वे सीढ़ी से नीचे उतरे. रसोईघर के किवाड़ भीतर से बंद थे. अब क्या होगा? अपने ही घर में सेंध लगाने आए हों, इस तरह उन्होंने घुसने की हर संभव तरकीब आजमाई. कोई सुराग न पाकर कुढ़ते हुए वापस कोठरी में दाखिल हुए और सोचने लगे.

शराब छूटी, सिगरेट छूटी, किस्सा छूट गई. मगर 'बेड टी' की तलब नहीं. वे कहना भूल गए थे भाइयों से कि तड़के सुबह चाय चाहिए. मगर...इस

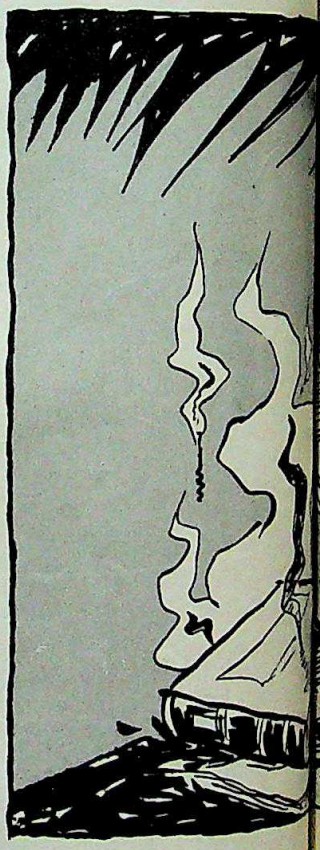

एक सुबह प्रोफेसर को यह इलहाम हुआ कि वे सारी उम्र झख मारते रहे हैं.... एक गहरी ग्लानि ने उन्हें धर दबोचा. उन्होंने सारे प्रमाणपत्र—यहां तक कि सारी पांडुलिपियां तक में झोंक दीं और एक सूटकेस लेकर मालगांव की गाड़ी पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना तो पता होना ही चाहिए था. भला सोच सकते थे वे, कि छै-छै बजे तक भी पर की नींद नहीं टूटती. ये बहुएं हैं कि हैं.

प्रोफेसर नाथ चटाई पर पालथी मारकर है. 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध' मगर चित्त है बरबी घोड़े की तरह बेतहाशा भाग रहा हारकर प्रोफेसर ने भी लगाम ढीली छोड़

"दीनू! दूध पी ले"—मां पुकार रही दीनू उगते हुए सूरज को एकटक निहारता की पर खड़ा है. रोज देखता है. फिर भी रोज नया लगता है.

ना चार बजे उठ जाती थी. तभी तो अब नहा-धोकर पूजा के कमरे में पैठती थी घंटी बजाती थी, दीना की भी सुबह हो थी. देवताओं के जग जाने के बाद भी कोई सोता है....

कटेगी? खटमलों का इलाज सबसे पहले करना होगा. कैसा अपशकुन है यह! योग-मार्ग में विघ्न तो खैर, होते ही हैं. पर इस विघ्न की कल्पना उन्हें पहले से क्यों नहीं हो गई भला?

वे मन मारे उसी तरह बैठे रहे. चाय बस अब आती ही होगी. काहे को अपनी उतावली जाहिर की जाए. बच्चों की प्रभाती शुरू हो गई है. जरूर कोई पिटा है. अजीब असभ्य लोग हैं. सुबह-सुबह बच्चों की पिटाई.

सकता है...कितना अच्छा है कि घर में एक फर्लांग चलते ही खासा जंगल शुरू हो जाता है. सैर के सिवा और रखा ही क्या है इस मालगांव में.

ध्यान भी, लगता है, अब जंगल में ही करना पड़ेगा. परेशानी सिर्फ इतनी ही, कि उसके लिए काफी दूर भटकना पड़ेगा. पास के जंगल में तो, लगता है, इसकी कोई गुंजाइश ही नहीं है. जहां-तहां उकड़ूं बैठे लोग!... प्रोफेसर को उम्मीद नहीं कि इन पचीस

बरसों में कभी-कभार दर्शन देने वाले सैलानी साहब को दो एक दिन जैसे मकई और मुड़वे की रोटी भी स्वादिष्ट लग जाती है, उसी तरह गोबर की गंध भी सुहा सकती है. मगर सचमुच गांव में रहना पड़ जाए तो बिलकुल चलेगा नहीं

सभी रेखाचित्र जयंतो

बरसों में कम से कम इस एक मामले में भी कोई बड़ा फर्क पड़ा होगा.

मंझली बहू कोठरी लीप रही है. प्रोफेसर नाथ की चारपाई नीचे आंगन में औंधे मुंह पड़ी खौलते पानी से नहा रही है. तीनेक दिन वह वहीं पड़ी धूप सेंकेगी. तब तक प्रोफेसर नाथ धरा-शायी ही रहेंगे. गद्दा, रजाई, कंबल सब विदा ले चुके हैं कोठरी से. खादी भंडार से नया गद्दा और रजाई आ गई है. अभी तीनेक दिन कोठरी में केवल हवन-सामग्री जाएगी.

नए सीमेंट के फर्श पर नींद तो आ जाती है. मगर खुजली बनी रहती है. यह ठीक है कि खटमल अब उस तरह दिखाई नहीं देते; मगर उप्पन—यानी, खट-मलों के काफी सूक्ष्म और लगभग अदृश्य संस्करण तो होंगे ही. वरना इस सनातनी खाज का भला और क्या रहस्य हो सकता है.

नीचे कुछ खटर-पटर सुनाई दे रही है. मर का ध्यान टूट गया है. शायद अब गी चाय. मां के जमाने में और अब के में शायद फर्क पड़ गया है. तब साढ़े र बजे सूरज उगता था. अब सात बजे ता है. चलो, सात बजे ही सही. कल से देंगे—रसोईघर बंद न किया करें. वे खुद ी चाय बना लेते हैं.

मगर...यह कोठरी! ...इसमें रात कैसे

प्रोफेसर नाथ के धीरज का बांध टूट गया. वे उठे और सीढ़ियों से ही चिल्लाए—"क्यों रे! अभी चाय नहीं बनी?"

बेचारी बहुओं को क्या पता, जेठ जी बिना मुंह हाथ धोए बिस्तर पर ही चाय गटकते होंगे...सो, चाय आते-आते और नाथ के पेट में पहुंचते-पहुंचते आठ तो बजने ही थे. ऐसे में मूड खराब न हो, तो क्या हो. प्रोफेसर की चाल देखकर कोई भी उनके मूड को भांप

हफ्ते भर बाद चारपाई फिर से कोठरी में आ समाई. मगर दूसरे ही दिन उसी कारण से फिर नीचे पटक दी गई. भाई लोग समझा-समझा के हार गए. प्रोफेसर नाथ से कोठरी नहीं छूटेगी, नहीं छूटेगी.

"भाई साहब बहुत जिद्दी हैं"—अचानक यह वाक्य एक दिन शाम की सैर से लौटते हुए कानों से आ टकराया तो प्रोफेसर को मजा आ गया. दमयंती भी तो यही कहती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलो, कोई तो ऐसी जगह है जहां पत्नी और भाई एक हैं. दमयंती तो यह भी कहती थी कि....एकांतवास के लिए उतनी दूर जाना क्यों जरूरी है. अपने डीएफओ लड़के से कह के चाहे जिस जंगल का डाकबंगला रिजर्व करा सकते हो...अरे भई, डाकबंगला ले के मुझे क्या किस्से-कहानी लिखना है? और फिर जन्मभूमि आखिर जन्मभूमि है, डाकबंगला आखिर डाकबंगला ही है. आध्यात्मिक एकांतवास के लिए आदमी को अपनी जन्मभूमि में ही जगह मिल जाए, तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है.

मालगांव में आए प्रोफेसर नाथ को सात-आठ दिन तो हो ही गए होंगे. दिन भर जंगल में बिताने के बाद वे एक शाम लौटकर अपनी कोठरी में दाखिल हुए तो उन्हें अचानक एक बड़ा तरावट भरा खयाल आया और वे मन ही मन मुस्कराए. अपने भीतर इस अचानक उभर आई दुर्बलता पर उन्हें जाने क्यों एक करुणा सी महसूस हुई. वे इतने आगे बढ़ चुके हैं, इतने ऊपर उठ चुके हैं कि कोई प्रलोभन उन्हें नहीं डिगा सकता. तब फिर इसी को इतना महत्व भी क्यो दें? थोड़ी ढील भी कभी-कभी देनी चाहिए इस शरीर को—कम से कम यही भरोसा पक्का करने के लिए, कि वह सर्वथा अपने नियंत्रण में है.

मुस्कराते हुए प्रोफेसर नाथ ने अपना सूटकेस खोला ही था कि उन्हें अपने पीछे कुछ आहट सी महसूस हुई. देखा, दरवाजे पर मंझला खड़ा है—अजीब दुविधा में टंगा सा और हाथ पीछे बांधे. "क्यों? क्या है गोपू?" उन्होंने सूटकेस का ढक्कन फिर से बंद करते हुए कहा—"आ बैठ. तुझे पता है, गोपू, मैं आज ऊपर चोटी तक चला गया था. देवी के थान में क्या आजकल पुजारी-वुजारी कोई नहीं रहता? मुझे तो वहां बैठे-बैठे ऐसी समाधि लग गई कि घंटों बीत गए, कुछ होश ही नहीं रहा."

मंझला उसी तरह टंगा रहा. उसके भाव-हीन चेहरे को देखकर प्रोफेसर को अपनी मुखरता पर ग्लानि सी हुई. क्या जरूरत थी यह सब बताने की.

"क्या बात है गोपू? खड़ा क्यों है? बैठता क्यों नहीं?"

गोपू हिचकिचाते हुए एक कदम आगे बढ़ा. "मैंने सोचा, पता नहीं..." और उसने एकाएक हाथ आगे बढ़ाकर प्रोफेसर के सामने कर दिया. प्रोफेसर हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए... "ये क्या है?...क्यों लाया ये?...तू पीता है?"

कहने के साथ ही प्रोफेसर को ध्यान आया कि अरे, गोपू तो ठहरा मिलिटरी का आदमी. पीता ही होगा. इसमें इतनी चीख-चिल्लाहट मचाने की क्या बात है? मगर उन्हें तो यहां आए हफ्ता भर हो गया. क्यों नहीं यह उन्हें पहले कभी सूझी होगी कि उनके घर का शराब जैसी चीज से भी कोई देना हो सकता है?

"छोटू ने बताया था आपको शौक गोपू अटकते-अटकते बोल रहा था. "मैंने कैंटीन से ला के रख रखी थी साहब, सिक्किम की 'रम' है. बहुत मुश्किल मिलती है."

प्रोफेसर नाथ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो मिलिटरीवाले पीते ही हैं इसमें इतने की बात ही क्या है. गोपू वैसे कितना है. मगर...इसका मतलब...इस घर आए दिन शराब उड़ती होगी. सामने पर टंगे मां के चित्र की ओर बरबस उनकी आंखें उठ गई. उनका मन अजीब हो आया. देवता की उन्हें पूजने वाला मंझला शराब की बोतल इस थमा रहा है मानो वह की बोतल हो. उन्हें छोटू बेहद गुस्सा आया. छोटू ने बताया तो गलत तो नहीं उसे क्या मालूम साहब कहां से कहां गए हैं.

"इसे ले जा गोपू अपने स्वर को भरसक यम बनाने की कोशिश नाथ ने—"ऐसा है भई मैं कभी पीता था जरूर अब नहीं पीता. हफ्ते तो यहां तू ही देख मुझे. एक सिगरेट तक मैंने?"

गोपू खिसियाया बोतल उसी तरह थामे पीछे बांधे मुड़ा और से बाहर खिसकने

डाकबंगला ले के मुझे क्या किस्से-कहानी लिखना है? और फिर जन्मभूमि आखिर जन्मभूमि है, डाकबंगला आखिर डाकबंगला ही है. आध्यात्मिक एकांतवास के लिए आदमी को अपनी जन्मभूमि में ही जगह मिल जाए तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है

अचानक उसे सुनाई दिया—"अरे! तू गोपू!"...वह उसी तरह लौटकर रुक आर-पार तस्वीर की तरह जड़ गया. लिए एक चीज लाया था. भूल ही गया तुझे. छोटू को मत दिखाना हां. चुपचाप में पीना—" सूटकेस से निकालकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन भर जंगल में बिताने के बाद प्रोफेसर एक शाम लौटकर अपनी कोठरी में दाखिल हुए तो उन्हें अचानक एक बड़ा तरावट का खयाल आया और वे मन ही मन मुस्कराए. अपने भीतर अचानक उभर आई दुर्बलता पर उन्हें करुणा-सी महसूस हुई

...की बोतल गोपू की ओर बढ़ाते हुए ...नाथ ने कहा. गोपू भौंचक्का सा कभी ...साहब के मुंह को और कभी बोतल को ...रहा.

...प्रोफेसर नाथ को गोपू की हैरानी पर जोर ...हंसी आ गई. "अब शरमा क्यों रहा है? ...बताया था, तू पीता है. मिलिटरी मैन ठैरा ...तेरी सिक्किम की रम भी इसके सामने ...नहीं. साम तेरे ही लिए ...दिया इसे. मगर...सच- ...तू क्या रोज चढ़ाता ...ये तो कोई अच्छी ...नहीं."

...गोपू के चेहरे पर पहली ...एक मुस्कराहट सी ...और तत्काल विलीन ...गई. "नहीं, रोज तो कहां ...पाती है भाई साहब. समझ ...लिए. मुश्किल से सात ...दिन में एक बार."

...तब ठीक है"— ...प्रसन्न होकर नाथ ने ...इतना तो...कोई हर्ज ...एकदम से छोड़ देना ...तो आसान नहीं. ..." वे एक क्षण ...—उसके चेहरे को ...में फिर हौले से फुस- ...—"ये छोटू तो नहीं ...ना?"

...गोपू ने सिर हिला दिया. ...सच बता मुझे. झूठ ...बोलना"—प्रोफेसर ने फिर थोड़ी सख्ती ...गोपू से पूछा.

...कभी-कभी वो भी चख लेता है भाई- ...—गोपू उसी तरह सिर नीचा किए ...बोला. "यहां तो आग लगी हुई है. ...अब वो मालगांव नहीं रहा भइया? ...के नाम से एक दवाई यहां फैली है. घर ...में उसी का चलन है. जमाना बहुत बदल ...है भइया."

...है!"—प्रोफेसर नाथ भाई की ओर पीठ ...खिड़की पर खड़े हो गए. "अच्छा, ठीक ...जा. और हां, इसे छुपाके ले जा. वो ...रखा है, उसी में डाल ले जा. छोटू को ...दिखाना."

...गोपू ने उस वक्त तो बड़ी समझदारी से सिर हिला दिया. मगर शायद, अपने कमरे में घुसके उसने ज्योंही स्कॉच की बोतल खोली होगी, त्यों ही उसकी गंध छोटू तक भी पहुंच ही गई होगी. इसीलिए तो आनन-फानन वह भी दुकान बढ़ाकर मंझले के पास प्रसाद पाने पहुंच गया.

प्रोफेसर नाथ का मन खट्टा तो हो ही चुका था. ध्यान में बैठे-बैठे गांव की रात के सन्नाटे में उन्हें लगा, ये घर की दीवारें कुछ ज्यादा ही फुसफुसा रही हैं. देखते ही देखते वह फुसफुसाहट बड़बड़ाहट में और बड़बड़ाहट चीख-चिल्लाहट में बदल गई. त्रस्त होकर उन्होंने सीढ़िया पार करके ऊपर पांव रखा ही था कि देखा वहां तिमंजिले की बैठक में बाकायदा अंगद-रावण संवाद चल रहा है. स्पष्ट था कि स्कॉच अब तक अपना रंग जमा चुकी है.

प्रोफेसर नाथ हतबुद्धि और अवाक वहीं सीढ़ियों के अंधेरे में खड़े-खड़े यह लीला देखते रहे. फिर वे उतरे और फटाफट नीचे रसोई घर के सामने खड़े हो गए. उन्हें देखते ही दोनों बहुओं ने अपने घूंघट तान लिए. "यह क्या तमाशा है?"—प्रोफेसर नाथ चीखे—"तुम लोग कुछ कहती नहीं हो? समझती नहीं हो?" बहुएं चुपचाप खड़ी रहीं. "रोज होता है यह कांड?"...बहुएं कुछ और सिमट गई. "अरे, गूंगी हो गई हो क्या! मुझसे पर्दा करने की कोई जरूरत नहीं. सुन रही हो?" बहुओं ने सुना तो होगा मगर इसका प्रमाण कैसे दें? जेठ जी के सामने मुंह खोलें भी तो कैसे?

निराश होकर प्रोफेसर ने बच्चा पार्टी को पकड़ा और चांदनी रात में फिर से सड़क पर निकल आए. बच्चा पार्टी ने उनकी सारी शंकाओं का समाधान कर दिया.

लौटकर प्रोफेसर नाथ ने एक लंबा पत्र दमयंती को लिखा. फिर जाने क्या सोचकर उसे फाड़कर फेंक दिया और गिने-चुने वाक्यों से काम चलाते हुए बस इतना ही लिखकर पोस्ट कर दिया कि यहां उनका मन तो खूब लग रहा है मगर वे फिलहाल वापस लौट रहे हैं. क्योंकि...और तो सब ठीक है; मगर ठंड कुछ ज्यादा है.

अगर दमयंती साथ दे तो वे दोनों गरमी-बरसात मालगांव में और जाड़ा वहीं हैदराबाद में बिताने का पक्का प्रबंध करें. और, हां दमयंती का कहना ठीक था: उन लोगों का अपना ढंग है जिसमें अपना भले ही खपना चाहे; मगर उन लोगों को तो असुविधा हो ही सकती है; होती ही है. इससे तो...अलग अपनी कुटिया क्यों न बना लें! आखिर अलग रहकर भी प्रेमभाव बना रह सकता है. घिच-पिच करके क्या फायदा! रहेंगे तो मालगांव में ही.

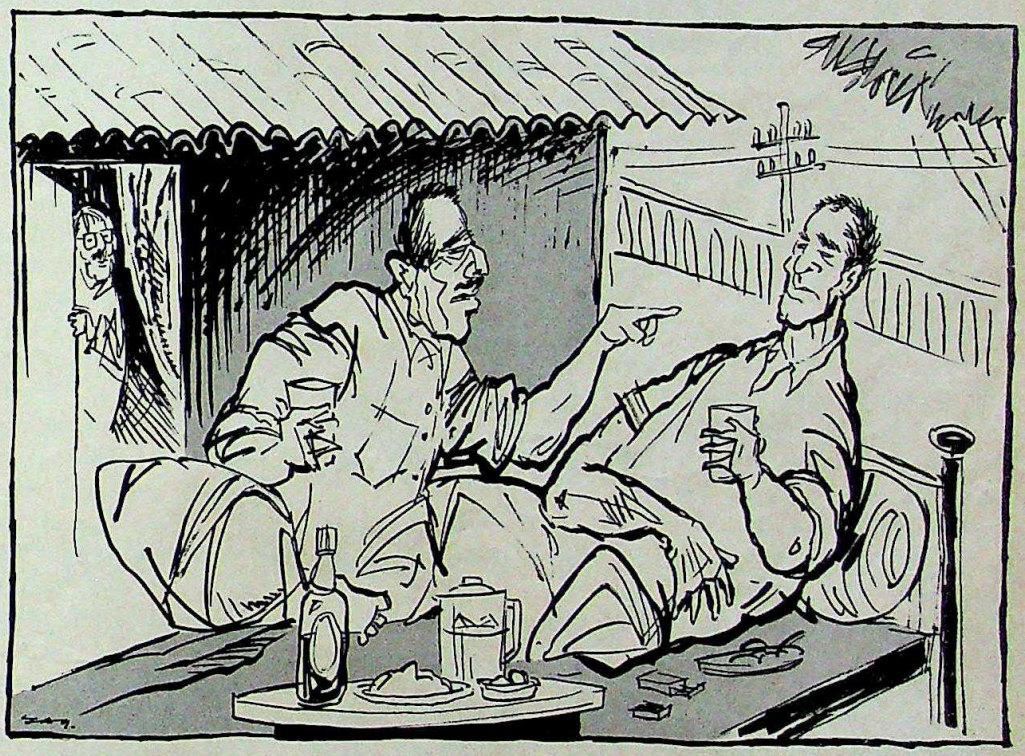

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका

सामूहिक प्रयास

उत्तराखंड की विरासत का ब्यौरा

इस भरपूर पत्रिका के 360 पृष्ठों में प्रचुर सामग्री है. हिमालय क्षेत्र का विकास हो, वहां के पर्यावरण का समुचित ध्यान रखा जाए और प्राकृतिक संसाधनों का न्यायपूर्ण इस्तेमाल संभव बनाया जाए इसके बारे में सजगता, संवाद और बहस को बढ़ाना इसका लक्ष्य है. उत्तराखंड की अनेक प्रतिभाएं इस प्रयास से या तो जुड़ी हैं या सद्भाव रखती हैं.

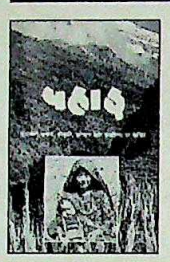

पहाड़: अंक 3-4
पीपुल्स एसोसिएशन फार हिमालय एरिया रिसर्च द्वारा प्रकाशित पत्र
संपादक: शेखर पाठक
कुल पृष्ठ: 360;
कीमत: 80 रु.
सजिल्द: 275 रु.

इस अंक की विषय सामग्री बाइस खंडों में बंटी है. पुरातत्व इतिहास, ताम्रपत्र आदि पर सामग्री उत्तराखंड के ऐतिहासिक संदर्भों, सांस्कृतिक विशिष्टताओं, स्मारकों-अवशेषों आदि के कुछ पहलुओं के बारे में बताती है.

सर्वविदित है कि उत्तराखंड और पूरा हिमालय क्षेत्र अत्यंत समृद्ध संस्कृति का क्षेत्र रहा है. अतः इससे संबद्ध जानकारियां स्वभावतः उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं. चित्रकला की अपनी एक सशक्त परंपरा भी वहां रही है. पहाड़ी कलम पर एक रोचक साधारण लेख भी इस अंक में है पर वह बहुत अच्छा नहीं है. एक कहानी, एक-यात्रा-संस्मरण और कुछेक चुनी गई कविताएं हैं. लोक संस्कृति खंड में 'नंदा देवी की जात,' 'छिपला जात' तथा 'कंडाली पर्व' पर ललित सामग्री है. मोहन उप्रेती का लोककला पर एक श्रेष्ठ व्याख्यान है.

इतिहास खंड की सामग्री सर्वाधिक महत्वपूर्ण है. प्रारंभ में बाल्जाक का एक प्राणवान कथन है पर उस कथन की चेतना इस पूरे अंक में कहीं अंतर्व्याप्त नहीं दिखती. लगता है इस संगठन के लोग अभी अपनी भाषा की भी तलाश में हैं.

पर्यावरण खंड की सामग्री के तथ्य अत्यंत मूल्यवान हैं. सशक्त आंदोलन पर रमेश पहाड़ी ने लिखा है. फिर, गूजरों के साथ होने वाले अन्यायों पर तथा उनकी बेहतरी की संभावनाओं पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है. कुमायूं नैनीताल की झीलों और तालों के सौंदर्य और खतरों पर वीरेंद्र कोहलिया और विपिनचंद्र पांडे के लेख हैं. वन कानून, वनीकरण की वर्तमान प्रक्रियाएं एवं सामुदायिक वानिकी पर भी पढ़ने लायक सामग्री है.

पानी के प्रति वर्तमान लापरवाहियों, समस्याओं और सुझावों के बारे में रघुवर दत्त खुले का मननीय लेख है. हिमालय और पर्यावरण के साथ हो रहे अनाचार विश्व-व्यापी मानवघाती उद्योगवाद की ही भारतीय भुजाओं द्वारा किए जा रहे अनाचार हैं, यह चंडी प्रसाद भट्ट के मार्मिक संस्मरण से स्पष्ट होता है, जो उनकी संक्षिप्त फ्रांस यात्रा पर आधारित है.

इतिहास खंड में टिहरी, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, मणिपुर व नेपाल पर भी अच्छे लेख हैं. पंडित पंत पर भी भावपूर्ण सामग्री है. कुल मिलाकर अंक जिन्हें मिल सके या जो पुस्तकालयों तक पहुंच सकें, उनके लिए पठनीय है. खरीदना तो कम ही लोग चाहेंगे क्योंकि अभी इस संगठन का स्वरूप स्पष्ट होना बाकी है और इतना पैसा औसत आमदनी वाले तो तभी खर्च करेंगे जब पहाड़ किसी आंदोलन का अंग बन जाएगा.

—पंकज

व्याख्यान

निरंतरता के सूत्र

नाट्य परंपरा का विशद विश्लेषण

प्रस्तुत कृति जाने-माने कवि तथा रंगमंच विशेषज्ञ नेमिचंद्र जैन के "भारतीय नाट्य परंपरा" विषय पर दिए गए तीन व्याख्यानों का संकलन है. ये भाषण मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग द्वारा आयोजित भाषणमाला के अंतर्गत डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में दिए गए थे. नेमिचंद्र जैन ने भारतीय नाट्य परंपरा को तीन चरणों में बांटा है. 'उदय और उत्कर्ष के पहले चरण' में भारतीय रंग परंपरा के जन्म और उसके उत्तरोत्तर विकास पर प्रकाश डाला गया है. इस काल में संस्कृत नाटक तथा रंग कार्य चरमोत्कर्ष पर था.

भारतीय नाट्य परंपरा
व्याख्यान
नेमिचंद्र जैन
मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
कुल पृष्ठ: 57,
कीमत: 24 रु.

बारहवीं शताब्दी के अंत तक देश राजनैतिक उथल-पुथल के दौर में पहुंच गया था. बिखराव के इस दौर को नेमिचंद्र जैन ने 'मध्यकालीन रंगकर्म-परंपरा का विस्तार' भाषण में समेटा है. इस दौर में क्षेत्रीय विशिष्टताओं का समावेश रंगकर्म में हो जाने से उसमें नया आकर्षण तथा अनूठापन जुड़ गया.

करीब सात-आठ सौ वर्षों की राजनैतिक उथल-पुथल के बाद देश में ब्रिटिश शासन की शुरुआत के साथ ही ठहराव का माहौल एक बार फिर बना. विजयी पश्चिमी संस्कृति के दबदबे के साथ भारत के सांस्कृतिक जीवन में भी एक नए दौर की शुरुआत हुई. भाषणमाला के तीसरे विषय 'आधुनिक युग-संघर्ष तथा अन्वेषण की दिशाएं' में इस दौर पर प्रकाश डाला गया है. इस दौर की शुरुआत पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण से हुई. लेकिन स्वाधीनता संग्राम के दौर के साथ ही यह भारतीय अस्मिता की तलाश में बदलती चली गई. कई सदियों के भटकाव के बाद यानी बीसवीं शताब्दी समाप्त होते-होते शायद अब नाट्य परंपरा फिर से भारतीयता की महक में महकने लगी है.

कृति लेखक की विद्वता तथा उसके समृद्ध अनुभव जगत का अगर परिचय देती है तो यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि नेमिचंद्र जैन पिछले करीब चार दशक से भारतीय नाट्य जगत में सक्रिय हैं.

लेखक की राय में संस्कृत नाटक के युग में 'भारतीयता' नाम का मूल्य पनपा था. मध्य युग के उतार-चढ़ाव तथा ब्रिटिश युग की उपेक्षा का शिकार बना. इसलिए लेखक कई बातों में पश्चिमी रंगमंच की 'नई अंतरदृष्टि' तथा 'नए औजारों' की देन है. बावजूद भारतीय रंगमंच को तब तक अधूरा मानता है जब तक उसे पारंपरिक औजारों से भी सज्जित न कर लिया जाए. भारतीयता पर अतिरिक्त बल देने का प्रयास शायद हमारे स्वदेश प्रेम की अधिक जानकारी दे रहा है. लेकिन इसके बावजूद यह कृति प्रत्येक रंगकर्मी तथा नाट्य साहित्य अध्येता के लिए संग्रहणीय है. मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा ऐसी अच्छी कृति छापने का श्रेय प्राप्त करने के बावजूद पुस्तक के कवर पर की गई गलतियां अक्षम्य हैं. कृति तथा कृतिकार दोनों के नाम गलत छापे गए हैं. और फिर अकादमी द्वारा प्रकाशन होने से इसकी कीमत भी कम रखी जा सकती थी.

—गौरीशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने डॉक्टर से यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र से सचमुच बालों का झड़ना रुक जाता है।

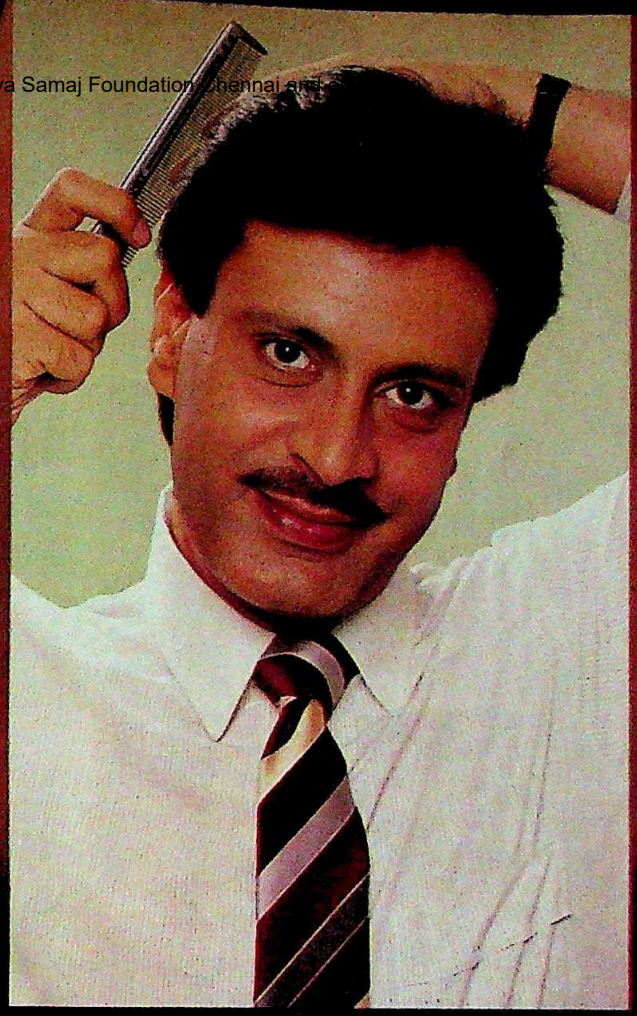

लेकिन मुझे विश्वास तब हुआ जब मैंने इसका इस्तेमाल किया।"

"मेरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र*, व्यापक गवेषणा पर आधारित एक अपूर्व वैज्ञानिक फार्मूले से बना है। उन्होंने यह भी बताया कि यह बालों की जड़ों को मज़बूत करनेवाले सभी आवश्यक प्रोटीन तत्व, को-एन्जाइम और विटामिन भी उपलब्ध करता है।

मैं तो बस यही कहना चाहता हूँ कि इसने मेरे बालों का झड़ना निश्चितरूप से रोक दिया है और साथ ही रूसी भी खत्म हो गई है।"

देखिए, गवेषणा-रिपोर्ट से उद्धृत एक अंश :

"सभी मामलों में रूसी के सम्पूर्ण खात्मे के साथ ६६.६६% मामलों में शानदार एवं ३३.३३% में बढ़िया नतीजा हासिल हुआ और बालों का झड़ना तो लगभग शत प्रतिशत रुक गया...इसलिए, यह कहा जा सकता है कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र की सफलता-दर शत प्रतिशत है।"

इंडियन मेडिकल गज़ट ११८ २२३ (१९८४)

बालों का झड़ना रोकने और रूसी खत्म करने का प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

Dey's® **दे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा।**

* यह शृंगार सामग्री नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े शानदार दाम बेमिसाल

ड्रेस मटीरियल

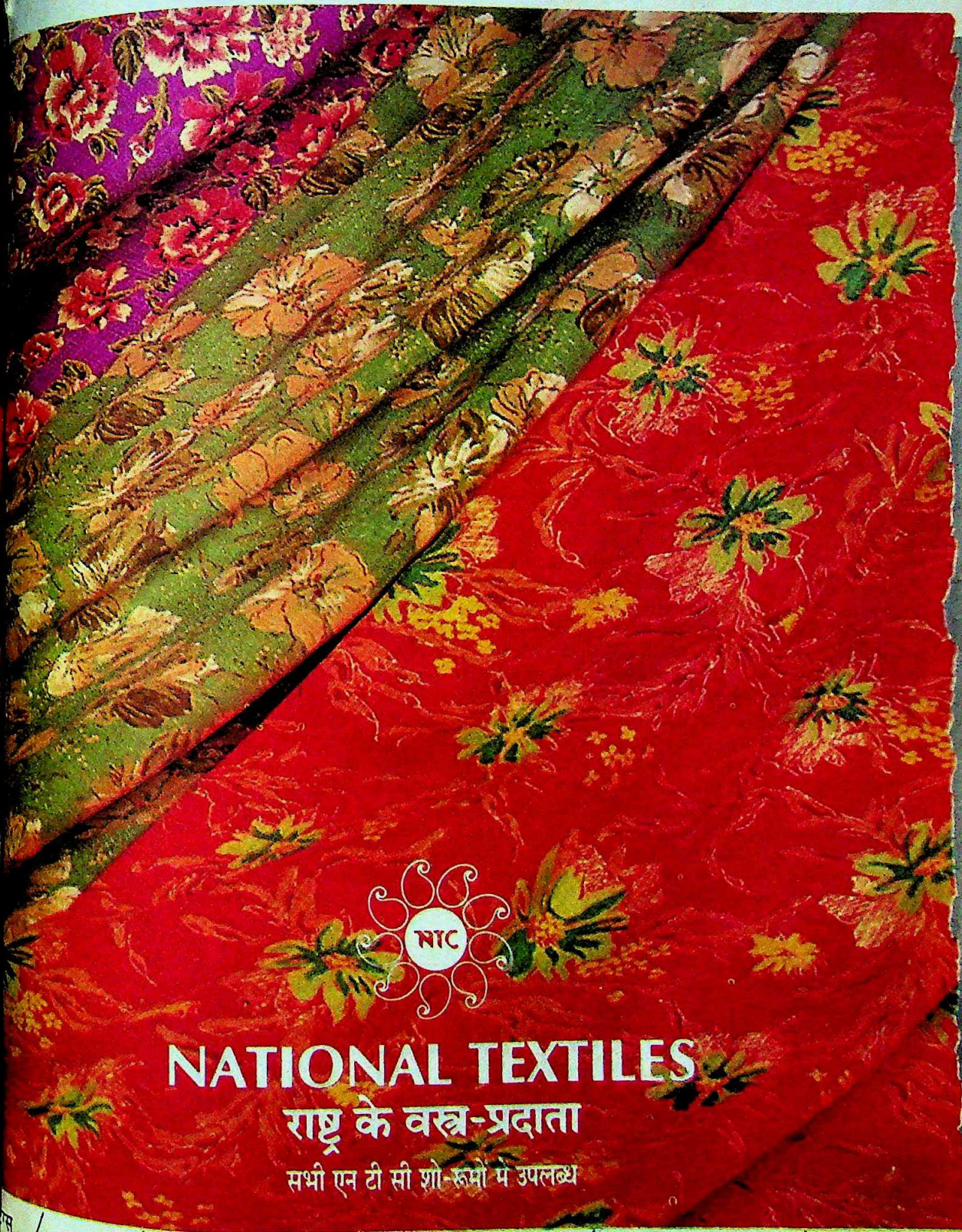

सूटिंग्स / साड़ियां / फर्निशिंग्स / तौलिए / चादरें / औद्योगिक वस्त्र / बिना बुने कपड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

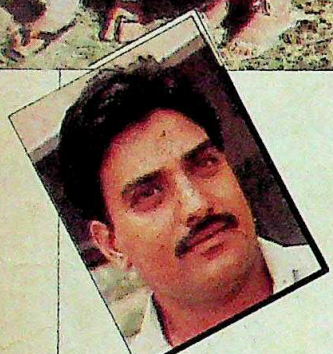

अभय; (ऊपर) सुप्रिया और कांता

◆ अपने करतबों से हमेशा किसी-न-किसी विवाद को जन्म देते रहने वाले **अभय सिंह** ने, जो उप-प्रधान-मंत्री देवीलाल के पोते और हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के बेटे हैं, पिछले पखवाड़े साबित कर दिखाया कि जीवन सिर्फ राजनीति की उठापटक ही नहीं, कुछ और भी है.

अभय ने देवीलाल के पुश्तैनी गांव तेजाखेड़ा में **कांता** से विवाह कर लिया जो उनकी दिवंगत पत्नी सुप्रिया की छोटी बहन है (इस विवाह पर बहुत बड़ा आयोजन नहीं हुआ). दो साल पहले सुप्रिया की रहस्यमय तरीके से मौत हुई थी. पुलिस रिपोर्ट में इसे दुर्घटना से हुई मौत बताया गया था मगर राज्य के इंका नेताओं का आरोप था कि कांता और अभय के गुप्त संबंधों के कारण सुप्रिया ने आत्महत्या की. विवाद को विवाह करके भी शांत किया जा सकता है. शायद!

◆ अंतरराष्ट्रीय कूटनीति बच्चों का खेल तो नहीं है मगर इरादा विश्व शांति को बढ़ावा देने का हो और इसके लिए साधन दूर से नियंत्रित किया जाने वाला खिलौना विमान हो तो जरूर इसे दिलचस्प खेल माना जाएगा.

पिछले पखवाड़े बालसम लकड़ी के बने इस 3 किलो वजनी विमान **टेलीमास्टर** ने ढाका से अमृतसर तक की ऐतिहासिक उड़ान भरी. इसके साथ ही इस खिलौना विमान ने भारत और बांग्लादेश के बीच उड़ान भरने वाला पहला दूर-नियंत्रित (रिमोट कंट्रोल) विमान होने का अपने तरह का रिकार्ड भी कायम किया.

दिल्ली के रोटरी क्लब, मिड-वेस्ट और एअर इंडिया द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय सद्भाव और शांति के लिए' प्रायोजित यह 3,100 किमी की उड़ान 15 दिनों में पूरी हुई. टेलीमास्टर के 'पायलट' थे रोटरी क्लब के सदस्य व्यापारी-द्वय वाई.पी. जहांगीर और एस.एम. हुसैन. पाकिस्तान और भारत के बीच जिस तरह तनाव चल रहा है, उम्मीद है इसकी अगली उड़ान दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच होगी.

टेलीमास्टर: शांतिदूत

श्रीला: अपनी खाति

◆ ब्रिटिश संसद के अप
हाउस ऑफ लॉर्ड्स के अप
और दिलचस्प साथियों
श्रीला फ्लैदर कुछ अलग
आती हैं. उनकी चटख र
साड़ी उनके व्यक्तित्व
अनूठा ही बना देती है. 5
श्रीला हाउस ऑफ लॉर्ड्स
नीत की जाने वाली भार
की पहली महिला हैं. ए
वकील से विवाहित और
की मां श्रीला की सार्वजनि
राजनैतिक छवि शानदार
वेटिव पार्टी की सदस्य श्री
की पहली अश्वेत मजिस्ट्रे
चुकी हैं. वे कहती हैं, "
नई जिम्मेदारी से मैं बहुत
और मैं साड़ी को ही अपनी
बनाए रखूंगी."

◆ रानी को आखिर प्रे
गया. काफी जांच-जिरह के
मामले पर अंततः कानूनी
गई. प्रख्यात वकील और
नेता **रानी जेठमलानी** अप्रै
में 'श्रीमती **प्रेमशंकर** झ
जाएंगी. झा खुद जाने-माने
और आर्थिक विशेषज्ञ हैं.
वे अंबानी घराने की
निकलने वाले अखबार
ऐंड फाइनांशियल ऑब्ज
संपादक हैं. लायक बाप की
बेटी रानी अपने विवाह के
कहती हैं, "मैं बहुत खुश
बड़ी बात तो यह है कि मैं
व्यक्ति से शादी कर रही
जीवन और मेरे कामकाज
नहीं देगा." यानी दूर-
कहीं कोई कानूनी खोट
इश नहीं.

रानी और प्रेम: कानूनी

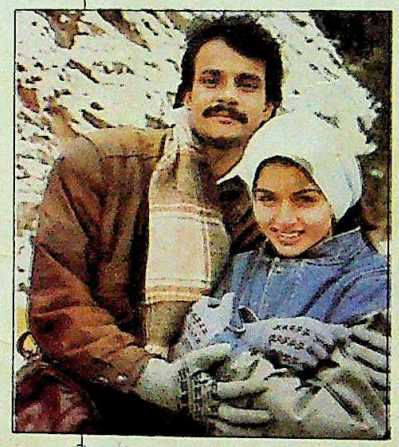

भाग्यश्री और दासानी

◆ इसे कला के जीवन में उतरने का एक और उदाहरण ही माना जाएगा. 20 वर्षीया **भाग्यश्री** ने पहली फिल्म 'मैंने प्यार किया' में उस किशोर युवती की भूमिका निभाई है जो पहली बार प्रेमपाश में बंधती है. परदे पर रोमांस तो चल ही रहा था, वास्तविक जीवन में भी यह जारी था. फिल्म अभी आधी ही बनी थी कि भाग्यश्री ने अपने ब्वॉय फ्रेंड **हिमालय दासानी** के साथ विवाह रचा लिया. पिछले पखवाड़े उन्हें प्रथम पुत्र की प्राप्ति हुई. और उन्होंने फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया. वे कहती हैं, "फिल्म और गृहस्थी साथ-साथ नहीं चल सकती."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

कावासाकी RTZ. ख़ुद आज़माइए, पूरा भरोसा पाइए.

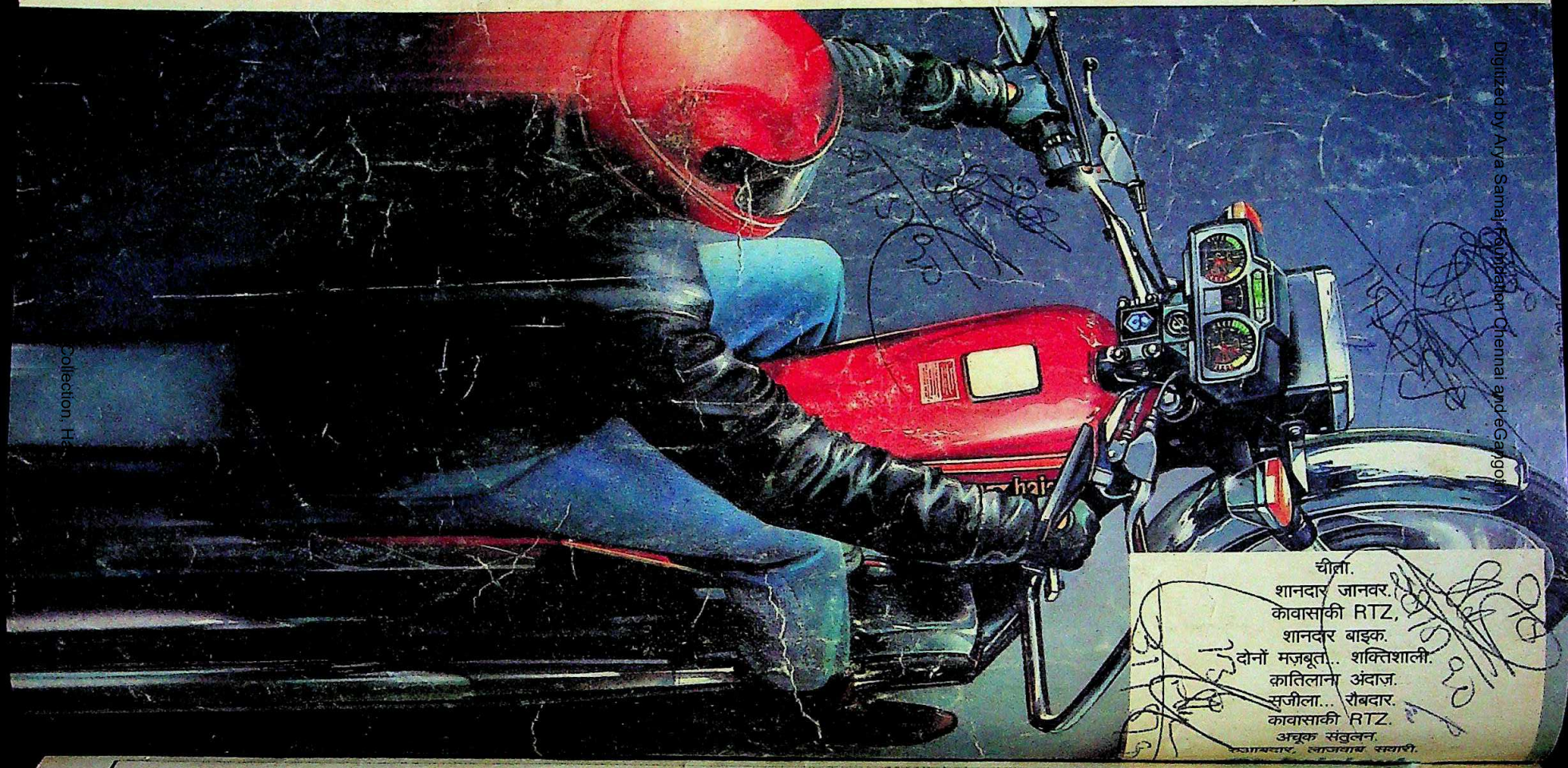

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मघाती मंसूबे

कश्मीर के मामले पर तावड़तोड़ मुहिम से बेनजीर भुट्टो को सत्ता बरकरार रखने में भले ही मदद मिली हो लेकिन फौज और कठमुल्लाओं के मुकाबले उनकी स्थिति कमजोर हुई. मुहिम को ठंडा करने से देश में उनकी भद पिटेगी, नहीं तो भारत के साथ युद्ध भड़क सकता है.

आवरण कथा.....18

खातों पर फिर खोजी नजर

सरकार बच्चन बंधुओं के खिलाफ वित्तीय अनियमितताओं के मामले फिर खोलने लगी है. इनमें अजिताभ द्वारा स्विट्जरलैंड में एक फ्लैट की खरीद और विदेशी मुद्रा पाने के मामले शामिल हैं. अमिताभ के पिछले 10 साल के आयकर ब्यौरों की जांच भी शुरू हो गई है.

खास रपट.....14

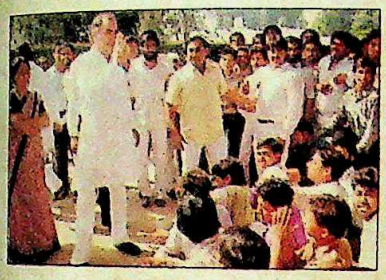

वही रफ्तार बेढंगी

अनेक मामलों में स्पष्ट नीति निर्देश दे पाने में राजीव गांधी की विफलता से कांग्रेस(इ) विभिन्न दिशाओं में मुंह मारने लगी है. वी.पी. सिंह सरकार के खिलाफ कोई अहम राजनैतिक मोर्चा न जीत पाने से अनेक कांग्रेसियों का उनके नेतृत्व के प्रति मोहभंग होने लगा है.

खास रपट.....30

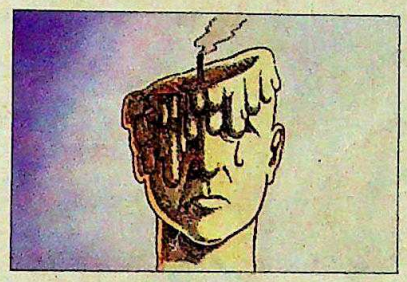

टूटते दिलों की बढ़ती मिसालें

आधुनिक जीवन की भागमभाग, कुछ हासिल कर लेने की बढ़ती आकांक्षा और परिवार जैसी सामाजिक संस्थाओं की टूट से सभी आयु वर्गों के लोगों में अवसादग्रस्त होने का खतरा बढ़ा है. पर कुछ नई दवाओं से इसके उपचार की संभावनाएं बेहतर हुई हैं.

विशेष लेख.....60

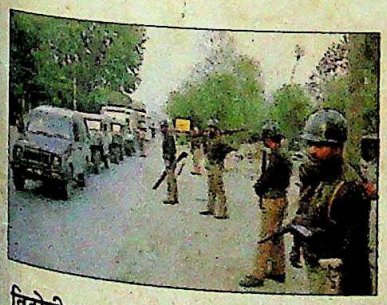

विद्रोही मानस के बीच

राज्य सचिवालय को कूच करवाकर आतंकग्रस्त श्रीनगर में ले जाने की सफलता से राज्यपाल जगमोहन ने प्रशासन की पकड़ साबित कर दी है. लेकिन बड़ी परख अगले छह महीने में होगी जब सचिवालय राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी में रहेगा.

विशेष लेख.....64

रेगिस्तान में क्रिकेट की रौनक

शारजाह का सालाना क्रिकेट टूर्नामेंट आज पैसे, उत्तेजना और रोमांच का मरुद्यान बन गया है. इसने एकदिवसीय क्रिकेट में ऐसे लमहे पैदा किए हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता. क्रिकेट के इस नए मक्के में भारत-पाक प्रतिद्वंद्विता देखने वाली होती है.

खेलकूद.....76

अगले पन्नों पर

कसौटी.....7
तेवर.....10
राजरंग.....11
हिंदोस्तां हमारा.....12
खास रपट
बच्चन बंधु:
खातों पर फिर खोजी नजर.....14
आवरण कथा
बेनजीर भुट्टो: आत्मघाती मंसूबे.....18
खास रपट
कांग्रेस (इ): वही रफ्तार बेढंगी.....30
आजकल
जनता दल: खेमेबाजी का दौर.....35
सेंट किट्स कांड: बुरे फंसेंगे मुंहलगे.....38
राम जन्मभूमि: सख्त रवैया.....40
संजय आयुर्विज्ञान संस्थान:
बदनामी के धब्बे.....41
भाजपा: आगे की तैयारी.....42
महम: दांव पर लगी है साख.....43
मध्य प्रदेश: कौरवी करतूत.....44
खास रपट
उत्तर प्रदेश:
सरकारी राज से
बड़ा डाकुओं का राज.....46
व्यापार चक्र.....53
कारोबार
मालनपुर: आकर्षण में बंधे उद्योगपति.....54
महंगाई: काबू से बाहर.....57
शेयर बाजार.....58
आरपार.....59
विशेष लेख
अवसाद:टूटते दिलों की बढ़ती मिसालें.....60
कश्मीर प्रशासन:
विद्रोही मानस के बीच.....64
तराई क्षेत्र:
बमों-बंदूकों के लिए
नई जमीन की तलाश.....69
जीवन शैली
बाल विवाह:
सात फेरों में फंसे बच्चे.....71
खेलकूद
शारजाह:
रेगिस्तान में क्रिकेट की रौनक.....76
आबोहवा
बस्तर: संपदा के सफाए का संकट.....85
कुछ अपनी, कुछ परायी.....86
कहानी.....88
किताबें.....92
परदे के उस पार.....94
चर्चित चेहरे.....96

आवरण: भवान सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्रकला

Contract JCT 21783 A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Thapar Group

की प्रेरणा

JCT FABRICS

सूटिंग्स • शर्टिंग्स • ड्रैस मैटीरियल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केल्विनेटर की ओर से अत्याधुनिक रेफ्रिजरेटर

नया स्टर्लिंग

इतना अनुपम कि आप चकित रह जाएं। आधुनिकतम टैक्नॉलोजी का चमत्कार, नवीन स्तरों का प्रतीक रेफ्रिजरेटर। उन इंजीनियरों की देन जिनका लक्ष्य सामान्य डगर से हट कर रेफ्रिजरेटर क्षेत्र में अग्रणी स्थान प्राप्त करना है।

कलात्मक स्टर्लिंग

* 100% पालीयुरिथेन फ़ोम इन्सूलेशन। इस कारण तीव्र नमी की अवस्था में भी सीलन नहीं होती।
* उत्तम एस.ए.एन (सैन)मैटीरियल-क्रिस्पर, बैफ़ल ट्रे, मक्खन/पनीर चेस्ट तथा बोतलों के लिए समायोज्य खाने।
* अधिकतम स्टोरेज के लिए उत्तम डिज़ाइन। अतिरिक्त स्टोरेज के लिए अलग होने वाली अण्डों की ट्रे-शाकाहारियों के लिए विशेष सुविधा।
* एक विशाल चिल्ल ट्रे, एक अनोखी ड्रिप ट्रे सहित, बर्फ़ से पिघला पानी आसानी से हटाने के लिए।
* पूर्णतः स्टील निर्मित तथा सुदृढ़ ए.बी.एस. लाइनर
* विभिन्न आकर्षक रंगों में उपलब्ध।

स्टर्लिंग टैक्नॉलोजी

* अन्तर्राष्ट्रीय विख्यात 'पावर सेवर' कॉम्प्रैसर
* तेजी से ठंडा करता है, और भी तेज़ी से बर्फ बनाता है।
* वोल्टेज के तीव्र उतार-चढ़ाव सहन करता है।

किसी वोल्टेज स्टोबिलाइज़र की आवश्यकता नहीं यदि कार्यशील वोल्टेज 160-260 वोल्ट हो।

* न्यूनतम बिजली की खपत करता है।
* आटोमैटिक डीफ़्रॉस्ट (पुश बटन)

नया स्टर्लिंग

यह निःसन्देह मार्केट में सब से उन्नत रेफ्रिजरेटर है। साथ में जांची-परखी विश्वसनीय बिक्री-उपरान्त-सर्विस। यह मात्र रेफ्रिजरेटर नहीं। यह तो स्टर्लिंग (उत्कृष्ट) रेफ्रिजरेटर है।

केल्विनेटर
"इसकी ठण्डक...बेमिसाल!"

स्टर्लिंग
रेफ्रिजरेटर्स
यूरोपीय अन्दाज तथा अमरीकी इंजीनियरिंग का कमाल

स्टर्लिंग

165 लिटर का प्रीमियम क्वालिटी रेफ्रिजरेटर

विक्रय एवं सर्विस : **एक्सपो मशीनरी लिमिटेड** प्रगति टावर, 26 राजेन्द्रा प्लेस नई दिल्ली-110008.

Mulual 5120d/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

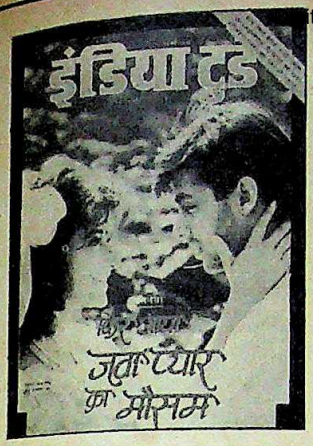

बदलते रहेंगे मौसम

आवरण कथा 'फिर आया जवां प्यार का मौसम' (15 मई) एक सुखद बयार का सूचक है. हिंसा से लहूलुहान फिल्मों की लंबी शृंखला के बाद हल्की-फुल्की और नूतन प्रेम से ओत-प्रोत फिल्मों को दर्शकों की भारी सहमति मिली है. नए नायकों में देवानंद जैसी शोखी और राज कपूर जैसा अल्हड़पन तो है पर स्थायित्व नजर नहीं आता. सफल फिल्में तो उत्तम अभिनय और कला के प्रति समर्पण को ही मापदंड बनाती हैं. हां, मौसम तो बदलते ही हैं.

—**शशांक त्यागी**, मेरठ (उ.प्र.)

■ प्यार का मौसम तो आता ही रहेगा पर यह प्यार वह नहीं जो पुरानी फिल्मों में धड़कता था. इस प्यार की इबारत तो चॉकलेट, मारुति आदि उपभोग सामग्रियों के सहारे लिखी जाती है. ये नई फिल्में दरअसल हिंसा का ही एक और रूप हैं. इनमें प्यार कम, हवस ही ज्यादा है.

—**अनीता देशपांडे**, पुणे (महा.)

भयावह तस्वीर

आवरण कथा 'वादी में विनाश' (30 अप्रैल) से कश्मीर की जो तस्वीर सामने आई है वह निश्चित ही भयावह है. इस पूरे प्रकरण में सर्वाधिक चिंता का विषय है वहां के प्रबुद्ध वर्ग का अलगाववाद को समर्थन देना. वहां आम आदमी आतंकवादियों के भय से आक्रांत है. सरकार द्वारा निरंतर पाकिस्तान को ही दोष देते रहना और हिंसा को न रोक पाना बड़ी विफलता है. क्या संसार की विशालतम सेनाओं में से एक भारतीय सेना सीमा पर अवैध आवाजाही को रोकने में अक्षम है?

—**मधुकर वर्मा**, बंगलूर (कर्नाटक)

■ कश्मीर घाटी में गुमराह एवं बेरोजगार नवयुवकों को आजादी के बाद पाकिस्तान गए मुसलमानों की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया जाना चाहिए, जिन्हें 40 वर्षों बाद भी पाकिस्तान में दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है. ऐसे उपायों की सख्त जरूरत है ताकि पाकिस्तान की इस क्षेत्र में धार्मिक उन्माद फैलाकर क्षेत्रीय अखंडता एवं सुरक्षा को खतरे में डालने की कार्रवाइयों को नेस्तनाबूद किया जा सके.

—**उपेंद्र पांडेय**, जयपुर (राज.)

पाठकों से

सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार की योजना के तहत पत्र आमंत्रित हैं. इस अंक के किसी भी लेख पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु. और दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी के साथ इस पेज पर पहले कॉलम में छपा आवरण पृष्ठ का फोटो काटकर भेजें. आपके पत्र, हमें 5 जून तक मिल जाने चाहिए. चिट्ठी अधिकतम 150 शब्दों की हो. —**संपादक**

■ जब-जब पाकिस्तानी शासकों पर संकट आन पड़ता है, वे भारत के खिलाफ जहर उगलने लगते हैं. सत्ता में आने पर बेनज़ीर भारत से दोस्ताना संबंध रखने की बात करती रहीं लेकिन आज वे भारत से हजार वर्षों तक युद्ध करने की बात करने लगी हैं. शायद वे अपने पिता और जनरल याह्या खां का हश्र भूल चुकी हैं.

—**अभिषेक द्विवेदी**, भोपाल (म.प्र.)

■ कश्मीर पर आवरण कथा में आप लगभग यह बताने को आतुर हैं कि यह आंदोलन धर्मनिरपेक्ष नहीं है. लेकिन 30 मार्च के अंक में ही आपने दलीलों के सहारे यह साबित करने की कोशिश की थी कि कश्मीरी आंदोलन हिंदुओं के खिलाफ नहीं है बल्कि भाजपा तथा विश्व हिंदू परिषद के लोग जानबूझकर इसे सांप्रदायिक रंग दे रहे हैं. आपने एक हिंदू का हवाला भी दिया था जिसने अपने घर की चाबी अपने पड़ोसी मुसलमान 'भाई' को सौंपकर जम्मू की तरफ यों ही कूच किया जहां विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता 'बेवकूफों की तरह' नारे लगा रहे थे. क्या महीने भर में ही आपके विचार बदल जाते हैं.

—**अविनाशचंद्र अग्रवाल**, पीलीभीत (उ.प्र.)

■ दरअसल ऐसी समस्याओं का हल युद्ध से नहीं हो सकता. अगर सरकार वास्तव में देश का हित चाहती है तो उसे समस्या को गंभीरता से समझकर उसका निदान करना चाहिए. मुट्ठी भर कश्मीरी अगर इस्लाम के नाम पर उग्र रवैया अपनाते हैं तो देशभक्त मुसलमानों को उनसे अलग-थलग करने की कोशिश करनी चाहिए.

—**सावल राम गिल**, झुंझुनू (राज.)

■ शिमला समझौता एक मजाक बनकर रह गया. अब एक ही भाषा बचती है—युद्ध. अब भारत-पाक महासंघ जैसी बातें बेमतलब हो चुकी हैं. समझौता न करने योग्य प्रश्नों का समाधान करने के लिए सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों ने युद्ध को जरूरी माना है. यह भी सच है कि युद्ध की व्यर्थता, क्रूरता सिद्ध हो चुकी है लेकिन किन्हीं परिस्थितियों में युद्ध आवश्यक बन जाए तो उससे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता.

—**डॉ. हंसा व्यास**, ब्यावरा (म.प्र.)

संकल्पबद्धता चाहिए

'आम सहमति का महंगा मोह' (कसौटी: 30 अप्रैल) में विश्लेषण की दृष्टि पैनी है. आज जब राष्ट्र पर झंझावातों की कुदृष्टि गड़ी हुई है, सांप्रदायिक सौमनस्यता खंडित-सी हो रही है तो नेतृत्व का परम दायित्व है कि वह आम सहमति तलाश करने में अनावश्यक विलंब को समस्या के समाधान में अवरोध न बनने दे. प्रधानमंत्री को संकल्पबद्धता को ही ओजस्वी व्यक्तित्व

वर्ष: 4, अंक: 14, 16-31 मई 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726. टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गतिशील नेतृत्व का महत्वपूर्ण आयाम मानना चाहिए.

—**कृष्ण नारायण पाठक**, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

तानाशाही से इनकार

'आखिर लोग ले आए अपना तंत्र' (30 अप्रैल) पढ़ा. विश्व के कई देशों ने साम्यवादी तानाशाही को नकारकर लोकतंत्रीय चोला अंगीकार कर लिया है. ऐसे में नेपाल जैसे देश में भी राजतंत्रीय तानाशाही कैसे पनपी रह सकती थी? उम्मीद की जानी चाहिए कि नेपाल में पूर्ण लोकतंत्र स्थापित होकर ही रहेगा.

—**प्रदीप उपाध्याय**, देवास (म.प्र.)

प्रथम पुरस्कार

'आम सहमति का महंगा मोह' (30 अप्रैल). आने वाले कुछ मास राष्ट्र के लिए बहुत खतरनाक हैं. देश युद्ध की विभीषिका से त्रस्त है. ऐसे में प्रधानमंत्री कोई भी कठिन एवं विवादास्पद निर्णय लेने में यदि आम सहमति के मोह से ग्रस्त रहे तो संभवतः समस्याओं की आयु बढ़ जाएगी और देश की जनता की अपेक्षाओं पर वी.पी. सिंह कुठाराघात करेंगे.

वी.पी. सिंह के अंध-प्रशंसक भी उनसे निराश हैं. उनकी राय में वी.पी. सिंह को जनता ने इसलिए नहीं चुना कि वे आम सहमति के चक्कर में समस्याओं को लटकाए रखें अपितु उनको इसलिए चुना गया था कि वे अपने विवेक एवं इच्छाशक्ति से देश को मूलभूत समस्याओं से उबारें.

अतएव प्रधानमंत्री को अपेक्षाकृत स्वतंत्र रूप से अपनी पसंद की नीतियों को क्रियान्वित करना चाहिए.

—**गुलाब सिंह शास्त्री**, तिमारपुर, दिल्ली

■ भारत के समाजवादी नेतागण शुरू से ही नेपाल में प्रजातंत्र का आंदोलन चलाने, उसे गति देने और नैतिक समर्थन जुटाने में सर्वाधिक और सक्रिय सहयोग देते रहे हैं. और नेपाली कांग्रेस के नेता भी समाजवादियों से जुड़े रहे हैं. अब उन्हें सही माने में लोकतंत्र का सिपाही बनना चाहिए.

—**प्राचार्य योगेंद्र भट्ट**, पुलगाव (महाराष्ट्र)

उनके वश में नहीं

'फिर अंधेरी सुरंग में' (30 अप्रैल) पढ़ा. पंजाब एक ऐसी समस्या बन गई है जिसका समाधान हमारे राजनेताओं के वश में नहीं लगता. मीन और बीदल गुट द्वारा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की धींगामस्ती ने सरकार के कुछ साहसिक प्रयासों पर भी पानी फेर दिया है. आज जब कोई राजनैतिक नेतृत्व आतंकवादियों का सामना करने की स्थिति में नहीं है तब जरूरी है कि प्रशासन कड़ा रुख अपनाए.

—**कमलेश कुमार**, कानपुर (उ.प्र.)

फिर गांधी चाहिए

'दंगों का दौर' (30 अप्रैल) में तो सबसे ज्यादा कीमत वे निर्दोष चुकाते हैं जो बहकावे में आकर नेताओं के टुच्चे स्वार्थों की खातिर अपनी जान गंवाते हैं, पुरुषार्थ से अर्जित अपनी ही संपत्ति को फूंक देते हैं. उजड़े परिवारों और मासूम अनाथों के आगे किसी दल या मुख्यमंत्री की सत्ता की कोई कीमत नहीं.

—**वर्षा सुर्वे**, देवास (म.प्र.)

■ महात्मा गांधी की जन्मस्थली गुजरात में सिर्फ मामूली-सी घटना 60 निर्दोष व्यक्तियों की मौत का कारण बनी. यह सब पढ़कर मन भर आया. मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि हमें एक महात्मा गांधी फिर से दे दे जो भारत में दंगों की पुनरावृत्ति को रोक सके.

—**अमित कुमार गयासेन**, पटना (बिहार)

स्वार्थपरक तत्परता

कहानी 'तमाशा' जीवन की कड़वी सचाइयों के प्रति सोचने को विवश करती है. आश्चर्य तो तब होता है जब कल तक 'आह रे मुनवा' कहकर अपने दुख पर चीखने वाला इंसान दूसरी तरफ जाते ही एक ही पल में 'रामजग' बन जाता है और अपनी सत्ता एवं भले के लिए कुछ भी करने को तत्पर दिखाई देता है.

—**संजय गुप्ता**, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

■ कहानी में विवेकी राय ने एक गांव की घटना को सरल एवं सरस बनाकर सार्थक आवाज उठाने की कोशिश की है. कहानी पढ़ते समय पाठक ऊबता नहीं है.

—**मुहम्मद हारुन रशीद खां**, गाजीपुर (उ.प्र.)

एक की भूल, कुनबा बदनाम

'बेवजह टकराव' (30 अप्रैल) की कुछ पंक्तियों पर मुझे आपत्ति है. किसी एक चिकित्सक की भूल से सभी आयुर्वेद चिकित्सकों को बदनाम नहीं किया जा सकता है.

—**सुमेश्वर सिंह**, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, पटना (बिहार)

असामाजिक समाजवादी

'नया संकट, नई चुनौती' (30 अप्रैल) कोई आश्चर्य का विषय नहीं है. वि.प्र. सिंह देश की कठिन समस्याओं से जूझने की जगह पूर्व प्रधानमंत्रियों की तरह ही लफ्फाजी से काम चलाना चाह रहे हैं. दूसरे, हमारे देश के समाजवादियों का दुर्भाग्य यह है कि वे विपक्ष में रहने पर तो समाजवाद के गीत गाते हैं किंतु सत्ता की कुर्सी पर बैठते ही असामाजिक हो जाते हैं. रेल और आम बजट से यह एकदम साफ है.

—**प्रज्ञात कुमार सिंह**, भोजपुर (बिहार)

द्वितीय पुरस्कार

कश्मीर: वादी में विनाश (30 अप्रैल). दिनोदिन कश्मीर घाटी में पाकिस्तानी हस्तक्षेप से स्थिति बिगड़ती जा रही है. कुछ लोग बिना सोचे-समझे इस समस्या का एकमात्र समाधान 'युद्ध' को बता रहे हैं. युद्ध की पैरवी करने से पहले इन तथ्यों पर एक नजर डालिए—किसी भी भावी युद्ध से देश की अर्थव्यवस्था एकदम पच्चीस वर्ष पीछे चली जाएगी; युद्ध में एक दिन का अनुमानित खर्च एक हजार करोड़ रु. तक हो सकता है; युद्ध की समाप्ति पर मुद्रास्फीति की दर में विध्वंसक वृद्धि होगी. थोक मूल्य सूचकांक में लगभग 95 प्रतिशत वृद्धि की आशंका है और सैनिक तथा असैनिक लोगों की जनहानि का अनुमान आसान नहीं है.

यदि फिर भी एकमात्र विकल्प 'युद्ध' ही है, तो हमें अपनी भावी पीढ़ियों को इस 'महंगे राष्ट्रवादी सपने' की कीमत चुकाने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए.

—**कैलाश जैन**, भवानीमंडी (राजस्थान)

■ जनता दल के संकट या चुनौती को नया कहना बेमानी है क्योंकि देवीलाल, चंद्रशेखर जैसे नेता जहां मौजूद हों वहां विवाद तो सदा-सर्वदा जीवित रहेगा ही. संकट तो वी.पी. सिंह के लिए है. अगर वे नैया पार लगा गए तो उनकी नैया पार लगेगी वरना डूबने की संभावना तो हमेशा बनी हुई है.

—**ज्ञान प्रकाश भादाणी**, बीकानेर (राज.)

उम्मीद बंधी

'अनोखी लड़ाई' (30 अप्रैल) में सेना के हरियाली फैलाने के सराहनीय काम को पढ़कर उम्मीद बंधती है. इन्हीं प्रयासों से बिगड़ते पर्यावरण को बचाया जा सकता है.

—**सुलोचना पुरी**, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसौटी

पराधीन परदे पर पराक्रम

कहा जाता है कि भोर हमेशा सुहानी होती है. लेकिन दूरदर्शन इस कहावत को झुठलाने में लगा है. अपने देश का सरकार-नियंत्रित टेलीविजन नेटवर्क दिन-ब-दिन औसत दर्जे का होता जा रहा है. चारों ओर से मांग उठ रही है कि इसमें बदलाव लाया जाए. लेकिन लगता है दूरदर्शन के कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही. लचर कार्यक्रमों और दकियानूसी प्रस्तुतीकरणों के द्वारा यह अपने दर्शकों के विवेक का निरंतर अपमान करता रहा है.

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने इसे स्वायत्तता देने का जो वायदा किया उसके कारण उम्मीद की जा रही थी कि बदलाव की बयार बहेगी. लेकिन ऐसा कुछ महसूस नहीं हो रहा. लगता है कि राजनीति के ऊंचे चट्टानों, नौकरशाही की अभेद्य दीवारों और अनिर्णय के झाड़-झंखारों ने इस बयार का रास्ता रोक रखा है. विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार के पैरों में भी यही पत्थर बंधे हैं. उनके दल ने स्वायत्तता देने का चुनावी वायदा किया था और सत्ता में आने के बाद उसने इससे संबंधित एक विधेयक का मसौदा भी तैयार किया. तब तक लग रहा था कि सब कुछ ठीकठाक चल रहा है. लेकिन अब लग रहा है कि वह एक कदम आगे चलने के बाद दो कदम पीछे चलने की कवायद कर रही है.

रेखाचित्र: अजीत तैनन

असली उलझन यह नहीं है कि विपक्ष की ओर से कोई भारी विरोध हो रहा है. बल्कि शुरुआती विरोध तो शासक दल के ही दिग्गज उप-प्रधानमंत्री देवीलाल की ओर से व्यक्त किया गया है. मंत्रिमंडल की हाल की एक बैठक में उन्होंने दूरदर्शन को स्वायत्तता देने के खिलाफ जोरदार आवाज बुलंद की. उनका कहना था चूंकि अधिकांश भारतीय अखबार पूंजीपतियों के हाथों में हैं, इसलिए दूरदर्शन को सरकारी नियंत्रण में ही रहना चाहिए ताकि सरकार की उपलब्धियां और उसकी छवि उजागर करने वाला भी कोई हो.

इसलिए जाहिर है कि मामला अब सर्वोच्च सत्ता यानी प्रधानमंत्री के निर्णायक कदम से ही सुलझ सकता है. लेकिन वी.पी. सिंह अपनी ही छवि और वायदों के बंदी दिखते हैं. उन्होंने घोषणा कर रखी है कि वे मंत्रियों के कामकाज में टांग नहीं अड़ाएंगे. इसलिए वे कोई कदम नहीं उठा पाते. और चूंकि संबंधित मंत्री महोदय निर्णायक कार्रवाई करने में बहुत मजबूत नहीं साबित हुए हैं, इसलिए दूरदर्शन में सुधार आदि का मामला नौकरशाही जाल में उलझा पड़ा है. यह स्थिति हास्यास्पद-सी है.

सूचना एवं प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र पहले तो घोषणा करते हैं कि स्वायत्तता संबंधी विधेयक मंजूर होने तक दूरदर्शन का कामकाज पांच सदस्यीय अंतरिम परिषद चलाएगी. यह एक छोटी मगर सही शुरुआत थी. लेकिन जब वामपंथी दलों और भाजपा ने अपने-अपने आदमियों के लिए जोड़-तोड़ शुरू कर दी तब पूरा मामला खटाई में पड़ गया. प्रधानमंत्री ने अपनी चिर-परिचित शैली में नरम रवैया अपनाया. और नतीजा यह कि परिषद का गठन ही नहीं हो पाया.

इसके बाद एक और पहल की गई. केंद्र ने घोषणा की कि कम-से-कम मनोरंजन के कार्यक्रमों के लिए वे पत्रकारों की एक परिषद बनाएंगे जो कार्यक्रमों की समीक्षा करेगी और नए सीरियलों को मंजूरी देगी. लेकिन यहां भी राजनीति का खेल शुरू हुआ. उपेंद्र फिर बेबस-से दिखे. नौकरशाही तो यही बेबसी चाहती है. स्पष्ट सरकारी निर्देश के अभाव में नौकरशाहों ने इस संस्था पर अपनी पकड़ और मजबूत कर ली. स्वायत्तता के कारण उनके एकाधिकार को जो खतरा था वह खत्म हो गया. अब उनके हाथ में 50 करोड़ रुपए हैं. नतीजा यह कि बचकाने कार्यक्रमों की भरमार है. इन कार्यक्रमों का स्तर कितना फूहड़ है इसका एक उदाहरण अभी गरमी में प्रसारित वह 'आजकल' कार्यक्रम है जिसमें शरीक हुए लोग सूट और स्वेटर पहने नजर आए.

लगता है कि जिन 40 पत्रकारों को दूरदर्शन के लिए दो वर्षों से प्रशिक्षित किया जा रहा था वे भी इसके अत्याधुनिक उपकरणों की तरह बिना इस्तेमाल के पड़े हैं. इस बीच फिर ये आरोप लगाये जा रहे हैं कि दूरदर्शन भाई-भतीजावाद का अड्डा बन गया है. यहां तक कि सूचना एवं प्रसारणमंत्री को भी यह कहते हुए सुना गया है कि जब भी वे कोई कार्रवाई करते हैं तो उन पर दखलंदाजी का आरोप लगाया जाता है और याद दिलाया जाता है कि उनकी सरकार ने स्वायत्तता का वचन दे रखा है. नौकरशाहों ने सरकार को उसके ही वायदों का बंदी बना दिया है.

अब यह जरूरी है कि सरकार राष्ट्र से किए गए वायदों को पूरा करने की कोशिश करे. मूल बात यह है, जिसे प्रधानमंत्री भी दोहराते रहे हैं, कि वायुतरंगें सार्वजनिक संपत्ति होती हैं और उन्हें किसी सरकार या किसी दल या किसी व्यक्ति के प्रचार का माध्यम बनने नहीं दिया जा सकता. स्वायत्तता का मूल मंत्र यही है. सरकार यदि इस बारे में गंभीर है तो उसे चाहिए कि कार्यक्रमों के स्तर, उनकी निष्पक्षता आदि के स्पष्ट और कड़े निर्देश तैयार करने तथा विवादास्पद मुद्दों पर सभी पक्षों के लिए समान अवसर देने की व्यवस्था करने के बाद वह न केवल दूरदर्शन, बल्कि आकाशवाणी से भी अपने हाथ खींच ले.

कोई भी विवेकी व्यक्ति भड़काऊ या सांप्रदायिक प्रचार पर रोक लगाने, बच्चों के लिए अच्छे कार्यक्रम देने या अश्लीलता पर रोक लगाने के बुनियादी उपायों पर आपत्ति नहीं करेगा. लेकिन सरकार की भूमिका बस इतनी ही हो. सरकार अगर सूचना के अधिकार के प्रति सचमुच गंभीर है तो उसे स्वायत्तता से भी आगे जाने की सोचना होगा. उसे निजी कंपनियों को मनोरंजन, सार्वजनिक मामलों और सामयिक कार्यक्रमों आदि के प्रसारण की सुविधा देने के लिए दूरदर्शन और आकाशवाणी के दूसरे चैनल खोलने पर गंभीरता से विचार करना होगा. औसत दर्जे के कार्यक्रमों या एकाधिकारवाद को खत्म करना है तो स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना ही होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लकड़ी, पेट्रोल, गैस या बिजली से लगी आग से लड़ने के लिये आपको यह सब चाहिये.

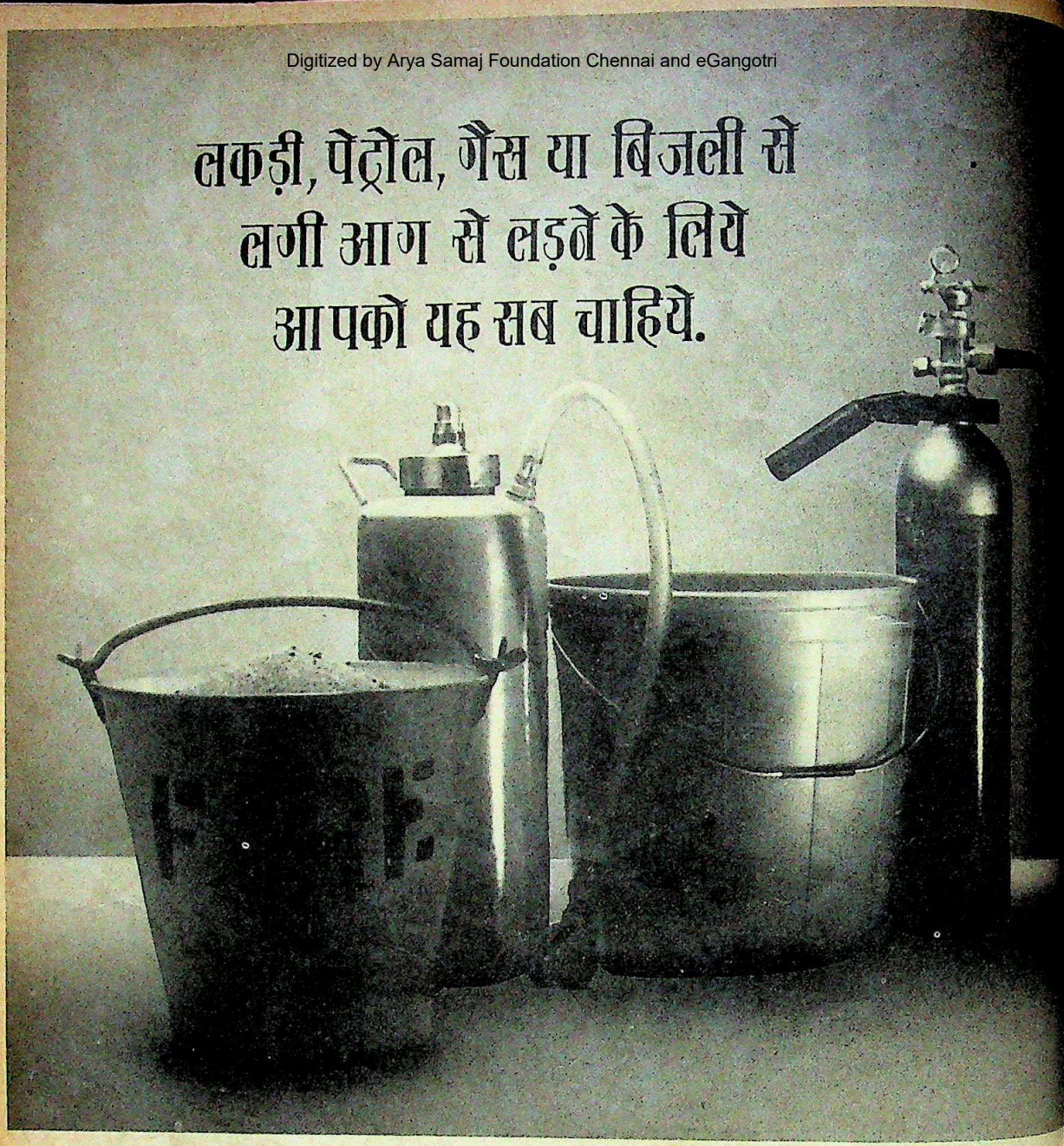

आग की हर श्रेणी के लिये अलग-अलग आग बुझाने के साधनों की ज़रूरत पड़ती है. दरअसल गलत साधन का इस्तेमाल ख़तरनाक हो सकता है.

मसलन, बिजली से लगी आग पर पानी फेंकने से बिजली का झटका लग सकता है. और पेट्रोल से लगी आग पर पानी फेंकने से आग और फैलती है. और पानी पर आधारित सोडा ऐसिड वाले यंत्र में भी पानी की ही ख़ामियाँ होती हैं.

अक्सर ज़्यादातर ऑफ़िसों में बी और सी श्रेणियों की आग बुझानेवाले यंत्र होते हैं, जबकि ज़्यादा बड़ा ख़तरा ए श्रेणी की आग का होता है.

इसीलिये आपको चाहिये सीजफ़ायर. यह है तो छोटा-सा पर जबरदस्त शक्ति से भरपूर, जो हर श्रेणी की आग से लड़ने के लिये तैयार है.

यह इस्तेमाल में आसान है. बस इसका मुँह लपटों के निचले हिस्से की ओर करके नॉज़ल दबाइये.

सीज़फ़ायर किसी दुकान में उपलब्ध नहीं है. कुछ दिनों में हमारा प्रतिनिधि आपके यहाँ आकर इसका प्रदर्शन करेगा. या हमें लिखें या फ़ोन करें.

हेड ऑफ़िसः *डायरेक्ट मार्केटिंग प्रा. लि., ८०१/२, तुलसियानी चेम्बर्स, नरीमन पॉइंट, बम्बई-४०० ०२१. टेलि.: २४१९३९/२३२८९८.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

या सिर्फ़ यह.

इसमें है हेलॉन 1211, संसार का सबसे शक्तिशाली आग बुझाने का साधन. ► इसे दोबारा भरने या सर्विसिंग की कोई ज़रूरत नहीं. ► मामूली आग बुझाने के यंत्रों की तरह नाज़ुक इलेक्ट्रोनिक उपकरणों को नुकसान नहीं पहुँचाता. ► इसकी पहुँच मामूली आग बुझाने के यंत्रों की दोगुनी है. ► इसकी कीमत है सिर्फ़ रु. ३६०/- मामूली आग बुझाने के यंत्र की एक तिहाई!

ज़बरदस्त शक्ति आपकी मुट्ठी में

क्षेत्रीय ऑफिस: **कलकत्ता:** टेलि.: ४६३९६५. **नई दिल्ली:** टेलि.: ५७२२२४०, ५७३०५२४. **मद्रास:** टेलि.: ६१२२६०. **शाखाएँ:** **चंडीगढ़:** टेलि.: २०१५२. **कानपुर:** टेलि.: ६१८१३. **पटना:** टेलि.: ३१३०२. **अहमदाबाद:** टेलि. द्वारा: ७९४१७. **इंदौर:** टेलि.: [illegible] **बैंगलूर:** टेलि.: [illegible] **कोचीन:** टेलि.: [illegible] **हैदराबाद:** टेलि.: २३१९५२.

TAGORE CREY DM 7 90 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

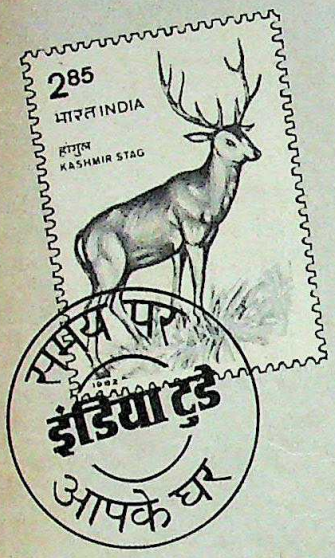

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

रंजिंदर पुरी, न्यूजटाइम

● यदि टीवी पर मेरे चेहरे से उबकाई आने लगे तो मुझे चिट्ठी भर लिख भेजिए, मैं उसे बंद करा दूंगा. ■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह,** *नई दुनिया*

● अब अगर साक्षात काल भी मेरे सामने आएगा तो मैं अपनी उम्मीदवारी वापस नहीं लूंगा.

■ **हुकुमदेव नारायण यादव** (जनता दल अध्यक्ष पद के उम्मीदवार), *हिंदुस्तान*

● यह पार्टी का आतंरिक मामला (अध्यक्ष का चुनाव) है. मुझे समझ में नहीं आता कि इसे लेकर वे लोग इतनी हायतौबा क्यों मचा रहे हैं.

■ **बीजू पटनायक,** *राजस्थान पत्रिका*

● जब तक हजारों लोग रोज रात को चारपाई पर मेरा नाम याद करके करवटें न बदलें तब तक मुझे तसल्ली नहीं होती. ■ **ओमप्रकाश चौटाला,** *नवभारत टाइम्स*

● विश्वनाथ प्रताप सिंह का गला गिरवी है भाजपा के यहां. भाजपा का इशारा होता है और विश्वनाथ प्रताप की जबान बोल उठती है.

■ **एम.जे. अकबर,** *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

● यदि महाभारत (भारत-पाक युद्ध) होनी ही है अब हो जानी चाहिए. द्रौपदी का बहुत चीरहरण हो चुका है. ■ **शांता कुमार,** नई दिल्ली की भाजपा रैली में

● अखबारों ने मेरी आलोचना शुरू कर दी है लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं है कि वे मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, क्योंकि मेरा मतदाता तो अखबार पढ़ता ही नहीं है.

■ **मुलायम सिंह यादव,** *स्वतंत्र भारत*

● मेरे पास इधर कुरता-पायजामा का स्टॉक बढ़ा है. साथी लोग कहते हैं जरा साफ-सुथरा पहनो. हां, चप्पल भी ज्यादा खरीदनी पड़ी है क्योंकि अक्सर ही सभा आदि में मेरी चप्पल चोरी चली जाती है. ■ **लालू प्रसाद यादव,** *दैनिक जागरण*

● यह सर्वोच्च न्यायालय नहीं, केंद्रीय कारागार है. यहां खाली हाथ सलामी भी कबूल नहीं की जाती है. ■ शिवपुर (उ.प्र.) केंद्रीय कारागार का **पहरेदार,** *आज*

● मुझे लगता है जैसे मैं कोई क्रिकेट-पशु हूं.

■ **राजसिंह डुंगरपुर,** *इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया*

● मैं अच्छे रोल के लिए यहां रुकने वाली नहीं हूं क्योंकि मैं समझती हूं कि एक उम्र के बाद लड़कियों को फिल्म में काम नहीं करना चाहिए. ■ **नीलम,** *धर्मयुग*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पाटन के बीच

● सबको खुश रखने, सबको साथ लेकर चलने, संतुलन बनाए रखने में होशियार इन दिनों यों तो प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को ही गिना जाता है मगर इस

करामाती कोशिश में कुछ दूसरे नेता भी जुटे नजर आ रहे हैं.

पिछले दिनों दौरे पर आए जापानी प्रधानमंत्री के सम्मान में आयोजित भोज में उद्योगमंत्री अजित सिंह ने पाया कि वे दो महत्वपूर्ण महिलाओं के बीच बैठे हैं. एक तरफ वी.पी. सिंह की पत्नी सीता देवी थीं तो दूसरी ओर पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पत्नी सोनिया गांधी. अजित सिंह विनम्र और व्यवहारकुशल तो हैं ही. उन्होंने यह तय कर लिया कि दोनों महिलाओं में से किसी को यह एहसास नहीं होना चाहिए कि वे एक की खातिर दूसरी की उपेक्षा कर रहे हैं. चुपचाप बैठे रहना भी खतरनाक था क्योंकि इससे अक्खड़ होने का एहसास होता उन दोनों को.

इसलिए उन्होंने नाजुक संतुलन कायम करने का मन बना लिया, और दोनों ही महिलाओं से बातचीत करने लगे बराबर-बराबर समय देकर. सोनिया से हल्की-फुल्की बात करना आसान था क्योंकि दोनों के ही बच्चे स्कूल-कालिजों में हैं और लगभग सभी अभिभावकों की समस्याएं भी एक-सी होती हैं. लेकिन सीता देवी के बच्चे तो बड़े हो चुके हैं इसलिए बातचीत आम बातों तक सीमित थी. अजित सिंह की व्यवहार-कुशलता का प्रमाण यह था कि वे इस बातचीत से राजनीति को अलग रखने में भी सफल रहे.

काफिले में दमकल भी

● राजधानी में गरमी का मौसम क्या उतरा कि चारों ओर लपटें ही उठने लगीं. आग की लपटें राजसी समारोहों के स्थल विज्ञान भवन का कबाड़ा करने के बाद दिल्ली के बाजारों और झुग्गी बस्तियों की ओर बढ़ गईं. हर ओर यही कयास लगाया जाने लगा कि इनकी चपेट में आने वाला अगला कौन होगा.

कम-से-कम प्रधानमंत्री के सुरक्षाकर्मी आग से सुरक्षा के मामले में कोई चूक नहीं रहने देना चाहते. लगभग हर रोज प्रधानमंत्री को दिल्ली में दर्जनों सभा-समारोहों में तो जाना ही पड़ता है. और अगर विज्ञान भवन की भव्य इमारत भी सुरक्षित नहीं तो बाकी इमारतों का क्या भरोसा. सो, पिछले पखवाड़े से प्रधानमंत्री के काफिले में एक और वाहन जुड़ गया. अब सुरक्षा वाहनों

सभी कार्टून: अजीत नैनन

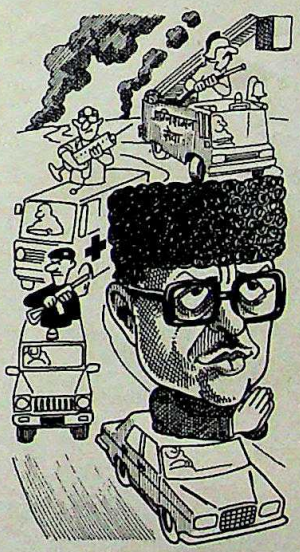

और एंबुलेंस के पीछे-पीछे एक नई दमकल भी चला करेगी.

काम का बंटवारा

● ज्योतिष विद्या के जानकार, वी.पी. सिंह के वफादार आईएएस अधिकारी विनोद पांडे की कैबिनेट सचिव के रूप में नियुक्ति के साथ ही यह अटकल शुरू हो गई कि

सौम्य, मृदुभाषी बी.जी. देशमुख कब तक प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव बने रह पाएंगे. जानकारों का कहना था कि पांडे धीरे-धीरे अनौपचारिक रूप से देशमुख के सारे काम अपने कब्जे में कर लेंगे. पांडे ने पद संभालते ही कश्मीर और पंजाब जैसे संगीन मसलों को अपने हाथ में लेना शुरू भी कर दिया था.

लेकिन वी.पी. सिंह ने पांडे को थोड़ा कसने का फैसला किया. और देशमुख का कार्यकाल, जो 31 जुलाई को समाप्त होने वाला है, आगे बढ़ा दिया. दोनों अधिकारियों के कार्य-क्षेत्रों का साफ विभाजन कर दिया गया है. अब देशमुख संगीन मसलों के अलावा असम में उल्फा आंदोलन और तमिलनाडु में एलटीटीई के द्वारा उत्पन्न समस्याओं की देखरेख करेंगे. उधर, पांडे तबादलों, सरकार के भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम की देखरेख तो करते ही रहेंगे, यह भी देखेंगे कि अफसरशाही के ढांचे में राजा के वफादारों का वर्चस्व बना रहे.

नई तहजीब

● प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का गरमी में भी 'फर' की टोपी पहने रहना, उप-प्रधानमंत्री देवीलाल का ठेठ हरियाणवी अंदाज में कामकाज करना तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव का अंग्रेजी के खिलाफ जहर उगलना—इन उदाहरणों से कुछ लोगों को लग सकता है कि यह जो नई केंद्रीय सरकार आई है उसने ठेठ लट्ठ-गंवई संस्कृति को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है. ऐसा मानने वालों के सामने एक और दिलचस्प नजारा पेश होने वाला है.

कल्पना कीजिए कि राष्ट्रमंडल के महासचिव श्रीदत्त रामफल के सम्मान में प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने निजी भोज का आयोजन किया है. इसमें अतिथियों को अत्याधुनिक किस्म के व्यंजन, मसलन चटनी के साथ मांस के चॉप्स, सरसों का

साग, भुना हुआ आलू, खीर, सलाद और वनीला आइसक्रीम आदि परोसे गए हैं.

इसके अलावा और भी कुछ. सभी 21 कुर्सियों के सामने रंग-बिरंगे परिधान में लड़कियां भोजन परोस रही हैं. अब आप उत्सुक होंगे कि इस भोज में शामिल कौन-कौन होंगे. तो दिल थाम लीजिए. इनमें पांच सितारा जाट नेता अजित सिंह, गंवई देवीलाल और शरद यादव जैसे लोग शामिल होंगे.

...और एक चुटकी

रामकृष्ण हेगड़े: आपके ऊपर अब एक कैबिनेट मंत्री आ गया है.
मेनका: मैं तो उन्हें खा जाऊंगी.
हेगड़े: लेकिन आप तो मांसाहारी नहीं हैं.
मेनका: हां, लेकिन उन्हें मैं साग-सब्जी ही मानती हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए 'टाइगर्स'

■ देश में दिन-ब-दिन बढ़ती महंगाई पर अंकुश लगाने में सामाजिक संगठन और राजनैतिक पार्टियां भले ही नकारा साबित हो चुकी हैं लेकिन बिहार के कुछ 'स्वयंसेवी' संगठनों ने अपने यहां

सभी कार्टून: अनिल शर्मा

एक खास किस्म की महंगाई से निबटने का ऐसा अचूक नुस्खा ढूंढ़ निकाला है. इस महंगाई का रिश्ता शादी के बाजार में दूल्हे की आसमान छूती कीमतों से है.

इन दिनों चलने वाले 'बाजार भाव' के मुताबिक कुछ तथाकथित 'ऊंची' जातियों में दूल्हे की ओर से तिलक-दहेज के नाम पर मांगी जाने वाली रकम रिकार्डतोड़ ऊंचाइयों को छूने लगी है. उदाहरण के लिए मिथिलांचल में इन दिनों एमए पास दूल्हे का ताजा भाव एक लाख रुपए से ऊपर जा चुका है जबकि डॉक्टर, इंजीनियर लड़के की कीमत दो-ढाई लाख के बीच है. और आईएएस तथा आईपीएस के मामले में तो यह दाम दस लाख तक भी जा सकता है.

ऐसे में दूल्हेवालों के मुंह पर लगाम लगाने का धंधा भी अब जोर पकड़ता जा रहा है. ऐसे कई संगठन खड़े हो चुके हैं जो पीड़ित वधू पक्ष की समस्या को ठेके पर सुलझाते हैं. उचित 'फीस' मिलने पर इस संगठन के लोग प्रस्तावित दूल्हे का अपहरण कराकर उसकी जबरन शादी रचा देते हैं. पिछले पखवाड़े 'लिबरेशन टाइगर्स ऑफ मिथिला' नाम के ऐसे ही एक संगठन के मुखिया ने एक स्थानीय अखबार को दिए गए इंटरव्यू में दावा किया कि पिछले ढाई साल में उनके संगठन ने 147 लड़कों का अपहरण करके उनकी शादी करवाई.

आगे कुआं, पीछे खाई

■ आम तौर पर लोगों को रेल विभाग से शिकायत रहती है कि वह अपने यात्रियों को आराम और उनके माल-असबाब की सुरक्षा का ध्यान नहीं रखता. इन शिकायतों को ध्यान में रखते हुए कई बार रेल विभाग अपने कर्मचारियों को हिदायतें जारी करता है कि वे यात्रियों की मदद करने का प्रयास करें. लेकिन अफसोस यह है कि बेचारे रेल विभाग की बिगड़ती छवि का पहिया थमने के बदले और आगे चलता चला जाता है. पिछले पखवाड़े मध्य प्रदेश में धमतरी से रायपुर के बीच चलने वाली एक यात्री गाड़ी के गार्ड ने इस पहिये को उलटी दिशा में घुमाकर अपने विभाग की छवि सुधारने कोशिश की. लेकिन अफसोस कि इन कोशिशों का नतीजा उलटा ही निकला.

रायपुर से चली यह रेलगाड़ी कुछ दूर ही गई थी कि चीख-पुकार मचाते हुए एक यात्री ने जंजीर खींच दी. जब गार्ड ने जांच की तो पता चला कि उस यात्री के पान का पिटारा रास्ते में गिर गया है. गार्ड ने फैसला किया कि चूंकि यात्रियों के माल-असबाब की सुरक्षा की जिम्मेदारी रेल विभाग की है इसलिए रेलगाड़ी को वापस चलाया जाए. सो, रेलगाड़ी को उस जगह तक वापस ले जाया गया जहां पान का पिटारा गिरा था. अपना पिटारा पाकर यात्री तो

प्रसन्न हो गया. लेकिन अगले स्टेशन पर गार्ड महोदय तब नई परेशानी में फंस गए जब नाराज यात्रियों के एक झुंड ने उन्हें घेर लिया और शिकायत करने लगा कि उनके कारण सबका आधा घंटा खराब हो गया. बेचारा गार्ड!

अनूठा बदला

■ परीक्षा के दिनों में भले ही स्कूल-कॉलेजों में खेलकूद का धंधा मंदा पड़ जाता है लेकिन इसकी जगह परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों और परीक्षकों के बीच आंख-मिचौनी की सालाना प्रति-

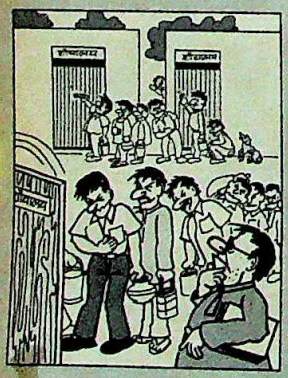

योगिताएं शुरू हो जाती हैं. ये प्रतियोगिताएं अक्सर हिंसक रूप भी ले लेती हैं. लेकिन पिछले दिनों ग्वालियर के एक इलाके में इस प्रतियोगिता ने जो रूप लिया वह अपने आपमें अनूठा उदाहरण है.

यहां के एक हाई स्कूल में परीक्षा देने वाले एक विद्यार्थी को नकल करने से रोकने के लिए एक परीक्षक ने इतनी सख्ती बरती कि अपनी सारी होशियारी के बावजूद वह नकल नहीं कर पाया. केवल नकल के ही भरोसे पूरा साल ऐश करने वाले किसी विद्यार्थी के साथ भला इससे अधिक बुरी क्या घटना घट सकती थी. लिहाजा, सदमे के मारे इस विद्यार्थी ने भी बदला लेने का फैसला कर लिया. अगले दिन परीक्षा शुरू होने से पहले उसने पूरे परीक्षा भवन में लड्डू बांटे. लड्डू बांटते समय उसने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि कोई परीक्षक या वहां तैनात पुलिसवाले इस 'प्रसाद' से वंचित न रह जाएं.

विद्यार्थी की इस दरियादिली का राज खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी क्योंकि लड्डुओं में मिलाए गए जमालगोटे ने जब असर दिखाना शुरू किया तो वहां के शौचालय के बाहर लंबी कतार लग गई. परीक्षा भवन में फैली इस अफरातफरी को देखकर स्कूल के प्रिंसिपल ने इस छात्र के खिलाफ पुलिस में रपट दर्ज कराई लेकिन तब तक वह वहां से अपना पर्चा देकर रफूचक्कर हो चुका था.

फिसलन का कमाल

■ सरकारी बाबुओं की कलम में ऐसी ताकत है कि वह भले ठीक रास्ते परे चले या इधर-उधर फिसल जाए, हर मामले में वह कमाल दिखाने की हैसियत रखती है. और फिसलन का यह कमाल किसी बुजुर्ग पिता को भी परेशानी में डाल सकता है और किसी अच्छे-भले विद्यार्थी को भी माथा पीटने पर मजबूर कर सकता है.

पिछले दिनों पूर्णिया के गांधीनगर में रहने वाले एक अवकाशप्राप्त पुलिस सब-इंस्पेक्टर महोदय की तब सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई जब बैंकिंग सेवा आयोग ने उन्हें निर्देश लिख भेजा कि फलां तारीख को आकर परीक्षा दीजिए. लेकिन इससे पहले कि वे कॉपी-किताबें लेकर परीक्षा की तैयारी में जुटते मामले ने एक और गंभीर मोड़ ले लिया. पता चला कि परीक्षा के लिए आवेदन तो उनकी बेटी ने किया था पर बुलावा पिता को आ गया. लेकिन इस बाबू की कलम का कमाल देखिए कि इस फिसलन ने दोनों में से एक को भी परीक्षा देने लायक नहीं छोड़ा.

और पटियाला के पंजाबी विश्वविद्यालय में तो एक क्लर्क की गलती ने हिंदी के एक छात्र को अर्थशास्त्र में पास घोषित कर दिया. इस छात्र की पिछले साल की परीक्षा का परिणाम फीस न जमा कराने के आरोप में रोक लिया गया था. छात्र की ओर से

फीस संबंधी प्रमाण जमा कराने और लंबी दौड़धूप के बाद इस साल परीक्षा परिणाम तो जारी कर दिया गया लेकिन उसे हिंदी के बदले ऐसे विषय में पास घोषित कर दिया गया जिसमें उसने परीक्षा ही नहीं दी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

U S H A

नए दशक के नए अंदाज़

अब भविष्य के नए-नए रंग और रूप आपके घर में – उषा के उत्कृष्ट, आधुनिक, कम्प्युटर-डिज़ाइन पंखे – स्टैला, पल्सर, कोहिनूर..... ऐसी विस्तृत रेंज!

40 वर्षों से अधिक की अग्रणी उत्तमता से गढ़े, भारत और विश्व के 60 अन्य देशों में नई हवाएँ लाने वाले पंखे। आपके उषा पंखे!

उषा

भारत का सर्वाधिक बिकने वाला पंखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चन बंधु

खातों पर फिर खोजी नजर

अमिताभ बच्चन और उनके भाई अजिताभ की वित्तीय अनियमिताओं की जांच वाणिज्य मंत्रालय तथा आयकर विभाग ने शुरू कर दी

विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार ने उम्मीद के मुताबिक बच्चन बंधुओं के वित्तीय और व्यापारिक मामलों पर हल्ला बोल दिया है. पिछले कुछ साल के दौरान उन पर अनियमितताओं के जो आरोप लगे हैं, सरकार ने उनसे संबंधित पुराने मामले खोलने के साथ-साथ अनेक स्तरों पर नई जांच भी बिठाई है. कई मंत्रालयों ने फिल्म अभिनेता अमिताभ और स्विट्जरलैंड में जा बसे उनके भाई अजिताभ को लगभग एक साथ आयकर और विदेशी मुद्रा कानूनों के उल्लंघन के नोटिस भेजे हैं.

शुरुआत वाणिज्य मंत्रालय ने की. पिछले महीने के आखिर में उसने आयात एवं निर्यात के मुख्य नियंत्रक को बच्चन बंधुओं की दवा कंपनी के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए जांच का आदेश दिया. इस कंपनी पर निर्यात वादे को पूरा न करने का आरोप है.

प्रशांत पजियार

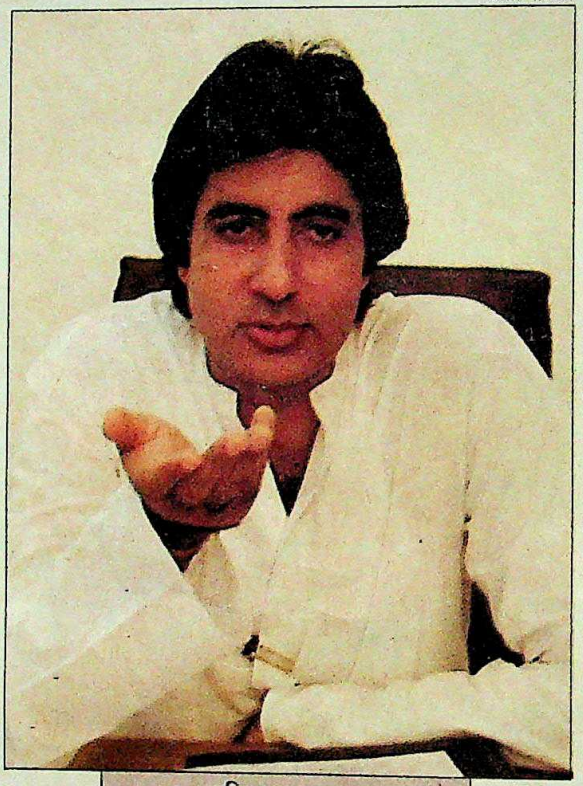

अमिताभ बच्चन

सबसे ताजा कदम वित्त मंत्रालय ने उठाया. 7 मई को प्रवर्तन निदेशालय के स्थायी वकील राजीव नैयर ने 'फेरा' बोर्ड से अजिताभ के खिलाफ पुराना मामला फिर से खोलने को कहा. यह मामला मार्च 1986 में स्विट्जरलैंड में 45 लाख रु. लागत से फ्लैट खरीदने का है.

सरकार की इन कार्रवाइयों से चारों ओर बच्चन विरोधी माहौल बनने में मदद मिली. बंबई में आयकर विभाग के सहायक आयुक्त ए.डी. मेहरोत्रा ने अमिताभ के आयकर ब्यौरे की 10 साल पुरानी फाइलें खोल दीं. प्राथमिक विभागीय रिपोर्ट में आयकर विभाग इस फैसले पर पहुंचा कि अमिताभ ने 1976 से 1987 तक अपनी करीब 3.2 करोड़ रु. की आय को (देखें चार्ट) छिपाया है. इस घोटाले में बच्चन का फार्म भी आता है जिसे बाजार भाव से कम की

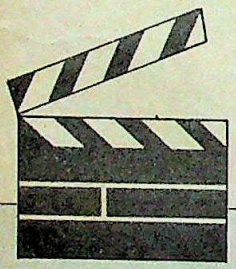

अमिताभ की फिल्में	वर्ष	प्राप्तियों का खुलासा 45%	अतिरिक्त आय का आकलन*
अदालत, आलाप, अमर अकबर एंथनी, ईमान धरम, खून पसीना, परवरिश	1976-77	4,34,005	5,30,450
बेशरम, डॉन, गंगा की सौगंध, कसमे वादे, त्रिशूल, मुकद्दर का सिकंदर	1977-78	6,82,337	8,83,967
जुर्माना, काला पत्थर, मि. नटवरलाल, राम बलराम, सुहाग, द ग्रेट गैंबलर	1978-79	15,60,313	19,07,459
दो और दो पांच, दोस्ताना, शान, नसीब	1979-80	24,94,883	30,49,301
बरसात की एक रात, लावारिस, सिलसिला, याराना	1980-81	37,88,789	46,30,742
बेमिसाल, देशप्रेमी, खुद्दार, नमक हलाल, सत्ते पे सत्ता, शक्ति	1981-82	18,25,000	22,30,556
कुली, महान, नास्तिक, पुकार, अंधा कानून,	1982-83	30,48,501	37,25,946
इनकलाब, शराबी	1983-84	39,64,271	48,45,220
मर्द	1984-85	68,23,393	83,39,702
शहंशाह, गंगा जमना सरस्वती	1987-88	16,62,224	20,31,607

*कर अधिकारियों द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमत का दिखाया गया है.

तीन साल से चल रहा अजिताभ के फ्लैट का मामला नई जांच में फिर उभर रहा है. इस मामले का भंडाफोड़ सबसे पहले 17 जून 1987 को 'इंडियन एक्सप्रेस' ने किया था. 'फेरा' कानून के उल्लंघन के मामले में प्रवर्तन निदेशालय की नोटिस के जवाब में अजिताभ ने दावा किया था कि वे आप्रवासी भारतीय हैं और यह फ्लैट उन्हें उनके स्विस नियोक्ता आर्कोफार्मा से मिला है.

दस्तावेजों से पता चलता है कि पिछली सरकार के दौरान निदेशालय ने अजिताभ के आप्रवासी भारतीय होने के दावे को खारिज कर दिया था (देखें बॉक्स) पर तत्कालीन विशेष निदेशक कृष्णकांत ने इस फैसले को दरकिनार कर दिया.

लेकिन इस बात को लेकर काफी भ्रम था कि अजिताभ कब से आप्रवासी भारतीय बने और क्या वे विदेशी मुद्रा का लाभ कमाने के हकदार हैं. मसलन, अजिताभ की नुमाइंदगी करने वाली चार्टर्ड एकाउंटेंट कंपनी नटवरलाल वेपारी ऐंड कंपनी ने 1987 में निदेशालय को लिखा, "हमारे मुवक्किल ने हमें यह बताने का निर्देश दिया है कि 1 सितंबर 1986 से वे मेसर्स आर्कोफार्मा लि. को परामर्श सेवा देते आ रहे हैं और आर्कोलैब में उन्हें प्रबंधकीय एवं कार्यकारी पद भी मिला हुआ है."

इससे कुछ गंभीर सवाल उठ खड़े हुए. अगर अजिताभ के इस दावे को मान लिया जाए कि उन्होंने 28 फरवरी को आर्कोफार्मा के साथ समझौते पर दस्तखत किए, तब भी दस्तावेजों से पता चलता है कि वे उसी महीने भारत लौट आए थे, और समझौते के अनुसार उन्हें सितंबर से भुगतान मिलना शुरू हुआ. इससे यही जाहिर होता है कि अजिताभ ने न तो आप्रवासी बनने की उस जरूरी योग्यता को हासिल किया जिसके अनुसार आप्रवासी बनने का दावा करने के पहले भारतीय मूल के किसी भी व्यक्ति को कम-से-कम 180 दिन तक देश से बाहर रहना होता है, और न ही सितंबर तक उन्हें समझौते से कोई भुगतान ही मिला. इसलिए मुख्य विवाद यह बचा कि अगर अजिताभ कानूनन आप्रवासी भारतीय नहीं थे और सितंबर तक उन्हें स्विस कंपनी से कोई भुगतान नहीं मिला तो मार्च में उन्होंने स्विट्जरलैंड में फ्लैट कैसे ले लिया?

लेखा कंपनी ने 14 दिसंबर 1987 को इसके जवाब में कहा, "यह हमारे मुवक्किल द्वारा दिए गए निर्देश को गलत समझ लिए जाने की वजह से हुआ है."

कृष्णकांत के फैसले पर उंगली उठाने के सरकार के ताजा कदम से एक और घपला उजागर हो गया. सितंबर 1986 में स्विट्जरलैंड में जा बसने के पहले छह महीने से भी ज्यादा समय तक अजिताभ अपने और अपने परिवार की मिल्कियत वाली कई भारतीय कंपनियों से वेतन और सुविधाएं लेते रहे. पर इस दौरान भी उन्होंने खुद को आप्रवासी घोषित कर रखा था. कानूनन कोई भी भारतीय आप्रवासी सरकार की इजाजत के बगैर किसी भारतीय कंपनी से वेतन आदि नहीं ले सकता. इसके अलावा, अजिताभ जिस व्यापारिक दौरे पर विदेश गए थे उसके लिए विदेशी मुद्रा उनकी भारतीय कंपनियों ने दी थी. कानून के मुताबिक कोई आप्रवासी भारतीय विदेशी मुद्रा पाने का हकदार नहीं माना जाता.

इसके पहले निदेशालय के नोटिस के जवाब में अजिताभ ने स्वीकार किया कि वे 1986 में अपने कई कामों को अंतिम रूप से 'निबटाने' भारत आए थे. पर दस्तावेजों से पता चलता है कि पहले वे मार्च से जून तक और फिर जुलाई से सितंबर तक भारत में ही रहे. इस तरह उन्होंने भारत में 160 दिन बिताए और आप्रवासी भारतीय की हैसियत पाने की योग्यता खो दी.

नई याचिका में आरोप लगाया गया है कि अगर इस दौरान उनके द्वारा घोषित आय को ही सही मान लिया जाए तो भी उनका खर्च आमदनी से कहीं ज्यादा बैठता है. मसलन, 1987 के आखिर में अजिताभ ने कहा था कि वे स्विस स्कूलों में पढ़ रहे अपने चार बच्चों का सालाना 90,000 स्विस फ्रांक का खर्च उठा रहे हैं. पर अब यह सवाल उठाया जा रहा है कि अगर उनकी कुल आमदनी 1,00,000 स्विस फ्रांक ही थी तो वे 10,000 स्विस फ्रांक सालाना पर ही कैसे गुजर-बसर कर रहे थे. उन्होंने दो स्विस कंपनियों आर्कोलैब और आर्कोफार्मा में 'मोटी हिस्सेदारी' कैसे हासिल की?

पिछली सरकार की

गौरवी गजराज

अजिताभ बच्चन

आरोप

- स्विट्जरलैंड में उनके नाम से फ्लैट रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की अनुमति के बिना खरीदा गया.
- उन्होंने फ्लैट के स्वामितत्व से संबंधित कागजात भारतीय अधिकारियों को नहीं दिए हैं.
- आप्रवासी भारतीय होने का दावा करके वे पर्यटन और व्यापार के वास्ते भारतीय सूत्रों से विदेशी मुद्रा भी लेते रहे.
- वे 28 फरवरी 1986 से 10 सितंबर 1986 के दौरान 194 में से 160 दिनों तक भारत में रहे.
- विभिन्न भारतीय कंपनियों में निदेशक थे.
- वे स्विट्जरलैंड सहित कई देशों की यात्रा भारतीय पर्यटक और व्यापारी के रूप में करते रहे.

जवाब

- उनके नाम से फ्लैट उनके मालिकों ने खरीदा और पैसा भी उन्होंने ही दिया.
- मेसर्स आर्कोफार्मा को स्विस बैंकों की तरफ से हिदायत थी कि वह स्वामित्व के कागजात किसी को भी नहीं दिखाए.
- उनकी कंपनियों ने आप्रवासी भारतीय के रूप में उनकी वास्तविक स्थिति जाने बिना ही उनकी यात्राओं के लिए विदेशी मुद्रा ली.
- पर्यटक या व्यापारी के रूप में उनकी विदेश यात्राओं की बात केवल मामूली भूलें हैं. और इनसे इनकी आप्रवासी हैसियत में कोई ठोस अंतर नहीं आता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाइलों से जाहिर होता है कि निदेशालय की ढेर सारी आपत्तियों के बावजूद कृष्णकांत ने न सिर्फ अजिताभ को आरोप मुक्त करके बल्कि उनकी कुछ भारतीय कंपनियों पर छोटे-मोटे दंड थोपकर बड़े मामलों को छोड़ दिया. नई सरकार जानती है कि कृष्णकांत ने यह सब अपने फैसले को विश्वसनीयता का जामा पहनाने के लिए किया. मसलन, बच्चन परिवार की दवा कंपनी आईपीसीए पर मार्च 1986 से अगस्त 1986 तक अजिताभ को 80,650 रु. वेतन देने के लिए 12,000 रु. का दंड थोपा गया. उनके विदेश दौरे पर 1,220 डॉलर खर्च करने के लिए 2,500 रु. का एक और दंड लगाया गया. इसके अलावा, बच्चन परिवार की एक और कंपनी लोटस इन्वेस्टमेंट पर 5,000 रु. का दंड इसलिए लगाया गया कि उसने अजिताभ को 30,000 रु. उस समय दिए वे जब भारत में ही रह रहे थे. हैरानी की बात यह है कि इनमें से किसी भी कंपनी ने दंड के खिलाफ अपील नहीं की. कृष्णकांत के इन जुर्मानों से फरवरी 1986 के बाद से अजिताभ के आप्रवासी भारतीय होने की पुष्टि ही हुई.

इतना ही नहीं, निदेशालय ने न्याय निर्णय अधिकारी—इस मामले में कृष्णकांत— के फैसले के खिलाफ 'फेरा' अपील बोर्ड में अपील करने की प्रक्रिया को भी नजरअंदाज कर दिया. इसके बदले सचिव गोपी अरोड़ा से सलाह मांगी कि अपील की जाए या नहीं. अरोड़ा ने उन्हें तत्कालीन महाधिवक्ता ए. पाराशरन की कानूनी सलाह लेने को कहा. यह फाइल उनके दफ्तर में 14 महीने तक पड़ी रही और फिर लोकसभा चुनाव के दो दिन पहले इस सलाह के साथ वापस आ गई कि यह मामला अपील करने के लिए उपयुक्त नहीं है. पर नई सरकार ने इस फाइल को नए महाधिवक्ता सोली सोराबजी के पास भेजा जिन्होंने मामले को फिर से खोलने की सिफारिश की.

वित्त विभाग के जासूस अभी अजिताभ के विगत की छानबीन कर ही रहे थे कि आयकर अधिकारी अमिताभ के आयकर ब्यौरों और उनके बारे में अधिकारियों द्वारा किए गए फैसलों की पड़ताल में जुट गए. पिछले कई वर्षों से आयकर अधिकारी विभागीय टिप्पणियों में इस बात पर संदेह व्यक्त कर रहे थे कि यह सुपरस्टार अपनी फिल्मों से होने वाली असल आमदनी को जाहिर नहीं कर रहा है.

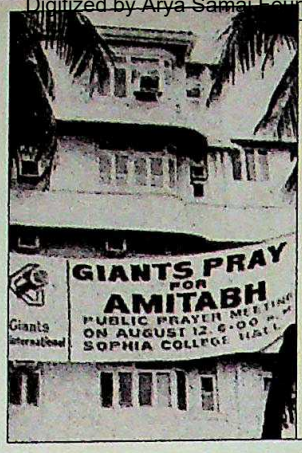

अमिताभ ने ब्रीच कैंडी में हुए अपने लंबे इलाज का सिर्फ 35,000 रुपए बताया है

अमिताभ के स्वस्थ होने की कामना करता बैनर

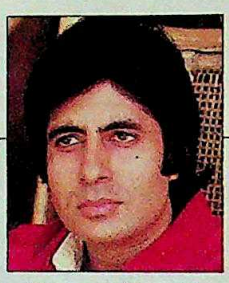

अमिताभ की दलील

- **आयकर की जांच-पड़ताल राजनीति और प्रतिशोध की भावना से प्रेरित है. वे नियमित रूप से अपनी आय का ब्यौरा देते रहे हैं.**
- **दस बरस पहले की उनकी आय का ब्यौरा खोलकर आयकर विभाग के अधिकारियों ने केवल उनको ही अपना निशाना बनाया है.**
- **आयकर अधिकारियों ने उन्हें आरोपों का जवाब देने और सबूतों की जांच-पड़ताल करने के लिए उचित समय भी नहीं दिया.**
- **वे उन चंद फिल्मी सितारों में से एक हैं जिन पर आयकर की कोई रकम बकाया नहीं है.**

मजेदार बात यह है कि अमिताभ ने अपनी छिपाई गई आमदनी को सफेद धन में बदलने की कोशिश राजीव गांधी के शासनकाल में की. वी.पी. सिंह के राजीव सरकार छोड़ने के एक साल बाद अमिताभ ने संशोधित आयकर ब्यौरा पेश किया, जिसमें उन्होंने स्वीकार किया कि 1976 से 1988 के बीच उन्हें 35 लाख रु. की अतिरिक्त आमदनी हुई. 1988 में जमा कराया गया यह ब्यौरा बिना किसी हीले हवाले के स्वीकार हो गया.

नई सरकार के आदेश के बाद यह सवाल भी खड़ा होता है कि अमिताभ और उनके परिवार के भारी चिकित्सा खर्च व विदेश यात्राओं के खर्चों की जांच में कनिष्ठ अधिकारियों के सुझाव को ए.एस. थिंड समेत सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने क्यों नजरअंदाज कर दिया.

आयकर अधिकारी अब अमिताभ के उस ताजा इंटरव्यू का हवाला देते हैं जिसमें अमिताभ ने कहा है कि वे अपनी मांसपेशियों की जटिल बीमारी की जांच के लिए हर तीन महीने बाद विदेश जाते हैं. विभाग ने उनसे इस खर्च का ब्यौरा मांगा है. अमिताभ के चार्टर्ड एकाउंटेंट का कहना है, "इंटरव्यू में जो कहा गया है, जरूरी नहीं कि वह सच हो या जिस पर आयकर विभाग भरोसा कर सके. ऐसे इंटरव्यू में दिया गया बयान तथ्यात्मक नहीं भी हो सकता या बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया भी हो सकता है."

आयकर अधिकारियों के अनुसार अमिताभ ने मई 1980 से सितंबर 1983 के बीच कई विदेश यात्राएं कीं. अमिताभ का दावा है कि उनका खर्च अमेरिका में रहने वाले कीर्ति त्रिवेदी ने दिया था, जो विदेशों में उनके कार्यक्रमों के संयोजक भी हैं. अधिकारी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इन यात्राओं के लिए हुए भुगतान को भी उनकी आमदनी में शामिल किया जाना चाहिए.

बच्चन बंधुओं ने अभी तक आयकर विभाग के खिलाफ मोर्चा नहीं बांधा है. पिछले महीने जब उन्हें उनके खिलाफ प्रकाश मेहरा और दूसरे लोगों के बयानों पर जिरह के लिए बुलाया गया तो वे हाजिर भी नहीं हुए. उनका कहना था कि 48 घंटे का नोटिस काफी कम समय है.

अमिताभ ने फिलहाल राजनैतिक तरीके से लड़ने का रास्ता अपनाया है. पिछले कुछ महीनों से वे और उनके भाई सरकार पर राजनैतिक बदले की भावना से काम करने का आरोप लगा रहे हैं. अमिताभ ने तो प्रधानमंत्री को एक चिट्ठी भी लिखी है जिसमें उनसे या तो आरोप साबित करने वरना माफी मांगने को कहा गया है. अमिताभ अखबारी लड़ाई के दांव भी चल रहे हैं. अगर उनका दामन साफ होता तो वे सरकार से सीधे दो-दो हाथ कर लेते. पर सरकार को आशंका है कि उनकी फिल्मों की तरह उनके खाते भी बहुरंगी हैं. उनका परिवार चूंकि राजीव का बहुत करीबी रहा है, इससे बच्चन बंधुओं को एक सांत्वना तो मिलती ही है. वह यह कि अगर उनके खिलाफ वित्तीय अनियमितताओं के आरोप सही साबित हो भी गए तो पूर्व प्रधानमंत्री की ही भद पिटेगी और खुद उन दोनों का मामला पीछे चला जाएगा. —प्रभु चावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विंडो फैशन-90

डिज़ाइनर ड्रेपरी रॉड

जी हां हाज़िर है!

विस्टा लेवोलोर-90 के दशक का विंडो फैशन।

विस्टा लेवोलोर आपकी खिड़कियों की पूरी सुंदरता उभार कर उनमें एक नया निखार ला देता है। नवीनतम डिज़ाइन और विदेशों से मंगाई गई प्रणालियां। इस पर विविधता इतनी कि हर किसी को भा जाए।

विस्टा लेवोलोर ड्रेपरी रॉड्स भारी भरकम और चौड़े पेल्मेट का सुन्दर सटीक विकल्प हैं। दिलकश और टिकाऊ लैकर्ड रिंग और नॉब से सुसज्जित इनको पॉलिश करने की भी जरूरत नहीं पड़ती! रिंग तीन मॉडलों में उपलब्ध! जबर्दस्त सुनहरी अदा या फिर शांत सौम्य अदा के लिए।

विंडो फैशन की अन्य अदाएं:
विस्टा लेवोलोर वर्टिकल ब्लाइंड्स: केवल हम ही उपलब्ध कराते हैं आपको 2", 3", 4", 5" चौड़ाई के लूव्रे।

विस्टा लेवोलोर वेनेशियन ब्लाइंड्स: इस्तेमाल में आसान। 85 से अधिक मनमोहक रंगों में उपलब्ध

Vista LEVOLOR

विंडो फैशन में नई क्रांति

हम कभी भी, दिन हो या रात, आपकी विंडो ड्रेसिंग लगा जाएंगे। आप बस हमें बुला भेजिये! इस बीच विंडो फैशन-90 के दशक में विषय पर मुफ्त पुस्तिका के लिए लिखें।

फेल्प्स टेक्सटाइल्स प्रा. लि. का उत्पाद। **मुख्य कार्यालय:** बी/4, डी-3, शॉपिंग-कम-फैसिलिटी सेंटर, अलकनन्दा, नई दिल्ली-19. फोन: 6412576, 6413216. फैक्स: 8732627. टेलेक्स: 0592-217. **बम्बई कार्यालय:** 29-30, व
फैशन, हिन्शों वाचा रोड, बम्बई-20. फोन: 221784, 221697.

डीलरों के फोन नंबर: आगरा: सुमन आर्ट्स-62973 (पी.पी.), अहमदाबाद: विज़ोर मार्केटिंग-442180. बंगलौर: फैदरलाइट कलैक्शन-234009, गिरधर बलदेव एण्ड कं.-211343, 215609. बम्बई: मॉडिल कलैक्शन-5114500. कलकत्ता: ऑडि ऑब्ज-448404, 4
कमर्शियल: नैशनल बिज़नेस सिस्टम्स-64100, 52600. चण्डीगढ़: कम्फर्ट मार्केटिंग-43303. कोचीन: स्काइलाईन सिस्टम्स-369827. कोयम्बटूर: इलेक्ट्रो डीज़ल-43595. देहरादून: अभिनंदन इंटीरियर्स-28146. दिल्ली: फ्लोर एण्ड फर्निशिंग-5738138, जगदीश स्टोर-6
हैदराबाद: [illegible] जयपुर: इन्टीरियर इंडिया-49646. जमशेदपुर: फैरब्रो इंटरप्राइज़ेज़-25155. लखनऊ
[illegible] मुम्बई: होम डेकोर-35933. मैसूर: होम डेकोर-[illegible]
[illegible] इंटरप्राइज़ेज़-675598. गाज़ियाबाद: क्लासिक डेकोर-871126. [illegible] नागपुर: नागपुर अल्युमीनियम-46913. पुणे: सुपर डेकोर-4
कटक-242283, 33164. लुधियाना: रेनॉल्ड-28066, वनीत सेल्स-24115. मद्रास: आर्यो एण्ड कं.-453125, 475837, रेखा डेकर-428199, 428250. मैंगलौर: टॉकिज़ मार्केटिंग-26564. मैसूर: डार्ला सेल्स-31473. नागपुर: नागपुर अल्युमीनियम-46913. पुणे: सुपर डेकोर-4
44673. राजकोट: आवरण-44856. सिकंदराबाद: होम डेकोर-823083.

डीलरों से पूछता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेनज़ीर भुट्टो

आत्मघाती मंसूबे

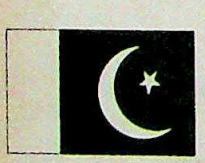

पाकिस्तानी राजनीति के स्तर के लिहाज से यह बहुत छोटी रैली थी. प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो इस्लामाबाद से कोई 30 किमी दूर पोटोहार के पठार पर स्थित मनकियाला में एक इस्पात डिपो का उद्घाटन करने वाली थीं. शासक दल पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पापीपा) द्वारा जुटाई गई भीड़ के सामने बेनज़ीर ने पहले आत्मनिर्भरता पर लंबा भाषण दिया. और फिर कश्मीर पर आ गई.

कश्मीर का नाम सुनते ही भीड़ की मुर्दनी खत्म हो गई. आगे की कतारों में बैठे कार्यकर्ताओं ने नारा लगाया, "लेके रहेगी कश्मीर." भीड़ ने जवाब में हुंकार दी, "बेनज़ीर, बेनज़ीर." प्रधानमंत्री विजयी भाव से कार में बैठीं और रवाना हो गईं. लेकिन वे शायद आशंकित भी थीं क्योंकि पाकिस्तानी राजनीति के नए दौर में उनका कैरियर भले ही बेमिसाल बुलंदी पर पहुंच गया है, दिसंबर 1986 में सत्ता में आने के बाद पहली बार उन पर संकट के बादल भी मंडराने लगे हैं.

उनके बुलंदी पर पहुचने की वजह यह है कि पहले तो उन्होंने कश्मीर के मसले पर चुप्पी साधे रखी और फिर एकाएक गुर्राने लगीं. इससे विपक्ष लगभग मात खा गया और उसके नेताओं में फूट पड़ गई. सिंध की समस्या से भी उन्हें मोहलत मिल गई है. वहां स्थिति इतनी बदतर हो गई थी कि सेना के कब्जे की आशंका व्यक्त की जाने लगी थी. आज पाकिस्तान में जिस तरह से सत्ता बंटी हुई है उसे देखते हुए बेनज़ीर को अपने तख्त को पुराने विरोधियों—सेना और मौलवियों से बचाने के लिए चतुराई दिखानी होगी और किस्मत पर भरोसा करना होगा.

कश्मीर का पत्ता पाकिस्तान में एक बार फिर प्रमुख भावनात्मक मुद्दा बन गया है (देखें साथ की रिपोर्ट). एक तरफ उनके मुख्य विरोधी पंजाब के मुख्यमंत्री नवाज़ शरीफ उनकी आलोचना कर रहे थे कि वे कश्मीर के बारे में कुछ नहीं कर रही हैं. दूसरी तरफ बेनज़ीर ने इस मुद्दे पर अपना अभियान चलाकर सबको चौंका दिया. पाक-अधिकृत कश्मीर की राजधानी मुजफ्फराबाद की अपनी पहली यात्रा के दौरान उन्होंने जगमोहन को भागमोहन बना देने की धमकी देकर हर किसी की शाबाशी पा ली. एक हफ्ते बाद लाहौर में उन्होंने एक लाख की भीड़ के सामने कश्मीरी लड़ाई का नारा 'आजादी आजादी' गुंजाया.

अपने गृहनगर लड़काना में उनका अभियान उस समय चरम सीमा पर पहुंच गया जब उन्होंने कश्मीर के मुद्दे पर भारत से एक हजार साल तक लड़ने की अपने मरहूम अब्बाजान की धमकी दोहराई. विपक्ष तुरन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेनज़ीर (बाएं); और अपमानित भारतीय झंडा

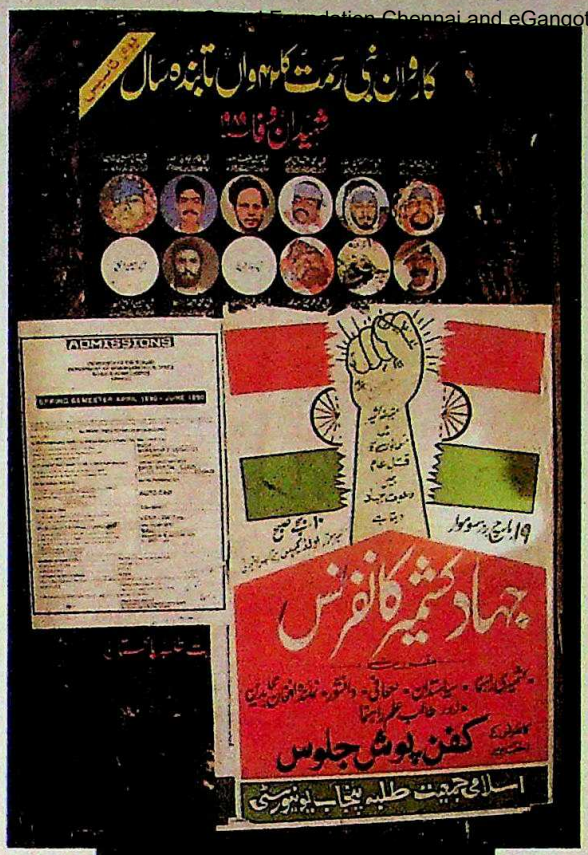

बेनज़ीर ने कश्मीर का पत्ता तो बखूबी खेला है मगर इसके कारण लड़ाई छिड़ी तो उनकी कुर्सी के साथ लोकतंत्र भी जा सकता है

डूबने लग गया कि कश्मीर के मसले पर बेनज़ीर के कहने में छूटा क्या है. भारत के कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करने पर जब अमेरिका ने हस्तक्षेप किया और कूटनयिकों ने दोनों पक्षों को संयम बरतने की सलाह दी तो विपक्ष के हाथ से अपनी स्थिति मजबूत करने का रहा-सहा मौका भी निकल गया. विपक्ष इतना दिग्भ्रमित हो गया कि उत्तर-पश्चिम सरहदी सूबे में, जहां इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद (इजइ) लड़खड़ाती हुई पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी सरकार को आखिरी निर्णायक धक्का देने की कोशिश कर रहा था, उसके स्थानीय नेताओं ने शासक दल का समर्थन करने का फैसला किया. उधर, शरीफ ने कश्मीर मसले पर अपनी और बेनज़ीर की नीति में कोई फर्क न होने की घोषणा की. इजइ के एक वरिष्ठ नेता का कहना था, "बेनज़ीर की रणनीति के चाहे जो दीर्घकालिक नतीजे निकलें, आज हकीकत यह है कि उन्होंने अपने दांवपेच से विपक्ष को पूरी तरह मात दे दी है."

पापीपा ने कश्मीर संकट का पूरा-पूरा लाभ उठाया. बेनज़ीर के अभियान ने पापीपा को 'आजाद कश्मीर असेंबली' के आगामी चुनावों में सरदार क्यूम की मुस्लिम कॉन्फरेंस सरकार के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन करने का कम-से-कम एक मौका तो दे ही दिया है. पाक-अधिकृत कश्मीर में पापीपा के लगे बैनरों पर लिखा है—"कश्मीर की तकदीर, बेनज़ीर." बेनज़ीर के आलोचक भी मानते हैं कि उन्होंने कश्मीर का पत्ता बहुत चतुराई से फेंका है जिससे केंद्र, सिंध और सरहदी सूबे में उनकी स्थिति पहले की बनिस्बत मजबूत हो गई है. उनके समर्थकों का कहना है कि इस स्थिति में वे उपमहाद्वीप को अगर युद्ध के कगार पर भी ले आएं तो यह सोचा-समझा जोखिम भी उठाया जा सकता है.

लेकिन बेनज़ीर ने यह सब अकेले ही हासिल नहीं किया है. जिस सेना को वे कुछ महीने तक फूटी आंखों नहीं सुहाती थीं, वही उनका भरपूर समर्थन कर रही है. दरअसल, लड़ाई के खतरे से सेना को राजनीति के मैदान में फिर कूदने का मौका मिल गया. मशहूर टिप्पणीकार मलीहा लोधी का कहना है, "यदि किसी तरह की राजनैतिक स्थिरता दिख रही है तो इसकी वजह सेना की यह चेतावनी है कि सीमा पर भारत के चढ़ आने के कारण नेताओं की खींचातानी बर्दाश्त नहीं की जा सकती."

इस चेतावनी का राजनीतिकों पर असर

लाहौर में भारत विरोधी प्रदर्शन

एक फोटो: प्रभात पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिख भी रहा है. कराची में मुहाजिर कौमी महाज (मुकौम) और पापीपा समझौता वार्ता में मसरूफ हैं. दोनों की आपसी दुश्मनी के कारण इस साल के पहले चार महीने में सिंध में 376 जानें गईं. राष्ट्रीय स्तर पर भी, नवाज़ शरीफ की इजइ और पापीपा मेल-मिलाप की कोशिश कर रही हैं. विपक्ष इतना दिग्भ्रमित है कि कई असंतुष्ट नेता नेशनल असेंबली की सदस्या सईदा आबिदा हुसैन की अगुआई में 'असली' विपक्षी पार्टी बनाने की सोच रहे हैं. आबिदा कहती हैं, "कुछ लोगों ने मोहतरमा से हार मान ली हो, मैंने नहीं."

हाल की घटनाओं का स्पष्ट संदेश यह है कि पाकिस्तान में नव-स्थापित लोकतंत्र में कोई भी राजनैतिक पार्टी, पुरानी हो या नई, सेना को नजरअंदाज नहीं कर सकती. कश्मीर में तनाव बढ़ना शुरू हुआ तो कई जनरलों ने खुलेआम सुझाव दिया कि गड़बड़ी वाले इलाकों, खासकर सिंध में मार्शल लॉ लगा दिया जाए. इस्लामाबाद स्थित एक पश्चिम कूटनयिक ने कहा, "सेना की चेतावनी ने राजनैतिक नेताओं के दिलो-दिमाग में खुदा का खौफ भर दिया. उन्होंने जनरलों का कोपभाजन बनने की जगह उनकी बातें मानने ही में भलाई मानी, खासकर ऐसी स्थिति में जहां राजनीतिकों के खिलाफ कार्रवाई के लिए सेना को लोगों का समर्थन भी हासिल हो." लेकिन इस प्रक्रिया में पाकिस्तान के लोकतांत्रिक ढांचे की बारीक रूपरेखा और भी धुंधली हो उठी और बेनज़ीर अपनी सेना के आगे झुक गईं.

उनके करीबी सूत्रों का कहना है कि जहां वे अपने विरोधियों की हार का मजा ले रही हैं, वहीं उन्हें अपनी कार्रवाइयों के संभावित नतीजों की चिंता भी सताए जा रही है. एक सूत्र ने माना भी, "इस उपमहाद्वीप में वाक्युद्ध से राजनैतिक सरगर्मी बढ़ गई है. और इस तरह का आवेश किसी को भी नुकसान पहुंचा सकता है, खासकर हमारी जैसी सरकार और देश को, जहां कश्मीर एक प्रमुख भावनात्मक मुद्दा है." बेनज़ीर के सलाहकारों का भी मानना है कि लड़ाई के नतीजे कुछ भी निकलें, वे लड़ाई की संभावना के बारे में चिंतित जरूर हैं क्योंकि इससे उनकी सरकार और लोकतंत्र का खात्मा हो सकता है.

बेनज़ीर के लिए लड़ाई हर सूरत में घाटे का सौदा साबित होगी. हार हुई तो दोष उन्हीं के मत्थे मढ़ा जाएगा और जीत हुई तो उसका श्रेय उन्हें नहीं दिया जाएगा.

बेनज़ीर के कड़े रुख और सेना के हस्तक्षेप से मुख्य विपक्ष भले ही रास्ते पर आ गया है, मगर भावनाओं के उफान (देखें बॉक्स) से दक्षिणपंथी धार्मिक पार्टियों और नेताओं की स्थिति मजबूत हुई है. इनमें ज्यादातर के पास अपनी सेनाएं हैं. बेनज़ीर के लिए खतरा

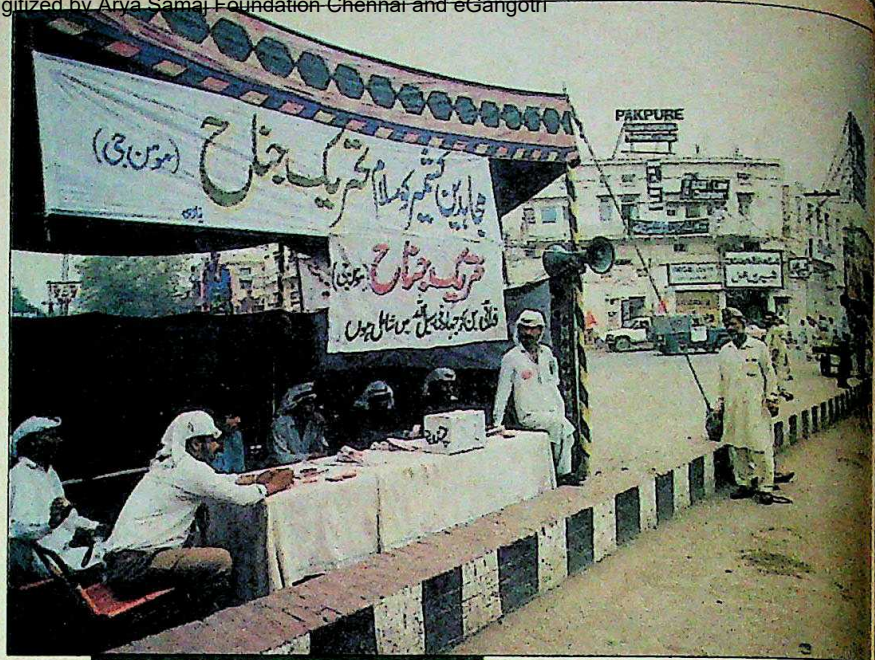

लाहौर में जेहाद फंड के लिए उगाही शिविर

कश्मीर के सवाल पर भावनाओं को भड़काने में बेनज़ीर ने जो भूमिका निभाई है उसके बाद अब उस पर काबू पाना उनके बस की बात नहीं रह गई है

तनवीर अहमद खां

'हम बातचीत चाहते हैं, जंग नहीं'

*पिछले कुछ महीनों में, जब से कश्मीर की स्थिति में बिगाड़ आया है, पाकिस्तान के अपेक्षाकृत नए विदेश सचिव **तनवीर अहमद खां** कश्मीर और भारत के प्रति नीति गढ़ने के मामले में महत्वपूर्ण हस्ती बनकर उभरे हैं. पिछले पखवाड़े उन्होंने सीमा तनावों के बारे में इस्लामाबाद में फीचर संपादक **शेखर गुप्ता** से बातचीत की. कुछ अंश:*

जंग के खतरे के बारे में:

मैं नहीं कहता कि जंग होगी ही. इसे रोका जा सकता है. पर भारत की कार्रवाइयों से हमें लगता है कि उसने जंग का विकल्प छोड़ा नहीं है. मुझे उम्मीद है कि वह अक्लमंदी से काम लेगा और कश्मीर को एक बड़ी इलाकाई जंग का मैदान नहीं बनने देगा. भारत को यह रखना चाहिए कि हम शिद्दत से लड़ेंगे.

फौजी सरगर्मियों के बारे में:

पंजाब में आपकी सरगर्मियां बुनियादी तौर पर सुरक्षात्मक हैं. कश्मीर के अंदरूनी हालात के चलते वहां नई फौजी यूनिटें भेजने की बात तो समझ में आती है पर असम राइफल्स जैसे नए अर्द्धसैनिक बलों को भी भेजा जा रहा है. इसका मतलब है कि नियमित फौज दूसरे काम के लिए आजाद रहेगी. भारत की तीन चौथाई संहारक टुकड़ियां तो सूरतगढ़ इलाके में तैनात हैं. मोर्चे के पीछे वाली यूनिटें भी बहुत चौकस कर दी गई हैं. भारत ने तो इंजीनियरिंग यूनिटें और पेट्रोल तेल के भंडार भी आगे सरका दिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

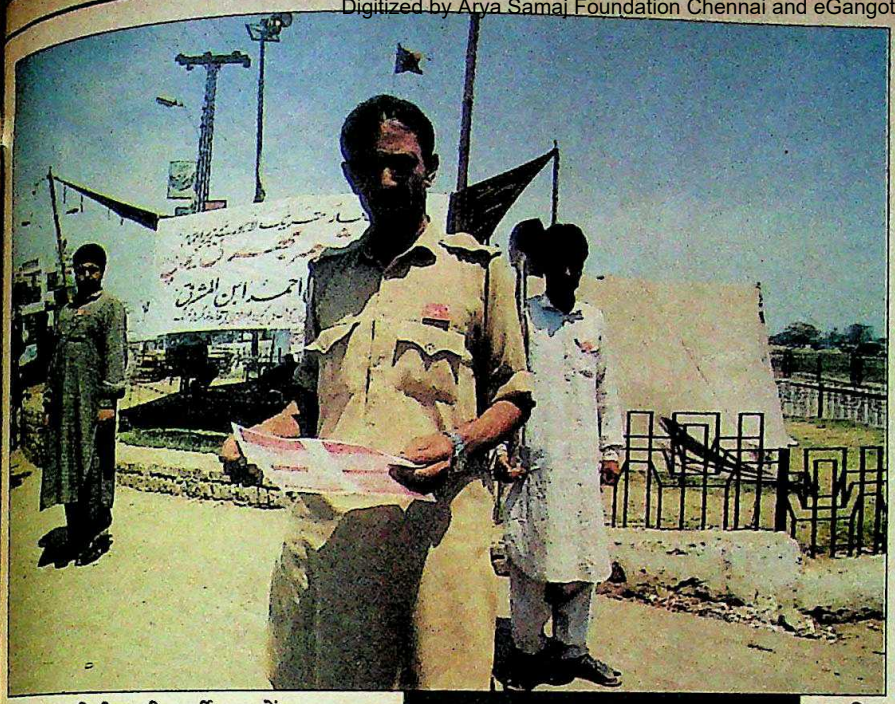

मुजाहिदीन की भर्ती का केंद्र

बात यह है कि जमात-ए-इस्लामी समेत इनमें से कई पार्टियों ने अफगानिस्तान अभियान में सेना और इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के साथ हिस्सा लिया था.

शासकों के हलकों में माना जाता है कि पठान समुदाय के काजी हुसैन अहमद को आईएसआई के इशारे पर ही जमात का प्रमुख बनाया गया क्योंकि वह अफगानिस्तान अभियान चलाने के लिए सरहदी नेता चाहती थी. आज वे लाहौर के पास जमात के सुरक्षित मुख्यालय मंसूरा से कश्मीर का अभियान चला रहे हैं. 52 वर्षीय काजी कश्मीरियों को हथियार देने की बात से इनकार करते हैं पर वे यह दावा जरूर करते हैं कि अफगानिस्तान के एकदम पास रहने वाले मुसलमानों के लिए हथियार कोई समस्या नहीं है. वे कहते हैं, "कश्मीरियों ने कश्मीर के सवाल को फिर खड़ा कर दिया है. उनका समर्थन किया ही जाना चाहिए." हालांकि जमात खुद इजइ की अधिकृत सदस्य है लेकिन कश्मीर पर उसने अपना ही अभियान चलाने का फैसला किया है. बेनज़ीर उसका अभियान रोकने में सफल नहीं हो सकतीं. धार्मिक नेता अभियान पर किस तरह अपनी पकड़ बना रहे हैं यह इस्लामिक विद्वान ताहिरुल कादरी के उत्थान से समझा जा सकता है. उनकी नई पार्टी पाकिस्तान अवामी तहरीक कश्मीर अभियान का पूरा फायदा उठा रही है. उनका मीडिया केंद्र इन रैलियों के वीडियो कैसेट वितरित करता है जिनमें 1965 की जंग के दौरान नूरजहां के गाए देशभक्ति के गीतों से लोगों को उत्साहित किया जाता है.

कश्मीर की 'आजादी' को समर्थन देने के बाद कश्मीरियों को अपने अधीन रखना अब किसी पाकिस्तानी सरकार के लिए मुश्किल हो गया है

बेनज़ीर की अल्पकालिक उपलब्धियां इस बात से भी मिट्टी में मिलती जा रही हैं कि कश्मीर के बारे में कोई चाहे कुछ भी करे, उसे संतोषजनक नहीं माना जाता. मसलन, पाकिस्तानी विदेश कार्यालय ने अपना पक्ष बखूबी रखा है लेकिन बेनज़ीर की यह कहकर आलोचना की जा रही है कि वे कूटनीतिक लड़ाई के शुरुआती दौर में हार गईं. नेशनल असेंबली के पूर्व स्पीकर सईद फख्र इमाम कहते हैं, "भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर परेशान करने का हमें अच्छा मौका मिला था. लेकिन बेनज़ीर उसका लाभ नहीं उठा पाईं."

इन सबसे आहत होकर बेनज़ीर की सरकार ने पिछले पखवाड़े बड़े पैमाने पर अंतरराष्ट्रीय प्रचार और कूटनीतिक अभियान छेड़ने का फैसला किया. उसने विभिन्न देशों की राजधानियों में प्रतिनिधिमंडल भेजे और विद्वानों तथा पत्रकारों को कश्मीर आकर खुद वस्तुस्थिति देखने का न्यौता दिया.

कश्मीर की आजादी का अभियान छेड़ने के बाद बेनज़ीर या किसी भी पाकिस्तानी सरकार को अब कश्मीरियों को अपने पक्ष में रखने में मुश्किल होगी. अभी तक पाकिस्तान यह दलील देकर कश्मीर में रायशुमारी की मांग करता रहा है कि संयुक्त राष्ट्र के

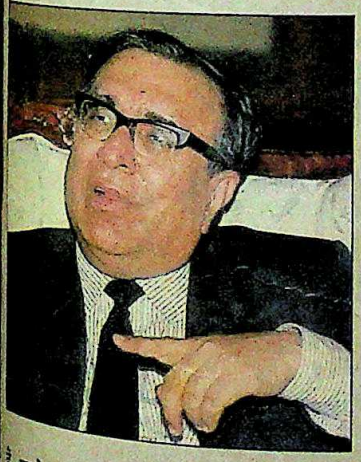

है इससे क्या संकेत मिलता है?

भारत भले ही कहता रहे कि हमारी फौज सरहद के करीब तैनात है पर उसने अभी कूच नहीं किया है. हमने अभी तक सुरक्षा कार्यों का निरीक्षण ही किया है. पर पता नहीं हम कितने वक्त तक सीधी मुठभेड़ टाल सकते हैं. 1987 में भी इसी तरह ही लड़ाई होते-होते बची थी.

भारत हम पर दखलंदाजी की तोहमत लगाता है. हमने कहा इसकी निष्पक्ष जांच करवा लीजिए. पर भारत यह भी नहीं चाहता. जब कोई देश तोहमतें लगाने का हक जताने लगे और फिर उनके सच्चा होने का सर्टिफिकेट भी देने लगे तो क्या किया जा सकता है? मेरा मानना है कि भारत के प्रधानमंत्री और विदेशमंत्री अमन के हामी हैं.

पाकिस्तानी रणनीति के बारे में:

हम अपना मामला दुनिया की बिरादरी के सामने रख रहे हैं. हम दुनिया भर के विद्वानों, पत्रकारों और सांसदों को न्यौता दे रहे हैं कि वे खुद आकर हालात का जायजा लें. यहां तक कि भारतीय सांसदों के प्रतिनिधिमंडल का आजाद कश्मीर में स्वागत करते हुए भी हमें खुशी होगी. हम कश्मीर के बारे में बातचीत करना चाहते हैं, जंग नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1948 के प्रस्तावों में कश्मीरियों के लिए सिर्फ दो विकल्प हैं: या तो वे भारत में मिल जाएं या फिर पाकिस्तान में. लेकिन कश्मीरी उग्रवादियों का एक बड़ा तबका अब इन दोनों से मुक्ति चाहता है, जिसे पाकिस्तान मंजूर नहीं कर सकता. इस विवाद ने तथाकथित 'आजाद कश्मीर' के चुनाव में भी अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है. जहां कई कश्मीरी उम्मीदवार पाकिस्तान सरकार पर कश्मीर को हड़पने की साजिश रचने का आरोप लगा रहे हैं, वहीं दूसरे उम्मीदवार आजादी की मांग करने वालों के खिलाफ अभियान चला रहे हैं. कथित 'आजाद' कश्मीर के प्रधानमंत्री सिकंदर हयात खां कहते हैं, "यह तो खब्त है. रूस, चीन और भारत से घिरा हुआ कश्मीर आजाद मुल्क के रूप में जिंदा नहीं रह सकता."

इस बीच, पाकिस्तान के कट्टरपंथियों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि भारत कश्मीर में उठे बवंडर को शांत करने के लिए लड़ाई की धमकी देकर पाकिस्तान को ब्लैक-मेल करने की कोशिश कर रहा है. टिप्पणी-कार मुशाहिद हुसैन ने कश्मीर में भारत को 'रियायत देने' वाले किसी भी पाकिस्तानी कदम के खिलाफ कड़ी चेतावनी दी है. लेकिन अधिकारियों का मानना है कि युद्ध की स्थिति में भी कश्मीर भारत के हाथ से निकलने वाला नहीं. अखुंड कहते हैं, "दबाव बढ़ते जाने से भारत पाकिस्तान के साथ लड़ाई छेड़ सकता है और उसे कुचलकर कश्मीरियों को यकीन दिला सकता है कि उनका भविष्य पूरी तरह से भारत के साथ जुड़ा हुआ है."

ऐसी स्थिति में बेनज़ीर के सामने दुविधा यह है कि अगर वे कश्मीर के मामले पर ढीली पड़ती हैं तो अपने ही देश में उनकी भद पिटेगी और अगर वे सख्त कदम उठाती हैं तो उन्हें युद्ध की स्थिति का सामना करना पड़ेगा जो शायद वे नहीं चाहतीं. अब सवाल यह है कि इन दोनों में से अधिक जोखिम किसमें है? अगले कुछ हफ्तों में वे जो कदम उठाएंगी, उन्हीं पर इस उपमहाद्वीप का भाग्य टिका है. क्या उनके पास इतना धैर्य और समय है कि वे कश्मीर की घटनाओं को स्वाभाविक रास्ता अख्तियार करने दें? या दबाव के आगे वे झुक जाएंगी?

वे दो लड़ाइयों (1965 और 1971) में अपने मरहूम अब्बाजान के अनुभवों, सत्ता पर अपनी सरकार की कमजोर पकड़ और शायद कुछ हद तक भारत के तेवर से भी सबक ले सकती हैं. और यदि वे इन सबसे सबक नहीं लेना चाहती तो कम-से-कम इस कहावत पर तो गौर फरमा ही सकती हैं कि जिनके अपने घर शीशे के हों, वे दूसरों के घर पर पत्थर नहीं फेंका करते. —**शेखर गुप्ता**, पाकिस्तान में

पाकिस्तान

ठाठें मार रहा जुनून

लाहौर के बाहर रावी नदी के शाहदरा पुल से 10 किलोमीटर आगे जहांगीर के मकबरे को पार करते ही सड़क के बाएं किनारे पर पोस्टर और झंडे दिखने लगते हैं. वजह: तथाकथित 'आजाद कश्मीर' विधान-सभा की 40 सीटों के लिए चुनाव.

इस चुनाव की अहम बात यह नहीं है कि तथाकथित 'आजाद कश्मीर' के राष्ट्रपति सरदार कयूम के साहबजादे सरदार अतीक अहमद खां की शख्सियत दांव पर लगी है. पाकिस्तान में सियासी माहिरों का मानना है कि असल परीक्षा तो कुछ खास चुनावी हलकों में होगी. मसलन जम्मू-29 में. कश्मीर शरणार्थियों के लिए कश्मीर से बाहर के इलाके में आरक्षित 12 चुनाव क्षेत्रों में से एक है यह हलका. यह चुनाव क्षेत्र चूंकि पंजाब के मध्य में है इसलिए वहां सिर्फ कश्मीरियों की भावनाएं ही नहीं, पंजाब का तेवर भी प्रतिबिंबित होगा.

मतदाताओं का मानस जानने के लिए किसी चुनाव विशेषज्ञ की जरूरत नहीं. धूल, धक्कड़ और गड्ढों भरी सड़कों पर निकल पड़िए, लोग क्या सोच रहे हैं पता लग जाएगा. 36 वर्षीय गुलाम रसूल बुखारी पूछते हैं, "कश्मीरियों और चुनाव की परवाह किसे है? सब बस कुर्सी और पैसा चाहते हैं. ऐसा न होता तो क्या इन लोगों ने इस समय चुनाव करवाए होते? वे सारा पैसा कश्मीर को आजाद कराने में क्यों नहीं लगा देते?"

बुखारी की चाय की दुकान से अधपके मकानों की कतार शुरू हो जाती है. इस घनी बस्ती को कश्मीर शहर कहा जाता है. यहां हर कोई अपने पड़ोसी को जानता है क्योंकि सभी बाशिंदे बुखारी हैं. 1947-48 की भारत-पाकिस्तान जंग शुरू होने पर ये सब पुंछ के ग्रामीण इलाकों से यहां आकर बस गए थे. पर अब उस देश से भी उनका मोहभंग हो गया है जहां आकर उन्होंने अपना दूसरा घर बसाया. बुखारी गुस्से में भरकर कहते हैं, "वे युद्धविराम रेखा को बेमानी

पाकिस्तानी पत्र-पत्रिकाएं

उन्मादियों का दबाव

लाहौर से छपने वाले अंग्रेजी दैनिक 'फ्रंटियर पोस्ट' में पिछले पखवाड़े एक विचित्र वाकया हुआ. अखबार ने मुखपृष्ठ पर कश्मीर के आंदोलन के प्रति अपना समर्थन जताते हुए एक सूचना छापी और पिछले दिन 1971 में ढाका में जनरल ए.के. नियाजी की समर्पण करते हुए तस्वीर छापने के लिए क्षमायाचना की.

यह तस्वीर छपकर आने के घंटे भर बाद ही अखबार पर सरकार और सेना की ओर

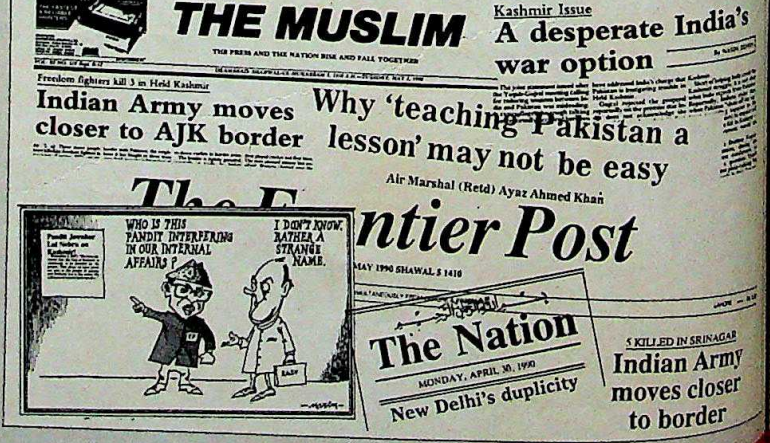

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

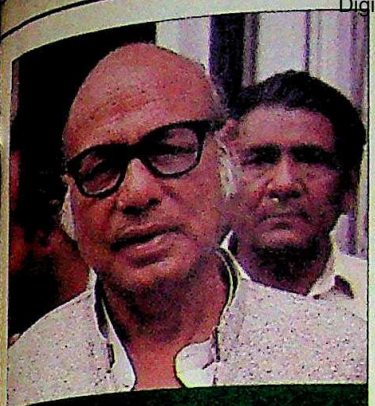

"नशीली आंखों, मधुर गीतों वाले बांग्लादेश को खोकर, मैं हैरान हूं कि, वो जिक्र वादी-ए-कश्मीर करते हैं"

हबीब जालिब
जनप्रिय शायर

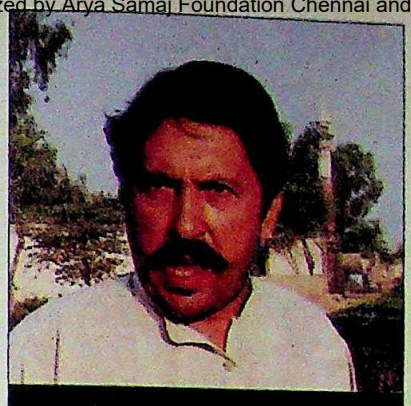

"वे युद्धविराम रेखा को बेमानी करार क्यों नहीं देते? हमें हथियार दीजिए और हम कश्मीर को आजाद करा लेंगे"

सैयद गुलाम रसूल बुखारी
चाय की दुकान के मालिक

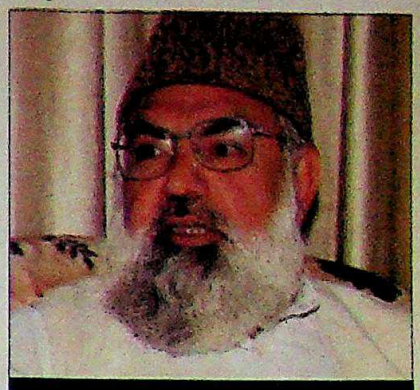

"जैसे-जैसे श्रीनगर से अत्याचार की खबरें आएंगी, यहां शिविर में लोगों की आमद बढ़ती जाएगी"

हाजी नसीर अहमद
सरकार शिविर के प्रमुख

करार क्यों नहीं देते? हमें हथियार दीजिए और हम कश्मीर को आजाद करा लेंगे."

इस बात पर सब लगभग एकमत हैं कि कश्मीर के मामले में पाकिस्तान का रुख "नैतिक, कानूनी और राजनैतिक" रूप से सही है पर लोग यह भी मानते हैं कि पाकिस्तान को जंग नहीं लड़नी चाहिए. वहां आम धारणा है कि बेनज़ीर सरकार राजनयिक लड़ाई के पहले दौर में भारत से हार गई है. तार विभाग में काम करने वाले कश्मीरी शरणार्थी एजाज अहमद दर पूछते हैं, "इस सरकार ने किया क्या है? जिया जब अफगानिस्तान के लिए समर्थन बटोरने निकले तो 140 देशों ने उनका साथ दिया. और आज तीन से ज्यादा देश हमारे समर्थन को आगे नहीं आए."

सनक और संकल्प का ऐसा ही घालमेल भरा नजरिया दूसरी जगहों पर भी दिखाई देता है. पिछले पखवाड़े जब लाहौर के मध्य में मई दिवस का जोशो-खरोश भरा जुलूस निकल रहा था तो कुछ लोग रीगल चौक पर तंबू ताने बैठे थे. वहां से "कश्मीर आजाद कराने के जेहाद" में शामिल होने की मुसलमानों से अपील की जा रही थी. तहरीक-ए-जिन्ना (जिन्ना का आंदोलन) के कार्यकर्ता एक पखवाड़े से भी ज्यादा समय से कश्मीर के वास्ते पैसा इकट्ठा करने लाहौर के सबसे व्यस्त चौराहे पर बैठे हैं. अरबी काफिए में सजे इसके एक कार्यकर्ता आस्थावान लोगों से जेहाद में शामिल होने की अपील करते हैं.

पर लोग आगे नहीं आते. कार्यकर्ता 5 रु. दान की पर्ची राहगीरों की ओर बढ़ाते हैं पर बहुत कम लोग उसे लेते हैं. 1965 की जंग के सैनिक अब्दुल खलीक कहते हैं, "इनके जैसे बहुत देखे हैं. सब पैसे बटोर कर रफूचक्कर हो जाते हैं."

लेकिन कार्यकर्ताओं के चेहरों पर कोई शिकन नहीं आती. एक कार्यकर्ता जहूर हुसैन कहते हैं, "हम कितना पैसा इकट्ठा कर पाते हैं यह बात ज्यादा मायने नहीं रखती. असल बात तो अपना संदेश लोगों तक पहुंचाना और जेहाद के लिए उन्हें तैयार करना है. उस दिन के लिए उन्हें तैयार रहना चाहिए." उनकी कड़वाहट को आसानी से समझा जा सकता है. कानपुर के मूल निवासी हुसैन को आज भी याद है कि कैसे उनके पुलिस अफसर

से क्षमायाचना करने का दबाव पड़ने लगा था. इस तस्वीर के प्रकाशन को मनोबल घटाने वाला माना गया. लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया कि अखबार ने महज़ 'इंडिया टुडे' के 15 मई के अंक में छपे भारतीय रक्षा विशेषज्ञ रवि रिखी के लेख को तस्वीर समेत ज्यों का त्यों छाप दिया था.

मौजूदा गरम माहौल में ऐसे ही दबावों के तहत पाकिस्तानी समाचार जगत को काम करना पड़ रहा है. इस्लामाबाद के दैनिक 'द मुस्लिम' के पूर्व संपादक मुशाहिद हुसैन कहते हैं, "भारत के समाचार जगत के मुकाबले हमारा प्रेस संयत रहा है."

भारत के अखबार तो अक्सर युद्ध के खिलाफ लिखते रहते हैं. लेकिन पाकिस्तान के पत्रकार मौखिक तौर पर ही ऐसा कह सकते हैं. कश्मीर के सवाल पर कोई राजकुमारी से कम की सलाह नहीं दे सकता. हालांकि अखबारों के स्तंभों में पाकिस्तानी बुद्धिजीवियों की राय में एक तर्क दिखता है. न्यूयॉर्क में गुजराल-याकूब की बातचीत पर संपादकीय टिप्पणी में 'फ्रंटियर पोस्ट' ने लिखा, "भारत ने व्यावहारिक रवैया अपनाना छोड़ दिया है. और इसका मतलब है युद्ध-भारत कश्मीरी आंदोलन को नहीं दबा सकता."

आश्चर्यजनक बात यह है कि सबसे संयत संपादकीय टिप्पणी अक्सर दिग्गज पत्रकार आई.ए. रहमान द्वारा संपादित सरकारी अखबार 'पाकिस्तान टाइम्स' की ही होती है. अखबार भारत को आड़े हाथों तो लेता है पर युद्धोन्माद फैलाने से पूरी तरह दूर रहता है. दूसरी ओर 'द नेशन' ने भारत की धर्मनिरपेक्षता का मखौल उड़ाया और भारत के वाणिज्य उच्चायुक्त को खुफिया एजेंट तक बताया. उर्दू दैनिक 'जंग' ने खबर छापी कि भारतीय वायु सेना की योजना 17 अप्रैल को पाकिस्तान पर बम बरसाने की थी पर जब पता चला कि पाकिस्तानी खुफिया विभाग को इसका सुराग मिल चुका है तो यह योजना रद्द कर दी गई. पाकिस्तान के एक प्रमुख संपादक कहते हैं, "ऐसे गरम माहौल में हमारे लिए तर्कसंगत बात करना असंभव हो गया है."

जब उदारमना लोग भी ऐसी बातों पर मजबूर हो जाएं तो जाहिर है कि उन्मादियों को कौन रोक सकता है? —शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी को बिछाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड
शर्टिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता अंबाला में विभाजन के दौर की सांप्रदायिक हिंसा की भेंट चढ़ गए. वे कहते हैं, "हिंदुओं ने पाकिस्तान को कभी स्वीकार नहीं किया. वे जिसकी लाठी उसकी भैंस में यकीन करने हैं." एक घंटे तक भी कोई राहगीर पैसे न दे तो उन्हें बुरा नहीं लगता. वे कहते हैं, "एक बार जेहाद शुरू हो गया तो लोग पैसे ही नहीं, खून भी देंगे."

इससे 10 किलोमीटर से भी कम दूरी पर ऐतिहासिक बादशाही मस्जिद के बाहर मीनार-ए-पाकिस्तान पार्क के एक किनारे पर जुटा फिदाईन (मरजीवड़ों) का समूह भी यही सब कर रहा है. 1881 में हिंदुस्तानी इलाके में आने के बाद से 'खाकसार तंजीम' ने, जिसे अक्सर बेलचा पार्टी भी कहा जाता है, कई मुसलमानी मकसदों के लिए मुजाहिदीन जुटाने की कोशिशें की हैं, चाहे वह 'काफिरों से स्वेज नहर मुक्त कराने' का मामला हो या अफगानिस्तान की लड़ाई का.

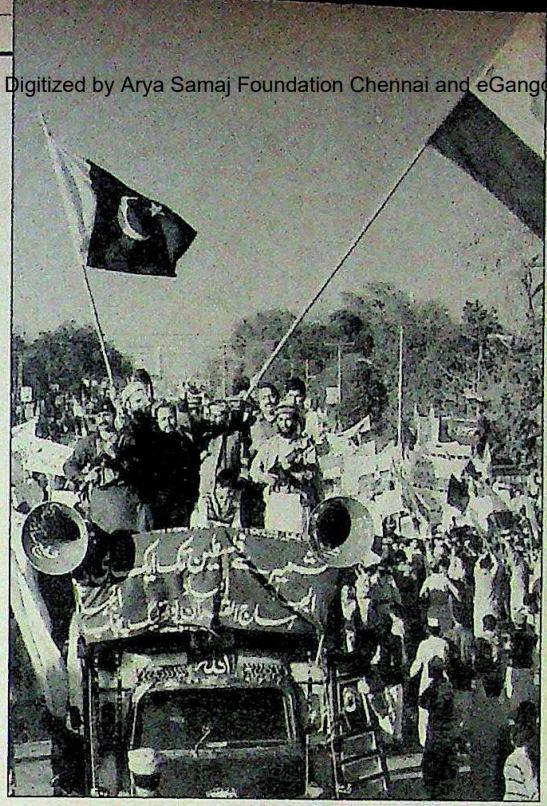

लाहौर में जेहाद रैली का नेतृत्व करते ताहिरुल कादरी

अब खाकसार ने कश्मीर 'आजाद' कराने के लिए एक लाख मुजाहिदीन जुटाने का अभियान छेड़ा है. उसका दावा है कि इससे उनकी विश्वसनीयता बढ़ गई है. पहले शिविर के सालार-ए-अव्वल खाकी वस्त्रधारी 40 वर्षीय हाजी नसीर अहमद बादशाही मस्जिद के बाहर के इस भर्ती अभियान के प्रमुख हैं. वे बताते हैं, "शुरू में कोई नहीं आया. अब धीरे-धीरे लोग आ रहे हैं. जैसे-जैसे श्रीनगर से अत्याचार की खबरें आएंगी, यहां लोगों की आमद बढ़ती जाएगी."

पाकिस्तान की सबसे अहम मस्जिद के साथ लगा होने के कारण भी यह शिविर ध्यान आकर्षित

पाकिस्तानी रणनीति

बचाव को मजबूर

इस्लामाबाद की चौड़ी सड़कों पर पिछले पखवाड़े भरं तारांकित कारें बेतहाशा इधर-उधर भागती नजर आईं. पाकिस्तान के शासकों की यह भागदौड़ मौजूदा हालात और युद्ध की संभावना का जायजा लेने के लिए थी.

विचार-विमर्श का पहला दौर राष्ट्रीय रक्षा समिति में चला. इसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, रक्षा राज्यमंत्री और गृहमंत्री के अलावा थल, जल और वायु सेना के सभी बड़े अधिकारियों ने शिरकत की.

पाकिस्तान के ज्यादातर जानकार इस संभावना पर चर्चा करते रहे कि भारत 'सख्त कार्रवाई' के तहत पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर की राजधानी मुजफ्फराबाद के आसपास किसी शिविर पर हमले पर सकता है. उनका अनुमान है कि इस पर पाकिस्तान की जवाबी कार्रवाई शुरू होगी.

आज भी पाकिस्तान के सैन्य विशेषज्ञ ब्रासट्रैक्स ऑपरेशन के बाद बनी इस धारणा पर ही टिके हुए हैं कि भारत थल सेना से हमला करेगा जिसका निशाना सक्खर बांध के आसपास के नाजुक क्षेत्र होंगे. यहां पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण की सड़कें और रेल लाइनें मिलती हैं.

पाकिस्तान कश्मीर में भारतीय सेना को शिकस्त देने के लिए सांबा-पठानकोट की पतली पट्टी पर पूरी ताकत से हमला करना चाहेगा. यही बेग की रणनीति का सार है. पाकिस्तान पंजाब क्षेत्र में अपने वायु हमले की ताकत को आजमाना पसंद करेगा पाकिस्तानी जानकारों का कहना है कि उनकी सेना का मनोबल बढ़ने की मुख्य वजह भारतीय सेना का आंतरिक मामलों में उलझा होना है. साथ ही उसे भारतीय सेना की आपूर्ति के रास्ते में दबाव बढ़ाने का भी भरोसा है.

पाकिस्तानियों का कहना है कि वे अपनी कमजोरियों से पूरी तरह वाकिफ हैं. थल सेना की मदद का उनकी वायु सेना पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ेगा और उसे भारतीय वायु सेना के हमलों से भी बचना होगा. बेग के मुताबिक पाकिस्तान की नौसेना 'अपने अस्तित्व की रक्षा' से शायद ही ज्यादा कुछ कर सकने में सक्षम हो. पाकिस्तान के रणनीतिज्ञों को 1971 में उनके इकलौते बंदरगाह कराची की भारतीय सेना द्वारा नाकेबंदी याद है. इसलिए ईरान की सीमा से लगे बलूचिस्तान में बंदरगाह बनाने की तैयारी तेजी से चल रही है. नाकाबंदी होने के बाद पाकिस्तान ईरान से बलूचिस्तान के रास्ते आपूर्ति की उम्मीद करता है. पाकिस्तानियों का मानना है कि लड़ाई में वे दो हफ्ते तक टिक सकते हैं.

लेकिन इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण गुत्थी है जो उनके सारे गणित को गड़बड़ा सकती है. युद्ध को छोटा और अनिर्णित या बड़ा और निर्णायक बनाना भारत के हाथ में लगता है. और सैन्य शब्दावली में 'डी प्लस 15' यानी 15 दिनों के बाद का हर अगला दिन पाकिस्तान के लिए भारी पड़ सकता है.

—शेखर गुप्ता

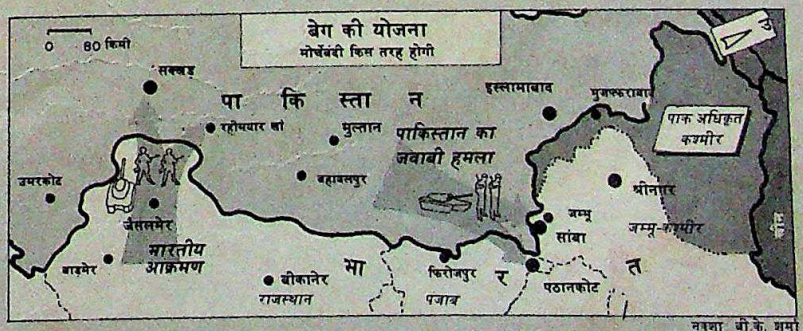

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवार पर लिखे कश्मीरी नारे

करता है. कहना मुश्किल है कि इसी वजह से खाकसारों की भर्ती हो पा रही है. अहमद के अनुसार नए भर्ती हुए लोगों को पहले लाहौर में प्रशिक्षण दिया जाता है. बाद में उन्हें आगे के प्रशिक्षण के लिए दूसरी जगहों पर भेज दिया जाता है.

परंतु पाक-अधिकृत कश्मीर के बाहर रावलपिंडी के बीच में ही एकमात्र ऐसी जगह है जिसके बारे में माना जाता है कि वहां कश्मीरी उग्रवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है. रावलपिंडी की लाल हवेली इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद के 37 वर्षीय महासचिव शेख रशीद का मुख्यालय है. पिछले आम चुनाव में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के दिग्गज, पूर्व सेनाध्यक्ष टिक्का खां को 20,000 वोटों से हराने के बाद से रशीद का नाम हो गया.

रावलपिंडी के संकरे भीड़ बाजार में बनी लाल हवेली दोनों तरफ दुकानों से घिरी हुई है और इसे देखकर नहीं लगता कि यह जगह अलगाववादियों को प्रशिक्षण देने में इस्तेमाल की जाती होगी. पर सरकारी सूत्रों का कहना है कि इस जगह शहर के बाहर बने कई शिविरों में संयोजन का काम होता है. यहां तक कि बेनज़ीर भुट्टो तक रशीद पर प्रशिक्षण शिविर लगाने का आरोप लगा चुकी हैं. रशीद कहते हैं, "जैसे वे भारत को हम पर बम बरसाने का निमंत्रण दे रही हों. भारत को ऐसा करने दीजिए. हम नहीं डरते." उनका कहना है कि वे हथियारों का प्रशिक्षण नहीं दे रहे बल्कि शरणार्थियों की मदद कर रहे हैं. "हमने 30 लाख अफगानों को शरण दी. हम कुछ हजार कश्मीरियों की मुद्दा क्यों नहीं ले सकते."

लेकिन संकेत संदेहों की पुष्टि करते हैं.

कश्मीर के सवाल पर भड़की जन भावनाओं और पूर्वी मोर्चे पर तनाव के कारण पाकिस्तानी सेना फिर से राजनैतिक मंच पर कूद पड़ी है. कश्मीर के सवाल पर पाकिस्तान का रुख भी वही तय कर रही है

कलाश्निकोव संभाले सुरक्षाकर्मी चौबीसों घंटे लाल हवेली के चारों ओर तैनात रहते हैं. उनमें से ज्यादातर कश्मीर घाटी के ही हैं. रशीद कुछ शरणार्थियों को इंटरव्यू के लिए बुलवाते हैं. 22 वर्षीय अब्दुल अहद बटमालू में अर्धसैनिक बलों के तलाशी के दौरान भाग आया था. वह कहता है, "अब वापस जाना नहीं होगा. मैं जानता हूं कि मेरे घरवाले कहां हैं पर जब तक कश्मीर आजाद नहीं हो जाता वे नहीं जान पाएंगे कि मैं कहां हूं."

रशीद के अनुसार इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे इन लोगों को प्रशिक्षण देते हैं या नहीं. "उन पर जो गुजरी उसके बाद वे लड़ेंगे ही." वे हथियार कहां से हासिल करेंगे? "कई छोटे कबीलों ने अफगान मुजाहिदीन की तरफ से लड़ाई लड़ी. कश्मीरियों ने भी ऐसा ही किया."

पाक-अधिकृत कश्मीर की मुस्लिम कॉन्फरेंस ने एक कश्मीर मुक्ति प्रकोष्ठ बनाया है जिसका मुख्यालय रावलपिंडी के चांदनी चौक में है. एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की दूसरी मंजिल के आधा दर्जन कमरों में चल रहा यह प्रकोष्ठ सैनिक प्रशिक्षण शिविर नहीं भारी-भरकम प्रचार कार्यालय जैसा दिखता है जिसका मकसद है कश्मीरी उग्रवादियों की मदद करना. यह दफ्तर 1947 में पहली बार पाकिस्तान समर्थक मुहिम छेड़ने वाले, तथाकथित 'आजाद कश्मीर' के पहले मंत्रिमंडल के सदस्य ख्वाजा सनाउल्लाह शमीम की देखरेख में अपना काम करता है.

इस केंद्र ने कश्मीर के हालात और भारतीय 'अत्याचारों' पर दुनिया भर में पुस्तिकाएं बंटवाई हैं, साथ ही अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन से संबंध बनाए रखा है. पर शमीम का कहना है कि उनका संगठन सिर्फ प्रचार कर रहा है, "कश्मीर में उभरा असंतोष वहीं की देन है. काश हम दावा कर सकते कि उसके पीछे हमारा हाथ है. जहां तक आपके हिस्से के कश्मीर में हथियार जाने का सवाल है, मैं तो यह कहूंगा कि पानी अपनी सतह खोज ही लेता है. इन इलाकों में हथियार चाहिए तो आप हथियार हासिल कर सकते हैं."

शमीम के दफ्तर में पुस्तिकाएं लिखी जाती हैं, उनके प्रूफ पढ़े जाते हैं. वहां टेलीफोन के नए कनेक्शन लग गए हैं और डाक के पतों की सूचियां तैयार हो गई हैं. पाकिस्तानी पक्ष का मानना है कि कश्मीर के लिए अभी लोग उम्मीद के मुताबिक नहीं उठ खड़े हुए हैं. लेकिन मामला गरमाने के साथ ही कामकाज बदस्तूर चलने लगेगा.

समस्या सिर्फ यह है कि तब जनमत के दबाव को काबू में रखना मुश्किल हो जाएगा और बेनज़ीर के सामने उसे ढोते रहने के अलावा कोई चारा नहीं रहेगा. ऐसे हालात के नतीजे खतरनाक हो सकते हैं. इस कारण आत्मघाती जंग छिड़ सकती है पर इस समय कश्मीर के भावनात्मक पहलू इतने प्रबल हैं कि कोई इसके खिलाफ बोलने का साहस नहीं जुटा सकता.

इसमें एकमात्र अपवाद शायद लोकप्रिय शायर हबीब जालिब हैं जिन्होंने मई दिवस पर लाहौर में बुद्धिजीवियों की रैली में कहा, "नशीली आंखों, मधुर गीतों के सुंदर मुल्क को खोकर, मैं हैरान हूं, वो जिक्र वादी-ए-कश्मीर करते हैं."

लेकिन भावनात्मक रूप से इस गरम माहौल में कोई भी इस बागी माने जाने वाले शायर की आवाज में आवाज मिलाता नहीं दिखता.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर के दर्द से आराम पाइए, दुनिया से क़दम मिलाइए.

स्त्री होने का गर्व... और मुश्किलें. हाँ कई प्रकार के दर्द. खासकर कमर में जोड़ों का दर्द, जो आपको बार-बार परेशान कर सकता है. चाहे गर्भावस्था के बाद या फिर रोज़ की परिश्रमभरी ज़िंदगी के कारण. पर घबराइये नहीं, अब आपको आराम मिल सकता 'मूव', जिसका प्राकृतिक तेलों का मिश्रण जड़ तक पहुँचता है जल्द असर करता है और अधिक समय तक आराम दिलाता है.

जी हाँ, यह सचमुच असरकारक है. आज ही 'मूव' की ट्यूब ले आइये. जोड़ों के दर्द से आराम पाइये और दुनिया से क़दम मिलाइये.

मूव

जोड़ों का दर्द निवार

'मूव' का विश्वास... आराम आपके पा

PARAS PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
Jhaveri Chambers, Ashram Road, AHMEDABAD 380 014.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनिए वही जो सब से जुदा हो

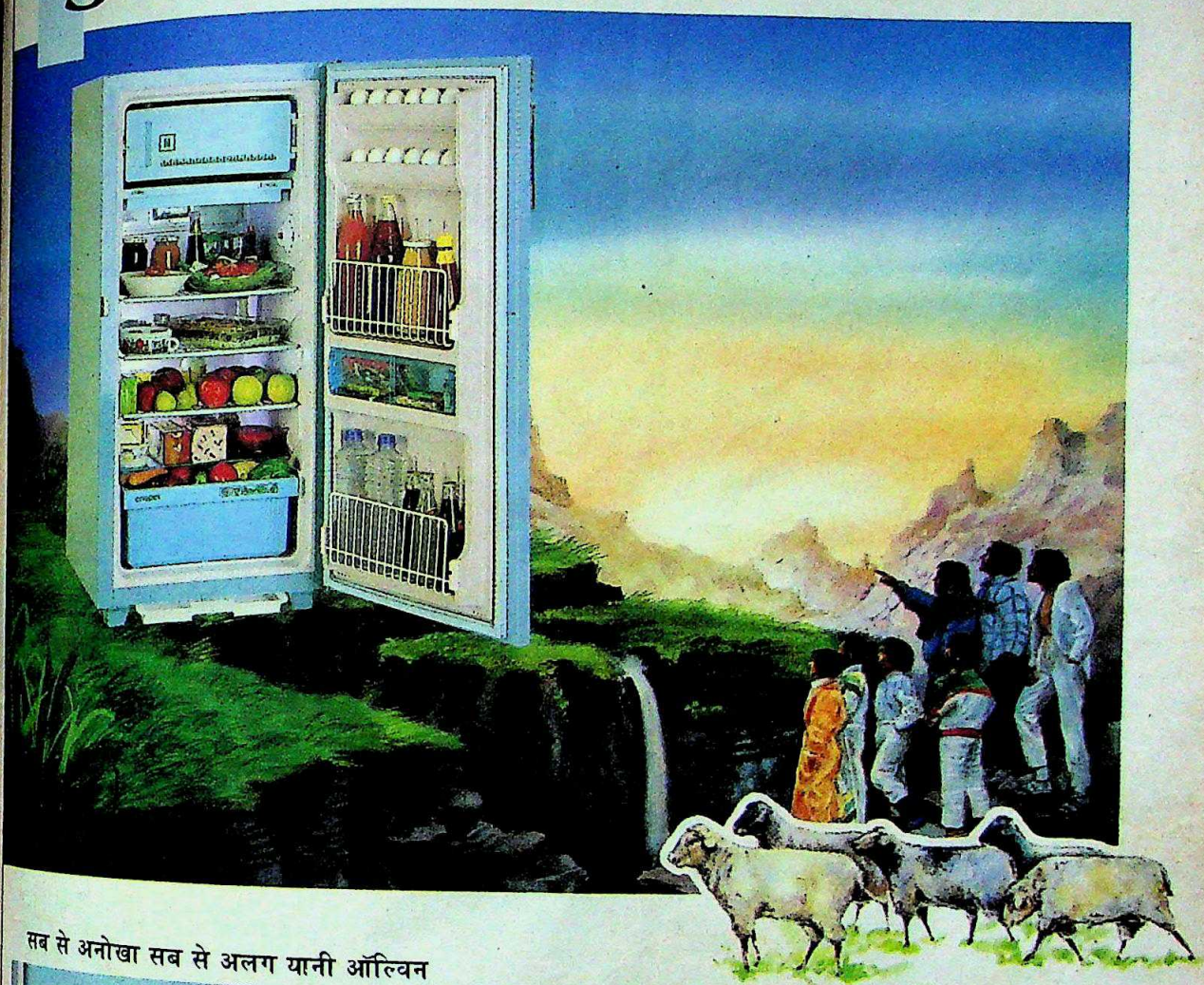

सब से अनोखा सब से अलग यानी ऑल्विन

▲ बेआवाज मज़बूत भरोसेमंद आल्विन कम्प्रेसर हिटाची तकनॉलॉजी से बना है। इसीलिए बेआवाज रहे., बिना झंझट काम करे, ▲ टिल्टिग बॉटल रैक्स ताकि बोतलें आसानी से सरकाई जा सकें ▲ डिफ्रॉस्टिग इसके लिये है एक सक्षम, बिना घिचपिच किए, तुरंत "सेल्फ ड्रेनिग सिस्टम" इससे रेफ्रीजेरेटर दोबारा खुद स्टार्ट हो जाता है ▲ वोल्टेज के उतार चढ़ाओ का इस पर कोई असर नहीं होता (170V से 250V) ▲ आल्विन भारत में रेफ्रीजेरेशन के अग्रगामी ▲ 165 लिटर सिंगल डोर और 165, 300 व 380 लिटर डबल डोर मॉडल अनेक रंगों में सात साल की ग्यारंटी और सात साल के "प्रोटेक्शन कॉन्ट्रोक्ट" की अतिरिक्त सुविधा भी ▲ ISI

अब इत्मीनान रखिए आपने वही चुना है जो सब से जुदा है. ऑल्विन.

ALLWYN
REFRIGERATORS
QUIET · STURDY · FAITHFUL

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

वही रफ्तार बेढंगी

राजीव गांधी पराजय से सबक सीखने को तैयार नहीं और इससे पार्टी में असंतोष के बगूले उठने लगे हैं

सत्ता से बाहर होने के बाद कांग्रेसी नेतागण अखबारों की सुर्खियों और लोगों की नजरों में बने रहने तथा राजनीति के मंच पर अपनी मौजूदगी का एहसास कराते रहने के लिए नाटकीय करतबों और बयानों का सहारा लेते रहे हैं. 1978 में इंदिरा गांधी द्वारा हाथी पर चढ़कर बिहार के बेलछी गांव की यात्रा या दिल्ली में जनपथ पर संजय गांधी और उनके साथियों द्वारा पुलिस से भिड़ने की स्मृतियां अभी धूमिल नहीं हुई हैं.

अब राजीव गांधी द्वारा 'राष्ट्रीय एकता' की ओर राष्ट्र का ध्यान खींचने के लिए राजघाट पर 12 घंटे के उपवास कार्यक्रम को इसी परंपरा का पालन माना जाना चाहिए. इससे यही जाहिर होता है कि राजीव और उनकी पार्टी चुनावों में हार के बाद नई छवि बनाने के लिए किस कदर बेताब है.

वैसे, इस अभियान की जोरदार शुरुआत कश्मीर समस्या पर बुलाई गई सर्वदलीय बैठक से हुई. लेकिन राजीव गांधी इस बैठक में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की असफलताओं पर तीखा हमला करने की जगह राजनैतिक चुहलबाजी भर करते रहे. इससे उनकी छवि किसी समझदार राजनेता की जगह एक शरारती बालक वाली ही बनी.

लेकिन ऐसा नहीं है कि मौके और नहीं मिलते. राष्ट्रीय एकता के लिए उपवास करना ऐसा ही एक मौका है. हां, इस बार यह जरूर है कि राजीव अब निश्चित नहीं हैं कि पार्टी में उनका दोस्त कौन है और दुश्मन कौन, कि हारी हुई पार्टी किस सीमा तक उनका अनुसरण करेगी. अब वे बिलकुल किंकर्तव्यविमूढ़ता और राजनैतिक उतावलेपन की मानसिकता से ग्रस्त दिखते हैं. इसका एक उदाहरण यह है कि तय कार्यक्रम के अनुसार उन्हें पार्टी के नए शानदार मुख्यालय, जवाहर भवन में कुछ महीने पहले से ही बैठना शुरू कर देना चाहिए था. मगर वे वहां गए नहीं हैं. उन्हें लगता है कि यह दफ्तर उनकी 21वीं सदी वाली छवि को फिर जीवित कर देगा, जो उन्हें चुनाव में महंगी पड़ी थी.

पांच महीने तक सत्ता से बाहर रहकर भी लगता है कि राजीव नई परिस्थितियों में तालमेल नहीं बिठा पाए हैं. जैसे, उन्होंने इफ्तार के मौके पर विदेशी राजनयिकों को भी बुलाया. परंपरा यह रही है कि यह आयोजन प्रधानमंत्री करते हैं. उन्होंने स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप के पुराने गार्डों को अलग से न्यौता दिया जबकि वे अभी भी सरकारी नौकरी में हैं. पूर्व विदेश सचिव एस.के. सिंह ने इस्तीफा दिया तो उन्होंने सिंह को भेंट करने के लिए बुला लिया. विपक्ष का नेता होने के बावजूद उन्होंने लोकसभा से गायब रहने की अपनी आदत छोड़ी नहीं है.

इन करतबों से राजीव गांधी की अपनी राजनैतिक साख बढ़ी हो या हताश हो चुकी पार्टी में उत्साह जगा हो, ऐसा नहीं लगता. बल्कि पार्टी के अंदर नाराजगी का स्वर और मुखर होता जा रहा

राजघाट पर सामूहिक उपवास का नेतृत्व करते राजीव: सियासी नौटंकी

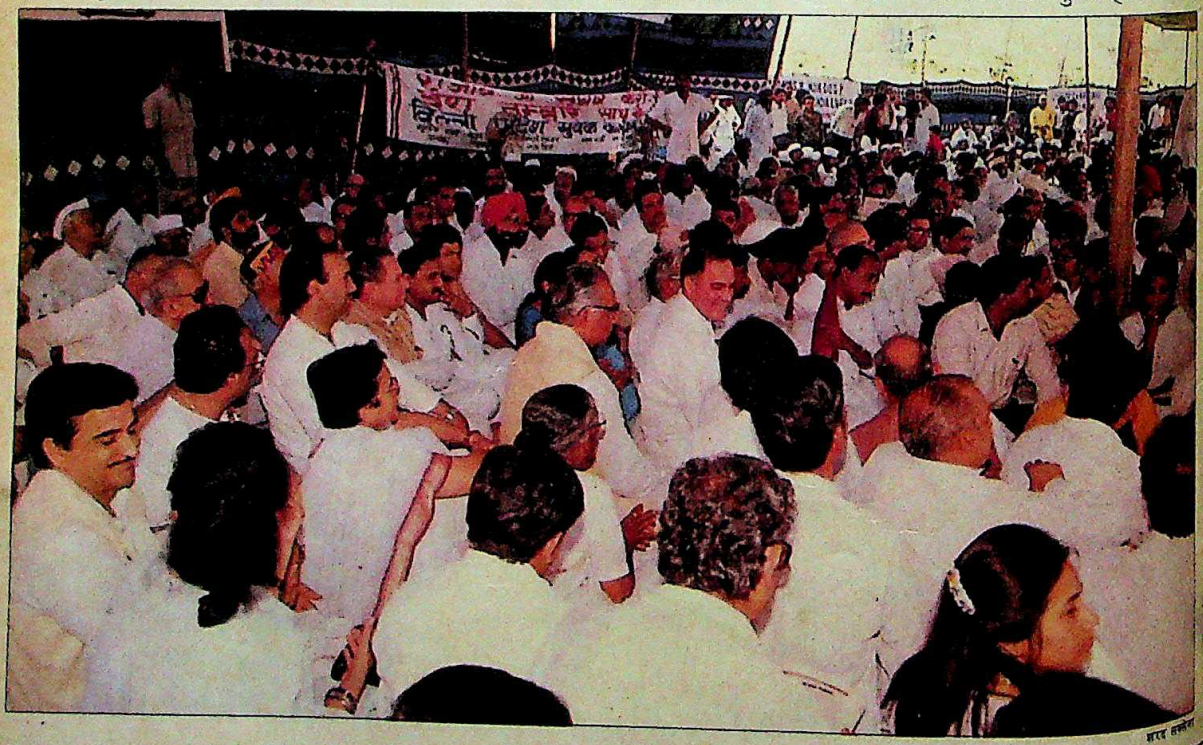

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरो की परम्परा भली

HERO CYCLES LIMITED HERO

नई आकर्षक विशेषताएं

नई हीरो जैट 2000 में सामान्य सभी विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य नए आकर्षण :

- चलाने में आसानी के लिए नई हैण्डल ग्रिप और रूपान्तरित हैण्डल
- अधिक शक्तिशाली फ्रन्ट ब्रेक्स
- उबड़-खाबड़ रास्तों के लिए अधिक आरामदेह मुलायम गद्दी
- अनूठा नया चेन गार्ड
- अधिक सुरक्षा के लिए पिछले पहिए पर रिफ्लैक्टर की व्यवस्था
- नए और चमकदार रंगों में
- श्रेष्ठ क्वालिटी वाले इलैक्ट्रोप्लेटिड पुर्ज़े

दुनियाभर में नं० १ HERO BICYCLES

हीरो अपनाएँ — नं० १ होने का अनुभव पाएँ।

पीढ़ी दर पीढ़ी चली

कुछ ही परम्पराएं ऐसी होती हैं जो परिवर्तन की चुनौती के आगे ठहर पाती हैं और विश्वास के बल पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती रहती हैं।

पिछले तीन दशकों से हीरो लोगों को सम्पूर्ण और विशिष्ट साइकिल देने में अग्रणी रही है।

नई हीरो जैट 2000 में लगे रगड़ खाने वाले सभी पुर्ज़े विश्व की अत्याधुनिक विकसित कोल्ड फोर्जिंग तकनीक द्वारा निर्मित होने के कारण अधिक टिकाऊ होते हैं।

इसकी कार्यकुशलता को भारत में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में स्वीकार किया गया है।

समय बदल जाता है, परम्पराएं नहीं।

और हीरो को एक महान परम्परा का भागीदार होने पर गर्व है।

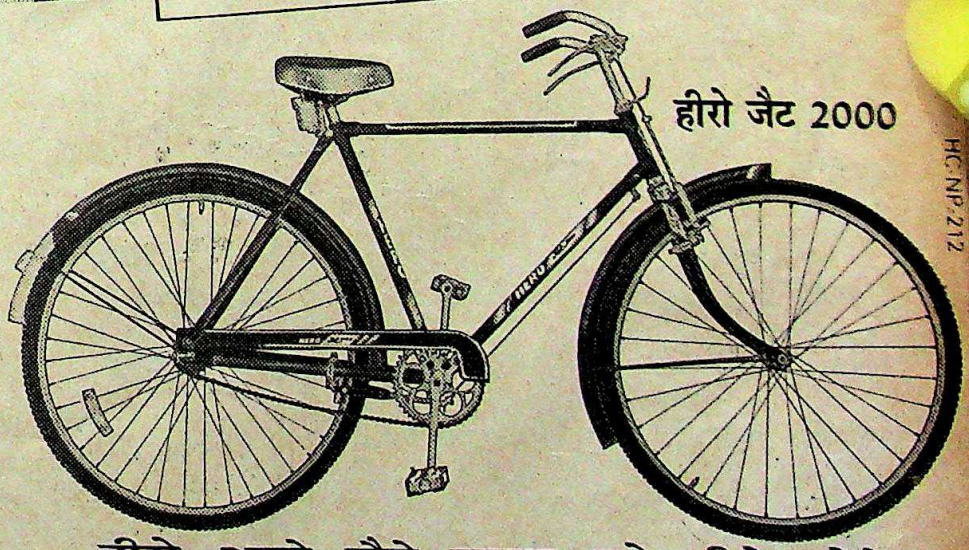

हीरो जैट 2000

HC.NP.212

हीरो आगे दौड़े समय को पीछे छोड़े

HERO Jet 2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. अब तक जो नेता चूं भी नहीं कर रहा था वह भी सोचने लगा है कि राजीव नेता बनने के काबिल नहीं हैं. वैसे, अभी कोई खुली बगावत नहीं है. लेकिन इसके संकेत दिखने लगे हैं.

पार्टी के कामकाज से असंतुष्ट होकर वयोवृद्ध नेता उमाशंकर दीक्षित ने कांग्रेस कार्यसमिति से इस्तीफा दे दिया. उन्होंने कहा कि उनकी यह उम्मीद खत्म हो चुकी है कि चुनाव में हार के बाद राजीव अपनी कार्य-शैली बदल देंगे. 'कांग्रेस फोरम फॉर ऐक्शन' के अध्यक्ष बाला साहब विखे पाटील भी, जिन्हें पूर्व वित्त-मंत्री शंकरराव चव्हाण का करीबी माना जाता है, राजीव के प्रति अपनी नाराजगी को छिपाते नहीं हैं. इसी फोरम से जुड़े दूसरे सांसद बागुन सुंबरई बिहार इंका अध्यक्ष डॉ. जगन्नाथ मिश्र के खास आदमी हैं. मिश्र अभी भी राजीव के प्रति निष्ठावान हैं लेकिन सुंबरई जैसे लोगों ने जो रुख

प्रमोद पुष्करणा

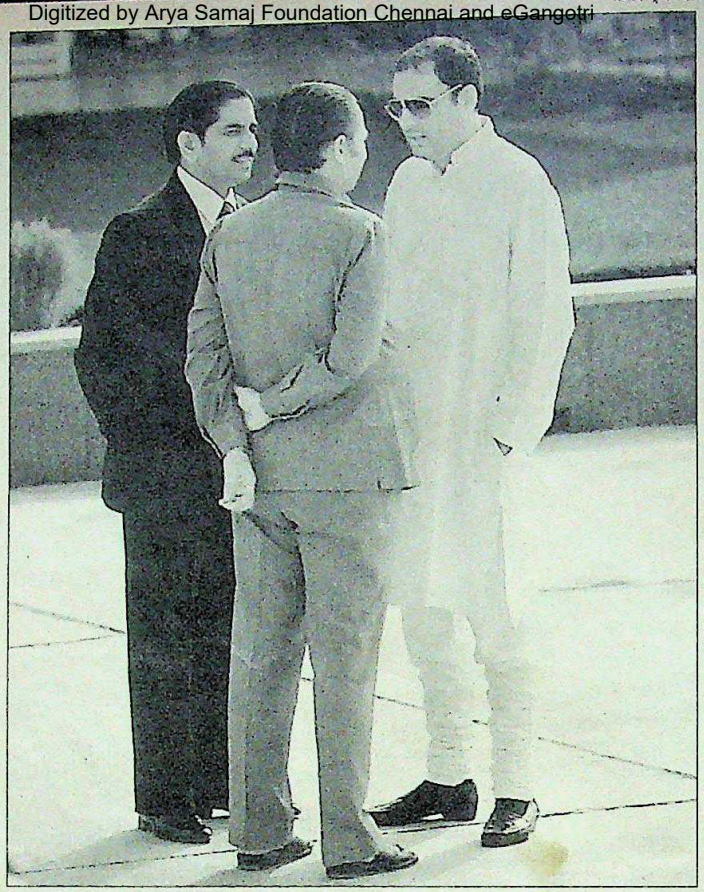

राजीव के साथ धवन (बाएं) और फोतेदार: मुख्य निशाना

अपनाया है उससे जाहिर है कि राजीव भक्तों पर उनसे अलग होने के लिए दबाव पड़ने लगा है. फोरम इस महीने के आखिर में दिल्ली में एक सम्मेलन कर रहा है. यानी छिपे वार करने का खेल शुरू हो चुका है.

खासकर हिंदी क्षेत्र के कांग्रेसियों की नाराजगी के कारण भी बढ़ती जा रही है कि संसद में सबसे बड़ी पार्टी का नेता होने के बावजूद राजीव गांधी शासक दल को अब तक कोई मात नहीं दे पाए हैं. संसद के दो अधिवेशनों में इंका बहुत से मामूली मुद्दों पर 'जीत' गया है. ऐसी ही एक 'जीत' हाल में गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय द्वारा एक धार्मिक समुदाय का नाम लेने पर विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह द्वारा उठाए गए हंगामे से मिली. इस पर सहाय को माफी मांगनी पड़ी. इन मिलाकर इंका के कुछ चुने सांसद मुखर तो हैं लेकिन कश्मीर, पंजाब और

उभरता असंतोष

विकास मंच

बंसीलाल

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल के नेतृत्व वाला यह संगठन इंका और जनता दल के देवीलाल समर्थक गुट के बीच तालमेल की राजीव की कोशिशों के सख्त खिलाफ है. बंसीलाल देवीलाल और उनके बेटे, हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के कट्टर विरोधी माने जाते हैं.

जन आस्था मंच

भागवत झा आजाद

हाल में बने इस संगठन के नेता बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद हैं. इस मंच का पहला लक्ष्य है राजीव के प्रति निष्ठावान जगन्नाथ मिश्र को बिहार इंका अध्यक्ष पद से हटाना. और अंतिम लक्ष्य है केंद्रीय नेतृत्व के खिलाफ बिहार के प्रमुख इंका नेताओं को एकजुट करना.

फोरम फॉर ऐक्शन

नवन किशोर शर्मा

इस संगठन के एक प्रमुख नेता और इंका के पूर्व महा-सचिव नवल किशोर शर्मा का लक्ष्य है कांग्रेस के भीतर लोक-तंत्र की बहाली, और संगठन के चुनाव करवाने पर नेतृत्व को बाध्य करना. इसके दूसरे प्रमुख नेता हैं—इसके संयोजक महाराष्ट्र के सांसद विखे पाटील और जीतेंद्र प्रसाद.

युवा तुर्क

आनंद शर्मा

युवक इंका के पूर्व अध्यक्ष आनंद शर्मा और मध्य प्रदेश इंका अध्यक्ष दिग्विजय सिंह द्वारा एकजुट किए गए युवा इंका नेताओं के इस संगठन 'यंग टर्क्स' का उद्देश्य है राजीव को घेरे रहने वाली मंडली की पकड़ तोड़ना. और इन सभी युवा तुर्कों का मुख्य निशाना है आर.के. धवन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप्रदायिकता जैसे मुद्दों पर पार्टी कोई सतत, व्यवस्थित और स्पष्ट आलोचना करके सरकार को कटघरे में खड़ा न कर पाई.

कश्मीर के मुद्दे को राष्ट्रीय मोर्चा जिस तरह पस्त-व्यस्त और ढीले-ढाले ढंग से ले रहा है, उससे इंका को पर्याप्त राजनैतिक लाभ उठाना चाहिए था. लेकिन उलझन का जवाब स्पष्ट सोच से ही दिया जा सकता है. कांग्रेस में भी इसका अभाव ही दिखता है. पाकिस्तान पर आरोप लगाते समय वह भारत सरकार को कमजोर बताते हुए उससे कड़े कदम उठाने की मांग करती है. और जब जगमोहन ने आतंकवादियों के खिलाफ सख्ती की तो उसने सख्ती के खिलाफ शोर मचाना शुरू कर दिया. पाकिस्तान के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया जाए या नहीं, इस मुद्दे पर पार्टी में मतभेद हैं. 'युद्धोन्माद' फैलाने के लिए सरकार की अधिकृत कांग्रेसी आलोचना के विपरीत विखे पाटील और अनेक दूसरे कांग्रेसी नेताओं के हाल के बयानों में पाकिस्तान में चल रहे प्रशिक्षण शिविरों पर हमला करने का अप्रत्यक्ष समर्थन किया गया. ठीक यही बात भाजपा कर रही है.

पंजाब के मुद्दे पर भी इंका अभी तक यह तय नहीं कर पा रही कि वहां राष्ट्रपति शासन जारी रखने का समर्थन करे या चुनाव कराने का. राम जन्मभूमि के मसले पर भी उसका नजरिया स्पष्ट नहीं है. लेकिन पार्टी के लोग सबसे अधिक हैरान हैं, धर्मनिरपेक्षता के सवाल पर नेतृत्व के नजरिए से. दिल्ली इंका का एक धड़ा निश्चित रूप से शंकराचार्य द्वारा अयोध्या में शिलान्यास करने के अभियान में शामिल था जबकि राजीव गांधी ने भाजपा पर देश में सांप्रदायिकता का ज़हर फैलाने का आरोप लगाया है. पार्टी के कार्यकर्ता इस दोहरेपन से उलझन में हैं.

लेकिन पार्टी ने ओमप्रकाश चौटाला को समर्थन देने का जो अवसरवादी रुख अपनाया उससे निष्ठावान कांग्रेसी वास्तव में क्रुद्ध हो गए. जब भाजपा और जनता दल का एक बड़ा हिस्सा चौटाला के इस्तीफे की मांग कर रहा था तब पार्टी आलाकमान ने अपनी हरियाणा इकाई को महम का मुद्दा जोर-शोर से उठाने से रोक दिया. महम उपचुनाव में इंका के उम्मीदवार ने तो नेतृत्व पर खुला आरोप लगाया कि उसने अपने उम्मीदवार को जिताने के प्रयास ही नहीं किए. प्रदेश नेतृत्व के झुक जाने पर तो बंसीलाल ने चौटाला विरोधी कांग्रेसियों की अगुआई करते हुए प्रदेश में अपना एक नया संगठन हरियाणा 'विकास मंच' बना डाला.

और तो और, कांग्रेस को जिस एक मुद्दे पर भारी जनसमर्थन हासिल हो सकता था, उस महंगाई वाले मुद्दे पर भी राजीव गांधी सरकारी नीतियों की जमकर आलोचना करने से पता नहीं क्यों कतराते रहे. इंका तथा राजीव की सुस्ती का लाभ वी.पी. सिंह ने उठाया. उन्होंने अपनी सरकार की कमान कसी और देश भर में घूम-घूमकर महंगाई के खिलाफ बोले और जमाखोरों के खिलाफ कार्रवाई की धमकी दी.

कांग्रेसी नेतृत्व की सबसे अधिक विफलता संसद में महसूस की जा रही है. राजीव वहां कभी-कभार ही जाया करते हैं. राज्यसभा में आजकल पार्टी के 'हल्ला दल' के लोग एस.एस. अहलूवालिया, रत्नाकर पांडे, सुरेश कलमाडी तथा लोकसभा में आर. कुमारमंगलम, पी. चिदंबरम, वसंत साठे और दिनेश सिंह जैसे लोग ही छाये रहते हैं.

पार्टी के भीतर राजीव विरोधी छोटे-छोटे समूहों का बन जाना बहुत अप्रत्याशित भी नहीं था. खुद राजीव भी इससे चौंके नहीं बल्कि उन्होंने इसकी आशंका में कुछ अग्रिम कदम भी उठा लिए थे. उन्होंने अपने पुराने बदनाम दरबारियों को अपने से दूर कर दिया या उन्हें दूसरे काम पकड़ा दिए. कभी राजीव के निवास पर छाये रहने वाले कैप्टन सतीश शर्मा अब उनके नए निवास 10, जनपथ पर नजर भी नहीं आते. एक और प्रमुख दरबारी माखनलाल फोतेदार की भी चलती बहुत कम हो गई बताई जाती है. वे राजीव के आसपास अब उतने दिखते भी नहीं हैं. अब चाहे दिखावा हो या कुछ और, राजीव गांधी पार्टी संबंधी मामलों पर पी.वी. नरसिंह राव, वसंत साठे और वी.एन. गाडगिल जैसे वरिष्ठ नेताओं से अक्सर सलाह करते हैं. हरकिशनलाल भगत, बलराम जाखड़ और सी.के. जाफर शरीफ जैसे पुराने वफादारों की पूछ भी बढ़ गई है. अपने 'प्रातःदर्शन' के समय राजीव अपने साथ रामेश्वर नीखरा और पूर्व मंत्री मार्गरेट अल्वा जैसे

पुराने वफादार

जाफर शरीफ

बलराम जाखड़

हरकिशनलाल भगत

अपने नेतृत्व के खिलाफ उभरते स्वरों को तेज होता देखकर राजीव गांधी ने वफादारी का मूल्य एक बार फिर समझ लिया है. अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में हाल में किया गया उलटफेर इसका ही एक स्पष्ट संकेत है. राजीव और उनकी मां का अच्छे-बुरे वक्त में साथ देने वाले पुराने वफादार भगत, जाखड़ और शरीफ की वापसी हो गई. जाखड़ के चारा मशीन घोटाले और भगत की सत्ता में दलाल वाली छवि को भी नजरअंदाज कर दिया गया.

नया गठजोड़

वीरेंद्र पाटील

चेन्ना रेड्डी

शरद पवार

वे दिन गुजर गए जब आलाकमान के एक इशारे पर इंकाई मुख्यमंत्री तक कांपने लगते थे. कम-से-कम वीरेंद्र पाटील, चेन्ना रेड्डी और शरद पवार जैसे नेता उन लोगों में शुमार नहीं हैं. ये तीनों आपस में गुपचुप मिलते रहे हैं और ऊपर से मंत्रियों के थोपे जाने का सफल प्रतिकार करते रहे हैं. 90 सांसदों का समर्थन और व्यापक जनाधार के बूते ये तीनों पार्टी के मामलों में आलाकमान से अपनी बात मनवाने और अपने अनुसार पार्टी मामलों को तय करने का दम रखते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की मदद लेते दिखते हैं. वे रोज सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ताओं और आम लोगों से मिलते हैं. संसद भवन स्थित इंका दफ्तर में वे रोज एक घंटे इंका सांसदों से मिलते हैं. कांग्रेस संसदीय दल की बैठक हर पखवाड़े होने लगी है. इस बदलाव का अनेक कांग्रेसियों पर असर भी पड़ा है. इंका के प्रवक्ता वी.एन. गाडगिल कहते हैं, "मैं उनमें बदलाव पाता हूं. वे पार्टी के लोगों के लिए सुलभ होने की कोशिश कर रहे हैं."

लेकिन पार्टी के सभी लोग राजीव की इस नई रणनीति के प्रति आश्वस्त नहीं हैं. वे बताते हैं कि सत्ता से बाहर होने के बाद पांच महीनों में भी पार्टी में गतिशीलता नहीं आ पाई है. पूर्व सांसद वीरभद्र प्रताप सिंह इस नाराजगी को जाहिर करते हैं, "या तो वे (राजीव) अपने आसपास के पूर्व नौकर-शाहों के घेरे से बाहर निकलें या पार्टी को नया नेता ढूंढ़ लेना चाहिए."

लेकिन वसंत साठे बार-बार कहते हैं, "इस नौजवान की बुनियादी राजनैतिक समझ सही है." लेकिन यह शायद कुछ ज्यादा ही स्वामिभक्ति वाला बयान है. राजीव आज भी पार्टी में सक्रिय विभिन्न निहित स्वार्थ वाले गुटों के घेरे में जकड़े हुए हैं. सांगठनिक मामलों में आज भी आर.के. धवन ही उनके मुख्य पथ प्रदर्शक हैं. राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर में हाल में पदाधिकारियों की नियुक्ति में धवन का हाथ साफ दिखता है. इंका के नए महासचिव सी.के. जाफर शरीफ धवन के खास आदमी हैं. उधर, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों—वीरेंद्र पाटील और चेन्ना रेड्डी—ने राष्ट्रीय स्तर पर नई नियुक्तियों में दक्षिण को कम प्रतिनिधित्व दिए जाने की शिकायत की है.

राजीव ने मनमानी वाला अपना वह तौर-तरीका भी नहीं बदला है जो वे अपने पूरे प्रधानमंत्रीत्व काल में चलाते रहे थे. अभी पिछले दिनों ही उन्होंने अपने निवास पर पार्टी पदाधिकारियों की जो बैठक बुलाई उसके लिए मध्य रात्रि के बाद का समय दिया. पार्टी के लोग भी इस फैसले से हैरान थे क्योंकि उस तारीख को दिन में वे कोई बड़े कार्यक्रम में भी व्यस्त नहीं थे.

अब पार्टी के विभिन्न स्तरों से जो संकेत उभरने लगे हैं वे राजीव को परेशान करने वाले हैं. खबर है कि अपने नेतृत्व के प्रति बढ़ती नाराजगी से भी वे चिंतित हैं. ऐसे नाराज लोगों में माधवराव सिंधिया, अब्दुल रहमान अंतुले, गनी खां चौधरी, दिनेश सिंह, हरिकृष्ण शास्त्री और रामचंद्र विकल का नाम भी लिया जाता है. हाल में महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों की तिरुपति में हुई बैठक की खबर और भी परेशान करने वाली है. यह बैठक तेलुगु गंगा परियोजना पर बातचीत के लिए थी परंतु इसे क्षेत्रीय सूबेदारों की गुटबंदी भी माना जा रहा है.

लेकिन राजीव के हक में सबसे बड़ी बात यह है कि दक्षिण से पार्टी के 107 सांसद किसी और को नेता मानने को तैयार नहीं. दक्षिण के एक सांसद कहते हैं, "दूसरा ऐसा नेता नहीं है जिसके नाम पर हम वोट ले सकें." पूर्व मंत्री हरकिशनलाल भगत कहते हैं, "राजीव गांधी अगले कुछ महीनों में क्या करते हैं, इस पर देश की राजनीति की दिशा तय होगी. पार्टी में नेतृत्व के सवाल पर आम सहमति है." ऊपरी तौर पर तो उनकी बात सही है. लेकिन अंदर ही अंदर संदेह और अटकलबाजी कायम है कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधेगा, और कब.

—प्रभु चावला और भास्कर राय

शरद सक्सेना

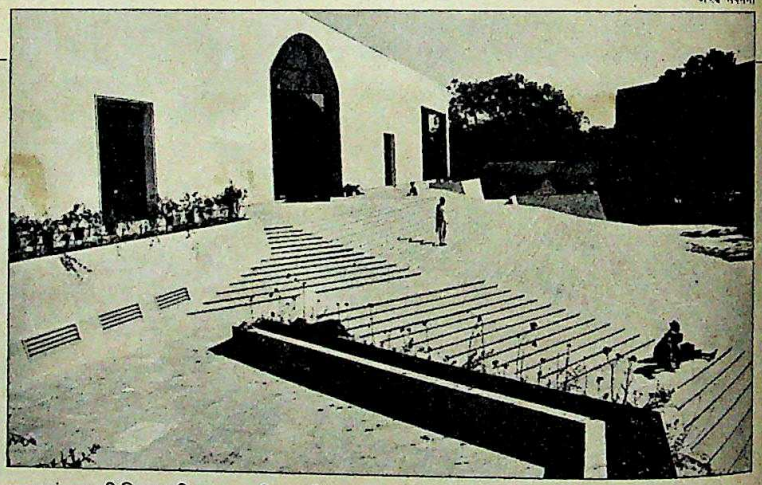

पार्टी मुख्यालय: गहमागहमी

इंका में चुनाव

दूर की कौड़ी

समाजवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों को छोड़ दें तो कांग्रेस (इ) दुनिया का सबसे बड़ा राजनैतिक संगठन है. इसकी सदस्य संख्या 2,44,32,000 है जिनमें 15,72,000 'सक्रिय सदस्य' हैं. लेकिन 105 वर्ष पुरानी इस पार्टी में पिछले 18 साल से सांगठनिक चुनाव नहीं हो पाए हैं. इंदिरा गांधी की तर्ज पर राजीव गांधी अभी पार्टी अध्यक्ष और विपक्ष के नेता के दो पदों पर विराजमान हैं. कांग्रेस के संविधान के मुताबिक तो एक व्यक्ति,एक पद के सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए.

1986 में पार्टी के चुनाव करवाने का प्रयास हुआ था. पर इंका के तत्कालीन कार्यकारी अध्यक्ष कमलापति त्रिपाठी ने जब बड़े पैमाने पर बोगस सदस्य भर्ती किए जाने का मुद्दा उठाया तो यह कार्यक्रम धरा रह गया. लोकसभा और विधानसभा चुनावों में लगातार मुंह की खाने के बाद कांग्रेस (इ) कार्यसमिति ने हाल ही में इस प्रक्रिया को फिर से जिंदा करने का फैसला किया. वयोवृद्ध नेता उमाशंकर दीक्षित की अगुआई वाली एक पार्टी समिति ने हाल ही में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में चुनाव प्रक्रिया की खामियों को दूर करने के लिए पार्टी संविधान में 42 संशोधन करने का सुझाव दिया है.

पार्टी चुनावों की मौजूदा प्रक्रिया में हेराफेरी की भारी गुंजाइश है. 25 रु. फीस अदा करके या 25 प्राथमिक सदस्य भर्ती करके कोई भी व्यक्ति इसका सक्रिय सदस्य बन सकता है और चुनाव प्रक्रिया में भाग ले सकता है.

बहरहाल, कांग्रेस (इ) कार्यसमिति अगर दीक्षित समिति की सिफारिशों को मान लेती है तो उनके अनुमोदन के लिए कांग्रेस(इ) महासमिति का विशेष अधिवेशन बुलाया जाएगा. पार्टी के पूर्ण अधिवेशन में ही चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की जाएगी. नया अध्यक्ष दिसंबर में चुने जाने की उम्मीद है.

राजीव ने चुनावों से पहले पार्टी संगठन के बारे में प्राथमिक रिपोर्ट तैयार करने के लिए हर राज्य में पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं. लेकिन पर्यवेक्षकों के दलों के गठन से लगता है कि यह महत्वपूर्ण काम उनके वफादारों के हाथ में ही रहेगा.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल जाईये

यदि आप भूल सकते हैं कि आपकी कार के इंजन की आयु घट कर 33% रह जाएगी

ऑयल, फ़्युअल और एअर फ़िल्टरों पर निर्भर करता है आपकी कार के इंजन का भविष्य. यदि फिल्टर का करने में सक्षम नहीं हैं तो कार के वॉल्व्ज़ अपनी जगह से हिल जाएंगे, पिस्टन रिंग्स को नुकसान पहुँचेगा, सिलिण्डर की भीतरी सतह नष्ट हो जाएगी, और आपके इंजन की आयु 1,50,000 किमी. से घट कर 50,000 किमी. रह जाएगी.

और यदि आपकी कार के फ़िल्टर काम देते हैं, ऐसे जैसे कि प्यूरोलेटर—तो आपका इंजन चलेगा दुरुस्त, बि रुकावट और परेशानी के, और आपके लिए रख-रखाव पर कम से कम खर्च.

इसलिए प्यूरोलेटर पर ही ज़ोर दीजिए. आपका मैकेनिक भी आपको यही सलाह देगा.

Purolato

दुनिया में सबसे ज़्यादा बिकने वाले फ़िल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

खेमेबाजी का दौर

अध्यक्ष का चुनाव समस्या बनी

विरोधाभास बिलकुल स्पष्ट है. जनता दल के अंतरिम अध्यक्ष के चुनाव ने पार्टी को टूट के कगार पर ला खड़ा कर दिया लगता है. इस चुनाव का मकसद पार्टी के अंदरूनी लोकतंत्र का राजनैतिक प्रदर्शन करना है.

पार्टी के अध्यक्ष पद से प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस्तीफे के बाद जब एक से अधिक पदों पर बैठे सभी पार्टी पदाधिकारियों ने इस्तीफे दे दिए तो लगा कि पार्टी में लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू हो गई.

वी.पी. सिंह ने पार्टी टिकट पर संसद और विधानसभा के चुनाव लड़ चुके सभी उम्मीदवारों का मतदाता समूह बनाने का प्रस्ताव किया. शुरू में इसे लेकर काफी उत्तेजना थी क्योंकि इस तरह का पिछला चुनाव 1972 में कांग्रेस में हुआ था. लोगों का मानना था कि जनता दल के नए अध्यक्ष के चुनाव से वी.पी. सिंह इंका अध्यक्ष राजीव गांधी पर महत्वपूर्ण विजय दर्ज कर लेंगे. लेकिन इस योजना पर जल्द ही संकट के बादल मंडराने लगे.

रामकृष्ण हेगड़े ने, जिन्हें पार्टी की बागडोर संभालने के लिए सबसे उपयुक्त नेता माना जा रहा था, यह स्पष्ट कर दिया कि वे प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तावित किए जाने पर ही नामांकन पत्र भरेंगे. लेकिन वी.पी. सिंह ने तटस्थता की दलील देते हुए ऐसा करने से इनकार कर दिया. तब उप-प्रधानमंत्री देवीलाल को अचानक लगा कि अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का यह अच्छा मौका है. सो, उन्होंने कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एस.आर. बोम्मई को अपना उम्मीदवार बताते हुए अखाड़े में उतार दिया. उधर, अजित सिंह ने भी अपने चरित्र के अनुरूप देवीलाल से समझौता कर लिया और बोम्मई के पीछे अपनी ताकत झोंक दी. चंद्रशेखर ने भी वी.पी. सिंह को परेशानी में डालने के लिए इस गुट को अपना पूरा समर्थन दिया.

दूसरी तरफ वी.पी. सिंह के खेमे ने देवीलाल की इस मांग पर ध्यान देते हुए कि पार्टी अध्यक्ष दक्षिण का होना चाहिए, पार्टी प्रवक्ता जयपाल रेड्डी को अपना उम्मीदवार बनाया. और शुरू में नामांकन पत्र भरने वाले प्रधानमंत्री के बड़े भाई संतबख्श सिंह मैदान से हट गए. तीसरे उम्मीदवार हुकुमदेव नारायण सिंह यादव को कोई खास समर्थन हासिल नहीं है.

शुरू में देवीलाल ने रेड्डी का खुला विरोध करने में हिचकिचाहट दिखाई. उनके चीन रवाना होने के पहले कुलदीप नैयर जब उनसे मिले तो उन्होंने कहा कि चुनाव में वे किसी का पक्ष नहीं लेंगे लेकिन अगर हेगड़े लड़ते तो वे उनकी मुखालफत जरूर करते. उन्होंने रेड्डी से कहा, "मेरी शुभ-कामनाएं आपके साथ हैं. आपने पार्टी प्रवक्ता के रूप में उम्दा काम किया है."

23 अप्रैल को जब जनता दल की राजनैतिक मामलों की समिति की बैठक हुई तो सदस्यों ने वी.पी. सिंह से उनकी पसंद पूछी. उन्होंने फिर तटस्थता की दलील देते हुए किसी का पक्ष लेने से इनकार कर दिया. पार्टी नेताओं के भारी दबाव के बावजूद वी.पी. सिंह यही कहते रहे कि उनका कोई उम्मीदवार नहीं है. इस बीच, ओमप्रकाश चौटाला ने बोम्मई के साथ कई गुप्त बैठकें कीं. इस तरह के समर्थन से प्रोत्साहित होकर बोम्मई ने एक प्रेस कॉन्फरेंस बुलाकर कहा, "मैं भारी बहुमत से जीतूंगा. ज्यादा-तर वरिष्ठ नेताओं ने मुझे समर्थन देने का वादा किया है."

कार्टून: अजीत नैनन

जनता दल के अंतरिम अध्यक्ष के लिए होने वाले चुनाव ने पार्टी को टूट के कगार पर ला खड़ा कर दिया लगता है

लेकिन रेड्डी भी कोई कमजोर उम्मीद-वार नहीं हैं. पार्टी प्रवक्ता के रूप में उन्होंने राज्यों के महत्वपूर्ण पार्टी नेताओं से घनिष्ठ संबंध बना लिए हैं. अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी बोम्मई पर वे शुरू से ही भारी पड़ रहे हैं. हालांकि हरियाणा, उत्तर प्रदेश और गुज-रात के मुख्यमंत्री उनके विरोधी हैं लेकिन वहां के वरिष्ठ पार्टी नेताओं ने उन्हें कुछ वोटों का भरोसा दिया है. उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री रेवतीरमण सिंह ने मुख्यमंत्री मुलायम सिंह की मर्जी के खिलाफ रेड्डी के पक्ष में खुलेआम प्रचार किया. मुख्यमंत्री ने देवीलाल के उम्मीदवार का समर्थन करने का फैसला किया है. इसी तरह, गुजरात में जहां मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल ने बोम्मई का समर्थन करने का फैसला किया है, वहीं केंद्रीय मंत्री और वी.पी. सिंह के वफादार चिमनभाई मेहता ने रेड्डी के पक्ष में समर्थन जुटाने के लिए रात-दिन एक कर दिया. लेकिन आंध्र प्रदेश से राज्यसभा के सदस्य रेड्डी ने इस आरोप का जोरदार खंडन किया है कि उन्हें प्रधानमंत्री ने अखाड़े में उतारा है.

उन्होंने कहा, "राजनीति में आदमी अपने बूते पर आता है और मैं भी अपने बूते पर आया हूं."

देवीलाल ने चौटाला से पार्टी अध्यक्ष पद के उम्मीदवारों की स्थिति की जानकारी लेने के बाद पेइचिंग से राज्यों की राज-धानियों और दिल्ली में फोन खटखटाने शुरू कर दिए. उन्होंने भुवनेश्वर में बीजू पट-नायक, पटना में लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार और दिल्ली में शरद यादव तथा दूसरे लोगों को फोन किए. एक अनुमान के मुताबिक उन्होंने बोम्मई के पक्ष में प्रचार के लिए पेइचिंग से कम-से-कम 50 लोगों से टेलीफोन से संपर्क किया.

हालांकि जनता दल के सांगठनिक चुनाव 5 अक्तूबर को होने वाले लेकिन अंतरिम अध्यक्ष के चुनाव के लिए पार्टी के भीतर जिस तरह से तनातनी और जोड़-तोड़ चल रही है उससे एक बार फिर यह साबित हो गया है कि पार्टी के चुनावों के बारे में बात करना जितना आसान है, उस पर अमल करना उतना ही मुश्किल. —भास्कर राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्रवात

विनाशकारी विपदा

आंध्र प्रदेश में भारी नुकसान

लुका-छिपी करते-करते जब यह आंध्र प्रदेश पहुंचा तो इसने उसके पूरे तटीय इलाके में कहर बरपा दिया. बंगाल की खाड़ी से उठे इस चक्रवात ने आंध्र प्रदेश के छह जिलों—कृष्णा, प्रकाशम, गुंटूर, पूर्वी गोदावरी, पश्चिमी गोदावरी और विशाखापत्तनम में विनाश किया. तमिलनाडु के कुछ इलाके भी इससे प्रभावित होने से नहीं बच पाए.

चक्रवात से टूटी संचार व्यवस्था के कारण जहां राहत कार्यों में बाधा पड़ी है वहीं इससे हुए नुकसान का भी सही पता नहीं चल सका है. तूफान गुजरने के तुरंत बाद तक करीब 225 लोगों के मरने की खबरें आ चुकी थीं.

200 से 225 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आए तूफान ने इस बार विजयवाड़ा, मछलीपत्तनम, पमारू, गुंटूर, बपटिया, रियाले और तेनाली जैसे शहरों को भी प्रभावित किया. उल्लेखनीय है कि 1977 के भारी चक्रवात के समय ये शहर बच गए थे. तूफान से बिजली आपूर्ति समाप्त हो गई, सड़क और रेल संपर्क टूट गया और आधे से अधिक टेलीफोन एक्सचेंजों ने काम करना बंद कर दिया.

इस बार 1977 की तुलना में मौतें कम हुई हैं. इसका कारण चक्रवात के आने से पहले कर ली गई तैयारी थी. बंगाल की खाड़ी में उठने के बाद से इसकी गतिविधियों पर नजर रखी जाने लगी.

इस बार चक्रवात के संभावित मार्ग में पड़ने वाले लोगों को लगातार चेतावनी दी जाती रही. खतरे का संकेत देने वाले 100 से अधिक उपकरणों और मृतप्राय उपग्रह इन्सेट-1 बी ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. पूरे तटीय क्षेत्र में चक्रवात का

इन्सेट-1बी से दिखा चक्रवात

पता लगाने के लिए लगे छह रॉडारों ने भी इसकी गतिविधियों के बारे में सूचना दी.

इन्हीं सूचनाओं के आधार पर सरकार ने करीब एक लाख लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचा दिया था. फिर भी जब 9 मई को तूफान अनुमानित दिशा को बदलते हुए तमिलनाडु की जगह आंध्र प्रदेश पहुंचा तो उसने कम नुकसान नहीं किया. तमिलनाडु में इसने अच्छी बरसात करा दी. मद्रास शहर भी इससे अछूता नहीं रहा. लेकिन तमिलनाडु में भी जान माल का नुकसान हुआ. वहां छह लोग मारे गए.

लेकिन आंध्र प्रदेश इसका असली निशाना बना. करीब 25 लाख लोग इससे प्रभावित हुए. 4 लाख लोगों को तो अपने घर छोड़कर राहत शिविरों में शरण लेनी पड़ी. तूफान के बाद की बरसात ने राहत कार्यों में भी बाधा डाली. सबसे अधिक मौतें गुंटूर जिले में हुईं. हालांकि समय पर चेतावनी मिलने से कई जानें बचा ली गईं पर चक्रवात से जो विनाश हुआ उसका आकलन तो कुछ अरसे बाद ही हो सकेगा.

—आनंद विश्वनाथन

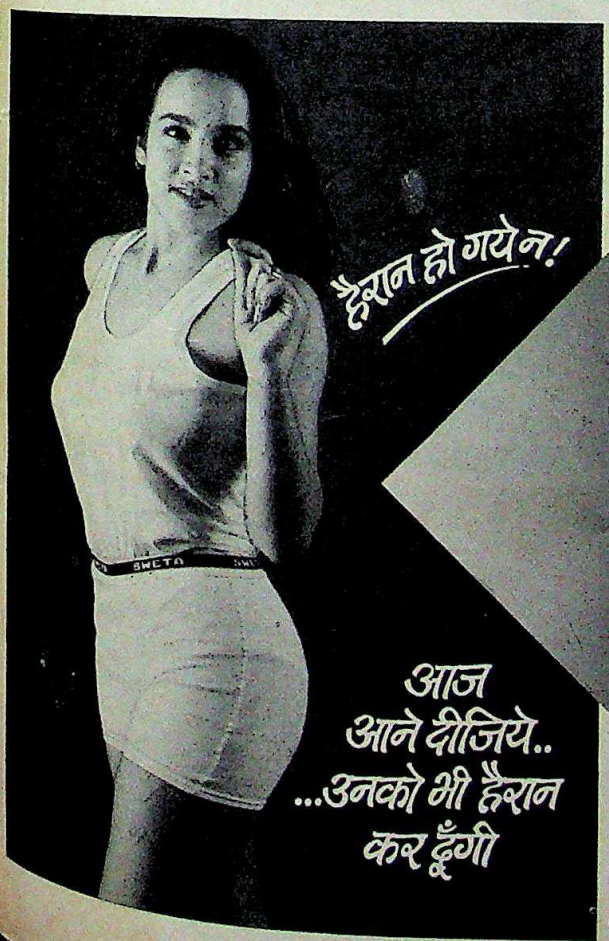

स्वेता
अन्डरवियर - बनियान
केवल पुरुषों के लिये

रु. 2/- की विशेष छूट
तीन स्वेता बनियान या दो स्वेता अण्डरवियर की ख़रीद पर

नाम _____
पता _____
_____
विक्रेता _____

(यह कूपन अपने नज़दीकी दुकानदार को 30 जून, 90 तक देकर 2/- रु० की विशेष छूट का लाभ उठायें) ITH5

Current

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेंट किट्स कांड

बुरे फंसेंगे मुंहलगे

एफआरआई में के.के. तिवारी समेत छह लोगों के नाम

राजीव गांधी की सरकार में अपने बड़बोलेपन के लिए मशहूर प्रोफेसर कमलाकांत तिवारी बहुत जल्द अपने किए का फल भुगतने वाले हैं. और जो अब होने वाला है, वह पिछले नवंबर की उनकी चुनावी पराजय से भी गंभीर हो सकता है.

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने एक प्राथमिकी दर्ज की है जिसमें पूर्व विदेश राज्यमंत्री सहित और छह जनों पर सेंट किट्स के फर्जी कागजात तैयार करने में हिस्सेदारी करने का आरोप है. सेंट किट्स कांड में लाखो रु. के एक फर्जी विदेशी खाते से वी.पी. सिंह का नाम जोड़कर और उनके बेटे अजेय सिंह के दस्तखत वाले कागज जुटाकर भरपूर छीछालेदर की कोशिश की गई थी.

पूर्व विदेशमंत्री पी.वी. नरसिंह राव और विदेश मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव प्रकाश शाह से भी इस सिलसिले में पूछताछ की गई. तिवारी के अतिरिक्त फर्जी दस्तावेज गढ़ने और सरकारी दस्तावेजों में हेराफेरी करने के षडयंत्र में शामिल लोगों में विवादास्पद चंद्रास्वामी, उनके सहयोगी कैलाशनाथ अग्रवाल उर्फ मामा जी, पूर्व प्रवर्तन निदेशक के.एल. वर्मा, उपनिदेशक ए.पी. नांदे, अमेरिकी व्यापारी लैरी कॉल्ब और कैरीबिया स्थित सेंट किट्स की अब दिवालिया हो चुकी संस्था फर्स्ट ट्रस्ट कार्पोरेशन के पूर्व प्रबंध निदेशक जॉर्ज मॅक्लीन के नाम भी शामिल हैं.

पिछले अगस्त में अजेय सिंह पर आरोप लगाया गया कि फर्स्ट ट्रस्ट कार्पोरेशन में उनका खाता है जिसमें उन्होंने 35 करोड़ रु. से भी अधिक की रकम जमा की है.

सेंट किट्स नाटक का दूसरा भाग नवंबर के आम चुनावों में इंका की पराजय के बाद खुलकर सामने आता गया. न्यूयॉर्क में भारत के उच्चायुक्त आर.के. राय ने विदेश सचिव को लिखा कि कुछ कागजातों के सत्यापन के लिए उन्हें बाध्य किया गया. उसी के आसपास त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय उच्चायुक्त शिव कुमार ने कैबिनेट सचिव विनोद पांडे को लिख भेजा कि चंद्रास्वामी, मामा जी, लैरी कॉल्ब और विदेश सेवा के और अधिकारियों ने अजेय के नाम से खाता होने की बात के समर्थन में कुछ कागजात और सेंट किट्स के प्रधानमंत्री से तत्संबंधी पत्र लिखवा लाने के लिए उन पर दबाव डालने की कोशिश की.

इन्हीं दोनों चिट्ठियों के आधार पर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने इस मामले की सीबीआई से जांच कराने का निर्णय लिया. अजेय का नाम घसीटने का प्रयास संभवतः 1988 के अंत के समय शुरू हुआ जब तिवारी विदेश राज्यमंत्री थे. तिवारी ने विदेश मंत्रालय के एक संयुक्त सचिव को मौखिक निर्देश देकर अजेय सिंह और वी.पी. सिंह के छोटे बेटे अभय सिंह के पासपोर्ट का विस्तृत ब्यौरा मांगा. सीबीआई के अनुसार इसका उद्देश्य उनके दस्तखत की नकल हासिल करना. काफी खोजबीन करने पर लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग में आप्रवासी भारतीय अजेय के पासपोर्ट के नवीकरण संबंधी दो आवेदन ढूंढ़ लिए गए.

सीबीआई का मानना है कि सेंट किट्स के दस्तावेजों में किए गए हस्ताक्षर आवेदन पत्र में किए गए दस्तखत से मिलते हैं. हालांकि अजेय ने 1986 में अपना हस्ताक्षर बदल दिया और फर्जी कागजातों पर वी.पी. सिंह के दस्तखत अंग्रेजी में हैं जबकि 1980 के बाद से वे हिंदी में हस्ताक्षर करने लगे.

सीबीआई के मुताबिक इस समय तक इस नाटक के बड़े कर्ताधर्ता तिवारी ही थे. लेकिन इसके बाद इससे नरसिंह राव भी जुड़ गए. सीबीआई का दावा है कि हथियारों के अवैध सौदागर अदनान खाशोगी और चंद्रास्वामी के साथ नरसिंह राव के संबंधों के 'अकाट्य सबूत' उसके पास हैं. न्यूयॉर्क के वाणिज्य

कटघरे में

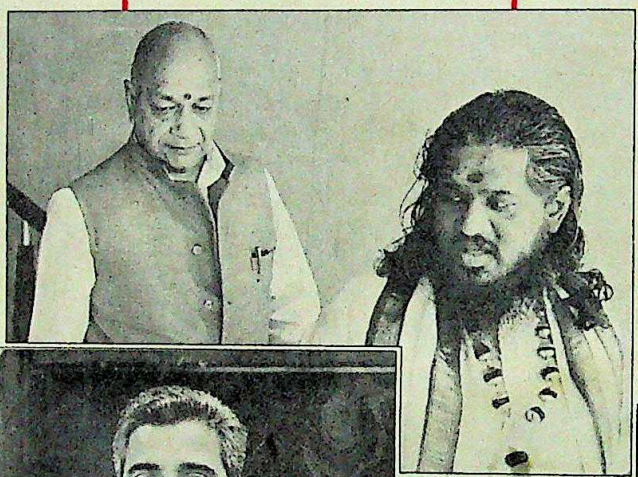

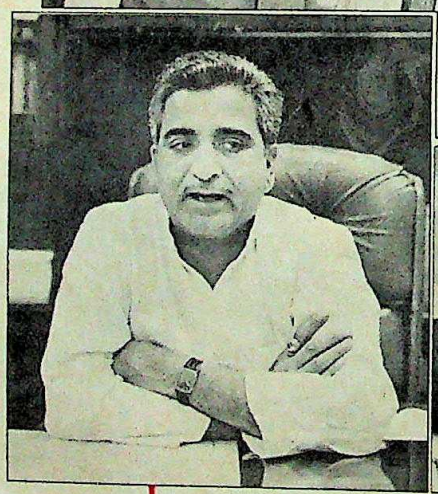

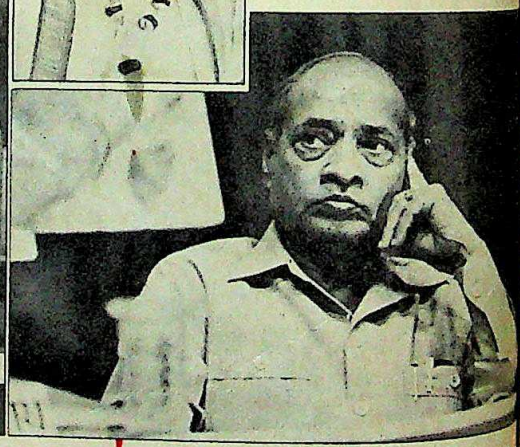

(ऊपर बाएं) मामाजी, चंद्रास्वामी; (नीचे बाएं) तिवारी; (नीचे) राव

सीबीआई के मुताबिक नरसिंह राव, तिवारी और कुछ बड़े अधिकारियों ने सेंट किट्स मामले के फर्जी कागजात तैयार किए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चायुक्त ने जब यह कहा कि 4 अक्तूबर 1989 को मंत्री ने उन्हें न्यूयॉर्क के होटल यूनाइटेड नेशंस प्लाजा के अपने कमरे में बुलाया और उन्हें कुछ दस्तावेजों को सत्यापित करने का निर्देश दिया था, तो सीबीआई ने नरसिंह राव के होटल के बिलों की जांच-परख की. सीबीआई के अधिकारियों ने पाया कि 371-0942 नं. पर मंत्री के कमरे से दस बार टेलीफोन किया गया. इनमें 4 अक्तूबर को सुबह 9.42 पर किया गया फोन भी शामिल है. तब वाणिज्य उच्चायुक्त मंत्री के निर्देश के लिए उनके कमरे में मौजूद थे. यह टेलीफोन नंबर अदनान खाशोगी के कमरे का है जहां चंद्रास्वामी और मामा जी अक्सर ठहरा करते थे.

सीबीआई को दिए गए बयान में नांदे ने माना है कि मामले की पड़ताल के दौरान वे मैरी कॉल्व के साथ एक निजी विमान में सेंट किट्स से न्यूयॉर्क गए थे. सीबीआई का दावा है कि वह विमान खाशोगी का था. नांदे ने अपने बयान में यह भी रहस्योद्घाटन किया कि अमेरिका रवाना होने के पहले उन्हें राजेंद्र भवन से भेंट करने का निर्देश दिया गया था.

इन सबूतों के सहारे सीबीआई इस नतीजे पर पहुंची कि चंद्रास्वामी और दूसरे लोगों ने बार्ज मॅक्लीन को अजेय सिंह के नाम से खाता खुलवाने के लिए अपनी कंपनी के रिकार्ड में हेराफेरी करने के लिए फांस लिया था. वर्तमान सरकार के लगातार आग्रहों के बावजूद मॅक्लीन खाते से संबंधित मूल दस्तावेज नहीं पेश कर पाए हैं. सीबीआई के मुताबिक वे सिर्फ 'खातेदार की प्रति पेश कर सकते.' और तो और, साजिश तो तभी जाहिर हो जाती है जब कोई इस तथ्य पर गौर करे कि फर्स्ट ट्रस्ट कार्पोरेशन की 1986 की सालाना रिपोर्ट में अजेय के खाते में 2.1 करोड़ डॉलर जमा होने की बात है जबकि मॅक्लीन के अनुसार कुल जमा राशि सिर्फ 90 लाख डॉलर है.

मामले में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद जब पूछताछ शुरू होगी तो इस साजिश के और भी सामने आएंगे जिससे पूर्ववर्ती सरकार की करतूतों का परदाफाश हो जाने की उम्मीद है. इंका तो पहले से ही इस जांच की नौटंकी और प्रधानमंत्री के बेटे को बचाने की हरकत कहने लगी है. एक इंका सांसद ने कहा, "राजा के बेटे अजेय के रहन-सहन पर गौर कीजिए. वे पांच महीने बिना किसी ठीकठाक नौकरी के अमेरिका में जमे हैं. इससे शक होता है."

शायद ऐसा हो. लेकिन फिलहाल तो इंका की पतीली में छेद नजर आते हैं. सेंट किट्स मामले के दूसरे दौर में राजा ही भारी पड़ रहे हैं.

—प्रभु चावला

अंतर्कथा

■ इंद्रजीत बधवार

आरिफ को अस्मिता की चिंता

आरिफ मुहम्मद खां की व्यथा गहरी है. धर्म में आस्था रखने वाले, संवेदनशील और करुणावान इंसान आरिफ अपनी अस्मिता के बारे में चिंतित हैं. मंत्री पद की जिम्मेदारियों में खोए रहने के बावजूद वे कश्मीर की बदहाली की चिंताओं से मुक्ति हासिल नहीं कर पाते. हाल ही में मंत्रिमंडल की एक बैठक में वे गरज उठे कि घाटी में अलगाववादी आंदोलन की कामयाबी उन्हें पाल-पोसकर बड़ा करने वाले भारत को तोड़ देगी. देश का वजूद खत्म हो जाएगा.

ऐसा सोचने वाले वे अकेले नहीं हैं. इस्लामी देशों और कश्मीरी अलगाववाद के जरिए भारतीय मुसलमानों की भावना से खिलवाड़ करने की कोशिशों से व्यथित शेखूपुर के मौलवियों, मुरादाबाद में पीतल का काम करने वाले मजदूरों से मैंने मुलाकातें की हैं. दो पीढ़ियों से बरेली में ईंट-भट्टे का कारोबार करते आ रहे परिवार के बशीर अहमद कहते हैं, "कश्मीर में हो रहे वाकयात के अलमबरदार दरअसल धर्मनिरपेक्षता से खिलवाड़ कर रहे हैं. वे हमारे भाग्य से खेलना चाहते हैं."

उनकी चिंता वाजिब भी है. मजहब के आधार पर बंटवारे के बावजूद भारत का धर्मनिरपेक्ष बने रहना आधुनिक विश्व का गौरवपूर्ण उदाहरण है. प्रबुद्ध विचारों की लौ ने जिन्ना के दो राष्ट्रों के सिद्धांत को भेद दिया है.

आज भी भारत के नौ करोड़ मुसलमान जिन्ना के उस कट्टरवादी सिद्धांत की धज्जियां उड़ाते हैं. हाल ही में इंसाफ पार्टी के नेता सैयद शहाबुद्दीन तक ने मेरे सामने स्वीकार किया, "सांप्रदायिकता के अनेक नंगे नाचों के बावजूद मैंने भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को अभी नकारा नहीं है. इसकी जड़ें काफी गहरी हैं. आखिर, हिंदू कट्टरपंथी अभी तक बाबरी मस्जिद को गिराने में कामयाब नहीं हो पाए हैं."

रेखाचित्र: प्रणव दत्त

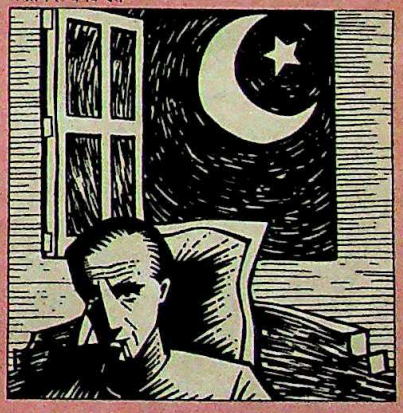

भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप में भले ही विकृतियां आ गई हों या वह महज एक राजनैतिक कर्मकांड बनकर रह गया हो, फिर भी उसका अस्तित्व बना हुआ है. लेकिन बांग्लादेश के बनने के बाद जिन्ना का दो राष्ट्रों का सिद्धांत धराशायी हो चुका है. पाकिस्तान बनाने का मकसद, उसकी राष्ट्रीयता का आधार—कि मुसलमान किसी इस्लामी राष्ट्र में ही शांति से रह सकते हैं—ऐतिहासिक और नैतिक रूप से बेमानी साबित हो चुका है. भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप का 'खोखलापन' जाहिर करते रहना पाकिस्तान के लिए निहित स्वार्थ बन गया है. विश्व इस्लामी आंदोलन की मदद से भारत के मुसलमानों को भड़काना पाकिस्तान के लिए इसी मकसद का हिस्सा है. कश्मीर में संकट कश्मीरी पंडित बनाम मुसलमान या राष्ट्रवाद बनाम अलगाववाद का नहीं है. यह जिन्ना के दो राष्ट्रों के सिद्धांत बनाम भारतीय धर्मनिरपेक्षता की ही अग्निपरीक्षा है.

कश्मीर में आंदोलन फिलहाल मजहबी राष्ट्र बनाने के प्रति समर्पित आतंकवादी गुटों के हाथ में है. इसका मकसद महज भारत से अलग होना नहीं बल्कि धर्मनिरपेक्षता से भी नाता तोड़ना है. इसकी कामयाबी दो राष्ट्रों के सिद्धांत की विजय होगी और उस सिद्धांत की हार होगी जिसके तहत अनेक मुसलमानों ने भारत को स्वदेश माना है. इससे हिंदू कट्टरपंथियों के पुनरुत्थान को भी बल मिलेगा.

क्या आरिफ सरीखे लोग एक बार फिर दो राष्ट्रों में से किसी को चुनने के लिए विवश हों? यही सोचकर उनकी आंखें भर उठती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम जन्मभूमि

सख्त रवैया

शंकराचार्य भी अपवाद नहीं

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने चार महीनों में दूसरी बार भगवे चोले में राजनीति करने वाले साधुओं को मात दी है. इससे पहले फरवरी में उनकी सरकार ने विश्व हिंदू परिषद के अयोध्या मार्च को रोकने में सफलता पाई थी. परिषद वहां मंदिर निर्माण का काम शुरू करना चाहती थी. इस बार सरकार एक कदम और आगे निकल गई और अयोध्या में विवादित स्थल पर दोबारा शिलान्यास करने का संकल्प करने वाले द्वारिकापीठ के शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती को गिरफ्तार कर लिया. यही नहीं, 7 मई को फैजाबाद में शंकराचार्य के 150 समर्थकों को गिरफ्तार करने में भी सरकार नहीं हिचकी.

शंकराचार्य की गिरफ्तारी एक अनहोनी घटना है क्योंकि पहली बार देश के चार शंकराचार्यों में से किसी को सांप्रदायिक शांति को खतरा पैदा करने वाली हरकतों के लिए नजरबंद किया गया है. शंकराचार्य शिलान्यास की जगह को लेकर नाखुश थे और जहां मस्जिद खड़ी है, वहीं शिलान्यास करना चाहते थे.

इस पर प्रधानमंत्री के समर्थन और निर्देश से मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने बड़ी फुर्ती से कार्रवाई की. गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बैठक में यादव ने कहा, "आप मुझे बस केंद्रीय पुलिस बल दे दीजिए और बाकी मुझ पर छोड़ दीजिए." इसके बाद यादव ने राज्य के 60 में से 40 जिलों में 'हाई एलर्ट' घोषित कर जिला मजिस्ट्रेटों और पुलिस अधीक्षकों को दंगाइयों से सख्ती से पेश आने के निर्देश जारी कर दिए. इसीलिए जब शंकराचार्य को अयोध्या में प्रवेश से पहले आजमगढ़ में गिरफ्तार किया गया तो कहीं कोई बड़ा विरोध नहीं हुआ.

शंकराचार्य की परिषद से लंबे अरसे से ठनी हुई है और वे शुरू से ही उसके अयोध्या अभियान के खिलाफ रहे. पिछले जून में चित्रकूट में उन्होंने कहा कि परिषद का शिलान्यास इसलिए त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह अशुभ लग्न में और गलत स्थान पर किया गया. उन्होंने भगवान के नाम पर चंदा वसूलने और मुसलमान विरोधी भावनाएं भड़काने के लिए परिषद की खूब आलोचना की. अयोध्या जाने से पहले उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया, "मैं अयोध्या में उसी स्थल पर मंदिर निर्माण का समर्थक हूं. लेकिन यह निर्माण मुसलमानों की सहमति से ही होना चाहिए. खून-खराबे की नींव पर मंदिर कभी भी भगवान का घर नहीं हो सकता."

इस साल के शुरू में स्वरूपानंद ने आचार्य सुशील मुनि के साथ मुसलमान नेताओं से बात करने की पहल की थी. ये दोनों दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी और दूसरे नेताओं को बातचीत की मेज तक लाने में कामयाब रहे. लेकिन जब परिषद ने अभियान जारी रखा तो सुलह करने आए मुसलमान नेता बिदक गए. लिहाजा बातचीत विफल रही.

लेकिन अभी जो कुछ हुआ उसमें राजनीति साफ झलक रही थी. परिषद ने इस डर से कि स्वरूपानंद सारा श्रेय न बटोर लें, उनकी इस हरकत को राजनीति से प्रेरित बताया. इस आरोप का आधार यह है कि शंकराचार्य के कई समर्थक महत्वपूर्ण इंका पदाधिकारी हैं. प्रेक्षकों को यह इंका की हिंदू वोट बांटने की चाल नजर आई. परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया का कहना है, "यह दुर्भाग्य की बात है कि संत भी राजनीतिकों की चालों में फंस गए." सनातन धर्म सभा के महासचिव रमाकांत गोस्वामी इसके जवाब में कहते हैं, "यदि भाजपा एक शंकराचार्य का अनुकरण कर सकती है तो इंका से जुड़े लोग दूसरे का क्यों नहीं कर सकते."

घटना का रोचक पहलू यह कि शंकराचार्य की गिरफ्तारी पर संतों की ही नहीं, राजनीतिकों की भी अलग-अलग प्रतिक्रिया रही. जहां दर्जन से भी ज्यादा इंका सांसदों ने इस साहसिक काम के लिए मुलायम सिंह की तारीफ की, वहीं इंका नेता पी.एन. सुकुल ने संसद में इसकी भर्त्सना की.

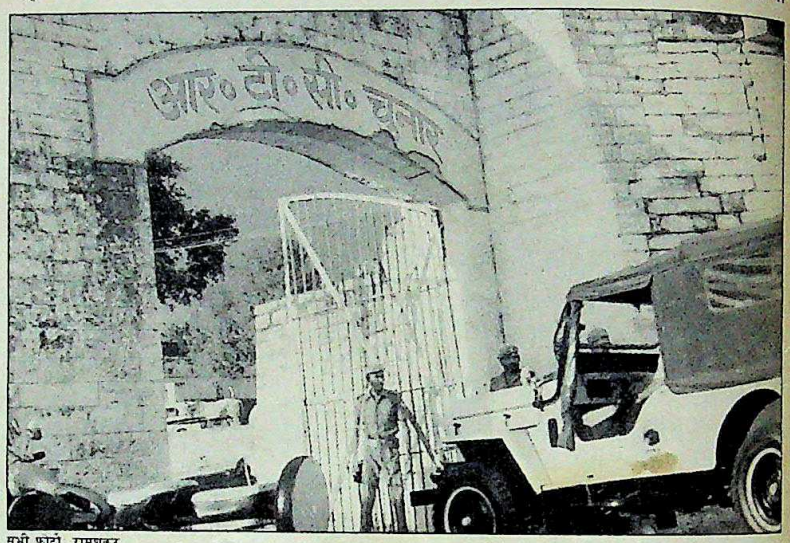

सभी फोटो: रामशंकर

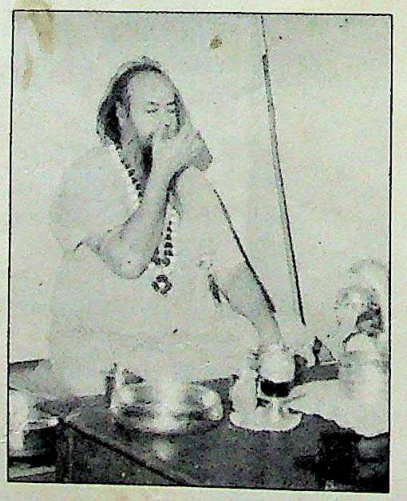

चुनार का किला जहां शंकराचार्य को रखा गया (ऊपर); और किले में स्वरूपानंद सरस्वती

फिर भी इस घटना से वीपी सिंह को तीन सफलताएं मिली हैं. एक तो इस गिरफ्तारी से हर तबके के कट्टरवादी को यह संदेश मिला है कि किसी को भी कानून तोड़ने की इजाजत नहीं दी जाएगी. इसके जरिए कश्मीर में और कड़े कदम उठाने का रास्ता साफ हो गया है. दूसरे, इससे कट्टरवादी हिंदुओं की ताकत का भी अंदाज हो गया, जिससे सरकार को जून में परिषद के मंदिर निर्माण अभियान फिर शुरू करने पर जूझना पड़ेगा. इस बार हिंदू धर्माचार्यों के मतभेद भी उभर कर आए. अब देखना यह है कि क्या सरकार यह धर्मनिरपेक्षता कायम रख पाएगी. और जब-जब धार्मिक कट्टरवाद का दानव सिर उठाएगा, हर बार क्या वह इतनी ही मजबूती से उसे कुचल पाएगी?

—पंकज पचौरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजय आयुर्विज्ञान संस्थान

बदनामी के धब्बे

निदेशक 'फेरा' के उल्लंघन में कैद

उम्मीद नहीं थी कि प्रवर्तन निदेशालय अपनी पड़ताली खुर्दबीन ऐसे शख्स पर भी तान सकता है. यह शख्स हैं लखनऊ के ख्यातिप्राप्त संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशक और प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक बी.बी. सेठी.

विदेशी मुद्रा कानून (फेरा) के उल्लंघन के आरोप में सेठी इन दिनों दिल्ली की तिहाड़ जेल में कैद हैं. पिछली इंका सरकार के कई बड़े नेताओं के साथ उनकी निकटता की वजह से ही उनके खिलाफ की गई कई शिकायतों को नजरअंदाज कर दिया जाता रहा. सेठी के वकील का कहना है कि अब सेठी को इसलिए परेशान किया जा रहा है क्योंकि उन्होंने कभी राजीव गांधी की बेटी प्रियंका का इलाज किया था.

लेकिन प्रवर्तन निदेशालय का कहना है कि किसी तरह का बदला साधने की कोई बात नहीं है. निदेशालय ने सेठी के खिलाफ सबूतों का पुलिंदा इकट्ठा कर लिया है. इनमें यह तथ्य भी शामिल है कि अमेरिका में अध्ययन कर रही उनकी बेटी गीता के खाते में एक विदेशी दवा कंपनी और चिकित्सा उपकरण बनाने वाली एक कंपनी ने दो बार पैसा जमा कराया. निदेशालय का दावा है कि उसके पास इस बात का ठोस प्रमाण है कि 1.19 लाख रु. और 3.8 लाख रु. गीता के खातों में जमा किए गए.

इसके अलावा निदेशालय ने संजय संस्थान की खरीदारी समिति के अध्यक्ष डॉ. डी.के. छाबड़ा के घर से भी 4.55 लाख रु. बरामद किए. इन छापों के बाद संस्थान के डीन डॉ. एस.एस. अग्रवाल और छाबड़ा ने अपने-अपने पदों से इस्तीफा दे दिया.

पिछले साल दो अलग-अलग लेखा परीक्षणों से चिकित्सा उपकरण के आयात में हुई करोड़ों रुपयों की इस हेराफेरी का मामला प्रकाश में आया. लेखा रिपोर्टों ने यह संदेह व्यक्त किया कि संबद्ध कंपनियों को काफी अधिक विदेशी मुद्रा का भुगतान किया गया और यही पैसा बाद में विदेशी खाते में पहुंचा दिया गया. हेराफेरी, फेरा के उल्लंघन, चिकित्सा उपकरणों के आयात में दलाली जैसी बातों के अलावा 'सतत अनियमितता' की भी चर्चा महालेखाकार की अप्रैल 1989 की रिपोर्ट में की गई.

इंडिया टुडे की पड़ताल से भी कई ऐसी बातें सामने आईं. एक उदाहरण इस प्रकार है: संस्थान ने स्वीडन की कंपनी एलकेबी से चिकित्सा उपकरणों को उसके दिल्ली स्थित भारतीय एजेंट 'मेसर्स फार्मेशिया लिमिटेड' के मार्फत आयात किया था. सप्लायरों की ओर से डीन को भेजे गए टेलेक्स का संदेश इस प्रकार था: "संदर्भ: छूट: हमारी कंपनी प्रसन्नतापूर्वक आपको निम्नांकित रूप से विशेष छूट देती है—गामा या बीटा काउंटर पर 20 प्रतिशत; एचपीएलसी/एएए/एफपीएलसी पर 12.5 प्रतिशत; अन्य चीजों पर 10 प्रतिशत." हालांकि खरीदारी समिति की बैठक इस टेलेक्स संदेश की प्राप्ति के करीब एक सप्ताह बाद हुई लेकिन 40.26 लाख रु. मूल्य की चीजों की खरीद का आदेश 5.25 लाख रु. की छूट का हिसाब रखे बिना दे दिया गया.

उत्तर प्रदेश के महालेखाकार की ऑडिट रिपोर्ट ने भी इस मामले में 'फेरा' के उल्लंघन का पता लगाया जहां विदेशी बीमा एजेंसियों को आयातित वस्तुओं की बीमा की किस्त का भुगतान भारतीय मुद्रा के बदले विदेशी मुद्रा में किया गया. किस्त की अनुमानित राशि है: 1.42 करोड़ रु.

निदेशालय के पास वे दो पत्र भी हैं जो सेठी को तत्कालीन सहायक खरीदारी अधिकारी वीरेंद्र सिंह ने लिखे थे. इन पत्रों में उन्होंने सेठी पर कुछ विदेशी कंपनियों के प्रति पक्षपात बरतने और 'फेरा' के उल्लंघन का आरोप लगाया था.

संस्थान के एक पूर्व वरिष्ठ शोध अधिकारी डॉ. एस.सी गोदियाल को भी तब जाना पड़ा जब वे सेठी मंडली की हेराफेरियों के खिलाफ आवाज उठाने लगे. वे यह भी बताते हैं कि करीब 100 कर्मचारियों को सेवा से इसलिए बरखास्त कर दिया गया क्योंकि वे सेठी के काले कारनामों के बारे में चुप नहीं रह सके.

फोटो: आर.के. गुप्ता

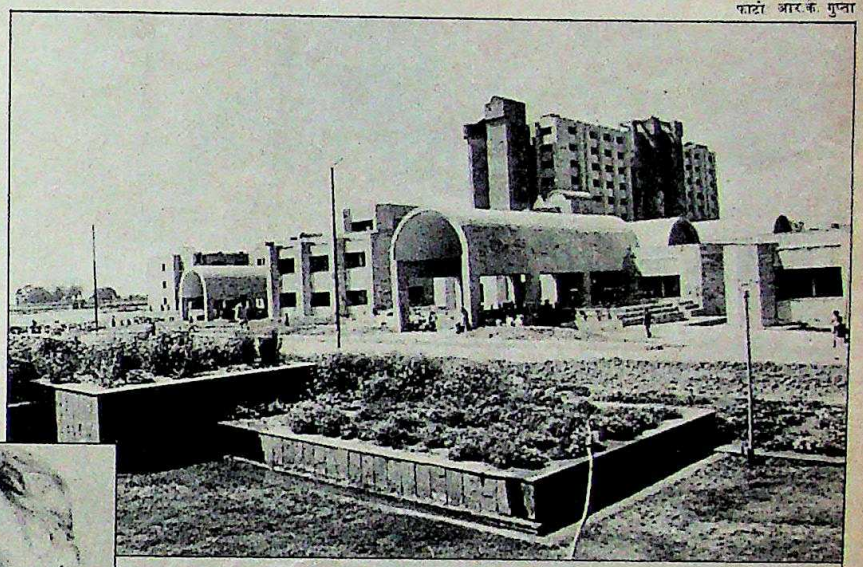

निदेशक की गिरफ्तारी से ऐसे बड़े घोटाले का भंडाफोड़ हुआ, जिसने इस संस्थान की प्रतिष्ठा धूल में मिलाकर रख दी

संजय गांधी संस्थान और (इनसेट) सेठी: गंभीर आरोप

सेठी के खिलाफ इतनी सारी शिकायतों के बावजूद पिछली इंका सरकार ने उनके खिलाफ कार्रवाई करने में सुस्ती दिखाई. और ताज्जुब की बात तो यह है कि वर्तमान जनता दल सरकार ने भी इस मामले में चुस्ती नहीं बरती है.

संस्थान के कर्मचारी संघ के सचिव जयशंकर प्रसाद ने आरोपों को पुष्ट करने वाले जरूरी दस्तावेजों के साथ एक पत्र प्रवर्तन निदेशालय को 5 फरवरी को भेजा.

इस पूरे प्रकरण का सार यह है कि अत्याधुनिक साज-सामान से लैस यह संस्थान देश की एक बदनाम संस्था बन गई है. इसने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्थाएं भी भ्रष्टाचार की पहुंच से बाहर नहीं हैं. —दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

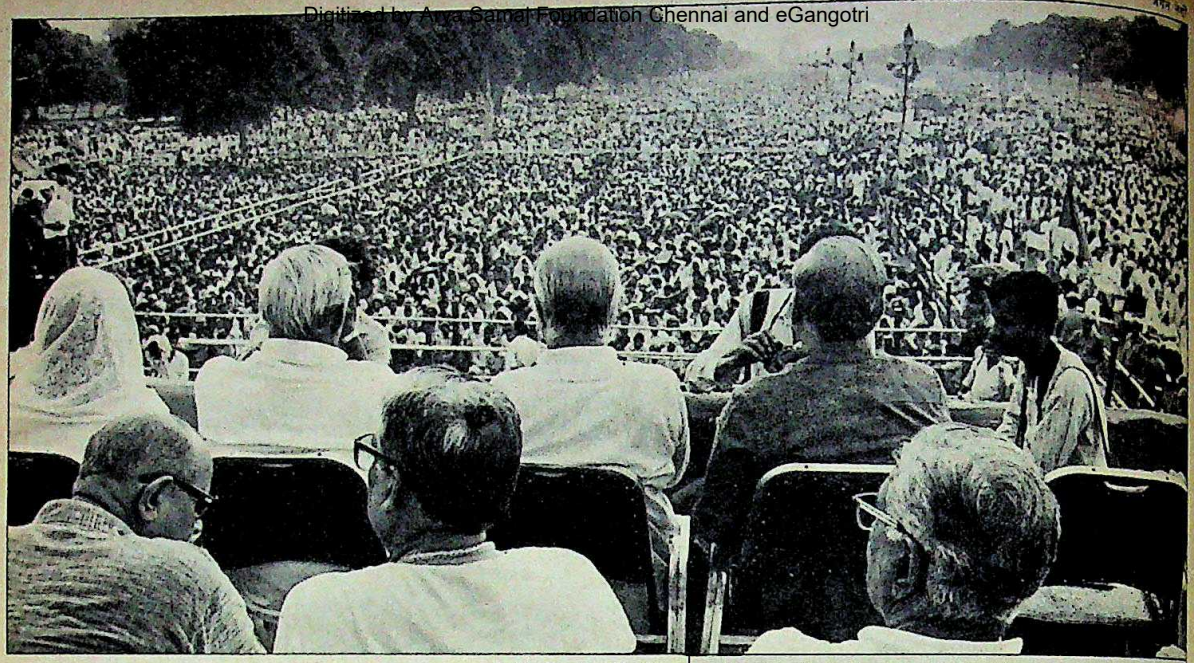

दिल्ली की रैली; (इनसेट) भंडारी: उभरते नेता

भाजपा

आगे की तैयारी

पंचवर्षीय योजना बन रही

विधानसभा चुनावों का गुबार अभी भले ही न छंटा हो लेकिन भाजपा के लिए अगले आम चुनाव की तैयारी का वक्त आ गया लगता है.

पार्टी अगले चुनाव में, वे जब कभी हो, केंद्र में सत्ता पाने की पंचवर्षीय कार्ययोजना बना रही है. पर वह मध्यावधि चुनाव की संभावना को बहुत ही क्षीण मान रही है. पार्टी के उपाध्यक्ष सुंदर सिंह भंडारी कहते हैं, "हम चाहते हैं कि यह सरकार पूरे पांच साल चले लेकिन हम किसी आकस्मिक बदलाव के लिए भी तैयारी कर रहे हैं."

ऐसी किसी स्थिति से निबटने के लिए पार्टी ने दोहरी रणनीति बनाई है—उन इलाकों में, जहां चुनाव में उसे सफलता मिली है, अपनी पकड़ मजबूत करना और नए क्षेत्रों में प्रभाव बढ़ाना. इसने उत्तर प्रदेश, बिहार, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में सांगठनिक गतिविधियां तेज करने का फैसला किया.

अपने कलकत्ता अधिवेशन में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने पंचवर्षीय कार्य-योजना बनाने के लिए भंडारी के नेतृत्व में 11 सदस्यीय समिति बनाई. यह योजना संभवतः इस साल जुलाई तक तैयार हो जाएगी. महत्वपूर्ण बात यह है कि इस वर्ष के आखिर में भाजपा जब अपना नया अध्यक्ष चुनेगी तो भंडारी भी इस पद के मजबूत दावेदार होंगे. यह समिति पार्टी के सदस्यों की राय जानने के लिए अभी प्रश्नावली तैयार कर रही है.

पार्टी नेताओं ने निष्कर्ष निकाला कि मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान की राज्य सरकारों के कामकाज के आधार पर ही आगे केंद्र में सत्ता पाने की सफलता-असफलता निर्भर करेगी.

इसलिए इन नेताओं का मानना था कि इन राज्य सरकारों की कार्यकुशलता बढ़ाने को ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए. इस उद्देश्य के लिए नेताओं ने सरकारों के कामकाज पर पार्टी द्वारा निगरानी रखने का सुझाव दिया. पार्टी महासचिव विजय कुमार मल्होत्रा को जिम्मा दिया गया कि वे निगरानी के लिए बुद्धिजीवियों, पूर्व प्रशासकों और अर्थ-शास्त्रियों का विशेषज्ञ दल गठित करें.

कुछ योजनाएं तैयार भी हो चुकी हैं. भाजपा-शासित प्रदेशों में हरिजन-वनवासी कल्याण तथा रोजगार पैदा करने वाले कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्रमुखता दी गई है.

साथ ही केंद्रीय नेतृत्व इस बात पर भी नजर रखेगा कि सत्ता मिलने से पार्टी कार्यकर्ताओं में भ्रष्टाचार न पनपने लगे. जून से पार्टी देश भर में जिला स्तर के प्रशिक्षण शिविर लगाएगी जिनमें केंद्रीय पर्यवेक्षक भाग लिया करेंगे. भाजपा की रणनीति के मुख्य रचयिता और पार्टी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी के करीबी सहायक गोविंदाचार्य ने पार्टी के सांसदों, विधायकों और विभिन्न स्तर के पदाधिकारियों के दिशा निर्माण के लिए भी शिविर लगाने पर जोर दिया है.

अपनी सांगठनिक ताकत बढ़ाने के लिए भाजपा अपनी राज्य सरकारों से उम्दा काम करवाना चाहती है

वैचारिक प्रचार के उद्देश्य से पार्टी के पूर्णकालिक सदस्यों की संख्या मौजूदा 100 से बढ़ाकर 500 करने का सुझाव भी उन्होंने दिया है. इससे प्रायः सभी संसदीय चुनाव क्षेत्रों में एक-एक पूर्णकालिक कार्यकर्ता तैयार हो जाएगा. भंडारी की तरह गोविंदाचार्य भी मानते हैं कि भाजपा के निकट भविष्य में ही सत्ता में आने की संभावना कम है. वे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पर 'कामचलाऊ ढंग से मामले निबटाने' का आरोप लगाते हुए कहते हैं कि "ऐसे में भाजपा के सत्ता संभालने की संभावनाएं मौजूद हैं."

और इस संभावना को सही साबित करने में पार्टी निश्चित रूप से कोई कसर नहीं छोड़ रही है. उसकी पंचवर्षीय कार्य-योजना यही बताती भी है. —भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महम

दांव पर लगी है साख

केवल दड़बा कलां में जीत से चौटाला की साख नहीं बढ़ेगी

महम में भले ही धूल चाटनी पड़े, दड़बा कलां में जीत पक्की है—यदि हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला इस भरोसे हैं तो इससे उनकी साख में इजाफा नहीं होने वाला. उनकी और उनके पिता उप-प्रधानमंत्री देवीलाल की साख तभी कुछ बढ़ेगी जब चौटाला महम विधान-सभा क्षेत्र में जीत हासिल करें.

लेकिन शायद ऐसा न हो क्योंकि महम में दोबारा होने वाले उपचुनाव में कांटे की टक्कर की सभावना है. जनता दल के बागी उम्मीदवार आनंद सिंह डांगी चौटाला को नाकों चने चबवाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं. यहां फरवरी में हुआ चुनाव भारी गड़बड़ियों के आरोपों के बाद चुनाव आयोग ने रद्द कर दिया गया था.

अब 26 मई को होने वाले उपचुनाव के लिए दोनों प्रतिद्वंद्वी एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर दावे कर रहे हैं. चौटाला ने महम में 1 मई को नाटकीय घोषणा की, "यदि मैं 17,000 से कम वोटों के अंतर से जीता तो इस्तीफा दे दूंगा क्योंकि देवीलाल ने 1987 में यहां से इतने ही वोटों के अंतर से जीत हासिल की थी." उधर, डांगी दावा करते हैं, "यदि मैं कम-से-कम 35,000 मतों के अंतर से नहीं जीता तो राजनीति से संन्यास ले लूंगा, बशर्ते चुनाव निष्पक्ष हो."

असली सवाल यही है, क्या इस बार चुनाव शांति से होगा? चौटाला ने तो इसके उलट ही संकेत दिया है. उन्होंने घोषणा की है, "यदि किसी व्यक्ति ने मेरी पार्टी के किसी कार्यकर्ता पर उंगली उठाई तो उसके हाथ काट दिए जाएंगे. यदि किसी ने उसकी तरफ टेढ़ी नजर से देखा तो उसकी आंखें निकाल ली जाएंगी."

दरअसल, महम में फरवरी में हुई घटनाओं की पुनरावृत्ति की ही तैयारी होती दिख रही है. पुलिस डांगी समर्थकों के दमन में लगी हुई है. डांगी के चुनाव अभियान प्रबंधक सतबीर कुंडू और दो सक्रिय कार्यकर्ताओं संपूरण सिंह और रणधीर सिंह को हिरासत में ले लिया गया. स्वामी अग्निवेश सहित 30 लोगों के खिलाफ चोरी, हत्या के उकसावे और पेड़ कटाई के मामले दर्ज किए गए हैं. डांगी और अग्निवेश ने 'दमन' के खिलाफ मुख्य चुनाव आयुक्त को विरोध पत्र लिखा है. इस बार भी महम के मतदाताओं को लुभाने की भरपूर कोशिश जारी है. सोनीपत के सांसद कपिल देव शास्त्री ने एक रैली में वादा किया, "1992 तक महम का एक भी युवक बेरोजगार नहीं रहेगा."

इसी बीच चुनाव चिन्ह को लेकर भी बखेड़ा मचा हुआ है. इस बार डांगी को शेर चुनाव चिन्ह नहीं मिलने जा रहा. उनसे इस चिन्ह को छीनने के लिए दो अनजान-से निर्दलीय उम्मीदवार अभय राम और अजीत सिंह खड़े किए गए हैं क्योंकि सामान्य चिन्ह वर्णानुक्रम से मिलते हैं. डांगी खेमा ज्यादा चिंतित है और चौटाला की रणनीति के उजागर होने का इंतजार कर रहा है. हालांकि चौटाला यह कहते हैं कि चुनावों की देखरेख के लिए केंद्रीय बलों को तैनात किया जाएगा लेकिन हकीकत यह है कि उन्होंने चुनाव आयोग से इस बारे में कोई औपचारिक अनुरोध नहीं किया है.

उधर, आयोग ने भी अर्द्धसैनिक कंपनियां भेजने की घोषणा नहीं की है. डांगी को आशंका है कि स्थानीय पुलिस की मदद के लिए अंततः नाममात्र को अर्द्धसैनिक बल भेज दिए जाएंगे. और चुनाव फिर रद्द कराने के लिए किसी उम्मीदवार की 'हत्या कराई जा सकती है.'

कुछ भी हो, चौटाला का दड़बा कलां से जीतना पक्का है. यह सीट उनके लिए विद्या बेनीवाल ने खाली की है जो पिछले महीने राज्यसभा के लिए चुनी गई. सो, महम में हार से चौटाला को कोई फर्क नहीं पड़ेगा. और यदि वे महम में संदिग्ध उपायों के बूते जीतते हैं तो वह जीत हार से बेहतर कतई नहीं मानी जाएगी. —**हरिंदर बवेजा**, महम में

जगन नेगी

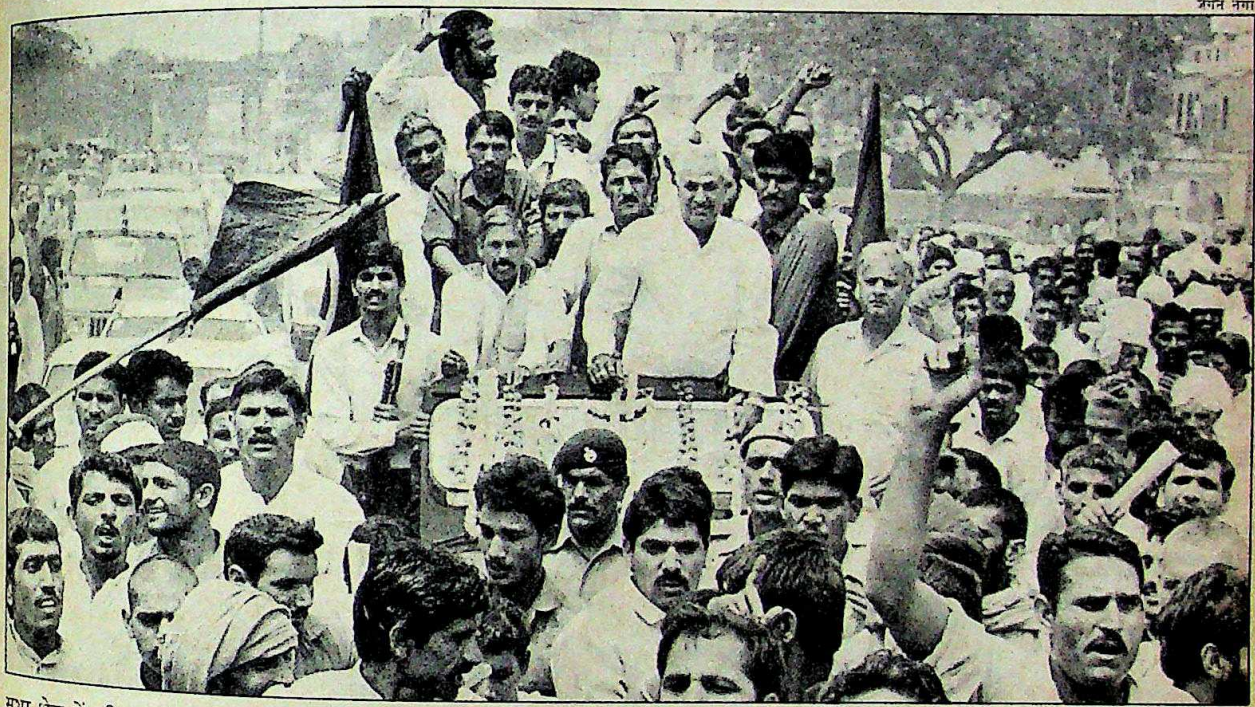

महम में चौटाला: उग्र तेवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

कौरवी करतूत

वनवासी मजदूर का हाथ काटा

फदाली अब कोई काम करने लायक नहीं रह गया है. पिछले महीने इस 30 वर्षीय खब्बू वनवासी का बायां हाथ उस व्यक्ति ने काट दिया जिसके खेत मे वह पांच साल से काम कर रहा था. फदाली का कसूर यही था कि बंधुआ होते हुए भी उसने अपने मालिक का काम करने से इनकार कर दिया था और खेत छोड़कर भाग गया था. आतंक से थरथर कांपते हुए इस नौजवान ने बताया कि उसके मालिक ने उससे कहा, "अगर तुम्हें काम करना है तो मेरे लिए ही करोगे वरना कहीं नही कर पाओगे."

फदाली का मालिक, 40 वर्षीय नरेंद्र सिंह कौरव मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में बुद्धा गांव का निवासी है. वह रायसेन जिला इंका समिति महासचिव और जिला भूमि विकास बैंक का पूर्व अध्यक्ष है.

पुलिस को अपने प्रथम बयान में कौरव ने फदाली का हाथ काट लेने की बात मानी है. उसका कहना है कि वह अपनी पत्नी के प्रति बुरी निगाह रखने के लिए फदाली से विरोध प्रकट करने गया था, तभी उसने कुल्हाड़ी से उस पर हमला कर दिया. कौरव कहता है, "मैंने आत्मरक्षा में हाथ उठाया और फदाली घायल हो गया." फदाली इस कहानी को मनगढ़ंत बताता है. पड़ोसी भी उसकी बात का समर्थन करते हैं.

दूसरे हलवाहों की तरह उसे भी छह माह की मजदूरी छह क्विंटल अनाज मिला पड़ती है. कोई हलवाहा छह माह पूरे किए बिना मालिक के यहां से नहीं हट सकता है. इस दौरान उसे अपनी रोजी चलाने के लिए उधार लेना पड़ता है. फदाली पर भी कौरव का 1,500 रु. कर्ज चढ़ गया था. वह कर्ज चुकता किए बिना काम नहीं छोड़ सकता था और इस काम को छोड़े बिना कर्ज अदा करना भी संभव नहीं था.

आखिरकार बरदाश्त के बाहर होने पर 2 अप्रैल को वह खेत से भाग गया और कुछ किमी दूर पाड़ा गांव में अपने चाचा के घर चला गया. अगले दिन कौरव के आदमी उसे खोजते वहां पहुंचे और वापस ले गए. तीन दिन बाद उस पर घातक हमला हुआ और उसे खेत में लहूलुहान छोड़ दिया गया.

एक दूसरे आरोपी के साथ कौरव को गिरफ्तार कर लिया गया. लेकिन कुछ घंटों में ही उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया. पुलिस ने एक मामूली-सा मुकदमा दर्ज किया. पिछले पखवाड़े प्रदेश इंका अध्यक्ष अर्जुन सिंह समेत पार्टी के कई नेताओं ने फदाली को मुआवजा देने की जोरदार मांग की. इस तथ्य से आंख चुरा ली गई कि कौरव अभी भी जिला इंका समिति के पद पर बना हुआ है.

आर.सी. साह

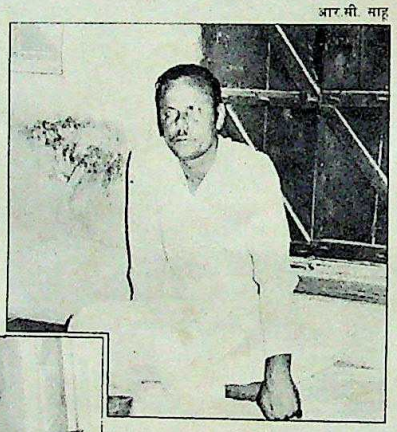

फदाली (बाएं); और कौरव: बर्बर हमला

राज्य सरकार के तीन मंत्री भी फदाली को देखने अस्पताल गए और उसे 10,000 रु. मुआवजा और नौकरी दिलाने का वादा किया. लेकिन भूपतियों को ऐसे अत्याचार करने की शह देने वाली बंधुआ मजदूरी की प्रथा जैसे मूलभूत मुद्दे पर सभी का मुंह सिला हुआ ही लगता है.

—नरेंद्र कुमार सिंह, रायसेन में

सनद रहे

मृत्यु: लंदन के उपनगर में निर्वासित नगा नेता *अंगामी जापू फिजो* (85 वर्ष) की. "वे नगा राष्ट्रीय परिषद के नेता थे और 14 अगस्त 1947 को उन्होंने नगालैंड को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया. 1949 में उन्हें राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के कारण गिरफ्तार किया गया लेकिन बाद में रिहा कर दिया गया. 1957 में वे इग्लैंड में निर्वासित जीवन बिताने लगे.

फिर छपने लगा: *'इंडियन पोस्ट'* साढ़े तीन महीने बाद. राजीव सरकार की आलोचना बंद करने के लिए मालिकों के दबाव के कारण संपादक ने इस्तीफा दिया. इसके बाद मालिक विजयपत सिंघानिया ने अखबार बेच दिया.

अनुमति मांगी: सोवियत शासक जोसेफ स्तालिन की बेटी 64 वर्षीया *स्वेतलाना* ने भारत में बसने की अनुमति के लिए विदेश मंत्रालय से संपर्क किया. स्वेतलाना अभी कैंब्रिज में रह रही हैं. सोवियत व्यवस्था की आलोचना करने के कारण उनकी नागरिकता छीन ली गई थी.

मृत्यु: अखिल बोडो छात्र संघ के अध्यक्ष 30 वर्षीय *उपेंद्र ब्रह्मा* की मृत्यु बंबई में दिल और सांस की तकलीफ से हुई. अपनी गोल्फ वाली टोपी के कारण अलग से ही पहचाने जाने वाले ब्रह्मा ने अगल बोडो राज्य की मांग को लेकर बड़े आंदोलन की अगुआई की. इस मसले पर केंद्र से होने वाली बातचीत में बोडो लोगों का पक्ष रखने वाले ब्रह्मा के न रहने पर अब यह आंदोलन नेता विहीन हो गया है.

आयोजन: पूर्व राष्ट्रपति *ज्ञानी जैल सिंह* का 74वां जन्मदिन 5 मई को मनाया गया. इस मौके पर राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन ने पद के शिष्टाचार की बहुत परवाह न करते हुए ज्ञानी जी को गर्मजोशी से गले लगा लिया.

छापा: होटल व्यवसाय के विवादास्पद व्यक्ति और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के खास दोस्त *ललित सूरी* के यहां छापा पड़ा. जब उनके नौ व्यावसायिक ठिकानों पर छापा मारा गया उस समय वे दिल का ऑपरेशन कराए पड़े थे. इन छापों में क्या कुछ हासिल हुआ इस बारे में सरकार मुंह नही खोल रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरूप सर्विस

कोर्ट के दूसरे छोर पर सटीक सर्विस, आदान-प्रदान की लम्बी रैलियों में दमशक्ति की परीक्षा, ताक-झाँक कर सही ठिकाने पर अचूक प्रहार और तालियों की गड़गड़ाहट.

मीना शाह, अमी घिया, मौरीन मथाइस, मधुमिता बिष्ट, टी॰ एन॰ सेठ, रोमन और दीपू घोष, सुरेश गोयल, आसिफ परपिया, इकबाल मैनदर्गी, लैराय डीसा, के॰के॰ चीमा, सैयद मोदी, सनत मिश्रा, हरजीत सिंह और उनके अनेकों साथी.

इनमें से हरेक बैडमिंटन चैम्पियन ने पिछले कुछ दशकों में बड़ी शान से रेलवे का प्रतिनिधित्व किया और देश को जीत का सेहरा पहनाया है. उनकी यशस्वी सफलता पुरानी यादों को ताजा करती हैं. उनका दृढ़ संकल्प हमें विजय के शिखरों पर पहुंचाने की प्रेरणा देता है.

क्रीड़ा-जगत में भारतीय रेल का कीर्तिमान अनोखा है. विभिन्न राष्ट्रीय चैम्पियनशिपों में रेलवे हर साल बीस से भी अधिक खिताब जीतती है. ''अर्जुन'' पुरस्कार से सम्मानित हर चौथा खिलाड़ी रेलवे का प्रतिनिधि होता है. यह प्रतीक है भारतीय रेल के विशाल परिवार के सोलह लाख लोगों की शक्ति, शारीरिक क्षमता और टीम-भावना क जी हाँ, भारतीय रेलवे का चिट्ठा अद्वितीय है. एशिया में रेल मार्गों के इस सबसे विस्तृत जाल पर हर रोज एक करोड़ दस लाख लोग सफर करते हैं. हर रोज दस लाख टन माल ढोया जाता है. हर रोज पृथ्वी से चांद की दूरी तय होती है, एक बार नहीं, चार बार. भारतीय रेल का लक्ष्य है बेहतर उत्पादकता और जनता की अधिकाधिक सेवा. क्रीड़ा-जगत का आदर्श है -**'तीव्रतर, उच्चतर और दृढ़तर'** बनना. भारतीय रेल हर मैदान में इस स्वप्न को साकार बनाने में संलग्न है.

भारतीय रेल

सतत शिखर की ओर

Public Domain. Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

सरकारी राज से बड़ा डाकुओं का राज

बांदा इलाके में डाकू गिरोहों के सामने पुलिस समेत सब असहाय

इसे समांतर सरकार ही कहा जा सकता है. उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में अब डाकू गिरोहों का सिक्का चलने लगा है. इन गिरोहों ने किसी सुगठित राज्यतंत्र की तरह हर स्तर पर अपने इलाके बांट रखे हैं. क्षेत्रीय दस्यु सरगनाओं के अलावा प्रांतीय दस्यु सम्राट और चक्रवर्ती दस्यु सम्राट सरीखी 'उपाधियां' भी उन्होंने बांट रखी हैं. और तो और, इन 'उपाधियों' से सुशोभित डाकू सरगनाओं ने अपने लेटर पैड तक छपवा लिए हैं.

विंध्य के गरम पठारी जंगलों की तलहटी में आबाद करीब 16 लाख लोगों का भाग्य आज इन डाकू गिरोहों की मुट्ठी में है. डाकुओं के आधिपत्य की बाबत बांदा के डॉ. नेगी कहते हैं, "पीडब्ल्यूडी, वन निगम, सिंचाई विभाग, ग्रामीण अभियंत्रण सेवा, चकबंदी और मध्य प्रदेश तेंदू पत्ता निगम में नियुक्ति, ठेकों तथा कमीशन के लिए सारे निर्देश ददुआ के चलते हैं. सभी विभाग नियत कमीशन भी बिना नागा वहां चढ़ा आते हैं. डीएम, एसपी को यह सब मालूम है. सभी तरह के चुनावों में ददुआ का व्हिप चलता है जिसे उसकी जाति का शत-प्रतिशत और कुछ दूसरी जातियों का भी समर्थन हासिल है. इसके बदले में कुर्मी और सहयोगी जातियों को लूट, अपहरण और बलात्कार से मुक्त रखा गया है."

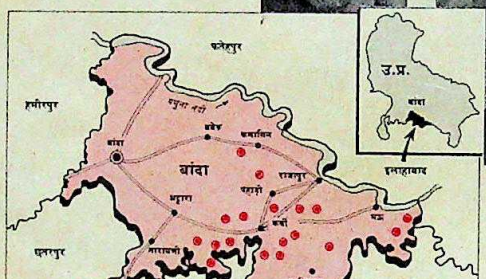

नक्शा: बी.के. शर्मा

पर हैरत की बात है कि 'दुर्दांत डकैत ददुआ के प्रभाव वाले इलाके में उत्तर प्रदेश पुलिस पिछले छह महीनों से कोई क्षेत्र अधिकारी तैनात नहीं कर पाई जबकि 1986 में रामू का पुरवा नरसंहार के बाद यहां पुलिस महानिरीक्षक नियुक्त कर दिया गया था. उपेक्षा का यह भाव नया नहीं है. पिछले 30 साल में रिकार्ड 27 आईपीएस पुलिस अधीक्षक यहां आ-जा चुके हैं. औसतन एक वर्ष एक माह यहां एक पुलिस अधीक्षक टिकता है. इनमें 13 तो साल भर भी न रहे और कुछ ने महीने दो महीने में ही सरेंडर लिए. डाकुओं से जूझने कौन आए.

जो कोई कुछ करने आता है उसके लिए भी डाकुओं के पास इंतजाम है. नए पुलिस अधीक्षक पी.एस. सिद्धू को अपने लेटर पैड पर भेजी चिट्ठी में 'ददुआ' ने लिखा, "ज्यादा न बनो. नहीं तो, चार-छह गांव उड़ा दूंगा. सस्पेंड हो जाओगे, ट्रांसफर कराना तो चुटकियों का काम है." फिर, डाकू यहां सिर्फ डाकू नहीं हैं. बांदा में एक कहावत मशहूर है, "और जगह नेता डाकू पालते हैं, यहां डाकू नेता पालते हैं."

सभी फोटो: राजेंद्र कुमार

गांववासियों के साथ सरदार सिंह (दाएं)

डकैत बुद्धा गांव हस्तम के ठाकुरों से नाराज है. उसने ठाकुर वंश मिटाने की कसम खाई है. इसी गांव के सरदार सिंह ने उसके गिरोह का सुराग पुलिस को दिया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंधियों के ... बांदा के बलदेव प्रसाद पांडेः प्राणों की चिंता

दूसरी जातियों ... इसके बदले में ... तियों को सूद ... से मुक्त रख ...

क 'दुर्दांत डकै ... लाके में उत्प ... री तैनात नहीं ... के बाद यह ... ा का यह भाग ... ईपीएस पुलिस ... ा-जा चुके हैं ... एक माह यह ... क टिकता है ... ल भर भी न ... ने महीने दे ... लिए डाकुओं ... ए.

करने आता है ... ाकुओं के पास ... लिस अधीक्षक ... अपने लेटर ... में 'ददुआ' ने ... न बनो. नहीं ... व उड़ा दूंगा ... ोगे, ट्रांसफर ... यों का काम ... हां सिर्फ डाकू ... एक कहावत ... जगह नेता ... हां डाकू नेता

घटनाएं इस ओर इशारा भी करती हैं. इस समय लगभग सभी दलों के विधायक, सांसद और पार्टी पदाधिकारी लखनऊ में नए एसपी का बिस्तर गोल कराने में जुट गए बताए जाते हैं. बबेरू के विधायक देवकुमार यादव ने तो अपहरण कांडों का हवाला देते-देते विधानसभा ही सिर पर उठा ली थी. बाद में पता चला कि नए एसपी इस विधायक के कथित संरक्षक संतोषा यादव गिरोह से मुठभेड़ें करा रहे थे. इधर, कुछ दूसरे वरिष्ठ नेता भी डाकुओं का संरक्षण पाने के आरोप में धरे गए. इंका के राजधर मिश्र और हीरा पांडे इनमें प्रमुख हैं. पांडे 1985 के विधानसभा चुनावों में कर्वी से उम्मीदवार थे.

इस समय बांदा में आठ सूचीबद्ध और करीब इतने ही गैर-सूचीबद्ध गिरोह हैं. सूचीबद्ध गिरोहों में चार अंतरराज्यीय और चार अंतरजिला गिरोह हैं. पर गैर-सूचीबद्ध गिरोहों की जो संख्या पुलिस के पास है, बांदा के लोग उसे अपूर्ण मानते हैं. 'इंडिया टुडे' द्वारा इकट्ठी की गई जानकारी के मुताबिक गैर-सूचीबद्ध गिरोहों की तादाद सूचीबद्ध गिरोहों के दोगुने के करीब है. यह तादाद लगातार बढ़ रही है.

अंतरराज्यीय सूचीबद्ध गिरोहों की सूची में निर्विवाद तौर पर पहला नाम ददुआ कुर्मी का है. दूसरा संतोषा यादव, तीसरा बुद्धा नाई और चौथा हनुमान कुर्मी का है. एक और बैरी रामकरन राजपूत का था जो दो सहयोगियों सहित इस साल 1 फरवरी को मुठभेड़ में मारा गया. अंतरजिला सूचीबद्ध गिरोहों में चुनवा कहार, धर्मा कुर्मी, राजकरन कुर्मी और नत्थू यादव के गिरोह हैं. नत्थू यादव के जेल में होने की वजह से मुन्ना यादव फिलहाल इसका लीडर है.

इसके अलावा लखना पंडित, कल्लू यादव, घनश्याम, किशोरी बोड़िया (मुठभेड़ में मृत), धौकल, धर्मा, कलुआ, भुंडा गर्ग, नथुआ चमार, राजू डोम, दिनेश कोल, गोवर्धन उर्फ घनश्याम आदि कुछ दूसरे अंतरजिला गैर-सूचीबद्ध गिरोह हैं. लगभग सभी पिछड़ी, हरिजन और वनवासी जातियों के अपने डाकू गिरोह हैं. इन सभी गिरोहों में करीब 500 तो नियमित सदस्य हैं और इसके दोगुने के करीब सहयोगी भी हैं. बुद्धा नाई के गिरोह के अलावा कुर्मियों के लगभग सभी गिरोह ददुआ की केंद्रीय कमान में हैं. ददुआ अब स्वयं कार्रवाई नहीं करता. उसने अपने अधीन गिरोहों को इलाके बांटकर छोड़ दिया है. 1986 में चले 'ऑपरेशन ददुआ' को असफल करने के बाद उसने अपने को 'चक्रवर्ती दस्यु सम्राट' घोषित कर लिया है.

बांदा के डाकू गिरोह पहले सिर्फ डाके डालते थे. अब अपहरण के साथ-साथ बलात्कार के मामले भी आम हो गए हैं. बड़े गिरोहों में संतोषा यादव ही इस मामले में कुख्यात है. पर छोटे और नए गिरोह इस मामले में सबको पीछे छोड़ गए हैं. रानीपुर के जंगलों में बने एक कैथोलिक चर्च के पादरी फ्रेडरिक मेंडोंसा ने बताया, "24 फरवरी को हमारे यहां डाका पड़ा. डाकू हाथ घड़ियां, कुछ नकदी और बरतन लूट ले गए. नया-नया गिरोह था. फिर वे हमारी जवान नौकरानी मर्सलिन को पकड़ ले जाने लगे. हमने दीन-ईमान का वास्ता दिया तो वे पता नहीं क्यों मान गए." इसी डकैती के समय चर्च के पास बसे कोलों में से एक घर पर डकैतों ने लड़की के लिए धावा बोला. वह जंगलों में भाग गई तो उसके बाप को पीटा गया.

इसके पहले मऊ गुरदरी गांव से डाकू तीन कोल लड़कियों को ले गए थे और बलात्कार के बाद उन्हें छोड़ दिया. पहाड़ी थाने के सेवहट के पुरवा की घटना तो और भी भयानक है. संतोषा यादव गिरोह ने धमकी दे रखी थी कि कोई यादव ठाकुरों से बोलचाल न रखे. यादव बिरादरी के ही एक शख्स से यह 'गल्ती' हो गई. इसी गांव के बिनय सिंह ने बताया, "ठाकुरन ते बोलबै के नाते संतोषा यादव गैंग ने हमाए गांव की अहीर की औरत खों इज्जत धरम लूट लौ. अबै एक महीनो पैलेंइ वाके मौड़ी (लड़की) भई थी. गैंग वाले बेर बेर (रोज-रोज) वा की इज्जत लूटबै खों आउत ते. सो वह अहीर अपनी

गांव हस्तम के स्कूल में पीएसी का कैंप

गांव में पीएसी के जवानों ने बाकायदा शिविर लगा रखा है. परंतु इसके बावजूद गांव के बुजुर्गों और महिलाओं में मौत का आतंक व्याप्त है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरत खों लेके कऊं भाग गौ."

इसी गिरोह ने बदौसा थाने के भदावल गांव के रामनरायन तेली की बीवी की बलात्कार के बाद हत्या कर दी. नारायनपुर गांव (थाना कमासिन में) में रखुआ कुम्हार और उसकी बीवी को जंगलों में पकड़ ले गए. हफ्तों बलात्कार किया. आम तौर पर ग्रामीण लोग बलात्कार के मामलों में पुलिस में रिपोर्ट नहीं करते क्योंकि वे सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखना चाहते हैं.

गांव हस्तम (थाना बिसडा) के ठाकुर तो बाकायदा डाकुओं के धमकियों के साये में रह रहे हैं. 16 मार्च की शाम खलिहान से गांव लौटती बैल-गाड़ियों पर बैठे किसानों से डाकू बुद्धा नाई ने चीखकर कहा था, "अब तो मैं निकरि गौ, ठाकुर बंस मिटा के छौड़ों." ये किसान अपनी जाति ठाकुर की जगह कोरी बताकर बच पाए थे. आजकल इस गांव के प्राइमरी स्कूल में पीएसी का एक कैंप पड़ा हुआ है पर पूरे गांव में मौत का आतंक व्याप्त है. गांव के ही एक युवक सरदार सिंह ने पुलिस अधीक्षक को गांव में बुद्धा नाई गैंग के छिपे होने की खबर दी थी. इसलिए बुद्धा नाई गांव के राजपूतों से तो खास तौर पर नाराज है.

बुजुर्गों और महिलाओं को गांव में 1986 का रामू का पुरवा जैसा नरसंहार होने का डर है. "पीएसी सब दिन तो परी ना रहे." यह शंका डाकुओं की गोली से मरे राजपूत युवक शिवनाथ सिंह के बड़े भाई की है. फिर बुद्धा गिरोह को ददुआ से भी संरक्षण मिलता है इसलिए लोग और डरे हुए हैं. लेकिन मौत के खतरे से सबसे ज्यादा प्रभावित सरदार सिंह कहते हैं, "लैसस (हथियार लाइसेंस) खुल जाते तो हम लोग (गांव के कुछ युवक) पूरी रक्षा के लैबय और डाकुन के मार भी सकित हैं." फिलहाल सरदार सिंह के हाथ डाकुओं से ही मिली एक 30 स्प्रिंगफील्ड राइफल भर है जिसे पुलिस अधीक्षक ने अपने जोखिम पर उन्हें दे रखा है.

बांदा की भौगोलिक और आर्थिक-सामाजिक स्थिति डाकू गिरोहों के लिए खासी अनुकूल है. राज्य के औसत 377 प्रति वर्ग किलोमीटर की तुलना में बांदा में आबादी का घनत्व 201 प्रति वर्ग किलोमीटर है. पुलिस के रणनीतिक नक्शे से पता चलता है कि पक्के मार्गों से जुड़े गांवों की तादाद कुल गांवों के छठे हिस्से के बराबर भी नहीं है. इस पर राजकीय निर्माण निगम की कृपा से ये पक्के मार्ग भी बेहद खस्ताहाल हैं. बांदा का सारा पहाड़ी इलाका मध्य प्रदेश की सीमा से सटे जंगलों के रूप में है. यहां की प्रति व्यक्ति औसत आय भी प्रदेश में सबसे कम है. 35 लाख से अधिक पूंजी निवेश वाले एक ही उद्यम है और इससे कम के भी सिर्फ चार हैं. इनमें कुल 1,026 लोगों को रोजगार मिला है जिनमें एक-तिहाई बाहरी हैं. जीविकोपार्जन का मुख्य जरिया कृषि है पर सिंचित क्षेत्र सिर्फ 22.64 फीसदी होने के कारण बाकी सारा क्षेत्र एक फसली है. भूमिगत जल उपयोग के साधन भी राज्य के औसत 35 फीसदी के मुकाबले सिर्फ 18 फीसदी हैं.

अशिक्षा, गरीबी, पिछड़ापन और पठारी पहाड़ियों से आच्छादित बांदा का समाज पूरी तरह जातियों में विभक्त है. सबसे निर्णायक कुर्मी है. ददुआ भी इसी जाति से है और सांसद रामसजीवन भी. फिर यादव हैं. बबेरू क्षेत्र में संतोषा यादव उर्फ गिरोह सक्रिय है, तो विधायक देवकुमार यादव हैं. तिंदवारी राजपूत-बहुल क्षेत्र है. चंद्रमाल सिंह यहां के विधायक हैं, तो डाकुओं में रामकरण सिंह का गिरोह सक्रिय है (खुद रामकरण 1 फरवरी को मुठभेड़ में मारा गया). ब्राह्मण डाकू गिरोह नहीं चला सके इसलिए उनकी राजनीति भी पिट गई. इस बार संसदीय चुनावों में बहुजन समाज पार्टी दूसरे स्थान पर पहुंची. उसने भाकपा के प्रभाव से मुक्त हुए हरिजनों को संगठित कर लिया है.

इस इलाके के डाकू गिरोहों के उद्भव का इतिहास मानिकपुर के एक पुराने पढ़े-लिखे राजनीतिक कार्यकर्ता बृजपाल सिंह बताते हैं. बात 12 जुलाई 1986 की है. भाकपा के आह्वान पर निकले एक विशाल जुलूस पर हुई पुलिस फायरिंग में कई लोग मारे गए. मृतकों में पिछड़ी जातिवालों की तादाद ज्यादा थी. तब समाज की तरह राजनीति पर भी सवर्णों का वर्चस्व था. भाकपा में नेता थे सरदार ज्वाला सिंह और मास्टर पांडे

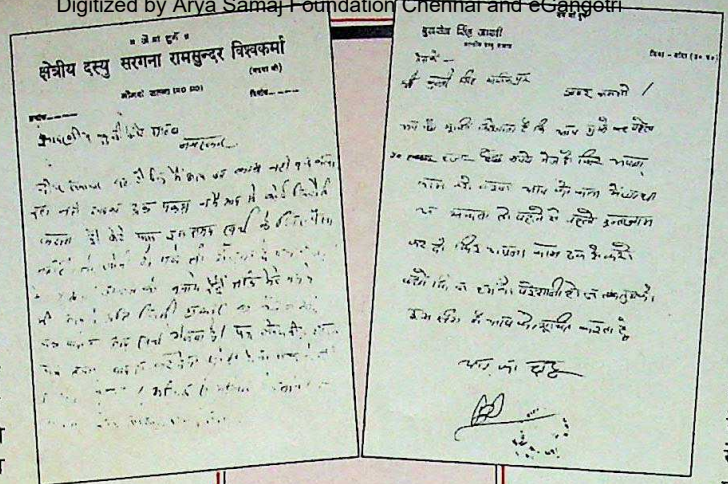

विभिन्न दस्यु सरगना अपने-अपने लेटर पैड पर धमकी जारी करते हैं

बच्चे के साथ शिवनाथ सिंह की विधवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंघ में रामरतन शर्मा, कांग्रेस में राम-नाथ दुबे और 77 में बनी जनता पार्टी में जनिका पांडे. इस तरह से एक तरह से सवर्ण (मूलतः ब्राह्मण) वर्चस्व के खिलाफ पिछड़ा-हरिजन गठजोड़ उभरा. उस समय भाकपा में देवकुमार यादव, रामसजीवन (कुर्मी) और दुर्जन भाई (हरिजन) इसके प्रतीक बने. साथ में चंद्रभान (लोद) और जगेश्वर यादव (पूर्व सांसद) भी थे.

राजनीति में विभाजन के बाद आर्थिक स्रोतों तक लड़ाई पहुंची. जंगलों के ठेके के सवाल पर डोंडा जंगल के मामले में छुटकू पंडित और हीरा पांडे में गोली चली. दोनों ओर से गोली चलाने वाले पिछड़ी और हरिजन जातियों के थे. इन्हीं में से खरदूषण कुर्मी का पहला बागी गिरोह जन्मा. फिर फौजी हरिजन, गया कुर्मी, कुछ दिन के लिए हीरा पांडे, और अब ददुआ तक यह धारा चली.

बहरहाल, डाकुओं के आधिपत्य की बात खुद पुलिस अधीक्षक सिद्धू भी नहीं नकार पाते. वे कहते हैं, "मैं डॉ. नेगी की बात की पुष्टि तो नहीं कर रहा पर हमारे पास ऐसी सूचनाएं हैं. विकास कार्यों में भारी गड़बड़ियों की यह भी एक वजह हो सकती है." इधर, विकास कार्यों का हाल ये है कि केंद्र से इस संबंध में आई एक सर्वे टीम के साथ गए राज्य सरकार के एक अफसर ने बताया, "पहले तो स्थानीय इंजीनियर और उसका अमला हमारे साथ उस वनवासी इलाके में जा ही नहीं रहा था. जब गया भी तो कोई गाड़ी से नहीं उतरा. बाद में निलंबित किए जाने की धमकी पर भी वह जीप में बैठा रहा तो हमें दाल में काला लगा. जांच पर पता चला कि पूरी पेयजल परियोजना कागज पर ही है. परियोजना के निर्माण का ठेका ददुआ निर्देशित एक ठेकेदार के पास था. ददुआ को बीस प्रतिशत, ठेकेदार को उसका हिस्सा, बाकी विभाग में बंदरबांट से हासिल जमा शून्य निकला."

जाहिर है, इस तरह के 'विकास कार्य अधिकारियों' के चलते इलाके में डाकू गिरोहों का तंत्र और मजबूत ही होगा. —शीतल

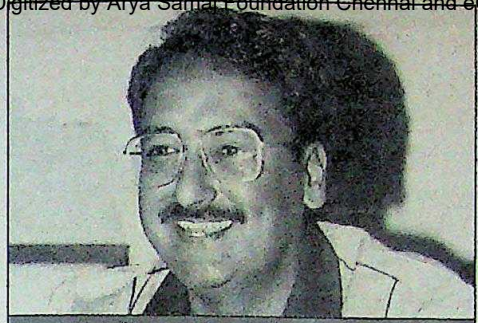

पुलिस अधीक्षक पी.एस. सिद्धू

अपहरण

नया तरीका

बांदा के डाकू गिरोहों ने फिरौती वसूलने के लिए कई अपहरण किए हैं. ये घटनाएं बढ़ती जा रही हैं. आज जिले के करीब 1,300 गांवों के लोग इसी दहशत में जी रहे हैं.

2 जनवरी की सुबह 8.30 बजे चंद्रभान को बबेरू जाते समय संतोषा यादव गिरोह ने पकड़ लिया था. 6 फरवरी को उसकी मुक्ति हुई. घरवालों को अदा करने पड़े एक लाख तीस हजार रु. गांव खरौली (थाना कमासिन) के इस किसान परिवार के पास अब दमड़ी भी नहीं बची है.

38 वर्षीय गुरुदेव चौबे अपने पिता के अपहरण और हत्या के बारे में बताते हैं, "हार (खलिहान) ते पकर कैं ले गए थे. उतइ पेड़ पे उनई के माफा तैं बांध कै उलटौ लटकाय दौ. बाद में पूरे गैंग ने हमाये बाप पै चानमारी करी और मार डारों. डर के मारै गांव कौ कोऊ हमाए सात लास उठावन तक ना गओ." यही के जगदीश तिवारी को भी इसी गिरोह की चिट्ठी पहुंची है. जान बख्शने की कीमत मांगी गई है.

इस गांव से 15 किमी के फासले पर है गांव औरा. 2 अप्रैल को यहां के एक खाते-पीते परिवार के संगमलाल (28) और कैलाशनाथ (35), अध्यापक इंटर कॉलेज, इंखा को चुनवा कहार गैंग गांव के मुहाने से ही धर ले गया. "पुलिस वर्दी में पांच-सात डाकू प्रकट हुए और ले गए." इन युवकों के पारिवारिक मुखिया बलदेव प्रसाद पांडे (55) ने बताया. और कुछ बताने से उन्होंने मनाकर दिया ताकि कुछ ऊटपटांग मुंह से न निकल जाए.

असावधानी का नतीजा भुगता पड़ोस के परसौंजा गांव के कुंजबिहारी के परिवारवालों ने. 13-14 मार्च की रात श्याम बनिया गैंग ने कुंजबिहारी को पकड़ लिया. घरवालों ने पुलिस को इत्तला देने का 'गुनाह' किया. नतीजा, डाकू गिरोह ने कुंजबिहारी को गोली मारकर लाश घर भिजवा दी.

ये सब अपहरणों के कुछ ताजा किस्से हैं और कमोबेश दूसरे दर्जे के गिरोहों द्वारा किए गए हैं. प्रथम श्रेणी के ददुआ गिरोह को फिरौतियों से अब पांच से 10 लाख रु. से कम नहीं वसूल होता. कहा जाता है कि कर्वी के अशोक जैन और अनिल जैन अभी कुछ दिन पूर्व ही 10 लाख चुकाकर छूट पाए हैं. इससे ठीक पहले सतना सीमेंट फैक्टरी के मैनेजर को भी दस लाख लेकर ही छोड़े जाने की बात कही जाती है. चित्रकूट के निकट हनुमान-धारा से पकड़े गए कर्वी के छह लड़कों से भी कुल मिलाकर 10 लाख से ज्यादा वसूले गए.

ऐसी बेशुमार वारदातों के बारे में पुलिस अधीक्षक सिद्धू सफाई देते हैं, "फिरौती के लिए अपहरण जरूर हो रहे हैं पर पिछले तीन महीनों के मेरे समय में ग्राफ नीचे आया है. "इसके बाद वे इन महीनों में डाकू गिरोहों से हुई रिकार्ड मुठभेड़ों, बरामद घातक हथियारों और मारे गए डाकुओं की फेहरिस्त दिखाते हैं. साथ ही जोड़ते हैं, "ये मुठभेड़ें वास्तविक हैं. दरोगा उमाशंकर और पीएसी के चार जवानों की शहादत इस बात का सबूत है." पर वास्तविकता यह भी है कि अपरहरण में मामले बढ़े हैं.

गुरुदेव चौबे

जगदीश तिवारी

डाकू गिरोहों ने फिरौती वसूलने के लिए कई अपहरण किए हैं. ऐसी घटनाएं बढ़ रही हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

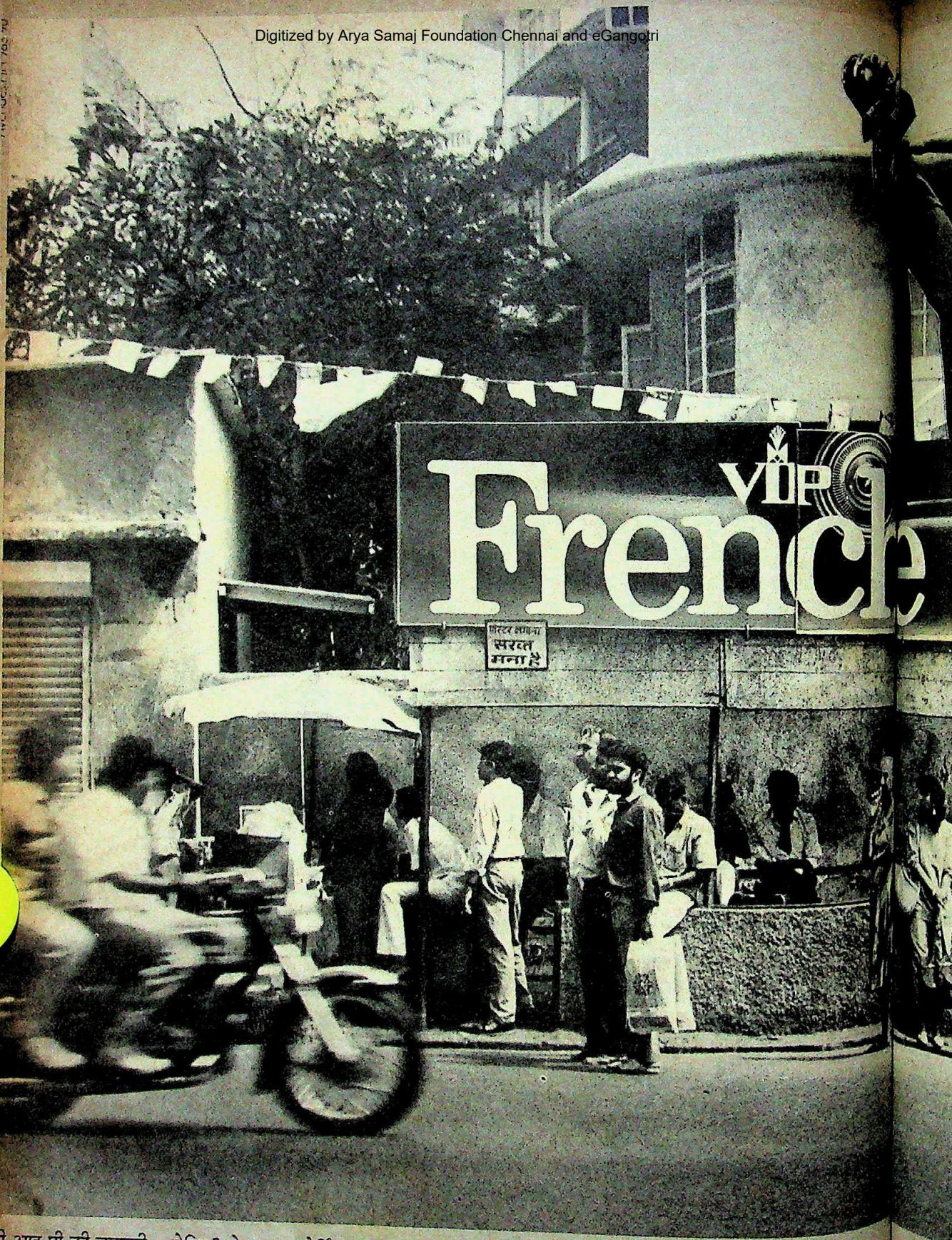

वी आइ पी की बहादुरी... बेसिर? ये सवाल होर्डिंग कॉन्ट्रेक्टर के सिर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

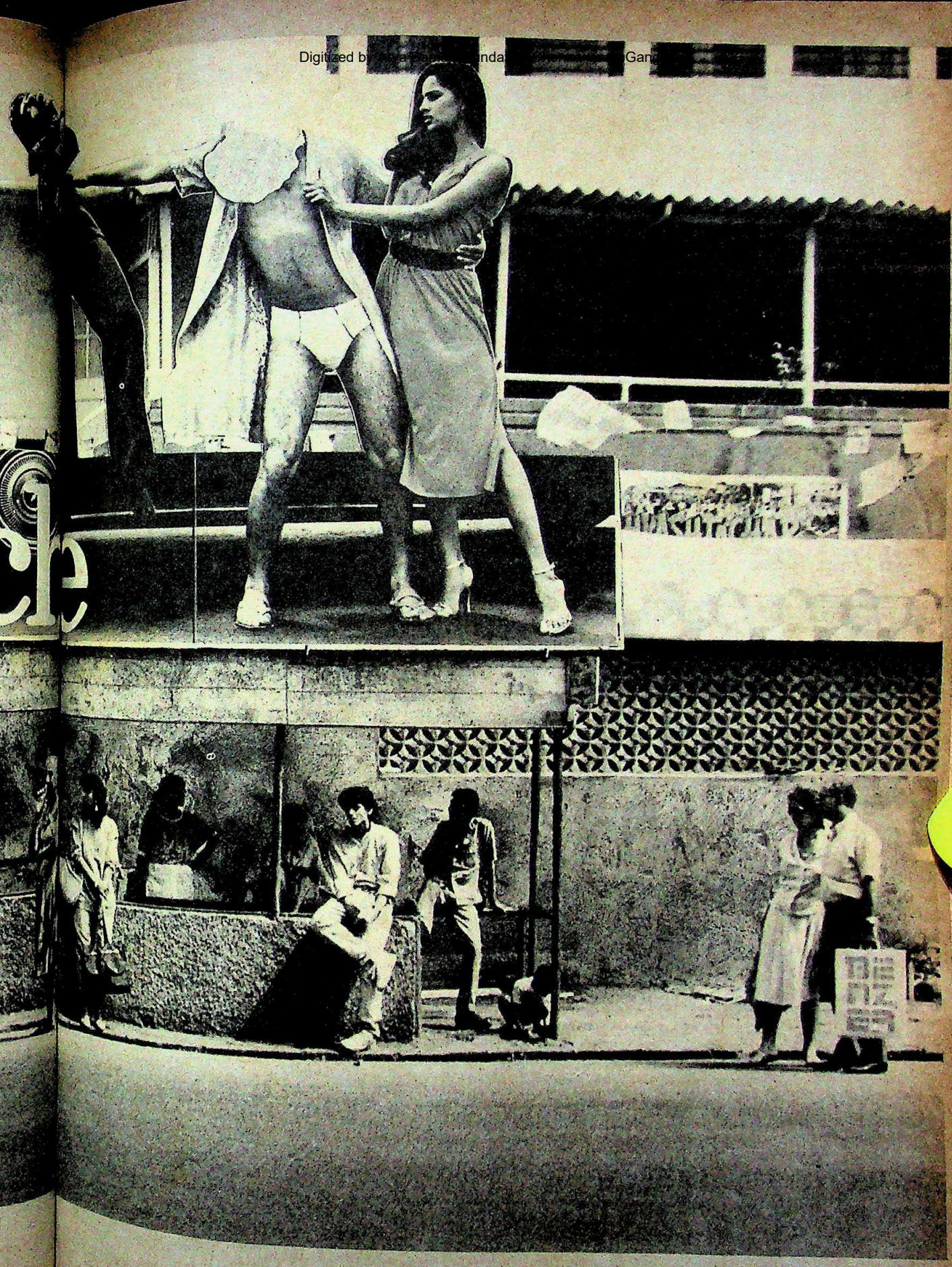

हमारे स्टाफ़ फ़ोटोग्राफ़र द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-9

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

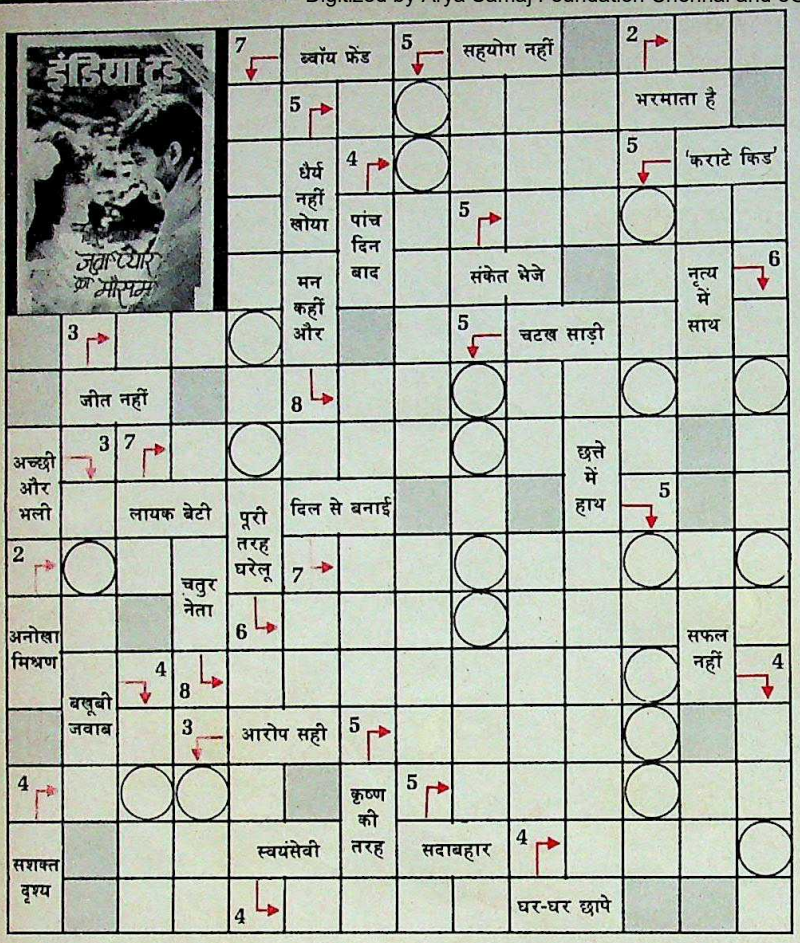

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-9, इंडिया टुडे
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि
5 जून 1990
उत्तर के लिए देखें
16-30 जून 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 मई 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

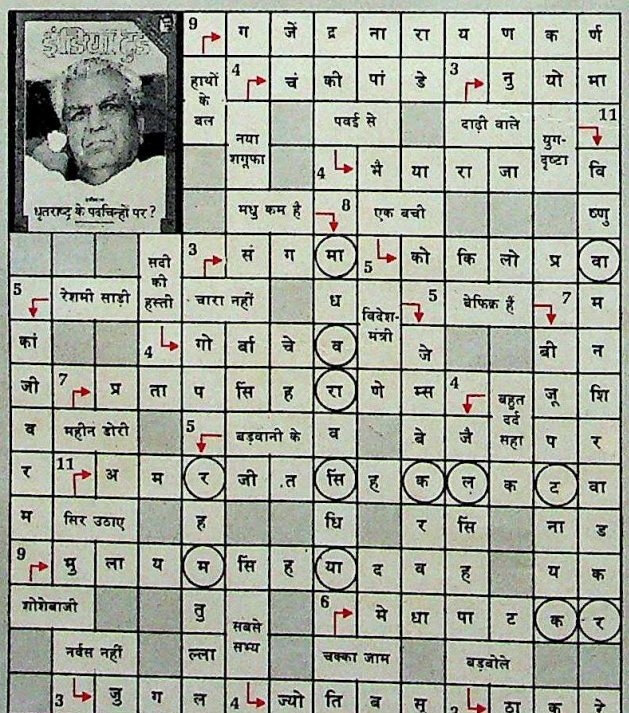

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-7 का हल

पुरस्कार विजेता

दिनेश चंद बंसल
बी/116-117,
जहांगीरपुरी
दिल्ली-110033

विजय कुमार पांडे
केंद्रीय भेड़ व ऊन
अनुसंधान संस्थान
मरुक्षेत्रीय परिसर
बीकानेर-334002

आशीष रायजादा
बी-4, बाल्दा कॉलोनी
निशातगंज,
लखनऊ-226007

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनजान मंत्रालय

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सत्ता में आने के तुरंत बाद पेट्रोलियममंत्री एम.एस. गुरुपदस्वामी ने संसद में घोषणा की थी कि जापानी कंपनी सुमितोमो कार्पोरेशन को काली सूची में डाल दिया गया है. कारण यह कि इस कंपनी ने पाइप सौदे में राजीव गांधी के दोस्त ललित सूरी की ज्योत्स्ना होल्डिंग्स को 6 करोड़ रु. की दलाली दी थी. पर लगता है कि पेट्रोलियम मंत्रालय के सार्वजनिक क्षेत्र वाले उपक्रम ही इस जापानी कंपनी का बहिष्कार कर रहे हैं, पूरी सरकार नहीं. मसलन, कई महीनों की बातचीत के बाद रेल मंत्रालय ने सुमितोमो से 7.5 करोड़ रु. मूल्य के 2,500 जोड़े पहिये खरीदे. वित्त मंत्रालय ने इन पहियों के आयात की अनुमति तभी दी जब उसे बताया गया कि पूर्वी यूरोप के देशों से जो पहिये आते थे वे वहां राजनैतिक उथल-पुथल के चलते नहीं आ पा रहे हैं.

इस सफलता से खुश सुमितोमो ने दो और आयात सौदों की बात शुरू की है जो करीब 300 करोड़ रु. के हैं. ये दोनों सौदे रेलवे से ही होने हैं. क्या गुरुपदस्वामी को पता भी है कि उनके मंत्रालय के बाहर क्या कुछ पक रहा है?

वामपंथी नाराज

कुछ वर्षों से कलकत्ता की इलेक्ट्रिकल स्विच गियर कंपनी रीरॉल बर्न्स जैसे-तैसे अपना काम चलाती आ रही है. 350 कर्मचारियों वाली यह कंपनी ब्रिटेन की एनईआई तथा सार्वजनिक क्षेत्र की होल्डिंग कंपनी भारत भारी उद्योग निगम लि. के अधीन बर्न्स स्टैंडर्ड की संयुक्त मिल्कियत वाली है. पिछले साल सार्वजनिक उद्यम विभाग ने एक प्रस्ताव रखा कि इस कंपनी के विदेशी शेयर भारत भारी उद्योग निगम लि. ले ले. दिसंबर तक वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग को छोड़कर सरकार के दूसरे सभी संबद्ध विभागों ने इसे अपनी स्वीकृति दे दी. तभी दिसंबर में सार्वजनिक उद्यम विभाग ने विदेशी शेयर लेने वाले प्रस्ताव को फिर से सभी के पास भेजने का फैसला किया. इससे पश्चिम बंगाल सरकार नाराज हो गई और उसने केंद्र को कड़ी चिट्ठी लिखकर इस प्रस्ताव को तुरंत मंजूरी देने की मांग की है.

यही क्या कम है!

क्रेडिट रेटिंग इन्फॉर्मेशन सर्विसेज ऑफ इंडिया थाइलैंड में क्रेडिट रेटिंग एजेंसी लगाने की दौड़ में पिछड़ गई है. दो महीने पहले इसने एशियाई विकास बैंक और इसके निजी क्षेत्र को ऋण उपलब्ध कराने वाली शाखा एशियन फाइनांस ऐंड इन्वेस्टमेंट कार्पोरेशन के सक्रिय सहयोग से इसके लिए प्रयास शुरू किया था. लेकिन इसे दो अमेरिकी एजेंसियों—स्टैंडर्ड ऐंड पुअर तथा मूडीस से प्रतिद्वंद्विता करनी पड़ी. आखिरकार सौदा स्टैंडर्ड ऐंड पुअर को मिला. लेकिन क्रेडिट रेटिंग के अधिकारियों का मानना है कि उनकी तीन साल पुरानी एजेंसी को दो नामी-गिरामी अमेरिकी एजेंसियों के समकक्ष माना गया, यही कोई कम बड़ी बात नहीं है.

दुरुस्त आयद

देर आयद, दुरुस्त आयद. यह सार्वजनिक क्षेत्र के सामान्य बीमा निगम का नारा हो गया लगता है. साझा कोषों की शुरुआत का एक पूरा दौर खत्म हो जाने के बाद इस कंपनी ने इस क्षेत्र में कदम बढ़ाने का फैसला किया है. अगले कुछ महीनों में बाजार में यह कोष 150 करोड़ रु. का होगा और इसमें 50-50 करोड़ रु. की तीन योजनाएं होंगी. इस कोष की एक खास बात यह है कि इसके शेयर लेने वालों को निगम बीमा की सुविधा भी उपलब्ध कराएगा. योजना ठीकठाक चलेगी ऐसी उम्मीद है.

बिड़ला से आगे टाटा

बिड़ला समूह संपत्ति के मामले में भले ही देश में पहले स्थान पर हो लेकिन कारोबार के हिसाब से टाटा घराना आगे है. उद्योगमंत्री अजित सिंह द्वारा जारी 1987-88 वाली 20 सबसे बड़े घरानों की सूची यही बताती है. हिंदुस्तान लीवर संपत्ति के

चार्ट: बी.के. शर्मा

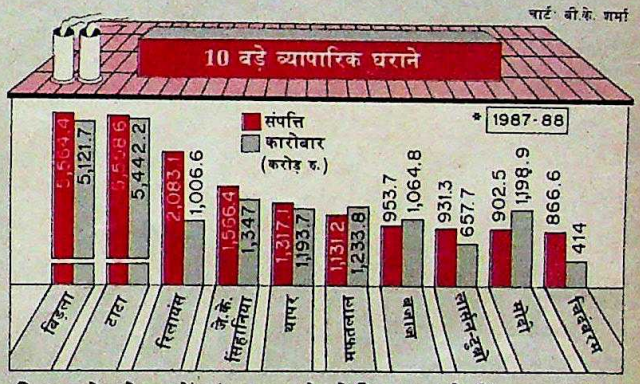

हिसाब से तो 11वें नंबर पर है. लेकिन मुनाफे में उसका नंबर तीसरा है. मोदी घराना मुनाफे के हिसाब से तो सबसे नीचे है. लेकिन संपत्ति के हिसाब से वह नौवें और कारोबार के हिसाब से सातवें स्थान पर है. मोदी घराने का नाम तुरंत दूसरे कारण से भी उछला. इस पर 70 करोड़ रु. का कर बाकी था जो 20 प्रमुख औद्योगिक घरानों में सबसे अधिक है. वैसे इस राशि के काफी बड़े हिस्से को लेकर विवाद चल रहा है.

महंगी टाई

देश के 10 करोड़ रु. कारोबार वाले टाई उद्योग में भारी बदलाव होने जा रहा है. जोरेक्स टाइज मैन्युफैक्चरिंग कंपनी जल्दी ही एक ऐसी टाई बाजार में उतारेगी जिस पर सलवटें नहीं आएंगी. यह टाई 500 दुकानों से देश भर में बिकेगी. खास रसायनों के घोल से धुले धागों से यह टाई विशेष तरह की बुनाई वाली भी होगी. इसकी कीमत आम टाई से चार-पांच गुना ज्यादा होगी. जोरेक्स के सूत्रों का मानना है कि ऐसी महंगी टाइयों का बाजार भी है क्योंकि दिल्ली, बंबई और कलकत्ता की अपनी खास दुकानों से उन्होंने रेशम की जो टाइयां बेची हैं उनकी कीमत 725 रु. तक थी. कंपनी को उम्मीद है कि इन टाइयों को बाजार में उतारने के बाद कारोबार दोगुना यानी 4 करोड़ रु. हो जाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षण में बंधे उद्योगपति

ग्वालियर के नजदीक के कस्बे में देश की कई बड़ी कंपनियों के कारखाने खुले, कई और आने को तैयार

ग्वालियर और इटावा को जोड़ने वाली सड़क सुनसान है पर मीलों तक दोनों ओर बंजर चट्टानें ही दिखती हैं. कहीं-कहीं बाजरा और गेहूं के खेत दिखते हैं. तभी अचानक जाने कहां से घोड़े पर सवार एक बंदूकधारी सड़क पर आ जाता है और सीधे आगे निकल जाता है. यह घटना तुरंत याद दिलाती है कि यह कोई साधारण इलाका नहीं, दादी-मां की कहानियों तक में प्रसिद्ध हो चुकी चंबल घाटी है.

ग्वालियर से 18 किमी दूर पहुंचने पर एक और अचंभा दिखता है. 40 छोटी-बड़ी औद्योगिक इकाइयों का उपनगर, जो यों ही बियाबान में खड़ा है. चंबल के परिदृश्य पर यह उपनगर कुछ ऐसा लगता है जैसे बाजरे के खेतों ने कंकरीट की फसल पैदा कर दी हो.

मालनपुर में आपका स्वागत है. आज यहां बंदूक की गोली छूटने की आवाज की जगह मशीनों की घरघराहट ने ले ली है. जमीन की कीमतें आसमान छूने लगी हैं. पिछले दो वर्षों में ही जनसंख्या में पांच गुना वृद्धि हुई है और यह 2,000 से बढ़कर 10,000 हो गई है. अभी तक यहां 1300 करोड़ रु. का निवेश हो चुका है. कई और कंपनियां यहां अपनी इकाई लगाने की तैयारी में हैं. मध्य प्रदेश औद्योगिक केंद्र विकास निगम (ग्वालियर) के प्रबंध निदेशक आर.डब्ल्यू. श्रीवास्तव कहते हैं, "हमें पूरा भरोसा है कि अगले दो वर्षों में यहां 4,000 करोड़ रु. का और निवेश होगा."

यह कोई खयाली पुलाव है भी नहीं. इसमें हुए ये निवेश इस बात की पुष्टि करते हैं:

- विशेष जरूरत वाले पोलिएस्टर धागा बनाने के लिए मोदी घराना संयुक्त क्षेत्र के उपक्रम के साथ मिलकर 360 करोड़ रु. का निवेश कर रहा है.
- नायलॉन टायर कार्ड संयंत्र लगाने के लिए आरपीजी इंटरप्राइजेज [illegible] करोड़ रु. के निवेश की तैयारी कर चुका है.
- कलकत्ता का हिंदुस्तान डेवलपमेंट कार्पोरेशन यहां [illegible]

मालनपुर की बड़ी कंपनियां

	निवेश करोड़ रु. में
प्रॉडफ्रे फिलिप्स	360
आरपीजी इंटरप्राइजेज	290
हिंदुस्तान डेवलपमेंट कार्पोरेशन	200
लार्सन ऐंड टुब्रो	200
कैडबरी इंडिया लि.	20
हॉटलाइन टेलीट्यूब ऐंड कंपोनेंट्स लि.	15
गोदरेज सोप्स	37
गोदरेज ब्वॉयस	30

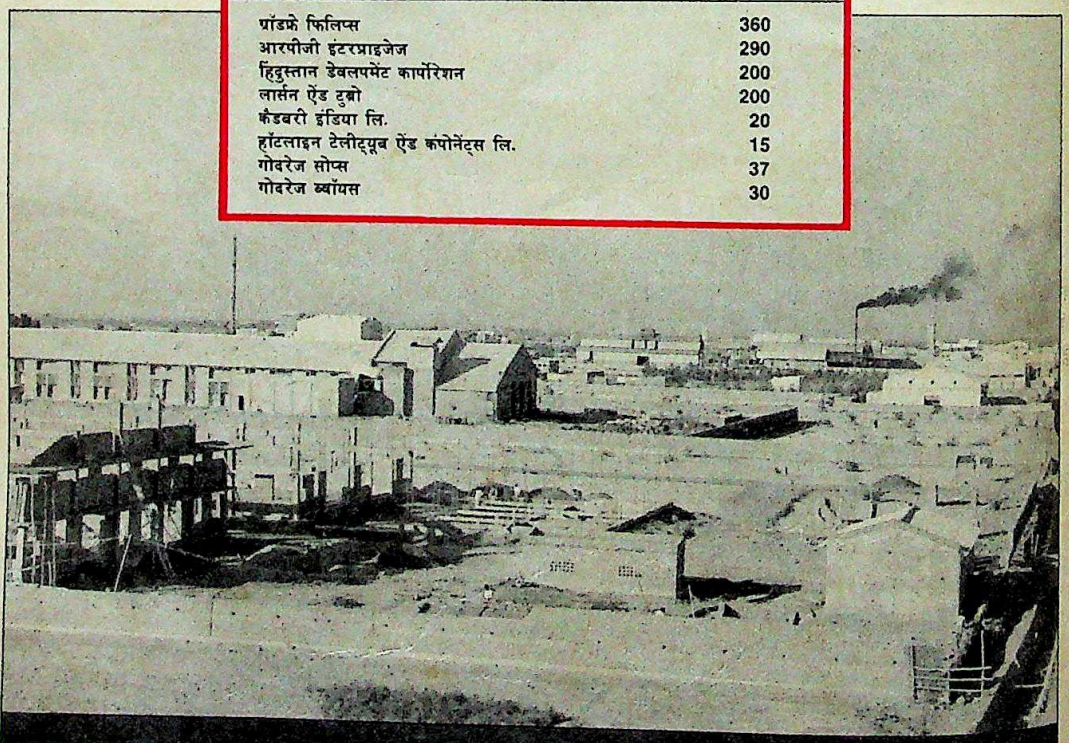

मालनपुर में कंपनियां 1,300 करोड़ रु. निवेश कर चुकी हैं. सरकार को उम्मीद है कि अगले दो साल में कंपनियां 4,000 करोड़ रु. निवेश करेंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सभी फोटो : शरद सक्सेना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सूती धागा कंपनी के अध्यक्ष पारस गंगवाल मालनपुर का मथुरा, कानपुर जैसे प्रमुख बाजारों के नजदीक होना बड़ी बात मानते हैं

करोड़ रु. की लागत से मिनी इस्पात संयंत्र लगा रहा है.

- प्लास्टिक का मोल्डेड सामान और ग्लास स्टेनर बनाने का कारखाना लगाने की पूरी तैयारी लार्सन ऐंड टुब्रो कंपनी कर चुकी है. इस पर 200 करोड़ रु. खर्च होंगे.
- मशहूर कपनी कैडबरी ने यहां 10 करोड़ रु. की लागत से चॉकलेट कारखाना लगाया है और इसके विस्तार पर इतनी ही रकम खर्च करने वाली है.
- क्रॉप्टन ग्रीव्स और दिल्ली की हॉटलाइन इलेक्ट्रिकल जैसी कंपनियां भी यहां आने की तैयारी कर रही हैं.

और मालनपुर के लिए इन सबके आने का महत्व है, उसके स्वरूप में नाटकीय बदलाव. इतने निवेश से यहां करीब एक लाख लोगों को काम मिलेगा. ऐसे रोजगार इन बड़े उद्योगों से जुड़े सहायक उद्योगों से पैदा होंगे. जैसे कैडबरी यहां अपनी पैकिंग इकाई लगाना चाहती है जबकि मोदी घराना 50 लघु इकाइयां खुलवाना चाहता है जिनमें कुल 150 करोड़ रु. का निवेश होगा.

कंपनियों के दनादन पहुंचते जाने के मद्देनजर मध्य प्रदेश औद्योगिक केंद्र विकास निगम और जमीन खरीद रहा है. चार साल पहले निगम ने बहुत डरते-डरते 150 हेक्टेयर जमीन खरीदी थी. आज वह 1,000 हेक्टेयर जमीन ले चुका है और यह भी पूरी की पड़ रही है. राज्य सरकार भी मालनपुर में संरचनात्मक सुविधाएं जुटाने पर 41 करोड़ रु. खर्च कर रही है. ग्वालियर और मालनपुर के बीच बड़ी लाइन बिछाने की योजना भी बनाई गई है. साथ ही यहां से 100 किमी दूरी पर स्थित गैस आधारित गुना बिजलीघर से बिजली लेने की भी सरकार की योजना भी है.

अचानक मालनपुर में कारखाने लगाने की यह होड़ क्यों शुरू हुई है? मुख्य कारण तो मध्य प्रदेश सरकार द्वारा अपने यहां उपलब्ध पर्याप्त बिजली और सस्ती मजदूरी को उपयोग में लाकर औद्योगिक विकास करने की कला उद्यमी लोगों के मन में बैठा देना है. कंपनियों को लाइसेंस देने का आश्वासन दिया गया और उनकी मंजूरी भी फटाफट हुई. आरपीजी इंटरप्राइजेज के उपाध्यक्ष संजीव गोयनका कहते हैं, "राज्य सरकार बहुत ही चौकन्नी है. हमें सभी तरह की मंजूरी साल भर में मिल गई."

साथ ही राज्य सरकार यहां संरचनात्मक सुविधाएं भी मुहैया कराने लगी है. तत्कालीन रेलमंत्री माधव राव सिंधिया ने भी मदद की. मसलन, शताब्दी एक्सप्रेस से आना-जाना बहुत ही सुगम हो गया. ग्रॉडफ्रे फिलिप्स के अध्यक्ष कृष्ण कुमार मोदी कहते हैं, "सुबह वहां जाकर शाम तक लौट सकते हैं."

मालनपुर का पिछड़े जिले भिंड में स्थित होना भी एक फायदे की बात है. एकाधिकार कानून की सीमा में आ गई कंपनियों को भी पिछड़े जिलों में इकाई लगाने की अनुमति है. कैडबरी ऐसी ही कंपनी है. उसे उम्मीद है कि उसका संयंत्र पूरा हो जाने पर वह अपने चॉकलेट और एक्लेयर्स का आधा उत्पादन यहीं से कर सकेगी.

दूसरी मध्यम आकार की इकाइयों के लिए पिछड़े जिलों में इकाई लगाने के जो लाभ मिलते हैं वे महत्वपूर्ण आकर्षण साबित हुए. 12 करोड़ रु. की लागत से बनी पंचशील रबड़ लि. के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एन.जे. कंवर कहते हैं, "बिक्रीकर में नौ वर्ष तक मिलने वाली छूट एक प्रमुख फायदा है."

इसी प्रकार भारत के करीब-करीब मध्य में स्थित मालनपुर माल की ढुलाई के हिसाब से भी बढ़िया जगह पर है. ग्वालियर की सूती

यशराज भाटिया की दिल्ली स्थित ओशी फूड्स कंपनी ने मालनपुर का चयन इसलिए किया कि सिर्फ 60 किमी दूर इटावा में अच्छे किस्म का आलू मिलता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धागा कंपनी गंगवाल उद्योग प्रा. लि. के अध्यक्ष पारस गंगवाल कहते हैं, "मालनपुर आगरा, मथुरा और कानपुर जैसे हमारे प्रमुख बाजारों के नजदीक है." इसी प्रकार 40 करोड़ रु. से लगी एवीएन ट्यूब्स भाड़े में 17 फीसदी की बचत के कारण दक्षिण भारत के अपने प्रतिद्वंद्वियों से बेहतर स्थिति में पहुंच गई है.

इसका एक नतीजा यह हुआ है कि बंबई या दक्षिण की कंपनियां भी अब मालनपुर की ओर रुख करने लगी हैं. गोदरेज सोप्स लि. के प्रबंध निदेशक एडी बी. गोदरेज कहते हैं, "मालनपुर की अपनी सुविधाओं का उपयोग हम उत्तर और पूर्वी हिस्से की आपूर्ति में करेंगे." इसी कारण कोच्चि की त्रावणकोर केमिकल ऐंड मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी भी मालनपुर में सोडियम क्लोरेट का संयंत्र लगवा रही है.

सस्ती मजदूरी भी एक प्रमुख आकर्षण है. त्रावणकोर केमिकल को यहां कोच्चि की तुलना में सिर्फ आधी मजदूरी ही देनी होती है. एवीएन ट्यूब्स के कार्यकारी निदेशक राकेश सोनी कहते हैं, "यहां हमें इंदौर की तुलना में 20 फीसदी कम मजदूरी देनी होती है जबकि वह शहर भी मध्य प्रदेश में ही है." हिंदुस्तान डेवलपमेंट कार्पोरेशन की सहयोगी मध्य प्रदेश स्टील कंपनी के लिए बिजली की नियमित उपलब्धता महत्वपूर्ण बात है. इसके अध्यक्ष ए.एन. मित्र कहते हैं, "हमें इस्पात संयंत्र के लिए 100 मेगावाट बिजली चाहिए. मध्य प्रदेश में बिजली खपत से अधिक पैदा होती है. इस तथ्य ने हमें यहां कारखाना लगाने को प्रेरित किया."

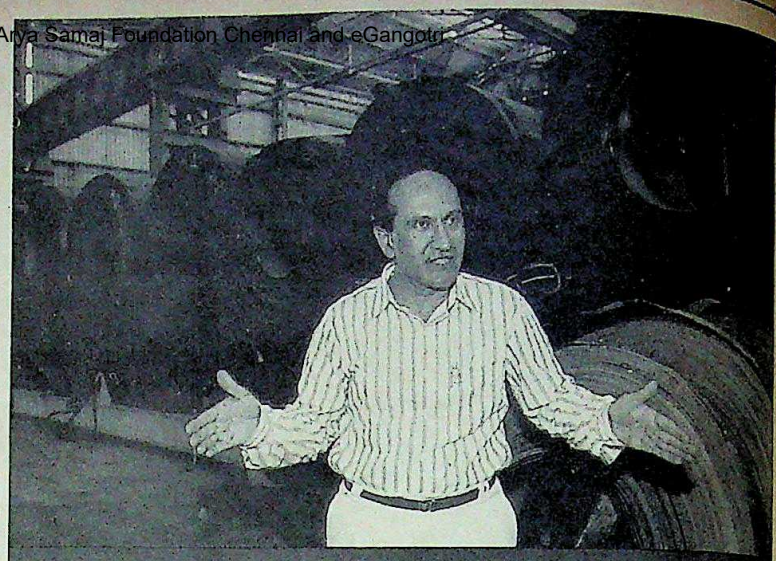

एवीएन ट्यूब्स के कार्यकारी निदेशक राकेश सोनी के लिए मालनपुर में सस्ती मजदूरी और लगन से काम करने वाले मजदूर ही महत्वपूर्ण हैं

साथ ही यहां कच्चा माल सहज उपलब्ध है. दिल्ली की ओशी फूड्स कंपनी के उपाध्यक्ष यशराज भाटिया कहते हैं, "हमने नैनीताल की जगह मालनपुर का चयन इसीलिए किया कि अच्छे किस्म का आलू इटावा में उपलब्ध है." इटावा यहां से मात्र 60 किमी दूर है. इसी प्रकार कैडबरी ने ग्वालियर के दुग्ध सहकारी संघों से सहजता से दूध मिलने की बात को ध्यान में रखकर संयंत्र लगाने का फैसला किया.

इसका मतलब यह नहीं कि मालनपुर निवेशकों का स्वर्ग है. यहां समस्याएं भी हैं और अब इनके खिलाफ नाराजगी भी मुखर होने लगी है. दवा की लघु इकाई डायरोन लैब के प्रबंध निदेशक ए.के. मिश्र कहते हैं, "हमें राज्य सरकार से 23 लाख रु. का अनुदान अभी तक नहीं मिल पाया है. इसके बिना हमारे मुनाफे की दर पर बहुत बुरा असर पड़ेगा." पिछले साल सरकार ने जमीन की कीमत 30 फीसदी बढ़ाने का जो फैसला किया, उससे नाराजगी है. साथ ही अच्छी सड़कें, नाली और मकान जैसी संरचनात्मक सुविधाओं का वादा बहुत हद तक कागजी ही है.

लेकिन यहां आई समृद्धि के और संकेत भी दिखने लगे हैं. स्थानीय लोग भी अपनी उद्यमशीलता दिखाने लगे हैं. जिन किसानों को अपने खेत का मुआवजा 80,000 रु. प्रति हेक्टेयर मिला था, उन्होंने इस पैसे से घर बना लिए हैं और उसके कुछ हिस्से बाहरी मजदूरों को किराए पर दे दिए हैं. दूसरे किसानों ने इस पैसे से जीप और ट्रक खरीद लिए हैं. कुछ ने चाय और खाने-पीने की दुकानें खोल ली हैं.

भले ही मालनपुर पर यह उद्यमशीलता बाहर से थोपी गई हो पर अब लगता है कि चंबल की बंजर भूमि ने इसे अपना लिया है और अब उम्मीद इसी 'बीज' के फलने-फूलने की है.

—सुरजीत दासगुप्त, मालनपुर से

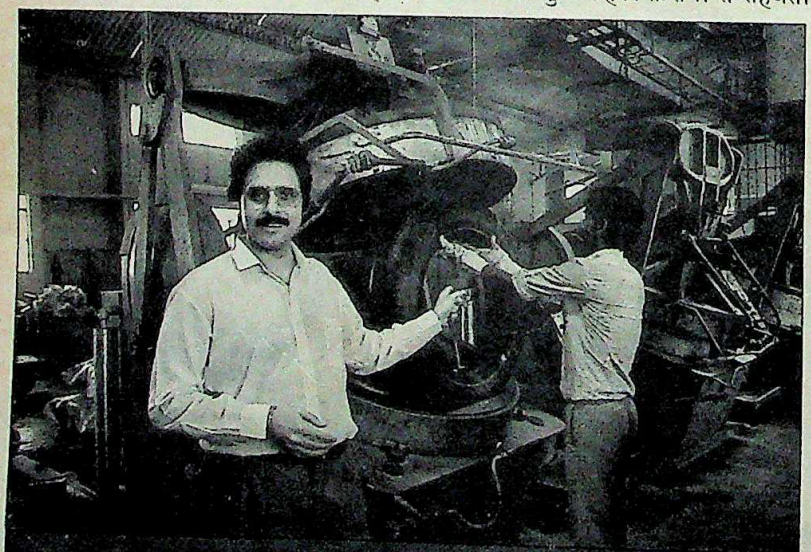

पंचशील रबर के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एन. जे. कंवर को लगातार नौ साल तक बिक्रीकर में छूट मिलना फायदेमंद लगता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महंगाई

काबू से बाहर

धमकियों का मामूली असर

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार कई चुनावी वादे करके सत्ता में आई थी. इनमें जरूरी जिंसों की कीमत पर अंकुश लगाना भी था. पर 19 मार्च को बजट प्रस्तावों की घोषणा के बाद पिछले महीने दालों, खाद्य तेलों, चीनी और सीमेंट की कीमतों में अचानक बढ़ोतरी से हर कोई हैरान है.

राजधानी दिल्ली में चारों तरफ इंका ने पोस्टर चस्पां किए जिनमें मौजूदा कीमतों के मुकाबले पांच महीने पहले की कीमतों का ब्यौरा दिया गया है. यहां तक कि सरकार में सहयोगी दल—भाजपा और वामपंथी—भी महंगाई रोकने में सरकार की नाकामी की शिकायत करने लगे हैं. मजे की बात तो यह कि वित्तमंत्री मधु दंडवते की पत्नी प्रमिला दंडवते ने महंगाई के विरोध में महिलाओं के प्रदर्शन की अगुआई भी की.

चौतरफा आलोचना से घिरी हुई सरकार ने कठोर रुख अपनाने का फैसला किया. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जमाखोरों को कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी. सीमेंट, चीनी और खाद्य तेलों के कारखानेदारों के साथ जल्दी ही बुलाई गई अनेक बैठकों में मंत्रियों और अधिकारियों ने धमकी दी कि अगर कीमतें नहीं घटीं तो फिर कठोर नियंत्रण लगाए जाएंगे.

नतीजा यह हुआ कि कीमतें थोड़ी नीचे सरकीं इसलिए पिछले पखवाड़े खाद्य एवं नागरिक आपूर्तिमंत्री नाथूराम मिर्धा ने खुशी जताई, "हमारी धमकियों का असर हुआ है और कीमतें गिरने लगी हैं."

लेकिन कई लोगों को संदेह है कि ऐसी धमकियां ज्यादा कारगर साबित होंगी. भाजपा के विचारक जय दुबाशी की टिप्पणी थी, "न कहीं गिरावट आई है...और न आएगी..." सरकार के प्रति सहानुभूति रखने वाले लोग निजी बातचीत में मानते हैं कि कीमतों में हाल के हफ्तों में आई गिरावट ज्यादा देर टिकने वाली नहीं है.

मिर्धा का कहना है कि रेल के माल भाड़े, पेट्रोल और डीजल पर कर बढ़ाए जाने के अनुपात से कहीं अधिक व्यापारियों ने कीमतें बढ़ा दी हैं. लेकिन बजट पश्चात के विश्लेषणों से कीमतों में बढ़ोतरी की आंशिक व्याख्या ही मिलती है. महंगाई की एक वजह उत्पादन में कमी बताई गई है. मसलन, चीनी का उत्पादन करीब 6 फीसदी गिर गया है. सरकार ने चीनी की आपूर्ति बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए हैं जिससे कीमतें गिरनी चाहिए. तिलहन का उत्पादन भी घटा है. उधर, सरकार का कहना है कि 'निहित स्वार्थ' जानबूझकर इस कमी का ढिंढोरा पीट रहे हैं.

दलहन का उत्पादन हालांकि 1988-89 और 1989-90 के बीच 1.37 करोड़ से 1.4 करोड़ टन हो गया है पर पिछले साल के मुकाबले कीमतें 12 फीसदी बढ़ गईं. चाय की कीमतों में वृद्धि उसके उत्पादन में आई कमी की तुलना में बहुत ज्यादा है. सरकार ने तात्कालिक उपाय भी किया है. इसने सोवियत संघ से कहा है कि वह अपने यहां खपने वाली सीटीसी चाय की खरीद की मात्रा को अलग-अलग खेपों में विभाजित करे. लेकिन वाणिज्य मंत्रालय के एक अधिकारी के अनुसार उल्फा आंदोलन के कारण अगर असम में चाय के उत्पादन में कमी आई तो खास असर नहीं होगा.

सीमेंट के मूल्य में तो अत्यधिक तेजी आई है. यह तेजी उत्पादन में थोड़ी वृद्धि के बावजूद हुई है. मार्च के शुरू और अप्रैल के अंत के बीच 50 किलो सीमेंट के एक बोरे का मूल्य 82.50 से बढ़कर 92.50 हो गया. पर सरकार की धमकी के तत्काल बाद ही यह घटकर करीब 85 रु. प्रति बोरा हो गया.

परंतु आम आदमी इन उपायों से संतुष्ट नहीं है. हां, सरकार के प्रति सहानुभूति रखने वाले लोगों का नजरिया अलग है. उनका कहना है कि इस सरकार ने सट्टेबाजी को समाप्त करने के लिए समय पर कार्रवाई की है. और इसने चीनी के आयात के बारे में पिछली सरकार की अनिश्चय की स्थिति के बिलकुल विपरीत काम कर दिखाया है. पश्चिम बंगाल वामपंथी मोर्चे के अध्यक्ष सेलन दासगुप्त कहते हैं, "मूल्य वृद्धि को लेकर हमारा प्रस्तावित आंदोलन सरकार को संकट में डाल सकता है. लेकिन हमें विश्वास है कि वह जनांदोलन के प्रति अनुकूल रवैया अपनाएगी." उनका कहना है कि सरकार डीजल और रेलों के माल भाड़े की दरों में कमी लाए. कुल कर राजस्व में से अप्रत्यक्ष करों के हिस्से को कम करना चाहिए.

लेकिन सरकार के पास विकल्प सीमित हैं. खास तौर से विदेशी मुद्रा की कमी को देखते हुए घरेलू कीमतों में कमी लाने के लिए भारी मात्रा में आवश्यक वस्तुओं के आयात की संभावना भी कम हो जाती है.

विचित्र बात यह है कि हाल की महंगाई से वर्तमान शासकों के राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति हुई है, क्योंकि कश्मीर और राम जन्मभूमि जैसी समस्याओं से लोगों का ध्यान काफी कुछ बंट गया है. इससे सरकारी अमला यह भ्रम पैदा करने में सफल रहा है कि वह गंभीर मामलों को सुलझाने में व्यस्त है. —परंजय गुहा ठाकुरता

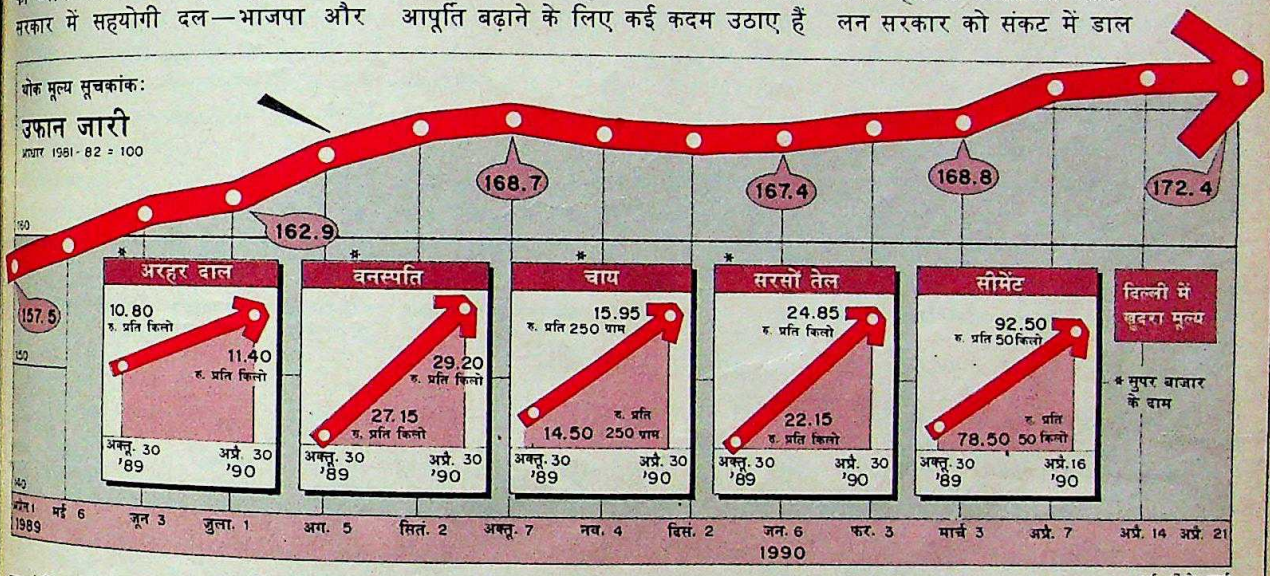

चार्ट: बी.के. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

इंतजार का वक्त

उतार-चढ़ाव अभी भी जारी

बजट के बाद शेयर बाजार में कुछ दिन तो खुशहाली रही मगर फिर पूरे अप्रैल भर बदहाली ही रही. मई के पहले हफ्ते में भी ऐसे कोई संकेत नहीं दिखे कि बाजार का रुख बदल रहा है. पिछले पखवाड़े शेयर मूल्य सूचकांक में लगातार होता उतार-चढ़ाव यही बताता है कि अनिश्चितता का दौर अभी कुछ और समय तक चलेगा. वित्तीय संस्थानों ने थोड़ी खरीद और फिर थोड़ी बिक्री करके अपनी भूमिका को प्रमुख नहीं होने दिया जबकि यूनिट ट्रस्ट अपने शेयर बेचने का दौर जारी रखे रहा.

बाजार के कई जानकारों का मानना है कि मौजूदा रुख बाजार में भारी गिरावट का संकेत देता है. उनकी यह भविष्यवाणी कई प्रमुख शेयरों में लगातार गिरावट के मद्देनजर है. बिड़ला समूह की सेंचुरी एंका और सेंचुरी टेक्सटाइल्स ऐंड इंडस्ट्रीज के साथ यही हुआ है. इन दोनों ने अधिक मुनाफे और बेहतर लाभांश की घोषणा की

चार्ट बी.के. शर्मा

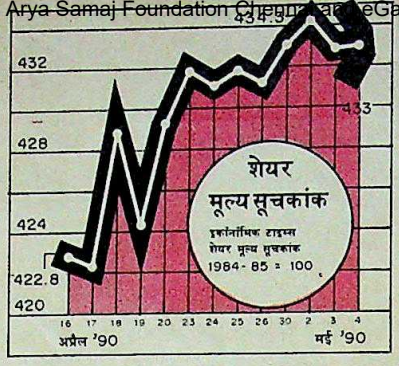

थी. लेकिन बाजार ने इन बातों की कोई सुध ही नहीं ली.

कॉलगेट-पामोलिव, पोंड्स और एचएमएम के साथ भी यही हुआ. ग्रासिम इंडस्ट्रीज, हिंदुस्तान अल्यूमिनियम, एस्सार शिपिंग, टेल्को और बजाज ऑटो जैसी कंपनियों के शेयर चढ़े भी तो उतने नहीं जितनी उम्मीद थी.

पिछले पखवाड़े जिन नामी शेयरों के दाम टूटे उनमें टिस्को, बड़ौदा रेयन, फिनोलेक्स, मोटर इंडस्ट्रीज और नेशनल आर्गेनिक भी शामिल हैं. अंबानी परिवार ने लार्सन ऐंड टुब्रो के नियंत्रण के मामले पर सरकार से नहीं भिड़ने का फैसला किया लेकिन इस कंपनी के साथ ही उनके रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर गिरते ही जा रहे हैं. पिछले पखवाड़े लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयर वर्ष के सर्वोच्च 122 से गिरकर 70 और रिलायंस भी सर्वोच्च से 25 रुपए नीचे 65.50 रुपए पर बंद हुए.

4 मई को जब कारोबार बंद हुआ तो इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक 433 पर था जो 19 अप्रैल के स्तर से नौ अंक ऊपर था. लेकिन यह स्तर वर्ष के सर्वोच्च 1 अप्रैल के 443.1 से 10 अंक नीचे था. बंबई शेयर बाजार का 100 शेयरों वाला राष्ट्रीय सूचकांक भी 19 अप्रैल से 3 मई के बीच 409.55 से 418.89 तक गया. लेकिन यहां का संवेदनशील सूचकांक 3 मई को 800 अंक के ऊपर गया जो सर्वोच्च बिंदु 805.86 से थोड़ा ही नीचे था. लेकिन अगले ही दिन यह 20 से अधिक अंक नीचे गिरकर 779.22 पर आ गया.

इस बीच बढ़ती महंगाई से चिंतित सरकार ने घोषणा की है कि यदि सीमेंट, चीनी और खाद्य तेल निर्माता कीमतें कम नहीं करते तो वह कड़े कदम उठाएगी. ऐसे में जब पाकिस्तान से युद्ध की संभावनाएं कम होती जा रही हैं, तब भी बाजार आगे की उथलपुथल को ध्यान में रखते हुए शांत ही पड़ा है. यह समय अभी इंतजार का है

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	नीचा	बंद 4.5.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	69.50	89.00	9.00 +
एसोसिएटेड सीमेंट	444.00	325.00	434.00	2.00 +
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	233.75	5.00 +
एटलस कोप्को	48.00	32.50	37.00	4.00 +
बजाज ऑटो	467.50	355.00	457.50	23.75 +
बड़ौदा रेयॉन	910.00	617.50	842.50	15.00 −
बाटा इंडिया	83.00	62.50	74.00	3.00 −
बल्लारपुर	161.00	120.00	153.00	8.00 +
बिरला जूट	75.75	50.50	74.50	5.00 +
ब्लो प्लास्ट	57.50	34.50	51.25	2.50 +
बॉम्बे डाइंग	231.00	173.00	203.00	2.00 +
ब्रिटानिया इंडिया	119.00	97.00	115.00	1.00 −
बुक बांड	118.00	91.00	115.50	1.50 +
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	3420.00	2420.00	3170.00	10.00 +
क्लोराइड इंडिया	92.00	82.50	87.00	1.00 −
कोलगेट पामो.	233.75	176.25	205.00	5.00 −
सायनामिड	115.00	87.50	106.00	11.00 +
डीसीएम	60.00	45.50	54.00	2.75 −
डनलप	75.50	51.75	66.00	10.00 +
ईआई होटल्स	65.25	57.50	59.50	0.50 −
एस्कार्ट्स	90.00	77.75	87.00	2.00 +
फिनोलेक्स केबल्स	282.50	200.00	205.00	7.50 −
नेस्ले इंडिया	129.00	101.75	118.50	0.50 −
गरवारे नाइलोन	69.00	49.00	52.00	−
जी.ई. शिपिंग	54.75	44.00	50.50	0.25 +
गुजरात स्टेट फर्ट.	195.00	155.00	177.50	3.75 +
ग्रासिम इंडिया	133.00	106.00	128.50	5.00 +
हिंदु. एल्यूमिनियम	292.50	205.00	283.75	2.50 +
हिंदु. सीबा	1660.00	960.00	1280.00	10.00 +
कैडबरी इंडिया	172.50	133.75	158.75	4.75 +
हिंदुस्तान लीवर	125.00	101.00	115.25	2.75 +
हिंदुस्तान मोटर्स	31.30	19.80	29.80	3.30 +
आईसीआई	49.50	35.25	37.50	1.00 −
इंडियन आर्गेनिक	58.75	46.50	54.50	4.50 +
इंडियन रेयॉन	113.50	84.00	108.50	2.00 +
इंड्रॉल	246.25	161.25	222.50	15.00 +
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	220.00	−
आई.टी.सी.	70.00	48.75	67.50	1.50 −
जे.के. सिंथेटिक्स	67.00	50.00	57.00	−
काइनेटिक इंजी.	155.00	130.00	142.50	2.50 −
किर्लोस्कर क्युमिंस	90.00	65.00	74.00	1.00 −
केएसबी पंप्स	227.50	190.00	226.25	1.25 +
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	70.00	5.00 −
लिप्टन	112.00	83.00	90.00	1.00 −
लोहिया-मशीन्स	21.00	15.00	16.50	0.25 +
मदुरा कोट्स	115.50	100.50	111.00	3.00 −
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	86.25	1.25 −
मिल्क फूड	280.00	170.00	190.00	10.00 +
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	785.00	820.00	40.00 −
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	133.00	1.00 −
नेशनल आर्गेनिक	1660.00	1070.00	1230.00	50.00 −
निरलॉन	22.00	14.00	15.00	1.00 −
ओरके सिल्क मिल्स	20.50	14.50	15.25	0.75 −
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	32.50	24.00	27.50	0.50 −
फाइजर	113.75	72.50	80.00	4.00 +
प्रीमियर ऑटो	74.50	53.50	62.00	2.50 +
रैनबैक्सी	110.00	86.25	95.00	1.25 −
रेमंड	87.50	70.00	81.50	1.00 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	90.00	50.00	65.50	8.50 −
सीमेंस इंडिया	123.50	96.00	112.00	−
शॉ वैलेस	92.00	65.00	90.00	3.00 +
श्रीराम फाइबर्स	71.00	51.25	56.00	1.00 +
एसकेएफ बेयरिंग्स	1570.00	1240.00	1350.00	−
स्पिक	62.00	50.75	56.00	1.50 −
टाटा स्टील	136.50	103.25	116.75	7.75 −
टेल्को	153.00	110.00	150.50	5.50 +
वाम ऑर्गेनिक	167.50	132.50	137.50	5.00 −
वीडियोकॉन	230.00	105.00	228.75	16.29 +
वोल्टास	78.50	63.00	73.75	0.25 −
विमको	32.50	15.75	17.00	0.50 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिकी मूल्य (रुपए में)	खरीद मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.1909	13.0451
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	147.7419	147.1122
बहरीन	दीनार	1	46.4981	45.4112
बांग्लादेश	टका	100	55.3549	53.9254
कनाडा	डालर	1	15.0071	14.8454
डेनमार्क	क्रोना	1	2.7616	2.7313
मिस्र	पौंड	1	6.7584	6.6376
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.1696	3.0912
हांगकांग	डालर	1	2.2376	2.2142
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9528	0.9378
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2558
इटली	लीरा	100	1.4304	1.4133
जापान	येन	100	11.1982	10.9179
केन्या	शिलिंग	1	0.8073	0.7982
कुवैत	दीनार	1	59.5112	57.5206
मलेशिया	डालर	1	6.4449	6.3758
मारीशस	रुपया	1	1.1862	1.1689
नेपाल	रुपया	1	0.6086	0.6002
हालैंड	गिल्डर	1	9.3245	9.2181
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8303	0.8178
सिंगापुर	डालर	1	9.3110	9.2087
स्पेन	पेसो	1	0.1677	0.1653
श्रीलंका	रुपया	1	0.4365	0.4314
स्वीडन	क्रोना	1	2.8721	2.8485
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	12.1316	11.8977
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0969	0.0933
थाईलैंड	बहत्त	100	67.5845	66.1159
ब्रिटेन	पौंड	1	28.9143	28.7066
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.4368	17.2563
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.7499	4.6869
सोवियत संघ	रूबल	1	28.1012	27.7179
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.6496	10.3843

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 7.5.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम का इंकलाब

फिलहाल मुल्क में परिवर्तन का दौर है. सब बदल रहा है. पहले नेता हुकुम चलाते थे. अब आम सहमति बनाते हैं. पहले नेता-अपराधी जेल जाते थे, अब साधू-संन्यासी जेल जाते हैं.

इस सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव के जमाने में जाहिर है कि पुराने नाम भी बदलें. शेक्सपियर का खयाल था कि नाम में धरा क्या है. हम जानते हैं कि नाम ही तो किसी वस्तु का वास्तविक परिचय-पत्र है.

यह जनता की सरकार है. वही करती है जो जनता चाहती है. वरना पेप्सी-कोला को ताऊ-कोला कहने का प्रस्ताव क्यों रखती? ताऊ के सम्मान-सूचक संबोधन से हमें कतई एतराज नहीं है. पर कोला क्यों! कोला से कोयले का खयाल आता है. फिर काजल की कोठरी का. ताऊ के साथ कोला की कालिख कैसे? ताऊ के बाद दूसरों की बारी है. चाचा-चिप्स, काका-केक, भैया-भेल, चाची-चीज, दादी-दही, पापा-पेड़ा आदि खाकर लोग ताऊ-लाल पी सकते हैं. कुल माहौल में देसी-विदेशी स्वाद का मजा ऐसे ही तो आएगा.

ग्रामवासी सांसद तो हो गए पर संसद वही है—अंग्रेजों की नकल वाली. बिना नए नामकरण के कैसे ग्रामोन्मुखी होगी! संसद के नए नाम का सवाल लेकर हम अपने विद्वान मित्र आतताई की शरण में जाते हैं. "आप कोई अच्छा-सा नाम सुझाइए."

"क्या घर में लक्ष्मी पधारी है या पुत्र-लाभ हुआ है?"

"नहीं जी! हम तो संसद की बात कर रहे हैं."

"लोकसभा और राज्यसभा में क्या खराबी है!"

"कोई ऐसा नाम बताइए जिसमें पनघट, लमराई और पंचायत का मेल हो."

वे चिंतन में डूब गए. फिर बोले, "पंचायत भी क्या बुरा है! रामायण-महाभारत की परंपरा में रहेगा. प्रधानमंत्री पंच-प्रवर या प्रमुख हो सकते हैं, मंत्री पंच-श्रेष्ठ और सांसद पंच-प्रतिनिधि. प्रजातंत्र को पंचतंत्र कह सकते हैं."

"संसद के महत्व के कारण हमें और नाम भी चाहिए."

"संसद में इधर खासा कुश्ती का माहौल रहता है. इसके मद्देनजर मल्ल-सभा भी काबिलेगौर है. यों ताऊ-सभा और ताऊ-तंत्र भी बुरे नहीं हैं." आतताई जी ने एक और सुझाव दिया, "वर्तमान परिस्थितियों में चुनाव जैसे दकियानूसी नाम का क्या औचित्य है?"

"जनता को चयन की आजादी है, शायद इसीलिए..."

"जी नहीं! द्रौपदी के चीरहरण से पूरी व्यवस्था में बुनियादी बदलाव आया था. इलेक्शन भी छोटा-मोटा महाभारत है. मतदान के बाद हारे प्रत्याशी का अपमान, बूथ-कैप्चर, शक्ति प्रदर्शन आदि ऐसे ही थोड़े होते हैं. चुनाव का नया नाम चीर-हरण कैसा रहेगा?"

हम सोचने लगे कि अगर संसद पंचायत-श्री हो गई तो सचिवालय का क्या होगा! विदेशी विरासत से भयभीत जनता भी अपनी समस्याएं स्वयं के सेवकों के पास ले जाने से कतराती है. हमें विदेशी 'सेक्रेटेरियट' की अनुगूंज को सचिवालय से हटाना है. वहां कागज ही तो रहते हैं. सरकार सचिवालय का नाम 'कागज-घर' क्यों नहीं रख देती.

इसके साथ अधिकारी व कर्मचारियों के पदनाम भी बदलेंगे. बाबू व्यर्थ बदनाम है. सबको पता है कि सचिवालय का हर अफसर 'नियम गिनाय' बाबू के आगे असहाय है. उसका उचित नामकरण 'कलम सहाय' और ऊपर से सेक्शन अधिकारी का 'अड़ंगा लगाय' हो सकता है. इसके बाद 'निर्णय' वाली श्रेणी में सचिव. का सही पर्याय सिर्फ 'निर्णय बचाय' है. हमें यकीन है कि इन नवीन पदनामों, जैसे 'कलम सहाय' या 'निर्णय बचाय' से व्यक्ति का कार्य-क्षेत्र और मानसिक नजरिया झलकता है.

हम नए पदनामों की सफल कल्पना से फूले नहीं समा रहे थे कि हमारे मित्र ने हमारी परीक्षा ली. "आपने तिरुवनंतपुरम का नाम सुना है?"

"यहीं कहीं रामकृष्णपुरम के आसपास होगा."

"आप और कहीं अपने अज्ञान का ढिंढोरा मत पीटिएगा. यह त्रिवेंद्रम का नया नाम है."

हम देश हित में खुश हुए. नए नामों की 'शताब्दी' चल पड़ी है. देश की एकता-अखंडता आज की प्रथम प्राथमिकता है. ढंग के नामों से उत्तर-दक्षिण के मन का पूरा मिलन मुमकिन है. लखनऊ लखनऊपुरम हो और पटना पाटलीपुरम. देश की सियासत का दिल दिल्ली में धड़कता है. इसका बिल्ली की तर्ज पर छोटा नाम अनुचित है. कुछ भारी-भरकम मुल्क की राजधानी वाला रौबदार नाम तो हो. कालिंदी दरबारपुरम कैसा रहेगा?

नए नामों की दरकार वक्त की पुकार है. बंबई, मुंबई है. पूना, पुणे! मीनमबाकम भी बदल गया पर मद्रास अब भी मद्रास है. यह तमिल संस्कृति की पहचान को चुनौती है. नया नाम हम सुझा सकते हैं. पर नहीं सुझाएंगे. कोई हिंदी साम्राज्यवाद का षड्यंत्र न समझ ले. हमें यकीन है कि वहां की सरकारों को सोचने में वक्त लगता है. इसका हल आतताई जी ने निकाला है. लोगों ने बच्चों के नामों की किताबें लिखी हैं. आतताई जी राष्ट्रहित के लिए स्थानों और संस्थाओं के नए नामों की सूची बना रहे हैं. और कोई परिवर्तन हो न हो, इसके बाद सरकार धड़ाधड़ नामों का परिवर्तन कर इंकलाब का भ्रम बना सकती है.

रेखाचित्र: जयंतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसाद

टूटते दिलों की बढ़ती मिसालें

देश के अधेड़, बूढ़े लोगों में ही नहीं बल्कि नौजवानों में भी यह बीमारी तेजी से घर कर रही है और इलाज नहीं के बराबर

अब तो लगता है कि किसी भी चीज में मेरी दिलचस्पी नहीं रह गई है—न तो चिड़ियों की चहचहाहट में, न अपने पसंदीदा फूलों में और न ही शास्त्रीय संगीत में. अगर आपने मुझे खबर दी होती कि वी.पी. सिंह मर गए तब भी मेरे अंदर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती. ऐसा लगता है कि मेरे दिमाग में 'डोंट डिस्टर्ब' की तख्ती लग गई है.

मेरा सिर ऐसे फटा जा रहा है जैसे किसी ने लोहे की चिमटी से उसे कसना शुरू कर दिया है. मैं अपने आपको मानसिक रूप से पंगु महसूस करता हूं. अकेले सोने, अकेले रोने, नितांत अकेले रहने का मन करता है. मैं जीवन का सामना नहीं करना चाहता.

नींद आम तौर पर समस्याओं को भुलाने में मदद करती है. लेकिन अब भोर में तीन बजे ही नींद खुल जाती है और वही समस्याएं फिर घेर लेती हैं. मैं आसपास की दुनिया से कटने लगता हूं. बाहर देखने की जगह अपने भीतर ही देखने लगा हूं. मैं भोजन को अपनी आंतों में उतरते महसूस कर सकता हूं, सारे शरीर में रक्त प्रवाहित करते दिल की धड़कनें सुन सकता हूं.

चलना-फिरना भी समस्या है. पिछले ही दिनों कूदकर नाला पार करने की जगह मैं गंदगी में ही घिसटता आगे बढ़ता गया. बाधा पार करना बहुत ही मुश्किल काम लग रहा था.

उपनगरीय रेल में यात्रा करते हुए जब मैं देखता हूं कि कोई मुझे घूर रहा है तो डर जाता हूं. और मैं अगले स्टेशन पर उतर जाता हूं. अचानक मुझे पूरी दुनिया से डर लगने लगता है. उस रात मैंने पाया कि मैं रेल पटरियों पर चला जा रहा हूं. मैं उम्मीद कर रहा था कि कोई रेलगाड़ी आएगी और मुझ पर से होकर गुजर जाएगी. मैं बस मर जाना चाहता था. पर कहीं मेरी अंतश्चेतना मुझे उन पटरियों से अलग धकेल रही थी. मुझे खुद पर शर्म आने लगी. मैं कायर हूं. अगर मैं परिवार के लिए कुछ कर नहीं सकता तो भी परिवार को मेरी मौजूदगी तो चाहिए ही. मेरी बीवी को विधवा नहीं होना चाहिए. मेरे बच्चों को अनाथ नहीं होना चाहिए. मैं घर लौट आया और मैंने उन्हें गले से लगा लिया.

अपना यह किस्सा बयान करते हुए रघु कृष्ण की आंखें भर-भर आतीं और छलक पड़तीं. बंबई के इस 55 वर्षीय वस्त्र निर्यातक की मुश्किलों की शुरुआत व्यापार में भारी घाटे के साथ ही हुई. उन्हें अपनी दुकान बंद करनी पड़ी और जब डॉक्टरों ने उनकी बीमारी को मानसिक अवसाद बताया तो कृष्ण को इस पर विश्वास नहीं हुआ. वे कहते हैं, "जब उन्होंने मुझे किसी मानसिक चिकित्सक से मिलने की सलाह दी तो मुझे लगा कि वे सब मुझे पागल समझ रहे हैं."

उनका यह अविश्वास कोई अजूबा नहीं था. अवसाद को अक्सर उदासी भर ही मान लिया जाता है या फिर शोकावस्था. कई लोग इस शब्द का प्रयोग क्षणभंगुर उदासी के दौरों के लिए करते हैं. अवसाद को शायद ही कभी एक गंभीर रोग माना गया.

लेकिन सामान्य उदासी, और इलाज की जरूरत वाले अवसाद में भेद करने वालों की

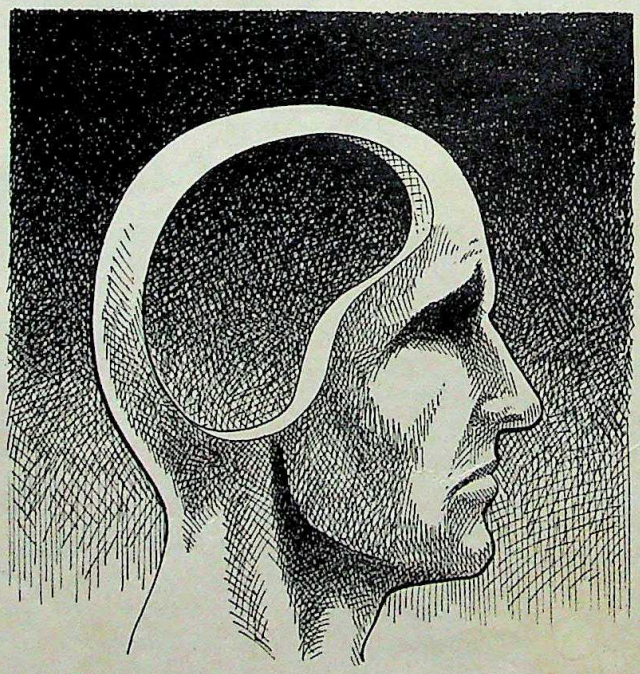

अवसाद सबसे अधिक पीड़ादायक बीमारियों में है. इसमें आदमी नितांत अकेला और चुका हुआ महसूस करने लगता है

संख्या भारत में बढ़ती जा रही है. उदासी के क्षण तो कुछ के होते हैं परंतु अवसाद का दौर महीनों और वर्षों तक चल सकता है और व्यक्ति को पीड़ा और ग्लानि पहुंचा सकता है. बंबई के मनोचिकित्सक एन. बागड़िया कहते हैं, "अवसाद सबसे अधिक पीड़ादायक बीमारी है."

इस भावनात्मक रूप से गिरने के अनेक कारण होते हैं. परिवार में किसी की मौत, किसी की गंभीर बीमारी, नौकरी में पिछड़ जाना आदि. कई लोग तो छोटी सी बात पर भी इसके दुष्चक्र में फंस जाते हैं. जैसे बंगलूरू की 40 वर्षीया गृहिणी विमला नाथन (काल्पनिक नाम) को यह रोग उस दिन से लगा जब उनके पति ने दफ्तर के काम के कारण पहले से तय डिनर पार्टी स्थगित कर दी. वे बताती हैं, "बस इतने से मेरा दिमाग फिर गया. हो सकता है कि मेरे मन में इस से गुस्सा जमा होता जा रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ी गम घटना से एकदम भड़क उठा."

...यह बात भले ही परेशान करने वाली हो ...लेकिन सही यह है कि अब अधिक से अधिक ...तीय लोग अवसाद के दुष्चक्र में फंसते ...रहे हैं. इस रोग के बारे में हुए छिटपुट ...शोधों से पता चलता है कि भारत के ...विश्व 4 फीसदी लोग अवसाद का एक न ...भारी झटका झेल चुके हैं या झेल रहे हैं. ...अनुमान है कि प्रत्येक 12 में से एक आदमी ...इसका खतरा जीवन भर बना रहता है. ...पश्चिमी के दूसरे देशों की तरह भारत में भी ...अवसाद से पीड़ित लोगों में महिलाओं की ...संख्या अधिक है. अध्ययनों से पता चलता है ...कि इसका जोर गांवों में भी उतना ही है.

मनोचिकित्सक आजकल यही पता लगा ...रहे हैं कि अवसाद का असर किस हद तक ...घातक होता है. उन्हें अब यह पता चल गया है कि देश में होने वाली ...फीसदी आत्महत्याओं का कारण अवसाद ही है. यह भी पता चला ...है कि प्रत्येक तीसरा शराबी अवसाद के कारण शराब पीता है. उत्पादकता में कमी के पीछे भी यह एक प्रमुख कारण है. लेकिन वैवाहिक संबंध पर और बच्चों के आचरण पर इस अवसाद का क्या प्रभाव पड़ता है इसका अनुमान अभी नहीं लगाया जा सका है.

बंगलूर स्थित प्रसिद्ध राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.एस. चन्नाबासवन्ना कहते हैं, "दरअसल अवसाद देश का सबसे आम मानसिक रोग बन गया है." ...दशक पहले तक इस संस्थान के मनोविकार वाले क्लिनिक में ...मानसिकता वाले लोगों का, और व्यक्तित्व विकार का इलाज ...था. लेकिन आज यहां ...अधिकतर लोग (अवसादग्रस्त) ...का इलाज करने आते ...देश भर के अधिकतर मनोचिकित्सा विभागों में भी यही ...रहा है.

सबसे गंभीर बात तो यह है ...अवसाद अब सिर्फ 35 से ...वर्ष वाले लोगों को नहीं घेर ...है जैसा कि एक अरसे तक ...था. मनोचिकित्सकों का ...है कि पिछले दो दशकों ...यह बीमारी उम्र की इस ...को दोनों तरफ से तोड़ ...है. आज यह नौजवान ...को भी पकड़ने लगी है ...बूढ़ों को भी. दिल्ली के ...तंत्रिका मनोचिकित्सक डॉ. ...शर्मा कहते हैं, "20वीं ...अवसाद का युग बनती जा ...है".

...के शिकार लोगों में एक ...कंपनी के तेजतर्रार ...अधिकारी 28 वर्षीय शरत ...भी, जो हाल तक हर ...को पूरे जोश-खरोश से ...थे. जब उन्हें शाखा ...बनाया गया तो काम के ...बोझ ने असर दिखाना शुरू किया. उनका छोटा भाई भरत कहता है, "जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने एक बच्चे की तरह मेरा हाथ जोर से पकड़ लिया और लिपट कर लगातार रोते रहे."

सामान्य लक्षण

- अनिद्रा
- अकेले रहने की इच्छा
- आत्मनिंदा
- ध्यान केंद्रित न कर पाना
- नकारात्मक सोच
- उदर रोग
- कामेच्छा कम होना
- शरीर में बराबर दर्द रहना
- सुस्ती का भाव
- भविष्य के बारे में अनिर्णय
- असहायता का भाव
- आत्महत्या की प्रवृत्ति

अवसाद के इस रोग के तेजी से फैलते जाने के असली कारणों का अभी तक बहुत खुलासा नहीं हुआ है. एक कारण अनुवांशिक जरूर है. दूसरी वजह है अवसाद के लक्षणों के प्रति सतर्कता में वृद्धि, खास तौर से डॉक्टरों में. दिल्ली के सुचेता कृपलानी अस्पताल के मनोरोग विभाग के प्रमुख प्रो. एस.सी. मलिक बताते हैं, "पहले डॉक्टरों को मानसिक रोग का तभी पता चलता था जब लोग अपना टीवी सेट तोड़ने तक की स्थिति तक पहुंच जाते थे. लेकिन अब ऐसा नहीं है."

लेकिन मनोचिकित्सक मानते हैं कि भारत में हो रहा भारी सामाजिक बदलाव भी अवसाद का एक मुख्य कारण है. पहचान के परंपरागत मूल्य टूटते जा रहे हैं. परिवार में पति की प्रमुख भूमिका वाली पुरानी अवधारणा पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं. सास की हैसियत घटती जा रही है. बड़ों का आदर कम हुआ है. बंबई के केईएम जनरल अस्पताल के मुख्य मनोचिकित्सक डॉ. एल.पी. शाह कहते हैं, "सामाजिक संबंधों के नए मूल्य बन नहीं पाए हैं और पुराने ढह गए हैं. अब धर्म में आस्था भी कमजोर पड़ती जा रही है."

परिणाम यह है कि किसी का दुख बांटने का चलन भी बहुत कम ही रह गया है. अभी एक पीढ़ी पहले तक किसी की मृत्यु पर श्राद्ध आदि दुख भुलाने का एक अच्छा बहाना हुआ करते था.

अगर कोई महिला कम उम्र में विधवा हो जाए तो परिवार के दूसरे लोग उसकी और उसके बच्चे की देखभाल या आर्थिक मदद किया करते थे. लेकिन शहरीकरण ने अपनेआप में सिमटने की जिस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है उसका नतीजा यह है कि तनावमुक्त करने वाले ये परंपरागत साधन लुप्त होते जा रहे हैं. बंबई के मनोचिकित्सक विहंग वाहिया कहते हैं, "अब तो आपको मेरे जैसे किसी आदमी (विशेषज्ञ) को अपना दुखड़ा सुनाने के लिए भी पैसे देने पड़ते हैं."

इसका एक नतीजा यह है कि इस रोग का नया भुक्तभोगी वर्ग है 60 वर्ष के ऊपर के लोगों का. लोगों का जीवन लंबा हो गया है और उनके लिए नौकरी से अवकाश लेने के बाद का जीवन बहुत मुश्किल हो गया है. बागड़िया कहते हैं, "सिर्फ मौत का डर ही नहीं बल्कि जीवन में खालीपन का तीखा एहसास भी उनमें अवसाद भर देता है."

हाल में ही दिल्ली के एक

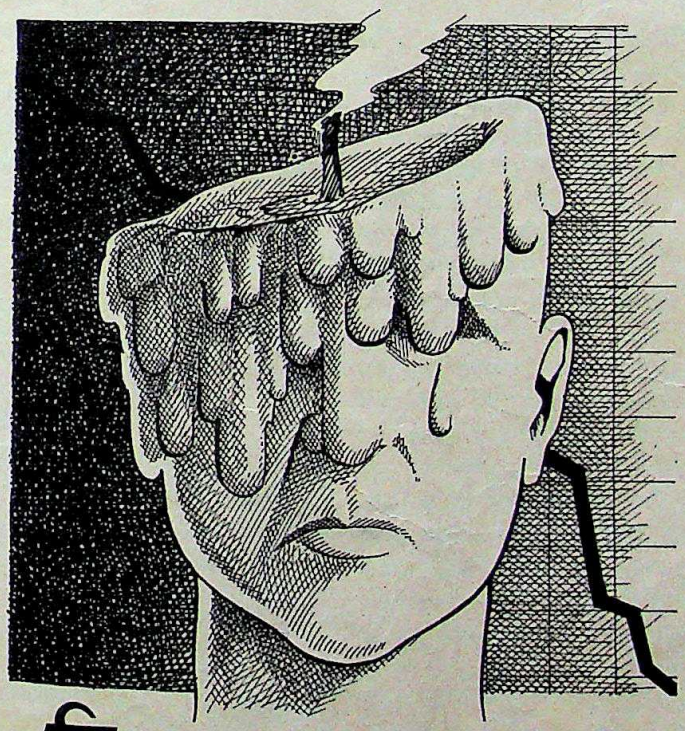

विकास और भागमभाग के इस दौर में ऊंचे पहुंचने की आकांक्षा पालनेवालों के अवसादग्रस्त होने का ज्यादा खतरा होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोचिकित्सक ने 70 वर्ष के विधुर का इलाज किया जो एकाएक अपनी आवाज खो बैठे थे. पूछताछ करने पर डॉक्टर को पता चला कि उन्होंने अपने दो बेटों को पढ़ा-लिखाकर अच्छे काम पर लगा दिया लेकिन एक दिन उन्होंने जब अपने बहू द्वारा बनाई गई मिठाई का एक टुकड़ा ले लिया तो बहू ने उन पर 'खून चूसने' का आरोप लगा दिया. उन्होंने इसके बाद से एकदम चुप्पी-सी साध ली और गहरे अवसाद में डूब गए.

कुछ दूसरे विशेषज्ञों का मानना है कि हम सामाजिक होने की जगह आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं. लोग 'हम' की जगह 'मैं' पर ज्यादा जोर देने लगे हैं. टाटा समूह द्वारा चलाए जा रहे नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एड-वांस्ड स्टडीज (बंगलूर) के विख्यात मनोचिकित्सक रवि कपूर कहते हैं, "अब यह समाज विशुद्ध रूप से स्वार्थ के रास्ते पर चल रहा है. व्यक्ति के रूप में हमारी दिलचस्पी सिर्फ इतनी ही रह गई है कि समाज को बिना कुछ दिए अधिक से अधिक लेने की कोशिश करें."

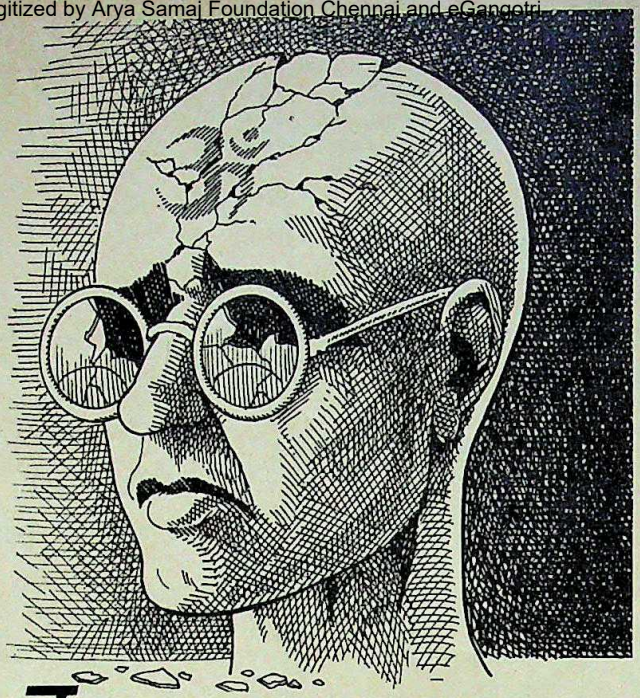

तनावमुक्ति के पारंपरिक साधनों का तेजी से लोप हो रहा है. आपको सहारा देने वाले धर्म की शक्ति भी कमजोर पड़ गई है

बदले हुए नए माहौल में किसी को यह परवाह नहीं है कि आप असल में क्या हैं. परवाह है तो बस इसकी कि आप क्या कमाते-दिखाते हैं. दोस्ती भी मतलब के लिए होती है. गम और निराशा बांटने और मिटाने वाली पुरानी जटिल सामाजिक व्यवस्था की अहमियत का कोई एहसास उस नई पीढ़ी को नहीं है जो किसी भी तरह बाजी मारने की मानसिकता रखती है. व्यक्ति अधिक अकेला भी होता जा रहा है. जैसा कि वाहिया बताते हैं, "आत्म निरीक्षण के लिए कोई वक्त ही नहीं बचा है. और न ही आपको कोई और यह बताने वाला है कि अब आप और तनाव न बढ़ाएं."

प्रसिद्ध मनोचिकित्सक आर.श्रीनिवास मूर्ति (राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान) जैसे विशेषज्ञ तो थोड़ा और आगे बढ़ते हैं. वे कहते हैं, "आर्थिक रूप से विकास करने की देश की कोशिश का ही नतीजा अवसाद में वृद्धि है." वे कहते हैं कि आज दिमाग पर जिस तरह का चौतरफा दबाव पड़ रहा है वैसा पहले कभी पड़ता नहीं था. यह बात जीवन स्तर बढ़ाने वालों से लेकर दोनों शाम चूल्हा जलने की चिंता करने वालों, सभी पर लागू होती है. राजनीति में आदर्श व्यक्तित्वों के भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ भी इसे बढ़ा रहा है. दिल्ली की मनोचिकित्सक नीलम वोहरा कहती हैं, "ऐसे भारी दबावों से निबट पाने की हमारी मानसिक क्षमता तेजी से जवाब देने लगी है."

अवसाद के सबसे नए शिकार हैं 10 वर्ष से भी नीचे के बच्चे. डॉक्टरों का मानना था कि बच्चों का दिमाग आसानी से नई परिस्थितियों में ढल जाने लायक होता है. लेकिन अब यह राय बदल गई है. आठ वर्षीया सोनू चंद्रा ने अचानक स्कूल जाना बंद कर दिया और अपने में ही गुमसुम रहने लगी. अक्सर रोने लगती और रात में बिस्तर गीला भी करने लगी. चिंतित मां-बाप उसे मनोचिकित्सक के पास ले आए तो उन्हें इसका असली कारण ढूंढ़ने में देरी नहीं लगी. मां-बाप ने सोनू के लिए भर का प्रोग्राम बहुत व्यस्त दिया था.

किशोर-किशोरियों के पर यौन समस्याओं के भी नए तरह के दबाव करने लगे हैं. एक दबाव अच्छे स्कूल में पहुंचने और का होता है और आम तौर यह मां-बाप की ओर से है. 14 वर्षीय विकास बताता है कि उसके मां-बाप बार उसे एक डॉक्टर के यह पूछने के लिए ले गए यह लड़का पढ़ाई-लिखाई औसत दर्जे का क्यों है जिस परिवार में मियां-बीवी दोनों नौकरी करते हैं वहां और बच्चों के बीच संपर्क कमी भी एक तरह का तनाव पैदा करती है. बंबई के चिकित्सक डॉ. परेश वाला चेतावनी देते हैं, "पदार्थों और शराब की लत कम वय में बच्चों के होने की घटनाएं असल में बताती हैं कि उन पर पूरा नहीं दिया जा रहा है."

लेकिन अभी भी अवसाद के सबसे अधिक शिकार 40 वर्ष के नीचे या ऊपर के लोग ही होते हैं. बंगलूर के मनोचिकित्सक कल्याणसुंदरम कहते हैं, "इस उम्र में खालीपन का विचित्र होने लगता है. घर में बच्चों या पति के जीवन में औरत की उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह जाती. उन्हें अपने बूढ़े होने का

अवसादरोधी उपाय

मनोबल बढ़ाने पर जोर

शायद मनोचिकित्सा का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण महा में भगवान कृष्ण द्वारा युद्ध के मैदान में अवसा अर्जुन को उपदेश देना है. आधुनिक मनोचिकित्सक भी वही विधि अपनाते हैं. लेकिन पिछले दो दशकों से इस क्षेत्र भिन्न तरह की क्रांति हो गई है. कई नई और सुरक्षित दवाइ पता लगा है जिनसे चिकित्सा ज्यादा आसान और अधिक हो गई है. बावजूद इसके, मनोचिकित्सक आम तौर पर इन विभिन्न विधियों के उचित संतुलन के सहारे ही चलते हैं.

अवसादरोधी दवाएं: इन दवाओं का आविष्कार अचान 1951 में पाया गया कि यक्ष्मा के इलाज में प्रयुक्त होने 'आईप्रोनाइज्ड' दवा रोगी में अतिउत्साह भर देती है अचानक उपलब्धि से अवसादरोधी दवाओं का आविष्कार हुआ. दूसरा बड़ा आविष्कार '70 के दशक के प्रारंभ में

अवसादरोधी दवाओं को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा है. ट्राईसाइक्लिक्स और मोनोएमाइन ऑक्सीडेस इन्हिबीटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

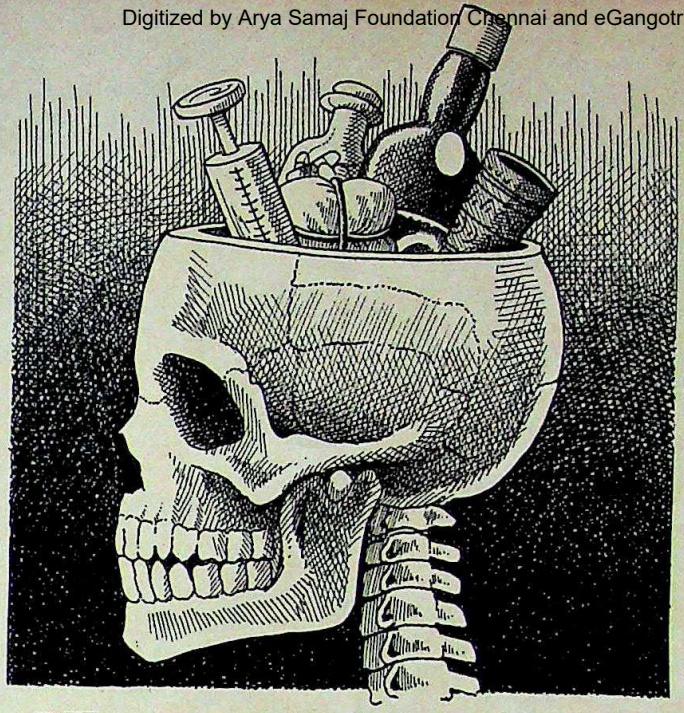

अवसाद का सबसे खतरनाक पहलू इससे पीड़ित लोगों में आत्महत्या की प्रवृत्ति का पैदा होना. नशीली दवाइयों की लत भी इसी से पड़ती है

होने लगता है. और वे अकेला-
महसूस करने लगती है."

विमला रंगनाथन की समस्या की जड़ भी उनके इसी के एहसास में मिली. 40 की होने पर उन्हें लगा कि उद्योगपति से हुई उनकी वर्ष पुरानी शादी का कोई नहीं रह गया है. पति दी जाने वाली पार्टियों को पसंद नहीं करती थीं. वे तथा भावनात्मक साह- चाहती थीं. आखिर में वे अवसाद में डूब गईं.

बालीस से पचास की उम्र पुरुष आम तौर पर अपनी करों या अपने व्यवसाय के कारण अवसाद से पीड़ित होते यह वह उम्र होती है जब क्षमता की दर कम हो जाती और विफलता मानसिक पीड़ा होने लगती है. और फिर करी में पीछे धकेल दिए जाने का खतरा भी सबसे ज्यादा इसी में बना रहता है. बंबई के एक्जीक्यूटिव 45 वर्षीय शुक्ल के साथ यही हुआ. के ऊपर एक ऐसे अधिकारी बैठा दिया गया जो उनसे 10 साल जूनियर था. उन्होंने कहा, लगा कि मैं खत्म हो गया."

लेकिन तनाव ही अवसाद की एकमात्र वजह नहीं है. कभी-कभी बदलने या प्रोन्नति से भी अवसाद का झटका लग सकता है. भी आश्चर्यजनक किंतु सच है कि महिलाएं प्रसव जैसी अवश्यं-

भावी बातें सोचकर ही अवसाद की शिकार हो सकती हैं. वजह: महिलाएं अचानक महसूस करने लगती हैं कि मातृत्व बहुत कष्ट-प्रद होता है. अति भावुकता के कारण भी अवसाद हो सकता है जिसे उन्मादपूर्ण अवसादी मनस्ताप कहते हैं.

मनोचिकित्सक अभी तक यह नहीं समझ पाए हैं कि वर्षों से तनाव का सामना करता आ रहा कोई व्यक्ति अचानक कैसे इसका शिकार हो जाता है. कुछ मनोचिकित्सकों का मानना है कि आम तौर पर लोग दिमाग पर पड़ने वाले चौतरफा दबाव पर ध्यान नहीं देते.

अवसाद के बारे में अच्छी खबर यह है कि पिछले दो दशक में कई अवसादरोधी दवाओं की खोज हुई है (देखें बॉक्स). लेकिन सबसे बड़ी समस्या मनोचिकित्सकों का बेहद अभाव है. हालांकि पिछले एक दशक में मनोचिकित्सकों की संख्या 3,000 से अधिक हो गई है लेकिन मानसिक रोग के उपचार की सुविधाएं अभी भी अपर्याप्त हैं, खासकर ग्रामीण इलाकों में. आंकड़ों के अनुसार, सभी तरह की मानसिक बीमारियों के लिए 42 मानसिक अस्पतालों में 20,000 और सामान्य अस्पतालों में लगभग 3,000 बिस्तर हैं.

अगर अवसाद का इलाज न करवाया गया और उसने अपनी जड़ें जमा लीं तो वह काफी खतरनाक साबित हो सकता है. इसका सबसे भयावह पहलू है कि रोगी आत्महत्या करने की सोचने लगता है.

अवसाद से पीड़ित व्यक्ति कभी-कभी आश्चर्यजनक व्यवहार भी करने लगता है. मसलन, मध्य वय की एक महिला बिना हिले-डुले दो दिनों तक एक कुर्सी पर बैठी रही. एक-दूसरे व्यक्ति ने खाने-पीने से मना किया क्योंकि उसका कहना था कि वह उसकी अंतड़ियों में नहीं जा रहा. कुछ में नकारवादी प्रवृत्ति भी पैदा हो जाती है. एक किशोर तो महसूस कर रहा था कि उसकी खोपड़ी में दिमाग ही नहीं है.

हालांकि इस तरह के लोगों पर दवाओं और मनोचिकित्सा का असर एक महीने बाद होता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में रोगी बहुत जल्द ठीक होते देखे गए हैं. अवसाद से मुक्ति पाने वाले लोग प्रायः यह महसूस करते हैं कि उन्हें नया जीवनदान मिला है. जैसा कि 40 वर्षीया नलिनी शिव कहती हैं, "ऐसा लगता है मानो आपके शरीर का रेशा-रेशा फिर से सक्रिय हो गया है."

दुखद बात तो यह है कि एक-तिहाई रोगियों पर अवसाद के बार-बार हमले होते हैं और पांच में से कम-से-कम एक रोगी इससे दो साल तक नहीं उबर पाता. सो, लोगों को मानसिक क्षीणता के खतरनाक संकेतों पर बहुत ध्यान देना चाहिए और उसका तुरंत इलाज कराना चाहिए. मनोचिकित्सकों का कहना है, "एक तरह से हमें यह फिर से सीखना होगा कि हम अपनी भावनाओं को अपने तक सीमित रखने के बजाए उन्हें दूसरों तक कैसे पहुंचाएं." साथ ही इस सचाई को भी पहचानना होगा कि कोई भी आदमी अलग-थलग रह कर नहीं जी सकता.

—राज चेंगप्पा

जोर

उन्मादरोधी दवाओं का असर कम-से-कम महीने भर तक लगातार इस्तेमाल के बाद ही शुरू होता है और असर शुरू होते ही ये रामबाण साबित होती हैं.

इलेक्ट्रो कन्वल्सिव थेरेपी: 'शॉक ट्रीटमेंट' के नाम से प्रचलित इस विधि को अयाचित बदनामी मिल चुकी है. लेकिन मनोचिकित्सक आज भी जटिल रोगियों पर इस विधि का प्रयोग करते हैं, खासकर आत्महत्या की हद तक जाने वाले रोगियों पर.

मनोचिकित्सा: बंगलूर के मनोचिकित्सक रवि कपूर कहते हैं, "अधिकांश लोग तो अपनी समस्याओं पर गौर न करने के कारण आतंकग्रस्त हो उठते हैं." रोगी का इलाज करते वक्त पहला काम वह करते हैं कि "मैं ऐसी भावनात्मक फिजा पैदा करता हूं कि रोगी पर भरोसा करने लगें."

ज्यादातर मनोचिकित्सक अवसादग्रस्तता को दूर रखने के लिए इस तरह के परहेज की सलाह देते हैं. कुछ नुस्खे: नितांत अंतर्मुखी न रहें, अपने दुख-दर्द को अपनी पत्नी या करीबी दोस्तों में बांटते रहें. वादा निभाने की आदत डालें. कुढ़ने के बदले झाड़ू-पोंछे जैसे छोटे-मोटे काम करते रहें. हर छह महीने में अपने जीवन का लेखा-जोखा लेते रहें. और अपने परिवार के साथ अधिक से ज्यादा समय बिताने की कोशिश करें.

—राज चेंगप्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर प्रशासन

विद्रोही मानस के बीच

घाटी में व्याप्त हिंसा के मद्देनजर राजधानी को जम्मू से श्रीनगर ले जाना आसान नहीं था. सरकारी काफिले की ग्यारह घंटे की यात्रा में वरिष्ठ संवाददाता हरिंदर बवेजा और वरिष्ठ फोटोग्राफर प्रमोद पुष्करणा भी साथ रहे.

सभी फोटो प्रमोद पुष्करणा

उस रविवार की सुबह कोई सामान्य सुबह नहीं थी. जम्मू शहर में 6 मई को तड़के ही गहमागहमी शुरू हो गई. तकरीबन एक हजार गैर-कश्मीरी सरकारी कर्मचारी अपना बोरिया-बिस्तर बांध जम्मू से राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर की ओर दरबार कूच पर निकले तो सबके चेहरे पर वीरानगी-सी छायी थी.

यह परंपरा 100 वर्षों से चली आ रही है. पहले इस कूच पर निकलते हुए लोगों के चेहरे खुशी से दमकते दिखते थे. घाटी की ठंडक में गर्मियां बिताने का सुख, जाहिर है उन्हें खुश कर देता था. लेकिन इस बार बंदूक के साये में कूच करते हुए उनके चेहरे मायूस थे. कश्मीरी पंडितों, जम्मू के डोगरों और सिखों का यह काफिला अलगाववादी हिंसा की चपेट में फंसे श्रीनगर की ओर रवाना हो गया, जहां से कश्मीरी पंडितों के निकट संबंधी हाल ही में उग्रवादियों के खौफ से दूसरी जगहों पर चले गए हैं.

जम्मू-कश्मीर सशस्त्र पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की सुरक्षा में जब ये कर्मचारी राज्य परिवहन निगम से किराए पर ली गई 35 बसों में सवार हुए तो तनाव स्पष्ट महसूस किया जा सकता था. उन्हें अगली सुबह ही श्रीनगर स्थित दफ्तर में काम पर जुट जाना था. मुसलमान कर्मचारी, जिन्हें पुलिस सुरक्षा की जरूरत नहीं थी, अपने बूते पर जम्मू से चल पड़े थे.

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भारी सुरक्षा में जाते इस काफिले पर नजर रखे हुए थे. आम तौर पर यह कूच हफ्ते भर तक चलती थी लेकिन इस बार आखिरी दिन ही पूरा काफिला इकट्ठा रवाना हुआ. बस के साथ चलते वाहनों में हल्की मशीनगनों से लैस जवान बैठे थे. हर बस में सीआरपी के दो-दो जवान अधखुली खिड़कियों से अपनी स्टेनगन ताने बैठे थे.

सात बजकर दस मिनट पर पहली बस सचिवालय के अहाते में दाखिल हुई. लेकिन रवानगी से पहले कश्मीरी पंडित कर्मचारियों ने जम्मू के डीआईजी गोपाल शर्मा को घेर लिया और बस में चढ़ने से इनकार

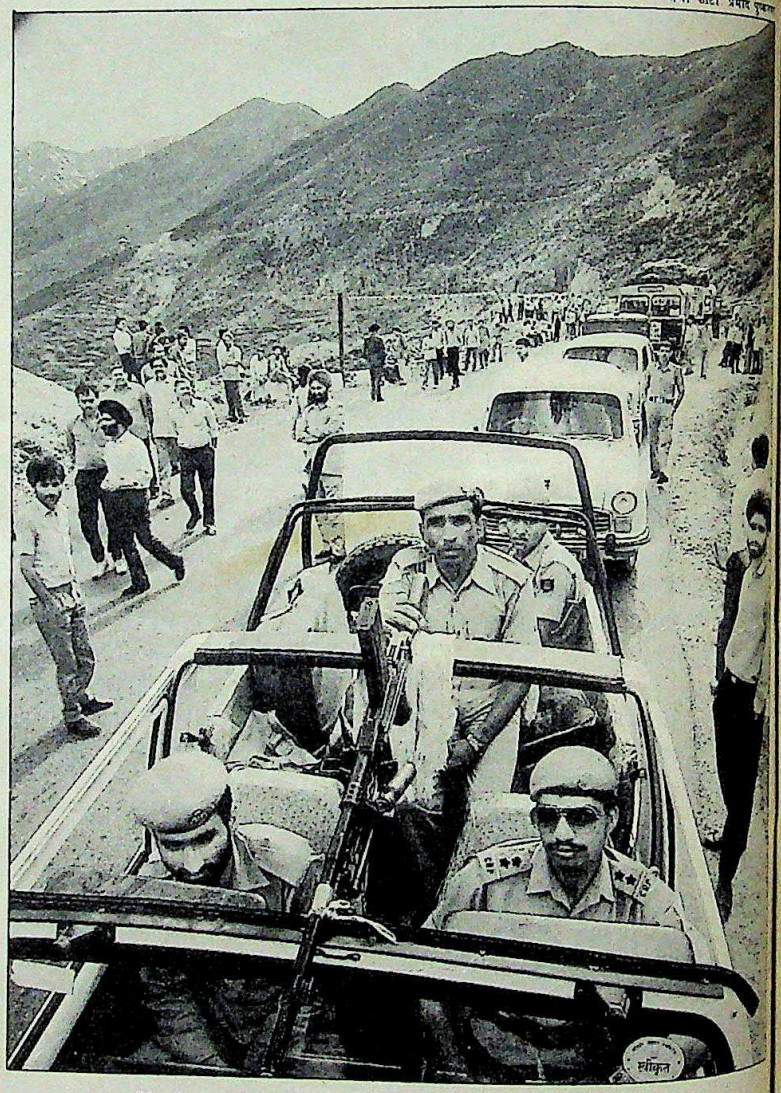

सुरक्षा में श्रीनगर ले जाए जा रहे सचिवालय के कर्मचारी

कश्मीरी पंडित कर्मचारी इस कदर भयभीत थे कि बसें जब श्रीनगर के पास पहुंचीं तो वे खिड़कियों से झांकने की हिम्मत नहीं जुटा पाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया. उनमें से 200 के लिए आवास की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी. उनकी शिकायत थी, "हम श्रीनगर स्थित अपने घरों में तो लौट नहीं सकते. और कुछ घंटों की नोटिस पर होस्टल में कोई इंतजाम नहीं हो सकता? क्या आप हमारी सुरक्षा की गारंटी दे सकते हैं? यहां हम कम-से-कम बोल तो लेते हैं. वहां पहुंचने के बाद तो हम अपना मुंह भी नहीं खोल सकेंगे."

डेढ़ घंटे तक जो तनावपूर्ण माहौल रहा वह सुरक्षा अधिकारियों को बहुत भारी पड़ रहा था, क्योंकि ठीक पांच बजे कर्फ्यू लागू हो जाता और उन्हें सख्त आदेश दिए गए थे कि सांझ ढलने से पहले सभी कर्मचारियों को श्रीनगर में उनके होस्टल में सुरक्षित पहुंचा दिया जाए. लेकिन धरने पर बैठे कश्मीरी पंडित तब तक एक भी बस रवाना नहीं होने दे रहे थे, जब तक उन्हें श्रीनगर में सुरक्षित आवास का आश्वासन नहीं मिल जाता. गुस्से में कर्मचारियों ने प्रशासन को कोसना शुरू किया, और एक साथ चिल्लाए कि "गोली चलाकर हमें यहीं भून डालिए. हम आतंकवादियों के हाथ नहीं पड़ना चाहते." तब परेशान अधिकारियों ने श्रीनगर से संपर्क किया.

इस नाटक का अंत तभी हुआ जब श्रीनगर से जवाब मिला कि इस काफिले को श्रीनगर के पास बाइपास रोड से ही सुरक्षा घेरे में ले लिया जाएगा और सभी कर्मचारियों को सुरक्षित होटल या होस्टल में पहुंचा दिया जाएगा. तब आठ बजकर चालीस मिनट पर कर्मचारियों ने बेमन से परिवारजनों को अलविदा कहा. महिलाएं और बच्चे आंसू बमुश्किल रोक पा रहे थे. कर्मचारी भी बेहद डरे हुए थे.

जम्मू से बनिहाल तक की यात्रा अपेक्षाकृत तनावरहित रही. माहौल पिकनिक-सा लग रहा था. लेकिन ज्यों ही यह काफिला 3 किमी लंबी बनिहाल सुरंग में पहुंचा और रास्ते पर लगा बोर्ड 'कश्मीर घाटी शुरू होती है' नजर आया, सबको जैसे सांप सूंघ गया. सारी बसें साथ-साथ चलने लगीं. इसी जगह पर कश्मीरी मुसलमान कर्मचारियों ने 'हिंदुस्तान मुर्दाबाद' और 'आजादी' जिंदाबाद के नारे लगाए थे. हर साइनबोर्ड और ढाबे की दीवार पर लिखा था— 'जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फोर्स का इलाका' और ढाबों की छतों पर इस संगठन के झंडे लहरा रहे थे.

यह उग्रवादियों और प्रशासन के बीच शक्ति परीक्षण का मौका था. राज्यपाल जगमोहन के शब्दों में, "यह हमारे साहस और क्षमता का परीक्षण था. मैंने तय कर लिया था कि राज्य-व्यवस्था की सत्ता का साफ-साफ एहसास करा दूं. आतंक फैला करके कोई हमें प्रशासनिक काम करने से नहीं रोक सकता." दफ्तर का समय भी कर्मचारियों की सुविधा के अनुसार कर दिया गया है. कर्फ्यू में सुबह आठ बजे से शाम पांच बजे तक ढील दी जाती है और दफ्तर का समय दस से पांच की जगह नौ से चार बजे तक कर दिया गया है ताकि कर्मचारी अंधेरा होने से पहले अपने निवास स्थान पर पहुंच सकें. सुबह नौ बजने में दस मिनट पर बसें कर्मचारियों के होस्टल के बाहर आ जाती हैं और उन्हें सचिवालय ले जाती हैं. वहां उनकी तलाशी ली जाती है, और जेबों पर उनके पहचान पत्र लगा दिए जाते हैं. फिर मेटल डिटेक्टर से जांच करके अंदर भेज दिया जाता है जहां उन्हें शाम चार बजे तक रहना पड़ता है. इससे पहले किसी कर्मचारी को बाहर जाने की इजाजत

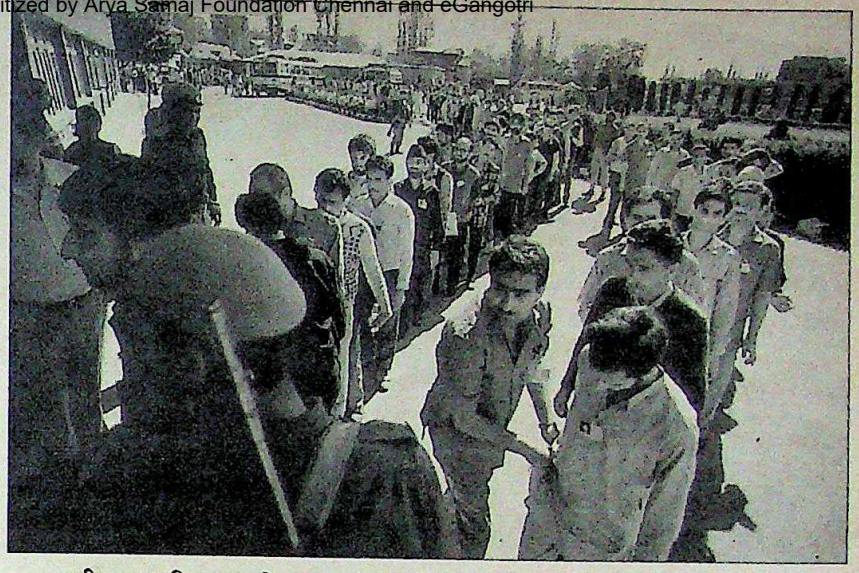

श्रीनगर सचिवालय के बाहर कर्मचारियों की तलाशी

जहां कभी उल्लसित भीड़ उनका स्वागत करती मिलती थी, इस बार श्रीनगर की सड़कों पर उनकी अगवानी के लिए सशस्त्र जवान खड़े थे

जम्मू से श्रीनगर जा रहे कर्मचारियों के आशंकित परिजन

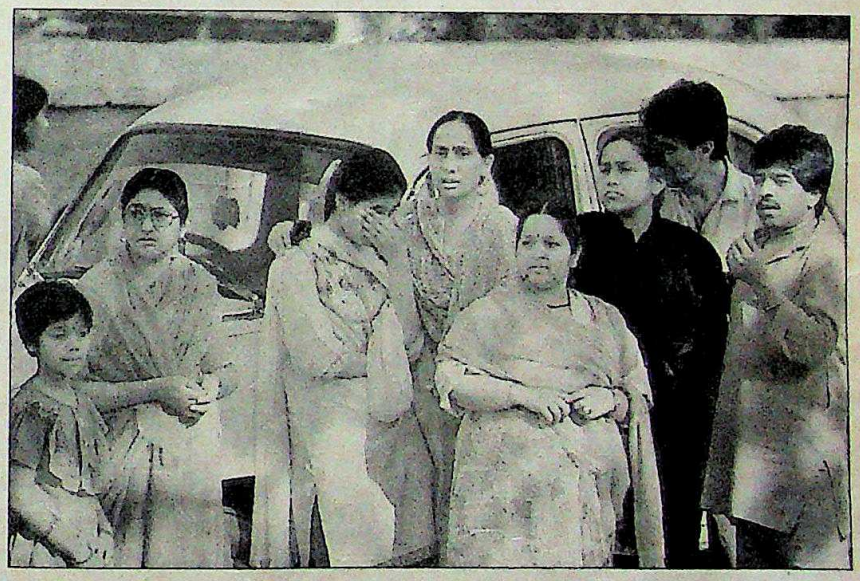

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है. दोपहर का भोजन भी प्रशासन की ओर से वहीं दिया जाता है. भोजन की व्यवस्था जम्मू-कश्मीर पर्यटन विकास निगम के जिम्मे है.

सचिवालय तक जाने वाली सभी सड़कों को शाम से पहले सील कर दिया जाता है. पूरे भवन पर कड़ी निगरानी रखी जाती है. और इसकी पांचों मंजिलों पर जासूसी कुत्ते छोड़ दिए जाते हैं. बसों को सचिवालय के सामने निर्माणाधीन विधानसभा भवन के अहाते में ही खड़ा किया जाता है. भवन के अंदर ब्रीफकेस या बैग आदि ले जाने की इजाजत नहीं है. बाहर के व्यक्तियों को, जिनमें ज्यादातर समाचार माध्यमों के प्रतिनिधि होते हैं, कड़ी जांच के बाद ही अंदर जाने दिया जाता है.

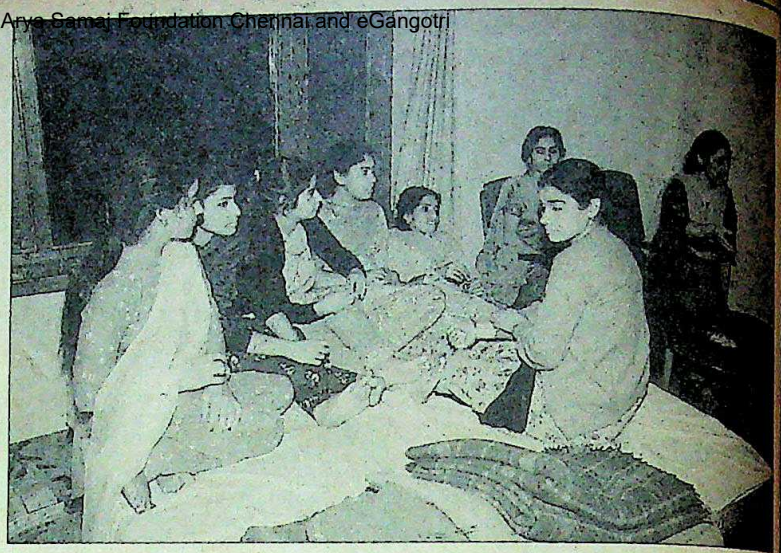

श्रीनगर के एक होटल के कमरे में ठहराई गईं महिला सरकारी कर्मचारी

प्रशासन ने सचिवालय को श्रीनगर लाने में सफलता तो पा ली है पर कर्मचारी हमेशा सुरक्षा के साये में नहीं रह सकते

शाम चार बजे फिर कवायद शुरू हो जाती है. बसें हिंदू कर्मचारियों को उनके होस्टल पहुंचा देती हैं, जहां वे अगली सुबह नौ बजे तक के लिए 'कैद' हो जाते हैं. यहां अंदर जाने से पहले उन्हें मेटल डिटेक्टर से गुजरना पड़ता है, रजिस्टर में दस्तखत कर अपने परिचय पत्र का नंबर भरना पड़ता है. भोजन उनके कमरों में ही पहुंचा दिया जाता है. उनसे मिलने यदि कोई आता है तो वे राज्य के वरिष्ठ अधिकारी ही होते हैं, जो यह जांचने आते हैं कि कर्मचारियों को कोई असुविधा तो नहीं है, कि सुरक्षा गार्ड अपनी ड्यूटी पर चौकस हैं या नहीं.

लेकिन इन कर्मचारियों को खतरा भी कम नहीं है. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी बताते हैं, "एक भी व्यक्ति का अपहरण कर लिया गया, या किसी को मार दिया गया तो सभी कर्मचारी जम्मू भाग जाएंगे." वैसे सुरक्षा बलों ने सुरक्षा के हर संभव इंतजाम कर दिए हैं. यहां तक कि कर्मचारियों को हर समय बाल्टी में पानी भरकर रखने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि आग लगने पर काम आ सके.

दफ्तरों को दोबारा खोलकर और अपने कर्मचारियों को वहां सुरक्षित पहुंचाकर प्रशासन ने उग्रवादियों के खिलाफ लड़ाई का यह दौर तो जीत ही लिया है. लेकिन ये कर्मचारी कब तक सुरक्षा अधिकारियों की कड़ी चौकसी और उग्रवादियों के आतंक तले कैदियों की तरह काम करते रहेंगे?

कई कश्मीरी पंडित तो काम पर पहुंचने के अगले दिन से ही जम्मू लौटने की बात कर रहे हैं. कई के माता-पिता ने तो उन्हें इसी आश्वासन पर भेजा है कि हाजिरी लगाने के बाद वे छुट्टी लेकर लौट आएंगे. लेकिन सरकार आखिर कितने कर्मचारियों को छुट्टी दे सकती है. अर्चना और दिलीप खारू जैसे कितने ही लोग हैं जो कहते हैं कि वे जम्मू चले जाएंगे, भले ही नौकरी से हाथ धोना पड़े. पंडितों में एक भी सरकारी कर्मचारी ऐसा नहीं है जिसका परिवार घाटी छोड़कर न गया हो. पिंकी खाबरी का यह वक्तव्य सारे कश्मीरी पंडितों की हालत का खुलासा कर देता है, "जब हमारी संपत्ति ही सुरक्षित नहीं है, तो हमारा जीवन किस तरह सुरक्षित हो सकता है."

श्रीनगर में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक में राज्यपाल जगमोहन

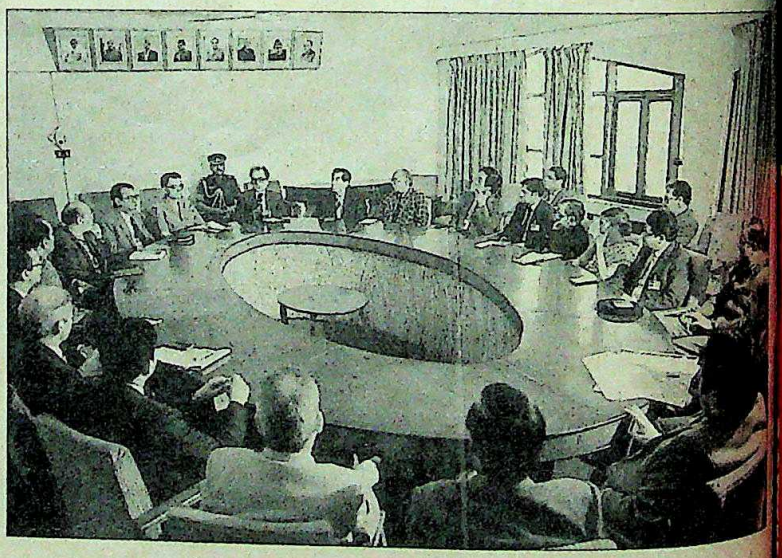

राजधानी श्रीनगर में पहुंच जाने से अब सरकार छह महीने तक कसौटी पर रहेगी. लेकिन राज्यपाल इतने आशवस्त हैं कि दरबार कूच को राज्य में सामान्य स्थिति बहाल करने के दौर की शुरुआत हुई मानते हैं. वे कहते हैं, "हमारा काम शांत रहकर मौजूदा चुनौती का मुकाबला करना है." यह एक बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि उग्रवादी तत्व राज्य-व्यवस्था से भिड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

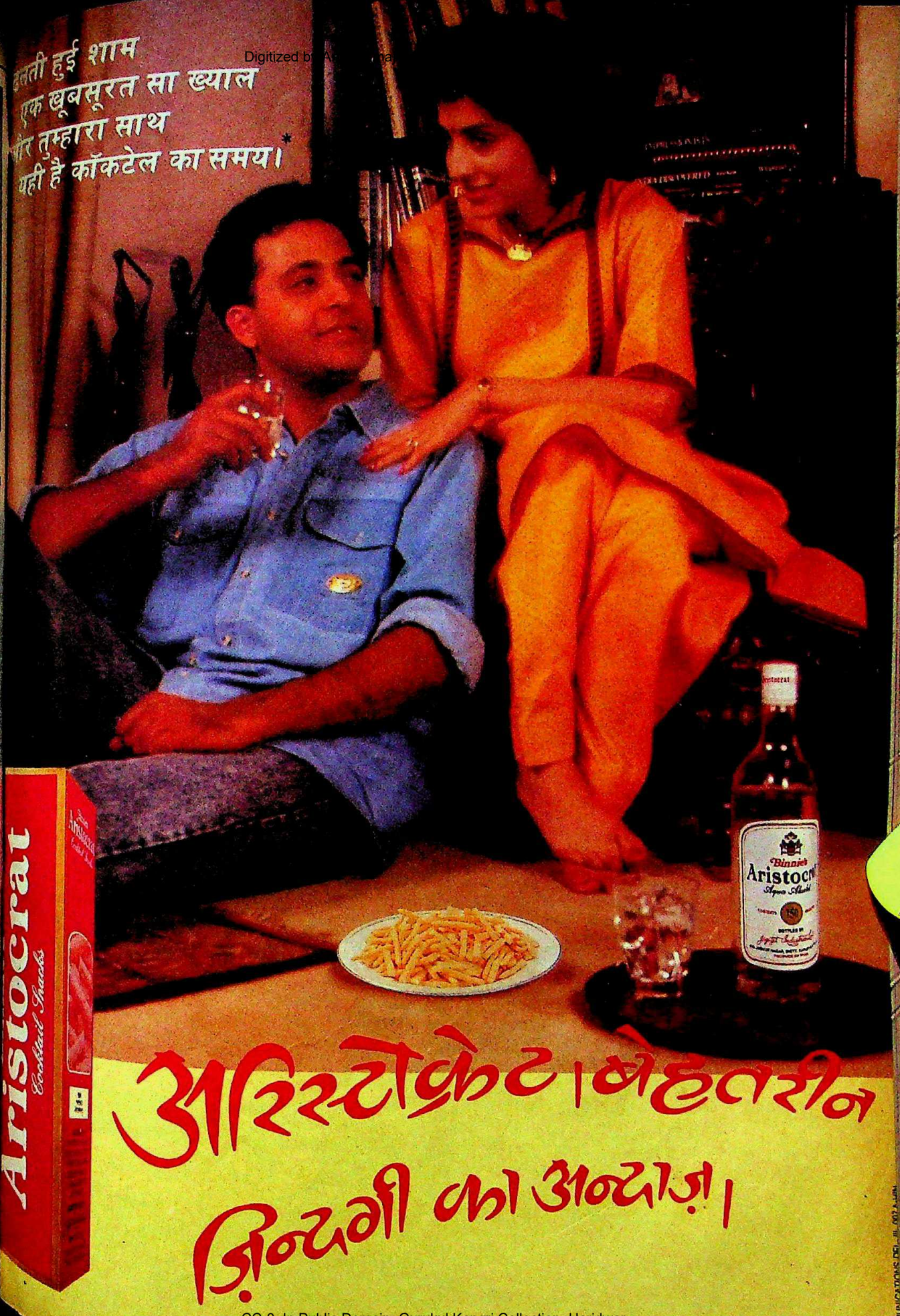

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

*कॉकटेल : खास अॅपेटायजर के रूप में अन्नमिश्रण...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

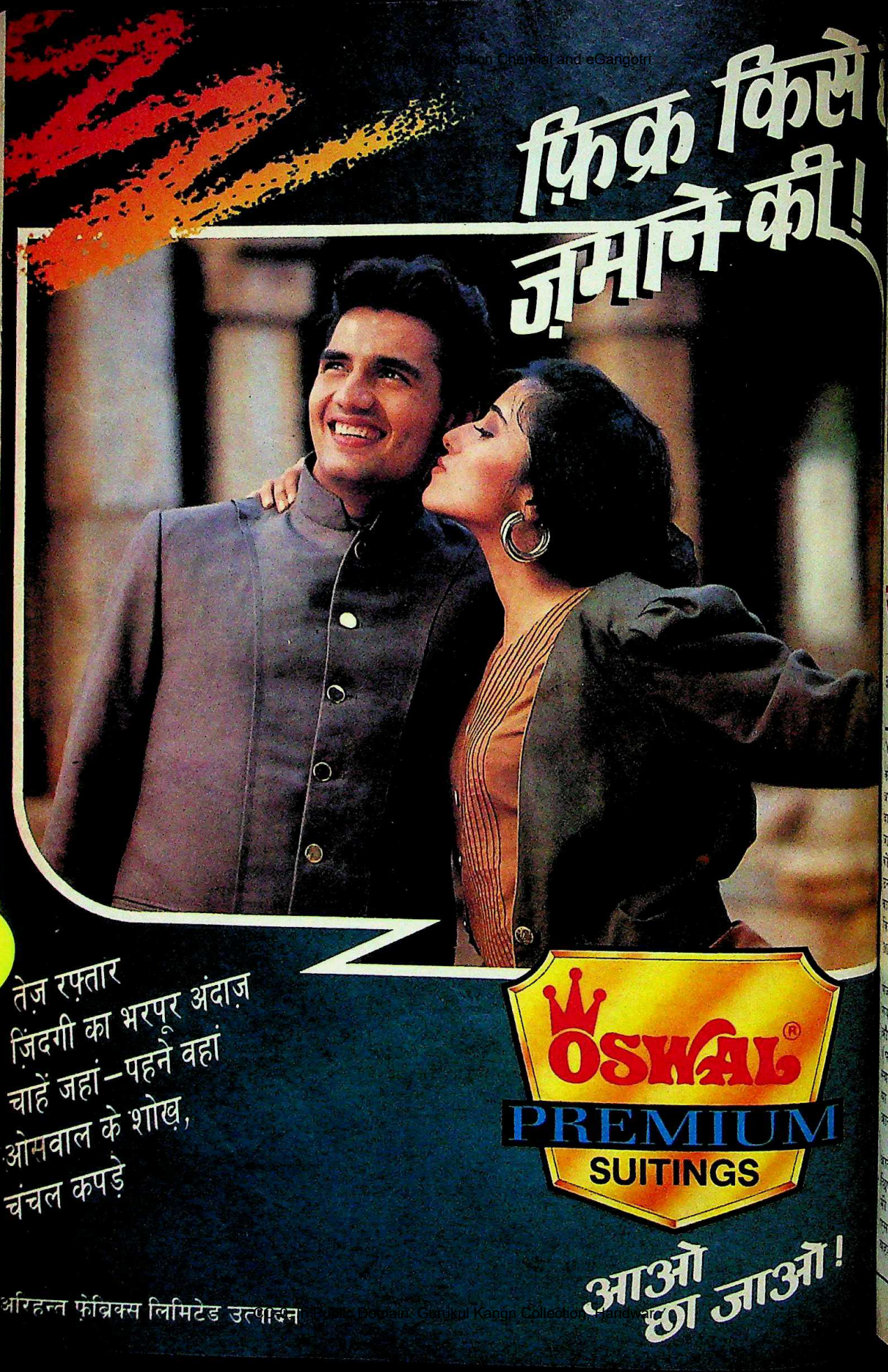

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

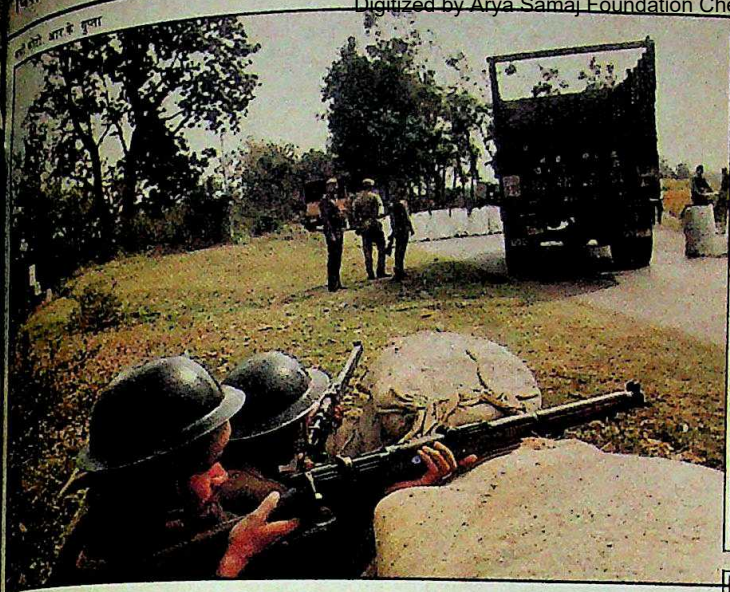

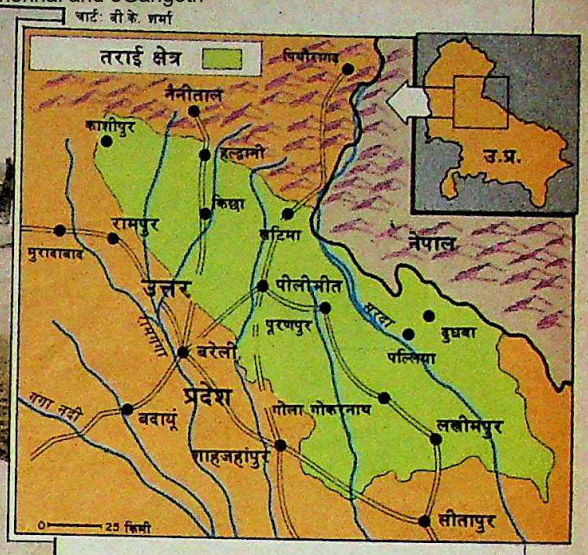

तराई क्षेत्र

बमों-बंदूकों के लिए नई जमीन की तलाश

आतंकवादियों के कारण सिख किसान परेशान

उत्तर प्रदेश के उत्तर में हिमालय की तराई का क्षेत्र मनोरम तो है ही, काफी उपजाऊ भी है. कृषि ही यहां की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है. पांच जिलों वाले इस तराई क्षेत्र को 'मिनी पंजाब' कहा जाता है क्योंकि सिखों के पास इस इलाके की खेती वाली 60 फीसदी जमीन है और उनकी आबादी भी करीब 15 फीसदी है. रुद्रपुर, काशीपुर, खटिमा, पलिया और किच्छा जैसे शहरों में तो उनकी आबादी 30 से 40 फीसदी तक है.

और शायद इसी कारण यह क्षेत्र आज पंजाब के आतंकवादियों की शरणस्थली बन गया है. हिमालय के पहाड़ों के घने जंगल और एक-एक दो-दो किमी पर बनी 'झालें' (फार्म हाउस) उनके लिए आदर्श आश्रय-स्थल बन गए हैं. इतना ही नहीं, सहानुभूति के डर के कारण स्थानीय सिख किसान इन आतंकवादियों को शरण भी दे देते हैं.

इसमें भी खतरनाक बात यह है कि आतंकवादी अब तराई को सिर्फ अपने छिपने की जगह ही नहीं, अपना कार्यक्षेत्र भी बनाने लगे हैं. नैनीताल रेंज के डीआईजी एम. एम. नसीम कहते हैं, "पंजाब के बाहर, यहां भी अपनी गतिविधियां बढ़ाकर वे सरकार पर दबाव बनाना चाहते हैं."

दिसंबर 1989 से लेकर मार्च 1990 के बीच आतंकवादियों ने पीलीभीत इलाके में करीब आधा दर्जन वारदातों में एके-47 का इस्तेमाल करके यह जता दिया कि वे यहां अड्डा जमा चुके हैं और अपनी गतिविधियां शुरू कर चुके हैं.

पिछले पखवाड़े आतंकवादियों ने स्थानीय सिख परिवारों के पांच लोगों को मौत के घाट उतार दिया क्योंकि उन पर पुलिस की मुखबिरी करने का शक था. इन मृतकों में चार महिलाएं थीं. ये हत्याएं पीलीभीत में तीन वारदातों में की गईं, जहां पुलिस ने इधर कई छापों में भारी मात्रा में हथियार बरामद की है.

तराई क्षेत्र में कुछ हाल की घटनाएं इस प्रकार हैं. .

► 6 फरवरी को हल्द्वानी के लक्ष्मी टाकीज में हुए बम विस्फोट ने 6 लोगों की जान ले ली और 64 को घायल कर दिया.

► 12 मार्च को मोटरसाइकिल पर सवार तीन आतंकवादियों ने उस सिपाही को एके-47 से गोलियां दागकर मार दिया जिसने हल्द्वानी-रुद्रपुर मार्ग पर उन्हें रुकने का इशारा किया था.

हल्द्वानी-रुद्रपुर रोड पर पुलिस चौकियां; और (ऊपर) पूरनपुर में जब्त रॉकेट और रॉकेट लांचर

इन तीन में से एक आतंकवादी रेशम सिंह था जिस पर 25,000 रु. का इनाम घोषित है. अक्तूबर 1988 से ही वह बेरिया गांव में रह रहा था और डॉ. वीर सिंह नाम से उसने एक क्लिनिक भी खोल रखी थी. इस क्लिनिक की जांच करने पर पता चला कि वहां रखे स्ट्रेचर के नीचे एक सुरंग बनी हुई थी.

► 25 मार्च को काशीपुर के एक सिनेमाघर में बम फटा जिसमें आठ लोग मरे और 12 घायल हो गए. पुलिस को संदेह है कि यह रेशम सिंह गिरोह की करतूत थी.

► अभी हाल में आतंकवादियों ने काशीपुर में 75,000 रु. लूट लिए.

► 13 अप्रैल को हथियारबंद आतंकवादियों ने रिचुआरा गांव के एक फार्महाउस पर हमला करके इसके मालिक पूरन सिंह और उनकी पत्नी को मार डाला, और पर्ची छोड़ गए कि ये हत्याएं इसलिए की गईं क्योंकि यह दंपती पुलिस का मुखबिर था.

► 17 अप्रैल को बिलसेंडा में कश्मीर सिंह के 'झाला' पर हमला किया गया. जवाबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तराई में आतंकवादियों से जूझने में पुलिस अक्षम दिखती है और इस कारण तराई क्षेत्र के सिख किसान भयभीत और असहाय हैं

गोलीबारी में कश्मीर सिंह का साथी बाकर सिंह मारा गया.

► 12 अप्रैल को इसी गिरोह ने बाकर सिंह के दामाद अजायब सिंह की हत्या कर दी. इन वारदातों के बाद पुलिस ने मौके से एके-47 की गोलियों के खोल बरामद किए.

तराई का इलाका जिस तरह का है और यहां जितनी संख्या में सिख किसान बसे हैं, उसके कारण पुलिस और प्रशासन को आतंकवाद विरोधी रणनीति बनाने में मुश्किल हो रही है. फार्मों में रहने वाले सिख परिवारों के दरवाजे पर देर रात गए दस्तक होना और 'सिख बंदे आए ने' की आवाज आना आम बात हो गई हैं ऐसे अधिकांश लोग आतंकवादियों को डर के मारे ही शरण देते हैं लेकिन पुलिस कहती है कि अनेक सिख किसान ऐसे हैं जो चाहते हैं कि आतंकवादियों का पंजाब से सटे एक और इलाके में अपना अड्डा बन जाए.

ये बातें संकेत देती हैं कि स्थिति कितनी विस्फोटक हो गई है. हाल में जब एक पुलिस टुकड़ी ने पीलीभीत तहसील के पूरनपुर से 10 किमी दूर दुधिया खुर्द रेलवे स्टेशन के पास एक ट्रैक्टर ट्रेलर को रोकना चाहा तो इसमें बैठे लोगों ने अंदर से गोलियां चला दीं और वे ट्रैक्टर छोड़कर भाग गए. इस ट्रैक्टर के मालिक, पूरनपुर के किसान सुखविंदर सिंह ने पुलिस को 25,000 रुपए घूस देने की पेशकश की तो पुलिस को शक हुआ. सो, ट्रैक्टर ट्रेलर की ठीक से जांच की गई तो उसमें आग्नेयास्त्रों से भरा एक बक्सा मिला.

पुलिस ने सुखविंदर और उसके बेटे को आतंकवादियों से मेलजोल रखने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया. छानबीन से पता चला कि कुख्यात आतंकवादी दर्शन सिंह घोड़ा, जो अपने को भिंडरांवाले टाइगर फोर्स का जनरल बताता है, इस बक्से को एक ट्रक में लादकर पंजाब से ले आया था और उसने सुखविंदर से ट्रैक्टर लिया था.

घोड़ा गिरोह इस इलाके में अपनी गतिविधियों के लिए कुख्यात है. पिछले साल सितंबर में गोला गोकरणनाथ स्थित भारतीय स्टेट बैंक को घोड़ा के नेतृत्व वाले गिरोह ने ही लूटा था. इस घटना में बैंक का गार्ड मारा गया था. पुलिस के अनुसार इस बक्से में घोड़ा रॉकेट समेत नए हथियार भरकर लाया था.

नवीनतम हथियारों और संचार सुविधा के अभाव में पुलिस इस नई चुनौती का ठीक से सामना कर पाने में असमर्थ है. अभी तक उसे बहुत थोड़ी सफलता मिली है और वह कुछ ही कुख्यात आतंकवादियों को पकड़ पाई है. लेकिन उनके बढ़ते आतंक को रोक पाने में वह असफल रही है. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी कहते हैं, "एके-47 राइफल के आधार पर ही हम साधारण अपराधी और आतंकवादियों में अंतर करते हैं. और जब आतंकवादी एके-47 से फायर कर देते हैं तब उनके पास जाने की हमारी हिम्मत नहीं होती क्योंकि हमारे पास इसका मुकाबला करने वाले हथियार नहीं हैं."

(ऊपर) ट्रैक्टर-ट्रॉली जिसमें हथियार मिले; जब्त हथियार; और (बाएं) क्षतिग्रस्त सिनेमाघर

अगर पुलिस को ये मुश्किलें आ रही हैं तो सिख किसान भी डरे और सहमे हैं. सेना के अवकाशप्राप्त कैप्टन जी.एस. रंधावा जिनका फार्म बाजपुर में है, कहते हैं "पुलिस के कामकाज और आतंकवादियों के हमलों के कारण हम दोयम दर्जे के नागरिक बनकर रह गए हैं. यह हालत पहले नहीं हुई थी." शायद ऐसा होना ही था. सुखविंदर पड़तालों के अनुसार निम्मा, सुक्खा और हरजिंदर सिंह जिंदा जैसे आतंकवादियों का किसी-न-किसी समय तराई क्षेत्र से निकट रहा है.

तराई में आतंकवाद विरोधी कार्रवाई की अगुआई करने वाले बरेली क्षेत्र के आईजी ए.पी. मिश्र कहते हैं, "हाल की वारदातें आतंक पैदा करने के लिए हुई हैं. वारदातें आतंकवादियों ने अपने को बचाने के लिए नहीं की हैं. जैसा कि वे पहले किया करते थे."

उनकी इस बात से चेतावनी की ध्वनि भी निकलती है. पुलिस इस नए खतरे से निबटने में अक्षम है, प्रशासन इसके राजनैतिक परिणामों की आशंका से परेशान है और स्थानीय लोग तनाव झेलने को मजबूर हैं. इन हालात में लगता है तराई में आतंकवाद की नई जमीन बनने जा रही है.

—दिलीप अवस्थी, तराई क्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

सात फेरों में फंसे बच्चे

20 हजार बाल विवाह हुए पर सरकार कुछ नहीं कर पाई

जयपुर से कोटा जाने वाले राजमार्ग पर सड़क से परे ढोल और मशक बाजा बज रहा है. एक अधेड़ ग्रामीण नाच रहा है. कई लोग उसे घेरकर देख रहे हैं. हल्ला हो रहा है. एक आठ साल का सजा-धजा लड़का भी उस गांववाले को नाचते देखकर मुग्ध हो रहा है. किनारे पर बनी एक थड़ी के पिछवाड़े गिलासों में भर-भर कर देसी शराब बांटी जा रही है.

दिन आखातीज का है और यह हंगामा भरा दृश्य एक बारात का है जिसका दूल्हा आठ वर्षीय रामलाल है. बारात रवाना होने में कुछ देर है. सड़क के दूसरी ओर पगडंडी खाल की तरफ उतर रही है. उसी पगडंडी पर कोई एक फर्लांग दूर एक कच्चे-पक्के से मकान के बरामदे में महिलाएं गीत गा रही हैं. बाहर सजावट का काम चल रहा है. कम उम्र की तीन लड़कियां एक साथ बैठी हैं. हाथों में मेंहदी लगी है. ये तीनों दुलहनें बन रही हैं. कुछ घंटों बाद उनकी शादी हो जाएगी.

अजमेर-दिल्ली सड़क पर बगरू के पास एक जीप में दो दूल्हे फैलीराम और नाथू बैठे हैं. फैलीराम छह साल का है और नाथू करीब आठ साल का. उनके दो चचेरे हम-उम्र भाइयों की शादी भी उसी दिन है. जब दूल्हों से बातचीत हो रही होती है उसी दौरान एक युवक दौड़कर आता है, फैलीराम को चुप करने के लिए थप्पड़ मारता है. फिर पूछता है, "क्या काम है तुम्हें? आगे चलो, अपना रास्ता नापो. ज्यादा होशियार बनने की कोशिश मत करो. शादी हमारे यहां है. तुम्हें क्या करना है?"

सातवीं कक्षा में पढ़ रहे नरेंद्र को शहर से बुलाया गया. उसकी परीक्षा होने को है. लेकिन शादी के लिए दो दिन के लिए बुला लिया गया. उसकी होने वाली जीवनसंगिनी कमला पांच साल से ऊपर की है लेकिन पढ़ती नहीं. नरेंद्र से शादी के बारे में पूछने पर वह हंसने लगता है और फिर दौड़ जाता है अपने दोस्तों के पास, जो गुल्ली-डंडा का खेल खेलने में व्यस्त हैं.

चाकसू कस्बे के पास एक गांव में भौरी, कमला, गौरी और शांति चारों बहनों की एक साथ शादी आखातीज को हुई. इनमें से शांति ने तो अभी बोलना भी नहीं शुरू किया. बारात उनके घर पहुंच गई और मां की गोदी में चढ़ी शांति लड्डू खा रही थी तथा और लेने के लिए मचल रही थी. उस शादी में आए हरिनारायण का कहना था, "जल्दी शादी कर देने से खर्च कम आता है और फिर मां-बाप अपनी बेटी का बुरा थोड़े ही चाहते हैं."

थूणी गांव में 'प्रगतिवादी' सामाजिक कार्यकर्ता शिवकुमार मौजूद हैं. वे यहां एक रिश्तेदार के बच्चों की शादी में हिस्सा लेने आए हैं. दोनों लड़कों की उम्र सात साल से कम ही होगी. शिवकुमार अपनी झेंप मिटाते हुए कहते हैं, "अब हम क्या कर सकते हैं? यहां की परंपरा ही ऐसी है. यदि इनको मना करो तो पूरे गांव का विरोध सहन करना पड़ेगा."

पूरे राजस्थान में खासतौर से आखातीज यानी अक्षय तृतीया के दिन ऐसे हजारों दृश्य दिखाई पड़ते हैं. एक अनुमान के अनुसार उस दिन करीब बीस हजार विवाह ऐसे हुए जिनमें दूल्हे-दुलहन दूध पीते, अंगूठे चूसते बच्चों से लेकर दस बारह साल

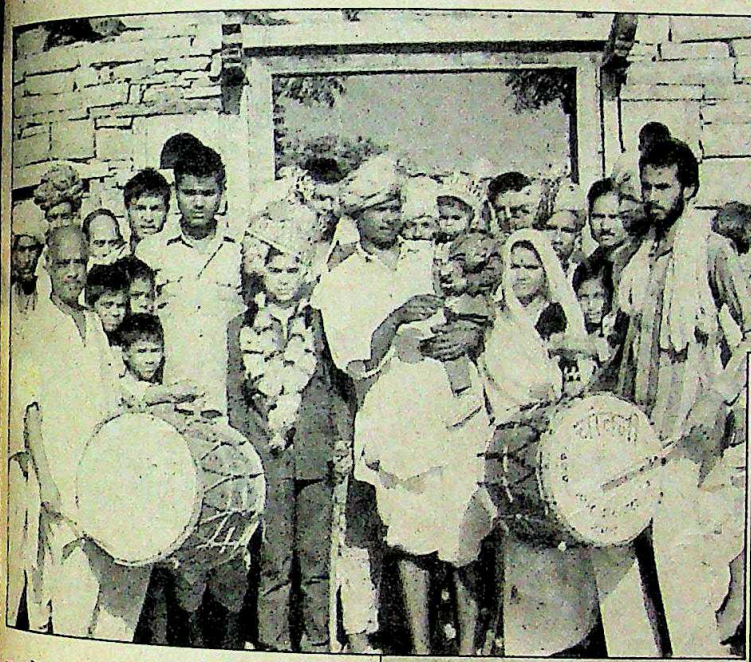

बारात की विदाई, दूल्हा गोद में (बाएं) ; आखातीज पर विवाह (नीचे)

एक अनुमान के अनुसार आखातीज के दिन करीब बीस हजार विवाह ऐसे हुए जिनमें दूल्हे-दुलहन दूध पीते, अंगूठे चूसते बच्चों की उम्र के थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के थे. यानी बाल विवाह का अपराध यहां हर बार सार्वजनिक तौर पर किया जाता है. बाल विवाह समर्थक लोगों का मानना है कि बड़े-बूढ़ों के सामने घर के जितने मांगलिक कार्य हो जाएं अच्छा है. फिर आखातीज ऐसा दिन है जब मुहूर्त नहीं निकलवाना पड़ता और गण मिलवाए बिना ही शादी की जा सकती है. भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री घनश्याम तिवाड़ी कहते हैं, "बाल विवाह तो 'कच्ची' शादी होती है. 'पक्की' शादी तो गौना करने के बाद ही होती है." उनकी राय में यह आर्थिक और सामाजिक पहलुओं से जुड़ी बुराई है जिसे आसानी से खत्म नहीं किया जा सकता.

इस वर्ष भी प्रदेश में आखातीज पर बड़े पैमाने पर बाल विवाह हुए और सरकार मूक दर्शक बनी रही. नवजात कन्या हत्याकांड और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विपक्ष में रहकर लंबी लड़ाई लड़ने वाली पुष्पा जैन अब महिला और बाल पोषाहार की कैबिनेट मंत्री हैं. वे कहती हैं, "इस बुराई पर कानून के सहारे काबू पाना मुश्किल लगता है. यह कन्या वध या सती प्रथा जैसा मामला नहीं है. जरूरी है लोगों को समझाना." उनका सुझाव है कि बाल विवाह न करने वालों को सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाना चाहिए. जैन बताती हैं कि इस प्रथा को रोकने की शुरुआत उन्होंने अपने गृह जिले पाली से की. "मैं आखातीज से पहले पाली गई थी. वहां ग्रामीणों का सम्मेलन बुलाया जिसमें बाल विवाह के नुकसान तो बताए ही, साथ में उन्हें ऐसा न करने पर सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित करने का भी वचन दिया." लेकिन ऐसे इक्का-दुक्का प्रयासों से इस बुराई पर अंकुश लगाना संभव नहीं. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रामदास अग्रवाल कहते हैं, "इसे रोकना न तो अकेले सरकार के बस में है, न संगठन के. इसके लिए सबको लड़ाई लड़नी होगी."

पर सवाल यह है कि यह लड़ाई कौन लड़ेगा? 1929 में बाल विवाह निरोध अधिनियम बन गया था. इसके अनुसार 18 साल से कम उम्र के लड़के को बालक और 14 वर्ष से कम उम्र की लड़की को बालिका माना गया था, फिर 1949 में इसमें संशोधन करके बालिका की न्यूनतम आयु 14 वर्ष से बढ़ाकर 15 वर्ष कर दी गई. जनसंख्या में निरंतर बढ़ोतरी के कारण इस न्यूनतम आयु को भी कम समझा जाने लगा और 1978 में फिर इसमें संशोधन किया गया. उसके बाद विवाह के लिए बालिका की न्यूनतम आयु 18 वर्ष व बालक की 21 वर्ष मानी गई. 1937 में ही न्यायालयों ने अपने निर्णयों में तय किया कि किसी भी समाज की किसी रूढ़िगत प्रथा का सहारा अधिनियम से बचने के लिए नहीं लिया जा सकता.

कानून बनने के साठ साल बाद भी बाल विवाह को नहीं रोका जा सका है और यह अपराध गांव के अनपढ़ लोग ही नहीं शहरी, पढ़े-लिखे व राजनेता भी करते हैं. राजस्थान के दो मंत्रियों को अपनी संतानों का बाल विवाह करने के कारण ही कुर्सी तक छोड़नी पड़ गई थी.

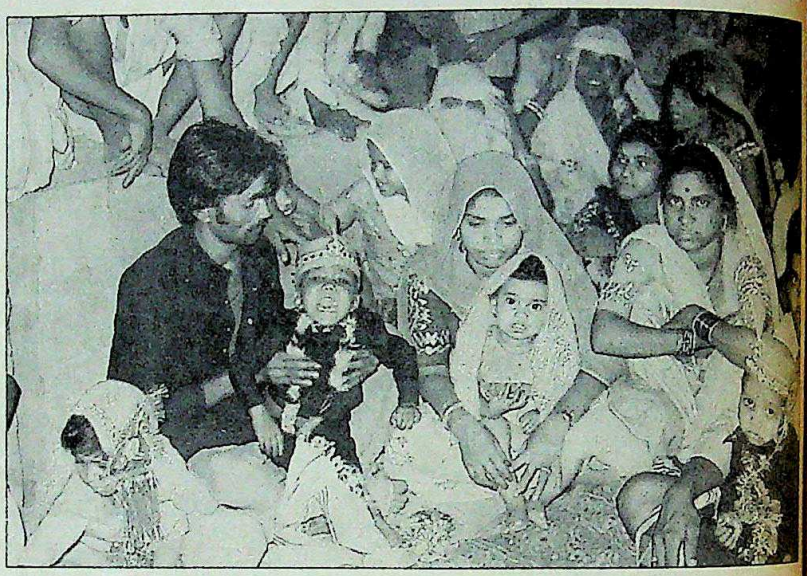

गोद में बैठे दूल्हा-दुलहन, और एक दुलहन खेल में व्यस्त

बाल विवाह का दूसरा पक्ष यह भी है कि इससे कम उम्र में मां बनने के कारण मां और बच्चों की मृत्यु दर बढ़ी तथा जन्म दर में भी वृद्धि हुई. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट हेल्थ ऐंड रिसर्च की रिपोर्ट के मुताबिक राजस्थान में हर साल एक करोड़ 27 लाख बच्चे पैदा होते हैं. इनमें से दस लाख 38 हजार बच्चे अपनी पहली साल-गिरह भी नहीं देख पाते. पहले साल में मरने वाले बच्चों में से 10 लाख 21 हजार गांवों में पैदा होते हैं. ऐसे बच्चों की प्रति हजार माताओं में 144 औरतें वे होती हैं जिनकी शादी 18 साल से कम उम्र में हो जाती है. रिपोर्ट का कहना है कि अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की मृत्यु दर साक्षर महिलाओं के मुकाबले ढाई गुना ज्यादा होती है. इसी तरह 18 साल से कम उम्र में शादी होने वाली लड़कियों में से 65 प्रतिशत स्कूल छोड़ देती हैं और सिर्फ 6 प्रतिशत उनमें साक्षर होती हैं.

इस साल आखातीज पर हुए बाल विवाहों के बारे में एक महिला संगठन की संयोजक कहती हैं, "हमें नई सरकार से उम्मीद थी कि इस मामले में कुछ कठोर कदम उठाएगी लेकिन वह हाथ पर हाथ धरे बैठी देखती रही."

समाज कल्याण विभाग के एक आला अफसर का कहना है कि मौजूदा कानून से इसे नहीं रोका जा सकता. एक तो पुलिस बिना शिकायत दर्ज हुए मौके पर बाल विवाह नहीं रुकवा सकती. शिकायत दर्ज होने पर मजिस्ट्रेट से इजाजत लेकर ही ऐसा किया जाना संभव है. फिर मामला दर्ज होने पर भी कठोर दंड का प्रावधान नहीं होने से कोई भय नहीं रहता.

सरल कानून, सामाजिक परंपरा, अशिक्षा और आर्थिक पिछड़ापन जैसे बहाने सरकार के पास भले ही हों लेकिन चित्तौड़गढ़ के नरेंद्र कुमार को इन सबकी कोई परवाह नहीं है. प्रतापगढ़ कस्बे के 8 वर्षीय नरेंद्र ने अपने पिता द्वारा जबरदस्ती शादी करने के खिलाफ एक पोस्टकार्ड लिखकर शिकायत कर दी.

उप जिला मजिस्ट्रेट हीरालाल कुमावत ने बताया कि रामपुरिया स्कूल की आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले नरेंद्र की शिकायत पर उसके पिता धनजी मीणा को बुलाया गया. उनसे शपथपत्र लिखवाया गया कि "जब तक मेरा पुत्र बालिग नहीं हो जाएगा तब तक मैं उसकी शादी नहीं करूंगा." कुमावत ने बताया कि जिस नाबालिग लड़की से नरेंद्र की शादी की जा रही थी उसके माता-पिता को भी हिदायत दे दी गई है लड़की के बालिग होने तक उसकी शादी न की जाए.

इस तरह की जागरूकता और सख्ती के बिना राजस्थान को इस बुराई से शायद ही कभी मुक्ति मिले.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९८७ - ८८

रेमण्ड सीमेंट ने हासिल किया सर्वोत्तम
ऊर्जा बचत के लिए नेशनल एवॉर्ड.

१९८७ - ८८

रेमण्ड सीमेंट ने हासिल किया
गौरवशाली नेशनल प्रोडक्टिविटी एवॉर्ड.

१९८८ - ८९

रेमण्ड सीमेंट ने एक बार फिर जीत लिया!

१९८८-८९ के लिए नेशनल प्रोडक्टिविटी एवॉर्ड.

हमारे सभी कर्मचारियों, विक्रेताओं, वितरकों और संतुष्ट ग्राहकों का हार्दिक आभार! क्योंकि बिना आप सबके सतत सहयोग एवं उत्साह के हमारे लिए ये पुरस्कार जीतना मुश्किल ही नहीं, असंभव था. तो आइए, मिलकर हम एक ही लक्ष्य यानी उत्कृष्टता की खोज का दृढ़ संकल्प करें!

रेमण्ड
सीमेंट वर्क्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने वीडिओकोन वाशिंग मशीन इसलिए खरीदी क्योंकि इसकी क्वालिटी विश्व स्तर की है. और साथ में है एक और सुविधा, उत्तम सर्विस की".

माइक्रो-कम्प्यूटर आधारित ऑटोमेटिक वाशिंग मशीन वी-एन ए-८११

V-NA-9

विशेषताएं : • वाश लोड क्षमता–४ कि.ग्रा. • स्टार्ट करने के बाद आपको इसकी ओर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं • वाश प्रोग्रामों में चुनाव की सुविधा/स्ट्रॉंग, जैण्टल, स्पीडी, नॉर्मल • मैल पर कठोर, कपड़ों पर एकदम कोमल • कम्बल, दरियां, कालीन आदि धो सकती है • फैब्रिक सॉफ्टनर के प्रयोग की सुविधा • विशेष ब्लीच इनलेट • निकले धागों आदि को एकत्र करने के लिए लिण्ट फिल्टर • १०० % सुरक्षित • दो साल की वारण्टी • जानी-मानी, तुरत आफ्टर सेल्स सर्विस • दो रंगों में उपलब्ध.

ट्विन टब वाशिंग मशीन, स्पिन ड्रायर के साथ, वी-एन ए-२०० टी.

विशेषताएं : • वाश लोड क्षमता–३ कि.ग्रा. सूखे कपड़े • थर्मल फ्यूज़ वाली सुदृढ़, शक्तिशाली मोटर • १०० % सुरक्षा के लिए ऑटोमेटिक शट ऑफ • बेहतर धुलाई के लिए उल्टे क्रम का भी मोटर एक्शन • शीघ्र और एक से कपड़े सुखाने के लिए स्पिन ड्रायर • अधिक बेहतर तरह से निचोड़ने के लिए स्पिन ड्रायर के प्रयोग की विशेष सुविधा • आपके घर में उपलब्ध स्थान के मुताबिक बायें या दायें, दोनों ओर से पानी के बहाव की सुविधा • मैल पर कठोर और सभी तरह के कपड़ों पर एकदम कोमल, बटन वगैरह न टूटें • बिजली का ख़र्च बहुत कम और १०० % सुरक्षित • दो साल की वारण्टी • जानी-मानी, तुरत आफ्टर सेल्स सर्विस • तीन रंगों में उपलब्ध.

वीडिओकोन

वाशिंग मशीन

SJAS 3009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारजाह

रेगिस्तान में क्रिकेट की रौनक

प्रदीप मघानी

"क्या यह मजेदार नहीं है? यह क्रिकेट का मक्का है." वातानुकूलित बॉक्स में अपनी बेगम ज़रीन और परमेश्वर गोदरेज की बगल में बैठे हुए अभिनेता-निर्देशक संजय खां के लबों से ये शब्द तब फूट पड़ते हैं जब ऑस्ट्रेलेशिया कप पर पाकिस्तान को विजय दिलाने के लिए वसीम अकरम अपनी हैटट्रिक से ऑस्ट्रेलियाई पुछल्ले बल्लेबाजों को वापस पैवेलियन भेज रहे होते हैं. संजय के ये अल्फाज उस समय एकदम सही लगते हैं जब भीड़ पाकिस्तानी झंडे फहराती हुई पुरानी टोयोटा और चमचमाती बीएमडब्ल्यू में अपने घरों की ओर रवाना होती है या एलन बॉर्डर की ओर गेंद फेकने करने के लिए वकार यूनुस के दौड़ते समय भीड़ एकदम खामोश हो जाती है.

विशुद्धतावादी और परंपरावादी लोग शायद आज भी लार्ड्स को क्रिकेट का मक्का मानते हों, भले ही उसका वैभव मंद पड़ गया हो और वह अवकाशप्राप्त अंग्रेजों के मन बहलाने का मैदान भर रह गया हो, लेकिन हकीकत तो यह है कि आज अगर क्रिकेट लोकप्रिय है तो एकदिवसीय क्रिकेट के रोमांच के कारण. और कैरी पैकर के बाद के युग में इस तरह के क्रिकेट के लिए अब्दुल रहमान बुखातिर ने जितना किया है, उतना और किसी न नहीं किया. किसी समय रेगिस्तान में क्रिकेट टूर्नामेंट कराने की उनकी योजना को खयाली पुलाव कहकर खारिज कर दिया गया था. लेकिन आज आलम यह है कि बुखातिर की क्रिकेटर्स बेनिफिट फंड सिरीज (सीबीएफएस) मान्यताप्राप्त संस्था है और इसके द्वारा आमंत्रित होने के लिए क्रिकेट बोर्ड एक-दूसरे से होड़ लगाते हैं. सीबीएफएस के संयोजक और पूर्व पाकिस्तानी कप्तान आसिफ इकबाल कहते हैं, "केवल समाचार जगत और रेडियो प्रसारणों ने हमें यह झूठा विश्वास करना सिखा दिया कि इग्लैंड विश्व क्रिकेट का केंद्र है." शारजाह में नियमित रूप से आमंत्रित किए जाने वाले सुनील गावसकर कहते हैं, "हमें यह विश्वास करना सिखाया गया है कि इंग्लैंड की सारी घटनाएं दुनिया की बेहतरीन घटनाएं होती हैं लेकिन आज दूसरी जगहों पर होने वाले खेलों में बेहतर सुविधाएं मिलती हैं, बेहतर

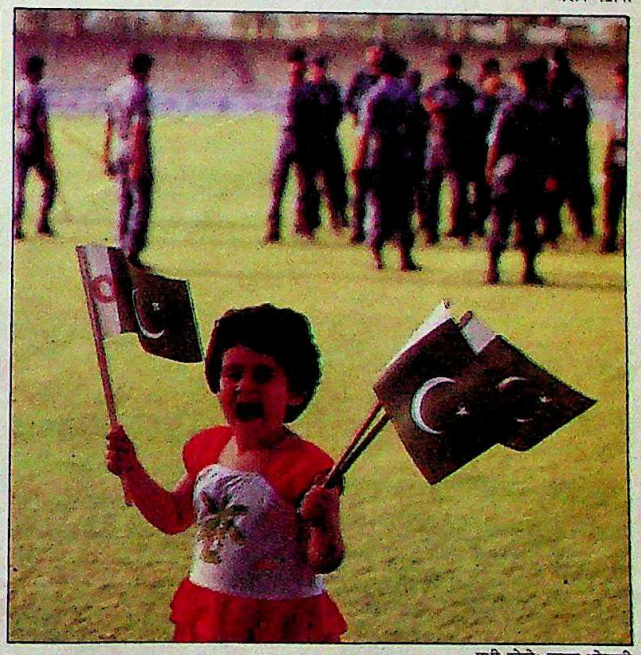

सभी फोटो: नामस भोजानी

एक युवा पाकिस्तानी खेलप्रेमी; और (ऊपर) समापन समारोह के पहले: चमक-दमक और घटिया नारेबाजी

भारत-पाकिस्तान की दुश्मनी शारजाह भी पहुंच गई है और माहौल पाक समर्थक होने से भारतीयों पर दबाव बना रहता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार राशि मिलती है और बेहतर खेल-शर्तें होती हैं.''

शारजाह-दुबई के हलकों में होने का मतलब है स्टेडियम के मेंबर्स स्टैंड में होना, अन्यथा आप घर बैठे टीवी पर मैच का मजा ले सकते हैं. फिल्मी कलाकारों, व्यवसायियों और राजनीतिकों के इस स्टैंड में एक सीट की कीमत 1,600 दिरहम (8,000 रु.) है. लेकिन येन केन प्रकारेण मैच देखने कौन आता है? इस उपमहाद्वीप के फैशन के अनुरूप, मेंबर्स स्टैंड में बैठने वालों का व्यवहार उजड्ड होता है. रंगीन तबीयत के लोग एक ऐसे टोप के लिए 5 दिरहम देने में नहीं हिचकते जो रेसकोर्स में बैठी किसी महिला पर ही फबता है.

शारजाह में अगर कुछ मायने रखता है तो वह है शोर. यहां भड़कीले कपड़े पहनना और अनोखे फिकरे कसना आम बात है. शास्त्री जब गेंदबाजी करने आए तो कोई चिल्लाया, ''वह देखो, घोड़ा आया.'' उन्होंने जब कसी हुई गेंदबाजी करके अपने आलोचकों का मुंह बंद कर दिया तो एक महिला ने दूसरी महिला से पूछा, ''क्या रीतू ने उसे कुछ पढ़ा दिया है?'' लेकिन इमरान खां के बारे में हर कोई इतना उत्तेजित नहीं है. तफरीह के वक्त इमरान को काली चड्डी और बनियान में देखकर एक पाकिस्तानी महिला शिकायत करती है, ''पाकिस्तानी और मुसलमान होने के कारण इमरान को चड्डी पहनकर नहीं घूमना चाहिए.''

मेंबर्स स्टैंड खूबसूरत महिलाओं से भरा होता है और टीवी कैमरा वहां के ग्लेमर को परदे पर उतारने में कंजूसी नहीं करता. यह इस ग्लेमर का ही जादू है कि 8,000 रु. के टिकट भी बिक जाते हैं. सिमी ग्रेवाल मार्शनील गावसकर के साथ बैठी हैं जबकि अचकन पहने हुए गोल-मटोल कपूर बंधु राज कपूर जैसा सम्मान पाने की उम्मीद में इधर-उधर घूम रहे हैं. अंजू महेंद्रू यहां नियमित आने वालों में से हैं. इस बार प्रमुख आमंत्रित लोगों में बेनज़ीर भुट्टो के पोलो खिलाड़ी पति आसिफ ज़रदारी भी थे.

शारजाह में तीन वर्ग विभाजन हर जगह देखा जा सकता है. चुनींदा लोगों के लिए वातानुकूलित बॉक्स और दानदाताओं के लिए विशेष बॉक्स बने हुए हैं. इन पर इन दाताओं की नाम वाली पीतल के प्लेटें लगी हैं. एक प्लेट पर तो बंबई के माफिया दाऊद इब्राहीम, का, जो अब दुबई में रहता है, नाम खुदा हुआ है. इन बॉक्सों में टेलीविजन सेट लगे हुए हैं. टी-शर्ट तथा जींस पहनी हुई सेक्सी फिलीपीनी महिलाएं यहां चाय सप्लाई करती हैं, जबकि गोल-मटोल अंग्रेज लड़कियां रॉथमैंस सिगरेट बेचती हैं.

दस साल पहले इस तरह के दृश्यों की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी. आसिफ इकबाल कहते हैं, ''गावसकर इलेवन बनाम मियांदाद इलेवन मैच के लिए जब हम यहां 1981 की पहली सुबह आए तो हम इस बात को लेकर चिंतित थे कि कोई मैच देखने भी आएगा या नहीं. लेकिन जब हमने लोगों की लंबी कतारें देखीं तो बड़ा ताज्जुब हुआ.''

आज शारजाह उत्तेजना और रोमांच का मरुद्यान बन गया है और उसने एक दिवसीय क्रिकेट के ऐसे लमहे पैदा किए हैं जिन्हें भूले नहीं भुलाया जा सकता. मसलन तीन साल पहले प्रथम ऑस्ट्रेलेशिया कप जीतने के लिए मियांदाद का चेतन शर्मा की अंतिम गेंद पर छक्का लगाना, 125 रन पर आउट हो जाने के बाद भारत का पाकिस्तान को 87 रन पर समेट देना, वसीम अकरम की हैट-ट्रिक, पिछले पखवाड़े रणतुंगा द्वारा ताबड़तोड़ बल्लेबाजी कर भारत की निश्चित जीत को हार में बदल देना, वकार यूनुस का सनसनी-खेज तरीके से उभरना आदि को कभी नहीं भुलाया जा सकता.

रेगिस्तान में क्रिकेट कितना लोकप्रिय है, इसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि जापान की, जहां क्रिकेट में कोई दिलचस्पी नहीं है, सान्यो जैसी कंपनी ने ऑस्ट्रेलेशिया कप की मुख्य प्रायोजक होने के लिए 2,50,000 डॉलर की बोली लगाई

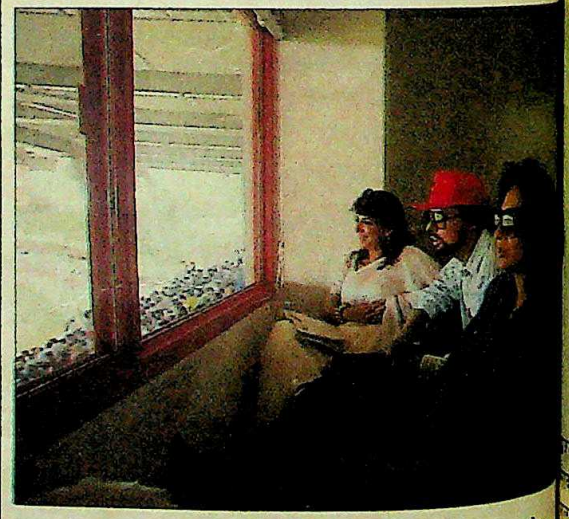

(ऊपर) सिमी व मार्शनील गावसकर; शर्मिला; और (नीचे) जरीन, संजय खां व परमेश्वर गोदरेज: आनंदित

शारजाह में चमक-दमक तो बहुत है लेकिन यहां भौंडापन और 'वर्ग विभाजन' तीखा है. शोर-शराबा भी बेहिसाब है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही निर्णय का

अन्दरूनी राज़

जब त्वचा की सुरक्षा का है, तो अन्दरूनी बरतने में ही समझदारी है। गलत निर्णय आपके लिये परेशानी का कारण बन सकता है। इसलिये रूपा फ्रन्टलाइन ही खरीदिये और निश्चित रहिये। भारतीय जलवायु के उपयुक्त, अत्याधुनिक तकनीक से बना रूपा फ्रन्टलाइन आपकी त्वचा को बराबर आराम देता है।

शतप्रतिशत सुती धागे से बना। इसकी उत्कृष्ट फिनिश रेशम सी कोमलता का अहसास दिलाये। फिटिंग पूर्णतः आरामदायक। इम्पोर्टेड रबर से बना इलास्टिक। निराले रंगो में उपलब्ध। इन्हीं सब खूबियों के कारण रूपा फ्रन्टलाइन सही निर्णय लेने में आपका सहायक होता है।

RUPA®

Frontline

BRIEFS

और अब—
नई रुपा फ्रन्टलाइन गंजी भी
स्ट्रेचिंग कलर में!

फ्रन्ट ओपन की स्पेशल सुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

DPS/BH-889

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(विजेता को 30,000 डॉलर और उप-विजेता को 20,000 डॉलर मिले). सान्यो का उद्देश्य: भारत और पाकिस्तान में अपने माल को लोकप्रिय बनाना. एक स्टैंड कोकाकोला के नाम से था. शेल ने सबसे तेज 50 रन बनाने के लिए 2,500 डॉलर का पुरस्कार रखा था. एगफा ने एक लॉटरी प्रायोजित की जिसके पुरस्कारों में होंडा कारें भी शामिल थीं. भला सटोरिए क्यों पीछे रहते. उन्होंने भी भारत-पाकिस्तान के मैच पर भारी दांव लगाए.

क्रिकेट खिलाड़ियों को शारजाह खूब भाता है. यहां उनके स्वागत-सत्कार में कोई कोताही नहीं बरती जाती और उन्हें अपनी पत्नियों के साथ घूमने के लिए वैतनिक छुट्टी दी जाती है. और फिर बगल के दुबई में बाजार करने का अपना अलग आकर्षण होता है भारतीय टीम ने अपमानजनक तरीके से प्रतियोगिता से बाहर होने के बाद जमकर खरीदारी की और दावतें उड़ाई. एअर इंडिया की दावत में आए मेहमानों में सिमी ग्रेवाल भी थीं जिनके भावपूर्ण हिंदी फिल्मी गानों को सुनकर बुखातिर और एअर इंडिया के बॉस राजन जेटली झूम उठे. खालिद अंसारी के घर हुई विशेष दावत में गावसकर ने क्रिकेट के दिलचस्प किस्से सुनाए.

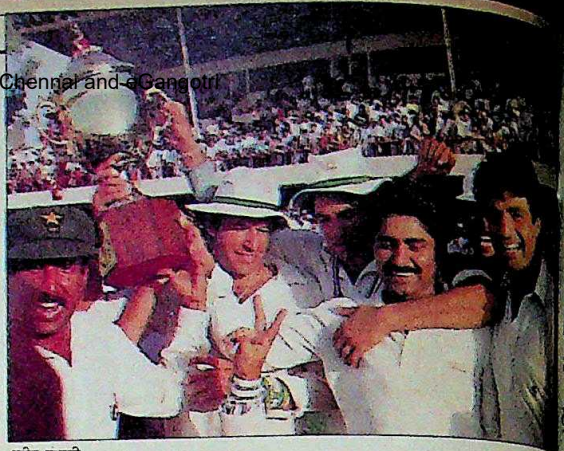

प्रदीप मधानी

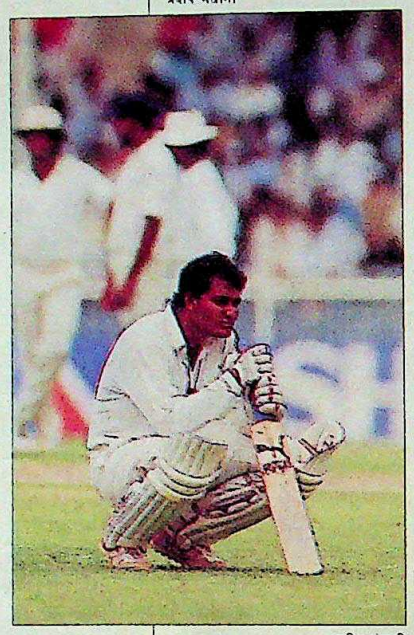

प्रदीप मधानी

पाकिस्तान के नए नवाब नईम बुखारी ने तो शारजाह के हॉलीडे इंटरनेशनल में हुए विशिष्ट रात्रिभोज को अंधराष्ट्रीयता की शाम में तब्दील कर सारा मजा खराब कर दिया.

शारजाह में मनबहलाव का दूसरा साधन शॉपिंग था. वहां पहली बार खेलने वाले सचिन तेंडुलकर और अजय जाडेजा ने रीबॉन जूते खरीदे जबकि चतुर व चुस्त पुराने क्रिकेट खिलाड़ियों ने जाने-पहचाने दुकानदारों से इलेक्ट्रॉनिक सामान.

यहां फिकरे भी खूब कसे गए. पाकिस्तान के खिलाफ जब कोई भारतीय बल्लेबाज बल्लेबाजी करने जाता था तो यह घटिया नारा गूंजने लगता था, "आउट हो भाई आउट हो, जल्दी जल्दी आउट हो." और जब भारत की दस्तूरी हार एकदम करीब आ गई तो किशोरों ने यह गाना शुरू कर दिया, "ये टीम किसकी है, हर मैच में हारी है? ये टीम इंडिया की है, हर मैच में हारी है."

शारजाह में जब भी भारत और पाकिस्तान के बीच मैच होता है वहां रहने वाले भारतीयों पर भारी दबाव आ पड़ता है. भारतीय व्यवसायी राजेश सजनाणी कहते हैं, "जब वे (पाकिस्तानी) हमें हरा देते हैं तो चारों ओर ऐसे सीना फुलाए घूमते हैं गोया उन्होंने पूरी दुनिया ही जीत ली हो."

इन सबके बावजूद तटस्थ देश में तटस्थ अंपायरों वाले क्रिकेट के अपने लाभ हैं. टैक्सी चालक गुल अहमद कहते हैं, "यदि ये दोनों भारत या पाकिस्तान में एक-दूसरे से खेल रहे होते तो खून-खराबा और शोर-शराबा हो जाता." बुखातिर कहते हैं, "क्या आप इसे बड़ी उपलब्धि नहीं मानते कि आज के माहौल में दोनों देशों का मैच बिना किसी विशेष घटना के संपन्न हो गया?"

स्थानीय डर्बी (जैसा कि ऑस्ट्रेलियाई कप्तान एलन बॉर्डर कहते हैं) भारत-पाकिस्तान का मैच है. हालांकि संयुक्त अरब अमीरात में अंग्रेजों की खासी आबादी है. लेकिन वे यहां के क्रिकेट में रुचि नहीं लेते. एक स्थानीय निवासी कहते हैं, "अंग्रेज स्नूकर (बिलियर्ड टेबल का खेल), दमखम वाली दौड़, गोल्फ और दूसरे खेलों में हिस्सा लेते हैं. वे अपने को कुलीन समझते हैं और क्रिकेट को भारतीयों और पाकिस्तानियों का खेल कहते हैं."

लेकिन इतना तो स्पष्ट है कि शारजाह की तरफ क्रिकेट जगत

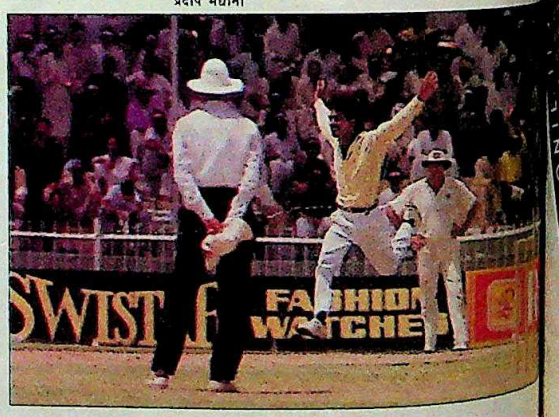

(ऊपर) ट्रॉफी के साथ पाकिस्तानी; अजहरुद्दीन; चड्डी पहने इमरान खां; और खुशी से झूमता एक दर्शक

यहां क्रिकेट की लोकप्रियता को देखते हुए जापानी कंपनी सान्यो ने भी प्रायोजक बनने के लिए 2,50,000 डॉलर की बोली लगाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयूर सूटिंग्स की पेशकश, पवोनी. रेडी टू वियर हरेक अदा इटेलियन अदा.

स्टाइल. बस दिखावा नहीं. एक परंपरा जिसे मिला है एक नया नाम, पवोनी. लिबास... फ़ैशन में ऐसे ढलें, आपके व्यक्तित्व की तस्वीर बनें. देखिए एक-एक अदा. स्प्लिट योक्स, फ्रॉन्टलेट बटन्स, बार टैकिंग. इतनी बारीकी, इतनी सूझ-बूझ कि फ़र्क साफ़ नज़र आए. आपकी पसंद का भी पूरा-पूरा ख्याल. शर्ट्स जिनमें हैं बटन्ड-डाउन या विंग टिप्स कॉलर्स. धारीदार, चैक या फ़ॉर्मल शर्ट्स. फ़ॉर्मल या प्लीट्स वाले बैगी ट्राउज़र्स. हर मौक़े, हर मूड के लिए. और उस पर फ़ैब्रिक. बेहतरीन पॉलिएस्टर ब्लेंड और प्योर कॉटन. अब तैयार है वह लिबास जिसे कोई भी इटेलियन फ़ैशन का पारखी देखे, तो कहे... बेमिसाल.

Pavonie
फोर मैन
रेडी टू वियर
शर्ट्स • ट्राउज़र्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:A:RSW:5123 Hin. R.1

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की निगाहें जमी रहती हैं. आसिफ इकबाल कहते हैं, "सौभाग्यवश अब हमारी साख जम गई है और क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड अपने कार्यक्रम बनाते समय हमारा ध्यान रखते हैं. हमारे पास ऐसा केंद्र है जहां अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नियमित रूप से खेली जा सकती है. इसमें तटस्थता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है."

शारजाह और दुबई पर क्रिकेट का भूत सवार है. दुबई, शारजाह, अजमान और अबूधाबी में 176 क्रिकेट क्लब हैं. संयुक्त अरब अमीरात ने तो इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की सह-सदस्यता के लिए भी आवेदन कर दिया है. वकार यूनुस शारजाह के ही हैं. बंबई 'ए' डिवीजन के पूर्व खिलाड़ी रईज पूनावाला और रवि तुली मिडिल ईस्ट बैंक कप में अमीरात इलेवन की तरफ से खेलते हैं. बेदी कहते हैं, "यहां क्रिकेट बहुत लोकप्रिय है." पिछले पखवाड़े बेदी और बॉबी सिपसन ने दुबई में क्रिकेट की एक रूपरेखा बनाई.

बुखातिर और उनके सहयोगियों-समर्थकों ने जिस दृढ़ता से अविश्वसनीय काम कर दिखाया है, उससे यह चमत्कार भी संभव है. यह लगन का ही फल है. —**सलिल त्रिपाठी,** शारजाह और दुबई में

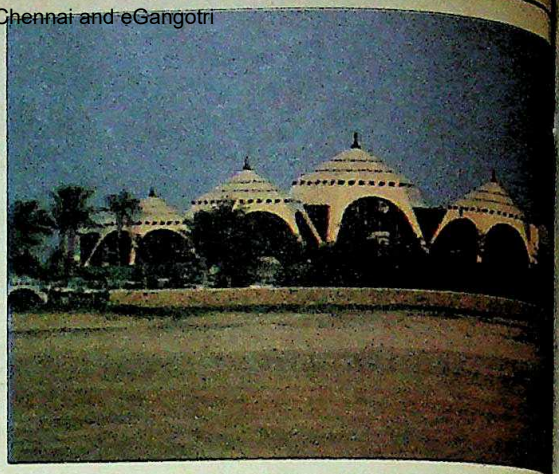

दुबई गोल्फ क्लब: रेगिस्तान का नखलिस्तान

ए.आर. बुखातिर

'शारजाह क्रिकेट का केंद्र है'

अब्दुल रहमान बुखातिर क्रिकेट खिलाड़ियों के ही दीवाने नहीं, उनके कई और धंधे भी हैं. वे जमीन-जायदाद, व्यापार, होटल और बैंकों के क्षेत्र में भी दखल रखते हैं. बुखातिर भारतीय उपमहाद्वीप के प्रति भी आकर्षित हैं. वे पाकिस्तान में पले-बढ़े और हिंदी फिल्मों के प्रेमी हैं. एक दशक से भी कम समय में उन्होंने अपनी सनक को लाखों डॉलर के धंधे में बदल दिया है.

साल में दो बार वे दुनिया की आला क्रिकेट टीमों को शारजाह आने का न्यौता देते हैं. खिलाड़ियों को इस कदर भरपूर इनाम दिया जाता है जिसकी पैकर से पहले के दौर में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी. मैचों के दौरान ही वरिष्ठ संवाददाता ***सलिल त्रिपाठी*** *की बुखातिर से हुई बातचीत के अंश:*

● ***सीबीएफएस की शुरुआत कैसे हुई?***

संयुक्त अरब अमीरात में बहुत से प्रवासी हैं. स्थानीय लोग अल्पसंख्यक हैं और वे फुटबाल को ही पसंद करते हैं. जब हमने पीआईए की टीम को न्यौता दिया तो लोग माजिद खां और मुदस्सर नजर को देखने के लिए टूट पड़े. फिर हमने सुनील गावसकर और आसिफ इकबाल से बात की जिसके बाद माधव मंत्री, आसिफ इकबाल और हनीफ मुहम्मद के सहायतार्थ पहला मैच हुआ. दर्शकों की भीड़ को देखकर हम हैरत में पड़ गए. तब हमने गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया.

● ***उपमहाद्वीप के बाहर की टीमें शारजाह आने पर कैसे सहमत हुईं?***

हम मैचों में एकरसता नहीं चाहते थे. लोग हेडली, बॉथम, क्लाइव लॉयड और विवियन रिचर्ड्स को देखना चाहते थे. पर दूरी और उनके अपने कार्यक्रम इस तरह के होते हैं कि वे हर बार उपलब्ध नहीं होते. फिर, भारत और पाकिस्तान इतने नजदीक हैं कि वे यहां आराम से आ सकते हैं. ऑस्ट्रेलिया की टीम सत्र के खत्म होने पर या इंग्लैंड जाते वक्त यहां आ सकती है.

● ***क्या आप भारतीय टीम के खेल से निराश हैं?***

हां. लेकिन यह बदकिस्मती ही है. कुछ विकेट तो महज संयोग से गिरे जैसे श्रीकांत का विकेट. पर असल फर्क वकार यूनुस की वजह से पड़ा.

● ***पाकिस्तान के मुकाबले में भारतीय टीम को यहां क्या दिक्कत पेश आती है?***

हम दोनों के दोस्त हैं. मुझे लगता है समस्या भारत की कप्तानी की है. पाकिस्तान में इमरान खां के उभरने से पहले कई कप्तान आए. भारत में गावसकर ठीक चल रहे थे पर अचानक ही उनकी जगह कपिल को दिया दिया गया. फिर कपिल की जगह कोई और आ गया. मुझे तेंडुलकर में काफी संभावनाएं दिखती हैं. कुछ अच्छे गेंदबाज आ जाएं तो भारतीय टीम के अच्छे दिन लौट आएंगे.

● ***खिलाड़ियों की सुरक्षा का मामला इस बार आपने कैसे निबटाया?***

अगर शारजाह की सरकार भाग लेने वाले सभी देशों को पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन न दे सके तो यह प्रतियोगिता नामुमकिन हो जाएगी.

● ***सुरक्षा व्यवस्था इतनी कड़ी क्यों?***

हम नहीं चाहते कि कोई अप्रिय घटना घटे. यहां बंदोबस्त पक्का होता है.

● ***क्या आप यहां भारत और पाकिस्तान का टेस्ट मैच करवाने की भी सोचते हैं?***

एकदिवसीय मैचों में कुछ अलग ही रोमांच होता है. भीड़ तो जुटाई जा सकती है पर एकदिवसीय मैच की उत्तेजना पैदा नहीं की जा सकती.

● ***आपको लगता है कि इंग्लैंड अब क्रिकेट का मक्का नहीं रहा?***

क्रिकेट अब पहले से कहीं ज्यादा अंतरराष्ट्रीय हो गया है. पहले काउंटी सत्र की वजह से इंग्लैंड इस खेल का केंद्र होता था. अब तीन चार टीमों के शामिल होने और क्रिकेट का मौसम इंग्लैंड की तुलना में बढ़ जाने से यही अंतरराष्ट्रीय केंद्र बन रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What did Sigmund Freud of Germany say to the Skypak Man?

"You move so fast... aren't you afraid of the Freudian slip?"

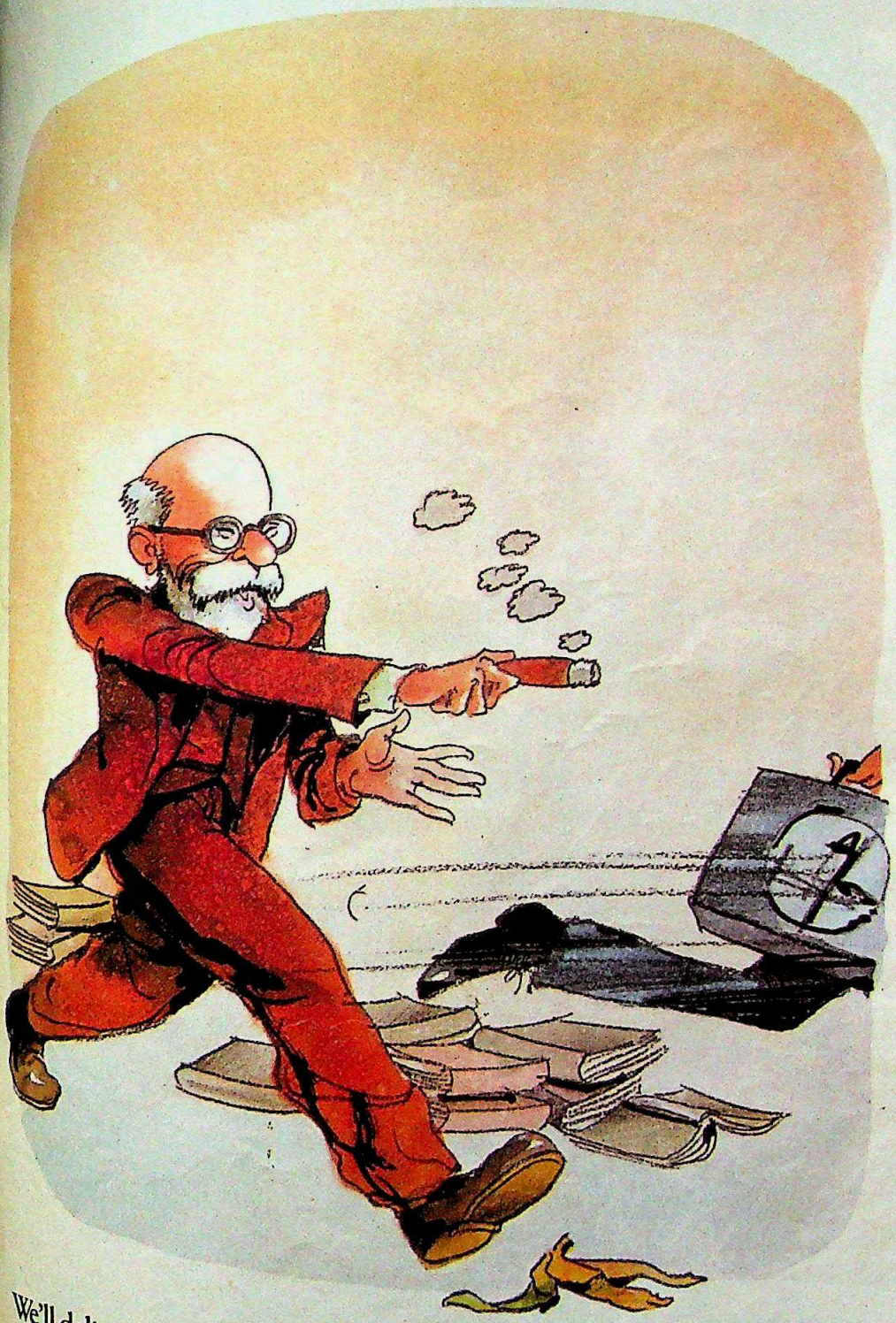

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues:SC:582:90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Rising Sun.
Across the Indian Horizon.

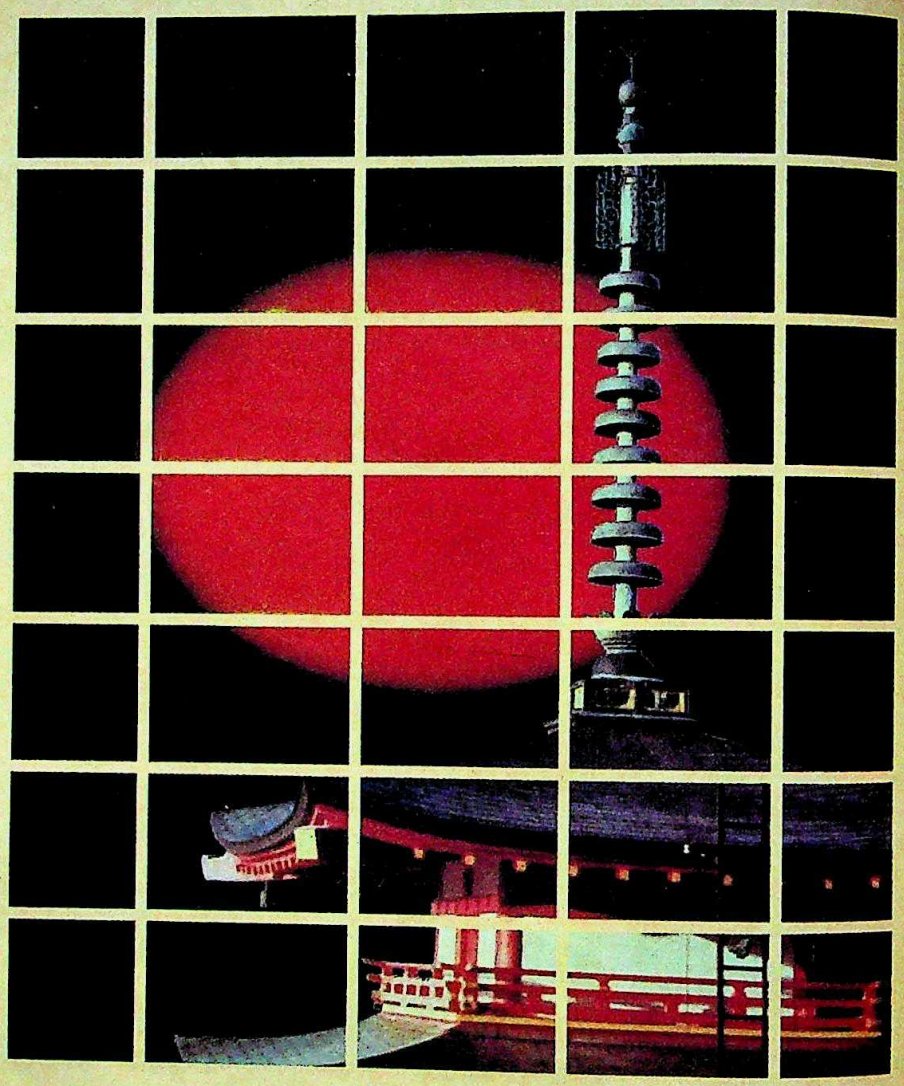

VIDEOCON
AIR CONDITIONERS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Introducing Videocon Air Conditioners.

Manufactured under D&D supply agreement with Matsushita Electric Company, Japan, the owners of brand name 'National'.

As the rising sun wakes you up this morning... you'll begin to see air conditioners in a new light.

The Videocon Air Conditioner. It reflects the world's most advanced technology. Japanese expertise that projects air conditioners in a class apart.

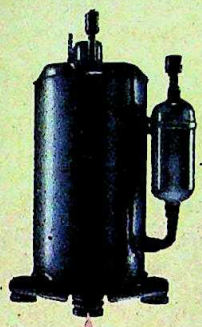

High Performance Rotary Compressor

It's what separates the Videocon Air Conditioner from all other air conditioners in India. A compressor so compact, with cooling efficiency that's at par with International Standards. At the same time the design is tough enough to withstand Indian tropical conditions.

Super Quiet Operation

The Videocon Air conditioner incorporates an ultra thin heat exchanger and specially designed sirocco fan, propeller fan, fan motor and rotary compressor. What's more, the rotary compressor is mounted on a vibration-absorbing rubber base and the entire air conditioner housed in heavy insulation.

All this gives you a whisper quiet operation.

High -Energy Efficiency Design

Engineered to operate on as little energy as possible, it can save on electricity bills. All this being possible due to the Louver Fins, Grooved Copper Tubing and the Rotary Compressor.

4-Way Air Deflection System

At the touch of a switch, you can control the air direction from side to side. While the louvers adjust the vertical air flow.

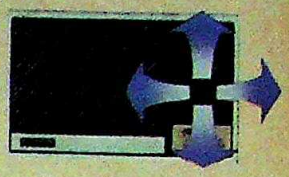

One Touch Air Filter

Quick, easy sliding of the filter, without removing the grill facilitates cleaning. You don't have to rely on a technician.

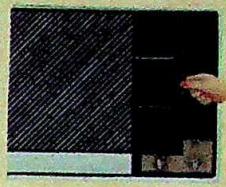

Super Service

The Videocon factory-trained technicians posted in every city can give you service that's most prompt and reliable.

So, if you're looking forward to technology most advanced, take a look at Videocon. The Air Conditioner that looks beyond the horizon. Thinks ahead of times.

Yes. I am impressed with the features of the Videocon Air Conditioner.
Please send me more information on the product.

Name: _____

Designation: _____

Organisation: _____

Address: _____

Mail Coupon to: **Videocon International Ltd.**
Post Box No. 11741.
Nariman Point, Bombay 400 021.

1.5 ton Air Conditioners in Ivory White and Wood Grain finish.

1 year warranty

Exceptional. Sensational. So National.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VIP BENZ

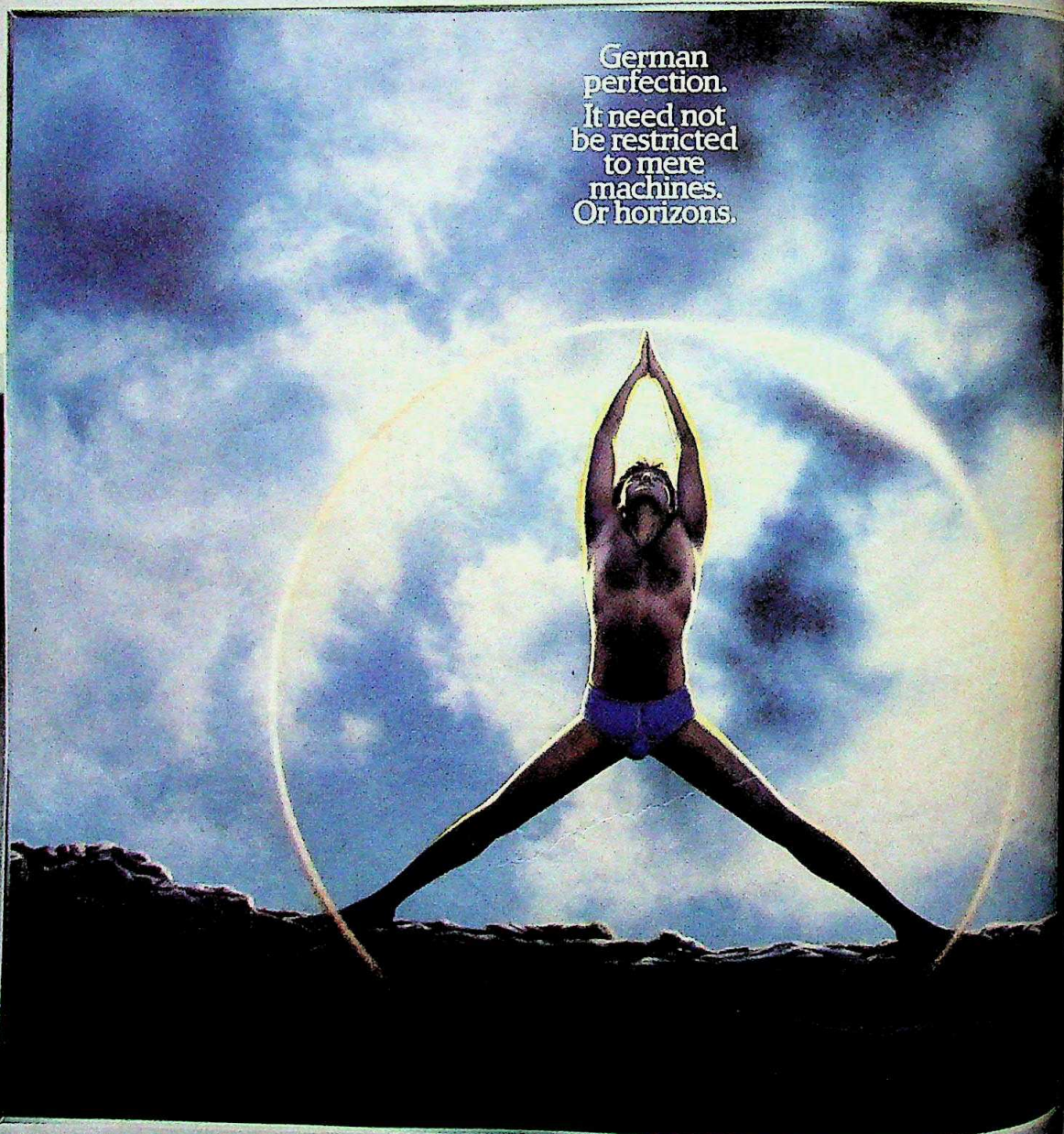

New VIP Benz steers a touch of German precision to men's underwear. You have the most comfortable stretchable fabric. And you have the most reliable imported rubber elastic. The rest is sheer styling. All perfect. All German.

VIP BENZ. Great mileage in comfort.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपदा के सफाए का संकट

पेड़ों की बेतहाशा कटाई से खूबसूरत वन उजाड़ होने के कगार पर

स्तर जिले का नाम आते ही मादक सौंदर्य वाले वनवासियों और घने वनों का चित्र दिमाग में कौंध जाता है. लेकिन आज यह तस्वीर गायब हो जाने का खतरा पैदा हो गया है. पिछले दो महीनों से अधिक समय से यहां के वनवासी जंगल की क्रूर और बेतहाशा कटाई में लगे हैं. इससे जिले की प्रचुर वन संपदा के सफाए का संकट खड़ा हो गया है. तीन तहसीलों— नारायणपुर, कोंडागांव और जगदलपुर में ही इन लोगों ने अब तक 20 करोड़ रु. मूल्य के पेड़ गिरा दिए हैं. बदतर तो यह है कि लड़की काटने के बाद जंगल में कहीं-कहीं आग भी लगा दी गई है.

इस समस्या की जड़ में भाजपा दल के नेता हैं. फरवरी में विधानसभा चुनाव के समय भाजपा के कुछ नेताओं ने वनवासियों को आश्वासन दिया था कि जिस जमीन से जंगल खत्म हो जाएगा होगा उसे वे वनवासियों को दिला देंगे. यह खबर जंगल में आग की तरह सभी वनवासियों के बीच फैल गई और उसका यह हश्र निकला. खेती की जमीन पाने के लिए वनवासी जंगल साफ करने लगे.

कोंडागांव तहसील के सदारी गांव के महादेव कहते हैं, "हम 17 लोगों ने करीब 50 एकड़ जमीन साफ कर दी है क्योंकि हमें खेती के लिए इसकी जरूरत है." भाजपा नेताओं के आश्वासन का वनवासियों ने यह मतलब निकाला कि जो आदमी जितनी जमीन साफ करेगा, उस पर उसी की मिल्कियत हो जाएगी.

लेकिन भाजपा नेता जंगल कटाई अभियान में अपनी किसी भागीदारी से इनकार करते हैं. वनवासी कल्याणमंत्री बलिराम कश्यप, जिनके चुनाव क्षेत्र में सबसे अधिक पेड़ कटे हैं, कहते हैं, "असल में कांग्रेसी ही वनवासियों को इस काम के लिए उकसा रहे हैं." लेकिन इसके साथ ही कश्यप जंगल की जमीन वनवासियों को देने की बात भी करते हैं. वे कहते हैं कि वन कानून में संशोधन के लिए राज्य सरकार को केंद्र से बातचीत करनी चाहिए."

वनों की अवैध कटाई समस्या का आकार भी स्पष्ट दिखने लगा है. युवक कांग्रेस के स्थानीय नेता सतीश तिवारी, जिन्होंने जंगल कटाई पर एक वीडियो फिल्म भी बनाई है, कहते हैं, "मैंने अब तक ऐसी घटना नहीं देखी थी."

वन विभाग ने जंगलों की अवैध कटाई के मामले में 200 वनवासियों के खिलाफ मुकदमा दायर किया है. सरकारी अनुमान के अनुसार करीब 21,000 पेड़ काटे गए हैं.

दुर्भाग्य से पर्यावरण के इतने बड़े संकट को भी सुंदरलाल पटवा सरकार बहुत ही ढीले-ढाले ढंग से निबटा रही है. कटाई रोकने के कदम उठाने के बदले उसने समस्या के अध्ययन के लिए एक समिति गठित कर दी है. वनमंत्री ननकीराम कंवर कहते हैं, "घटिया राजनीति, और चरित्रहनन के लिए ही दोषारोपण किए गए हैं."

लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा और इंका सांसद सुरेश पचौरी ने जब केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय से संपर्क किया तो उसने घटनास्थल पर अपना उच्चस्तरीय जांच दल भेजने का वादा किया. पचौरी कहते हैं, "यह कोई राजनैतिक मुद्दा नहीं है. हमारी मुख्य चिंता पर्यावरण को होने वाले दीर्घकालिक नुकसान की है." वोरा ने मसले की न्यायिक जांच के लिए राज्यपाल को ज्ञापन देने के साथ ही बाबा आमटे और सुंदरलाल बहुगुणा जैसे पर्यावरणवादियों को बस्तर आकर इस विनाश को रोकने का न्यौता दिया. दूसरी ओर कश्यप इंका पर आरोप लगाते हैं कि जब वह सत्ता में थी तो उसने समय रहते कोई कदम नही उठाया.

ऐसे आरोपों-प्रत्यारोपों के चलते वनवासी शब्दशः उसी डाल को काट रहे हैं जिस पर वे बैठे हैं.

—नरेंद्र कुमार सिंह

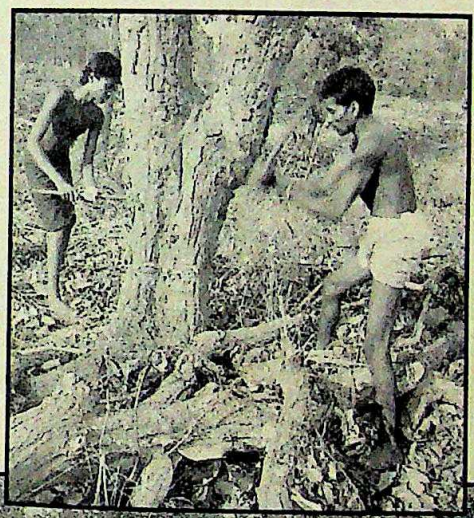

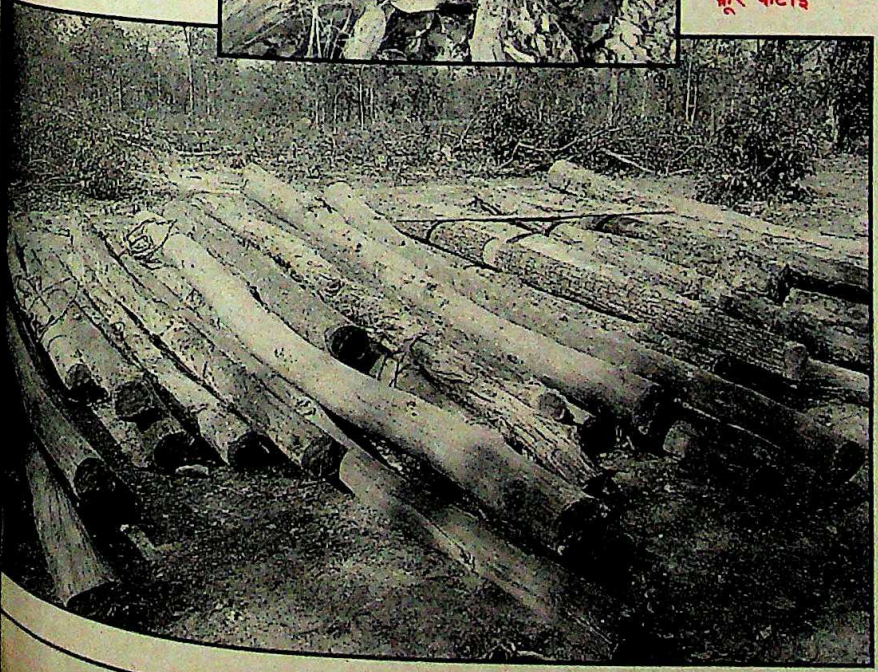

वनवासियों द्वारा काटे गए पेड़; और लकड़ी के ढेर (नीचे): क्रूर कटाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्से इस्लामाबाद के

शुरू-शुरू में हम इस्लामाबाद आए तो कुछ घबरा रहे थे. यों तो हम पहले भी कई बार वहां जा चुके हैं—एक बार जनरल ज़िया से मुलाकात करने और एक बार बेनज़ीर भुट्टो से. लेकिन तब हालात कुछ और थे. न बेनज़ीर प्रधानमंत्री थीं और न इस्लामाबाद हमारा ससुराल. ससुरालवाले कितने भी अच्छे हों, उनसे घबराना ही चाहिए. न जाने किस वक्त क्या कर बैठें.

पहले सब कुछ नया-नया लगा. हमें अपने तौर-तरीके सुधारने पड़े. नमस्ते की जगह हर एक को अस्सलाम-अलैकुम कहना पड़ा.

हमारे मियां को शिकायत है कि लोगों के नाम हम भूल जाते हैं. हमने कहा, "भई, हमें यहां के नाम बड़े अजीब लगते हैं. माफ करना, याद नहीं रहते." मियां साहब कुछ गुर्राकर बोले, "हां-हां, तुम्हें उपेंद्र, चट्टोपाध्याय, करुणानिधि और पार्थसारथि जैसे नाम याद रहते हैं. जुल्करनैन, गुज़नफ़र और काज़ी अब्दुल कुद्दूस क्यों याद रहेंगे."

लोगों से बातचीत करने में मुश्किल नहीं पड़ी. बस, जिस तरह हमें दूरदर्शन के समाचारों की हिंदी समझने में परेशानी होती है, उसी तरह यहां के टेलीविजन पर उर्दू खबरों में होती है.

हमें पूरा यकीन है कि पाकिस्तान की उर्दू किताबों का हिंदुस्तानी उर्दू में तर्जुमा करना पड़ेगा. वजह यह कि हम हिंदुस्तानियों ने उर्दू में हिंदी के बहुत से शब्द अपना लिए हैं. पाकिस्तानी उर्दू फारसी और अरबी की तरफ दौड़ रही है, आम बोलचाल की जबान नहीं है. सिर्फ अब हम अपने हर जुमले के बीच 'माशा अल्लाह' और 'इंशा अल्लाह' जरूर डाल देते हैं.

जबान और नामों के अलावा भी कई झटके लगे. घर संभाला तो देखा कि दूधवाला मोटरसाइकिल पर चला आ रहा है. नौकर को जरा डांट दिया तो साहब बर्तन पटककर चले गए. फकीर को टाला कि 'चेंज नहीं है' तो फौरन पांच सौ के नोट का छुट्टा दे दिया. यह तो है कि वहां गरीब आदमी इतना गरीब नहीं है. नौकर बड़ी मुश्किल से मिलते हैं. दस शर्तों पर काम करने के लिए राजी होते हैं. एक शर्त यह भी है कि टीवी पर ड्रामा चल रहा हो तो काम नहीं करेंगे और हां, खाने में गोश्त जरूर होना चाहिए, जो वहां 50 रु. किलो है.

शादी के बाद हमारी शख्सियत में एक इजाफा जरूर हुआ. हमें आटे-दाल का भाव मालूम हो गया.

गोश्त पर एक मजेदार किस्सा याद आया. यहां हफ्ते में दो दिन मीटलेस डेज (बिना गोश्त के दिन) होते हैं. उन दिनों बाजार में बकरे का गोश्त नहीं बिक सकता. हमने जिंदगी में पहली बार चिकन के सीख कबाब किसी होटल में मीटलेस डे पर खाए. पाकिस्तान में दाल फ्राई और दाल मक्खनी नाम की कोई चीज नहीं है.

> "जिस तरह दिल्ली सियासी गुफ्तगू का केंद्र है, उसी तरह इस्लामाबाद में कुछ और बात नहीं होती. अपने यहां 'हिंदू कार्ड' चलता है तो वहां 'सिंधी विकेट'. दिन के उजाले में यहां सियासत के अलावा कुछ होता नजर नहीं आता. शाम को दावतें खूब होती हैं"

कुछ अरसा पहले कराची में विपक्ष की हड़ताल थी जो कामयाब हुई. लेकिन जिस तरह हमारे दूरदर्शनवाले खबरों में हर हड़ताल को असफल बता देते हैं, उसी तरह का हश्र पाकिस्तान टीवी भी ऐसी खबरों का करता है. शाम की खबरों के अनुसार, सब काम हस्बेमामूल जारी रहा. मजे की बात यह कि उसने खबरों की क्लिप्स में लोगों को गोश्त खरीदते दिखाया. जी हां, पाकिस्तान में गोश्त खरीदना 'हस्बेमामूल' काम ही है.

जिस तरह दिल्ली सियासी गुफ्तगू का केंद्र है, उसी तरह इस्लामाबाद में कुछ और बात नहीं होती. अपने यहां 'हिंदू कार्ड' चलता है तो वहां 'सिंधी विकेट'. इस्लामाबाद मर्गला की पहाड़ियों से ढका खूबसूरत शहर है. यहां हरियाली है, आबादी कम है, आलीशान बंगले हैं. कोई ठेला नहीं, बस नहीं, कोई रेहड़ीवाले नहीं, स्कूटर-रिक्शा नहीं. पाकिस्तान के दूसरे और शहरों के मुकाबले इस्लामाबाद को एक अमन-चैन वाला शहर माना जा सकता है.

दिन के उजाले में यहां सियासत अलावा कुछ होता नजर नहीं आता. को यहां दावतें खूब होती हैं क्योंकि संगीत, नाटक, क्लब वगैरह नहीं हैं. लोग एक-दूसरे के यहां इकट्ठे होते रहते आजकल यहां नाच-पार्टियों का जोर है के एक कमरे में डिस्को बजता है शोरगुल और उछल-कूद मचती है. नाच पार्टी का हिट नंबर अपनी फिल्म का 'ओए-ओए' होता है, जिस सियासतदां, नौकरशाह और वजीर नाचने खड़े हो जाते हैं.

कबाब, संगीत और हुस्न के साथ शराब भी खूब बहती है. स्कॉच सबसे ज्यादा पाई जाती है 1,200 से 2,000 रु मिलती है. यह शराब अफगानिस्तान से आती है. राजनयिक के जरिए भी ब्लैक होती है राजनयिक अपने-अपने को तनख्वाह रुपए में शराब की शक्ल में देते मसलन, किसी नौकर की तनख्वाह एक बोतल, किसी दो बोतल.

हिंदुस्तान की तरह यहां लड़कियां पारंपरिक बंधनों तोड़कर आगे बढ़ती दिख हैं. लेकिन मौलवियों के असर की वजह अपने यहां की लड़कियों के हिसाब से पीछे हैं. लड़कियां अकेली नहीं रहती. के अलावा कोई चारा नहीं.

शादी यहां एक बार तो सभी कर लेते दो-तीन बार शादी करना कोई बड़ी नहीं. हमको तो याद ही नहीं रहता कि शादी किससे हुई थी, और किससे बच्चा है. हमारी एक सहेली आजकल बच्चे संभाल रही है. दो मियां की बीवी से, दो उनके पहले शौहर से, एक शौहर से और एक मौजूदा शौहर से

दावतों में हमारे मियां यही समझाते परेशान हो जाते हैं. "वह पहले इस दोस्त की बीवी थी, अब उस दोस्त बीवी है." कल मियां के एक दोस्त अपना दुखड़ा सुना रहे थे. बेटी को एक लड़का आया और आशिक हो उसकी अम्मा पर. अम्मा उस लड़के के भाग गई. बाकी किस्से फिर कभी

—सारिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनाइटेड®

माईक्रो ओवन की अपेक्षा 53% अधिक जल्दी पकाता है

प्रेशर कुकर व प्रेशर पॅन

उत्तमता में सब से आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसला

विष्णु प्रभाकर

हिंदी साहित्य की शायद ही कोई विधा ऐसी होगी जिसमें वयोवृद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की कलम ने अपनी सिद्धहस्तता न दिखाई हो. कहानी, उपन्यास, नाटक और दूसरे कई क्षेत्रों को उनकी लेखनी ने समृद्ध किया है. 'धरती अब भी घूम रही है', 'जिंदगी एक रिहर्सल' तथा 'इक्यावन कहानियां' जैसे संग्रहों के अलावा उन्होंने 'आवारा मसीहा' जैसा उच्च कोटि का उपन्यास भी प्रदान किया है. प्रस्तुत कहानी में उन्होंने न्याय के प्रति बदलते नजरिए को प्रतिबिंबित किया है.

वह एक नर्स थी, अपने व्यवसाय में प्रशिक्षित और दक्ष. वह किस देश की रहने वाली थी, उसका नाम क्या था? कौन सी भाषा बोलती थी वह? क्या यह सब जानने की जरूरत है? क्या इतना जान लेना ही यथेष्ट नहीं है कि वह एक औरत थी.

उस रात वह अपना काम समाप्त करके घर लौट रही थी. एक आकस्मिक और गंभीर ऑपरेशन के कारण वह कुछ थकी-थकी अवश्य लग रही थी परंतु अपने अंतर में वह इस बात से प्रसन्न भी थी कि ऑपरेशन सफल हुआ. घर पर गरम-गरम खाना और नरम बिस्तर उसकी राह देख रहे होंगे, इस विचार ने उसके पैरों में गति भर दी थी.

बीच-बीच में वह सहसा ऑपरेशन रूम में पहुंच जाती और उस युवक का दर्द से ऐंठता चेहरा उसकी आंखों में कौंध उठता. उसका आंत्रशोथ अंदर ही अंदर फट गया था और उससे होने वाले रक्तस्त्राव से उसका जीवन किसी भी समय समाप्त हो सकता था.

लेकिन डॉक्टर ने कुछ ही क्षणों में अपूर्व कुशलता के साथ आंत्रशोथ को काटकर बाहर निकाल दिया था और रक्तस्त्राव को रोक दिया था. वह अब खतरे से बाहर था. उसका चेहरा सोते हुए शिशु के समान शांत हो गया था...

वह फिर वर्तमान में लौटी, रात गहरा रही थी. ऊपर आसमान में मानो किसी ने दमकते श्वेत सितारे जड़ दिए थे. हवा में शरीर को चीर देने वाले शीत की आहट सुनाई दे रही थी. उसने कोट का कॉलर खड़ा करके गला ढंक लिया, और तेज-तेज चलने लगी. उसने किसी भूले हुए गीत की कोई कड़ी गुनगुनाने की सफल कोशिश भी की.

शहर अभी दूर था. बीच का इलाका लगभग सुनसान था. वह एक जाने-पहचाने पार्क को पार कर रही थी. वहां भी कोई आहट नहीं थी. दूर-दूर तक कोई भी प्राणी आता-जाता नहीं दिखाई दे रहा था. दो-तीन बार उसे ऐसा अवश्य लगा कि कोई उसका पीछा कर रहा है. वह सकपकाई. मुड़कर चारों ओर देखा, कहीं कोई नहीं था. बस, पास के खंडहर के भीतर से चमगादड़ उड़े और फड़फड़ाते हुए फिर अंदर चले गए.

लेकिन अगले क्षण ही अघटित घट गया. पीछे से आकर सहसा किसी लड़खड़ाती हुई आकृति ने उसे दबोच लिया. उसके नासारंध्रों में शराब की गहरी गंध भर गई. और उस आकस्मिकता के कारण वह एकाएक चीख उठी और उस जानवर के पंजों से छूटने के लिए तीव्र संघर्ष करने लगी. लेकिन हर प्रयत्न के बाद वह और अशक्त हो जाती. उस नरपशु ने सबसे पहले उसके मुंह को दबोच लिया था और उसमें रूमाल ठूंस दिया था.

उसे लगा कि उसके खुले अंगों पर उस नरपशु ने दांत गड़ा दिए हैं और उसके वक्ष को जैसे झिंझोड़ा जा रहा है और जंघाओं पर असंख्य शिलाखंडों का भार पड़ रहा है. वह बराबर हड़बड़ा रहा था, "जानम, जानेमन, मेरी जान, डरो मत, मैं तुम्हें जान से नहीं मारूंगा."

उसने एक बार फिर प्रयत्न किया, पूरी शक्ति के साथ अपने को उसके गुंजल से मुक्त करने के लिए जोर लगाया. लेकिन उसे लगा वह बेहोश हो रही है. सब कुछ धुंधलाने लगा है, शब्द आवाज खो रहे हैं. सांसें धौंकनी की तरह चल रही हैं...

उसे जब होश आया तो सब कुछ समाप्त हो चुका था. वह ठंडे फर्श पर चित पड़ी थी. कई क्षण समुद्र की भयानक तूफानी लहरें उसके शरीर से सिर पटकती रहीं लेकिन फिर वह धीरे धीरे होश में आने लगी. शीघ्र ही धुंधलके को चीरकर सब कुछ स्पष्ट हो गया.

वह यंत्रवत् उठी. उसने अपने वस्त्र ठी[illegible] उसका रोम-रोम घृणा और ग्लानि [illegible] रहा था. वह सुबकने लगी थी.

लेकिन रोने का समय कहां [illegible] जल्द से जल्द घर पहुंचना था. पिता [illegible] नहीं और मां अकेली परेशान हो र[illegible]

एक क्षण को उसके मन में आया [illegible] खंडहर के ऊपर से कूदकर जान दे [illegible] औरत के जीने का कोई अर्थ र[illegible] क्या?

उसके मस्तिष्क में परस्पर विरोधी [illegible] उमड़-घुमड़ रहे थे. साथ ही साथ वह [illegible] व्यवस्थित करने की पूरी कोशिश [illegible] थी. वह अनजाने ही खंडहर से बाहर [illegible] थी और घर के रास्ते पर दौड़ रही [illegible] समय उसके भीतर की औरत कई [illegible] बंट गई थी, ग्लानि से आत्महत्या क[illegible] औरत, जल्दी से जल्दी घर पहुंचक[illegible] परेशानी दूर करने वाली औरत, [illegible] गुच्च उस बलात्कारी का गला घोंट[illegible] औरत और एक दुर्बल औरत [illegible] और शर्म मारे रो ही सकती थी. [illegible] कुछ कह नहीं सकती थी.

इस सबके बीच वह तेज-तेज दौड़[illegible] वह अब बस्ती में प्रवेश कर चुकी [illegible] आध आने-जाने वाला व्यक्ति उ[illegible] देखता तो वह यंत्रवत् मुस्करा देती [illegible] सदा करती थी. पर आज वह हर [illegible] बाद बुरी तरह सिहर उठती और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखाचित्र: हसैन

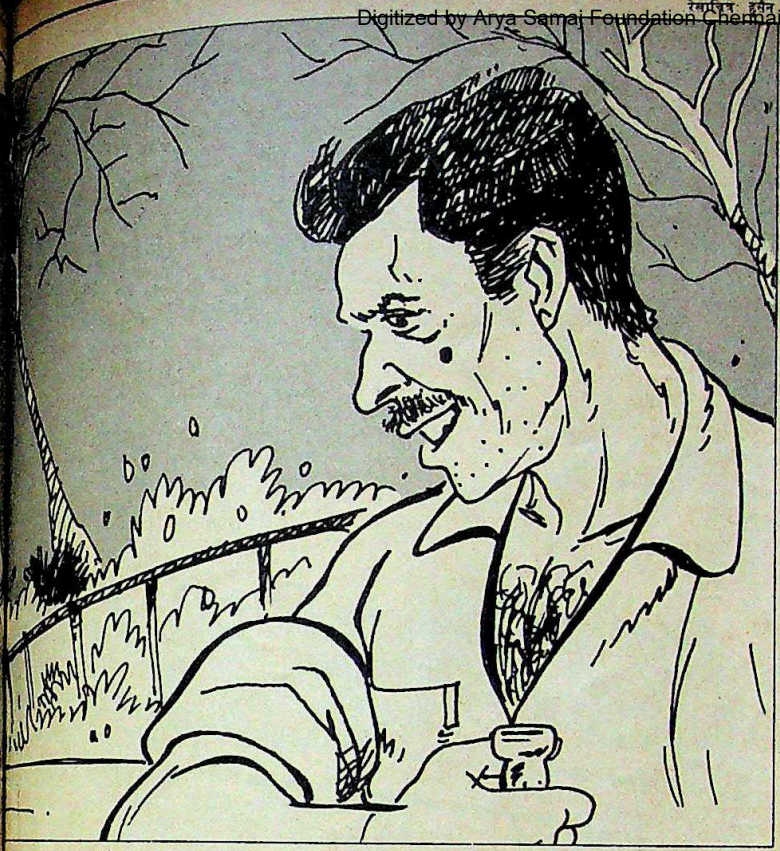

अपने वस्त्र ठी
और ग्लानि
लगी थी.
समय कहां
बना था. पिता
परेशान हो रहे
मन में आया
दकर जान दे
कोई अर्थ रह
परस्पर विरोधी
ही साथ वह
पूरी कोशिश
डहर से बाहर
पर दौड़ रही
औरत कई
आत्महत्या क
घर पहुंचकर
ली औरत,
का गला घोंटे
ल औरत
सकती थी.
थी.
तेज-तेज दौड़
कर चुकी
व्यक्ति उ
मुस्करा देती
ज वह हर
उठती और

र से अपना सिर फोड़ने को तैयार हो

का घर आ गया था. घंटी की आवाज
र मां ने तुरंत दरवाजा खोला. उसका
वाक्य यही था "बड़ी देर कर दी बेटी,
लो?"

कस्मात्! उसने सदा की तरह शांत भाव
र दिया, "आज अचानक गंभीर केस
था मां, तुरंत ऑपरेशन करना पड़ा,
देर हो गई. और फिर जल्दी-जल्दी
के कारण खंडहर के पास मेरा पैर
गया और मैं गिर पड़ी."

एकदम घबरा गई, "देखूं, देखूं, कहीं

**यह एक जाने-पहचाने पार्क
पार कर रही थी. वहां भी
कोई आहट नहीं थी. दूर-
तक कोई भी प्राणी आता
ता नहीं दिखाई दे रहा था
कोई उसका पीछा कर रहा
और अगले क्षण ही अघटित
घट गया**

अधिक चोट तो नहीं लगी?"

"नहीं मां, कुछ खरोंचें आ गई हैं. पहले मैं नहा लूं, फिर दवा लगाऊंगी. तब तक तुम गरम-गरम एक प्याला कॉफी तैयार कर दो."

"मैं अभी कॉफी तैयार करती हूं लेकिन सबसे पहले तू खरोंचों को डिटॉल से धो डाल."

अपने को चौंकाती हुई सहसा वह हंस पड़ी, बोली, "अब यह भी तुम मुझे बताओगी क्या?"

उसने गुसलखाने के किवाड़ जोर से बंद किए और फिर सिसकियों में फूट पड़ी. कितना बिलखी, कितना तड़पी, कपड़े उतारते, खरोंचों पर डिटॉल लगाते. कितना लड़ी अपने से. कितना झिझोड़ा अपने को, फव्वारे के नीचे बैठकर. पर जब बाहर आई तो वह शांत दीखने का जी-जान से प्रयत्न कर रही थी. कॉफी पीने से उसे कुछ सहारा मिला. उसने निश्चय किया वह मां को सब कुछ बता देगी.

लेकिन तभी उसके अंतर में एक आवाज गूंजी—कितनी व्यथित होगी मां यह सब सुनकर. एक कान से दूसरे कान होकर चारों ओर फैल जाएगी यह कहानी. और रह जाएगी केवल घृणा. उसको देखने वाले की आंखों में वह एकदम अजनबी, अपवित्र और अस्पृश्य बन जाएगी. घृणित, अपराधिनी और पापिष्ठा...तो क्या करे वह? क्या करे? क्या करे?

उसके मुंह से सहसा निकला "मां".

"हां बेटी"

"कुछ नहीं, पूछती थी कॉफी और है?"

"कॉफी तो है पर क्या तुझे खाना नहीं खाना है?"

"नहीं मां. मुझे बिलकुल भूख नहीं है. बस एक प्याला गरम-गरम कॉफी और दे दो."

मां ने अब गौर से बेटी को देखा, कहा, "क्या हो गया, तुझे? क्या ऑपरेशन बहुत खतरनाक था? कौन था? बच तो जाएगा न?"

उसने पूरे विश्वास के साथ उत्तर दिया, "बच जाएगा नहीं, बच गया है. दस दिन के बाद हम उसे छुट्टी दे देंगे."

और ठीक इसी समय उसके मन ने उससे कहा, "पर तुझे कौन बचाएगा? कौन देगा तुझे छुट्टी?

एक बार फिर अपने को चकित करती हुई वह दृढ़ स्वर में बोली, "मैं दूंगी अपने को छुट्टी. मैं बचाऊंगी अपने को."

कहने के बाद ही उसे अपने पर विश्वास हुआ कि ये शब्द उसके ही हैं. अब उसके अंतर में जो धुंध भरी हुई थी वह छंटने लगी थी और उसे रास्ता नजर आ रहा था. जैसे सुरंग के अंधेरे को पार करने बाद रोशनी की किरण धीरे-धीरे चमकती है वैसे ही उसका साहस लौट रहा था और वह अपने से कह रही थी, "हां, मैं बचाऊंगी अपने आपको. आदमी अपने आपको स्वयं ही मारता है और स्वयं ही बचाता है."

फिर भी उस रात वह शांति से नहीं सो सकी. कभी उसके अपने शरीर से गहरी दुर्गंध उठने लगती, कभी सैकड़ों जहरीले बिच्छू एक साथ डंक मारने लगते. और वह जोर-जोर से रोने लगती. लेकिन तभी कोई बहुत धीरे-से और उतने ही दृढ़ स्वर से उसके कान में कह जाता, "सावधान! तुमने अभी निश्चय किया कि तुम स्वयं अपने आप को मुक्त करोगी."

"हां, हां, करूंगी, करूंगी, करूंगी."

वह फिर चीखने को होती, फिर एक और आवाज सुनाई देती, "पर कैसे? कैसे? कैसे?"

सबेरे जब वह उठी, तो परम शांत थी; वह निश्चय कर चुकी थी कि वह अपनी कहानी किसी को नहीं बताएगी. वह उस बलात्कारी को खोजेगी और उसे दंड देगी.

हालांकि उसे अतिरिक्त शक्ति का प्रयोग करना पड़ा था लेकिन उसने अब अपने को पूरी तरह व्यवस्थित कर लिया था इसलिए वह अब बात-बेबात पर हंस देती थी. ऐसे हंसती कि एक बार तो मां के मन में विचार कौंध गया था "रात उसकी बेटी कितनी निढाल थी और अब कितनी प्रसन्न." धधकते ज्वालामुखी को अंतर में छिपाकर कोई हंस भी सकता है, यह बात शायद मां कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार न करती. लेकिन मां तो कुछ जानती ही नहीं.

अस्पताल में भी इस बात को कोई नहीं जान पाया. अपनी प्रिय से प्रिय सखी को भी उसने इस घटना का संकेत तक नहीं दिया. परंतु फिर भी कभी उसके चेहरे पर अतिरिक्त उल्लास दिखाई पड़ता, कभी उसका रंग पीला पड़ जाता. कभी कोई सखी देख लेती तो पूछ बैठती, "क्या बात है कि आजकल तुम कभी कभी बड़ी परेशान नजर आती हो." वह बड़े विश्वास से उत्तर देती, "आजकल मैं इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार कर रही हूं कि कब प्राप्त होगी वास्तविक स्वतंत्रता नारी को? कब मिटेगा आधिपत्य पुरुष का?"

एक सहेली ने मुस्कराकर उत्तर दिया था, "हमें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए, हम नर्स हैं. सब बराबर हैं हमारे लिए."

वह जवाब देना चाहती कि नर्स होने से पहले हम सब नारी हैं. पर वह जवाब देती नहीं थी, बस मुस्करा देती थी. उसकी आंखों में बार-बार एक आकृति उभरती थी. एक दीर्घ-काया, लंबोतरा चेहरा, अधमिची आंखें, लड़खड़ाते कदम, निरंतर शराब पीने के कारण अंकुश से बाहर हो गई काया...

उसने याद करने की चेष्टा की, उसके चेहरे पर नाक की बाईं ओर एक बड़ा-सा मस्सा भी था शायद...

अस्पताल में, सड़क पर, आस-पास के सभी रेस्तरांओं में, बाजार की गहमागहमी में, नदी के तट पर हर कहीं उसकी दृष्टि उसी आकार को खोजती थी.

उस दिन वह अपनी एक सहेली के साथ रेस्तरां से बाहर आ रही थी कि उसकी दृष्टि एक अधेड़ होते युवक पर पड़ी. वह शराब पी रहा था.

क्या यही तो नहीं है. यह हो सकता है वह. हां यही है.... उसकी नाक के पास मस्सा है. उसकी आंखें वैसे ही चुंधिया रही हैं. वही दीर्घ पर अंकुश से बाहर हुई काया....

वह सिहरी, उसके शरीर में तनाव पैदा हुआ, जैसे कुछ ऐंठ रहा हो. पर उसने अपने आपको शीघ्र ही संयत कर लिया.

अगले दिन वह फिर उसी रेस्तरां में गई. वही आदमी, उसी मेज पर बैठा शराब पी रहा था. तीसरे दिन, चौथे दिन, पांचवें दिन, छठे दिन, सातवें दिन. वह वैसे ही वहां जाती रही. वह आदमी वैसे ही बैठा हुआ वहां शराब पीता रहा. अब उसे पक्का विश्वास हो गया था कि उसके साथ बलात्कार करने वाला नरपिशाच वही है.

इस अवधि में निरंतर एक योजना उसके कल्पना-लोक में रूप ले रही थी. वह निरंतर सोचती रहती थी. परंतु ऊपर से वैसी ही प्रसन्न, वैसी ही शांत और वैसी ही अपने

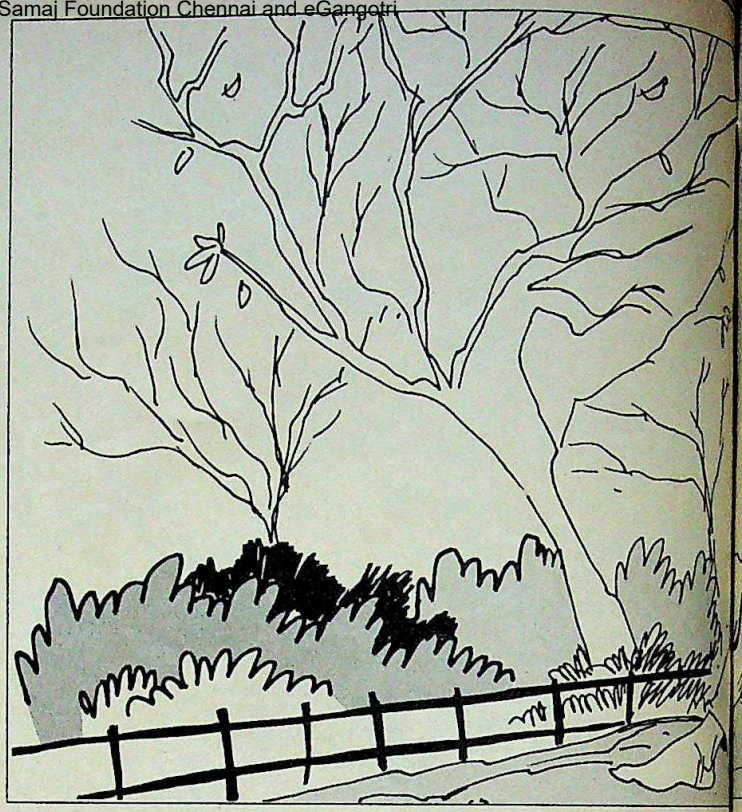

काम में चौकस.

अंत में एक दिन वह एक निर्णय पर पहुंच गई. उस दिन उसने अगले दिन रात के शो में जाने के लिए अपने पिता से कार मांग ली.

अगले दिन खुशी-खुशी कार लेकर उसी रेस्तरां में गई. वह आदमी आज भी उसी तरह बैठा शराब पी रहा था. बाहर उसे कुछ देर राह देखनी पड़ी. आखिर वह लड़खड़ाता और बड़बड़ाता हुआ बाहर आया. अंधेरा घिर आया था. बत्तियां जल रही थीं. उसने दृढ़ता से आगे बढ़कर उसे थाम लिया. "हलो, डार्लिंग, कहां जाना है आपको?

शराबी ने एक बार उसे ऊपर से नीचे तक देखा और मुस्कराया, "कौन हो तुम?"

"मैं तुम्हारी ही हूं प्रिय. आओ न मेरे साथ. मेरे पास कार है. कुछ देर घूमें ऑन डार्लिंग."

"घूमेंगे. क्या कहा तुमने? तुम मेरे घूमोगी?"

"हां, मैं तुम्हारे साथ घूमूंगी, मेरे तुम इतने सुंदर हो. तुम्हें मैं बहुत जानती हूं. आओ, हम अच्छी तरह से परिचित हो जाएं."

शराबी पागलों की तरह चिल्ला और उसकी बांह का सहारा लेकर पिछली सीट में ढेर हो गया. वह बड़बड़ा था "माई डार्लिंग, माई लवली बटरफ्लाई."

एक तो शराब का नशा, फिर मादक स्पर्श. वह रही-सही संज्ञा भी नर्स ने उसे प्यार से थपथपाया और ड्राइवर की सीट पर आकर बैठ गई.

उसने एक नितांत निर्जन स्थान रोकी. लगभग घसीटते हुए उसे नीचे लिया और झुरपुट के पास लिटा दिया. बीच-बीच में प्यार करने का नाटक करती रहती थी. वह सब सामान साथ ले थी. सबसे पहले उसने शराबी को 'फॉर्म' सुंघाया. वह छटपटाया और बेहोश हो गया. उसके बाद उस नर्स ने 'किट' निकाला. और कुछ ही क्षणों में विलक्षण कुशलता और सहजता से शराबी के गुप्तांग को काट दिया.

ऐसा करते हुए वह पूरी तरह

वह अनजाने ही दौड़ रही थी. उसके भीतर की औरत कई भागों में बंट गई थी. ग्लानि से आत्महत्या करने वाली औरत, उस बलात्कारी का गला घोंट देने वाली औरत और एक दुर्बल औरत जो शर्म के मारे सिर्फ रो सकती थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

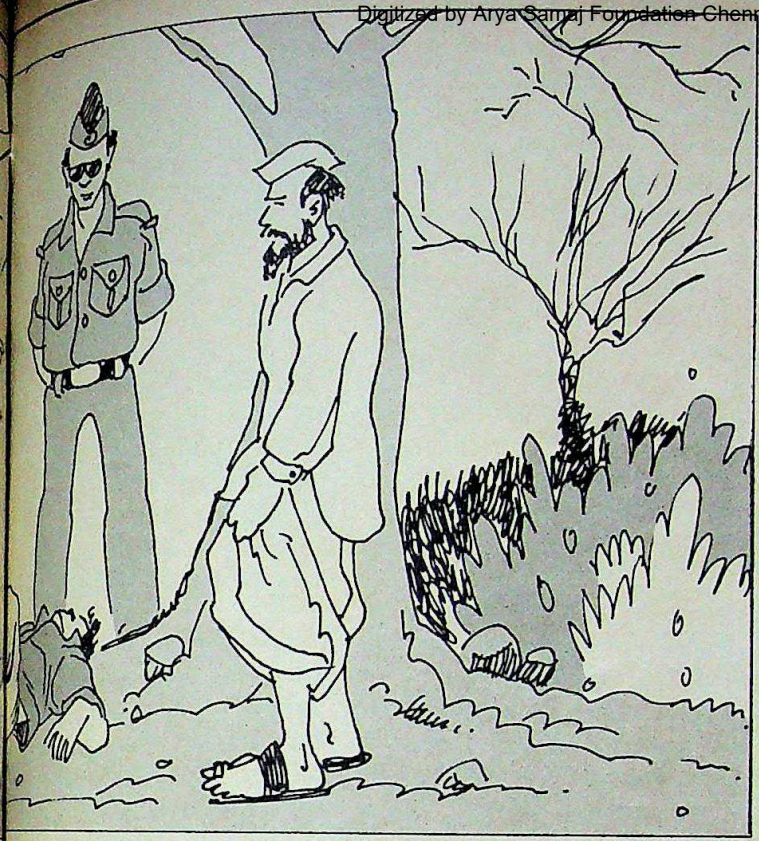

. कुछ देर घू
तुमने? तुम
थ घूमूंगी,
हें मैं बहुत
अच्छी तरह
तरह बिल
हारा लेकर
गया. वह बड़
माई लवली
नशा, फिर
ही संज्ञा भी
थपथपाया
ाकर बैठ गई
निर्जन स्थान
हुए उसे
पास लिटा
का नाटक
मान साथ
शराबी को
पटाया और
ाद उस नर्स
छ ही क्षणों
र सहजता
काट दिया.
पूरी तरह

विश्वास था कि उसे यही करना चाहिए. कार भी तो उसका हाथ कांपा नहीं. एक भी उसके मन में धुंआ नहीं घुटा.

मन मन करने के बाद उसने उसके पैंट के बंद किए और इस बात का निश्चय किया कि कहीं भी रक्त का धब्बा बाहर दिखाई दे रहा.

तब उसने उसे खींचकर फिर कार की सीट पर डाल दिया और उस स्थान पहुंची, जहां उसके साथ बलात्कार किया था. उसी स्थान पर उसने उस शराबी को गिरा दिया. वहां उस समय सन्नाटा था. दूर तक कोई परिंदा तक नजर नहीं आ रहा. परम शांत भाव से वह कार लेकर पहुंची और मां से बोली, "आज बहुत भूख लगी है, मां. जल्दी से खाना परोस दो." उसने मुस्कराकर उत्तर दिया, "सब कुछ तैयार है. तेरे पिता भी आज घर पर ही हैं." उसी क्षण उसे पिता की आवाज सुनाई दी, "क्या, हमारी बिटिया आ गई?" "आ गई." यह कहती हुई वह अंदर दौड़ गई. इसके बाद सदा की तरह सबने मिलकर खाना खाया. रात को उसे खूब गहरी नींद आई. सुबह का अखबार आ चुका था. लेकिन किसी घटना की चर्चा उसमें नहीं थी. तत्कालीन समाचार-पत्र में वह समाचार से छपा था और इस बात पर प्रकट किया गया था कि उस व्यक्ति ने अत्यंत अपूर्व कुशलता से किया गया था. सबेरे घूमने जाने वाले व्यक्तियों ने उसे पार्क में बेहोश पड़े पाया. तुरंत पुलिस को फोन किया. पुलिस ने आते ही उसे पहचान लिया और अस्पताल पहुंचाया. वह अव्वल नंबर का शराबी और शंकित चरित्र का व्यक्ति था. उस पर बलात्कार के आरोप में मुकदमा भी चल रहा था. लगता है यह काम किसी ऐसे व्यक्ति का है जिसके किसी प्रियजन के साथ उसने बलात्कार किया हो.

अस्पताल में इस बात पर विशेष रूप से चर्चा हुई. स्वयं वह बड़े अचरज से बोली, "कैसी अविश्वसनीय बात है? क्या यह काम किसी लेडी डॉक्टर का हो सकता है?"

उसकी सहेली ने उत्तर दिया, "ऐसा ही जान पड़ता है. लेकिन क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि कोई पीड़ित औरत इतनी कुशलता से यह काम कर सकती है?"

उसने कहा, "जो सताई गई है, वही तो ऐसा काम कर सकती है. मुझे खुशी है कि किसी ने ऐसा काम किया."

सखी बोली, "कुछ भी हो पर कानून के अनुसार, आखिर है तो यह एक अपराध ही."

उसने उपेक्षा से उत्तर दिया, "होगा अपराध, मिल जाएगी उसे सजा. लेकिन मैं तो उस नारी को प्रणाम करती हूं, उसने निश्चित रूप से सही काम किया है."

इस बहस में और भी नर्सें और डॉक्टर शामिल हुए. मतभेद होते हुए भी उस ऑपरेशन करने वाले व्यक्ति के प्रति उन सबके मन में प्रशंसा का भाव था.

यह सब देखकर उसका मन खिल उठा. उसे लगा उसके शरीर में से सारी गंदगी, सारी अपवित्रता दूर हो गई है. और अब वह अपना मस्तक गर्व से ऊंचा कर सकती है.

कई दिनों तक अखबारों में उस पर गरमागरम बहस होती रही. पुलिस और गुप्तचर विभाग के लोग अपराधी की खोज करते रहे. लेकिन कुछ पता नहीं लग पा रहा था. तभी अचानक एक दिन गुप्तचर विभाग के एक अधिकारी ने डॉक्टर से पूछा, "इससे मिलने के लिए कौन-कौन लोग आते हैं?"

डॉक्टर ने उत्तर दिया, "हमने इसकी बूढ़ी मां के अतिरिक्त किसी को नहीं देखा."

फिर जैसे कुछ याद आया हो, उसने कहा, "हां तीसरे, चौथे दिन एक नारी इसके बारे में पूछताछ करती है, वह कोई युवती है."

उसके ठीक सातवें दिन पुलिस उस नर्स के घर पहुंची. और उसे वारंट दिखाते हुए बताया कि वे उसे शराबी का गुप्तांग काटने के अपराध में गिरफ्तार करने आए हैं.

एक क्षण के लिए वह झिझकी. चाहा कि वह प्रतिकार करे लेकिन फिर सबको चकित करते हुए उसने परम शांत भाव से दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "चलिए, मैं आपके साथ चलने को तैयार हूं."

न्यायालय में भी उसने उसी शांत भाव से सब कुछ बता दिया. और अंत में कहा, "मैं समझती हूं, मैंने जो कुछ किया ठीक किया है, जानबूझकर किया है. पूरे होशो-हवाश में किया है. मैं यह भी जानती हूं कि कानून की दृष्टि में यह दंडनीय अपराध है लेकिन एक और भी न्यायालय है और मैं जानती हूं, वहां मुझे निर्दोष घोषित किया जाएगा. इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना."

न्यायमूर्ति ने घोषणा की, कि वह अगले सप्ताह इसी दिन अपना फैसला सुनाएंगे.

क्या आपको उत्सुकता है उस फैसले को जानने की?

मुझे तो नहीं.

"मैं ने जो कुछ भी किया है पूरे होशोहवाश में किया है. मैं यह भी जानती हूं कि कानून की दृष्टि में यह दंडनीय अपराध है. लेकिन एक और भी न्यायालय है जहां मुझे निर्दोष घोषित किया जाएगा"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता संग्रह

अनुभूतियों के रंग

समकालीन संवेदना के स्वर

कवि रामदरश मिश्र का पिछला काव्य संकलन 'दिन एक नदी बन गया' 1984 में प्रकाशित हुआ था. अब लगभग पांच वर्ष बाद 'जलूस कहां जा रहा है?' प्रकाश मे आया है. करीब 72 छोटी-बड़ी कविताओं का यह संकलन रामदरश जी की विविध काव्यानुभूतियों को, जिनमें जीवन के व्यापक रूपों, संघर्षों और द्वंद्वों को सहज, सरल शब्दावली में व्यक्त करके संजोया गया है, समेटे हुए है. 'कविता का जन्म' में *"हवा मे खोई खुशबू की तरह आदमी की पहचान/आंधी के खिलाफ/छोटे-छोटे पौधे तन जाते हैं/मार खायी आंखों के आंसुओं में/धीरे-धीरे आग के चित्र बन जाते हैं/क्या मेरे भीतर किसी कविता का जन्म हो रहा है?"* लिखकर कवि ने अपनी काव्य रचना संबधी बेचैनी को शब्दांकित कर दिया है. कविताओं का स्वर ऊंचा नहीं है, उनमें बड़बोलापन है, मगर हल्के स्वर में गहरी संवेदनाओं को व्यक्त करने के प्रयत्न सर्वत्र दिखाई देते हैं.

'जलूस कहां जा रहा है?' की प्रश्न-वाचकता गहन भी है और सघन भी. उनकी कविता में एक तरल उदासी है जो हमारे जनतंत्र में व्याप्त छलिया तांत्रिकता को देखकर क्षुब्ध और पीड़ित है. इसी प्रकार 'पत्थर' में पत्थर के कविता बन जाने की कारीगरी और कौतुक ही नहीं, असलियत भी विद्यमान है: *"तुमने जो पत्थर खींचकर उसे मारा/वह उसके कलेजे में धंस गया/और रक्त झरने लगा/उसने उस पत्थर पर/अपने रक्त से सने कलेजे का दर्द लिख दिया/ और तुम्हें वापस कर दिया/ अब वह पत्थर नहीं था/कविता था."*

रामदरश मिश्र गीतात्मक और सुकुमार अनुभूतियों के रचनाकार हैं जिनकी भाषा में आक्रोश, विक्षुब्धता नहीं, अपितु आत्मीयता, संवेदनशीलता और अहिंसक व्यंग्य दिखाई देता है. 'फूल: पांच कविताएं' की एक कविता इस प्रकार है: *"सावधान/यहां फूल तोड़ना सख्त मना है/मगर/मगर यहां फूल है कहां?"* अथवा 'बिल्ली रानी' में गुदगुदी करती छेड़छाड़ का अंदाज: *"बिल्ली रानी/ तुम्हें जानना चाहिए था/कि चूहे और चिड़िया में भेद होता है/तुमने चूहे की तरह चिड़ियों पर भी घात लगाया/चिड़िया उड़ गयी/और उड़ उड़कर/ तुम्हें चोंच मार रही है/पूंछ और पंख था अन्तर/तुम्हें जानना चाहिए था दिल्ली रानी."*

रामदरश जी के इस संकलन में भी कविता सहज उक्तियों के रूप में मिलती हैं, जिनमें राजनीति पर व्यंग्य तो है, मगर इस ढंग से: *"बोया किसी ने हो/मैंने बस काटा है/हिस्सा किसी का हो/मैंने तो/बंदर की तरह बांटा है/ मैं सदा तेरे साथ हूं मेरे प्यारे देश/मेरी आवाजें हैं, तेरा सन्नाटा है."* इस संकलन में कवि के कतिपय गीत भी हैं. परंतु यह निर्विवाद है कि 'जलूस कहां जा रहा है?' की अतुकांत कविताएं ज्यादा आकर्षक हैं और समकालीन संवेदना, बेचैनी, अजनबीपन, मोहभंग, राजनीति को संवेदनशील शैली में उजागर करते हुए कवि की सतत साधना के प्रति पुनः आश्वस्त करती है.

—शेरजंग गर्ग

जलूस कहां जा रहा है?
कविता संग्रह
रामदरश मिश्र
प्रभात प्रकाशन,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
कुल पृष्ठ: 72;
कीमत: 30 रुपए

कहानी संग्रह

सच की परछाइंयां

सामाजिक व्याधियों पर नजर

और अतिथि जैसे मेहमान बन गया. आज की ज्वलंत सामाजिक समस्याओं पर उपन्यासों और कहानियों के जरिएं बेबाक टिप्पणी के लिए मशहूर अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अध्यापक मुहम्मद सलमान के माध्यम से शायद यही यथार्थ भोगा है. लेखक का ताजा कहानी संग्रह 'अतिथि देवो भव' इस यथार्थ का ही प्रतिबिंब है.

खुद शीर्षक कहानी उस समाज पर करारा व्यंग्य है जिसमें अतिथि को कभी ईश्वर का रूप माना जाता था. मुहम्मद सलमान अपने कस्बाई स्कूल में संस्कृत पढ़ाते हैं. वे अपने शागिर्द मिश्रीलाल गुप्ता को मिलने शहर आए पर वह अपने कमरे में न मिला. बगल वाले कमरे का किराया दंपती उन्हें मिश्रीलाल के घर का सदस्य उनकी आवभगत करता है. मगर जब चलता है कि वे दूसरे संप्रदाय से ताल्लुक रखते हैं तो आवभगत एकदम उपेक्षा में बदल जाती है. मजहब का विकृत यहीं प्रकट होता है.

यही नहीं, 14 कहानियों के इस संग्रह समाज में व्याप्त अनेक दूसरी व्याधियों ओर भी ध्यान आकर्षित करने का किया गया है. 'आधा फूल, आधा जमीन के एक छोटे-से टुकड़े पर उठे का फैसला दोनों समुदायों के प्रतिनिधि के पारस्परिक विचार-विमर्श आधार पर प्रस्तावित करके लेखक ने कुछ कह दिया है. इसी समस्या को बनाकर 'दूसरा सदमा', 'ग्राम सुधार' 'टिन्नू का टेलीफोन' का कथानक भी गया है.

किसी कहानी में पाठक बराबरी नाबराबरी के सवाल से रू-ब-रू होता है कहीं ऐसे पात्र उसके सामने जीवंत हो हैं जो दमन और शोषण के खिलाफ का साहस कर रहे हैं. 'अलिया धोबी पाव-भर गोश्त' के अलिया पर तो मसावात (बराबरी) का भूत ही सवार गया है. मसावात के इन आदर्शों को पाने लिए ही शायद लेखक ने 'यह कोई अंत में गुलाम सरवर के माध्यम से मजदूरों संघर्ष की प्रेरणा दी है. इसी तरह खींचनेवाले' का भुनेसर शोषण के तजुर्बे से गुजरता है. वह सोचता है, लोग तो मुर्दा जानवरों की खाल उतारते लेकिन इस दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग जो जिंदा आदमियों की खाल खींचते हैं उन्हें दर्द तो दूर, घिन भी नहीं लगती.

दूसरी ओर, 'सिट्टीकी साहब', 'नेता' का और 'पूंजी, और मुनाफा' बाबू जी ऐसे पात्र हैं जिनके करने को कुछ सिर्फ बातों की भर है.

बहरहाल, हो या गुलाम भुनेसर हो या 'दूसरा सदमा' के चचा—इन पात्रों के रंग-रूप और व्यवहार भले ही अलग हों पर व्यवस्था के नकारात्मक पहलुओं पहचानने में वे एक ही मंजिल के प्रतीत होते हैं. लेखक भी इन पात्रों माध्यम से यही संदेश देता लगता है

—ओम प्रकाश

अतिथि देवो भव
कहानी संग्रह
अब्दुल बिस्मिल्लाह
राजकमल प्रकाशन,
नई दिल्ली
कुल पृष्ठ: 148;
कीमत. 50 रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

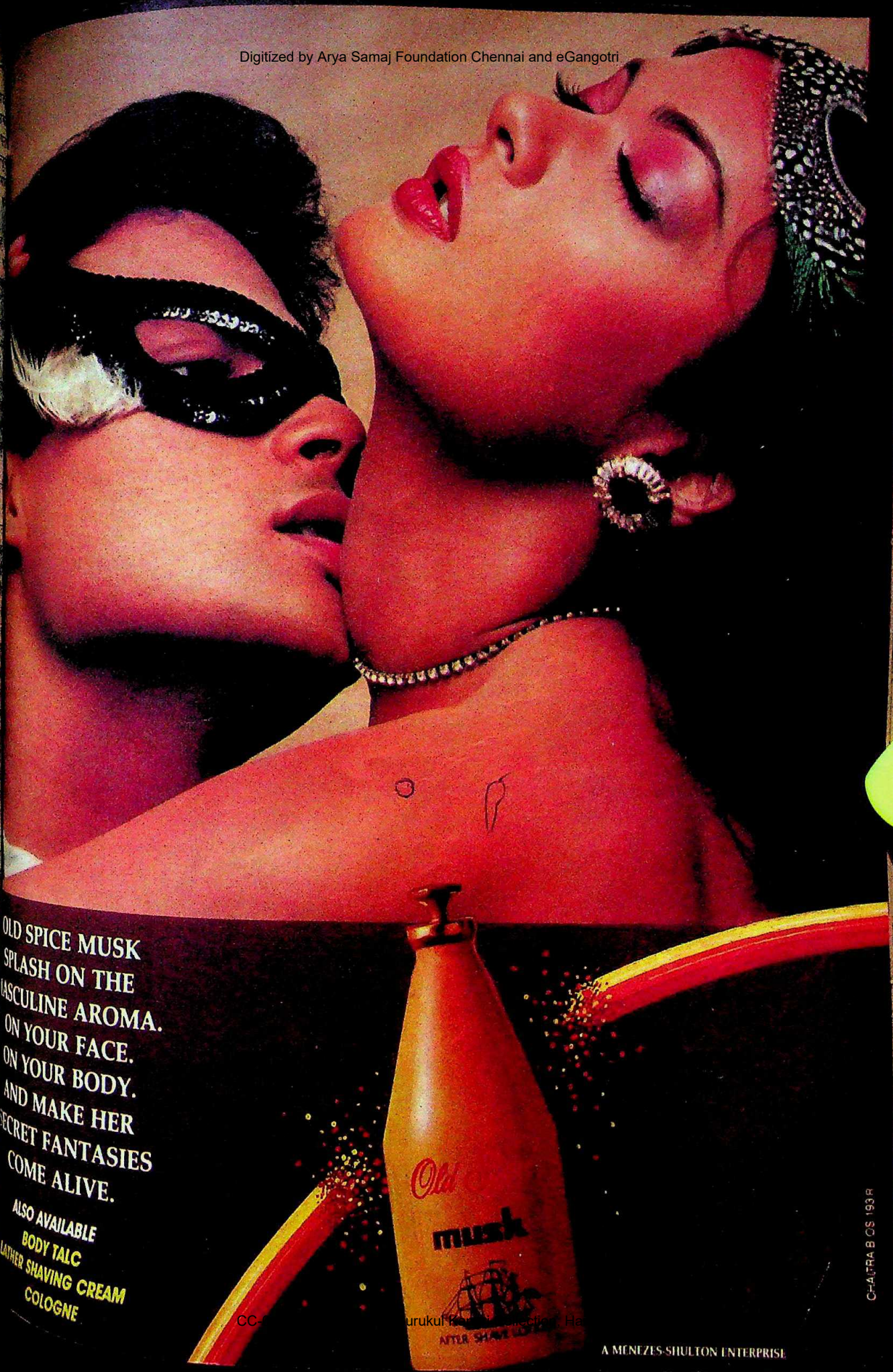

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घोंसले में

किमी काटकर ने यह बात खुले-आम कह दी थी कि जल्दी ही वे अपने प्रेमी शांतनु के साथ शादी रचाने वाली हैं और इसलिए उन्होंने निर्माताओं को अल्टीमेटम भी दे दिया था कि जून से पहले उनकी फिल्मों की शूटिंग निबटा लें. सचमुच उन्होंने कुछ फिल्मों का काम तुरत-फुरत खत्म करवा भी दिया. डायरेक्टर उनकी इस निराली ईमानदारी पर फिदा हो गए.

पर यही डायरेक्टर आज सिर पकड़े हुए हैं क्योंकि मोस्ट प्रोफेशनल मिस काटकर ने उनका जिगर चीर-कर रख दिया है. अभी पिछले दिनों तो उन्होंने अपनी एक फिल्म के हीरो को छह घंटे तक ऐसा छकाया कि वे कभी भूलेंगे नहीं कि हीरोइन की शादी की तैयारी कैसी होती है.

किमी क्योंकि समय पर आ जाने वाली हीरोइन के तौर पर मशहूर रही हैं, इसलिए यह हीरो भी समय पर आ गया. यूनिट ने तैयारी कर ली. लाइट्स-साउंड-कैमरा सब कमर कसकर तैयार हो गए कि किमी आएं तो फटाफट काम निबटाएं. लेकिन मिस काटकर का कहीं पता हो तब न? मम्मी काटकर को जितनी बार फोन किया गया, एक ही जवाब मिला, "बेबी तो कब की निकल चुकी."

दरअसल महाभारत में युधिष्ठिर के 'अश्वत्थामा हतो...' की तरह मम्मी काटकर ने भी बात तो सही ही कही थी—"बेबी तो कब की निकल चुकी." समझने वालों को समझ लेना चाहिए था मम्मी काटकर के कहने का अभिप्राय कुछ यह था—"परिंदे को इस पिंजड़े में कहां ढूंढ़ रहे हो? वहां क्यों नहीं जाते जहां उसने घोंसला बनाने का फैसला कर लिया है?" जी हां, ठीक ही समझा आपने! बेचैन किमी अभी से शांतनु के साथ रहने लगी हैं.

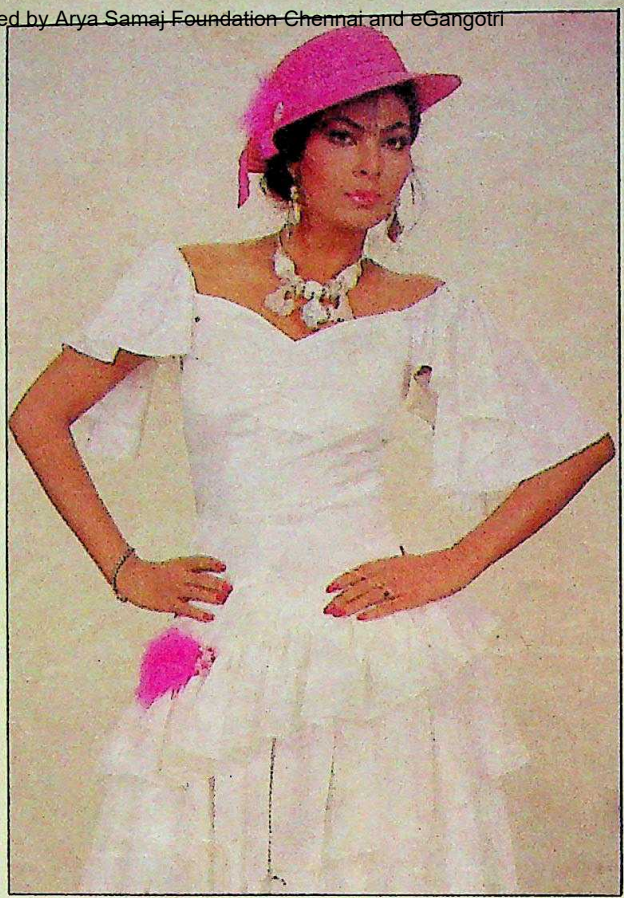

किमी: शादी से पहले

पिटा हुआ 'प्लाट'

'भेड़िया आया...' [illegible] रेखा को कितनी पसंद [illegible] स्तंभ के पाठकों को यह [illegible] जरूरत नहीं. **मीनाक्षी** [illegible] अपना नाम लोगों की [illegible] चढ़ाए रखने के लिए इ[illegible] नुस्खे का प्रयोग तो [illegible] अखबारों की सुर्खियां [illegible] उनकी दिली तमन्ना [illegible] रह गई.

मीनाक्षी शेषाद्रि 'गली गली' की शूटिंग [illegible] इलाके में सडक के किनारे [illegible] हैं. वे एक शॉट देकर [illegible] करीब जा पहुंचती हैं. त[illegible] चीरता हुआ एक नौज[illegible] बढ़ता है और उनका चीर[illegible] देने की नापाक कोशिश [illegible] मीनाक्षी मदद के लिए [illegible] किसी को अपनी सहायता [illegible] आता देख वे खुद महिला [illegible] प्रतिनिधि बन उस हमला[illegible] का सामना करती हैं. [illegible] धकेलकर दूर गिरा देती [illegible] उस पर लातों से प्रहार [illegible] भीड हंस रही है. इतने में [illegible] की यूनिट सजग होकर [illegible] दबोचती है.

मीनाक्षी हैरान हैं [illegible] स्क्रीन प्ले को उन्होंने [illegible] परफेक्ट ढंग से [illegible] किया-कराया था. फिर [illegible] रह गई कि वाहवाही में [illegible] न्यूज नहीं छपी!

दिलचस्प 'दावा युद्ध'

जीतेंद्र के फैसले से लोग हैरान हैं. गोविंदा की छोड़ी हुई फिल्म 'तांडव' न सिर्फ खुद फटाफट स्वीकार कर लेने बल्कि अपने साथ **जयप्रदा** को भी राजी करवा लेने के पीछे चाहे जो भी मकसद हो, इस फैसले से जो 'दावा युद्ध' शुरू हुआ है, वह काफी दिलचस्प है.

गोविंदा का दावा है कि वे अब इतने बड़े स्टार साबित हो गए हैं जिसकी छोड़ी हुई फिल्में पाकर जीतेंद्र जैसे एक्टर तक खुश होने लगे हैं. उधर जीतेंद्र का दावा है कि नाचने-गाने वाली जवानी की जरूरत उनके रहते गोविंदा और चंकी जैसे जवान पूरी कर ही नहीं सकते. गोविंदा का दावा है कि इस फिल्म की स्क्रिप्ट में कोई दम नहीं था और जीतेंद्र का जवाब है—बेजान स्क्रिप्ट में भी जान पैदा कर देने का जो हुनर उन्हें हासिल है वह भला नए-नए लड़कों के बस की बात कहां. गोविंदा डायरेक्टर के 'स्लो' होने की बात कहते हैं और जीतेंद्र का दावा है कि आज के जमाने में डायरेक्टर से फास्ट काम कराता है स्टार. गोविंदा का कहना है कि कोई भी नौजवान एक्टर यह रोल लेने तैयार नहीं हुआ इसलिए वह जीतेंद्र जैसे अधेड़ के हाथ लग गया. जीतेंद्र का दावा है कि तथाकथित नौ-जवानों को आजमा लेने के बाद दोबारा हाथ जलाने जाएं, इतने नादान नहीं प्रोड्यूसर.

इन दावों में जो भी दम हो, हम तो यही बता सकते हैं कि 'तांडव' का यह एक रोल स्वीकार करके जीतेंद्र ने दो निशाने साध लिए हैं—'थर्टी प्लस' की अपनी इमेज में इजाफे का और दूसरा, जयप्रदा को दिए हुए इस आश्वासन [illegible] दिखाने का कि, "हम [illegible] फिल्म में जरूर साथ [illegible]

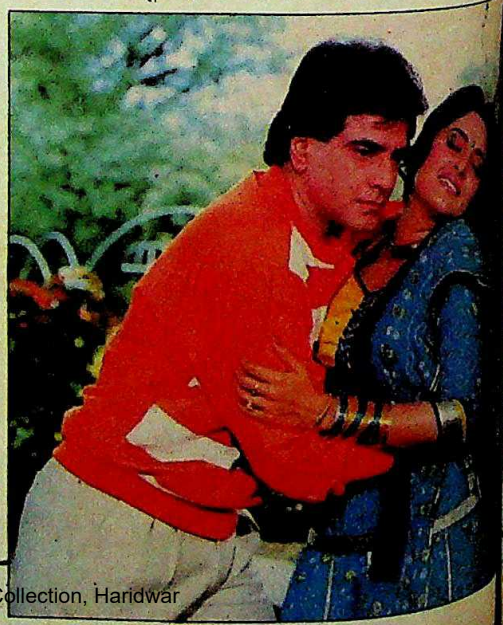

जीतेंद्र: पैंतरेबाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chennai and eGangotri

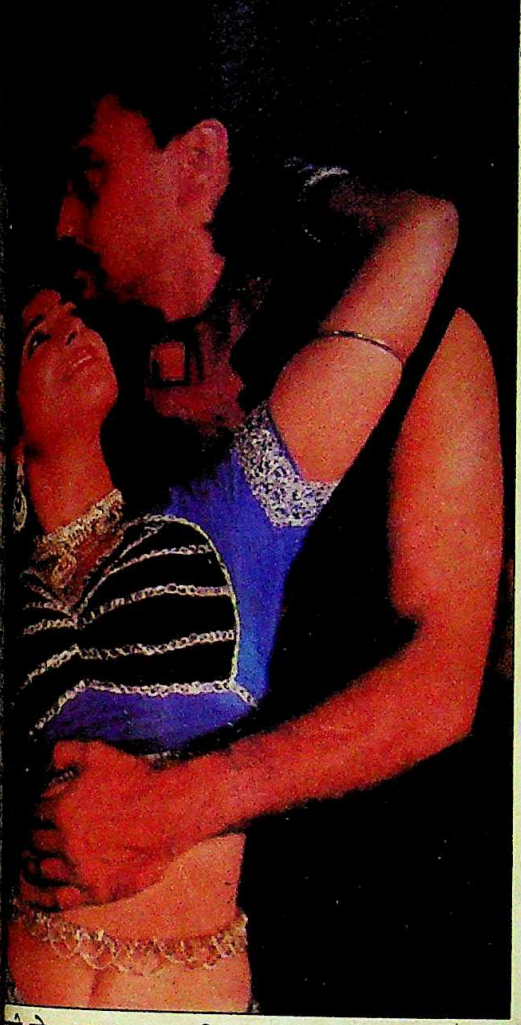

...री हो ...की

...री आंखों वाली इस बाला ...बलैयां लेने को जी चाहने ...हमारा. इस गोरी-चिट्टी, स्लिम पर शानदार फिगर वाली मराठी कन्या ने जैसी धूम मचा रखी है वैसी तो माधुरी और शिल्पा भी नहीं मचा पाईं. अभी जुमा-जुमा आठ तो दिन हुए हैं हिंदी फिल्मों में आए, मगर हफ्ते के हर दिन के

वर्षा: एक ठौर नहीं

हिसाब से अलग-अलग हीरो को भरमा रखा है कि "मैं इश्क में दीवानी हूं तो बस तेरे!" इस हिसाब में इस बाला **वर्षा उसगांवकर** के मराठी फिल्मों के साथी कलाकारों की गिनती शामिल नहीं है. वे तो वैसे भी उनकी सूची में शामिल हैं.

अब लोग लाख कहें कि **जैकी श्रॉफ** अपने बेटे को निहारते नहीं थकते और शूटिंग के बाद दौड़े घर चले जाते हैं ताकि उसकी नैपीज बदलने के सुख में पत्नी के साथ शामिल हो सकें. लेकिन अपनी आंखों में वे किसकी चमक पाल रहे हैं यह सबको बताने की जरूरत नहीं, क्योंकि बात अभी कुछ को पता है, कल बाकी सबको भी पता तो हो ही जाएगी. डर इस बात का है कि तब कहीं दोनों ही 'फ्रंट' उनके हाथ से जाते न रहें—घर में पत्नी का, बाहर दोस्तों का—क्योंकि वर्षा की हफ्तेवार हाजिरी में बाकी दिन उनके दोस्तों के लिए जो नियत हैं.

पिछले महीने में वर्षा की मांग जिस तूफानी वेग से बढ़ी उसे हवा देने में हालांकि जैकी ने कोई कसर बाकी नहीं रहने दी लेकिन स्टार सीलिंग के नियमों के बंधते-बंधते भी वर्षा ने एक ठांव ज्यादा न ठहरने की होशियारी दिखाते हुए हर फिल्म अलग हीरो के साथ साइन करके जैकी की आंखें खुली रखने का इशारा इस खूबी के साथ किया है कि बस, बलैयां लेने को जी चाहता है बाला की.

उपेक्षा का दंश

यह वाकया है भप्पी सोनी की फिल्म 'निश्चय' के मुहूर्त का. **शिल्पा शिरोडकर** ने तो यही सोचा था कि 'किशन कन्हैया' की ग्लैमरस हीरोइन को लोग हाथोहाथ लेंगे. लेकिन इंडस्ट्री में तो हर दिन क्या, हर घंटा किसी एक ही शख्स के नाम लिखा होता है. मुहूर्त के पहले का यह घंटा रूपा गांगुली के नाम था क्योंकि उस वक्त तक हीरोइन में सिर्फ वही फाइनल हुई थीं और शिल्पा थीं सिर्फ 'वन ऑफ द कैंडिडेट्स'. दूसरी दो हीरोइन अभी चुनी जो जानी हैं!

मगर बुलाना या फोटो खिंचाना तो दूर, आयोजकों में से कुछ ने तो उन्हें पहचाना तक नहीं. अब उन पर तो शिल्पा अपना गुस्सा उतार नहीं

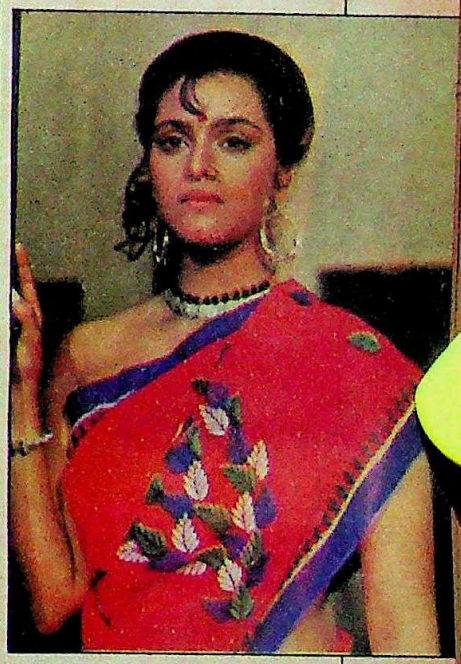

शिल्पा: अनावृत छवि

सकती थीं. सारी मुसीबत आई सेक्रेटरी के सिर पर. वह बेचारा जितना ही समझाता कि "मैडम, मैं इसी फिल्म में आपका चक्कर चलवा करके रहूंगा..." उतना ही शिल्पा बिगड़तीं, "कहां लाकर फंसा दिया मुझे!"

भला सेक्रेटरी वही सब कैसे कहता जो दर्शकों में से बहुत से कह रहे थे—"कपड़े पहनकर यह लड़की पहचान में ही नहीं आती. 'किशन कन्हैया' की कम ड्रेस में क्या मस्त लगती है!" ग्लैमर गर्ल्स की यह ट्रेजेडी पुरानी है शिल्पा जी. दोष जमाने को दीजिए, सेक्रेटरी को नहीं.

...तेरा

...ने क्या कहा जाए? साहस ...न? समझदारी या ना-...आत्मविश्वास या भाग्य ...?

...ढंग से जब-तब ...आने वाली **सलमा** ...फिर से साइन करके ...निर्माताओं ने जान-...को चक्कर में डाल ...उनके 'कैलकुलेशंस' के ...काम लगाए जा रहे ...कहना है कि यह ...बटोरने की बच-...है. सलमा के ...गायिका-अभिनेत्री ...तो कब की चूर-...चुकी जिसके सहारे ...मुर्गा बनने की सोचना शुरू कर दिया था. 'यहां भरोसा है किस अभिनेत्री का?' सलमा को ही क्यों दोष देते हो?

इन हालात में उन दो निर्माताओं से बात कर लेना बेहतर लगा जिन्होंने सलमा को साइन किया है. एक हैं 'मीत मेरे मन का' के निर्माता-निर्देशक मेहुल कुमार जिन्होंने सलमा के साथ फीरोज खां की जोड़ी बनाई है और दूसरे हैं राजकुमार कोहली जिन्होंने 'पति, पत्नी और तवायफ' में उन्हें मिठुन की प्रेमिका के रूप में पेश करने का फैसला किया है.

सलमा: कसमे-वादे

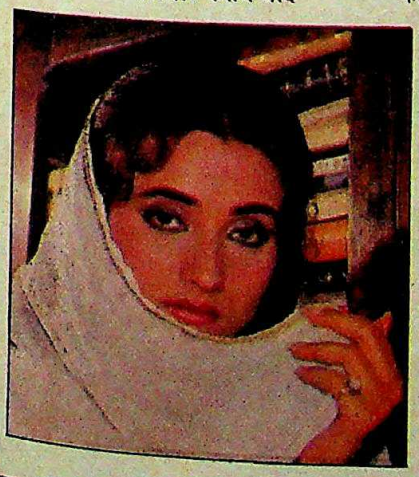

मजे की बात यह है कि दोनों का जवाब एक जैसा था—"सलमा ने कसम खाई है कि वह फिल्म छोड़कर न हिंदुस्तान से बाहर जाएगी, न नई शादी रचाएगी."

अब इस कसम को कौन सी कसम में शुमार किया जाए? एक से दस के बीच की गिनती तो बहुत पहले कम पड़ने लगी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ीनत: विदेश में देसी खुशबू

◆ अपने जमाने में भारतीय सिनेमा में पश्चिमी रंग भरने वाली **ज़ीनत अमान** अब पश्चिम में भारतीय खुशबू बिखेरने की तैयारी कर रही हैं. वे एक फ्रांसीसी कंपनी की नई इत्र को अपना नाम दे रही हैं. यह कंपनी भारतीय इत्र की याद ताजा करने के लिए अपनी नई इत्र बाजार में उतार रही है. श्रीलंका, दुबई और सुदूर पूर्व में इस इत्र के विज्ञापन का अभियान अगले महीने शुरू होने वाला है जिसमें ज़ीनत के खूबसूरत चेहरे की तस्वीरों का भी इस्तेमाल होगा. ज़ीनत कहती हैं, "इत्र का नाम पाने के लिए बेताब कई सुंदरियों में से मुझे चुना गया. मैं बहुत खुश हूं." लेकिन विडंबना यह है कि भारत के लोगों को ज़ीनत इत्र नहीं, खुद ज़ीनत से ही संतोष करना पड़ेगा.

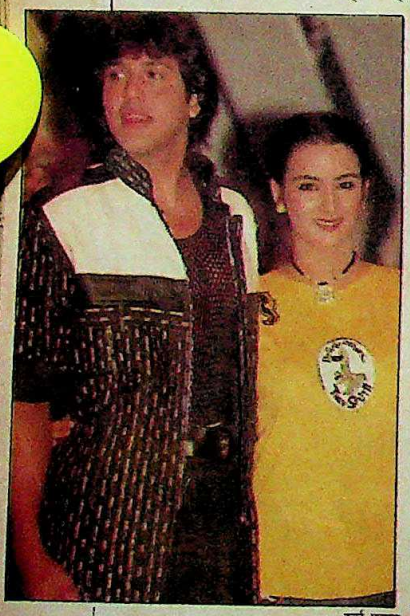

दुर्गा प्रसाद

◆ कभी ऐसे मौके भी आते हैं जब कला जीवन के सामने हार मान लेती है. छोटे कद की 20 वर्षीया **अंशु** अपना ही चित्र देखकर ठगी-सी रह गई. चित्र में उनके तेजाब से जले चेहरे को झीने दुपट्टे से ढका गया है. यह चित्र 41 वर्षीय अमेरिकी कलाकार **थॉमस ईज्ले** ने अंशु के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करने के लिए बनाया है. चार लड़कों ने अंशु के चेहरे पर तेजाब फेंक दिया था. वास्तव में दिल्ली की हवीआर्ट गैलरी में उनकी प्रदर्शनी भारतीय नारीत्व के प्रति श्रद्धा पुष्प जैसी ही है. ईज्ले भारत आए थे अपनी एक किताब पूरी करने के लिए, मगर यहां रुककर चित्रकारी करते रहे. वे कहते हैं, "भारतीय नारी दबाव में होती है तो देवी का रूप बन जाती है. और आप किसी देवी के साथ ऐसा कुकृत्य कैसे कर सकते हैं?" उनके इस चित्र को जो 15,000 रु. मिले उन्हें उन्होंने अंशु के इलाज के लिए दान कर दिया.

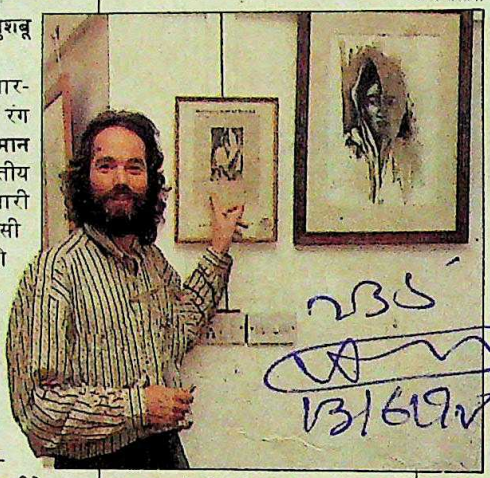

शरद सक्सेना

अपने चित्रों के साथ ईज्ले

◆ यह विशुद्ध बंबइया फार्मूला फिल्म की कथा ही है. इसमें हीरो भी हैं—**चंकी पांडे** और **गोविंदा**; हीरोइन भी है—**फरहा**; और कमेडियन भी है—**जॉनी लीवर**. और इसमें रहस्य-रोमांच भी है. ये चारों दुबई के हयात रीजेंसी होटल में किसी माफिया सरगना, मान लीजिए दाऊद इब्राहीम, द्वारा दी गई पार्टी में शरीक हुए. यह खबर बंबई के प्रतिद्वंद्वी माफिया सरगना अरुण गावली को लगती है तो वह इन चारों की हत्या करने की ठान लेता है. लेकिन गावली गिरोह के चार गुंडे पुलिस के हाथों में पड़कर सारा खेल बिगाड़ देते हैं. इधर, इन चारों सितारों को अपने सितारे गर्दिश में दिखते हैं. वे पुलिस के साये में शूटिंग वगैरह में जाने लगे हैं. चंकी ने सफाई दी, "मैं एक शरीफ आदमी हूं. सबके साथ मैं शराफत बरतता हूं. कोई मेरी हत्या क्यों करना चाहेगा?" उनकी सफाई पर सबको भरोसा है ही, सिर्फ गावली के अलावा.

गोविंदा और फरहा

अपने मूर्तिशिल्प के साथ [illegible] कपूर (इनसेट): प्रतिष्ठा[illegible]

◆ मई आते ही **अनीश कपूर** वेनिस तक शिलाएं ढोना शुरू कर देंगे. ये पत्थर किसी खदान के नहीं हैं जो उन्हें व्यापार में मालामाल कर दें. ये उनके मूर्तिशिल्प हैं जो यूरोप की सर्वाधिक प्रतिष्ठित कला प्रदर्शनी 'वेनिस बाएनियल' में रखे जाएंगे. 36 वर्षीय कपूर इस प्रदर्शनी में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व करेंगे. दून स्कूल के छात्र रह चुके कपूर 19 वर्ष की उम्र में ही कला की शिक्षा लेने ब्रिटेन के कला विद्यालय में दाखिल हो चुके थे. इस मूर्तिकार पर भारत की छाप तो है मगर वे उस परंपरा के भी अंग बन चुके हैं जिसने एप्स्टीन, मूर और एंथनी कारो जैसे मूर्तिकारों को गढ़ा. कपूर मानते हैं कि उनमें संस्कृतियों का जो समागम हुआ है उसने उन्हें सफल बनाया है, "मुझे जब एहसास होता है कि मैं एक भारतीय हूं जो ब्रिटेन में रह रहा है तब मुझे अपनी स्थिति का बोध हो जाता है." इस स्थिति का [illegible] पक्ष यह है कि उनकी कृ[illegible] 90 हजार पाउंड से ज्यादा [illegible] पा जाती हैं.

◆ नाइजीरिया से पढ़ाई के लिए भारत आए **चीमा** [illegible] का पूर्ण भारतीयकरण हो [illegible] पढ़ाई तो खैर अपनी जग[illegible] फुटबाल के मैदान में वे [illegible] और पिछले दिनों उन्हें [illegible] सीजन के लिए प्रसिद्ध [illegible] टीम की कप्तानी का ता[illegible] दिया गया. कलकत्ता की फुटबाल टीम के पहले [illegible] कप्तान बनने का गौरव उन्[illegible] हुआ. खबर है कि मोहन [illegible] उन्हें इस वर्ष अपनी टीम [illegible]

ओकेरी: भारतीयकरण [illegible]

के लिए 5 लाख रु. की [illegible] थी. लेकिन उन्होंने इसे [illegible] ओकेरी कहते हैं, "[illegible] करेंगे पर कह नहीं सकते [illegible] ट्रॉफियां जीत ही [illegible] कलकत्तावालों का दिल [illegible] जीत ही लिया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15 जुलाई 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

रावनी फिल्में: दहशत का सस्ता धंधा
न्यायपालिका: रखवाले ही कटघरे में
उ.प्र.: आस अब ऊपर वाले से

श्रीलंका
विनाशकारी संघर्ष

श्रीलंकाई सेना के कब्जे में आया मुक्ति चीतों का ठिकाना

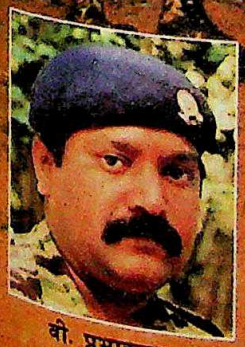

वी. प्रभाकरन
एलटीटीई नेता

लगातार भयंकर भूलें करके मुक्ति चीतों ने लड़ाई की आफत मोल ले ली और भारत की हस्तक्षेप न करने की नीति पर दबाव बढ़ा दिया

मौके से भेजी रिपोर्ट

आर. प्रेमदास
राष्ट्रपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For the potential to weigh as much as 60 tons
to the possibility of weighing 0.01 mg,
organisations like B.A.R.C., Bajaj, Cadburys,
Cipla, Colgate, Dr. Beck, Glaxo, Godrej, L&T,
Parle, Reserve Bank, Tata, Tribhuvandas
Bhimji Zaveri ··· depend on

ATCO®

THE TRUTH BY WEIGHT

ATCO INDUSTRIES LIMITED

ENGINEERING □ ELECTRONIC WEIGHING □ INSTRUMENTATION

HEAD OFFICE: 6A, Lalwani Industrial, Estate, 14, G.D. Ambekar Road,
Wadala, Bombay - 400 031. ✆ 4121295 □ 4121298 □ 4121982 □ 4122258
Telex: 011 - 73944 ATCO IN □ Fax: 022 4140250

BRANCHES : ■ B-5/158 Safdarjung Enclave, 1st Floor, New Delhi - 110 029. ✆ 608749 ■ 41, T. Nagar, Ramanathapuram Post, Coimbatore - 641 045. ■ Door No. 45, I Main Road, C.I.T. Nagar, Nandanam, Madras - 600 035. ✆ 455942 □ 451986

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनाशकारी संघर्ष

श्रीलंका सरकार और मुक्ति चीतों के बीच लगभग घमासान के बाद इस द्वीप में शांति स्थापित होने की सारी उम्मीदें धराशायी हो गई हैं और हालात फिर पहले जैसे होते जा रहे हैं. सशस्त्र सेनाएं शहरी क्षेत्रों पर और मुक्ति चीते ग्रामीण क्षेत्रों पर काबिज हैं.

आवरण कथा 16

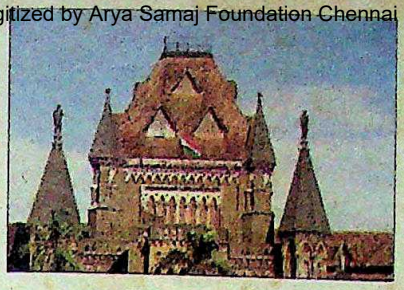

रखवाले ही खड़े कटघरे में

न्यायाधीशों से संबद्ध घोटालों से बंबई हाईकोर्ट में बावेला मचा ही, पूरे देश की न्यायपालिका में भी उसके धक्के महसूस किए गए. भाई-भतीजावाद के मामले प्रकाश में आने से न्यायपालिका की विश्वसनीयता पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया है.

खास रपट 24

वापसी की राह कठिन

यह घटना कांग्रेस की वापसी में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकती थी. लेकिन राजीव की भारत यात्रा के ठोस परिणाम निकलते नजर नहीं आते. उनकी सभाओं में भीड़ जरूर उमड़ती लेकिन स्पष्ट नीति के अभाव में इसे प्रभावित नहीं किया जा सका.

खास रपट 30

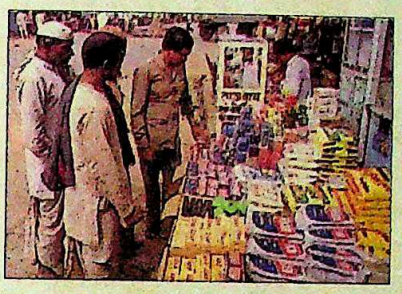

हर माल का खरीदार मौजूद

कुछ बढ़ती आमदनी और कुछ टीवी प्रचार का बढ़ता असर. नतीजा यह कि उपभोक्ता सामान के प्रति भारत के ग्रामीणों की ललक लगातार बढ़ती जा रही है और इसे पूरा करने के लिए कंपनियां विशेष विभाग खोलती जा रही हैं.

कारोबार 50

रिश्तों के मजबूत धागे-डोरे

कर्नाटक के कोलार जिले का मरापनहल्ली नरसम्मा परिवार देश का सबसे बड़ा संयुक्त परिवार है. अपने आकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस परिवार ने सामूहिक स्नाना-घर जैसी अनोखी विधियां खोज ली हैं. परिवार की जीवन शैली पर रोचक रपट.

छाया लेख 66

दहशत का सस्ता धंधा

अब फिल्म निर्माता डरावनी फिल्मों के निर्माण में उतरते जा रहे हैं जो सस्ती तो बनती ही हैं, खासी भीड़ भी खींचती हैं. लेकिन अब जैसे-जैसे ज्यादा निर्माता इस क्षेत्र में आ रहे हैं फिल्मों की दहशत, सेक्स और संगीत में डूबकर कम होती जा रही है.

सिनेमा 77

अगले पन्नों पर

कसौटी 8
तेवर 9
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
श्रीलंका: विनाशकारी संघर्ष 16
खास रपट
न्यायपालिका:
रखवाले ही खड़े कटघरे में 24
राजीव गांधी: वापसी की राह कठिन ...30
आजकल
देवीलाल: दूसरों के इलाज में जुटे 33
राजस्थान: बदला लेने का जुनून 34
अरुण नेहरू: टेढ़ी भृकुटि 36
जम्मू-कश्मीर: वही पिटे नुस्खे 37
उ.प्र.: दोस्त, दोस्त न रहा 38
चारा मशीन घोटाला:
अभी चारा मिलता रहेगा 40
कार्टून कोना 42
जगबीती
कैनिष्क दुर्घटना: दुःस्वप्न का दुष्चक्र 43
कारोबार
ग्रामीण बाजार:
हर माल का खरीदार मौजूद 50
व्यापार चक्र 54
औरंगाबाद: बढ़े और लड़े 55
पेइको: किस्मत बदली 56
विधि-विधान
बिहार: इंसाफ के दर पे दस्तक 58
अपराध
मध्य प्रदेश: नकल में खपाई अकल 60
विशेष लेख
उ.प्र.: इनका नहीं कोई तारणहार 62
छाया लेख 66
खेलकूद
बीएमडब्ल्यू हॉकी: जान लौटने लगी 74
भाओस: सियासी खेल 75
पास-पड़ोस
नेपाल: दूर हुए गिले-शिकवे 76
सिनेमा
डरावनी फिल्में:
दहशत का सस्ता धंधा 77
परदे के उस पार 82
आरपार 85
स्वास्थ्य
ग्राहक की सुरक्षा:
कायदे से होगा इंतजाम 86
कहानी 88
किताबें 92
चर्चित चेहरे 96

आवरण: श्याम टेकवानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

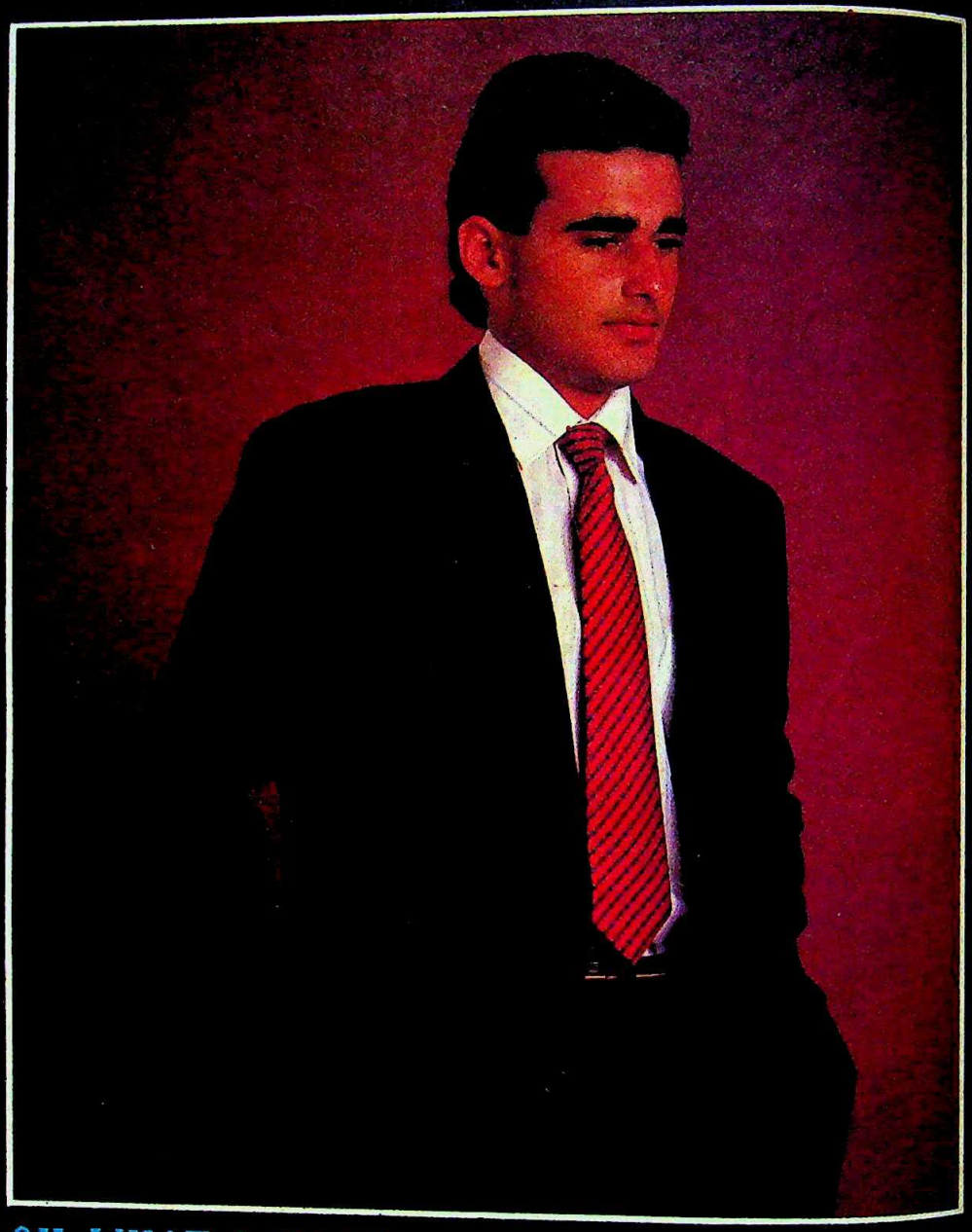

OH, WHAT A MAN !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

AMADEUS
Premium Worsted Suitings

Created by
Modern
Suitings Limited
Where excellence is forever in fashion

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

What a great idea !
Wow ! What a change !
Contoured for comfort
and Convenience.

A dream come true !
Lovely idea ! Soft,
gentle and non-
restrictive luxury.

Dora®
Cute
Regd. Patent No. 160601
So light, you would think
you have not worn a thing !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

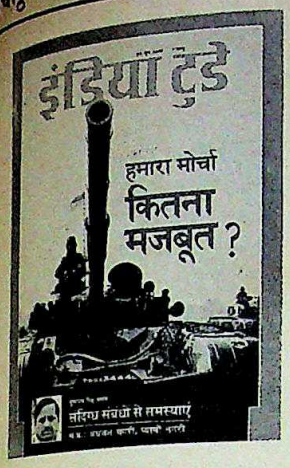

विचारणीय प्रश्न

आवरण कथा 'हमारा मोर्चा कितना मजबूत' (30 जून) ने अत्यधिक प्रभावित किया. यदि भारत को 27 करोड़ रु प्रतिघंटा खर्च उठाकर विजय भी मिले तो क्या उस विजय के परिणाम सुखद होंगे? यह एक विचारणीय प्रश्न है. जो विशाल धनराशि विकास कार्यों में खर्च करके आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकती है, उसे युद्ध की आतिशबाजी में खर्च करना क्या उचित है?

—कार्तिक अधिकारी, नई दिल्ली

शासन भी करें

आवरण कथा 'लाजवाब तिकड़मबाज' (15 जून) वी.पी. सिंह के व्यक्तित्व की गहराइयों में झांकने का सफल प्रयास है. निस्संदेह उन्हें अपने विरोधियों को एक-दूसरे के खिलाफ इस्तेमाल करने, अपनी गलतियों को औरों के सिर मढ़ने, दूसरों के कंधों पर बंदूक रखकर शिकार करने जैसी विधाओं में महारत हासिल है. लेकिन इन सात महीनों में एक कुशल शासक के तौर पर वे हर मोर्चे पर नाकाम रहे हैं.

—संदीप सौरभ, मुरादाबाद (उ.प्र.)

■ तिकड़मबाजी से एक राजनैतिक दल चल सकता है और प्रधानमंत्री का पद भी सुरक्षित रखा जा सकता है किंतु देश नहीं. देश को चलाने के लिए ठोस निर्णय लिए जाने चाहिए. लेकिन वह व्यक्ति जो उप-प्रधानमंत्री के नैतिक एहसान से, इमाम बुखारी के वोट बैंक से और दो परस्पर विरोधी विचारधारा वाले दलों से समर्थन पाकर प्रधानमंत्री पद पर पहुंचा हो, उससे ऐसे किसी निर्णायक परिणाम की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती.

—अनिल मलिक, उज्जैन (म.प्र.)

■ प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह को सातवें आसमान पर बिठा दिया है आपने. लेकिन वे ऐसी संवेदनशील और नाजुक परिस्थितियों में बैठकर इतने कटु राजनैतिक निर्णय ले रहे हैं कि संतुलन जरा-सा डिगा नहीं कि भरभराकर धराशायी होंगे. लेकिन कब तक अपने तिकड़मी दिमाग से वे सबको तुष्ट रख पाएंगे?

—नरेंद्र एस. परमार, अहमदाबाद (गुजरात)

■ वी.पी. सिंह लाजवाब तिकड़मबाज तो हैं ही, वे समझौते करके चलने में माहिर भी हैं. उन्होंने अब तक की राजनीति स्वार्थी दृष्टिकोण से ही की है. दरअसल वे भाजपा और दूसरी सांप्रदायिक ताकतों को खुश रखके स्वयं सत्ता में रहना चाहते हैं.

—रत्नाकर फालके, शोलापुर (महाराष्ट्र)

■ कश्मीर, पंजाब समस्याओं के खत्म होने के आसार दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहे हैं. महंगाई और बेकारी नई बुलंदी पर पहुंच रही है. आतंकवादी रक्तबीज की तरह बढ़ते ही चले जा रहे हैं. मगर देश का प्रधानमंत्री 'तिकड़मभरी राजनीति' करके अपनी गद्दी की रक्षा करने में लगा है. जनता ने किसी चमत्कार की आशा से ही इन्हें सत्ता सौंपी थी. अब यदि वांछित परिणाम न मिले तो शायद इनका हश्र राजीव से भी बुरा होगा.

—एल.पी. विश्वकर्मा, रायपुर (म.प्र.)

■ वी.पी. सिंह कुशल राजनीतिक तो हैं ही, बहुत दूर तक सोच समझकर चाल चलने वाले निष्णात खिलाड़ी भी हैं. तमाम हमलों को बेफिक्री से झेलने वाले निर्मम कूटनीतिज्ञ और कभी भी सीधी भिड़ंत के पक्ष में नहीं रहने वाले इस व्यक्ति ने आज सिद्ध कर दिया है कि अत्यंत विरोधाभासी स्थितियों में भी समानता के कुछ बिंदु होते हैं. कार्रवाई के लिए भी वे सही मौका चुनते हैं.

—जयंत कुमार चौधरी, कटिहार (बिहार)

पाठकों से

सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार की योजना अगले अंक से समाप्त की जा रही है. इसके तहत पाठकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया. हम उनके आभारी हैं. आशा है पत्रिका के विभिन्न लेखों पर आपकी प्रतिक्रियाएं हमें पहले की तरह मिलती रहेंगी और उनके आधार पर हम पत्रिका में और निखार लाने का प्रयत्न करते रहेंगे.

—संपादक

स्पष्टीकरण

'टटलर' को दिए मेरे इंटरव्यू को 'इंडिया टुडे' (15 जून) ने उठा लिया. मेरे हवाले से यह लिखा गया कि "सदियों से पठान दक्षिण जाकर भारतीय औरतों को हासिल करते आए हैं."

मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि मैंने कभी ऐसी बेवकूफाना टिप्पणी नहीं की है. इंग्लैंड पहुंचने पर मैंने 'टटलर' पत्रिका से पूछताछ की तो उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि अगले अंक में वे उस बयान का खंडन छाप देंगे.

—इमरान खां, लंदन

प्राथमिकताओं की कसौटी

कसौटी के अंतर्गत 'प्रतिरक्षा की प्राथमिकताएं तय हों' सामयिक और सार्थक लगा. ये प्राथमिकताएं राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति, राष्ट्रीय संसाधन, विदेश नीति और राष्ट्रीय लक्ष्य को ध्यान में रखकर निर्धारित की जानी चाहिए. राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद का गठन एक सही कदम है. बशर्ते इसके सदस्य व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को छोड़ दीर्घकालीन राष्ट्रीय सुरक्षा की मूल भावना को समझ सकें.

—अंकित वर्मा, नई दिल्ली

वर्ष: 4, अंक: 17, 1-15 जुलाई 1990

■ संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ■ मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के.9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्ठा की सजा

'सारे किए-धरे पर पानी' (15 जून) पढा. विडंबना है कि हमारे देश में कर्त्तव्य-निष्ठ होने की ऐसी ही सजा मिलती है, जैसी जगमोहन को मिली है. मात्र 3-4 माह में ही राज्यपाल की हैसियत से जो काम उन्होंने कर दिखाया, उससे देश-द्रोहियों और आतंकवादियों में सनसनी फैल गई. जम्मू-कश्मीर में धीरे-धीरे शांति स्थापित होने लगी थी, परंतु खेद है कतिपय राजनीतिबाजों को उनका यह प्रयास रास नहीं आया.

—शंकर चौहान 'निरीह,' देपालपुर (म.प्र.)

■ जगमोहन हमेशा ही विवादास्पद प्रशासक रहे हैं. उन्होंने मनपसंद राजनैतिक दल के हितों को हमेशा लोगों के हितों से ऊपर रखा है. पहले दिल्ली और फिर जम्मू-कश्मीर के अपने दोनों कार्यकाल में उन्होंने ऐसा ही किया. मीरवाइज़ फारूक की हत्या उग्रवादियों की गंभीर गलती थी जो खुद उन्हें घाटी में कमजोर कर सकती थी. मगर सरकार की गलती ने उग्रवादियों को अपनी कमजोरी को मजबूती में बदलने का मौका प्रदान किया. राज्यपाल पद से जगमोहन का हटना और सक्सेना का उनकी जगह लेना अगर मात्र व्यक्तियों की तब्दीली तक ही सीमित रहा तो कश्मीर समस्या का हल नामुमकिन लगता है. यह समस्या कभी बातचीत के बिना हल नहीं होगी.

—होशियार सिंह, सांबा (जम्मू-कश्मीर)

प्रथम पुरस्कार

स्तब्ध रह गया मैं तो 15 जून का अंक देखकर. मुखपृष्ठ पर सुदूर निहारती अनुभवी आंखें, परिपक्व चेहरा, नवंबर '89 आम चुनाव का नायक और 'लाजवाब तिकड़मबाज' का शीर्षक. मनन करना चाहिए हमें कि जिस पदच्युत व्यक्ति को हमने पलकों पर बिठाकर फुटपाथ से प्रधानमंत्री पद तक पहुंचाया, जिसके लिए जनमानस के दिलों में कभी स्वतःस्फूर्त उत्साह लबालब भरा हुआ ठाठें मारता रहा हो, अंतःप्रेरणा से जिसके कंधों से कंधे भिड़ाकर हमने परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तानाशाही से जंग लड़ी और जीती, उसी व्यक्ति को 'लाजवाब तिकड़मबाज' कहना पड़े तो कुछ वाजिब कारण अवश्य ही होंगे.

कैसे भूल जाएं हम कि किस तिकड़म से वी.पी. सिंह ने, जो जनता के चुने हुए तिकड़मी प्रधानमंत्री थे, महत्वाकांक्षी ताऊ की बैसाखी का सहारा लेकर, चंद्रशेखर को तिकड़मी राजनीति से धता बताकर प्रधानमंत्री पद की शपथ ली. अभी वी.पी. सिंह जनता की उन कसौटियों पर खरे नहीं उतरे, जिनका वादा उन्होंने स्वयं जनता के बीच किया था.

—महेश कुमार पटवारी, सीरी (उ.प्र.)

यह कैसा परिवर्तन

'पांसा उलटा पड़ गया' (15 जून) पढ़कर लगा कि पुत्रमोह में अंधे हो चले ताऊ जिस तरह से जरा-जरा सी बात पर इस्तीफे का ब्रह्मास्त्र चलाने की धमकियां आए दिन दे रहे हैं उससे जनता दल की चूलें हिल रही हैं. बार-बार 'मैं किसी का आदमी नहीं हूं' का राग अलापने वाले बनारसी दास गुप्ता जिस तरह से ताऊ और उनके लाडले को नकेल थमाकर हरियाणा का नेतृत्व कर रहे हैं, उससे तो अच्छा था कि चौटाला त्यागपत्र ही न देते.

—शौकत हयात, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ लोकतंत्र में भी वंशानुगत राजतंत्र के स्पष्ट दर्शन होने लगे हैं. उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के इरादे मात्र अपने परिवार को राजनीति में सक्रिय रखने के संकेत देते हैं. महम में खूनी राजनीति खेलने पर भी देवीलाल धृतराष्ट्र रूपी मौन साधे रहे. एक बार पुनः कौरव रूपी सेना की विजय हो गई.

—बबीता द्विवेदी, इंदौर (म.प्र.)

बोया पेड़ बबूल का...

'बंदूकों का बंधक शहर' (15 जून) कराची में फैली जातीयता की आग खुद पाकिस्तान की सरकार की देन है. सच तो यह है कि जो पड़ोस के घरों में आग लगाता हो खुद उसका घर भला कैसे सुरक्षित रह सकता है. पाकिस्तान में पनपी 'कलाश्निकोव' संस्कृति अफगानिस्तान व भारत के खिलाफ तैयार की गई थी जिसकी वजह से कश्मीर व पंजाब में हिंसक वातावरण बना. पर यही कलाश्निकोव संस्कृति अब पाकिस्तान के गले की हड्डी बन गई है.

—चंद्रप्रकाश बुद्धिराजा, रोहतक (हरियाणा)

■ कराची की वर्तमान स्थिति बेनज़ीर के मुंह पर करारा तमाचा है. वे कश्मीर समस्या पर विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहती हैं पर जिस घमंड से उन्होंने कश्मीर में हस्तक्षेप शुरू किया उन्हें उसका जवाब कराची और सिंध के नरसंहार से मिल ही गया.

—रमेश कुमार, पानीतोला (असम)

■ कराची शहर अराजकता की अंधेरी सुरंग में दाखिल हो चुका है. जातीय दंगों के जुनून से पैदा हुआ यह सैलाब पृथकतावाद के खतरनाक रास्ते पर मुड़ चुका है. ऐसे में पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में उग्रवादी हिंसा और अलगाववाद को सक्रिय समर्थन देना 'राजनैतिक मूर्खता' ही है.

—राजकुमार जैन, भवानी मंडी (राज.)

द्वितीय पुरस्कार

कश्मीर में 'सारे किए-धरे पर पानी' फिरना सरकार की गलत और भ्रामक नीतियों का परिणाम है. ठोस दीर्घकालिक योजना को दृढ़ता और ईमानदारी से लागू करने के बजाए समय-समय पर नए फार्मूलों और अस्पष्ट व विरोधाभासी नीतियों के कारण कश्मीर रूपी जिस्म में अलगाववादी फोड़ा नासूर का रूप लेता जा रहा है. सामरिक दृष्टि से नाजुक और महत्वपूर्ण कश्मीर में अस्थिरता, सीमा पार से घुसपैठ, जनमानस की व्यथा और निरंकुश खौफ की निरंतरता, अपुष्ट सोच और अविकसित कूटनीतिक ज्ञान का परिणाम है. देश के हर राजनीतिक, कूटनीतिक और नागरिक को 'राष्ट्र-हित-सर्वोपरि' के नारे के तहत अपनी निःस्वार्थ सेवाएं कश्मीर, पंजाब तथा दूसरी अलगाववादी समस्याओं के हल के लिए अर्पित करनी होंगी अन्यथा वक्त हाथ से निकल जाने पर हाथ मलने के सिवा कुछ भी नहीं किया जा सकेगा.

—आर.पी. गोविंद, लुधियाना (पंजाब)

संरक्षक नहीं

'सरकारी राज से बड़ा डाकुओं का राज' (31 मई) में यह पढ़कर आश्चर्य और दुख हुआ कि संतोषा डाकू को मेरा संरक्षण प्राप्त है. हकीकत यह है कि बांदा में डाकू समस्या के खिलाफ मैं पिछले कई वर्षों से हर मोर्चे पर संघर्ष कर रहा हूं. विधानसभा में और बाहर, सभाओं और प्रेस के माध्यम से बराबर मांग कर रहा हूं कि बांदा को तत्काल सेना के हवाले कर दिया जाए ताकि इस समस्या से मुक्ति मिले. डकैतों का सबल विरोध करने के कारण उनका कोपभाजन भी मुझे बनना पड़ा है. डकैतों ने मेरे परिवार में हत्या और लूटपाट की वारदातें की हैं. वे मेरी हत्या के भी कुत्सित प्रयास कर रहे हैं.

—देवकुमार यादव, विधायक, लखनऊ (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकीर्ण हितों से ऊपर उठिए

सामरिक महत्व के दो राज्यों में अलगाववाद की चुनौतियों से जूझ रही सरकार इतने ही महत्व के छह दूसरे राज्यों में वैसी ही दमदार चुनौती झेल पाने का जोखिम कतई नहीं उठाना चाहेगी. पर सच तो यह है कि राजनैतिक लोभ संवरण न कर पाने के कारण सरकार अपनी कारगुजारियों से खुद को और देश को खतरनाक स्थिति की ओर धकेल रही है. फिर भी किसी के माथे पर कोई शिकन नजर नहीं आती.

हर सुबह अखबारों के मुखपृष्ठों पर पंजाब और कश्मीर में लोगों के मारे जाने की दुखद रिपोर्टों के साथ ही एक और अशुभ संदेश भी छिपा रहता है..और वह यह कि उत्तर-पूर्वी क्षेत्र धीरे-धीरे पर मजबूती से अस्थिरता के गर्त में डूबता जा रहा है. वह वक्त भी था जब यहां के जंगलों में दनदनाते विभिन्न कबीलों और विचारधाराओं के हजारों बागी भारतीय सेना के करीब 50,000 जवानों को छकाते रहे थे. यह बगावत दो दशकों से अधिक समय तक चलती रही. तब भारत की संवैधानिक और लोकतांत्रिक प्रक्रिया ने सशस्त्र कार्रवाई का सहारा पाकर उन्हें पराजित कर दिया. हालत यह है कि जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया कबीलाई गुरिल्लों को भारतीय संविधान की शरण में लाई, वही उन्हें फिर बीहड़ों में धकेल सकती है.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

दुर्भाग्य से अगर ऐसी नौबत आई तो इसकी मूल जिम्मेदारी राष्ट्रीय मोर्चा, खासकर जनता दल की होगी. पार्टी की ओर से राजनैतिक उदारता के दावों, बहुदलवाद के प्रति निष्ठा और राष्ट्रीय साझा सरकार में क्षेत्रीय पार्टियों की समान भागीदारी के सिद्धांत पर सहमति के बावजूद पूर्वोत्तर में वह अपनी पूर्ववर्ती इंका की तरह सत्ता के उसी पुराने मायाजाल में उलझ गई है. लोकतांत्रिक कायदे और परंपरा तो क्या, दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों की पूरी तरह अनदेखी करते हुए पार्टी ने इन छोटे मगर रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्यों में सत्ता हथियाना एकमात्र लक्ष्य बना लिया है.

मेघालय और नगालैंड में पार्टी दलबदल के जरिए अपनी सरकारें थोप ही चुकी है. मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश में इंका सरकारों को धकियाने की मुहिम भी जारी है. इन दो राज्यों में जनता दल का नाम भी नहीं हुआ करता था पर विपक्षी गुटों को जोड़कर पार्टी खड़ी कर ली गई. नगालैंड, मणिपुर और मेघालय में दलबदल को प्रोत्साहन दिया गया, ठीक उसी तरह जैसे पहले इंका किया करती थी. इतनी कसरत के बावजूद पार्टी ने आखिर क्या कमाया? नगालैंड में कुछ दिन चलकर गिर चुकी सरकार, मेघालय में आशंकाग्रस्त साझा सरकार और मिजोरम तथा अरुणाचल प्रदेश में कांग्रेस की डगमगाती सरकारें. राष्ट्रीय हित के हिसाब से इसका एक ही मतलब है और वह है अस्थिरता.

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और राष्ट्रीय महत्व के मामलों पर उनके सलाहकारों को समझ लेना चाहिए कि देश के दूरदराज तक में इंका का सफाया करने की उनकी चाह पूरी भले ही हो जाए मगर एक करोड़ से भी कम आबादी वाले राज्यों में पिछले दरवाजे से सत्ता पर काबिज होने से उन्हें कोई नेकनामी हासिल नहीं होगी. इस सबका खामियाजा क्या निकलेगा? कबीलाई समाज एक बार फिर राष्ट्रीय मुख्यधारा से कट जाएगा और भारतीय लोकतंत्र की प्रभावशीलता और औचित्य के बारे में भ्रम बढ़ेंगे.

दलबदलुओं की सरकारें कायम किए जाने से पूर्वोत्तर के अलगाववादियों के बरसों पुराने ये आरोप ही सही साबित होंगे कि भारतीय संविधान के तहत कबीलाई अल्पसंख्यकों का उद्धार नहीं होगा और भारत की सारी राष्ट्रीय राजनैतिक पार्टियां एक जैसी हैं. उनमें कोई अंतर नहीं है. कश्मीर और पंजाब की समस्याएं कई सबक सिखाती हैं. एक चुनाव में हेराफेरी ने ही कश्मीरी अलगाववादियों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि छल-कपट वाले लोकतंत्र के बजाए इस्लामी तानाशाही को क्यों न चुना जाए.

किसी को यह भ्रम नहीं पाल लेना चाहिए कि पूर्वोत्तर का अलगाववाद मर मिट चुका है. भूमिगत आंदोलनों के अवशेष अभी बाकी हैं. जनसमर्थन उन्हें इसलिए नहीं मिल रहा था कि लोगों ने दशकों लंबी लड़ाई से थकने के बाद भारतीय लोकतंत्र को प्रयोग में लाने का फैसला कर लिया था. अब 'भारतीय लोकतंत्र' से निराश होकर वे फिर अलगाववाद की शरण में जा सकते हैं. स्थिति भी अब पहले जैसी नहीं रहेगी. उस समय केंद्र के लिए कड़ी कार्रवाई करना संभव था भी. उसने सेना की 13 ब्रिगेडें और अर्द्धसैनिक बल वहां झोंक दिए थे. अर्द्धसैनिक बल बागियों से अभी भी लड़ रहे हैं पर इस क्षेत्र में नहीं, देश के एकदम दूसरे कोने में.

मगर सरकार कड़ी कार्रवाई करने का मन बना भी ले तो उसके पास इसके लिए संसाधन नहीं होंगे. शत्रु पड़ोसी से भिड़ंत की संभावना वाला कोई भी देश अपने दोनों कमजोर बाजुओं पर बड़े अलगाववादी आंदोलनों का जोखिम मोल नहीं ले सकता. वी.पी. सिंह को पूर्वोत्तर में अपनी पार्टी के लोगों की महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगानी होगी. उन्हें बर्र का छत्ता छेड़कर इन दूरदराज के राज्यों में अपनी पार्टी की सरकारें बिठाने की जरूरत नहीं है. इसके बदले उन्हें राजनैतिक उदारता दिखाते हुए राष्ट्रीय हितों को अपने संकीर्ण पार्टी हितों से ऊपर रखने की क्षमता प्रदर्शित करनी चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर.के. लक्ष्मण, नवभारत टाइम्स

• मैं अरसे से मूल्यों की राजनीति कर रहा हूं और किसी के कहने पर नहीं कर रहा हूं.
■ **रामकृष्ण हेगड़े**, *संडे आब्जर्वर*

• जो लोग मूल्यों के लिए जीते हैं, उन्हें उनके लिए मरने को भी तैयार रहना होगा.
■ **यशवंत सिन्हा**, जद सांसद, हेगड़े को इस्तीफा देने के लिए लिखे पत्र में

• मेरे आदर्श जगमोहन नहीं, महात्मा गांधी हैं.
■ **वीरेंद्र वर्मा**, पंजाब के राज्यपाल, *पांचजन्य*

• यदि वी.पी. सिंह कहें तो क्या मुझे डूब मरना चाहिए.
■ **देवीलाल**, प्रधानमंत्री से अपने मतभेदों पर, दांतीवाड़ा (गुजरात) के संवाददाता सम्मेलन में

• संजय गांधी ने मेरा इस्तेमाल नहीं किया बल्कि मैंने संजय का इस्तेमाल किया.
■ **जगमोहन**, *नवभारत टाइम्स*

• 'इंडियन एक्सप्रेस' की कुछ मनोवैज्ञानिक समस्या है. वे लोग मेरा नाम शामिल किए बिना कोई रिपोर्ट छाप ही नहीं सकते.
■ **चंद्रशेखर**, *द वीक*

• श्रीलंका की सेना का एक जवान भारतीय सेना के दस जवानों के बराबर है.
■ **रंजन विजेरत्ने**, श्रीलंका के रक्षा राज्यमंत्री, *जनसत्ता*

• भविष्य के प्रति मेरी कोई जिज्ञासा नहीं है.
■ **वी.पी. सिंह**, *ऑनलुकर*

• सत्तारूढ़ पार्टी अपना घर ठीक कर ले तभी यह सरकार पूरे पांच साल चल सकती है.
■ **लालकृष्ण आडवाणी**, कलकत्ता के संवाददाता सम्मेलन में

• हम हिंदुस्तान में हिंदी का माहौल बना रहे हैं.
■ **मुलायम सिंह यादव**, *द टेलिग्राफ*

• मैं खेल मंत्रालय से अनुरोध करूंगा कि इन लड़कों (भारतीय क्रिकेट टीम) को ओलंपिक में भेज दिया जाए. वहां वे मैराथन या किसी और स्पर्धा में पदक तो जीत ही लेंगे.
■ **कीर्ति आजाद**, *स्पोर्ट्स वर्ल्ड*

• यदि लड़ाई छिड़ गई तो मैं अपना सबसे छोटा मिनी स्कर्ट पहनकर युद्ध के मोर्चे पर मनोरंजन करने पहुंच जाऊंगी.
■ **पूजा बेदी**, *स्टारडस्ट*

• 'जहरीले' में भी मैंने लड़के की भूमिका निभाई पर मुझे उसमें अपनी सेक्सी टांगों के प्रदर्शन की जरूरत नहीं पड़ी.
■ **चंकी पांडे**, *फिल्मफेयर*

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

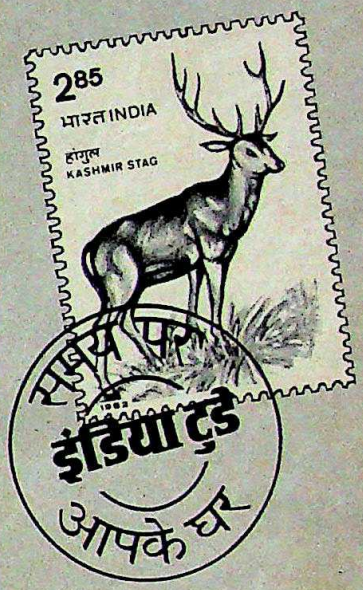

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे — नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल-खेल में

● गांधी परिवार के तरुण सदस्य हमेशा अपने सुरक्षा कर्मचारियों को गंभीर दायित्वों से अवकाश देकर बैडमिंटन में भागीदारी जैसे मनबहलाव के

अवसर देते रहे हैं. श्रीमती गांधी के जमाने में संजय और मेनका अपने अंगरक्षकों के साथ बैडमिंटन खेला करते थे. अब राजनैतिक शुरुआत के लिए यह आवश्यक तत्व बन गया प्रतीत होता है. राजीव गांधी के बेटे राहुल ने भी बैडमिंटन को उसी उत्साह के साथ अपना लिया लगता है. और इस पसंदीदा खेल में उनके भी साथी उसी सेवा के लोग हैं जिनके साथ उनके चाचा-चाची खेला करते थे.

वस्तुतः मछली के शिकार और निशानेबाजी के बाद राहुल के नए खेल शौक का स्थान भी कुछ राजनैतिक महत्व रखता है. अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) समिति के 24, अकबर रोड कार्यालय के विशाल लॉन में बैडमिंटन कोर्ट हाल ही में बनवाया गया है. और राजीव के सत्ता में न रहने के बाद राहुल के लिए साथियों की कमी नहीं रही है. हर शाम, पार्टी मुख्यालय की कार्रवाइयों को प्राणवान बनाने के लिए वे अपने पिता के सुरक्षा कर्मचारियों को साथ खेलने के लिए जमा कर लेते हैं. यह स्थान राजीव के सरकारी आवास 10, जनपथ के ठीक पीछे है. खबर है राहुल किसी अमेरिकी विश्वविद्यालय में दाखिला लेने जा रहे हैं, जहां खेलों में दक्षता का भी अपना महत्व है. बैडमिंटन से उनको यह लाभ मिलेगा ही.

अपने खोलेंगे पोल

● दो साल पहले, अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) समिति ने 'कांग्रेस वीकली' और 'कांग्रेस साप्ताहिक' की शुरुआत की. उद्घाटन की औपचारिकता खुद राजीव गांधी ने पूरी की थी. लेकिन पिछले चुनाव में पार्टी की हार के बाद स्वभावतः प्राथमिकताएं बदल गईं. जनवरी से पार्टी के ये दोनों प्रकाशन बंद कर दिए गए.

करीब 50 कर्मचारियों को न तो कार्य समाप्ति का नोटिस दिया गया और न उन्हें मुआवजा ही मिला. इसके बजाए उनसे कह दिया गया कि पार्टी दिवालिया हो गई है. कर्मचारी अब धमकी दे रहे हैं कि वे कम महत्व के कामों पर पार्टी द्वारा खर्च किए गए लाखों रु. की बात सबको बता देंगे. अगर पार्टी राजनैतिक दिवालिएपन की

सभी कार्टून: अजीत नैनन

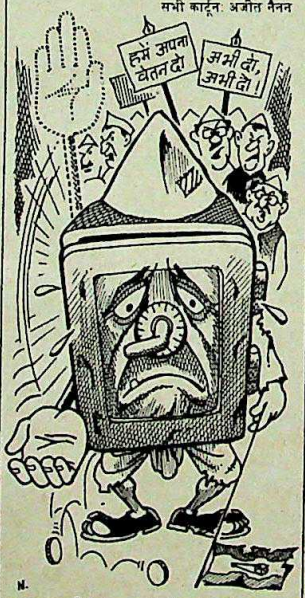

बात नहीं कह रही है, तो फिर यह ठीक ही है.

चलेगी तो कब तक

● नागर विमाननमंत्री आरिफ मुहम्मद खां खुद को सरकार में सबसे दुखी व्यक्ति के रूप में देखते हैं. दूसरों के साथ घुलने-मिलने में दिलचस्पी लेने वाला यह व्यक्ति

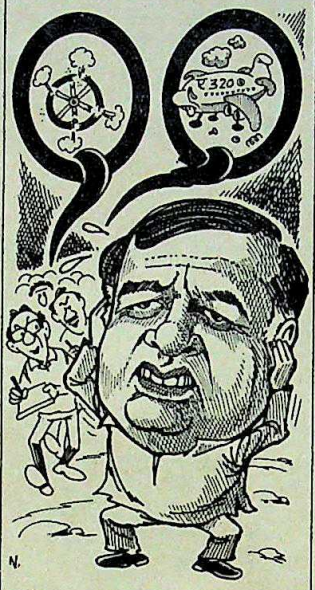

अब मिलनसारिता को अग्निपरीक्षा जैसा महसूस करने लगा है. कारण, जैसा कि वे खुद बताते हैं, यह है कि इन दिनों वे जहां भी जाते हैं, उनसे दो नपे-तुले सवाल पूछे जाते हैं, "आप क्या सोचते हैं, यह सरकार कब तक चलेगी?" और "एअरबस (ए-320) कब तक जमीन पर खड़ी रहेंगी?"

आरिफ ने भी अब नपा-तुला जवाब तैयार कर लिया है. एअरबस संबंधी सवाल से वे पहले निबटते हैं. बहरहाल, पहले सवाल पर वे कहते हैं कि उनके पास कोई जवाब नहीं है क्योंकि वे खुद भी नहीं जानते कि राष्ट्रीय मोर्चे की यह सरकार कितने दिन चलेगी. इंका से टूटकर वी.पी. सिंह के नजदीक जुड़ने वाले जनमोर्चा समूह के लोगों में आरिफ के महत्व को देखते हुए उनके उत्तर का निहित अर्थ हो सकता है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की [illegible] भी जल्दी ही ए-320 जैसी [illegible] सकती है.

वर्तमान से बेखबर

● विदेश मंत्रालय की रफ्तार के मुकाबले दुनिया बदलने की गति कहीं ज्यादा मालूम होती है. पिछले पखवाड़े विदेश सचिव मुचकुंद दुबे की ओर से रोमानिया के विदाई ले रहे राजदूत को विदाई भोज दिया जा रहा था. निमंत्रण पत्र समय से जारी कर दिए गए थे. लेकिन अगली [illegible] सुबह मंत्रालय का परेशानहाल अधिकारी एक नया निमंत्रण लेकर पहुंचा और पहले निमंत्रण को वापस मांगने लगा. तारीख और कार्यक्रम स्थल वही होने के कारण असमंजस में पड़े आमंत्रित लोगों ने जानना चाहा कि [illegible] पुराना निमंत्रण पत्र वापस लेने पर क्यों तुला हुआ है. अधिकारी ने कोई ऐसा-वैसा ही बहाना बनाया लेकिन निमंत्रण को बारीकी से देखने पर वास्तविक

कारण का पता चल गया. पहले पत्र में लिखा था कि [illegible] 'समाजवादी गणतंत्र रोमानिया' के राजदूत के सम्मान में है. यह देखते हुए कि रोमानिया ने स्वयं को 'समाजवादी गणतंत्र' लिखना महीनों पहले बंद कर दिया है, गलती पर्याप्त गंभीर है. हालांकि आशा करनी चाहिए कि यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि भारतीय विदेश नीति अब भी बस्ते में बंद है.

पुछल्ला

(सुना-सुनाया)

● हाल में हुए मुख्यमंत्री सम्मेलन के दौरान हल्के-फुल्के क्षणों में प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह बोले, "गरीबी रेखा या अमीरी रेखा पर विचार व्यर्थ है क्योंकि जिस 'रेखा' को हम लोग चाहते हैं, हमारी पहुंच से बाहर है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जीवन का दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय जो आप दोनों को मिलकर लेना होगा

कोहिनूर

आप दोनों ने एक दूसरे का हो जाने व जीवन के उतार-चढ़ाव में साथ निभाने का निर्णय ले लिया है। अब अपने जीवन का दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने का आप दोनों के लिए यही समय है। आप दोनों को संतान व अन्य बढ़ती ज़िम्मेदारियों के दैनिक चक्र में बन्धने से पूर्व अपने आप को कुछ वर्ष देने होंगे। इसके लिए आपको आवश्यकता है एक ऐसे गर्भनिरोधक की जो आप दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलीभांति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

MAA COMMUNICATIONS 1162

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग !

उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू नहीं और तू नहीं

ढोल, शहनाइयों की धूम में नाचती-गाती बारात जब दुलहन के द्वारे पहुंची तो दूल्हे के मन में लड्डू फूट रहे थे. उसके दिमाग में अगली कुछ रातों से लेकर बाकी जिंदगी तक की कई योजनाएं

सभी कार्टून: अनिल शर्मा

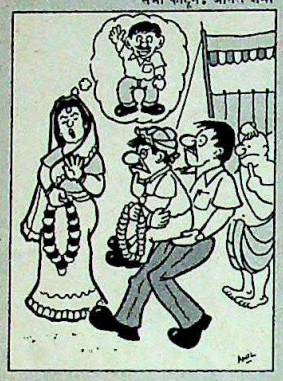

बन-बिगड़ रही थीं. दुलहन भी यही सब सोच रही होगी, यह सोचकर वह प्रसन्न हो रहा था. उसे क्या पता था कि दुलहन ने कुछ और ही करने की ठान रखी है. पर उसके ये सारे ख्वाब कुछ देर बाद ही रेत के महल की तरह

झुकना गवारा नहीं था सो, उसने वर को वरमाला पहनाने से इनकार कर दिया.

मिर्जापुर जिले के गोदावल गांव में पहुंची इस बारात के दूल्हे मियां दरअसल कद-काठी से कुछ बौने थे. सो दुलहन ने साफ इनकार कर दिया कि वह इस बौने को तो अपना पति किसी कीमत पर नहीं बनाएगी. घर के बड़े-बूढ़ों ने बहुत समझाया, तमाम खर्च और ताम-झाम की दुहाई दी, बीच बिरादरी नाक कट जाने का डर दिखाया पर लड़की टस-से-मस न हुई. उधर लड़के वालों को भी अपने खर्च और इज्जत की चिंता सता रही थी. इस बौने-से दूल्हे की दुखद कहानी का अंत तब हुआ जब उसके माथे का सेहरा खोलकर वहीं मंडप में बैठे उसके छोटे भाई के सर बांध दिया गया. और लड़की भी उससे शादी करने को राजी हो गई. दूल्हे मियां यह समझ नहीं पा रहे थे कि उनका छोटा भाई आखिर क्यों कर राजी हो गया. जब लड़की अड़ सकती थी तो वह क्यों नहीं अड़ा.

कोई अकेला मिल जाए

लड़की हसीं हो और आप तनहा, ऐसे में जब वह लड़की आपकी कार में लिफ्ट मांगे तो भला कौन इनकार करेगा. पर हैदराबाद की सड़कों पर आजकल इन्हीं हसीनाओं का आतंक है. और इनकी मार भी ऐसी है कि कोई उफ तक नहीं कर पाता.

हैदराबाद में आजकल ऐसी लड़कियों का बाकायदा एक गिरोह सक्रिय है. इन लड़कियों के काम करने का तरीका भी काफी शातिराना है. किसी सूनी सड़क पर वे वहां से गुजर रही कार को हाथ देकर रोकती हैं. बस खयाल इतना रखती हैं कि कार चालक पुरुष हो और अकेला हो. फिर वे कहीं जाने के लिए लिफ्ट मांगती हैं और कार चालक के बगल में जा बैठती हैं.

उस हसीना की नजरों से घायल कार वाले सज्जन को कुछ देर बाद अचानक ही पता चलता है कि असली घाव तो उन्हें अब झेलने पड़ेंगे. बड़े ही फिल्मी अंदाज में वह लड़की कार चालक

को धमकी देती है कि पास में कुछ भी है निकाल दो वरना शोर मचा दूंगी कि यह आदमी मेरी इज्जत लूट रहा था. उस आदमी को अगर अपनी इज्जत प्यारी होती है तो वह अपनी सारी धन-दौलत उस लड़की के हवाले कर किसी तरह उससे छुटकारा पाता

है. वह लड़की तो अपनी इज्जत लुटने की धमकी पर सब कुछ दे जाती है पर इन सज्जन की अपनी इज्जत इतनी प्यारी होती है कि वे न तो थाने में रपट लिखा सकते हैं और न किसी से कह सकते हैं.

हड़ताल हो तो ऐसी

वे बहुत तेजी और मुस्तैदी से काम कर रहे हैं. इतनी तेजी और मुस्तैदी से कि पिछले सारे रिकार्ड टूट गए हैं. और दूसरी तरफ अधिकारी हैरान-परेशान हैं कि इनका क्या किया जाए. जापान

में ऐसा होने की चर्चा तो उन्होंने सुनी थी लेकिन भारत में भी यह होगा, उन्होंने सोचा भी नहीं था.

कामचोरी, टालमटोल और अड़ंगा डालने के लिए मशहूर दिल्ली के केंद्रीय पासपोर्ट कार्यालय के इन कर्मचारियों पर न तो काम करने का कोई भूत सवार है, न उन्हें इसका इनाम मिलना है और न ही इसके लिए उनके सर पर कोई हंटर लेकर सवार है. ये कर्मचारी दरअसल हड़ताल पर हैं. जी हां, अपनी मांगों के प्रति सरकार की उपेक्षा से खिन्न होकर इन कर्मचारियों ने विरोध का यही तरीका अपनाया है.

पहले जिस पासपोर्ट को बनवाने के लिए लोगों को 45 दिन का इंतजार करना पड़ता था वही पासपोर्ट अब इस हड़ताल की कृपा से 20-25 दिन में ही बन जाता है. हड़ताल ने इन कर्मचारियों का आत्मविश्वास इतना बढ़ा दिया है कि अब वे दावा करने लग गए हैं कि अगर उनके दफ्तर में कर्मचारियों का अभाव दूर कर दिया जाए तो वे 10 दिन में ही पासपोर्ट बना सकते हैं. दूसरी तरफ अधिकारी धर्मसंकट में हैं कि अगर वे उनकी मांग मान लेते हैं तो काम फिर पुराने ढर्रे पर लौट आएगा और अगर नहीं मानते तो सारे कामों को तेजी से निपटाता उनका यह दफ्तर हड़तालग्रस्त बना रहेगा.

गाड़ी तभी चलेगी

दिन इतवार का हो और वक्त सुबह नौ बजे का तो जैसे पूरे देश को टेलीविजन पर आ रहे 'महाभारत' के अलावा कुछ और सूझता ही नहीं. सड़कें सुनसान हो जाना, चोरों की बन आना और बिजली कटने पर हायतौबा मचने के किस्से तो आम हैं. लेकिन इसके चक्कर में कहीं महाभारत का माहौल खड़ा हो जाता है तो कहीं हालात कुरुक्षेत्र के मैदान-से बनने लगते हैं. महाभारत की कथा आगे बढ़ने और इसकी लोकप्रियता बढ़ने के साथ अब तो अतिआवश्यक सेवाएं भी इसके प्रकोप से नहीं बच पातीं.

हाल ही में बंगलूर से दिल्ली जाने वाली कर्नाटक एक्सप्रेस अपनी पूरी गति से सही समय पर दौड़ी जा रही थी. इतवार का दिन था और गाड़ी जब भोपाल स्टेशन पर रुकी तो सुबह के नौ बजने वाले थे. स्टेशन पर गाड़ी जो रुकी तो रुकी ही रह गई. यात्री परेशान कि हुआ क्या है—इंजन खराब है या लाइन क्लियर नहीं है.

आखिर कुछ यात्रियों ने कारण पता लगाने की ठान ली. मालूम पड़ा कि गाड़ी के ड्राइवर महोदय गायब हैं. जब बहुत ढूंढा गया तो वे मिले स्टेशन में चल रहे टेलीविजन के सामने. यात्री अपनी मंजिल पर पहुंचने को जल्दी में थे और ये महोदय यहां

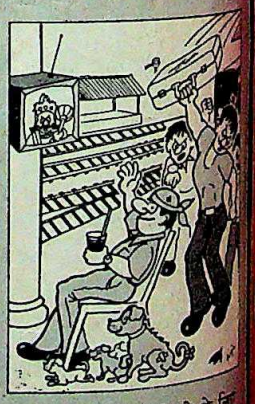

कुरुक्षेत्र का मोर्चा देखने के लिए धूनी रमाए हुए थे. यात्रियों ने उनके खिलाफ शिकायत भी दर्ज कराई लेकिन एक घंटे बाद जब 'महाभारत' खत्म हुआ, गाड़ी भी तभी रवाना हो सकी. 'महाभारत' की महिमा जो ठहरी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिस्टोक्रेट। बेहतरीन ज़िन्दगी का अन्दाज़।

*कॉकटेल : खास अॅपेटायजर के रूप में अन्नमिश्रण...

MAA COMMUNICATIONS-DEL-JL-007/A-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सॉकर की चकाचौंध सजीव व गतिमान

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़िलिप्स लाइटिंग

PHILIPS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेमारी दुनिया को चौंका दे.

फ़िलिप्स रोशनी की चकाचौंध.

युवा भारती क्रीड़ांगन, सॉल्ट लेक, कलकत्ता में फिलिप्स इंडिया द्वारा प्रस्तुत विश्व कोटि की लीनियर प्रकाश व्यवस्था

देखा! जैसे एक के बाद एक बिजली चमक जाये. जब विश्वविख्यात सॉकर महारथी एक दूसरे से टकरायें. हर दिल की धड़कनें तेज़ हो जायें. और इटली के खेल मैदानों और दुनिया भर के टेलीविज़न सेट पर खेल की धूम मच जाये.

एरीना विज़न: स्पोर्ट्स लाइटिंग समस्या का जगमगाता समाधान

न तीखी रोशनी से आँखें चाँधियाएँ, न बेढंगी परछाइयाँ नज़र आयें. सौम्य जगमगाती रोशनी. आपके लिए और खिलाड़ियों के लिए भी. क्योंकि एरीना विज़न ऐसी ही बेहतरीन क़िस्म की रोशनी फैलाये, जो कहीं बेहतर और स्पष्ट ढंग से चीज़ों को दिखलाये. सहज स्वाभाविक रंगरूप में. बेहतरीन क्लोज-अप लेना हो या स्लो मोशन में खेल दिखाना हो. और इन सारी खूबियों के साथ बिजली की बचत भी.

अपने यहां भी **फ़िलिप्स इंडिया** ने यही कमाल कर दिखाया है. ठीक आपकी ज़रूरत के मुताबिक प्रस्तुत लीनियर लाइटिंग सिस्टम. विशेष रूप से डिज़ाइन किये गये ल्युमिनेयर्स के साथ. भारत में सर्व प्रथम, सॉल्ट लेक कलकत्ता स्थित भव्य युवा भारती क्रीड़ांगन में स्थापित, जो दुनिया के सबसे बड़े छत युक्त क्रीड़ांगनों में से एक है.

या फिर भारत में पहली बार दूरदर्शन पर खेलकूद के सजीव रंगीन प्रसारण - एशियाड '82 - की याद कीजिए. विश्व कोटि की प्रकाश व्यवस्था प्रस्तुत करने के लिए विशेष रूप से फ़िलिप्स को ही चुना गया था. दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम और तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में. भारत के और कई खेल मैदानों में इसी प्रकार आदर्श प्रकाश व्यवस्था प्रस्तुत करनेवाला फ़िलिप्स आज एक प्रकाश-स्तंभ की तरह जगमगा रहा है.

तो यह है स्पोर्ट्स लाइटिंग में फ़िलिप्स की विश्वव्यापी कीर्ति. फ़िलिप्स लिडेक - लाइटिंग डिज़ाइन व इंजीनियरिंग सेंटर के तकनीकी कमाल का करिश्मा, जहां फ़िलिप्स अपनी विजय सदा-सर्वदा सुनिश्चित करते हैं.

स्पोर्ट्स लाइटिंग में अग्रणी. सारे संसार में.

1990 वर्ल्ड कप के अधिकृत आपूर्तिकार.

फ़िलिप्स

HTA 2697

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीलंका

विनाशकारी संघर्ष

ठीक तीन साल पहले भारतीय शांति सेना ने अपने दुस्साहसी अभियान के तहत विमानों से खाद्य सामग्री गिराकर उन्हें खूंखार श्रीलंकाई सेना के कोप से बचाया था. तमिल ईलम के लिए लड़ रहे मुक्ति चीते फिर उसी दशा में पहुंच गए हैं. और उन्हें बचाने वाला कोई नहीं.

पिछले पखवाड़े श्रीलंकाई सेना के निर्मम हमले से जब 15,000 छापामार जंगलों में वापस जाने के लिए मजबूर हो गए तो यह स्पष्ट हो गया कि मुक्ति चीतों के नेतृत्व ने दृढ़निश्चयी सरकार और पेशेवर सेना से भिड़ने की भूल की क्योंकि दक्षिण में [illegible] संगठन जनता विमुक्ति पेरामुना (जेवीपी) की चुनौती का खात्मा करने के बाद [illegible] और भी खून की प्यासी हो गई है. [illegible] पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की आलोचना के बावजूद भारत सरकार की चुप्पी [illegible]

सभी फोटो श्याम टेकवानी

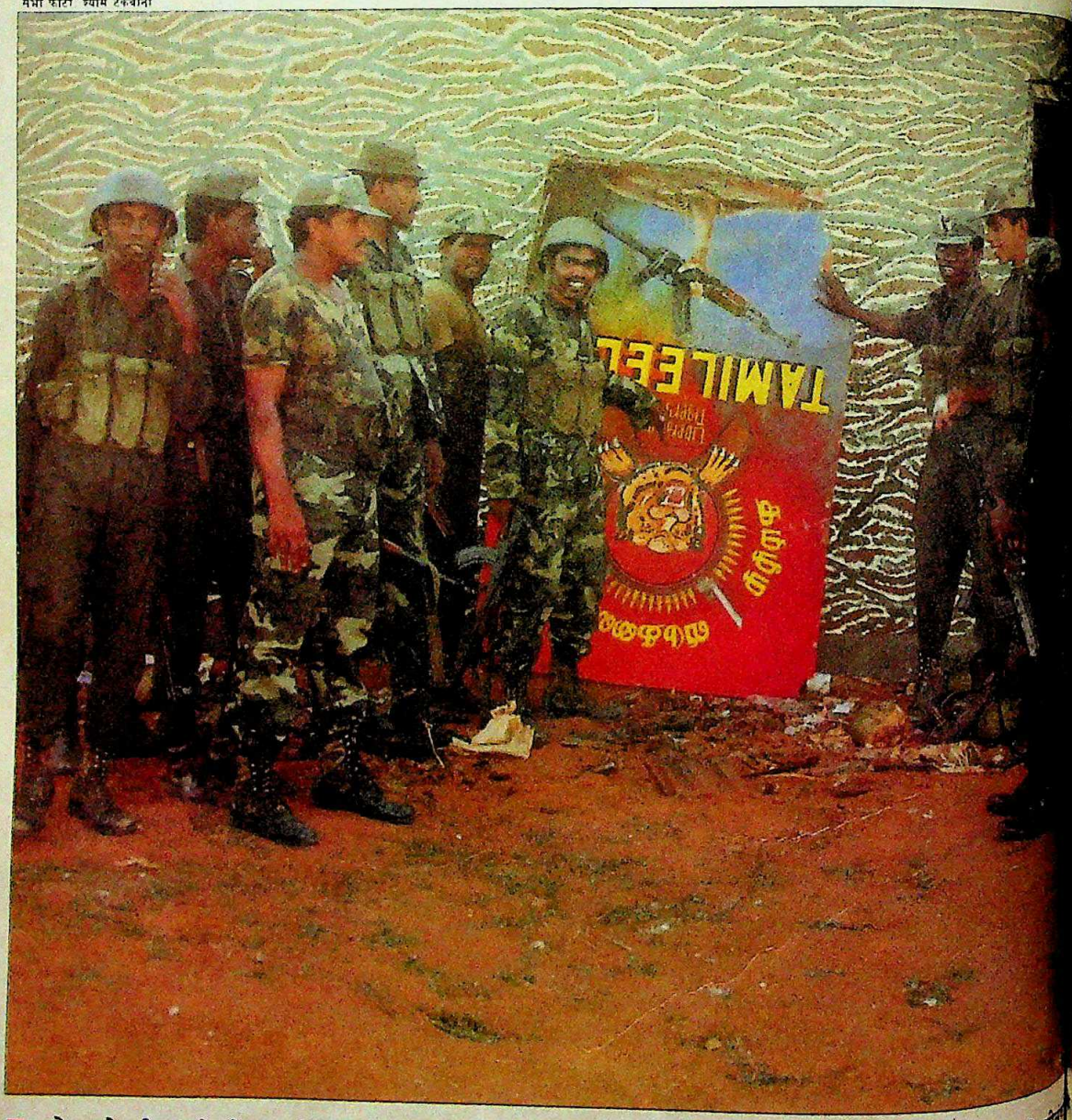

■ तोपखाने की भारी गोलाबारी ने तमिल चीतों को अपने शिविरों को भी त्यागने पर मजबूर किया है जिससे वे श्रीलंका [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीतों के सितारे गर्दिश में जाते दिखे. मुक्ति चीतों की बदकिस्मती गलत समय के चयन से और भी बढ़ गई. जिस समय उत्तर-पूर्व श्रीलंका में घमासान चल रहा था, उसी समय उन्होंने मद्रास में भी हमला कर ईलम पीपुल्स रिवोल्यूशनरी लिबरेशन फ्रंट (ईपीआरएलएफ) के 14 नेताओं की हत्या कर दी. भारत में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई और तमिलनाडु सरकार को उनकी मुश्कें कसने के लिए मजबूर हो गई. जंगलों में शरण लेना मुक्ति चीतों की असल राजनैतिक हार है. 1987 के पहले श्रीलंका सरकार के खिलाफ 'मुक्ति युद्ध' और उसके बाद शांति सेना के खिलाफ अभियान के उलट मौजूदा लड़ाई में मुक्ति

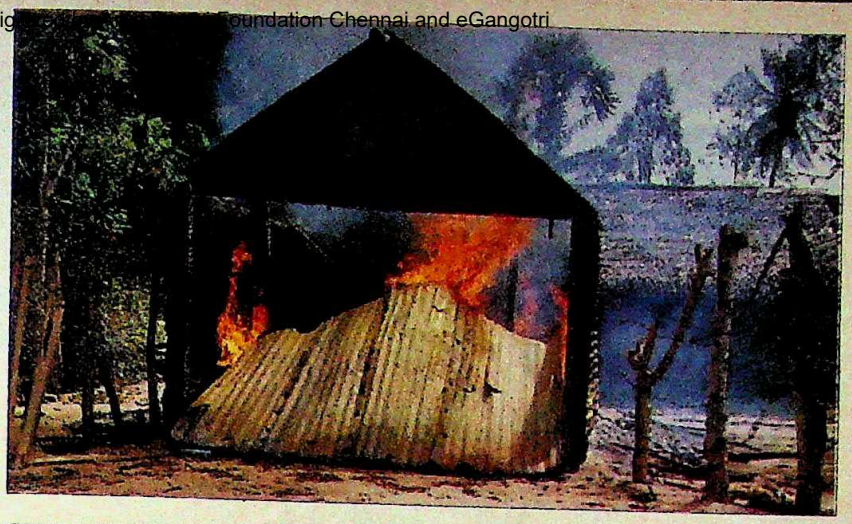

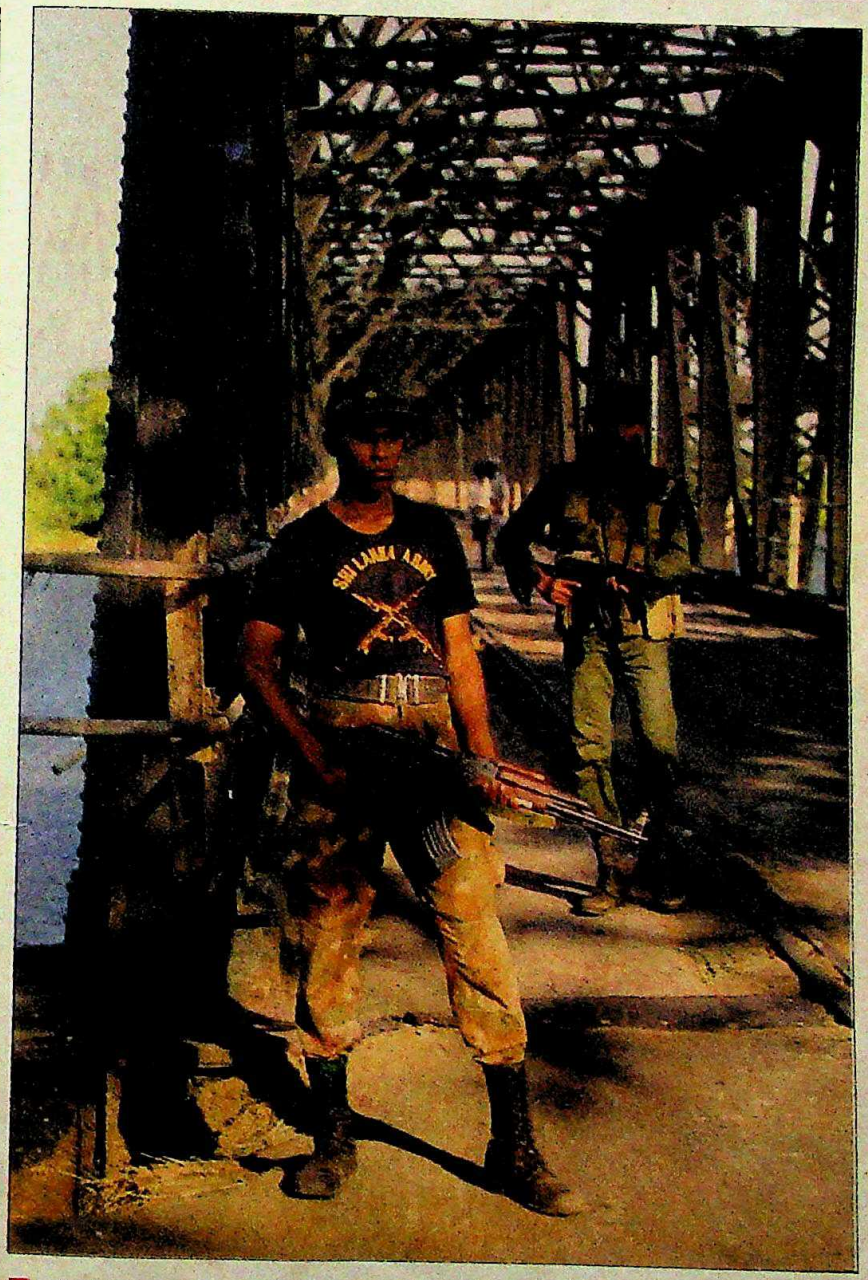

■ संपर्क व्यवस्था बनाए रखना सेना की मुख्य समस्या है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीतों को तमिलों का खुला समर्थन हासिल नहीं है. तमिल यह समझ नहीं पा रहे हैं कि शांति सेना की स्वदेश वापसी के बाद जिस समय मुक्ति चीते उत्तर-पूर्व के शासक के रूप में उभर रहे थे, ठीक उसी समय उन्होंने क्यों उन्हें आफत में डाल दिया. मद्रास में हत्याओं (देखें बॉक्स) से मुक्ति चीतों की अंतरराष्ट्रीय छवि रक्तपिपासु, फासीवादी संगठन के रूप में बनी है.

लड़ाई के पहले पखवाड़े में ही कम-से-कम 150 श्रीलंकाई सैनिकों समेत 1,000 से ज्यादा लोगों की जानें जा चुकी हैं. त्रिकोमाली और बट्टीकलोआ पर सेना का नियंत्रण है जबकि देहाती इलाकों पर मुक्ति चीते काबिज हैं जो सेना की संचार व्यवस्था भंग कर रहे हैं. तमिलों के गढ़ जाफना प्रायद्वीप में सरकारी सुरक्षा बल अभी भी रक्षात्मक रुख अपनाए हुए हैं. जाफना समुद्री ताल के किनारे 18वीं सदी में डचों के बनाए किले को, जिसमें श्रीलंकाई सेना का ठिकाना है, सैकड़ों मुक्ति चीते घेरे हुए हैं और उस पर तोपों से गोले बरसा रहे हैं. साथ ही बुलडोजरों से उसे दरकाने की कोशिश कर रहे हैं. अनुभवहीन श्रीलंकाई वायु सेना तथा नौसेना की तोप नौकाएं किले में फंसी 250 सैनिकों की टुकड़ी को बचाने के लिए जी-तोड़ लड़ाई लड़ रही हैं.

श्रीलंकाई सेना के सूत्रों का कहना है कि वे निर्णायक हमला करने के पहले पूरब के अभियान से अपने सैनिकों के छुट्टी पाने और कोलंबो से नई कुमुक के पहुंचने का इंतजार कर रहे हैं. पिछले कुछ वर्षों में श्रीलंकाई सेना का स्वरूप बदला है और जैसा कि रक्षा राज्यमंत्री रंजन विजेरत्ने ने बेलाग कहा (देखें इंटरव्यू), "सैनिक अब अपने हथियारों का खुलकर इस्तेमाल करेंगे, चाहे कितने ही नागरिक क्यों न मारे जाएं."

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि मुक्ति चीतों ने शांति सेना को बाहर करने के लिए पिछले नवंबर में शांति वार्ता का नाटक रचा था और राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदास मुक्ति चीतों के जाल में पूरी तरह फंस गए. जिस दिन शांति सेना हटी उसी दिन मुक्ति चीते सक्रिय हो गए. बालू की बोरियों से बने बंकरों की जगह पक्के बंकर बनाए गए. महत्वपूर्ण जगहों पर सुरंगें बिछा दी गईं. 10 से 15 साल के लड़कों की भर्ती का अभियान छेड़ दिया गया और भारी मात्रा में सूखी रसद तथा गोला-बारूद जमा कर लिया गया.

उस समय स्थिति पर पूरी तरह से मुक्ति चीतों का नियंत्रण हो गया क्योंकि श्रीलंका सरकार के साथ उनके युद्ध-झौते में यह प्रावधान था कि सेना और पुलिस को थाने से बाहर निकलने के लिए उनसे इजाजत लेनी होगी. प्रेमदास ने सैनिकों को सख्त हिदायत

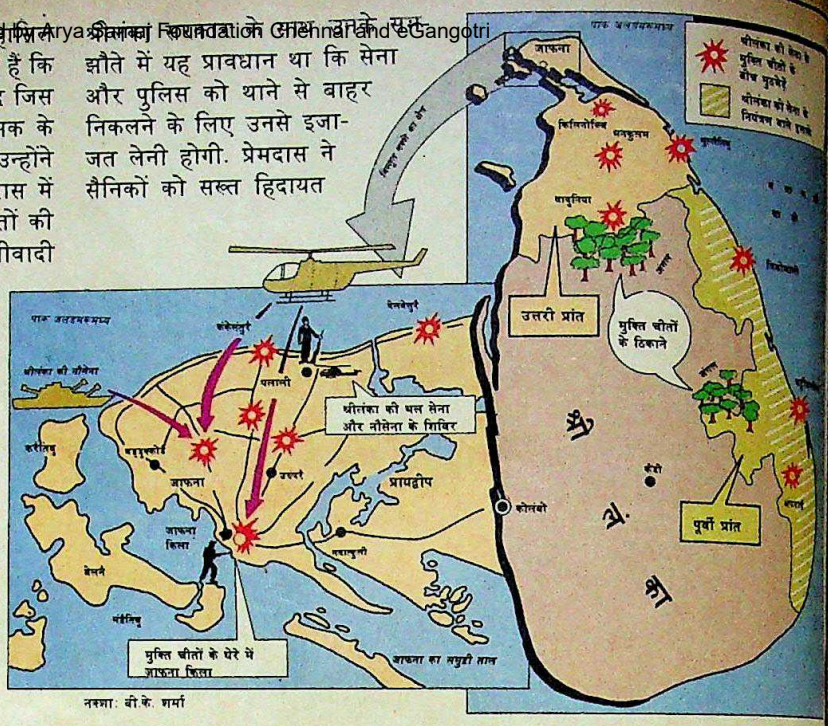

नक्शा: बी.के. शर्मा

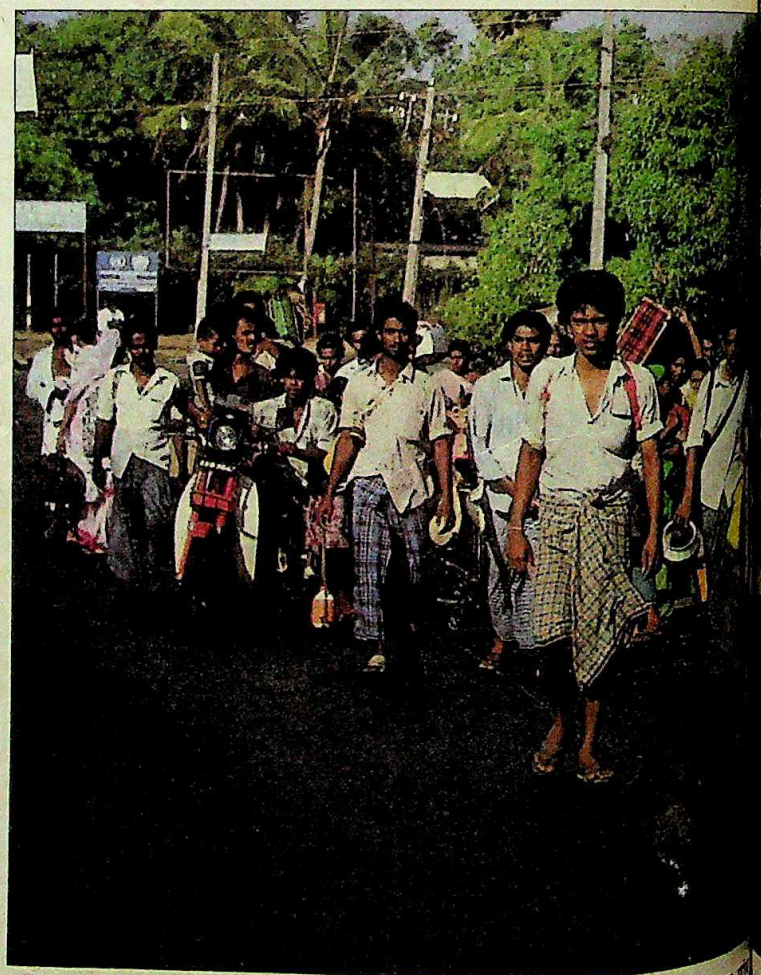

■ तमिल चीतों और श्रीलंकाई सेना की गोलीबारी के बीच फंसे लोग अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी थी कि मुक्ति चीतों को कतई परेशान न किया जाए. इससे सैनिक गुस्से से उबल पड़े क्योंकि चीते अक्सर उन्हें 'दंडित' करते. वे उन्हें घुटनों के बल चलवाते या मुर्गियों के बल रेंगने को कहते.

लेकिन 10 जून को एक घटना के बाद पानी सिर से गुजर गया. उस दिन एक तमिल ने अपनी पत्नी से नाजायज संबंध रखने वाले एक मुसलमान ग्रामीण को पीट दिया. वह मुसलमान बट्टीकलोआ थाने में रपट लिखाने गया लेकिन पुलिस ने रपट लिखने से इनकार कर दिया. इस पर मुक्ति चीते धड़धड़ाते हुए थाने में घुस गए और छह पुलिस कर्मचारियों का अपहरण कर लिया. इसके तुरंत बाद उन्होंने बट्टीकलोआ और अंपराई के कई थानों पर कब्जा कर लिया और 600 पुलिस कर्मचारियों को बंधक बना लिया. फिर सरकार की निष्क्रियता से प्रोत्साहित होकर उन्होंने किरान, वेल्लावलै और कलावंचिकुड्डी में सेना के शिविरों पर हमला कर दिया.

प्रेमदास और विजेरत्ने ने युद्धविराम के लिए कोशिश की लेकिन मुक्ति चीतों की हिंसा नहीं थमी. न्यायमंत्री ए.सी.एस. हमीद मुक्ति चीतों के नेताओं से बातचीत करने जाफना गए. वापसी में उनका हेलिकॉप्टर पलाली हवाई अड्डे से उड़ने ही वाला था कि उनके दो अंगरक्षकों को गोली मार दी गई. दरअसल, मुक्ति चीतों का यह सोचना बुनियादी गलती थी कि श्रीलंका सरकार का लड़ने का संकल्प खत्म हो गया है, चाहे वे उसे कितना भी भड़काएं.

प्रेमदास ने मुक्ति चीतों को झूठा कहते हुए सेना को निर्देश दिया कि जविपे की तरह उनका भी सफाया कर दिया जाए. सेना ने अपने समस्त हथियारों से, जिनमें अमेरिका निर्मित गनशिप हेलिकॉप्टर और मध्यम तोपें शामिल थीं, हमला कर दिया. इज्राएल प्रशिक्षित स्पेशल टास्क फोर्स के कमांडो पूर्वी प्रांत में घुस गए. नौसेना की तोप नौकाएं भारत भागने वाले घायल मुक्ति चीतों को पकड़ने के लिए उथले सागर में गश्त लगाने लगीं. अभी तक 100 मुक्ति चीते मारे जा चुके हैं. जब मुक्ति चीतों को लगा कि वे पारंपरिक लड़ाई नहीं लड़ सकते तो जंगलों में भाग गए. भागते हुए उन्होंने बैंकों से जो 2.4 करोड़ रु. लूटे थे, वही उनके लिए घाव पर मरहम के समान है.

लड़ाई की तस्वीर साफ होने लगी थी. मुक्ति चीते सेना और पुलिस शिविरों को घेर लेते, उन तक पहुंचने वाले रास्ते काट देते, उन तक रसद पहुंचाने वाले हेलिकॉप्टरों को निशाना बनाते तथा सेना और पुलिस का मनोबल टूटने तक इंतजार करते.

लेकिन अब यह आसान नहीं. सेना में लड़ने का नया उत्साह भर गया है जिसकी मिसाल है बट्टीकलोआ के पास किरान शिविर में हुई लड़ाई. 12 जून की रात को लगभग 300 मुक्ति चीतों ने शिविर में 50 जवानों वाली टुकड़ी पर हमला कर दिया. वे एक हफ्ते तक शिविर को घेरे रहे और सेना की नई कुमुक लाने की कोशिश बेकार कर दी. लेकिन 19 जून को सैनिकों का एक दस्ता वहां पहुंच ही गया और मुक्ति चीतों को

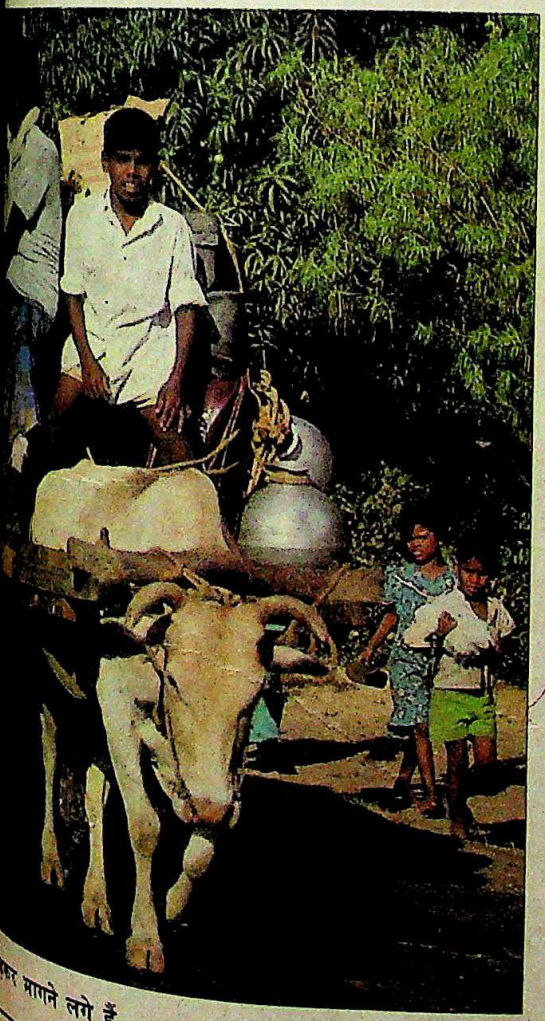

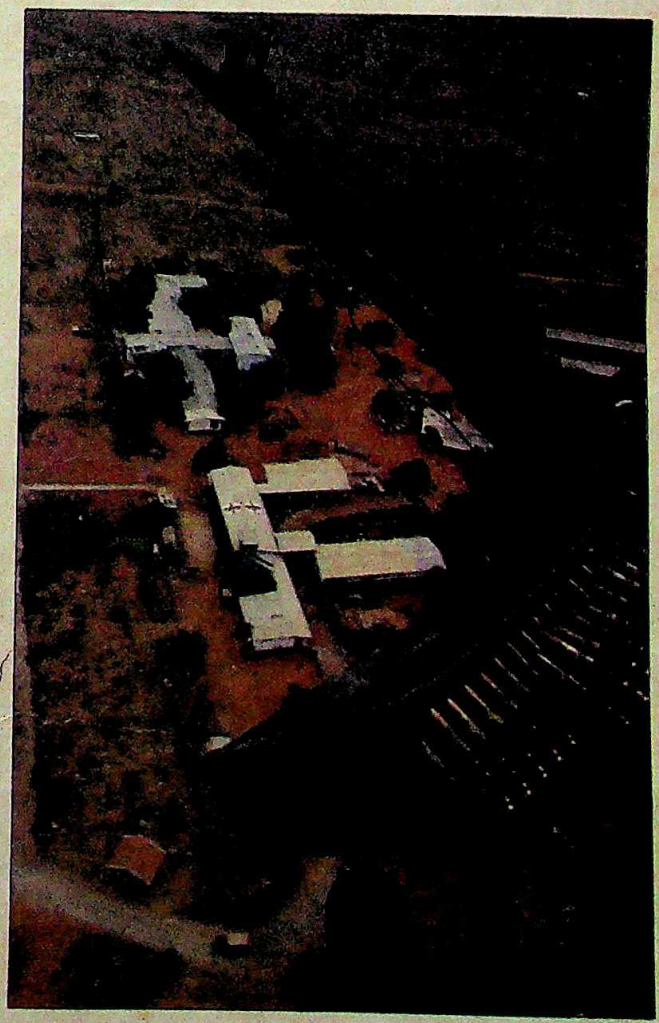

■ सेना अब हथियार लगे हेलिकॉप्टर इस्तेमाल करने लगी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिलनाडु

चीतों का अभयारण्य

ईपीआरएलएफ के नेताओं की हत्या के बाद सरकारी कार्रवाई

मद्रास के भीड़भाड़ वाले इलाके जकरिया कॉलोनी में मुक्ति चीतों ने ईपीआरएलएफ के 14 सदस्यों को गोलियों से भूनकर जता दिया कि दूसरे सभी तमिल उग्रवादी गुटों का सफाया करने के उनके नापाक मंसूबे बरकरार हैं. इस घटना से एक बार फिर साबित हो गया कि चीते अपनी योजनाओं पर सावधानी और निर्णायक ढंग से अमल करते हैं और लंबी छापामार लड़ाई लड़ने के बावजूद उनका संगठन तंत्र यथावत है.

हथियारों के जरिए संघर्ष का रास्ता छोड़ देने के बाद से ईपीआरएलएफ तमिलनाडु की जकरिया कॉलोनी से अपना कामकाज चला रहा था. संगठन के अधिकतर कार्यकर्ता तमिलनाडु स्थित उसके प्रतिनिधि टी. वालवन के कार्यालय के पास की तिमंजिली इमारत पॉवर अपार्टमेंट्स में रह रहे थे. ईपीआरएलएफ के महासचिव के. पद्मनाभ 19 जून की दोपहर में ही नई दिल्ली से आकर फ्लैट नंबर ए-5 में गुट के कुछ वरिष्ठ नेताओं के साथ गुप्त मंत्रणा में व्यस्त थे. इन नेताओं में से कुछ ओडीसा के शरणार्थी शिविरों से आए थे. शाम 6.45 से 7.02 के बीच मुक्ति चीतों ने बिलकुल कमांडो अंदाज में धावा बोल दिया और काम तमाम करने के बाद अपनी सफेद एंबेसेडर कार में आराम से चलते बने.

घायलों में से आठ की मौत फ्लैट में ही हो गई जबकि एक स्थानीय बिजली कारीगर सहित दूसरे लोग सड़क पर या सीढ़ी पर मारे गए. 22 स्थानीय लोगों और चार महीने के एक बच्चे को भी गोलियां लगीं. पद्मनाभ के बगल में खून से सना वह तकिया पड़ा था जिसका उपयोग उन्होंने मौत से बचने की असफल कोशिश के दौरान ढाल के रूप में किया.

हालांकि पुलिस के अनुसार हत्यारे दो सफेद एंबेसेडर कारों में आए पर गोरखा चौकीदार कृष्ण प्रसाद का कहना है कि कार केवल एक थी. चार-पांच लोग कार से उतरने से पहले ही गोलियां बरसाने लगे. दो लोग ईपीआरएलएफ के कार्यालय (देखें रेखाचित्र) की ओर बढ़े, वहीं दो और लोगों ने इमारत में दाखिल होकर सीढ़ियों का रुख किया. पांचवां व्यक्ति कार के पास ही चौकसी करता खड़ा रहा. उसने इमारत की चारदीवारी से कृष्ण प्रसाद को झांकते देखा. प्रसाद के शब्दों में, "वह मुझ पर अंधाधुंध गोलियां बरसाने लगा. मैं तुरंत बैठ गया और फिर शौचालय की ओर बढ़ने लगा. जब वह गोलियां बरसाता ही रहा तो मैं रेंगकर इमारत के पिछवाड़े जा पहुंचा. उसने मुझ पर एक हथगोला भी फेंका जो मुझसे कुछ कदम की दूरी पर गिरा."

इस घटना में बाल-बाल बचे ईपीआरएलएफ के एक सदस्य अफसोस जाहिर करते हैं, "तमिलनाडु सरकार हमें तो आत्मरक्षा के लिए पिस्तौल भी रखने नहीं देती लेकिन मुक्ति चीतों को उसने एके-47 राइफलों के साथ खुलेआम घूमने दिया. आज घटना हमारे घर घटी है, कल को राज्य के दूसरे लोग निशाना बनेंगे."

वैसे सचाई तो यही है कि राज्य के लोग मुक्ति चीतों की इस छापामार शक्ति के अभ्यस्त हो चले हैं. चीते बिना रोक टोक के अपनी छह यामाहा इंजनों वाली फाइबर ग्लास मोटर नौकाओं में श्रीलंका से इधर चले आते हैं. तमिलनाडु आकर मुक्ति चीते मारुति जिप्सी गाड़ियां, दवाएं और दूसरी जरूरी चीजों की खरीदारी करते हैं. समुद्र तट पर मछेरों के गांव तरंगमबाडी के एक निवासी के अनुसार, "मुक्ति चीते दुस्साहसी हैं. उग्रवादियों के खिलाफ हुई पुलिस कार्रवाई के बाद भी वे पिछले हफ्ते तीन बार आए.

रविशंकरन

■ ईपीआरएलएफ के सदस्यों की हत्याः बदले की कार्रवाई

तमिलनाडु पुलिस मुक्ति चीतों की गतिविधियों पर काबू पा लेने का दावा नहीं कर रही और न ही छापामारों से दो-दो हाथ करने के मूड में है. मिल्लीपटनम, पिल्लैयार, तिटाचेरी, वेदारण्यम, मुत्तुपेट, अंतिरामपटनम और रामेश्वरम के तटीय इलाकों में नौसेना पुलिस चौकियां मुक्ति चीतों की खोज छोड़िए, सामान्य चोर उचक्कों की पकड़ पाने में अक्सर सुस्त और असफल नजर आती हैं.

मुक्ति चीते थके नहीं हैं. वे विजेता की मुद्रा में अपने अर्द्धस्वचालित हथियार ताने घूमते हैं. आम तौर से वे तरंगमबाडी के पास एक पुराने डच किले के पास समुद्र से उतरते हैं. एक मछुआरे के शब्दों में, "यह एक आदर्श स्थान है क्योंकि वे समुद्र में दूर से ही दिख जाता है."

चीतों के बारे में एक आठ वर्षीय बालक की टिप्पणी है, "नावें समुद्र तट तक आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे उतरे बंदूकधारी 'पुलिगल' (चीतों) को देख मजा आता है."

वहां उतरकर मुक्ति चीते पेट्रोल, दवा, राशन आदि लेने तिरुकडैयूर तक जाते हैं. वैसे वेदारण्यम अभयारण्य उनकी पसंदीदा जगह है जो दिसंबर से फरवरी तक के सीजन के अलावा सुनसान ही रहता है. इस इलाके के इंका विधायक के. राजेंद्रन कहते हैं, "वे लोग अभयारण्य तक पहुंचने के लिए 18 समुद्री मील की दूरी बीस मिनट से भी कम समय में तय कर लेते हैं."

वेदारण्यम के नजदीक ही मुक्ति चीतों को मछुआरों से नारियल का 15 एकड़ का प्लॉट पर लिया हुआ है और शक्तिशाली ट्रांसमीटरों के जरिए मुख्यालय से संदेशों को भगवाने से लेकर पुलिस के संदेशों को सुनने में ही झपट लेने तक की गतिविधियों का संचालन वे यहीं से करते हैं. वे मदुरै, कोयंबतूर, सालेम और त्रिचनापल्ली की अवैध फैक्टरियों से विस्फोटक खरीदते हैं. मुक्ति चीतों के इस्तेमाल किए अकल-89 हथगोले कोयंबतूर की फैक्टरी में ही बने थे. घायल मुक्ति चीतों के इलाज के लिए आम तौर पर इसी देश में लाया जाता है.

लेकिन ईपीआरएलएफ, पीएलओटीई, एनएलएफ और टीईएलओ की तरह मुक्ति चीतों का तमिलनाडु में कोई स्थायी आश्रय नहीं है. '80 के दशक के शुरू में श्रीलंका में उग्रवाद जोर पकड़ रहा था तो चीते तमिलनाडु से चंदा इकट्ठा करते थे. अब चंदा जुटाने का उनका प्रमुख स्रोत स्वदेश छोड़ पश्चिमी देशों में जा बसे श्रीलंकाई लोग हैं. मुक्ति चीते बाकी चीजों के साथ-साथ नशीली दवाओं की तस्करी करते हैं और 'हवाला' धंधा भी चलाते हैं. मंडपम और कोट्टपट्टु शिविरों में रह रहे कुछ शरणार्थियों की हमदर्दी भी उन्हें हासिल है.

जाहिर है, सरकार इन गतिविधियों से आंखें मूंदे रही. फरवरी में रामेश्वरम के नजदीक अज्ञात बंदूकधारियों ने दो व्यक्तियों की हत्या कर दी लेकिन हत्यारों की तलाश की कोशिश ही नहीं की गई. महीने भर बाद पट्टुकोट्टै के नजदीक मुत्तुपेट से 15 सीमा शुल्क अधिकारियों का अपहरण कर लिया गया. और जब मुक्ति चीतों ने सैकड़ों भारतीय मछुआरों का अपहरण कर उन्हें वेलवेत्तितुरै में कैद कर लिया तो द्रमुक सरकार ने 'श्रीलंकाई नौसेना से भारतीय मछुआरों को बचाने' के लिए मुक्ति चीतों की सराहना की.

जकरिया कॉलोनी पर हमले से तमिलनाडु सरकार के सामने एक बार फिर स्पष्ट हो गया है कि मुक्ति चीतों को जान और कानून की परवाह नहीं है. मुख्यमंत्री करुणानिधि की अब जाकर नींद खुली और पुलिस ने टेलो, प्लॉट और इरोस समेत सभी उग्रवादी गुटों पर धावा बोला है. लेकिन इस बात में कोई दो राय नहीं कि वेलुपिल्लै प्रभाकरन का छापामार गुट न सिर्फ राज्य में हुड़दंग मचाता रहेगा बल्कि मनचाहे ठिकानों और लोगों पर हमला भी करता रहेगा.

—आनंद विश्वनाथन

रेखाचित्र: बी.के. शर्मा

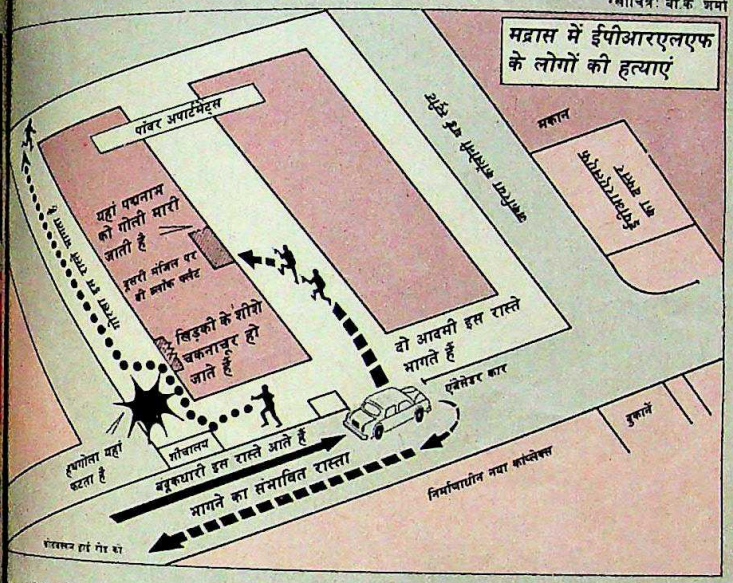

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजन विजेरत्ने

'मैं चीतों का नाश करूंगा'

श्रीलंका के रक्षा राज्यमंत्री रंजन विजेरत्ने मुक्ति चीतों को नेस्तनाबूद करने के अपने संकल्प के कारण फिर चर्चा में हैं. उनका दावा है कि चीतों के नेता प्रभाकरन मारे जा चुके हैं और उनकी जगह एक हमशक्ल काम कर रहा है. पिछले पखवाड़े दृढ़प्रतिज्ञ विजेरत्ने ने प्रमुख संवाददाता ***रमेश मेनन*** *से कोलंबो में बातचीत की. उसी के अंश:*

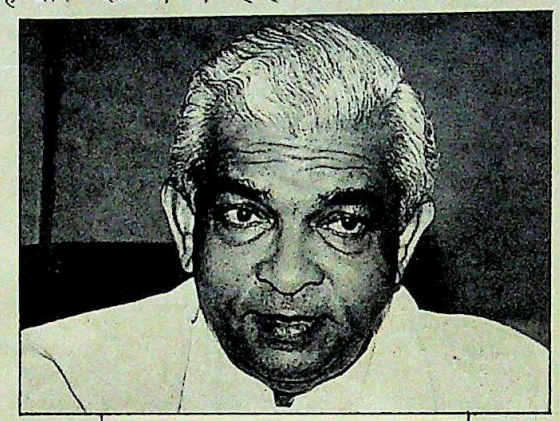

शांति सेना ने उनके पक्के लोगों को ठिकाने लगा दिया था. बचे युवा लड़के-लड़कियां हमारी सेना का सामना नहीं कर पाएंगे"

● ***क्या आपको फिर से लड़ाई की उम्मीद थी?***

नहीं. हम तो पूर्वी और उत्तरी दोनों ही क्षेत्रों से कुछ सैन्य टुकड़ियों को वापस बुला रहे थे. हम चीतों पर भरोसा कर रहे थे और शांति के लिए कुछ भी करने को तैयार थे. लेकिन उन्होंने हमारी पीठ में छुरा भोंक दिया.

● ***लेकिन चीतों का कहना है कि लड़ाई सरकार के उकसाने से शुरू हुई.***

इसके उलट हमें चीतों के प्रति नरमी का रवैया अपनाने के लिए हमेशा सुनना पड़ा. मैं तो विपक्षी सदस्यों के यह कहने पर कि चीतों के बारे में मैं कुछ नहीं कर रहा, संसद से वाकआउट भी कर गया था. लेकिन मैं शांति वार्ता को नुकसान पहुंचाना नहीं चाहता था. इसको क्या उकसाना कहेंगे?

● ***क्या आप इस बात पर यकीन करते हैं कि पुलिस और एक दर्जी के बीच हुई झड़प के कारण ही लड़ाई भड़की?***

यह तो चीतों का बहाना था पुलिस और सैन्य बलों पर हमला करने का.

● ***लड़ने का हौसला उनमें कैसे आया?***

चीतों को लगा कि अगर भारतीय शांति सेना उन्हें खत्म नहीं कर सकी तो अब कोई और उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता. चीतों ने यह मान लिया कि राष्ट्रपति प्रेमदास लड़ाई नहीं करेंगे क्योंकि वे जल्द से जल्द शांति स्थापित कर देना चाहते हैं.

● ***फिर मुक्ति चीते बातचीत के लिए राजी क्यों हुए?***

उनके पास यही एक रास्ता था शांति सेना को हटाने का. सवाल उनके अस्तित्व का हो चला था क्योंकि शांति सेना ने उनको तकरीबन तबाह कर डाला था.

● ***आप चीतों के जाल में फंस गए?***

हम किसी जाल में नहीं फंसे, खुद चीते ही फंस गए हैं.

● ***क्या यह लड़ाई निर्णायक होगी?***

हम किसी को खत्म करना नहीं चाहते. चीतों के खिलाफ लड़ाई हम इसलिए लड़ रहे हैं क्योंकि उन्होंने हमें मजबूर किया. उनके लोग पुलिस और सेना के शिविरों में बेधड़क हत्याएं करते फिरें तो हम चुप कैसे बैठ सकते हैं. लेकिन फिलहाल तो यह लड़ाई मरने-मारने वाली ही लग रही है.

● ***क्या फिर कोई युद्धविराम होगा?***

नहीं, तब तक नहीं जब तक वे अपने हथियार डालकर बिना शर्त बातचीत के लिए तैयार न हो जाएं.

● ***क्या आप फिर चीतों पर विश्वास कर लेंगे?***

नहीं, मैं भला कैसे कर सकता हूं?

● ***आप पूर्वी और उत्तरी क्षेत्रों पर कब तक अधिकार कर पाएंगे?***

सब कुछ चीतों की अकुशलता पर निर्भर करता है. उत्तर तक पहुंचने में हमें वक्त लगेगा क्योंकि हम पहले पूर्व में मजबूती से पैर जमाना चाहते हैं. लेकिन हम पूरी तरह सक्रिय हैं. मैंने जविपे को खत्म किया. चीतों का भी नाश करूंगा पहले मैं उनके नेताओं से निबटूंगा.

● ***अभी तक कितने नेता आपकी गिरफ्त में आए हैं?***

मैंने अपनी नीति पर अमल अभी शुरू नहीं किया है. मुझे वक्त चाहिए.

● ***कहीं आप चीतों को कमजोर तो नहीं समझ रहे?***

भारतीय शांति सेना ने उनके पक्के लोगों को ठिकाने लगा दिया. अब तो बस युवा लड़के-लड़कियां ही बचे हुए हैं. हमारी सैन्य शक्ति का सामना होते ही देखिए उनकी पैंटें गीली हो जाएंगी.

● ***क्या आपको फिर भारत से मदद मांगनी होगी?***

हम इस समस्या से खुद ही निबटने की कोशिश कर रहे हैं. हमें दूसरे देशों पर निर्भर नहीं होना चाहिए. अब 1987 की स्थिति के विपरीत करीब बाकी सभी तमिल ग्रुप हमारे साथ हैं क्योंकि उन्हें एहसास हो गया है कि चीते उन सभी का सफाया कर देंगे.

● ***इतने बड़े आक्रमण के लिए गोला-बारूद आपके पास कहां से आएगा?***

हम चाहे जहां से हो, हथियार खरीद देंगे. वैसे इस समय हमारे पास पर्याप्त भंडार है लेकिन जरूरत पड़ने पर हम फिर इकट्ठा कर लेंगे.

● ***हथियारों की खरीद के लिए पैसा कहां से आएगा?***

केवल हथियारों की खरीद के लिए संसद पहले ही 5 अरब रु. मंजूर कर चुकी है. हम बिना कोई सहायता मांगे आवश्यक धन जुटाएंगे.

● ***क्या आप अत्याधुनिक सैनिक साजो-सामान भी खरीदेंगे?***

अत्याधुनिक सामान की कोई जरूरत नहीं. मुट्ठी भर लड़कों के लिए मैं पैसा बरबाद नहीं करूंगा.

● ***आपके हिसाब से इस लड़ाई का अंजाम क्या होगा?***

हम चीतों के होश ठिकाने लगा देंगे. अगर उनका खयाल है कि वे बंदूक के जोर पर सरकार को झुका लेंगे तो यह उनकी गलतफहमी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाकाम रही तो भी देश भर में देशभक्ति की भावना फैल जाने के कारण प्रेमदास को राजनैतिक विजय हाथ लगी है.

मध्य और दक्षिण श्रीलंका के दूरस्थ गैर-तमिल गांवों तक में सेना की प्रशंसा में पोस्टर चिपक गए हैं. स्वयंसेवक भी घायलों की मदद के लिए निकल पड़े हैं. कच्चा नारियल, पका भोजन, चॉकलेट, सिगरेट और कपड़ों तक—गांववालों से जो भी बन पड़ता है—सेना को उपहार में दे रहे हैं. लेफ्टिनेंट नलिन जयसिंघे कहते हैं, "मैंने इतने सुखद एहसास और गर्व का अनुभव कभी नहीं किया."

अखबार रोज ही राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दान देने की अपीलें छापते हैं. लोगों पर इसका असर भी पड़ा है. मसनन, स्कूली छात्रा गोकुल शांता टोड़िगो ने हार खरीदने के लिए 511 रु. बचाए थे. पर अब उसका कहना है कि वह यह रकम सेना को दान दे देगी.

मुक्ति चीते जान बचाते फिर रहे हैं. इसे देखकर देश भर के लोग अभूतपूर्व राहत की सांस ले रहे हैं. उदारमना तमिल भी यह मानते हैं कि बागी अब हद से आगे बढ़ गए थे. मुक्ति चीतों ने तमिल मुसलमानों को अपने से दूर कर लिया था. इसलिए सभी मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में काफी सुकून महसूस किया जा रहा है. पर हिंदू और ईसाई तमिलों की हालत पतली है क्योंकि आगे बढ़ती सेना और स्थानीय सिंहली उन्हें खदेड़ दे रहे हैं, उनके घरों में आग लगा रहे हैं और उनकी दुकानें लूट रहे हैं. त्रिकोमाली में 18 शरणार्थी शिविर खुल गए हैं जिनमें 9,000 लोग शरण लिए हुए हैं. एक शरणार्थी ने कहा, "हम मौत के फंदे में फंस गए हैं. मुक्ति चीते अब हमारी हिफाजत नहीं कर सकते और दूसरे लोग हमें मारकर ही खुश होंगे." त्रिकोमाली के एक बुजुर्ग ने कहा, "भारत पर नैतिक जिम्मेदारी है. वह इस तरह हमें मरने नहीं दे सकता."

■ प्रभाकरन: गलत मौका चुना

इस लड़ाई का सबसे महत्वपूर्ण नतीजा यह है कि तमिल समुदाय और श्रीलंका सरकार दोनों ही शांति सेना से अपनी नफरत को भूल चुके हैं. श्रीलंकाई महसूस करते हैं कि शांति सेना ने कितने पेशेवर ढंग से काम किया था और तमिल अपनी सुरक्षा के लिए उसकी वापसी चाहते हैं.

पर इसकी कोई उम्मीद नहीं दिखती. राजीव गांधी ने वी.पी. सिंह सरकार की निष्पक्षता के खिलाफ जो हो-हल्ला मचा रखा है उससे भी तमिलों को कोई राहत नहीं मिलती. श्रीलंका सरकार द्वारा वी.पी. सिंह की हस्तक्षेप न करने की अटल नीति की तारीफ राजीव के लिए अपमानजनक है.

साउथ ब्लॉक के रवैए से लगता है कि भारत की हस्तक्षेप न करने की नीति नहीं बदलेगी. हां, श्रीलंका ने अगर पाकिस्तान से मदद मांगी तो बात अलग है. यह मुक्ति चीतों की सबसे बड़ी रणनीतिक हार है. पहले वे हमेशा भारत की सहायता पर निर्भर रह सकते थे. पर अब अपनी ही लापरवाही से बड़े भाई से रिश्ते बिगाड़ चुके चीते श्रीलंका सरकार के प्रतिशोध और भारत की तटस्थता के दो पाटों के बीच फंसकर रह गए हैं.

—रमेश मेनन, श्रीलंका में

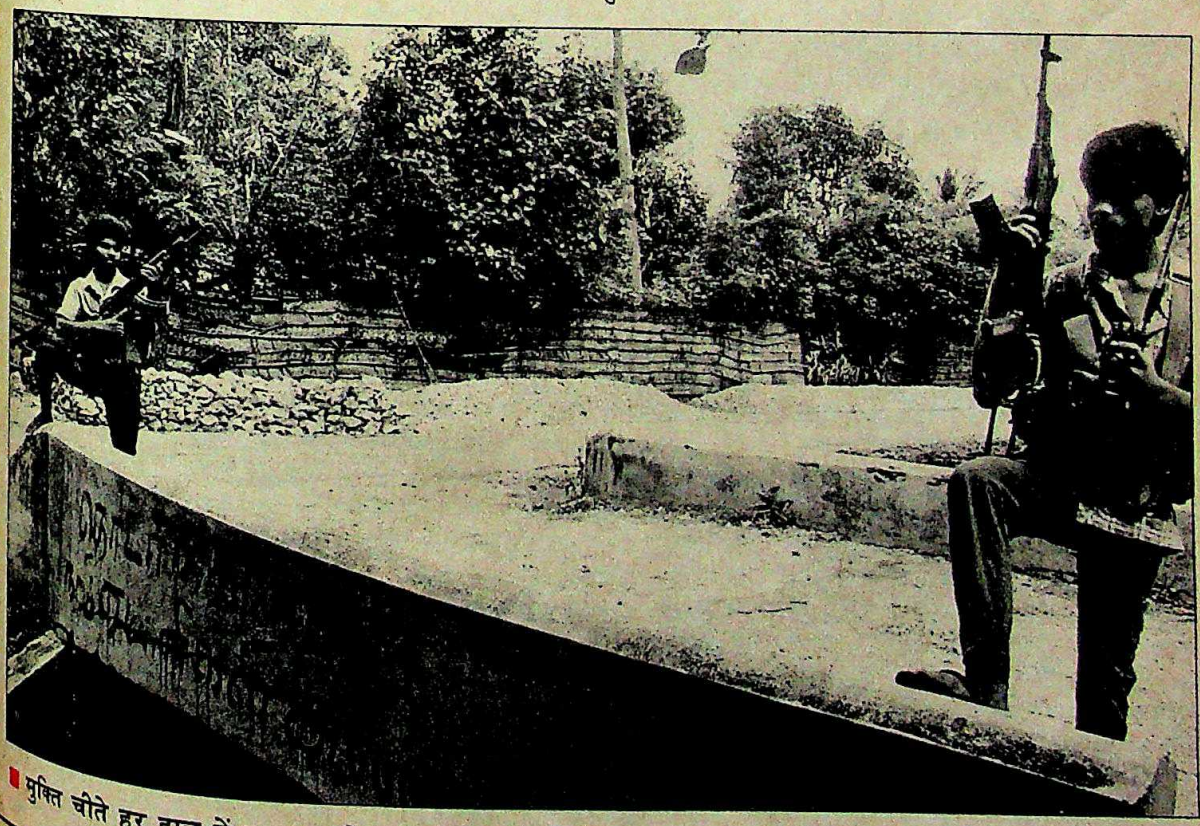

■ मुक्ति चीते हर हाल में जाफना की रक्षा को दृढ़प्रतिज्ञ हैं पर इस बार उनकी हालत पतली है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायपालिका

रखवाले ही खड़े कटघरे में

न्यायाधीशों को लेकर उठे विवादों से बड़ी अदालतों में भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार पर ध्यान केंद्रित

भारतीय न्यायपालिका के लिए यह अब तक का सबसे बड़ा भूकंप था, जिसने कानून की रखवाली करने वाली संस्था की चूलें हिला दीं. इस भूकंप का केंद्र था बंबई हाईकोर्ट जिसकी 125 साल पुरानी प्रतिष्ठा एक झटके में ही धूल में मिल गई. बाद में लगे झटके देश के कई हाईकोर्टों में महसूस किए गए, न्यायपालिका के आधार स्तंभों में दरारें उभर आईं.

अप्रैल के आखिरी हफ्ते में बंबई हाईकोर्ट में संपत्ति के झगड़े के एक मामले की सुनवाई से झटके लगने शुरू हो गए थे. जस्टिस शरद देसाई और मधुकर केनिया की पीठ इस प्रकरण की सुनवाई कर रही थी. अचानक जस्टिस केनिया ने पीठ से अपना नाम वापस लेने की घोषणा करके सबको हैरत में डाल दिया. जब एक वकील ने इसका विरोध किया तो केनिया ने कहा कि इस मामले में उन्हें धमकियां दी जा रही हैं और इसके खिलाफ वे आमरण अनशन कर देंगे. उन्होंने बताया कि एक धमकी उन्हें थेल्मा मेंजिस (जो न्यायमूर्ति देसाई की दोस्त बताई जाती हैं) नाम की महिला ने दी है जो उन्हें बदनाम करने के लिए सामग्री इकट्ठा कर रही है.

पर इससे भी बुरी घटनाएं अभी होनी थीं. बंबई हाईकोर्ट में ग्रीष्मावकाश हो रहा था इसलिए संघर्ष परदे के पीछे से होने लगा. देसाई ने हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को लिखा कि पिछले साल केनिया के न्यायाधीश कक्ष के स्नानगृह से 1.5 लाख रु. बरामद हुए थे. हालांकि तब यह दावा किया गया था कि यह रकम केनिया के कर्मचारियों में से एक की है. लेकिन देसाई ने इस मामले की जांच की मांग की. तब तक महाराष्ट्र के महाधिवक्ता अरविंद बोबड़े ने राज्यपाल सी. सुब्रह्मण्यम को चिट्ठी लिखकर देसाई के खिलाफ कई आरोपों की सूची भेज दी. और कानून की लंबी भुजाएं अपने संरक्षकों को ही पकड़ में लेने के लिए सक्रिय हो उठीं.

सुब्रह्मण्यम ने राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन को संदेश भेजा. इस पर हतप्रभ राष्ट्रपति ने केंद्रीय कानूनमंत्री दिनेश गोस्वामी से बात की. लेकिन गोस्वामी ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "अगर इस तरह की घटनाओं में कार्यपालिका जांच करने लगी तो किसी समय वह इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए भी कर सकती है." उनके मंत्रालय ने भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सब्यसाची मुकर्जी को घटनाक्रम से अवगत किया.

सुप्रीम कोर्ट में ग्रीष्मकालीन अवकाश के बावजूद कलकत्ता में छुट्टियां मना रहे मुख्य न्यायाधीश उस मामले को निबटाने के लिए सक्रिय हो गए जो उन्हीं के शब्दों में, "विश्वसनीयता का संकट था." पर जब उन्होंने जस्टिस देसाई के केरल हाईकोर्ट में तबादले की सिफारिश की तो दूसरा संकट खड़ा हो गया. महाराष्ट्र के वकीलों की प्रतिनिधि संस्था 'एडवोकेट्स ऑफ वेस्टर्न इंडिया' ने अभूतपूर्व कदम उठाते हुए जस्टिस शरद मनोहर, जस्टिस विजय कोतवाल, जस्टिस जी.एच. गुत्तल और जस्टिस एम.पी. केनिया के प्रति 'पूर्ण अविश्वास' व्यक्त कर दिया. एसोसिएशन ने प्रस्ताव पारित किया कि या तो ये न्यायाधीश अपना पद छोड़ दें या फिर वकीलों के बहिष्कार का सामना करने को तैयार रहें.

इस बीच न्यायमूर्ति मुकर्जी को दिल्ली आना पड़ा क्योंकि वहां एक और मामला उनका इंतजार कर रहा था. राज्य सरकार की अंकेक्षण रपट में न्यायमूर्ति वी. रामास्वामी पर आरोप लगाया गया था कि पिछले साल जब वे पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश थे, उन्होंने सरकारी धन का दुरुपयोग किया. अब जुलाई में सुप्रीम कोर्ट का अवकाश खत्म होगा तो न्यायमूर्ति मुकर्जी तय करेंगे कि इस हालात से वे कैसे निबटें.

भूकंप का अगला झटका पटना हाईकोर्ट में लगा. वरिष्ठ न्यायाधीश पी.एस. मिश्र

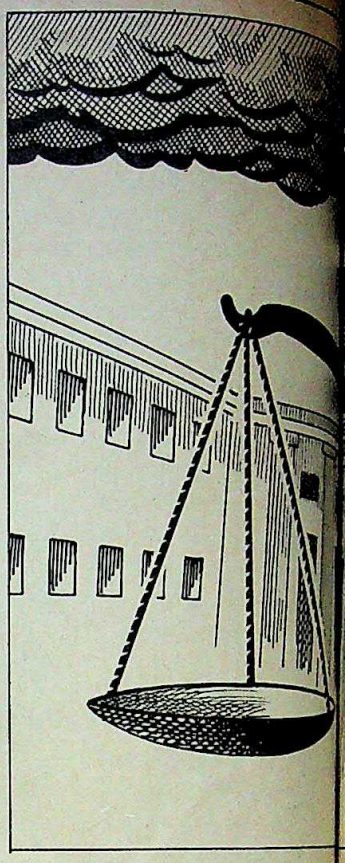

का मद्रास हाईकोर्ट में तबादला कर देने से बार एसोसिएशनें आंदोलित हो उठीं. इस गुस्सा इसलिए आया क्योंकि तबादले से दो दिन पहले ही मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने कहा था कि कुछ न्यायाधीशों को राज्य से बाहर भेज दिया जाएगा. वकीलों ने बहुत बड़े तबके ने एक ज्ञापन पर दस्तखत किए जिसमें कहा गया था कि तबादले में 'राजनैतिक दुश्मनी और कार्यपालिका के पूर्वाग्रहों' की बू आ रही है.

और जैसे इतना ही काफी न हो, न्यायाधीशों की नियुक्ति और कई दूसरे कार्यों की देखरेख के लिए प्रस्तावित राष्ट्रीय न्यायिक आयोग के मुद्दे पर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार और मुख्य न्यायाधीश ने परस्पर विरोधी रवैया अपनाया. संसद के पिछले सत्र में इसके लिए विधेयक पेश हुआ था. पिछले हफ्ते मुकर्जी ने कानून मंत्रालय को एक लंबा खत लिखकर इसके विधेयक से अपनी आपत्तियों से अवगत कराया. वे मानते हैं कि इसके कुछ प्रावधानों से न्यायपालिका की आजादी कम होगी.

अब तक लगभग निष्कलंक रही देश की सर्वोच्च न्यायपालिका इन सदमों से बौखला तक हिल गई. जैसा कि पूर्व मुख्य न्यायाधीश पी.एन. भगवती ने कहा भी, "इन घटनाओं से यही जाहिर होता है कि न्यायपालिका की विश्वसनीयता कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

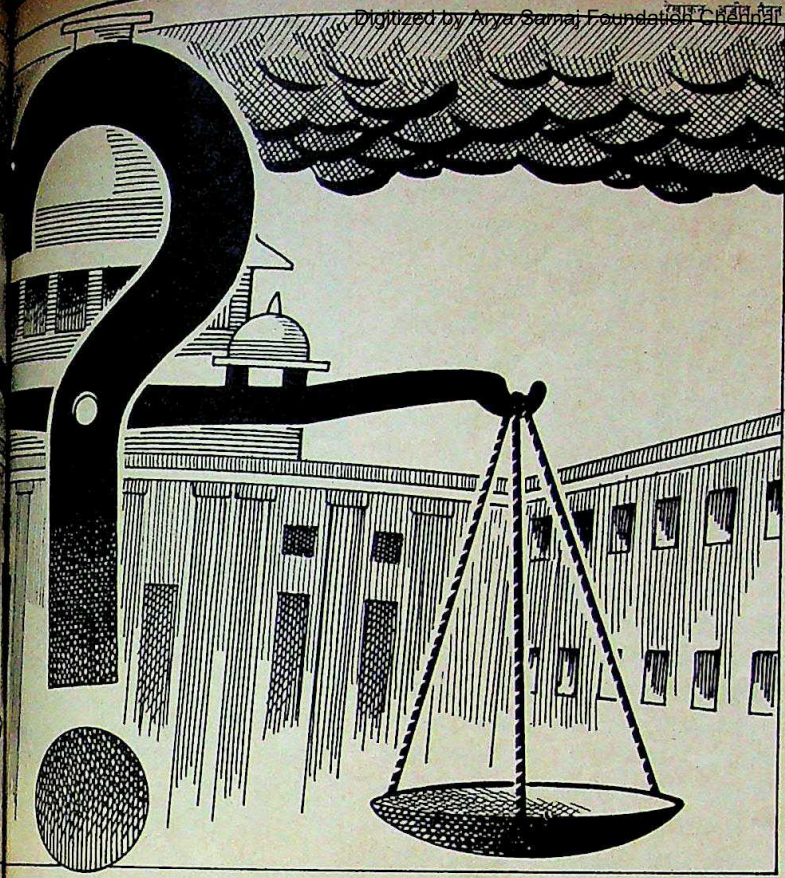

"न्यायपालिका की विश्वसनीयता कम हुई है. उस पर से लोगों का विश्वास डिग गया है"

पी.एन. भगवती
भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश

"पहले हम जिन्हें निराश मुकदमेबाजों के आरोप कहकर नकार देते थे, अब उन्हें आसानी से खारिज नहीं किया जा सकता"

सोली सोराबजी
भारत के महान्यायवादी

"महाभियोग तो ऐसा ब्रह्मास्त्र है जिसका जितना कम इस्तेमाल किया जाए उतना ही बेहतर है"

एल.एम. सिंघवी
मशहूर न्यायवादी

...दला कर देते ...त हो उठी. ...कि तबादले ...ालू प्रसाद ...धीशों को ...एगा. वकीलों ...पन पर ...ा कि तबादले ...कार्यपालिका ...है.

काफी न ...और कई ...स्तावित ...र राष्ट्रीय ...धीश ने ...संसद के ...क पेश हुआ ...नून मंत्रालय ...इसके ...गत कराया ...प्रावधानों ...कम होगी ...लंक रही ...सदमों से ...पूर्व मुख्य ...हा भी, ...र होता है ...नीयता ...

है" प्रसिद्ध वकील और महान्यायवादी सोली सोराबजी के अनुसार, "लगता है न्यायपालिका की विश्वसनीयता का स्तर खतरनाक ढंग से गिरा है. पहले हम जिन्हें निराश मुकदमेबाजों के आरोप कहकर नकार देते थे, अब उन्हें उतनी आसानी से नहीं नकारा जा सकता."

'इंडिया टुडे' के संवाददाताओं द्वारा देश भर से भेजी गई रपटों के अनुसार देश में शायद चंद हाईकोर्ट ही ऐसे होंगे जो भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, जातिवाद और राजनैतिक नियुक्तियों के आरोपों से मुक्त हों. पर अच्छी बात यह है कि ज्यादातर अदालतों के बहुत-से न्यायाधीश अभी भी अच्छे और निष्पक्ष माने जाते हैं. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश वी.आर. कृष्ण अय्यर के अनुसार, "न्यायपालिका में कर्तव्य के प्रति लापरवाही बढ़ती दिख रही है. बदकिस्मती से यह अभी इतनी नहीं बढ़ी कि इसका इलाज ही न हो सके. अब इसे रोका जाना ही चाहिए."

न्यायपालिका का अवमूल्यन कोई आज की बात नहीं है. लेकिन अदालत की अवमानना के कानून के रूप में न्यायपालिका को सुरक्षा कवच मिला हुआ है. इसमें तुराइयां फैलती जाती हैं और कोई खुलकर उनका विरोध नहीं कर पाता. जैसा कि सुप्रीम कोर्ट के वकील के.के. वेणुगोपाल कहते हैं, "इस विषय पर बात करने की इजाजत ही नहीं है. '80 के दशक की शुरुआत में अदालतों में भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद की सिर्फ सुगबुगाहट ही थी लेकिन अब यह मुखर हो गया है."

पर बंबई हाईकोर्ट की ताजा घटनाओं से तो ऐसा लगता है कि वर्जना का बांध आखिर टूट गया है. राज्यपाल को लिखी गई ढेर सारी चिट्ठियों में महाराष्ट्र के महाधिवक्ता बोबड़े ने देसाई और थेल्मा मेंजिस से उनके संपर्क के खिलाफ कई आरोप लगाए हैं. थेल्मा हाईकोर्ट के पास एक खोखे में 'टेल मी ट्रैवल' नाम की एजेंसी चलाती हैं. उन्होंने लिखा कि देसाई ने संपत्ति के उस मुकदमे में व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी ली जिसका संबंध थेल्मा से है. इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि थेल्मा अदालती मामले निबटाने के लिए देसाई के नाम का इस्तेमाल भी करती हैं.

जमीन जायदाद का धंधा करने वाले चुन्नीलाल मेहता के बेटों से जुड़े संपत्ति विवाद संबंधी मामले के निबटारे के लिए देसाई की उत्सुकता पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं. 1989 के आखिर में देसाई और केनिया की खंडपीठ के सामने इस मुकदमे में निषेधाज्ञा दिए जाने की अपील पेश की गई जिसकी सुनवाई तुरंत हुई. वकील इस पर भी उंगली उठाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये आरोप अभी भी अटकलों के घेरे में हैं. पर कहा जाता है कि केनिया के पीठ से अपना नाम वापस लेने की घोषणा करने से एक दिन पहले देसाई ने वकील के.एस. कपूर को टेलीफोन करके उन्हें केनिया के फैसले की खबर दी जो कि अपने-आप में अजीब बात है.

मुकर्जी ने तब देसाई के तबादले का आदेश दिया. उन्होंने कहा कि ऐसा 'जनहित' में किया जा रहा है, इस आधार पर नहीं कि संबद्ध न्यायाधीश दोषी हैं या नहीं. लेकिन देसाई की ऐसी राय नहीं है. उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा, "तबादले ने मुझ पर उंगली उठाई. सो, मैंने इस्तीफा दे दिया." केनिया का तबादला इलाहाबाद हाईकोर्ट में किया जाना था लेकिन उस पर अमल नहीं हो सका क्योंकि दिल के मरीज केनिया सीने में दर्द की शिकायत के कारण अस्पताल में भर्ती हो गए.

देसाई प्रकरण से उत्साहित होकर वेस्टर्न इंडिया एडवोकेट्स एसोसिएशन (डब्ल्यू-आईएए) और बंबई बार एसोसिएशन ने दूसरे कथित पथभ्रष्ट न्यायाधीशों के खिलाफ भी कार्रवाई का फैसला किया. तीन दूसरे न्यायाधीशों के नामों पर तो सब एकमत थे. ये हैं: जस्टिस वी.एस. कोतवाल, शरद मनोहर और जी.एच. गुत्तल.

तीनों विवादास्पद रहे हैं. शहर दीवानी तथा सत्र अदालत की बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एन.वाई. गुप्ते ने बंबई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को चिट्ठी लिखकर आरोप लगाया कि जस्टिस मनोहर ने अपने स्रोतों से कहीं ज्यादा संपत्ति बटोर ली है. जस्टिस जी.एच. गुत्तल पुलिस के कड़े विरोध के बावजूद मादक पदार्थों के तस्करों और माफिया के लोगों को जमानतें देकर चर्चा में आ गए. और पिछले साल एक विवादास्पद फैसले में न्यायमूर्ति कोतवाल नें लार्सन ऐंड टुब्रो के 820 करोड़ रु. के ऋणपत्र निर्गम को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी थी.

अधिवक्ता संघ के फैसले ने धर्मसंकट खड़ा कर दिया. संविधान के अनुसार हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश को संसद में महाभियोग लगाकर ही हटाया जा सकता है और वहां भी महाभियोग का दो-तिहाई बहुमत से पास होना जरूरी है. पर जैसा कि मशहूर न्यायवादी एल.एम. सिंघवी कहते हैं, "महाभियोग तो ब्रह्मास्त्र है जिसका जितना कम इस्तेमाल किया जाए उतना ही बेहतर है."

न्यायाधीशों के तबादले को भी कोई समाधान नहीं माना जा सकता. पहली बात तो यह है कि इस बारे में कई अदालती फैसले हैं जिनके अनुसार तबादला बतौर सजा नहीं हो सकता. फिर जैसा कि बंबई के वरिष्ठ वकील इकबाल छागला कहते हैं, "देसाई के तबादले ने एक गलत परंपरा कायम की." कई न्यायवादी आशंकित हैं कि इसका दुरुपयोग ईमानदार न्यायाधीशों के खिलाफ भी हो सकता है. जैसा कि सोराबजी ने कहा भी, "इसमें न्यायिक आजादी का अवमूल्यन करने की क्षमता है."

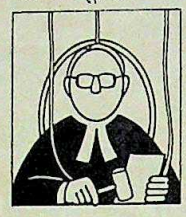

जस्टिस रामास्वामी के खिलाफ वित्तीय अनियमितता के आरोप से निबटने के मामले में भी मुख्य न्यायाधीश मुकर्जी के सामने यही दिक्कत पेश आई. उनके खिलाफ अंकेक्षित रिपोर्ट में एक आरोप यह लगाया गया है कि न्यायाधीश के सरकारी निवास की सज-धज करने के लिए 36,500 रु. का प्रावधान है पर पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश रहते हुए उन्होंने इसके लिए 13.41 लाख रु. वसूले. इसके अलावा चंडीगढ़ में उनके चार टेलीफोनों (जिनमें दो उनके निवास पर थे) का बिल 12.95 लाख रु. आया. मद्रास स्थित उनके घर पर लगे टेलीफोन का 75,150 रु. का बिल भी बिना सरकारी इजाजत के चुकाया गया.

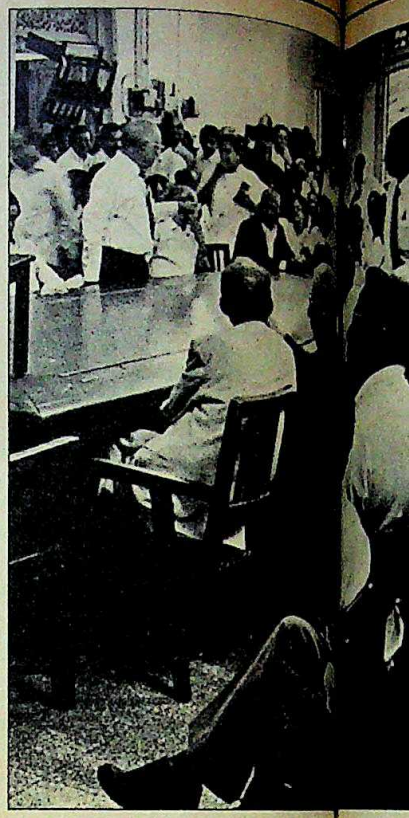

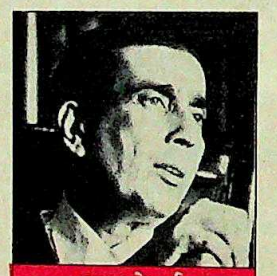

शरद देसाई

मधुकर केनिया

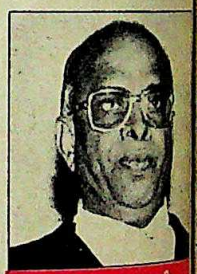

वी. रामास्वामी

उच्च न्यायाधीशों पर आरोप लगने से न्यायपालिका की जवाबदेही की ऐसी प्रक्रिया तय करने की जरूरत पड़ी है जिससे उसकी आजादी पर आंच न आए

इन आरोपों में यदि सचाई है तो नई समस्याएं जरूर उठेंगी. जैसा कि सिंघवी कहते हैं, "हम एक संस्थागत अंधी गली में चल रहे हैं, इसलिए कि हमने जवाबदेही के सिद्धांत और न्यायपालिका की स्वतंत्रता में सामंजस्य नहीं बिठाया है." मुख्य न्यायाधीश मुकर्जी अगस्त में होने वाले मुख्य न्यायाधीशों के सम्मेलन में इस तरह के आरोपों के निबटारे के लिए किसी उपयुक्त वैकल्पिक व्यवस्था पर बहस छेड़ने को उत्सुक हैं. वैसे, आम राय तो यह है कि इस तरह के आरोपों की जांच के लिए हर हाईकोर्ट में न्यायाधीशों की अनौपचारिक समिति बनाई जाए. पर कोई न्यायपालिका कार्यपालिका का हस्तक्षेप नहीं चाहता.

पर पटना में जस्टिस पी.एस. मिश्र के तबादले पर शुरुआती रोष के बाद अधिवक्ताओं ने महसूस किया कि वे गलत बात पर हो-हल्ला मचा रहे थे. राज्य बार काउंसिल के अध्यक्ष ब्रजकिशोर प्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामम भोजानी

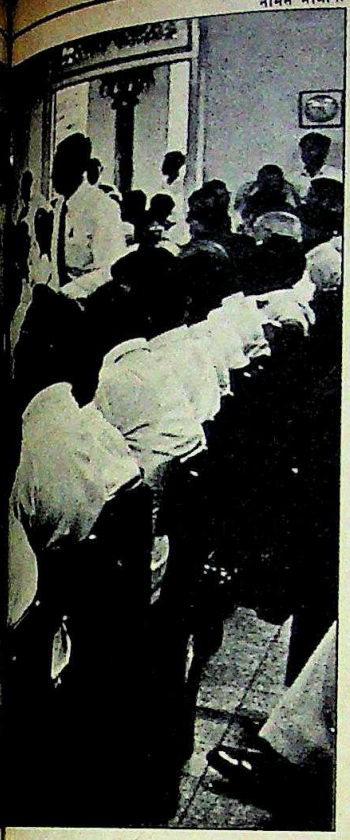

अधिवक्ताओं की बैठक

रामास्वामी

लिका की
पड़ी है

र बहस छेड़ने
य तो यह है
जांच के लिए
की अनौपचारि
कोई न्यायाधी
नहीं चाहता
पी.एस. मिश्र
य के बाद
कया कि वे
हे थे. राजा
राजकिशोर प्रस

इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि पिछले साल जून और अगस्त में दो बार मिश्र के तबादले की सिफारिश की गई थी. मौजूदा सरकार ने केवल पिछली सिफारिश पर अमल भर किया. मिश्र खुद कई विवादों में उलझे रहे हैं.

सो, जस्टिस मिश्र के तबादले पर उतना शक नहीं था जितना कि मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के बयान पर. इससे एक बार फिर न्यायिक नियुक्तियों के राजनीतिकरण का मामला सामने आ गया. हालांकि न्यायाधीशों की नियुक्ति की सिफारिश हाईकोर्टों के मुख्य न्यायाधीश करते हैं लेकिन अंतिम फैसला कार्यपालिका के हाथ में होता है. जैसा कि हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश व्यासदेव मिश्र कहते हैं, कई नेताओं की किस्मत अदालती फैसलों पर तय होने के कारण सरकार आम तौर पर अदालतों में 'अपने वफादार लोगों को रखने' को उत्सुक होती है.

न्यायिक नियुक्तियों में गंभीर राजनैतिक हस्तक्षेप की शुरुआत अप्रैल 1973 में तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की वरीयता की उपेक्षा करते हुए ए.एन. राय को भारत का मुख्य न्यायाधीश बनाने से हुई. उन तीन न्यायाधीशों ने इसके विरोध में इस्तीफा दे दिया था. इमरजेंसी में सत्तारूढ़ पार्टी की मर्जी के खिलाफ चलने वाले हाईकोर्ट के 16 न्यायाधीशों का तबादला कर दिया गया. और इमरजेंसी उठने के ठीक पहले जस्टिस एच.आर. खन्ना की उपेक्षा करते हुए जस्टिस एम.एच. बेग को भारत का मुख्य न्यायाधीश बना दिया गया.

उसके बाद से तो हस्तक्षेप बढ़ता ही गया. जस्टिस भगवती बताते हैं कि किस तरह सरकार ने उनकी सिफारिश वाले दो न्यायाधीशों की नियुक्ति से इनकार कर दिया. राम जेठमलानी कहते हैं, "न्यायाधीश सिर्फ दो तरह के होते हैं. एक, वे जो कानून जानते हैं और दूसरे वे जो कानून-मंत्री को जानते हैं." जब पी. शिवशंकर केंद्रीय मंत्री थे तो उनके कार्यकाल में नियुक्त न्यायाधीशों को मजाक में 'शिवसेना' कहा जाता था.

न्यायिक नियुक्तियों में जातीयता और सांप्रदायिकता घुस जाने से न्यायाधीशों का स्तर गिरता जा रहा है. न्यायविदों का कहना है कि अब न्यायिक गुणों का 'पंचशील' (निष्पक्षता, ईमानदारी, स्वतंत्रता, विवेक और विद्वता) न्यायाधीशों के चयन की कसौटी नहीं रहा. कृष्ण अय्यर कहते हैं, "अब राजनैतिक संबंध, व्यावसायिक आमदनी और सांप्रदायिक पृष्ठभूमि पर गौर किया जाता है."

नियुक्तियों में टालमटोल के कारण एक साल से लगभग 80 हाईकोर्ट न्यायाधीशों के पद खाली पड़े हैं. इससे और दूसरे 100 पदों के नियोजित सृजन से नई सरकार की मुश्किलें बढ़ गई. न्यायपालिका में अनुचित हस्तक्षेप खत्म करने की कोशिश में सरकार ने राष्ट्रीय न्यायिक आयोग के गठन के लिए संसद में विधेयक पेश किया है. आयोग में कई वरिष्ठ सेवारत और रिटायर न्यायाधीश होंगे जो नियुक्तियों का कामकाज देखेंगे और समय पर खाली पदों को भरने की सिफारिश करेंगे. लेकिन मुख्य न्यायाधीश मुकर्जी का मानना है कि इससे नियुक्तियों में और देर होगी तथा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों का महत्व कम होगा.

हाईकोर्टों को और भी कई समस्याएं जकड़े हुए हैं. इनमें से एक है भाई-भतीजावाद. बताया जाता है कि दिसंबर में तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश ई.एस. वेंकटरमैया ने कहा था कि सभी हाईकोर्टों में न्यायाधीशों के बेटे और दूसरे रिश्तेदार वकालत करते हैं. मद्रास और चंडीगढ़ में वहां के लगभग आधे न्यायाधीशों के बेटे और करीबी रिश्तेदार वकालत करते हैं. यही बात बिहार और मध्य प्रदेश के एक-तिहाई हाईकोर्ट न्यायाधीशों पर लागू होती है. दिल्ली हाईकोर्ट भी इस समस्या से ग्रस्त है लेकिन थोड़ा कम.

दिनेश गोस्वामी

'सरकार चिंतित है'

केंद्रीय विधि तथा न्यायमंत्री दिनेश गोस्वामी ने हाल के न्यायिक विवादों के बारे में विशेष संवाददाता **राज चेंगप्पा** *से बातचीत की. उसी के अंश:*

बंबई हाईकोर्ट में उठे विवाद के बारे में:

इस विवाद को लेकर सरकार का चिंतित होना स्वाभाविक है. लेकिन कार्यपालिका को इससे निपटते समय सावधानी बरतनी होगी. वैसे मेरे खयाल से यह मूलतः न्यायपालिका की ही जिम्मेदारी है.

विवादास्पद न्यायाधीशों पर महाभियोग चलाए जाने के बारे में:

महाभियोग अत्यंत गंभीर बात है. मैं नहीं चाहता कि कार्यपालिका इस बारे में कोई पहल करें. महाभियोग जैसे हथियार का एक बार प्रयोग कर लेने के बाद उसके फिर-फिर प्रयोग का खतरा बना रहता है.

प्रभावी दंड प्रक्रिया की आवश्यकता के बारे में:

न्यायपालिका की शीर्ष संस्थाओं को ही यह जिम्मेदारी उठानी चाहिए क्योंकि न्यायाधीशों के आचरण की जांच अगर किसी प्रक्रिया-विशेष के तहत होने लगे तो उसका प्रयोग कभी न्यायपालिका के हितों के विरुद्ध भी हो सकता है.

न्यायपालिका के राजनीतिकरण पर:

कार्यपालिका की ओर से होने वाली हर संभव देरी या टालमटोल पर नजर रखने के लिए हमने राष्ट्रीय न्यायिक आयोग के गठन से संबंधित विधेयक पेश किया है. इसका उद्देश्य न्यायाधीशों की नियुक्ति और स्थानांतरण की देखरेख करना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सबों का अक्सर बारीकी से दुरुपयोग किया जाता है. मसलन एक तरीका तो यह है कि "आप मेरे बेटे का खयाल रखना, मैं आप के बेटे का खयाल रखूंगा." इसका सीधा मतलब यह हुआ कि उस न्यायाधीश का बेटा उसकी अदालत में नहीं बल्कि उसके सहयोगी की अदालत में बहस करेगा. और उस सहयोगी का बेटा पहले वाले न्यायाधीश की अदालत में पैरवी करेगा और मनचाहा फैसला करवाएगा. जैसा कि पंजाब के पूर्व महाधिवक्ता जी.एस. ग्रेवाल कहते हैं, "इन बेटों की प्रैक्टिस तभी तक खूब चलती है जब तक उनके पिता कुर्सी पर होते हैं."

इसकी कई दूसरी समस्याएं भी हैं. वेंकटरमैया ने खुलेआम शिकायत की थी कि कई न्यायाधीश "हर शाम को किसी वकील के घर या किसी विदेशी दूतावास में पीने-खाने के लिए चले जाते हैं." उनका अनुमान था देश के कोई 90 हाईकोर्ट न्यायाधीश इस तरह का अवांछित काम करते हैं.

हाईकोर्टों पर मुकदमों का बोझ भी लदा हुआ है. फिलहाल देश के 18 हाईकोर्टों में 20 लाख मामले लंबित पड़े हैं. किसी हाईकोर्ट में अभी यदि कोई सुनवाई रुक जाए तो उस पर 1992 में ही फिर सुनवाई हो सकेगी. मामलों के निपटारे में औसतन आठ से दस साल लग जाते हैं. सुप्रीम कोर्ट की भी स्थिति बेहतर नहीं. वहां फिलहाल डेढ़ लाख मामले लंबित पड़े हैं.

सो, पिछले साल जब सुप्रीम कोर्ट ने कई मामलों को प्राथमिकता के आधार पर सुनने का फैसला किया तो कई हलकों में उसकी तीव्र आलोचना हुई. तीन मामलों की सुनवाई में जो तत्परता दिखाई गई वह तो आश्चर्यजनक है. पांच भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों के टेस्ट मैच खेलने पर जब रोक लगा दी गई तो उसे चुनौती देने वाली जनहित याचिका पर लगभग रातोंरात सुनवाई हुई. जस्टिस वेंकटरमैया ने अपने आवास पर रात में उद्योगपति [illegible] थापर की जमानत याचिका पर सुनवाई की तो लोग उन पर उंगली उठाने लगे. जस्टिस वेंकटरमैया की ही अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने जब गांधी जयंती के दिन लार्सन ऐंड टुब्रो के ऋणपत्र निर्गम मामले की सुनवाई की तो भी लोगों की भृकुटी तन गई. वेंकटरमैया और मुकर्जी दोनों ने ही इस बात

सब्यसाची मुकर्जी

'ऐसी घटनाएं बेचैन कर देती हैं'

इन दिनों सुप्रीम कोर्ट में ग्रीष्मकालीन अवकाश चल रहा है. लेकिन सफेद कुर्ता-पाजामा पहने भारत के मुख्य न्यायाधीश सब्यसाची मुकर्जी निश्चिंत नहीं लग रहे. 62 वर्षीय मुकर्जी ने पिछला महीना न्यायपालिका में उभर आई समस्याएं सुलझाने में बिताया. विशेष संवाददाता ***राज चेंगप्पा*** *को अपना दृष्टिकोण समझाने के लिए उन्होंने पिछले पखवाड़े कुछ वक्त निकाला. उसी बातचीत के अंश.*

● ***बंबई हाईकोर्ट की घटनाओं पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?***

मुझे दुख होता है. ऐसी घटनाओं से मैं बहुत बेचैन हूं. अगर लोग मुझमे कहें कि मैं बुद्धिमान न्यायाधीश नहीं हूं, तो इसकी मैं परवाह नहीं करता. लेकिन अगर वे हम पर बेईमानी का आरोप लगाते हैं तब तो कुछ बचा ही नहीं. इसका भारी नुकसान सिर्फ इस संस्था को ही नहीं उठाना पड़ेगा बल्कि देश का पूरा संवैधानिक ढांचा ही चरमरा जाएगा.

मुद्दा यह नहीं है कि न्यायाधीशों ने सही काम किया या गलत. मुद्दा यह था कि क्या सिर्फ एक न्यायाधीश के काम से पूरी अदालत की विश्वसनीयता प्रभावित होगी. इसी पहलू के मद्देनजर मैंने उनके तबादले का आदेश दिया. इस संकट को टालने का सबसे बढ़िया तरीका पूरे ढांचे में से अधिकारियों को ही अलग कर देना था.

स्पष्ट रूप से कहूं तो मैं ऐसे लोगों में से नहीं हूं जो हाईकोर्ट के कामकाज में दखल देने में भरोसा करते हैं. मैं स्वभावतः इसे पसंद नहीं करता. और कोई भी न्यायाधीशों का तबादला करना नहीं चाहता. इस बार मुझे लगा कि अगर मैंने कदम नहीं उठाया तो मैं कर्तव्य निभाने में असमर्थ रह जाऊंगा. यह विश्वसनीयता का वास्तविक संकट था. इस संस्था के पास भी अपनी गड़बड़ी सुधारने की व्यवस्था है. फिर संकट को और नहीं बढ़ने देना चाहिए. तभी कार्रवाई की गई.

अब मैंने हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों को लिखा कि क्या हम अगस्त में होने वाले अपने वार्षिक सम्मेलन की कार्यसूची में ऐसी बातों पर नियंत्रण रखने के लिए न्यायपालिका के भीतर ही कोई व्यवस्था बनाने की बात भी रख सकते हैं. मैं नहीं चाहता कि कोई बाहरी एजेंसी इस मसले में दखल दे.

● ***ऐसी व्यवस्था के बारे में आपके मन में क्या बातें हैं?***

मेरा मानना है कि अगर किसी न्यायाधीश के खिलाफ आरोप लगते हैं तो उसे अपने मसले को मुख्य न्यायाधीश या उनके द्वारा नियुक्त वरिष्ठ न्यायाधीशों को सौंप देना चाहिए. वे ही इस मामले को देखें. बिना किसी औपचारिक व्यवस्था के मुख्य न्यायाधीश या वरिष्ठ न्यायाधीश को सभी पक्षों की राय सुननी चाहिए और अगर उन्हें किसी आरोप में दम लगता है तो संबद्ध न्यायाधीश को पदत्याग कर देना चाहिए. ऐसा स्वेच्छा से होना चाहिए.

● ***कदाचार के आरोपों से अकेला [illegible] हाईकोर्ट ही तो ग्रस्त नहीं है?***

यह एक नई बात है. मैं जहां [illegible] जाता हूं कुछ न कुछ शिकायतें रहती हैं जो पहले कभी नहीं होती थीं. ये शिकायतें सही हैं या गलत यह फैसला करना मुश्किल है. मैं अपने साथी न्यायाधीशों से भी कहता रहा हूं कि इस बारे में हमें [illegible] करना चाहिए.

● ***कई हाईकोर्टों में भाई-भतीजावाद के आरोप हैं?***

दुर्भाग्य की बात यह है कि [illegible] अदालतों में मैंने ऐसी शिकायतें सुनी हैं. मैं उनकी जांच करने की कोशिश कर रहा हूं. पहले हाईकोर्ट में जमानत वाले मामले आते ही नहीं थे. अब ऐसा खूब होता है. सुना है ऐसे मामलों में कुछ न्यायाधीशों के रिश्तेदार खूब पैसा बना रहे हैं. यह सही है या गलत, इसे देखना होगा.

● ***आज न्यायपालिका के सामने [illegible] गंभीर समस्या क्या है?***

विश्वसनीयता. पहले लोग कहते थे कि फलां न्यायाधीश सरकार समर्थक या विरोधी है. इसे बुरा माना जाता था. लेकिन आज तो आप न्यायाधीशों को पक्षपाती होने की ही नहीं उनके 'विरोध' की बात भी सुनते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकार किया है कि इस तरह की सुनवाइयों में 'किसी तरह की साजिश' थी. इन सबसे न्यायपालिका की विश्वसनीयता में कमी ही आई है. लेकिन न्यायपालिका पर संदेह के घुमड़ते हुए बादलों से नकारात्मक नतीजे भी निकल जाते हैं क्योंकि वे समस्याएं अब सामने आ गई हैं जो इस व्यवस्था में वर्षों से घुन की तरह लगी हुई थीं. जैसा कि महाराष्ट्र के महान्यायवादी अशोक देसाई कहते हैं, "अब समस्याओं की अनदेखी नहीं की जा सकती". इन्हें तुरंत सुलटाने की जरूरत है क्योंकि हमारे लोकतंत्र की एक बेहद अहम संस्था दांव पर लगी हुई है.

—राज चेंगप्पा और एम. रहमान, बंबई में और ब्यूरो रिपोर्ट

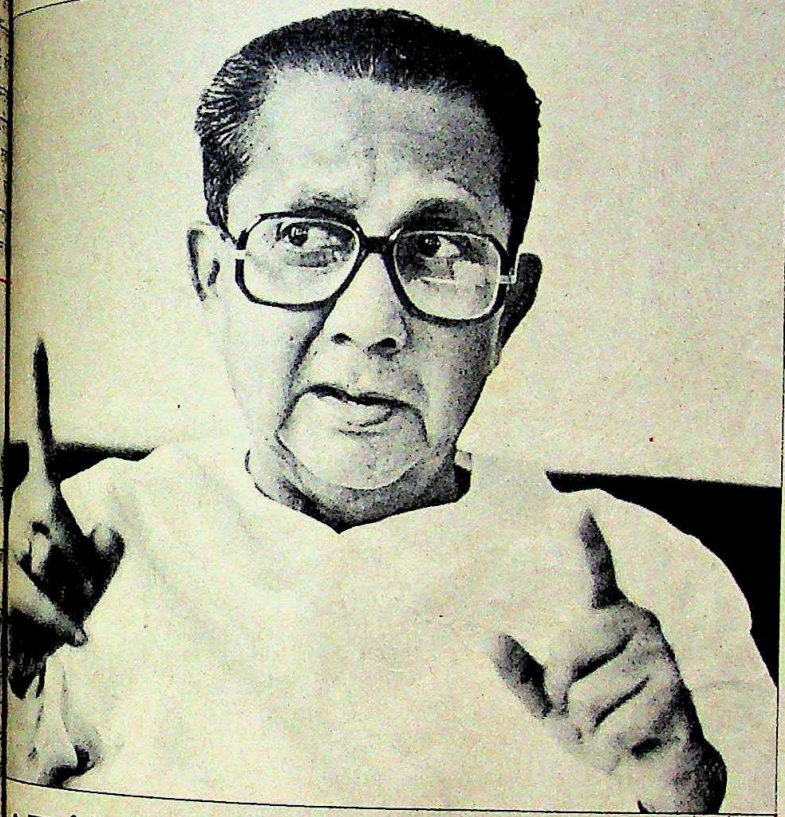

भंवरी सिंह

● *न्यायाधीशों की नियुक्ति का मसला राजनैतिक हो गया है. कुछ मुख्यमंत्री मुख्य न्यायाधीश के सुझाए गए नामों को साथ अपने लोगों को भी लेने की शर्त पर मंजूर करते हैं.*

मैंने भी इस तरह की बातें सुनी हैं. ऐसे पदों पर बैठे लोगों ने भी मुझसे कहा है. लेकिन पिछले छह महीनों से जबसे मैं इस पद पर हूं, मैंने ऐसा कोई दबाव महसूस नहीं किया है. मैंने जिस नाम को मंजूरी नहीं दी वैसे किसी भी व्यक्ति को न्यायाधीश नहीं बनाया गया है. खुद राजनेताओं पर भी दबाव पड़ते हैं. लेकिन मोटे तौर पर न्यायपालिका ने समझौते नहीं किए.

● *सरकार ने सुझाव दिया है कि न्यायाधीशों की नियुक्ति में देरी या पक्षपात की समस्या से निपटने के लिए न्यायिक आयोग गठित किया जाए.*

मैंने इस प्रस्ताव पर अपनी आपत्तियां पहले ही जाहिर कर दी हैं. मैं नहीं चाहता कि हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश या भारत के मुख्य न्यायाधीश को आयोग के दूसरे चार या पांच सदस्यों के समकक्ष माना जाए. मुख्य न्यायाधीश के पद की प्रमुखता बनाई रखी जानी चाहिए. दूसरे, यह व्यवस्था और भी देरी या झमेले पैदा करेगी.

● *पिछले साल जब सुप्रीम कोर्ट ने कुछ अपीलों को प्राथमिकता के आधार पर सुना तब भी लोगों ने हैरानी जाहिर की थी. ऐसे मामलों में लार्सन ऐंड टुब्रो के महानिर्गम का मामला भी शामिल था जिसकी सुनवाई आपकी अध्यक्षता में हुई.*

अपील की सुनवाई का कोई पक्का नियम नहीं है. भारत का मुख्य न्यायाधीश ही मामले की गंभीरता के आधार पर फैसला करता है. रिलायंस वाले मामले में मुझे सारी बातें याद नहीं हैं पर उसमें कुछ भी गोपनीय या संदेहास्पद नहीं था.

"मूल त्रुटि यह है कि न्यायाधीशों को महिमामंडित कर दिया गया है. इसलिए न्याय उन्हीं पर नहीं छोड़ा जा सकता"

वी.आर. कृष्ण अय्यर
पूर्व न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट

"भ्रष्टाचार से निजात पाने के लिए न्यायिक आयोग जरूरी है. साथ ही वकील समुदाय को निगरानी रखनी चाहिए"

एस. मोहन
मुख्य न्यायाधीश, कर्नाटक हाईकोर्ट

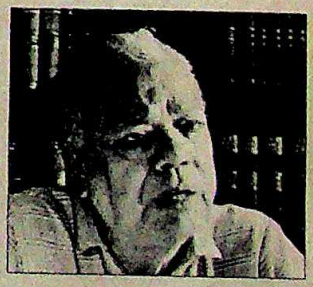

"आजकल अधिकांश न्यायाधीशों का अन्य लोगों के साथ उठना-बैठना होता है इसलिए उनके प्रभावित होने का खतरा रहता है"

एस.ए. मसूद, *पूर्व मुख्य न्यायाधीश, कलकत्ता हाईकोर्ट*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी

वापसी की राह कठिन

रेलगाड़ी से यात्रा करके लोगों के बीच जाने का अभियान सुसंगठित नहीं, विभिन्न धड़ों में मारामारी जारी

पराजित सम्राट ने मानो फिर कमर कस ली हो. पस्त-हौसला और कलह की शिकार कांग्रेस (इ) हफ्तों से ऐसा दांव खेलने की तैयारी में व्यस्त थी जिस पर अनेक लोगों को भरोसा था कि उसकी राजनैतिक किस्मत फिर चमक उठेगी. यह दांव था राजीव गांधी के जनसंपर्क अभियान का. बतौर रणनीति इसमें कुछ दम भी दिखाई देता था. वजह यह कि पार्टी की गुटबंदी अनिष्टकारी रूप लेने लगी थी. इसके अलावा लगभग सभी उपचुनावों में पार्टी का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था (देखें बॉक्स). पर सबसे बड़ी बात थी इस रणनीति का प्रतीकात्मक महत्व और वह यह कि राजीव आखिर जमीन पर आ ही गए.

और फिर, राजीव गांधी के मामले में तो प्रतीक यथार्थ से भी कहीं बड़ा हो गया. इसकी एक वजह तो इसकी इंदिरा गांधी की सत्ता में वापसी से समानता थी. 1977 में चुनाव हारने के बाद श्रीमती गांधी ने इसी तरह का दौरा किया था और शुरुआत भी बिहार से ही की थी.

समानताएं यहीं खत्म नहीं हुईं. श्रीमती गांधी बिहार के दूरस्थ हरिजन गांव बेलछी में सामूहिक बलात्कार की शिकार महिलाओं से मिलने हाथी पर सवार होकर पहुंची थीं. उन्हें आए देखकर वहां जमा भीड़ नारे लगाने लग पड़ी थी "आधी रोटी खाएंगे, इंदिरा को बुलाएंगे."

राजीव ने हाथी के बजाए यात्री रेलगाड़ी के दूसरे दर्जे के डिब्बे को चुनना बेहतर समझा, जिसमें उनके ऊपर की एक बर्थ उनकी अटैची और आइस बॉक्स के लिए आरक्षित थी. इस बीच उन्होंने अपना भोजन साधारण पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ ही किया और वह भी छुरी-कांटे के बजाए अपनी उंगलियों का इस्तेमाल करते हुए.

और राजीव का स्वागत भी वैसा ही हुआ जैसा उनकी मां का हुआ था. दूसरे दर्जे के डिब्बे से झांकता हुआ अपने नेता का चेहरा देखने के लिए हर स्टेशन पर पार्टी कार्यकर्ताओं समेत भारी भीड़ जमा थी और नारे भी लगभग वैसे ही थे "आधी रोटी खाएंगे, राजीव सरकार बनाएंगे."

पर ये समानताएं इसी जगह खत्म भी हो गईं. इंदिरा गांधी ने अपनी यात्रा में खुद को समझदारी से मेहनतकश जनता के दुखों की सच्ची हमदर्द के रूप में पेश किया था. पर राजीव के साथ तो यह सब मजबूरी में की गई कोशिश जैसा लग रहा था. कई मौकों पर तो यह ढोंग-सा भी लगा. मसलन, भीषण गरमी और धूल-धक्कड़ के बीच शेखपुरा में हुई जनसभा का एकमात्र मकसद सहकारी माफिया राजो सिंह को पुनर्स्थापित करना था, जिन्हें खुद राजीव ने 1985 में दरकिनार कर दिया था. जनसभा में राजो सिंह ने 'जनता की तरफ से' राजीव को एक लाख रु. की थैली भेंट की. प्रतिक्रियास्वरूप राजीव ने 1954 के बाद पहली बार राज्य इंका का राजनैतिक सम्मेलन शेखपुरा में करने की घोषणा की. इस सबसे बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद सन्नाटे में आ गए. उन्होंने कहा भी, "लगता है प्रधानमंत्री की इस पूरी कसरत का मकसद राजो सिंह और उन जैसे लोगों को पुनर्स्थापित करना था."

बहरहाल, राजीव ने एक बात तो साबित कर ही दी कि इंका में अभी भी वही एकमात्र ऐसे नेता हैं जिसमें भीड़ जुटाने की क्षमता है. पर इसका भी एक घाटा है जिसकी परेशानी भी राजीव को महसूस हुई. भारत यात्रा से यह भी जाहिर हो गया कि पार्टी के भीतर की दरारें खतरनाक हद तक बढ़ चुकी हैं. पूरी यात्रा के दौरान राजीव को जहां-तहां पार्टी में गुटबाजी देखने को मिली.

एक और समस्या यह थी कि भारतीय रेलवे की कार्यकुशलता के बावजूद राजीव तयशुदा कार्यक्रम से काफी पिछड़ चुके हैं. इंका महासमिति के घोषित कार्यक्रम के अनुसार राजीव का यह दौरा 7 जून को शुरू हुआ और 35 दिनों के भीतर उन्हें सात गैर इंकाशासित राज्यों का दौरा करना था. पर जून के अंत तक वे सिर्फ तीन राज्यों—तमिलनाडु, बिहार और मध्य प्रदेश ही जा सके.

लेकिन पार्टी प्रवक्ताओं का दावा है कि यह दौरा बेहद कामयाब रहा. पार्टी प्रवक्ता विट्ठल नरहरि गाडगिल के अनुसार राजीव

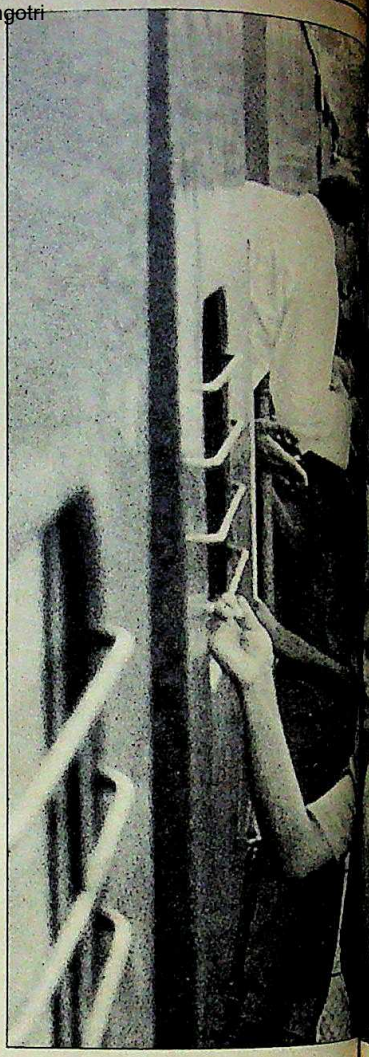

रेल यात्रा से राजीव का जनसंपर्क; और (दाएं) सामूहिक भोज करते हुए; साख बनाने की कोशिश

का जनसंपर्क अभियान मार्च में हुई पार्टी कार्यसमिति की बैठक में उठी सामूहिक मांग का नतीजा है. इंका महासचिव हरकिशनलाल भगत ने अतिशयोक्ति भरे स्वर में कहा कि राजीव गांधी का यह दौरा "कश्मीर, पंजाब और देश के दूसरे हिस्सों की समस्याओं पर जनचेतना जगाने का प्रयास था." पर राजीव की मौजूदा मजबूरियां एकदम अलग किस्म की हैं. संसदीय चुनावों में हार के बाद विधानसभा चुनावों में इंका अपनी स्थिति रत्ती भर नहीं सुधार पाई यानी वह इतिहास दुहरा पाने में नाकाम रही.

राज्यों और राष्ट्रीय स्तर पर असंतुष्ट गुटों के अलग मंचों का सक्रिय हो जाना इस बात का संकेत है कि राजीव को जलवा जवाब दे रहा है. जगन्नाथ मिश्र का बिहार विकास मंच तारिक अनवर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नसंपर्क;
करते हुए:
श

में हुई पार्टी
सामूहिक भाव
महासचिव
शयोक्ति भरे
का यह दौरा
दूसरे हिस्से
जगाने का
की मौजूद
कस्म की है
द विधानसभा
रत्ती भर नहीं
दुहरा पाने में

पर असंतुष्ट
य हो जाना
राजीव का
गन्नाथ मिश्र
क अनबन है

नमी कोटी: मैक्स दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

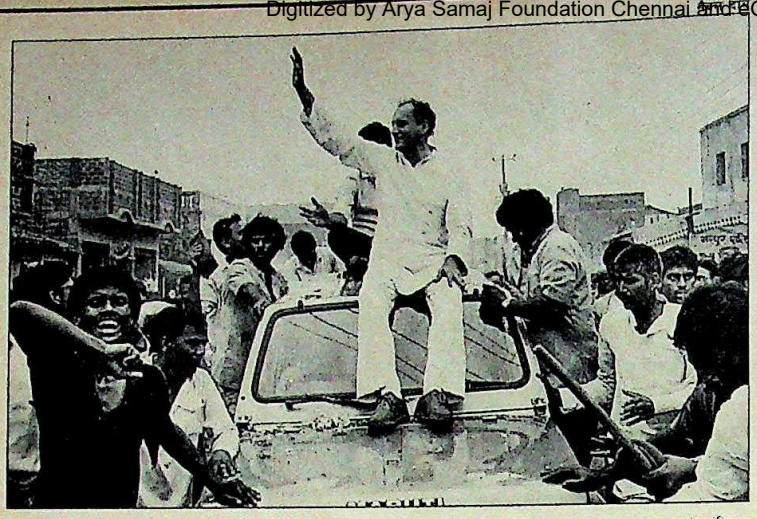

प्रशांत पंजियार

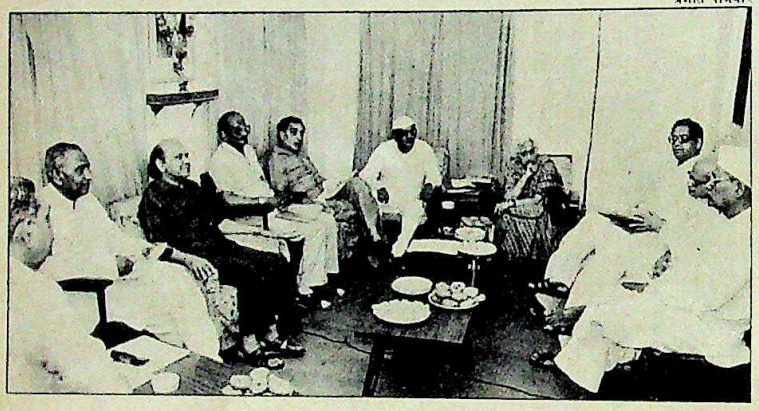

मारुति पर राजीव; (नीचे) फोरम फॉर ऐक्शन की बैठक: खुली बगावत

प्रतिद्वंद्वी मंच से उलझ गया है. बंसीलाल ने भी हाल में हरियाणा विकास मंच की ताल ठोंक दी है. मध्य प्रदेश में पूर्व सांसद असलम शेर खां और इंका संयुक्त सचिव दिलीप सिंह भूरिया की ऐसी ही कोशिशों के कारण केंद्रीय नेतृत्व को दखल देना पड़ा. एक पार्टी नेता के अनुसार, "ये मंच स्थानीय स्तर पर पार्टी संगठन के अप्रासांगिक हो जाने के प्रतीक हैं."

उधर केंद्रीय स्तर पर कांग्रेस फोरम फॉर ऐक्शन पार्टी असंतुष्टों के मंच के रूप में सक्रिय है. मंच के खिलाफ कार्रवाई न होने के बारे में पूछे जाने पर गाडगिल का खिसियाता-सा जवाब था, "ऐसे मंच तो नेहरू के समय में भी थे."

पिछले पखवाडे इस मुद्दे पर बातचीत के लिए पार्टी कार्यसमिति की बैठक हुई. राजीव ने इन मंचों को अपने नेतृत्व के लिए चुनौती करार दिया. सो, कार्यसमिति की वरिष्ठ सदस्या मार्गथम चंद्रशेखर को इन मंचों के नेताओं को यह लिखने का काम सौंपा गया कि वे पार्टी हितों के खिलाफ काम न करें.

इस बीच, राजीव गांधी ने पूर्व लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ को महासचिव बनाकर और पार्टी चुनाव करवाने का जिम्मा सौंपकर इंका महासमिति का पुनर्गठन भी कर दिया. जाखड़ को उम्मीद है कि सांगठनिक चुनावों से "पार्टी का तदर्थवाद खत्म होगा और नेताओं व कार्यकर्ताओं के बीच की दूरी घटेगी."

पर सत्ता में लौटने के लिए कौन-सी रणनीति अपनाई जाए, इसे लेकर पार्टी के सारे धुरंधर ऊहापोह की स्थिति में हैं. कुछ लोगों का मानना है कि पार्टी को जनता दल और वामपंथियों के बीच की दूरी को बढ़ाते हुए भाजपा के बढ़ते रुतबे के खिलाफ राष्ट्रवादी-धर्मनिरपेक्ष तुरुप का इस्तेमाल करना चाहिए. सांप्रदायिकता के खिलाफ हाल ही में हुआ सम्मेलन इसी दिशा में एक कदम था.

मगर राजीव के कुछ दूसरे सलाहकार इससे सहमत नहीं. वे मानते हैं कि भाजपा की कामयाबी के मद्देनजर पार्टी को चालाकी से हिंदू कार्ड का इस्तेमाल करना चाहिए. ऊंट इस करवट बैठे या उस करवट, इतना स्पष्ट है कि इंका को सत्ता में वापसी के लिए दो चीजों की कमी पड़ रही है. उसके पास न तो ज्यादा वक्त है और न ही कारगर रणनीति.

—भास्कर राय और फरजंद अहमद

उपचुनाव

झटके पे झटका

कांग्रेस (इ) फिर से जड़ें जमाने की कोशिश चाहे जितनी कर रही हो, अब तक हुए उपचुनावों में उसका प्रदर्शन निराशाजनक रहा है. 27 फरवरी के विधानसभा चुनाव के बाद 14 विधानसभा क्षेत्रों और लोकसभा के दो निर्वाचन क्षेत्रों में हुए उपचुनावों में इंका ने सिर्फ एक सीट जीती और वह भी हिमाचल प्रदेश में लाहौलस्पीति के दूरस्थ वनवासी विधानसभाई हलके की.

इंका सत्तारूढ़ राष्ट्रीय मोर्चे का मजबूत आधार नहीं तोड़ सकी. पर भाजपा ने हिमाचल प्रदेश के परंपरागत इंका समर्थक वनवासी इलाके की दो सीटों—किन्नौर और भरमौर पर कब्जा जमा लिया. आम चुनाव में करारी मात खाने के बाद आम तौर पर पार्टियां उपचुनाव में अपने हारे हुए मैदान जीतना शुरू कर देती हैं.

पर इंका को शायद यह सहानुभूति नहीं मिली. चुनावों के वक्त पार्टी के खिलाफ जो जनमत बना वह अब तक बदलता नहीं दिख रहा. भाजपा ने मध्य प्रदेश में दमोह और भाटापारा की विधानसभा सीटें इंका से छीन ली और हिमाचल में पालमपुर की लोकसभा सीट पहले से ज्यादा अंतर से फिर जीत ली.

विडंबना यह है कि उत्तर बिहार में जब राजीव भारी भीड़ इकट्ठी कर रहे थे उसी दौरान जनता दल ने छपरा के बहुप्रचारित लोकसभा उपचुनाव में 1.7 लाख वोटों से जीत हासिल की. गोपालगंज विधानसभा उपचुनाव में जनता दल के सुरेंद्र सिंह 54,000 वोटों के अंतर से जीते. ओडीसा के थामनगर विधानसभा उपचुनाव में जनता दल ने इंका को 21,000 वोटों से हराया.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीलाल

दूसरों के इलाज में जुटे

बंगलूर के मुकाम के दौरान कई महत्वपूर्ण नेता मिले

आखिर जमीन से जुड़ा कोई किसान नेता अपने गांव - जवार को छोड़ प्राकृतिक चिकित्सा के लिए इतनी दूर क्यों जाएगा. लेकिन ये नेता अगर उप-प्रधानमंत्री देवीलाल हों तो इसका अर्थ स्पष्ट है कि कुछ न कुछ राजनैतिक गुणा-भाग चल रहा है.

इतना तो समझा जा सकता है कि व्यस्त नेता थकाऊ काम और अपनी कीचड़ उछालू राजनीति से कुछ राहत पाने के लिए स्वास्थ्यप्रद बंगलूर पहुंच गए और प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र में कीचड़ का लेप लगाकर काया निखार करने लगे हों या फिर राजनैतिक तपन बुझाने औषधियुक्त जल में उतर गए हों. अब इस बीच दिल्ली में आठवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारूप पर बहस के लिए राष्ट्रीय विकास परिषद की महत्वपूर्ण बैठक ही हो रही हो तो उससे उन्हें क्या.

बंगलूर से 16 किमी दूर प्राकृतिक चिकित्सा तथा योग विज्ञान संस्थान में देवीलाल के आगमन से पिछले पखवाड़े यह स्थान राजनैतिक चालबाजी की स्थली में बदल गया. देवीलाल यहां किसी अज्ञात बीमारी के इलाज के लिए आए हुए थे. और यहां पहुंचने वालों की फेहरिस्त से अगर कोई संकेत मिलता है तो यही कि यह माहिर राजनेता रामकृष्ण हेगड़े को सबक सिखाने की कोशिशों में जुटा है. उनका मानना है कि हेगड़े भी ओमप्रकाश चौटाला से हरियाणा की गद्दी छीनने वालों में एक हैं. और उन्होंने इस लड़ाई के लिए हेगड़े के गृह नगर को ही चुना.

महत्वपूर्ण मुलाकातियों में हेगड़े के कट्टर प्रतिस्पर्धी एच.डी. देवगौड़ा यहां देवीलाल से मिलने चार दिन में पांच बार पहुंचे. ये मुलाकातें संस्थान में मुलाकातियों के आने के समय शाम 5 से 7 बजे तक ही सीमित नहीं रहीं. खबर है कि दोनों के बीच अपने प्रिय विषय किसानों के कल्याण के अलावा जनता पार्टी और जनता दल के विलय पर भी बातचीत हुई. दूसरे महत्वपूर्ण मुलाकातियों में एच.एन. नंजेगौड़ा, मनीराम बागड़ी और सुब्रमण्यम स्वामी तक थे जो वी.पी. सिंह या हेगड़े दोनों के ही प्रशंसक नहीं हैं.

मेल-मुलाकात का यह समय भी प्रासंगिक है क्योंकि ताकतवर किसान जातियां वोक्कलिगा और लिंगायत दोनों ही चिनप्पा रेड्डी आयोग की रपट से नाखुश हैं. आयोग ने दोनों समुदायों को पिछड़ी जातियों की कोटी से हटाने की सिफारिश की है. उल्लेखनीय यह है कि यदि इन दोनों समुदायों को जनता दल के झंडे तले लाया जा सका तो इससे राज्य में पार्टी की वापसी का अभियान चलाने को सही संबल मिल सकता है.

वैसे, देवीलाल ने प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की अपनी इस यात्रा के असली मकसद को छिपाने की कोशिश भी नहीं की. उन्होंने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को दो बार इंटरव्यू दिया. इनमें उन्होंने पूंजीवादी प्रेस पर हमला बोला 'जो गांव की लड़ाई लड़ने वालों की छवि मिट्टी में मिलाने की कोशिश करता है.' साथ ही उन्होंने इस पर भी आश्चर्य प्रकट किया कि टेलीफोन टैप कांड में 'संसदीय जांच समिति की तीखी रपट' के बावजूद हेगड़े ने इस्तीफा क्यों नहीं दिया. वे जनता दल की भारी विजय का श्रेय लेना भी नहीं भूले और कहा, "उत्तर में लोग हरियाणा में मेरी उपलब्धियों से परिचित हैं. यही वजह थी कि मेरी पार्टी को मतदाताओं ने भारी मतों से जितवाया."

हालांकि बंगलूर छोड़ने से पहले उन्होंने प्रधानमंत्री के प्रति जबानी समर्थन जताया. उन्होंने कहा कि वे खुद उनके खिलाफ कुछ नहीं करेंगे (उनकी फिर जल्दी बंगलूर आने की योजना है). साथ ही वे यह कहना भी नहीं भूले कि वी.पी. सिंह महम के मुद्दे पर कमजोर साबित हुए हैं और केंद्रीय मंत्रिमंडल को चौटाला से इस्तीफा मांगने का कोई अधिकार नहीं था. इसके बाद मानो 'पूंजीवादी प्रेस' के खिलाफ अपने हमले की भरपाई के लिए उन्होंने घोषणा की कि उनकी पार्टी बंगलूर प्रेस क्लब को 50,000 रु. दान देगी.

लेकिन 55 एकड़ में स्थित संस्थान में पांच दिनों के निवास से उनकी बीमारी दूर हुई या नहीं, यह नहीं जाना जा सका. लेकिन चूंकि अपना वजन दिखाने की उनकी कोशिशें बदस्तूर जारी हैं इसलिए नतीजा बिलकुल स्पष्ट है. साथ ही यह भी गौर तलब है कि संस्थान में उनसे गुफ्तगू करने चंद्रशेखर भी आ पहुंचे. उससे देवीलाल का यह पड़ाव और अधिक रहस्यमय बन गया.

लगता है उप-प्रधानमंत्री के बंगलूर पड़ाव से शुरू हुए हेगड़े विरोधी अभियान की तपन के शमन के लिए जनता दल को किसी खास राजनैतिक चिकित्सा के दौर से गुजरना होगा.

—यशवंत कुमार

कार्टून: अजीत नैनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

बदला लेने का जुनून

वनवासी क्षेत्र में कंजर जाति के लोगों की सामूहिक हत्या

उस सुबह सूरज भी सहमा-सहमा-सा उगा. राजस्थान में जयपुर से 400 किमी दूर चित्तौड़गढ़ जिले के बेगूं थाना क्षेत्र के मंडावरी गांव में सूरज के फैलते उजाले के बीच दर्जनों परिवारों की जिंदगी में अंधेरा छा गया. 23 जून को इस वनवासी इलाके में कई हजार लोगों की भीड़ ने कंजरों की एक बस्ती में पुलिस की मौजूदगी में नौ लोगों को मौत के घाट उतार दिया और 37 लोगों को पीट-पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया.

बादलों की लुकाछिपी के बीच होती भोर के साथ-साथ हजारों लोग कंजरों की उस बस्ती की ओर बढ़ने लगे थे. तड़के चार बजे से हथियारबंद लोगों समेत भारी भीड़ वहां जुट आई. सवेरे सात बजे तक करीब चार हजार की भीड़ 40 परिवारों की बस्ती को घेरकर खड़ी हो गई. सरकारी सूचना के मुताबिक साढ़े सात बजे पुलिस भी वहां पहुंच गई थी.

चश्मदीदों और अब मौत से जूझ रहे लोगों का कहना है कि पुलिस की मौजूदगी में भीड़ ने आठ बजे मौत का तांडव शुरू किया. कंजरों को घेरे में बिठाकर लाठियों और सरियों से उनकी खूब पिटाई की गई. कई को बंदूक की गोली से उड़ा दिया गया. भीड़ ने औरतों, बूढ़ों और बच्चों को भी नहीं बख्शा. मरने वालों में एक महिला भी थी. दर्जनों महिलाएं और बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए.

भीड़ का वहशीपन यहीं नहीं थमा. मौत के इस तांडव के बाद उसने पूरी बस्ती में आग लगा दी. डायनामाइट लगाकर कई मकानों को ध्वस्त कर दिया गया. राज्य के सिंचाईमंत्री विजय सिंह झाला ने भी घटनास्थल के दौरे के बाद इसकी पुष्टि की. वे कहते हैं, "घटना स्थल पर गन पाउडर पड़ा था. बारूद की गंध थी और लगता था कि डायनामाइट से मकानों को ध्वस्त किया गया है." मंडावरी क्षेत्र के कोई एक वर्ग किमी के इलाके में पांच स्थानों पर बसी कंजर बस्तियों पर भी हमले हुए. कुल मिलाकर 57 मकानों को ढेर कर दिया गया.

सभी फोटो: रोहित जैन

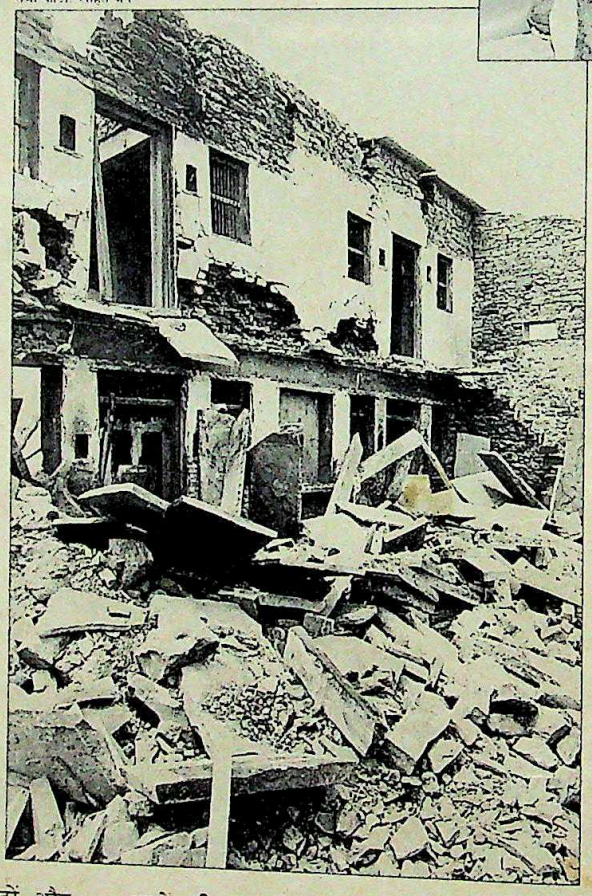

(बाएं) डायनामाइट से ध्वस्त मकान; और ले जाए जाते घायल

इनमें तीन मकान तो नरसंहार की कालिख भरी सुबह के प्रत्यक्षदर्शी शक्तिलाल के थे. वे खुद तो इस हमले में घायल हुए ही, वहशियों ने उनकी मां कपनी और पिता सोएडा की भी जान ले ली. यही नहीं, पत्नी और भाभी के अलावा उनके चार भाई और तीन बहनें भी घायलों में हैं. शक्तिलाल बताते हैं, "भीड़ सरियों, तलवारों, भालों और दुनाली बंदूकों से लैस थी. हमारे पास भी हथियार थे. सात बजे के बाद बेगूं थाने का थानेदार 10-12 सिपाहियों के साथ दो जीपों में आया. वह हमसे बोला कि तुम लोग हथियार मुझे दे दो, फिर मैं इस भीड़ से बचा लूंगा. हथियार देने के बाद वह कहने लगा तुम सब इकट्ठे होकर बैठ जाओ. हम गोल घेरे में बैठ गए. तुरंत भीड़ हम पर टूट पड़ी. पुलिस देखती रह गई."

45 वर्षीया गंगा का पति शांत्या भी इस नरसंहार में मारा गया. गंगा के अनुसार "धाकड़ जाति के एक व्यक्ति ने शांत्या के गले पर बंदूक रखकर गोली मार दी."

बताया जाता है कि मंडावरी, नंदवाई, जालमपुरा और कई गांवों के लोग उस भीड़ में थे. वे लोग चिल्ला रहे थे कि "हम तुम्हें यहां नहीं रहने देंगे. तुम लोग चोरियां करते हो." मंडावरी गांव के ही एक शख्स के अनुसार आसपास के गांवों के लोग कंजरों द्वारा चोरी, सेंधमारी की वारदातों से परेशान थे और आक्रोश में थे.

सूत्रों के अनुसार 20 जून की शाम को क्षेत्र के 20 गांवों के लोगों की एक बैठक हुई जिसमें कंजरों को सबक सिखाने की योजना बनाई गई. इसके लिए चंदा भी इकट्ठा किया गया था. पर जानकारी के बावजूद पुलिस ने इस सिलसिले में कोई एहतियाती कार्रवाई नहीं की. यही नहीं, एक प्रत्यक्षदर्शी फूली के अनुसार सत्या नामक व्यक्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिलाधीश मालविका पवार के अनुसार, "जिला प्रशासन को घटना की सूचना दिन के एक बजे मिली जबकि थानाधिकारी को इसकी सूचना तुरंत देनी चाहिए थी." उन्होंने 20 जून को हुई ग्रामीणों की सभा के बारे में जानकारी होने से इनकार किया. उधर 100 से ज्यादा लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है. पुलिस ने 25 लोगों के खिलाफ मुकदमे बनाए और एक दर्जन से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया.

पुलिस ही नहीं, भाजपा के स्थानीय विधायक चुन्नीलाल धाकड़ पर भी हमलावरों को प्रोत्साहित करने और संरक्षण देने का आरोप है. घटना की जानकारी के बावजूद वे दूसरे दिन

सिंह शेखावत ने कहा, "इस हत्याकांड के किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा, चाहे वे मेरी ही पार्टी के विधायक चुन्नीलाल धाकड़ ही क्यों न हों. अगर धाकड़ अपराधी हुए तो उन्हें भी जेल जाना ही होगा." घटनास्थल के दौरे के बाद मुख्यमंत्री ने नरसंहार की न्यायिक जांच का आदेश देते हुए प्रत्येक मृतक के परिवार को एक-एक लाख रु. मुआवजा देने की घोषणा की. जांच उच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश से कराई जाएगी. इस्तीफे की मांग पर शेखावत ने टिप्पणी की, "अगर ऐसी परंपरा होती या इस्तीफा देने से भविष्य में नीची जातियों पर अत्याचार बंद हो जाएंगे तो मैं इस्तीफा देने में एक मिनट की भी देर न करूं. अलबत्ता मुख्यमंत्री होने के नाते मैं नैतिक जिम्मेदारी कबूल करता हूं."

भाजपा के स्थानीय विधायक चुन्नीलाल धाकड़ पर हमलावरों को प्रोत्साहित करने का आरोप है

शेखावत ने घोषणा की है कि इस हत्याकांड के किसी भी दोषी को कतई नहीं बख्शा जाएगा

थानेदार के सामने गोली मारी गई. फूली ने बताया, "थानेदार ने कहा यह सत्या बदमाश है, इसको मारो और उन्होंने उसके माथे में गोली मार दी." पूर्व विधायक पूरज पचोली का भी आरोप है, "पुलिस और प्रशासन के प्रोत्साहन से ऐसा हुआ और थानेदार ने गोली चलवाई."

पर एक आला पुलिस अधिकारी का मानना है, "यह घटनास्थल पर मौजूद पुलिसकर्मियों की लापरवाही का मामला तो है ही, शायद उनकी शह भी रही हो." मगर वे थानेदार द्वारा गोली चलाने की बात पर यकीन नहीं करते.

पुलिस निष्क्रियता की पुष्टि करते हुए इंका कहते है, "यह शर्मनाक घटना है." उधर विशिष्ट योजनामंत्री संपतराम ने भी "घटनास्थल पर मौजूद पुलिसकर्मियों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज करने" की सिफारिश की.

बहरहाल, प्रशासन यह साहस तो नहीं जुटा पाया पर संबंधित थानाधिकारी को लापरवाही बरतने के आरोप में तुरंत लाइन हाजिर कर दिया गया. चित्तौड़गढ़ की घटनास्थल पर गए. खुद धाकड़ कहते हैं, "लोग कंजरों के कारनामों से परेशान थे. इतनी भीड़ को रोकना पुलिस के वश में न था. फिर भी यह बुरा हादसा है. ऐसा होना नहीं चाहिए था."

लेकिन इंका जिलाध्यक्ष और पूर्व स्थानीय सांसद निर्मला कुमारी शक्तावत के अनुसार, "देश में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने सामंतशाही जनप्रतिनिधियों को प्रोत्साहन दिया, उसी का यह नतीजा है. यह पुलिस अत्याचार की कहानी है."

उधर, 26 जून को राज्य विधानसभा के बजट सत्र में पहले ही दिन इस मामले को लेकर खूब हंगामा मचा. विपक्षी इंका ने इस 'शर्मनाक कांड' पर चर्चा की मांग करते हुए नारेबाजी की. सदन की कार्यवाही तीन बार स्थगित कर देनी पड़ी. विपक्ष के धरना देने पर प्रश्नकाल स्थगित कर दिया गया. विधानसभा में विपक्ष के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने इतना बड़ा नरसंहार न रोक पाने के लिए शेखावत सरकार से इस्तीफे की मांग की.

बहस में भाग लेते हुए मुख्यमंत्री भैरों

पर पूर्व मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर के मुताबिक ऐसी परंपरा उन्होंने ही डाली थी, "1984 में मान सिंह हत्याकांड की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मैंने पद से इस्तीफा दे दिया था." इससे पहले दिन इंका विधायक दल की बैठक में मंडावरी नरसंहार को राष्ट्रीय मुद्दा बनाने का फैसला किया गया था. अगले दिन पूर्व प्रधानमंत्री और इंका अध्यक्ष राजीव गांधी ने घटनास्थल का दौरा किया. उन्होंने मंडावरी के पीड़ितों को इंका की ओर से 10 लाख रु. देने की घोषणा की. हरेक मृतक के परिवार को 1-1 लाख रु. दिए जाएंगे. पिछड़ों पर अत्याचार के लिए उन्होंने भाजपा को आड़े हाथों लिया.

वैसे राज्य में नई सरकार आने के बाद पुलिस अत्याचार की यह पहली घटना नहीं है. मुख्यमंत्री बनने के बाद शेखावत ने कहा था, "मैं पुलिस में निचले स्तर तक सुधार की कोशिश करूंगा." परंतु आए दिन राज्य में कोई न कोई ऐसी घटना सुनाई दे जाती है जिससे लगता है कि पुलिस की दरिंदगी पर अभी तक काबू नहीं पाया जा सका है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरुण नेहरू

टेढ़ी भृकुटि

एफआईआर नीति से नाराज

विशाल डील-डौल और हैसियत वाले वाणिज्यमंत्री अरुण नेहरू कुछ समय से सुर्खियों के बाहर थे. पर पिछले पखवाड़े राजनैतिक गुमनामी की धूल झाड़कर वे एकाएक खड़े हो गए.

पत्र-पत्रिकाओं को दी कई मुलाकातों में उन्होंने अपनी सरकार की बदले की कार्रवाइयों के प्रति आपत्ति जताई. इसे लेकर तरह-तरह के चर्चे छिड़ गए. नेहरू क्यों बोल रहे हैं? क्या वे इंका में जाना चाहते हैं? क्या वे प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह से नाराज हैं? या फिर यह सिर्फ राजनीति के केंद्र में आने की रणनीति है?

इस अफवाह में शायद सचाई है कि वी.पी. सिंह के साथ नेहरू के रिश्ते उतने अच्छे नहीं रह गए हैं जितने ऊपर से दिखते हैं. क्या आपसे विभिन्न मुद्दों पर राय मशविरा किया जाता है, यह पूछे जाने पर उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया, "मुझे वाणिज्य और पर्यटन विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई है और मैं उसे निभा रहा हूं." किंगमेकर माने जाने वाले नेहरू ने अपने पिछले मंत्री काल में ऐसी ही बात तब कही थी जब राजीव गांधी सरकार में उनके आखिरी दिन चल रहे थे.

नेहरू इस सरकार के पिछली सरकार की गलतियों की जांच में ही उलझे रहने से खास तौर पर नाराज हैं. वे कहते हैं, "मेरी हमेशा से मान्यता रही है कि एक बार आपको सत्ता सौंप दी गई तो उसका उपयोग आप भविष्य के लिए कीजिए. जो कोई भी इसका उपयोग भूतकाल के लिए करता है उसे नुकसान उठाना पड़ेगा."

माना जाता है कि नेहरू ने यह देखकर कि उनके अनेक साथी सरकार की 'एफआईआर नीति' के खिलाफ हैं, वी.पी. सिंह पर दबाव डालने के लिए इसका इस्तेमाल करने की सोची है. उनके आलोचकों का मानना है कि अपना पक्ष बचाने के लिए वे ऐसा कर रहे हैं.

वी.पी. सिंह और नेहरू के रिश्तों में तनाव सबसे पहले उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव के मुख्यमंत्री चुने जाने से आया. नेहरू, अजित सिंह के पक्ष में थे. लेकिन नेहरू की वी.पी. सिंह से असली नाराजगी कश्मीर को लेकर है. नेहरू की सलाह पर ही प्रधानमंत्री ने जगमोहन को राज्यपाल बनाया था. लेकिन जगमोहन विरोधी आलोचना बढ़ी; मंत्रिमंडल में कानाफूसी होने लगी कि कश्मीर के राज्यपाल सिर्फ नेहरू से ही राय मशविरा करते हैं और फिर जगमोहन ने प्रधानमंत्री को बताए बिना विधानसभा भंग करके उनकी नाराजगी मोल ले ली. वी.पी. सिंह ने इसके बाद अपने सलाहकार बदल लिए और जॉर्ज फर्नांडीस की सोच को तरजीह दी जाने लगी. आज इस मुद्दे पर नेहरू और वी.पी. सिंह एकदम अलग-अलग हो चुके हैं. अब प्रधानमंत्री चाहते हैं कि फारूक अब्दुल्ला से संपर्क किया जाए जबकि नेहरू इसके सख्त विरोधी हैं.

यह बहुत स्पष्ट दिखता है कि नेहरू दरकिनार कर दिए गए हैं और शायद यही उनकी नाराजगी की जड़ है. किंगमेकर से इस हालत में, जिसमें उनकी बात भी न सुनी जाए, पहुंचकर वे दुखी हैं. लेकिन रणनीति के माहिर नेहरू वी.पी. सिंह से अपने निजी मतभेदों को सर्वसम्मत मुद्दे का रूप देने में लगे हैं. मंत्रिमंडल में उनके सहकर्मी उनकी मंशा पर शक जरूर करते हैं लेकिन वे उनसे सहमत भी हैं कि प्रधानमंत्री को दृढ़ता से काम करना चाहिए जो वे नहीं कर रहे हैं.

आज जनमोर्चा घटक के सदस्य प्रधानमंत्री की तुलना में नेहरू के ज्यादा करीब हैं. पार्टी अध्यक्ष के चुनाव में मोर्चा के लोग अंतिम बार वी.पी. सिंह की 'निष्पक्षता' से प्रभावित हुए. उन्होंने जयपाल रेड्डी को समर्थन देने का फैसला किया था लेकिन वी.पी. सिंह ने खुद को 'निष्पक्ष' घोषित कर रखा था. जनमोर्चा घटक के एक नेता कहते हैं, "वी.पी. सिंह पार्टी को थाल में परोसकर देवीलाल को सौंप देना चाहते हैं तो सौंपें, हम सहभागी नहीं होंगे."

अब मोर्चा के लोगों ने तय किया है कि वे अपने फैसले खुद करेंगे. जैसे उन्होंने अनौपचारिक तौर पर टेलिफोन टैपिंग कांड में हेगड़े का समर्थन करने और उन्हें "चंद्रशेखर और देवीलाल जैसे लोगों" से बचाने का फैसला किया है. नेहरू प्रधानमंत्री के सामने स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि मोर्चे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. जैसा कि नेहरू कहते हैं, "षड्यंत्र ही आज प्रमुख नियम हो गया है. हर आदमी हर किसी से मिल रहा है."

इसीलिए वे राजीव गांधी से मिल रहे हैं? नेहरू जवाब देते हैं, "मैं उनसे अनेक बार मिला हूं. मैं हर आदमी से मिलता हूं. हमने एक मुद्दे पर लड़ाई की. हम जीत गए. अब हमें जिम्मेदारी निभानी है. मैं या तो यह काम कर सकता हूं या फिर यही हिसाब लगाता रह सकता हूं कि 10 साल पहले उसने यह किया, वह किया था."

यह बिना सोची-समझी टिप्पणी नहीं है. नेहरू बिना तैयारी और सोचे-समझे कुछ भी नहीं कहते. वे जानते हैं कि इस तरह के मेल-मिलाप का क्या असर हो सकता है. इन अफवाहों को हवा देने का काम आरिफ मुहम्मद खां (जो नेहरू के बहुत करीबी हैं) की राजीव गांधी से भेंट ने भी किया. आरिफ ने इस भेंट के बारे में सार्वजनिक तौर पर कुछ नहीं कहा है और नेहरू टिप्पणी करने से इनकार करते हैं.

प्रशांत पंडियार

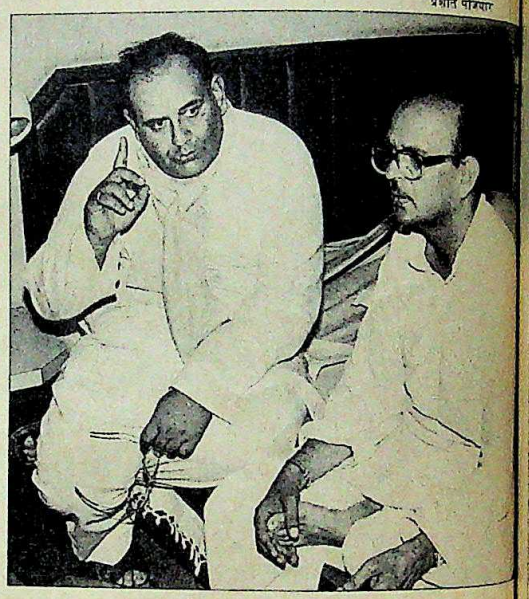

नेहरू और वी.पी. सिंहः दरार

लेकिन अस्पष्टता बनाए रखना ही तो उद्देश्य है. नेहरू को इस काम में मजा आता है और राजीव गांधी से हाथ मिलाना तो शायद उनके दिमाग के किसी कोने में है भी नहीं. नेहरू की रणनीति में चाहे जो बातें हो, अभी तक तो यही लगता है कि उनकी सारी कूटनीति जनता दल के अंदर रहने की बात सोचकर ही बनी है. दूसरी जगह हाथ-पांव मारने का यह थोड़ा छुपा-थोड़ा खुला खेल वी.पी. सिंह से कुछ 'और' हथियाने के लिए किया दिखता है. उन्हें कितनी सफलता मिलती है यह इस पर निर्भर करेगा कि नेहरू की इस आक्रामकता को प्रधानमंत्री किस तरह लेते हैं.

—सीमा मुस्तफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्मू-कश्मीर

वही पिटे नुस्खे

फारूक आगे आने को तैयार नहीं

रंग-ढंग वही है पंजाब जैसा, जो आठ साल से जल रहा है. आतंकवाद उभरने लगे तो हाथ पर हाथ धरे रहो, बात बढ़े तो 'गोली का जवाब गोली' वाली नीति पर चलो, कोई परिणाम न निकले तो राजनैतिक बातचीत शुरू करो. इससे भी बात न बने तो पूरी प्रक्रिया फिर से दोहरा दो. कश्मीर घाटी में अभी जो दौर है वह ऐसा है जिससे लगे कि सख्ती समाप्त करके राजनैतिक पहल हो रही है.

उग्रवाद का शिकार हुए इस प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ही राजनैतिक प्रक्रिया की शुरुआत करें, इसके लिए उन्हें 'फंसाने' की पहल शुरू हो चुकी है. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने उनसे बातचीत की इच्छा जताई है. लंदन में 'कुछ और काम निपटाने' के लिए महीनों से पड़े फारूक अब्दुल्ला से भेंट करके उन्हें बातचीत के लिए दिल्ली बुलाने की खातिर रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस वहां रुके. लेकिन फारूक अभी तक इसके प्रति बेताब नजर नहीं आते. बताया जाता है कि उनका जवाब था, "पहले आतंकवादियों को निबट लेने दीजिए और फिर अगर आपको मेरी जरूरत लगने लगे, बुला लीजिएगा."

बाद में ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त और कश्मीरी नेता के करीबी रहे कुलदीप नैयर ने फारूक को दिल्ली जाकर बातचीत करने के लिए राजी किया. तारीखें भी घोषित हुईं, फिर अचानक कदम वापस खींच लिए गए. हैरानी की बात यह है कि जब 'इंडिया टुडे' ने लंदन में फारूक से संपर्क साधा तो उनका जवाब था कि सरकार के किसी आदमी ने उनसे भेंट नहीं की है. आगे की राजनैतिक संभावनाओं के बारे में उन्होंने कहा, "मुझे कश्मीर से आए कई महीने हो गए हैं. अपने लोगों और पार्टी मेंबरों से मुलाकात के बाद ही मैं कुछ कह सकता हूं."

अचरज नहीं कि इंका ही खास तौर पर फारूक की वापसी में दिलचस्पी रखती है. पार्टी के प्रवक्ता एम.जे. अकबर का दावा है कि फारूक अकेले ऐसे कश्मीरी नेता हैं जो वहां हालात सुधार सकते हैं. उनके अनुसार फारूक को मिला सरकारी प्रस्ताव स्पष्ट नहीं है इसीलिए वे यह जिम्मेवारी लेने से हिचक रहे हैं.

दिलचस्प बात यह है कि एक ओर तो सरकार फारूक पर 'डोरे डाल रही है' जबकि दूसरी ओर इसके अधिकांश मंत्रियों की राय है कि आज की स्थिति में फारूक एकदम बेमानी हो चुके हैं. वाणिज्यमंत्री अरुण नेहरू कहते हैं, "यह आदमी तीन महीने से बाहर रहा है. स्पष्ट रूप से उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है. अब जो कुछ करना है, आपको करना है." वामपंथी दलों ने भी, जिन्होंने शुरू में उनकी वापसी का समर्थन किया था, इस मामले में पुनर्विचार शुरू कर दिया है.

लेकिन केंद्र राजनैतिक समाधान के लिए सिर्फ फारूक कार्ड के भरोसे ही नहीं है. सूत्रों का कहना है कि गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद दूसरे कश्मीरी नेताओं से बात शुरू कर रहे हैं. ऐसे नेताओं में इंका नेता गुलाम रसूल कार प्रमुख हैं और खबर है कि मुफ्ती उनसे मिल भी चुके हैं. अब कार धीरे-धीरे सर्वमान्य उम्मीदवार बनकर उभरते दिख रहे हैं. सरकार के सहयोगी दल भी उनके नाम पर सहमति जता रहे हैं. उनके अलावा अब्दुल गनी लोन, काजी निसार और प्यारेलाल हंडू के नामों की चर्चा भी है.

लेकिन जिस तरह से राज्य के अधिकांश नेता खुद को राष्ट्रवादी पार्टियों से अलग घोषित करते हैं, उससे गृहमंत्री की यह आशावादिता कुछ अधिक ही हवाई लगती है.

—सीमा मुस्तफा

भवान सिंह

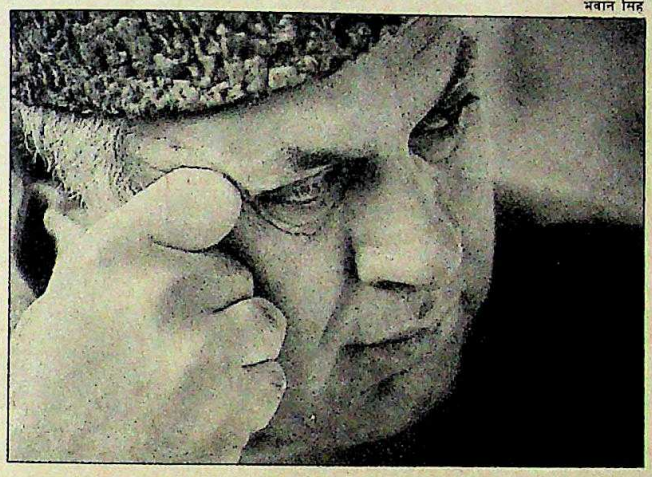

फारूक अब्दुल्ला

'पहले दूसरे काम कर लूं'

*लंदन में लंबी छुट्टी बिता रहे फारूक अब्दुल्ला से विशेष संवाददाता **सीमा मुस्तफा** ने टेलीफोन पर कश्मीर के बारे में बातचीत की. उसके अंश:*

● ***आप भारत कब लौट रहे हैं?***

मुझे कुछ काम पूरे करने हैं. इसलिए मैं लगभग एक हफ्ते बाद लौटूंगा.

● ***क्या जॉर्ज फर्नांडीस और अन्य लोगों ने आपसे संपर्क किया? आपको पता है सरकार कश्मीर समस्या पर आपसे बात करना चाहती है?***

नहीं. मुझसे किसी ने भी संपर्क नहीं किया है. न कोई संदेश मिला है.

● ***क्या राजीव गांधी से आपका संपर्क रहा है?***

इस दौरान मेरा किसी से भी कोई संपर्क नहीं रहा है.

● ***सरकार से आप किन राजनैतिक विकल्पों पर बात करेंगे?***

मुझे नहीं मालूम. मुझे कश्मीर से आए कई महीने हो गए हैं. लौटकर मुझे अपने लोगों और पार्टी मेंबरों से मिलना है. इसके बाद ही (इस मसले को) देखूंगा.

● ***क्या आप कश्मीर की राजनीति में लौटने में दिलचस्पी रखते हैं?***

कश्मीर मेरा वतन है.

● ***फिर इस मुश्किल वक्त में आप उसे छोड़ गए हैं?***

मुझे कुछ दूसरे काम निबटाने हैं.

● ***लेकिन आप तीन महीने से अधिक समय से बाहर हैं?***

मुझे बाहर रहना ही था. मुझे यहां अनेक काम हैं.

● ***इतने नाजुक वक्त में इंग्लैंड जाकर क्या आप अपनी जिम्मेवारियों से भाग नहीं रहे?***

मुझे नहीं मालूम. मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

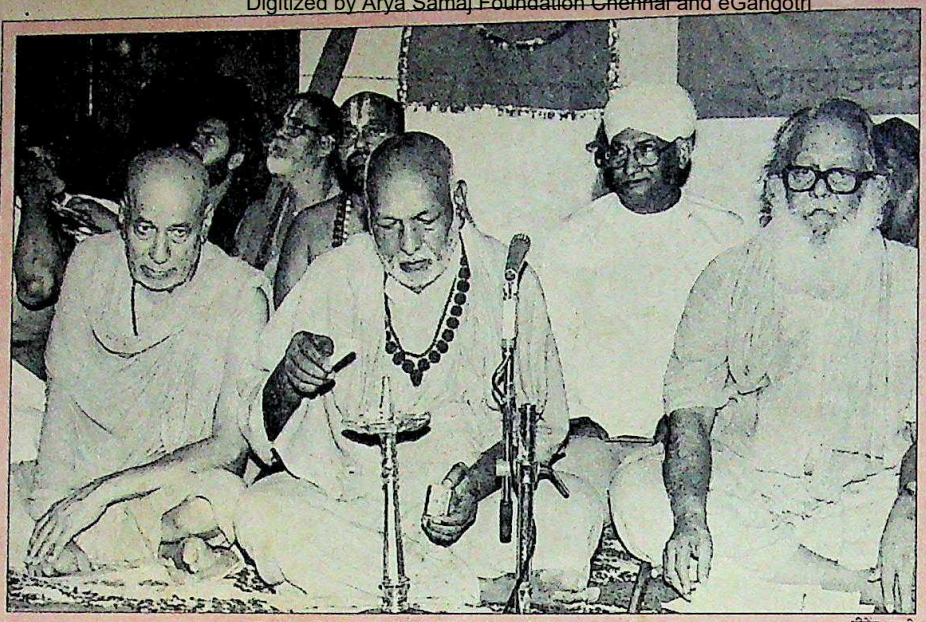

हरिद्वार में विश्व हिंदू परिषद का संत समागम

वीरेंद्र त्यागी

उत्तर प्रदेश

दोस्त, दोस्त न रहा

मंदिर निर्माण को लेकर जद-भाजपा में अभी और ठनेगी

जनता दल और भाजपा में कम-से-कम उत्तर प्रदेश में ठन गई है. राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के रवैए से अप्रसन्न भाजपा राज्य सरकार पर हमले का कोई मौका नहीं छोड़ रही. उधर, विश्व हिंदू परिषद के मंदिर निर्माण के निर्णय से स्थिति और बिगड़ सकती है.

उत्तर प्रदेश विधानसभा के बजट अधिवेशन के पहले कुछ दिन अगर किसी बात के संकेत हैं तो यही कि भाजपा जिसके 57 विधायक हैं, मौजूदा सरकार के विरोधी दल की भूमिका निभा रही है. विधानसभा में जनता दल के 210 विधायक हैं. दरअसल, मौजूदा सरकार पर पार्टी के सीधे हमलों से 94 विधायकों वाली कांग्रेस का भी प्रदर्शन फीका पड़ गया है. भाजपा नेताओं ने जनता दल सरकार के बजट को सिर्फ "अप्रभावशाली, उद्योगपति समर्थक और महंगाई बढ़ाने वाला" ही नहीं कहा बल्कि मुख्यमंत्री यादव के बहुत करीबी समझे जाने वाले दो प्रभावशाली कैबिनेट मंत्रियों के आचरण की भी आलोचना की.

भाजपा ने राज्य अतिथिगृह के अधिकारी ओंकारनाथ सिंह के साथ किए गए दुर्व्यवहार के मुद्दे पर श्रममंत्री आजम खां के खिलाफ कार्रवाई की मांग करके बड़ा विवाद खड़ा कर दिया. ओंकारनाथ ने आरोप लगाया कि मंत्री ने अतिथिगृह में अपने सूट के बाथरूम में 'मामूली मरम्मत' के काम के लिए उन्हें गालियां दीं. आजम खां का कहना था कि अधिकारी ने काम नहीं किया इसलिए उन्हें सख्त रवैया अपनाने पर मजबूर होना पड़ा.

भाजपा ने 18 जून को मंत्री के आचरण का मुद्दा उठाया और पहले आधे घंटे तक, फिर पूरे दिन सदन की कार्यवाही नहीं चलने दी.

मुख्यमंत्री यादव ने भाजपा नेताओं से खास तौर पर अपील की, "मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूं इस मुद्दे को छोड़ दें अन्यथा अफसरशाही और सरकारी कर्मचारी हमें नहीं बख्शेंगे." भाजपा पर इस अपील का कोई असर नहीं हुआ और उसने 20 जून को विशेषाधिकार उल्लंघन प्रस्ताव के जरिए मामला फिर उठा दिया. उस दिन भी सदन की कार्यवाही दो घंटे तक स्थगित रखनी पड़ी.

दरअसल पिछली 5 दिसंबर को जब बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी के पूर्व संयोजक आजम खां को यादव ने अपने मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री बनाया तभी से भाजपा नाखुश है. भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष राजेंद्र गुप्ता का आरोप है कि आजम खां सांप्रदायिक बयान दे रहे हैं और मंत्री बनने के बावजूद बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी की बैठकों में हिस्सा ले रहे हैं. गुप्ता कहते हैं, "उन जैसे लोगों का मंत्रिमंडल में बने रहना साफ जाहिर करता है कि सरकार बाबरी मस्जिद कमेटी से सहानुभूति रखती है. ऐसे तत्वों के मंत्री होने के कारण ही सरकार हाईकोर्ट में चल रहे मामले में एकतरफा और गलत-सलत पक्ष रख रही है." विधानसभा में पार्टी विधायक दल के नेता कल्याण सिंह ने मंत्री के राष्ट्रविरोधी बयान को लेकर स्थगन प्रस्ताव भी रखा था. पार्टी विधायकों ने दूसरे मंत्रियों को भी नहीं बख्शा. भाजपा के सुंदरलाल दीक्षित ने बाराबंकी के एक कैबिनेट मंत्री पर तस्करों को संरक्षण देने का आरोप लगाया. नगर विकासमंत्री विक्रमादित्य पांडे और उनके मित्र को लेकर उड़े हेलिकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने (देखें बॉक्स) को भी भाजपा ने बड़ा मुद्दा बनाया.

भाजपा का यह आक्रामक तेवर उसकी सुविचारित रणनीति का हिस्सा लगता है जो उसने राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर मुख्यमंत्री के कदम के जवाब में अपनाया है. एक वरिष्ठ मंत्री कहते हैं, "इन सबके पीछे उनका एक मकसद है. मेरे पास विश्वास करने की यह वजह है कि उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा ने मुसलमानों के तुष्टिकरण के सवाल पर कल्याण सिंह की अगुआई में विधानसभा में जनता दल सरकार पर जमकर हमले किए

बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के पूर्व संयोजक आजम खां जबसे राज्य में कैबिनेट मंत्री बनाए गए हैं, तभी से भाजपा नाखुश है

संबर को जब
मेटी के पूर्व
ादव ने अपने
बनाया तभी से
के प्रदेशाध्यक्ष
कि आजम खां
और मंत्री बनने
ऐक्शन कमेटी
हैं. गुप्ता कहते
त्रिमंडल में बने
है कि सरकार
हानुभूति रखने
के कारण ही
रहे मामले में
पक्ष रख रहे
धायक दल के
राष्ट्रविरोधी
ताव भी रखा
मंत्रियों को भी
ाल दीक्षित ने
ी पर तस्करों
लगाया. नगर
डे और उनके
लिकॉप्टर में
क्स) को भी

तेवर उसके
स्सा लगता है
बरी मस्जिद
के जवाब में
कहते हैं: "इन
द है. मेरे पास
है कि उनके

केंद्रीय नेताओं ने इस सरकार पर मंदिर समर्थक होने का दबाव डालने के लिए राज्य नेताओं को हरी झंडी दिखाई है."

यादव ने साफ जता दिया है कि उनकी सरकार राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को अदालत के बाहर सुलटाने की इजाजत नहीं देगी. उन्होंने इटावा में 2 जून को कहा, "मेरी कुर्सी रहे या न रहे, मैं किसी को भी सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की इजाजत नहीं दूंगा." भाजपा नेताओं का मानना है कि यादव मुसलमान वोटों के तुष्टीकरण के चक्कर में उसके परिणामों को नजरअंदाज कर रहे हैं. पार्टी ने सरकार के पक्षपाती रवैए की खुली आलोचना की है. मसलन पार्टी का कहना है कि कानपुर के दंगों में मरे लोगों के परिवारों में से प्रत्येक को एक-एक लाख रु. के अनुदान की घोषणा सिर्फ इसलिए की गई क्योंकि वे मुसलमान हैं. जबकि शंकराचार्य की गिरफ्तारी के विरोध में शाहजहांपुर में आत्मदाह करने वाले ज्ञानदेव के परिवार को कोई राहत नहीं दी गई.

पार्टी के महासचिव कलराज मिश्र कहते हैं, "यदि यादव यह सोचते हैं कि वे शंकराचार्य की तरह विश्व हिंदू परिषद और भाजपा से भी निबट सकते हैं तो गलतफहमी में हैं. हम जब मंदिर का निर्माण शुरू करेंगे तो खुद उनके ही निर्वाचन क्षेत्र जसवंत नगर के लोग बड़ी संख्या में उसमें भाग लेंगे. वे लोग जरूरत पड़ने पर अपनी जान भी दे देंगे. तब हम देखेंगे कि वे क्या करते हैं."

लेकिन मिश्र को इसके लिए 30 अक्तूबर तक इंतजार करना होगा क्योंकि विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मार्गदर्शक मंडल ने 23 जून को हरिद्वार में प्रस्ताव पारित कर हर कीमत पर उस दिन मंदिर निर्माण शुरू करने की घोषणा की है. इससे पहले 29 सितंबर को देश के प्रमुख नगरों और तीर्थ स्थलों से अयोध्या के लिए विजय यात्राएं कूच करेंगी. हरिद्वार सम्मेलन में यह भी स्पष्ट हो गया कि यादव परिषद की आंख की किरकिरी बन गए हैं. वक्ताओं ने उन्हें रावण की संज्ञा देते हुए कहा कि उन्हें "मुलायम को मुलायम बनाना" आता है.

जाहिर है, राज्य की स्थिति बिगड़ने से रोकने के लिए यादव को अपने राजनैतिक कौशल का परिचय देना होगा. राम मंदिर के निर्माण के मामले में भाजपा उन्हें बख्शने वाली नहीं है. इससे उठे तूफान का यादव सफलता से सामना कर पाते हैं या नहीं यह तो वक्त ही बताएगा.

—दिलीप अवस्थी

रेखाचित्र: जयंती

हेलिकॉप्टर दुर्घटना

बेजा इस्तेमाल

जनता दल के मंत्री सिर्फ भाजपा पर ही यह आरोप नहीं लगा सकते कि वह उन्हें विवादों में फंसा रही है. कम-से-कम एक मंत्री तो इसके लिए खुद ही दोषी है. जब से जनता दल सरकार ने सत्ता संभाली है उसके मंत्रियों पर सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग के आरोप लग रहे हैं. ऐसे ही आरोप खुद वे कभी इंका नेताओं पर लगाया करते थे. सरकार बनने से लेकर अब तक खुद मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव 17 बार अपने गृह नगर इटावा के लिए उड़ान भर चुके हैं. सरकार के तीन विमान और चार हेलिकॉप्टरों के बेड़े में से एक हेलिकॉप्टर 12 जून को दुर्घटनाग्रस्त हो गया.

इस सरकारी बेड़े का एक चेतक हेलिकॉप्टर इस बोझ को नहीं झेल पाया और 12 जून को दुर्घटनाग्रस्त हो गया. पर अधिकारी इसका खंडन करते हैं.

और इस मामले में जिसे 'चमत्कार' कहा गया, वह यह था कि हेलिकॉप्टर में बैठे मंत्री महोदय के साथ उनकी एक महिला साथी और दो पायलटों को खरोंच तक नहीं आई. 54 वर्षीय शहरी विकासमंत्री विक्रमादित्य पांडे ने बद्रीनाथ से जोशीमठ और नैनीताल होते हुए लखनऊ तक की वापसी यात्रा के लिए हेलिकॉप्टर मंगवाया था.

जोशीमठ से 10 बजे उड़ान भरने के बाद 10.45 बजे हेलिकॉप्टर एक ऊंचे पहाड़ को पार करता हुआ डगमगाया और दुर्घटनाग्रस्त हो गया. मंत्री महोदय, श्रीमती निर्मला शर्मा (जो पांडे के कथनानुसार उनकी बहन हैं पर कुछ अखबारनवीस उन्हें उनकी 'मित्र' मानते हैं) और दो पायलटों को मामूली चोटें ही आईं.

जाहिरा तौर पर मंत्री महोदय जल आपूर्ति और मल निकासी की समस्याओं के 'अध्ययन' के लिए बद्रीनाथ गए थे. वापसी यात्रा के लिए उन्होंने हेलिकॉप्टर की मांग की थी क्योंकि उन्हें नैनीताल में प्रधानाचार्यों की बैठक में शामिल होना था. यह सब तो सरकारी खानापूर्ति के लिए है, वरना मंत्री और अधिकारीगण अपने कार्यक्रम कुछ इसी तरह बनाते हैं कि गर्मियां पहाड़ों पर कटें.

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारा मशीन घोटाला

अभी चारा मिलता रहेगा

लेकिन बलराम जाखड़ के सीधे फंसने की उम्मीद नहीं

चारा उत्पादन मशीनों ने पिछले साल मई में इका पर हमले के लिए विपक्ष को चारा मुहैया कर दिया था. उस समय इंका सत्ता में थी. विपक्षी तोपों के मुख्य निशाने तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ थे जिन पर समाचार जगत ने 50 चारा उत्पादन मशीनों के आयात में सीमा शुल्क की चोरी का आरोप लगाया था.

अब मद्रास के सीमा शुल्क कलेक्टर द्वारा जारी कारण बताओ नोटिस में भी समाचार जगत के इस आरोप का समर्थन किया गया है कि चारा उत्पादन मशीनों का आयात संदेह से परे नहीं है. नोटिस की एक कॉपी 'इंडिया टुडे' ने खास तौर पर हासिल की है. उसमें घटनाओं को सिलसिलेवार तरीके से रखा गया है और मशीनों के आयात में शामिल कुछ लोगों के बयान दर्ज किए गए हैं.

सीमा शुल्क विभाग की नोटिस में अनेक अनियमितताओं के स्पष्ट संकेत हैं

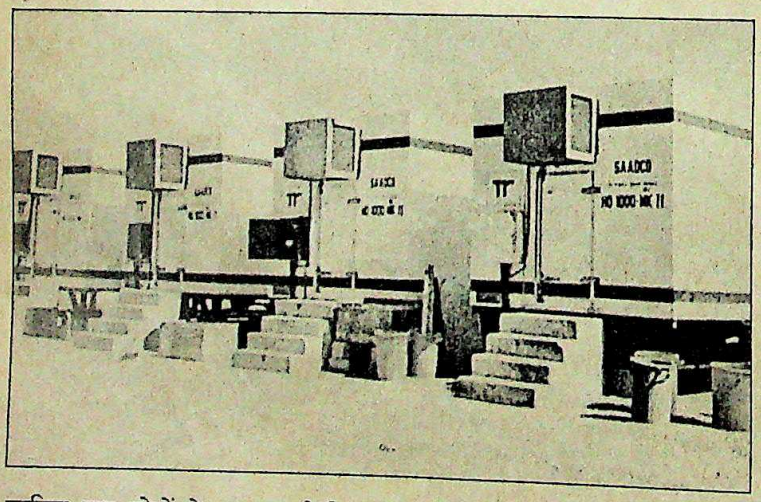

चारा उत्पादन मशीनें और जाखड़: मासूमियत के दावे

घोटाला बंबई स्थित संजीवनी फॉडर प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड को 1987 में अपनी विदेशी सहयोगी कंपनी फोमेटा ओवरसीज एसए से 50 चारा मशीनों के आयात के लिए सीमा शुल्क में दी गई असाधारण छूट से संबंधित है. मैड्रिड स्थित फोमेटा के मालिक जॉन रिचर्ड ब्रैडी हैं. सीमा शुल्क में छूट इस आधार पर दी गई कि मशीनें एक किसान संगठन—भारत कृषक समाज को दान कर दी जाएंगी. उल्लेखनीय है कि इंका समर्थित इस संगठन के पदेन अध्यक्ष जाखड़ है.

लेकिन 'संजीवनी' ने इन मशीनों को भारत कृषक समाज को देने के बजाए उन्हें विभिन्न राज्यों की वित्तीय संस्थाओं के पास गिरवी रख दिया और कुल 3.74 करोड़ रु. का कर्ज ले लिया. इस कर्ज का एक हिस्सा विदेशी मुद्रा में था. इसके अतिरिक्त 'संजीवनी' पर यह आरोप भी है कि उसने छह अतिरिक्त चारा उत्पादन मशीनों की तस्करी की और उन्हें सरकारी संस्थानों को बेच दिया. जाखड़ ने इन मशीनों की खरीद की सिफारिश करते हुए खुद कई राज्य सरकारों को पत्र लिखे.

कारण बताओ नोटिस में कहा गया है कि सीमा शुल्क से पूरी छूट हासिल करते हुए 'संजीवनी' ने वचन दिया था कि वह 15 दिनों के अंदर 50 मशीनें भारतीय कृषक समाज को दान कर देगी और समाज उनका इस्तेमाल केवल प्रदर्शन और किसानों के प्रशिक्षण के लिए करेगा. साथ ही वह पांच साल तक न उन्हें बेचेगा और न हस्तांतरित करेगा.

लेकिन जैसा कि नोटिस में कहा गया है, 'संजीवनी' ने सीमा शुल्क अधिकारियों से यह तथ्य छुपा लिया कि उसने कर्ज लेने के लिए अपनी मशीनें और दूसरी संपत्ति आंध्र प्रदेश इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एपिडको), राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट ऐंड इंवेस्टमेंट कार्पोरेशन (रिको) और प्रदेशीय इंडस्ट्रियल ऐंड इंवेस्टमेंट कार्पोरेशन ऑफ उत्तर प्रदेश (पिकअप) सरीखी संस्थाओं के पास गिरवी रख दी है.

प्रशांत पंजियार

नोटिस में 'संजीवनी' के निदेशक दिनेश दुबे का हवाला है. वे कहते हैं, "ये मशीनें संजीवनी फॉडर प्रोडक्शन प्राइवेट लि. के स्वामित्व में हैं... मैं यह भी स्पष्ट कर दूं कि वित्तीय सहायता के लिए संजीवनी और वित्तीय संस्थानों (एपिडको, पिकअप, रिको) के बीच हुए समझौते के अनुसार यह जरूरी है."

इस बयान के साथ 'संजीवनी' के लेखा अधिकारी एस.एस. खंडेलवाल का भी बयान है. उनका दावा है कि कंपनी ने 31 मार्च 1988 को खत्म हुए साल की बैलेंस शीट के मसौदे में चारा मशीनों को शामिल कर लिया था. उनका कहना है कि तदर्थ छूट वाले आदेश के तहत मशीनों को 15 दिन के भीतर भारतीय कृषक समाज को सौंपने की पहली शर्त का उल्लंघन किया गया.

छूट के आदेश की दूसरी शर्त यह थी कि भारतीय कृषक समाज मशीनों का इस्तेमाल केवल प्रशिक्षण के लिए करेगा. नोटिस में कहा गया है कि राजस्व खुफिया निदेशालय, मद्रास के जुटाए साक्ष्य दर्शाते हैं कि इस तरह का कोई भी प्रदर्शन या प्रशिक्षण आयोजित नहीं किया गया जैसा कि तदर्थ छूट आदेश में प्रावधान था.

दुबे और फोमेटा इंडिया के निदेशक जे. आर. तनेजा का दावा था कि हैदराबाद के बोलराम स्थित कार्यस्थल प्रबंधक राय जॉन ने "स्पष्ट कहा कि सिर्फ उनके ही कुछ कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया है. भारतीय कृषक समाज की तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से न तो मशीनों का प्रदर्शन किया गया और न ही किसानों को प्रशिक्षण दिया गया." यही नहीं, बोलराम के अलावा और कहीं प्रशिक्षण शुरू ही नहीं हुआ.

राजस्व खुफिया निदेशालय ने यह भी पाया कि बोलराम में तैयार चारे को 70 पै प्रति किलो की दर से बेचा गया. दुबे ने बताया कि 'संजीवनी' बिक्री से होने वाली आमदनी का इस्तेमाल सरकारी वित्तीय संस्थाओं का कर्ज चुकाने में कर रही थी.

नोटिस के अनुसार, एक और गंभीर अनियमितता मूल 50 मशीनों के साथ आए अतिरिक्त कल-पुर्जों को जोड़कर छह अतिरिक्त चारा मशीनें बनाना था जो कि कल-पुर्जों से संबंधित आयात नीति का उल्लंघन है. इनमें से पांच मशीनें सरकारी एजेंसियों को बेच दी गईं. जाहिर है ऐसा बलराम जाखड़ के इशारे पर किया गया.

सो, 'संजीवनी', फोमेटा इंडिया और भारतीय कृषक समाज पर सीधे गाज गिरने वाली है. भारतीय कृषक समाज के कार्यकारी अध्यक्ष प्रभाकर रेड्डी पर आरोप है कि "उन्होंने संजीवनी से सांठ-गांठ करके छूट आदेश की इन दोनों शर्तों को ताक पर रख दिया."

हालांकि रेड्डी कारण बताओ नोटिस को अदालत में चुनौती देने जा रहे हैं लेकिन मद्रास स्थित एक सीमा शुल्क अधिकारी चेतावनी देते हैं, "उन्हें कुछ समय के लिए भले ही राहत मिल जाए लेकिन वे बच नहीं सकते. दंड के रूप में हम आयातित मशीनों की आंकी हुई कीमत का पांच गुना वसूल कर सकते हैं और यदि मुकदमा शुरू हुआ तो इनमें से कई लोग जेल भी जा सकते हैं." लेकिन राजस्व खुफिया निदेशालय के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि जाखड़ को फिर घसीटे जाने की संभावना नहीं है क्योंकि रेड्डी ने भारतीय कृषक समाज की तरफ से सारी जिम्मेदारी ले ली है.

पिछले लोकसभा चुनाव में हार जाने के बावजूद इंका के महासचिव बनाए गए जाखड़ अभी भी दावा करते हैं कि वे किसानों के उत्थान के आदर्श विचारों से ओतप्रोत हैं. वे कहते हैं, "किसानों का शुभचिंतक होने के नाते मैंने सोचा कि चारा मशीनें बड़े काम की हैं लेकिन तथाकथित चारा विवाद में मुझे फंसाने के लिए दुर्भावनापूर्ण अभियान छेड़ दिया गया. पिछले दो लगातार सूखों को देखते हुए मैंने नेकनीयती से ही उन मशीनों की सिफारिश की थी."

लेकिन इस तरह के अच्छे विचारों के बावजूद विवाद जारी रहेगा क्योंकि कई सवाल अनुत्तरित हैं. —आनंद विश्वनाथन

वाममोर्चा

किला फतह

पर स्थानीय चुनावों में हिंसा भी

पश्चिम बंगाल की घमासान राजनीति का ही यह करिश्मा है कि कलकत्ता नगर निगम के चुनाव भी राष्ट्रीय महत्व की खबर बन जाते हैं. पिछले पखवाड़े स्थानीय निकाय के चुनावों में वाममोर्चा ने 141 में से 100 सीटों पर कब्जा कर जीत के झंडे गाड़ दिए. अकेले माकपा ने ही 72 सीटें हथिया लीं. 1985 में हुए चुनाव में वाममोर्चा को दो सदस्यों की मामूली बढ़त हाथ लगी थी और इस बार भी वैसी ही स्थिति का अनुमान लगाया जा रहा था. लेकिन सारी भविष्यवाणियां गलत साबित हुईं और इंका अपने पारंपरिक गढ़ कलकत्ता में महज 37 सीटें पाकर दूसरे स्थान पर रही.

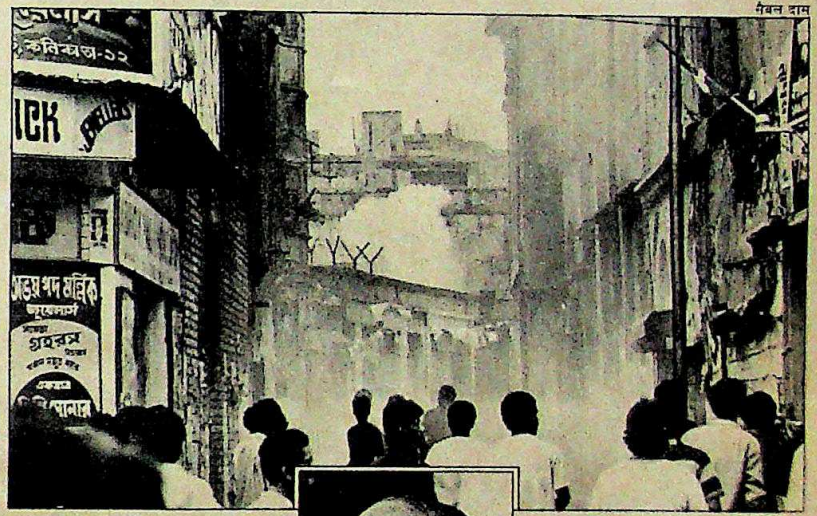

गौतम दास

चुनाव के दौरान बम विस्फोट; और बसु

लेकिन चुनाव के नतीजों से ज्यादा दोनों राजनैतिक पक्षों के आरोप-प्रत्यारोप ही खबरों में छाए रहे. प्रदेश इंका महासचिव सोमेन मित्र ने गुस्से में कहा, "यह महम से भी ज्यादा शर्मनाक है."

सोमेन मित्र के आरोपों की शहर के ज्यादातर अखबारों ने भी पुष्टि की. उनमें पुलिस की मौजूदगी में ही पिस्तौल और बम लिए गुंडों की तस्वीरें छपीं. अगले दिन माकपा के मुखपत्र 'गणशक्ति' ने उन्हीं तस्वीरों को छापकर इन गुंडों को इंका के एजेंट बताया. अपने आरोप को साबित करने के लिए 'गणशक्ति' ने इन युवकों के नाम-पते भी प्रकाशित किए. और लिखा कि वाममोर्चा को बदनाम करने के लिए ही ये फर्जी तस्वीरें बनवाई गई हैं.

मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने भी यही आरोप दोहराया. लेकिन असली सवाल अनुत्तरित ही रहे. मसलन, हिंसाग्रस्त वार्डों में पुनर्मतदान के आदेश क्यों नहीं दिए गए? पुलिस ने गुंडों के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की? सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि राज्य सरकार ने चुनाव पर्यवेक्षकों की रपट को गोपनीय बताकर जाहिर करने से क्यों इनकार कर दिया?

इंका के लिए यह पराजय विशेष महत्व रखती है क्योंकि 1989 के लोकसभा चुनावों के दौरान इंका विरोधी जबरदस्त लहर के बावजूद उसे 141 वार्डों में से 97 में बढ़त हासिल हुई थी. लेकिन इस बार उन 97 वार्डों में से 60 में उसे भारी पराजय झेलनी पड़ी. इंका के कई नेता हार की जिम्मेदारी पंजाब के पूर्व राज्यपाल सिद्धार्थशंकर राय के मत्थे मढ़ते हैं. प्रचार के दौरान राय ने मतदाताओं से '1972 की तरह मतदान' करने की अपील की थी. 1972 के विधानसभा चुनावों में इंका को बड़ी जीत तो हासिल हुई थी पर चुनाव में जमकर हिंसा और धांधली हुई थी. राय की इस अपील का असर सिर्फ यही नहीं हुआ कि लोगों ने बाहर न निकलना ही बुद्धिमानी समझा बल्कि वाममोर्चा को भी अपने बाहुबल के प्रदर्शन का मौका मिला.

बहरहाल, इंका अब विरोधस्वरूप नगर निगम के बहिष्कार के बारे में सोच रही है लेकिन इतना स्पष्ट है कि पश्चिम बंगाल के मतदाताओं पर पार्टी की पकड़ लगातार ढीली पड़ रही है. —उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कार्टून कोना: अजीत नैनन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत: दक्षिण भारतीय फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और निर्माता का फिल्मफेयर पुरस्कार **कमल हासन** को मिला. इस प्रतिभावान अभिनेता को तेलुगु फिल्म 'इंद्रुदु चंद्रुदु' में अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और तमिल फिल्म 'अपूर्व सहोदरागल' के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्माता का पुरस्कार मिला.

अवसान: वृंदावन, उत्तर प्रदेश में प्रसिद्ध संत **देवराहा बाबा** की मृत्यु हुई जो अपनी लंबी आयु और भक्तों के माथे पर पैर रखकर आशीर्वाद देने की शैली के कारण चर्चित रहे. उनके भक्तों में राजीव गांधी, बूटा सिंह, बलराम जाखड़, जगन्नाथ मिश्र प्रमुख हैं.

विवाह: चेतन शर्मा का 1 जुलाई को रमानी रामनाथन के साथ. शायद यह शादी मध्यम गति के इस तेज गेंदबाज को भारतीय टीम में वापस लाने वाली साबित हो.

पुरस्कार प्रदान: खेल के मैदान का सर्वोच्च अर्जुन पुरस्कार राष्ट्रपति ने धाविका अश्विनी नाचप्पा, पूर्व हॉकी कप्तान मोहिंदर पाल सिंह, पावरलिफ्टर पी.के. यशोधरा, पहलवान राजेश कुमार और तैराक विल्सन चेरियन को दिया.

अवसान: 42 वर्षीय **आदिल शहरयार** यकृत शोथ रोग से मरे. इंदिरा गांधी के सहयोगी रहे मुहम्मद युनूस के इस बेटे को फरेब करने और जहाज उड़ाने के षड्यंत्र के आरोप में अमेरिका में 35 वर्ष जेल की सजा मिली थी. लेकिन चार साल बंद रहने के बाद वे राजनैतिक दबाव से छूटे. राजीव गांधी ने उनकी मदद की थी. लौटने के बाद वे कंप्यूटर के व्यवसाय में लगे थे.

स्वीकार: एपीजे ग्रुप के मुखिया और सुप्रसिद्ध आप्रवासी भारतीय उद्योगपति स्वराज पॉल के भाई सुरेंद्र पॉल की तिनसुकिया में 9 अप्रैल को हत्या करने की बात उल्फा ने पहली बार कबूल की. एक पोशीदा जगह पर इस अलगाववादी गुट के प्रचार प्रमुख सिद्धार्थ फुकन ने पत्रकारों को बताया कि पॉल की हत्या इसलिए की गई क्योंकि वे अपने संगठन से असमी कर्मचारियों को योजनाबद्ध तरीके से निकाल रहे थे. उल्फा ने इस वर्ष के अंदर सभी चाय कंपनियों के मुख्यालय असम में लाने की मांग की है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनिष्क दुर्घटना

दुःस्वप्न का दुष्चक्र

बचे हुए लोगों को हादसे की पीड़ा साल रही

एअर इंडिया की उड़ान संख्या 182, कनिष्क, के बीच आकाश में ध्वस्त होने के पांच साल बाद भी वह भयानक त्रासदी मारे गए लोगों के परिवारों का पीछा नहीं छोड़ रही है. 1985 में हुई उस दुर्घटना में 329 लोग अकाल मौत के शिकार हो गए थे.

इस हादसे की जांच करने वाली एजेंसियां भी इससे पिंड नहीं छुड़ा पा रहीं. अक्षमता और संवदेन-हीनता के आरोपों से घिरी रॉयल कनाडियन माउंटेड पुलिस ने दुबारा जांच शुरू करने का फैसला किया है. वैमानिक इंजीनियर, 45 वर्षीय कल्याण हरपलानी, जिन्होंने उस त्रासदी में पत्नी और दो बेटियों को भी खो दिया, अभी भी दुःस्वप्न से जाग उठते हैं. वे कहते हैं, "मैं सपने में देखता हूं कि मैं अपनी प्यारी बच्चियों—रश्मि और दीपा के साथ हूं. फिर अचानक नींद खुल जाती है और आंखें भर आती हैं."

लेकिन टोरंटो के उपनगर एटोबिकोक के 50 वर्षीय डॉ. बाल गुप्ता, जो 'एअर इंडिया फ्लाइट 182 विकटिम्स फैमिली एसोसिएशन' के संस्थापक अध्यक्ष हैं, के रूप में हरपलानी के पास थोड़ी-बहुत सांत्वना है. उनके साथ ही ओंटारिओ के 200 परिवार भी उस त्रासदी से उबरने की कोशिश कर रहे हैं. एटोबिकोक में अपने आवास पर गुप्ता याद करते हैं, "यह हकीकत को समझने की प्रक्रिया है. और जो पीड़ा में डूबे हुए हैं, उनके लिए हकीकत से रूबरू होना आसान नहीं." उसके आवास पर चार और परिवार बैठे हुए मिलते हैं जिनकी आंखें आंसुओं से भरी हैं. वे विमान दुर्घटना की पांचवीं बरसी पर होने वाली सार्वजनिक रस्म के सिलसिले में आए हुए हैं. गुप्ता ओटावा के डॉ. योगेश पालीवाल की मृत्यु का हवाला देते हैं. उनकी मृत्यु दुर्घटना की तीसरी बरसी 23 जून 1988 को दिल का दौरा पड़ने से हो गई थी.

कनिष्क दुर्घटना बच गए लोगों के परिवारों पर दुःस्वप्न की तरह मंडरा रही है. मरने वालों के ज्यादातर रिश्तेदारों ने मान लिया है कि दुर्घटना के सुराग हमेशा के लिए सागर तल में दफन हो गए हैं. कनिष्क के सह चालक सतिंदर सिंह भिंडर के मित्र हरभजन सिंह निज्झर जैसे कुछ लोगों का मनाना है कि यदि विमान का सारा मलबा भी बरामद कर लिया गया तब भी अधिकारी शायद ही कुछ साबित कर पाएं. उत्तरी अमेरिकी जीवन का दबाव न सह पाने के कारण छह परिवार भारत लौट चुके हैं. बिक्री अधिकारी 61 वर्षीय सत्यकुमार बेरी, जिन्होंने वहीं रहने का फैसला किया, जैसे लोग अपने बच्चों के भावनात्मक समर्थन के अभाव में बहुत परेशानी महसूस कर रहे हैं. अपने चश्मा-धारी बेटे की तस्वीर, जिसमें वह उनकी गोद में दुबका हुआ है, की तरफ एकटक देखते हुए बेरी विलाप करते हैं, "शरद केवल 16 वर्ष का था. जो माता-पिता जिंदा हैं, वे दुर्घटना में मारे गए अपने बेटे-बेटियों को कभी नहीं भुला सकते. यह दुख मेरे मरने पर ही खत्म होगा."

बेरी के दुख और गुस्से की एक वजह यह है कि कॉर्क (आयरलैंड) के पश्चिम आयरिश सागर के ऊपर 7.14 जीएमटी बजे ध्वस्त होने वाली उड़ान 182 के आखिरी कुछ मिनटों के बारे में अभी भी कोई ज्यादा जानकारी नहीं मिल पाई है. विमान को एक घंटे बाद ईंधन के लिए लंदन में उतरना था. दुर्घटना की कई वजहें बताई जाती रही हैं. लेकिन कोई ठोस सबूत अभी तक नहीं मिला है. किरपाल सिंह आयोग के निष्कर्षों का सावधानी से समर्थन करने वाली कनाडियन एविएशन सेफ्टी बोर्ड की रिपोर्ट का कहना है, "इस बात के पर्याप्त पारिस्थितिक और दूसरे सबूत हैं कि विस्फोट विमान के अगले सामान कक्ष में हुआ."

शोक संतप्त परिवारों का गुस्सा इस बात से और भी भड़का है जिसे वे सरकार की कान में उंगली डाले रहने वाली नीति मानते हैं. दुर्घटना में अपना भाई और पूरा परिवार खो देने वाली नर्स रमा पाल कहती हैं, "कनाडा के अधिकारी हमारा फायदा उठा रहे हैं क्योंकि हम शांत और अहिंसक समुदाय के हैं."

गुप्ता जैसे कई लोग यह कहते हुए सर-

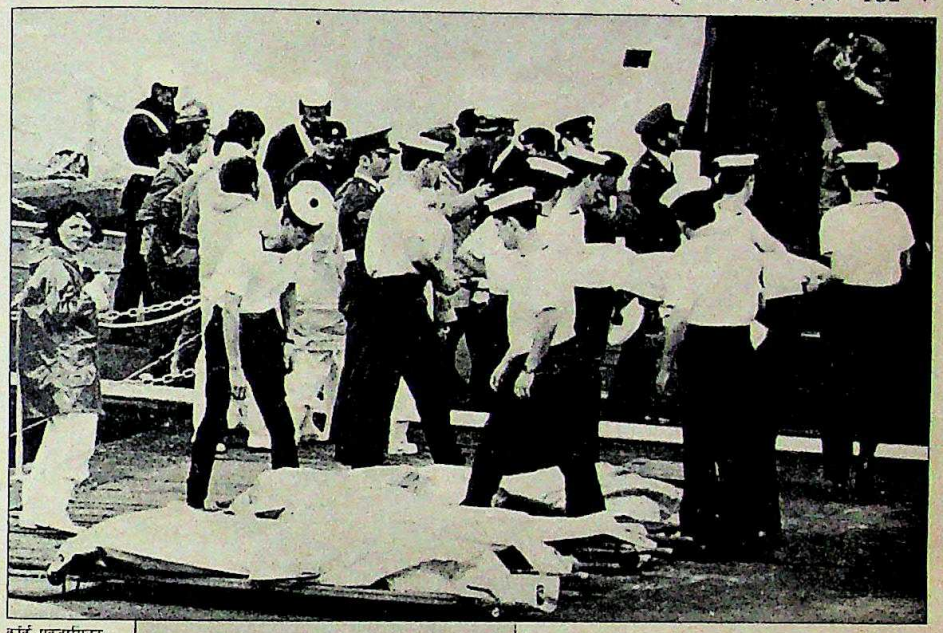

कॉर्क एग्जामिनर

हादसे के शिकार लोगों के शव

नई जांच एक ऐसी पनडुब्बी से की जाएगी जो समुद्र में 5000 मीटर नीचे जाकर खोजबीन करेगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी जांच आयोग की मांग कर रहे हैं कि स्कॉटलैंड के लॉकरबी में हुई पैन एम दुर्घटना की जांच कांग्रेस के सदस्यों ने की थी. इस तरह की जांच की मांग का समर्थन अब संसद के कई सदस्य भी कर रहे हैं. ओंटारिओ के स्कारबोरो रॉज रिवर का प्रतिनिधित्व करने वाली विपक्षी उदारवादी सांसद डेरेक ली ने हाल में घोषणा की, "प्रभावित परिवारों के लिहाज से यह दुख की बात है कि मामला अभी तक अनसुलझा है."

लेकिन रॉयल कनाडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी), जो कनाडा की अब तक की सबसे बड़ी जांच पर 8 करोड़ कनाडियन डॉलर पहले ही खर्च कर चुकी है, का कहना है कि उसके हाथ बंधे हुए हैं. सरकारी प्रवक्ता सार्जेंट पियरे बिलांगर कहते हैं, "कनिष्क का मामला एअर इंडिया टास्क फोर्स की प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर है लेकिन चूंकि पुलिस को जांच के बारे में बात करने की छूट नहीं है, सो लोग सोचते हैं कि कुछ भी नहीं किया जा रहा." इसके बावजूद एअर इंडिया टास्क फोर्स के घपलों के मद्देनजर आरसीएमपी के दावे खोखले नजर आने लगे हैं. फोर्स ने एक बार तो भूल से दो महत्वपूर्ण टेपों को ही मिटा दिया. वेंकूवर स्थित पत्रकार आयन मुलग्रू अपनी किताब 'अनहोली टेरर' में लिखते हैं, "सबसे बड़ी कनाडियन जांच कोई सबूत नहीं खोज पाई है. इस जांच से अभी तक यह भी साबित नहीं हो पाया कि बम फटने से विमान आकाश में ध्वस्त हुआ."

इस तरह की आलोचनाओं से परेशान आयुक्त नॉर्मन इंकस्टर कहते हैं कि आरसीएमपी तीसरी बार दुर्घटनास्थल की जांच की योजना बना रही है. ताकि पक्का पता लगा सके कि क्या दुर्घटना आतंकवादियों के बम से ही हुई है. नई खोज में 5,000 मीटर नीचे महासागर के तल तक डुबकी लगाने वाली एक पनडुब्बी इस्तेमाल की जाएगी. पिछली बार महासागर में खोजबीन के दौरान कोई महत्वपूर्ण चीज बरामद नहीं हुई थी, सिर्फ 200 किलो मलबा मिला था.

इस बीच, जहां सरकारी जांच किसी पर आरोप लगाने में विफल रही है, वहीं दो कनाडियन पत्रकारों—'द ग्लोब ऐंड मेल' के जुहैर कश्मीरी और 'टोरंटो स्टार' के ब्रायन मैक्एंड्रयू की विवादास्पद किताब 'सॉफ्ट टारगेट' में संकेत किया गया है कि सिखों और भारत में खालिस्तान अभियान को बदनाम करने के लिए सरकार के एजेंटों ने एअर इंडिया की उड़ान 182 को बम से उड़ाया.

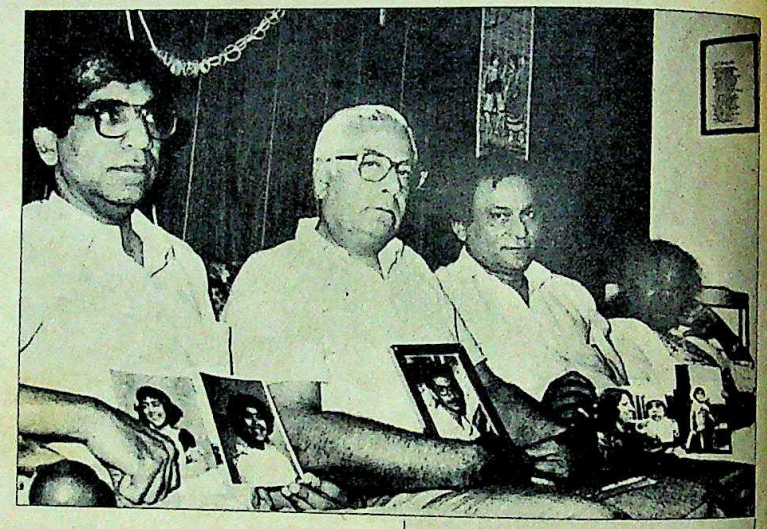

आरसीएमपी कमिश्नर इंकस्टर; (नीचे) गुप्ता के घर पर मृतकों के परिजन

किताब के अनुसार, टोरंटो में भारत के महावाणिज्य दूत सुरिंदर मलिक ऐसे ही अधिकारी थे. किताब में बम विस्फोट से जुड़े कथित इंडियन इंटेलीजेंस ग्रुप को थर्ड एजेंसी बताया गया है. किताब में कहा गया है, "भारत सरकार ने पंजाब में सिख उग्रपंथियों की आतंकवादी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए '80 के दशक के शुरू में यह गुप्त संगठन बनाया था. इसका मकसद देश के बाकी हिस्सों से सरकार के लिए समर्थन जुटाना था. सिख हिंसा की प्रतिक्रिया में सरकार के जवाबी कदम उठाने से यह लगने लगा कि वह पूरी ताकत से काम कर रही है."

अपने इस विचित्र दावे की पुष्टि के लिए लेखकद्वय जो मुख्य सबूत पेश करते हैं, वह महावाणिज्य दूत मलिक द्वारा उड़ान 182 में अपनी पत्नी और बेटी की सीटें रद्द कराने से संबद्ध है. बाद में मलिक ने कहा कि उनकी बेटी को अचानक परीक्षा में बैठना पड़ा जिससे वह उस उड़ान से भारत नहीं जा सकी. लेकिन लेखकद्वय इस तथ्य की ओर भी संकेत करते हैं कि विदेश मंत्रालय के उत्तरी अमेरिकी मामलों के प्रभारी सिद्धार्थ सिंह ने भी आखिरी क्षण में उस विमान में यात्रा रद्द कर दी. लेखकों का कहना है कि दुर्घटना के एक हफ्ते पहले सिंह ने मलिक से भेंट की थी. लेखक सबूत के रूप में मलिक के उन दोस्तों का भी हवाला देते हैं जो टोरंटो में एक कार दुकान के मालिक हैं. इस सबूत को महज संयोग कहकर नहीं नकारा जा सकता. ओटावा स्थित भारतीय उच्चायोग ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है.

ज्यादातर मृतकों के रिश्तेदार मान बैठे हैं कि हादसे के सुराग सागर की अतल गहराइयों में खो गए हैं

इंडो-कनाडियन फोरम के अध्यक्ष और क्यूबेक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक डॉ. राजिंदर सिंह सहगल कहते हैं, "हम सिर्फ दुर्घटना की जांच चाहते हैं." शोक संतप्त परिवार के लोग ओटावा में 85,000 कनाडियन डॉलर की लागत से बने स्मारक पर अपने संबंधियों को श्रद्धांजलि देने अभी भी जाते हैं.

लगता है उस त्रासदी के अवशेष के रूप में इस तरह के स्मारक ही बचे रहेंगे. और हां, पीड़ा और रहस्य भी बना रहेगा.

—सतिंदर बिंद्रा, टोरंटो से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and

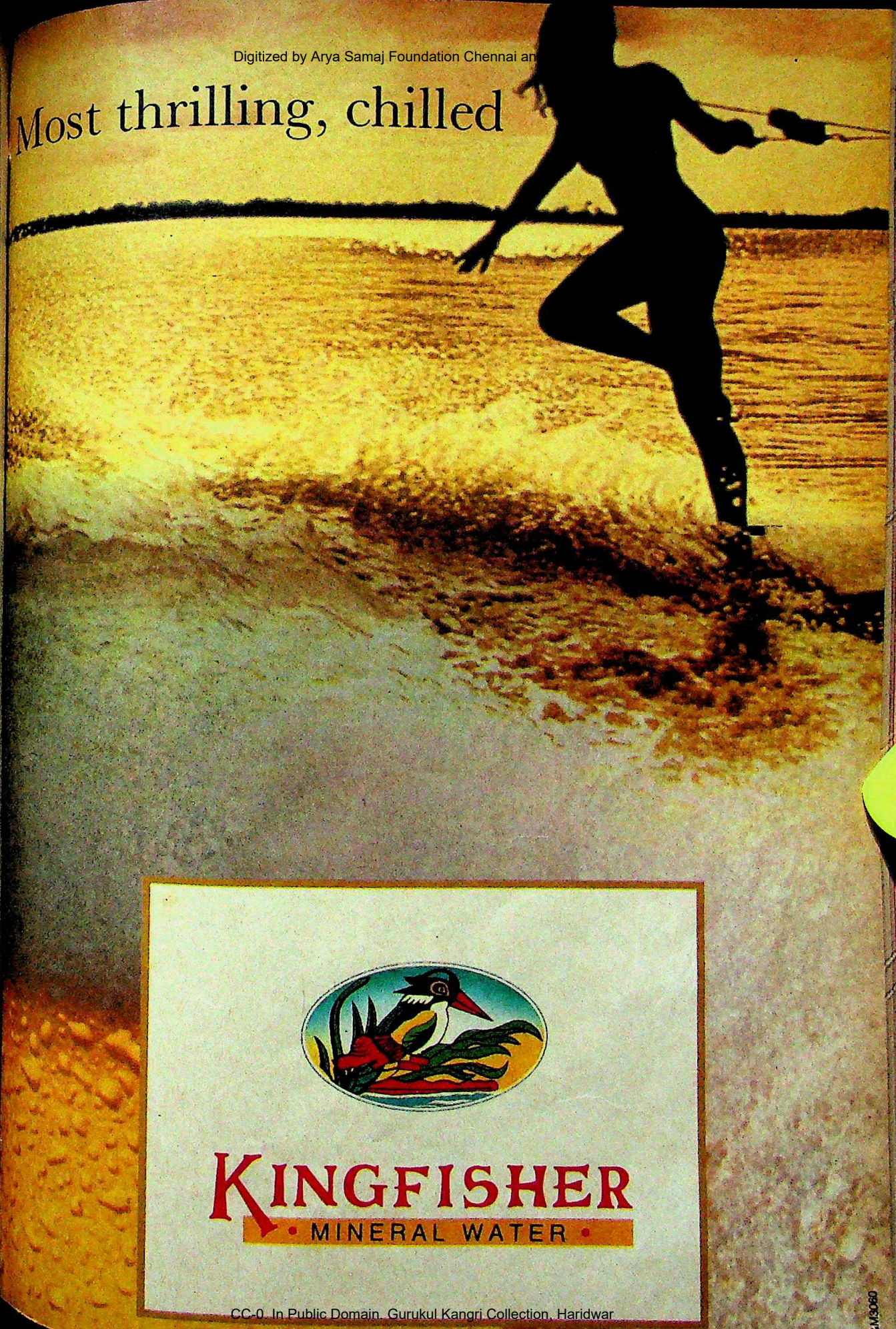

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस, एक बात में है आप मान लेंगे कि ऑडिसी जैसा दूसरा लगेज अपने दुनिया के सर्वोत्तम लगेज की तरह ऑडिसी भी तैयार किया जाता है ABS से.

ऐसी कमाल की सामग्री जो है तो बेहद मजबूत, लेकिन फिर भी एकदम हलकी-फुलकी, और देखने में भी बेजोड़.

दूसरा कोई भी लगेज इसके जैसा हसीन नहीं.

सुंदर मनमोहक डिजाइन, आकर्षक हसीन बनावट, फिनिश भी लाजवाब. तभी तो यह इस कदर दिलकश नज़र आता है.

आपका मन मोह लेने वाली बेहतरीन खूबियाँ.

जैसे आधुनिक तकनीक का लॉकिंग सिस्टम: बेआवाज खुलनेवाले सॉफ्ट एजेक्ट लॉक, साथ ही संपूर्ण सुरक्षा के लिए एक सेंटर कंबिनेशन लॉक, और मैट फिनिश फ्रेम.

बाहर से बेहद आकर्षक, अंदर और भी सुंदर.

ऑडिसी खोलिए और अंदर आप पायेंगे ग़ज़ब की खूबियाँ... खूबसूरत स्वेद अस्तर, काग़जात और कपड़ों को अलग-अलग रखने के लिए एक डिवाइडर, एक सुविधाजनक टाई-रॉड, सारी चीज़ें सही जगह पर जमाये रखने के लिए एक इलैस्टिक स्ट्रैप, आपकी हर ज़रूरत के मुताबिक पेश की गयी खास सुविधाएँ.

ऑडिसी, इतना आलीशान लगेज कि इसकी बराबरी कोई और कर ही नहीं सकता.

आइए, देखिए हमारे सूटकेसों और ब्रीफकेसों की मनमोहक मालिका

यही नाम है ना आपके लगेज पे?

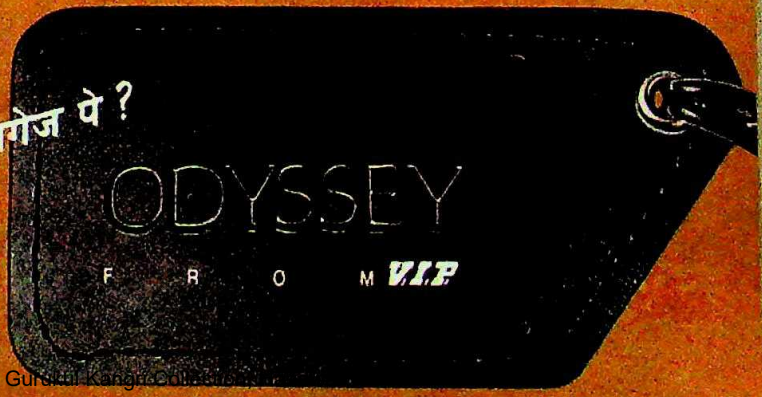

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

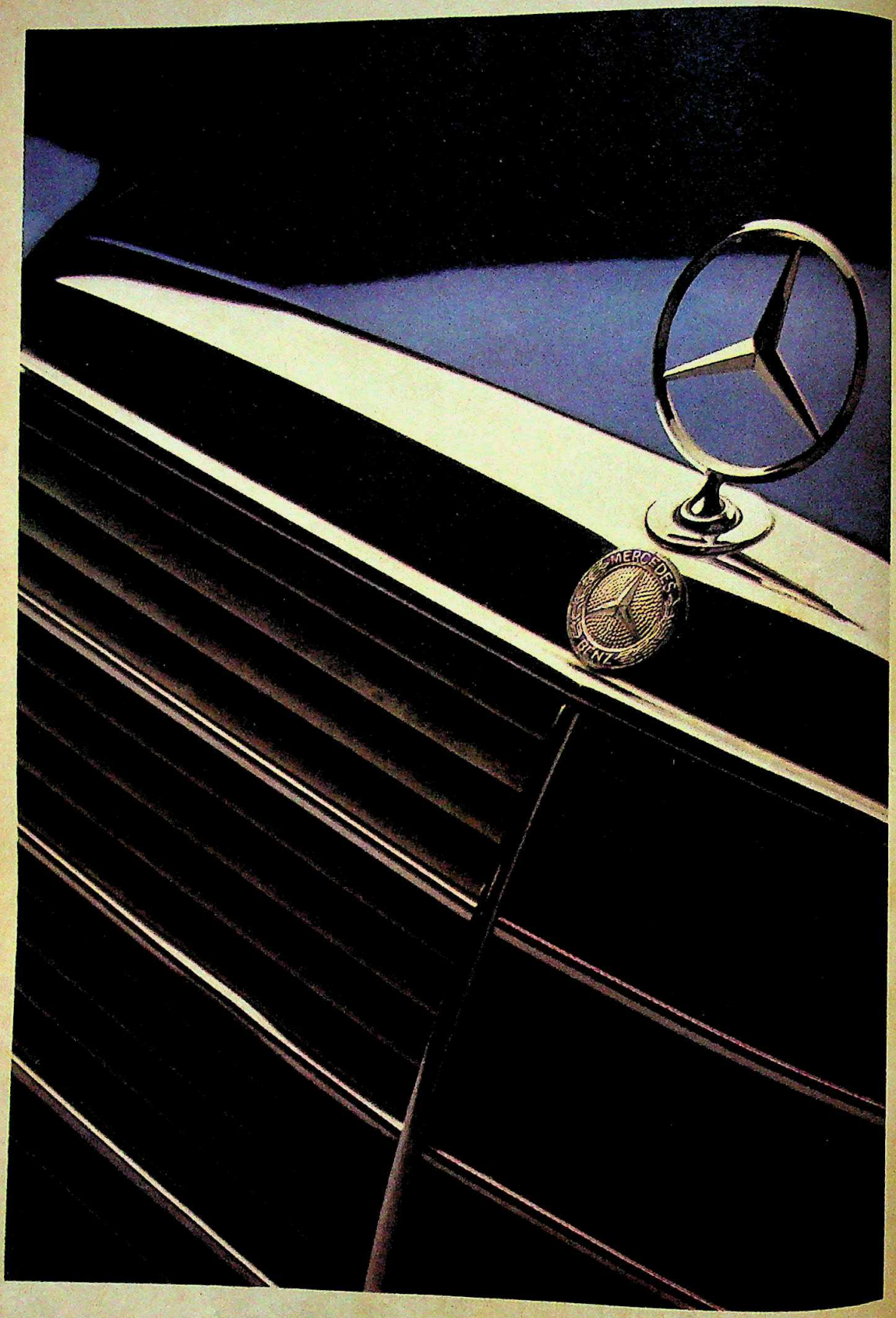

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सभी नाज़ों पली कारें डनलप

रेडियल क्लास की आदी हैं. जैसे कि मरसिडीज़,

टोयोटा, बी एम डब्लू, हॉन्डा.

सिर्फ़ यही नहीं, मारुति, कॉन्टेसा,

स्टैनडर्ड २०००, प्रिमीयर ११८ एन.ई. भी.

क्योंकि डनलप रेडियल क्लास में है,

मरसिडीज़ को सर पर किसने चढ़ाया?

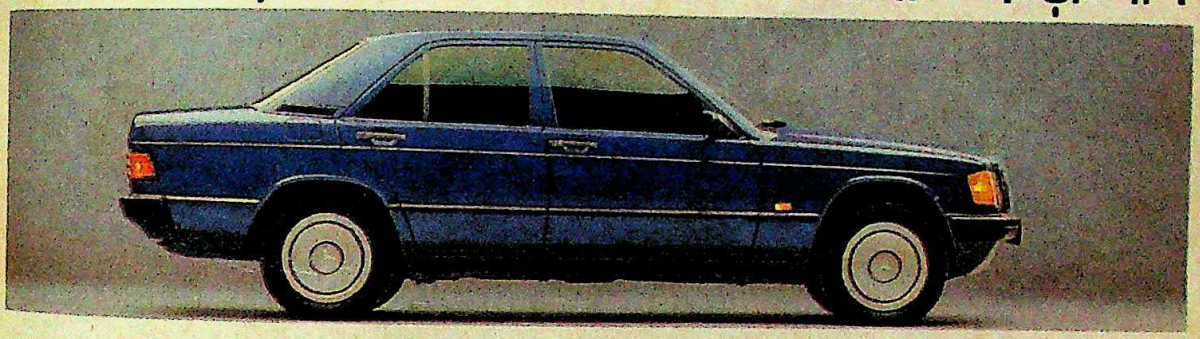

"सॉफ़्ट फ़्लेक्स वॉल्ज़" सब से आरामदायक

सफ़र के लिए.

डनलप रेडियल क्लास.

दुनिया की सभी कारों के नाज़ उठाने

का वादा.

DUNLOP
RADIAL CLASS
DUNLOP IS DUNLOP. ALWAYS AHEAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Trikaya Grey. DIL 6.90 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण बाजार

हर माल का खरीदार मौजूद

उपभोक्ता सामान के प्रति ग्रामीण लोगों में बढ़ती ललक से एक बड़ा, नया बाजार खुल गया

प्रताप राय गोदरेज सोप्स लि. के उपाध्यक्ष (विपणन) हैं. आजकल उनके दफ्तर में जाएं तो वे 'भारतमाता ग्रामवासिनी' के जाप जैसा करते मिलेंगे. लेकिन इससे यह गलतफहमी न पाल लें कि उन्होंने सूट छोड़कर खादी कुर्ता-पाजामा और ब्रीफकेस छोड़कर झोला अपना लिया है और गांव-गांव घूमकर उसके सुधार के काम में लग गए हैं.

आज अगर उन्हें भारत के गांव आकर्षित कर रहे हैं तो इसका कारण एकदम गैर-गांधीवादी है. भारतीय गांव गोदरेज के साबुनों के सबसे अच्छे बाजार साबित हो रहे हैं और इनमें बिक्री भी बेहद तेजी से बढ़ रही है. साबुन की ही नहीं टूथपेस्ट, रंगीन टीवी, स्कूटर, वाशिंग मशीन, पंखे, फ्रिज, बाथ रूम के सामान और कूलर जैसी उपभोक्ता सामग्री की चाह बढ़ रही है.

एकाएक देश की उपभोक्ता कंपनियों के लिए काफी बड़ा नया बाजार खुल गया है. आंकड़े इसकी कहानी सुनाते हैं. डिब्बाबंद उपभोक्ता सामान का ग्रामीण बाजार 1988 में 1,500 करोड़ रु. से ऊपर का हो चुका था. यह आंकड़ा पांच साल में ही दोगुने से ऊपर जा पहुंचा. देश में जितने रंगीन टीवी सेट बन रहे हैं, उसका 20 फीसदी हिस्सा गांवों में बिक रहा है. मोनो टेप रिकार्डरों का 48 फीसदी और मोपेडों का 48 फीसदी हिस्सा भी गांवों में खरीदा जाने लगा है. और यह सूची बहुत लंबी है (देखें चार्ट).

उम्मीद के अनुसार ही अब कंपनियां इस नए बाजार में कुछ हिस्सा पाने का जतन करने लगी हैं. इसके लिए वे अलग शाखाएं खोल रही हैं और गांवों की खास जरूरतों के हिसाब से अपने सामान में फेरबदल कर

बढ़ता ग्रामीण बाजार
बिक्री (करोड़ रु. में)

	1984	1988
महंगे साबुन	12.5	42.0
सस्ते साबुन	144.0	300.0
शैंपू	0.9	2.6
शेविंग क्रीम	0.3	0.7
टूथपेस्ट	15.5	42.5
रेजर ब्लेड	18.0	42.0
सौंदर्य प्रसाधन	22.0	66.5

गांवों में सस्ता सामान बिकता है, यह बात महज मिथक ही है"

विनोद धवन
कॅडबरीज के विपणन निदेशक

अब हम जो देख रहे हैं, वह ग्रामीण मध्यम वर्ग का उफान है"

पी.बी. मार्वा
उपाध्यक्ष, टाटा ऑयल मिल्स

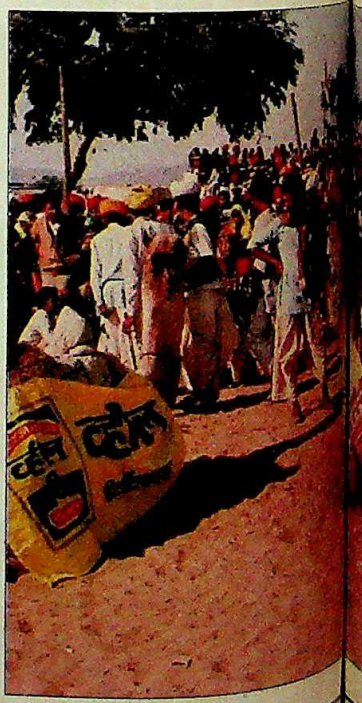

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हैं. जैसे कॅडबरीज अब एक ऐसा चॉकलेट बना रही है जो गर्मी में आसानी से नहीं पिघलेगा. एलएमएल लि. ने हाल में गांवों की जरूरत के मद्देनजर अधिक शक्ति वाला स्कूटर बाजार में उतारा है. टाटा ऑयल मिल्स के उपाध्यक्ष (बिक्री एवं विपणन) पी.बी. भार्दा कहते हैं, "हमने महसूस किया कि अगर हमें बिक्री बढ़ानी है तो गांवों की ओर रुख करना होगा. शहरी बाजार में प्रतिद्वंद्विता बढ़ गई है."

लिटास, क्लेरियन और उल्का जैसी विज्ञापन एजेंसियों ने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अलग विभाग खोलकर इस उफान का फायदा लेना भी शुरू कर दिया है.

पिछले दिनों ग्रामीण इलाकों में आए बदलाव के मद्देनजर ऐसा होना लाजिमी था. लंबे समय तक कुछ ही इलाकों में सीमित रहने के बाद हरित क्रांति अब पूरे देश में पहुंच गई है. सरकार द्वारा न्यूनतम मूल्य घोषित करके कृषि पैदावार के मूल्य को एकदम नीचे न आने देने की नीति से अब किसानों के पास भी उपभोक्ता सामग्री पर खर्च करने लायक पैसा आ गया है और वह भी एकदम कर-मुक्त.

लुभावने कार्यक्रम के साथ विज्ञापन परोसने वाले टीवी ने गांवों में उपभोक्तावादी चीजों पर खर्च काफी बढ़ा दिया है. अपने इस उद्देश्य में यह कहां तक 'सफल'

(ऊपर) सड़क के किनारे साबुन की बिक्री; (नीचे) शैंपू के प्रयोग का प्रदर्शन; और ऊंट पर व्हील का बैनर

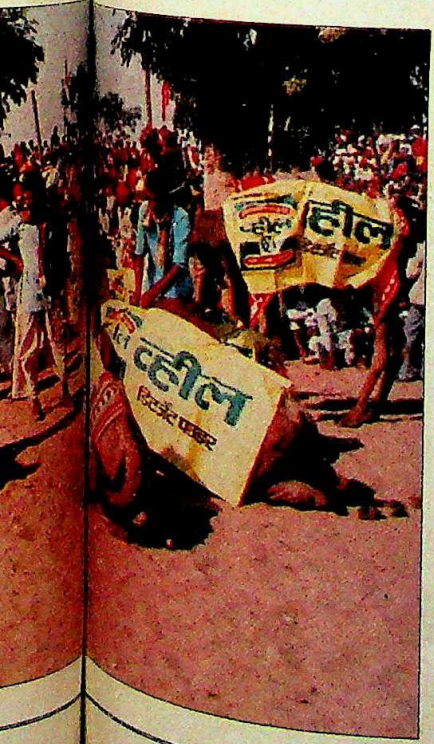

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है, यह गुंटूर जिले के किसान एम. वेंकटेश्वरलू के घर में पहुंचने पर दिखता है. टीवी पर नित लक्स का गुण गाती नई तारिकाओं को देखकर वेंकटेश्वरलू के बेटे लक्स ही इस्तेमाल करते हैं. कपड़े धोने के लिए वे रिन का इस्तेमाल करते हैं. चमचमाते दांत दिखाकर टूथपेस्ट का विज्ञापन करने वाली सुंदरी ने यह असर डाला कि घर में कुछ समय तक चिक चिक होने के बाद कोयले की जगह कॉलगेट ने ले ली है.

बंबई-अहमदाबाद राजमार्ग पर आसागढ़ नामक आदिवासी गांव में पहुंचने के लिए आपको गुंटूर से काफी चलना पड़ेगा. लेकिन जहां तक टीवी विज्ञापनों के असर की बात है इस गांव के वनवासी भी वेंकटेश्वरलू के घर-वालों जैसे ही लगेंगे. एक दशक पहले साबुन या चॉकलेट का नाम

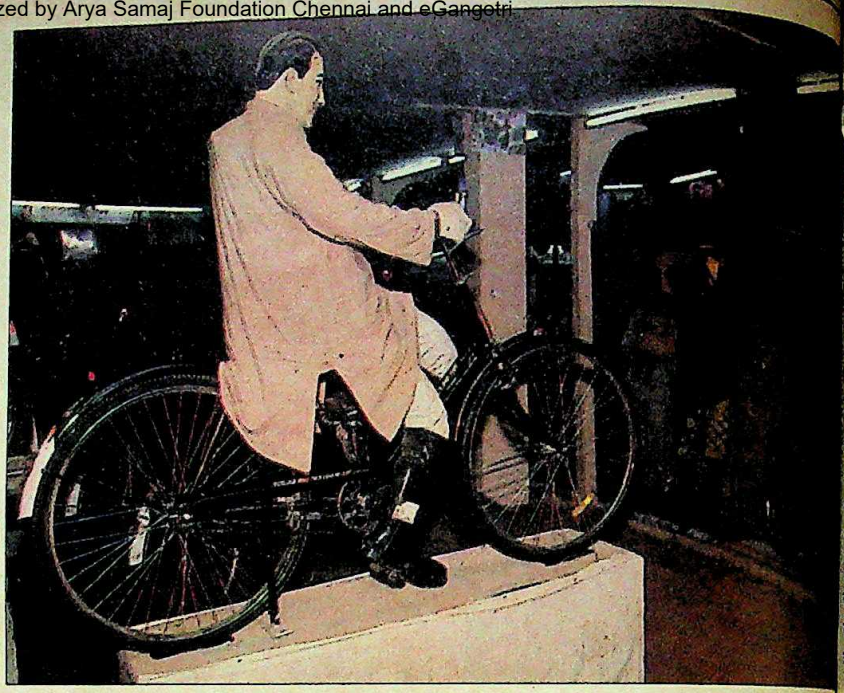

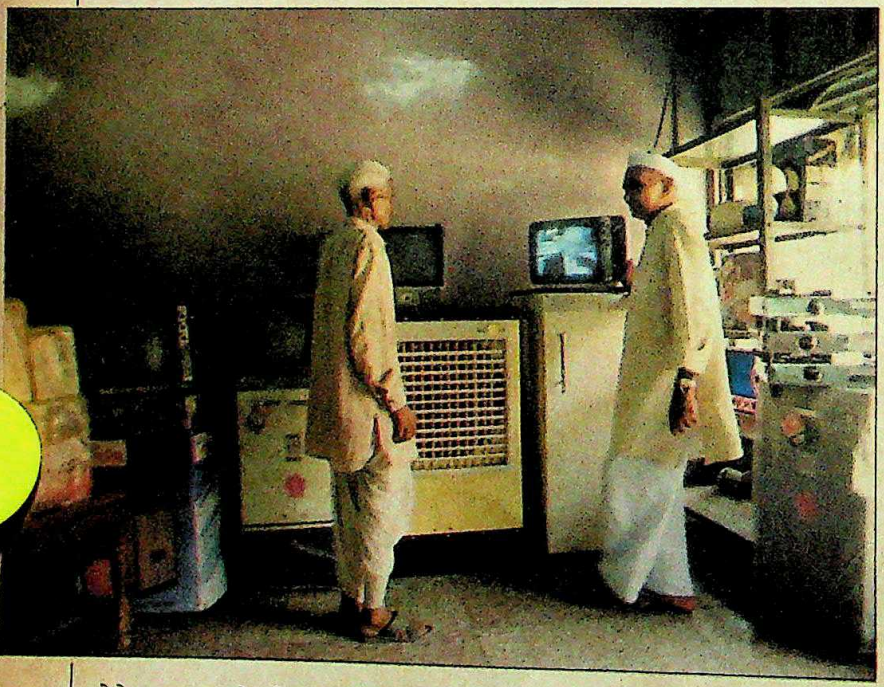

(ऊपर) मेरठ मेले में साइकिलें; कस्बाई दुकान में अत्याधुनिक सामान की भरमार

लेने पर यहां के निवासी हो सकता है आपको हैरत से देखने लगते. आज ये नाम सुनते ही उनके चेहरे पर पुरानी पहचान का भाव आ जाता है. साबुन के नामी ब्रांड यहां भी आदिवासियों की पसंद बनने की होड़ लगाए हुए हैं. आलू चिप्स की तो भारी मांग है. कुछ आदिवासी तो अब विल्स सिगरेट ही पीते हैं.

लेकिन अब कंपनियों को लगने लगा है कि ग्रामीण इलाकों में विपणन के लिए सिर्फ टीवी विज्ञापन के सहारे ही नहीं रहा जा सकता. इस मामले में सिलाई मशीन बनाने वाली उषा का समाधान है गांव की औरतों के लिए सिलाई कोर्स चलाना.

अन्य कंपनियां भी अपना माल बेचने के नए नए तरीके निकाल रही हैं. ब्रुक बांड गांवों में चाय की कुछ दुकानों को 'अपना' लेती है और गांववालों को कुछेक दिन मुफ्त चाय पिलाती है. ज्योफ्रे मैनर्स गांवों में लगने वाले मेलों में अपने सेल्समैन भेजती है, जो डॉक्टरों वाली सफेद पोशाक पहनकर ग्रामीणों को एनासिन के फायदे बताते हैं. आंध्र प्रदेश में फिलिप्स ने कुछ लोगों को बल्ब और बैटरी के आकार के पोशाक पहनाकर गाजे-बाजे के साथ गांवों में उनका जुलूस निकाला.

लेकिन विपणन के पुराने तौर-तरीकों के चलते इन सबसे बहुत लाभ मिलने वाला नहीं लगता. अब तक तो कंपनियां अपने स्टॉकिस्ट बनाती थीं और जब मांग बढ़ती तो स्टॉकिस्टों की संख्या भी बढ़ाती जा रही थीं. लेकिन हजार लोगों के गांव में स्टॉकिस्ट बनाने का कोई मतलब ही नहीं है जहां रोज दर्जन भर माल की ही खपत है.

हिंदुस्तान लीवर ने बड़ी संख्या में वैन लाकर इस समस्या से मुक्ति पाई जो खास खास दिनों में जाकर गांव के दुकानदारों को माल दे आते हैं (देखें बॉक्स). कॉलगेट पामोलिव ने जो वैन भेजने शुरू किए हैं नमूने का माल मुफ्त भी देते हैं और दांतों की सफाई संबंधी वीडियो फिल्म भी दिखाते हैं. इसके आगे उन गांवों में पहुंचने के लिए कंपनी ने साइकिल वाले सेल्समैन नियुक्त किए हैं जहां तक वैन नहीं जा सकते.

कंपनियों को अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है. एक समस्या तो ग्रामीण बाजार के एक तरह का नहीं होने की है. जैसे एलएमएल ने पाया कि दक्षिण में उसके स्कूटर की पूछ उत्तर के मुकाबले अधिक है. ज्योफ्रे मैनर्स ने पाया कि दक्षिण इलाकों में वैन भेजने वाली व्यवस्था आर्थिक रूप से अधिक फायदे की है. उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर से प्रचार और (नीचे) झोंपड़ी के ऊपर ऐंटिना : उपभोक्तावाद की आहट

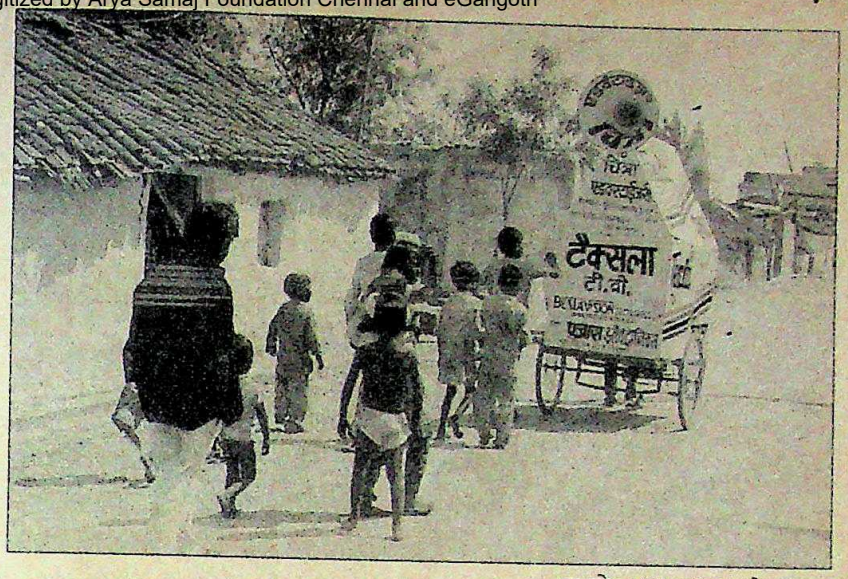

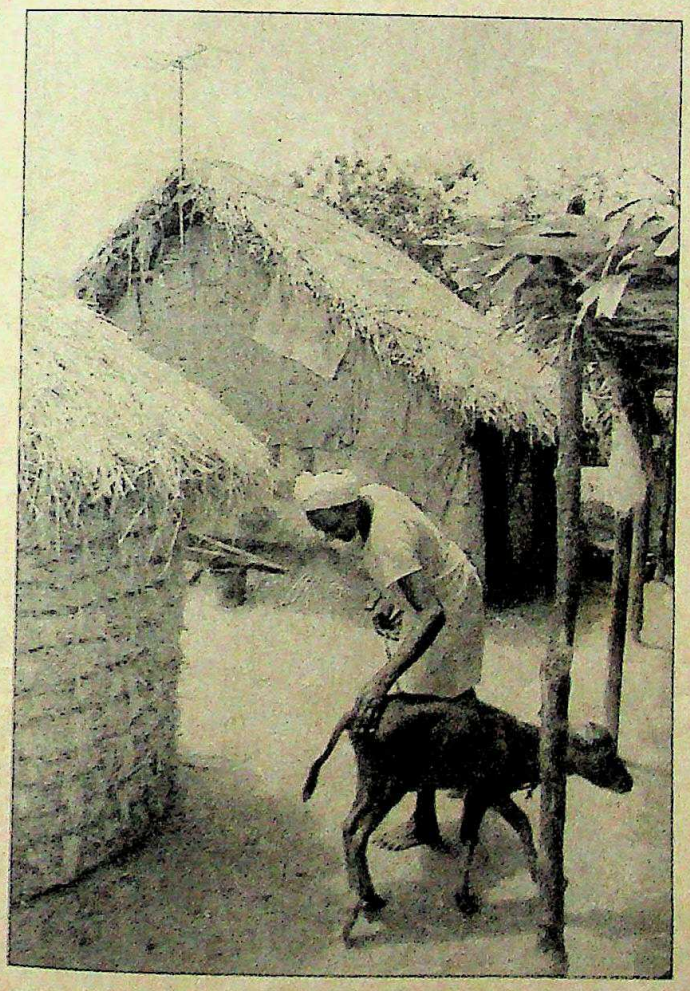

गांव काफी दूर-दूर बसे हैं. प्रत्येक कंपनी के लिए ग्रामीण विपणन का अनुभव बहुत कुछ सिखाने वाला रहा है. कैडबरीज के प्रताप राय कहते हैं इस दौरान दूरदराज में डालने वाले अनुभव भी होते हैं. कुछ महीनों पहले राय कंपनी के वैन से ही महाराष्ट्र के एक दूरदराज के गांव इस्लाम-पुर गए थे. गाना-बाजा और प्रचार के बाद कुछ मुफ्त चीजें बांटी गईं और जब वैन गांव की दुकानों को सामान देने पहुंची तो अजब नजारा देखने को आया. हर दुकान-दार वैन में रखी हेयर डाई की सारी बोतलें खरीद लेना चाहता था. बाल रंगने वाले इस रसायन का किसान क्या उपयोग करेंगे, यह पूछने पर पता चला कि इससे वे अपने जानवरों के बाल रंगेंगे, जिससे वे तगड़े और जवान दिखें.

यूनियन कारबाइड ने पाया कि प्लास्टिक कवर वाले उसके पतले टार्चों को गांवों में कोई नहीं पूछता जबकि शहरी बाजार में इनकी जबरदस्त मांग है. किसान पीतल वाले बड़े टार्च को पसंद करते हैं. टेक्सला के हरे और काले रंग के कैबिनेट वाले टीवी सेट गांववालों को पसंद नहीं आए. अब इसने रक्त लाल और पीले रंग वाले दो सेट बनाए हैं. और वे किसान खूब पसंद कर रहे हैं.

ग्रामीण लोगों की पसंद को समझने और उसी हिसाब से अपने सामान बाजार में रखने की कोशिश दूसरी कंपनियों ने भी की है. डाबर अपने माल के साथ हनुमान चालीसा, रामचरितमानस, धार्मिक चित्रों वाले कैलेंडर मुफ्त देती है. गांवों में इस तरकीब ने जादू-सा असर दिखाया है. टेक्सला ने महाभारत की लोकप्रियता को भुनाते हुए अपने नए सेटों का नाम अर्जुन और युवराज रखकर लाभ उठाया है. इसी कंपनी ने पाया कि मरफी मुन्ना नाम से गांवों में खूब पसंद किया गया.

एक ही सामान को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तरह के पैकेजिंग के साथ बेचने का प्रयोग प. बंगाल की कंपनी केएमपी ने किया. उसने अपने केश तेल को मुस्लिम बहुल उत्तर प्रदेश में तो हरे रंग के पैक में बेचा जबकि ओड़ीसा में बैंगनी रंग में, जो वहां बहुत पवित्र माना जाता है.

छोटे पैकेटों में माल बेचना भी विपणन की कारगर रणनीति साबित हुई है. हिंदुस्तान लीवर ने पाया कि गांव के दुकानदार उसके 100 ग्राम वाले साबुन को भी दो टुकड़ों में काटकर बेच रहे हैं. सो, उसने 75 ग्राम वाली टिकिया बनानी शुरू की. अब यह व्हील डिटरजेंट को छोटी थैलियों में बेचने की योजना बना रही है.

लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि गांवों में सस्ती चीजें ही बिकती हैं. उषा ने पाया कि उसकी सस्ती सिलाई मशीन की मांग ग्रामीण इलाकों में घटती जा रही है. उसने तुरंत इसमें फेरबदल किया. इसी प्रकार टाटा ऑयल मिल्स के लोग यह देखकर दंग रह गए कि ग्रामीण इलाकों में उसके मोती साबुन जैसे महंगे ब्रांड की मांग प्रति वर्ष 80 फीसदी की रफ्तार से बढ़ती जा रही है. कॅडबरीज के विपणन निदेशक विनोद धवन कहते हैं, "यह मिथक है कि ग्रामीण बाजार में सस्ती चीजें ही बिकती हैं. ग्रामीण उपभोक्ता अच्छी क्वालिटी की चीजों के लिए अच्छा दाम भी चुकाने के लिए तैयार है."

और वे अपने खून-पसीने की कमाई के एक-एक पैसे का मोल भी पाना चाहते हैं. गांव का आम उपभोक्ता मर्फ के विज्ञापन वाली ललिता जी की मानसिकता का ही है. कहीं वह ललिताबेन हैं तो कहीं ललिता बाई और ललिताम्मा. लेकिन अब उसी के बटुए पर कंपनियों की नजर टिकी है.

—सुरजीत दासगुप्ता, रमेश मेनन और अनुराग रिंगोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाज गिरेगी मंत्रालय पर

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह छोटी सरकार के बड़े समर्थक हैं. 1985-86 में जब वे वित्तमंत्री थे तो उन्होंने वित्त मंत्रालय से बैंकिंग विभाग को खत्म कर देने का प्रस्ताव रखा था. नॉर्थ ब्लॉक के कई नौकरशाहों को इसका विरोध करना ही था. उनका तर्क था कि सरकार देश के ज्यादातर बैंकों की मालिक है इसलिए बैंक के निदेशक बोर्ड में अधिकारियों को सरकार के हितों का प्रतिनिधित्व करना ही होगा. मतलब कुल मिलाकर यह था कि इस विभाग को बने रहना चाहिए. पर वी.पी. सिंह का तर्क कुछ और था. वे मानते थे कि भारतीय रिजर्व बैंक (इसकी मालिक भी सरकार ही है) सरकार के हितों का प्रतिनिधित्व अच्छी तरह कर सकता है. उस समय ताक पर रख दिया गया यह प्रस्ताव अब फिर बीच मैदान में है और वी.पी. सिंह भी इसे अंजाम देने में जुट गए हैं. पर एक बाधा है. इसके अधिकारियों का क्या होगा? वैसे भारत ब्राजील की तरह नौकरशाही को नकारने वाला विभाग बनाकर बैंकिंग विभाग के अफसरों को उसमें बिठा सकता है.

कदम कंप्यूटरी दुनिया में

अपना क्रेडिट कार्ड का धंधा सिटी बैंक को बेचने के बाद डाइनर्स बिजनेस सर्विस (डीबीएस) हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी है. कंपनी की योजना अगले कुछ महीनों में कंप्यूटर अधिकारियों को प्रशिक्षित करने की है. कंपनी के सूत्रों के अनुसार डाइनर्स अब बड़े पैमाने पर कंप्यूटर के धंधे में उतर रही है. प्रबंधन व्यवस्था पर प्रशिक्षण भी इसी का एक हिस्सा है. यह पहले बंबई में शुरू होगा और फिर पांच दूसरे शहरों में भी. कंप्यूटर हार्डवेयर में 2 करोड़ की पूंजी लगाने के बाद डाइनर्स अब विस्तार तथा दूसरे क्षेत्रों में उतरने के काम में इससे भी दोगुनी पूंजी लगाने जा रही है.

देसी माल, विदेशी लेबल

टोबलरोन ब्रांड की चॉकलेट बनाने वाला दुनिया का जाना-माना चॉकलेट निर्माता स्विट्जरलैंड का जैकब सुकर्ड समूह अब भारत में भी अपनी शाखा खोलने की योजना बना रहा है. इसके लिए वह एक आप्रवासी भारतीय औद्योगिक घराने से गठजोड़ करेगा. फिलहाल तो दुबई में ढेर सारे शैक्षणिक संस्थान चलाने वाले वर्के समूह के नाम का प्रस्ताव है. पर इसमें एक बाधा है. जैकब सुकर्ड का बंबई के डॉ. राइटर्स से भी गठबंधन है जिसका इस नई शाखा से नाखुश होना स्वाभाविक है. पर वर्के समूह को पूरा विश्वास है कि उसकी चॉकलेट इकाई अगले साल तक कभी भी दक्षिण भारत में शुरू हो जाएगी. कहां? इसका अभी खुलासा नहीं किया गया है.

तकनीक लाएंगे परदेस से

दूसरे धंधे में घुसपैठ की कोशिश में बंबई की व्यापारिक बैंकिंग कंपनी क्रेडिट कैपिटल फाइनेंस कार्पोरेशन (सीएफसी) ने ब्रिटिश टेक्नोलॉजी ग्रुप से गठजोड़ किया है. टेक्नोलॉजी ग्रुप तकनीक हस्तांतरण का दुनिया में सबसे बड़ा संगठन है. अगर सरकार ने इस गठजोड़ को हरी झंडी दिखा दी तो आधुनिक तकनीक की विस्तृत श्रृंखला भारतीय कंपनियों की पहुंच के भीतर आ जाएगी. क्रेडिट कैपिटल जोखिम पूंजी की देश की पहली ऐसी कंपनी है जिसने यूरोप में स्विस फ्रांक में पूंजी निर्गम निकाला. यही नहीं यह भारत की एकमात्र ऐसी कंपनी है जिसे एशियाई विकास बैंक ने तीसरी दुनिया की उभरती अर्थव्यवस्था के शेयर बाजारों के अध्ययन के लिए नियुक्त किया है.

एक खुश, दूसरा नाखुश

गेहूं, धान और दूसरे कृषि उत्पादों के उगाही मूल्य में बढ़ोतरी के बाद पिछले पखवाड़े कपास का समर्थन मूल्य बढ़ाने का भी फैसला हो गया. कपास की आम किस्मों के लिए पिछले दो साल में यह बढ़ोतरी 36 से 40 फीसदी हुई है. किसानों के लिए तो यह खुशखबरी है पर मिल मालिकों के लिए नहीं. और पिछले साल की तरह ही इस साल भी जोरदार फसल

चार्ट: बी.के. शर्मा

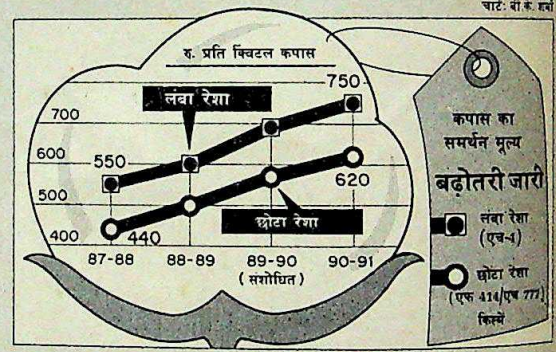

हुई तो इसका फायदा पूरे देश को मिलेगा. पिछले साल इसकी फसल 125 लाख गांठ हुई थी जो कि रिकार्ड है. इससे निर्यात बढ़ेगा. पिछले साल 250 करोड़ रु. के कपास का निर्यात हुआ था जो कि उसके पहले साल का नौ गुना है. तब यह निर्यात महज 28 करोड़ रु. का था. पर सवाल यह है कि निर्यात वृद्धि की यह दर क्या बरकरार रह सकेगी.

सपना कब यथार्थ बनेगा

कार्यभार संभालते ही केंद्रीय पेट्रोलियममंत्री एम.एस. गुरुपदस्वामी ने 1,700 करोड़ रु. लागत वाली एचबीजे पाइपलाइन जैसी ही प्राकृतिक गैस की ऐसी पाइपलाइन बिछाने की इच्छा जाहिर की थी जो बांबे हाई से शुरू होकर दक्षिण भारत के चार राज्यों में जाए. खास तौर पर इसलिए भी कि भार वहन सुविधाओं के अभाव में बांबे हाई में हर साल 1,800 करोड़ रु. की गैस जला दी जाती है. मंत्रालय ने अब यह अनुमान लगाया है कि गैस को जमीन पर स्थित ठिकाने तक लाने की व्यवस्था करने में ही 1,200 करोड़ रु. खर्च हो जाएंगे. पाइपलाइन तो इसके आगे शुरू होगी. संसाधनों की कमी को देखते हुए लगता है कि गुरुपदस्वामी का यह सपना शायद जमीन पर कभी आ ही नहीं सकेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: नामस भोजानी

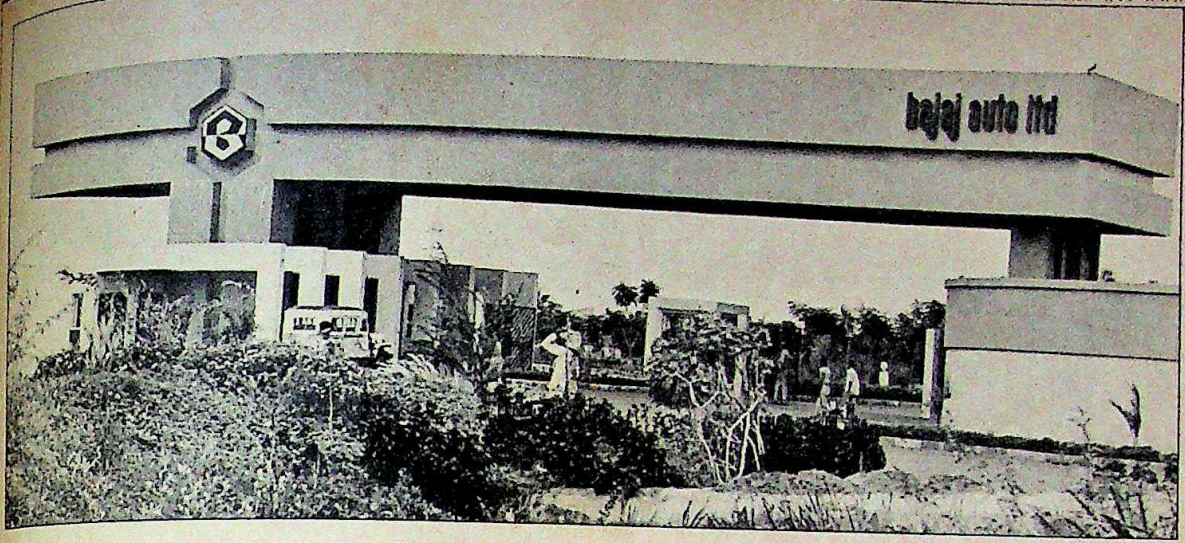

बजाज कारखाना: वेतन की लड़ाई

औरंगाबाद

बढ़े और लड़े

तरक्की से टकराहट भी आई

पहले अच्छी खबर. अजंता और एलोरा की गुफाओं के लिए मशहूर औरंगाबाद में पर्यटकों से कहीं ज्यादा व्यवसायियों की संख्या बढ़ती जा रही है जो वहां पूंजी निवेश के इच्छुक हैं.

अब बुरी खबर. पूंजी निवेश और उद्यमी प्रतिभाओं के अलावा औरंगाबाद में बड़े शहरों की बुराइयां भी आ गई हैं मसलन, श्रमिकों और प्रबंधन के बीच की लड़ाई जो हिंसा में तब्दील हो जाती है.

सचमुच, पिछले कुछ वर्षों में मराठवाड़ा की गैर सरकारी राजधानी और राज्य का सबसे पिछड़ा इलाका औरंगाबाद औद्योगिक क्षेत्र में तब्दील हो गया. महाराष्ट्र राज्य औद्योगिक और निवेश निगम से उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार मई 1990 तक यहां 1,377 करोड़ रु. का निवेश हुआ है.

लेकिन उद्योगों के साथ-साथ कुछ अशुभ श्रमिक प्रबंधक झगड़े भी आ गए हैं. 28 अप्रैल को यूनीवर्सल लगेज कंपनी के उप-महाप्रबंधक 41 वर्षीय भूपिंदर कुमार पुरी को 200 श्रमिकों ने कंपनी की औरंगाबाद स्थित पैठण इकाई में घेर लिया और उनके केबिन में घुसकर स्पैनर और सरियों से हमला कर दिया. ये श्रमिक मजदूर संघ के एक पदाधिकारी के निलंबन का विरोध कर रहे थे. पुरी को मूर्छित अवस्था में तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया जहां 7 मई को उनकी मृत्यु हो गई. हत्या के बाद राज्य सरकार ने औरंगाबाद पुलिस से आतंकवादी एवं विध्वंसक गतिविधि (निवारक) कानून लागू करने को कहा है. यह पहला मौका है कि किसी औद्योगिक विवाद में इस कानून का इस्तेमाल किया जा रहा है.

यूनीवर्सल लगेज के उप-महाप्रबंधक आर.एस. अय्यर के अनुसार, "औरंगाबाद में यूनियन नेतृत्व हिंसक है." लेकिन सीटू की औरंगाबाद इकाई के महासचिव उदय भवालकर हत्या की निंदा करते हुए कहते हैं, "सीटू इसमें शामिल नहीं है." यूनीवर्सल लगेज की यूनियन सीटू से संबद्ध है.

सचाई चाहे जो हो, प्रबंधन और मजदूर संघ दोनों ही चाहते हैं कि पुरी की हत्या का मामला तूल न पकड़े. उन्हें आशंका है कि इससे जिले से पूंजी का पलायन हो सकता है. औरंगाबाद में दांव बहुत ऊंचे हैं क्योंकि यहां कई बड़े उद्योगपतियों ने उद्योग लगाए हैं. बजाज ऑटो ने वालुज में दक्षिण एशिया का

प्रबंधन और मजदूर संघ दोनों चाहते हैं कि पुरी की हत्या तूल न पकड़े क्योंकि इससे पूंजी का पलायन होगा

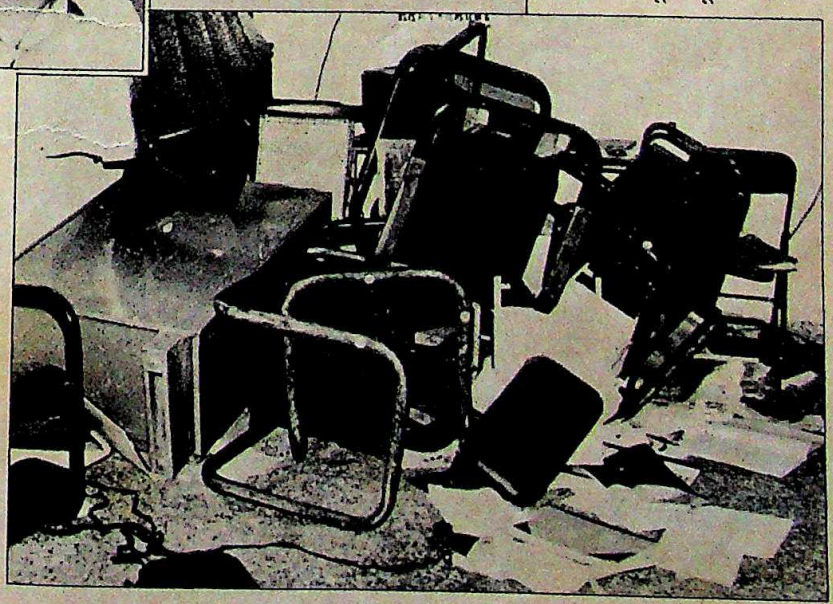

भूपिंदर पुरी (बाएं); उनका टूटा-फूटा केबिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे बड़ा स्कूटर संयंत्र लगाया है. 1989-90 में कंपनी की 1,120 करोड़ रु. की बिक्री में इस इकाई का 423 करोड़ रु. का योगदान रहा. इसके अलावा वीडियोकॉन, लूपिन लेबोरेटरीज, कॉलगेट पामोलिव, क्रॉम्पटन ग्रीव्ज, जॉन्सन ऐंड जॉन्सन, गरवारे पॉलिएस्टर और करोना प्यूमा ने भी औरंगाबाद जिले में अपनी इकाइयां खोली हैं. पिछले पखवाड़े सीएट टायर्स ने वालुज में 150 करोड़ रु. की लागत वाली नायलॉन टायर कार्ड परियोजना की आधारशिला रखी. मोदी रबर ने 20 करोड़ रु. की डीजल जनरेटर परियोजना के लिए भूमि पूजा की.

औद्योगिक विकास की एक स्वाभाविक परिणति मजदूर संगठन रहा है जिसने बदले में विवादों को जन्म दिया है. मिसाल के तौर पर यूनीवर्सल लगेज में बोनस के भुगतान को लेकर विरोध शुरू हुआ. इसके इलावा कॉलगेट पामोलिव की वालुज इकाई में इस साल फरवरी में शुरू हुई हड़ताल 35 दिनों तक चली. इसके पहले 1987-88 में बजाज ऑटो की वालुज इकाई में छह महीने की हड़ताल हुई थी. हाल के महीनों में रैलिज, झालानी टूल्स, जैन स्पिनर्स और औरंगाबाद पेपर मिल्स भी मजदूर समस्या का आघात झेल चुकी हैं. अय्यर कहते हैं, "यूनियनें सिर्फ अपना हक चाहती हैं. लेकिन हम हिंसा के आगे नहीं झुकेंगे." भवालकर जवाब देते हैं, "हम दान की मांग नहीं कर रहे. औरंगाबाद की कंपनियां भारी रकम बना रही हैं."

यही वजह है कि शिवसेना समर्थित भारतीय कामगार सेना और अधिक मोर्चाबंद यूनियनों के साथ अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रही है. और चूंकि दिन-प्रतिदिन यूनियनों की संख्या बढ़ती जा रही है, श्रमिकों का लड़ाकूपन कम होने की संभावना नहीं. मराठवाड़ा क्षेत्र के डीआईजी महेश नारायण सिंह यह कहते हुए इस समस्या को तरजीह नहीं देते, "औद्योगिक विवाद इस खेल के अंग हैं. औरंगाबाद में हिंसा तो होती है लेकिन स्थिति खतरनाक नहीं." औरंगाबाद के पूर्व महापौर और अब संसद के निर्दलीय सदस्य मोरेश्वर सावे इससे सहमत हैं, "औरंगाबाद महाराष्ट्र का सबसे तेज विकसित होता औद्योगिक क्षेत्र है. हम कोशिश करेंगे कि इसकी यह स्थिति बरकरार रहे."

ऐसा आत्मविश्वास प्रशंसनीय है. लेकिन पुरी कांड की पुनरावृत्ति औरंगाबाद के बढ़ते कदमों को शिथिल कर सकती है. —**एस.एन. वासुकि**, औरंगाबाद में

पेइको

किस्मत बदली

कंपनी को अब लाभ हुआ

एक साल पहले तक पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स ऐंड इलेक्ट्रिकल्स (जो बहुराष्ट्रीय डच कंपनी एन.वी. फिलिप्स की सहयोगी है) की हालत खस्ता थी. 1988-89 में इसे 16 करोड़ रु. का घाटा हुआ तो मूल कंपनी ने भारत से समेटने की धमकी दी.

पर पिछले पखवाड़े पेइको की हालत फिर सुधरती दिखी. शुरुआती आंकड़ों के अनुसार मार्च 1990 में खत्म होने वाले वर्ष में पेइको ने 416.94 करोड़ रु. की बिक्री में 5.4 करोड़ रु. का कुल मुनाफा कमाया. वित्तीय संस्थाओं के कहने पर पिछले साल कंपनी के बोर्ड में शामिल किए गए पेइको के अध्यक्ष डी.एन. घोष के अनुसार हालांकि प्रतिद्वंद्वियों को संदेह था पर "प्रबंधन ने सही कदम उठाए."

1989-90 के दौरान कर्मचारियों की संख्या 9,035 से घटाकर 8,095 कर देना शायद पेइको का सबसे महत्वपूर्ण कदम था. नौकरी छोड़ने वाले लोगों को हालांकि कंपनी को 5.44 करोड़ रु. चुकता करने पड़े पर इसके 40 करोड़ रु. के तनख्वाह भुगतान में मोटी रकम बच जाने की उम्मीद है. कंपनी के प्रबंध निदेशक जॉन बर्गवेल्ट ने बताया कि पेइको के कर्मचारियों की संख्या अब उतनी ही है जितनी 1980 में थी पर इसकी बिक्री पांच गुना बढ़ी है.

पेइको के कार्मिक निदेशक वी.जे. मैथियास के अनुसार योजना की कामयाबी का सबसे बड़ा कारण है कर्मचारी संघ का सहयोग. पर कर्मचारी संघ इसे नहीं मानता. संघ के एक अधिकारी का कहना है, "कर्मचारियों ने इसे इसलिए स्वीकार कर लिया क्योंकि उन्हें लगा कि कंपनी का भविष्य नहीं है."

इस योजना में पैसा खर्च करने के लिए पेइको ने बंबई में अपनी सात संपत्तियों को बेच दिया. इससे 9.74 करोड़ रु. हासिल हुए. लेकिन 16 करोड़ रु. का घाटा होने की वजह से पेइको को ज्यादा नगदी की जरूरत थी. इस संकट से उबारने के लिए मूल कंपनी एन.वी. फिलिप्स आगे आई और तीन साल के लिए 12 करोड़ रु. का ब्याजमुक्त कर्ज दिया. इसके अलावा भारतीय स्टेट बैंक की अगुआई में बैंकों के एक समूह ने 10 करोड़ रु. कर्ज दिया जिसके चलते कंपनी के कंधे पर लदा अल्पकालिक कर्ज घट गया.

कंपनी का प्रकाश उपकरण विभाग फिर काफी मजबूती से खड़ा हो गया है. दो साल तक धूल फांकने के बाद इस विभाग से मांग भी बढ़ी है और आपूर्ति भी. पर सबसे ज्यादा मुनाफा दे रहा है कंपनी का ऑडियो विभाग, जिसे 12 करोड़ रु. का लाभ हुआ है.

पर ये सारे फायदे कलकत्ता के पास साल्टलेक में 30 करोड़ रु. की लागत से लगी रंगीन टेलीविजन इकाई के खराब कामकाज की वजह से बेकार हो गए. इसकी सालाना क्षमता 1,00,000 सेट बनाने की है पर पिछले साल इसमें सिर्फ 30,000 सेट ही बने जिसकी वजह से 2.5 करोड़ रु. का घाटा हुआ. पेइको इस इकाई में किसी और का 'सहयोग' भी चाहती है. कहा जाता है कि इसके लिए वीडियोकॉन, नेल्को और क्रॉम्प्टन ग्रीव्ज जैसी कई कंपनियों से बातचीत चल रही है. बर्गवेल्ट बड़ी फुर्ती से बताते हैं कि सहयोग का मतलब बेच देना नहीं है. वे कहते हैं, "हॉलैंड की फिलिप्स के भारत में दीर्घकालिक हित हैं. पिछले साल उसके हाथ खींचने की आशंका बनी थी पर कामकाज सुधरने से अब यह दूर हो गई."

पर यह इस साल के कामकाज पर निर्भर करेगा. —**एस.एन. वासुकि**

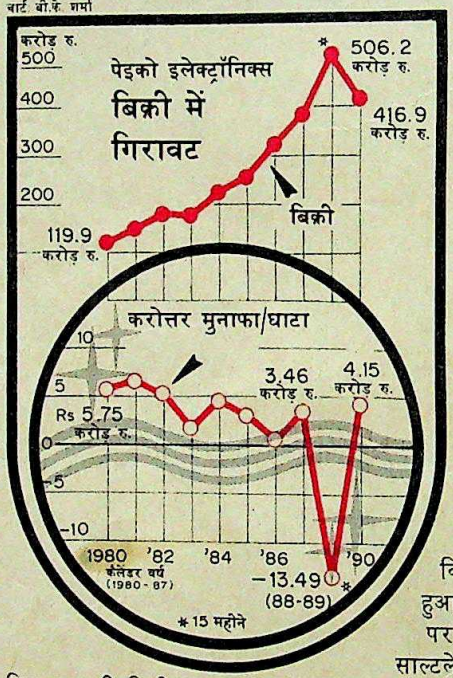

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उफनता उत्साह

पहले गिरे फिर चढ़े

मानसून के आते ही देश के शेयर बाजार ने कलाबाजियां दिखानी शुरू कर दीं. निवेशकों के हौसलों पर अभी काले बादल घुमड़े ही थे कि एकाएक उल्लास के क्षण आ गए. शेयर मूल्य सूचकांक उठने से पहले एक बार गिरे और मंदड़िए मुंह छिपाने की जगह ढूंढने लगे.

बाजार के सबसे बड़े खिलाड़ी भारतीय यूनिट ट्रस्ट के एक प्रवक्ता ने जब एक प्रेस मुलाकात में कहा कि देश के शेयर बाजार पर उनके संगठन का पूरा नियंत्रण है तो छिद्रान्वेषी विशेषज्ञों ने मुंह बिचका लिया. और जब शेयर कीमतों ने गोता लगाना शुरू किया तो उनकी आशंकाओं की पुष्टि भी हो गई.

पर कदाचित यह हैरत की बात भी थी. खासकर इसलिए भी कि कंपनी क्षेत्र को राजधानी से काफी शुभ संदेश मिल रहे थे. राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने

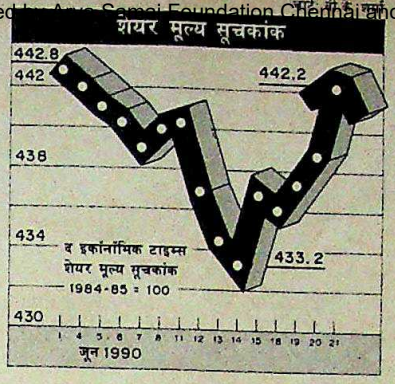

विदेशी पूंजी के प्रवेश का स्वागत किया. उद्योगमंत्री अजित सिंह ने औद्योगिक नीति को और ज्यादा उदार बनाने की घोषणा कर दी. युद्ध के नगाड़े भी ठंडे पड़ गए. और कश्मीर के अलगाववाद की गरमी भी पहले-सी नहीं लगी. इसके बावजूद बाजार के हौसले पस्त थे.

इकॉनॉमिक टाइम्स का शेयर मूल्य सूचकांक 29 मई को 449.5 की बुलंदी पर था लेकिन 14 जून तक वह लुढ़कता-लुढ़कता 433.2 के अंक पर पहुंच गया. बंबई शेयर बाजार (बंशेबा) के राष्ट्रीय सूचकांक की भी यही गति थी. इसी दौरान वह 437.19 से गिरकर 420.05 पर पहुंच गया. बंशेबा का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक अपने नाम के अनुरूप तेजी से ऊपर-नीचे होता रहा.

पर फिर एकबारगी पूरा माहौल बदल गया. 21 जून को इकॉनॉमिक टाइम्स का सूचकांक 442.2 के अंक पर जा पहुंचा जहां से पिछली बुलंदी कोई ज्यादा दूर नहीं है. बंशेबा का सूचकांक तो एक हफ्ते में ही आठ अंक तक उछल गया. और संवेदनशील सूचकांक की संवेदनाएं तो जैसे सातवें आसमान पर थीं. 13 जून को यह 781.66 के बिंदु पर था जो आठ ही दिन में 819.40 की बुलंदी पर जा पहुंचा और पखवाड़े की समाप्ति पर कुछ नीचे आकर 814.72 के बिंदु पर जा रुका.

इस उछल-कूद के कई कारणों में एक कारण यह बताया गया कि रिलायंस और लार्सन ऐंड टुब्रो जैसे दो प्रमुख शेयर अंबानी के खिलाफ सरकार की तनी भृकुटी के कारण महीनों तक घिसटने के बाद फिर मैदान में डट गए. टेल्को के अच्छे नतीजों की घोषणा से भी माहौल में खुशी की लहर दौड़ी.

लू भरी गरमी के बाद आषाढ़ की बरसात ने हरियाली और ठंड की राहत बिखेर दी है. पर निवेशक अटकलें लगा रहे हैं कि उनके बाजार की यह हरियाली इसी तरह बढ़ेगी या नहीं.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	नीचा	बंद 21.6.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	69.50	78.50	3.50 —
एलो. मोंबेट	508.00	325.00	507.00	18.00 +
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	231.25	10.00 —
एटलस कोप्को	48.00	32.25	36.00	0.50 +
बजाज ऑटो	477.50	355.00	472.50	12.50 +
बड़ौदा रेयॉन	910.00	617.50	895.00	8.75 —
बाटा इंडिया	83.00	62.50	65.00	1.00 —
बलरामपुर	172.00	120.00	159.00	5.50 —
बिरला जूट	82.50	50.50	79.00	0.50 —
ब्रो प्लास्ट	68.75	34.50	67.50	1.25 —
बांबे डाइंग	238.50	173.00	237.00	18.50 +
बिड़ा इंडिया	119.00	97.00	116.00	1.50 +
ब्रुक बांड	123.00	91.00	114.00	1.00 +
कावेरी इंडिया	172.50	133.75	147.50	1.25 —
केंद्रुरी टेक्स.	3580.00	2420.00	3480.00	45.00 —
कॉलगेट पामो.	233.75	176.25	225.00	5.00 +
गोदावरिज	123.75	87.50	97.50	10.00 —
गोदरेज	60.00	45.50	47.50	4.25 —
ग्रनल	75.50	51.75	58.00	2.50 —
ग्रेवार होटल्स	65.25	56.00	59.00	0.50 +
एचएटीएल	101.50	77.75	100.00	4.88 +
हिन्दी. केबल्स	282.50	200.00	215.00	17.50 —
हरयाणा नाइट्रोलेन	69.00	48.00	51.50	2.00 —
जी.ई. गिफिंग	54.75	42.50	43.25	3.00 —
ग्रुप. स्टेट फर्टि.	218.75	155.00	200.00	2.50 —
इंडियन इंडिया	134.50	106.00	124.00	1.00 +
हिंदु. एल्यू.	303.75	205.00	273.75	3.75 —
हिंदु. ऑक्सि	1660.00	960.00	1390.00	—
हैकर	2300.00	1295.00	1800.00	170.00 —
हिंदुस्तान मोटर	125.00	101.00	123.50	4.00 +
हिंदुस्तान मोटर्स	37.20	19.80	33.00	0.40 +
कार्बोरेंडम	49.50	35.25	36.50	0.50 —
इंडियन आर्गेनिक	63.00	46.50	60.00	1.00 +
इंडियन रेयॉन	113.75	84.00	113.25	5.75 +
इंडाल	247.50	181.25	235.00	11.25 +
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	222.50	2.50 +
आई.टी.सी.	79.00	48.75	74.75	0.75 +
जे.के. सिथेटिक्स	67.00	50.00	58.50	1.00 +
काइनेटिक इंजी.	165.00	130.00	163.75	0.75 —
किर्लो. क्युमिंस	90.00	65.00	76.25	3.75 —
केएसबी पंप्स	227.50	175.00	180.00	20.00 —
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	71.50	—
लिप्टन	112.00	73.00	75.00	10.00 —
लोहिया-मशीन्स	23.50	15.00	22.00	2.50 +
मदुरा कोट्स	122.50	110.50	122.50	4.50 +
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	86.25	1.25 —
मिल्क फूड	280.00	115.00	130.00	5.00 —
मोटर इंड.	1200.00	780.00	810.00	40.00 —
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	133.00	10.00 —
नेशनल आर्गे.	1660.00	1070.00	1255.00	65.00 —
नेस्ले इंडिया	129.00	101.75	115.00	3.75 —
निरलॉन	22.00	13.00	16.00	1.50 +
ओरके सिल्क मि.	20.50	14.50	17.00	0.50 +
पेइको इलेक्ट्रों.	38.00	24.00	38.00	5.25 +
फाइजर	113.75	72.50	90.00	—
प्रीमियर ऑटो	74.50	53.50	60.50	2.50 +
रेमंड	98.00	70.00	93.00	6.00 +
रेकिट कोलमैन	244.00	178.00	215.00	4.00 +
रिलायंस इंड.	90.00	50.00	63.50	0.50 —
सीमेंस इंडिया	123.50	96.00	110.00	5.00 —
शॉ वैलेस	98.00	65.00	90.00	—
श्रीराम फाइबर्स	71.00	43.50	43.50	5.75 —
एसकेएफ बेय.	1570.00	1240.00	1485.00	10.00 —
स्मिक	64.00	50.75	56.00	5.75 —
टाटा स्टील	136.50	103.25	118.75	0.50 +
टेल्को	154.50	110.00	150.50	3.50 +
वाम ऑर्गेनिक	167.50	115.00	120.00	16.25 —
वीडियोकॉन	285.00	105.00	242.50	5.00 —
वोल्टास	87.50	63.00	77.00	1.00 +
विमको	32.50	15.75	20.25	2.00 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
ऑस्ट्रेलिया	डॉलर	1	13.7659	13.6222
ऑस्ट्रिया	शिलिंग	100	147.5671	146.8187
बहरीन	दीनार	1	46.7631	45.7070
बांग्लादेश	टका	100	55.6704	54.2770
कनाडा	डॉलर	1	14.9435	14.7944
डेनमार्क	क्रोना	1	2.7495	2.7215
मिस्र	पौंड	1	6.5925	6.4808
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.1596	3.0817
हांगकांग	डॉलर	1	2.2518	2.2300
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9546	0.9404
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.4257	1.4098
जापान	येन	100	11.5207	11.2360
केन्या	शिलिंग	1	0.8119	0.8034
कुवैत	दीनार	1	59.8504	57.8955
मलेशिया	डॉलर	1	6.4685	6.4044
मारीशस	रुपया	1	1.1462	1.1315
नेपाल	रुपया	1	0.6121	0.6041
हॉलैंड	गिल्डर	1	9.2882	9.1946
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8272	0.8154
सिंगापुर	डॉलर	1	9.5222	9.4262
स्पेन	पेसो	1	0.1698	0.1677
श्रीलंका	रुपया	1	0.4395	0.4348
स्वीडन	क्रोना	1	2.8876	2.8586
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	12.4282	12.3007
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0974	0.0939
थाईलैंड	बहत	100	68.5007	67.0604
ब्रिटेन	पौंड	1	30.1705	29.9491
अमेरिका	डॉलर	1	17.5362	17.3686
सं. अ. अमीरात	दिरहाम	1	4.7769	4.7274
सोवियत संघ	रूबल	1	28.2614	27.9688
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.6157	10.3520

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 21.6.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

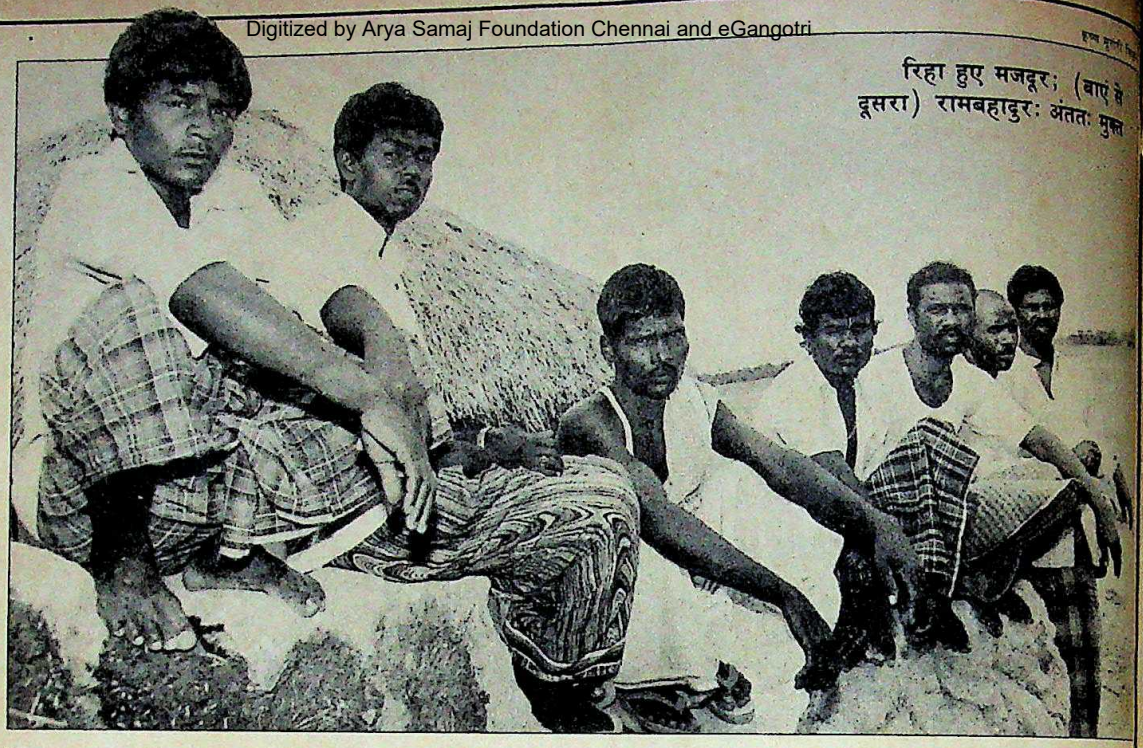

रिहा हुए मजदूर; (बाएं से दूसरा) रामबहादुर: अंततः मुक्त

बिहार

इंसाफ के दर पे दस्तक

बेवजह फंसा दिए गए मजदूरों की लड़ाई लंबी लड़ी गई

उत्तर बिहार के मधुबनी जिले के सुंदर बीराजीत गांव से सटे उधवा मुसहर टोली के 20 वर्षीय रामबहादुर ने पांच साल पहले एक सपना बुना था. इस छरहरे, भूमिहीन युवक ने नवादा की एक सुंदर-सी लड़की बुद्दी से शादी की. लेकिन घर की विपन्नता के कारण उसे बाहर जाकर कुछ कमाने के लिए मजबूर होना पड़ा.

सड़क निर्माण मजदूर का काम करने के लिए वह सितंबर 1985 में 40 मुसहरों के साथ उत्तर प्रदेश के जौनपुर चला गया. वहां उसे दो हत्याओं के सिलसिले में उसी के गांव के छह दूसरे युवकों के साथ जेल में बंद कर दिया गया. हालांकि इस अपराध में वे शामिल नहीं थे. पिछले महीने छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के कार्यकर्ता पंचदेव की कोशिश से रामबहादुर और दूसरे युवक जमानत पर छूटकर अपने गांव आ गए.

रामबहादुर ने निराशा भरे स्वर में कहा, "आज मैं महसूस करता हूं कि वे पांच साल किसी दुःस्वप्न के समान थे. गरीबों को जेल में ठूंसा जा सकता है और बिना किसी अपराध के उन्हें दोषी ठहराया जा सकता है. इस देश का कानून और संविधान सिर्फ अमीरों के लिए हैं."

पंचदेव (35) कहते हैं कि रामबहादुर और छह दूसरे युवकों—जोगिंदर (45), रामू (30), मुन्ना (25), रामगुलाम (30), गंगाराम (35) और जगदीश (45) की कहानी देश के उन लाखों भूमिहीन गरीबों की कहानी है जो चुपचाप त्रासदी भुगतने के लिए अभिशप्त हैं क्योंकि कानून उनके बुनियादी अधिकारों की गारंटी नहीं देता. पर पंचदेव की लड़ाई के कारण सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि भूमिहीन गरीबों को 5,000 रु. के व्यक्तिगत मुचलकों और इतनी ही रकम की दो दूसरी प्रतिभू (यानी रकम भरने के वादे) पर रिहा कर दिया जाए.

चालीस मजदूरों में से एक नेवालाल सदा के अनुसार उन्हें जब मालूम हुआ कि प्रभावशाली ठेकेदार शेर बहादुर सिंह को जमीन के काम के लिए कुछ मजदूरों की जरूरत है तो वे सब बनारस होते हुए जौनपुर पहुंच गए. एक रात जब वे सो रहे थे तो पास के गांवों के कुछ लोग उन पर टूट पड़े. वे उनका सामान छीनकर और उन्हें डाकू बताते हुए मारते-पीटते रामपुर थाने ले गए. जिस महिला के घर उन्हें पड़ी थी, उसने थाने में शिनाख्ती परेड दौरान उन्हें बेकसूर बताया. उनमें 33 छूट गए लेकिन सात को बिना अपराध बताए जेल में बंद कर दिया गया.

जगदीश ने बताया, "हमें आरोपों की जानकारी नहीं थी. तीन-चार महीने बाद जब हमें अदालत में पेश किया गया तो मालूम हुआ कि पुलिस ने केवलापुर के लोगों की हत्या के मामले में फंसाते हुए हमारे खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया."

अंततः जौनपुर अदालत के विशेष न्यायाधीश ने सात मजदूरों को 12 दिसंबर 1986 को आपराधिक साजिश और दोहरी हत्या का दोषी ठहराया और सश्रम आजीवन कारावास की सजा सुनाई. बाद में उन्हें मालूम हुआ कि वे दो ठेकेदारों और भूपतियों की आपसी होड़ और एक राजपूत युवक को हत्या के आरोपों से बचाने की साजिश के शिकार हो गए.

दोषी ठहराए जाने के बाद जब उन्हें वाराणसी केंद्रीय जेल में बंद किया गया तो उनकी सारी उम्मीदें खत्म हो गईं. छात्र युवा वाहिनी कार्यकर्ता पंचदेव ने जब मुसहर टोली के हरिजनों की करुण कहानी सुनी तो उन्होंने इस व्यवस्था को चुनौती देने का फैसला किया. जेब खाली होने के बावजूद वे अपने मिशन पर निकल पड़े.

वाराणसी पहुंचने पर उन्होंने पाया कि अपील के लिए सिर्फ कुछ दिन बचे हैं. उन्होंने जेल अधिकारियों से बंदियों की अपील आगे भेजने का अनुरोध किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकर

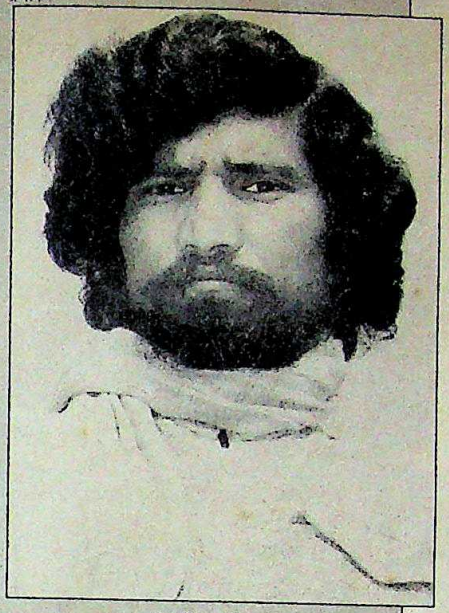

पंचदेव (35)
सामाजिक कार्यकर्ता

"जमानत लेने का अधिकार हर किसी को मिलना चाहिए, चाहे उसका सामाजिक दर्जा जो हो. वरना आज तो सिर्फ धनवान और प्रभावी लोग ही फैसले बदलवाने की ताकत रखते हैं"

अधिकारों के वकील रवि किरण जैन ने बिना शुल्क लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट में उनका मामला उठाया. मामला दायर करने के ठीक दो साल बाद 15 दिसंबर 1988 को हाईकोर्ट ने जमानत मंजूर कर ली. लेकिन उन्हें रिहा कराने वाला कोई जमानतदार नहीं था. पंचदेव कहते हैं, "मैंने इस मामले को व्यवस्था को चुनौती देने वाले मुद्दे के रूप में लिया. अगर वे लोग सचमुच जमानत के हकदार हैं तो उन्हें व्यक्तिगत मुचलके पर क्यों नहीं रिहा किया जा सकता?"

जायदाद वाले जमानतदारों के अभाव में जब मजदूरों को नौ महीने तक नहीं रिहा किया गया तो पंचदेव ने यह दलील देते हुए 22 सितंबर 1989 को हाईकोर्ट में एक दूसरी याचिका दायर की कि सजायाफ्ता मजदूरों को व्यक्तिगत मुचलके पर रिहा किया जाए क्योंकि ऐसा न करना गरीबों को न्याय से वंचित करना होगा. लेकिन न्यायमूर्ति एस.आई. जाफरी ने यह कहते हुए कि यद्यपि अपीलकर्ताओं को न तो उपेक्षित छोड़ा जा सकता है और न ही कोई अदालत मामले के जल्द निबटारे की अनंत उम्मीदें लिए हुए बंदियों की मानसिक पीड़ा की तरफ से लापरवाह रह सकती है, बंदियों को व्यक्तिगत मुचलके पर रिहा करने संबंधी अपील पर विचार करने में असमर्थता जताई.

पंचदेव यह कहते हुए कि न्यायमूर्ति जाफरी का गरीब मजदूरों को व्यक्तिगत मुचलके पर रिहा न करना मजदूरों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है, उन्हें जमानत से मिली आजादी का हनन है, कानूनी व्यवस्था को चुनौती देने की कोशिश में जुट गए. उन्हें इसमें मानवाधिकारों के लिए लड़ने वाले जस्टिस वी. एम. तारकुंडे का पूरा सहयोग मिला. उन्होंने शुल्क की बिना कोई बात किए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर दी.

दरअसल, निशाना कानून को ही बनाया गया. कानून कहता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी अभियुक्त का प्रतिभू है (यानी जिसने निश्चित रकम चुकाने का वादा किया है) तो अभियुक्त के फरार होने पर जमानत राशि उसे ही भरनी पड़ेगी. पंचदेव ने कहा, "इसका मतलब यह हुआ कि जायदाद के मालिक और प्रभावशाली लोग ही फैसले बदलवा सकते हैं. हम चाहते हैं कि जमानतदार होने का अधिकार हर किसी को मिलना चाहिए, चाहे उसका सामाजिक दर्जा कुछ भी हो, चाहे उसके पास धन या हो न हो."

लेकिन पिछली 20 मार्च को उस समय एक नया इतिहास रचा गया जब सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति एस. तल्लावल पांडियन और न्यायमूर्ति के. जयचंद्र रेड्डी ने अपीलकर्ताओं को इस शर्त पर सिर्फ दो प्रतिभू वाले व्यक्तिगत मुचलके पर रिहा करने के आदेश दिए कि वे हर महीने स्थानीय पुलिस के सामने पेश होंगे. निचली अदालत एक महीने तक सुप्रीम कोर्ट के आदेश का अर्थ नहीं निकाल पाई. लेकिन 24 अप्रैल को उसने रिहाई का आदेश जारी कर दिया. आखिरकार सातों भूमिहीन मजदूरों को इस साल 7 मई को रिहा कर दिया गया.

घर लौटकर ये गरीब मजदूर उस सदमे से उबरने की कोशिश कर रहे हैं. रामबहादुर ने कहा, "सब कुछ खो देने के बाद हम इतने आतंकित हैं कि टोले से बाहर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाते." इस बीच पंचदेव एक दूसरी लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं—गरीबों के बारे में सोचने के लिए सरकार की नींद तोड़ना. लेकिन इसमें वे शायद कामयाब नहीं होंगे, कम-से-कम बिहार में तो नहीं ही.

—फरजंद अहमद, मधुबनी में

IN THE SUPREME COURT OF INDIA
CRIMINAL APPELLATE JURISDICTION
CRIMINAL APPEAL NO. 198 OF 1990
(Criminal) No.183 of 1990)

..... Appellants

..... Respondent

ORDER

Certified to be a true copy
Assistant Registrar (Judl.)
Supreme Court of India

Special leave granted.
Heard learned counsel for parties.
The appellants are directed to be released on bail
on their executing a personal bond for a sum of
Rs. and with two other sureties filing personal bonds
in like sum to the satisfaction of Sessions Judge
subject to the condition that the appellants
report at the police station Madhubani in Bihar
every alternate day of first week of every month.
The appellants may approach the Chief Justice of the
High Court of Bihar for expediting hearing of the
appeal.
The appeal is accordingly disposed of.

(S. RATNAVEL PANDIAN) J

(K. JAYACHANDRA REDDY) J

घटनाक्रम

- सितंबर '85 में 40 बेकसूर मजदूर बाजितपुर में गिरफ्तार. बाद में उन पर डकैती का आरोप.
- 33 मजदूर रिहा पर 7 पर दोहरी हत्या का मुकदमा.
- उन्हें आजन्म कारावास की सजा.
- सामाजिक कार्यकर्ता पंचदेव की कोशिशों से इलाहाबाद हाईकोर्ट में अपील पर 15 दिसं. 88 को जमानत मंजूर. पर जमानत लेने वाला कोई नहीं.
- मजदूरों को व्यक्तिगत मुचलके पर रिहा करने के लिए हाईकोर्ट में 22 सितं '89 को पंचदेव ने खुद याचिका दायर की.
- इस अपील पर हाईकोर्ट ने विचार करने में असमर्थता जताई.
- पंचदेव ने सुप्रीम कोर्ट में जमानत की व्यवस्था को चुनौती दी.
- 20 मार्च '90 को सुप्रीम कोर्ट ने सातों मजदूरों को व्यक्तिगत मुचलके पर रिहाई का आदेश दिया.
- अंततः 7 मई '90 को सातों मजदूर रिहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

नकल में खपाई अकल

देश के सबसे बड़े जाली नोट कांड का पर्दाफाश

रायपुर राजकीय कोषागार के 42 वर्षीय लिपिक राजेंद्र तिवारी को सम्मानित नागरिक समझा जाता था. हर दिन वह शहर के प्रमुख मंदिरों में दर्शन करने जाता. वह बड़ा दानवीर लगता. सामान्यतः वह मंदिरों में 50 रु. चढ़ाता भी. लेकिन अधिकतर उसके पास 100 रु. के नोट ही होते, खुले रुपए नहीं.

पिछले महीने असली तिवारी का पर्दाफाश हुआ. इसे देश का सबसे बड़ा जाली नोट कांड कहा जा सकता है. रायपुर पुलिस ने तिवारी को उसके पांच साथियों के साथ कम-से-कम 5 करोड़ रु. के जाली नोट छापने और बाजार में चलाने के लिए गिरफ्तार कर लिया. तिवारी के अलावा गिरफ्तार किए गए लोगों में हैं, इस धोखाधड़ी का सूत्रधार और छपाई का उस्ताद 29 वर्षीय राजेंद्र सिंह, उसका भाई 30 वर्षीय रघुराज सिंह, चीनी मूल का 40 वर्षीय दांतों का डाक्टर मखोउ, राज्य सहकारी विपणन संघ का कर्मचारी 30 वर्षीय अमर सिंह और गिरोह का हिसाब-किताब रखने वाला 36 वर्षीय एस. कृष्णमूर्ति.

पुलिस ने उनसे 4.38 करोड़ रु. के जाली नोट और 24,000 रु. नकद के अलावा ऑफसेट छपाई मशीन, उपकरण और रसायन, एक कार, वॉकीटॉकी सेट तथा गैर लाइसेंसी रिवाल्वर भी बरामद किया.

इस धोखाधड़ी का सबसे गंभीर पहलू यह है कि अधिकारी भी जाली नोटों की लगभग हूबहू नकल से दंग रह गए और इसी कारण इस गिरोह को इतने लंबे समय तक पकड़ा नहीं जा सका. बैंक अधिकारियों को भी इस जालसाजी को समझ पाने में खासी जद्दोजहद करनी पड़ी.

जालसाजी का उस्ताद राजेंद्र सिंह कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़कर आठ साल तक नकली नोट बनाने में महारत हासिल करने के लिए मेहनत करता रहा. 1985 में अपने प्रयोगों के दौरान 100 रु. का नोट उसने पानी की बाल्टी में डाला. उसे पता लगा कि नोट कागज के दो टुकड़ों से बना है, जो चिपके हुए हैं.

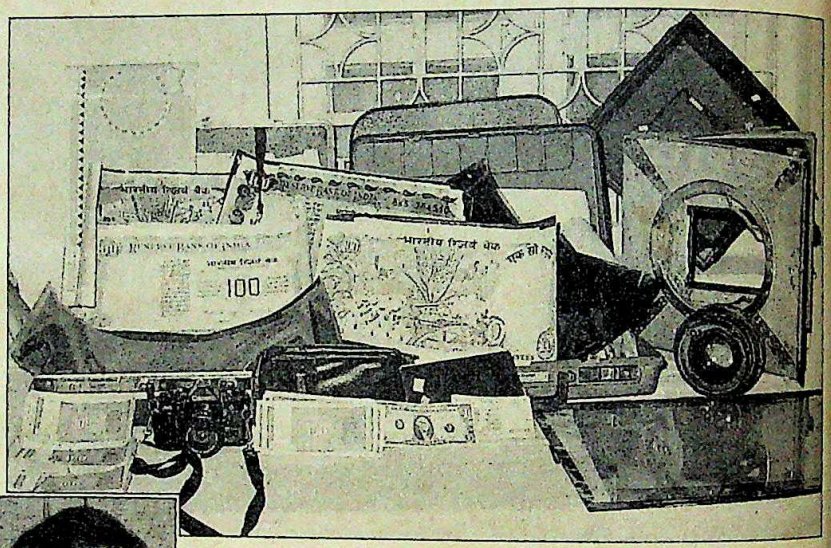

जब्त मशीनें और (इनसेट) सरगना राजेंद्र सिंह: करोड़ों का चूना

पिछले लगभग पांच वर्षों में इस गिरोह ने कम-से-कम पांच करोड़ रु. के जाली नोट छापकर बाजार में उतारे

शुरुआत में उसके पास धन की इतनी कमी थी कि वह कागज के दो टुकड़ों के बीच सुरक्षा धागे के लिए अमूल चॉकलेट का खोल एल्यूमिनियम की पन्नी के तौर पर इस्तेमाल करता था. वाटर मार्क का निशान ब्लीचिंग पाउडर या तेजाब से बनाया जाता. रघुराज सिंह के पास छोटी रंग की ऑफसेट छपाई मशीन पहले से ही थी. जल्दी ही राजेंद्र सिंह का धंधा फलने-फूलने लगा.

उपकरणों की जो कमी थी, वह उसने अपनी चतुराई और लगन से पूरी कर ली. कभी-कभी वह नोट को छूकर देखता और फिर देखता और घंटों यही करता रहता. पहला जाली नोट 1986 में बाजार में चलाया गया. उसके दोस्त मखोउ ने नोट बाजार में चलाने में मदद की. बाद में तिवारी समेत दूसरे लोग साथ आ गए. स्थानीय बैंकों में कोषागार कर्मचारी के नाते घनिष्ठ संबंधों तथा सट्टा व्यापार के कारण तिवारी बहुत मददगार साबित हुआ. लेकिन वह जल्दी ही लालच में फंस गया. उसने राजेंद्र सिंह के छंटनी कर दिए गए बिना नंबर वाले नोटों पर हाथ से नंबर लिखकर चलाने की कोशिश की. ऐसे ही कुछ नोट मई में आकाशवाणी के कर्मचारियों के वेतन में आ गए और जल्दी ही भांडा फूट गया.

धंधे को और फैलाने की भी उसकी योजना थी. उसके घर से बरामद कागजात से पता चलता है कि उसने प्रति घंटे 7,500 कागज छापने वाली रफ्तार की 5.18 लाख रु. की नई ऑफसेट मशीन खरीदने का आर्डर दिया हुआ था. वह अमेरिकी डॉलर और नेपाली रुपए छापने के इरादे पर भी काम कर रहा था.

उस्ताद जालसाज ने इस टिप्पणी को शान से पुलिस को बताया, "आप सिर्फ खराब नोटों का ही पता लगा पाए. लेकिन जो नोट मैंने ठीक पाए थे, वे अब भी प्रचलन में हैं." सौभाग्य से जालसाज अब सक्रिय नहीं है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A

जुलाई १९९०

चहारदीवारी के पागलखाने से पागलखाने की चहारदीवारी तक

दुखद परिस्थितियों की घुटन में पागल हुई लड़की ने एक और औरत को पागलखाने तक पहुंचाया

गलती किसकी गुनाह किसका : पुलिस फाइल से

अवकाश प्राप्त आई०पी०एस० अधिकारी द्वारा प्रस्तुत उनके निजी अनुभव की सबक सिखाने वाली मर्मस्पर्शी कथा

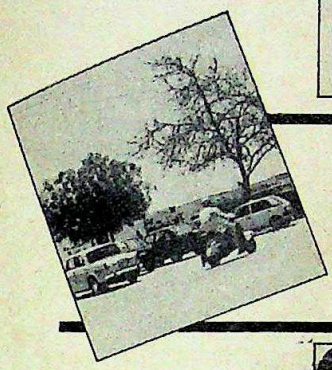

दिल्ली का आर्मी पब्लिक स्कूल : आरोपों के घेरे में

तीन छात्राओं को यलो कार्ड जारी हुआ तो वे घर छोड़कर बम्बई भाग गयीं। सेना के अधिकारियों की बेटियों के इस कृत्य ने स्कूल के माहौल को ही संदेहात्मक बना दिया।

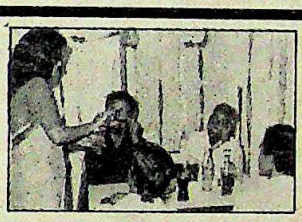

गमे-दिल नये जमाने की साकी का : बम्बई की बारमेड

बम्बई के बार-रेस्ताराओं में शराब पेश करने के लिए बारमेड यानी साकी बनी लड़कियों की दुखःद दास्तान

पंजाब के आंसू

आतंकवाद के लम्बे खिंच रहे दौर में पंजाब की विधवाओं की व्यथा कथा

बाघ को दौड़ा लेने वाली वीरांगना

•

कोयले की लकीरों से

•

कलकत्ता का रहस्यमय हत्यारा : स्टोनमैन

•

याददाश्त जब लौट आयी

•

मां की खोज में

•

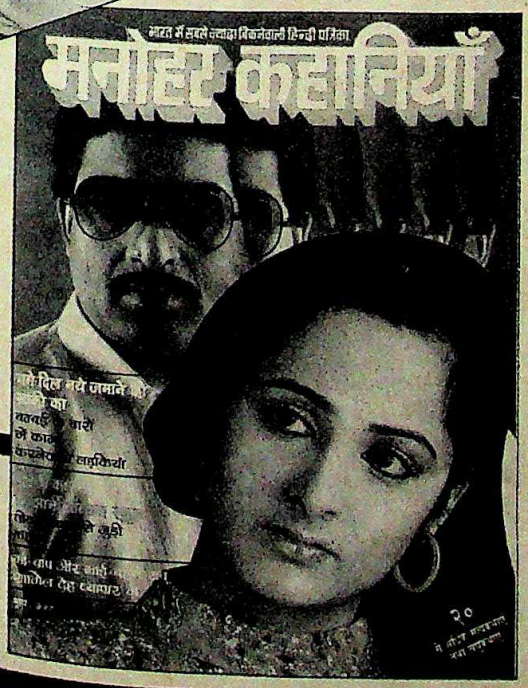

वास्तविक जीवन की सुरुचिपूर्ण कथा पत्रिका

मनोहर कहानियाँ

२० से अधिक कथाओं लघु कथाओं की प्रस्तुति

आज ही खरीदिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

इनका नहीं कोई तारणहार

मृत्यु यहां एक शब्द भर नहीं है. उसकी अपशकुनी छाया तले घुट रहे उ.प्र. के 23 कैदी जानते हैं इसका अर्थ. जो समर्थ हैं वे जूझ रहे हैं. बाकी लोगों को ऊपरवाले की आस है. शीतल ने राज्य की विभिन्न जेलों में बंद ऐसे ही कैदियों के पिछले और वर्तमान जीवन पर निगाह दौड़ाई है.

उस मुकाम तक बहुत कम लोग ही पहुंचते हैं. वहां तक कोई पहुंचना भी नहीं चाहता. वह जगह ही ऐसी है. लेकिन कुछ लोग न चाहते हुए भी फांसी के तख्ते तक पहुंच ही जाते हैं और ऐसों के लिए सिर्फ एक ही शब्द में कहा जा सकता है—अभागे. दुनिया भर में मृत्युदंड के खिलाफ बने माहौल के बावजूद यह कठिनतम सजा अंतिम उपाय के तौर अब भी लागू की जाती है. अच्छा वकील और अच्छी पैरवी, जिसके लिए अच्छी माली हालत होना लाजिमी है, बहुतों को फांसी के फंदे से वापस खींच लाती है पर जिनके बस में यह नहीं होता वे मोटी रस्सी पर झूल जाने के लिए अभिशप्त होते हैं.

जुम्मन (28) आगरे की जिला जेल की कालकोठरी में कैद है. इस कोठरी में यह उसका आठवां साल है. जिले की अदालत से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक ने उसे फांसी की सजा पाने लायक गुनहगार माना है. यहां तक कि महामहिम राष्ट्रपति भी उसकी जीवनदान की अपील वापस कर चुके हैं. वह अभी फांसी चढ़ा नहीं इसकी वजह सिर्फ यह है कि उसने एक बार फिर से सुप्रीम कोर्ट से गुहार कर रखी है.

जुम्मन के अलावा उत्तर प्रदेश की विभिन्न जेलों की कालकोठरियों में 22 कैदी और हैं जिन्हें फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है पर वे हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट से रहम की मांग किए हुए पड़े हैं. फांसी की सजा आजकल आमफहम नहीं है. साल में एकाध मामला ही फांसी तक पहुंचता है. हालांकि ऐसे राज्य में जुर्म लगातार बढ़ रहे हैं जिनमें फांसी दी जाती रही है या दी जा सकती है.

जुम्मन को अपने पड़ोसी की छह साल की बेटी सकीना की बलात्कार के बाद हत्या किए जाने के जुर्म में यह सजा मिली है. सकीना के मां-बाप उस जघन्य घटना के बाद जुम्मन को फांसी दिए जाने का इंतजार कर रहे हैं. हालांकि खुद वे भी पूरी तरह मुतमइन नहीं लगते कि "जुम्मन ने ही यह जुर्म किया होगा." लेकिन पुलिस ने जुम्मन को पकड़ा और सकीना की लाश भी जुम्मन के घर में ही थी. इससे वे जुम्मन को ही गुनहगार मानने को मजबूर भी हैं.

इस बीच जुम्मन की दुनिया खासी बदल चुकी है. उसकी मंगेतर (जिसे वह बीवी बताता है) अपनी तीसरी शादी कर आबाद है. बाप की महीने भर पहले ही एक दुर्घटना में जान जा चुकी है. फिरोजाबाद में कोयला बीनकर गुजारा करने वाली मां इस हादसे के चलते नीम पागल हो चुकी है. उसका भी पता-ठिकाना नहीं है, भाई कहीं मजदूर हैं.

जुम्मन रिक्शा चलाकर पेट पालता था. इस मामले में पकड़े जाने के समय करीब बीस बरस का था. फिरोजाबाद में तमाम लोग (खासकर उसकी मंगेतर के मुहल्ले के लोग) उसे निर्दोष मानते हैं. इसके पूर्व उसका कोई जरायमपेशा अतीत भी न था. जुम्मन से पहले उसकी मंगेतर मुमताज इटावा में ब्याही थी. पर बाद में वह इटावा छोड़कर जुम्मन के साथ फिरोजाबाद में रहने लगी. इसी दौरान यह वाकया हुआ. फिलहाल इस बाबत मुमताज की सफाई है कि "जुम्मन ने मुझे डरा-धमकाकर अपने साथ छह महीने तक रखा."

परिकल्पना और रेखांकन: प्रेम शर्मा

सत्र न्यायालय से सुप्रीम कोर्ट तक जुम्मन वकील न कर सका. उसकी दुनिया तबाह हो गई. मंगेतर छोड़ गई, मां नीम पागल हो गई और बाप मर गया. अब उसने राष्ट्रपति से रहम की अपील की है

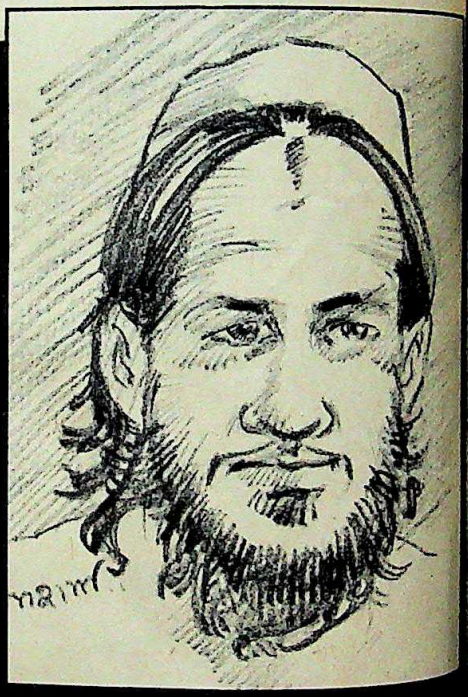

सत्र न्यायालय से सुप्रीम कोर्ट तक जुम्मन अपनी पैरवी में वकील न कर सका. "वकील कां से करता. उसे पैसे कौन देता" उसने बताया. उसके मामले का फैसला झटपट हुआ. 22 जून '83 का मामला था. 30 नवंबर '84 को उसे आजीवन कारावास और फांसी की सजाएं क्रमशः बलात्कार और हत्या के मामले में सुना दी गईं.

जुम्मन को 1988 के शुरू के महीनों में फांसी दिए जाने की तैयारी पूरी हो चुकी थी. सिर्फ ब्लैक वारंट आना बाकी था. फांसी एमनेस्टी इंटरनेशनल के हस्तक्षेप से टली. एमनेस्टी के 'एशिया रिसर्च डिपार्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने उसका मामला देखने के लिए सुप्रीम कोर्ट के वकील मुकुल मुद्गल को तय किया. आजकल एमनेस्टी ही जुम्मन के मामले को देख रही है.

सीतापुर जिला जेल में फांसी पाया एक कैदी है निर्मल (35). अपने मामा का जायदाद के लिए कत्ल किए जाने का इल्जाम उसके सिर है. जेल की कालकोठरी में उसके चार बरस पूरे हो रहे हैं. उसका मामला भी सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है. मामला हाईकोर्ट तक पहुंचते-पहुंचते ही निर्मल के परिवारवालों की जर-जमीन, बरतन-भांडे मुकदमे की पैरवी की भेंट चढ़ चुके थे. अब सुप्रीम कोर्ट तक पैरवी की उसकी हैसियत नहीं. पढ़ा-लिखा था नहीं. घर परिवारवाले भी मेहनत-मजूरी ही जानते थे. एक स्थानीय वकील के ढाढ़स पर

नए पति और बच्चों के साथ मुमताज

जर-जमीन बिक गई. पर सजा कायम रही. बाप जर-जायदाद बिक जाने पर घर (नसीमपुर खीरी) छोड़कर उन्नाव चले गए. वहां ननिहाल की कुछ जायदाद है. इस पर बाकी लोग जी रहे हैं.

निर्मल ने बताया, "अब पैसा रह नहीं गया. ऊपरवाले का भरोसा है. जेल में रहकर अखबार वगैरह पढ़ना जान गया हूं. जेलों में बलवीर के छूटने (इंदिरा गांधी हत्याकांड के अभियुक्त) को पढ़ा हूं. एक आदमी है. पर मेरे पास कोई जेठमलानी नहीं है. इसी जेल में बीसियों मर्डर किए कैदियों को आते-जाते देखा हूं. ओमप्रकाश यहां बंद था. पैसे वाला था, आज एमएलए है (मिश्रिख विधानसभा क्षेत्र, सीतापुर). नगरपालिका का भी अध्यक्ष है. इन्हें कोई फांसी देगा? पं. रामगोपाल तो चेयरमैन (जिला परिषद) और एमएलसी हो गए हैं. इन पर कोई कम मुकदमे हैं पर अब यही लोग कानून बनाएंगे सा'ब और हमको फांसी हो जाएगी."

निर्मल के पुश्तैनी घर पर अब उसके परिवार का कोई नामलेवा नहीं बचा है. बाप लल्लूराम कुछ दिन पहले दुनिया छोड़ गए. मां ने घर छोड़ दिया. जंग खाया ताला कब तक घर रखता. अब उस पर पट्टीदारों का कब्जा है. खीरी कस्बे के आचार्य टोला मुहल्ले में अब इस परिवार का अस्तित्व साबित करने वाला कोई सबूत नहीं.

उत्तर प्रदेश में फांसी के सबसे ज्यादा कैदी इस समय नैनी जैल में हैं—13. इसके अलावा सीतापुर, मथुरा, मेरठ, आगरा और मुजफ्फरनगर की जेलों में क्रमशः दो, एक, तीन, तीन और एक कैदी हैं. ये सभी कालकोठरी के कैदी हैं. और करीब दो साल या उससे ज्यादा समय से वहां हैं. जुम्मन और निर्मल को छोड़कर बाकी सब अभी हाईकोर्ट के स्तर पर ही जूझ रहे हैं. इनके अलावा सत्र न्यायालयों में इस तरह के 133 मामले और हैं पर उनमें उसी स्तर पर सजाएं आम तौर पर पुनर्विचार में तब्दील हो जाती हैं. उत्तर प्रदेश में अपराधों (जिनमें फांसी की सजा दी जाती है) में इधर कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आई है पर फांसी की सजाएं अपवाद-स्वरूप ही हो पाती हैं. इसका एक प्रमुख कारण यही लगता है कि अब एक न एक स्तर पर इन सजाओं से मुक्ति पाना संभव-सा हो गया है.

निर्मल के पड़ोस की कालकोठरी में जगमोहन नाम का करीब 23 साल की उम्र का एक और कैदी है. उसे भी फांसी हुई थी बीवी के कत्ल के जुर्म में. पर अभी कुछ दिन पहले ही उसकी फांसी हाईकोर्ट में आजन्म कारावास में बदल गई. तब से निर्मल और पीला पड़ गया है. जगमोहन से मिलें तो झट कहेगा, "सा'ब हमारा केस तो ठीक हो गया. आजन्म कारावास हो गया. काट लेंगे सा'ब. जैसे चार बरस वैसे पंद्रह बरस."

निर्मल बताता है, "इसका वकील दगा नहीं किहिस. हमारा तो रुपया खा गया ऊपर दिया नहीं." इन कैदियों को पक्का भरोसा है कि सब कहीं रुपया चलता है. रुपया हो तो कुछ भी हो सकता है. साफ बरी भी हो सकते हैं. जुम्मन ने जेल में ज्यादा दिन गुजारे हैं. उसके अनुभव ज्यादा हैं. उसने बताया, "अभी मेरे साथ दो और फांसी वाले हैं. एक की पैरवी हो रही है. दोनों का मामला हाईकोर्ट में है. एक छूट जाएगा दस-पंद्रह दिन में. दूसरे का कोई पैरोकार नई है. गरीब है, लटक जाएगा." बाद में जेल रिकार्ड से पता चला कि ये दो कैदी हैं—तालेवर और असलम. तालेवर का तीसरा साल है, असलम का दूसरा. इन दोनों की फांसी की सजा हाईकोर्ट ने अब बदल दी है.

जुम्मन के पास एक लिस्ट और है जो उसके आठ साल के बंदी जीवन में स्मृति पटल पर टंक गई है. "लिखो सा'ब" वह टहोका लेता है, "मेरे रहते ही कितनों की फांसी इसी जेल से छूटी. कई साफ बरी हो गए पैरवी की वजह से. अभी महीने भर से ज्यादा हुआ जवाहर हाईकोर्ट से बरी हुआ. साथ में उसका साला रामलड़ेते भी छूट गया. फर्रुखाबाद के काछी थे. डेढ़ लाख रु. खर्च किए, छूट गए. इनसे पैले मैनपुरी का रामचंदर परधान भी छूटा. उसके पैले दाताराम छूटा. फूल सिंह छूटा. ये सब पैसे खरचने वाले थे. साफ-साफ बरी हो गए. दूसरे भी हैं जिनपे पैसा कम था उनकी फांसी छूट गई, आजीवन में बदल गई. नाम लिख लो. सुधीर की बदल गई. दयाराम की बदल गई. साल भर होने को आए."

इस विषय में एक दर्दनाक तथ्य. अहमद जल्लाद ने बताया. अहमद जल्लाद उ.प्र. के दो जल्लाद परिवारों में से एक का मुखिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. उसे यह पेशा अपने बाप से विरासत में मिला. आज तक उसने कोई चालीस फांसियां दी हैं. उसके अनुसार, "सिर्फ गरीब और लावारिस ही अमूमन फांसी पाते हैं. आज तक किसी चर्बीदार की गर्दन पर हाथ फेरना हमें तो नसीब न हुआ." अहमद इसी वजह से आजकल अपने पेशे के सख्त खिलाफ है. "साहब अब तो दिल भर जाता है. '83 में एक बाप के तीन जवान बेटों को उनके बाप के सामने ही एक तख्ते पे फांसी चढाने के बाद कई महीनों मैं ठीक से सो नहीं पाया. मैं फैसला कर चुका हूं चाहे जितनी मुफलिसी काटनी पड़े मैं अपने बेटे को इस जलालत भरे धंधे में नहीं डालूंगा."

पिछले पांच साल में उ.प्र. में सिर्फ तीन फांसियां हुई हैं. शुरू के तीन वर्षों में तो एक भी नहीं पर बाद के दो में क्रमशः एक और दो हुई. ये तीनों इत्तफाक से नैनी जेल में ही हुई. हालांकि इन पांच वर्षों में उन अपराधों का औसत उ.प्र. में 11,000 प्रति वर्ष रहा जिनमें फांसी की सजा दी जाती है. इससे भी फांसी होने पर प्रश्न उठता ही है. इस नजरिए से जुम्मन की एक बात बड़ी तल्ख पर मौजू लग सकती है. "अगर मेरी मौत इसी से लिखी है तो उसकी वजह यह नही होगी कि मैं कसूरवार था या कि कसूरवार नहीं था बल्कि यह कि मैं गरीब था और अपनी पैरवी नहीं कर सका." यह बात ठीक लग सकती है पर न्याय देवता के मंदिर में गरीब-अमीर का कोई भेद नहीं है. सो सामर्थ्यवान मनमांगी मुराद पा सकते हैं और असहाय सिर्फ आस लगा सकते हैं.

मामा के कत्ल के जुर्म में चार साल पहले जेल में आए निर्मल ने फांसी से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट में दस्तक दी. हाईकोर्ट पहुंचते-पहुंचते घर का सब कुछ बिक गया. अब उसका मामला लड़ने वाला कोई नहीं

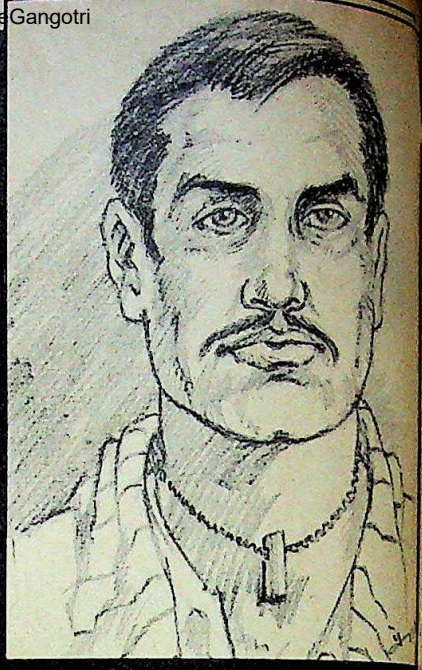

सामाजिक पुनर्रचना का अभिनव मासिक

मंथन

व्यक्ति, परिवार, व्यवसाय व समाज में परस्पर पूरकता की आधारभूत सामग्री-परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये पठनीय :

- सुरूचिपूर्ण एवं संस्कार क्षम सामग्री
- कथा-कविता तथा गीत युक्त,
- अनुसंधान परक राजनैतिक-आर्थिक तथा सामाजिक विश्लेषण
- महिला, पुरूष, युवक, युवतियों के लिए दिशा सूचक सामग्री
- पारिवारिक समस्या, स्वास्थ्य सुधार व अध्ययन सम्बंधी प्रश्नों के विशेषज्ञों द्वारा उत्तर-आदि आदि

★ **अपने समाचार पत्र अभिकर्ता से मंथन की प्रति मांगिये।**

दीनदयाल शोध संस्थान

व्यवस्थापक
मंथन
दीनदयाल शोध संस्थान
7 ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, झण्डेवाला, नयी दिल्ली- 110 055

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-12

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

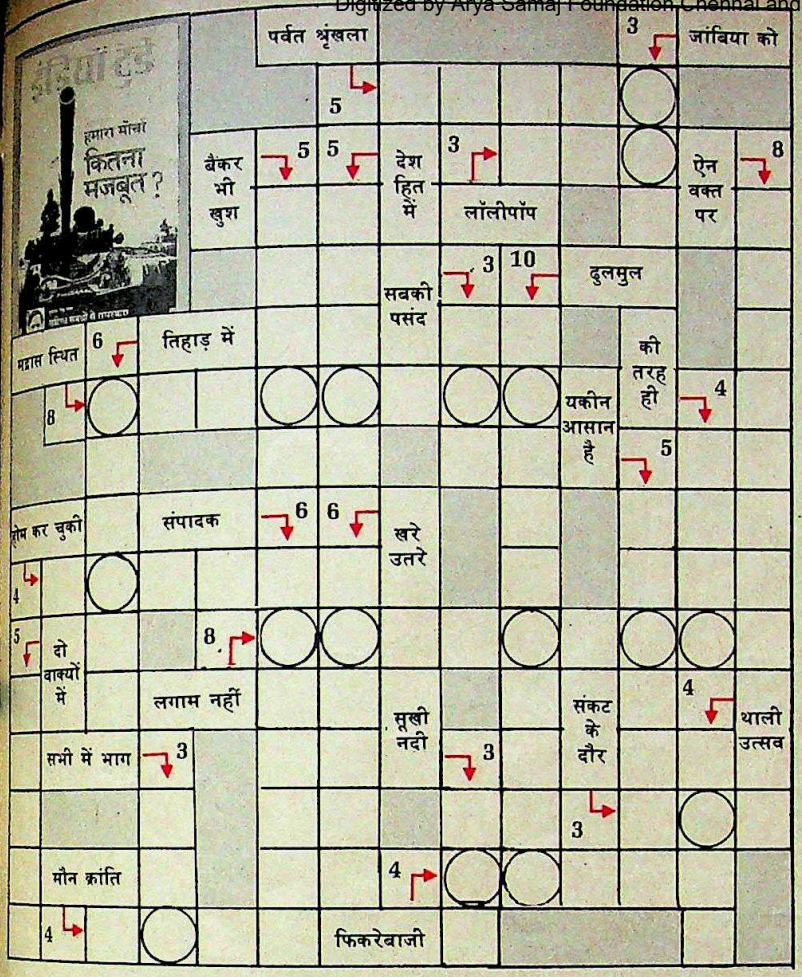

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-12, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि
20 जुलाई 1990
उत्तर के लिए देखें
1-15 अगस्त 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 30 जून 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

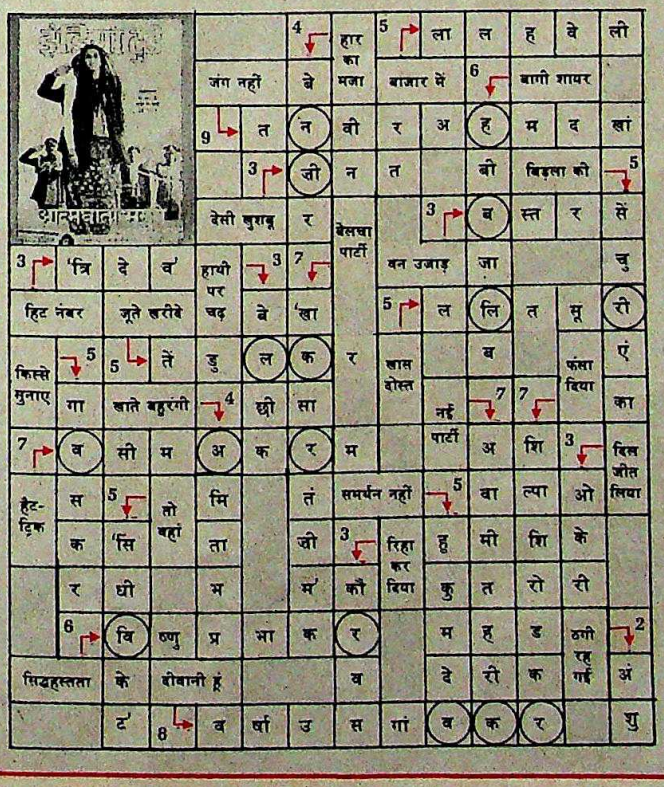

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-10 का हल

पुरस्कार विजेता

कंवलजीत कौर
द्वारा कुलदीप कालड़ा,
जीत इंजीनियरिंग वर्क्स,
बस स्टैंड, रीवा (म प्र)

प्रमोद कुमार शर्मा
म.नं. 363, गली नं. 7-ए
ब्रह्म नगर, हांसी रोड,
करनाल-130001 (हरि.)

उषा रानी
द्वारा डॉ. रूपनारायण
भारद्वाज, 4/3 बलरामपुर
चिकित्सालय परिसर,
लखनऊ-226018.

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

छाया लेख: भवान सिंह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षमय्या परिवार रिश्तों के मजबूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूत धागे-डोरे

दमघोंटू धुएं भरा अंधेरा कमरा. किसी ग्रामीण भारतीय चौके की तरह की रसोई में पांच औरतें भारी-भरकम हंडियों पर जुटी हुई हैं. पर इस चौके में जो बात सबसे अलग है वह है यहां पकने वाले भोजन की मात्रा. यहां हर रोज 50 किग्रा चावल, 25 किग्रा बाजरा, 8 किग्रा सब्जियां और पांच किग्रा दाल पकती है. यह सब इसी परिवार के खेतों से आता है.

यह कर्नाटक के कोलार जिले में बसे 109 सदस्यीय मरापनहल्ली लक्षमय्या परिवार की रसोई है. भारत के चंद बचे-खुचे परंपरागत संयुक्त परिवारों में से एक इस परिवार के 85 सदस्य 20 कमरों वाली एक ही छत के नीचे रहते हैं. बाकी 24 सदस्य पास के खेत में रहते हैं. हालांकि एम.एन. श्रीनिवासन जैसे मशहूर समाज-शास्त्रियों का कहना है कि "संयुक्त परिवार आजकल एक लुप्तप्राय व्यवस्था है." पर यह परिवार शायद इसका अपवाद है.

भरा-पूरा परिवार (बाएं); और सबसे छोटे बच्चे के साथ बुजुर्ग सोनप्पा

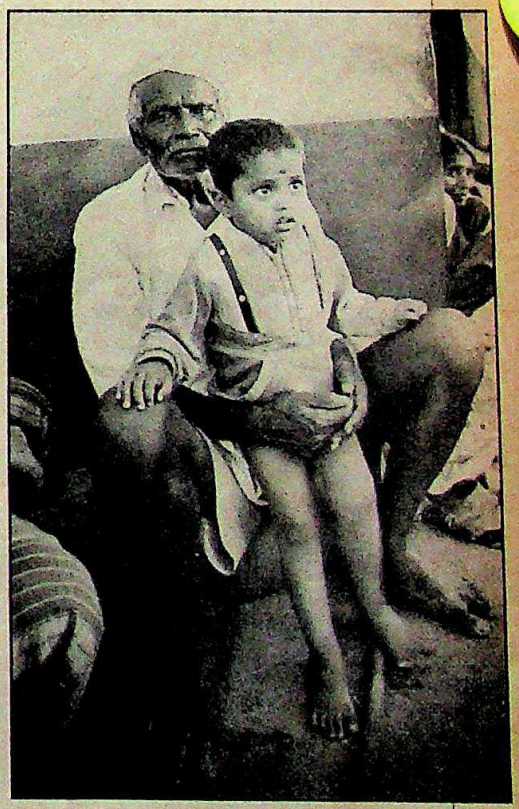

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने बड़े परिवार का एक फायदा तो यह है कि यह पूरी तरह अपने श्रम पर ही निर्भर करता है. नौकरों की जरूरत नहीं होती. मसलन, घर के पास ही खेतों में 32 जवान स्त्री और पुरुष पांच एकड़ जमीन के टुकड़े पर उगाए गए टमाटरों में से खरपतवार बीनते हैं. झुलसा देने वाली गरमी में मशक्कत कर रहे इन लोगों को मेहनताना नहीं मिलता. ये सब एक ही परिवार के हैं. परिवार के एक बुजुर्ग कहते हैं, "नौकर की जरूरत भी क्या है. घर में मदद के लिए इतने सारे हाथ जो हैं."

छह पीढ़ी पुराना यह परिवार खुद नहीं जानता कि वह कब तक आधुनिक के दबावों का मुकाबला करते हुए एकाई बना रह सकेगा. परिवार के मुखिया 80 वर्षीय सोनप्पा की आंखों एक ही सपना है कि उन्हें हमेशा अप

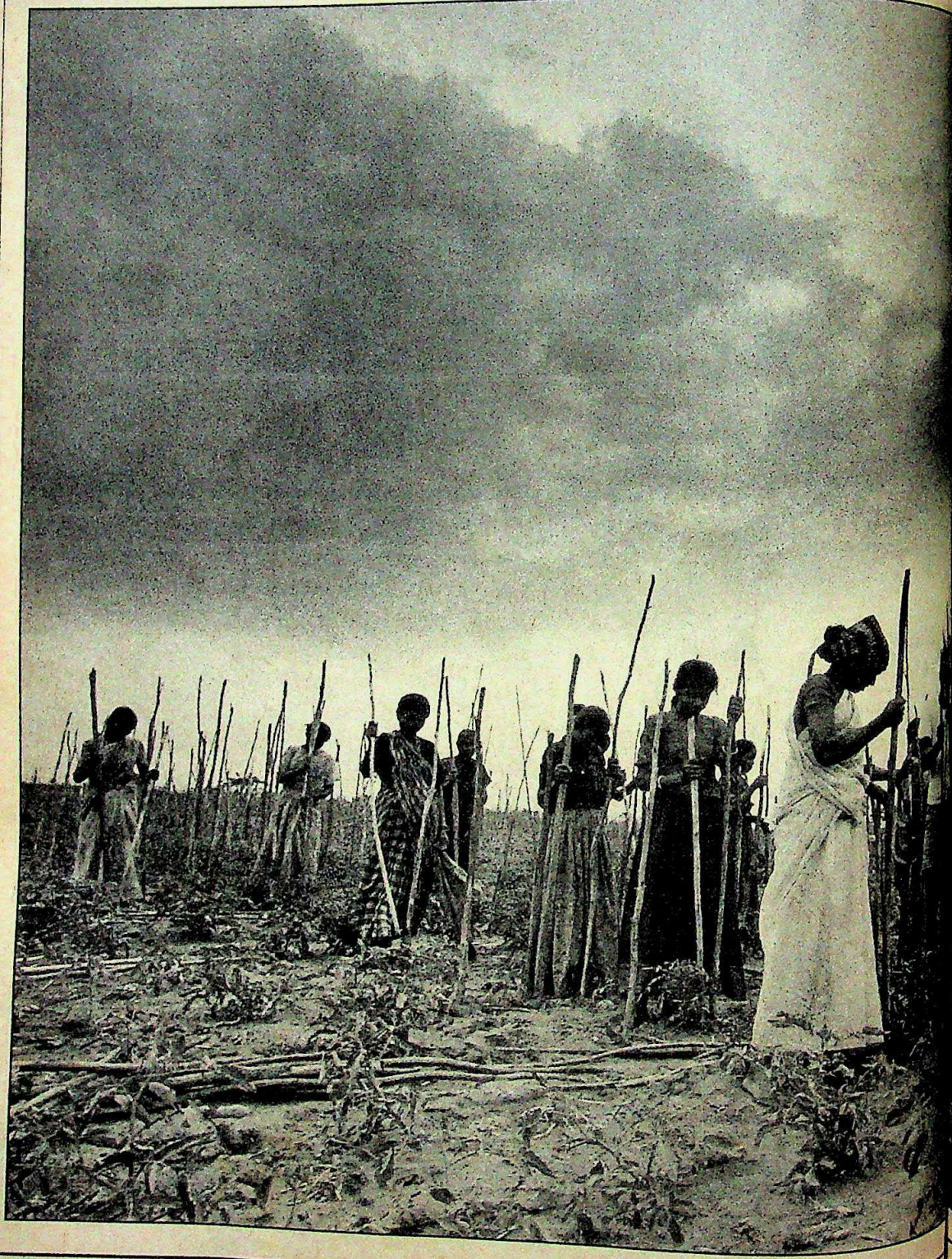

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार एकजुट दिखाई दे, गांव के दूसरे परिवारों की तरह वह बंट न जाए. परिवार जिस मकान में रहता है उसे सोनप्पा के दादा लक्षमय्या ने बनवाया था. सोनप्पा अक्सर अपने परिवारवालों को डराते भी हैं कि अगर उन्होंने अलग होने की कोशिश की तो उन्हें भगवान का शाप झेलना पड़ेगा. वे मानते हैं कि जब तक वे जिंदा हैं, तब तक तो यह परिवार एक रहेगा ही.

उनके हमदर्द पड़ोसी भी यह सोचकर हैरत में पड़ जाते हैं कि इतना बड़ा परिवार एक साथ कैसे रह पाता होगा जबकि छोटे परिवारों तक में मेलभाव और सहनशीलता की समस्याएं उठ खड़ी होती हैं. 28 वर्षीया रत्नम्मा की आठ साल पहले जब इस परिवार में शादी हुई तो उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि इतने बड़े परिवार से वे निभाएंगी किस तरह. शुरू में तो हर एक का नाम और आपसी रिश्ता याद रख पाना ही बड़ा मुश्किल था. पर धीरे-धीरे वे भी इस इतने बड़े परिवार की रीति में रच गईं.

रत्नम्मा बताती हैं, "ऐसा नहीं कि परिवार में कोई बखेड़ा-टंटा नहीं होता पर ऐसा तो हर परिवार में होता रहता है." परिवार की एक और सदस्य सरस्वतम्मा के अनुसार, "हमारे यहां मेलभाव की ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसे हम हल ही न कर सकें." पर ऐसे परिवारों में सास-बहू के झगड़े भी तो होते हैं. सोनप्पा के बेटों में सबसे बड़े 32 वर्षीय चंद्रशेखर बताते हैं कि उनके परिवार में ऐसा नहीं है. चंद्रशेखर अब अपने चचेरे भाई 35 वर्षीय नारायण स्वामी के साथ घर का कामकाज देखते हैं.

यह पूरा परिवार कभी भी एक साथ छुट्टी मनाने नहीं जा सकता क्योंकि हर समय घर, खेतों और ढोर-डंगर के इतने सारे काम जो होते हैं. सारी खरीदारी चंद्रशेखर और नारायण स्वामी करते हैं. औरतों के कपड़े तक वे ही खरीदते हैं. हाल ही में परिवार की औरतों के लिए साड़ियां खरीदने वे 10 किमी दूर चिंतामणि शहर

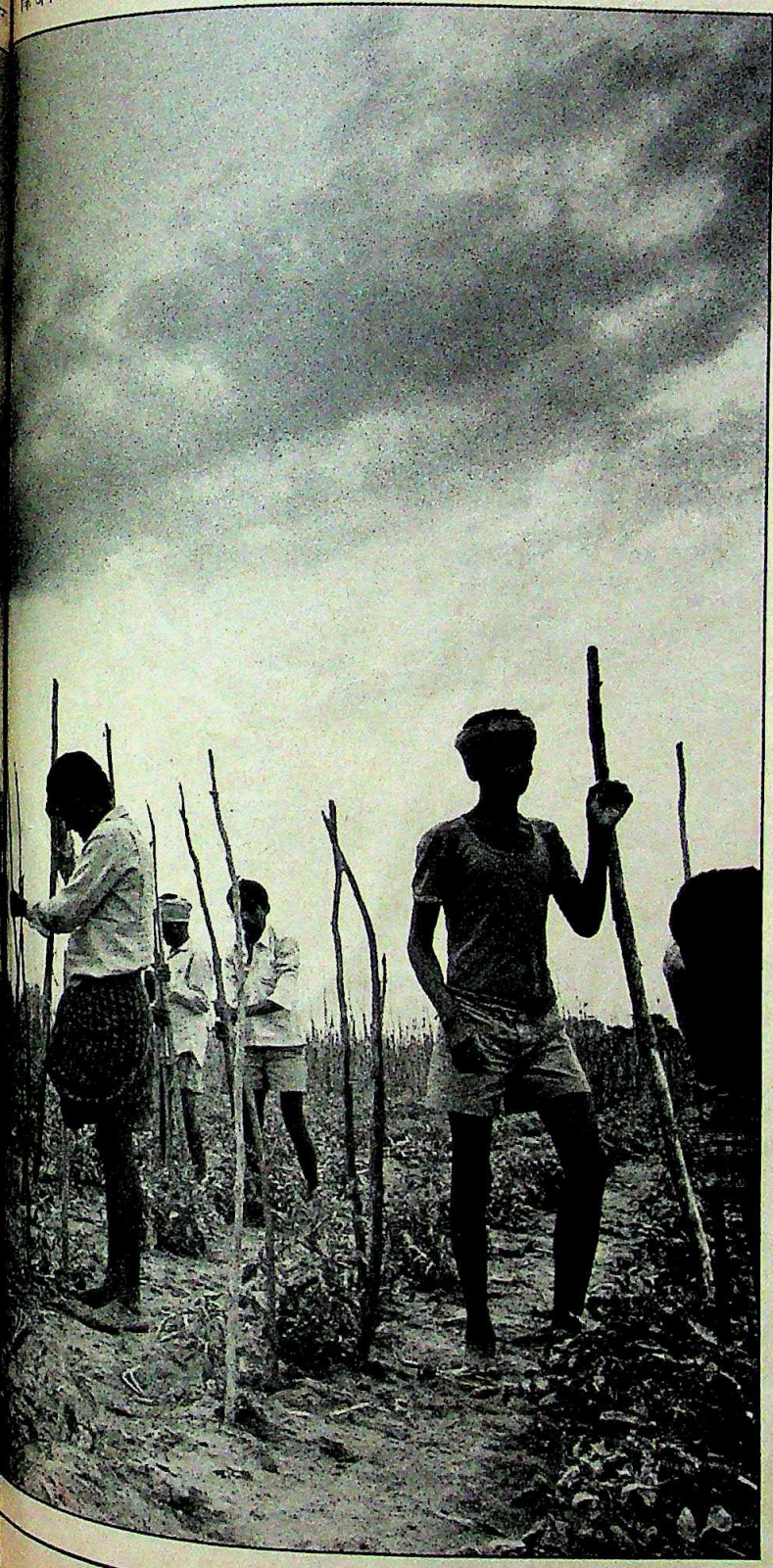

खेतों में जुटे परिवारीजन (बाएं); और रसोई में महिलाएं

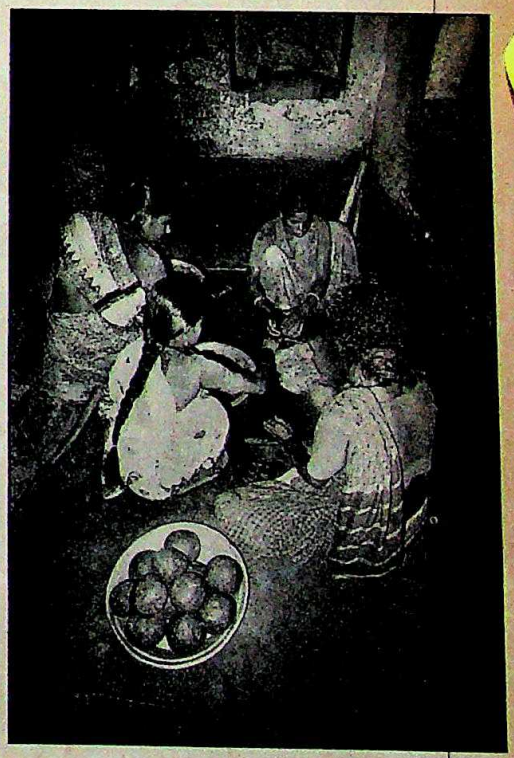

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए थे जहां से वे 10,000 रु. की साड़ियां खरीदकर लाए. यह परिवार हर साल कपड़ों पर 50,000 रु. खर्च करता है.

परिवार की पूरी जमीन को अगर बांटा जाए तो हर एक के हिस्से आधा एकड़ से भी कम जमीन आएगी. यह इतनी कम है कि कोई परिवार के बंटवारे की मांग नहीं ही करेगा. बंगलूर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. सी. राजगोपालन बताते हैं, "पहले संयुक्त परिवारों में रहने का एक आकर्षण उसकी ढेर सारी संपत्ति भी होती थी. पर भूमि सुधार ने यह स्थिति बदल दी और साथ ही परिवार के हित भी बदल गए. अब संयुक्त परिवार टूटते हैं तो अपनी संपत्ति बेचकर शहरी इलाकों में चले जाते हैं."

सोनप्पा परिवार के चार सदस्य कॉलेज तक पहुंच गए हैं. परिवार में सिर्फ दो ही

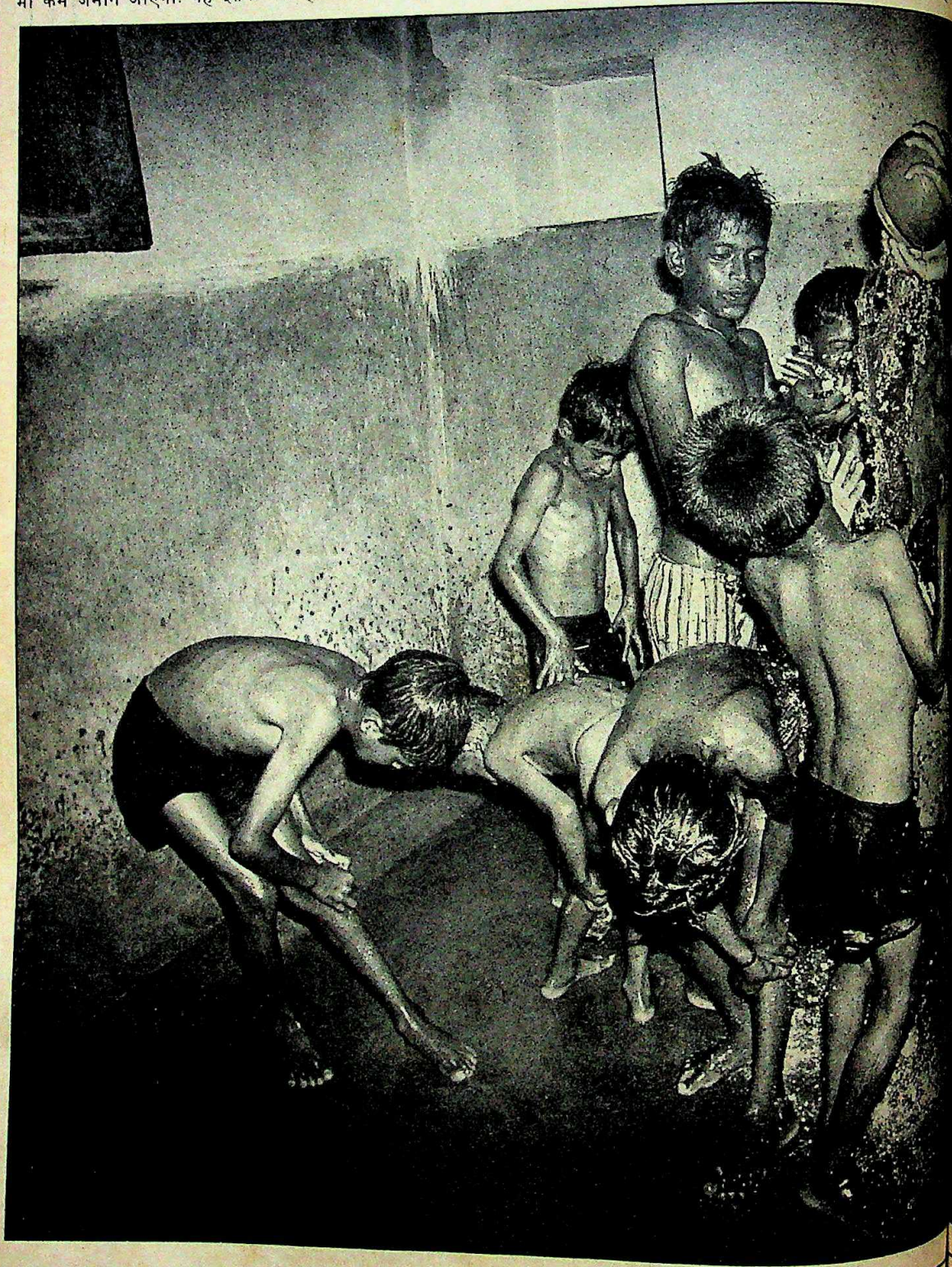

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही परिवार के
संयुक्त परिवार
बेचकर शहरी

सदस्य कॉलेज
में सिर्फ दो ही

सदस्य ऐसे हैं जो अलग से कोई काम कर रहे हैं. बाकी अनपढ़ सदस्यों के लिए कोई नौकरी ढूंढ़ पाना आसान नहीं, इसलिए संयुक्त परिवार में बने रहना ही उनके लिए बेहतर है. पर जैसे-जैसे परिवार की संपत्ति बंटेगी या पढ़े-लिखों की संख्या बढ़ेगी, इसे एकजुट रख पाना कठिन होता जाएगा.

और शायद परिवार में दरारें उभरने भी लगी हैं. स्नातक की पढ़ाई कर रहे 24 वर्षीय संजीव रेड्डी और 23 वर्षीय दिवा रेड्डी ने गांव के बाहर संभावनाएं तलाशनी शुरू कर दी हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि बाहर उनके लिए ज्यादा अवसर हैं. उन्हें सोनप्पा की भगवान के शाप की धमकी की भी परवाह नहीं. संजीव रेड्डी विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि लेकर पढ़ाई-लिखाई के व्यवसाय को अपनाना चाहते हैं. वे बेहिचक मानते हैं कि संयुक्त परिवार में व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता.

परिवार को इस बात का भी एहसास है कि अगर दिवा रेड्डी को लेक्चरार की नौकरी मिल गई तो वे उन्हें नहीं रोक पाएंगे. पर चंद्रशेखर कहते हैं, "हम उन्हें अपने खेतों से अनाज भेजते रहेंगे ताकि उनका हमसे नाता जुड़ा रहे." एक ग्रामीण गोपालप्पा बताते हैं, "इतने वर्षों तक यह परिवार एक बना रहा क्योंकि हर पीढ़ी के मुखिया का परिवार के सदस्यों पर पूरा नियंत्रण रहा. परिवार में मुखिया की बहुत इज्जत होती थी. इसलिए उनका कहा ब्रह्मवाक्य होता था."

अभी पांच साल पहले सोनप्पा परिवार के मुखिया हुआ करते थे. तब परिवार घोर गरीबी की गिरफ्त में था क्योंकि जो 56 एकड़ जमीन उसके पास थी, उसका पूरा इस्तेमाल नहीं हो पा रहा था. घर की आर्थिक हालत खस्ता थी. ऐसे में उनके बेटे चंद्रशेखर और नारायण स्वामी ने बागडोर संभाल ली. परिवार में यही दो युवक स्नातक हैं.

और उसके बाद तो घर का हुलिया ही बदलता गया. दोनों जनों ने बैठकर परिवार

बच्चों का सामूहिक स्नान (बाएं); और रेशम के कीड़े पालते हुए

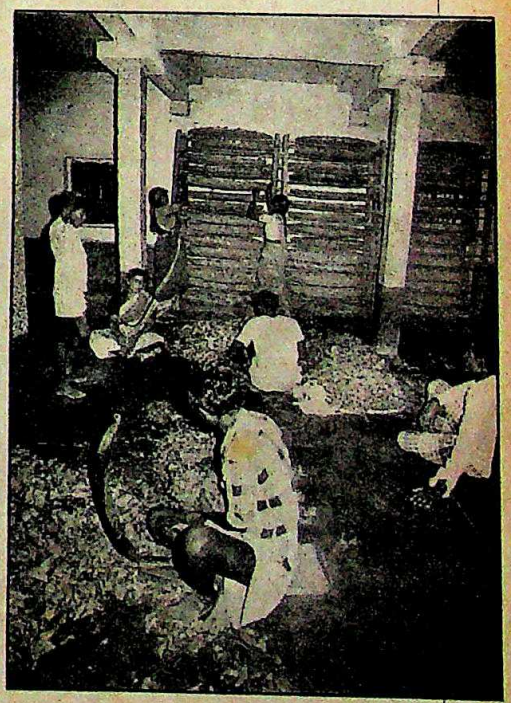

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बदहाली का जायजा लिया. तकरीबन आठ साल पहले परिवार की वार्षिक आमदनी कुल 15,000 रु. थी. लेकिन थोड़ी सूझ-बूझ के साथ उन्होंने टमाटर की खेती शुरू की जिससे 4.80 लाख रु. की अतिरिक्त आमदनी हुई. फिर उन्होंने रेशम के कीड़े पालने का धंधा शुरू किया जिससे 1.5 लाख रु. का शुद्ध मुनाफा हुआ. आत्मविश्वास से भरे नारायण स्वामी कहते हैं, "अगले छह वर्षों में हमारा परिवार संपन्न हो जाएगा." परिवार की माली हालत सुधरी तो घर को नए सिरे से संवारा गया, पुताई की गई. अब तो परिवार में रंगीन टेलीविजन भी आ गया है.

परिवार में परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की अद्भुत क्षमता है. मसलन, घर में एक ही छोटा-सा गुसलखाना है जिसे परिवार भर के बीस बच्चों को दस-दस के

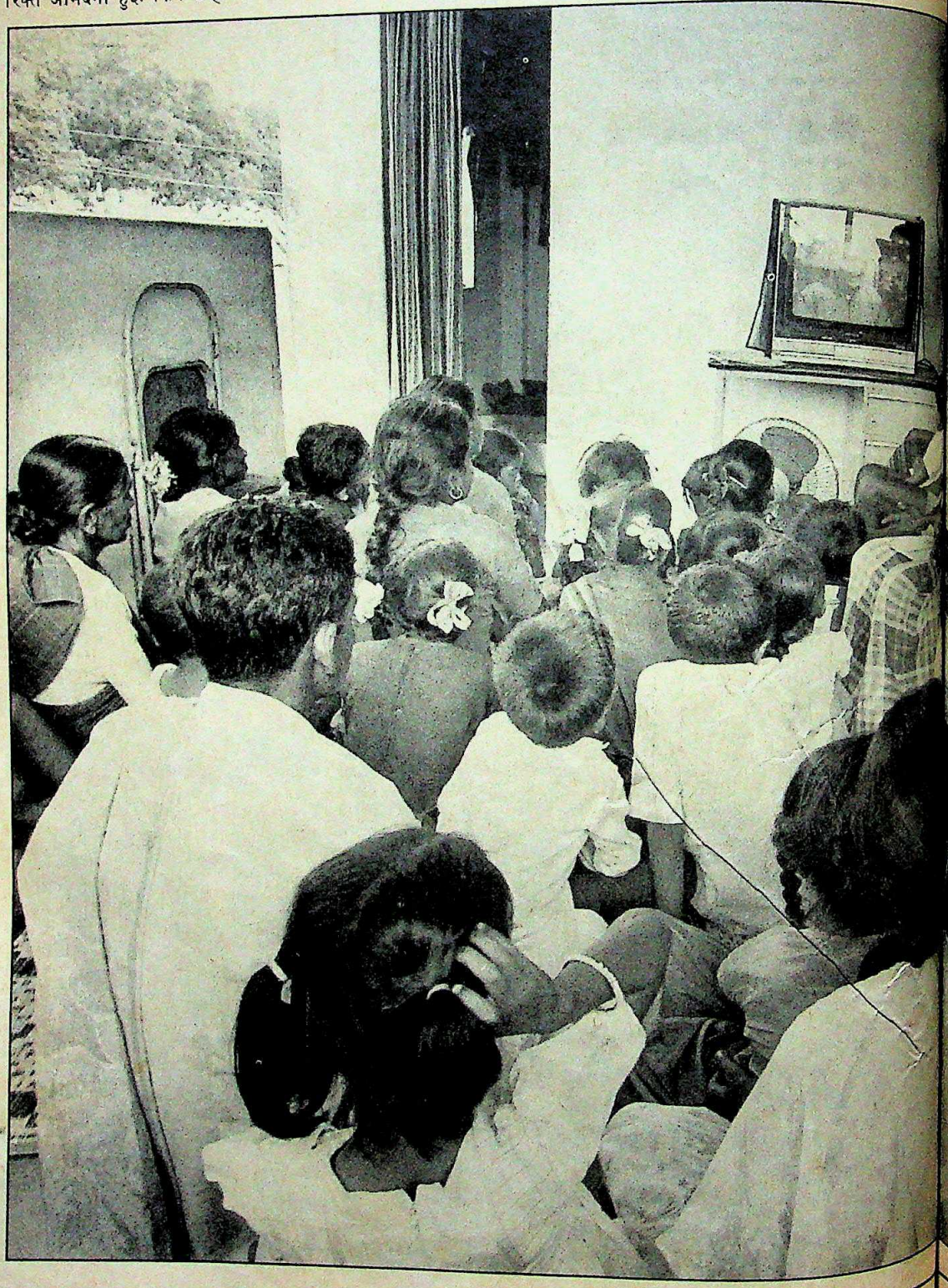

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में
गया है.
तियों के अनुसार
है. मसलन,
लखाना है जिसके
ों को दस-दस के

तों में रोज सुबह सामूहिक स्नान कराया
जाता है. गुसलखाने में सीमेंट का एक बड़ा-
सा हौज है, जिसके नीचे भट्ठी बनी है. भट्ठी
में दिन भर आग जलती रहती है. पूरे
परिवार के लिए पानी गरम करने का इससे
अच्छा रास्ता है भी नहीं.

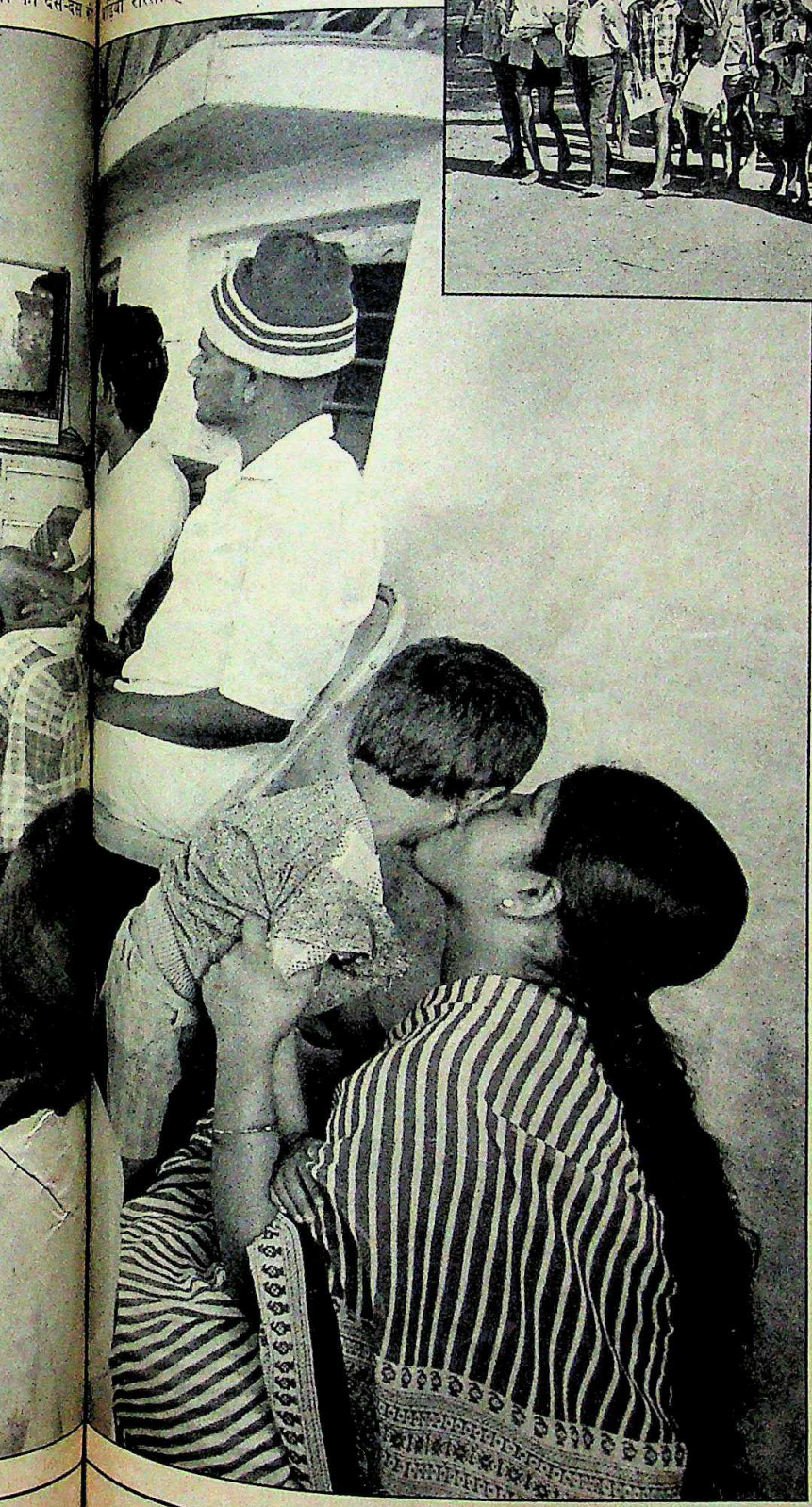

टीवी के गिर्द जुटा परिवार (बाएं); और स्कूल जाते बच्चे

बच्चों के स्कूल जाने के बाद महिलाएं अपने जिम्मे सौंपा काम करने में जुट जाती हैं. मसलन, खाना बनाना, घर की सफाई, रेशम के कीड़ों को आहार देना या खेतों में काम करना. यह जिम्मेदारी हर पखवाड़े बदली जाती है. खाना बनाने जैसा मेहनती काम बारी-बारी से हर किसी के जिम्मे डालने के लिए ही ऐसा किया जाता है. नारायण स्वामी बताते हैं, "इतना खाना पकाना बहुत तकलीफदेह हो सकता है. इसलिए बारी-बारी से हर किसी को यह जिम्मेदारी सौंपी जाती है." पशु बेचने और खरीदने का निर्णय परिवार के दो प्रमुख लेते हैं.

ऐसे वृहद् परिवार में शिशुओं की ऊंची जन्म दर अनहोनी बात नहीं होती. लेकिन पिछले तीन वर्षों में इस घर में एक ही नया सदस्य आया है. परिवार सीमित रखने के निर्णय का कड़ाई से पालन किया जा रहा है. नारायण स्वामी कहते हैं, "अब और बड़ा परिवार संभालना हमारे बस की बात नहीं. इस संयुक्त परिवार को छोटा रखना हमारे हित में है."

लेकिन चुनाव का मौसम आते ही इन लोगों को अपनी महत्ता का एहसास हो जाता है. परिवार के 62 वोट लेने के लिए उम्मीदवारों की कतार लग जाती है. वोट किसे जाएंगे यह फैसला भी चंद्रशेखर और नारायण स्वामी करते हैं. कुछ साल बाद शायद ऐसा न रहे. यह भी विडंबना ही है कि परिवार के सुधरे हालात और शिक्षा ही इस कुटुंब के लिए खतरा बन सकते हैं क्योंकि परिवार के सदस्य जब बड़े होंगे तो बढ़ने के लिए ज्यादा जगह की जरूरत का उन्हें एहसास होगा. —रमेश मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीएमडब्ल्यू हॉकी

जान लौटने लगी

सात देशों की स्पर्धा में भारत ने ठीक-ठाक प्रदर्शन किया

दो जीत, तीन हार, एक बराबर और सात देशों के मुकाबले में पांचवां स्थान. यह प्रमाण है कि भारतीय हॉकी का किस कदर पतन हो गया है. बदतर तो यह है कि ऐसी औसत उपलब्धि को भी हमारे राष्ट्रीय खेल का मनोबल बढ़ाने वाली माना जाता है. हालांकि पिछले पखवाड़े जब नीदरलैंड की राजधानी के बाहरी छोर पर बसे एम्सटेलवीन में बीएमडब्ल्यू ट्रॉफी में खेलकर भारतीय टीम रवाना हुई, तो वह कुछ खास एहसास करा चुकी थी. यह कि अफसरशाही, क्षुद्र राजनीति, योजना और प्रोत्साहन के अभाव तथा लोगों की घटती रुचि से खेल को पहुंची हानि के बावजूद भारत के पास पर्याप्त प्रतिभा मौजूद है जिससे विश्व स्तर की टीम का गठन किया जा सकता है.

अंतरराष्ट्रीय हॉकी विशेषज्ञ और समीक्षक काफी समय से झींक रहे थे कि परगट सिंह अपनी कप्तानी में थोड़ा और सुधार कर लें तो विश्व हॉकी में श्रेष्ठ खिलाड़ी का स्थान पा सकते हैं. एम्सटेलवीन के वागनर स्टेडियम में परगट ने अकेले न सिर्फ रक्षा पंक्ति संभाली बल्कि जरूरत पड़ने पर जोरदार आक्रमण करके गोल भी किए.

ऐसा नहीं है कि दूसरे खिलाड़ी प्रतिभाशून्य हों. युवा जगबीर सिंह ने अंतत सिद्ध कर दिया कि वे अंग्रिम पंक्ति के आक्रामक के रूप में भारत की कमी को पूरा करेंगे. छह गोल करके जगबीर सिंह न केवल टूर्नामेंट में सर्वाधिक गोल करने वाले खिलाड़ी रहे वरन उन्होंने मौके को परख और सही वक्त पर चोट करने का कौशल भी दिखाया, जिसका भारतीय आक्रामकों में परंपरागत रूप से अभाव रहा है. विक्टर सिंह के फ्री हिट द्वारा स्पेन के गोल में उनका चमत्कारी झपट्टा ऐसा था जो पहले भारतीय दर्शक भारत के क्षेत्र में देखा करते थे. बाईं पंक्ति के थोड़ा फॉर्म की वापसी भी स्वागतयोग्य रही.

मिडफील्ड को कल्पनाशीलता के संभालते हुए विवेक सिंह ने हाफलाइन सार्थकता का एहसास कराया. भारतीय टीम में जिस बात की सबसे ज्यादा कमी दिखाई दी, वह थी रणनीतिक योजना. उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलिया, जो अंतिम विजेता रहा, के खिलाफ आखिरी मैच में बार बढ़त हासिल करने के बाद भी भारत जवाबी हमलों के सामने घुटने टेककर से हार गया. टीम प्रबंधकों को पहले समझ लेना चाहिए था कि ऑस्ट्रेलिया जी-जान से आक्रमण करेगा. लेकिन भारतीय टीम ऐसे मौके पर दिशाविहीन हो ऑस्ट्रेलिया की फुर्ती से होड़ करने और रक्षा पंक्ति में गुंजाइश छोड़ दी. प्रतियोगिता में ऑस्ट्रेलिया की टीम सबसे तेज और चुस्त थी. टीम के डॉक्टर

स्पेन के खिलाफ मैच में परगट सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ओलंपिक संघ

सियासी खेल

शुक्ल और आदित्यन भिड़े

भारत की खेल व्यवस्था की ख्याति के अनुरूप ही पिछले पखवाड़े मैदान के बजाए खेल संस्थाओं के कक्षों में गतिविधियों का ज्यादा जोर रहा. भारतीय ओलंपिक संघ सत्ता संघर्ष में जद सांसद विद्याचरण शुक्ल ने उसके अध्यक्ष बी.एस. आदित्यन और महासचिव रणधीर सिंह को पछाड़ दिया.

इसकी शुरुआत अक्तूबर 1987 में हुई जब शुक्ल को तिरुवनंतपुरम में आयोजित संघ की विशेष आम सभा में विधिवत चुनाव किए बिना ही अध्यक्ष पद से हटा दिया गया. वजह थी उनका इंका से अलग हो जाना. उनकी जगह आदित्यन और रणधीर ने संभाली और नवंबर 1988 में गुप्त मतदान के जरिए उन्होंने अपने चुनाव को वैध करवा लिया. शुक्ल मौके का इंतजार करते रहे और जनता दल के सत्ता में आने के बाद उन्होंने वार किया.

27 मई को भारतीय कुश्ती संघ ने ओलंपिक संघ की कार्यप्रणाली पर 'असंतोष और चिंता' व्यक्त की. इसके बाद इससे संबद्ध 17 संघों के हस्ताक्षरों से युक्त नोटिस जारी कर संस्था की विशेष आम बैठक बुलाने की मांग की गई. बैठक के स्थान के बारे में भी विवाद उठा. बाद में दिल्ली हाईकोर्ट से नियुक्त प्रेक्षक ए.वी. रोहतगी की मौजूदगी में यह बैठक मद्रास के होटल पार्क शैरेटन में शुरू हुई. लेकिन कुछ अनधिकृत लोगों और बाद में पुलिस के वहां घुस आने से बैठक पूरी नहीं हो पाई. उधर शुक्ल बैठक में आमंत्रित 113 प्रतिनिधियों में से 63 के हस्ताक्षर लेकर दिल्ली दौड़े गए और दफ्तर पर कब्जा कर लिया.

लेकिन दिल्ली हाईकोर्ट को भेजी रिपोर्ट में रोहतगी ने दोनों गुटों को दरकिनार करते हुए प्रशासक नियुक्त करने और गुप्त मतदान कराने का सुझाव दिया. उनका कहना था, "विशेष बैठक में चुनाव नहीं हुए. न प्रस्तावों पर मतदान हुआ."

इसके अलावा मद्रास हाईकोर्ट ने शुक्ल के पद पर बने रहने पर रोक लगा दी. लेकिन उन्हें जवाबी हलफनामा दायर करने का वक्त भी दिया. बहरहाल, कानूनी लड़ाई लड़ते शुक्ल कुर्सी पर जमे हुए हैं.

यह कलह जारी रहेगी क्योंकि हारने वाला गुट फिर वार करेगा. स्वायत्त संस्था होने से सरकार इसके काम में दखल नहीं दे सकती. और खिलाड़ी तो हमेशा की तरह मूक दर्शक बने रहने के अलावा कर ही क्या सकते हैं.

—बीनू के. जॉन

कार्टून: जयतो

ओलंपिक संघ पर कब्जे की शुक्ल और आदित्यन की लड़ाई जारी रहेगी और खिलाड़ी मूक दर्शन बने रहने के अलावा कर ही क्या सकते हैं

टॉम हेनबेस्ट का कहना था, "हमारे सभी फारवर्ड और हाफ बैक 11.7 सेकंड से भी कम समय में 100 मीटर दूरी तय कर सकते हैं." इसके विपरीत भारतीय टीम में शारीरिक और मानसिक दोनों ही क्षेत्रों में कमजोरियां दिखाई दीं. विश्व कप जीतने वाली डच टीम के विश्वविख्यात कोच हांस गोरिसमा ने कहा, "टीम को शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त करने के लिए एकदम नए कार्यक्रम की जरूरत है."

टूर्नामेंट में खेलने की तैयारी निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण होती है. मसलन ऑस्ट्रेलिया की टीम इस कदर तैयारी से आई थी कि डॉक्टर हेनबेस्ट अपना स्ट्रेचर भी साथ लाए थे. भारतीय टीम के लिए इसके बिलकुल विपरीत स्थिति रही.

सो, ताज्जुब की कोई बात नहीं कि प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के होते हुए भी इक्का-दुक्का जीत के अलावा भारतीय टीम कुछ कर दिखा पाने में असफल रहती है. और इस स्थिति से निर्णायक ढंग से तब तक नहीं उबरा जा सकता, जब तक कि हॉकी को और अधिक व्यावसायिक ढंग से आगे बढ़ाने के लिए कोई सामने न आए. भारतीय हॉकी संघ, भारतीय खेल प्राधिकरण और खेल मंत्रालय के बीच कहीं ज्यादा व्यवस्थित तालमेल अनिवार्य है.

भारतीय टीम के मैनेजर गुफराने आजम ने खेल का स्तर सुधारने के लिए यूरोपीय देशों के साथ दौरों के आदान-प्रदान की बात कही. आजम ने, जो हॉकी संघ के उपाध्यक्ष और चयन समिति के अध्यक्ष भी हैं, कहा, "हम पेइचिंग में स्वर्णपदक लेने के लिए पूरी तैयारी से जाएंगे." अगर विश्व तालिका में बने रहना है तो भारत के पास इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है. पेइचिंग में स्वर्णपदक हासिल करने में असफलता का अर्थ है 1992 के बार्सीलोना ओलंपियाड में भाग लेने की पात्रता पर भी प्रश्नचिन्ह लगा देना.

पेइचिंग के लिए उलटी गिनती 8 जुलाई से लखनऊ में शुरू हो रहे तीन सप्ताह के शारीरिक और खेल दक्षता शिविर से होगी. उसके बाद बंगलूर में पांच सप्ताह का एक और शिविर होगा. इसके अलावा बीएमडब्ल्यू दौरे में दुनिया की दो श्रेष्ठ टीमों के खिलाफ मिली विजय की मिठास ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि भारतीय हॉकी टीम में प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं, जिन्हें समुचित प्रशिक्षण के जरिए जीतने वाले दस्ते में बदला जा सकता है. और अगर ऐसा नहीं किया गया तो निश्चय ही भारत को ओलंपिक पात्रता टूर्नामेंट में खेलने की बदनामी बरदाश्त करनी होगी.

—अनुपम गुलाटी, एमस्टर्डम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाल

दूर हुए गिले-शिकवे

स्वदेश में भट्टराई की छवि इससे और निखरी

कुछ महीने पहले तक दोनों पड़ोसी एक दूसरे से मुंह फुलाए बैठे थे. सुरक्षा से व्यापार तक हर मसले पर दोनों की राय अलग-अलग थी. लेकिन पिछले महीने जब नेपाल के प्रधानमंत्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई लोकतांत्रिक अंतरिम सरकार की बागडोर सभालने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा पर भारत आए तो यही लगा मानो सारे मतभेद रातोरात छूमंतर हो गए हों. तीन दिन की बातचीत ने 13 महीने पहले जैसी स्थिति बहाल कर दी और दो पारंपरिक दोस्तों की कड़वाहट भी खत्म हो गई.

भट्टराई ने यह संकल्प लिया था कि भारत के साथ व्यापार तथा पारगमन संधि फिर से बहाल किए बिना स्वदेश लौटने पर वे पदत्याग कर देंगे. उन्होंने और वी.पी. सिंह ने उस संयुक्त विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किए जिसमें 1 अप्रैल 1989 जैसी स्थिति बहाल करने पर दोनों पक्षों ने सहमति व्यक्त की. दोनों नेताओं ने साझा संवाददाता सम्मेलन में इसकी पुष्टि की. बाद में विधिवत निर्वाचित नेपाली सरकार इस विज्ञप्ति को समझौते का रूप देगी. लेकिन फिलहाल तो इसका मतलब यह है कि भारत बंद की गई सभी पारगमन चौकियां खोल देगा और सभी व्यापार प्रतिबंध उठा लिए जाएंगे. बदले में नेपाल 'वर्क परमिट' की व्यवस्था को समाप्त करने पर सहमत हो गया जो नेपाल में बसे भारतीयों पर लागू होतीं थी. साथ ही नेपाल ने भारत की सुरक्षा प्राथमिकताओं का आदर करने का भी वचन दिया. भट्टराई के शब्दों में, "यह एक नए युग की शुरुआत है."

इस पुनर्मेल को भारत में भी तकरीबन पूरा समर्थन मिला. यहां तक कि इंका ने भी इसकी कोई आलोचना नहीं की. जबकि एक समय इंका ने नेपाल को 'दंड' देने की बात को अपनी क्षेत्रीय विदेश नीति का एक अहम मुद्दा बना रखा था. पूर्व विदेश राज्यमंत्री के. नटवर सिंह इसे 'एक अच्छा कदम' बताते हैं. इस समझौते ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की इस दलील को और मजबूत बनाया है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के उदारवादी दृष्टिकोण के कारण समूचे क्षेत्र में तनाव कमी आई है और अगर पाकिस्तान अब भी अपवाद बना हुआ है तो कारण इस्लामाबाद का दुराग्रह है.

भट्टराई और वी.पी.: दोतरफा दोस्ती

प्रशांत पंजियार

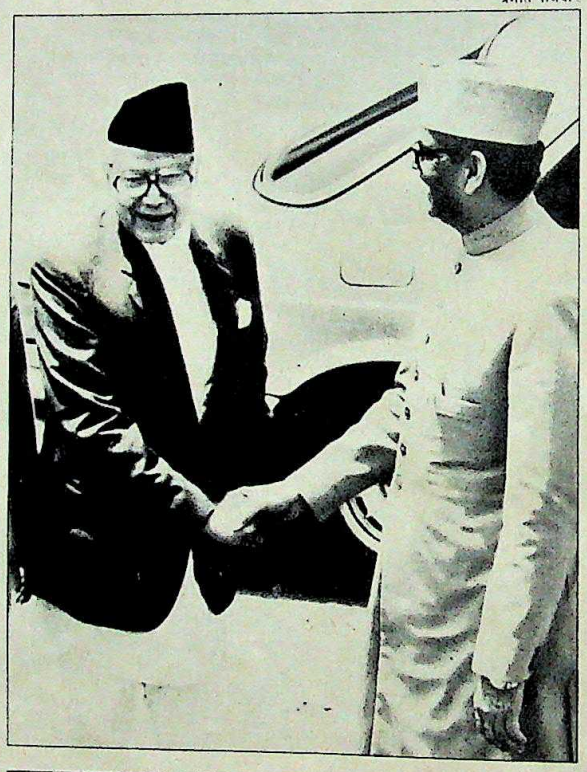

भारत की इस बात को बल मिला कि उसके उदारवादी रवैए से पाकिस्तान को छोड़कर दूसरे पड़ोसियों से तनाव घटा है

नेपाल में इस समझौते की प्रतिक्रिया में छाई चुप्पी सहज ही समझी जा सकती है. भट्टराई और उनके साथ आए प्रतिनिधिमंडल के सदस्य समझौते की 'सुरक्षा' संबंधी बातों को हटाए जाने की भरसक कोशिश में थे. इसका एक कारण यह था कि इस मसले को नेपाल में विपक्षी पार्टियां और राजतंत्र के हिमायती लोग बड़े मुद्दे के रूप में उभार सकते हैं. उनका आरोप यह होगा कि हमने घुटने टेक दिए.

और जैसा कि होना भी था, इसकी आलोचना राजशाही के समर्थकों और धुर वामपंथियों ने की. इनके नेताओं को एतराज था कि वे अंतरिम सरकार में शामिल हैं फिर भी उन्हें वार्ता से दूर रखा गया.

पर भट्टराई के समर्थकों का विचार है कि जब इस समझौते का सकारात्मक असर लोगों को महसूस होने लगेगा तो ये आलोचनाएं ठंडी पड़ जाएंगी. भारत से जैसे ही सामान नेपाल पहुंचने लगेगा वहां के हालात भी सुधरने लगेंगे. हालांकि यह सभी मानते हैं कि कीमतें गिरकर उतनी कम नहीं होंगी जितनी कि अप्रैल 1989 के पहले थीं.

नेपाली प्रधानमंत्री की इस एकमात्र विदेश यात्रा की कुछ उपलब्धियां तो अभी से दिखने लग गई हैं. उनके दौरे को टेलीविजन पर खूब दिखाया गया. वरना अभी तक नेपाल का राष्ट्रीय टेलीविजन शाही खानदान का घरेलू वीडियो जैसा था. भट्टराई से जब यह सवाल किया गया कि नेपाली सेना में उस तराई क्षेत्र से सैनिकों की भर्ती क्यों नहीं होती जिसमें भारतीयों का बहुमत है, उनका जवाब था, "भारतीय सेना नेपाल के पहाड़ी इलाकों से सैनिक भर्ती करने के बजाए तराई से क्यों नहीं करती?"

यह भारत की किसी कठपुतली या किसी भारत विरोधी का बयान नहीं हो सकता. यह नेपाल के उस नेता का बयान था जिसकी पहली विदेश यात्रा सफलता से पूरी हुई.

—शेखर गुप्ता, काठमांडो से

कनक दीक्षित के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरावनी फिल्में

दहशत का सस्ता धंधा

अब दूसरे निर्माता और कलाकार भी इस दौड़ में शामिल

एक लंबी, काली चमगादड़ की तरह की मानव आकृति काली टोपी लगाए लंबे से गलियारे में बड़ी शान से चली जा रही है. कैमरा उसके चेहरे पर फोकस करता है. भयानक-सी रोशनी उगलती हुई उसकी लाल-लाल आंखें चमकती हैं. उसके माथे पर दो मोटी-मोटी नसें उभरी हुई हैं जैसे फटने ही वाली हों. ऊपरी जबड़े से निकले दो शिकारी दांत उसकी ठुड्डी तक लटक रहे हैं. भयानक! डरावना!

पर रामसे ब्रदर्स की फिल्म 'बंद दरवाजा' में काउंट ड्रैकुला के इस पहले भारतीय संस्करण को देखकर रोंगटे नहीं खड़े होते. दरअसल, वह आकर्षक और कामुक दिखाई देता है. फिल्म के निर्माता और डरावनी भारतीय फिल्मों के बादशाह तुलसी रामसे बताते हैं, "लड़कियों को वह सम्मोहक लगता है. वे उससे दूर नहीं भागतीं या डरतीं नहीं बल्कि उसकी ओर आकर्षित होती हैं."

डरावनी फिल्मों में कुछ चीजें अब खत्म होने लगी हैं. डरावनापन सभ्य होता जा रहा है. इस चक्कर में इसकी दहशत भी कुछ कम हुई है. दरअसल, अब ये फिल्में पारिवारिक किस्म के दर्शक वर्ग में भी पैठ जमाने लग गई हैं. 'सौ साल के बाद' जैसी फिल्म के साथ डरावनी फिल्मों के क्षेत्र में कदम रखने वाले योगेश छाबड़ा कहते हैं, "मेरे ऑटोग्राफ लेने वाले बच्चे मुझे हॉरर अंकल कहते हैं." तुलसी के अनुसार, "आप हमारी फिल्मों को अपनी बहन के साथ देख सकते हैं."

'खूनी मुर्दा' (ऊपर); और 'रुहानी ताकत' के दृश्य: भुतही सफलता

अचानक ही फिल्म उद्योग में डरावनी फिल्मों की बाढ़ आ गई है. इस समय ऐसी 20 हिंदी फिल्में निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं. निर्माता इन फिल्मों के डरावने नामों के पीछे भाग रहे हैं.

दक्षिण भी इस दौड़ में पीछे नहीं है. मद्रास में सिनेईस्ट बेबी इन्हें तमिल में बना रहे हैं. हाल ही में उन्होंने 'रूम नंबर 13' पूरी की है जिसके निर्माता मशहूर हास्य अभिनेता देवेन वर्मा हैं. डरावनी फिल्में अब रामसे घराने की बपौती नहीं रह गई हैं (देखें बॉक्स). पिछले कुछ साल में दर्जन भर छोटे-बड़े निर्माता इस मैदान में कूद पड़े हैं.

शुरू में जरूर इस धंधे पर रामसे घराने का एकाधिकार था. 1972 में बनी फिल्म 'दो गज जमीन के नीचे' दरअसल भारत की पहली डरावनी फिल्म थी. कुछ महीने पहले ही दिवंगत हुए भारत की डरावनी फिल्मों के पितामह एफ.यू. रामसे और उनके सात बेटों का तब से चला आ रहा यह एकाधिकार भी आखिर खत्म हो गया. तकरीबन एक दर्जन डरावनी फिल्में बनाने वाले मोहन भाखड़ी फिलहाल उनके सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी हैं.

पर इन फिल्मों की बाढ़ दो साल पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई. ऐसी फिल्में बनाने वाले ज्यादातर नए फिल्मकार पंजाबी हैं. देविंदर सोहल, योगेश छाबडा, मोहन भाखड़ी और विनोद तलवार सबके सब भयानकता का धंधा अपनाने से पहले पंजाबी फिल्में बनाया करते थे.

डरावनी फिल्में ही क्यों? ये सस्ती पड़ती हैं इसलिए. एक फिल्म पर 15 से 25 लाख रु. तक खर्च होते हैं और वे 5 से 6 लाख प्रति वितरण क्षेत्र के हिसाब से बिक भी जाती हैं. इसके लिए ज्यादा बड़े सितारों की जरूरत नहीं होती. 18 डरावनी फिल्मों की कहानी लिखने वाले जे.के. आहूजा कहते हैं, "हमारा दिलीप कुमार 'मुर्दा' होता है." बड़े सेट भी जरूरी नहीं होते. बस कोई खाली हवेली और बिजली कड़कती रातों से काम चल जाता है. पटकथा लेखक को भी कोई खास दिमाग लगाना नहीं पड़ता. अमेरिकी फिल्मों की नकल आराम से हो जाती है.

डरावनी फिल्मों में निर्माताओं को सबसे अच्छी बात यह दिखाई देती है कि ये फिल्में शुरू में खासी भीड़ खींचती हैं. तुलसी बताते हैं, "तुम मेरे हो" मद्रास में उसी दिन रिलीज हुई जिस दिन हमारी फिल्म 'बंद दरवाजा' रिलीज हुई. पर हमारी फिल्म पांच दिन बाद तक हाउसफुल चलती रही."

लगता है दहशत के धंधे जैसा कोई धंधा नहीं. वजह यह है कि सेक्स फिल्मों की ही तरह डरावनी फिल्में भी पूरी होने से पहले ही बिक जाती हैं. 'ट्रेड गाइड' परिवार के दारन आदर्श कहते हैं, "सितारों भरी संगीत प्रधान फिल्मों की प्रतिद्वंद्वी सिर्फ डरावनी फिल्में ही हैं." इस समय करीब 300 फिल्में डिब्बों में बंद पड़ी है और मारधाड़ वाली मुख्यधारा की फिल्मों की हालत खस्ता है, डरावनी फिल्में ही निर्माताओं को ज्यादा लुभा रही हैं.

यह बदलाव रामसे की फिल्म 'पुराना मंदिर' से आना शुरू हुआ.

'अनोखा दर' में भूत बनते रणधीर सिंहः दहशत को बढ़ावा

यह भयावह फिल्मों की 'शोले' साबित हुई और 100 दिन तक चली. इन फिल्मों के लिए तो यह स्वर्ण जयंती से भी बड़ी बात थी.

अभी तक बनी ज्यादातर फिल्मों में बस एक ही फार्मूला होता था. एक भूत जो बदले की भावना से लाशों की कतार बांध देता है. अंतर सिर्फ इतना होता कि बदले की वजह क्या है, कितनी हत्याएं होती हैं और खुद भूत कितने समय बाद मारा जाता है. वह जितनी देर में मरता है, कहानी मे उतनी ही गुत्थियां बन जाती हैं.

इन डरावनी फिल्मों के सितारे हैं दीपक पाराशर, किरण कुमार, कंवलजीत (बुनियाद वाले), विजयेंद्र घाटगे, हेमंत बिरजे (टार्जन) और रजा मुराद. पर डरावनी फिल्मों के अमिताभ बच्चन हैं जावेद खां, जिन्हें आजकल हट्टे-कट्टे हशमत खां की प्रतिद्वंद्विता झेलनी पड़ रही है.

जहां तक अभिनेत्रियों का मामला है तो वे दूध से मक्खी की तरह निकाल बाहर की जाती हैं. श्याम रामसे के अनुसार, "सिर्फ नई लड़कियां ही कुछ चल पाती हैं."

संगीत (आला दर्जे का), सेक्स (सस्ते स्तर का) और हास्य (मुख्य धारा के हास्य अभिनेताओं से) मौजूदा डरावनी फिल्मों के तीन नए मसाले हैं. सेक्स, दहशत अब एक साथ ही होता है. खूबसूरती और बदसूरती का यह संगम बहुत घातक होता है. पीछा कर रहे भूत से अपने आपको बचाती हुई, अंधेरे में भागती लड़कियां अब इस बात का ज्यादा खयाल नहीं रखतीं कि उनके कपड़े किधर जा रहे हैं.

'बंद दरवाजा' में अनिरुद्धः भूत का धंधा

पहले रामसे दहशत के इस मामले में सेक्स का ऐसा छौंका नहीं लगाते थे पर 'वीराना' के एक दृश्य में खलनायिका अपने शिकार को व्हिस्की पिलाते हुए लुभाती है और उसकी गर्दन में दांत गड़ाने से पहले अपने अंग-प्रत्यंगों का खुलकर प्रदर्शन कर देती है. पर भाखड़ी की फिल्मों में तो सेक्स अपनी सारी हया ताक पर रख देता है. छाबड़ा के अनुसार, "डरावनी फिल्मों में सेक्स को सेंसर भी जल्दी स्वीकार लेता है. सारी दहशत के बाद यह कुछ सुकून भी देता है."

हास्य भी यही भूमिका निभाता है. कॉमेडी दहशत की प्रतिद्वंद्वी होती है और दर्शकों की दोस्त. इसकी शुरुआत 'पुराना मंदिर' से हुई. इसमें भूत अगर आपको पकड़ नहीं पाता तो आप उसकी खिल्ली उड़ा सकते हैं. संगीत भी दहशत को प्रभावित करने लगा है. इसका स्वर सुधरा है और इसे गंभीरता से लिया जाने लगा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

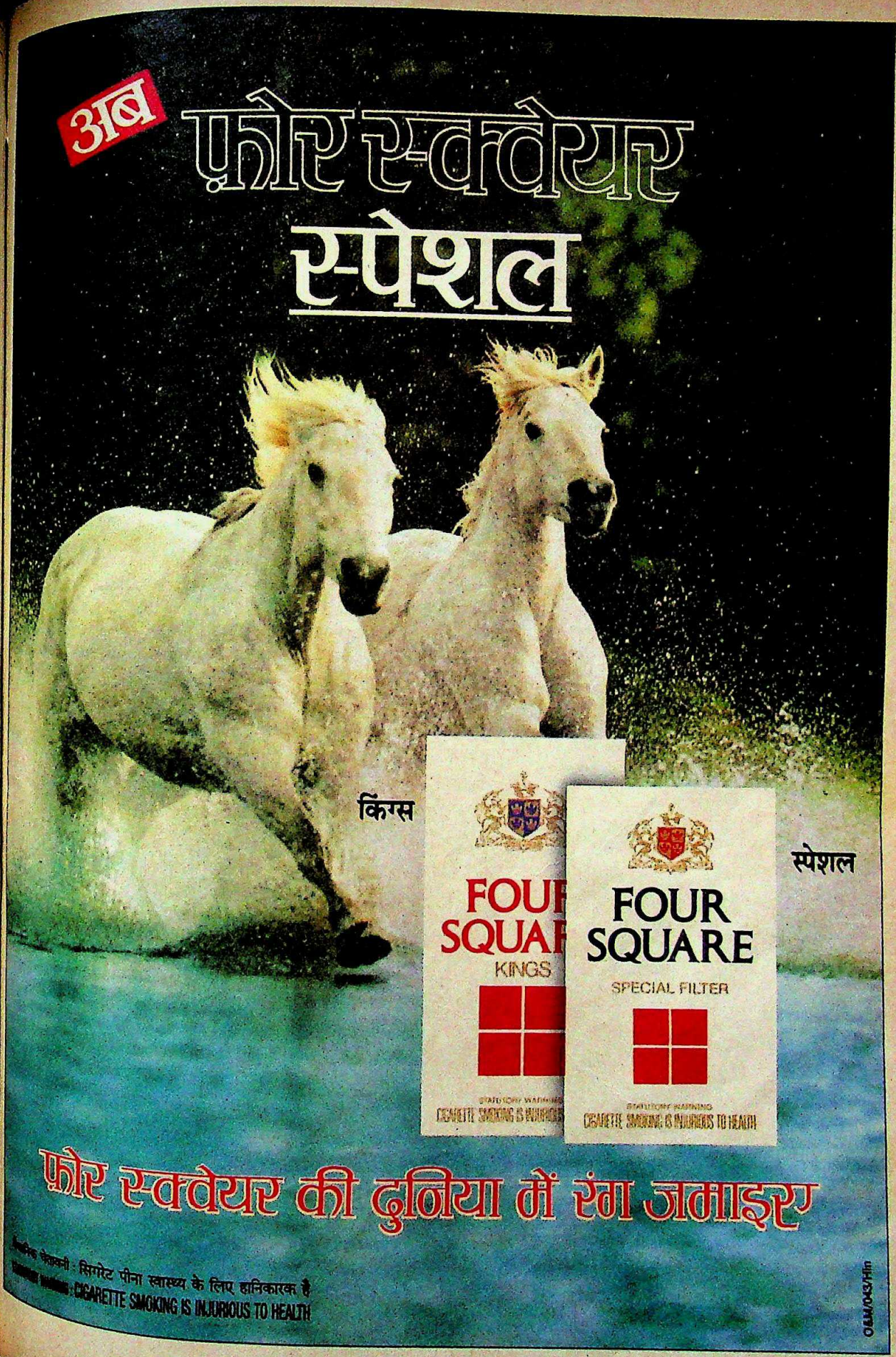

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कब्रिस्तान' का दृश्य (बाएं); और 'हत्यारिन' में जमुना: डराने की कोशिश

इन फिल्मों में रोमांस को भी जगह दी गई है. प्रेम-प्यार इस डरावने खेल में शामिल हो गया है. भाखड़ी बताते हैं, "रोमांस लय तोड़ देता है इसलिए सारा रोमांस भूत के आने से पहले ही होता है."

दहशत के इस कारखाने में आम तौर पर विदेशी फिल्मों के पुर्जे ही जोड़े जाते हैं. लेकिन कुछ हद तक उनका भारतीयकरण भी करना पड़ता है. इसमें भारतीय मिथकों और अंधविश्वासों का मसाला भरा जाता है. जगह-जगह तांत्रिक, ठाकुर और त्रिशूल का इस्तेमाल होता है.

पटकथा लेखक आहूजा के अनुसार भारत में भुतहा शक्तियां देवताओं या उनके प्रतीकों से ही हार मानती हैं. इसलिए भूत को डराने के लिए त्रिशूल, गंगाजल, काली की मूर्ति, ओम के चिन्ह का प्रयोग होता है. एक फिल्म में तो कुरान शरीफ का भी इस्तेमाल हुआ है.

इस बीच, इस देसी दहशत का दंश वीडियो के माध्यम से मध्यवर्गीय घरों में भी जा पहुंचा है. यह राजेश खन्ना, डैनी, अमजद खां और पूनम ढिल्लों जैसे सितारों को आकर्षित कर रहा है. और वे मुख्य धारा की फिल्मों से डरावनी फिल्मों की दूरी तय करने की कोशिश में हैं. दूसरों ने भी यही आसान और फायदेमंद राह पकड़ ली है. यानी भयानकता और डरावनेपन का सिलसिला अब चल पड़ा है.

—मधु जैन, बंबई से

रामसे परिवार

परंपरा से बंधे

डरावनापन उनके खून में हैं. करीब दो दशक तक रामसे समूह ने ही डराने का बीड़ा उठा रखा था और इस दौरान उन्होंने इतनी डरावनी फिल्में बनाई कि 20 के बाद की गिनती खुद उन्हें याद नहीं रही. डरावनी फिल्मों की दुनिया में फतहचंद उत्तमचंद रामसे और उनके सात बेटों का एकछत्र राज था. कुछ साल पहले इस परिवार में दरार पड़ गई.

कुछ महीने पहले ही बुजुर्ग रामसे के निधन के बाद से यह परिवार पूरी तरह बंट गया. सातों भाई चार अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े हैं. लेकिन पारिवारिक संस्कार खत्म नहीं हुए हैं. हर कोई अपने विस्तार में लगा है.

तुलसी रामसे के शब्दों में, "दूसरे भाई मायने नहीं रखते. मैं, श्याम और गंगू ही सर्वेसर्वा हैं." इस तिकड़ी में तुलसी के अलावा श्याम (निर्देशक) और गंगू (कैमरामैन) हैं. इनके पास कुल आठ फिल्में हैं, जो इस समय निर्माण के विभिन्न चरणों में चल रही हैं.

इनका ब्रांड (रामसे) अभी भी कायम है. पर कुमार और केशू जैसे भाई परिवार की परंपरा से अलग हटने की कोशिश कर रहे हैं. कुमार ने तो 'गंगा जल' (डिंपल कापड़िया के साथ) और 'खोज' (नसीरुद्दीन शाह को लेकर) में भयानकता को पूरी तरह दरकिनार कर रखा, वहीं तुलसी और श्याम ने 'टेलीफोन' का निर्माण किया. केशू ने 'मेरा शिकार' (डिंपल को ही लेकर) में भुतहा तत्व परे रखा और 'खोज' में भी योगदान किया.

रामसे घराना: विभाजित

लेकिन विरासत में मिली डरावनी फिल्मों पर तुलसी और श्याम को गर्व है. तुलसी को अगर 'वह खास भाव' नहीं दिखता तो वे शूटिंग करने से मना कर देते हैं. वैसे, यह और बात है कि वे अंगूठियां, यंत्र और ताबीज पहनते हैं ताकि 'वास्तविक श्मशानों' में रात की शूटिंग के दौरान आत्माएं अलग रहें. वे कहते हैं, "राजकपूर रोमांटिक दृश्य फिल्माते तो खुद भी प्यार में डूब जाते. अगर उन्हें वह भाव नहीं मिलता तो चीख उठते, 'पैक-अप' (काम खत्म)."

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

न प्रतिबंध, न प्रतिद्वंद्वी... पर प्रतिदिन जलते अरमान!

ओनिडा पड़ोसियों को जले जान, आपकी बढ़े शान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी कहावत, नया किरदार

क्या राजकपूर पुत्र **डब्बू कपूर** और उनकी हीरोइन **ज़ेबा बख्तियार** के संबंध बिगड़ चुके हैं? क्या ज़ेबा की किसी बात ने डब्बू को इस तरह नाराज कर दिया है कि डब्बू उनका कैरियर तबाह करने पर उतर आए हैं?

पहले तो लोग यह समझते रहे कि अपने पिता की परंपरा को चलाते हुए डब्बू ने भी ज़ेबा को 'हिना' रिलीज होने तक कोई दूसरी फिल्म लेने से मना कर रखा होगा लेकिन रणधीर यानी डब्बू ने तो बड़ी वीरता के साथ घोषणा कर दी कि 'मेरी तरफ से ज़ेबा पर किसी तरह की कोई पाबंदी नहीं है.' लोग हैरान हैं कि अगर यह सच है तो ज़ेबा ने कोई फिल्म साइन क्यों नहीं की? इसका मतलब उनमें कोई ऐसी कमी है जो आर.के. जैसा ग्रुप तक उन्हें सिर्फ अपनी बनाकर रखना नहीं चाहता. डब्बू के बयान ने यह भ्रम तो तोड़ ही डाला कि ज़ेबा को साइन करना संभव नहीं है, यह भी जाहिर कर दिया कि उन्हें साइन करने में फिलहाल किसी की रुचि ही नहीं. यह रहस्य खोल देने में आखिर डब्बू का क्या स्वार्थ था?

ज़ेबाः कोई जल्दी नहीं

यह तो वे ही जानें.

पर ज़ेबा से पूछने पर उन्होंने वही जवाब दिया जो इंडस्ट्री से अस्वीकृत हीरोइन अक्सर देती हैं, "मैं किसी जल्दी में नहीं हूं. मैं तो 'हिना' की रिलीज का इंतजार कर रही हूं. उसके बाद ही फैसला करूंगी..."

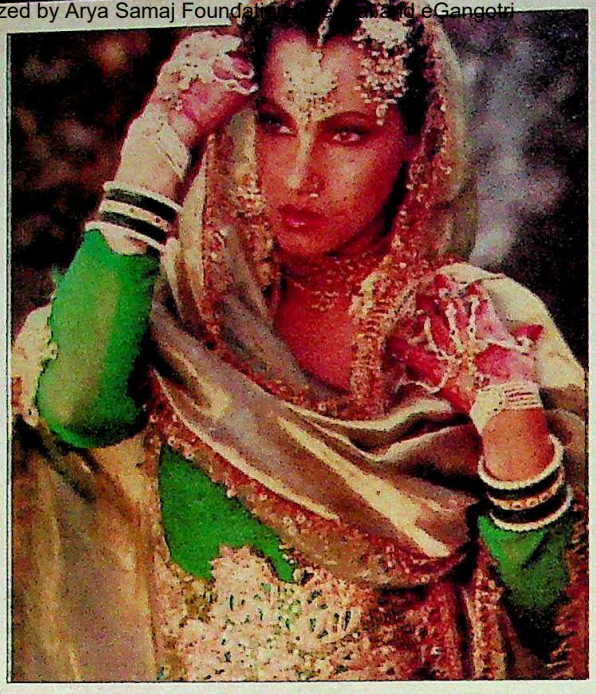

नहीं खिली दिल की कली

बेचारी **डिंपल कापड़िया** परेशान न हों तो क्या हों? बड़े परदे की 'जूनी' और छोटे परदे की 'अन्ना कैरेनीना' दोनों का कहीं अता-पता नहीं. कोई नई फिल्म हाथ आ नहीं रही. उम्र का असर मुखर होता जाता है. पब्लिसिटी का चक्कर चल नहीं रहा...

ऐसे में ही बुलावा आया 'अप्पू राजा' के प्रीमियर में शामिल होने का. डिंपल ने इस मौके का भरपूर

फायदा उठाने की कोशिश की पोशाक वह पहनी जिसे कहते 'जानमारु'. बिजलियां गिराने पूरी तैयारी. दर्शकों की भीड़ इंडस्ट्री के सितारे, सभी तो वहां. डिंपल की बांछें खिल द्वार पर खड़े वितरक ने स्वागत किया, सीट तक ले जाकर बिठाया मगर डिंपल के दिल की कली खिली नहीं.

यह भीड़ किधर भागी जा है? सितारों को स्टेज पर बुलाया जाएगा? जल्दी ही मालूम हो गया कि सारी भीड़ कमल हासन और उनकी सुंदर सारिका के इर्द-गिर्द जमा है. बाकी सितारे? प्रेम चोपड़ा मीनाक्षी, सलमान जैसों के लिए वहां था ही कौन?

उसके बाद से डिंपल सितारे से यही पता लगाने कोशिश में रहीं कि वह प्रीमियर आया या आई क्यों नहीं? सबसे मिले एक ही से जवाब अधेड़ डिंपल को अब जाकर परिपक्वता प्रदान की है कि प्रतिभा का जादू हो वहां ग्लैमर से जादू जगाने की कोशिश कभी कामयाब नहीं होती.

जोड़ी बनाई 'मर्द' के साथ

चिरंजीवी साउथ में भले ही स्टार हैं, हिंदी फिल्म दर्शक अभी उनसे वाकिफ नहीं. फिर भी, जब वे हिंदी फिल्म के लिए चुने गए तो उनके साथ हीरोइन बनने के लिए **जुही चावला** ने जो एड़ी-चोटी का जोर लगाया, उसकी वजह अब जाकर खुली है.

आमिर खां के साथ जुही की फिल्म 'तुम मेरे हो' कोई धमाका नहीं कर सकी. एक-दूसरे पर दोषारोपण होने लगे. इन दोषारोपणों में आमिर ने अपना पुराना राग अलापा—'जुही उम्र में मुझसे बड़ी लगती हैं, इसलिए जोड़ी ठीक जमी नहीं...' 'कयामत से कयामत तक' की सफलता का सारा श्रेय खुद बटोर ले जाने की कोशिशों में भी आमिर उम्र की आड़ इसी तरह लेते थे.

तब जुही नई थीं, अब खिलाड़ी हैं. अपनी जिस मासूमियत को आमिर खूबी बताते फिरते हैं, उसी पर करारा प्रहार करते हुए जुही ने जवाब दिया है, 'हीरो अगर हीरोइन जैसा मासूम दिखाई देता रहे तो भला कौन-सी फिल्म चल सकती है?' अपने नए चुनाव के बारे में उनकी टिप्पणी है, 'उम्र लड़की की जोड़ी मर्द के साथ शोभा देती है, बच्चे के साथ नहीं.'

चिरंजीवी और जुहीः नई जोड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुशासन से अराजकता

अच्छा खाना, अच्छी शराब, अच्छी... खैर छोड़िए, तीसरा दिक्कतों ही काफी हैं जो **ऋषि** कपूर की या यूं कहें कि कपूर खानदान की ही कमजोरी हैं. इतिहास गवाह है कि इस परिवार के पुरुष लंबाकार बढ़ना बंद होते ही गोलाकार बढ़ने लगते हैं और फिर तीसरी से दूसरी और दूसरी से वर्तमान पीढ़ी के बीच फर्क करना मुश्किल हो जाता है.

ऋषि कपूर भी जब से परिवार की इस परंपरा को निभाने के रास्ते पर चल पड़े हैं पत्नी नीतू सिंह की नींद हराम है. ढलान पर लुढ़क रहे कैरियर को संभालने की कोशिशों के बावजूद ऋषि किसी ठोस जगह खड़े दिखाई नहीं देते. इस हालत में, कल उन्हें राकेश बेदी का विकल्प माना जाने लगे इसके पहले ही कोई कदम उठा लेना जरूरी था. अतः नीतू ने ऋषि के खान-पान पर सख्त पाबंदी लगा दी. यह स्वास्थ्य सेवा कुछ दिनों तक तो परस्पर प्यार का प्रतीक बनी रही लेकिन पेट से होकर जाता रास्ता बंद हुआ तो दिल तक पहुंच भी कम हो गई और फिर अच्छे खाने, अच्छी शराब के साथ कमजोरियां और भी...

खैर छोड़िए वह तीसरी बात. अब नीतू की उलझन यह है कि यह स्वास्थ्य सेवा कैसे जारी रखें और कैसे छोड़ दें! ऊपर से पति से अलग रहने वाली जिठानी ने डरा और दिया है, 'घर छोड़ने की नौबत आने से पहले मैंने भी उनकी फिगर की फिकर में दुबली होकर ही यह जिंदगी भर की फिकर मोल ले ली.'

ऋषिः परंपरा का निर्वाह

शाकाहारी भेजती डीगें

चुटकुलों के मामले में आप शाकाहारी हों तो कल्याणजी भाई के पास जाएं और मांसाहारी हों तो रवींद्र जैन के भंडार में नित नई चीजें मिलेंगी. लेकिन इन्हें पछाड़ डाला है **चंकी पांडे** ने जो अपने बारे में पूरी गंभीरता से चुटकुलों जैसी बातें सुनाते हैं. साथ में पूरे मन से यह विश्वास भी करते हैं कि वह सब, जो वे कह रहे हैं, सच है तथा सुनने वाला भी उसे सच ही मान रहा है.

नवीनतम मुलाकात में चंकी ने एक रहस्य यह भी खोला है कि होश संभालने के पहले से वे अभिनय करने लगे थे और उन जैसे सपूत के पांव पालने में देखकर उनके घर आने वाले फिल्मवालों ने उन्हें अभिनेता बनाने का सुझाव दिया था.

उनकी तीसरी चुटकुलानुमा धारणा यह है कि रॉक हडसन ऑफ इंडिया, लेडीज किलर, साक्षात इंद्र, कामदेव या फिर सपनों का राजकुमार जैसे विशेषण उनके लिए छोटे पड़ते हैं. इसलिए उनके प्रशंसकों को चाहिए कि उनके लिए कोई नया नाम इजाद करें.

हंसी से दोहरी होती उनकी एक सह अभिनेत्री ने बताया, "जब से उन्हें श्रीदेवी का वेष धर मर्द से औरत बन जाने का घिसा-पिटा मजाक भूमिका के तौर पर सौंपा गया तभी से वे स्वयं को सचमुच श्रीदेवी समझने लगे हैं."

चंकीः सच्चे चुटकुले

मीनाकुमारी का अवतार

आज के इस दौर में, जहां [illegible]किनी को किमी काटकर ने, [illegible]नी को सोनम ने और सोनम को [illegible] सिंह ने कपड़े उतारने में [illegible] देने का क्रम अनवरत चला [illegible] हो, अचानक मीनाकुमारी [illegible]कने में उतर आएं तो क्या [illegible] घबराकर लौट जाएंगी?

[illegible] नहीं, यहीं रहेंगी, खम [illegible]कर रहेंगी और अपने काम से [illegible] सबको शर्मिंदा करके साबित [illegible] देंगी कि तमीज हमेशा [illegible]तमीजी से ज्यादा ताकतवर [illegible] है.' यह दावा है **गजल** का. [illegible] कौन? गजल एक नई फिल्म [illegible] नायिका हैं. इसका भरपूर [illegible] उन्हें मिला है विदेशों में [illegible] वाले लेखक निर्देशक [illegible]दीन परवेज की फिल्म में. [illegible] 'यादों के मौसम' में जो [illegible] मिली है उसमें शरीर प्रदर्शन की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं," गजल ने फिल्म के प्राइवेट शो में इसे अपना सौभाग्य बताते हुए कहा तो शो समाप्त होते-होते उनकी प्रतियोगी नवोदिता ने इसे उतना ही बड़ा दुर्भाग्य बताया, "शरीर दिखाने को सबसे पहले तो शरीर चाहिए, फिर हिम्मत. जिसके पास दोनों न हों वह सिवा सुंदर कपड़ों की बेजान गठरी बनने के कर ही क्या सकती है?"

इस शीतयुद्ध को गरम बनाने के लिए इतनी चिंगारी काफी थी. लेकिन अचानक यह खबर आ जाने से सब शांत हो गया कि निर्माता निर्देशक सलाउद्दीन को एकाएक दिल का दौरा पड़ जाने से अस्पताल में भरती होना पड़ा है. वह झगड़ा जो बढ़ जाता तो निर्माता की जान पर बन आती, इसीलिए रुक गया कि निर्माता की जान पर बन आई थी.

गजलः शालीन ग्लैमर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिड़ला यामाहा के साथ मुफ्त!

यह खिली हुई मुस्कान जो आपको सिर्फ बिड़ला यामाहा ही दे सकते हैं। क्योंकि हमारा हर पोर्टेबल जेनरेटर पूरी तरह भरोसेमंद है।

और हमारे पास हैं आपकी हर ज़रुरत के लिए, एक से बढ़कर एक, 8-8 मॉडल। सब के सब यामाहा की आधुनिकतम 2 स्ट्रोक और 4 स्ट्रोक टैक्नॉलॉजी से बनें हैं।

तभी तो हमारे पोर्टेबल जेनरेटर चुपचाप कड़ी मेहनत करते हैं और ईंधन का खर्च भी बचाते हैं। पिछले 4 वर्षों में तो इन्होंने किसी को शिकायत का मौका ही नहीं दिया।

आखिर भारत में हमने ही तो की थी पोर्टेबल जेनरेटरों की शुरुआत। आज भी हम हीं हैं सबसे आगे।

फिर 80,000 से ज्यादा खुशहाल मालिकों के होठों पर कैसे ने खिले मुस्कान।

बिड़ला यामाहा

पोर्टेबल जेनरेटर्स

पावर जो लाए मुस्कान

अब मल्टी परपज़ इंजन, फॉगिंग मशीन और पोर्टेबल जेनरेटर के साथ पब्लिक एडरेस सिस्टम भी उपलब्ध हैं।

मुख्य कार्यालयः बिड़ला यामाहा लि०, ए-7, रिंग रोड, साउथ एक्स्टेंशन भाग-1, नई दिल्ली-110049, फोन: 691-2013/4, 626249, टेलेक्सः 031-63228 बी वाई एल इन, फैक्स: [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब सरकारें एक समान

शहर में रहने वालों की आदतें खराब हैं. बार-बार सरकार को कोसते हैं. गर्मियों में बिजली न रहने पर, बरसात में बाढ़ आने पर. इस मामले में गांव के भाई भाग्यशाली हैं. वहां तार खिंचे हैं. लट्टू लगे हैं. बिजली नहीं है. नलकूप हैं. जल नहीं है. वह जानते हैं. सब माया है. चुनावी वादे हाथी के दांत हैं. लिहाजा उन्हें फ़र्क नहीं पड़ता है. पानी बरसा तो जै राम की, सूखा पड़ा तो हे राम जी ! हमें यकीन हो चला है सरकार सिर्फ शहर वालों के पीछे पड़ी है. हम अपनी निजी त्रासदी की सार्वजनिक सूचना देते हैं—

"सरकार में कुछ सुधार का चांस है."

"क्यों क्या हो गया?" रामजीलाल सवाल करते हैं.

"सवेरे से पेट में दर्द है."

"इसके लिए सरकार कैसे जिम्मेदार है?"

"नल में नाली का पानी आता है."

"यह तो नगर निगम का काम है."

"पर निगम के नियम-उपनियम तो सरकार बनाती है," हम अड़े रहे.

यों सरकार की बहस निराकार की चर्चा है. सब उसे गाली देते हैं. कोई बचाव को नहीं आता. रामजी ने जानना चाहा—

"आप किस सरकार से नाराज हैं."

"हम सबसे नाखुश हैं," हमने बयान दिया.

"कोई वजह भी तो होगी."

"कांग्रेस में करप्शन था. उसके उत्सवों में हमारा माथा पिराता था."

"फिलहाल तो मूल्यों की राजनीति वाली राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार है."

"मूल्यों की राजनीति से ही तो मूल्य बढ़ रहे हैं."

"सियासत उसूल की है. सरकार मोर्चे की है," उन्होंने स्थिति स्पष्ट की.

"यह भी जगजाहिर है. नेता एक-दूसरे के खिलाफ मोर्चा लगाए डटे हैं."

"आपकी राय में कौन-सी सरकार बेहतर होगी."

"आपका क्या खयाल है," हमने अज्ञान छिपाया.

"इधर जन-नेता मूल्यों की राजनीति के मुकाबले मुद्दों की पॉलिटिक्स की गुहार लगाते हैं."

"तब तो और बंटादार होगा."

"वह कैसे," उन्होंने जिज्ञासा जताई.

"आजकल बढ़ती कीमतों के लिए हम मूल्यों की राजनीति को दोष तो दे देते हैं. तब किसे गुनहगार ठहराएंगे?"

"मुद्दों की राजनीति में ऐसा नहीं होगा."

"वह मूल्यों को अपनी सरकार का मुद्दा ही नहीं मानेंगे. आप क्या कर लेंगे?"

रेखांकन : अनिल शर्मा

"मुद्दों वाली सरकार में वही मुद्दे तो होंगे जो जनता चाहेगी," रामजी कुछ घबराए.

"आपके मन में क्या मुद्दे हैं?"

"हम कीमतों में गिरावट, कारखानों में भागीदारी और कामगारों की तरक्की के कायल हैं."

"उनके अनुसार परिवार, पंजाब और पनचक्की ज्यादा जरूरी हो सकते हैं."

रामजी ने फिर बहस छेड़ दी.

"इधर समझदार किसानों की सरकार की भी बात करते हैं."

"भगवान के लिए देश को आप इस तरह की बकवास से बचाइए," हमारे एक साथी बिफर पड़े.

"भरी सभा में नेता के बोले सत्य वचन को आप बकवास कहने की जुर्रत कैसे करते हैं."

"और नहीं तो क्या. सदियों से पाखंडी जात-पांत की दुकानों से देश को बांट रहे हैं. इधर मंदिर-मस्जिद की भी शुरू हो गई है. बस किसानों की दुकानदारी की ही कसर है."

"किसानों को उनका हक तो मिलना चाहिए," एक आवाज आई.

"पर हमारे लीडरे-वतन तो सिर्फ अपनी पहचान बना रहे हैं वरना किसान के बजाए पूरे हिंदुस्तान की बात क्यों नहीं करते," हमारे दोस्त ने शिकायत की.

"तभी तो नेता राष्ट्रीय सरकार की गोटी बिठा रहे थे."

"राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार अ-राष्ट्रीय है क्या," हमारे मित्र ने चुनौती दी.

"राष्ट्रीय सरकार होगी तो नलों में साफ पानी आएगा क्या," हमने तात्कालिक समस्या का हल चाहा.

"हमें क्या पता," उत्तर मिला.

"पर इतने नेता हो जाएंगे कि रोज एक नया प्रधानमंत्री बन सकता है. फिर न किसान नेतृत्व की दिक्कत रहेगी न मुद्दों की," रामजी ने राष्ट्रीय सरकार का समर्थन किया.

अब अपने पल्ले पड़ा. समस्या सरकार की नहीं, महत्वाकांक्षा की है. हर सरकार में नेता, पुलिस, बाबू और भ्रष्टाचार की समानता है. चाहे वह टोपी की हो चाहे साफे की. फिर एक से दूसरी बेहतर कैसे हो. आदर्श सरकार की संभावना कोरी कल्पना है. इन हालात में जो है, उसी सरकार से गुजारा क्या बुरा है. नलों का पानी गंदा है. ठीक है. आता तो है. कीमतें ज्यादा हैं. 'डाइटिंग' क्या बुरी है. अपराधी दादा धमकाता है. चुप होकर सहो. सरकार बेकार तो है नहीं. आपस के दंगल से फुरसत मिली तो जनता के नफे-नुकसान का भी सोचेगी. अपने फायदे का एक ही कायदा है. किसी भी सरकार से उम्मीद रखना ही गलत है. 'छोड़ो आस कपास की...!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहक की सुरक्षा

कायदे से होगा इंतजाम

धूम्रपान और दूसरी नुकसानदेह जिंसों पर अंकुश लगेगा

धूम्रपान से होने वाली हानियों के बारे में मैंने इतना कुछ पढ़ा कि अंत में वह सब पढ़ना ही छोड़ दिया.''

—सिगरेट की एक दुकान के बाहर लिखा वाक्य

लेकिन अब धूम्रपान नहीं करने की चेतावनियों को यूं ही टाला नहीं जा सकेगा. सिगरेट के शौकीन चाहे खुश रहें या नाखुश पर अब उनके दिन पहले जैसे नहीं होंगे. पिछले पखवाड़े केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने देश भर में अस्पतालों, छोटे चिकित्सालयों के अलावा वातानुकूलित रेल डिब्बों और स्टेडियमों में धूम्रपान पर प्रतिबंध लगा दिया. इंडियन एअरलाइंस ने भी अपनी सभी घरेलू उड़ानों में धूम्रपान पर रोक लगा दी है. साथ ही एक ऐसे विधेयक पर भी विचार चल रहा है जिसके जरिए सिगरेट के सभी विज्ञापनों पर पूरी तरह से रोक लगा दी जाएगी.

वैसे धूम्रपान ही एकमात्र ऐसा मुद्दा नहीं है जिस पर तत्पर कार्रवाई की गई है. एक पखवाड़े के अंदर ही सरकार ने संबद्ध उद्योगों को निर्देश दे डाला कि वे पान मसालों और फ्लोराइडयुक्त टूथपेस्टों पर वैधानिक चेतावनी अंकित करें. साथ ही सरकार ने बंबई हाईकोर्ट में भी आयोडीनयुक्त नमक के पक्ष में दलीलें दीं और वहीं सॉफ्ट ड्रिंक (शीतल पेय) उद्योग को इस बात के लिए विवश कर दिया कि वह अपने उत्पादों में ब्रोमिनेटेड वेजिटेबल ऑयल (बीवीओ) का प्रयोग बंद कर दें.

पान मसालों पर अब एक चेतावनी रहा करेगी जिसका मजमून यह होगा कि एक दिन में चार ग्राम से अधिक का सेवन हानिकारक है. एक निर्माता दावा करते हैं, "अगर इसका हानिकारक होना साबित हो जाए तो मैं अपना व्यापार बंद कर दूंगा.'' लेकिन दंत चिकित्सकों का कहना है कि पान मसाला इतना हानिकर है कि चेतावनी देने के बजाए इस पर रोक लगा दी जानी चाहिए क्योंकि भारत में पुरुषों को तंबाकू भरे पान के सेवन से ही सबसे अधिक मुंह का कैंसर होता है.

हाल के इन कदमों से भारतीय उपभोक्ताओं में आई स्वास्थ्य जागरूकता का पता चलता है. पर्यावरण राज्यमंत्री मेनका गांधी के रूप में उन्हें सरकार में भी एक सहयोगी मिल गया है.

इस साल शीतल पेयों की बिक्री के आंकड़े डांवाडोल हैं. कारण बीवीओ के प्रयोग ने उपभोक्ताओं में डर पैदा कर दिया है. प्रतिबंधात्मक व्यापार आयोग (एमआरटीपीसी) ने ट्रिप, कैंपा ऑरेंज, रश, रसना, लिम्का और गोल्ड स्पॉट को अपनी लपेट में ले लिया. लेकिन उसकी जगह प्रयोग में लाया जा रहा 'इस्टर गम' भी समस्या का हल नहीं है.

सरकार के इस कदम ने शीतल पेय निर्माताओं का सुख-चैन छीन लिया है. उनका दावा है कि यह रोक एक अंतरराष्ट्रीय साजिश (देखें पेप्सी) का हिस्सा है. अब इसमें चाहे पेप्सी का हाथ हो या न हो पर यह तो सच है ही कि भारत में शीतल पेय पदार्थों के निर्माता अमेरिकी मानक से तिगुनी मात्रा में बीवीओ का प्रयोग कर रहे थे. बीवीओ से धमनियों को नुकसान पहुंचता है और इसके अत्यधिक सेवन से दिल की बीमारी हो सकती है.

फ्लोराइडयुक्त टूथपेस्ट एक और ऐसा उत्पाद है जो काफी विवाद में रहा है. सरकार ने यह अनिवार्य कर दिया था कि मई महीने के अंत से ही निर्माताओं को केवल 1000 पीपीएम फ्लोराइड का प्रयोग निश्चित कर लेना होगा और हरेक पैकेट पर प्रयोग सीमा की अंतिम तिथि स्पष्ट रूप से अंकित करनी होगी. साथ ही यह वैधानिक चेतावनी भी देनी होगी कि, "सात वर्ष से कम आयु वाले बच्चों को फ्लोराइडयुक्त टूथपेस्ट का प्रयोग नहीं करने देना चाहिए.''

लेकिन जैसे कि नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में कार्यरत एके सुशीला कहते भी हैं, "हमारे दंत छिद्र रक्त वाहिनियों से सीधे संबद्ध होते हैं लिहाजा फ्लोराइड भी सीधे हमारे रक्त प्रवाह में घुलमिल जाता है.

उधर उपभोक्ता वर्ग भी अब विश्व भर में आयोडीनयुक्त नमक के प्रयोग के बारे में सचेत है और आयोडीन की कमी से होने वाले रोगों (असामान्य जन्म तथा घेंघा) की भी उसे जानकारी होने लगी है.

लेकिन आयोडीनयुक्त नमक (2.50 रु. प्रति किलो) सामान्य नमक (50 पैसे प्रति किलो) की तुलना में महंगा होने के कारण आयोडीन की कमी से प्रभावित गरीब वर्ग इससे तब तक लाभान्वित नहीं होगा जब तक उसे कुछ छूट हासिल न हो. वैसे, आम लोगों के स्वास्थ्य से संबंधित मसलों पर टिकी कई एजेंसियों की गिद्धदृष्टि और सचेष्ट सरकार के रहते हुए लगता नहीं कि ये समस्याएं बहुत समय तक लंबित रह सकेंगी.

—सलिल त्रिपाठी, दिल्ली और बंबई

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक चीजों के खिलाफ उठाए जा रहे कदमों से भारतीय उपभोक्ताओं में आई स्वास्थ्य जागरूकता का पता चलता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

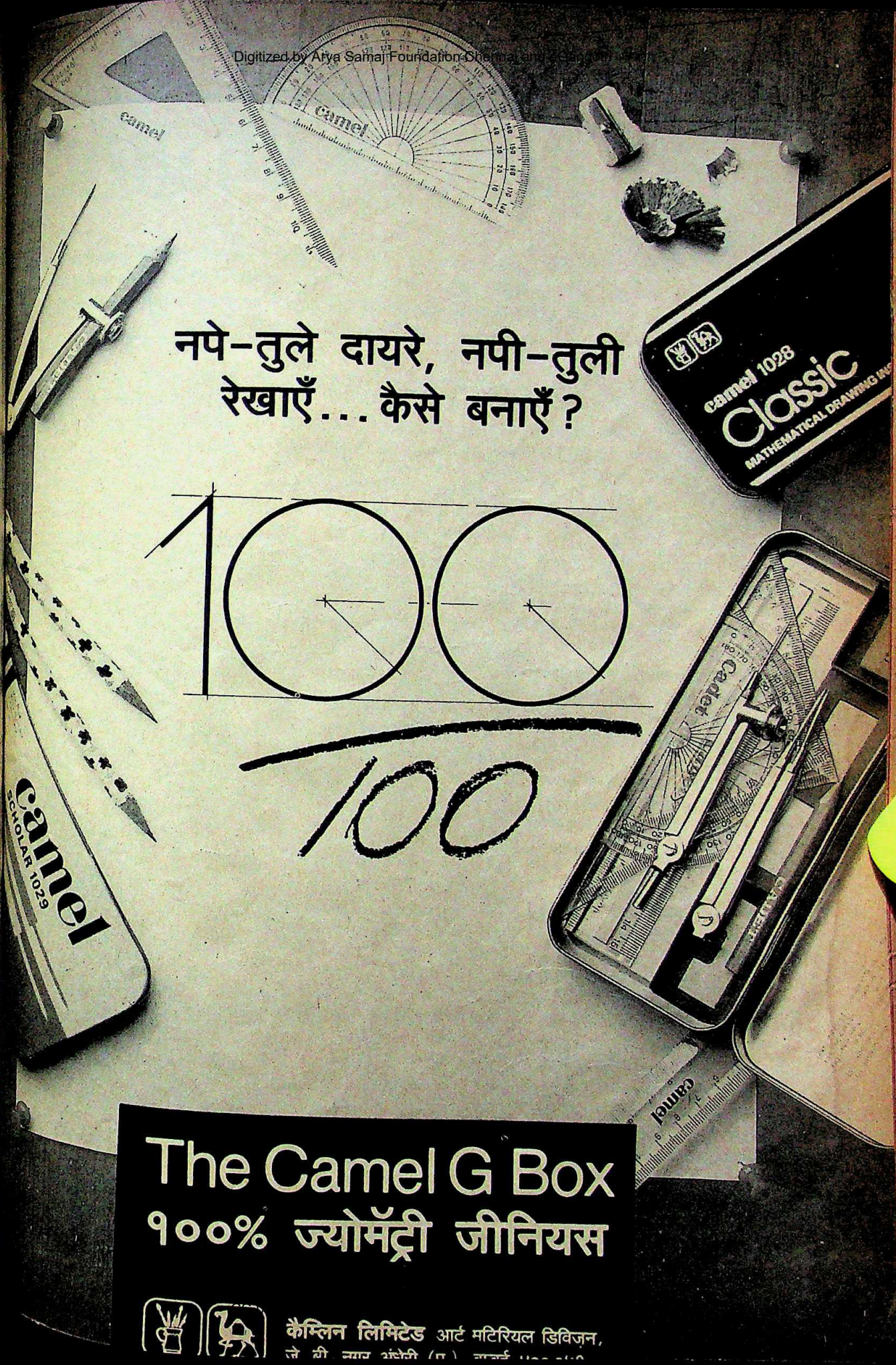

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रकांता

वितस्ता का ज़हर

'अर्थांतर', 'अंतिम साक्ष्य' और 'ऐलान गली जिंदा है' उपन्यासों पर जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी से पुरस्कृत चंद्रकांता की यह ताजा कहानी कश्मीर घाटी के वर्तमान यथार्थ का एक पहलू है. घाटी में भले ही उनकी उम्र का कम भाग बीता हो पर उनकी लेखनी ने कश्मीर से विस्थापित हो रहे लोगों का दर्द महसूस किया है.

वादी बर्फ की चादर ओढ़े सो रही है. लेकिन बंद कमरों में रजाइयों में दुबके लोगों की आंखों में नींद नहीं है. वीरान सड़कों पर बंदूकधारी सिपाहियों के मेख ठुके बूटों की आवाज रुक-रुककर रात का सन्नाटा तोड़ देती है. धांय-धांय! दूर कहीं गोली चलने की आवाज गूंजी है. कौन होगा? कमरे चौकन्ने हो उठे हैं.

रामजी की परछत्ती के नीचे पैर सिकोड़े लेटा जख्मी कुत्ता कांखता है, कूं-कूं-कूं. उसके पैर में सिपाही की गोली लगी थी कल. अंधेरे में आदमी और जानवर में फर्क मालूम नहीं पड़ता न?

निरंजन की छत से लटके, कार्डबोर्ड से ढके घोंसले में अबाबील अपने नन्हें बच्चों को पंखों तले समेट लेती है. पंख फड़फड़ाने की व्याकुल आवाज फड़-फड़-फड़! बस, और कुछ नहीं.

कमरे के चार कोनों में चार प्राणी अपने-अपने मातम में चुप हैं. दाहिने कोने में कंबल से आपाद मस्तक ढंके निरंजन धीमी आवाज में ज्यों आत्मालाप कर रहे हों, "मैं सोच रहा हूं."

जवाब में कोई होंठ नहीं हिल रहा. "मैं सोच रहा था" पलक झपकते वर्तमान भूत बन जाता है और भूत दोबारा लौट आता है, "मैं सोच रहा हूं"

जाहिर है, निरंजन कमरे में सिकुड़े-सहमे बैठे घर के प्राणियों तक कोई बात पहुंचाना चाहते हैं. अपना सोच जैसा कुछ. लेकिन वे यह भूल रहे हैं कि और लोग भी तो कुछ न कुछ सोच रहे होंगे. मसलन बूढ़ी दादी सोच रही है, सालों-साल पहले सुनी-घटी वारदातों के बारे में. अतीत की लंबी गुफाओं से गुजरती हुई.

छह सौ साल ! कुछ-कुछ इतने ही साल हुए होंगे, कह रहा था मास्टर दीनानाथ, जब अपनी इसी वादी में, पंडितों के कुल ग्यारह घर बचे रह गए थे. 'कशीरि हेन्द काह गरे.' यह गुलाम मुहम्मद पंडित, यह असगर टेंग, वह रफीक बट क्या कभी राधेश्याम पंड़ित और सदानंद टेंग, या शामलाल बट नहीं रहे होंगे?

दादी ने एक बार यही बात कही थी पोते शेखर से. वह हवा में मक्खी उड़ाने के अंदाज में खीझकर बोला था, "अहा! बेकार के कयास ! दादी को कोई काम दे दो मां, बैठे-बैठे साग-वाग ही छांट ले. क्या-क्या तो सोचती रहती है बैठे-ठाले. यह दीन-धर्म की बातें ही आज सभी खुराफात की जड़ बन गई हैं...."

न-न-न की मुद्रा में सिर हिलाती दादी चुप हो गई थी. पर निरंजन बोल उठा था, "क्या पता सच क्या और झूठ क्या है. यों तो 'आतिशे चिनार' में शेख साहब ने लिखा है कि उनके पूर्वज कश्मीरी पंडित थे."

खुराफात की जड़! दादी बच्चों की नादानी पर तरस खाती दोबारा सोच में गुम हो जाती है. नूरा सहेली थी उनकी, बचपन की. फुरसत मिलते ही गप्पें हांकतीं. हारी-बीमारी में एक-दूसरे के सिरहाने बैठतीं. इसी निरंजन को बचपन में माता निकली तो नूरा के साथ जाकर पीर बाबा को नियाज़ रख आई. खान-पान दोनों का अलग पर प्यार में फर्क न आया. बच्चे हंसते, "एक- दूसरी पर जान देती हो तो एक बुशकाब में खाना क्यों नहीं खातीं?" दादी गंभीर हो जाती. दीन-धर्म तो अपना-अपना पर प्यार-मुहब्बत साझा है. दादी-नूरा एक साथ हारी पर्वत जातीं, दादी चक्रेश्वर की सीढ़ियां चढ़ती, नूरा मस्जिद में माथा नवाती. हज़रत बल के आगे दादी का माथा भी झुक जाता. कंठ काका जब वितस्ता किनारे काली मां की पूजा कराता श्लोकों के साथ ऊपर मस्जिद में बैठे मु की अज़ान उसमें धुल जाती. लेकिन बच्चे सब क्या जानें....

अब तो यह नई बात दादी सुन रही यह घरों में चिट्ठियां फेंककर धमका "चले जाओ, घर-बार छोड़कर, नहीं

रेखांकन: हुसैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुन दिए जाओगे..."

शिव-शिव! दादी क्या कहें? कहा था नवदेवी ने. वे लोग दूरदर्शी थे. जानते थे. तभी तो.... "वेथे होखन ते हेनर ग्रज़न. तेलि मालि आसि वांदर राज...."

(नदियां सूखेंगी और गंदे नाले गरजने लगेंगे. तब बंदरों का राज होगा....)!

वितस्ता देखो, सूखकर कांटा हो गई है. भरी-भरी गाभिन स्त्री-सी गुमान से डोलती थी. अब मटमैली तलैया नजर आती है और राजा ? कहां है राजा ? राजा होता तो कोई न्याय-कानून भी तो होता ! बंदरों की जमात वादी में घुस आई है. तोड़-फोड़ तो होगी ही.

दादी आतंकवाद शब्द से अपरिचित है. प्रलय और रौरव नरक की बातें उसने सुनी हैं. कल्याण पढ़ती रही है न! अभी परसों खिड़की का परदा जरा-सा खिसकाकर बीच राह पड़ी खून से लथपथ लाश देखकर उसे लगा कि कोई भयानक दैत्य वादी में घुस आया है, एक-एक कर उठा लेगा लोगों को. लोगों की नीयत में फर्क जो आ गया है.....

फिरन के भीतर कांगड़ी के ऊपर झुकी शीला कुछ न सोचती भी सोच रही है. आज तो निभ गया. थोड़ा 'वारिमुठ' पड़ा था हांडी में, सो भात के साथ बच्चों को परोस दिया. शलगम, होगाड़, आलू, कुछ भी तो नहीं है कल के लिए. यह कर्फ्यू हट जाए तो शेखर को बाजार भेज कुछ सौदा-सुलुफ मंगा ले.

"न-न, शेखर को नहीं, वह खुद ही अपने सोच को झटक लेती है, खुद ही हब्बा कदल चौक जाकर कुछ सब्जी-वब्जी ले आएगी. शेखर को नहीं भेजना. क्या पता पीछे से कोई... हुआ है ऐसा. बेचारे सतीश का क्या दोष था ? पुकार पर दौड़ा आया दवाई का बक्सा लेकर, सोचा कोई जरूमी हो गया है, दवाई लगा देगा, तभी पीछे से किसी ने गोली दाग दी. यों कर्फ्यू खुलते ही राशन की ट्रकें आती हैं पर उन लोगों ने मना किया है, कुछ नहीं लेना. बायकाट करना है. सरकार का विरोध करना है. शेखर का खून गरम है. मानेगा थोड़ी?

उन दिनों दादी चक्रेश्वर की सीढ़ियां चढ़ती, नूरा मस्जिद में माथा नवाती. हज़रत बल के आगे दादी का माथा भी झुक जाता. कंठ काका जब वितस्ता किनारे काली मां की पूजा कराता तो श्लोकों में मुल्ला की अज़ान भी घुल जाती

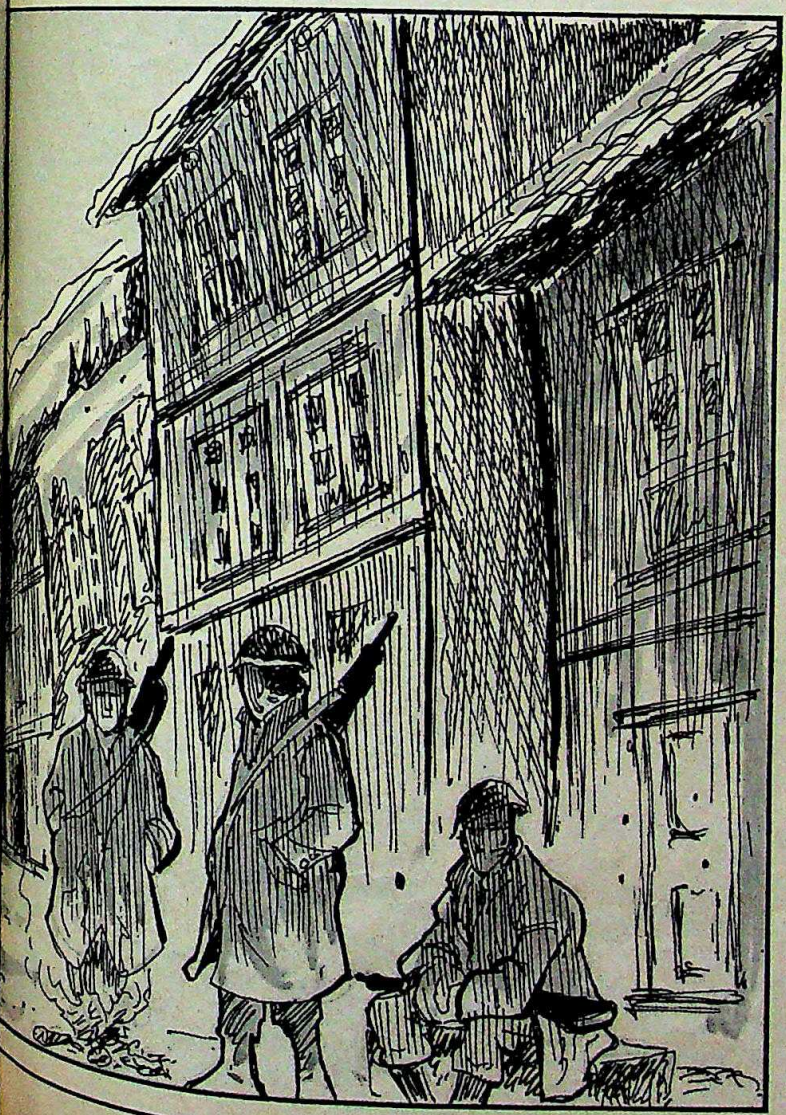

"सुन रही हो?" अब निरंजन उसी से मुखातिब है.

"हूं-ऽऽऽ!" गरम सांस-सा हुकारा.

"तुम लोग नन्नी के पास चले जाओ उधमपुर! तुम, बहुएं, बच्चे और अरुण, शेखर!"

"हां! दो कमरों के किराए वाले घर में वह अपने ससुराल के दस जनों का टब्बर पालेगी और हम गली में बिस्तरा डाल देंगे. वह भी करते पर तुम ? प्राण इधर, शरीर उधर. न, हमसे न होगा."

यह शीला है, बहुत कम बोलने वाली ! 'तबकनार', 'कबरगाह' बनाने का मौका कभी नहीं मिला पर 'वोस्तहाख' और 'ससनदरू' शौक से बनाकर पति और बच्चों को परोसती है और उनके चेहरे पढ़ती है. कहे भले ही कुछ नहीं पर चेहरा तो संतोष से चमक उठेगा ही. बस, इतना ही सुख उसे चाहिए. पति और बच्चों का सुख. वह कैसे जाएगी?

"तो फिर कैसे होगा? इधर तो हालात....."

"जो सबका होगा, हमारा भी होगा."

निरंजन झुंझला जाता है. कोई उपाय तो बताएगी नहीं. बस, यों ही हर बात पर लीर फेर देगी. निरंजन कुढ़कर बुड़बुड़ करने लगता है. उसका अखंड विश्वास है कि औरत जात मुसीबत के वक्त ढंग से सोच नहीं सकती. मर्द को ही कुछ उपाय करना होगा.

"उपाय क्या है ? बहुओं का गहना-गुरिया बैंक के लॉकर से निकाल लाएं? उसे रास्ते में बदमाश लूट ले गए तो? अब वे भी जान गए कि तुम भागने की फिराक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो. अटैची-बक्सा लेकर जा न पाओगे. हम खाली हाथ जाकर किसके दरवाजे पड़े रहेंगे. कौन है अपना उधर? क्या खाएंगे, क्या ओढ़ेंगे...?" शीला का गला रुंध जाता है.

"जो जाते हैं, उन सभी के नातेदार नहीं हैं वहां. बस, जब तक हालात कुछ सुधर जाएं."

निरंजन अंधेरे में जुगनू तलाश रहा है.

"सुधर गए हालात!" यह अरुण है.

"सरकार आतंकवादियों को पकड़ने के लिए घरों में छापे मारती है तो लोग हाय-तौबा मचाते हैं. ऐसे में कोई कुछ नहीं कर सकता."

अरुण नाराज है. उसकी जिंदगी भर की शिकायतें इधर लावा बनकर फूटने लगी हैं. "पिछले तीनेक सालों से हालात बराबर बिगड़ते जा रहे हैं. मैंने कितना कहा, जाऊंगा कहीं बाहर. मौसा कुछ मदद करते उधर बंबई में. पर आप तो अपना बहिश्त छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते थे. साथ में हमें भी....."

"अरुण!" शीला बेटे को आंख के इशारे से बरज देती है. "अब यही वक्त है अगली-पिछली शिकायतों का दफ्तर खोलने का?"

"कुछ बन गया होता वहां, अब तक. इस वक्त अंधेरे में रास्ता तो निकल आता."

इधर दो महीनों से तनखा भी बंद है....

शेखर कमरे के अंधेरे में चुप बैठा है. क्या सोच रहा है वह ? कौल साहब ने कहा था, वितस्ता में जहर फैल गया है. सवाल यह नहीं है कि यह जहर की पोटली कौन नदी में डाल गया, सवाल यह है कि इसे किस तरह साफ किया जाए....

दोनों बहुएं बच्चों को लिए बंद खिड़की की तरफ मुंह किए ऊंघ रही हैं.

निरंजन चुप नहीं बैठ सकता, कोई रास्ता तो खोजना होगा. बहू-बेटियों को कब तक घरों में कैद करके रखा जा सकता है ? उसे जेकेएलएफ वालों की चिंता नहीं, उसे उन बदमाशों से डर है जो बहू-बेटियों से सरेआम छेड़खानी करते हैं और गली-गली में नारे लगाते हैं.

"ऐसा कुछ नहीं बबा." शेखर घर में अकेला लड़का है जो शिकायत नहीं करता.

"जो ऐसा करते हैं वे सब गुंडे हैं. पाकिस्तान में ट्रेंड, फुसलाए गए गुमराह लोग हैं. हमारे पास-पड़ोस में भी तो लोग हैं, वे क्या हमारे दुश्मन हो गए हैं ? रियाज़, नबी, सुलजू.... बल्कि रियाज़ भी दुखी है. अमीरा कदल में उसकी हार्डवेयर की दुकान जला डाली बदमाशों ने...."

"सो तो ठीक, मगर...."

निरंजन शर-शैया पर बैठे हैं, बहू-बेटियों का अपमान उनसे सहा नहीं जाएगा.

"आप लोग चाहो तो जम्मू चले जाओ. यूसुफ शाह का मकान है वहां. वह भी आयशा और हमीदा बी को जम्मू भेजना चाहते हैं." अरुण को शेखर के साथियों से चिढ़ है.

वह क्यों भेजेगा ? उसे क्या तकलीफ है ?"

"कह रहा था, आतंकवादियों का कोई धर्म, ईमान नहीं होता. वे लोग घरों में घुसकर औरतों को जुलूस में शामिल होने के लिए धमकाते हैं. एक घर जलाते हैं तो दस कौन जाने. घर के सभी जन जाग रहे हैं. वह समझ नहीं पाती ज्यादा.

"बबा, मैं टीवी खोल दूं? धीमी आवाज रख लेंगे. हां?"

"न, न." अरुण रबर के बबुए सा बन हो जाता है, "मरवाएगी क्या ? सुना नहीं लाउडस्पीकरों पर क्या घोषणाएं की जा रही हैं. चित्रहार, फिल्म-विल्म कुछ नहीं देखना. चुपचाप सो जाओ !"

मुन्नी नहीं जानती. जेकेएलएफ वाले कौन हैं ? धर्म क्या है और धर्मविरोधी

पर आज वितस्ता में ज़हर फैल गया है. सवाल यह नहीं कि ज़हर की पोटली कौन नदी में डाल गया बल्कि यह है कि इसे किस तरह साफ किया जाए... शेखर वितस्ता का जहर निकालने की कोशिश करेगा. वह अकेला नहीं है. उसके साथ और भी तो हैं

और घर साथ में जल जाते हैं. मारा तो बेकसूर ही जाता है न ?"

"हां-हां, सो तो है."

लेकिन निरंजन कांटों पर कब तक सोता रहेगा ? मकानों की खरीद-फरोख्त बंद है. नहीं तो वह घर-द्वार बेचकर कुछ पैसा इकट्ठा कर लेता. तब कहीं भी जाना मुमकिन होता... अरुण कहता है, "कोई क्यों खरीदेगा. सब तो उनका ही है. उन्होंने हमारे घर आपस में बांट भी दिए हैं."

खिड़की के बाहर अंधेरे में बर्फ का मटमैला उजास फैला है. पहाड़ियों के सिर बर्फ और कुहरे में डूब गए हैं. भीगे ठिठुरे घर सिर झुकाए कैदियों से मायूस खड़े हैं. आंगन की बाईं तरफ सफेदों की लंबी कतारों की कमर बर्फ के बोझ से झुक गई है.

"फिलहाल तो कुछ नहीं हो सकता. रामबन, रामसू के पास भारी चट्टानें गिरने से रास्ते बंद हैं"

बंद! बंद! वे ज्यों कंसन्ट्रेशन कैंप में बंद कर दिए गए हों. सजायाफ्ता कैदी. जाने क्या होगा. लेकिन किस सज़ा के लिए यह कैद?

मुन्नी नींद में चौंककर उठ बैठी है या शायद सोई ही न हो,

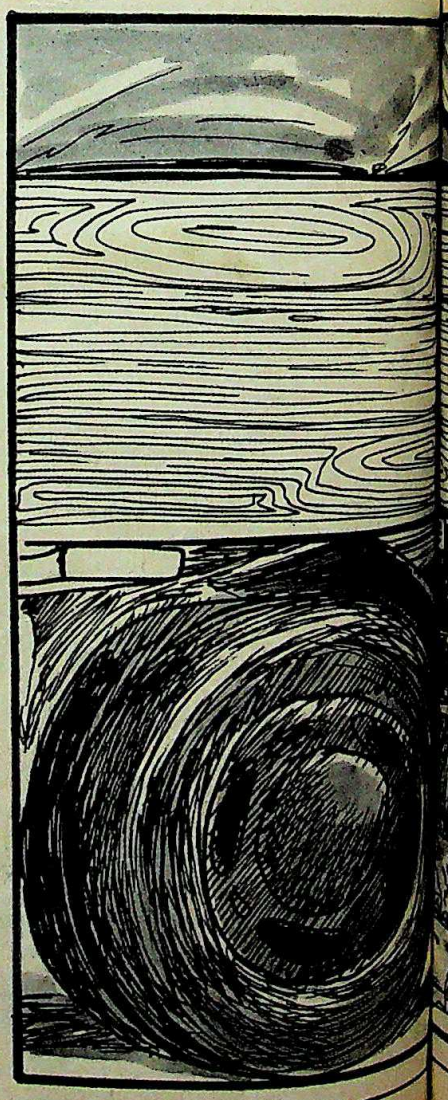

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ? उसे दुख है वह चित्रहार नहीं देख पाती.

शेखर ट्रांजिस्टर कान से लगाए समाचार सुन रहा है. बाहर सिपाही गश्त लगा रहे हैं. बर्फ पर बूटों की धप्प-धप्प जारी है.

"कौल साहब....की हत्या...."

शेखर के सीने में क्या किसी ने कटार घोंप दी ?

"ओ गॉड!"

"क्या है ? मुझे दो." निरंजन शेखर का चेहरा देख कांप उठता है. ट्रांजिस्टर कान के साथ लगाता है.

"राष्ट्रपति...प्रधानमंत्री...गृहमंत्री...और अनेकों व्यक्तियो ने इस जघन्य कांड की निंदा की है... दफ्तर में रहता था. उस दिन घर गया था, बूढ़े बीमार माता-पिता को देखने."

शेखर कुछ नहीं सुन रहा, कौल साहब ज्यों सामने खड़े हो गए हों. ऊंचा माथा, दूर तक देखती आंखें.

"ये आतंक भरा माहौल, बराबर मिलती चेतावनियां, आपको डर नहीं लगता ?"

"डरेंगे तो मौत से पहले ही मर जाएंगे."

मौत से पहले की मौत ? मौत तो एक बार ही आती है. उसने कहा था, बहुत प्रदेशों में घूमा, अब अपनी जन्मभूमि की सेवा करूंगा.

उसने यह भी तो कहा था, वितस्ता में जहर भर गया है, इसे निकालना होगा. नदी के भीतर गोता लगाकर.

जाहिर है नदी लाशों से पट जाएगी. शिव, शिव, त्राहि, त्राहि ! घरवालों के चेहरे स्याह पड़ गए हैं. एक-एक निरपराध की मौत, यानी रोज एक-एक इंच मौत के करीब धकेला जाना.

"तुम लोग चले जाओ, किसी भी तरह, कल ही." निरंजन आखिरी बात कहता है. वह इस कंसन्ट्रेशन कैंप में नहीं रह सकता. किसी भी क्षण मौत के इंतजार में. वह नहीं जानता वह अपने घर में ही क्यों कैद हो गया. लेकिन उसे जाना होगा.

"मैं रहूंगा इधर. आप जाओ," शेखर पहली बार बोला है. उसकी आवाज सपाट और सख्त है. निरंजन चौंककर बेटे को देखता है. कहता कुछ नहीं.

हाई वे खुल गया है. राशन-दवाइयों से भरी ट्रकें आ रही हैं और उन ट्रकों में ठूसमठूस भरे लोग अनाम मंजिलों की ओर जा रहे हैं. एक-एक झोला बैग लिए निरंजन का परिवार भी जा रहा है. वे लोग बेहद डरे हुए हैं. सूखी आंखों में खालीपन का रेतीला विस्तार है. मनों में क्या है ? कौन जाने?

शीला मुड़-मुड़कर स्टेशन आए शेखर को देखती है. उसका कलेजा चिरा जा रहा है. उसने बेटा खो दिया. क्या फिर देखेगी अपने लाल को ? निरंजन चुप हैं. घर का मुखिया जवाबदेह है समूचे परिवार के लिए. उसे भावुकता नहीं सोहती. बहुएं बच्चों को गोदी में चिपकाए दादी के पास सिमट आई हैं. कब चलेगी ट्रक ? न, पीछे मुड़कर क्या देखना ? लेकिन दादी को क्या कहें ? बार-बार मुड़-मुड़कर पीछे देखती है. बौरा गई है, कहती है, "छह सौ साल पहले भी राक्षस आए थे वादी में. बड़ा सत्यानाशी समय. खीर भवानी के कुंड का गुलाबी जल काला पड़ गया था. सुना है उसने, कुल ग्यारह घर रह गए थे उन लोगों के वादी में तब ! पर वह वक्त भी तो गुजर गया था.

पता नहीं दादी कितनी देर जिएगी. उम्र तो हो गई. पर उसे प्रतीक्षा है. वह वक्त भी गुजर जाएगा.

दादी शेखर का माथा दुबली छातियों में धंसाए असीसती है. भविष्यवाणियां करती है. शेखर को दादी का प्रिय गीत याद आ रहा है.

"डुंगलो चं डुंग द्यू नागसुय,
महरम गछख ऊथ राजसुय,
डुंग दिथ मे खारतम जवहरय..."
(ओ गोताखोर तू इस नदी में
डुबकी लगा. तभी इसका रहस्य
जान लेगा. तभी इसके हीरे जवाहर
खोज पाएगा.)

शेखर यह गोताखोर बनेगा. वह नदी से हीरे-जवाहर नहीं निकाल पाएगा. पर वितस्ता का जहर निकालने की कोशिश करेगा. वह अकेला नहीं है. उसके साथ और भी तो हैं. ट्रक स्टार्ट हो गया है. चिनार की छतनार डालें झुकी-झुकी जैसे उन्हें आंचल की ओट दे रही है. शेखर हाथ हिलाता कुछ दूर साथ हो लेता है, "तुम सब जल्दी लौट आना. मैं इंतजार करूंगा." वह कहता नहीं पर जानता है वे लौट आएंगे. यह वक्त गुजर जाएगा. आखिर दादी का बेटा है न???

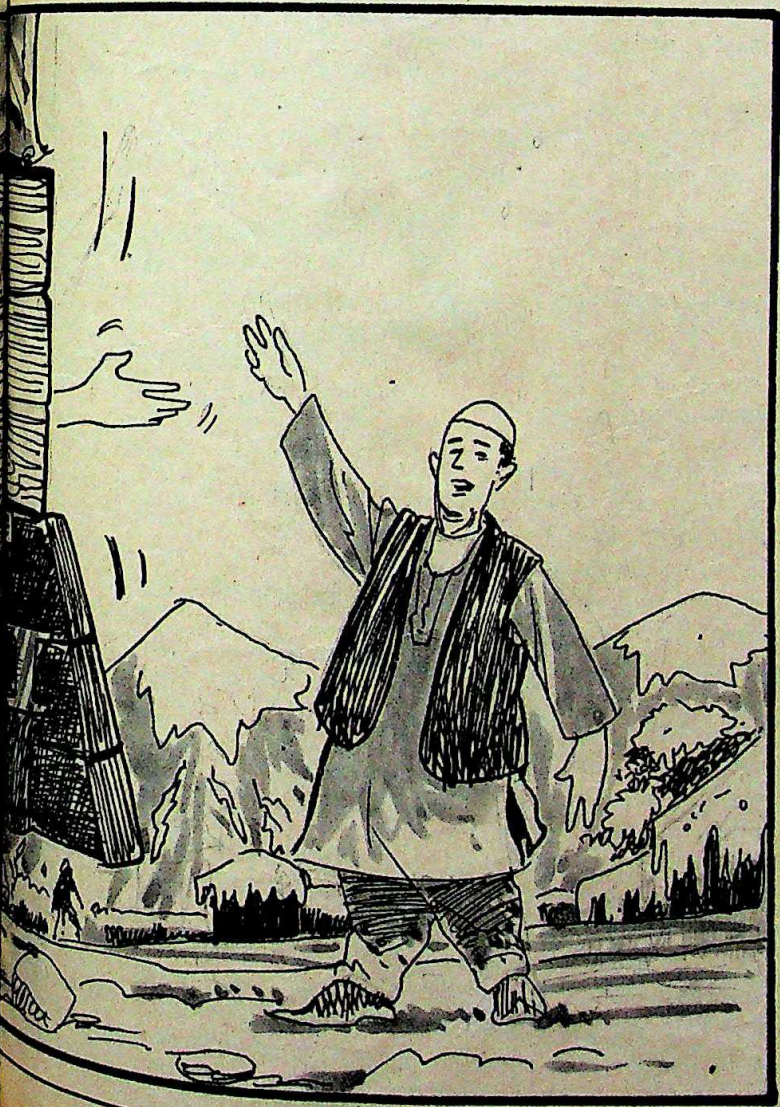

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य संग्रह

सपनों का काव्य

और अनुभवों का परिचय भी

'एक दिन लौटेगी' लड़की गगन गिल का पहला कविता संग्रह है. इसमें 1978 से 1989 के बीच लिखी कुल 54 कविताएं पढ़ते हुए हम एक अकेली और सपने देखती लड़की की दुनिया से गुजरते हैं. वह "बेचारी, अकेली, उदास और हारी हुई" लड़की उस आदमी को ढूंढ़ती है "जिसका मातम उसकी धमनियों में है और इच्छा जिसकी उसकी चूड़ियों में." पास-पड़ोस में रहने वाली जिस लड़की का हम सिर्फ नाम जानते हैं, इस संग्रह की कविताएं उस लड़की के अनुभवों से हमें परिचित कराती हैं.

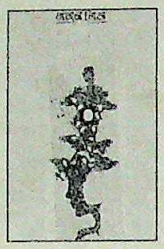

एक दिन लौटेगी लड़की
कविता संग्रह
गगन गिल
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2
कुल पृष्ठ: 118
कीमत: 40 रु.

इन कविताओं में पुरुष का एक 'टाइप्ड' चरित्र उभरता है. इनमें प्रेम को उसकी संपूर्णता में पाने के सपने, घर बनाने के सपने और मृत्यु में जीवन ढूंढ़ने के सपने निजी इच्छाओं में बदलकर व्यक्तिगत हो गए हैं: "नींद उसे आ जाती थी. प्रेम के बगैर. मृत्यु क्यों नहीं आती थी. दोस्ती में प्रेम था प्रेम में इच्छा. इच्छा से मुंह फेरकर वह जाएगी कहां?"—यह इन कविताओं की सीमा भी है और कौशल भी.

'दोस्त के लिए' खंड की कविताएं प्रेम को ध्वस्त करते हुए यानी प्रेम के प्रति नकार दिखलाते हुए, प्रेम को प्राप्त करने की अटूट लालसा और आत्मीय स्वीकार की कविताएं हैं. किसी से बार-बार जुड़ने की इच्छा, इस प्रक्रिया में उभरने वाले संशय और उदासी इन तमाम कविताओं में व्याप्त हैं. अगर केंद्रीय स्वर जैसी बात इस संग्रह में खोजी जाए तो ये कविताएं सहज ही उदाहरण बनती हैं. ध्यान देने की बात है कि इन कविताओं में पुरुष सामाजिक संरचना के उस अंगभूत कारक के रूप में उभरता है जो स्त्री को और उसकी इच्छाओं को परिचालित करता है. उसको स्त्री चुनती है पर उस पर अपना अधिकार जतला नहीं पाती. स्त्री द्वारा पुरुष के संदर्भ में की गई इच्छाएं हर बार क्यों यातना में तब्दील हो जाती हैं? इसके पीछे कोई संगत तर्क सामने नहीं आता.

'शुरू की कविताएं' शीर्षक खंड की कविताएं अभ्यासमूलक दौर की रचनाएं हैं. शब्दों से खेलने की उत्सुकता इन कविताओं में दिखती है.

पंजाब के आतंकवाद पर लिखी कविताओं में दहशत, तनाव और गुस्से को फार्मूले की तरह इस्तेमाल किया गया है. 'चौबीस लाशों के गांव में बाहर', 'कोई है', 'पंजाब की एक बस में'—ऐसी ही कविताएं हैं. संत लोगोवाल की हत्या पर लिखी कविता 'कहां लगी थी गोली' में करुणा का आधिक्य है. इन कविताओं में आतंकवाद के कारण और उनके उत्तरदायी तत्वों की तस्वीर साफ होकर उभर नहीं पाती.

कुल मिलाकर यह व्यक्तिगत अनुभवों की कविताएं हैं. इनमें ऐसी लड़की सामने आती है जो घर की चाह में घर से बाहर जाती है. वहां घर को न पाकर, फिर लौटती है. उसके लौटने से लगता है वह घर से निकलती ही इसलिए है कि फिर घर लौट सके.

—हेमंत कुकरेती

संकलन

आंकड़ों से रूबरू

सवाल-जवाब के रूप में

एथलेटिक्स और क्रिकेट ऐसे खेल हैं जिनमें सबसे ज्यादा रिकार्ड टूटते और बनते हैं. बड़े-बड़े खेल विशेषज्ञ और समीक्षक आंकड़ों के इसी अंकगणित में उलझे रहते हैं कि कितने रन कितने मिनट में बने या कौन से खिलाड़ी ने क्या कुछ अनोखा कर दिखाया. खेलों का पूरा मनोविज्ञान ही इसी अंकगणित पर टिका है. जाहिर है कि आप इतने सारे तथ्य याद नहीं रख सकते. इसी मुश्किल को दूर करने की कोशिश की है विकास लूथरा ने.

क्रिकेट प्रश्नोत्तरी
संकलन
विकास लूथरा
डायमंड पॉकेट बुक्स, दिल्ली
पृष्ठ: 238;
मूल्य: 20 रु.

डायमंड पॉकेट बुक्स ने विकास की एक पुस्तक छापी है—क्रिकेट प्रश्नोत्तरी. नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें क्रिकेट के बारे में सवाल-जवाब होंगे. 23 अध्याय में बंटी इस पुस्तक में क्रिकेट के इतिहास से लेकर मौजूदा स्थिति तक के बारे में करीब दो हजार सवाल-जवाब हैं. पहले सवाल और बाद में उनके जवाब.

यूं तो ऐसी पुस्तकों में पढ़ने लायक कुछ नहीं होता और न ही आप इससे क्रिकेट के विकास क्रम को ठीक से समझ ही पाएंगे लेकिन विभिन्न आंकड़ों को इकट्ठा करके अपने पास रखना भी कठिन है. ऐसे में यह पुस्तक उपयोगी हो सकती है.

पुस्तक की शुरुआत होती है क्रिकेट के इतिहास से. इस अध्याय में 136 सवाल हैं. जिन लोगों ने नेहरू बुक ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित 'क्रिकेट' पुस्तक पढ़ी होगी,निश्चित तौर पर वे 'क्रिकेट प्रश्नोत्तरी' में दिए गए क्रिकेट के इतिहास को उससे कुछ अलग पाएंगे. कुछ महीने पहले एक समाचार एजेंसी ने भी क्रिकेट की शुरुआत 2500 साल पहले भारत में मानी. विकास ने इसी तथ्य को अपनी इस पुस्तक में प्रमुखता से समेट लिया है.

हिंदी में छपने वाली तमाम क्रिकेट पत्रिकाओं में हर महीने ऐसे ही पचासों सवाल-जवाब छपते हैं—अगर आप दो चार साल की पत्रिकाओं से सारे सवाल-जवाब इकट्ठे कर लें और उन्हें एक क्रम दे दें तो आप भी एक क्रिकेट प्रश्नोत्तरी आसानी से तैयार कर सकते हैं. लेकिन इन पत्रिकाओं में छपने वाले आंकड़ों की विश्वसनीयता पर प्राय: सवालिया निशान लगते रहे हैं.

'क्रिकेट प्रश्नोत्तरी' ऐसे ही तमाम सवालों का क्रमबद्ध संकलन है. लेखक ने कोशिश की है कि वह यथासंभव सही और संपूर्ण जानकारी दे लेकिन सवाल-जवाब ढूंढ़ते ढूंढ़ते ही बहुत सारा वक्त निकल जाता है. इस मुश्किल को आसान करने के लिए ही इसे 23 हिस्सों में बांटा भी गया है. और फिर क्रिकेट पत्रकारिता के बारे में भी इसमें 35 सवाल हैं जैसे गावसकर ने जो चार पुस्तकें लिखीं वे कौन-कौन सी हैं, इरापल्ली प्रसन्ना ने कौन सी पुस्तक लिखी, 'फास्ट मैन' का लेखक कौन है आदि.

कुल मिलाकर क्रिकेट के आंकड़े बटोरने के शौकीन इस पुस्तक के लेखक का यह प्रयास सराहनीय कहा जाएगा—खासकर बच्चों के लिए यह पुस्तक काफी दिलचस्प साबित होगी.

—अतुल सिन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदमाश मोटू के लिए

रोती पिंकी के लिए

छोटू के लिए

प्यारी प्रीति के लिए

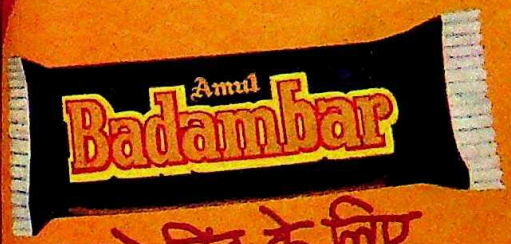

चम्चे चिंटू के लिए

मेरी टीचर के लिए

यह सारे प्रेमभरा मेरे लिए

अमूल चॉकलेट–प्यार की मीठी भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Japanese state-of-the-art.

VIDEOCON

AIR CONDITIONERS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

troducing Videocon Air Conditioners.
anufactured under D & D supply agreement ith Matsushita Electric Company, Japan, the wners of brand name 'National'.

In technology that's state-of-the-art or in artisitc pursuits, the Japanese are born inventors, innovators.

Now, Videocon brings home Japanese expertise through air conditioners that incorporate the world's most advanced technology.

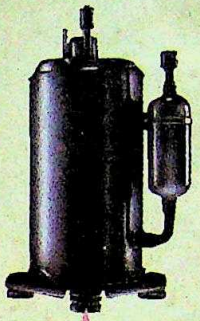

High Performance Rotary Compressor

It's what separates the Videocon Air Conditioner from all other air conditioners in India. A compressor so compact, with cooling efficiency that's at par with International Standards. At the same time the design is tough enough to withstand Indian tropical conditions.

Super Quiet Operation

The Videocon Air Conditioner incorporates an ultra thin heat exchanger and specially designed sirocco fan, propeller fan, fan motor and rotary compressor. What's more, the rotary compressor is mounted on a vibration-absorbing rubber base and the entire air conditioner housed in heavy insulation.

All this gives you a whisper quiet operation.

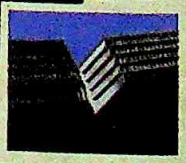

High-Energy Efficiency Design

Engineered to operate on as little energy as possible, it can save on electricity bills. All this being possible due to the Louver Fins, Grooved Copper Tubing and the Rotary Compressor.

4-Way Air Deflection System

At the touch of a switch, you can control the air direction from side to side. While the louvers adjust the vertical air flow.

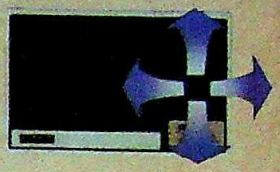

One Touch Air Filter

Quick, easy sliding of the filter, without removing the grill facilitates cleaning. You don't have to rely on a technician.

Super Service

The Videocon factory-trained technicians posted in every city can give you service that's most prompt and reliable.

So, add a touch of Japanese art in your home. Make room for the Air Conditioner most advanced and elegant.

Yes, I am impressed with the features of the Videocon Air Conditioner.
Please send me more information on the product.

Name: _____

Designation: _____

Organisation: _____

Address: _____

Mail Coupon to: **Videocon International Ltd.**
Post Box No. 11741
Nariman Point, Bombay 400 021.

1.5 ton Air Conditioners in Ivory White and Wood Grain finish.

1 year warranty

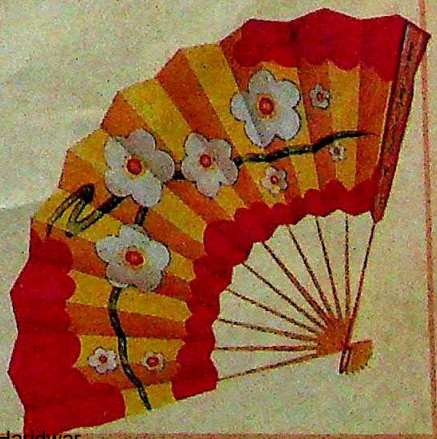

Exceptional. Sensational. So National.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाच्छानी; 'आइज ऑफ स्टोन' का दृश्य: पुरस्कृत

◆ पिछले महीने पेरिस में हुए 12वें अंतरराष्ट्रीय 'विजुअल एंथ्रोपलॉजी ऐंड सोशल डाक्युमेंटेशन' समारोह में **निलिता वाच्छानी** की फिल्म 'आइज ऑफ स्टोन' को सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र का पुरस्कार मिला. राजस्थान में फिल्माई गई 96 मिनट की यह फिल्म औरतों के प्रेतबाधा-ग्रस्त होने और उनकी झाड़-फूंक के अंधविश्वास के बारे में है. 30 वर्षीया निलिता कहती हैं, "हालांकि इस फिल्म का कथ्य तो भारतीय है पर दुनिया भर के लोगों में ऐसे अंधविश्वास कायम हैं. इसकी सफलता के पीछे यही बात है."

◆ विनाश और खून-खराबा छोड़कर वे अब सुर साध रहे हैं. उन्होंने हथियार से पूरी तरह किनारा कर लिया हो, ऐसी बात नहीं. लेकिन प्रसिद्ध खलनायक **अमरीश पुरी** बहुत जल्द हंटर-गोलियों की भाषा के बजाए गले से ज्यादा काम लेंगे. उन्होंने पहली बार 'हातिमताई' के लिए गाया. जुल्म की दुनिया के इस बादशाह ने 'आज का अर्जुन' में जयप्रदा के लिए "माशूका माशूका" जैसा प्रेम गीत भी गाया है. यही नहीं 'गर्जना' में तो उन्होंने

पुरी: गाना गाएंगे

श्रीदेवी के साथ नृत्यगान भी किया है. अपनी इस नई उपलब्धि के बारे में पुरी कहते हैं, "हम किसी टोकरी में रखे फलों की तरह हैं. आप जो भी चाहेंगे, हम निकाल देंगे." जनाब तभी तो आप सिनेमा की मायावी दुनिया में टिके हुए हैं!

◆ उसके जिस्म में खून तो नहीं दौड़ता लेकिन कंधे और बांह के साथ कमर सलामत है. आवडी में तैयार होने वाले अत्याधुनिक टी-72 टैंकों के निर्माण के दौरान सूक्ष्म वेल्डिंग के जटिल काम को यह रोबो किसी आदमी के मुकाबले तिगुनी तेजी से कर लेता है. 65 लाख रु. की लागत वाले 'माइक्रोप्रोसेसर कंट्रोलर इंडस्ट्रियल' रोबो, **मॉलिन** के निर्माण की परिकल्पना मद्रास स्थित 'मेटलर्जिकल ऐंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स' ने की और इसका उत्पादन 'सिफलेक्स ऑटोमेशन ऐंड रोबोटिक्स' (एसएआर) ने किया. एसएआर के अध्यक्ष विवेक माथुर के अनुसार, "हम रोमांचित हैं. आखिरकार भारत में रोबो का दौर शुरू हो गया है."

◆ फ्रांस में इसी महीने आयोजित हो रहे मोंटपेलिएर के अंतरराष्ट्रीय नृत्य उत्सव में 69 वर्षीय गुरु **मुन्तुस्वामी पिल्लै** को सम्मानित किया जाएगा. मोंटपेलिएर में पिल्लै अपनी शिष्या एलिजाबेथ पेटिट के साथ कार्यशाला का आयोजन करेंगे. कला के माध्यम से फ्रांस और भारत की संस्कृतियों के बीच सेतु का निर्माण करने के लिए पिल्लै को 'शेवलियर द आर्ट्स एट द लेटर्स' पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है. उनके ही शब्दों में, "हमारे नाट्यशास्त्र प्रकृतिपरक हैं. लिहाजा बोध और गरिमा की सहज उपस्थिति आवश्यक है." इसमें संदेह नहीं

पिल्लै और पेटिट: सम्मान

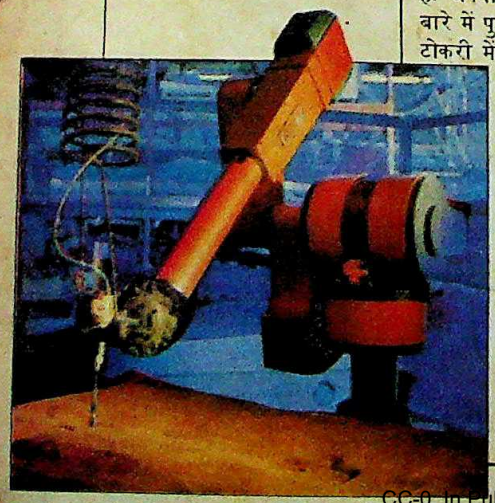

मॉलिन: काम का रोबो

श्रुति: होनहार बिरवान...

◆ उस अवस्था में जबकि ज्यादातर बच्चे सीधे चल भी नहीं पाते, **श्रुति** बेतकल्लुफी से कठिन शारीरिक करतब दिखाती है. व्यायाम कौशल दिखलाने वाली सिर्फ 19 महीने की यह बच्ची संभवतः भारत की सबसे कम उम्र जिमनास्ट है. उसके पिता वी.एन. प्रसूद केरल राज्य परिवहन निगम में कुश्ती प्रशिक्षक है और अपनी नन्ही बेटी को पिछले छह महीनों से सप्ताह में दो बार तिरुवनंतपुरम स्थित जिमनास्टिक्स प्रशिक्षण केंद्र में ले जाते रहे हैं. श्रुति के पिता के अनुसार, "हमने उसे कभी कुछ नहीं सिखाया. इस ओर उसकी रुचि अपने आप विकसित हो गई." केवल दस वर्ष और बीतने दीजिए, और फिर हमें भी खबर रहेगी कि उसका खेल बचपना भर ही नहीं था.

द बॉक्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER TIPPED
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

HTA 3987

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

आई टी सी लिमिटेड का अपना एक ब्राण्ड भारत में निर्मित

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO. R.N. 45223/86

कावासाकी RTZ. ख़ुद आज़माइए, पूरा भरोसा पाइए.

चीता.
शानदार जानवर.
कावासाकी RTZ.
शानदार बाइक.
दोनों मजबूत... शक्तिशाली.
क़ातिलाना अंदाज़.
सजीली... रौबदार.
कावासाकी RTZ.
अचूक संतुलन.
रुआबदार लाजवाब सवारी.

bajaj auto

LINTAS BAJ 194 2719 HI

REGISTERED No. LNW/FBD/46/87
D-(C) 14/86

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

31 जुलाई 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

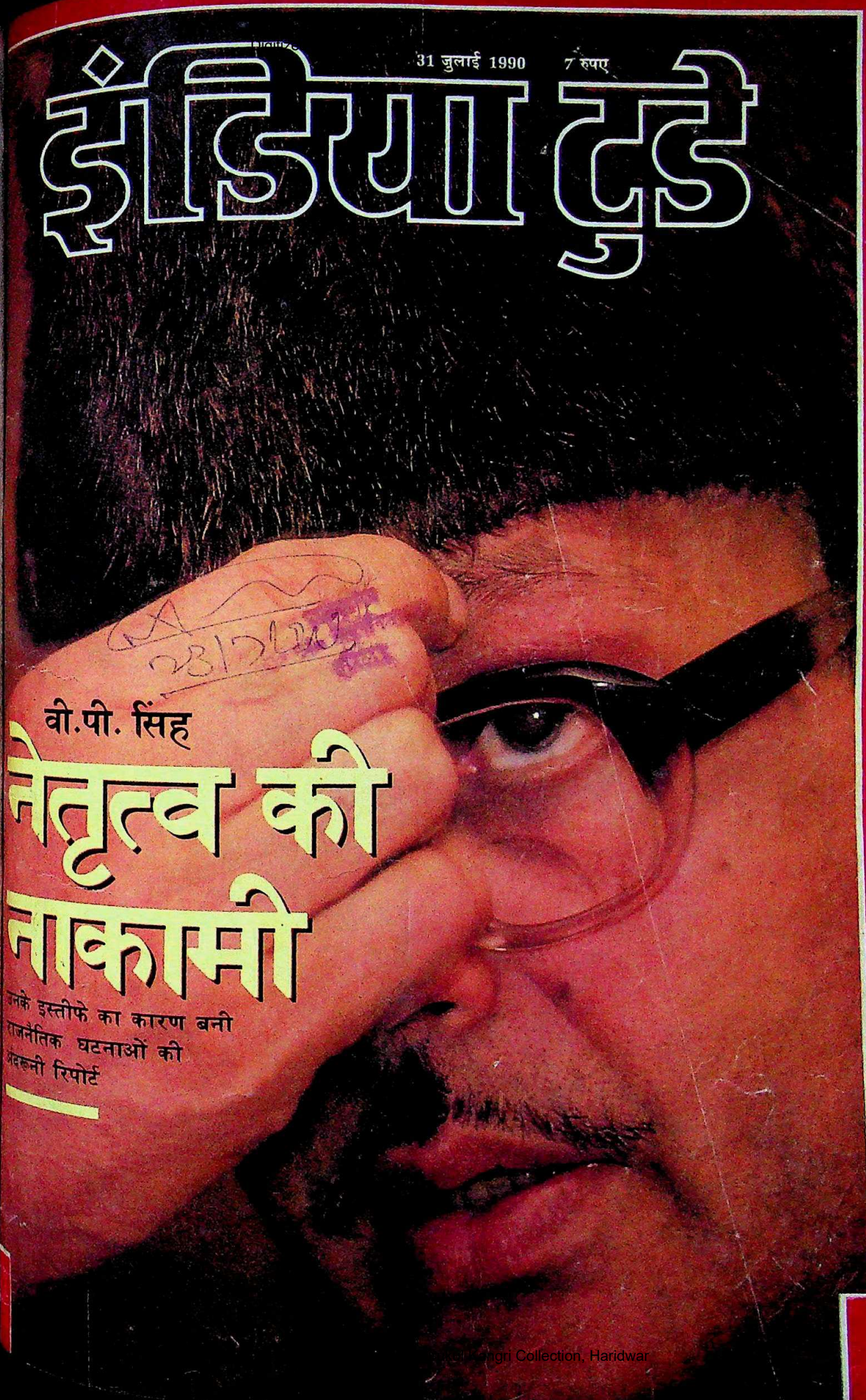

वी.पी. सिंह

नेतृत्व की नाकामी

उनके इस्तीफे का कारण बनी राजनैतिक घटनाओं की अंदरूनी रिपोर्ट

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनिए वही जो सब से जुदा हो

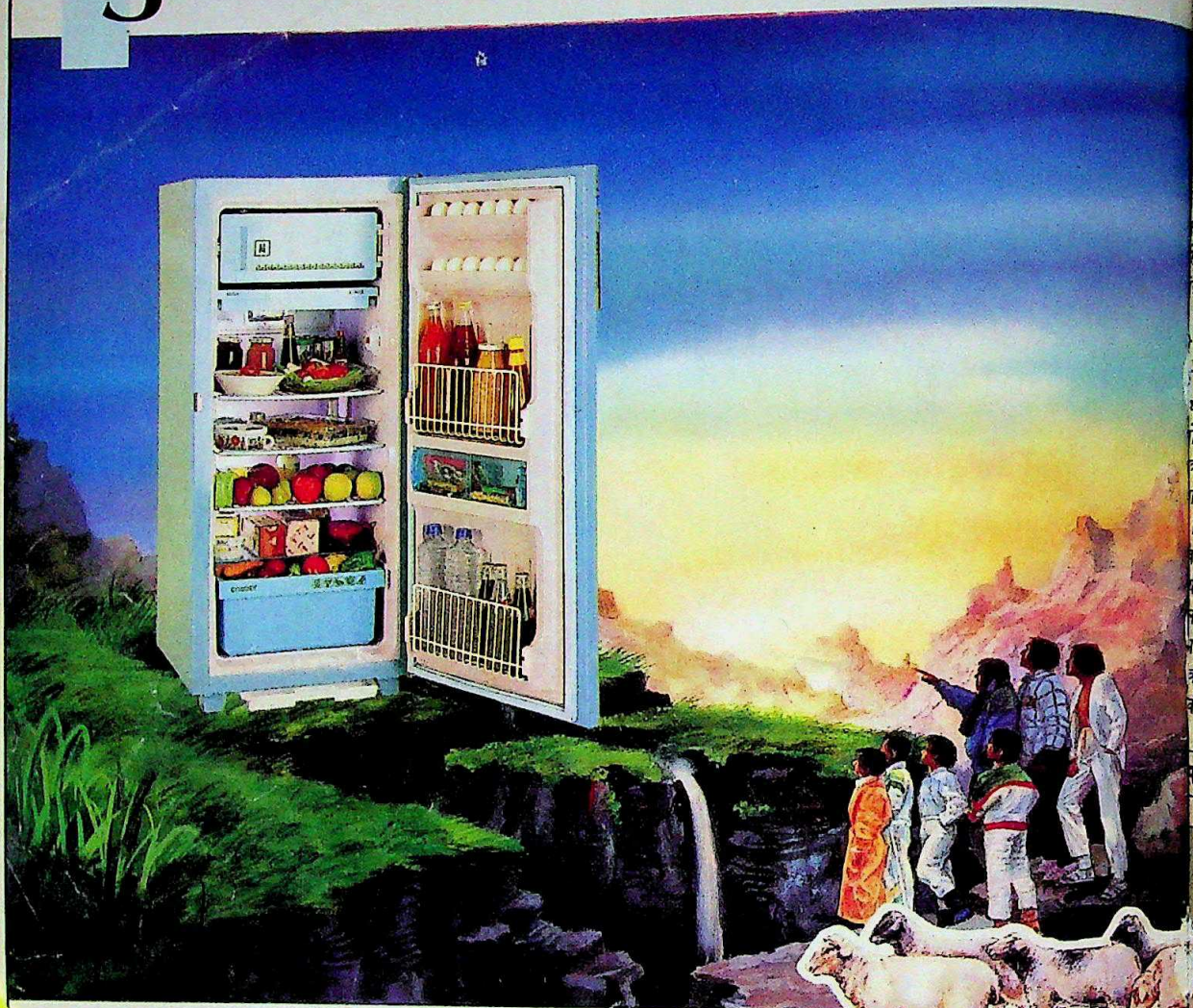

सब से अनोखा सब से अलग यानी ऑल्विन

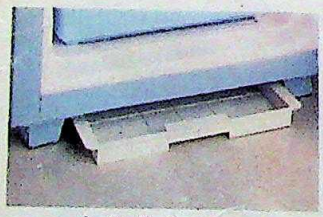

▲ बेआवाज मज़बूत भरोसेमंद आल्विन कम्प्रेसर हिटाची तकनॉलॉजी से बना है। इसीलिए बेआवाज रहे., बिना झंझट काम करे, ▲ टिल्टिग बॉटल रैक्स ताकि बोतलें आसानी से सरकाई जा सकें ▲ डिफ्रॉस्टिग इसके लिये है एक सक्षम, बिना घिचपिच किए, तुरंत "सेल्फ ड्रेनिग सिस्टम" इससे रेफ्रीजेरेटर दोबारा खुद स्टार्ट हो जाता है ▲ वोल्टेज के उतार चढ़ाओ का इस पर कोई असर नहीं होता (170V से 250V) ▲ आल्विन भारत में रेफ्रीजेरेशन के अग्रगामी ▲ 165 लिटर सिंगल डोर और 165, 300 व 380 लिटर डबल डोर मॉडल अनेक रंगों में सात साल की ग्यारंटी और सात साल के "फ्रोटॅक्शन कॉन्ट्रोक्ट" की अतिरिक्त सुविधा भी ▲

ALLW
REFRIGERATO
QUIET · STURDY · FAI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब इत्मीनान रखिए आपने वही चुना है जो सब से जुदा है. ऑल्विन.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिया की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने का सम्मान एक बार मिलना भी हम ी के लिए गौरव की बात है जो इसे खुलकर निकालते हैं. और जब यही ब लगातार दूसरी बार मिले तो ना आनंद होना स्वाभाविक है.

ताजा अंक की तैयारी शुरू ही हमें यह खुशखबरी ी. पिछले वर्ष की तरह बार फिर प्रसिद्ध एशिया फिक वर्ल्ड पब्लिशिंग ेस ने सैकड़ों पत्रिकाओं में **इंडिया टुडे** को ही **1989** सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का सम्मान योग्य माना. इस सम्मान के थ इस पत्रिका ने तीन अन्य ों—सर्वश्रेष्ठ आवरण, छाया त्रों के उपयोग में दूसरे नंबर पर रहने और सर्वश्रेष्ठ ादकीय लेखन का पुरस्कार भी पाया.

जिस आवरण को सर्वश्रेष्ठ माना गया, वह इस का का 15 मार्च का अंक था जो 'सैटैनिक स्टार्म' फ से विवादास्पद लेखक सलमान रुश्दी पर था. छाया चित्रों ा पुरस्कार पत्रिका के पूर्व फोटो एडिटर रघु राय द्वारा 'ऑफ न बांडेज' (15 मई) नामक छाया लेख के लिए खींचे गए त्रों के लिए मिला. कुरकुट नामक जिस सारस से जुड़ी ये ीरें थीं, उसे खजुराहो गांव के लोगों ने पाला-पोसा. वैसे, अब कुरकुट इस दुनिया में नहीं रहा. सर्वश्रेष्ठ संपादकीय लेखन का पुरस्कार 15 नवंबर के अंक में डिप्टी एडिटर दिलीप बॉब की लिखी विश्लेषणात्मक कथा 'फाइव इयर्स ऑफ राजीव गांधी: द प्रॉमिस दैट फेल्ड' को मिला.

पुरस्कृत आवरण, छाया-लेख और लेख

बड़ी बात यह है कि यह सम्मान भारतीय पत्रकारिता के अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर उभरने और असर डालने का जीता-जागता सबूत है. इसी सोच के हिसाब से हमारी पत्रिका ने चीन, पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ के तेज घटना-क्रमों पर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिता की बराबरी करने के लिए भारतीय पत्रकारिता द्वारा अब तक तय (भौगोलिक) लक्ष्मण रेखा को भी पार किया है.

पुरस्कार पाने की खुशी के साथ निहाल होकर बैठ जाने की जगह हमें इसके साथ आई जिम्मेवारी का एहसास भी है, जो हमें अपने पेशे की नई ऊंचाइयां पाने की प्रेरणा देती है. आगे हमारा यही प्रयास होगा भी. कहते भी हैं कि पत्रकारिता में किसी का मोल उसकी नई कथाओं से ही होता है.

अरुण पुरी

पखवाड़े

त्व की नाकामी

हरियाणा में ओमप्रकाश चौटाला के ारा मुख्यमंत्री बनने से वी.पी. सिंह सर- के लिए एक बड़ा राजनैतिक संकट खड़ा या है. तीन केंद्रीय मंत्रियों के इस्तीफे के ही असंतोष और भड़कने के आसार हैं.

आवरण कथा 14

मानव अंगों की मंडी

जीवित लोगों द्वारा शरीर के अंग बेचने का व्यापार जोरों पर है. गुर्दे, आंख, चमड़ी—सब कुछ बेचा और खरीदा जा सकता है. अंगों की इस खरीद-बिक्री ने गंभीर नैतिक सवाल भी खड़े किए हैं.

खास रपट 42

घुन साफ करने की धुन

बिहार में व्यवस्था सुधार अभियान में लगे मुस्तैदी के साथ मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के लिए वाहवाही का दौर खत्म हुआ और अब मुश्किलें उन्हें घेरने लगी हैं. इस बीच वे नौवीं संतान के पिता भी बन गए हैं.

विशेष लेख 70

ले पन्नों पर

ी .....
ा 7
ख कथा 10
सिंह: नेतृत्व की नाकामी 14
रपट
ख हेगड़े:
गिरी गाज इस्तीफे की 21
हर कदम पर गलतियों के निशान 24

आजकल 26
खास रपट
मानव अंगों की मंडी 42
छाया-लेख 50
विशेष लेख
लालू प्रसाद यादव: घुन साफ करने की धुन 70
इमाम अब्दुल्ला बुखारी:
सियासी दबदबे में इजाफा 74

कुछ अपनी, कुछ परायी 79
आरपार 85
कहानी 88
परदे के उस पार 94
चर्चित चेहरे 98

आवरण: प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने अमरीकनों को ढेर सारे स्टील ट्यूब और लेने की सलाह दी

भारत के लिये विदेशी मुद्रा ज़रूरी मुद्दा है, इसलिये निर्यात से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा कमाना एक प्राथमिकता है। इस उद्देश्य से ८० करोड़ अग्रणी ने, सन् १९८३-८४ में, उन क्षेत्रों में करने का निर्णय लिया जिनमें उसका कोई अनुभव नहीं था।

छः साल बाद टाटा स्टील देश के निर्यातकों में से एक बन गया। इसके प्रमुख में शामिल हैं : यू एस ए, जापान, आस्ट्रेलिया चीन तथा अन्य उल्लेखनीय देशों में हैं, जैसे कटार, मिस्र, टर्की, पश्चिम जर्मनी, ताइवान, इन्डोनेशिया, मलेशिया और अन्य देश। और आधुनिकीकरण के लिये बहुत में उपकरण तथा कच्चे माल आयात के बावजूद टाटा स्टील पूर्णतया एक 'नेट' की हैसियत का बन गया है। सन् १९८

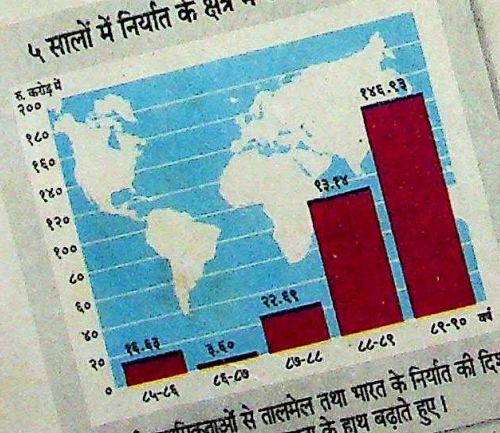

देश की प्राथमिकताओं से तालमेल तथा भारत के निर्यात की दिशा में टाटा स्टील सहायता के हाथ बढ़ाते हुए।

HTA 4056

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड़ी सी कॉफी के साथ
औयर

विदेशी मुद्रा
लिये निर्यात के
मुद्रा कमाना
से ८० करो
में, उन क्षेत्रों
में उसका
टील देश के
। इसके
जापान, आस्ट्रेलि
देशों में है,
जर्मनी,
शिया और
के लिये
माल आयात
या एक 'नेट
है। सन् १९

स्टील ने निर्यात के क्षेत्र में एक सम्मानीय 'ई ई
शील्ड' जीता।

० का दशक टाटा स्टील के लिये निर्यात का
है और एक मार्गदर्शक अब सागर पार देशों
अपनी विशेषज्ञता प्रसारित कर रहा है, ताकि
अवधि तक के लिये भारतीय उत्पादों की
विश्व के बाजार में पक्की हो जाये।

स्टील एक्सपोर्ट्स :

और स्टील	-वायर रॉड, रीइन्फोर्सिंग बार, स्ट्रकचरल्स, ट्यूब, वायर, बार, क्रेन, रोल्स, बेयरिंग आदि।
निर्यात बेयरिंग	
माल	-क्रोम अयस्क व कॉन्सेनट्रेट्स, मैंगनीज़ अयस्क, फेरो-मैंगनीज़, फेरो-क्रोम, चार्ज क्रोम, रिफ्रैक्टरीज़ आदि
सामग्रियाँ	-गोलमिर्च, कॉफी और ब्लैक टाइगर झींगा।

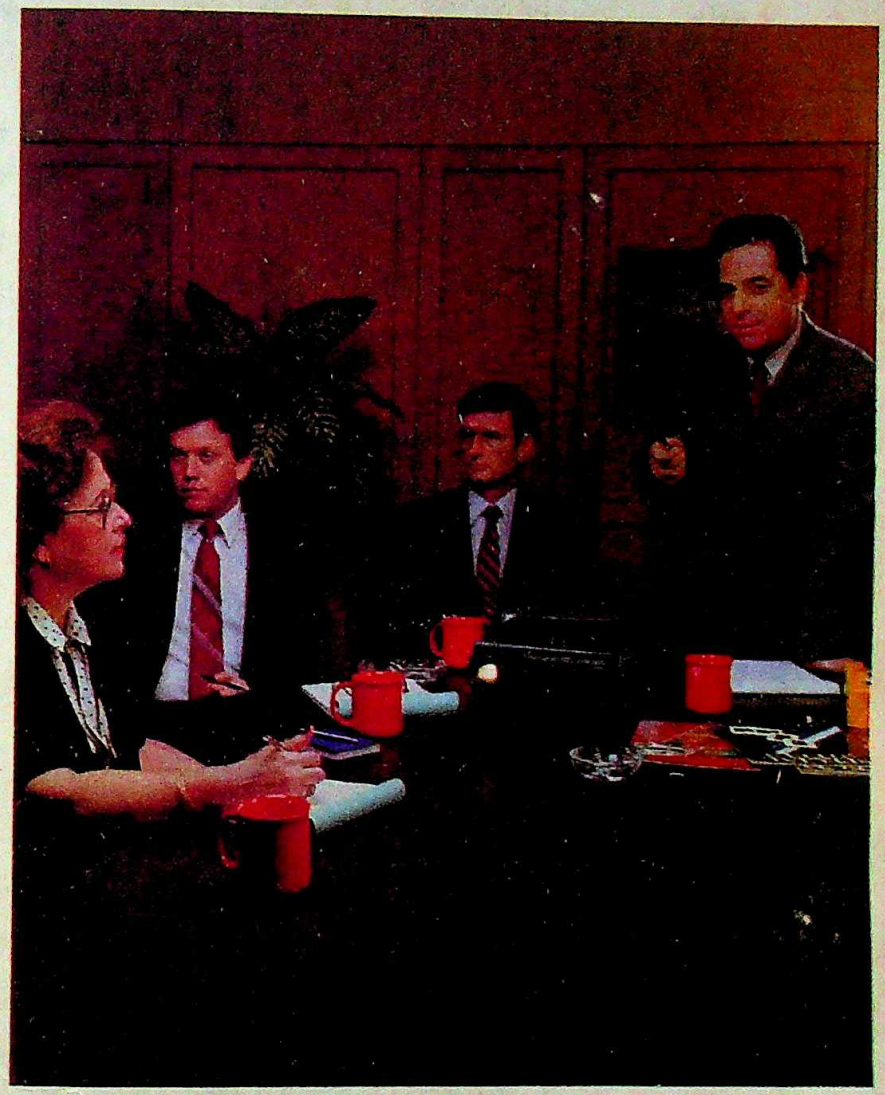

चीफ मार्केटिंग मैनेजर-निर्यात, अमरोंकी ग्राहकों से बातचीत करते हुए

TATA STEEL
DECADE OF EXPORTS
1990 2000

टाटा स्टील
सबसे पहले, अब भी सबसे आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रिकॉर्ड विदेशी मुद्रा आमदनी: १४६ करोड़ रुपये

भारत में निर्मित

आई टी सी: चुनौती का सफल जवाब!

"आज हमारे सामने जो चुनौती है, उसे हमें जीतना है। हमारे प्रयासों से, 'भारत में निर्मित' मुहर गौरव का प्रतीक बने, जो न सिर्फ देश में बल्कि विदेश में भी सम्मानित हो। ऐसा तभी संभव है, जब हम कीमत और क्वालिटी के क्षेत्र में, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक़ाबला जीत लें।"

जे. एन. सप्रू, चेयरमैन, आई. टी. सी. लिमिटेड,
जून १९८९ में, शेयरहोल्डर्स की वार्षिक आम सभा में,
दिये गये भाषण का अंश

सन् १९८८-८९ के नौ-मासिक अवधि में, अर्जित ५६ करोड़ रुपयों के मुक़ाबले सन् १९८९-९० में आई टी सी को १४६ करोड़ रुपये विदेशी मुद्रा की आमदनी हुई। यह रिकॉर्ड-प्रगति कम्पनी की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। आई टी सी भारतीय उत्पादनों को विश्व-बाज़ारों में लोकप्रिय बनाने को कृतसंकल्प है। आई टी सी ऐसी उद्यमशील कम्पनी है, जो सच ही 'भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय' है, और जिसने 'भारत में निर्मित' मुहर को गरिमा प्रदान की है।

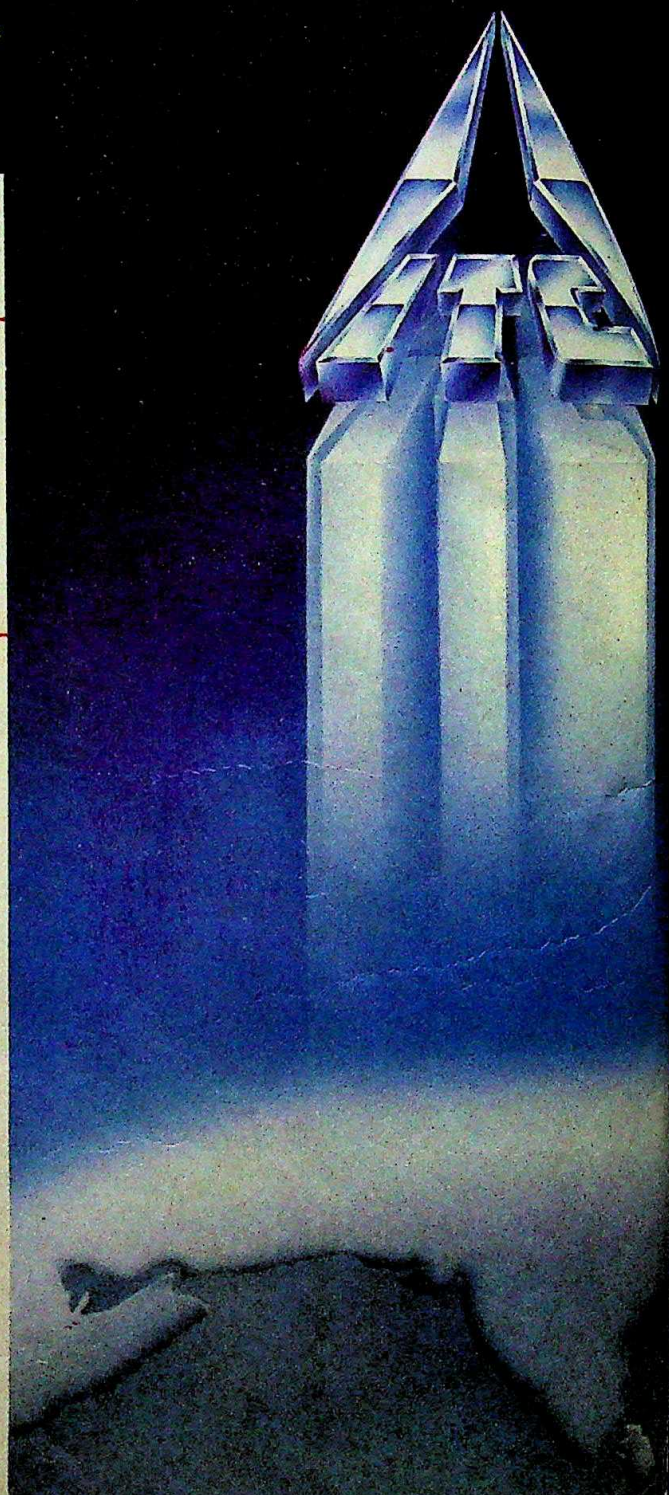

नई दिशाएँ, नई आशाएँ

इंडिया टोबैको डिविज़न • इंडियन लीफ़ टोबैको डेवलपमेन्ट डिविजन • पैकेजिंग ऐण्ड प्रिन्टिंग डिविज़न ऐग्री-बिज़नेसेज़ डिविज़न • वेल्कमग्रुप-होटल्ज़ डिविज़न एक्सपोर्ट्स् डिविज़न

Contact ITC 64 90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

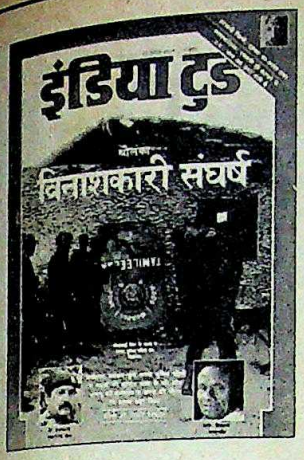

सबक लें

श्रीलंका के 'विनाशकारी संघर्ष' पर आवरण कथा (15 जुलाई) वहां की ताजा स्थिति का ब्यौरा तो है ही, भारत सरकार और यहां के अलगाववादी संगठनों के लिए सबक भी. चीतों की दुर्दशा से अलगाववादी संगठनों को सीख लेनी चाहिए कि हिंसा किसी समस्या को हल नहीं कर सकती. —**अनुपम नीलाम**, नई दिल्ली

तार्किक विश्लेषण

आवरण कथा 'हमारा मोर्चा' कितना मजबूत' (30 जून) संभावित भारत-पाक युद्ध का तार्किक विश्लेषण है. भारत यदि यह युद्ध जीत भी जाता है, तो भी आर्थिक आत्मनिर्भरता के उसके मंसूबे धरे के धरे रह जाएंगे. भारत की सामरिक सफलता का हमें पूरा विश्वास है लेकिन उससे भी ज्यादा इंतजार है भारतीय विदेश नीति की सफलता का.

—**स्वामीशरण वर्मा**, जयपुर (राज.)

■ जब कोई नया खिलाड़ी मैदान में उतरता है तो अपने जौहर दिखाने को छटपटाता है: ठीक वैसा ही हाल बेनज़ीर और वी.पी. सिंह का है. वर्षों से दोनों 'सिंहासन' के लिए छटपटा रहे थे. जब उन्हें पद मिला तो एक-दूसरे पर कीचड़ उछालकर छीछालेदर करने पर तुले हुए हैं. ताकि उनके मतदाताओं (देशवासियों) को लगे कि वे उनके लिए कुछ-न-कुछ कर रहे हैं. —**संजय गुप्ता**, लखनऊ (उ.प्र.)

■ युद्ध की विभीषिका भारत-पाक को विनाश के कगार पर खड़ा कर देगी. भीख में मांगे और जनता की गरदन रेतकर खरीदे हुए अस्त्रों के जखीरे पर इतराना और युद्ध शुरू करना मानवता के विरुद्ध अपराध माना जाएगा. यह कुबुद्धि ही है कि तीन-तीन युद्धों का स्वाद चखने के बाद भी पाकिस्तान गोला-बारूद से ही समस्या का समाधान खोज रहा है.

—**चंद्रशेखर तिवारी**, खड़गपुर (प. बंगाल)

■ सरकार की कमजोरियों व कश्मीर संबंधी कुछ गलत निर्णयों के फलस्वरूप ही पाकिस्तान कश्मीर में स्वरचित षड्यंत्र को जेहाद और जन विद्रोह का रंग दे पाने में सफल हो सकता है. ऐसे में राष्ट्र की आतंरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करना होगा और देश को कमरतोड़ युद्ध में झोंकने के बदले सीमा पर घुसपैठ नियंत्रित करनी होगी. —**गंगाचरण दुबे**, सागर (म.प्र.)

■ हालांकि सैन्य आकलन भारत की जीत दर्शाता है. फिर भी ऐसा कदम उठाने से पहले अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात निहायत जरूरी है क्योंकि आज युद्ध केवल दो देशों का निजी मामला नहीं रह गया है, इससे पूरा विश्व प्रभावित होता है.

—**शुभव्रत अग्रवाल**, रायगढ़ (म.प्र.)

यह कैसा सुराज

'अधजल गगरी प्यासी नगरी' (30 जून) मध्य प्रदेश की जलव्यथा का वास्तविक चित्रण है. स्वतंत्रता के चार दशकों बाद भी प्रदेश की जनता का पेयजल को तरसना दुर्भाग्यपूर्ण है. समस्या का दुखद पहलू यह है कि नगरीय क्षेत्रों में जहां पानी उपलब्ध कराया भी जा रहा है, इसके वितरण में तथाकथित 'सिविल एरियाज' को प्राथमिकता दी जाती है और गरीब बस्तियों तक पानी के थोथे आश्वासन भर पहुंच पाते हैं.

—**ममता इंद्र गुरु**, अंबिकापुर (म.प्र.)

■ यह क्षोभ और दुख की बात है कि सरकार पेयजल के बारे में उतनी गंभीर नहीं है. जो सरकार अपने नागरिकों के लिए शुद्ध जल की व्यवस्था नहीं कर सकती उससे रोजी, रोटी और मकान की उम्मीद क्या की जाए?

—**नेलाद्रि कुमार**, कानपुर (उ.प्र.)

■ बढ़ती महंगाई के शिकंजे से इनसान उबर भी नहीं पा रहा है कि हवा और पानी जैसी प्राणदायक आवश्यकताओं से भी वंचित होना पड़ रहा है. समस्या सीधे-सीधे मनुष्य के अस्तित्व से जुड़ी है इसलिए मात्र सरकारी उपायों की बाट जोहना व्यर्थ होगा. इसके लिए तो व्यक्तिगत एवं संगठनात्मक प्रयास करने होंगे.

—**सतनाम सिंह**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

अच्छा नहीं है

'घात-प्रतिघात के दांवपेच' (30 जून) पढ़कर लगा कि वी.पी. सिंह राष्ट्रीय समस्याओं के बदले राष्ट्रीय राजनीति की तिकड़मबाजी में अधिक व्यस्त हैं. प्रधानमंत्री बनने से पूर्व उनकी छवि एक आदर्श एवं ईमानदार राजनेता की रही है और इसी कारण मतदाताओं ने उन्हें देश का प्रतिनिधित्व करने का अवसर दिया. लेकिन वे 'राष्ट्रीय सरकार' जैसे शगूफे छोड़कर मतदाताओं को निराश कर रहे है.

—**घनश्याम पांडेय**, वाराणसी (उ.प्र.)

■ गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी समाप्त करने के वादे पर चुनाव जीतने वाली सरकार आज जोड़तोड़ की राजनीति में उलझ गई है. और यह सिद्ध हो गया है कि ये समस्याएं आम जनता की नियति हैं. कुर्सीधारियों को संतुष्ट करने के बदले यदि जनता को संतुष्ट किया जाए तो

वर्ष: 4, अंक: 18, 16-31 जुलाई 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिरदत्त सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029320, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321923, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 मेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726. टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनियंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता की निराशा कम होगी.

—उषा किरण शुक्ला, बस्ती (उ.प्र.)

राजनीति की पोल

'संदिग्ध संबंधों से समस्याएं' (30 जून) आज की राजनीति के आधार स्तंभों की ओर इशारा है. गुंडे भारतीय राजनीति के लिए अनिवार्य हैं. मुलायम सिंह यादव ही नहीं, सभी तथाकथित सफेदपोश नेता गुंडों की सहायता के बिना नहीं जीत सकते. फर्क यह है कि मुलायम सिंह यादव इस तथ्य का खुला इजहार कर रहे हैं.

—मनोज मिश्र, जबलपुर (म.प्र.)

■ लेख पढ़कर वी.पी. सिंह की बहुप्रचारित मूल्यों पर आधारित राजनीति की पोल खुलती नजर आई. मुलायम सिंह यादव का तथाकथित (इंकाई) गुंडों की आड़ में अपने अपराधी साथियों और रिश्तेदारों के बचाव का प्रयास बचकाना है. लगा कि यह बातचीत दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के एक प्रमुख प्रतिनिधि के

साथ नहीं बल्कि किसी गिरोह के मुखिया के साथ हो रही थी.

—धर्मेंद्र कुमार मालू, हावड़ा (प. बंगाल)

■ अपने सहयोगियों (अपराधियों) की वकालत करते समय मुलायम सिंह यादव यह भूल गए कि वे प्रदेश के मुखिया हैं न कि किसी गिरोह के सरगना. एक ओर जहां पुलिस ने ऐसे अपराधियों पर कई मामले दर्ज कर उन्हें हिस्ट्रीशीटर घोषित कर रखा है, वहीं मुख्यमंत्री ने उन्हें शराफत का सर्टिफिकेट देते हुए उनके कुकर्मों पर परदा डाल दिया.

—ओंकार सिंह छाबड़ा, जयपुर (राज.)

■ अपराधियों से राजनीतिकों के संबंध भारतीय राजनीति में कोई नई बात नहीं हैं परंतु किसी मुख्यमंत्री द्वारा इन संबंधों को इतने सहज रूप से स्वीकार करना चौंका देने वाला है. चुनाव प्रक्रिया में धन और बाहुबल का प्रयोग बढ़ता जा रहा है. इसलिए देश का सीधा सच्चा नागरिक अब वोट देने से भी कतराने लगा है.

—नीना सक्सेना, झांसी (उ.प्र.)

सामंती मनोवृत्ति

'जबरा मारे रोवै न दे' (30 जून) स्वतंत्र भारत के हरिजनों की सामाजिक स्थिति का हृदयविदारक लेखा-जोखा है.

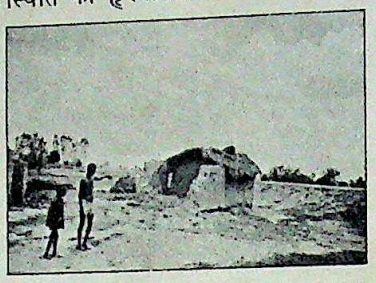

आजादी के बाद हर सरकार हरिजनों के उत्थान का ढिंढोरा पीटती आई है पर हरिजनों की सामाजिक दुर्दशा में सुधार के आधारभूत मुद्दे की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया. हरिजनों पर अत्याचार करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई इसलिए नहीं होती क्योंकि हमारे भीतर सामंतवादी मनोवृत्ति गहरे जड़ जमाए हुए है.

—संजय सिंह, भोपाल (म.प्र.)

■ पढ़कर घोर आश्चर्य हुआ कि जहां सरकार हरिजनों के उत्थान के लिए संविधान संशोधन विधेयक पारित कर रही है, वहीं हरिजनों के उत्पीड़न की घटनाएं बढ़ रही हैं, वह भी बाबा साहेब आंबेडकर के जन्म शताब्दी वर्ष में.

—प्रदीप कुमार वाधवानी, जयपुर (राज.)

चारित्रिक गिरावट

'हर मौसम में उफान पर' (30 जून) पढ़ा. बिक्री में बेतहाशा वृद्धि हो जाने से बियर उद्योग जश्न मनाने की स्थिति में हो सकता है तो सरकार भी इस पर टैक्स की शक्ल में प्राप्त होने वाला मुनाफा बढ़ने पर जश्न में शरीक हो सकती है. लेकिन क्या यह युवा पीढ़ी को बरबादी की राह पर ले जाने का प्रयास नहीं है?

—इंद्रजीत कौशिक, बीकानेर (राज.)

■ क्या जमाना आ गया है कि राम और कृष्ण की इस पावन वसुंधरा में दूध और घी का स्थान बियर ने ले लिया है. बियर के जाम परोसती सैकड़ों मधुशालाएं (पब) इस बात का संकेत है कि सिर्फ बियर ही नहीं, हमारे चरित्र की गिरावट भी हर मौसम में उफान पर है.

—विकास आर्य, नई दिल्ली

भ्रम दूर हुए

'विवाह से वैधव्य तक' (30 जून) में आपने बहुत-सी ऐसी जानकारी दी जिनसे हम अनभिज्ञ थे. अब तक हिजड़ों के बारे में हम इतना ही जानते थे कि बच्चे का जन्म हो, शादी-ब्याह या कोई और खुशी का मौका-रिश्तेदार भले ही बधाई देना भूल जाएं, ये लोग नहीं भूलते. हर घर को फलने-फूलने का आशीर्वाद देने वाली हिजड़ा जाति के बारे में पढ़कर लगा कि इनमें इंसानियत बहुत है.

—स्नेहलता पारीक, दिल्ली

■ हिजड़ों के बारे में आम तौर पर सुनी-सुनाई बातों से ही दिग्भ्रमित जानकारियां मिलती हैं. लेख के माध्यम से आम आदमी उनको लेकर कई प्रकार की शंकाओं और अफवाहों से निश्चय ही मुक्त हुआ होगा.

—बीरेंद्र बरियार ज्योति, पटना (बिहार)

सचाई के करीब

जगमोहन से मुलाकात 'मैं सफल हो गया होता तो चंद लोग बेनकाब हो जाते' (30 जून) सचाई के करीब लगी. उन जैसे कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़संकल्पी और संविधान में आस्था रखने वाले दार्शनिक राजनीतिक ने चार माह में ही कश्मीर में भयावह रूप धारण कर चुके अलगाववाद के वटवृक्ष की जड़ें खोदनी शुरू कर दी थीं. लेकिन सरकार को उनकी सफलता रास नहीं आई.

—सहस्त्रानंद भारद्वाज, अलीगढ़ (उ.प्र.)

मर्ज की अनदेखी

'नियंत्रणों से निजात जरूरी' (कसौटी, 30 जून) हमारी अस्पष्ट और अकुशल आर्थिक नीति पर उचित टिप्पणी है. अर्थव्यवस्था राजनैतिक तुष्टीकरण की नीति से प्रभावित है. सरकार हमेशा कामचलाऊ व्यवस्था की कोशिश में रहती है. इस दिशा में ठोस कदम जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के खर्चों और सरकारी फिजूलखर्ची पर प्रतिबंध लगाने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता.

—पवन कुमार अवस्थी, बंगलूर (कर्नाटक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसौटी

दयनीय उलझन से उबरें

भावी अर्थव्यवस्था कैसी हो, इस सवाल पर लगभग सभी राजनैतिक विचारधाराओं के लोग 'चित भी मेरी, पट भी मेरी' की नीति पर चलने की कोशिश करते रहे हैं. ये लोग एक सांस में तो इस बात पर सहमति जताते रहे हैं कि बाजार की शक्तियों को प्रोत्साहन देना चाहिए. परंतु अगली ही सांस में वे तब 'बर्बर कत्ल, बर्बर कत्ल' के नारे लगाते रहे हैं जब उनके चहेते तत्व प्रतिस्पर्धा में पिछड़ने लगते हैं.

लालकृष्ण आडवाणी विदेशी मुद्रा नियमन कानून (फेरा) को नरम बनाने और देश की अर्थव्यवस्था को नेहरू युगीन सरकारी शिकंजे से मुक्त कराने की दुहाई देते हैं. परंतु उदार औद्योगिक नीति की घोषणा होते ही उनकी पार्टी के प्रवक्ता आसमान सिर पर उठा लेते हैं. उधर, चंद्रशेखर सरीखे समाजवादी एक ओर तो यह कहते नहीं अघाते कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों से जुड़ी भारतीय कंपनियां राष्ट्र की धरोहर हैं, लेकिन दूसरी ओर वे अचानक आत्माभिमान से भी इस कदर भर उठते हैं मानो एक और ईस्ट इंडिया कंपनी देश पर काबिज ही होने जा रही हो. इसी तरह 21वीं सदी का परचम लहराने वाली, विदेशी सहयोग की पैरोकार इंका को भी साउथ ब्लॉक के गलियारों में विश्व स्तर के साहूकारों और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के ठगों के प्रेत मंडराते दिखने लगे हैं.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

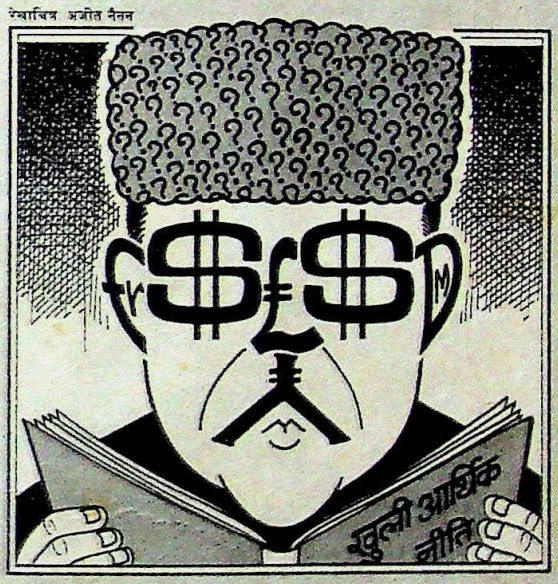

प्रधानमंत्री भी यों तो दावा करते हैं कि राजीव सरकार में वित्तमंत्री के रूप में उन्होंने उदारीकरण की जो प्रक्रिया शुरू की थी उसे तर्कसंगत दौर में पहुंचा रहे हैं. लेकिन यकायक उनकी अंतरात्मा आहत होने लगी है कि कुछ उपभोक्ता अमीरी रेखा को पार करते जा रहे हैं.

विरोध के इन स्वरों से समाजवादियों का अपराधबोध ही झलकता है, मानो वे मुक्त बाजार की शक्तियों के साथ पहली बार व्यभिचार में लिप्त हुए हों. लेकिन इन सभी आग्रहों के मूल में वह पुरानी 'फेबियन' मान्यता छिपी है कि धन-दौलत ही कहीं-न-कहीं गरीबी का निमित्त बनती है. वैसे, आधुनिक अर्थशास्त्री इस सिद्धांत को जबरदस्त चुनौती देने लगे हैं. लेकिन वह मान्यता मानो एक मंत्र की तरह अवचेतन में कहीं गहरे पैठ गई है. कहा जाता है कि धन-दौलत यानी नई-नई टेक्नॉलॉजी, निवेश के लिए पूंजी का संचयन, नए रोजगार, वैज्ञानिक आविष्कार, उपभोक्ताओं के लिए टिकाऊ चीजें, कल-कारखाने, नए शिल्प आदि गरीबी के कारण हैं.

इस मान्यता की आम स्वीकृति से समाज में एक दयनीय उलझन की स्थिति पैदा हो जाती है. धन-दौलत की उत्पत्ति उद्योगों में लगे स्त्री-पुरुषों द्वारा होती है. इस हकीकत को कोई सरकार स्वीकार करती है तो वह गरीबी मिटाने और समृद्धि बढ़ाने की कोशिशों को ही मजबूत करती है. मगर उसकी यह मुद्रा चंद विवेकपूर्ण क्षणों तक ही कायम रह पाती है क्योंकि सरकारें अक्सर हकीकत को नजरअंदाज करके अमीरों को सोखने और धन-दौलत वालों को कंगाल बनाने जैसे लोक-लुभावन नारों में फंस जाती हैं.

लेकिन भारत जैसे सतत गतिशील और आर्थिक रूप से सक्रिय समाज में ऐसी मनहूस रेखा कहां खींची जाए? अर्थशास्त्री और योजनाविद् तथा वे सभी लोग जिन्होंने रिकार्डो और कलदोर की मान्यताओं की घुट्टी पी है, यह सवाल इसलिए उठाते हैं ताकि पुनर्वितरणवादी आर्थिक नीतियों में बड़ी सरकार की भूमिका को उचित ठहराया जा सके. उनका आम तर्क यही होता है कि सबसे धनी 0.2 फीसदी परिवार 60 फीसदी पारिवारिक जायदाद के मालिक हैं जबकि सबसे गरीब 50 फीसदी परिवारों के पास कुछ भी नहीं है.

ऐसे तर्कों के साथ दिक्कत यह है कि इनमें भारतीय समाज को आर्थिक रूप से गतिहीन मान लिया जाता है. ऐसे तर्कों के आधार पर भारत सरीखे देश की समृद्धि अथवा जीवन-स्तर में सुधारों को आंकना नामुकिन है. समृद्धि अगर कई स्तरों पर वितरित हुई भी है तो यह स्थायी नहीं है. अर्थव्यवस्था को सपाट नहीं बनाया जा सकता. कई कंपनियों का दिवाला पिट जाता है तो कई नई खड़ी हो जाती हैं. विभाजन के बाद लाखों बेघर, कंगाल पंजाबी विदेश जा बसे. आज उनकी प्रति व्यक्ति आय किसी भी भाषायी समूह की प्रति व्यक्ति आय से शायद सबसे ज्यादा है. पहाड़ के विस्थापितों, यहां तक कि बांग्लादेश से आए शरणार्थियों ने भी ऐसा ही करिश्मा किया है. उन्हें समाजवादी सरकार के पुनर्वितरण संबंधी अनुदानों का लाभ नहीं मिला है. इन अनुदानों का फायदा तो सरकारी बाबुओं ने उठाया.

अमीरी रेखा लांघने वालों की उपभोगवादी प्रवृत्तियां अगर आंखों को चुभती हैं तो यह जरूरी नहीं कि ये उनकी अमीरी के कारण ही हों. बहुत हद तक इसकी वजह करों का भारी बोझ है. जब सरकारी अमला ही नए निवेश की आमदनी भकोस जाता हो तो दौलतमंद लोग उद्यमों में निवेश नहीं करते और अपना पैसा, ब्रकौल केंस, 'वैभव के सागर' में डुबो देते हैं. वी.पी. सिंह ने खुद को व्यावहारिक व्यक्ति सिद्ध किया है. वे तेज-रफ्तार तरक्की की राह खोज रहे हैं. इस तेज-रफ्तारी में समाजवादी लोग पीछे छूट गए तो यह उनके लिए सचमुच बुरा होगा. लेकिन वी.पी. सिंह को रेखाओं और कट्टर सिद्धांतों के बोझ से लदकर अपने समाजवादी पाप का प्रायश्चित्त करने के बदले विकास की राह खोजने का काम तेज करना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर न खरीदने का झंझट... न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम–चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

सुधीर तैलंग, हिंदुस्तान टाइम्स

● अब हमें यह देखना है कि चीनी की कीमत इतनी न गिर जाए कि गन्ना उत्पादकों को उचित मूल्य ही न मिले.

■ **मधु दंडवते**, इलस्ट्रेटेड वीकली

● कश्मीर समस्या पर मेरे पास कई आइडिया हैं लेकिन सरकार ने मुझसे संपर्क ही नहीं किया.

■ **राजीव गांधी**, टाइम्स ऑफ इंडिया

● उन्हें (मेनका गांधी को) जानवरों और चिड़ियाघरों की देखभाल करने दीजिए, आखिर उनका विषय वन्य जीवन ही है—और मुझे देश के औद्योगिक विकास से संबंधित मामले निबटाने दीजिए.

■ **नीलमणि राउतराय**, केंद्रीय पर्यावरणमंत्री

● मैंने इस्तीफा इसलिए दिया क्योंकि मैं रोज-रोज मरना नहीं चाहता था.

■ **रामकृष्ण हेगड़े**, योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद से इस्तीफा देने पर

● हेगड़े देश के महान नेता हैं. लेकिन उन्हें इस्तीफा नहीं देना चाहिए था.

■ **देवीलाल**, इंडियन एक्सप्रेस

● राम जन्मभूमि के प्रश्न पर हिंदू समाज की विजय होनी ही चाहिए.

■ **लालकृष्ण आडवाणी**, पांचजन्य

● बाबरी मस्जिद या देश के किसी भी स्मारक को तोड़ने की कोशिश होगी तो हम (उसे रोकने के लिए) शहीदी जत्था भेजेंगे.

■ **सिमरनजीत सिंह मान**, इंडियन एक्सप्रेस

● शादी के बाद लड़की ससुराल की हो जाती है पर मायके से नाता तो नहीं टूटता. अतः सदन के बाहर मैं पार्टी का ही हूं.

■ **बृजमोहन मिश्र (अध्यक्ष, म.प्र. विधानसभा)**, नई दुनिया

● हमें कमर कसने का संदेश देना है.

■ **अजित सिंह**, उद्योगमंत्री (नई उद्योग नीति पर जनता को संदेश देने पर) नवभारत टाइम्स

● सार्वजनिक क्षेत्र क्या किसी की बपौती हैं कि उन्हें ऐसी लापरवाही से चलाया जाए.

■ **रूसी मोदी** (टिस्को के अध्यक्ष), संडे ऑब्जर्वर

● अगर अमिताभ बच्चन प्रधानमंत्री बने तो मैं विपक्षी नेता बनूंगी और माहौल इतना गरम कर दूंगी कि उन्हें रोना ही आएगा.

■ **जुही चावला**, स्टारडस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में प्रतियोगिता परीक्षाओं हेतु हिन्दी की प्रथम पत्रिका

सफलता में सर्वप्रथम

अगस्त अंक के आकर्षण :

आई. ए. एस. परीक्षा में महिलाओं में प्रथम
कु. कल्पना शुक्ला
से भेंटवार्ता

कर्मचारी चयन आयोग के अध्यक्ष
श्री एस. सी. मित्तल
से विशेष साक्षात्कार

- स्वतंत्र नामीबिया की समस्याएं
- जम्मू-कश्मीर–पृथक संविधान की त्रासदी
- आर्थिक समीक्षा एवं राजनीतिक परिदृश्य
- राज्य सम्मिलित सेवा परीक्षाओं पर विशेष महत्वपूर्ण सामग्री
- बैंकिंग, सिविल एवं डिफेंस सर्विसेज परीक्षाओं के हल प्रश्न-पत्र
- 'Logical Reasoning' के प्रश्नों को कैसे हल करें?
- वर्ष भर के घटनाक्रम, पुरस्कार, खेलकूद आदि
- तथा साथ में अन्य विविध एवं उपयोगी सामग्री

वार्षिकांक
अगस्त 1990
मूल्य रु. 17/-

युवा वर्ग के समग्र विकास के लिये
पत्रिका एक-उद्देश्य अनेक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

ह र क द म आ गे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्दा मजाक

● उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान तथा आलोचक और दिल्ली विश्वविद्यालय में उर्दू विभाग के अध्यक्ष फजलुल हक के साथ पिछले पखवाड़े भद्दा मजाक किया

गया. किसी कुराफाती ने 'इंडियन एक्सप्रेस' के दिल्ली कार्यालय को दिल्ली विश्वविद्यालय के लेटरहेड पर यह प्रेस विज्ञप्ति भिजवा दी कि पिछली रात हृदय गति रुक जाने के कारण प्रोफेसर हक की मृत्यु हो गई.

इस विज्ञप्ति में प्रोफेसर हक की उपलब्धियों का भी जिक्र था जिसमें उनकी पुस्तकों, उनके शोध पत्रों और कई अनुवाद कार्यों का उल्लेख था. विज्ञप्ति में जख्म पर नमक लगाने वाली बात यह थी कि प्रोफेसर हक 'लल'—यानी बाजारू शब्दावली के अनुसार 'निकम्मा'—के रूप में ही जाने जाते थे. 'एक्सप्रेस' ने तत्परता से इस समाचार को अपने स्थानीय पृष्ठ पर छापा जिसका शीर्षक यहथा—'प्रोफेसर एफ. लल का निधन'.

अगली सुबह प्रोफेसर हक के घर पर फोन की घंटी लगातार बजने लगी. संवेदना से भरे हितैषीजन दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि देने लगे. यहां तक कि कई संबंधी तो अलीगढ़ से मातमी लिबास में आ पहुंचे.

रोष से भरे प्रोफेसर ने 'एक्सप्रेस' कार्यालय को फोन करके दो बातें स्पष्ट कीं, "एक तो मेरा नाम 'लल' नहीं. और दूसरा यह कि मैं मरा नहीं, बल्कि बाकायदा जिंदा, स्वस्थ और खुशहाल हूं."

पुरानी कुर्सी के लिए

● पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह इन दिनों 'फाउंडेशन फॉर द फ्रीडम ऑफ इन्फॉरमेशन' के मुख्य संरक्षक की अपनी नई भूमिका में सक्रिय हैं.इस न्यास ने हाल में कुछ पत्रकारों को पुरस्कृत किया.

इसी न्यास के कर्ताधर्ताओं में दिल्ली पर्यटन निगम के अध्यक्ष त्रिलोचन सिंह भी हैं. लेकिन उनकी शोहरत ज्ञानी के सबसे प्रभावशाली प्रचार सूत्र और बूटा सिंह के नाक के बाल के रूप में ही ज्यादा है. अब इन दोनों के मेल का सीधा मतलब है—एक राजनैतिक लॉबी की मौजूदगी. यह न्यास ज्ञानी जी के लिए संबल का काम करने के लिए बनाया गया है ताकि वे राष्ट्रपति की कुर्सी के लिए फिर से प्रयास कर सकें. आर. वेंकटरामन का कार्यकाल समाप्त होने के बाद ज्ञानी जी इस

कार्टून: अजीत नैनन

पद के लिए दावेदार बनने की सोच रहे हैं.

कटौती का कहर

● फिजूलखर्ची रोकने की प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की मुहिम का पहला कहर देवीलाल खेमे के एक शख्स पर बरपा है. पिछले पखवाड़े विदेश

यात्राओं पर खर्च में कमी के एलान पर अधिकांश मंत्रीगण मन ही मन बहुत खुश हुए क्योंकि अपने हिस्से की सैर वे पहले ही पूरी कर चुके थे.

लेकिन संसदीय कार्य उपमंत्री जगदीप धनकड़ अभी विदेश यात्रा के कार्यक्रम पर गौर ही फरमा रहे थे. वे एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल को लेकर पेरिस जाने वाले थे.उनका इरादा था कि लगे हाथ अमेरिका और रोम तक भी हो आया जाए. घोर अनिच्छा के साथ उन्होंने अपनी यात्रा की अवधि 18 से घटाकर सात दिनों की कर दी.

उन्होंने एअर इंडिया के अधिकारियों के साथ कई घंटे यही हिसाब-किताब लगाने में बिताए कि उनके दिल्ली-लंदन-पेरिस टिकट पर बिना किसी अतिरिक्त व्यय के किस तरह अधिक से अधिक सैर की जा सकती है. अंत में हिसाब यह बैठा कि मात्र 48 रु. और खर्च किए जाएं तो इटली के भी दर्शन किए जा सकते हैं.

लोकतांत्रिक बयार

● जनता दल जहां राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव सुधारों की बात कर रहा है, वहीं इंका भी अपने खेमे में लोकतंत्र की ताजा हवा लाने पर विचार कर रही है. 1985 की तरह ही एक बार फिर 'पार्टी के चुनाव होकर रहेंगे!' का नारा बुलंद हो चला है. इसकी आवाज स्वयं राजीव गांधी की तरफ से उठी है. वैसे, उनका ऐसा पहला प्रयास तब फर्जी सदस्यों की भर्ती के कारण ठंडा पड़ गया था.

पुरानी योजना के तहत सदस्यता राशि 25 रु. थी. सो, इंका नेता पानी की तरह पैसा बहाकर मतदाता सूची में सैकड़ों फर्जी नाम जोड़ लेते थे. लेकिन हाल की एक उच्चस्तरीय मंत्रणा में राजीव ने पुरानी पद्धति को समाप्त करवा लिया. नई योजना के अंतर्गत प्रखंड और जिला स्तर

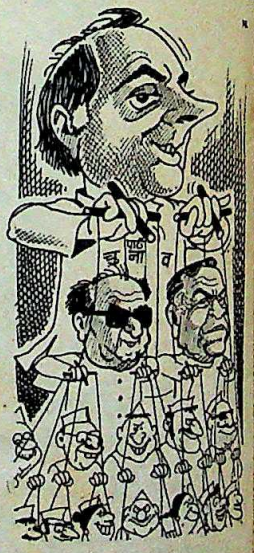

के इंका कार्यकर्ताओं में से प्रत्येक को नए पदाधिकारियों के चुनाव में मताधिकार पाने के लिए 25 नए सदस्य बनाने होंगे. यह कदम लोकतांत्रिक है? इस बारे में आलोचकों का जवाब नकारात्मक है. जहां तक 'कार्यकर्ताओं' का सवाल है, लगता है हरकिशन लाल भगत और बलराम जाखड़ जैसे दिग्गज उनके नाम तय करने में लग गए हैं. योग्यता बस इतनी है—राजीव के प्रति निष्ठा.

...और एक चुटकी

(उड़ते-उड़ाते)

भारत सरकार में कोई इस्तीफा मंत्रालय होता तो रामकृष्ण हेगड़े उसके कैबिनेट मंत्री होते—थोड़ी ही देर के लिए जब तक कि वे इस्तीफा न दे देते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...कीजिए ऐसा निवेश ...

...जो 5 वर्ष में हो जाए दुगुना ...

...8 वर्ष में तिगुने से भी ज़्यादा ...

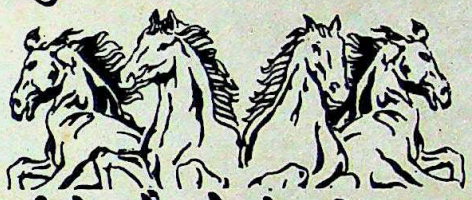

...और 10 वर्ष में चौगुने से भी ज़्यादा!

इश्यू अब खुला है
जल्दी कीजिए!
डबल² प्लस
बॉइनान्ज़ा लाइए... आज ही!

DOUBLE² PLUS

• THE FOUR TIMES + RETURN SCHEME •

बीओआई म्युच्युअल फ़ंड पेश करते हैं ऐसी सबसे पहली 10 वर्षीय योजना जिसके साथ है एक आकर्षक विकल्प- 5 या 8 वर्ष बाद रक़म निकालने की सुविधा... वह भी बढ़ता हुआ लाभ गंवाए बिना!

अन्य विशिष्टताएं :

- 14.87% वार्षिक जितना ऊंचा लाभ.
- अनोखा विकल्प - यह वृद्धि लाभ उठाइए. आय या पूंजीगत लाभ के ज़रिए.
- 3 वर्ष बाद स्टॉक एक्सचेंज सूची में शामिल.

यह शानदार फ़ायदा आपके लिए प्रस्तुत है - बॉइनान्ज़ा सर्टिफ़िकेट के रूप में.

न्यूनतम निवेश रु. 1,000/- यानी प्रति रु. 100/- के मूल्य पर 10 बॉइनान्ज़ा सर्टिफ़िकेट.

जल्द से जल्द अपने बॉइनान्ज़ा खरीदिए... नकद प्रोत्साहन पाइए!

और 2000 वें वर्ष के स्वागत के लिये तैयार हो जाइए... आज ही!

बीओआई डबल² प्लस आपके लिए प्रायोजित करता है ऐसा बैंक जो स्टॉक एक्सचेंज कार्यसंचालन के साथ 69 वर्षों से जुड़ा हुआ है.

अधिक जानकारी के लिए बैंक ऑफ़ इंडिया की किसी भी शाखा से सम्पर्क करें या यहां लिखें :

बीओआई म्यूच्युअल फ़ंड
24 वीं मंज़िल, स्टॉक एक्सचेंज बिल्डिंग,
दलाल स्ट्रीट, बम्बई 400 023.

BOI MUTUAL FUND

बीओआई म्यूचुअल फ़ंड

आपकी सेवा में सदैव तत्पर - आपके निवेश के लिए भी!

Indian Sarkari Rangh Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखा प्रदर्शन

■ आम आदमी के वोट से चुने गए सांसदों और विधायकों की ताकत का मुख्य स्रोत अफसर होते हैं जिनकी मदद से वे जनता की शिकायतों का निबटारा करते हैं. इसी वजह से उनके आसपास

सभी कार्टून: जयंतो

लोगों का मेला जुटा रहता है और उनकी लोकप्रियता बनी रहती है. लेकिन अगर अधिकारी उनकी सुनना बंद कर दें तो उनकी हालत का अंदाज आसानी से लगाया जा सकता है.

पिछले दिनों इंदौर में यह संकट स्थानीय कैंट बोर्ड के पार्षदों पर भी आ पड़ा जहां के स्थानीय प्रशासन ने न सिर्फ उनकी सिफारिशों पर ध्यान देना बंद कर दिया बल्कि उनके आग्रह और विरोध के बावजूद गैरकानूनी निर्माण गिराने का अभियान जारी रखा. उधर, जिन लोगों की दुकानों और घरों को गिराया जा रहा था उनका दबाव भी अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों पर लगातार बढ़ता गया. आखिर दोनों ओर से पड़ते दबाव से परेशान और अपने राजनैतिक अस्तित्व पर मंडराते खतरे से निबटने का उन्होंने रास्ता निकाल ही लिया. एक सुबह कुछ पार्षद एक चौराहे पर पहुंचे और पेड़ पर चढ़कर वहां लाउड-स्पीकर समेत आसन जमा लिया. इस अजीबोगरीब प्रदर्शन को देखने के लिए लोग काफी संख्या में इकट्ठे हो गए. फिर क्या था. इतनी बड़ी भीड़ के सामने पार्षदों ने प्रशासन को जी भरकर कोसा. उधर, पुलिस और प्रशासन की समस्या यह थी कि प्रदर्शनकारी पार्षदों को रोकने के लिए कोई पेड़ पर चढ़ने को तैयार नहीं था.

सुरक्षा की धज्जियां

■ एक ऐसे दौर में जब आतंकवाद ने पूरे देश की जान सांसत में डाली हुई हो तब अगर निर्वाचित प्रतिनिधि भी सदन में तमंचे लहराने लगें तो लोकतंत्र और देश का भगवान ही मालिक है. पिछले पखवाड़े महाराष्ट्र विधान परिषद में मौजूद विधायकों को कुछ क्षणों के लिए ऐसा महसूस हुआ मानो आतंकवाद सदन के भीतर तक अपना रास्ता बना चुका है.

यह घटना विधान परिषद में उस समय घटी जब बजट पर बहस चल रही थी. विधायकों के बीच नोंक-झोंक चल ही रही थी कि अचानक शिवसेना विधायक प्रमोद नवलकर की एक हरकत ने कई विधायकों के होश उड़ा दिए. अपनी सीट से उठ खड़े हुए नवलकर के हाथ में पिस्तौल था जिसे हवा में लहराकर वे अध्यक्ष का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहे थे. एकबारगी तो कुछ सदस्यों को लगा कि शिवसेना सदस्य आतंकवाद के रास्ते अपनी दलील मनवाना चाह रहे हैं. लेकिन जल्दी ही यह भ्रम दूर हो गया.

हाथ में पिस्तौल पकड़े हुए नवलकर ने सदन को बताया कि वे सदन में पिस्तौल लाकर सिर्फ यह दिखाना चाहते हैं कि अगर कड़े सुरक्षा उपायों के बाद भी पिस्तौल जैसा घातक हथियार

सदन तक पहुंच सकता है तो आम आदमी की सुरक्षा का सरकारी दावा झूठा है. और इसके साथ ही नवलकर ने यह चुनौती भी जारी कर दी कि किसी दिन वह सदन में बम लाकर भी दिखा देंगे.

काम का भूत

■ एक ऐसे जमाने में जब लोग अपनी ड्यूटी ठीक मुस्तैदी के साथ बजाने के बदले निठल्ले घूमना ज्यादा पसंद करते हैं, उस युवक का उदाहरण आंख खोलने वाला सिद्ध होगा जिसने पुलिस

और अदालत की मौजूदगी की दहशत के बावजूद अपने धंधे को पूरी लगन के साथ अमली जामा पहनाया.

किस्सा गाजियाबाद की एक अदालत का है जहां जेबतराशी के एक मामले में एक युवक अपनी पेशी पर आया था. उसे कुछ दिन पहले जेब काटने के अपराध में पुलिस ने गिरफ्तार किया था लेकिन उसे पुलिस हिरासत में रखने का आदेश देने के बदले मजिस्ट्रेट ने उसकी जमानत की अर्जी मंजूर कर ली थी.

अदालती कार्यवाही के लिए उसकी बारी आने में अभी समय था इसलिए वह इधर-उधर टहल रहा था. वकीलों, पुलिस और दूसरे लोगों की इस भीड़ में उसकी उपस्थिति गुप्त ही रह जाती लेकिन अचानक वहां उठ खड़े हुए शोर-शराबे ने उसे सबकी उत्सुकता का केंद्र बना दिया. पता चला कि उसने भीड़ का फायदा उठाते हुए किसी वकील की जेब पर ही हाथ साफ कर दिया जो किसी की जमानत के सिलसिले में उस अदालत में आया हुआ था. लेकिन इससे पहले कि वह युवक हाथ की सफाई दिखाकर वहां से खिसक पाता, वकील को इसका पता चल गया और उसने रंगे हाथों उसे दबोच लिया. इस घटना के बाद पुलिस ने जेबकतरे को फिर से पकड़कर थाने में बंद कर दिया.

आधुनिक तपस्वी

■ मुरादें पूरी कराने की गरज से इष्ट देवताओं की पूजा करना आम बात है. और तो और, दफ्तरों में अपना काम करवाने और बाबुओं को प्रसन्न रखने के लिए जरूरतमंदों द्वारा 'पुजापा' चढ़ाया जाना भी कोई नई बात नहीं. लेकिन अगर सरकारी फाइलों को सचमुच धूप-अगरबत्ती दिखाने और पूजा-अर्चना करने की नौबत आ जाए तो मानना होगा कि मामला सचमुच गंभीर है.

राजस्थान के रामगंजमंडी के एक बिजली उपभोक्ता के सामने ऐसी ही स्थिति आ गई. पिछले पखवाड़े घर की बिजली गुल होने पर वह स्थानीय बिजली दफ्तर जाकर वहां के रजिस्टर में अपनी शिकायत दर्ज करा आया. आम तौर पर इसके बाद विभाग के कर्मचारी शिकायत निबटा आते हैं. लेकिन एक दिन बाद भी जब शिकायत पर ध्यान नहीं दिया गया तो अगले दिन उसने रजिस्टर में फिर से शिकायत दर्ज कराई. लेकिन विभाग के कानों पर जूं नहीं रेंगी. आखिर तंग आकर अगले दिन से उसने रजिस्टर में नई शिकायत दर्ज कराने के साथ-साथ उसके सामने धूप-अगरबत्ती जलाने और पूजा करके प्रसाद बांटने का काम भी शुरू कर दिया. पूजा-अर्चना का यह क्रम अगले दस दिन तक

अनिल शर्मा

चलता रहा लेकिन बिजली विभाग के देवताओं ने उसकी तपस्या पर ध्यान नहीं दिया. पिछली खबरें आने तक इस उपभोक्ता की तपस्या जारी थी और विभागीय देवताओं की समाधि टूटी नहीं थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आर एम आई-60 अपनाइए... छोटे-छोटे कई लाभ उठाइए!"

बी ओ आई म्यूचुअल फ़ंड की अनोखी योजना में निवेश कीजिए...

बढ़ती मासिक आय - 60 भुगतान योजना - वृद्धि विकल्प के साथ.

मासिक आय योजना

- आपको दिलाए ऐसी मासिक आय - जो पहले वर्ष में 12% की दर से और पांचवे वर्ष में 13.5% की दर से हर साल बढ़ती जाए!
- 'योजना के अंत में' बोनस - जो आपके बॉइनान्ज़ा निवेश के अंकित मूल्य का कम से कम 1%!

क्या आप और भी ज्यादा कमाना चाहते हैं?
तो 2 वर्ष बाद अपनाइए यह विकल्प :

वृद्धि योजना
और 3 वर्ष बाद अपने मूल बॉइनान्ज़ा निवेश की कम से कम $1^1/_2$ गुनी रकम पाइए - एकमुश्त. आप चाहें तो इस वृद्धि का लाभ उठा सकते हैं - पूंजीगत लाभ के रूप में.

और यक़ीनन आपको अपने निवेश पर मिलेगा निश्चित लाभ... बॉइनान्ज़ा के रूप में!

न्यूनतम निवेश : रु. 5000/- या प्रति रु. 100/- के मूल्य पर 50 बॉइनान्जा.

अवधि (महीने)	मासिक आय अदायगी दर	मासिक आधार पर वार्षिक चक्रवृद्धि लाभ
1 से 12	12.0% वार्षिक	12.68% वार्षिक
13 से 14	12.5% वार्षिक	13.24% वार्षिक
25 से 36	12.75% वार्षिक	13.52% वार्षिक
37 से 48	13.0% वार्षिक	13.80% वार्षिक
49 से 60	13.5% वार्षिक	14.37% वार्षिक

तो जल्दी कीजिए, आवेदन कीजिए और पाइए आकर्षक नकद प्रोत्साहन! आर एम आई-60 में निवेश कीजिए... आज ही!

बी ओ आई म्यूचुअल फ़ंड की आर एम आई-60 योजना के प्रायोजक हैं ऐसे बैंक, जो स्टॉक एक्सचेंज कार्यसंचालन से 69 वर्षों से जुड़े हैं.

अधिक जानकारी के लिए बैंक ऑफ़ इंडिया की किसी भी शाखा से सम्पर्क करें या यहां लिखें : बी ओ आई म्यूचुअल फ़ंड,
24वीं मंज़िल, स्टॉक एक्स्चेंज बिल्डिंग,
दलाल स्ट्रीट, बम्बई 400 023.

60 RMI

BOI MUTUAL FUNDS बीओआई म्यूचुअल फ़ंड

आपकी सेवा में सदैव तत्पर - आपके निवेश के लिए भी!

Interpub/BOI/MF 004-90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ प्रताप सिंह

नेतृत्व की नाकामी

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की नैया पिछले साढ़े सात महीने से तमाम तरह के ज्वार-भाटों, तूफानी थपेड़ों को सहती हुई आगे बढ़ती जा रही थी. लेकिन पिछले पखवाड़े अचानक उसे हरियाणवी थपेड़े का सामना करना पड़ा और यह नैया बुरी तरह डगमगाने लगी. इसका कप्तान किंकर्तव्यविमूढ़-सा देखता रह गया. नैया के कुछ खेवनहारों ने बगवात भी कर दी, इस उम्मीद में कि कप्तान तुरंत कुछ कार्रवाई करे ताकि नुकसान कम किया जा सके. लेकिन वे निराश हो गए. कप्तान ने तो जैसे पतवार ही छोड़ दी थी.

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को पिछले पखवाड़े अब तक का जो सबसे भारी झटका लगा उसके बाद प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने एक बार फिर इस्तीफा देने की अपनी पुरानी चाल चली. जनमत और पार्टी के दबाव के तहत उन्होंने भले ही दूसरे दिन इस्तीफा वापस ले लिया लेकिन इससे उनकी एक छवि यह भी बनी कि वे कुशल कप्तान नहीं हैं और यह भी कि वे चुनौतियों का सामना करने की जगह उनसे बच निकलने का ही रास्ता अख्तियार करते हैं. यह बात पहले भी उजागर हो चुकी है. 1982 में डकैतों द्वारा भाई की हत्या के बाद उन्होंने 28 जून को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था. फिर एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदे की जांच का आदेश देने के बाद उन्होंने 12 अप्रैल 1987 को रक्षामंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और ताजा उदाहरण जनता दल अध्यक्ष पद से 4 मार्च 1990 को इस्तीफा देने का है. ये तमाम उदाहरण चुनौतियों से बच निकलने के हैं.

इनके अलावा उनकी इस प्रवृत्ति की कुछ मिसालें ये भी हैं—पंजाब में शानदार शुरुआत करने के बाद लड़खड़ा जाना, जम्मू-कश्मीर के मामले में साफ निर्णय न कर पाना, पार्टी के चुनाव करवाने में विफलता, पर्यावरण मंत्रालय में कैबिनेट मंत्री नीलमणि राउतराय और उनकी राज्यमंत्री मेनका गांधी के बीच विवादों का निबटारा न कर पाना आदि आदि. उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद जनता में जो उत्साह जगा था वह धीरे-धीरे इन्हीं सब कारणों से ठंडा पड़ता गया.

अब उनकी छवि को करारा धक्का इसलिए लगा है कि उन्होंने हरियाणा के मुख्यमंत्री पद पर ओमप्रकाश चौटाला की वापसी के मामले में स्पष्ट कार्रवाई करने में असमर्थता दिखाई. अभी दो महीने पहले ही महम चुनाव में हिंसात्मक घटनाओं के कारण चौटाला को इस्तीफा देना पड़ा था.

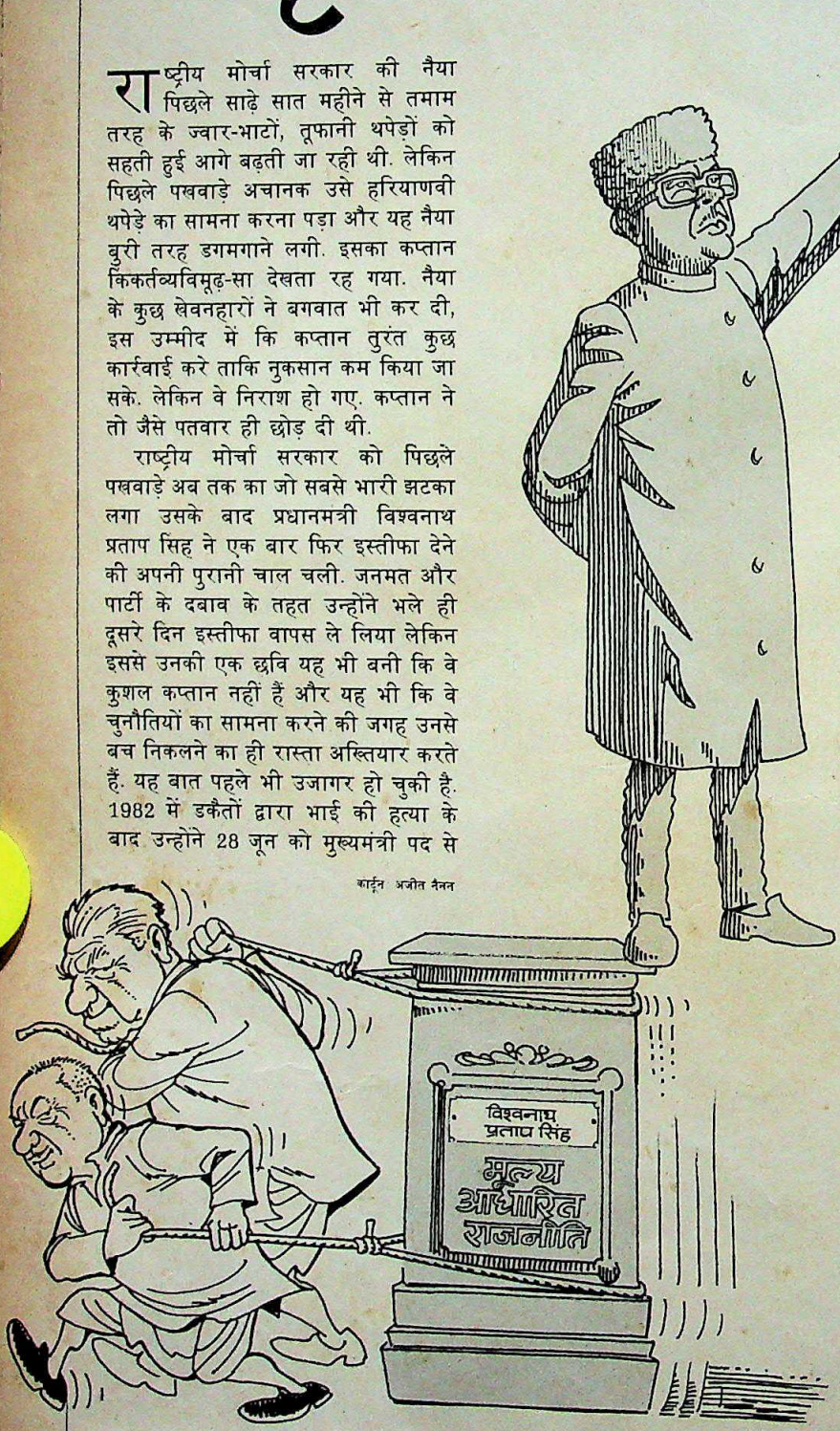

कार्टून अजीत नैनन

संकट ऐसे पनपा

21 मई: जद की राजनैतिक मामलों की समिति की ओर से ओमप्रकाश चौटाला को मुख्यमंत्री पद छोड़ने का निर्देश.

22 मई: चौटाला का इस्तीफा.

23 मई: बनारसीदास गुप्ता राज्य के मुख्यमंत्री नियुक्त.

27 मई: चौटाला दड़बाकलां उपचुनाव में 55,000 वोटों से विजयी.

31 मई: देवीलाल की घोषणा: चौटाला महम से जरूर चुनाव लड़ेंगे.

17 जून: देवीलाल बंगलूर के [illegible] विज्ञान संस्थान में इलाज के लिए [illegible]

23 जून: बंगलूर में देवीलाल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री पद से अरुण नेहरू, सतपाल मलिक और आरिफ के इस्तीफे से जनता दल में आर या पार की लड़ाई छिड़ गई

जब उनकी बहाली के बाद वी.पी. सिंह की ईमानदार नेता वाली छवि रातोरात धुंधली हो गई सी लगती है. अचानक वे एक आम नेता की तरह दिखने लगे हैं जिसे जोड़-तोड़ का खेल खेलने में कोई संकोच नहीं होता और जो राजनैतिक मतलब साधने के लिए मूल्यों की बलि तक चढ़ा सकता है.

इस पूरे नाटक की शुरुआत नागपुर दौरे से उप-प्रधानमंत्री देवीलाल की वापसी के बाद हुई. वी.पी. सिंह के साथ एक बैठक में उन्होंने सुलहनामे के अंदाज में मांगों की एक फेहरिस्त पेश की. जैसे कि चुनौतियों से बचने की वी.पी. सिंह की आदत रही है, उन्होंने देवीलाल की अधिकांश मांगें मान ली.

इन मांगों की मंजूरी के अगले ही दिन जनता दल में असंतोष उभरने लगा. वी.पी. सिंह के लिए मुश्किलों की यह शुरुआत थी. जनता दल अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई ने ओमप्रकाश चौटाला को जिस दिन पार्टी महासचिव बनाया उसी दिन हरियाणा के मुख्यमंत्री बनारसीदास गुप्ता ने चंडीगढ़ में इस्तीफा दे दिया.

लेकिन इसके बाद जो घटना घटी वह चौंका देने वाली थी. चंद घंटों के भीतर चौटाला दिल्ली पहुंचे और हरियाणा भवन में जनता दल के विधायकों की बैठक बुलाई गई जिसमें उन्हें नया नेता चुना गया. और इसके बाद हरियाणा भवन के लॉन में हरियाणा के राज्यपाल धनिकलाल मंडल ने उन्हें शपथ दिलाई. अपने आलोचकों को चौटाला ने अंततः मात दे दी. संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने दावा किया, "एक पद पाना भी किसी-किसी को बहुत मुश्किल होता है. मेरी किस्मत देखिए मुझे एक साथ तीन पद मिले हैं." (चौटाला हरियाणा जनता दल के अध्यक्ष भी हैं). इससे महत्वपूर्ण बात यह कि उन्होंने यह दावा भी किया की प्रधानमंत्री की सहमति न होती तो वे दो महीने से कम समय में ही फिर मुख्यमंत्री नहीं बन सकते थे.

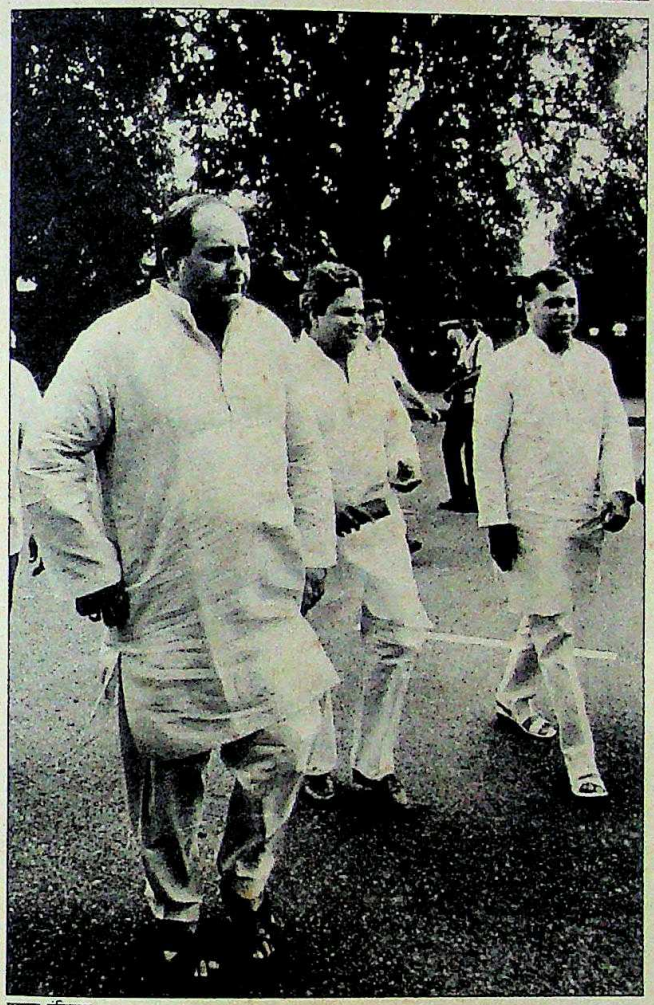

प्रशांत पंजियार

चौटाला के चंडीगढ़ पहुंचते-पहुंचते वी.पी. सिंह जनता की नजरों से उतरने लगे थे. सबके मन में ही यही सवाल था कि, "ऐसा गलत काम उन्होंने होने कैसे दिया?" और जब वी.पी. सिंह ने यह कहा कि उन्हें मालूम नहीं था कि चौटाला मुख्यमंत्री बनाए जा रहे हैं, तो किसी को विश्वास नहीं हुआ. वास्तव में आम धारणा यह थी कि देवीलाल के साथ हुई बातचीत में उन्होंने कहा होगा कि अगर हरियाणा के विधायकों ने चौटाला को अपना नेता चुना तो उन्हें मुख्यमंत्री बनाए जाने पर उन्हें कोई आपत्ति न होगी.

असंतोष केवल जनता दल के भीतर नहीं था. जनता दल की सहयोगी भारतीय जनता पार्टी और वामपंथी पार्टियों ने चौटाला की वापसी पर क्षोभ प्रकट किया. और तो और, वी.पी. सिंह का बराबर समर्थन करने वाले 'इंडियन एक्सप्रेस' के संपादक अरुण शौरी ने भी अपने अखबार के मुखपृष्ठ पर लेख लिखकर उनकी अच्छी-खासी आलोचना की.

वी.पी. सिंह के कई मंत्री और पार्टी सहयोगी विरोध प्रकट करने के लिए उनसे मिले. गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद, रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस, उद्योगमंत्री अजित सिंह, कपड़ामंत्री शरद यादव और यशवंत

चंद्रशेखर की घंटे भर बातचीत.

24 जून: देवीलाल का बयान: आठवीं योजना का मसौदा फिर से तैयार हो क्योंकि इसमें शहरी पक्षपात दिखता है.

1 जुलाई: रामकृष्ण हेगड़े का कुलदीप सिंह आयोग की रिपोर्ट में खिंचाई की वजह से योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद से इस्तीफा.

1 जुलाई: सरकार की आर्थिक और औद्योगिक नीति की चंद्रशेखर द्वारा बेरहमदस्त आलोचना और इन पर राष्ट्रीय बहस की मांग.

4 जुलाई: हेगड़े के आग्रह पर वी.पी. सिंह ने उनका इस्तीफा मंजूर किया.

4 जुलाई: देवीलाल का औद्योगिक नीति को समर्थन और चंद्रशेखर से असहमति.

8 जुलाई: देवीलाल बंगलूर से लौटे. वी.पी. सिंह के साथ रात्रिभोज में शरीक.

12 जुलाई: बनारसीदास गुप्ता का मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा और चौटाला की वापसी. बोम्मई ने उन्हें जनता दल का राष्ट्रीय महासचिव भी नियुक्त किया.

13 जुलाई: चौटाला की बहाली के विरोध में अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां और सतपाल मलिक का इस्तीफा.

14 जुलाई: वी.पी. सिंह की प्रधानमंत्री पद से इस्तीफे की पेशकश. बोम्मई ने उनका इस्तीफा नामंजूर किया.

15 जुलाई: वी.पी. सिंह ने इस्तीफा वापस लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्हा ने उन्हें चौटाला की वापसी के नतीजों के बारे में चेताया. यहां तक कि उनके पुराने प्रतिद्वंद्वी चंद्रशेखर ने उन्हें कीमत वसूलने की देवीलाल की राजनीति को खत्म करने का अनुरोध किया.

चौटाला के शपथ लेने के 24 घंटे के भीतर ही ऊर्जामंत्री आरिफ मुहम्मद खां, मुफ्ती मुहम्मद सईद और सतपाल मलिक अरुण नेहरू से मिले. तुरंत बाद आरिफ, मलिक और नेहरू ने वी.पी. सिंह को इस्तीफे सौंप दिए. सईद ने वी.पी. सिंह से अलग से मुलाकात की लेकिन इस्तीफा नहीं दिया क्योंकि वे गृह मंत्रालय जैसा महत्वपूर्ण विभाग संभाले हुए हैं.

देवीलाल को उनकी औकात बताने का पैंतरा अपनाने में वी.पी. सिंह ने कोई देरी नहीं की. और हर बार की तरह उन्होंने हाथ घुमाकर कान पकड़ना ही उचित समझा. देवीलाल या चौटाला पर सीधे चोट करने की जगह उन्होंने बोम्मई और रामराव को चिट्ठी लिखकर प्रधानमंत्री पद छोड़ देने की इच्छा जाहिर की. इस चिट्ठी ने अपेक्षित असर दिखाया. माहौल तेजी से देवीलाल के खिलाफ बनने लगा. पार्टी मुख्यालय में जब बोम्मई पत्रकारों की भीड़ को संबोधित कर रहे थे तो उनके स्वरों में चौटाला की वापसी के प्रति आलोचना का भाव था. उन्होंने यह भी वादा किया कि अगर चौटाला ने पार्टी के नियमों का उल्लंघन किया है तो वे उनके खिलाफ 'कार्रवाई करेंगे.' उन्होंने यह भी कहा कि चौटाला की वापसी 'उचित नहीं' है. बोम्मई ने उम्मीद जाहिर की, "चौटाला पार्टी के फैसले को मानेंगे."

उधर, आरिफ के घर पर उत्साह का वही माहौल था जो 1987 में उनके इंका से निकाले जाने के बाद था. सुबह आरिफ ने सबसे पहला काम यह किया कि अपनी सरकारी गाड़ियां वापस भेज दीं और पुलिस से अनुरोध किया कि उनके निवास से सुरक्षा गार्डों को हटा लिया जाए. उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगी चिमनभाई मेहता और इंका सांसद जयंती नटराजन ने तो उन्हें फोन पर बाकायदा बधाई तक दे दी. पर सबसे महत्वपूर्ण फोन देवीलाल का आया. वे जानना चाहते थे कि आखिर यह सारा हंगामा क्यों है. लेकिन उन्हें जल्द ही पता चल गया कि यह सिर्फ शुरुआत है. शाम तक और इस्तीफे भी आ गए. चंद्रशेखर के करीबी माने जाने वाले गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय, पेट्रोलियम राज्यमंत्री भजमन बेहरा, मानव संसाधन विकास मंत्री चिमनभाई मेहता, योजना व कार्यक्रम क्रियान्वन राज्यमंत्री भागे गोवर्धन और वित्त उपमंत्री अनिल शास्त्री ने भी अपने-अपने इस्तीफे भेज दिए.

राष्ट्रीय मोर्चा के दूसरे घटकों—अखिल भारतीय गण परिषद, तेलुगु देशम, द्रमुक और कांग्रेस (स) ने वी.पी. सिंह के इस्तीफे का विरोध किया. वामपंथी दलों और भाजपा ने भी संकेत दे दिया कि वी.पी. सिंह कुर्सी छोड़ें, वे यह नहीं चाहते. अकाली दल (लोंगोवाल) और सिक्किम के मुख्यमंत्री नरबहादुर भंडारी ने भी यही राय जाहिर की.

परंतु एक बात निश्चित थी कि पूरा जनता दल वी.पी. सिंह के साथ नहीं है. वित्तमंत्री मधु दंडवते, विदेशमंत्री इंद्रकुमार गुजराल और जनमोर्चा गुट के लोग उनके साथ थे. लेकिन अजित सिंह, शरद यादव और चंद्रशेखर नए नेता का चुनाव करने के पक्ष में थे. चंद्रशेखर को तो अपने पिछले अपमान का बदला लेने का मौका मिल गया था. यह उल्लेखनीय बात यह है कि जिस रात तीन मंत्रियों ने इस्तीफे दिए उस रात इंका के प्रवक्ता एम.जे. अकबर और राजीव गांधी के राजनैतिक सलाहकार आर.के. धवन चंद्रशेखर के घर दावत उड़ा रहे थे. चंद्रशेखर समर्थक जयंत मल्होत्रा ने उद्योग-पति नुस्ली वाडिया को लंदन फोन किया कि अगर वे सत्ता में इंका की वापसी को रोकना चाहते हैं तो उनके आका को प्रधानमंत्री बनवाने में मदद करें. अपना दावा पेश करने के लिए चंद्रशेखर ने ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक, बोम्मई और देवीलाल से मुलाकात भी की.

दिन भर सलाह-मशविरा और सीधी वार्ताएं जारी रहीं जिसमें तीन नेताओं—पटनायक, गुजरात के मुख्यमंत्री चिमनभाई

बीजू पटनायक और एस.आर. बोम्मई संकट टालने में लगे रहे जबकि चंद्रशेखर नए नेता का चुनाव कराने के पक्ष में थे

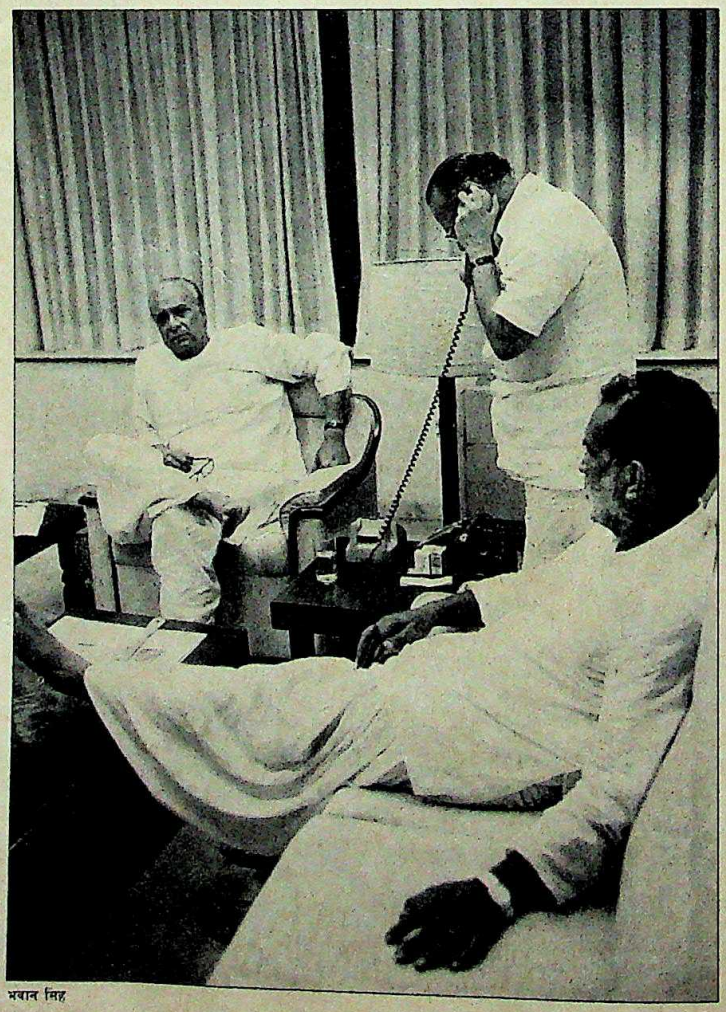

भगवान सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभात पजियार

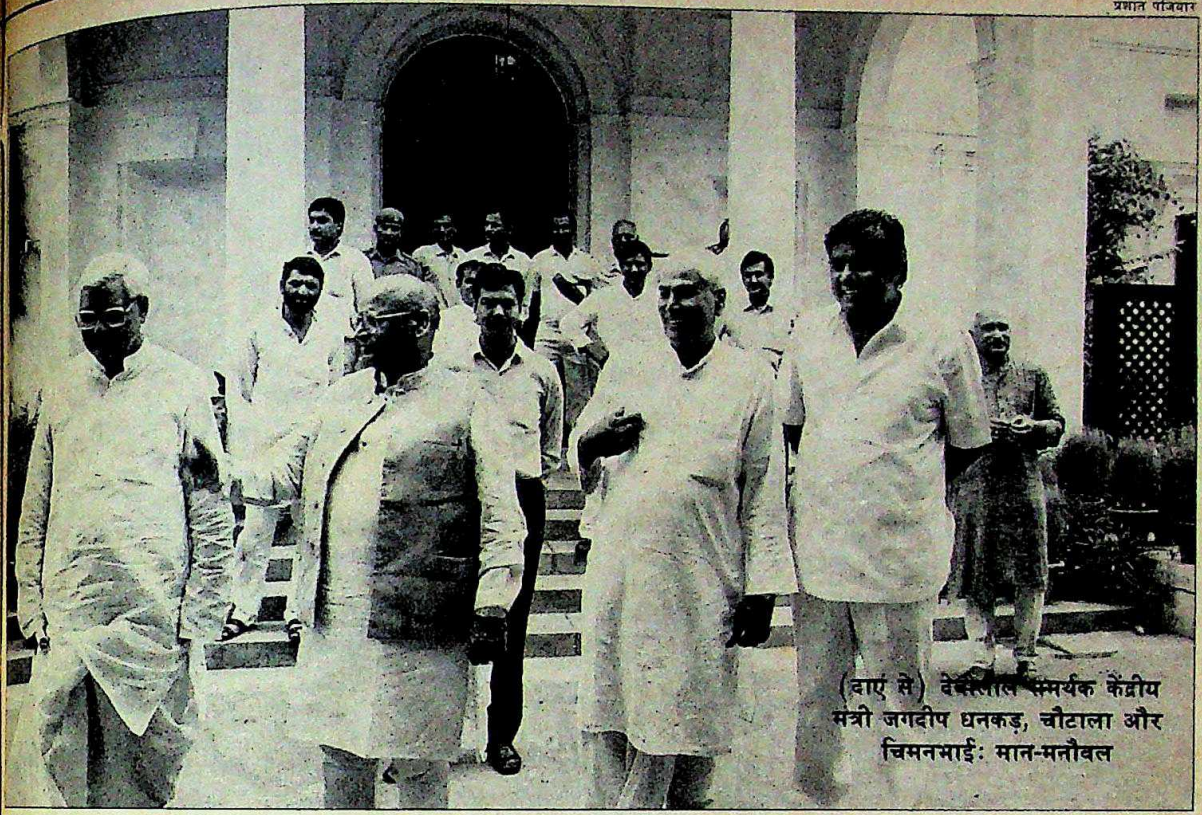

(दाएं से) देवीलाल समर्थक केंद्रीय मंत्री जगदीप धनकड़, चौटाला और चिमनभाई: मान-मनौवल

पिछली बार महम कांड पर चौटाला को इस्तीफे के लिए तैयार करने वाले चिमनभाई पटेल इस बार फिर उन्हें मनाने जा पहुंचे

पटेल और बोम्मई ने प्रमुख भूमिका निभाई. दिल्ली पहुंचते ही इन दोनों मुख्यमंत्रियों ने पार्टी जनों से अकेले और गुटों में मिलना शुरू कर दिया. हरियाणा जनता दल विधायकों के गुट ने इस मांग को लेकर पटनायक और बोम्मई का घेराव किया कि चौटाला को मुख्यमंत्री बने रहना चाहिए. सूचना व प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र और बोम्मई देवीलाल से मिलने उनके घर गए. भाजपा के राज्यसभा सदस्य जे.के. जैन भी वहां पहुंचे. परंतु उप-प्रधानमंत्री निवास पर निराशा का माहौल था. देवीलाल ने वी.पी. सिंह को टेलीफोन करके कहा कि अपना इस्तीफा वापस ले लें और पूरे मामले को प्रेस में ले जाने के लिए इस्तीफा देने वाले तीनों मंत्रियों के खिलाफ "अनुशासनात्मक कार्रवाई करें. शाम तक चौटाला भी अपनी फैमिलीज में वहां पहुंच गए. वे घबराए-से दिख रहे थे. उन्होंने वहां मौजूद पत्रकारों से बात करने से इनकार कर दिया. सभी सवालों का उनके पास एक ही जवाब था, "नो कमेंट्स (कोई टिप्पणी नहीं)." उनका चेहरा उतरा हुआ था और आवाज में वह तेजी भी नहीं थी जो मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के तुरंत बाद थी.

इस तमाम घटनाक्रम से जाहिर है, सबसे ज्यादा खुश थी इंका. राजीव गांधी देवीलाल को नाराज नहीं करना चाहते थे इसलिए इसे जनता दल का भीतरी मामला कहकर चुप्पी साध बैठे. लेकिन पार्टी ने अपनी ओर से कोशिशें शुरू कर दी कि सरकार गिरने की प्रकिया तेज हो. धवन देवीलाल से मिले. और अटकलों का बाजार गरम हो गया. 14 जुलाई की तारीख वैसे भी कांग्रेस के लिए शुभ रही है. ठीक 11 साल पहले 15 जुलाई 1979 को मोरारजी देसाई के नेतृत्व वाली जनता पार्टी की सरकार गिर गई थी.

चौदह जुलाई को देर रात गए जनता दल के 15 वरिष्ठ नेताओं की बैठक हुई और संकट पर गंभीर विचार हुआ. नतीजा: दल की खासियत के अनुरूप उन्होंने कोई फैसला न लेने का फैसला किया. सो, उन्होंने वी.पी. सिंह का इस्तीफा मंजूर न होने के बोम्मई के फैसले का अनुमोदन तो किया पर चौटाला के खिलाफ कोई फैसला करने में नाकाम रहे. सिर्फ दंडवते और मुफ्ती मुहम्मद सईद ने ही कहा कि चौटाला को यह समझाया जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति पार्टी से बड़ा नहीं होता. चंद्रशेखर बस चुपचाप ही बैठे रहे.

इस तरह अंततः वी.पी. सिंह का पलड़ा ही भारी नजर आया. चौटाला प्रकरण पर इस्तीफे की पेशकश करके उन्होंने जता दिया कि वे बड़ी से बड़ी राजनैतिक कीमत चुकाने से भी नहीं हिचकते. इसके अलावा इस संकट ने उजागर कर दिया कि इंका-देवीलाल-चंद्रशेखर की तिकड़ी सक्रिय थी.

अब वी.पी. सिंह को राजनैतिक अर्थों में खासा लाभ भले हुआ हो, पार्टी को भारी राजनैतिक कीमत चुकानी पड़ी है. सात महीने पुरानी इस सरकार को जो यह तीसरा संकट झेलना पड़ा है, उसने इस धारणा को और मजबूत ही किया है कि मध्यमार्गी गैर-कांग्रेसी पार्टियों में एक होने की मानसिकता का अभाव है. वी.पी. सिंह ने भले यह साबित कर दिया हो कि वे जनता दल के लिए अपरिहार्य हैं लेकिन इस पूरे प्रकरण के बाद उनकी छवि बेदाग बची रह गई हो, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओमप्रकाश चौटाला

तिकड़मों भरी वापसी

देवीलाल के फरमान पर गुप्ता ने चौटाला के लिए कुर्सी छोड़ी

मानो मुगलकाल की पुनरावृत्ति हो गई हो. हरियाणा के निवर्तमान मुख्यमंत्री बनारसीदास गुप्ता को अलस्सुबह जगाकर बताया गया कि 'ताऊ' के फरमान से उनका तख्ता पलट गया है और उनकी जगह वे अपने बड़े बेटे ओमप्रकाश चौटाला को राज्य की 'सूबेदारी' सौंप रहे हैं—उन्हीं चौटाला को जिनकी कृपा से गुप्ता को 51 दिनों के लिए गद्दी मिली थी.

दिन चढ़ने पर दिल्ली के हरियाणा भवन में ओमप्रकाश चौटाला शपथ ग्रहण के लिए सज्जित मंच की ओर बढ़े. मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही चौटाला तीन पदों—मुख्यमंत्री, पार्टी महासचिव और प्रदेश जनता दल अध्यक्ष—पर एक साथ विराजमान रहने वाले देश के शायद एकमात्र नेता बन गए.

चौटाला और उनसे भी बढ़कर उनके 'बाऊ जी' देवीलाल के लिए निश्चित रूप से यह खुशी का मौका था. बाप-बेटे की इस जोड़ी ने यह चमत्कार फिर कर दिखाया. चौटाला के दामन पर लगे महम के धब्बे छूटने के पहले ही उन्हें फिर से मुख्यमंत्री बनवाना देवीलाल की जीत के साथ ही वी.पी. सिंह की हार मानी जा रही है. इसने एक बात सिद्ध कर दी कि हरियाणा के विधायक बंधुआ मजदूर सरीखे हैं.

चौटाला की वापसी पर जहां ताऊ के खेमे और कुनबे में खुशी थी, वहीं वी.पी. सिंह की प्रतिक्रिया थी, "हमने न तो बनारसीदास गुप्ता को चौटाला का उत्तराधिकारी नामजद किया और न ही उन्हें चौटाला के पक्ष में इस्तीफा देने को कहा." उधर, सरकार को समर्थन देने वाली विपक्षी पार्टियां अचंभित थीं. भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने व्यंग्य किया, "विडंबना यह है कि एक दिन मुख्यमंत्री से इस्तीफा लिया जाता है और फिर चंद दिनों बाद ही उसी कुर्सी पर बिठा दिया जाता है." दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी इस कार्रवाई को 'जनता दल द्वारा प्रचारित मर्यादा और मूल्य आधारित राजनीति के सिद्धांतों के खिलाफ' करार दिया.

और हमला बोलने की अगुआई इंका ने की. पार्टी के प्रवक्ता एम.जे. अकबर ने कहा, "इस घटना ने साबित कर दिया कि जो लोग मूल्य आधारित राजनीति की बात करते हैं, वही इसके सबसे बड़े भक्षक भी हैं. अपनी कुर्सी बचाने के लिए वी.पी. सिंह किसी भी बात से समझौता कर सकते हैं."

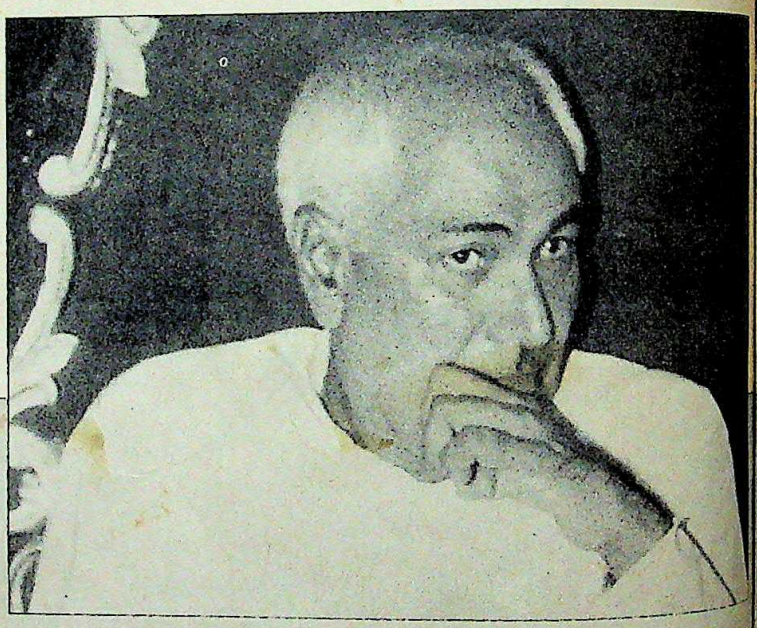

बातचीत

'लोकतांत्रिक ढंग से चुना गया'

दोबारा मुख्यमंत्री बनने पर ओमप्रकाश चौटाला भले ही खुश हों पर राष्ट्रीय राजनीति में इससे तूफान उठ खड़ा हुआ है. वी.पी. सिंह के इस्तीफे के पहले और बाद में वरिष्ठ संवाददाता हरिंदर बवेजा ने उनसे बातचीत की. कुछ अंश:

● ***दोबारा मुख्यमंत्री बनने पर आप कैसा महसूस कर रहे हैं?***

न सावन सूखा, न भादो हरा. बुनियादी तौर पर आम जनता में से होने के कारण मैं मुख्यमंत्री पद को महत्व नहीं देता. मैं मुख्यमंत्री रहूं या नहीं, इससे मेरी सेहत को कोई फर्क नहीं पड़ता.

● ***आपकी बहाली को देवीलाल की जीत और वी.पी. सिंह की हार के रूप में देखा जा रहा है?***

यह उनका सोच हो सकता है, जो चौधरी देवीलाल और वी.पी. सिंह के बीच मतभेद पैदा करना चाहते हैं.

● ***क्या आप मानते हैं कि वी.पी. सिंह को समझौता करना पड़ा और इस सौदे में उनकी अपनी छवि ही खराब हुई है?***

समझौते से आपका मतलब क्या है? क्या मेरी निष्ठा पर आपको संदेह है या आप वी.पी. सिंह पर लांछन लगा रही हैं? मैं स्पष्ट कर दूं कि अगर वी.पी. सिंह को रत्ती भर भी संकोच होगा तो मैं कभी मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के लिए तैयार नहीं होता. सत्ता तो क्या, मैं वी.पी. सिंह और पार्टी की खातिर अपनी जान तक की बाजी लगा देने वाला पहला व्यक्ति होता. मैं वी.पी. सिंह को कभी कमजोर नहीं देखना चाहूंगा.

● ***पर मौजूदा संकट को टालने के लिए क्या आप मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर केंद्र सरकार को गिरने से बचा लेंगे?***

मैं अभी भी उनकी छवि को दाग नहीं लगाने दूंगा. अगर आलाकमान कहे तो मैं इस्तीफा दे सकता हूं.

● ***प्रधानमंत्री के इस्तीफे के बारे में सुनकर आप चिंतित हुए ही होंगे?***

प्रधानमंत्री इस्तीफा दे तो यह मेरे लिए ही नहीं, पूरे देश के लिए गंभीर चिंता का विषय है. चिंता तो आपको भी हुई होगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

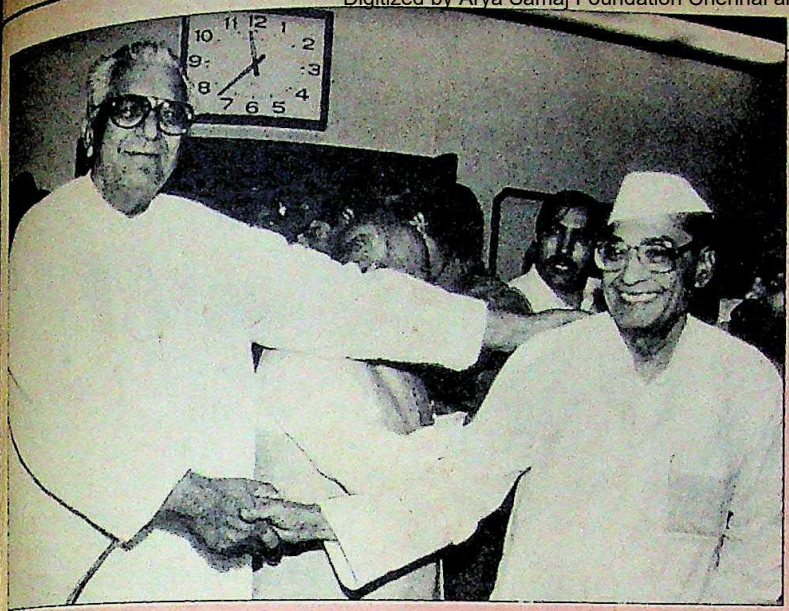

संपत सिंह

के.के. दीपक

देवीलाल ने राज्य के गृहमंत्री संपत सिंह और अपने खासमखास के.के. दीपक को बनारसीदास गुप्ता से इस्तीफा लेने का काम सौंपा

हरियाणा के एक दूसरे 'लाल' पूर्व कृषिमंत्री भजनलाल ने कहा, "चौटाला की वापसी से प्रधानमंत्री की मूल्य आधारित राजनीति नंगी हो गई है."

चौटाला की वापसी के कर्णधार देवीलाल ही थे. यह घटना जितनी चौंकाने वाली थी, उससे पहले हुई घटनाएं भी कम तनाव भरी और नाटकीय नहीं थी. इस घटना ने बड़े-से-बड़े राजनैतिक पंडित को भी हैरान कर दिया.

सबसे अधिक हैरान हुए बनारसीदास गुप्ता शुरू से जानते थे कि उन्हें मुख्यमंत्री पद 'कामचलाऊ' तौर पर ही मिला है. लेकिन वे इतनी जल्दी अपनी कुर्सी छीनने की बात सपने में भी नहीं सोचते थे. गुप्ता को उस दिन सुबह चौटाला के सबसे खास आदमी, गृहमंत्री संपत सिंह ने जगाया और इस्तीफे के साथ दिल्ली पहुंचने

● ***लगभग समूचा केंद्रीय मंत्रिमंडल आपके विरुद्ध है. आपकी प्रतिक्रिया?***

मेरे पक्ष या विरोध में होने का कोई सवाल ही नहीं है. हम सब एक हैं. समूचा जनता दल एक है.

● ***प्रधानमंत्री का कहना है कि उन्होंने बनारसीदास गुप्ता को इस्तीफा देने के लिए नहीं कहा था?***

इसका मुझे पता नहीं. मैं बस इतना जानता हूं कि गुप्ता के इस्तीफे से ही नया नेता चुनने की जरूरत पड़ी. मैं लोकतांत्रिक ढंग से नेता चुना गया और मुझे अपने विधायकों का समर्थन हासिल है.

● ***क्या वी.पी. सिंह को बतौर मुख्यमंत्री आपकी बहाली की जानकारी थी?***

आप यह वी.पी. सिंह से ही क्यों नहीं पूछतीं.

● ***भाजपा के बारे में आपका क्या रवैया है?***

भाजपा ने प्रदेश में हमेशा हमारा समर्थन किया है और मैं उन्हें अपनी सरकार में शामिल होने के लिए फिर आमंत्रित करता हूं.

● ***देवीलाल का ताजा अभियान भाजपा के विरुद्ध है. उसकी चुनौती को आपके पिता ने यह कहकर स्वीकार किया है कि वे हरियाणा में मध्यावधि चुनाव कराएंगे. आप इससे सहमत हैं?***

मैं मध्यावधि चुनाव क्यों चाहूंगा? क्या कोई मुख्यमंत्री कहता है, आ बैल मुझे मार?

● ***जनता दल प्रदेश अध्यक्ष के नाते आपने रणजीत समर्थक सभी विधायकों को निकाल दिया है. क्या यह मान लिया जाए कि अब चौटाला समर्थक और रणजीत समर्थक गुट नहीं रहेंगे?***

हरियाणा में कोई गुट नहीं है. केवल एक खेमा है, देवीलाल का. वे जहां भी तंबू गाड़ देते हैं, वही कैंप लग जाता है. जो उनकी नजर में चढ़ जाते हैं, राजा बन जाते हैं. जिन्हें वे नापसंद करते हैं, खुदा उनकी खैर करे.

● ***तो आप देवीलाल के 'पसंदीदा' हैं? क्या इसका मतलब पारिवारिक शासन जारी रहना भी है?***

मुझे गर्व है कि मेरी रगों में देवीलाल का खून है. लेकिन यह मत भूलिए कि राजनीति में मेरे 38 साल गुजरे हैं और मेरी अपनी भी साख है.

● ***इस समय आपके पास तीन पद हैं और यह वी.पी. सिंह के एक व्यक्ति, एक पद के सिद्धांत के खिलाफ है.***

अगर मैं दो पदों को न छोड़ूं तभी इस सिद्धांत को तोड़ने का आरोप आप मुझ पर लगा सकती हैं. इस बारे में मैं जल्दी ही घोषणा करूंगा.

● ***अंत में, अमीर सिंह हत्याकांड की सीबीआई जांच की इंका की मांग पर आपकी क्या टिप्पणी है?***

इंका को महम के लिए नहीं, अमेठी के लिए ऐसी मांग करनी चाहिए. सीबीआई जांच की जरूरत ही क्या है? मैं हाईकोर्ट के न्यायाधीश से जांच का आदेश दे ही चुका हूं. केंद्र चाहता है कि जांच सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश से कराई जाए और इसके लिए हम तैयार हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

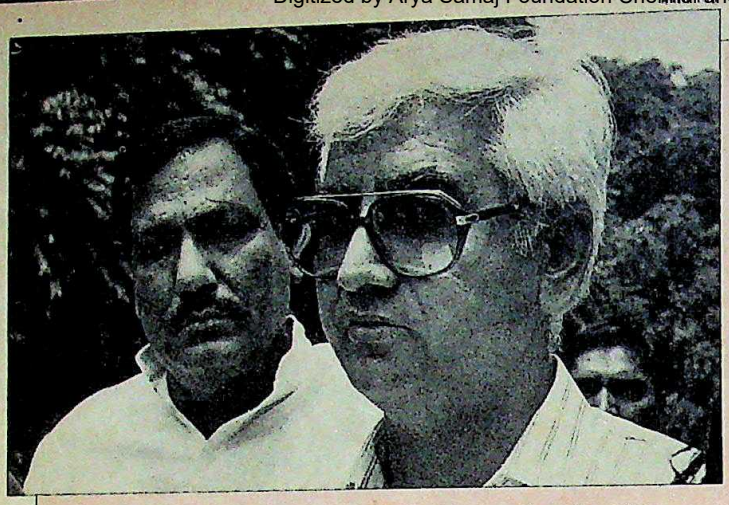

वी.पी. सिंह और चौधरी देवीलाल के बीच मेल-मिलाप कराने में रणजीत सिंह और सांसद सोमपाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

का ताऊ का संदेश दिया.

जानकार लोग बताते हैं कि अपनी पकड़ बनाने और 'कामचलाऊ' मुख्यमंत्री का लेबल हटाने की गुप्ता की कोशिशों के कारण ही चौटाला ने पिता पर इस बात के लिए दबाव डाला कि हालात नियंत्रण के बाहर जाने के पहले कुछ-न-कुछ करना जरूरी है. गुप्ता ने पहली 'गलती' तो भिवानी के पुलिस अधीक्षक के.एस. तोमर का तबादला करके की, जो चौटाला के सबसे दुलारे पुलिस अधिकारी थे. चौटाला की बहू सुप्रिया की विवादास्पद मौत के समय प्रमुख भूमिका निभाने वाले तोमर के कार्यक्षेत्र में महम के निर्दलीय उम्मीदवार अमीर सिंह की लाश मिली थी. अमीर सिंह की लाश रोहतक की, जिसके अंतर्गत महम चुनाव क्षेत्र आता है, जगह हिसार जिले में मिलने से संदेह और बढ़ा.

साथ ही गुप्ता ने सीआईडी के आई.-जी. बुधराम को भी हटा दिया. चौटाला समर्थक माने जाने वाले ये दोनों अधिकारी महम विवाद में भी प्रमुख तौर पर शामिल दिखते हैं. इस कांड की जांच करने वाले हाईकोर्ट के न्यायाधीश के सामने उनकी गवाहियां महत्वपूर्ण होतीं. और शायद इसी जांच के मद्देनजर चौटाला की वापसी भी जरूरी थी.

देवीलाल और चौटाला दोनों ही बनारसीदास गुप्ता और रणजीत सिंह समर्थक विधायकों के बीच बढ़ती नजदीकी से भी चिंतित थे. गुप्ता इन विधायकों के साथ न सिर्फ गुप्त बैठकें ही कर रहे थे बल्कि भाजपा से भी नजदीकी बढ़ा रहे थे. आजकल देवीलाल परिवार और भाजपा के संबंधों में खटास आ गई है.

हरियाणा से काफी दूर बंगलूर में बैठकर देवीलाल ने भाजपा के जवाब की रणनीति भी बना ली. वहां वे रामकृष्ण हेगड़े को उनकी औकात बताने गए थे. वी.पी. सिंह का भरोसा हासिल करके उन्होंने चौटाला की वापसी, रणजीत को केंद्रीय राजनीति में लाने और अपने पूर्व सचिव के.के. दीपक को राजदूत बनाने का आश्वासन भी ले लिया. यह मेल-मिलाप कराने में रणजीत सिंह और सांसद सोमपाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

शपथ ग्रहण समारोह के ठीक 48 घंटे पहले देवीलाल हेलिकॉप्टर से रणजीत सिंह और के.के. दीपक के साथ अपने तेजाखेड़ा फार्म हाउस पर पहुंचे. वहीं उन्होंने अपने दो महत्वाकांक्षी बेटों को 8 जुलाई की रात भोजन पर वी.पी. सिंह के साथ हुई अपनी बातचीत का विवरण दिया. बैठक में देवीलाल ने अपने बेटों से कहा कि वे अपने मतभेद भुला दें.

अब 'असंतुष्ट' विधायकों से निबटना भर बाकी था. तेजाखेड़ा की बातचीत के बाद चौटाला ने पूर्व सिंचाई और बिजली-मंत्री वीरेंद्र सिंह और तीन दूसरे विधायकों के निष्कासन का आदेश जारी किया और अपनी वापसी का रास्ता साफ कर लिया. बाकी 49 विधायक उनके 'साथ' थे ही. सो, वे निर्विरोध चुने जाते. अब सिर्फ गुप्ता को खबर देने का 'मुश्किल' काम भर था. देवीलाल ने उन्हें स्पष्ट कह दिया कि इस्तीफा दो या अविश्वास प्रस्ताव का सामना करने को तैयार रहो. अब गुप्ता कहते हैं कि उन्होंने देवीलाल के इस आश्वासन के साथ ही मुख्यमंत्री पद छोड़ा था कि उन्हें केंद्र में स्थान दिया जाएगा.

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच चौटाला सर्वसम्मति से चुन लिए गए. केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में प्रोफेसर शेर सिंह मौजूद तो थे पर देवीलाल इस चुनाव को वैध रूप देने के लिए जयपाल रेड्डी को पर्यवेक्षक बनाना चाहते थे. रेड्डी ने पर्यवेक्षक तो क्या, वहां मौजूद रहने तक से भी इनकार कर दिया.

चौटाला जहां वापस आने में कामयाब रहे, वहीं वी.पी. सिंह की छवि को भारी आघात पहुंचा. प्रधानमंत्री पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने मूल्यों पर आधारित राजनीति और एक व्यक्ति, एक पद के जिस सिद्धांत के लिए पिछले तीन वर्षों तक संघर्ष किया, उसी को इस मौके पर तिलांजलि दे दी.

पर देवीलाल की नजर में सब कुछ सामान्य था. उन्होंने कहा भी, "हरियाणा जनता विधायक दल में ओमप्रकाश के नेता चुने जाने से कुछ भी असामान्य नहीं हुआ है." बहरहाल, चौटाला की ताजपोशी देश की राजनीति में तूफान का संकेत दे रही लगती है. —हरिवंश

घटनाक्रम

22 मई: महम कांड को लेकर बढ़ते दबाव के कारण चौटाला का हरियाणा के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा.

23 मई: बनारसीदास गुप्ता मुख्यमंत्री बने. उन्होंने दावा किया कि चौटाला को वापस लाए जाने तक वे 'डमी' मुख्यमंत्री नहीं हैं.

6 जून: हरियाणा जनता विधायक दल, राज्य पार्टी कार्यसमिति, दल के सभी 7 सांसदों और जिला अध्यक्षों ने चौटाला में भरोसा जताया.

8 जुलाई: देवीलाल की वी.पी. सिंह से रात्रिभोज पर लंबी बातचीत.

9 जुलाई: चंडीगढ़ जाते हुए बनारसीदास गुप्ता को देवीलाल ने दिल्ली बुलाया. गुप्ता इस्तीफा देने को राजी.

10 जुलाई: देवीलाल की मौजूदगी में चौटाला और रणजीत सिंह ने आपसी मतभेद भुलाने का वादा किया.

11 जुलाई: चौटाला ने राज्य जद के अध्यक्ष की हैसियत से तीन विरोधी विधायकों को पार्टी से निकाला.

12 जुलाई: जद अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई ने चौटाला को महासचिव बनाया. बनारसीदास गुप्ता का इस्तीफा. चौटाला मुख्यमंत्री बने.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलम के पैनेपन का जो सबूत हिंदी इंडिया टुडे ने दिया है
उसने हिंदी पत्रकारिता को धार दी है.

तथ्यों, घटनाओं को परत-दर-परत उधेड़कर,
सोच और नई दृष्टि की रोशनी में
पाठकों तक पहुंचाना
रहा है.

उन्हें नए
जांच-परखकर
हिंदी इंडिया टुडे का उद्देश्य

जहां सत्य की सीमाओं का अक्सर
अतिक्रमण होता रहा है, वहां हिंदी इंडिया टुडे कलम का
सिपाही बनकर पहरे पर खड़ा रहा है.

सोच के इसी पैनेपन के साथ-साथ गहराई, ताज़गी और
विस्तार ने, इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी की सर्वोत्कृष्ट
पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 18 लाख पाठकों का विश्वास प्राप्त हुआ है.

**लेकिन हिंदी इंडिया टुडे सिर्फ समाचार पत्रिका ही नहीं है.
जीवन के विविध रंगों से परिचय के लिए पर्यावरण, जीवन शैली और
रहन-सहन जैसे स्तंभ भी हैं जिनमें बदलते परिवेश और जिंदगी के
नए नजरिए की झांकी प्रस्तुत की जाती है.**

कलम का सिपाही

वार्षिक ग्राहक बनिए—प्रति अंक 1.50 रु. बचाइए (यानि 36/- रु. प्रति वर्ष) और अपनी चहेती पत्रिका घर बैठे पाइए! 132/- रु. चैक/मनी ऑर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिए 'लिविंग मीडिया इंडिया लि.' के नाम थॉमसन प्रेस बिल्डिंग, पो. बॉ. 706, फरीदाबाद-121007 (हरियाणा) पर भेजिए, अपने नाम व पते के साथ.
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/271

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचनाओं के अथाह मानसरोवर में हिंदी इंडिया टुडे राजहंस की तरह गहरी डुबकी लगाकर अक्सर अनमोल मोती लाता रहा है.

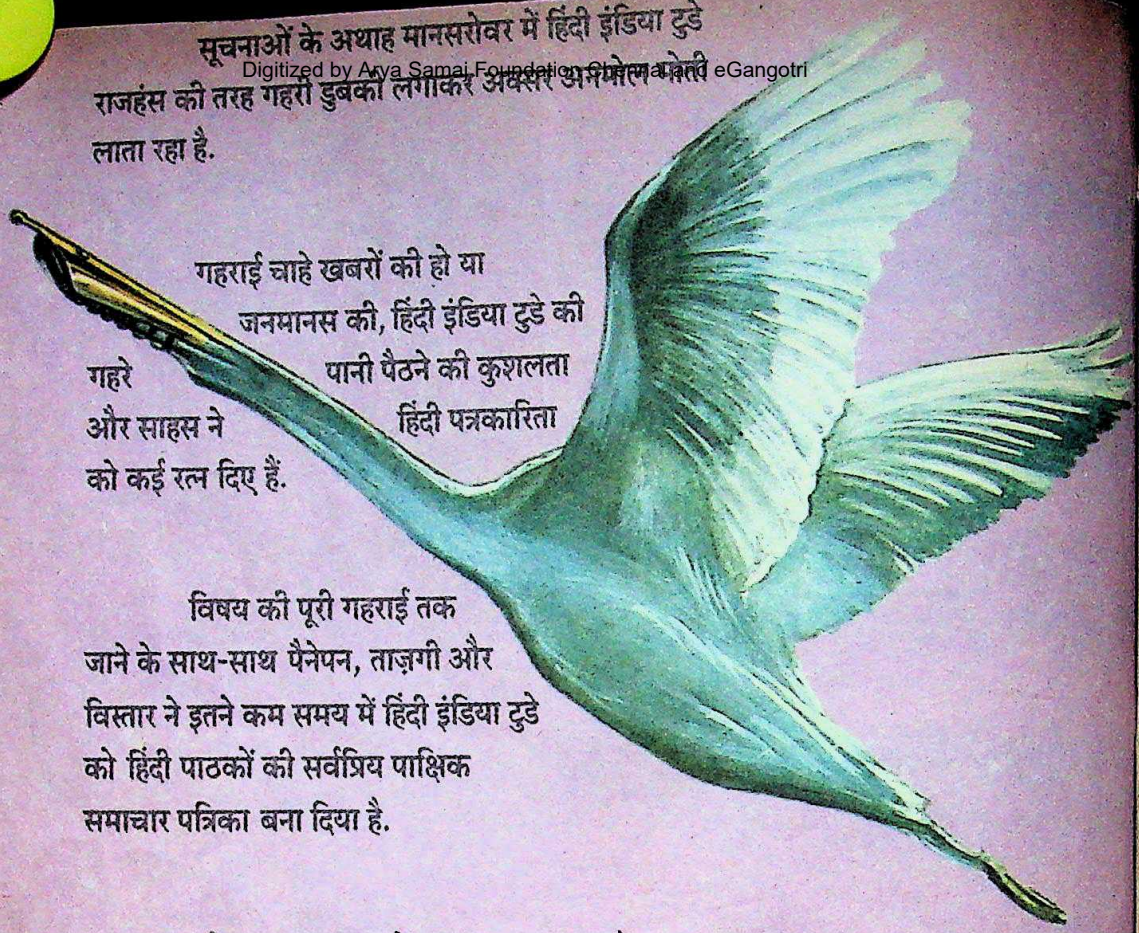

गहराई चाहे खबरों की हो या जनमानस की, हिंदी इंडिया टुडे की गहरे पानी पैठने की कुशलता और साहस ने हिंदी पत्रकारिता को कई रत्न दिए हैं.

विषय की पूरी गहराई तक जाने के साथ-साथ पैनेपन, ताज़गी और विस्तार ने इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी पाठकों की सर्वप्रिय पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 18 लाख पाठकों का विश्वास प्राप्त है.

और चूंकि आधी दुनिया महिलाओं की है इसीलिए हिंदी इंडिया टुडे उनकी रुचियों और जरूरतों के विषयों जैसे रसोईघर, गहने, सौंदर्य प्रसाधन, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति और उनके बदलते दृष्टिकोण की थाह लेता है. फिर यथार्थ की बेबाक टिप्पणियों के लिए एक विशिष्ट महिला पत्रकार का स्तंभ भी है.

जनमानस का राजहंस

इंडिया टुडे

देश की भाषा में देश की

MILESTONE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण हेगड़े

फिर गिरी गाज इस्तीफे की

हेगड़े के पांच साल में पांचवें इस्तीफे से कहीं पत्ता तक नहीं खड़का. दरअसल कई, घोटालों से संबद्धता के कारण 'मूल्य आधारित राजनीति' का उनका दावा खोखला साबित हुआ

पांच साल पहले उन्हें भारतीय राजनीति में एकमात्र वैकल्पिक 'मि. क्लीन' के रूप में पेश किया जा रहा था. लेकिन पिछले पखवाड़े सुसंस्कृत रामकृष्ण हेगड़े ने योजना आयोग के उपाध्यक्ष के पद से विदा ली तो पत्ता तक नहीं खड़का.

उनकी यह विदाई बेआबरू होकर निकलना साबित हुई. उनकी बेइज्जती इसलिए और ज्यादा मुखर हो उठी कि इस मौके पर सिर्फ कर्नाटक जनता दल में ही उल्लास देखने को नहीं मिला बल्कि पार्टी के वरिष्ठ नेता भी इससे खुश थे. एक ने तो इस घटना को "पार्टी में लफ्फाजी की राजनीति की एक और पराजय" कहा.

लेकिन पार्टी के भीतर और बाहर उनके प्रतिद्वंद्वी साफ-साफ बस यही कहना चाह रहे थे कि उन्होंने खुद को और राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को शर्मिंदगी से बचाने के लिए इस्तीफा दिया. इंका प्रवक्ता विट्ठल नरहरि गाडगिल ने कहा, "यह साबित हो चुका है कि हेगड़े हमेशा अपने अपराधों को मूल्य आधारित राजनीति के बड़बोले आदर्शों के पीछे छिपाते रहे हैं."

उनके अब तक के कार्यकलाप से पता चलता है कि देश में शायद वे एकमात्र राष्ट्रीय नेता हैं जो छह साल के मुख्यमंत्रित्व में लगभग दर्जन भर घोटालों से जुड़े. साथ ही उन्होंने हर बार घोटालों के उभरने पर इस्तीफा देकर या उसकी धमकी देकर एक मिसाल कायम कर दी.

हेगड़े का ताजा और, अधिकांश जानकारों के मुताबिक, अंतिम इस्तीफा कुलदीप सिंह आयोग की रिपोर्ट पर आधारित है. इस आयोग का गठन जून 1989 में इन आरोपों की जांच के लिए किया गया था कि हेगड़े के मुख्यमंत्री रहते कर्नाटक सरकार ने आप्रवासी भारतीयों के संघ को औने-पौने भाव पर कीमती जमीन देने की पेशकश की (देखें बॉक्स). पहले तो हेगड़े ने आयोग की नियुक्ति का स्वागत करते हुए कहा कि कोई गड़बड़झाला नहीं हुआ है. लेकिन जब रिपोर्ट पेश हुई तो वे न्यायाधीश की नीयत पर उंगली उठाने लगे. हेगड़े कहते हैं,

"मैंने कोई कार्रवाई नहीं की, बस इतने से ही मुझ पर जमीन सौदे में शामिल होने का आरोप मढ़ा जा रहा है." युवा इंका अध्यक्ष रमेश चेन्निथला का कहना था, "उन्होंने खुद ही न्यायिक जांच की मांग की थी. सरकार ने तो सिर्फ उनकी मांग को मंजूर ही किया."

दरअसल, हेगड़े ने पांसा फेंका था पर चाल बेकार गई. आयोग ने रिपोर्ट में माना है कि जमीन सौदे में मुख्यमंत्री कार्यालय ने विशेष रुचि ली. पहले की तरह शायद इस बार भी हेगड़े घोटाले के मामले में अपनी स्थिति सुधार सकते थे. लेकिन जनता दल के भीतर राजनैतिक गणित दुर्भाग्य से उनके एकदम खिलाफ है.

इसके स्पष्ट संकेत पहले से ही थे. रिपोर्ट 25 जून को पेश की गई पर इस पर औपचारिक तौर पर पहली दफा 1 जुलाई को मंत्रिमंडल की राजनैतिक समिति की बैठक में विचार किया गया. बैठक में केंद्रीय कानूनमंत्री दिनेश गोस्वामी को विशेष आमंत्रित की हैसियत से शामिल होने को कहा गया हालांकि वे इस मंत्रिमंडलीय समिति के सदस्य नहीं हैं. उन्हें रिपोर्ट की चार प्रतियों में से एक सौंपी गई थी. प्रधानमंत्री के साउथ ब्लॉक दफ्तर में चली आधे घंटे की इस बैठक में रिपोर्ट की मुहरबंद प्रति खोली गई और उसके मुख्य अंश पढ़े गए. हमेशा की तरह वी.पी. सिंह तो निष्पक्ष बने रहे जबकि नेहरू और

कार्टून: अजीत नैनन

रामकृष्ण हेगड़े पर दबाव बढ़ रहा था. कुलदीप सिंह आयोग की रिपोर्ट आखिरी कील साबित हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजित सिंह ने हेगड़े से पद छोड़ने को कहे जाने की सिफारिश की. गुजराल ने तकनीकी आधार पर हेगड़े का बचाव किया. दिनेश गोस्वामी की स्पष्ट राय के अभाव में तय किया गया कि शाम को फिर बैठक रखी जाए.

अगली बैठक में दंडवते के अलावा बाकी सभी लोग उपस्थित थे जब वी.पी. सिंह ने घोषणा की कि जल्दी ही हेगड़े की एक चिट्ठी मिलने की उम्मीद है. और जो कुछ आया, वह एक चिट्ठी नहीं बल्कि सभी सदस्यों के नाम पांच मुहरबंद लिफाफे थे. हर लिफाफे में दस पृष्ठों का पत्र था जिसमें अपने बचाव की दलील पेश की गई थी. सिर्फ वी.पी. सिंह के लिफाफे में एक पृष्ठ अधिक था और उसमें हेगड़े ने इस्तीफे की पेशकश की थी. बहुमत यह था कि यदि हेगड़े को पद पर बने रहने दिया जाता है तो रिपोर्ट का इस्तेमाल सत्ताधारी पार्टी के खिलाफ हो सकता है.

यह रुख अख्तियार करने वाले नेहरू और अजित सिंह ने हेगड़े को पद से हटाने का फैसला कर लिया था. लेकिन वी.पी. सिंह ने सलाह दी कि रिपोर्ट विशेष सुझाव के लिए कार्मिक विभाग को भेज दी जाए. प्रधानमंत्री के पास हेगड़े के इस्तीफे को टालने की वाजिब वजहें थीं क्योंकि हेगड़े हमेशा देवीलाल और चंद्रशेखर के साथ लड़ाई में उनके साथ बने हुए थे. लेकिन हेगड़े के इस्तीफे की मांग जोर पकड़ने पर वी.पी. सिंह के हाथ बंध गए.

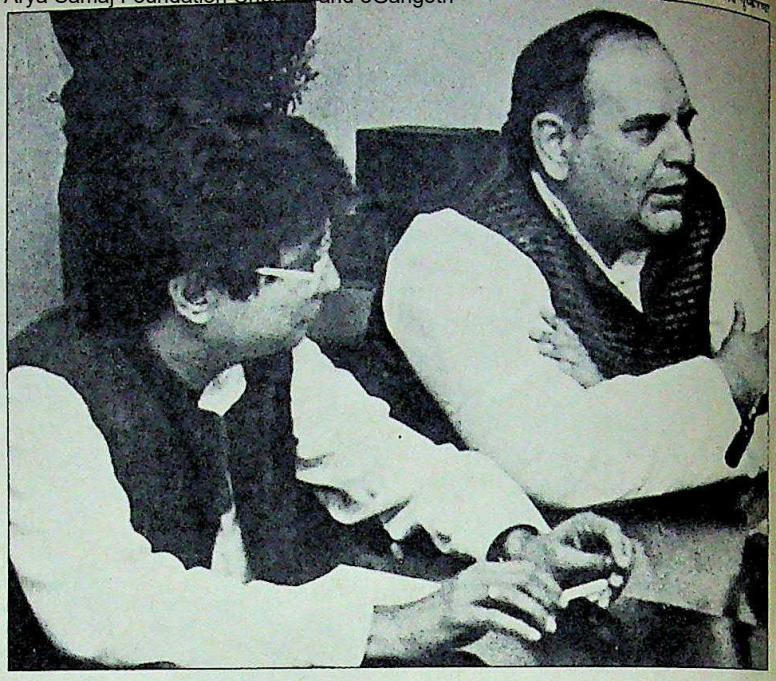

अजित और अरुण: मुखालफत

अगर हेगड़े की विदाई पर अफसोस नहीं जताया गया तो उसकी वजहें भी हैं. योजना आयोग के उपाध्यक्ष के पद पर उनकी नियुक्ति के बाद से ही सत्ताधारी दल में एक शक्तिशाली वर्ग यह दलील देता रहा है कि चूंकि कर्नाटक के लोकसभा और विधानसभा चुनावों में जनता दल को अपमानजनक पराजय का मुंह देखना पड़ा है इसलिए उन्हें ऐसा महत्वपूर्ण पद नहीं दिया जाना चाहिए.

एक मायने में हेगड़े ने खुद ही अपने पांव पर कुल्हाड़ी चला ली. एक तो यह कि उन्होंने कर्नाटक में बोम्मई सरकार गिराने वालों के साथ मिलकर खुद को जनता पार्टी में अपने गुट से अलग-थलग कर लिया

घोटाला पुराण

अरक घोटाला: 1984 में उठे इस प्रकरण ने तो हेगड़े सरकार को करीब-करीब गिरा ही दिया था. आम चुनाव के कुछ समय पहले राज्य सरकार ने अरक को बोतलबंद करने का ठेका देने के लिए निविदाएं मंगाईं. यह काम करीब 55 करोड़ रु. का था. 131 आवेदनों में से आठ का चुनाव हुआ तो बाकी लोग हाईकोर्ट पहुंच गए. फरवरी 1986 में दिए अपने फैसले में अदालत ने ठेके बांटने के फैसले को मनमानापन और कानून का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन बताया. हेगड़े ने इस्तीफा दे दिया लेकिन 11 दिन बाद फिर गद्दी संभाल ली.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

आप्रवासी भूमि घोटाला: फरवरी 1988 में विपक्षी नेताओं के अनुसार बंगलूर विकास प्राधिकरण ने 130 करोड़ रु. मूल्य वाली 110 एकड़ जमीन आप्रवासी भारतीयों के आवास एसोसिएशन को मात्र 2.2 करोड़ रु. में दे दी. यह संगठन दुबई की एक बेनामी संस्था ने खड़ा किया था. हेगड़े का कहना है कि एसोसिएशन को कभी जमीन दी ही नहीं गई. सरकारी दस्तावेज बताते हैं कि हेगड़े सरकार ने यह जमीन देने के लिए आवास प्राथमिकताओं में फेरबदल किए.

जमीन घोटाला: दिसंबर 1988 में हेगड़े पर आरोप लगा कि उन्होंने 67 एकड़ के एक प्लॉट को व्यावसायिक जायदाद में बदलकर एक बिल्डर सी.एल. शास्त्री सहित कई प्रभावशाली लोगों को लाभ पहुंचाया. इस जमीन को शहरी भूमि सीमा कानून से तो मुक्त किया ही गया, खोडे समूह की दो फर्मों को भी बेच दिया गया. खोडे डिस्टिलरी के लाभांश हेगड़े परिवार के 5 लोगों को दिए गए. आपत्तियों के बावजूद सीमेंट की इजाजत दी गई क्योंकि हेगड़े ने अर्जी पर सहानुभूति से विचार करने को कहा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अलावा देवीलाल, अजित सिंह और जनमोर्चा का गुट हमेशा उन्हें चुनौती मानता रहा. उन पर पहला हमला ओमप्रकाश चौटाला की ओर से हुआ. उन्होंने पिछले महीने टेलीफोन कांड में संसदीय समिति की रिपोर्ट आने के बाद हेगड़े की निंदा की और उनसे इस्तीफे की मांग की.

साथ ही योजना आयोग में अपने आखिरी हफ्तों के दौरान आयोग में अपने समर्थकों को विभिन्न मंत्रालयों और पार्टी के मामले में सीधा हस्तक्षेप करने का प्रोत्साहन देकर हेगड़े ने दल के वरिष्ठ नेताओं को भी नाराज कर लिया. एक वरिष्ठ मंत्री के मुताबिक, योजना आयोग के मार्फत अपना गढ़ दुरुस्त करने की उनकी कोशिशों ने "आयोग और केंद्रीय मंत्रिमंडल के बीच युद्ध का रूप ले लिया."

मसलन, पिछले पखवाड़े आयोग में हेगड़े समर्थक रजनी कोठारी ने सरकार की औद्योगिक नीति की खुलेआम आलोचना की. इसके पहले एक और सदस्य लक्ष्मीचंद्र जैन ने महम में हिंसा के सवाल पर इस्तीफा दे दिया था जिससे देवीलाल नाराज हो उठे.

सत्ताधारी दल के नेता खुलेआम कहते हैं कि हेगड़े के अधीन आयोग समांतर सरकार की तरह चल रहा था. वह हर मामले में हस्तक्षेप करता रहा. मंत्रिमंडल की राजनैतिक समिति की बैठक में शामिल एक कैबिनेट मंत्री कहते हैं, "हेगड़े का व्यवहार वैकल्पिक प्रधानमंत्री की तरह था. वे वित्त, उद्योग, श्रम और कृषि के मामलों के भी बयान देते फिर रहे थे." वे वरिष्ठ नौकरशाहों के चयन में भी संबंधित मंत्रियों और प्रधानमंत्री कार्यालय को पत्र लिखकर सीधा हस्तक्षेप करते थे.

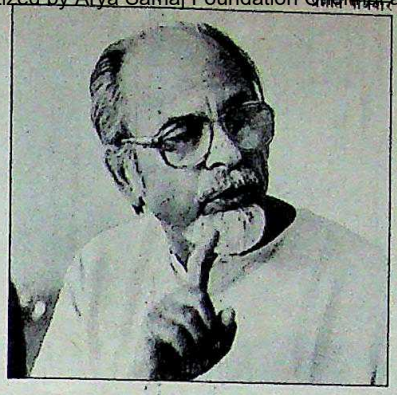

इंद्र गुजराल एकमात्र कैबिनेट मंत्री थे जिन्होंने तकनीकी आधार पर हेगड़े का पक्ष लिया

उनके संबंध अपने दल के नेताओं से ही नहीं बिगड़े बल्कि पार्टी के सहयोगी दलों से भी उनके रिश्तों में खटास आ गई है. मसलन, हेगड़े ने राष्ट्रीय और राज्य के चुनावों में भाजपा से सीटों का तालमेल करने से इनकार करके उसे नाराज कर लिया था.

वैसे, अभी भी हेगड़े और एक समय उनके नेता रह चुके चंद्रशेखर में कुछ हद तक समानताएं हैं. जैसे, जनाधार हो या न हो, सहयोगी हों या न हों पर वे आसानी से हार मानने वाले शख्स नहीं हैं. साथ ही हेगड़े को समाचार जगत के एक वर्ग और कुछ उद्योगपतियों का समर्थन हासिल है.

यही नहीं, उनके पास जो कुछ है वे उसी से लड़ाई जारी रखना पसंद करते हैं. कुलदीप सिंह आयोग की रिपोर्ट पर जब गरमी बढ़ी तब भी उन्होंने देवीलाल से सुलह की कोशिश में बंगलूर के प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र में उनके साथ कई घंटे बिताए. इन कोशिशों के कारण ताऊ कुछ हद तक नरम भी हुए और उन्होंने हेगड़े के समर्थन में एकाध बयान भी दे डाला एक बयान में तो उन्होंने यहां तक कहा कि हेगड़े को इस्तीफा नहीं देना चाहिए था. लेकिन खटास मिटाने की इस कोशिश में हेगड़े ने देरी कर दी.

अब हेगड़े के समर्थकों का भी मानना है कि उन्हें नई शुरुआत करनी चाहिए यानी जनता के बीच जाना चाहिए, भले ही इसके लिए उन्हें आयोग की रिपोर्ट को राजनैतिक मुद्दा बनाना पड़े. कर्नाटक में हाल के चुनावी नतीजों से यही संकेत मिलता है कि हेगड़े को वापसी के लिए लोहे के चने चबाने पड़ेंगे.

—प्रभु चावला

मेडिकल कॉलेज घोटाला: अक्तूबर 1985 में विपक्ष के नेता ए.के. सुबैया ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री हेगड़े के रिश्तेदार मेडिकल कॉलेजों में सीटें लेकर नामांकन करा रहे हैं. उन्होंने एक प्राथमिकी के समर्थन साक्ष्य भी दिए. शुरुआती ना-नुकुर के बाद हेगड़े ने जांच बैठा दी. लेकिन अनेक कारणों से तीन न्यायाधीशों ने जांच का काम छोड़ दिया. हेगड़े के बेटे और भतीजे के खिलाफ लगे आरोपों की जांच कर रहे जस्टिस परमेश्वर दयाल संभवतः 30 अगस्त तक अपनी रिपोर्ट दे देंगे. वे एक कूर्गी कॉफी उत्पादक के इस आरोप की भी जांच कर रहे हैं कि इन दोनों ने उनकी बेटी का चयन एमडी कोर्स में करवाने के नाम पर 2.50 लाख रु. ठगे.

टेलीफोन टैपिंग घोटाला: अगस्त 1988 में 'इंडियन एक्सप्रेस' ने जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष अजित सिंह और कर्नाटक के असंतुष्ट नेता एच.डी. देवगौडा के बीच टेलीफोन पर हुई बातचीत छाप दी. यह बातचीत टेलीफोन टैप करने से उजागर हुई. अखबारों में आईजी एम.एस. रघुरामन के उस आदेश की प्रतियां छप गईं जिसमें उन्होंने महत्वपूर्ण राजनेताओं के फोन टैप करने को कहा था. हेगड़े ने दावा किया कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी. संसदीय समिति, विधानसभा में पेश सबूतों से जाहिर हुआ कि हेगड़े ने इसकी स्वीकृति दी थी.

रेवाजीतू भूमि घोटाला: इंका और हेगड़े के राजनैतिक विरोधियों का आरोप है कि हेगड़े के रिश्तेदारों ने रेवाजीतू बिल्डर्स नामक कंपनी के माध्यम से बंगलूर की एक बहुत ही अच्छी जमीन हथिया ली. हेगड़े के दामाद मनु नियाणी की बहन शोभा माखीजा इस कंपनी की एक भागीदार हैं. तत्कालीन राजस्वमंत्री एस.आर. बोम्मई के आदेश से हुई जांच से पता चलता है कि स्टांप ड्यूटी बचाने के लिए इस जमीन को कागजों में बहुत कम कीमत की बताया गया. उन्होंने जमीन के असली मालिक के खिलाफ मामला चलाने के आदेश दिए पर शोभा माखीजा के खिलाफ कुछ नहीं हुआ. अब इस मामले की ज्यादा खबर नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

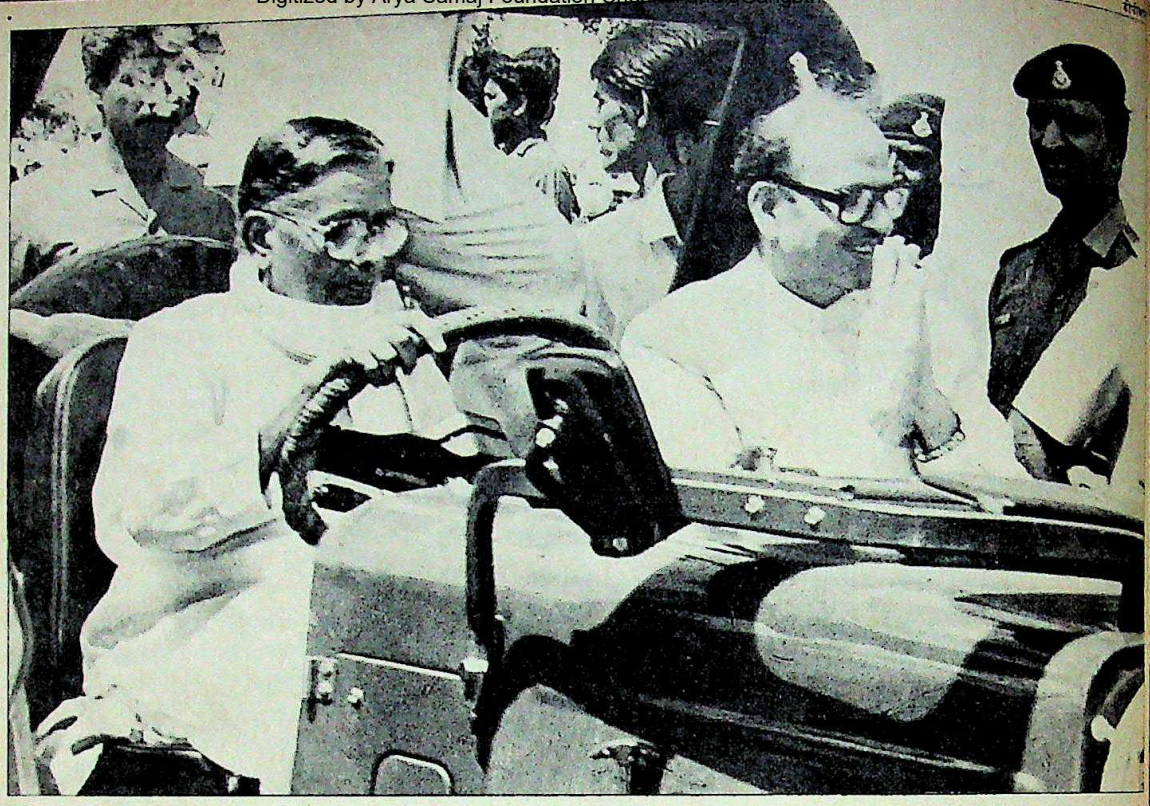

प्रधानमंत्री को कुकड़ेश्वर के आयोजन में ले जाते पटवा: मुसीबत को बुलावा

मध्य प्रदेश

हर कदम पर गलतियों के निशान

मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा का चार महीने का कार्यकाल कुल मिलाकर उनके सबल से निर्बल होने की यात्रा ही रही

भाजपा ने सिर्फ चार महीने पहले तीन राज्यों का शासन संभालने वाले अपने मुख्यमंत्रियों से बड़ी आशाएं बांध रखी थीं कि वे नए मानक स्थापित करेंगे और देश को दिखा देंगे कि मध्यमार्गी दलों में भाजपा बेहतर शासन चलाकर दिखा सकती है. लेकिन पार्टी का कम-से-कम एक मुख्यमंत्री इन उम्मीदों के सामने बहुत बौना पड़ता लग रहा है. मध्य प्रदेश में सुंदरलाल पटवा पार्टी को प्राप्त विशाल जनादेश को तेजी से गंवा रहे हैं.

किसी भाजपा सदस्य से मुख्यमंत्री के बारे में पूछिए तो संभावना यह है कि वह कहेगा—दुश्मन बनाने और दोस्तों को खोने के तरीके पर पटवा शोध प्रबंध लिख सकते हैं, सत्ता उनके सिर पर चढ़कर बोल रही है, वे नजरबंद मुख्यमंत्री हैं जिनकी सरकार को एक प्रभावशाली चौकड़ी रिमोट कंट्रोल के जरिए चला रही है, वे मुस्कराने की कला भूल बैठे हैं आदि.

अगर 65 वर्षीय पटवा की मुस्कराहट फीकी हो गई है तो इसके लिए वे खुद ही दोषी हैं. कारण, सत्ता संभालते ही पेचीदा राजनीतिक मसलों से निबटने में उन्होंने एक के बाद दूसरी गलती की और कहीं भी कौशल नहीं दिखाया. एक गलती जिस पर पटवा पश्चाताप कर रहे हैं, वह एक आयोजन था जो उन्होंने लोगों में अनजाने

भयंकर गलतियां

- निजी आयोजन में मंत्रियों और प्रधानमंत्री को निमंत्रण देने के कारण पद के दुरुपयोग का आरोप
- प्रमुख मंत्रियों से महत्वपूर्ण विभाग छीनने के कारण असंतुष्टों की गतिविधियों को प्रोत्साहन
- सरकारी कर्मचारियों के व्यापक पैमाने पर तबादलों और सफाई अभियान से जनता में असंतोष को बढ़ावा
- संविधान की धारा 370 को रद्द करने की मांग का प्रस्ताव विधानसभा से पास करवाने का अजीबोगरीब कदम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पिता की छठवीं बरसी पर 15 जून को मंदसौर जिले के अपने गृहनगर कुकड़ेश्वर में आयोजित किया. हालांकि यह निजी कार्यक्रम था. लेकिन न सिर्फ समूचा राज्य मंत्रिमंडल वहां था, वरन खुद प्रधानमंत्री वहां थे जो पटवा के साग्रह अनुरोध पर पहुंचे थे.

राजनैतिक हस्तियों की मौजूदगी के कारण कार्यक्रम के निजी या सरकारी होने का झीना फर्क खत्म हो गया और कांग्रेस (इ) ने विधानसभा में 'सरकारी मशीनरी के व्यापक दुरुपयोग' का आरोप लगाते हुए स्थगन प्रस्ताव रख दिया. लेकिन पटवा को इससे भी ज्यादा नुकसान भाजपा समर्थक और राजेंद्र शर्मा द्वारा प्रकाशित तथा संपादित दैनिक 'स्वदेश' के हमले से हुआ. पहले पृष्ठ पर संपादकीय में 'स्वदेश' ने पटवा पर एकदम निजी कार्यक्रम के लिए सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए उनके नैतिक मानदंडों की तुलना हरियाणा के चौटालाओं और चौधरियों से की. कठोर प्रहार करने वाले संपादकीय में

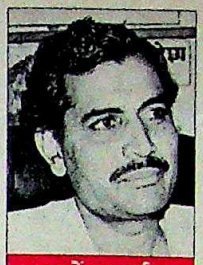
राजेंद्र शर्मा

कैलाश जोशी

पटवा के खिलाफ जारी मुहिम का नेतृत्व शर्मा और जोशी कर रहे हैं

टिप्पणी की गई "इस पारिवारिक आयोजन ने भाजपा के विरोधियों को आलोचना का हथियार दे दिया और अब उसके नेताओं को अपनी स्थिति स्पष्ट करने में समय गंवाना पड़ेगा."

संपादकीय से खासी हलचल मच गई. यह दैनिक भाजपा समर्थक है इसलिए माना गया कि यह पार्टी में पटवा की स्थिति कमजोर होने का प्रमाण है. और पटवा ने पांच पृष्ठों का जवाब देकर मामले को बद से बदतर बना दिया. उनमें उन्होंने तर्क दिया कि सार्वजनिक जीवन में वर्षों गुजारने के कारण महत्वपूर्ण लोगों से उनके निजी संबंध बन गए हैं. उन्होंने लिखा, "मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि मैंने प्रधानमंत्री, श्रीमती राजमाता जी और दूसरे लोगों को कुकड़ेश्वर में आमंत्रित करके कौन-सा पाप कर डाला." हालांकि पटवा को अपना बचाव करने का पूरा अधिकार है. लेकिन उन्होंने यह आरोप लगाकर कि यह संपादकीय 'स्वदेश' को ज्यादा विज्ञापन देने के लिए उन पर दबाव डालने का प्रयास है, अपनी साख गिरा ली. शर्मा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने लिखा, "हो सकता है मैं आपकी अपेक्षाएं पूरी न कर सका हूं"

संपत्ति की घोषणा

स्वस्थ परंपरा

मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि अपने मंत्रिमंडल के सदस्यों से अपनी संपत्ति की घोषणा करवाना है जिसका सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना में दूरगामी असर होगा.

पटवा और उनके 26 मंत्रियों की संपत्ति की जो फेहरिस्त विधानसभा में पेश की गई उसके मुताबिक एक या दो मंत्रियों के अलावा सभी साधन संपन्न हैं. सबसे कमजोर श्रम राज्यमंत्री लीलाराम भोजवानी लगते हैं. वे पहले अखबार के संवाददाता रहे हैं. उनकी कोई अचल संपत्ति नहीं है.

सुंदरलाल पटवा के पास भोपाल में दो प्लॉट, चार हेक्टेयर सिंचित कृषि भूमि, बैंक में जमा राशि 68,830 रु., 2.29 लाख रु. के शेयर, 22 तोला सोना और 500 ग्राम चांदी है. इसके अलावा चार पुश्तैनी मकानों में छठवां हिस्सा.

जलस्रोतमंत्री शीतला सहाय के भोपाल और ग्वालियर में तीन मकान, ग्वालियर में दो प्लॉट, 1.1 लाख रु. बैंक जमा राशि, 20 तोला सोना, 50 तोला चांदी और एक कार है.

वित्तमंत्री रामहित गुप्ता के पास दो मकान, 35 एकड़ कृषि भूमि, भोपाल में

पटवा: प्रशंसनीय कार्य

एक प्लॉट, 1.35 लाख रु. बैंक जमा राशि, 90,000 रु. के शेयर, 40 तोला सोना और 2 किलो चांदी है.

सहकारितामंत्री लक्ष्मीनारायण शर्मा का भोपाल में एक मकान और 8,000 वर्ग फुट का एक प्लॉट है. 16 एकड़ सिंचित कृषि भूमि, 1.18 लाख रु. भोपाल के होटल में निवेश, 25 तोला सोना, 400 ग्राम चांदी, एक जीप और एक ट्रैक्टर भी है.

कानूनमंत्री बाबूलाल गौड़ के पास भोपाल में दो मकान और एक प्लॉट, संयुक्त संपत्ति में 15 बीघा जमीन, बैंक जमा राशि 36,000 रु., 15 तोला सोना और तीन किलो चांदी है.

वनवासी कल्याणमंत्री बलिराम कश्यप के पास तीन मकान और एक प्लॉट, 52 एकड़ कृषि भूमि और संयुक्त संपत्ति में 50 एकड़ जमीन, 150 ग्राम सोना और 150 तोला चांदी, मवेशी और जीप हैं.

राजस्वमंत्री लक्ष्मीनारायण गुप्ता के तीन मकान, 20 बीघा कृषि भूमि, बैंक जमा राशि 40,000 रु., 100 ग्राम सोना और 5 किलो चांदी है.

ध्यानेंद्र सिंह के पास 21,5 बीघा जमीन, एक प्लॉट, बैंक जमा राशि 3.8 लाख रु. एक फर्म में 48,000 रु., कुछ प्रतिष्ठित कंपनियों में 358 शेयर, 50 तोला सोना, 5 किलो चांदी, सोने में जड़े बेशकीमती पत्थर हैं. कार और जीप, पारिवारिक संपत्ति में छठवां हिस्सा जिसमें 12 एकड़ कृषि भूमि है.

दूसरे मंत्री ध्यानेंद्र सिंह की तरह धनी नहीं हैं लेकिन लगभग सभी के पास मकान, प्लॉट या कृषि भूमि और बैंक में जमा राशि तो है ही. विपक्ष के नेता श्यामाचरण शुक्ल ने कहा कि वे खुद संपन्न बनते हैं या सार्वजनिक जीवन को संपन्न करते हैं इसकी असली परीक्षा तो पांच साल बाद होगी.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत भवन

प्रतिष्ठा पर आंच

भोपाल स्थित विविध कला संकुल, भारत भवन 1982 में अपने प्रादुर्भाव के साथ ही विवादों के घेरे में रहा है. कुछ न्यासियों के इस्तीफे और इसकी कार्यप्रणाली को लेकर विभाजित कलाकार समुदाय के आरोप प्रत्यारोपों से मध्य प्रदेश सरकार का स्थापित किया यह प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्थान पिछले पखवाड़े फिर विवादों में फंस गया.

यह नवीनतम द्वंद्व भारत भवन ट्रस्ट के ढांचे में परिवर्तन करने और उसे 'सही दिशा में ले जाने' के भाजपा सरकार के संकल्प से छिड़ा है.

भारत भवन के समर्थकों को आशंका है कि नई सरकार उसकी स्वायत्तता पर 'अतिक्रमण' और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सांस्कृतिक शैली को बढ़ावा देना चाहती है.

लेकिन सरकार दृढ़ शब्दों में इनकार करती है कि उसका भारत भवन की स्वायत्तता से छेड़छाड़ का कोई इरादा है. भारत भवन की कार्यप्रणाली के लंबे समय से आलोचक रहे मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा कहते हैं, "इसे सरकार का विभाग बनाने का हमारा कोई इरादा नहीं है."

उन्होंने विश्वास दिलाया कि कला और सांस्कृतिक क्षेत्र के मूर्धन्य लोग भारत भवन से जुड़े रहेंगे. साथ ही उन्होंने कहा, "लेकिन संस्कृति के ठेकेदारों के लिए उसमें कोई स्थान नहीं होगा." स्पष्टतः वे मध्य प्रदेश इंका के अध्यक्ष अर्जुन सिंह और सांस्कृतिक सचिव अशोक वाजपेयी की ओर इशारा कर रहे थे, जिन्होंने अर्जुन सिंह के मुख्यमंत्रित्वकाल के दौरान ट्रस्ट के गठन के समय खुद को भारत भवन का आजीवन न्यासी बना लिया. इन दोनों पर अपने चहेतों पर कृपावृष्टि करने के लिए भवन का इस्तेमाल निजी जायदाद की तरह करने के आरोप लगातार लगते रहे हैं. एक बड़ी शिकायत तो यह है कि वाजपेयी ने अपनी बीवी रश्मि को भवन की सलाहकार समिति में नामजद कर दिया और अपने भाई उदयन को भवन के कविता केंद्र का निदेशक बना दिया.

इस बार विवाद भड़का वित्तमंत्री रामहित गुप्ता के इस बयान से कि सरकार भारत भवन को किसी की निजी जायदाद नहीं रहने देगी. उन्होंने इसके प्रबंध और प्रशासन में आवश्यक सुधार करके इसे ऐसे आदर्श संस्थान का रूप देने का वादा किया जो "हमारी महान प्राचीन भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित कर सके."

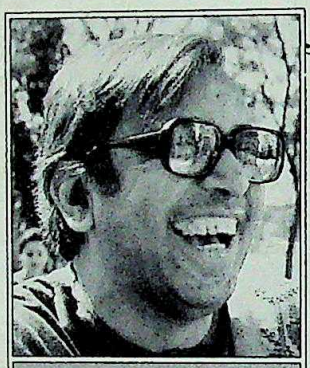

अशोक वाजपेयी

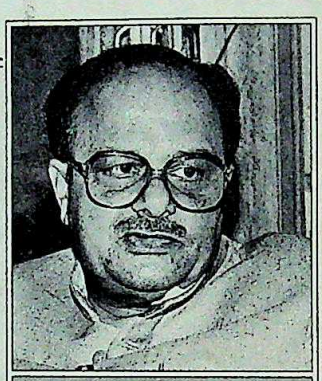

अर्जुन सिंह

भारत भवन के समर्थकों को आशंका है कि नई सरकार संघ की सांस्कृतिक शैली को बढ़ावा देना चाहती है

थोड़े ही दिनों में ग्यारह में से तीन न्यासियों ने इस्तीफे दे दिए. इनमें जाने-माने चित्रकार जे. स्वामीनाथन और एम.एफ. हुसैन तथा अर्जुन सिंह शामिल थे. इन सभी ने सरकार पर संस्थान की स्वायत्तता को नष्ट करने की कोशिश करने के आरोप लगाए.

लेकिन सरकार को वास्तविक 'धक्का' करीब 150 प्रमुख लेखकों, संगीतज्ञों, चित्रकारों, रंगकर्मियों और कला तथा संस्कृति से जुड़े लोगों के हस्ताक्षर से जारी बयान से लगा. उन्होंने साझा बयान में सरकार से अपेक्षा की कि वह भारत भवन के मामले को राजनैतिक सोच से ऊपर उठकर देखेगी.

दूसरी ओर कलाकारों के एक दूसरे बड़े समूह ने आरोप लगाया कि भारत भवन 'भाई-भतीजावाद, पक्षपात और गुटबाजी का अड्डा' बन गया था. इस बयान पर हस्ताक्षर करने वालों में भवन की पूर्व न्यासी, प्रमुख नृत्यांगना यामिनी कृष्णमूर्ति, शरद जोशी, बासु भट्टाचार्य और धर्मवीर भारती भी हैं.

भारत भवन के पथभ्रष्ट होने का कारण शायद स्वायत्तता का अभाव या एक व्यक्ति को बहुत अधिक अधिकार मिल जाना रहा. पिछले 17 साल से सभी कुछ सांस्कृतिक सचिव अशोक वाजपेयी के इर्द-गिर्द घूमता है. मध्य प्रदेश में अच्छी और बुरी सभी बातों के अंतिम निर्णायक की भूमिका उन्होंने ही संभाल ली है.

वाजपेयी का कहना है कि मूल मुद्दा स्वायत्तता और संस्थान का काम-काज है. वाजपेयी, इस बार बहुत सावधान थे. इस आईएएस अधिकारी ने कहा, "यह सरकार स्वायत्तता के प्रति संकल्पबद्ध है और ऐसे कोई संकेत नहीं हैं कि वह भारत भवन की स्वायत्तता से छेड़छाड़ करने वाली है."

वर्तमान और पूर्व मुख्यमंत्री के मध्य चले शब्द युद्ध के दौरान ही, नई दिल्ली में पिछले पखवाड़े ट्रस्ट की अध्यक्ष पुपुल जयकर के नई दिल्ली निवास पर उसकी बैठक हुई. तय हुआ कि दो आजीवन न्यासियों के इस्तीफा देने से उत्पन्न संकट पर जल्दबाजी में प्रतिक्रिया व्यक्त न की जाए. दरअसल आजीवन न्यासी बाकी सभी न्यासियों और विभिन्न समितियों के सदस्यों के इस्तीफे की आस लगाए बैठे थे. ऐसा नहीं हुआ.

'ठेकेदारी की संस्कृति' का जड़ से खात्मा करने के लिए राज्य सरकार से कुछ प्रशासकीय उपाय सामने आने की उम्मीद है. लेकिन इस सांस्कृतिक संस्थान के सियासी निशाना बन जाने से तो यही लगता है कि एक किस्म के ठेकेदार जाएंगे तो दूसरी किस्म के ठेकेदार आ जाएंगे.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर विस्तार से ये जानकारियां दीं कि किस तरह संपादक ने विज्ञापन के लिए तथा नए संस्करण शुरू करने में सहायता के लिए उनसे तथा पार्टी के दूसरे नेताओं से अनुरोध किया था. इतने ही कठोर उत्तर में शर्मा ने लिखा कि उनका संपादकीय भाजपा के लाखों कार्यकर्ताओं की भावना को प्रतिबिंबित करता है.

यह पहली बार नहीं था कि 'स्वदेश' ने पटवा को आड़े हाथों लिया हो इस घटना से कुछ दिन पहले ही उसने मंत्रियों के विभागों में फेरबदल के लिए उनकी आलोचना की थी. इस फेरबदल में पटवा ने 'ज्यादा महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपने' या 'कार्यभार कम करने' की आड़ में अपने मुख्य विरोधियों से महत्वपूर्ण मंत्रालय छीन लिए थे. हालांकि मंत्रियों को तो उनकी हैसियत बता दी गई. लेकिन मुख्यमंत्री ने रातोरात अपने खिलाफ सशक्त लॉबी खड़ी कर ली.

वरिष्ठ मंत्रियों के खिलाफ हो जाने के कारण यह स्वाभाविक ही था कि भाजपा के साधारण सदस्य जनता में और पार्टी के मंचों पर मुख्यमंत्री की आलोचना ज्यादा निर्भीक होकर करने लगे. सबसे ज्यादा शिकायत उन्हें पटवा के व्यक्तित्व में अचानक आए परिवर्तन से है. उनकी शिकायत है कि मुख्यमंत्री बन जाने के बाद नम्र और हंसमुख पटवा का स्थान रूखे और पहुंच से दूर व्यक्ति ने ले लिया. बेशक, पटवा अपने व्यक्तित्व में ऐसे परिवर्तन से इनकार करते हैं.

पटवा की एक और आलोचना यह की जा रही है कि वे कठपुतली मुख्यमंत्री हैं, जो खुद फैसले नहीं कर सकते और पूरी तरह भाजपा आलाकमान के एक वर्ग पर निर्भर हैं जिसने मुख्यमंत्री पद के लिए उनका समर्थन किया था. भाजपा में पटवा पर विशेष कृपालुओं में प्रदेश में पार्टी के पितामह कुशाभाऊ ठाकरे, भाजपा उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया के राजनैतिक सलाहकार एस.सी. आंग्रे और पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष कैलाश सारंग हैं. ये सभी पटवा की हिमायत में तत्काल सक्रिय हो गए. सारंग कहते हैं, "वे सक्रिय, नम्र, मैत्रीपूर्ण और सामाजिक व्यक्ति हैं." जबकि ठाकरे का मानना है कि "पटवा का कोई विरोध नहीं है." उम्मीद के मुताबिक ही, पटवा किसी चौकड़ी पर निर्भरता से इनकार करते हैं.

पार्टी के लोगों से दूर होने के अलावा पटवा ने अनेक विवादास्पद फैसले करके लोगों की सदाशयता भी काफी हद तक खो दी है. सरकारी कर्मचारियों के बड़े पैमाने पर तबादले इनमें से एक है. जहां सरकार 40,000 तबादले करने का दावा करती है, गैर-सरकारी अनुमान 80,000 है. यह तबादले के धंधे के लिए पहले से बदनाम किसी राज्य में नया कीर्तिमान है.

पटवा का एक और अलोकप्रिय निर्णय अतिक्रमण हटाने का अभियान है. राज्य में किसी सरकार ने ऐसे विशाल स्तर पर पहली बार ही यह अभियान चलाया है. हजारों झुग्गी-झोंपड़ियों के गिरा देने से भाजपा शासित अधिकांश नगर युद्धभूमि जैसे दिखाई देते हैं. राज्य का दौरा करते हुए केंद्रीय वित्तमंत्री मधु दंडवते ने इस बरबादी को 'तुर्कमान गेट से भी बदतर' ठहराया. सभी राजनैतिक दलों के विरोध के बावजूद पटवा सरकार अभियान जारी रखे हुए है. लेकिन विधिमंत्री बाबूलाल गौड़ जिनका नाम इस अभियान के कारण लोगों ने 'बुलडोजर लाल' रख दिया है, दावा करते हैं कि अधिसंख्य लोग खुश हैं और केवल मुट्ठी भर लोग इससे प्रभावित हुए हैं.

इन सब विवादास्पद कदमों को भी पीछे छोड़ते हुए विधानसभा में जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को खत्म करने की मांग करने वाला प्रस्ताव पारित कर दिया गया. इस प्रस्ताव को पेश करने वाले इंका सदस्य सुरेश सेठ को ऐसा करने के लिए इंका विधानमंडल दल से निलंबित कर दिया गया और दो-तिहाई बहुमत वाली भाजपा अकेली पार्टी थी, जिसने प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया.

उनके इस कदम से कट्टरपंथी हिंदुओं में खुशी हुई हो, पर उनके शासन में अल्पसंख्यक विशेष रूप से असुरक्षित महसूस करने लगे हैं. उनके पास चिंतित होने के कारण भी हैं. हाल ही में पटवा ने ईसाई मिशनरियों को 'गद्दार' कहा और राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण का विरोध करने के लिए मुसलमानों की आलोचना की. दरअसल, पटवा की टिप्पणियों ने राज्यपाल महमूद अली खां को इस मामले पर सरकारी नोट भेजने के लिए विवश कर दिया. और पिछले पखवाड़े अतिक्रमण हटाने के अभियान के तहत एक मस्जिद की मीनार गिराने से इनकार कर देने पर मुख्यमंत्री ने खरगौन के जिलाधिकारी का तबादला कर दिया. इससे पहले पटवा ने पुलिस महानिदेशक को हटा दिया था क्योंकि उन्होंने तीन इंस्पेक्टरों को वापस तैनात करने से इनकार कर दिया था.

कुल मिलाकर पटवा का चार महीने का संक्षिप्त कार्यकाल उनके सबल से निर्बल होने की यात्रा है, जिसके हर कदम पर गलतियों के निशान हैं.

—नरेंद्र कुमार सिंह

भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं में विरोध के बावजूद पटवा का अतिक्रमण हटाने का अलोकप्रिय कदम जारी है

सभी फोटो: आर.सी. साहू

भोपाल में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई: अलोकप्रिय कदम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक इंका

पुराने तेवर में

संघर्ष के लिए सड़क पर

राजपाट छिन जाए यानी विपक्ष में रहने की नौबत आ जाए तो सीधे सड़कों पर उतर आओ. इंका की हमेशा यही रणनीति रही है. 1977 में इंका पहली बार केंद्र से सत्ताच्युत हुई थी. तब विपक्ष के रूप में उसकी क्या भूमिका होगी यह इंदिरा गांधी ने ही मानो तय कर दी थी. और उनके साथ थे उनके तेजतर्रार पुत्र संजय गांधी.

1977 से '79 तक जनता पार्टी शासन के दौरान संजय गांधी के जांबाजों की कारगुजारियां अभी लोगों की याददाश्त से मिटी नहीं हैं. अब दोबारा विपक्ष में आते ही पार्टी संजय ब्रिगेड की राह पर चलने के लिए युवक इंका को नया तेवर देने लगी है.

मूल संगठन भले ही अभी चुनावों में भारी हार के सदमे से नहीं उबर पाया है, लेकिन युवक इंका सड़कों पर उतर आई है

एमनेस्टी के खिलाफ प्रदर्शन

युवक इंका का अध्यक्ष नियुक्त होने के बाद केरल के सांसद रमेश चेन्निथला का पहला काम महम के मुद्दे पर प्रधानमंत्री निवास पर प्रदर्शन करना रहा. उस समय महम उपचुनाव में हुई हिंसा से पूरा देश उत्तेजित था. सो, उन्होंने इस जन भावना को पूरी तरह भुनाना ही ठीक समझा. प्रदर्शन के दौरान पुलिस को लाठीचार्ज करने के लिए उत्तेजित किया गया. अस्पताल में चेन्निथला के पैर में पट्टी बंधी तस्वीरें अखबारों में छपीं. वे सचमुच घायल हुए थे या नहीं इस बात पर तो विवाद उठा, पर मकसद पूरा हो गया—युवक इंका को अपना खोया आक्रामक तेवर वापस मिल गया.

पिछले पखवाड़े इंका अध्यक्ष राजीव गांधी से भेंट के दौरान चेन्निथला को संकेत दे दिया गया कि वे अगले संघर्ष के लिए युवक इंका को संगठित करें और आक्रामक तेवर अपनाएं. मतलब यह कि संजय ब्रिगेड को फिर जिंदा किया जाएगा. युवक इंकाइयों के सम्मेलन में राजीव ने उन्हें आंदोलन का रास्ता अख्तियार करने का मंत्र दिया.

मूल संगठन भले ही अभी संसदीय और विधानसभाओं के चुनाव में मिली करारी हार के सदमे से नहीं उबर पाया है, लेकिन युवक इंका सड़कों पर उतर आई है. लाठीचार्ज की घटना के बाद ये युवा किसी-न-किसी बहाने प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के निवास पर कम-से-कम तीन बार जमा हुए. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने जब यह फैसला किया कि एमनेस्टी इंटरनेशनल चाहे तो कश्मीर में जाकर स्थिति का अध्ययन कर सकती है तो युवक इंका को जैसे सुनहरा अवसर ही हाथ लग गया. उसने भारत में एमनेस्टी के प्रवेश पर लगे प्रतिबंध के हटाने का भारी विरोध करने का फैसला कर लिया.

संगठन ने आंदोलन का कार्यक्रम और मांग पत्र तैयार किया है. 1 अगस्त को देश भर में रैलियां आयोजित करके वह मांग दिवस मनाएगी. चेन्निथला कहते हैं, "मैंने प्रधानमंत्री को मांग पत्र देने के लिए समय मांगा है. लेकिन बातें बघारने से ही काम नहीं चलेगा. हमें सरकार को झकझोरना होगा. हम जनता के हर मुद्दे को उठाएंगे."

युद्ध छेड़ने की इस रणनीति में चेन्निथला को पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का आशीर्वाद हासिल है. इंका महासमिति के प्रवक्ता विट्ठल नरहरि गाडगिल कहते हैं, "इंका की युवा इकाई को खास भूमिका निभानी है. विपक्ष में रहते हुए यह संगठन जनता की मांगों को उठाएगा. राजीव गांधी के भाषण से जाहिर है कि उन्होंने उसे आक्रामक होने का कहा है."

क्या पार्टी नेतृत्व ने युवक इंका की नई आक्रामकता को मंजूरी दे दी है? इस पर गाडगिल का जवाब था, "युवक तो स्वभाव से ही आक्रामक होते हैं. वे हमेशा संघर्ष की ही सोचते हैं." बहरहाल, सवाल यह है कि क्या लोग भी इस आक्रामकता को पसंद करेंगे.

—भास्कर राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार सुरक्षा की जापानी कला

日本の自動車技術の粋

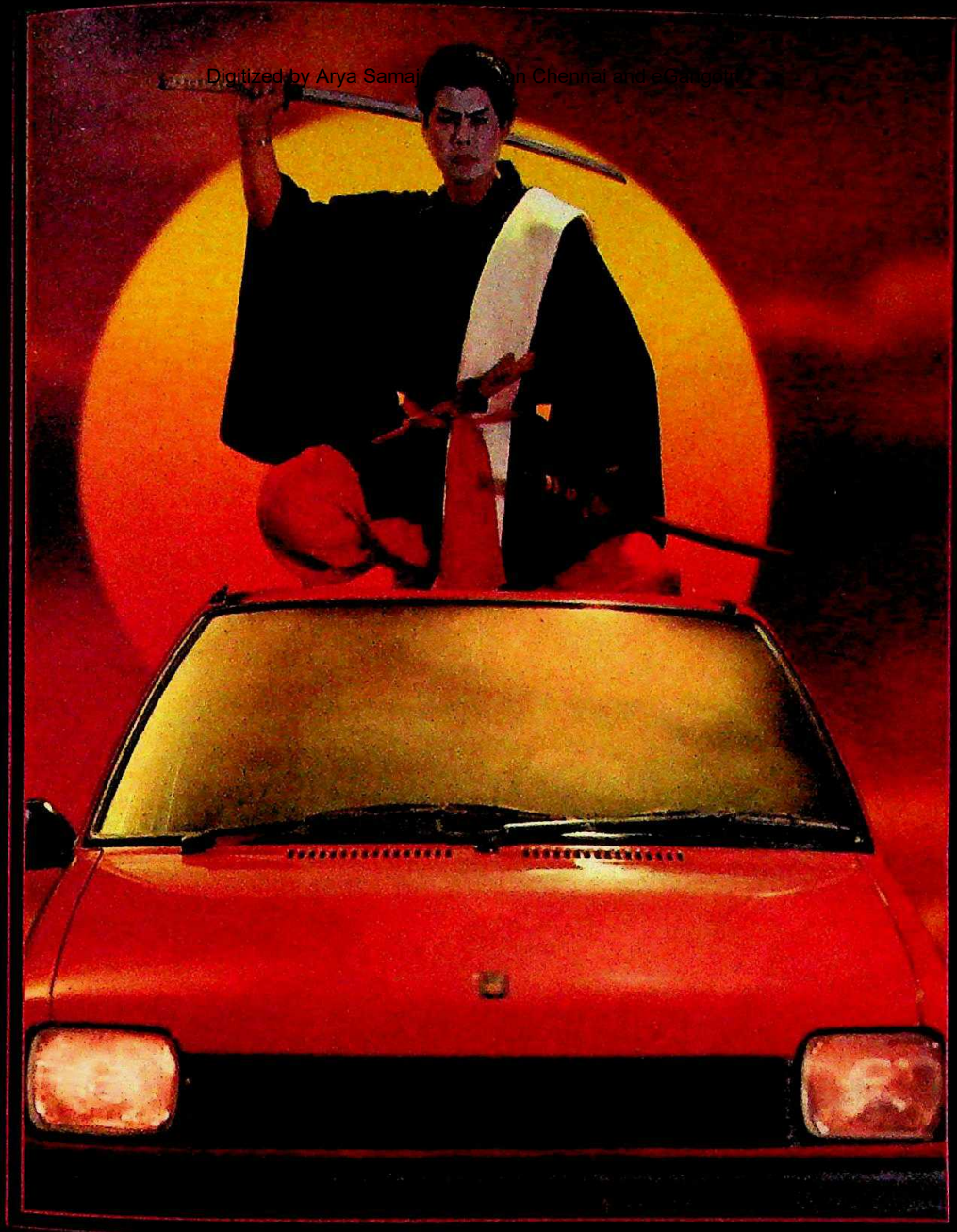

गोल्डन क्रूज़र 1200 गाड़ी अत्यधिक गरम होने, जंग इत्यादी लगने तथा जमाहट से अपनी गाड़ी को सुरक्षित रखने का सबसे सफल तरीका।

इसीलिये तो विदेश में टोयोटा, निसान, होन्डा, सुज़ूकी, डाईहाटसू, माज़दा व हाईनो... तथा भारत में मारुति, प्रीमियर, अशोक लेलेण्ड, टेल्को, आयशर, मिटसुबिशी और स्वराज-माज़दा जैसी नामी कंपनियां अपनी गाड़ियों में गोल्डन क्रूज़र ही इस्तेमाल करती हैं।

गोल्डन क्रूज़र 1200 एक ऐसा गज़ब का, "इथीलीन-ग्लायकाल" पर आधारित और पेटेन्ट किया हुआ कूलेन्ट है, जो आपकी गाड़ी की पूरी सुरक्षा करता है। उसकी क्षमता बढ़ाने के लिये इंजिन को अधिक शक्ति प्रदान करता है।

अपनी गाड़ी की सुरक्षा बढ़ाइये। उसके लिए सर्वोत्तम कूलेन्ट गोल्डन क्रूज़र 1200 ही लाइये। कार देखभाल की शानदार जापानी मिसाल।

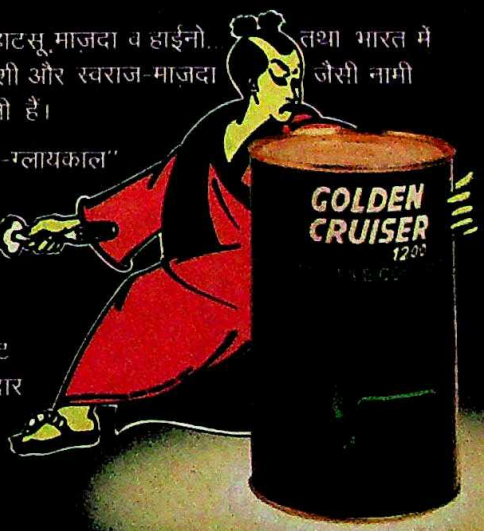

गोल्डन क्रूज़र 1200

लौंग लाइफ कूलेन्ट

सनस्टार लूब्रिकेन्ट्स लिमिटेड,

सूट २, १० हेली रोड, नई दिल्ली ... फोन 33[illegible], 33[illegible], फैक्स न 33[illegible]

जापानी तकनीक का कमाल... आपके इंजिन की जान।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर के दर्द से आराम पाइए, दुनिया से क़दम मिलाइए.

स्त्री होने का गर्व... और मुश्किलें. हाँ कई प्रकार के दर्द. खासकर कमर में जोड़ों का दर्द जो आपको बार-बार परेशान कर सकता है. चाहे गर्भावस्था के बाद या फिर रोज़ की परिश्रमभरी ज़िंदगी के कारण. पर घबराइये नहीं, अब आपको आराम मिल सकता 'मूव', जिसका प्राकृतिक तेलों का मिश्रण जड़ तक पहुँचता है जल्द असर करता है और अधिक समय तक आराम दिलाता है.

जी हाँ, यह सचमुच असरकारक है. आज ही 'मूव' की ट्यूब ले आइये. जोड़ों के दर्द से आराम पाइये और दुनिया से क़दम मिलाइये.

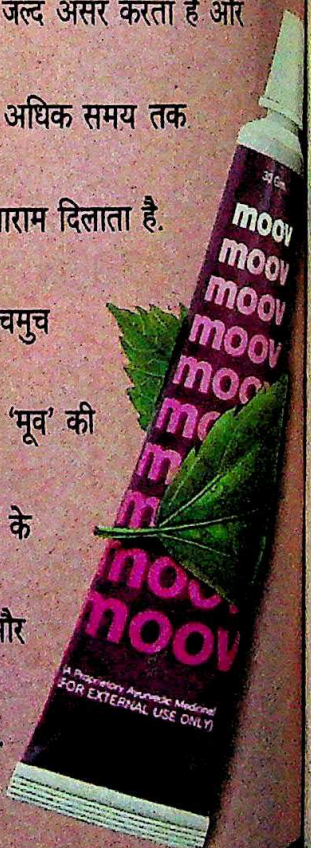
moov
moov
moov

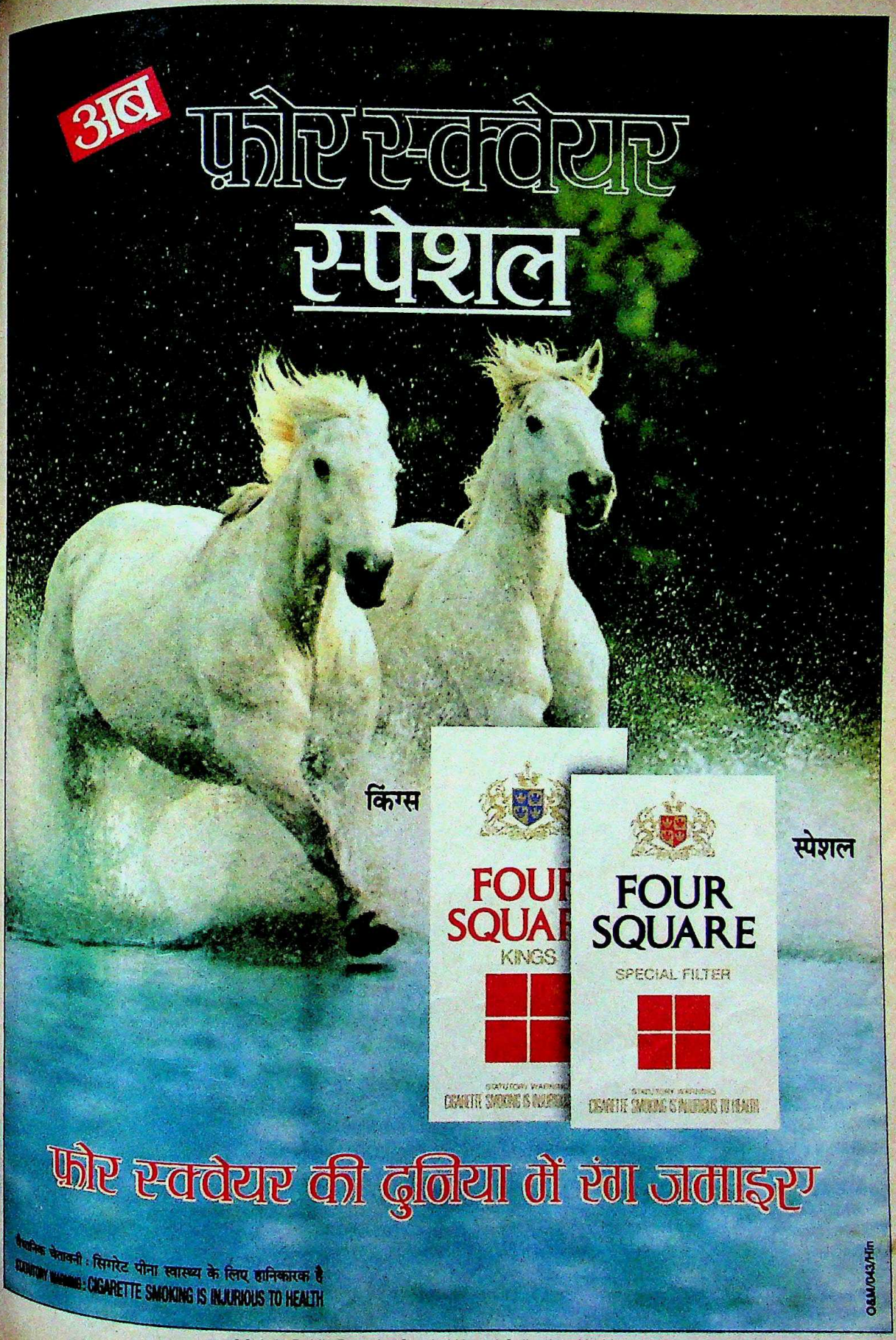

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारुति किस के चक्कर में है?

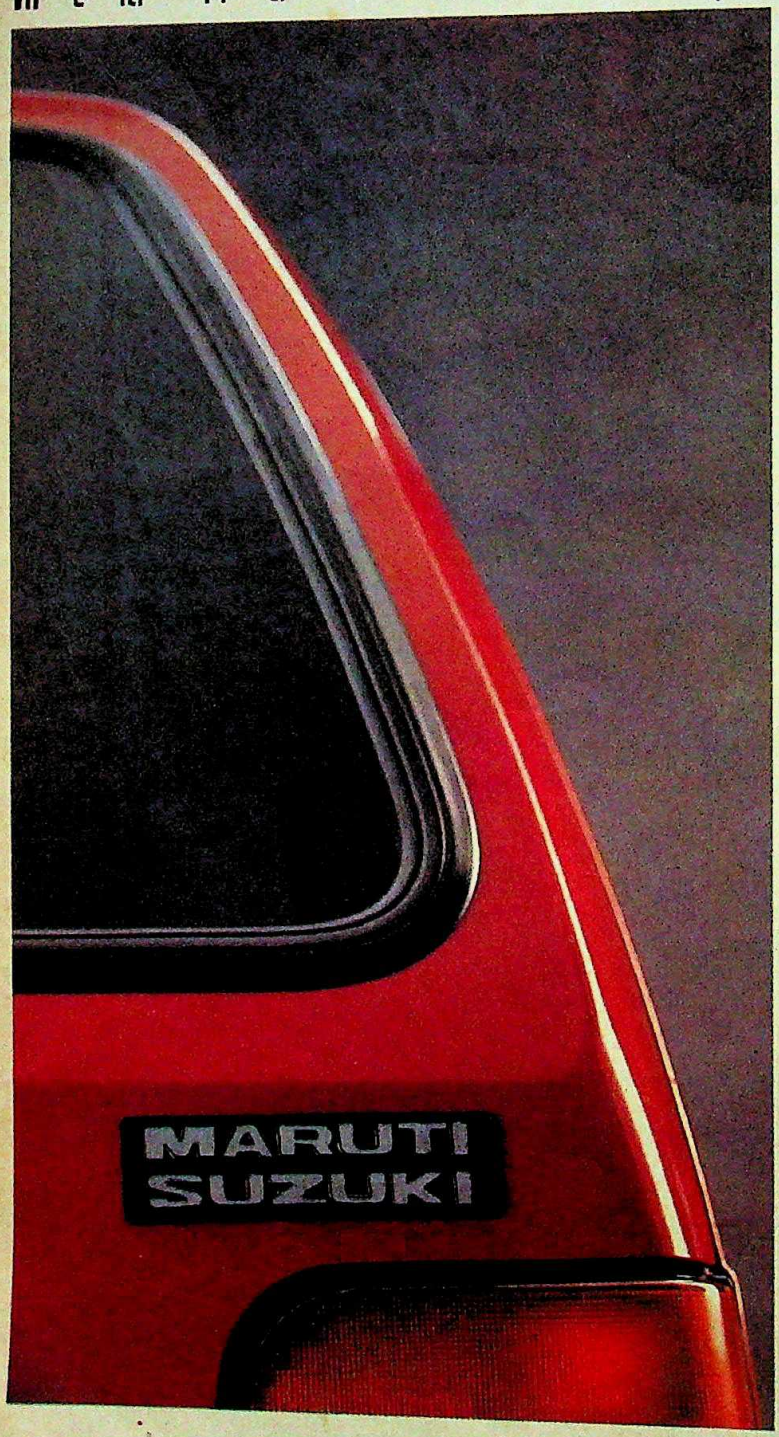

भारत की सभी चहेती कारें डनलप रेडियल क्लास टायर पर ही चलती हैं.

जैसे कि कॉन्टेसा, स्टैन्डर्ड २००० और प्रीमियर ११९ एन ई. सिर्फ़ ये नहीं बल्कि मर्सिडीज़, टोयोटा, बी एम डब्ल्यू और हौंडा भी.

क्योंकि डनलप रेडियल क्लास में है 'सॉफ़्ट फ़्लेक्स वॉल्ज़' जो सारे झटके सहकर आपके सफ़र को आरामदेह बनाती है.

आपकी मारूति का सच्चा साथी – डनलप रेडियल क्लास.

DUNLOP
RADIAL CLASS

DUNLOP IS DUNLOP. ALWAYS AHEAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by

उत्तर प्रदेश

भिड़ंत की मुद्रा

अधिकारियों, नेताओं में ठनी

उत्तर प्रदेश में अफसरशाही और पुलिस भिड़ने की मुद्रा में हैं. इस समय झगड़ा इन दोनों में नहीं बल्कि उनका गुस्सा प्रदेश जनता दल के नेताओं के प्रति है. टकराव की अनेक घटनाओं और तबादलों की ढुलमुल नीति के चलते अधिकारियों और नेताओं के बीच ठन गई है.

आईएएस वेलफेयर एसोसिएशन ने मई में तीन मामले मुख्य सचिव के स्तर पर उठाए. उसकी शिकायत थी कि विधायक नृवेंद्र कुमार सिंह ने 21 फरवरी को बागवानी विभाग के विशेष सचिव हरीश चंद्र से दुर्व्यवहार किया; एक और विधायक रविदास मेहरोत्रा ने 17 मार्च को परिवहन आयुक्त लक्ष्मी चंद के साथ हाथापाई की और जनता दल के ही सांसद गंगाचरण राजपूत ने हमीरपुर के जिलाधिकारी आर.सी. श्रीवास्तव के खिलाफ हिंसक प्रदर्शन की अगुआई की.

आर.के. गुप्ता

अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री

सफदर हाशमी ट्रस्ट

आदर्श से अलग

जीते जी तो उन्हें कम ही लोग जानते थे पर उनकी मृत्यु ने राष्ट्र की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया था. रंगकर्मी सफदर हाशमी की हत्या ने भीष्म साहनी, शबाना आज़मी, हबीब तनवीर और इब्राहिम अल्काज़ी सरीखे प्रसिद्ध रंगकर्मियों को व्यवस्था के खिलाफ एकत्र कर दिया था. हाशमी के संदेश को उजागर करने के लिए इन लोगों ने 'सहमत' (सफदर हाशमी स्मारक ट्रस्ट) का गठन किया.

लेकिन हाशमी जो विरासत छोड़ गए हैं, उस पर विवाद उठ खड़ा हुआ है. हाशमी द्वारा स्थापित रंगमंचीय संस्था 'जनम' का विभाजन हो गया है. हाशमी के संदेश को व्यापार की शक्ल दिए जाने के विरोध में मूल संस्था से अलग हो गए संगठन 'प्रयास' के संयोजक आसिफ नक़वी कहते हैं, "पिछले कुछ समय से 'जनम' पर 'सहमत' ने कब्जा कर लिया था, जो संभ्रांत वर्ग के लोगों का चोंचला है." और सचमुच 'सहमत' द्वारा मंचित नाटक 'मोटेराम का सत्याग्रह' के टिकट 150 रु. से 100 रु. तक में बेचे गए.

हैरानी की बात यह है कि 'प्रयास' का गठन करने वालों में सुभाष चंद्र त्यागी भी हैं जो गाजियाबाद में हाशमी के साथ ही लाठी का वार झेल चुके हैं. उनके शब्दों में, "मैं सफदर को यहां का पामेला बॉर्डेस बनाने की कोशिश के खिलाफ हूं."

प्रमोद पुष्करणा

'प्रयास' के सदस्य

इस विभाजन का एक और कारण 'जनम' का माकपा के प्रति खुला समर्थन है. अरुण शर्मा, जो अब 'प्रयास' में शामिल हो गए हैं, के अनुसार, "चुनाव के हर मौके पर 'जनम' माकपा के पक्ष में प्रचार करता मिलेगा." मिसाल के तौर पर, 'प्रयास' के सदस्य 'औरत' नाटक के संवादों में किए गए परिवर्तनों का हवाला देते हैं. मूल संवाद "औरत, तू झंडा उठा ले" को बदलकर पहले "औरत, तू लाल झंडा उठा ले" किया गया और अंततः उसे "औरत, तू सीपीआई (एम) का झंडा उठा ले" कर दिया गया.

लेकिन सोचने की बात है कि इस विभाजन में इतनी देर क्यों हुई. खास तौर से 'हल्ला बोल' नामक जिस नाटक का मंचन करते हुए हाशमी शहीद हुए, उसमें मजदूरों का माकपा की ट्रेड यूनियन इकाई सीटू में शामिल होने का खुलकर आह्वान किया गया है. 'जनम' के पूर्व संयोजक मनीष मनोजा बताते हैं, "ये मुद्दे हम 'जनम' में अक्सर उठाते रहे. कोई कार्रवाई नहीं हुई इसलिए हमें अलग होना पड़ा."

मगर तमाम आरोपों के बावजूद हाशमी की पत्नी मलयश्री 'जनम' का समर्थन करती हैं. उनके अनुसार, "जनम अपने फैसले खुद करता है." यह विवाद का मुद्दा हो सकता है पर एक बात तय है कि 'जनम' में जो कुछ हो रहा है, वह हाशमी के आदर्शों के अनुरूप नहीं.

—शमिला चंद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंभीर संकट तो तबादलों को लेकर पैदा हुआ है. सरकार ने 520 आईएएस अधिकारियों में से 326 और 411 आईपीएस अधिकारियों में से 169 के तबादले के आदेश जारी कर दिए. यह इस राज्य में हुआ अब तक का सबसे बड़ा प्रशासकीय फेरबदल है.

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के पास अपनी दलील है. वे कहते हैं, "जब कोई नई पार्टी परिवर्तन का उद्देश्य लेकर सत्ता में आती है तो बड़े पैमाने पर तबादले अपरिहार्य हैं." भारी पैमाने पर तबादलों से कहीं ज्यादा इस पूरी प्रक्रिया के तौर-तरीकों पर ही उंगली उठाई जा रही है. कम-से-कम तीन साल में एक बार तबादले की नीति को बदलकर यह अवधि दो साल की कर दी गई है. साथ ही, वरीयता की अवहेलना करके कनिष्ठ अधिकारियों को वरिष्ठ अधिकारियों के मुकाबले बेहतर जगहों पर भेजा गया है. एक पुलिस उप-महानिरीक्षक कहते हैं, "अगर वरीयता, कार्यकुशलता या पद पर स्थायित्व कोई मायने नहीं रखते तो वे कौन से लक्ष्य हैं जिन्हें पाने की हमें कोशिश करनी चाहिए?"

जाहिर है, यह मामला व्यापक राजनैतिक हस्तक्षेप का है. जून तक मुख्यमंत्री के दफ्तर में तबादलों और नियुक्तियों के बारे में सांसदों और विधायकों के करीब 2,500 पत्र आ चुके थे. मगर नियुक्ति सचिव नीरा यादव इस बात से इनकार करती हैं कि तबादलों में राजनैतिक हस्तक्षेप काम कर रहे हैं.

मुख्यमंत्री और नीरा यादव का दावा तो यह है कि तबादले का कोई आदेश किसी दबाव के तहत रद्द नहीं किया गया. लेकिन आईएएस और आईपीएस अफसरों के संगठन बताते हैं कि करीब 100 मामलों में तबादलों के आदेश राजनैतिक दबाव में आकर बदले गए. फिलहाल दोनों संगठन तबादलों की समीक्षा करने में लगे हैं ताकि मामले को सर्वोच्च स्तर पर उठाया जा सके.

हैरानी की बात यह है कि मुख्यमंत्री द्वारा तबादलों की मुहिम छेड़े जाने के बावजूद उन सात विवादास्पद विभागीय सचिवों को नहीं छुआ गया जिन पर मुलायम सिंह ने विपक्ष के नेता रहते गंभीर आरोप लगाए थे. उधर, आईपीएस ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसिएशन भी हाथ दिखाने की तैयारी में है. एक युवा अधिकारी चुटकी लेते हैं, "तबादलों की इस मुहिम के बावजूद बड़ी मछलियां जाल में नहीं आ पाईं." व्यवस्था आखिर इतनी ही बदल पाई है.

—दिलीप अवस्थी

अंतर्कथा

इंद्रजीत बधवार

समझने-समझाने की बात

भारतीय उपमहाद्वीप के मामलों से संबंधित अमेरिकी कांग्रेस की उपसमिति के व्यवहारकुशल उपाध्यक्ष, सांसद स्टीव सोलार्ज अपने साथियों के बीच अपवाद ही हैं, क्योंकि आम माहौल भारत विरोधी है. हाल में नई दिल्ली के अपने दौरे के दौरान वे उत्तेजित-से दिखे कि पाकिस्तान के खिलाफ भारत की पैरवी कितने मुखर तरीके से की जाए. अमेरिकी प्रेस भारत विरोधी अभियान छेड़े हुए है. पाकिस्तान के उनके दौरे के दौरान पाकिस्तानी सेना के जनरलों ने उन्हें यह समझाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी कि भारत दादागीरी चलाना चाहता है.

दिल्ली में सोलार्ज विदेश मंत्रालय की मंत्रणाओं से उकता गए. फिर जैसे अचानक कुछ आभास हुआ और प्रधानमंत्री इस बात के लिए राजी हो गए कि सोलार्ज को रक्षा मंत्रालय के अति गोपनीय ऑपरेशन कक्ष में ले जाया जाए जहां जानकार तथा वाक्पटु जनरल उन्हें विशेष जानकारियां दें. लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तो रहीं विदेश मंत्रालय की गैर-पारंपरिक दलीलें जिनसे सोलार्ज की भारत समर्थक दलीलों का खाली होता तरकश फिर भर गया.

यह अमेरिकी अपनी हेकड़ी नहीं दिखा रहा है बल्कि वह सुनने-समझने को तत्पर है. और उसे पक्ष में करने का उपाय उसकी क्षुधा शांत करना है. भारत और पाकिस्तान दुनिया भर में कूटनीतिक चालों का जाल बिछा रहे हैं. हालांकि अमेरिका पाकिस्तान पर दबाव डाल रहा है कि वह लड़ाई को न उकसाए. फिर भी आज अमेरिकी लोगों की सहानुभूति पाकिस्तान के साथ ही है. पाकिस्तान भी अमेरिका को अपनी ओर करने की सारी जुगत भिड़ा रहा है. दलीलें कई हैं— पुराने वफादार सहयोगी, अफगान युद्ध में साथ-साथ रहे, वगैरह.

प्रणव दत्त

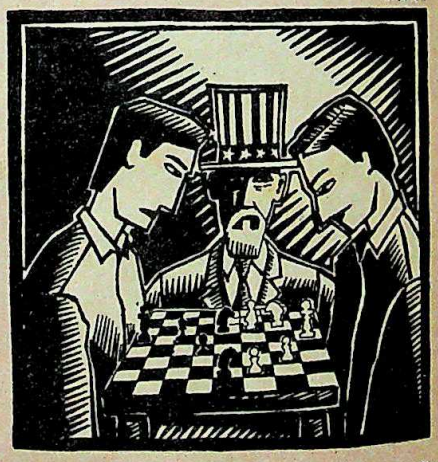

पिछले पखवाड़े कैलिफोर्निया के डेमोक्रेट सांसद एलान क्रांसटन और बेनज़ीर भुट्टो के करीबी दोस्त पीटर गालब्रेथ भी भारत आए. और विदेश मंत्रालय के महामहिम हैदराबाद हाउस में एक भोज में व्यस्त हो गए. उपस्थित लोगों में अमेरिका के दो पूर्व भारतीय राजदूत, एक सिख जनरल (अवकाशप्राप्त) जगजीत सिंह अरोड़ा, एक ईसाई जार्ज फर्नांडीस और एक मुसलमान आरिफ मुहम्मद खां भी थे. यह पाकिस्तान की एकांगी संस्कृति के मुकाबले अपनी सांस्कृतिक एकता दिखाकर प्रभावित करने की कसरत दिखी. लेकिन ये घिसे-पिटे नुस्खे किसी सांसद को नहीं प्रभावित कर पाते. क्रांसटन खटास लेकर ही लौटे.

भारतीय कूटनीति 'पहले कटु बोलो फिर खुशामद करो' की नीति पर ही चलती है. लेकिन यह कारगर नहीं. कुछ ऐसा करना होगा जिससे दिल जीता जा सके. अमेरिका के मन में द्वेष और डर बैठा है— आतंकवादियों, धार्मिक कठमुल्लाओं और नशीली दवा के कारोबारियों से.

और यही तीन रोग भारत को भी दुर्बल किए हुए हैं. वी.पी. सिंह और इंद्र कुमार गुजराल को अमेरिकी मानस में यह बात बैठा देनी चाहिए कि आज पाकिस्तान दुनिया भर में नशीली दवाओं, धार्मिक कट्टरवाद और आतंक का निर्यात करने वाले बड़े देशों में से एक है. नारे बिलकुल स्पष्ट हैं और सीधे असर करने वाले हैं. जरूरत है तो इनका प्रभावी इस्तेमाल करने की.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाजियाबाद

अपहरणों का दौर

अपराधियों की ऐशगाह बना नगर

बिक्री कर विभाग के लिपिक अरुण कुमार सिंह को ही नहीं, गाजियाबाद के राजनगर मुहल्ले के लोगों को भी समझ में नहीं आ रहा है कि उनका पांच साल का बेटा यतींद्र कहां गायब हो गया. 1500 रु. मासिक आय वाले इस लिपिक से कोई क्या फिरौती मांगेगा. पर सिहानी गांव के पास पड़ा यतींद्र का बस्ता बताता है कि वह सामान्य हालत में तो कहीं नहीं ही गया होगा. नगर का हर आदमी मान रहा है कि उसका अपहरण हो गया है.

और सच पूछा जाए तो दिल्ली से लगे इस औद्योगिक नगर के लिए यह वर्ष अब तक अपहरण, फिरौती और हत्या वाला ही साबित हुआ है. व्यापारी या उनके बच्चों के अपहरण तो हुए ही, 28 जून को दो सिपाहियों का भी अपहरण और बाद में उनकी हत्या हो गई. जुलाई के पहले हफ्ते में दो और घटनाएं हो गई.

गाजियाबाद के पुलिस अधीक्षक ब्रजभूषण बख्शी इन सभी घटनाओं को अपहरण मानने को तैयार नहीं हैं. उनका कहना है कि इस साल गिरोहों द्वारा केवल छह अपहरण हुए हैं. बाकी ऐसे अपराध नौसिखुए लोगों द्वारा किए गए.

शहर में अपहरण की जो नवीनतम घटना हुई है, और जिसमें पुलिस ने अपहृत व्यक्ति को छुड़ाने के साथ ही सारे अपहर्ताओं को पकड़ लिया है, वह भी ऐसे ही नौसिखुए लोगों का काम था. 2 जुलाई को दूध बेचने वाले राजिंदर सिंह को कुछ लोग कट्टा दिखाकर मारुति से ले गए. कड़कड़ मांडल गांव की उसकी जमीन का मुआवजा (17 लाख रु.) गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने दिया. उसी पर परिवार के ही एक सदस्य की नजर थी.

लेकिन पूरे मामले में घरवालों ने न तो पुलिस को सूचित किया और न आज ही वे बताने को तैयार हैं कि सात दिनों तक उन्होंने क्या कुछ किया. ऐसा डर के कारण ही है. पर अपहृत व्यक्तियों या उनके घरवालों द्वारा कुछ भी नहीं बताने से कोफ्त होती है. बक्शी बताते हैं कि एक रेस्तरां मालिक के बेटे कविश के अपहरण के समय उसकी स्कूल बस में मौजूद शिक्षिका ने जब कुछ बताने से इनकार किया तो बच्चों ने गुस्से से बताना शुरू किया कि अपहर्ता कैसे थे. इसी आधार पर अपहर्ता गिरफ्तार किए गए.

फोटो: शरद सक्सेना

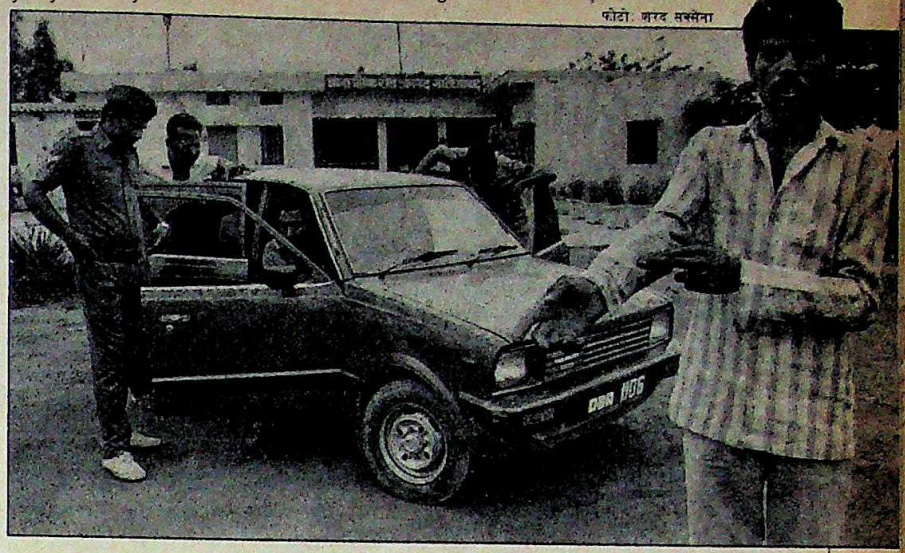

अपहर्ताओं के चंगुल से छूटा राजिंदर; और (नीचे) अपहरण के बाद मारे गए सुभाष अग्रवाल

पर इस शहर को हो क्या गया है? यहां के युवा सांसद के.सी. त्यागी का जवाब था, "खासकर पांच वर्षों से जिस तरह से गाजियाबाद का विकास हुआ है उसमें कई गड़बड़ियां रह गई है. गाजियाबाद में वही तहसील वाली पुलिस क्षमता ही है." मोदीनगर के जनता दल विधायक सुखबीर सिंह गहलोत, जो पहले इंका में थे, कहते हैं, "दिल्ली का पास होना भी यहां अपराध को बढ़ाता है."

लेकिन अपहरण और हत्याओं के मामलों में अब तक जो अपराधी पकड़े गए हैं या जिनके नाम आ रहे हैं, वे सभी स्थानीय ही हैं. गूजर, त्यागी और अहीर अपराधी जाटों को काफी पीछे छोड़ चुके हैं. एक अधिकारी कहते हैं कि पश्चिमी इलाके में अपना राजनैतिक आधार तलाश रहे. मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने भी गैर-जाट नेताओं (जिनमें से अनेक आपराधिक पृष्ठभूमि वाले हैं) को बढ़ावा दिया है.

इस मामले में पहला नाम बुलंदशहर के विधायक (जो गाजियाबाद में ही रहते हैं) धर्मपाल यादव का लिया जाता है. लेकिन सांसद के.सी. त्यागी कहते हैं, "पिछले नौ महीनों के दौरान मैंने यादव या उनके किसी करीबी आदमी के खिलाफ कोई शिकायत नहीं सुनी है."

त्यागी के अनुसार ही चूना पंडित नामक विधान परिषद सदस्य 'सुधर' जाएंगे, यह भरोसा किसी को नहीं है. यही हाल चुनाव हारे मदन भैया नामक अपराधी का है. अपहरणों में उसका भी नाम बताया जाता है. लेकिन इस मामले में सबसे आगे है अशोक त्यागी गिरोह. तीसरे गिरोह के नेता महेंद्र फौजी का साथी कर्मवीर भी पीछे नहीं है.

इन तीन प्रमुख गिरोहों के अलावा अनेक छोटे और नए गिरोह भी सक्रिय हो गए हैं. अपराध के प्रति बढ़ती ललक की वजह आसानी से धन की उपलब्धता है. शहर के प्रमुख पत्रकार विधान चंद गर्ग बताते हैं, "उद्योग और व्यापार के विकास ने जमीन को सोना बना दिया है."

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के ठेके हथियाने की लड़ाई में भी गुंडे सहायक होते हैं. लेकिन यहां के अपराध के असली चरित्र के बारे में सबसे सटीक टिप्पणी डी.पी. यादव ने ही की, "यहां बदमाशी बेरोजगारी या तंगी के कारण नहीं होती. यहां तो शानोशौकत के लिए बदमाशी होती है." और बड़ी संख्या में किस्म-किस्म के बदमाशों की मौजूदगी तो यही बताती है कि गाजियाबाद आज उनका ऐशगाह बन गया है. — **अरविंद मोहन**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

अभियान से हड़कंप

पर भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम कई बड़े मामलों में कारगर नहीं

इस अभियान ने बड़े-बड़ों में हड़कंप मचा दिया. राजस्थान की डेढ़ सौ दिन पुरानी सरकार के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान की जद में कई बड़े अफसर ही नहीं आए, पूर्व मंत्री भी भयभीत हैं कि उन पर भैरों सिंह शेखावत की तिरछी नजर न पड़ जाए. यहां तक कि सेवा निवृत्त हुए अफसरों में भी डर पैठ गया है कि मुख्यमंत्री कहीं उनके कार्यकाल वाले पुराने मामले न खोल लें.

भ्रष्टाचार विरोधी अभियान की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी बी.के. मीणा की गिरफ्तारी कही जानी चाहिए. राज्य के इतिहास में शायद यह पहला मौका है जब किसी आईएएस अफसर को भ्रष्टाचार के मामलों में गिरफ्तार किया गया है.

जयपुर जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के निदेशक रहे बी.के. मीणा के कार्यकाल के दौरान एक करोड़ पांच लाख रु. की सरकारी राशि का घोटाला हुआ. यह राशि ट्राइसेम व स्काइट योजना के तहत खर्च की जानी थी. जिला ग्रामीण विकास अभिकरण में 4 अगस्त 1989 से 23 अक्तूबर 1989 के बीच यह राशि करीब डेढ़ दर्जन फर्जी स्वयंसेवी संस्थाओं के नाम से उठाई गई.

शेखावत बताते हैं, "1989-90 में ट्राइसेम व स्काइट योजना के तहत गामीण क्षेत्र में 1,020 युवक-युवतियों को और शहरी क्षेत्र में 725 को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण दिया जाना था. लेकिन भुगतान ग्रामीण क्षेत्र में 3,300 और शहर में 2,200 युवक-युवतियों के नाम पर उठाया गया." जिन 18 संस्थाओं ने यह राशि प्राप्ति की, वे मीणा सहित लालचंद शर्मा और रामकुमार स्वामी के तीन परिवारों की थीं. अब तीनों हिरासत में हैं और उनसे करीब 40 लाख रु. बरामद किए जा चुके हैं.

इस गिरफ्तारी को लेकर भाजपा के कई सांसदों और विधायकों ने तो रोष जाहिर किया ही, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अफसर भी एक हो गए हैं. उन्होंने मुख्यमंत्री के सामने नाराजगी जाहिर कर भी दी है.

मीणा की गिरफ्तारी से हुए विवाद की वजह से ही एक और अधिकारी एम.डी. कोरानी की गिरफ्तारी फिलहाल टल गई है. उन पर जयपुर विकास प्रधिकरण का आयुक्त रहते हुए अनेक गृह निर्माण समितियों की योजनाओं को गलत तरीके से नियमित करने के अलावा आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप हैं.

एक और बड़े अफसर, इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण के सरकारी उपक्रम 'रील' के महाप्रबंधक के.बी. अग्रवाल को भी बड़े घोटालों के आरोपों में गिरफ्तार किया गया. उन पर आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने का आरोप है. उनके निवास पर छापा मारकर और बैंकों के लॉकर खोलकर लाखों रु. की नकदी, जेवर और दूसरी संपत्ति बरामद की गई.

उधर, 'रीको' ने कृत्रिम ढंग से चारा उगाने वाली इकाई संजीवनी फॉडर प्रोडक्शन लि. के प्रबंधकों के खिलाफ आपराधिक षड्यंत्र से संबंधित मामला पुलिस में दर्ज कराने का फैसला किया है. 'रीको' ने अपने कब्जे की एक और इकाई आर्यावर्त प्लाईवुड लि. को कई करोड़ रु. की देनदारी के कारण अवसायन की कार्रवाई के चलते पूर्व केंद्रीय गृहमंत्री बूटा सिंह के बेटों को कम कीमत में बेचे जाने और उस इकाई के साथ जोरावर वनस्पति के नाम से एक और इकाई लगाने के मामले की भी उच्चस्तरीय जांच शुरू कर दी है. संजीवनी फॉडर प्रोडक्शन का नाता पूर्व लोकसभाध्यक्ष और कांग्रेस महासचिव बलराम जाखड़ से है.

कांग्रेस के एक विधायक कहते हैं, "शेखावत राजनैतिक द्वेष भावना से यह अभियान चला रहे हैं. अब तक उन्होंने कांग्रेस समर्थकों को ही अपना निशाना बनाया है." उनके अनुसार शेखावत के पास घोटालों की ढेरों फाइलें हैं, "उनमें से बहुत से नाम शेखावत के नजदीकी अफसरों के हैं. उनके खिलाफ. अभी तक कोई कार्रवाई क्यों नहीं शुरू की गई?"

पर शेखावत इस आरोप का खंडन करते हैं, "भ्रष्टाचार के मामलों में मेरा दृष्टिकोण राजनैतिक आधार पर पक्षपात करने का नहीं है. यदि कांग्रेसी फंसेंगे तो उनके खिलाफ कार्रवाई करने में मैं इसलिए संकोच नहीं करूंगा कि वे कांग्रेस में हैं. मैंने गृह निर्माण सहकारी समितियों में भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ भी कार्रवाई की है."

उन्होंने संकोच किया भी नहीं. उनके इस अभियान के चलते 'रीको' के अधिशासी (निवेश) आर.एल. गुप्ता को बरखास्त

बी.के. मीणा: गिरफ्तारी पर विवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

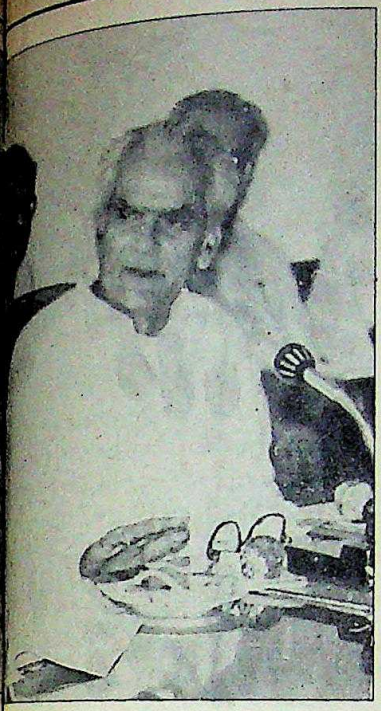

मुख्यमंत्री शेखावत (दाएं) और मुख्य सचिव माथुरः ये नजदीकियां

करके पुलिस में आपराधिक मामला दर्ज किया गया है. उनको हटाने का फैसला खेड़ा रिफाइनरीज और कृष्णा फोर्ज ऐंड स्टेंपिंग्स को मिलीभगत से भारी लाभ पहुंचाने की जानकारी मिलने पर किया गया.

कई और अफसरों पर भी गाज गिरी है. राजस्थान वित्त निगम की 'कंपोजिट टर्म लोन' योजना संबंधी एक बड़े घोटाले में अशोक पोकरणा धर लिए गए हैं. राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी एवं नगर संकुलन विभाग के सक्षम अधिकारी यतींद्र नाथ के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने का मामला दर्ज हो चुका है. जोधपुर नगर सुधार न्यास के अध्यक्ष मान सिंह देवड़ा द्वारा सरकार को करोड़ों रु. के नुकसान पहुंचाने के आरोपों की भ्रष्टाचार निरोधक विभाग ने जांच शुरू कर दी है.

एक ओर मुख्यमंत्री का भ्रष्टाचार विरोधी अभियान जोरों पर है, तो दूसरी ओर ऐसे कई बड़े मामले हैं जिन पर कोई कार्रवाई अभी तक शुरू नहीं की गई है. इसकी वजह से शक की सुई घूमने लगती है. भाजपा के एक युवा सांसद ने बताया, "मेरे पास वरिष्ठ आईएएस अधिकारी तेज कुमार की अनियमितताओं की मोटी फाइल है. मुख्यमंत्री को भी इन अनियमितताओं की जानकारी दे दी गई है लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई."

भाजपा के ही एक और सांसद के इशारे पर आईपीएस अधिकारी रोहिताश्व कुमार ने मुख्य सचिव वी.बी.एल. माथुर पर आपराधिक मुकदमा दर्ज कराया था लेकिन कुछ नहीं हुआ. उधर, कांग्रेसी विधायक परसादी लाल मीणा कहते हैं, "मैंने भी शेखावत को भ्रष्टाचार के एक बड़े मामले की जानकारी दी थी लेकिन अभी कार्रवाई शुरू ही नहीं की गई है."

कार्रवाई न किए जाने वाले मामलों में अनेक तो शेखावत ने विपक्ष के नेता की हैसियत से खुद विधानसभा में उठाए थे. भाजपा के प्रदेश महामंत्री घनश्याम तिवाड़ी ने तो पिछली विधानसभा में राज्य के सबसे बड़े घोटाले 'पाइप कांड' का रहस्योद्घाटन किया था. इस मामले में जनलेखा समिति ने भी अपनी रिपोर्ट दी है. पर शेखावत का कहना है, "मुझे इस प्रकरण की पूरी जानकारी नहीं है." इस मामले में कई अधिकारियों के नाम हैं.

राज्य की सबसे बड़ी परियोजना इंदिरा नहर से संबंधित अनेक मामले खुद शेखावत ने बड़े जोर-शोर से उठाए थे. तत्कालीन नहरमंत्री नरेंद्र सिंह भाटी ने जब 193 अभियंताओं का मामला भ्रष्टाचार निरोधक विभाग को सौंपा तो उन्हें मंत्री पद से हाथ धोना पड़ा था. इसी तरह, नहर निर्माण में घटिया सामग्री, सीमेंट चोरी एवं भारी मात्रा में आर्थिक घोटालों के अनेक आरोप शेखावत और वर्तमान सत्तारूढ़ दल के सदस्यों ने लगाए थे. लेकिन अब इस सरकार ने भी इस मामले पर चुप्पी साध रखी है. यही नहीं, नहर के सीमेंट घोटाले के आरोपी आईएएस अफसर राजेंद्र जैन को शेखावत ने विकास आयुक्त बना दिया है.

मौजूदा कैबिनेट मंत्री पुष्पा जैन और विद्या पाठक सहित शेखावत ने सवाई मान सिंह अस्पताल में दवाओं व मशीनों की खरीद में हुई अनियमितताओं को बड़े जोर-शोर से उठाया था. अब उन मामलों पर राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा गठित उच्च-स्तरीय समिति ने भी रिपोर्ट दे दी है लेकिन उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है.

भ्रष्टाचार विरोधी अभियान पर टिप्पणी करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री हीरालाल देवपुरा कहते हैं, "अभियान क्या है, बातें ज्यादा और काम कम है. इनमें से अधिकतर मामले तो कांग्रेस राज में दर्ज हुए थे. इसमें नई बात क्या हुई है?"

पर भ्रष्टाचार खत्म करने का वादा करके चुनाव जीतने वाले शेखावत ने भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के तहत नई बात भी की है. राज्य विधानसभा के बजट सत्र में उन्होंने लोकायुक्त संशोधन विधेयक रख दिया है. इस संशोधन के बाद मुख्यमंत्री भी लोकायुक्त की जांच परिधि के तहत आ जाएगा. शेखावत कहते हैं, "भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए जरूरी है कि जनता का अपने नेता की छवि में विश्वास हो, इसलिए मैंने मुख्यमंत्री को भी नहीं छोड़ा है." पर देवपुरा इससे संतुष्ट नहीं हैं. उनका मानना है कि लोकायुक्त की नियुक्ति तो मुख्यमंत्री ही करेंगे, फिर उसका मतलब क्या है.

इस अभियान और मुख्यमंत्री की कार्यशैली के बारे में राज्य विधानसभा में हुई बातचीत भी काफी रोचक है. पूर्व वित्तमंत्री चंदनमल वैद ने जब शेखावत को गाल बजाने वाला मुख्यमंत्री कहा तो शेखावत का कहना था, "जिस मकान के दरवाजे बीस साल से बंद हों, उसका कचरा निकालने में वक्त तो लगेगा ही." बहरहाल, देखना है कि वे इसमें कितना वक्त लगाते हैं.

राज्य के इतिहास में शायद यह पहला मौका है जब किसी आईएएस अफसर को भ्रष्टाचार के मामलों में गिरफ्तार किया गया है

एम.डी. कोरानीः पकड़ से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

ताकतवर पर हमला

दिल्ली नगर निगम का अवैध कब्जे के खिलाफ अभियान

गैरकानूनी भवन निर्माण के मामले में बदनाम दिल्ली शहर के लिए बीता पखवाड़ा ऐतिहासिक और नाटकीय गतिविधियों भरा रहा. दिनदहाड़े गैरकानूनी भवन निर्माण की ओर से आंखें मूंद रखने वाले नगर निगम के भ्रष्ट अधिकारियों और कार्रवाई के मामले में सुस्त प्रशासन से तंग आ चुके नागरिकों ने सरकारी मशीनरी को जिस मुस्तैदी और लगन के साथ काम करते देखा वह हैरान करने वाला था. और यह सब किसी नाटक से कम नहीं था जिसके मंचन के पहले पात्रों ने जमकर रिहर्सल किया हो.

तुरत-फुरत लिए गए प्रशासकीय फैसलों, स्पष्ट अदालती निर्देशों और निगम तथा पुलिस की मुस्तैद कार्रवाई से भरे इस नाटक का क्लाइमेक्स 10 जुलाई के भोर में देखने को मिला जब सैकड़ों की संख्या में पुलिस के जवानों और निगम कर्मचारियों की सेना ने आनंद पर्वत क्षेत्र के एक छह मंजिला निर्माणाधीन भवन को गिराने का काम शुरू कर दिया. ऊंची इमारतों में आग बुझाने के लिए इस्तेमाल में आने वाले स्नार्कल में बैठे हथौड़ों और सरियों से लैस कर्मचारियों को जब विभिन्न मंजिलों पर पहुंचाया जा रहा था तो माहौल सचमुच फिल्मी दृश्य-सा हो गया था. मुहल्ले में काफी उत्तेजना थी. लोग सुबह से ही अपनी छतों से यह तमाशा देख रहे थे. इमारत के सामने मार्केट बंद था. सड़क के एक तरफ से वाहनों का आना-जाना बंद कर दिया गया था.

लेकिन इस नाटक का सबसे रोमांचक पहलू तो यह है कि विवादास्पद इमारत किसी छोटे-मोटे आदमी की नहीं बल्कि उत्तेजक कैबरे के लिए चर्चित 'कमल रेस्तरां' के मालिक देवराज दीवान की थी. अपने पैसे, राजनैतिक संपर्क और अपराध जगत में अपने प्रभाव की वजह से दीवान का यह मामला पूरे शहर का ध्यान खींचने के लिए काफी था. उत्सुकता, तनाव और हिंसा भड़कने की संभावनाओं के बीच नाटक के एक भाग का पटाक्षेप दीवान की गिरफ्तारी के साथ हुआ. इसके पहले करीब 11.30 बजे दीवान अपीलीय न्यायाधीकरण के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ए.एम. खां का आदेश ले आए कि अगले दिन स्थगनादेश के प्रार्थनापत्र की सुनवाई होने तक इमारत न गिराई जाए. लेकिन घटनास्थल पर मौजूद नगर निगम के सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर करनैल सिंह का कहना था कि अदालती आदेश उन्हें निगम के विधि अधिकारी से मिलना चाहिए. इस पर दीवान और उनके बेटे राकेश ने उनसे हाथापाई शुरू कर दी. जिसके बाद बाप-बेटे दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया. बाद में उस दिन की कार्रवाई रोक दी गई और अगले दिन स्थगनादेश की तिथि 24 जुलाई तक बढ़ा दी गई. उस दिन इस मामले पर आखिरी फैसला हो जाने की उम्मीद है. उधर, नगर निगम के अधिकारी इमारत गिराने का पक्का इरादा किए हुए हैं.

प्रमोद पुष्करणा

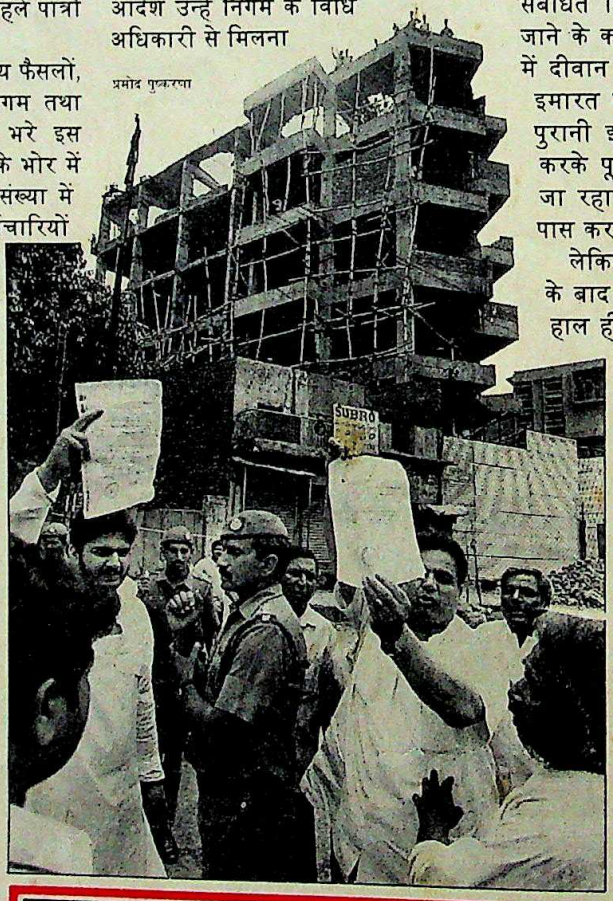

दीवान का आरोप है कि इस पूरी कार्रवाई के पीछे उपराज्यपाल अर्जन सिंह और मुख्य सचिव का हाथ है

प्रशासकीय मुस्तैदी और दृढ़ निश्चय के मामले में इमरजेंसी के बाद सबसे अधिक चर्चित बन चुके इस मामले की शुरुआत पिछले साल नवंबर में हुई जब न्यू रोहतक रोड पर स्थित इस इमारत के बारे में निगम के क्षेत्रीय भवन विभाग ने शिकायत दर्ज की. शिकायत में कहा गया था कि पुरानी इमारत तोड़कर उसकी जगह एक बहुमंजिला इमारत बनाई जा रही है जो संबंधित विभाग से नक्शा पास न कराए जाने के कारण गैरकानूनी है. इसके जवाब में दीवान की दलील यह थी कि यह नई इमारत नहीं है बल्कि साढ़े-तीन मंजिला पुरानी इमारत में ही छोटे-मोटे बदलाव करके पूरी इमारत का नवीकरण किया जा रहा है. लिहाजा नए सिरे से नक्शा पास कराया जाना जरूरी नहीं है.

लेकिन निगम के कर विभाग ने जांच के बाद इस दलील को सही नहीं पाया. हाल ही में उपायुक्त (कर) के पद पर आए, युवा आईएएस अधिकारी राजीव तलवार ने 6 दिन के भीतर इमारत गिराने का हुक्म जारी कर दिया. दीवान का यह अनुरोध पहले ही ठुकराया जा चुका था कि आवश्यक जुर्माना लगाकर इमारत के निर्माण को स्वीकृति दे दी जाए. दीवान इस फैसले को एकतरफा बताते हैं.

दो दिन बाद निगम ने पाया कि इमारत को गिराए जाने के बजाए निर्माण कार्य बदस्तूर जारी है. इस पर निगमायुक्त ऋषिदेव कपूर ने इमारत को सीलबंद करने और उसे पुलिस की निगरानी में रखने का आदेश जारी किया और जिम्मेदार स्थानीय निगम कर्मचारियों के खिलाफ कामकाज में कोताही बरतने के सवाल पर जांच शुरू करवा दी.

इमारत को सीलबंद करने का काम रात के समय किया गया जिसे दीवान ने 'गैरकानूनी' बताते हुए आरोप लगाया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निगम अधिकारियों ने अदालत के जारी किए स्थगनादेश की भी परवाह नहीं की. लेकिन तलवार कहते हैं कि स्थगनादेश न केवल सीलबंदी के मामले में असंबद्ध था बल्कि इमारत के नंबर में भी हेरफेर की गई थी. दोनों पक्षों ने इन मुद्दों पर अदालत की मानहानि के मामले दायर करने के इरादे जाहिर किए हैं.

अपने पैसे, राजनैतिक प्रभाव और बाहुबल के लिए चर्चित दीवान के लिए 9 जुलाई का दिन काफी दुर्भाग्यपूर्ण रहा. निगम से मिली मियाद के आखिरी दिन अपीलीय न्यायाधिकरण के न्यायाधीश ए.एम. खां छुट्टी पर होने की वजह से उपलब्ध नहीं थे.

लिहाजा सारा मामला निगम अधिकारियों की मर्जी पर टिक गया. और निगम अधिकारियों के मन में क्या था, इसका अंदाज आयुक्त कपूर के चेहरे पर फैले आत्मविश्वास से लगाया जा सकता था. ताजा खरीदे गए मक्खीमार से अपनी मेज पर बैठी मक्खियों में से एक पर सटीक निशाना साधते हुए उनका कहना था, "कल सुबह हम ठीक वही करने जा रहे हैं जो हमारी जिम्मेदारी है. आप देखिएगा इसे हम कैसी मुस्तैदी से करते हैं."

इस पूरी कार्रवाई के बारे में दीवान का आरोप है कि इसके पीछे उपराज्यपाल अर्जन सिंह और मुख्य सचिव का साझा हाथ है. 'इंडिया टुडे' के साथ बातचीत में दीवान की शिकायत थी, "मुझे उन अफसरों ने फंसाया है जो दूसरी इमारतों की ओर से आंखें मूंदे रहते हैं. पर मेरे बारे में उन्हें अपनी जिम्मेदारी इसलिए याद आ रही है कि मैंने उन्हें पैसे नहीं खिलाए."

लेकिन मियाद की आखिरी शाम तक यह लगभग स्पष्ट हो चुका था कि बाजी किस रुख जा रही है. इसकी एक झलक दीवान की टिप्पणी में भी थी, "मैं इस इमारत को नगर निगम को सौंपने को भी तैयार हूं. मैं पैसा खर्च करूंगा और निगम खुद अस्पताल चलाए. हां, अस्पताल मेरे दिवंगत पिता के नाम ही होना चाहिए."

लेकिन कपूर किसी समझौते के मूड में नहीं थे. इस प्रस्ताव के संदर्भ में उनका जवाब था, "निगम के नियमों में गैरकानूनी इमारतों में अस्पताल चलाने की कोई गुंजाइश नहीं है."

इस विवादास्पद इमारत का भविष्य तो अदालत ही तय करेगी लेकिन इस मामले में नागरिक प्रशासन और पुलिस की मुस्तैद कार्रवाई ने राजधानी के उन नागरिकों की आशाएं जागृत कर दी हैं जो गैरकानूनी निर्माण से बरबाद होते शहर के भविष्य के प्रति चिंतित हैं.

—विजय क्रान्ति

सेना

दामन में दाग

सैनिक अदालत में राज खुला

भारतीय सेना की अनुशासित पांतों में हिंसा की खतरनाक कथा अपने अंजाम पर पहुंच गई. पिछले महीने सर्वोच्च सैनिक अदालत ने एक इन्फैंट्री अफसर, दो जूनियर कमीशन अफसरों और दो जवानों के खिलाफ हत्या के मुकदमे की सुनवाई पूरी कर ली. इन लोगों पर चार दूसरे अफसरों की हत्या का आरोप था.

कैप्टन छत्री और मेजर जसपाल सिंह: अपनों ने ही मारा

मुकदमे से बटालियन में व्याप्त पक्षपात, संकीर्णता और खस्ताहाल व्यवस्था का पता चला

जून 1987 में अरुणाचल प्रदेश में एक अभ्यास के दौरान जाट रेजिमेंट की 8वीं बटालियन के दो जवानों ने अपने कमान अधिकारी (सीओ) कर्नल एस.एस. सहोटा, उनके अधीनस्थ अफसर मेजर जसपाल सिंह, कैप्टन बी.के. छत्री और कैप्टन ए. श्रीवास्तव की हत्या कर दी थी.

ब्रिगेडियर बी.जे.एस. ओबेराय की अध्यक्षता में सैनिक अदालत ने अब यह फैसला दिया है कि दोनों जवान महावीर सिंह और इंदरपाल सिंह अपने सीओ और उनके मातहत अफसर की हत्या के षड्यंत्र के दोषी हैं. यह भी कहा गया कि दूसरे दो अफसर संयोग से ही इस मुठभेड़ में मारे गए थे. पश्चिमी सियांग के न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने इकबालिया बयान में दोनों जवानों ने मेजर राजवीर सिंह बधवार, सूबेदार मेजर मेहताब सिंह और सूबेदार करतार सिंह को भी इस अपराध में शामिल बताया.

इन तीनों पर अपराध को उकसाने का मुकदमा कर्नल रामप्रीत राय की अध्यक्षता वाली सैनिक अदालत में चला. सेना के पूर्व संयुक्त जज एडवोकेट जनरल, ब्रिगेडियर (अवकाशप्राप्त) एम.पी.जी. मेनन ने अभियुक्तों की वकालत की. सूबेदार मेजर मेहताब सिंह तो बरी कर दिए गए मगर मेजर बधवार को कठोर दंड दिया गया और करतार सिंह बरखास्त कर दिए गए. दोनों को उम्र कैद की सजा सुनाई गई है.

मुकदमे के दौरान प्रस्तुत सबूतों से स्पष्ट हुआ कि मेजर बधवार और दूसरे लोगों ने कर्नल सहोटा और मेजर जसपाल को रास्ते से हटाने के लिए षड्यंत्र रचा. उन्होंने दो गैर-सिख जवानों की सांप्रदायिक भावनाओं को उभारकर उन्हें हत्या के लिए उकसाया. इससे बटालियन के अंदर व्याप्त पक्षपात, संकीर्ण मनोवृत्ति और खस्ताहाल व्यवस्था का भी भंडाफोड़ हुआ और यह पता चला कि सैनिकों से काम लेने के लिए अफसर लोग सांप्रदायिक तरीके अख्तियार करते रहे हैं.

हत्या का उद्देश्य कर्नल सहोटा के नेतृत्व के दौरान दिए गए उनके दो आदेशों के खिलाफ भड़का क्षोभ लगता है. मेजर बधवार को कर्नल सहोटा की झांड़ कई बार सुननी पड़ी थी, खास तौर से तब जब एक जीसीओ की विदाई पार्टी के समय कंपनी में सैनिक विद्रोह-सी स्थिति उत्पन्न हो गई थी.

बटालियन के अगुआ के नाते कर्नल सहोटा का पहला कार्यकाल भी विवादपूर्ण रहा था. वे एक कठोर अनुशासन पसंद व्यक्ति थे और उन्होंने एक कंपनी कमांडर तक को चेतावनी दे डाली थी. बदले में उसी सीओ ने उन पर पक्षपात का आरोप जड़ दिया था. असंतोष एक और घटना को लेकर भी भड़का था. एक जाट अफसर, जिसकी पदोन्नति लेफ्टिनेंट कर्नल के पद के लिए होनी तय थी, यूनिट की कमान इसलिए नहीं ले सका क्योंकि लड़की छेड़ने के एक मामले में मेजर जसपाल ने उसके खिलाफ गवाही दी थी.

रक्षा मंत्रालय द्वारा इस फैसले की अभी पुष्टि होनी है पर सैनिक कमांडरों को उम्मीद है कि उनका यह सख्त रुख अभूतपूर्व अनुशासनहीनता के विरुद्ध मिसाल बन सकेगा और भारतीय सेना की धर्मनिरपेक्ष और गैर-राजनीतिक छवि को दाग नहीं लगने देगा.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कार्टून कोना: अजीत नैनन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

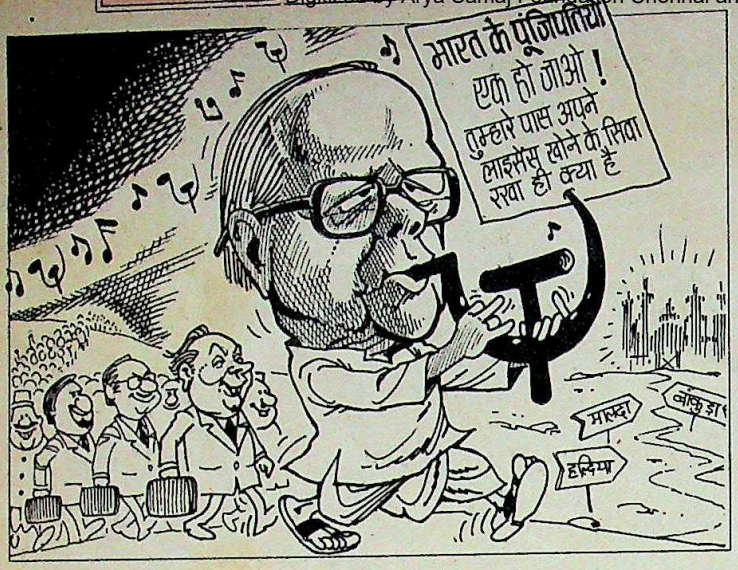

अवसान: मिजो नेशनल फ्रंट के अध्यक्ष और मिजोरम के पूर्व मुख्यमंत्री **ललडेंगा** की लंदन में फेफड़े के कैंसर से मृत्यु. वे 62 वर्ष के थे. करीब 25 साल तक भारत सरकार के लिए चुनौती बने रहे ललडेंगा मिजोरम की स्वतंत्रता की मांग उठाते रहे. उनके प्रयासों से 1986 में मिजोरम समझौता हुआ और मिजोरम पूर्ण राज्य बना.

सम्मानित: अंतरराष्ट्रीय जहाजरानी संगठन के पूर्व महासचिव **सी.पी. श्रीवास्तव** को इंग्लैंड की महारानी ने जहाजरानी उद्योग में उनके योगदान के लिए 'नाइट' की मानद उपाधि से सम्मानित किया.

नियुक्त: अब्दुल सत्तार भारत में पाकिस्तान के नए उच्चायुक्त. उन्होंने बशीर बाबर की जगह ली है जो सिर्फ छह महीने इस पद पर रहे. सत्तार पहले भी भारत में 1971 में उप उच्चायुक्त और 1978 से 1982 तक उच्चायुक्त रह चुके हैं.

हत्या: चंडीगढ़ में उदारवादी अकाली नेता और पंजाब के पूर्व वित्तमंत्री **बलवंत सिंह** की. 1985 में पंजाब समझौता तैयार करने में उन्होंने लोंगोवाल के साथ प्रमुख भूमिका निभाई थी. सुरजीत सिंह बरनाला के मुख्यमंत्रित्व काल में वस्तुतः वे ही सरकार के कर्ताधर्ता थे.

बिकीं: खुशवंत सिंह के उपन्यास 'देहली' की 10,000 प्रतियां. किसी भारतीय लेखक की अंग्रेजी पुस्तक की इतनी प्रतियां पहली बार बिकीं. बकौल उनके, "घटिया किताब लिखी, वह भी इतनी बिकी."

रिहा: जेल से ही चुनाव जीतने वाले **अतिंदरपाल सिंह** को 7 जुलाई को रिहा किया गया. पहले इंका सरकार ने इंदिरा हत्याकांड संबंधी मामला उनके खिलाफ वापस लिया. अब नई सरकार ने 'जनमत के सम्मान में' शाहदरा बम कांड संबंधी आरोप वापस ले लिया. रिहाई के बाद उन्होंने कहा, "मैं संसद के माध्यम से सिखों के हितों को स्वर दूंगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उत्तम फर्श

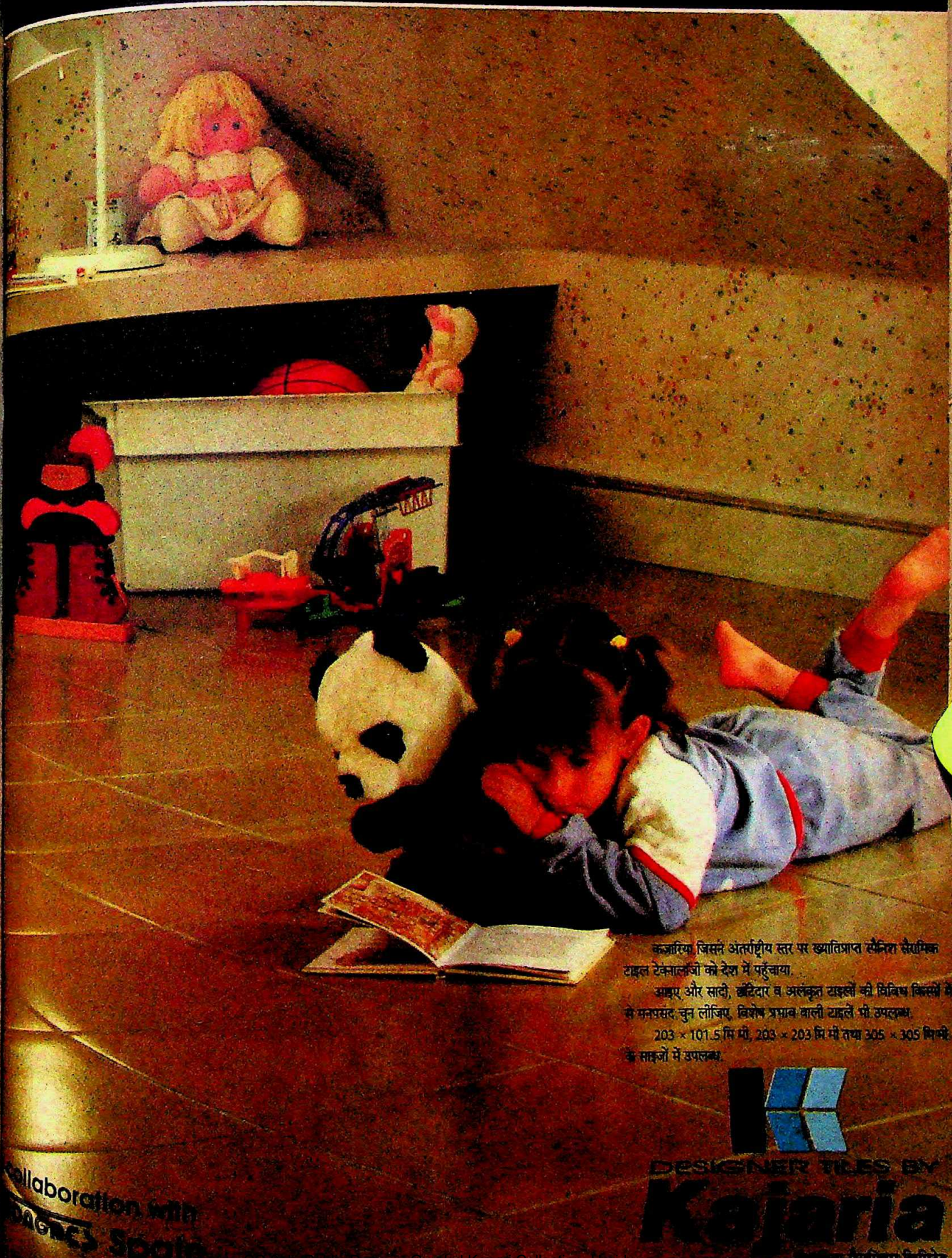

कजारिया जिसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त सैनिटरा सैरामिक टाइल टेक्नालॉजी को देश में पहुँचाया.

आइए और सादी, छींटदार व अलंकृत टाइलों की विविध किस्मों में से मनपसंद चुन लीजिए. विशेष प्रभाव वाली टाइलें भी उपलब्ध.

203 × 101.5 मि मी, 203 × 203 मि मी तथा 305 × 305 मि मी के साइज़ों में उपलब्ध.

DESIGNER TILES BY

Kajaria

कजारिया सैरामिक्स लिमिटेड
नई दिल्ली 110066

Collaboration with
Sports

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य

मानव अंगों की

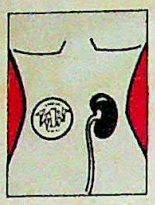

डॉक्टर इसे मानव अंगों का खुदरा व्यापार कहते हैं. जेनेवा स्थित इंटरनेशनल कमीशन ऑफ हेल्थ प्रोफेशनल (आईसीएचपी) इसे "सबसे जघन्य, निंदनीय और नैतिक रूप से धिक्कार लायक" मानता है. और दिल्ली के गुर्दा (किडनी) विज्ञानी रमेश कुमार इसे "मानव शरीर की वेश्यावृत्ति" बताते हैं.

और जिस तरह से विभिन्न मानव अंगों के दाम तय हो गए हैं उससे सचमुच यह काम मांस बाजार के व्यापार जैसा लगने लगा है. जैसे— गुर्दा: 30000 रु., आंख का कॉर्निया: 80000 रु., चमड़ी (एक टुकड़ा): 1000 रु., शव: 6000 रु., पूरा नरकंकाल: 10000 रु.

प्रसिद्ध तंत्रिका विज्ञानी और आईसीएचपी के अध्यक्ष सिकोट वाज गुस्से से कहते हैं, "यह घृणास्पद व्यापार है और मानवीयता के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ है." फिर भी मानवीय अंगों का भारतीय बाजार सिर्फ पांच वर्षों के भीतर ही बड़े शहरों तक फैल गया है अभी यह मुख्य रूप से चोरी-छिपे चलने वाला ही धंधा है जिसे दलालों, अंग बेचने वालों और चुपचाप ऐसे

बेचने वाले

नामम भोजानी

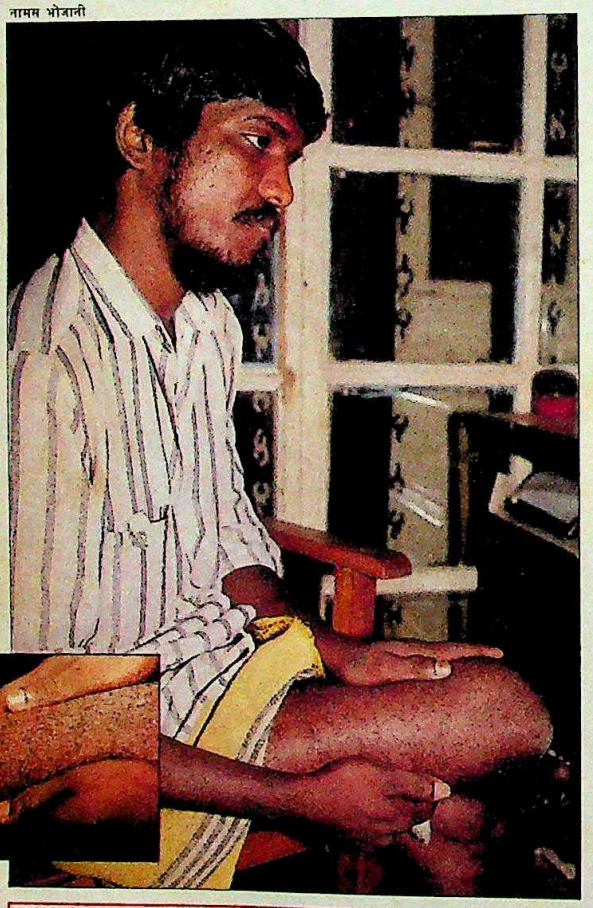

साईनबोर्ड पेंटर, 24 वर्षीय शिवाजी राम ने दो साल पहले पुणे के एक अस्पताल को अपनी जांघ की थोड़ी सी चमड़ी 1000 रु. में बेची. इस ऑपरेशन के लिए वे पैसों की सख्त जरूरत के कारण राजी हुए

के.वी. भास्र

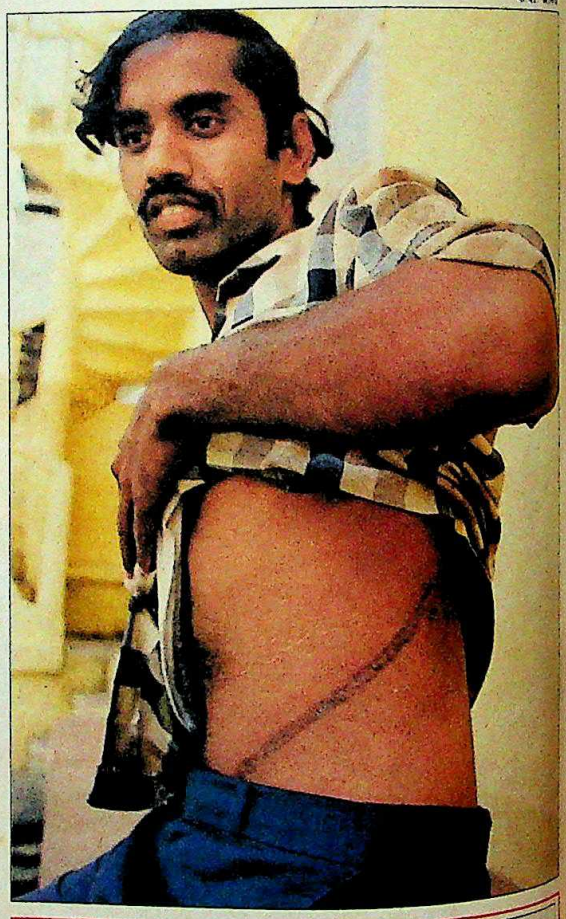

मद्रास के एक प्रेस कर्मचारी 32 वर्षीय रमेश सदगोपन ने पिछली जुलाई में 25,000 रु. में अपना गुर्दा बेचा. इस पैसे से उन्होंने एक छोटा-सा मकान खरीदा और 12,000 रु. का कर्ज चुकाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडी

ऑपरेशन करने वाले अस्पतालों-डॉक्टरों का बहुत ही उलझा तंत्र संचालित करता है.

आज हर साल करीब 2000 या उससे अधिक गुर्दे जिंदा लोगों के शरीर से लिये और बेचे जाते हैं जबकि 1985 में यह संख्या 500 और 1980 में तो 50 से भी कम थी. शुरू में यह काम मद्रास और बंबई के अस्पतालों तक सीमित था जबकि अब यह कलकत्ता और बंगलूर के साथ ही

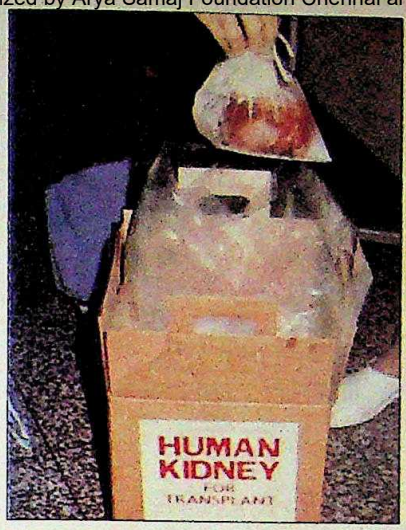

दान में मिले गुर्दे की पैकिंग

पूणे, जयपुर और मदुरै जैसे शहरों में भी होने लगा है. आज 'गुर्दा बाजार' 40 करोड़ रु. सालाना तक का हो चुका है.

इस मामले में दुखद बात यह भी है कि पहले पैसे लेकर गुर्दा बेचने का काम मुख्य रूप से पुरुष करते थे. आज ऐसे लोगों में औरतों की संख्या भी अच्छी खासी है. मद्रास की दो बच्चों की मां 30 वर्षीया उदया अंबी ने अपने टीवी मेकेनिक पति की नौकरी छूट जाने पर अपना एक गुर्दा बेचने का फैसला किया. अंबी कहती हैं, "मेरे पास सिर्फ एक ही ऐसी चीज बची थी जिसे बेचकर हम आत्मसम्मान से जी सकते थे. और यह चीज थी मेरा गुर्दा."

खरीदने वाले

के.वी. आनंद

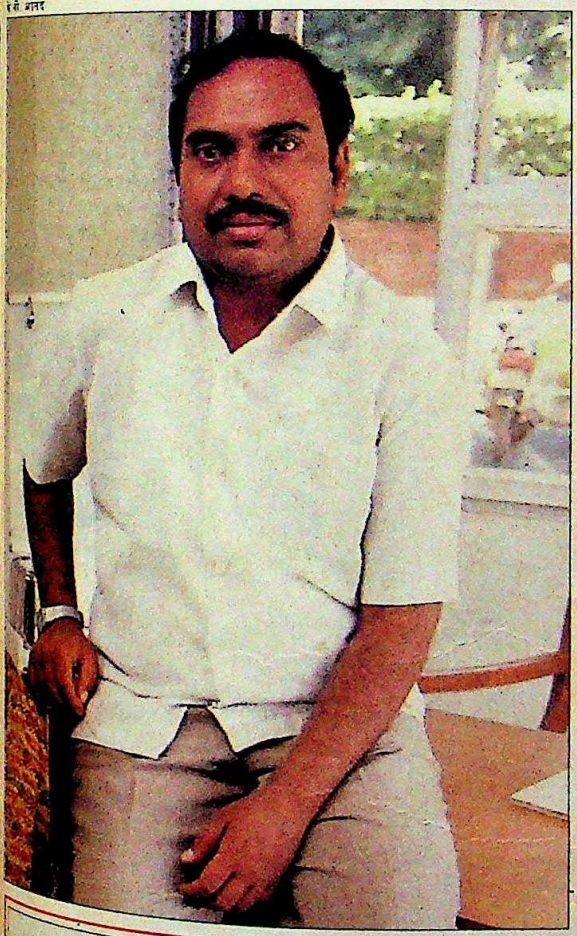

नेल्लोर हाईस्कूल के 39 वर्षीय शिक्षक कृष्णा रेड्डी का गुर्दा बिलकुल खराब हो गया. अक्तूबर 1988 में मद्रास के एक अस्पताल ने उनके लिए 27,000 रु. में गुर्दा बेचने के लिए एक व्यक्ति को तैयार किया

के.वी. आनंद

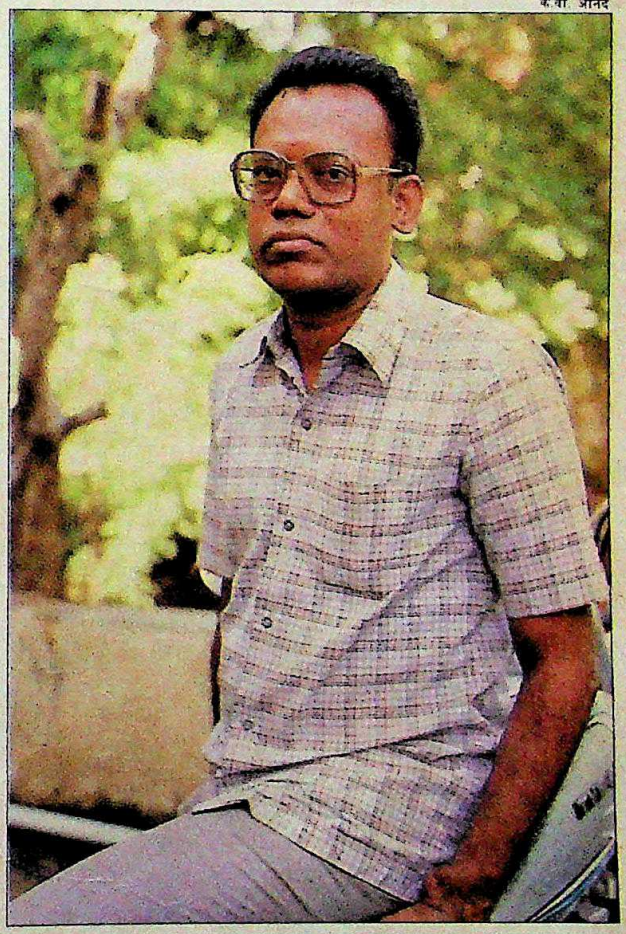

मद्रास के बैंक अधिकारी 47 वर्षीय पेठा पेरुमल तीन वर्षों तक गुर्दे के दानकर्ता की खोज करते रहे. नवंबर 1986 में उन्होंने एक बेरोजगार युवक से 12,000 रु. में गुर्दा खरीदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विल्लीवक्कम

मजबूरी में सौदेबाजी

मद्रास के उपनगरीय क्षेत्र विल्लीवक्कम की झोंपड़पट्टियों के बाशिंदों में ज्यादातर ऑटोरिक्शा चालक, सिनेमाघरों के गेटकीपर, चौकीदार और मेकेनिक आदि ही हैं. कच्चे घरों में रहने वाले ये लोग दो जून का भात बमुश्किल जुटा पाते हैं. इसके बावजूद पिछले तीनेक वर्षों में यहां के तकरीबन सौ परिवारों में थोड़ी खुशहाली आई दिखती है. उनकी झोंपड़ियों की दीवारें ईंट की हो गई हैं, छतों पर दोबारा छप्पर डाला गया है. कुछेक परिवारों में साइकिल भी आ गए हैं तो कुछेक घरों में टेलीविजन. कुछ लोगों ने अपनी छोटी-छोटी दुकानें खोल ली हैं.

इस खुशहाली का राज इस उपनगरीय क्षेत्र के नए नाम में छिपा है. यह नया नाम है—'किडनी वक्कम' या बिलकुल सही कहें तो 'किडनी बेचम'.

मानव अंगों के खरीदारों के लिए तो यह बहुत ही मुफीद जगह है. और उन्हीं के लिए क्यों, यहां के 5,000 बाशिंदों के लिए भी यह कमाई अप्रत्याशित ही है. पास के एक सिनेमाघर के चौकीदार जी. बालन बताते हैं, "एक गुर्दा बेचकर मैंने जितना पैसा कमाया उतना मैं तीन जनमों में भी नहीं कमा पाता." बालन का उदाहरण बताता है कि बदहाली किस तरह लोगों को अपने अंग बेचने पर मजबूर कर देती है. अपनी बहन के ब्याह के लिए लिए गए कर्ज का बोझ उन पर बढ़ता ही जा रहा था. और साल भर पहले जब उनका अपना ब्याह हुआ तो वे 15,000 रु. के कर्ज में डूब चुके थे.

साल भर पहले जब एक एजेंट ने बालन को बताया कि एक गुर्दा बेचकर वे 25,000 रु. कमा सकते है तो वे तुरंत राजी हो गए. विल्लीवक्कम के इतने लोग बिना किसी दुष्प्रभाव के अपने गुर्दे बेच चुके थे कि ऑपरेशन का डर नहीं रह गया था. जो पैसा उन्हें मिला उससे उन्होंने अपना कर्ज चुकता कर दिया. जब और ज्यादा पैसे की जरूरत पड़ी तो उन्होंने अपनी पत्नी से गुर्दा बेचने का आग्रह किया. और उस पैसे से घर पक्का करवाया, साइकिल खरीदी.

इस उपनगरीय क्षेत्र में दंपतियों द्वारा गुर्दे बेचना आम बात है. बालन के घर के नजदीक ही रहने वाले राजकुमार और लक्ष्मी नटराजन भी अपने गुर्दे बेच चुके हैं. राजकुमार 10 रु. दिहाड़ी पर नौकर था तो लक्ष्मी घरों के सामने अल्पना कर थोड़े-बहुत पैसे कमाती थी. यह जोड़ा भी कर्ज में डूबा था और मुश्किल से अपने तीनों बच्चों का पेट भर पाता था. जैसा कि राजकुमार ने बताया, "हम इतने हताश हो गए थे कि हमारे सामने दो ही रास्ते बचे थे. या तो हम अवैध शराब का धंधा शुरू करते या 'दादा' बनकर अपराध करने लगते. हमें गुर्दे बेचना ज्यादा सम्मानजनक लगा." गुर्दे बेचकर मिले

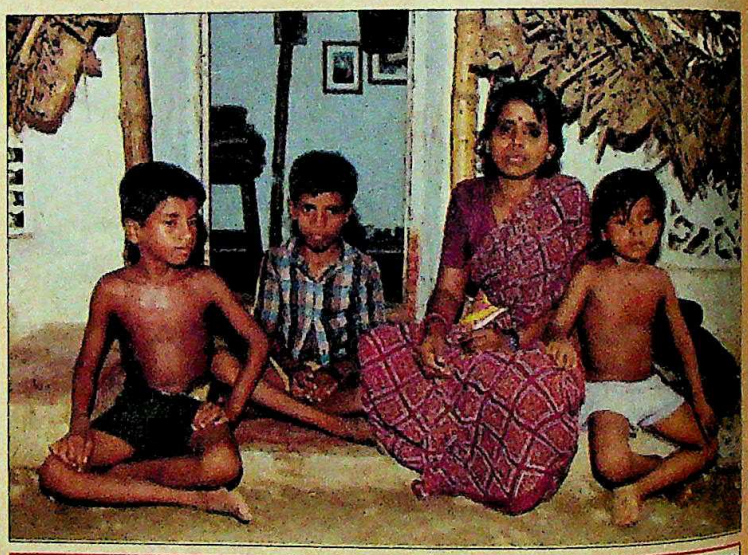

तीन बच्चों की मां 28 वर्षीया लक्ष्मी नटराजन **ने 25,000 रु. में गुर्दा बेचकर घर खरीदा. दिहाड़ी मजदूर रहे उनके पति ने एक वर्ष पहले अपना गुर्दा बेचकर ऑटोरिक्शा खरीदा**

50,000 रु. से उन्होंने घर के नजदीक एक प्लॉट खरीदा और वहां ईंट की दीवार खड़ी कर दी. अब उनकी योजना एक ऑटोरिक्शा खरीदने की है, इन लोगों की देखादेखी दो बच्चों की मां, 26 वर्षीया देवी अयासेवन भी अपने गुर्दे बेचना चाहती हैं. लेकिन वे यह नहीं चाहतीं कि कुली का धंधा करने वाले उनके पति अपना गुर्दा बेचें. वे कहती हैं, "मुझे डर जरूर लगता है. लेकिन मेरे पति का काम बहुत मेहनत का है. ऑपरेशन उन्हें लाचार बना सकता है जबकि मुझे गुर्दा बेचने में परेशानी नहीं होगी."

हर रोज विभिन्न अस्पतालों के दर्जनों लोग इस इलाके के चक्कर लगाते हैं. गुर्दा बेचने के इच्छुक व्यक्ति के मूत्र और खून की जांच करवाते हैं. जांच का खर्च भी वे लोग ही उठाते हैं. जांच के बाद इनके रक्त ग्रुप की सूची तैयार करते हैं. कई बार वे लोगों को थोड़ा-बहुत पैसा भी उधार दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

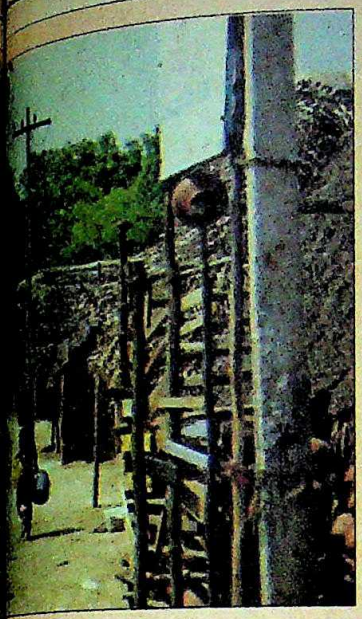

विल्लीवक्कम की एक गली

मिले पैसों से टीवी सेट और साइकिल खरीदी और बाकी के दस हजार उन्होंने जुए में गंवा दिए. तब उन्होंने टीवी और साइकिल भी बेच डाली और वे पैसे भी जुए में गंवा दिए. अब वे अपनी पत्नी रूबी पर अपना गुर्दा बेचने के लिए दबाव डाल रहे हैं.

विल्लीवक्कम के बाशिंदों की ज्यादा चिंता इस बात की है कि मानव अंगों के इस व्यापार का प्रमुख निशाना यहां के बेरोजगार युवक हैं. ये लोग नौकरी की तलाश छोड़, अपना गुर्दा बेचकर संतुष्ट हैं और उस पैसे से अवैध शराब के भट्ठे के गिर्द मंडराते रहते हैं. नाम न छापने की शर्त पर एक युवक ने बताया, "जल्द ही यहां के ज्यादातर नौजवान एक गुर्दे वाले

सभी फोटो: श्याम टेकवानी

28 वर्षीय चौकीदार जी. बालन और उनकी पत्नी ने अपना-अपना एक गुर्दा बेच दिया. इससे मिले 50,000 रु. से उन्होंने 10,000 का कर्ज चुकाया, कच्चा घर बनाया और साइकिल खरीदी

देते हैं. और सौदा तय होने पर ये बिचौलिए एक से पांच हजार रु. तक अपनी दलाली ले लेते हैं. गुर्दा देने के बाद दलाल बने त्यागराज कहते हैं, "हम उन लोगों की मिसाल पेश कर देते हैं जो अपने गुर्दे बेच चुके हैं. और बस हमारा काम बन जाता है."

लेकिन गुर्दे बेचना सबके लिए सुखद अनुभव नहीं रहा है. नर्सिंग सहायक का काम करने वाले 43 वर्षीय वेंकट ने गुर्दे से होकर रह जाएंगे."

वैसे, अब तक गुर्दा देने से मौत का कोई उदाहरण सामने नहीं आया है जिससे गुर्दे बेचने के इच्छुक बाकी लोग निरुत्साहित हो सकें. इसीलिए गुर्दा प्रत्यारोपण अस्पतालों के आगे गुर्दादाताओं की कतार लंबी होती जा रही है. जैसा कि नटराजन कहते हैं, "यदि लोगों को पता लग जाए कि आंखें कहां बेची जा सकती हैं तो वे वहां भी दौड़ पड़ेंगे." —राज चेंगप्पा

जिस बात का डॉक्टरों को अब तक डर लग रहा था, अब वह भी सही साबित होता लग रहा है: अब आंखों और चमड़े जैसे दूसरे अंगों का भी व्यापार होने लगा है. जैसे, जयपुर में कैलगरी आई हॉस्पिटल के मुख्य नेत्र चिकित्सक डॉ. ओ.पी. कुलश्रेष्ठ अभी हाल में एक मरीज की मांग सुनकर दंग रह गए. 20 से कुछ ही ऊपर के इस नौजवान ने उनसे कहा कि वह अपनी एक आंख एक लाख रु. में बेचना चाहता है. वह जानना चाहता था कि किस अस्पताल में वह अपनी आंख बेच सकता है. जसलोक अस्पताल के प्रसिद्ध मूत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. बी.एन. कोलाबावाला कहते हैं, "हमने एक ऐसे व्यापार के रास्ते खोल दिए हैं जो इष्टसिद्धि के लिए नैतिकता के सारे बंधन तोड़ रहा है."

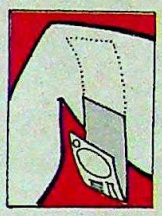

विदेशों में तो अब मानव अंगों के व्यापार से लोगों को काफी चिंता होने लगी है और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने सदस्य देशों से इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की है. खबर है कि होंडुरास और ब्राजील जैसे गरीब देशों के बच्चे कुछ दूसरे देशों में भेजे जा रहे हैं जहां के मानव अंग व्यापारी उनके शरीर के सारे अंग बेच डालते हैं. ऐसी खबरों की पुष्टि तो अभी तक नहीं हुई है लेकिन भारत में इस धंधे ने जितना बड़ा आकार ले लिया है उस पर सारी दुनिया का कम ध्यान गया है.

दरअसल मानव अंगों के व्यापार के मामले में भारत सदा से विश्व के मानचित्र पर प्रमुख रहा है. 1985 में कब्रों से शव चुराने के जघन्य अपराध की खबरें आने के बाद सरकार ने नरकंकाल के निर्यात पर रोक लगाई. लेकिन इससे पहले तक भारत से प्रतिवर्ष करीब 10,000 पूरे नरकंकाल बाहर भेजे जाते थे. इसी तरह अपने देश में रक्त बैंकों का वार्षिक कारोबार 100 करोड़ रु. से भी ऊपर का हो चुका है.

मानव अंगों की बिक्री दूसरे तरीकों से भी होती है. कहा जाता है कि अस्पतालों के जच्चा-बच्चा वार्ड से नियमित रूप से अपरा ऊतक जमा कर दवा कंपनियों को बेचे जाते हैं जो इनका उपयोग रक्त संबंधी उत्पादों में करती हैं. और ऐसी खबरें भी हैं कि कुछ निजी कॉलेज सरकारी अस्पतालों से गुपचुप लावारिस लाशें खरीद लेते हैं जिन पर उनके विद्यार्थी शल्यक्रिया सीखते हैं. लेकिन यह सारा कुछ जीवित मानव अंगों के व्यापार के आगे धुंधला पड़ जाता है.

ऐसे अंगों की बिक्री में तेजी के अलग-अलग कारण हैं. भारत में प्रतिवर्ष करीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यारोपण सर्जरी

हाथ की सफाई

अपने लाखों नलिकाकार फिल्टरों के जरिए (जिन्हें नेफ्रॉन कहते हैं) गुर्दा शरीर के रक्त प्रवाह में जमा हुए अवशिष्ट तत्वों की सफाई करता है. इसमें इतनी क्षमता है कि अगर एक गुर्दा काम बंद कर दे या हटा दिया जाए, तब भी दूसरा अकेले ही समूचा काम कर सकता है और फिर भी उसके आधे से अधिक नेफ्रॉन निष्क्रिय रहते हैं.

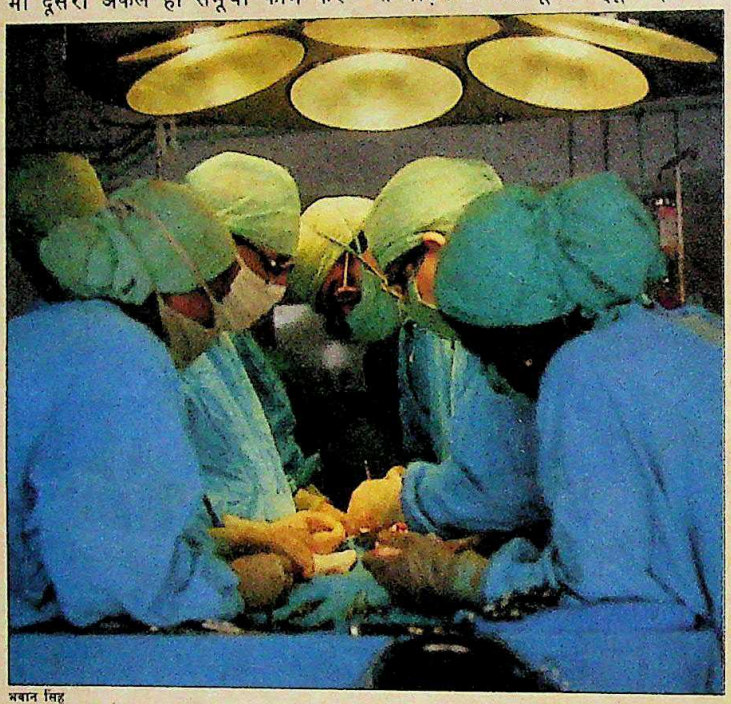

भवान सिंह

इसी आश्चर्यजनक क्षमता ने अंग प्रत्यारोपण की धारणा को जन्म दिया. नौवें दशक के शुरू में जब साइक्लोस्पोरीन जैसी शक्तिशाली इम्यूनोस्प्रेशन दवाएं प्रयोग में लाई जाने लगीं तो वंशेतर दाताओं के अंगों के प्रत्यारोपण की दर भी बढ़ गई.

बहुत से विकसित देशों में हालांकि दिल, फेफड़ा, जिगर और अग्न्याशय आदि अंग प्रत्यारोपित किए जाने लगे हैं पर भारत में अभी केवल गुर्दा, कॉर्निया, त्वचा और अस्थि-मज्जा का ही प्रत्यारोपण होता है. गुर्दा प्रत्यारोपण में दाता और मरीज दोनों को ऑपरेशन थिएटर में एक साथ ले जाया जाता है. डॉक्टर दाता की पसलियों के ठीक नीचे नाभि के समानांतर चीरा लगाते हैं. फिर पेट की पेशियों को चीरकर लाल-भूरे रंग के गुर्दे को विशेष प्रक्षेपणों की सहायता से उठाया जाता है.

मरीज (प्राप्तकर्ता) के खराब गुर्दे को विशेष परिस्थितियों में ही हटाया जाता है. उसके बदले दाता के गुर्दे को पेट के निचले भाग में ही प्रत्यारोपित करते हैं. नए गुर्दे की मुख्य धमनियों और नसों को प्राप्तकर्ता के रक्त प्रवाह से जोड़ने के बाद 'यूरेटर ट्यूब' (कृत्रिम मूत्र प्रवाहक नलिका) को मरीज (प्राप्तकर्ता) के मूत्राशय से जोड़ते हैं. ऑपरेशन के चंद सेकंड बाद ही प्रत्यारोपित गुर्दा काम करने लगता है. दाता और मरीज दोनों को पूरी तरह स्वस्थ होने में दो से तीन सप्ताह लग जाते हैं. लेकिन प्राप्तकर्ता को इम्यूनोस्प्रेशन दवाएं कई वर्षों तक लेनी पड़ती हैं.

कॉर्निया के ऑपरेशन तो और भी नाजुक होते हैं. प्राप्तकर्ता के कॉर्निया को, जो आंखों के 'रेटीना' के सामने पड़ी पारदर्शी झिल्ली होती है, विशेष प्रकार के शल्य उपकरणों से काटकर अलग कर दिया जाता है. और फिर सूक्ष्मदर्शी की सहायता से सर्जन दाता कॉर्निया को उसके ऊपर सिल देता है. —राज चेंगप्पा

गुर्दे का प्रत्यारोपण

80,000 लोगों के दोनों गुर्दे काम करना बंद कर देते हैं. जिंदा रहने के लिए उन्हें या तो डायलिसिस की मदद लेनी होती है या गुर्दा प्रत्यारोपण कराना होता है. लेकिन यह इलाज काफी मुश्किल और महंगा है. देश भर में डायलिसिस करने वाली 650 इकाइयां हैं और ये मुश्किल से 20 फीसदी लोगों की सहायता कर पाती हैं.

अस्सी के दशक में रोग अवरोधी प्रणाली को शामिल करने वाली शक्तिशाली दवाओं के बन जाने से आनुवांशिक संबंधों के दायरे से बाहरी लोगों के गुर्दे को प्रत्यारोपित करने में सफलता की दर तेजी से बढ़ गई. इससे बाहरी लोगों के अंग लेने का काम काफी तेजी से बढ़ा और गुर्दे जैसे अंगों का व्यापार भी.

गुर्दे के धंधे को बढ़ाने में अस्पष्ट भारतीय कानून भी मददगार है. आज तक किसी भी राज्य सरकार ने मानव अंगों की बिक्री पर रोक लगाने वाला स्पष्ट कानून नहीं बनाया है. भारतीय दंड विधान के अनुसार किसी डॉक्टर पर फौजदारी मुकदमा तभी चल सकता है जब वह किसी आदमी को उसका कोई अंग व्यर्थ ही हटाकर नुकसान पहुंचाए. अगर कोई आदमी 'लोकोपकार' के लिए अपना अंग दान करता है तो डॉक्टर को कोई सजा नहीं दी जा सकती.

वैसे, यह कोई अचरज की बात नहीं कि पैसे लेकर अपना अंग बेचने वाले अधिकांश लोग गरीब वर्ग से होते हैं जो जिंदगी भर में 25 हजार रु. भी बचा नहीं सकते. आंध्र प्रदेश में नल्लोर का 37 वर्षीय शंकर वेलायुधन, जिसने अपना गुर्दा बेचने से मिले पैसे से चाय की दुकान खोली है, कहता है, "अगर कोई ठीकठाक पैसा दे तो मैं अपनी एक आंख और एक हाथ भी उसे दे सकता हूं."

गुर्दा प्रत्यारोपित कराने वाले व्यक्ति के लिए तो यह खरीद भी डायलिसिस जितनी ही महंगी पड़ती है. गुर्दा देने वाले को 30,000 रु. देने के अलावा प्रत्यारोपण ऑपरेशन में 60 से 70 हजार रु. तक का खर्च आ जाता है. ये एक लाख रु. खर्च करने के बाद वर्षों तक रोग अवरोधी प्रणाली को नियंत्रित रखने वाली दवाओं पर प्रति माह 3000 रु. का खर्च उठाना होता है. कपड़ा कंपनी में अधिकारी आर.कुमार, जिनकी 21 वर्षीया बेटी सुमित्रा ने हाल में गुर्दा प्रत्यारोपण कराया है, कहते हैं, "अब वह सामान्य हो रही है. मुझे गुर्दा खरीदने में कुछ भी गलत नहीं लगता."

यहां मानव अंगों का व्यापार चोरी-छिपे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलता है. दलाल बड़े शहरों के अस्पतालों के इर्द-गिर्द गुर्दा खराब हुए मरीजों को टोहते फिरते हैं. उनका रक्त वर्ग जानकर दलाल अपने पास रखी 100 से ज्यादा लोगों की सूची निकालता है और उनके रक्त वर्ग से गुर्दा चाहने वाले के रक्त वर्ग का मिलान करता है. मिलान के बाद वे 25,000 से 30,000 रु. में सौदा पटाते हैं. गुर्दा देने वाले को हफ्ते भर अस्पताल में रखने का खर्च भी गुर्दा लेने वाले को देना होता है. अस्पतालवालों का कहना है कि इस खरीद-फरोख्त से उनका कोई लेना-देना नहीं है. लेकिन गुर्दा खरीद के धंधे पर बवाल मचने के बाद कई अस्पतालों ने ऐसे ऑपरेशन न करने पर सहमति जताई.

उनके फैसले का मिला-जुला असर हुआ है. एक ओर तो कुछ अस्पतालों ने इस धंधे के दलालों को हटाने के लिए सीधे मैदान में आने का फैसला किया है. बंबई के बांबे हॉस्पिटल और मद्रास के गेस्ट हॉस्पिटल सरीखे ने गुर्दा दान करने वालों के लिए खुद ही विज्ञापन देना, गुर्दे की कीमत चुकाना और दानकर्ता को अस्पताल में रखने की व्यवस्था करना शुरू किया है. कानूनी रूप से यह सही लगे इसके लिए इसे 'पुरस्कृत दान' कहा जाने लगा है. दान करने वाले से यह हलफनामा भी लिया जाता है कि वह यह दान "मरीज के प्रति गहरे प्रेम और स्नेह" के चलते कर रहा है.

यह धंधा महानगरों के उपनगरों में पहुंच गया है जहां प्रत्यारोपण ऑपरेशन के लिए रातोरात प्राइवेट नर्सिंग होम खुल गए हैं. अपोलो अस्पताल में प्रत्यारोपण करने वाले सर्जन एम.के. मणि कहते हैं, "अब यह लघु उद्योग जैसा हो गया है." ऐसे अधिकांश नए अस्पतालों में ऑपरेशन की पूरी और अच्छी सुविधाएं नहीं होती. परिणामस्वरूप असफल ऑपरेशनों की संख्या काफी बढ़ गई है जिनमें कुछ मामले बिगड़कर मौत का कारण भी बन गए हैं. पिछले पखवाड़े मद्रास में अपना गुर्दा 25,000 रु. में बेचने वाली 40 वर्षीया कमला इडुमलै ने एक स्थानीय अस्पताल के ऑपरेशन टेबल पर ही दम तोड़ दिया.

गुर्दा प्रत्यारोपण के दुरुपयोग और शोषण के उदाहरण बढ़ते जा रहे हैं. बंबई के त्वचा विज्ञानी आई.एस. गिलाडा, जो एड्स के मरीजों का भी इलाज करते हैं, यह देखकर हैरान हो गए कि एड्स के विषाणु से ग्रस्त एक आदमी अपना गुर्दा बेच रहा है और उसे इसके लिए एक नामी-गिरामी अस्पताल में भर्ती भी करा दिया गया है. पुलिस को भी ये शिकायतें लगातार मिल रही थीं कि दलालों ने गुर्दा देने वालों को कुछ पैसे पकड़ाकर बाकी रकम हड़प ली. लेकिन जांच के दौरान किसी से सहयोग न मिल पाने पर वे भी कोई कार्रवाई नहीं कर पा रहे थे. बंबई के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त बी.डी. इनामदार कहते हैं, "हम असहाय हैं. हम जानते हैं कि यह धंधा चल रहा है लेकिन इस बारे में हम बहुत कुछ कर नहीं सकते."

इतना ही नहीं, दुनिया के सब देश जब इस व्यापार पर रोक लगा रहे हैं, भारत गुर्दा प्रत्यारोपण का अंतरराष्ट्रीय केंद्र बनता जा रहा है. पहले विदेशी ग्राहकों को गुर्दा बेचने वाले भारतीयों को ब्रिटेन जैसे देशों में ले जाया जाता था. जब इन देशों ने ऐसे प्रत्यारोपण पर रोक लगा दी तो अब गुर्दा प्रत्यारोपित कराने वाले विदेशी खरीदार ही भारत आने लगे हैं.

जिंदा आंखों की कॉर्निया की बिक्री का मामला भी इतना ही चिंताजनक है. मरने पर आंख दान करने और उसे जमा कराने की योजनाएं मौजूद होने के बावजूद इस कार्यक्रम के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया बहुत उत्साहवर्धक नहीं रही है.

अब जीवित लोगों द्वारा अपनी एक आंख बेच दिए जाने की खबरें आने लगी हैं. मद्रास में गुर्दे की दलाली करने वाला एक आदमी बताता है कि निजी अस्पताल का एक डॉक्टर आंख के कॉर्निया की जरूरत की खबर चारों ओर देता है. फिर दलाल उन संभावित दानकर्ताओं से संपर्क करता है और आंख के किसी मामूली रोग के बहाने

मृत व्यक्ति से लिए गए कॉर्निया का प्रत्यारोपण

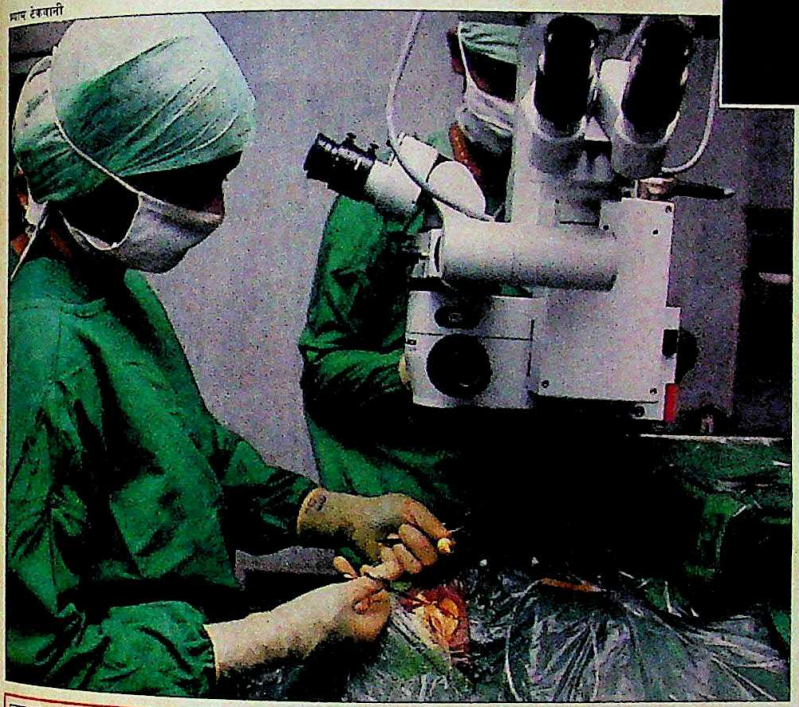

अब जीवित लोगों द्वारा अपनी एक आंख बेच देने की खबरें आने लगी हैं. इसकी दर 50,000 से 1 लाख रु. तक है. आंखों के प्रत्यारोपण में सफलता की दर ऊंची है. और गोपनीयता की गारंटी भी होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अस्पताल लाकर कॉर्निया प्रत्यारोपण का ऑपरेशन कर दिया जाता है. आंख के एक विशेषज्ञ सर्जन के अनुसार ऐसे मामलों में सफलता की दर मृत लोगों की आंखों के प्रत्यारोपण से दोगुनी है.

मद्रास के एक उपनगर का दलाल प्रभाकरन बताता है कि कैसे उसके एक दोस्त को एक आंख देने के लिए बंबई भेजा गया था. इसके लिए उसे 80,000 रु. दिए गए. एक दलाल ने बताया, "मानव अंगों के धंधे में माफिया गिरोह काम करता है जो ऐसी सूचनाएं लीक करने पर तुरंत कार्रवाई करता है. अगर कोई एक आंख खरीदने पर एक लाख रु. खर्च कर रहा है तो वह अपना नाम न जाहिर होने का भी पैसा दे रहा होता है."

अभी तक रक्त बैंकों की तरह चमड़ी के 'बैंक' तो नहीं बने हैं लेकिन इसका नाजायज धंधा भी शुरू होने का संदेह है. चमड़ी उन्हीं पेशेवर रक्तदाताओं से खरीदी जाती है जो अस्पतालों के इर्द-गिर्द मंडराते रहते है. इसका उपयोग आग के शिकार हुए लोगों के शरीर पर लगाने में होता है.

मानव अंगों का धंधा भरे-पूरे व्यापार का रूप लेता जा रहा है. ऐसे में डॉक्टर इसे बढ़ाने में अपनी भूमिका पर गंभीर सवाल उठाने लगे हैं. अंग खरीदने जाएं या मरीज को मरने दिया जाए—इस सवाल पर चिकित्सक समुदाय दो हिस्सों में विभाजित है. महाराष्ट्र राज्य आयुर्विज्ञान परिषद के अध्यक्ष, हृदय रोग विशेषज्ञ सुधाकर साने कहते हैं, "मानव अंगों का व्यापार आज देश में चिकित्सकों के लिए सबसे बड़ा नैतिक मुद्दा बन गया है." इस मुद्दे का सबसे व्याहारिक सवाल यह है कि जिन मामलों में अंगों के खरीदे जाने का पता लग जाए वैसे ऑपरेशन करने चाहिए या नहीं. बंबई के केईएम अस्पताल के गुर्दा रोग विभाग की प्रमुख डॉ. विद्या आचार्य मानती हैं कि यह तो गरीब दानकर्ता का अमीरों द्वारा शोषण है. वे कहती हैं, "अनैतिक डॉक्टरों, बेईमान दलालों और अनैतिक अस्पतालों का गठ-जोड़ इस पेशे में आई नैतिक गिरावट का प्रतीक है."

बांबे हॉस्पिटल के गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक कृपलानी कहते हैं, "हम शुतुरमुर्ग की तरह बालू में सिर घुसाकर बला टल गई मान रहे हैं. अगर किसी मृत आदमी का अंग न मिल रहा हो तो कोई क्या करे? क्या मैं अपने मरीजों से कहूं कि अब अपने मरने की तैयारी करो? अगर व्यवस्थित तरीके से काम हो तो अंगों के प्रत्यारोपण में कुछ भी गलत नहीं है." विज्ञापनों के जरिए व्यवस्थित ढंग से गुर्दे मंगाकर प्रत्यारोपित करने वाले मद्रास के गेस्ट हॉस्पिटल के डॉ. के.सी. रेड्डी कहते हैं, "अगर कोई हमारे काम को पैसा कमाने से जोड़ रहा हो तब तो हम अधिक डायलिसिस इकाइयां चलाकर ज्यादा कमा सकते हैं. मैं गुर्दा खरीद नहीं रहा हूं. मैं किसी को जीवन का उपहार दे रहा हूं. इसमें अनैतिक क्या है?"

अधिकांश डॉक्टर मानते हैं कि अंग प्रत्यारोपण की बहुत जरूरत है लेकिन वे मरीज से रिश्ता न रखने वाले जीवित लोगों से मिले अंगों के प्रत्यारोपण के बारे में एकमत नहीं हैं. उन्हें इस बात का अंदेशा है कि इसे कभी भी प्रभावशाली ढंग से नियंत्रित नहीं किया जा सकता है और इससे शोषण तथा मौतों का सिलसिला बढ़ता ही जाएगा. अपोलो अस्पताल के डॉ. एम.के. मणि कहते हैं, "अच्छी मंशा के बावजूद आप ऐसी किसी व्यवस्था को नियंत्रित नहीं रख पाएंगे और न ही अंग देने वालों का शोषण रोक पाएंगे. अगर हम जिंदा लोगों के अंग खरीदे जाने का क्रम जारी रहने देंगे तो मृत लोगों के अंग दान करने वाला कार्यक्रम आगे ही नहीं बढ़ पाएगा."

यह बात महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्यारोपण के लिए संबंधियों का अपने अंग दान करना कम होता जा रहा है. दूसरे अनेक राज्य मरने पर अंग दान करने के कार्यक्रम की बातें तो बड़ी करते हैं, लेकिन जब जीवित लोगों से ही अंग मिल जाते हों तो ऐसा कार्यक्रम कहां तक सफल हो पाएगा. साथ ही इस धंधे के खतरों और शोषण के बारे में भी लोगों को बताने की भी जरूरत है. डॉ. कोलाबावाला कहते हैं, "मूल रूप से यह गरीब का स्वास्थ्य अमीरों के हाथ पहुंचाने

के.बी. आनंद

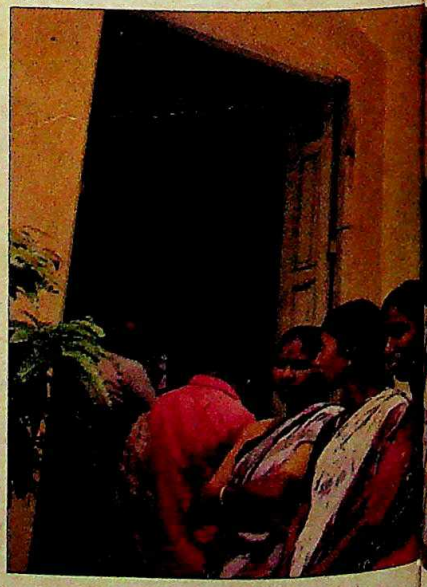

समर्थन में

"जिस रोगी को गुर्दा चाहिए उसे मैं क्या यह कह-कर वापस कर दूं कि मौत का इंतजार करो?"

अशोक कृपलानी
गुर्दा रोग विशेषज्ञ, बंबई

"अगर यह पैसे का ही मामला है तो मैं डायलिसिस केंद्र खोलकर भारी कमाई कर सकता हूं"

डॉ. के.सी. रेड्डी
मूत्र रोग विशेषज्ञ, गेस्ट हॉस्पिटल

"किसी भी रिश्तेदार की किडनी मुझे नहीं लग पा रही थी इसलिए एक दानदाता से किडनी लेनी पड़ी."

डॉ. रामचंद्र राव
सर्जन और मूत्राशय के मरीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला शोषण व्यापार है." डॉक्टरों को डर है कि अब तो हृदय, कलेजे, आमाशय और फेफड़े के प्रत्यारोपण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति होने और सारे अंग व्यापार पर कोई रोक न होने से यह गैरकानूनी धंधा फैलता ही जाएगा.

फिर रास्ता क्या है? अंगों के व्यापार का मक्का कहे जाने वाले महाराष्ट्र के बंबई हाईकोर्ट में दायर एक याचिका ने सरकार को भी कुछ करने पर मजबूर किया. स्वास्थ्य शिक्षा निदेशालय के नेतृत्व में एक विशेष समिति ने अंग व्यापार के सभी पहलुओं का अध्ययन किया और पिछले महीने अपनी रिपोर्ट दी. इसका सुझाव है कि मानव अंगों की बिक्री पर रोक लगे. सिर्फ उन्हीं मामलों में गुर्दा प्रत्यारोपण हो जिसमें दानकर्ता मरीज का सीधा रिश्तेदार हो. अगर कोई और गुर्दा देना चाहता है तो इसके मामले पर पहले डॉक्टर, वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक समिति गौर करके देखे कि यह दान लोकोपकार की भावना से ही किया जा रहा है. समिति ने इससे भी महत्वपूर्ण सुझाव यह दिया कि मरने पर अंग दान करने के कार्यक्रम को लोकप्रिय करने के प्रयास हो.

अधिकांश डॉक्टरों का कहना है कि यही काम सबसे महत्वपूर्ण है. महाराष्ट्र जैसे अनेक राज्यों में मृत लोगों के उपयोगी अंग निकाल लेने की अनुमति वाले कानून पहले से ही हैं. लेकिन मरने पर अपने अंग दान करने की घोषणा वाला कार्यक्रम ऊपरी तौर पर जितना आसान दिखता है, उतना है नहीं. ऐसे दानकर्ताओं को पंजीकृत करना और उनकी मौत के कुछ घंटों के अंदर ही (अधिकांश अंगों को मृत्यु के छह घंटे के भीतर ही निकाल लेना पड़ता है) महत्वपूर्ण अंगों को निकाल लेना आसान नहीं है. अब जाकर ही कुछ केंद्र इस मामले में काम कर पाने की स्थिति में आ पाए हैं.

इस मामले में एक बड़ी बाधा मृत्यु की कानूनी परिभाषा भी है. भारतीय कानूनों के अनुसार "सांस रुकना और दिल की धड़कन बंद हो जाना" मौत की निशानी है. लेकिन इस परिभाषा के मुताबिक यदि अंग निकाले जाएं तो वे ठीक स्थिति में मिल नहीं सकते.

डॉक्टर बताते हैं कि विश्व के दूसरे भागों में दिमाग का काम करना बंद करना ही मौत की निशानी माना जाता है. क्योंकि अधिकांश मामलों में, खासकर सड़क दुर्घटनाओं में, सांस टूटने के काफी पहले ही मस्तिष्क काम करना रोक चुका होता है. फिर ऐसे लोगों को कृत्रिम सांस के जरिए 'जिंदा' रखकर उनके अंग दूसरों के शरीर में प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं. और 'धड़कते दिल' वाले दानकर्ताओं के अंग मृत अंगों की तुलना में अधिक सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित होते हैं. पूरी दुनिया के अनुभव यही बताते हैं.

लेकिन कई डॉक्टर इस तरह के प्रयास का विरोध करते हैं. उनके अनुसार कानून की नई परिभाषा सिर्फ उच्च तकनीकी सर्जरी को ध्यान में रखकर ही बनाई जा रही है. साथ ही ऐसे कानून के दुरुपयोग का खतरा भी है. भारत में, मौत समेत हर बात के साथ फरेब की गुंजाइश है.

डॉ. सिकोट वाज कहते हैं, "ऐसे में एकमात्र रास्ता यही है कि मृत्यु का प्रमाण-पत्र देने का अधिकार कुछ प्रमुख संस्थानों को ही दिया जाए. और इस कार्यक्रम को धीरे-धीरे फैलने दिया जाए."

केंद्र सरकार भी मानव अंगों के व्यापार पर रोक लगाने का कानून बनाने पर विचार कर रही है. साथ ही मौत की परिभाषा बदलने पर भी. लेकिन अभी तक सरकार सम्मेलनों में विचार-विमर्श करने में ही लगी हुई है, उसने कोई कदम नहीं उठाया है.

डॉक्टरों की मांग है कि धंधा करने वालों के लिए कड़े कानून बनें और मृत लोगों के अंग दान करने वाले कार्यक्रम को जोर-शोर से चलाया जाए. अगर रिश्तेदारों द्वारा दूसरे लोगों से भी अंग दान करवाने का कार्यक्रम चले तो उस पर कड़ी नजर रखी जाए. और इन बातों पर तुरंत हमल होना चाहिए वरना 'मानव अंग की मंडी या फार्म' का दुःस्वप्न साकार होने में बहुत समय नहीं लगेगा.

—राज चेंगप्पा, बंबई और मद्रास में

गुर्दा दान करने वालों की कतार

दिशा में

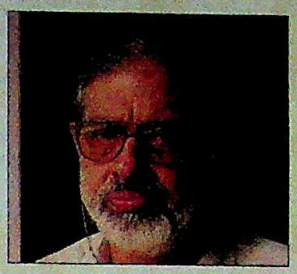

"हमने ऐसे व्यापार के रास्ते खोले हैं जो इष्टसिद्धि के लिए नैतिकता के सारे बंधन तोड़ रहा है"

डॉ. बी.एन. कोलाबावाला
मूत्र रोग विशेषज्ञ, जसलोक अस्पताल

"अंगों की खरीद-बिक्री पर रोक लगाइए. एकमात्र विकल्प मरने के बाद अंग बेचने का कार्यक्रम है"

डॉ. सिकोट वाज
अध्यक्ष, आईसीएचपी

"जीवित अंगों की बिक्री के कारण मरने पर अंग दान करने का कार्यक्रम आगे नहीं बढ़ पा रहा"

डॉ. एम.के. मणि
मूत्र रोग विशेषज्ञ, अपोलो हॉस्पिटल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर

जीना मौत के स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

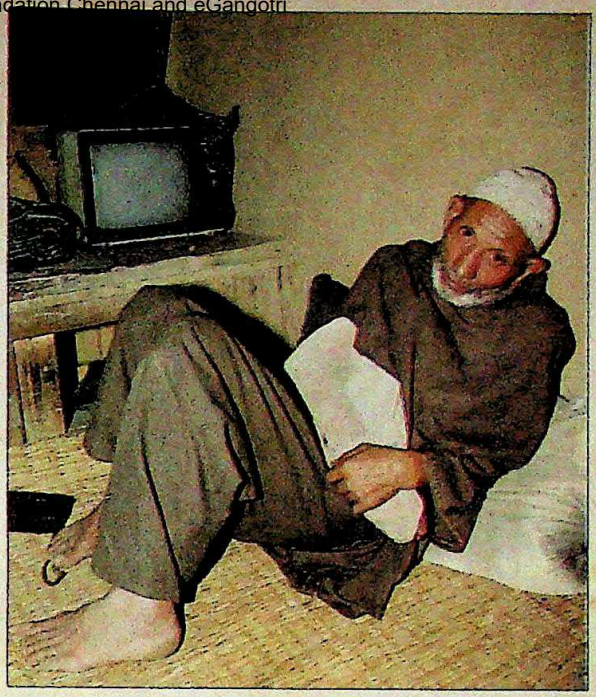

कश्मीर हताश हो चुका है. यहां अवाम को अपना वजूद कायम रखने के लिए भी काफी जद्दोजहद करनी पड़ रही है. इस दारुण त्रासदी का एहसास वरिष्ठ संवाददाता ***हरिंदर बवेजा*** *और छायाकार* ***शरद सक्सेना*** *को घाटी के एक सप्ताह के प्रवास में हुआ. इस अनुभव की जीती जागती तस्वीर:*

जर्रा-जर्रा जैसे दर्द से कराह रहा है. चारों ओर घुप्प अंधेरा-सा है. वादी का जादू, उसका तिलिस्म कहीं गुम हो गया लगता है.उसकी चिरपरिचित हरियाली और खुशगुवारी भी कहीं गायब हो गई है, अनुभव होता है तो सिर्फ इन सबके मुरझाकर पीले पड़ जाने का. गरमी का मौसम कभी झुंड के झुंड सैलानियों के स्वागत का और फलों से लदे ट्रकों को सुदूर स्थानों की ओर रवाना करने की व्यस्तता का मौसम हुआ करता था. लोग आज भी व्यस्त हैं मगर लाशों की गिनती में. उनके स्वभाव में एक डरावनी उद्धतता दिखने लगी है. वे मौत के साथ जीना सीख रहे हैं.

लाल चौक श्रीनगर की गतिविधियों का केंद्र रहा है.कभी गरमी में यहां पर सैकड़ों सैलानियों की गहमागहमी होती थी.लेकिन आज लाल चौक में कब्रिस्तानी सन्नाटा है. दुकानें कभी-कभार ही खुलती हैं. उनसे सीलन की गंध आती है. कशीदाकारी वाले फिरन और शॉल के ढेर बिना बिके पड़े हैं. चेरी और सूखे मेवे की पेटियां तैयार हैं पर खरीदार नदारद हैं.पर्यटकों का नामोनिशान नहीं है. और कश्मीरियों की सबसे बड़ी चिंता बादाम वगैरह बेचने की नहीं बल्कि सब्जियां खरीदने की ही लगती है.

हिंसा और तनातनी ने कई चीजों के मतलब बदल दिए हैं. मसलन, वजूद क्या होता है या सामान्य स्थिति किसे कहते हैं, इन सबकी परिभाषाएं बदल गई हैं. अगर बाजार में

के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

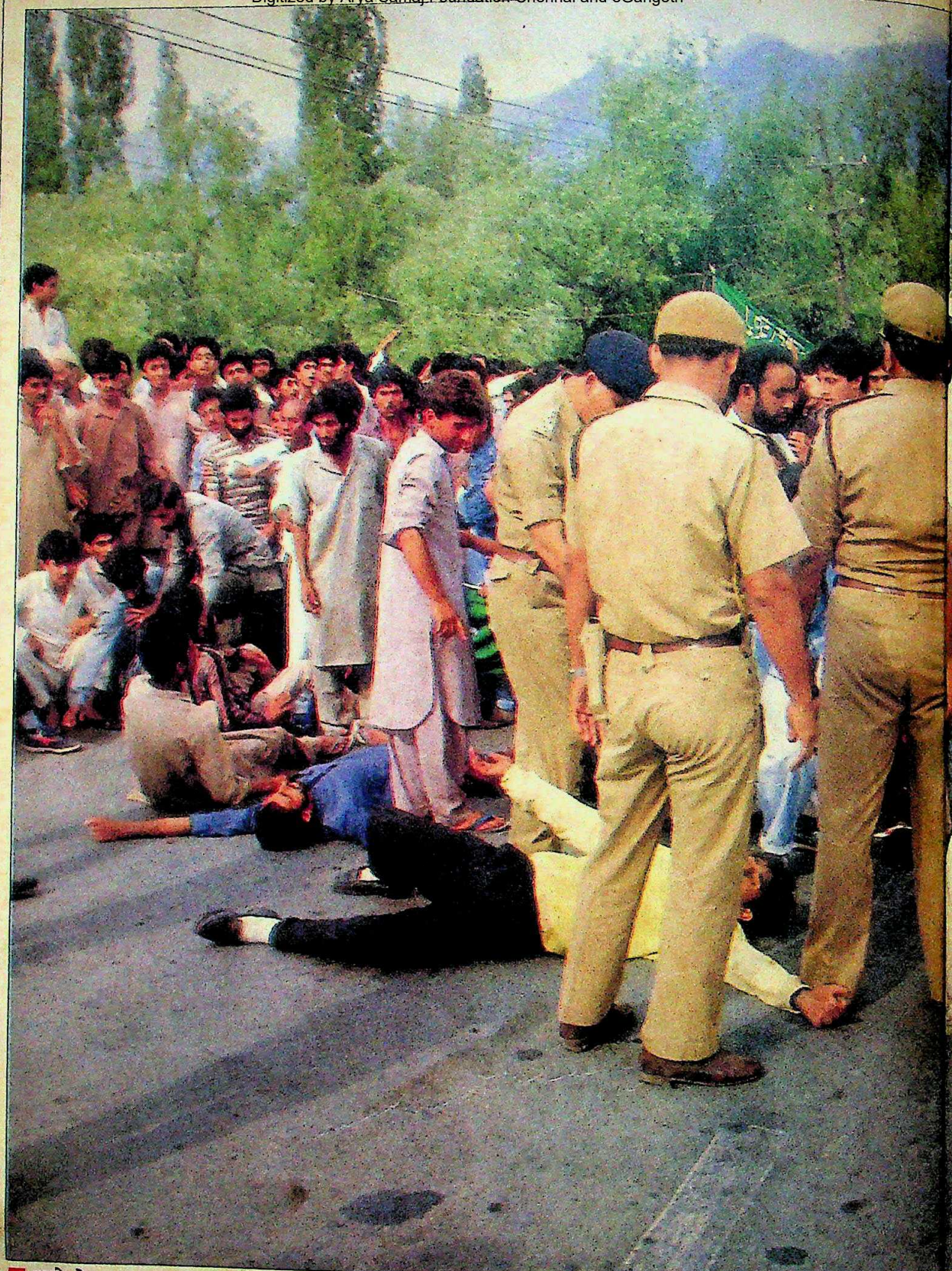

पहले से तयशुदा या स्वतःस्फूर्त जुलूस निकल पड़ते हैं और सुरक्षाकर्मी उन पर गोलियां बरसाने के लिए मजबूर हो जाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

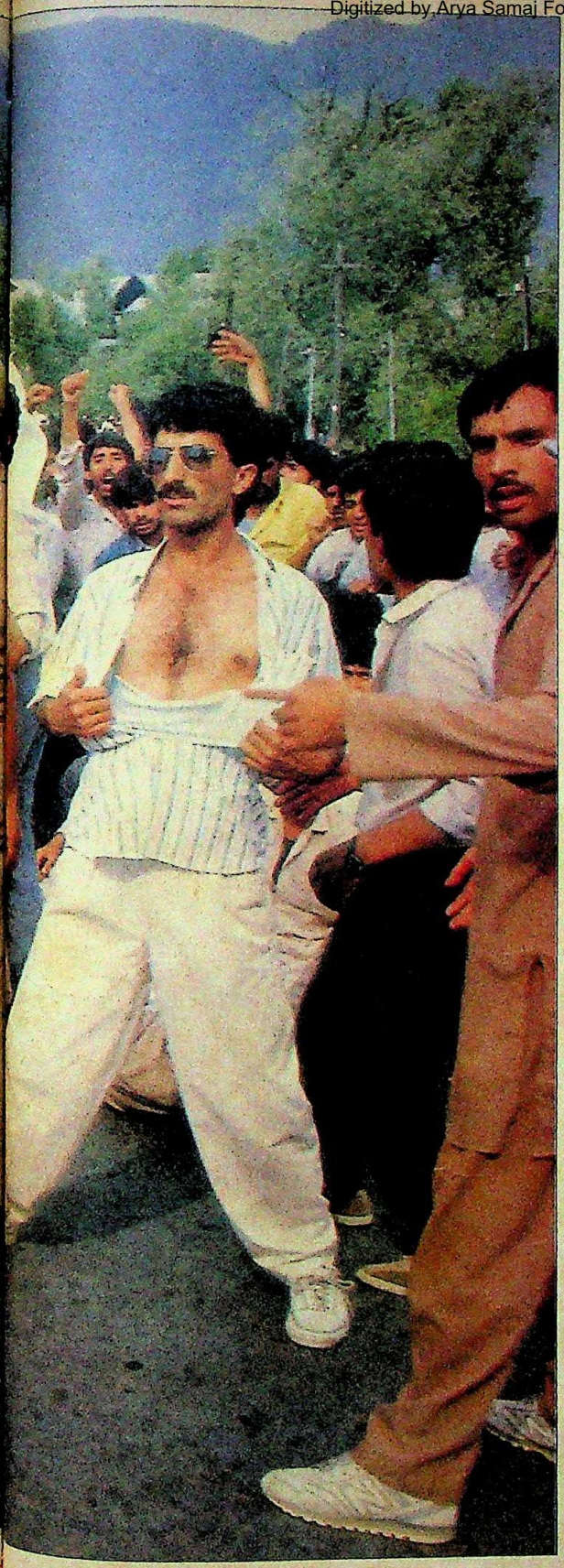

सब्जियां हैं तो यह असामान्य बात है क्योंकि इसका अर्थ है प्रशासन की पकड़ मजबूत है. कुछ भी उपलब्ध नहीं यानी सब कुछ सामान्य. अब्दुल हमीद नाम के छात्र ने जंगली घास खाकर गुजारा किया और इससे उसके हौसले और बुलंद ही हुए कि इससे बुरा और क्या हो सकता है. सता-सताकर मारे गए लोगों की लाशों का चौराहों पर पड़े मिलना अब रोजमर्रा की बात हो गई है और खून से लथपथ घायल लोग सड़क किनारे पड़े दिखने लगे हैं. बंदूकें रोज गरजती हैं. घात लगाकर हमले भी जारी हैं. बदले में पुलिस के छापे भी बदस्तूर चल रहे हैं. चिड़चिड़े पुलिसवालों से प्रदर्शनकारियों की मुठभेड़ भी रोज की बात हो चली है. और, लोग इन तमाम विसंगतियों के साथ जी रहे हैं. 67 वर्षीय मीर अहमद घर से बाहर कम ही निकलते हैं. कभी निकलते भी हैं तो करीने से तह लगे कागज पर अपना नाम-पता लिखकर साथ रखना कभी नहीं भूलते—गुमनामी की मौत क्यों मरें?

लगता है जीवन को मृत्यु से ही प्रेरणा मिल रही हो. 'टूरिस्ट स्पॉट' डल झील अब 'स्थानीय आकर्षण' नहीं रह गई है. उसकी जगह ले ली है ईदगाह ने. इसके विशाल कब्रिस्तान में 'शहीदों' की कब्रों में कई कट्टर उग्रवादी दफन हैं. माता-पिता बाल-बच्चों समेत अब इसी स्पॉट पर आते हैं. औरतें छाती पीटती हैं, और मर्द "तौबा, अल्ला, ये कैसा हिंदुस्तान है" की गुहार एक स्वर में लगाते हैं. कब्र की खुदाई करता एक बूढ़ा ऊपर देखकर बुदबुदाता है, "दो से चार लाशें यहां रोज लाई जाती हैं." इनमें से कुछ 'मुजाहिद' होते हैं, तो कुछ निर्दोष प्रत्यक्षदर्शी. जेकेएलएफ का 'एरिया कमांडर' अशफाक अहमद भी यहीं दफन है और 18 महीने का सक़ीब अहमद बशीर भी, जो गोलियों की चपेट में आ गया. इसी जगह कश्मीर के मरहूम मीरवाइज मौलवी फारूक भी दफन हैं. मातम मनाते लोग यहां भय, क्रोध और असुरक्षा से घिरे आते हैं. हर किसी की जबान पर एक ही सवाल है—"क्या सकीब अहमद आतंकवादी था?"

यह कब्रिस्तान सिर्फ ऐसे जमावड़े की जगह ही नहीं रह गई है. यहां नए मुजाहिद सान चढ़ते हैं. महिलाएं चुनौती भरे लहजे में कब्रों की ओर इशारा करके अपने बच्चों से पूछती हैं, "हमें क्या चाहिए?" और बच्चे एक साथ चिल्लाते हैं, "आजादी." लोग कब्र खोदने के लिए स्वेच्छा से आगे आते हैं और कई तो पहले से ही अपनी कब्र के लिए जगह चुन लेना चाहते हैं. अशफाक और सक़ीब की कब्रों के जितनी नजदीक जगह मिल सके उतना अच्छा.

आइसक्रीम और फल बेचने वालों का धंधा झील के मुकाबले ईदगाह में कहीं बेहतर चलता है. झील तो अब एक सुनसान जगह रह गई है जहां करीब 600 हाउसबोटों पर 'खाली है' की तख्ती लटकी रहती है और शिकारे यों ही तैरते रहते हैं. झील के सामने खड़े होटलों की कतारें अब अर्द्धसैनिक बलों के किले हैं जहां की खिड़कियां और बालकनी बालू भरे बोरों से भरी हैं. 600 करोड़ रु. सालाना के पर्यटन उद्योग के खात्मे के साथ ही 18 करोड़ रु. का सेब व्यापार भी ठप पड़ा है. हस्तशिल्प की चीजों और कालीनों के दिन भी लद गए लगते हैं. श्रीनगर का भयावह सन्नाटा कभी- कभार बंदूकों की गड़गड़ाहट या भारतीय वायु सेना के किसी जेट विमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईदगाह में बना विशाल कब्रिस्तान अब स्थानीय लोगों का तीर्थ बन गया है जहां कई 'शहीद' दफन हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

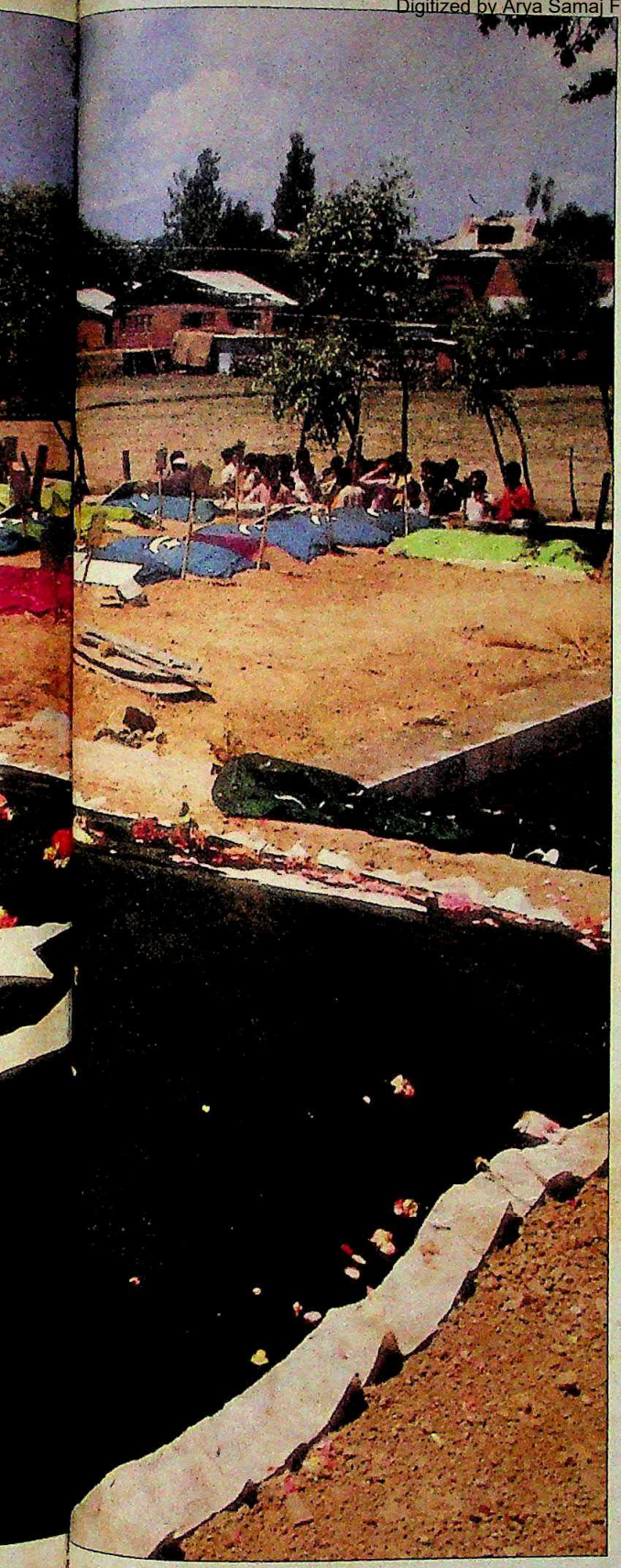

के शोर से ही टूटता है. हवाई उड़ानें तकरीबन खाली होती हैं और नौकरशाहों तथा पुलिस कर्मियों के सिवा कोई आता नहीं दिखता. हवाई अड्डा सैनिक अड्डा नजर आता है. टैक्सी ड्राइवर निठल्ले हो गए हैं. युवा ड्राइवर अशरफ अहमद सुबह 4 बजे हवाई अड्डा पहुंच गया. पहली उड़ान सुबह 9.50 पर पहुंची लेकिन सवारी कोई नहीं. उसके अनुसार, "यात्रियों में से अधिकतर को पुलिस सुरक्षा में ही ले जाया जाता है." अतंत: दोपहर बाद 3.15 पर उसे एक सवारी मिलती है— एक कश्मीरी पंडित जो अपना कालीन का व्यापार समेटने आया है, उसके शब्दों में, "हमारे खरीदारों ने कंप्यूटरों से हमारा नाम हटा दिया है."

अधिकांश होटलों को सरकार ने किराये पर ले लिया है. इनमें सैनिकों और उन कर्मचारियों को रखा जा रहा है जो दरबार कूच के साथ-साथ आए हैं. सड़कें वीरान हैं. हर साईनबोर्ड एक कहानी कहता है. ट्रैवल कार्पोरेशन ऑफ ....., स्टेट बैंक ऑफ.... 'इंडिया' जाने कहां-कहां मिटाया गया है. इस्लामिया कॉलेज के सामने का रास्ता जूतों-चप्पलों से भरा है, ये 21 मई के स्मृति चिह्न हैं जब सीआरपीएफ ने मौलवी फारूक की शवयात्रा में शामिल लोगों पर गोलियां चलाई थी. 53 लोग मारे गए थे.

कुछ स्कूल अभी भी चल रहे हैं. लेकिन छात्र गिनती के ही हैं. शिक्षिका नसीमा बताती हैं, "अधिकतर स्कूलों ने बस चलाना बंद कर दिया है क्योंकि खतरा बहुत बढ़ गया है." अब माता-पिता को हर्जाना प्रमाण पत्रों पर पहले ही दस्तखत करना पड़ता है. स्कूल कोई जिम्मेदारी नहीं लेता.

लेकिन हैरानी की बात यह है कि दुर्दशा का यह माहौल लोगों में शांति या समझौते की चाह नहीं जगाता बल्कि देश के प्रति नफरत का जहर और फेनिल होता जाता है. महिलाएं बहुत कड़वाहट के साथ शिकायत करती हैं कि किस तरह सीआरपीएफ के जवानों ने उनके घर की तलाशी ली और उनके खाद्य के भंडार तक को बरबाद कर डाला. रैनावाड़ी की एक गृहिणी रफीका कहती हैं, "क्या उन्हें यह उम्मीद थी कि मेरे चौके में कोई मुजाहिद छिपा मिलेगा? हम सभी मुजाहिद हैं. मेरे पास कलाश्निकोव नहीं है तो क्या हुआ?" बच्चों की जवाब पर कलाश्निकोव चढ़ चुकी है और अलगाववादी उन्माद किसी भी तर्क पर भारी पड़ता दिखता है. एक दुकानदार, अशरफ शेख अपने नन्हे बेटे को आगे करके कहते हैं, "अगर यह मारा जाए तो मुझे अफसोस नहीं होगा. इसे ले जाइए." उनकी पत्नी सहमति में सिर हिलाती हैं.

दूसरी ओर भी ऐसी ही हताशा का माहौल है. शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता है जब सुरक्षा बलों में से कोई मौत के घाट नहीं उतारा जाता. सीआरपीएफ के एक डिप्टी कमांडर कहते हैं, "लोग कहते हैं कि हम बच्चों को मार रहे हैं. मैं आपको एक पिस्तौल देता हूं, क्या आप किसी बच्चे को गोली मार सकते हैं?"

वे लड़ रहे हैं. हर दिन एक नए मोर्चे का दिन होता है— एक नया टकराव, कुछ और लाशें और ढेर सारी नफरत. और इस तरह मौत की परछाईं दिन-ब-दिन लंबी और भयावह होकर पसरती जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने का एक ख़ूबसूरत उपाय.

ज़्यादातर लोग समझते हैं कि डैण्ड्रफ़ का मतलब है केवल सिर की त्वचा में होनेवाली खुजली की परेशानी. शायद वे नहीं जानते कि इसके कारण आपके बालों की रौनक भी जाती रहती है. डैण्ड्रफ़ के कारण बाल रूखे और बेजान नज़र आते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल बड़ी नरमाई से डैण्ड्रफ़ हटाये. फिर तो आपके बाल सचमुच शानदार नज़र आयें. जी हां, इसका नया अंतर्राष्ट्रीय फ़ॉर्म्युला सिर की त्वचा से डैण्ड्रफ़ को छुड़ा कर हटा देता है.

इसमें है गुण भरा, क्रीम-सा कंडीशनर जिससे आपके बाल मुलायम व चमकीले बने रहते हैं. यानी डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने के बाद भी आप इसका नियमित इस्तेमाल कर सकते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल अपनाइए ताकि डैण्ड्रफ़ दुबारा न आने पाये. और आपके बाल भी हमेशा सुंदर व शानदार नज़र आयें.

नया

क्लिनिक स्पेशल

ऐंटी डैण्ड्रफ़ शैम्पू

आप पायें डैण्ड्रफ़ रहित बाल, देखनेवाले सराहें सुंदर-सजीले बाल!

HTA 2724

हिन्दुस्तान लिवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मछली-मछली कितना पानी

भारत के कई बड़े व्यापारिक घराने पहले इस क्षेत्र में उतरकर अपने पांव खींच चुके हैं. लेकिन अब टाटा से लेकर थापर, हिंदुस्तान लीवर, ग्रीव्ज कॉटन, भवन निर्माण संस्था डीएलएफ, गोयनका समूह यहां तक कि कई आप्रवासी भारतीय व्यापारिक समूहों को भी मत्स्य पालन में भारी संभावनाएं नजर आ रही हैं और वे इसमें पूंजी लगाने की सोच रहे हैं. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह कि भारत सरकार ने भारत और डेनमार्क तथा दक्षिण कोरिया की कंपनियों के संयुक्त प्रयास के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है. जिसके तहत गहरे समुद्र में टूना मछलियां पकड़ी जाएंगी और ये देश उन्हें खरीदेंगे. सरकार ने गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के औजार और मत्स्य नौका (ट्रॉलर) के आयात संबंधी नीति को उदार बनाकर और कंपनियों को प्रोत्साहन दिया है. यानी आने वाले दिनों में मत्स्य पालन क्षेत्र को बड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ेगा.

सुस्ताने की मोहलत

अगर संसाधनों की कमी है तो तीन-तीन हजार करोड़ रु. की लागत से बनने वाली दो प्रस्तावित गैस-क्रैकर और पेट्रोरसायन परियोजनाएं आठवीं योजना अवधि के बाद ही लगनी चाहिए. ये परियोजनाएं संयुक्त क्षेत्र में लगनी हैं. पहली कंपनी विजय माल्या के यूबी ग्रुप के सहयोग से विशाखापत्तनम में और दूसरी आदित्य बिड़ला समूह के सहयोग से मंगलोर में लगेगी. अभी देश की कम-से-कम पांच गैस-क्रैकर परियोजनाएं सरकार के सीमित संसाधनों में से हिस्सा बटाने की भाग-दौड़ में लगी हैं. ये हैं—भारतीय गैस प्राधिकरण की औरैया परियोजना (जो पास हो चुकी है), इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लि. का गंधार कारखाना, पश्चिम बंगाल में टाटा समूह की हल्दिया परियोजना, नोसिल के महाराष्ट्र स्थित कारखाने की विस्तार योजना और असम की एक परियोजना.

तिगुना करने का विचार

देश में रैंगलर जींस के कारोबार की अधिकार प्राप्त ड्यूपोंट स्पोर्ट्सवियर साल भर में अपना कारोबार तिगुना कर 3 करोड़ से 10 करोड़ रु. करने की सोच रही है. योजना के तहत वह महंगे कमीज और जींस बेचने के लिए देश के लगभग सभी बड़े शहरों में विशेष खुदरा दुकानें खोलेगी. बंबई में ऐसी दो दुकानें दिवाली के पहले खुलने जा रही हैं. इसके बाद 1992 तक पुणे, अहमदाबाद, हैदराबाद, बंगलूर, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास में भी दुकानें खोल ली जाएंगी. जाहिर है कंपनी को बेनेटन, इंटरप्लाजा, शीतल और ऐसी ही दुकानों से तीखी प्रतियोगिता करनी होगी.

उपलब्धियों के आयाम

बंगलूर स्थित केनरा बैंक अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट होकर बैठने वाला नहीं है. 1989-90 में राष्ट्रीयकृत बैंकों में सबसे ज्यादा मुनाफा (62 करोड़) कमाने के बाद इसने भविष्य के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएं बनाई हैं. इनमें एक है दलाली के लिए सेवाएं मुहैया कराने वाली कंपनियों का गठन. इसके अलावा बैंक यात्रा संबंधी सेवाएं और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर में प्रशिक्षण देने की भी सोच रहा है. दोनों क्षेत्र पहले बैंक की शाखा की तरह ही काम करेंगे. बाद में इनकी अलग इकाइयां बन जाएंगी. बैंक की मौजूदा सहायक इकाइयों की प्रगति को देखते कहा जा सकता है कि इन दोनों क्षेत्रों में भी बैंक को जल्द ही सफलता मिलेगी.

अलग रास्ता

जहां सरकार पेट्रोलियम की बचत के लिए पूरा जोर लगा रही है, वहीं अनुसंधानकर्ता देश के विकास को 'तैलीय' रास्ते से हटाने के लिए अलग रास्ता अख्तियार करने की कोशिश में जुटे हैं. टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने हाल में कुछ गुणा-भाग करके 21वीं सदी के पहले दशक के अंत तक तेल की

वाई. बी. के. शर्मा

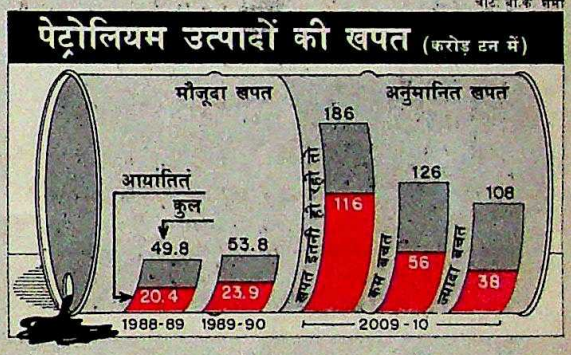

खपत की तीन विभिन्न रूपरेखाएं प्रस्तुत की हैं. पहली रूपरेखा के मुताबिक 'आपूर्ति ऐसी ही बनी रही तो' मांग में वृद्धि की दर सालाना 7.6 फीसदी होगी. इसका मतलब है 2009-10 तक खपत आज के तीन गुना से अधिक बढ़कर 18.6 करोड़ टन हो जाएगी. लेकिन 'कम' बचत के उपाय लागू करके इसे 6 करोड़ टन घटाया जा सकता है. यदि 'ज्यादा' बचत के उपाय हों तो मांग 1.8 करोड़ टन और घट जाएगी. पर इसके लिए नए ऊर्जा स्रोतों के उपयोग के व्यापक कार्यक्रम लागू करने होंगे.

तबादले का अनुरोध

हैदराबाद स्थित डीसीएल समूह ने सरकार से अनुरोध किया है कि उसकी प्रस्तावित एक्रिलिक फाइबर परियोजना का स्थान आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम से बदलकर महाराष्ट्र में नागपुर के निकट मौडा में कर दिया जाए. 250 करोड़ रु. के कारोबार वाले इस समूह ने वहां हाल ही में 154 करोड़ रु. का पोलिएस्टर स्टेपल (पीएसएफ) संयंत्र लगाया है. समूह अपने 140 करोड़ रु. के एक्रिलिक फाइबर संयंत्र की जगह क्यों बदलना चाहता है, इसकी वजह भी सीधी-सादी है. अगर यह इकाई पीएसएफ संयंत्र के बगल में रहे तो इस पर लागत करीब 15 करोड़ रु. कम हो जाएगी. क्योंकि इससे वह पीएसएफ उत्पादन में जारी सुविधाओं का लाभ उठा पाएगी. पर इससे आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री मरि चेन्ना रेड्डी नाखुश हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारिक घराने

अब तूती नहीं बोलती

सत्ता के गलियारों में बड़े उद्योगपतियों की हैसियत अछूत वाली हो गई

कल तक ऐसा लगता था कि वे सभी समस्याओं से परे हैं. वे अक्षत, अजेय, अटूट दिखते थे. कानून ऐसे ही बनाए जाते थे जो उनकी भारी-भरकम कल्पनाओं को साकार करने में मददगार हों. जो कोई भी उनकी राह में रोड़ा बनने की कोशिश करता, उसे बड़ी निर्दयता से उठाकर फेंक दिया जाता. सरकार की पूरी मशीनरी उनके इशारे पर थी. बड़े औद्योगिक घरानों और राजनीति के रिश्ते कभी इतने करीबी नहीं रहे जितने कि वे राजीव गांधी के शासनकाल में हो गए थे.

पर अब काफी कुछ बदल गया है. पिछले साल के बाजीगरों की बाजियां उनके हाथ से निकल रही हैं. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने इनमें से कुछ धुरंधरों के खिलाफ कोड़े फटकारने शुरू कर दिए हैं. निदेशक मंडलों के इन आकाओं को एहसास हो गया है कि उनके प्रति सरकार का रवैया अगर दुश्मनी वाला नहीं है तो गरमजोशी वाला भी नहीं है. इसलिए जाहिर है कि वे नए शासकों के साथ गाढ़ी छानने की फिराक में जुट गए हैं.

कंपनी क्षेत्र के इन बादशाहों में प्रमुख हैं—2,000 करोड़ रु. के कारोबार वाले रिलायंस समूह का अंबानी घराना, भारत के सबसे विख्यात आप्रवासी उद्योगपति एम.आर. छाबड़िया और अभय ओसवाल. इन सबको लग गया है कि उनके शेयरों की कीमतें अब आसमान नहीं छूने वाली. और उधर सुदूर दक्षिण में एम. करुणानिधि की सरकार एम.ए. चिदंबरम समूह की मुश्कें कस रही है. ये सभी घराने दिन दूनी रात चौगुनी गति से तरक्की कर लेना चाहते थे. टाटा-बिड़ला की तरह धीरे-धीरे बढ़ना पुरानी बात हो गई है.

रिलायंस समूह

एक साल पहले तक हालत यह थी कि वरिष्ठ नौकरशाह होटल के कमरों में जाकर रिलायंस के अधिकारियों तक को सरकारी चिट्ठियां पहुंचाते थे और सरकारी फाइलें दिखाते थे. पर आज अंबानी सत्ता के गलियारों में अछूत हो गए हैं. इसकी वजह? प्रधानमंत्री कार्यालय के एक अधिकारी कहते हैं, "अगर अंबानी ने सरकार में गोटियां बिठाई होतीं तो लोग उनसे इतना न चिढ़ते. पर वे तो दूसरों के पैरों को कुचलते हुए आगे बढ़े."

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सत्ता में आई तो अंबानी पर नजला गिर पड़ा. सबसे क्रूर हमला हुआ 29 जून को जब लार्सन ऐंड टुब्रो के अध्यक्ष डी.एन. घोष ने घोषणा कर दी कि हजीरा में शुरू होने वाली रिलायंस की पेट्रोरसायन परियोजना के लिए लार्सन ऐंड टुब्रो 600 करोड़ के सप्लायर्स क्रेडिट को रद्द कर रहा है. घोष ने कहा, "सप्लायर्स क्रेडिट देना हमारा काम नहीं है. हम न तो बैंक हैं, न ही वित्तीय संस्थान."

जाहिर है, बैठक में मौजूद अनिल अंबानी और उनके वकील एम.एल. भक्त को घोष का यह रवैया नागवार लगा. एक मौके पर तो उत्तेजित अनिल ने शिकायत

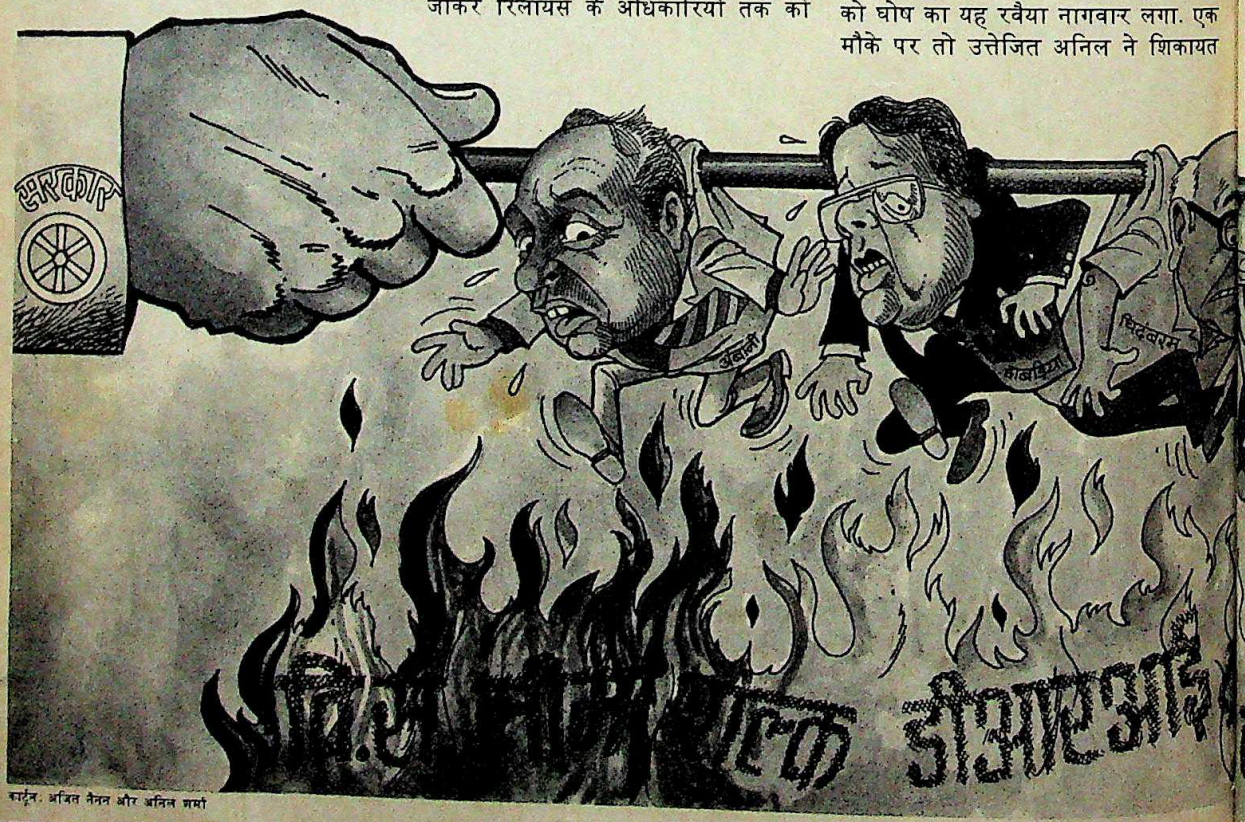

कार्टून: अजित नैनन और अनिल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कि घोष का प्रस्ताव 'भेदभावपूर्ण और मनमाना' है. घोष ने शांत भाव से इसका जवाब दिया कि यह फैसला 'लार्सन ऐंड टुब्रो के हितों' के मद्देनजर किया गया है. और अंबानी को इस कंपनी के प्रबंधन से तो हाथ धोना ही पड़ा, साथ ही सप्लायर्स क्रेडिट भी गंवाना पड़ा.

अंबानी के सिर पर और भी समस्याएं आ पड़ी हैं. विश्वास किया जाता है कि सीबीआई ने रिलायंस प्योरीफाइड टेरीप्थैलिक एसिड के आयात की जांच की अंतिम रिपोर्ट सरकार को दे दी है. रिलायंस पर आरोप है कि उसने प्रत्यय पत्र पर पड़ी तारीख में हेराफेरी करके उसे आयात शुल्क संबंधी नियम बदलने से पहले की तारीख का बना दिया था. दूसरी तरफ सीबीआई बांबे डाइंग के अध्यक्ष नुस्ली वाडिया की हत्या के षड्यंत्र की और गहराई से जांच करने में जुट गई है. ये दोनों बातें ऐसी हैं जिसे यह समूह आसानी से रफा-दफा नहीं कर पाएगा. हत्या के षड्यंत्र का मामला भारी पड़ सकता है.

और फिर इस साल फरवरी-मार्च में इस समूह के सामने नकदी का संकट खड़ा हो गया और वह अपने डीलरों से नकद धन की मांग करने लग गया. कभी अंबानी के नजदीकी रहे भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के अध्यक्ष एस.एस. नाडकर्णी जैसे बैंकरों ने भी उनका साथ छोड़ दिया. पर अंबानी ने हार नहीं मानी. उन्होंने ज्योति बसु को पटाया और पश्चिम बंगाल में परियोजना का आश्वासन हासिल कर

मनोहर राजाराम छाबड़िया

'मेरी साख दांव पर है'

हार्वर्ड में पढ़े मनु छाबड़िया थोड़ा उकसाए जाने पर गाली-गलौज पर उतर आते हैं. आज सरकार उनके पीछे पड़ी है, वे खासे उत्तेजित नजर आते हैं. ***परंजय गुहा ठाकुरता*** *और* ***सुरजीत दासगुप्त*** *के साथ उनकी बातचीत के अंश:*

● ***जेनेलेक से आप अलग क्यों हुए?***

तमाम घाटों की जिम्मेदारी मैं क्यों ओढ़ूं ? हमने जेनेलेक के शेयर जीईसी, इंडिया से खरीदे. जेनेलेक में आज भी इसके शेयर हैं मगर बीआईएफआर की सुनवाई में इसे नहीं बुलाया गया. हमने तीन कंपनियों—जीईसी, एवरी इंडिया और इंगलिश इलेक्ट्रिक—का अधिग्रहण करने के लिए ही जेनेलेक का अधिग्रहण किया था. लेकिन जल्दी हमें पता चल गया कि जेनेलेक के खाते फर्जी थे. मैंने जीईसी के अध्यक्ष ए.के. खोसला से इन शेयरों को वापस बेचने की इजाजत मांगी. उन्होंने मना कर दिया. अब मैं इन्हें किसी को भी बेचने को तैयार हूं.

● ***आपकी नौ कंपनियां बीआईएफआर के सामने खड़ी हैं, यह आपके लिए बुरी बात नहीं है क्या?***

बीमार कंपनियों के लिए यह वैधानिक बंधन न होता तो मैं बीआईएफआर के सामने न जाता. मैं अपने बूते उनकी वित्तीय मदद कर सकता हूं. बीआईएफआर वित्त मंत्रालय को चिट्ठियां लिखकर मेरे मामलों में भेदभाव कर रहा है. मैं उसके खिलाफ पंचाट और अदालत तक जाऊंगा.

● ***क्या आपने अपनी संपत्ति बेची?***

नहीं. आप किसी नंगे आदमी को और कैसे उघाड़ सकते हैं. मेरी कंपनियों में मेरा 50 फीसदी हिस्सा है. यदि मैं संपत्ति बेचूं तो इसका मतलब होगा कि मैं अपनी ही रकम की चोरी कर रहा हूं.

● ***क्या पेशेवर लोगों ने आपको गुमराह किया?***

हां, जेनेलेक के मामले में मैंने गलती कर दी. इसीलिए शालीमार पेंट्स से मैंने हाथ खींच लिए क्योंकि घाटों के बारे में निश्चित नहीं था. पेशेवर लोगों की मैं परवाह नहीं करता. यदि मैंने डनलप के मामले में उनकी सलाह मानी होती तो मेरा बेड़ा गर्क हो जाता.

● ***ऑर्सन ऐंड निहॉन के पूर्व प्रमुख श्याम भाटिया के खिलाफ आपने गबन के मामले में जो मामला दायर किया था उसका क्या हुआ?***

मैंने कर अधिकारियों से अनुरोध किया है कि वे कार्रवाई करें. मैंने उन्हें उनके विदेशी खातों का भी ब्यौरा दिया. लेकिन अभी तक कुछ हुआ नहीं है.

● ***पिछले साल रिजर्व बैंक ने आपकी सभी कंपनियों का लेखा परीक्षण कराने का आदेश दिया था . आपके ऊपर इतनी नजर क्यों रखी जा रही है.***

भवान सिंह

मैं नहीं जानता. आप ही बताइए किस दूसरे समूह के खातों की इस तरह जांच हो रही है? बिड़ला, सिंहानिया या गोयनका किसके पास बीमार कंपनियां नहीं हैं. गैमन इंडिया के शेयरों के हस्तांतरण के मामले में बंबई हाईकोर्ट में हमसे मुकदमा हार जाने के बाद से रिजर्व बैंक हमसे नाराज है.

● ***बैंकरों का कहना है कि आप ऑर्सन ऐंड निहॉन में 14 करोड़ रु. लगाने के वादे से मुकर गए?***

मैं तभी राजी था जब शॉ वैलेस और डनलप को वित्तीय संस्थाओं से उधार लेने की अनुमति दी जाती.

● ***आपकी भावी योजनाएं क्या हैं?***

मेरी साख दांव पर लगी है. मेरे पास लड़ने के सिवा कोई उपाय नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया. अब एक बात तो बिलकुल साफ दिखती है कि इसके बाद सरकार इस समूह के व्यावसायिक विवादों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी. वित्तमंत्री मधु दंडवते ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "सरकार और उसके संस्थान किसी की दिग्विजयी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के साधन नहीं बन सकते."

छाबड़िया बंधु

सिर्फ अंबानी ही नए शासकों के संग गाढ़ी छानने की जुगत नहीं भिड़ा रहे हैं. पिछले पखवाड़े मनोहर राजाराम छाबड़िया मंत्रिमंडलीय सचिव विनोद पांडे और वित्त सचिव विमल जालान से मिले. वे उन्हें इस बात के लिए राजी करना चाहते थे कि भारतीय रिजर्व बैंक और औद्योगिक व वित्तीय पुनर्गठन परिषद (बीआईएफआर) को बीमार कंपनियों की गतिविधियों की जांच के संदर्भ में सिर्फ उन्हीं की कंपनियों को नहीं चुनना चाहिए.

सरकार के साथ छाबड़िया की यह नोकझोंक कोई नई नहीं है. यह 1987 के उत्तरार्ध में उस समय शुरू हुई थी जब छाबड़िया ने बाजार से लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयर खरीदने शुरू कर दिए थे. इस तरह उन्होंने सीधे उस अंबानी से टक्कर लेने की जुर्रत की जो खुद इस कंपनी में दिलचस्पी ले रहे थे.

और फिर जब छाबड़िया ने गैमन इंडिया के 34 फीसदी शेयर खरीदे तो कंपनी के प्रबंधन ने उनका जोरदार विरोध किया. गैमन के प्रबंधन ने बड़े रहस्यमय तरीके से उस फिल्मी सितारे का समर्थन हासिल कर लिया जो राजीव गांधी का नजदीकी समझा जाता था. समूह की दूसरी कंपनियों ओर्सन ऐंड निहॉन पर कर चोरी के चलते छापे पड़े. पिछले साल छाबड़िया को अग्रिम जमानत तक लेनी पड़ी.

सरकार बदलने के बाद रिजर्व बैंक ने बैंकों से छाबड़िया समूह की कंपनियों को मिले उधार की उगाही शुरू की. पिछले कुछ हफ्तों में बीआईएफआर ने समूह की घाटे में चल रही आठ कंपनियों (कुल घाटा: 100 करोड़ रु.) के खिलाफ जांच शुरू की और उनमें अपने निदेशक तक नियुक्त कर दिए.

बीआईएफआर चाहती है कि छाबड़िया बीमार कंपनियों में जान फूंकने के लिए डनलप और शॉ वैलेस जैसी नकद नारायण कंपनियों से धन लेने की जगह अपनी विदेशी जमा पूंजी की गठरी ढीली करें. वे पूछते हैं, "दूसरे व्यापारिक घरानों की बीमार कंपनियों के साथ यह बरताव क्यों नहीं किया जाता?"

हमारा काम सप्लायर्स क्रेडिट देना नहीं है. हम न तो बैंक है और न वित्तीय संस्था"

डी.एन. घोष
अध्यक्ष, लार्सन ऐंड टुब्रो

नामस भोजानी

एग्रो ओसवाल

500 करोड़ रु. के कारोबार वाले लुधियाना के ओसवाल एग्रो समूह के अभय ओसवाल की मुसीबतें नवंबर चुनाव से पहले ही शुरू हो गई थीं. बिंदल एग्रो के 500 करोड़ रु. के महानिर्गम में कंपनी लक्ष्य से 30 करोड़ रु. कम जुटा पाई. फिर 23 अप्रैल को कंपनी निदेशक मंडल ने एक शेयर पर दो के अनुपात से बोनस शेयर देने की घोषणा कर दी. इस निर्गम की घोषणा 18 महीने पहले ही कर दी गई थी. पूंजी निर्गम नियंत्रण ने इस निर्गम को मंजूरी नहीं दी.

इसलिए कोई हैरत नहीं है कि ओसवाल की कंपनियों के शेयरों की कीमतें पिछले साल के आखिर के मुकाबले एक तिहाई तक गिर गईं. मामला यहीं नहीं रुका. मई में महाराष्ट्र सरकार ने कंपनी की चेंबूर इकाई (जो इसने यूनियन कारबाइड से हासिल की थी) को इस बिना पर कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया कि वह पर्यावरण रक्षा संबंधी दिशानिर्देशों का उल्लंघन कर रही है और सरकारी कानूनों के अमल पर ध्यान नहीं दे रही है.

उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में इसकी गैस आधारित उर्वरक संयंत्र की परियोजना जिस तरह मंजूर हुई उस पर भी संदेह व्यक्त किया जा रहा है. 1989 के मध्य में सचिवों की एक समिति ने मामले पर विचार के लिए तीन बैठकें की थीं. सरकार के नियंत्रण वाली कृषक भारतीय कोऑपरेटिव (कृभको) ने इसके लिए 692 करोड़ रु. की बोली लगाई थी जबकि ओसवाल ने 840 करोड़ रु. की. एक हफ्ते बाद हुई इसकी बैठक में ओसवाल ने अपनी बोली घटाकर 695 करोड़ रु. की कर दी जबकि कृभको अपनी बोली पर कायम रही. ओसवाल का कहना है कि यह कमी इसलिए आई क्योंकि दूसरे अनुमान में सिलो, रेलवे साइडिंग और टाउनशिप निर्माण की लागत शामिल नहीं की गई थी.

मजेदार बात यह है कि सरकार ने यह तर्क स्वीकार कर लिया. पिछले साल 23 जून को हुई तीसरी बैठक में वित्त सचिव

सरकार और उसके संस्थान किसी की दिग्विजयी महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के साधन नहीं बन सकते"

मधु दंडवते
वित्तमंत्री

नामस भोजानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपी अरोड़ा ने 1983 के एक फैसले का हवाला दिया जिसके अनुसार हजीरा-बीजापुर-जगदीशपुर पाइप लाइन के साथ लगने वाले छह संयंत्रों में से चार निजी व संयुक्त क्षेत्र को दिए जाने थे. दूसरी परियोजनाओं के बारे में फैसला हो चुका था इसलिए इसी आधार पर शाहजहांपुर परियोजना ओसवाल को सौंप दी गई. मंत्रिमंडल ने इस सिफारिश की औपचारिक रूप से स्वीकृति दे दी और सितंबर में राजीव गांधी ने परियोजना की आधारशिला रख दी.

उद्योग विशेषज्ञों के संदेह के बावजूद ओसवाल समूह के सूत्रों का दावा है कि परियोजना 24 महीने में पूरी हो जाएगी और इसकी लागत नहीं बढ़ेगी. उनका कहना है कि ओसवाल समूह इस मामले में टाटा व बिड़ला से बाजी मार ले गया है. उन्होंने बताया कि परियोजना के लिए तकनीकी गठबंधन के समझौते को मौजूदा सरकार ने मार्च में मंजूरी दे दी थी.

मैक सूमह

मद्रास के एम.ए. चिदंबरम (मैक) समूह पर तमिलनाडु सरकार का ताजा हमला स्टैंडर्ड मोटर्स से संबंधित है. बीआईएफआर ने इस कंपनी को कारोबार समेटने की नोटिस जारी कर दी है. बीआईएफआर ने कंपनी को फिर से खड़ा करने के लिए 4.13 करोड़ रु. की एक योजना तैयार की है पर चिदंबरम के बेटे ए.सी. मुथैया की अगुआई वाले प्रवर्तक इसके लिए कंपनी को 2 करोड़ रु. से ज्यादा नहीं देना चाहते. राज्य सरकार ने भी पहले बयान दिया था कि वह तीन बीमार कपड़ा मिलों को चलवाना तो चाहती है पर 3 करोड़ कर्ज नहीं देना चाहती.

राज्य के उद्योग सचिव ने बीआईएफआर से कहा था कि कपड़ा मिलों में जान फूंकने का फैसला द्रमुक का चुनावी वादा था. पिछले पखवाड़े मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि ने लड़ाकू तेवर अपना लिया. वे स्टैंडर्ड मोटर्स को तीन करोड़ रु. का कर्ज देने पर राजी हो गए. साथ ही यह भी जाहिर हो गया कि स्टैंडर्ड मोटर्स से मैक समूह को चलता करने के लिए नए प्रवर्तक खोजे जा रहे हैं.

कुछ दूसरे समूह भी ऐसे ही दबाव महसूस कर रहे हैं. मसलन, राय घराने के नियंत्रण वाली उषा रेक्टिफायर. पिछले साल के आखिर में 13.5 करोड़ की कारोबार वाली इस कंपनी ने घोषणा की कि वह शेयर बाजार से 702 करोड़ रु. इकट्ठा करेगी. कंपनी ने राजीव गांधी के निर्वाचन क्षेत्र अमेठी में दो चरणों में 1,500 करोड़ रु. निवेश करने की घोषणा की. पर उषा का शेयर निर्गम नाकामयाब रहा और वह मात्र 270 करोड़ रु. ही इकट्ठा कर सकी. कंपनी को अपनी अमेठी परियोजना रद्द करनी पड़ी.

इस बीच राय कोशिश कर रहे हैं कि वित्तमंत्री मधु दंडवते से महाराष्ट्र में उनके निर्वाचन क्षेत्र में दो परियोजनाओं का उद्घाटन करवा लें. पर शायद वे जानते हैं कि इसका यह मतलब नहीं है की उन पर कृपादृष्टि हो जाएगी.

अब तक तो यह सरकार अपने इस दावे पर कायम रही है कि वह कामकाज में ज्यादा खुलापन लाएगी. ऐसे निर्देश जारी कर दिए गए हैं कि जिस तरह रिलायंस लार्सन ऐंड टुब्रो पर काबिज हो गई थी उस तरह की घटनाएं दोहराई न जा सकें. वित्तमंत्री का कहना है कि "हम नियमों को पारदर्शी बनाना चाहते हैं."

हालांकि यह सरकार पिछली सरकार के करीब रहे व्यावसायिक घरानों से बदला नहीं लेने जा रही, परंतु उसने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वह किसी एक घराने की कीमत पर किसी दूसरे को फायदा नहीं पहुंचाएगी. परंतु व्यवसाय और राजनीति का रिश्ता शायद इतनी जल्दी नहीं टूटने वाला. पर यह रिश्ता पहले के मुकाबले अप्रत्यक्ष तो हुआ है.

—एस.एन. वासुकि, सुरजीत दासगुप्त, आनंद विश्वनाथन और परंजय गुहा ठाकुरता

एम.ए. चिदंबरम

'चिंता की कोई बात नहीं'

*एम.ए. चिदंबरम समूह पर तमिलनाडु सरकार की गाज हमेशा गिरती रही है. मगर 75 वर्षीय चिदंबरम इन सबसे बेफिक्र नजर आते हैं. **आनंद विश्वनाथन** के साथ उनकी बातचीत के अंश:*

• स्पिक में हुई हाल की घटनाओं के बारे में आपकी टिप्पणी?

चिंता की कोई बात नहीं है.

• तो फिर आपको अध्यक्ष पद से क्यों हटाया गया?

नहीं, मुझे हटाया नहीं गया. दरअसल टिडको ने अपने ही आदमी को अध्यक्ष बनाने की नीति जारी रखी. मुख्यमंत्री मेरे अच्छे मित्र हैं. सो, हमने उनकी बात मान ली.

• क्या अब भी आप मानते हैं कि स्पिक मैक समूह की अग्रणी कंपनी है?

कई लोग कहते हैं कि यह वास्तव में टिडको की कंपनी है.

स्पिक को आप टिडको की कंपनी कैसे कह सकते हैं? कुछ वर्ष पहले इसका घाया 65 करोड़ तक पहुंच गया था जिससे इसकी हालात डांवाडोल थी. तब टिडको मदद को आई थी? आज यह मैक समूह के कारण बुलंदी पर है.

• आप स्पिक में नए समूह के वित्त निदेशक की नियुक्ति का विरोध क्यों कर रहे हैं?

अब ऐसा क्या हो गया है कि नए वित्त निदेशक की नियुक्ति की जाए? वह हमें और कमजोर ही करेगा. केंद्र सरकार भी यही मानती है. हमें ताज्जुब है कि राज्य सरकार हमारी ईमानदारी पर शक करती है.

• राज्य सरकार स्टैंडर्ड मोटर्स मुथैया की जगह नया प्रोमोटर लाना चाहती है. मामला कहां तक जाएगा?

हम हटने के लिए तैयार हैं. मैं कतई परेशान नहीं हूं. सत्ता में कोई भी हो, हमारा समूह आगे बढ़ता रहेगा.

• क्या आपको नहीं लगता कि इन तमाम उलझनों से आपके समूह पर प्रतिकूल असर पड़ेगा?

नहीं, कदापि नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पापा हैं बनियानों से परेशान,
मैं लायी हूँ उनके लिए एच लोन के बनियान.

जी हाँ!
100% शुद्ध काटन से बने एच लोन अंडरवियर बनियान पूर्णतः आरामदेह व मुलायम हैं जो न सिकुड़े न लटकें।

H-Lon®

• अंडरवियर • बनियान
• जुराबें • पैन्टीज

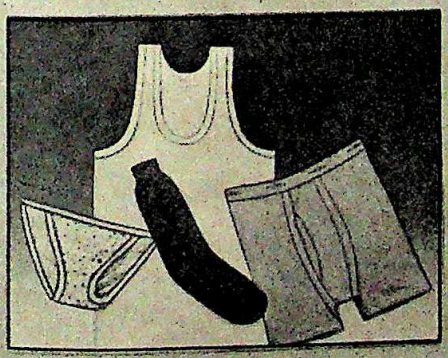

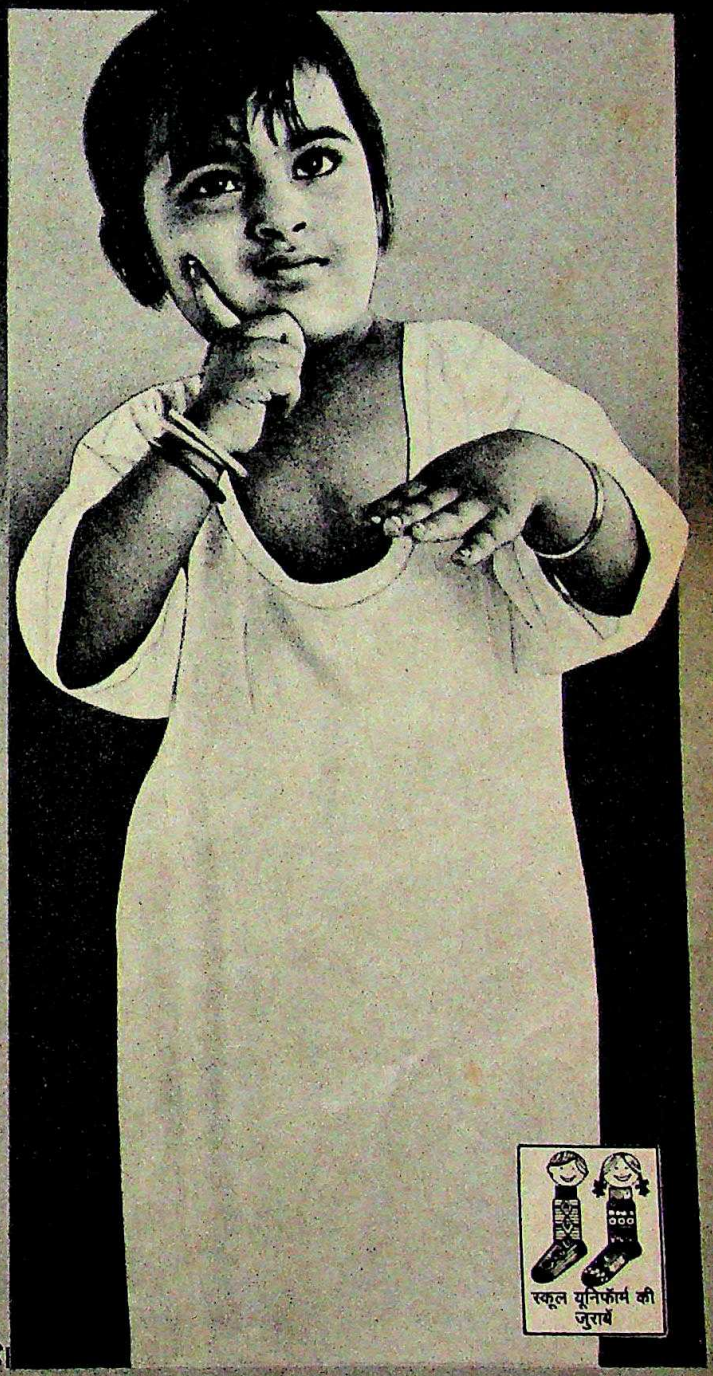

एच लोन ग्रुप
एच लोन हाउस, सी-4/1, मेन रोड़,
वजीरपुर इण्ड० एरिया, दिल्ली-110 052

डीलर/डिस्ट्रीब्यूटर संबंधी पूछताछ आमंत्रित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून: अजीत नैनन

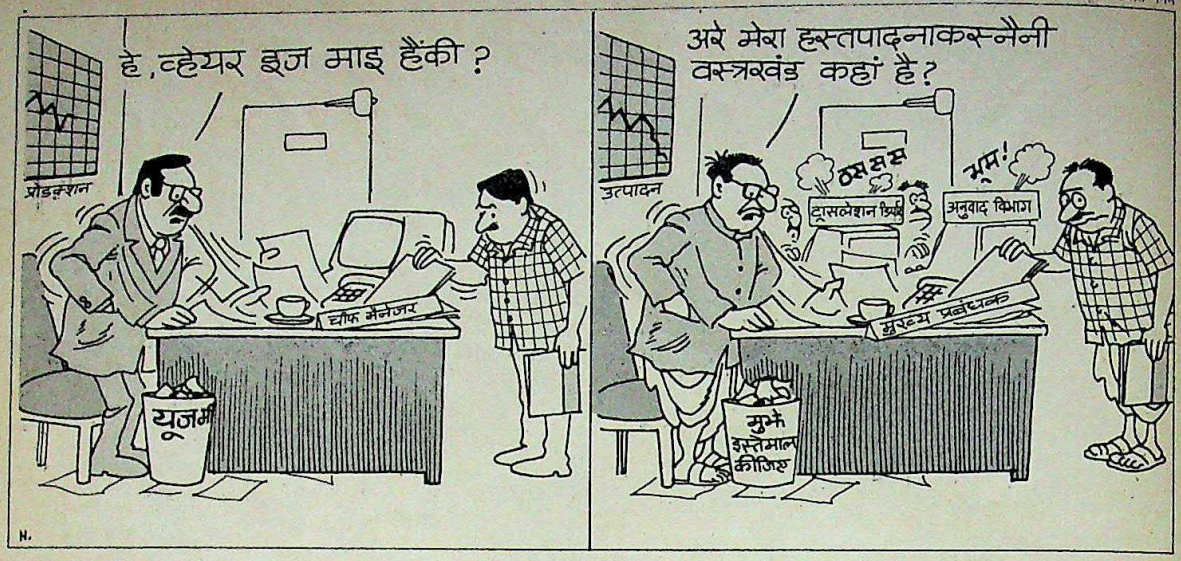

सार्वजनिक क्षेत्र

बहुत कठिन है डगर

सरकारी कंपनियों में हिंदी के इस्तेमाल को बढ़ावे का ढकोसला

अंग्रेजी शब्द 'वाचडॉग' का अर्थ 'देखने वाले कुत्ते', आयल रिफाइनरी का 'शोधन कार्यालय' और सीधा-सादा 'हैंड-करचीफ' 'हस्त पदनाकस्नैनी वस्त्र खंड' जैसे दुरूह उच्चारण में बदल जाता है.

अनुवाद की कठिन कला के ये उम्दा नमूने किसी प्राइमरी स्कूल के बच्चे की किताब से नहीं, वरन देश की सार्वजनिक क्षेत्र की 22,000 कंपनियों के हिंदी प्रकोष्ठ की फाइलों से लिए गए हैं. इन प्रकोष्ठों में अनुमानतः 25,000 हिंदी अधिकारी कार्यरत हैं. इन प्रकोष्ठों का गठन कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की सरकार की बलवती इच्छा के तहत किया गया था. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा छेड़े गए हिंदी अभियान से काफी पहले इन अधिकारियों की नियुक्ति इसलिए की गई थी कि वे अंग्रेजी की बाढ़ से सार्वजनिक उपक्रमों की हिफाजत कर सकें.

इन प्रकोष्ठों के दूसरे कामों में अंग्रेजी में आए सरकारी पत्रों का हिंदी में अनुवाद, बाबुओं को हिंदी पढ़ाना और साल में दो बार उनके हिंदी ज्ञान की परीक्षा लेना शामिल है. बंबई स्थित एक सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी के वरिष्ठ प्रबंधक कहते हैं, "हिंदी के ये सेवक उसके सबसे बड़े दुश्मन हैं. इनका तरीका कल्पना-शून्य है. लोगों के गले में हिंदी ठूंसने के सिवाय इन्हें कुछ नहीं सूझता.

हिंदी को व्यवहार में लाने का गुरुतर भार राजकीय भाषा विभाग पर है, जो गृह मंत्रालय से संबद्ध है. राजकीय भाषा अधिनियम 1963 में लागू किया गया था और 1976 में सरकार ने राजकीय भाषा नियम स्वीकार किए. दो साल में एक बार यह विभाग 'राजकीय भाषा हिंदी के प्रयोग' से संबंधित पुस्तिका का प्रकाशन करता है. एक उम्दा नमूना: "प्रति मिनट 25 शब्द टाइप करने की न्यूनतम गति का हिसाब रखते हुए एक हिंदी टाइपिस्ट को प्रतिदिन 5400 शब्द टाइप करने चाहिए." 'कार्यान्वयन कार्य की प्रगति' अध्याय में पुस्तिका प्रश्न करती है, "रबड़ की कितनी मुहरें सिर्फ अंग्रेजी में और कितनी दोनों भाषाओं या हिंदी में हैं?

इतना ही नहीं, हर साल अगस्त-सितंबर में उन्हें हिंदी सप्ताह मनाना होता है. हिंदी को प्रोत्साहन देने में असाधारण उपलब्धि के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड प्रदान की जाती है. सारे देश को इस लिहाज से तीन क्षेत्रों में बांटा गया है.

- 'क' क्षेत्र में हिंदीभाषी उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह हैं. इस क्षेत्र में कामकाज हिंदी में करना होता है और नामपट तथा रबड़ की मुहरें भी हिंदी में होनी चाहिए.
- 'ख' क्षेत्र में महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात और चंडीगढ़ आदि राज्य आते हैं. सरकारी आकलन के अनुसार, "इन राज्यों के लोग हिंदी जानते-समझते हैं," लेकिन 'क' क्षेत्र के लोगों जितनी नहीं. इसलिए सरकारी पत्र-व्यवहार हिंदी और अंग्रेजी दोनों में होता है.
- 'ग' क्षेत्र में दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पूर्व के इलाके आते हैं, जो हिंदी अधिकारी के लिए दुष्कर क्षेत्र हैं. यहां काफी ज्यादा प्रशिक्षण की आवश्यकता है. इसलिए सभी सरकारी पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में होता है और नामपट तीन भाषाओं में होते हैं.

सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां 'ख' और 'ग' क्षेत्र में कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए बड़ी धनराशि खर्च करती हैं. कार्यालय की अवधि के दौरान पूरे साल सप्ताह में दो बार हिंदी प्रशिक्षण कक्षाएं चलाई जाती हैं. सार्वजनिक क्षेत्र का एक अधिकारी बताता है, "उन दिनों कार्यालय का कामकाज ठप हो जाता है और वह दिन कर्मचारियों के सवेतन अवकाश का होता है." साल में दो बार होने वाली हिंदी परीक्षाओं की तीन श्रेणियां पास कर लेने पर नकद प्रोत्साहन राशि दी जाती है.

'ग' क्षेत्र की सार्वजनिक इकाइयों की हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयास में अनुवाद की मुश्किल प्रक्रिया को भी पूरा करना पड़ता है. सार्वजनिक क्षेत्र में सरकार की हिंदी नीति पर अमल को लेकर कोई विरोध नहीं है. लेकिन इससे सब सहमत हैं कि योजना पर अमल बेढंगा है. और नौकरशाहों ने राष्ट्रीय भाषा को बढ़ावा देने की सार्थक योजना को मजाक बना डाला है.

—एस.एन. वासुकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

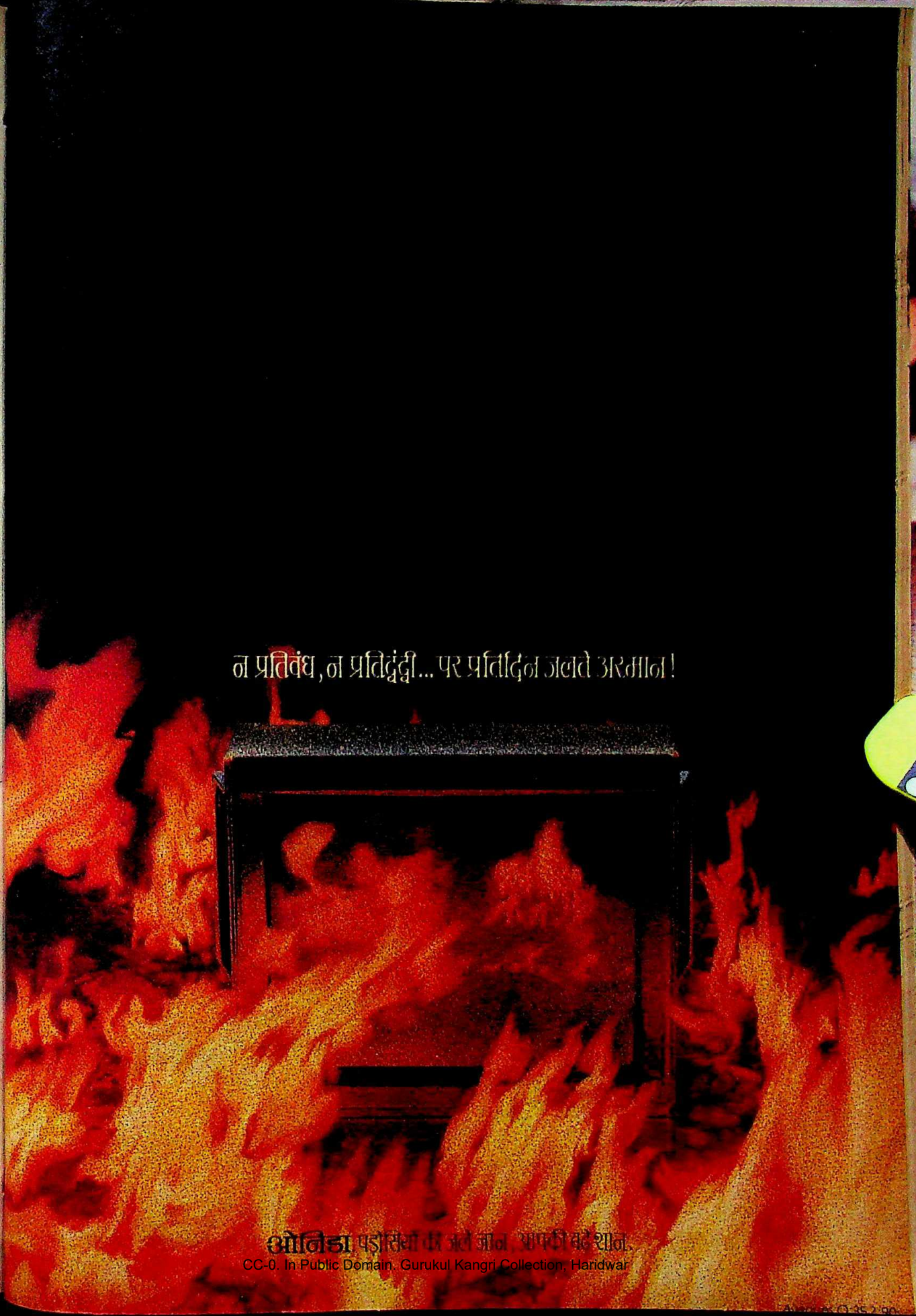

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

▲ 215R

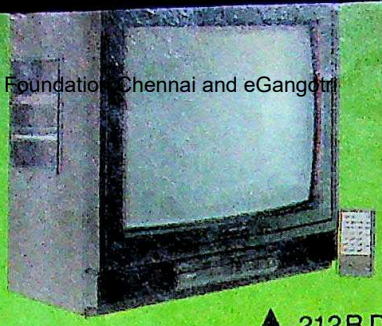

▲ 212R DLX

▲

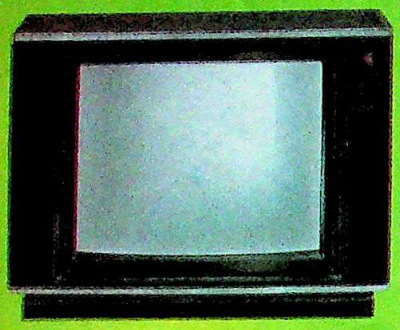

▲ 5305R

रंगीन टेलीज
अत्यन्त प्रभाव

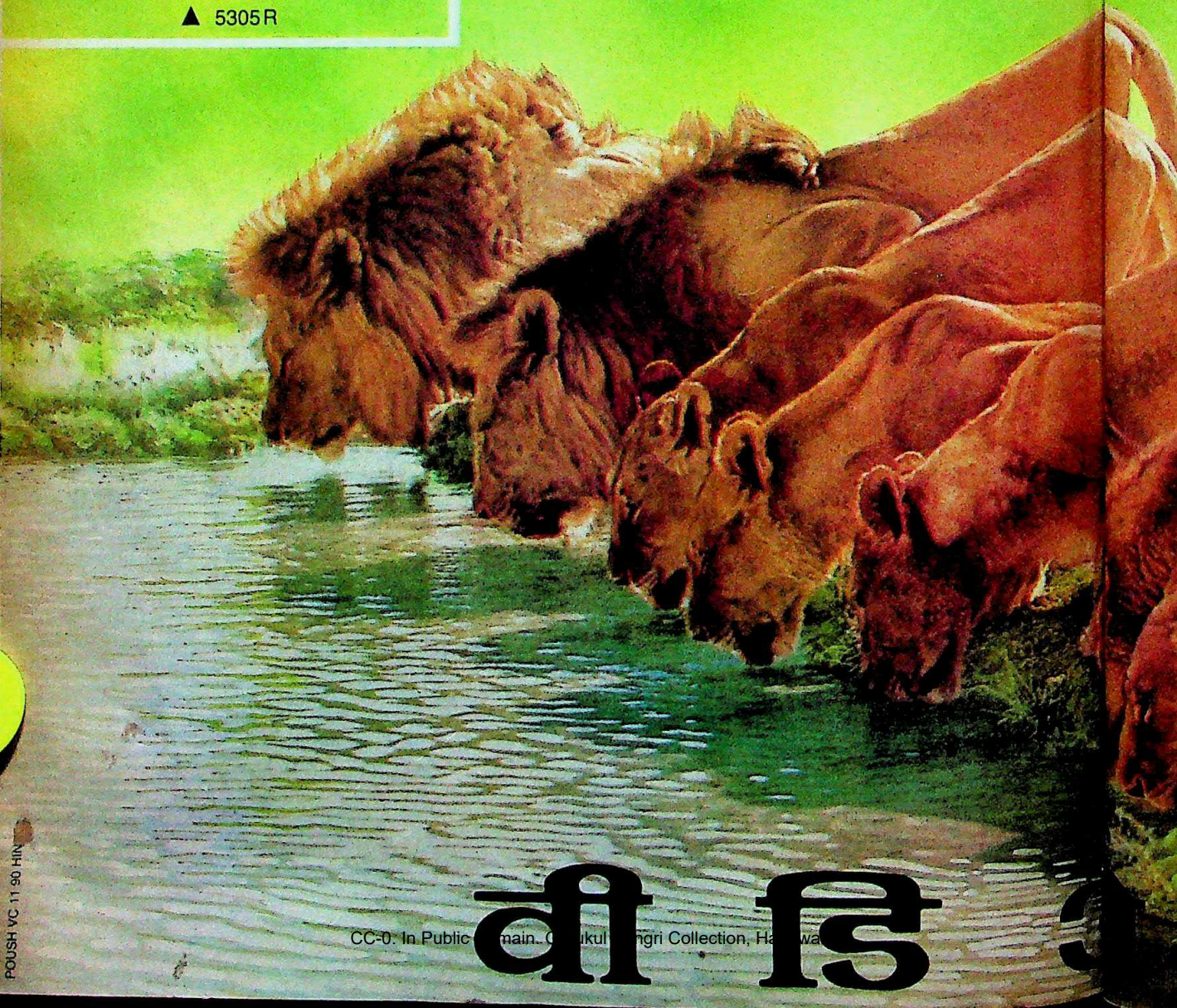

वी डि

POUSH VC 11 90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

zed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

▲ 5101 R

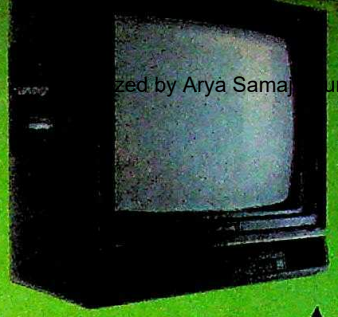

▲ 5103 E

▲ 5102 R

टेलीजन की भाली शृंखला

▲ 1990 E

को न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

चहुं ओर तेजी

उदार नीति से मनोबल बढ़ा

लगातार तीसरे साल इंद्र देवता के मेहरबान रहने से देश के शेयर बाजार बल्लियों उछल रहे हैं. पिछले पखवाड़े कुछ प्रमुख शेयरों की कीमतों के रंग देखने को मिले. जाहिर है, शेयर बाजारों में तेजड़ियों के दौर की वापसी हो चुकी है.

अभी पिछले माह के अंत तक अधिकांश जानकारों के लिए यह अंदाज लगा पाना असंभव-सा था कि शेयरों में इतना उछाल आएगा. राजधानी दिल्ली से लौटकर बंबई शेयर बाजार (बंशेबा) के अध्यक्ष जी.बी. देसाई और कार्यकारी निदेशक एम.आर. माय्या ने सट्टेबाजी पर अंकुश लगाने के लिए लेनदेन पर कई पाबंदियों की घोषणा की. लेकिन इससे बाजार में और तेजी ही आई.

इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय शेयर मूल्य सूचकांक 29 मई के शीर्ष अंक 449.4 से गिरकर 14 जून को 433.2

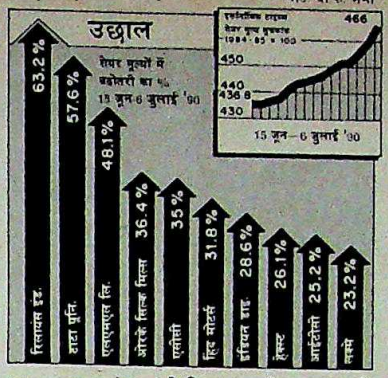

पर आ पहुंचा. लेकिन इसके बाद तो उसकी दिशा ऊपर ही उठती दिखी. 28 जून को इसने 450 का अंक पारकर लिया और फिर हफ्ते भर में ही 16 अंक पारकर 6 जुलाई को 466 पर जा पहुंचा. उम्मीद के मुताबिक बंशेबा के 30 शेयरों वाले संवेदनशील सूचकांक ने और ऊंची छलांग ली. यह सूचकांक 13 जून के 781.66 से 29 जून को 850 का अंक पारकर 3 जुलाई को 862.88 पर पहुंचा. अगले तीन दिन में छलांग लगाकर यह 6 जुलाई को 883.03 पर जा ठहरा.

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सात महीने के कार्यकाल में शेयर बाजारों में इतनी तेजी पहले नहीं देखी गई. प्रधानमंत्री कार्यालय में विशेष सचिव मोंटेक सिंह अहलूवालिया द्वारा तैयार आर्थिक नीति के मसौदे पर छिड़ी घमासान बहस के बावजूद निवेशकों को यही लगा कि उदार नीति जारी रहेगी.

इन सबका नतीजा है कि तेजड़िए छा गए. अगुआई रिलायंस इंडस्ट्रीज और एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी (एसीसी) के शेयरों ने की. कई हफ्ते से 60 और 65 रु. के बीच रेंगते रिलायंस का शेयर 6 जुलाई को एकाएक 102 रु. पर पहुंच गया. पखवाड़े भर में यह उफान 63.2 फीसदी तक रहा. 3 जुलाई को जारी किए गए 1989-90 के लिए कंपनी के लेखा परीक्षण रहित हिसाब-किताब के मुताबिक वास्तविक मुनाफे में 23 फीसदी की गिरावट आई है. लिहाजा, रिलायंस के शेयर की कीमत में आया उफान कुछ हद तक रहस्य बन जाता है.

एसीसी के शेयर की कीमतों में उछाल तो और भी अप्रत्याशित था. इसकी कीमत 15 जून को 494 रु. से 622 रु. के बुलंदी पर पहुंच गई. फिर, अगले तीन दिन में यह उछलकर 667 रु. हो गई.

सट्टेबाजों की भले ही बन आई पर हताशा की अभी कोई वजह नहीं क्योंकि तेजड़ियों को अब मौका मिला है.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 6.7.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	69.50	81.50	3.00+
एसो.सीमेंट	680.00	325.00	667.00	160.00+
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	230.00	1.25–
एटलस कोप्को	48.00	32.50	43.00	7.00+
बजाज ऑटो	515.00	355.00	512.50	40.00+
बड़ौदा रेयॉन	1057.50	617.50	1010.00	115.00+
बाटा इंडिया	83.00	62.50	73.50	8.50+
बल्लारपुर	172.00	120.00	170.00	11.00+
बिरला जूट	93.50	50.50	93.00	14.00+
ब्लो प्लास्ट	70.00	34.50	69.50	2.00+
बांबे डाइंग	266.00	173.00	256.00	19.00+
बिटा.इंडिया	120.00	97.00	119.00	3.00+
ब्रूक बांड	123.00	91.00	116.00	2.00+
कैडबरी इंडिया	172.50	133.75	147.00	0.50–
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	3640.00	2420.00	3580.00	100.00+
कोलगेट पामो.	236.25	176.25	235.00	10.00+
सायनामिड	123.75	87.50	98.50	1.00+
डीसीएम	60.00	45.50	54.00	6.50+
डनलप	75.50	51.75	59.00	1.00+
ईआई होटल्स	65.25	56.00	58.00	1.00–
एस्कार्ट्स	102.00	77.75	101.75	1.75+
फिनो. केबल्स	282.50	200.00	230.00	15.00+
गरवारे नाइलोन	69.00	48.00	50.00	1.50-
जी.ई. शिपिंग	54.75	40.25	42.00	1.25–
गुज.स्टेट फर्टि.	220.00	155.00	217.50	17.50+
ग्रासिम इंडिया	138.00	106.00	138.00	14.00+
हिंदु.एल्यू.	303.75	205.00	285.00	11.25+
हिंदु.सीबा	1660.00	960.00	1410.00	20.00+
हेक्स्ट	2300.00	1295.00	2200.00	400.00+
हिंदुस्तान लीवर	125.00	101.00	124.00	0.50+
हिंदुस्तान मोटर्स	39.00	19.80	39.00	6.00+
आईसीआई	49.50	34.50	37.00	0.50+
इंडियन आर्गेनिक	63.00	46.50	56.00	4.00–
इंडियन रेयॉन	121.00	84.00	119.00	5.75+
इंडाल	260.00	161.25	247.50	12.50+
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	232.50	10.00+
आईटीसी	92.00	48.75	92.00	17.25+
जे.के.सिथेटिक्स	69.00	50.00	68.00	9.50+
काइनेटिक इंजी.	195.00	130.00	185.00	22.00+
किर्लो. क्युमिस	90.00	65.00	75.00	1.25–
केएसबी पंप्स	227.50	175.00	180.00	–
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	83.50	12.00+
लिप्टन	112.00	73.00	78.50	3.50+
लोहिया-मशीन्स	32.50	15.00	30.00	8.00+
मदुरा कोट्स	128.00	100.50	121.50	1.00–
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	82.50	3.75–
मिल्क फूड	280.00	115.00	137.50	7.50+
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	780.00	950.00	140.00+
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	135.00	2.00+
नेशनल आर्गे.	1660.00	1070.00	1230.00	25.00–
नेस्ले इंडिया	129.00	101.75	120.00	5.00+
निरलॉन	22.00	13.00	17.50	1.50+
ओरके सिल्क मि.	25.00	14.50	22.50	5.50+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	44.75	24.00	43.50	5.50+
फाइजर	113.75	72.50	90.00	–
प्रीमियर ऑटो	74.50	53.50	64.00	3.50+
रेमंड	98.00	70.00	90.00	3.00–
रेकिट-कोलमैन	244.00	178.00	224.00	9.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	107.00	50.00	102.00	38.50+
सीमेंस इंडिया	123.50	96.00	112.00	2.00+
शॉ वैलेस	96.00	65.00	91.00	1.00+
श्रीराम फाइबर्स	71.00	43.00	50.00	6.50+
एसकेएफ बेय.	1645.00	1240.00	1590.00	105.00+
स्पिक	64.00	50.75	61.50	5.50+
टाटा स्टील	137.50	103.25	133.00	14.25+
टेल्को	168.50	110.00	166.00	15.50+
वाम ऑर्गेनिक	167.50	115.00	121.25	1.25+
वीडियोकॉन	285.00	105.00	227.50	15.00–
वोल्टास	90.00	63.00	90.00	13.00+
विमको	32.50	15.75	21.00	0.75+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.9982	13.8559
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	150.3127	149.6648
बहरीन	दीनार	1	46.7426	45.6871
बांग्लादेश	टका	100	51.8594	51.0621
कनाडा	डालर	1	15.0588	14.9086
डेनमार्क	क्रोना	1	2.7987	2.7707
मिस्र	पौंड	1	6.5897	6.4780
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.2103	3.1299
हांगकांग	डालर	1	2.2531	2.2313
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9526	0.9384
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.4498	1.4336
जापान	येन	100	11.7925	11.4943
केन्या	शिलिंग	1	0.7688	0.7581
कुवैत	दीनार	1	59.8242	57.8704
मलेशिया	डालर	1	6.4776	6.4134
मारीशस	रुपया	1	1.1457	1.1273
नेपाल	रुपया	1	0.6118	0.6039
हालैंड	गिल्डर	1	9.4595	9.3591
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8059	0.7909
सिंगापुर	डालर	1	9.5836	9.4869
स्पेन	पेसो	1	0.1735	0.1712
श्रीलंका	रुपया	1	0.4393	0.4329
स्वीडन	क्रोना	1	2.9282	2.8983
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	12.5025	12.3743
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0947	0.0914
थाईलैंड	बहत	100	68.4708	67.0313
ब्रिटेन	पौंड	1	31.2744	31.0463
अमेरिका	डालर	1	17.5285	17.3611
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	4.7749	4.7254
सोवियत संघ	रूबल	1	28.2490	27.9567
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.7759	10.5042

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 6.7.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: कृष्ण मुरारी किशन

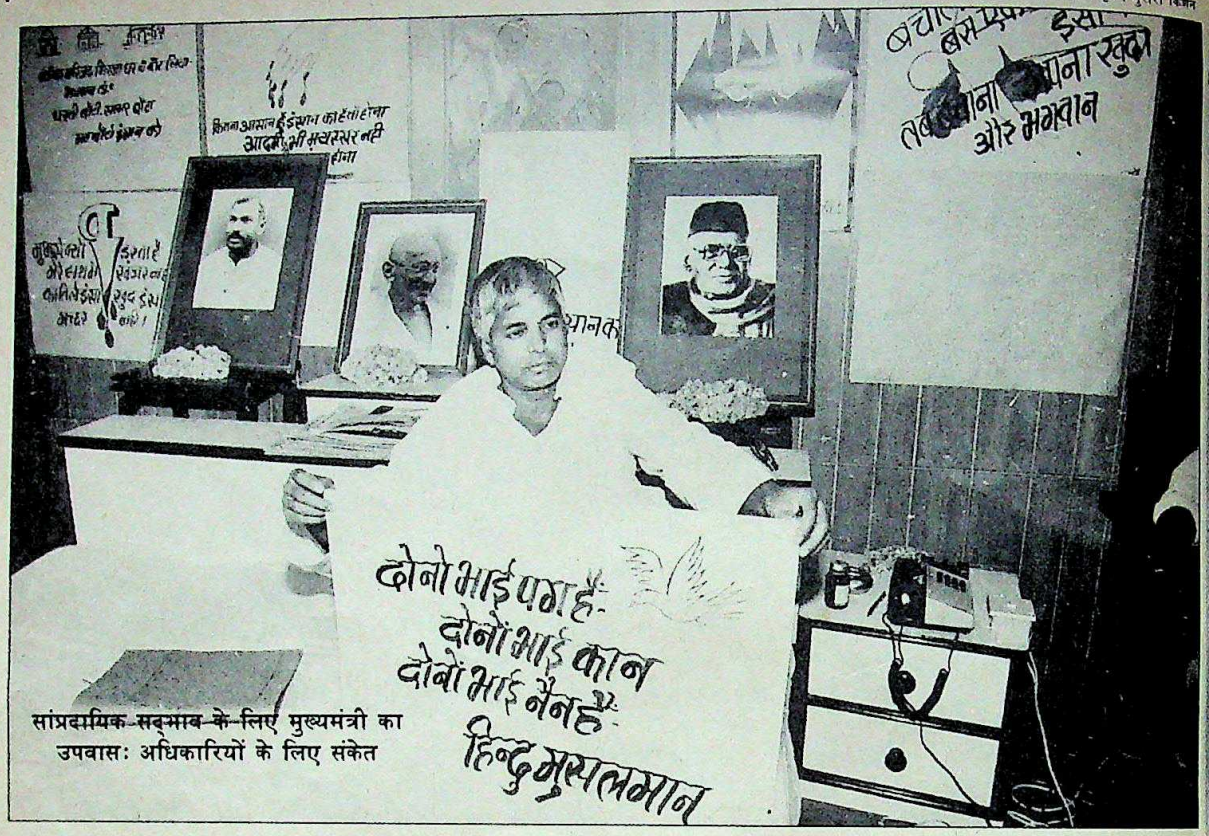

सांप्रदायिक सद्भाव के लिए मुख्यमंत्री का उपवास: अधिकारियों के लिए संकेत

लालू प्रसाद यादव

घुन साफ करने की धुन

शुरुआती वाहवाही का दौर खत्म, सियासी मुसीबतें शुरू

जिस तरह शेक्सपियर के दुखांत नाटकों की शुरुआत सांकेतिक बिजली की कड़क और भयानक आंधी के साथ होती है, ठीक उसी तरह पिछले पखवाड़े बिहार विधानसभा का मानसून सत्र राज्यव्यापी घोर बरसात में ही पीने के पानी के संकट और राजधानी में हैजे के जानलेवा प्रकोप के साथ शुरू हुआ.

यह इस बात का प्रतीक है कि बिहार को चुस्त-दुरुस्त करने की जीतोड़ कोशिशों में लगे युवा और स्पष्टवक्ता मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव की मुसीबतें बढ़ रही हैं. शुरुआती वाहवाही का दौर खत्म हो चुका है. वाहवाही उन्हें मिली क्योंकि उन्होंने भ्रष्टाचार और काहिल अफसरशाही के खिलाफ धावा बोला.

सरकारी दफ्तरों और अस्पतालों में अचानक निरीक्षण करके उन्होंने लगभग 300 गैरहाजिर और कामचोर कर्मचारियों को सजाएं भी दीं. जहां कहीं भी कुछ गड़बड़ी हुई या गरीबों पर जुर्म हुआ वहां वे सबसे पहले पहुंच गए. सांप्रदायिक तनाव को फूटने नहीं दिया. मगर उनके आलोचक अब पूछ रहे हैं, "इन सबका नतीजा क्या निकला?" विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र ने, जो हमेशा से यादव के कटाक्षों के खास निशाना रहे हैं, जलकर कहा कि "उनकी सरकार मंझधार में बिना पतवार के थपेड़े खा रही है."

मगर यादव ने 'इंडिया टुडे' से कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है मानो मैं अब भी एक छात्र नेता की तरह ही भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ लड़ रहा हूं." यादव के समर्थक उनकी ये उपलब्धियां गिनवाते हैं—बिहार में पहली दफा रामनवमी सांप्रदायिक दंगों से मुक्त रही; कोल इंडिया लिमिटेड जैसी बड़ी सरकारी कंपनी ने बकाए की रकम में से 90 करोड़ रु. उगल दिए; फिर सबसे सनसनीखेज बात यह कि बिहार पुलिस के निगरानी विभाग ने करीब 70 छापे मारकर 'दिग्गजों' के घर से लगभग 10 करोड़ रु. का काला धन पकड़ा और बिहार मदरसा एजूकेशन बोर्ड के अध्यक्ष मुहम्मद यूनुस हाकिम और विद्यालय सेवा बोर्ड के अध्यक्ष आर.के. पोद्दार दूसरे अधिकारियों समेत जेल में डाल दिए गए.

भ्रष्टाचार उन्मूलन पर उतारू यादव ने खुद भी शहर में शराब की दुकानों का अचानक निरीक्षण किया. यही नहीं, जब उनका डेढ़ वर्षीय पुत्र तरुण बीमार पड़ा तो डॉक्टरों को घर पर बुलाने के बदले वे खुद उसे सीने से लगाए पटना मेडिकल कॉलिज अस्पताल के बच्चा वार्ड में आधी रात के बाद चले गए. यहां उन्हें एहसास हुआ कि बिहार में चिकित्सा व्यवस्था लाइलाज हो चुकी है, क्योंकि अस्पताल में कुछ भी नहीं था और खुद उन्हें भी बाजार से दवाइयां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

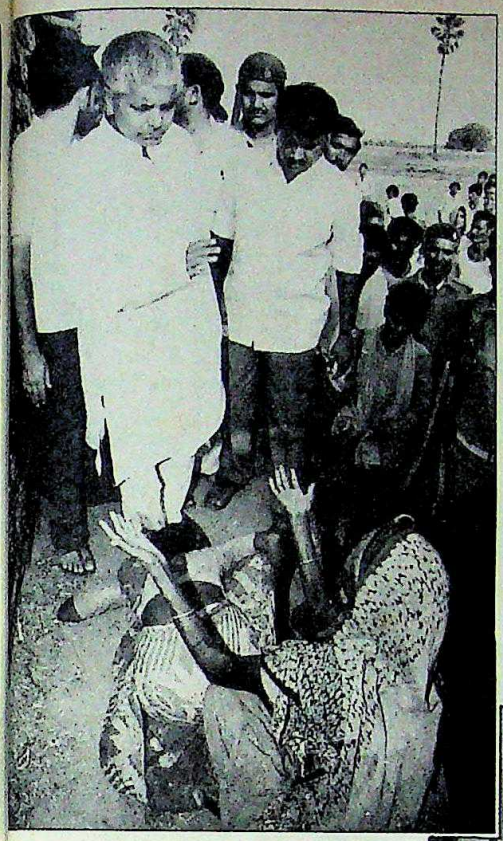

गरीबों की सरकार है. मगर धीरे-धीरे सब कुछ बदलने लगा है. उनके लिए सियासी मुसीबतें उफनती नदियों की तरह बढ़ने लगी है. यादव के समर्थक भी अब उन्हें शक की नजर से देखने लगे हैं. यादव के राजनैतिक गुरु और बिहार लोकदल के सचिव लक्ष्मी साहू, जो लंबे अरसे तक कर्पूरी ठाकुर के सचिव रहे, कहते हैं, "कुछ नहीं तो कम-से-कम जो स्थिति बिहार में थी लालू उसे तो बरकरार रख सकते थे. मगर अब पटना में ही लोग हैजे से मरने लगे हैं. उन्हें खुद ही सोचना है कि वे बिहार को कहां ले जा रहे हैं."

मगर यादव इन बातों से बेखबर अपनी धुन में लगे हुए हैं. मगर इस धुन में उनसे गलतियां होने लगी हैं. विधानसभा में जोश में आकर उनके संसदीय कार्यमंत्री रघुनाथ झा ने उन 31 आईएसएस अफसरों के नाम पढ़ दिए जिनकी निगरानी विभाग छानबीन कर रहा था. यह एक भूल थी.

इसके पहले वे एक और गलती कर बैठे थे. उनके कहने पर एक दिन अचानक उनके प्रधान सचिव ने यह आदेश जारी कर दिया कि 'मुख्यमंत्री की इच्छा है' कि सभी बोर्डों और कार्पोरेशनों के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों को बरखास्त कर दिया जाए. ये तमाम लोग कांग्रेसी थे. एक अफसर का कहना है "मुख्यमंत्री की इच्छा शब्द इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था. इसके लिए आर्डिनेंस या एक्जीक्यूटिव ऑर्डर आना चाहिए था." सारे लोग कोर्ट में चले गए और स्थगन आदेश ले आए.

विधानसभा में इस बात पर खूब हंगामा मचा कि राजस्व और भूमि सुधारमंत्री राम विलास सिंह अपराधियों को संरक्षण देते हैं. पुलिस महानिदेशक को इस संबंध में सिंह द्वारा लिखे गए पत्र की प्रति भी सदन में रखी गई जिसमें उन्होंने एक 'अपराधी' को 'मासूम' बताया था. इसी सदन में कल्याण-मंत्री रमई राम ने यह सफाई दी कि वे कोठे पर नहीं जाते.

मगर उनके कुछ मंत्री ऐसे जरूर हैं जो उनकी ही तरह भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम छेड़े हुए हैं. जल संसाधन और ऊर्जा-मंत्री जगदानंद सिंह सिंचाई विभाग में लूट-खसोट पर बेरहमी से चोट कर रहे हैं.

इधर यादव की नजर अफसरशाही पर कड़ी हुई है. हाल ही में उन्होंने इसमें काफी उलटफेर किए. ए.यू. शर्मा जैसे बड़े और कड़े अफसर को, जो बिहार के मुख्य सचिव थे, हटाकर कर्मठ और अनुभवी कमला प्रसाद को लाया गया. अब तक लगभग 35 बड़े आईएएस अफसरों को इधर से उधर किया जा चुका है. यादव कहते हैं, "मैं सरकार और प्रशासन में तेजी लाना चाहता हूं ताकि नई कार्य संस्कृति का विकास किया जा सके."

राजनैतिक प्रेक्षकों के अनुसार अंदर और बाहर उनका विरोध बढ़ रहा है. बिहार जनता दल के अध्यक्ष रामसुंदर दास ने तो पद के लिए संघर्ष में हारने के बाद उनसे खार खाए बैठे हैं. यादव ने मुख्यमंत्री बनने के बाद दास को खुश करने की भरसक कोशिश की. उन्हें उप-मुख्यमंत्री बनाने की

दंगों के शिकार को सांत्वना (बाएं); अस्पताल का निरीक्षण

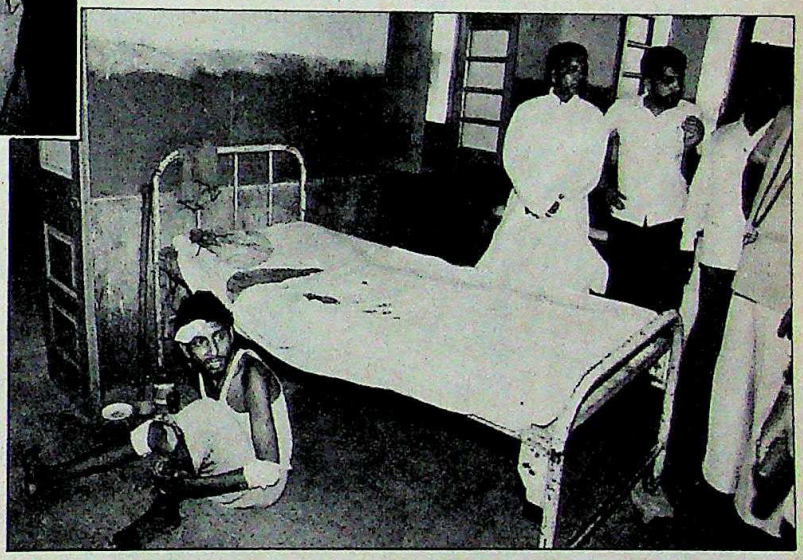

सांप्रदायिक दंगों को रोकने, हर मुश्किल में मौके पर पहुंचने की कोशिशों से मिली वाह-वाही का दौर समाप्त हो रहा है

और सीरिंज मंगवानी पड़ी.

यादव ने एक और परंपरा की शुरुआत की. जब भी पता चला कि किसी इंजीनियर ने सरकारी पैसे का दुरुपयोग किया है, उन्होंने या उनके मंत्रियों ने हुक्म जारी किया कि उतनी रकम उस इंजीनियर की तनख्वाह से काटकर किस्तों में वसूल की जाए. झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता सूरज मंडल ने कहा, "ये सारे कार्य नए और सराहनीय हैं. अब तक यादव ने जो भी कदम उठाया, उससे अफसरशाही में डर बन गया है और दफ्तरों में वक्त की पाबंदी होने लगी है."

शुरू में लोगों ने यादव के इस दावे को संजीदगी से लिया कि उनकी सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौवां बच्चा

बड़ा परिवार

बिहार के युवा मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भले ही कांग्रेसी परंपराओं और भ्रष्ट व्यवस्था को पूरी तरह खत्म न कर सकें मगर उन्होंने कांग्रेसियों द्वारा चलाए गए परिवार नियोजन का बंटाढार कर दिया है.

चार माह पूर्व यादव ने जब बिहार की सत्ता संभाली तो वह 1990 के सबसे कम उम्र (42 वर्षीय) मुख्यमंत्री माने जाते थे. मगर पिछले पखवाड़े उन्होंने यह साबित कर दिया कि देश के दूसरे सबसे बड़े राज्य को संभालने के साथ-साथ वह बड़ा परिवार भी संभाल सकते हैं. उनकी धर्मपत्नी ने एक प्राइवेट नर्सिंग होम में उनके नौवें बच्चे और सातवीं पुत्री को जन्म दिया.

इस महंगाई के जमाने में इतना बड़ा परिवार पालना यादव जैसे शख्स के बस की ही बात है. बात 1974 की है. उन दिनों 26 वर्षीय लालू यादव आंदोलन से जुड़े, भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने और संपूर्ण क्रांति लाने में मगन थे. तभी उनकी शादी परिवार के लोगों ने परंपरागत ढंग से कर दी. 1975 आते-आते देश में कांग्रेसी सरकार ने इमरजेंसी लगा दी और ढेर सारे नेताओं के साथ लालू को भी मीसा के तहत जेल में बंद कर दिया. उन्हीं दिनों जेल में उनको सुखद समाचार मिला कि उनकी पत्नी को पुत्री हुई है. अपने संघर्षशील जीवन और कांग्रेसी तानाशाही की याद दिलाने के लिए लालू ने अपनी पुत्री का नाम मीसा भारती रख दिया. लालू का भाग्य मुस्कराने लगा. वे राजनीति में आगे बढ़ते रहे. उस समय से अब तक वे दो बार लोकसभा के सदस्य और दो बार विधानसभा का चुनाव जीतकर आगे बढ़े और उनका परिवार भी फलता-फूलता रहा. 1984 आते-आते छह लड़कियों—चुन्ना (13), चंदा (10), राधो (8), हेमा (7), और धन्नो (साढ़े पांच) ने जन्म लिया. हमेशा हंसी-मजाक करने वाले और भ्रष्ट लोगों से लड़ने वाले यादव अंदर ही अंदर काफी चिंतित रहा करते थे. क्योंकि ऐसे प्रदेश में, जहां दहेज का प्रकोप भयानक हो, छह बेटियां पालना बड़ा मुश्किल काम था. फिर बेटे की लालसा भी थी. मगर उन्होंने दिल छोटा नहीं किया और 1986 में उनके यहां एक बेटा पैदा हुआ—तेजप्रताप. खूब खुशियां मनाई गईं, मिठाइयां बांटी गईं और सैकड़ों लोगों को भोज में बुलाया गया. दो साल बाद फिर बेटा पैदा हुआ. तब वे विधानसभा में विरोधी दल के नेता थे.

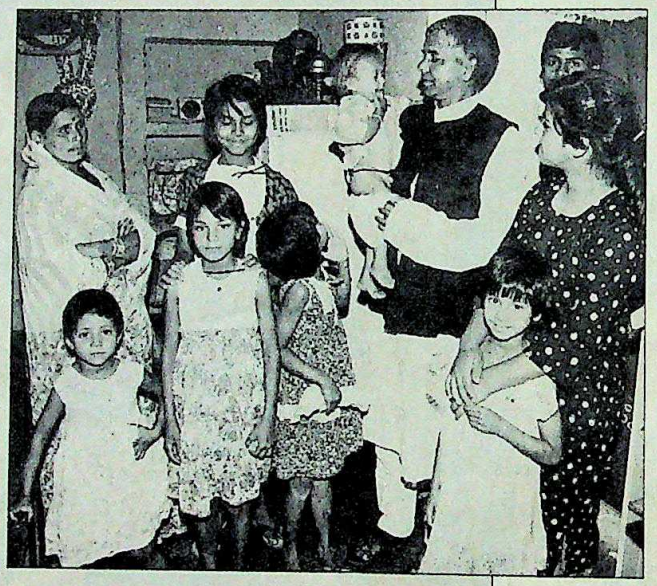

बीवी-बच्चों के साथ लालू यादव

और अब सातवीं बेटी मुख्यमंत्री बनने के चार माह बाद. लालू ने बधाइयां और मिठाइयां स्वीकार करते हुए मुस्कराकर कहा कि "भाई घर में लक्ष्मी आई है." जनता दल के एक नेता ने इस पर बयान जारी कर दिया और कहा कि बेटी लक्ष्मी मानी जाती है इसलिए उसका स्वागत तो करते हैं मगर लालू जी को नौवें बच्चे पर बधाई नहीं दे सकते. वजह साफ है, परिवार नियोजन की बात करने वाले मुख्यमंत्री की कथनी और करनी में बड़ा फर्क है. मगर इसमें भला बेचारे लालू प्रसाद का क्या दोष!

—फरजंद अहमद

पेशकश की. फिर बीस सूत्री कमेटी का कार्यकारी अध्यक्ष पद दिया. मगर दास ने सारी बातें नजरअंदाज कर दीं.

खतरा अंदर से ही नहीं बल्कि बाहर से भी बढ़ता जा रहा है. सदन में 39 सदस्यों वाली भारतीय जनता पार्टी यादव से नाराज है. विधानसभा सत्र शुरू होने से पहले भाजपा अध्यक्ष ताराकांत झा ने धमकी दी कि उनकी पार्टी सरकार से समर्थन वापस ले सकती है.

विधानसभा में 23 सदस्यों वाली भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता रमेंद्र कुमार ने कहा कि भाजपा अब ब्लैकमेल की राजनीति कर रही है. मगर भाकपा भी सरकार पर अंकुश लगाने की कोशिश में पीछे नहीं है. उसने महंगाई, भूमि सुधार, भ्रष्टाचार जैसे सवालों को लेकर धरना दिया और सरकार को एक स्मरण पत्र देकर 23 सूत्री कार्यक्रम लागू करने की मांग की.

इस बीच केंद्र में जनता दल के भीतर बदलते समीकरण से यादव के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है. यादव के लिए मुख्यमंत्री का पद देवीलाल के प्रभावशाली गुट के असर का नतीजा था. मगर बदलते हालात में वे देवीलाल से अलग हो गए हैं. उधर, अजित सिंह और देवीलाल की नजदीकी बढ़ने लगी है. अजित सिंह पहले से ही यादव के खून के प्यासे हैं. पार्टी सूत्रों के अनुसार अजित सिंह ने यादव को हटाने की बात भी देवीलाल से शुरू कर दी है.

दूसरी तरफ दास यादव विरोधी दोनों खेमों—चंद्रशेखर और देवीलाल—के करीब आते जा रहे हैं. हाल में ही ओमप्रकाश चौटाला अचानक पटना आए और खुसुरफुसुर में उन्होंने दो रोज बिताए. कुछ रोज बाद यशवंत सिन्हा भी आए और पार्टी सदस्यों से बातें कीं. वे माहौल का अंदाजा लगा रहे थे.

लगता है यादव के आगे फिसलन ही फिसलन है. मगर यादव कहते हैं, "मुझे न कोई खतरा है और न किसी का डर. मुझे बिहार को सुधारना है और मैं यह करके रहूंगा." अब समय ही बताएगा कि उन्हें इसका कब तक मौका दिया जाता है और वे इस मौके का कितना लाभ उठा पाते हैं.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

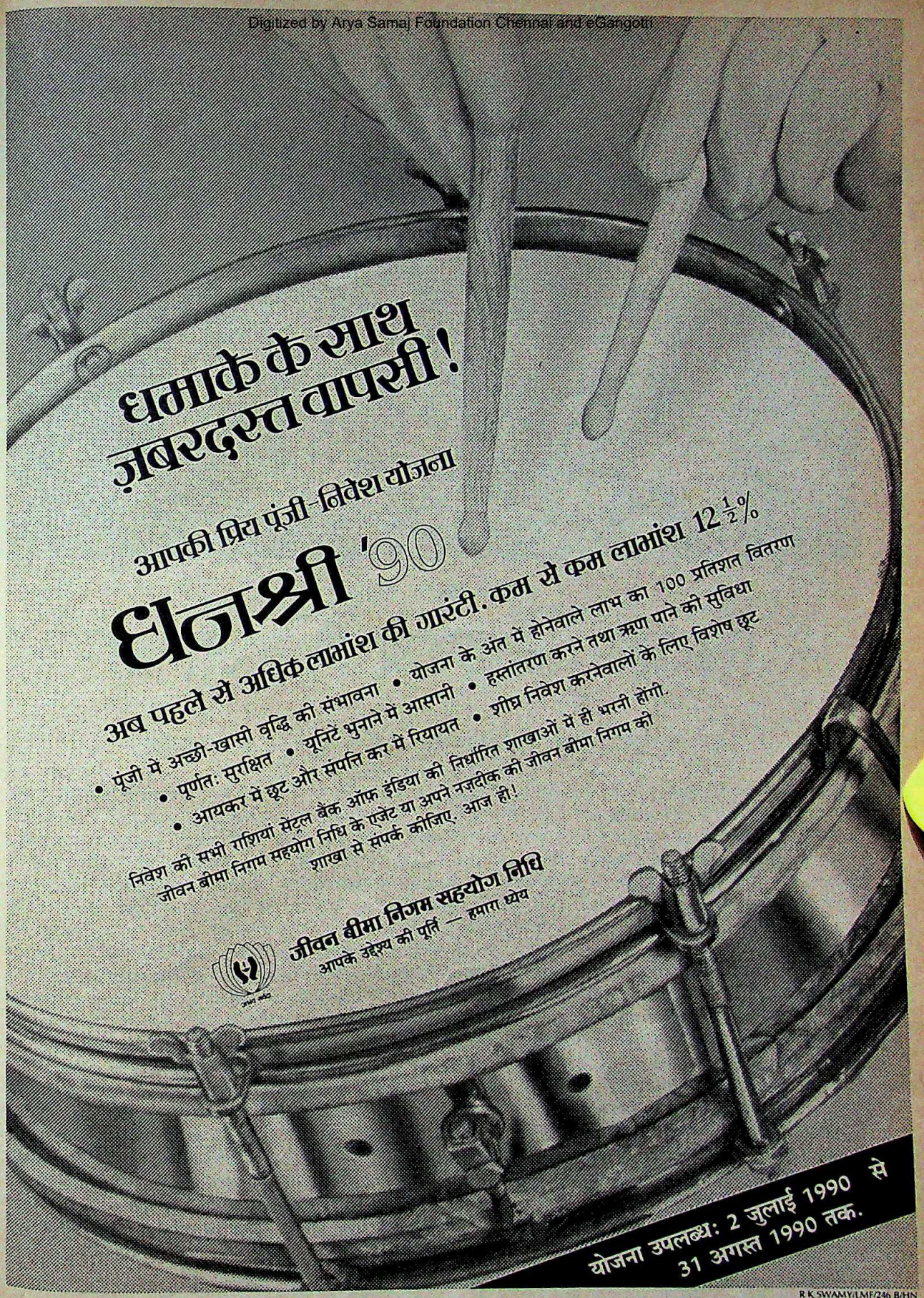

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

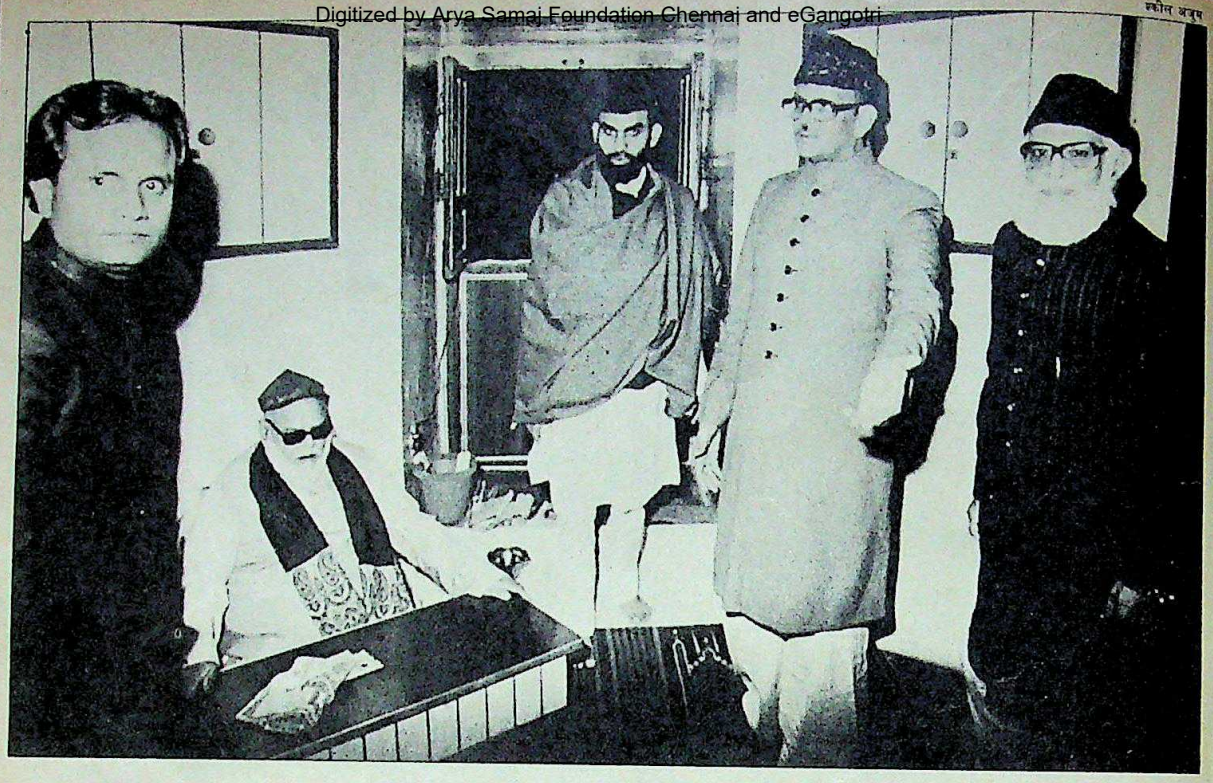

इमाम अब्दुल्ला बुखारी

सियासी दबदबे में इजाफा

धर्म पर आधारित राजनीति के अहम दबाव गुट की अगुआई

वे भारत सरकार की सहमति से ईरान का दौरा कर चुके हैं ताकि कश्मीर के मामले पर इस्लामी देशों को एकजुट करने के पाकिस्तानी प्रयासों का मुंहतोड़ जवाब दिया जा सके. यही नहीं, जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल जगमोहन को वापस बुलाने के लिए प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह पर दबाव डालने में भी वे सफल रहे हैं. उग्रवादियों के साथ बातचीत शुरू करने के लिए उनकी अगुआई में एक शिष्टमंडल श्रीनगर भेजने के सवाल पर सरकार उनसे विचार कर रही है. विगत द्विवार्षिक चुनावों में वी.पी. सिंह ने उनके एक उम्मीदवार को राज्यसभा में जगह दिलाई. उनके एक और उम्मीदवार को जनता दल के राष्ट्रीय संगठन में पद दिए जाने की उम्मीद है. और हाल ही में बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के इलाके छपरा के संसदीय उपचुनाव के दौरान वोट हासिल करने के लिए उनके लिखे पत्रों की हजारों प्रतिलिपियां मतदाताओं में बांटी गई. और यह सब दो महीने के भीतर ही हुआ है.

पिछले महीने दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी के बढ़ते राजनैतिक दबदबे का एहसास उस समय और भी स्पष्ट हो गया, जब प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष के रूप में भाजपा के अपेक्षित व्यक्ति की नियुक्ति को धता बता दी.

दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद में शुक्रवार शाम की नमाज की अगुआई वाली परंपरागत भूमिका से 66 वर्षीय इमाम बुखारी और आगे निकल आए हैं. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पर अपने उल्लेखनीय प्रभाव के अलावा अब वे धर्म पर आधारित राजनीति के एक महत्वपूर्ण दबाव गुट की अगुआई भी करते हैं. वक्फ बोर्ड के मामूली कर्मचारी से ऊपर उठकर उन्होंने ऐसे आक्रामक मुस्लिम नेता की हैसियत अख्तियार कर ली है, जो देश की विशालतम अल्पसंख्यक आबादी को प्रभावित करने वाले मसलों पर वरिष्ठ नेताओं के साथ राय-मशविरा करता है.

और वक्त की नजाकत को पहचानते हुए वे धर्मनिरपेक्षता की वकालत करते हैं, "कोई भी ईमानदार शख्स फिरकापरस्ती की हिमायत नहीं कर सकता." किसी स्थिति पर उनकी प्रतिक्रिया, किसी मसले पर उनका बयान उनकी मजहबी हैसियत के मुकाबले कहीं ज्यादा अहमियत हासिल कर लेता है. लेकिन यह बदलाव एकाएक नहीं आया है.

राष्ट्रीय राजनीति में सैयद शहाबुद्दीन का असर घटते जाने के कारण देश के मुस्लिम नेतृत्व में धीरे-धीरे जो शून्य पैदा हुआ, यह उसी का नतीजा है. इमाम के महत्व को दर्शाने के लिए जनता दल के समाजवादी विचारक सुरेंद्र मोहन इतिहास में और पीछे चले जाते हैं. वे कहते हैं, "याद रखें, मौलाना आजाद के निधन के बाद मुस्लिम समुदाय में कोई भी मान्यता प्राप्त नेता नहीं रहा है. देश की सबसे अहम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद (बैठे हुए) वी.पी. के साथ; और (दाएं) एक सभा में: मजहब से सियासत तक

मस्जिद के इमाम के रूप में उनका (बुखारी का) असर तो है ही."

यह अतिशयोक्ति नहीं है. इसीलिए वी.पी. सिंह भी नियमित रूप से इमाम से सलाह लेते हैं. ऐसा नहीं कि इमाम ने नेतृत्व के प्रभावी गुण रातोरात हासिल कर लिए हैं बल्कि उसका कारण राजनीतिक मजबूरियां हैं. दरअसल, वी.पी. सिंह की अल्पमत सरकार तीन बैसाखियों पर टिकी है. संसद में भाजपा और वामपंथियों पर, और बाहर मुस्लिम समुदाय के राजनैतिक रूप से नाजुक समर्थन पर.

मुसलमानों का समर्थन तभी बरकरार रह सकता है बशर्ते इमाम खुश रहें. जगमोहन को श्रीनगर भेजे जाने के वक्त पहली बार इमाम अपना विरोध जताने प्रधानमंत्री निवास गए थे. तब वी.पी. सिंह तुरंत ही समझ गए थे कि जगमोहन की नियुक्ति पर इमाम के असंतोष की अनदेखी नहीं की जा सकती.

आज जनता दल के अनेक नेता इमाम और प्रधानमंत्री के मध्य संपर्कसूत्र बने हुए हैं. मसलन, जून के पहले हफ्ते में इमाम के तेहरान रवाना होने से पहले विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने इमाम के बेटे अहमद बुखारी को कश्मीर पर भारत के रुख के बारे में जानकारी देनी चाही थी. यह भेंट नहीं हो सकी. लेकिन जुमे की नमाज के बाद इमाम ने अपने खुतबे में कहा कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और जाहिर है कि इससे सरकार ने काफी राहत महसूस की.

इमाम धार्मिक मसलों से आगे भी वास्ता रखते हैं, यह बात उनसे भेंट करने वाले वरिष्ठ नेताओं की सूची से जाहिर है. मसलन, पिछले पखवाड़े पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह दमे के दौरे के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहे बुखारी से मिलने गए. मध्यावधि चुनाव की संभावना को मानकर कुछ इंका नेता भी जामा मस्जिद के साथ टूटे रिश्तों को जोड़ने की कोशिश में हैं. धर्मनिरपेक्षता की कसमें उठाने वाले एम.जे. अकबर ने भी बुखारी से मिलने का वक्त मांगा था लेकिन उन्हें वक्त नहीं दिया गया. हाल ही में बूटा सिंह ने सांप्रदायिकता के खिलाफ इंका सम्मेलन में आने के लिए पिता और पुत्र दोनों को फोन पर न्यौता दिया. पर बताते हैं कि अहमद ने कहा, "बतौर गृहमंत्री आपने दंगे कराए और अब आप सेक्युलर बन रहे हो."

देश के मुस्लिम नेतृत्व में धीरे-धीरे बढ़ती शून्यता ही इमाम के उभरने का कारण बनी

पिछले आम चुनावों से पहले जब जनता का रुख सत्तारूढ़ इंका के विरोध में बढ़ता जा रहा था तो बुखारी को जनता दल और इंका में से एक का चुनाव करने में खासी मशक्कत करनी पड़ी. सांप्रदायिकता की लगातार धधकती आग, मुसलमानों पर कथित पुलिस अत्याचार और अंततः चुनावों से करीब एक महीना पहले अयोध्या मंदिर के लिए शिलान्यास ने उनके विकल्प सीमित कर दिए. लेकिन वी.पी. सिंह द्वारा भाजपा के साथ चुनावी तालमेल की कोशिशों ने इमाम को दुविधा में डाल दिया.

चुनावों से पहले हफ्तों तक इंका और जनता दल दोनों के नेता इमाम का आशीर्वाद हासिल करने के लिए जुटे रहे. गृहमंत्री बूटा सिंह, स्थानीय इंका दिग्गज हरकिशनलाल भगत, दिल्ली के उपराज्यपाल रोमेश भंडारी और राजीव गांधी के राजनैतिक सहायक राजेंद्र कुमार धवन—सभी ने इंका के लिए बुखारी का समर्थन हासिल करने पर एड़ी-चोटी का जोर लगा लिया.

कहीं पीछे न रह जाएं, इस डर से तब के विपक्षी दिग्गजों—अजित सिंह, देवीलाल और सबसे बढ़कर वी.पी. सिंह ने इमाम के साथ बातचीत के लंबे दौर चलाए. वी.पी. सिंह की इमाम से अंतरंग बातचीत से ही यह मामला सुलटा. अंततः बुखारी का समर्थन जनता दल के बजाए 'राजा साहब' के लिए कहीं अधिक था.

पखवाड़ा भर पहले, 11 नवंबर को बुखारी ने भीड़ भरे पत्रकार सम्मेलन में फतवा जारी किया कि सभी मुसलमानों को जनता दल का समर्थन करना चाहिए.

बाबरी मस्जिद आंदोलन के उत्कर्ष के दिनों में खुद को मुसलमानों का सर्वमान्य नेता सिद्ध करने की कोशिश करने वाले शहाबुद्दीन ने जनता दल के प्रति ढुलमुल रवैया अख्तियार किया था. इसका परिणाम उनकी नवगठित इंसाफ पार्टी की विफलता और स्वयं उनके हारने के रूप में सामने आया. इसके बारे में जनता दल के राज्यसभा सदस्य मुहम्मद अफजल बताते हैं, "इमाम जहां मुसलमानों के जज्बात का इजहार करते हैं, वहीं दूसरे लोग पूरी बिरादरी को अपने सोच के मुताबिक ढालने की गलती करते हैं."

इमाम के बढ़ते कद ने मुसलमान समुदाय में अनेक समीकरणों को बदल दिया है. 35-45 आयु वर्ग के नेताओं का एक समूह सुर्खियों में आ गया है. युवा तुर्कों का यह समूह हमेशा से इंका विरोधी रहा है. इनमें से कई की राजनैतिक शुरुआत अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में हुई है. इस समूह में जावेद हबीब, जफरयाब जिलानी, मुहम्मद आजम खां और मुहम्मद अफजल और इन सबके नेता अहमद बुखारी शामिल हैं. इन दिनों जामा मस्जिद में लिए जा रहे फैसलों की प्रक्रिया के मद्देनजर लगता है कि बुखारी शहाबुद्दीन सरीखों द्वारा नेतृत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झपट लेने की किसी कोशिश से बचने के लिए इन युवा नेताओं को मैदान सौंपना चाहते हैं. इस बारे में अहमद कहते हैं, "मुसलमानों की नई पीढ़ी की रहनुमाई मुश्तरका होनी चाहिए. अकेला रहनुमा अक्सर तानाशाह बन जाता है."

मुस्लिम लीग नेता जी.एम. बनातवाला जैसे नेता समुदाय में अब सार्थक नहीं रहे और उनका करिश्मा खत्म हो गया लगता है. "किसी दूसरी सियासी पार्टी में भी मुसलमान रहनुमा हो सकते हैं लेकिन वे अकेले इस फिरके के मुफाद की हिफाजत नहीं कर पाएंगे." वरिष्ठ नेता बनातवाला की यह धारणा नई पीढ़ी के नेतृत्व को मान्य नहीं है. लोकदल में रह चुके आजम खां इस समय उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव के कैबिनेट में मंत्री हैं. जब वी.पी. सिंह ने अहमद को राज्यसभा की सीट देने का प्रस्ताव किया था तो इमाम ने बड़ी चालाकी से इसे ठुकरा दिया था और इस आलोचना का पत्ता साफ कर दिया था कि जनता दल को समर्थन देकर उन्होंने निजी लाभ कमाया है. इसके बजाए उन्होंने एक जाने-माने उर्दू अखबार के संपादक अफजल को इसके लिए नामजद किया.

युवा नेताओं का यह समूह महत्वपूर्ण फैसलों पर विचार-विमर्श करके अंततः इमाम से मंजूरी हासिल करता है. नए नेतृत्व के बारे में अफजल का कहना है, "जहां बुजुर्ग रहनुमा अपने रवैए में सावधानी बरतते हैं, वहीं नया नेतृत्व कुछ और हासिल करना चाहता है." जाहिर है, विभिन्न गुटों में बंटा हुआ मुस्लिम नेतृत्व इस समय चौराहे पर है.

लेकिन निःसंदेह उन्हें कुछ सहूलियतें हासिल हैं. वरिष्ठ नेताओं के विपरीत वे कहीं ज्यादा आशावादी हैं और जैसे को तैसा में यकीन रखते हैं. वे मुख्यधारा की राजनीति के विरोधी भी नहीं हैं लेकिन उनकी असल वफादारियां इमाम के प्रति हैं. और निश्चय ही उनमें न तो शहाबुद्दीन जैसा अहंकार है और न बनातवाला की तरह अकेले संसद में पहुंचने की दिशा

लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे खोखले आदर्शवाद का शिकार हैं. उनके प्रवक्ता के रूप में इमाम आलोचना करने का अपना अधिकार बरकरार रखते हुए जनता दल सरकार को समर्थन देना जारी रखना चाहते हैं. उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया, "राजा साहब के लिए मेरे दिल में अब भी बहुत मुहब्बत है. लेकिन कश्मीर में हुए खून-खराबे से उनकी छवि खराब हुई है. आइंदा वे भाजपा समेत किसी फिरकापरस्त पार्टी के साथ तालमेल करेंगे तो हम उनकी हिमायत नहीं करेंगे."

इमाम महसूस करते हैं कि अपने इरादों के प्रति ईमानदार होने के बावजूद भाजपा के दबाव के कारण वी.पी. सिंह अल्पसंख्यकों से किए वादे पूरे नहीं कर पाए हैं. वे कहते हैं, "उनकी बुनियादी गलती भाजपा के साथ सीटों का तालमेल करना था, वरना वह पार्टी 86 सीटें हासिल नहीं कर पाती." पिछले पखवाड़े अहमद ने प्रधानमंत्री के साथ लंबी बातचीत के दौरान एक प्रकार से यह अल्टीमेटम दे डाला कि अगर वी.पी. सिंह ने मुसलमानों को दिए गए आश्वासनों में से कुछ को पूरा करने के प्रयास नहीं किए तो अगस्त में नए आंदोलन की शुरुआत की जाएगी. दरअसल, विपक्ष के मुसलमान नेताओं के सम्मेलन की तैयारी चल भी रही है.

पर थोड़े-थोड़े समय बाद शिकायतों और तीखा विरोध जताने के बावजूद इमाम ने नई सरकार को समर्थन जारी रखा है.

नए नेता मोल-तोल में भी सिद्धहस्त दिखते हैं. विधानसभा चुनावों से पहले बुखारी ने वी.पी. सिंह से अनुरोध किया था कि बिहार, गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों में जनता विधानमंडल दल में मुसलमानों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जाए.

केंद्र या राज्यों में मुसलमान मंत्रियों की संख्या और उनके विभागों से इमाम संतुष्ट हैं या नहीं, यह तो पता नहीं लेकिन उत्तर प्रदेश और बिहार के मुख्यमंत्रियों—मुलायम सिंह यादव तथा लालू प्रसाद यादव के कामकाज से वे निश्चय ही बहुत खुश हैं. दल में इमाम के मित्रों में खुद वी.पी. सिंह तो हैं ही, दोनों यादवों के अलावा सुरेंद्र मोहन, रशीद मसूद और देवीलाल भी इनमें शामिल हैं. लेकिन हैरत की बात यह है कि देश के पहले मुसलमान गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद का नाम ऐसे लोगों में नहीं है. इमाम के साथ दोस्ती की मुफ्ती की शुरुआती कोशिशों के बावजूद अब्दुल्ला बुखारी आज गृहमंत्री के सबसे कटु आलोचकों में से हैं. उनके एक कट्टर समर्थक का कहना था, "राजमोहन गांधी उनसे बेहतर गृहमंत्री साबित होते."

ऐसे समय जबकि राजनीति की मुख्यधारा ही ऊहापोह की स्थिति में है, मुस्लिम राजनीति निस्संदेह एक नए दौर में प्रवेश कर चुकी है. —भास्कर राय

प्रशांत पंजियार

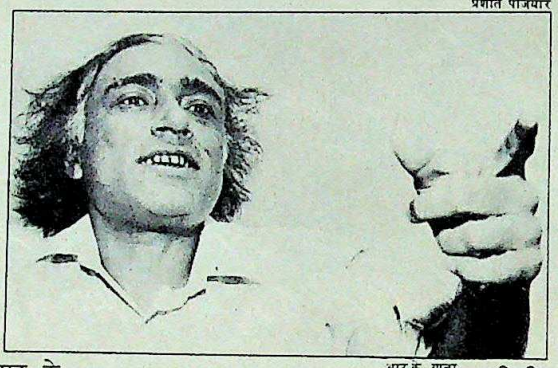

आर.के. गुप्ता

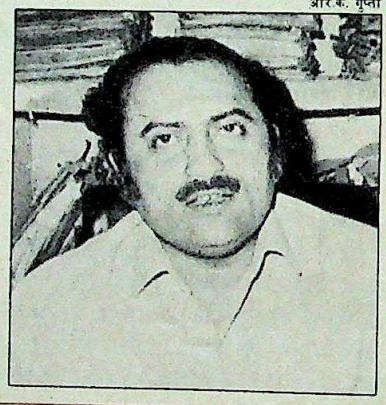

(ऊपर से नीचे) आजम खां; जावेद हबीब, जफरयाब जिलानी: इंका विरोधी रुख

इमाम द्वारा बढ़ाए गए नए नेताओं को राजनैतिक मुख्यधारा से जुड़ने में कोई परहेज नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिंदी इंडिया टुडे की शैली, भाषा और विषय
हिंदी पत्रकारिता में जैसे ताज़गी का एक झोंका.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी इंडिया टुडे के हर अंक में वह बात है
जो हिंदी पत्रकारिता में दुर्लभ हो गई थी.

हिंदी इंडिया टुडे ने वास्तव में हिंदी पाठक वर्ग को
वह नया नज़रिया दिया और वह नया एहसास कराया है कि
उनके सोच को एक नया स्फुरण मिल गया है.

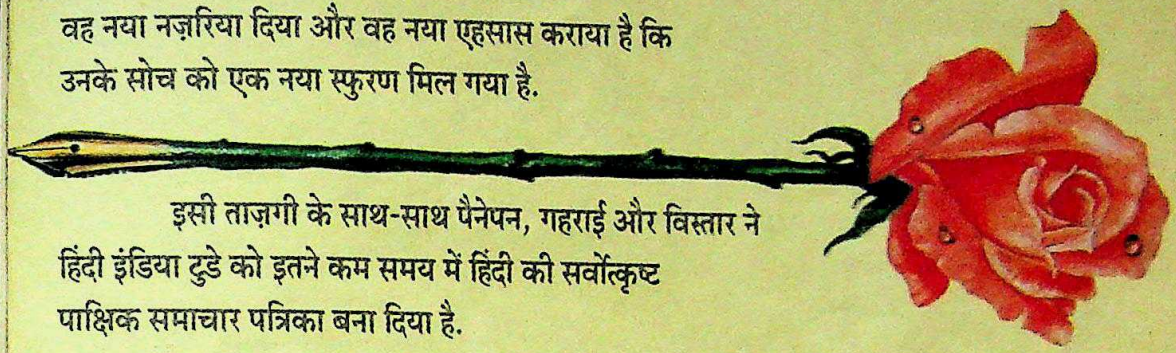

इसी ताज़गी के साथ-साथ पैनेपन, गहराई और विस्तार ने
हिंदी इंडिया टुडे को इतने कम समय में हिंदी की सर्वोत्कृष्ट
पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

ताज़गी का झोंका

18 लाख पाठकों के लिए हिंदी इंडिया टुडे इतना ही
ज़रूरी साबित होने लगा है जितना सांस लेने के लिए
ताज़ी हवा का झोंका.

हिंदी इंडिया टुडे में सुरताल, दूरदर्शन और सिनेमा
जैसे स्तंभ हल्का-फुल्का मनोरंजन तो करते ही हैं, अब तक अज्ञात
तथ्यों से भी परिचित कराते हैं. सूचनाओं के अंबार में ताज़गी का
यह एहसास सचमुच आल्हादकारी होता है.

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा है कि राजा बली ने ढाई डग में सारी दुनिया नाप ली थी. हिंदी इंडिया टुडे ने भी अपने 16" के छोटे कलेवर में पूरी दुनिया को नापकर अपनी अद्भुत पहुंच और विस्तार का परिचय दिया है.

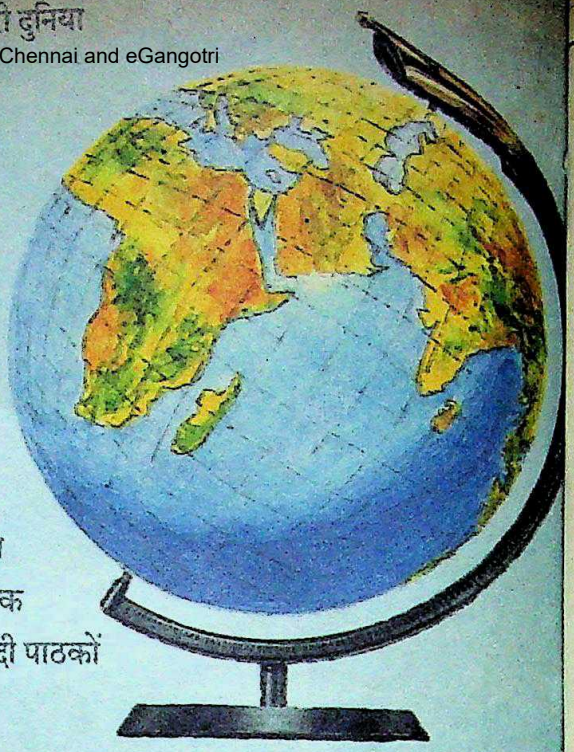

हिंदी पत्रकारिता में पाठकों की दुनिया सिकुड़कर रह गई थी. हिंदी इंडिया टुडे ने उनके लिए सारी दुनिया के दरवाज़े खोल दिए.

विस्तार जो सिर्फ भौगोलिक पहलुओं को ही नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं को भी पूरी ज़िम्मेदारी और सजगता से हिंदी पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है.

विस्तार के साथ-साथ पैनेपन, गहराई और ताज़गी ने इतने कम समय में हिंदी इंडिया टुडे को हिंदी की सर्वोत्कृष्ट पाक्षिक समाचार पत्रिका बना दिया है.

इसे 18 लाख पाठकों का विश्वास प्राप्त है.

ढाई डग में दुनिया सारी

जहां सारे विश्व की बात हो रही हो वहां कला, साहित्य, संस्कृति जैसे जीवन के अभिन्न अंगों से वंचित कहां रहा जा सकता है. इसीलिए हिंदी इंडिया टुडे ने कहानी और उपन्यास अंश भी प्रकाशित करना शुरू किया है.

वार्षिक ग्राहक बनिए—प्रति अंक 1.50 रु. बचाइए (यानि 36/- रु. प्रति वर्ष) और अपनी चहेती पत्रिका घर बैठे पाइए! 132/- रु. चैक/मनी ऑर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिए 'लिविंग मीडिया इंडिया लि.' के नाम थॉमसन प्रेस बिल्डिंग, पो. बॉ. 706, फरीदाबाद-121007 (हरियाणा) पर भेजिए, अपने नाम व पते के साथ.
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़क
MILESTONES/IT/27

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-13

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

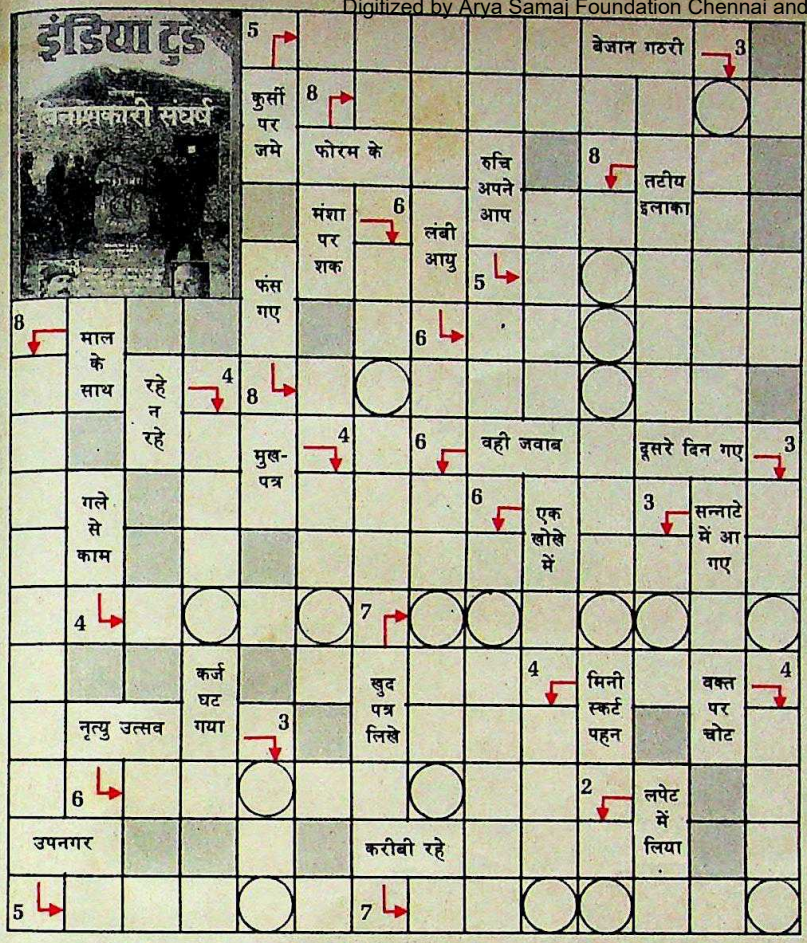

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-13, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 अगस्त 1990

उत्तर के लिए देखें:
16-31 अगस्त 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 जुलाई 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

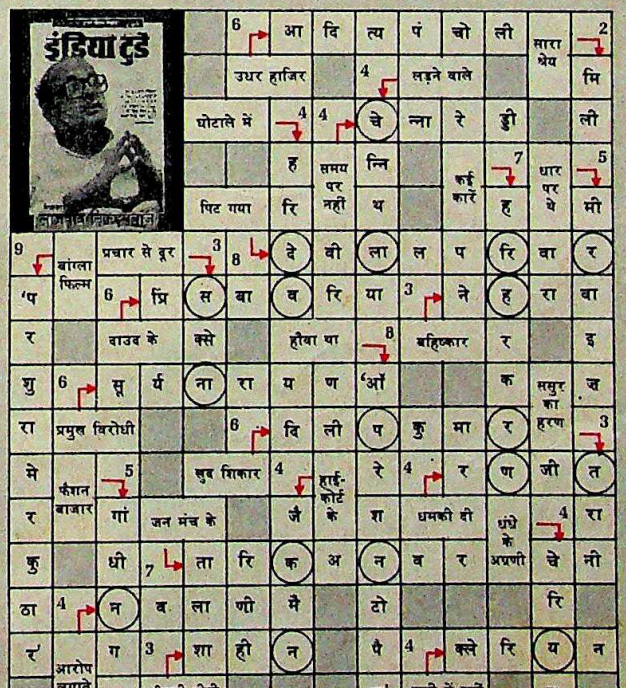

इंडिया टुडे
वर्ग पहेली-11 का हल

पुरस्कार विजेता

पाबूदान सिंह चौहान
द्वारा जी.एस.एम. देसी मदिरा गोदाम, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर-334001 (राज.)

श्रीमती अंजू
32, प्रेमनगर,
ग्वालियर-474002
(म.प्र.)

सुशील कुमार वार्ष्णेय
राष्ट्रीय बुक डिपो,
विष्णुपुरी, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य सभी डाई एक तरफ़, गोदरेज हेयर डाई दूसरी तरफ़... फिर भी गोदरेज हेयर डाई इस्तेमाल करनेवाले ज़्यादा ही होंगे!

दो रंगों में उपलब्ध
कुदरती काला और गहरा भूरा.

३ ख़ास कारणों से:

१ गोदरेज खुद-ब-खुद फैलने वाला हेयर डाई बालों को कुदरती रंग व छवि देता है. बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएं.

२ गोदरेज खुद-ब-खुद फैलनेवाला हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. जी हाँ, आसान इतना, बालों में शैम्पू करने जितना.

३ आप गोदरेज खुद-ब-खुद फैलनेवाले हेयर डाई की क्वॉलिटी पर भरोसा कर सकते हैं पूर्ण सुरक्षा-यही तो गोदरेज का वादा है.

Godrej® खुद-ब-खुद फैलने वाला पर्मानेंट हेयर डाई

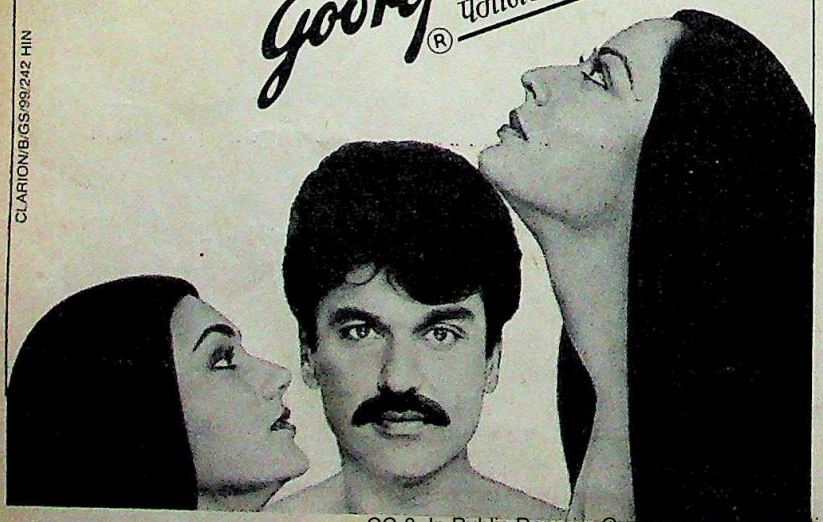

CLARION/B/GS/99/242 HIN

भरिए

यह कूपन और अपनी चहेती आवाज़ सुनिए: बच्चे की खिलखिलाहट

हंसी-खुशी और मौज-मस्ती बच्चों के लिए उतनी ही ज़रुरी हैं जितने ज़रुरी हैं खाना-पीना और हवा. और डिस्नी टुडे लेकर आया है यही मस्ती... यही मज़े.
बस तो फिर यह कूपन भर दीजिए और हर एक को खुश कर दीजिए.

आकर्षक छूट का लाभ उठाईये.

कूपन निम्नलिखित पते पर भेजें :
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पोस्ट बाक्स न. : 706 फरीदाबाद-121007 (हरियाणा)

मुझे अपने बच्चे के लिए सबस्क्रिपशन चाहिए। यह रहा मेरा सालाना सबस्क्रिपशन ☐ हिन्दी रु 78/- ☐ अंग्रेजी रु 96/- प्रति के लिए. मैं भुगतान चैक*/डिमांड ड्राफ्ट* न. ..... द्वारा कर रहा हूं. (दिल्ली से बाहर के चैक पर रु 5/- और जमा करें) कृपया प्रति निम्नलिखित नाम व पते पर भेजें :

नाम _____

उम्र _____ लिंग _____

डाक-पता _____

_____

कृपया भुगतान लिविंग मीडिया इंडिया लि. के नाम पर बनाएं

*दिल्ली, बम्बई, मद्रास व कलकत्ता के ड्राफ्ट/चैक केवल एम.आई.सी.आर. होने चाहिए

WALT DISNEY'S
डिस्नी टुडे
अब उपलब्ध हर पखवाड़े
हिन्दी और अंग्रेज़ी में

© 1987 THE WALT DISNEY CO., USA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल, कथा और राजनीतिक

अबकी बार हम महीने भर बाद दिल्ली लौटे. मियां से मिलने इस्लामाबाद गए हुए थे. उधर हम रसोई संभालते हैं और इधर कलम. अपनी जिंदगी कुछ दो हिस्सों में बंट गई है. दिल्ली आकर मियां की याद सताती है और उधर काम के बगैर दिल बैठा जाता है. अभी तक तो तराजू के दोनों पलड़े बराबर ही चल रहे हैं. काम करने वाली और दिल्ली में रहने वाली जैसी शर्तें तो भई हमने निकाहनामे के साथ लिखत-पढ़त में मंजूर करवा ली थीं.

वैसे, ऐसे समझौते का यानी विजिटिंग वाइफ होने का अपना ही मजा है. रिश्ते में दिलकशी और प्यार बना रहता है. एक-दूसरे के साथ वक्त कम गुजरता है. लेकिन खूब गुजरता है. हमारे खयाल में मियां हर वक्त बीवी के साथ हो तो एक-दूसरे की कदर नहीं होती, चिड़चिड़ापन आ जाता है. इससे होशियार रहना चाहिए. और एक बात तो तय है, शादी के बाद औरत को अपनी नौकरी या काम छोड़ना नहीं चाहिए. काम में बड़ा सुकून है. अगर काम करते रहो और फिर छोड़ो तो खालीपन महसूस होता है, जो किसी और बात से नहीं भरता औरत की आमदनी भी बनी रहती है. मियां से चार पैसे कम ही हों लेकिन कमाने की क्षमता, स्वाभिमान और औरत का आत्मविश्वास बना रहता है.

खैर, हम कहां अपने किस्से ले बैठे. दिल्ली में हम और सावन साथ-साथ आए. ठंडी हवाओं और वर्षा की बूंदों ने हमारा स्वागत किया. मौसम इतना हसीन कि एक बार फिर इश्क करने को जी चाहा. हमने बेसन की रोटी और गुलगुले खाकर दिल बहला लिया.

हम मियां के घर से अपने घर आने के साथ ही गुजरी हुई खबरें सुनने और पढ़ने के लिए बेचैन रहते हैं.

सुना, महाभारत की दो कड़ियां बाकी थीं. यह सोच-सोचकर लोग बहुत उदास थे. बाकी का हिस्सा हमें देखने को मिल गया. जनता तो इतवार के रोज नौ बजे न जाने क्या करेगी लेकिन बी.आर. चोपड़ा ने अपनी नई कथाएं दूरदर्शन में मंजूरी के लिए जरूर दे दी होंगी.

हमारे खयाल से 'महाभारत' की कामयाबी में सबसे ज्यादा हिस्सा डॉ. राही मासूम रजा का है. उन्होंने अपने शब्दों से जादू भर दिया. शायद अब अगली पीढ़ी से जब पूछा जाएगा कि 'महाभारत' किसने लिखा तो वेदव्यास के बजाए जवाब मिलेगा कि डॉ. राही मासूम रजा ने.

टीवी ने लोगों में एक और नया शौक पैदा कर दिया है. जिधर जाओ फुटबाल का जिक्र, माराडोना की तस्वीरें, हिंदुस्तान में भी जवान लड़कियों के कमरों में सज गईं. शर्तों का जोर था. जुएबाजी में यहां कई लोग लुट गए और कई बन गए. कई मियां-बीवी के झगड़े भी हुए. इतनी रात गए जब टीवी चलेगा तो बीवी तो भई मियां पर चिल्लाएगी ही. बच्चे भी टीवी से चिपके रहते हैं. यही शुक्र कि इस बीच स्कूल की छुट्टियां थीं. वैसे, टेलीविजन हमारे मुल्क में खेलकूद की दिलचस्पी में इंकलाब ले आया. हमारी अम्मां रोटी पकाते-पकाते माराडोना का पेनॉल्टी गोल देखने बैठ गईं. कल रात जब जर्मनी के हक में खेल जा रहा था तो नमाज पढ़ने की दरी बिछाकर रेफरी को कोसने लगीं. दिल्ली में इस खेल के शौक का तो यह हाल था कि घरों में बाकायदा दावतों का सिलसिला जारी रहा, जहां सब लोगों ने मिल-बैठकर खेल देखा. होटलों के शराबखानों में भी बड़े टीवी का इंतजाम था. इस खेल से लोगों ने एक नए देश का नाम भी जाना. वह मुल्क है कैमरून. देखा जाए तो हिंदुस्तान का खेलकूद में कितना बुरा हाल है. क्रिकेट के अलावा खेलकूद के मैदान में हमारा दुनिया में कहीं नामोनिशान नहीं.

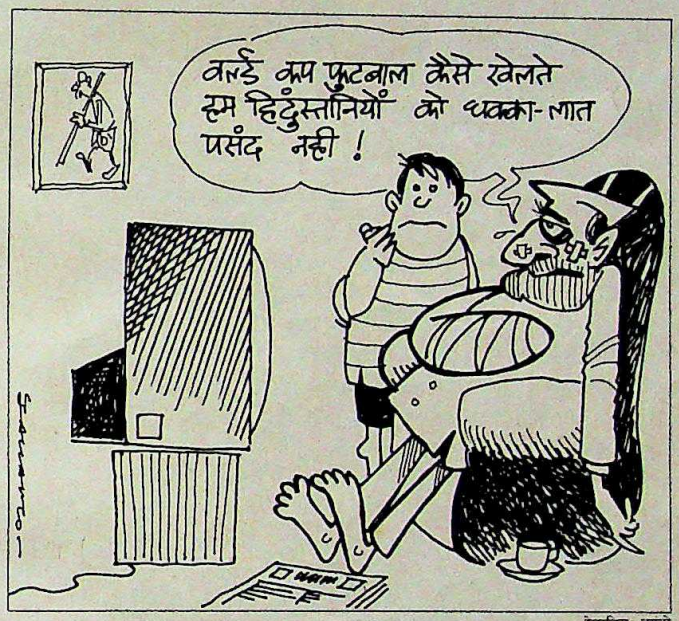

रेखाचित्र : जयंती

क्रिकेट के जिक्र से याद आया कि हिंदुस्तान की टीम टेस्ट मैच के लिए इंग्लैंड गई हुई है. इस फुटबाल के चक्कर में तो सब लोग यह भी भूल गए. दूरदर्शन ने फुटबाल प्रतियोगिता के लिए जो कमेंटेटर रखा था, वह कुछ मुनासिब-सा नहीं लगा. उसकी बातें कुछ ऐसी ही थीं जैसे लाला अमरनाथ ने हिंदुस्तान-पाकिस्तान मैच के दौरान कहा था, "या तो हिंदुस्तान जीतेगा या पाकिस्तान, या फिर मैच बराबर रहेगा."

क्रिकेट, फुटबाल और 'महाभारत' के अलावा सुना कि राजीव गांधी रेल यात्रा पर निकल गए, रेखा ने मुकेश को छोड़ दिया, देवीलाल मुहम्मद बिन तुगलक की तरह अपनी सल्तनत लेकर दक्षिण भारत चले गए. उनके साथ वी.पी. सिंह विरोधी उनकी 'फुटबाल टीम' भी पहुंची. खुद को खेती वाला बताकर हेगड़े भी उनकी टीम में एक्स्ट्रा बनकर शामिल हो गए. फर्क सिर्फ यह कि तुगलक अपने दौर से आगे चलता था और वे पीछे.

इस बीच सरकार द्वारा खर्च कम करने की कोशिश और अनेक मंत्रियों के विदेश यात्रा पर निकलने की खबरें भी आईं.

खैर, आगे-आगे देखिए होता है क्या!

—सादिया देहलवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारिश

बादल पर बोली

उत्तरी राजस्थान के थार रेगिस्तान में जुए का अनूठा रूप

उत्तरी राजस्थान के थार रेगिस्तान पर जब बादल मंडराते हैं तो बीकानेर के बड़ा बाजार की गली चाय-बाटी में एक अलग किस्म की चहलपहल शुरू हो जाती है. कम वर्षा वाले इस क्षेत्र में बादल आम तौर से उजले और छिटपुट होते हैं. परंपरा और पैसे दोनों के लिहाज से धनी इस शहर की यह गली ऐसे समय सफेद कुर्ता-धोती पहने लोगों की गहमागहमी से गुलजार रहा करती है. बादलों और लोगों की गहमागहमी का यहां अटूट संबंध है. आकाश में आंख-मिचौली खेलते बादलों के साथ ही लोग बीकानेर में दांव लगाने लगते हैं. वर्षा होगी या नहीं, इसी पर भाग्य आजमाया जाने लगता है. इन दोनों का इतिहास एक-सा है. कभी धूप-छांह तो कभी सुख-दुख.

कानूनन यह जुर्म है. यही वजह है कि कीचड़ भरी और बदबूदार इस गली के बांकुरे किसी भी नए चेहरे को देखते ही संशंकित हो उठते हैं. पर शहर में यह धंधा खूब चलता है. मामूली फुहार या बिजली की हल्की चमक या फिर बादलों की सुदूर गर्जना से सैकड़ों लोग दांव जीतने के उन्माद में यहां दौड़े चले आते हैं. इसी गली में उम्रदराज हुए, 68 वर्षीय मोहन श्रीमाली के अनुसार, "एक वक्त था जब हजारों लोग रात के दो बजे बादलों की गरज सुनकर यहां भागे चले आते थे. अब तो लोग पुलिस से कुछ डरते हैं." यह सच है पर पुलिस के अक्सर पड़ते छापों के बावजूद सट्टे का खेल बाकायदा जारी है. सब कुछ बादलों पर निर्भर है. कभी तो एक दिन में यहां लाखों के वारे-न्यारे हो जाते हैं, तो कभी दांव की रकम कुछ हजार तक ही पहुंचती है. हिसाब-किताब के लिए यहां किसी को 'पर्सनल' कंप्यूटर या मामूली कैल्कुलेटर की जरूरत नहीं होती. उंगलियों के इशारे और विश्वास भर से दांव लग जाया करते हैं. श्रीमाली गर्व के साथ कहते हैं, "यह बंबई के दलाल स्ट्रीट से किसी भी मामले में कम नहीं है. चिट्ठी-पत्री के बिना ही यहां करोड़ों का सौदा होता है."

मानसून पर सट्टा लगना वैसे तो भारत में कोई नई बात नहीं. लेकिन और जगहों से अलग करने वाली बात यह है कि बीकानेर देश के सबसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में से है. इस साल भी हालांकि बाकी राजस्थान में अप्रत्याशित रूप से भारी बारिश के कारण एक के बाद दूसरा शहर बाढ़ की चपेट में आता गया पर पिछले पखवाड़े तक बीकानेर को सामान्य वर्षा के मुकाबले एक-चौथाई हिस्सा भी नसीब नहीं हुआ था.

वर्षा की इस कदर अनिश्चितता के मद्देनजर बीकानेर के सट्टेबाजों ने अपने ही तरीके ईजाद कर रखे हैं. एक दांव तो फुहार पर लगता है. बड़ा बाजार के किसी मकान की छत पर बालू से भरी एक प्लेट रख दी जाती है, जहां एक पंच जिसे हाल के फुटबाल बुखार के बाद अब 'रेफरी' कहा जाने लगा है, बैठकर अपना फैसला देता है. बरसात की फुहार के बाद अगर प्लेट में पानी की 21 बूंदें गिन ली जाती हैं तो दांव का फैसला हो जाता है. शर्त यह है कि बूंदें एक बार की बारिश में ही जमा हों. प्लेट में आवश्यक बूंदों के बिना ही अगर वर्षा थम जाए तो प्रतिकूल फल की घोषणा कर दी जाती है और बालू बदल दी जाती है. दूसरे तरह का दांव बौछार वाली वर्षा में लगा करता है. इसमें तेल का एक खाली कनस्तर लोगों के भाग्य का फैसला कर देता है. शर्त यह है कि कनस्तर में एक बार की वर्षा से ही छह औंस पानी इकट्ठा हो जाए. अगर छह औंस जमा होने से पहले ही वर्षा रुक जाए तो कनस्तर को खाली कर अगली बाजी की तैयारी शुरू हो जाती है. तीसरा और सबसे अजूबा दांव नाली में पानी बहने का होता है. इसके लिए बाजार की घुमावदार गलियों के बाहर एक जगह चुन ली जाती है. नाली में बहते पानी को इस जगह तक पहुंचना होता है, तभी सट्टेबाजों के भाग्य का निर्णय हो पाता है. अगर पानी इस जगह से आगे बह निकले तो उन लोगों की हार मानी जाती है जिन्होंने भारी वर्षा के उलट दांव लगाया होता है. लेकिन इस वर्ष जून तक बीकानेर में हुई केवल 21 मिमी वर्षा को देखते हुए कई लोग इस बाजी से कतरा रहे हैं.

मामूली फुहार या बिजली की हल्की चमक या बादलों की सुदूर गर्जना से सैकड़ों लोग दांव जीतने की आशा में यहां दौड़े चले आते हैं

दांव पर लगी भारी रकम

रेखाचित्र जयंतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मद्देनजर ये तरीके पुराने और त्रुटियों से परिपूर्ण लगते हैं. लेकिन सट्टेबाज बिरादरी ने यह इंतजाम कर रखा है कि बेईमान लोग इसका फायदा न उठाएं. रकम जीतने के लिए अगर कोई संघ बनाने की कोशिश करे तो उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है. इस सट्टा बाजार के पुराने खिलाड़ी नरेश डागा के शब्दों में, "हमारे तरीके पूरी तरह सुरक्षित हैं. और जो कोई भी यहां चालाकी करने आता है, उसे चलता करने में हमें कोई वक्त नहीं लगता. यह एक कला है और कलाकारों को ही यहां आने की अनुमति है."

लेकिन कई दूसरे लोग मानते हैं कि यह विज्ञान का ही सीधा-सादा मामला है.बुजुर्गों को बादल पढ़ने की कला में निपुण माना जाता है. वे हवा और बादलों की गति को पढ़ लेते हैं. सारा दिन आकाश की ओर सिर उठाए ये लोग साफ बता देते हैं कि फलां सफेद बादल कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर बरस चुका है या फिर यह कि फलां भूरा बादल बहुत जल्द बरस सकता है. मौसम विभाग की शब्दावली को यहां के लोगों ने वर्षों के अनुभव से खुद ही सीख लिया है. श्रीमाली बताते हैं कि जब पुरवा नागौरन हवा (नागौर से उठने वाली पश्चिमी हवा) से टकराती है तो वर्षा की संभावनाएं बेहतर हो जाती हैं. लेकिन वर्षा तभी होती है जब आकाश सुबह में साफ हो ताकि आवश्यक उमस बन सके. श्रीमाली कहते हैं, "आपके कंप्यूटर और रॉकेट (उपग्रह) नाकाम हो सकते हैं लेकिन हमारी गणना कभी नहीं." और इस सारे जोड़-घटाव के लिए सट्टेबाज बिरादरी के पास केवल एक तिकोना केसरिया झंडा है जो मौसम यंत्र का काम देता है.

सट्टे के धनी इस माहौल का असर गली में भी साफ देखा जा सकता है. चाय-नाश्ते की कई दर्जन दुकानें गली चाय-बाटी में खूब अच्छा धंधा कर लेती हैं. जीतने वाले अपनी मंडली को गरम कचौड़ी, पकोड़े से यहीं नवाजते हैं. कई लोग तो यूं ही तमाशबीन बनकर माहौल का जायका लेते हैं. रेलवे कर्मचारी डी.डी. भट्टर हर शाम दफ्तर से छूटते ही यहां आकर दोस्तों के साथ चाय पीते-बतियाते हैं. उनके कथनानुसार, "दिलचस्पी लेने लगो तो यह एक नशे की तरह है. हींग लगे न फिटकरी, मजा चोखा आता है. फुटबाल या टेनिस देखने के लिए टेलीविजन खरीदना जरूरी है लेकिन यहां तो बस चाय खरीदने से ही काम चल जाता है. इसके सामने और किसी खेल की क्या बिसात."

बरसात के इस सट्टे की अपनी-अपनी कथाएं और किंवदंतियां हैं. बड़े-बूढ़े कहा करते हैं कि 1968-69 में मई के महीने में भी खूब जोर का मेंह पड़ा था और जिन लोगों ने एक रु. पर एक हजार रु. की बोली लगाई थी वे भी जीत गए. एक बुजुर्ग ने कहा, "जाने कहां से आंधी आ गई और अचानक पानी बरसने लगा. हमने तो पहली बार ऐसा देखा. सब भगवान की माया है." एक वयोवृद्ध सज्जन ने कहा, "पिछले दो-तीन वर्षों में जब राजस्थान भयंकर सूखे की चपेट में रहा तब लोगों का एक रु. पर एक पैसे का सट्टा भी डूब गया."

यह एक अनोखी कला है.सट्टेबाजों के तरीके पूरी तरह सुरक्षित हैं. जो भी चालाकी करता है उसे चलता कर दिया जाता है

गली चाय बाटी में रहने वाले अनेक दुकानदारों का कहना है कि सट्टे की प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है. हां, अब बीकानेरी व्यापारी जो बाहर जाकर बस गए हैं, अभी भी टेलीफोन से सट्टा लगाते हैं.

दिलचस्प बात यह है कि बहुत कम वर्षा वाले इस क्षेत्र में ऐसी परंपरा अब तक कायम है. लेकिन सबसे बड़ा विरोधाभास तो यह है कि बादल उमड़ते ही आम लोगबाग तो घरों की ओर दौड़ते हैं लेकिन बीकानेर के दांवप्रेमी गली चाय-बाटी की ओर चल पड़ते हैं. ऐसे में वर्षा के पक्ष में बाजी लगाने वालों की चांदी हो जाती है और सूखे दिन का अंदाजा लगाने वालों को निराशा हाथ लगती है. पर आकाश में बादल हों तो गली चाय-बाटी में सट्टेबाजों की बाढ़ जरूर आती है.

—**पंकज पचौरी**, बीकानेर में

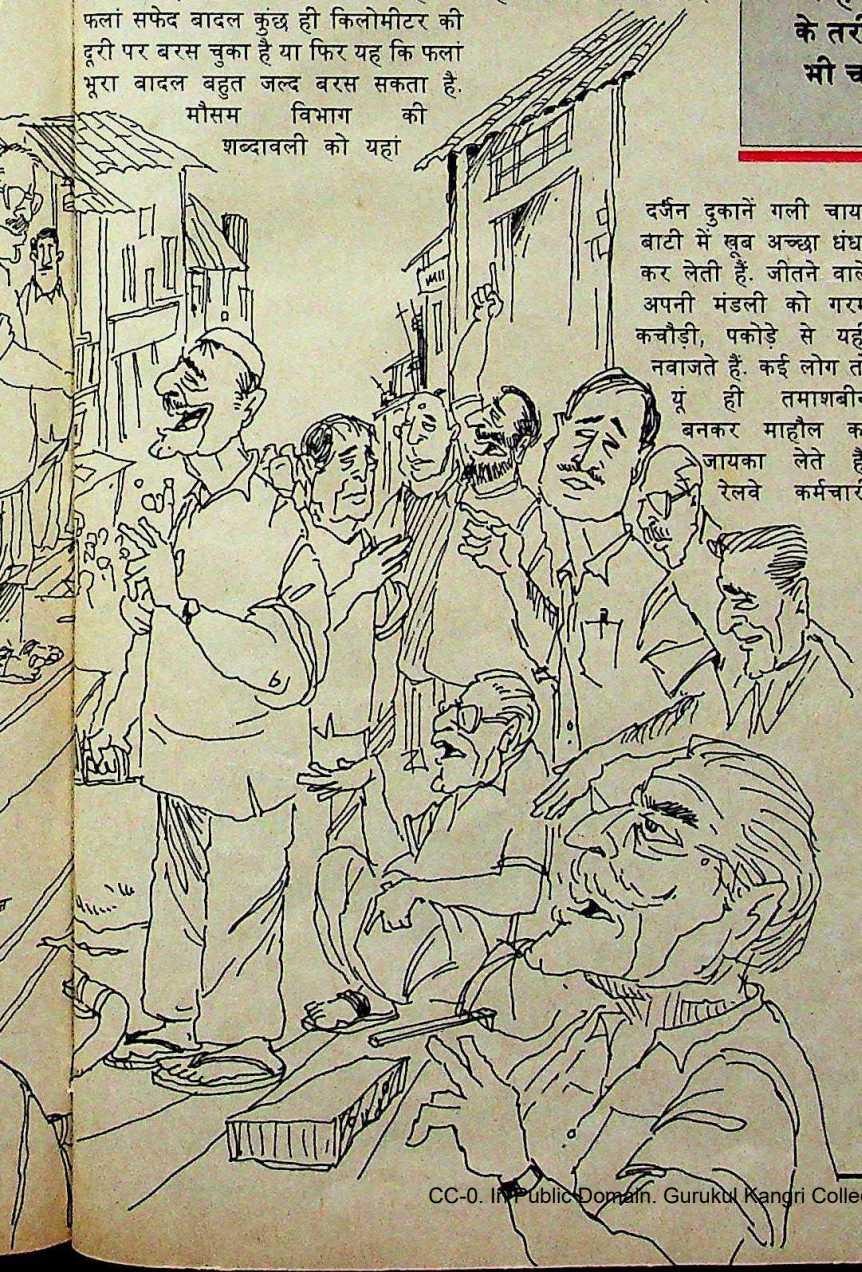

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिकेट

देखना है जोर कितना...

भारतीय टीम में अभी भी प्रयोगवाद जारी है

अभी बहुत दिन नहीं हुए जब इंग्लैंड पहुंची भारतीय क्रिकेट टीम को हर आदमी हल्का मानकर उस पर खास ध्यान नहीं देता था. लेकिन इसी टीम ने जब

सभी कार्टून: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

अजहरुद्दीन तेज गेंदबाजी के सामने अभी भी बढ़िया नहीं खेल पाते और गावसकर के बिना पूरी बल्लेबाजी टिक नहीं पाती

श्रृंखला 1-1 से बराबर करने के लिए ओवल टेस्ट की चौथी पारी में 400 से अधिक रन बनाने का असंभव-सा लगता काम कर दिया तो अखबारों ने मोटी-मोटी सुर्खियों में गावसकर का गुणगान किया. भारतीय क्रिकेट का यह एक सुनहरा अध्याय है. पिछले पखवाड़े जब मुहम्मद अजहरुद्दीन के नेतृत्व वाली 'प्रायोगिक' टीम ने अपना इंग्लैंड दौरा शुरू किया तो उसे भी पुराने हिसाब से हल्का ही माना गया.

अगर इस टीम को अपने आलोचकों का मुंह बंद करना है तो 1982 के दौरे जैसा चमत्कार करना होगा. लेकिन अजहरुद्दीन के नेतृत्व में दूसरे विदेशी दौरे पर निकली इस टीम पर नजर डालने से साफ हो जाता है कि इसके तरकश में तीरों की भारी कमी है. अब तक विदेशों में न खेल पाए और बिना धार वाले उनके स्पिनर तेज पिचों पर बहुत कुछ कर पाएंगे इसमें संदेह है. तेज गेंदबाजी में भी कपिलदेव की चमक अब फीकी पड़ गई लगती है और बाकी सभी ब्रिटेन के माहौल में एकदम नए हैं. टीम की बल्लेबाजी किसी पहेली जैसी हो गई है. फिर टीम गावसकर की कमी के असर से अब तक उबर नहीं पाई है.

अजहरुद्दीन की टीम अब तक जांचे-परखे न गए लेग स्पिनरों पर बहुत निर्भर कर रही है और श्रीकांत की कमी इसे बहुत खलेगी जो सलामी बल्लेबाजी को कुछ हद तक संभाल सकते थे. उनकी जगह चयन-कर्ताओं ने 'पार्ट टाइम' सलामी बल्ले-बाजों डब्ल्यू.वी. रमन और मनोज प्रभाकर को नवजोत सिंह सिद्धू का जोड़ीदार बनाने का जुआ खेला है. अगर प्रभाकर बल्लेबाजी और गेंदबाजी, दोनों ही की शुरुआत करते हैं तो उन पर जरूरत से ज्यादा बोझ पड़ेगा. रवि शास्त्री से भी शुरुआत कराई जा सकती है.

मध्य क्रम की बल्लेबाजी में दिलीप वेंगसरकर पर भी भारी दबाव रहेगा. अब वेंगसरकर को लार्ड्स में अपना चौथा

कपिलदेव की गेंदबाजी पहले जैसी नहीं रही. प्रभाकर और वासन अपनी धार कायम नहीं रख पाए तो उन पर दबाव बढ़ जाएगा

शतक जमाकर विश्व रिकार्ड बनाने के साथ ही चयनकर्ताओं के मुंह पर करारा तमाचा मारने का काम करना चाहिए. तेज पिचों पर अजहर की क्षमता के बारे में जो संदेह उठाए जाते हैं, खुद उन्हें भी उन आशंकाओं को दूर करना है. और टीम के 'नन्हे-मुन्ने' सचिन तेंडुलकर पर भी सबकी नजरें लगी हैं. इस 17 वर्षीय किशोर से काफी उम्मीदें हैं और ब्रिटिश प्रेस ने तो उनसे गैरी सोबर्स के 365 नॉट आउट के रिकार्ड को तोड़ने

बिशन सिंह बेदी अपनी कप्तानी के दिनों में बहुत अच्छी रणनीति बनाने के लिए नहीं जाने गए. आज वे अकेले ही पूरी टीम में प्राण फूंकने का काम कर रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उम्मीदें भी बांध रखी है. वे जो कुछ भी करेंगे, उस पर सबकी नजर रहेगी. लेकिन सचिन पर दबाव तो रहेगा ही, उसमें उतावलापन भी है.

भारतीय टीम हैंपशायर से हार गई लेकिन बाद में केंट को सात विकेटों से परास्त भी किया. शुभ समाचार यह है कि एक शतक ठोंकने के साथ ही संजय मांजरेकर ने अपना खोया फॉर्म पा लिया है और वेंगसरकर ने भी दो अर्धशतक लगाए हैं. तेंडुलकर भी जम रहे हैं. लेकिन एक मैच में कुंबले को छोड़कर बाकी सभी जगह भारतीय गेंदबाजों की ठुकाई हो रही है.

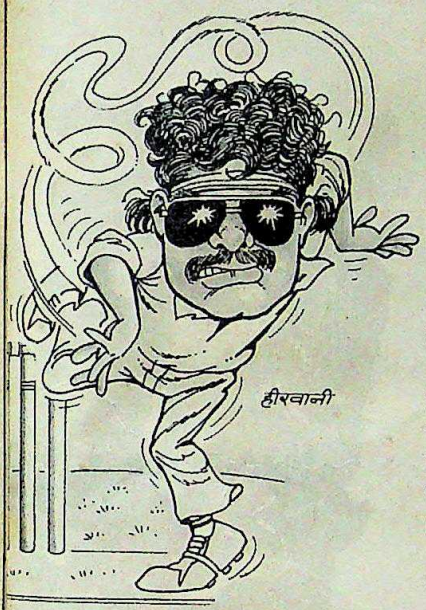

हीरवाणी अगर कोई जादू नहीं दिखाएंगे तो चार लोगों की स्पिन-मंडली खानापूरी भर होकर रह जाएगी

फिर भी टीम को संभालने वाले लोग आशावादी हैं. अजहर कहते हैं, "पर्याप्त समय मिले तो यह टीम चमत्कार कर सकती है." टीम के मैनेजर बिशन सिंह बेदी इस टीम की तुलना कैरी पैकर शृंखला में प्रमुख खिलाड़ियों के चले जाने के बाद बनी ऑस्ट्रेलिया की टीम से करते हैं; "फिर से टीम खड़ी करने में उन्हें थोड़ा वक्त लगा और मैं भी थोड़ा और समय ही मांग रहा हूं." लेकिन अगले छह हफ्तों में अपनी काबिलियत साबित करने से अधिक का समय उन्हें शायद ही मिल पाए.

—सलिल त्रिपाठी

टेनिस

खुशनुमा खबर

पाएस ने जूनियर विंबलडन जीता

कई महीनों से बुरी खबरें सुनने के बाद एक ऐसी खबर मिली है जिस पर भारतीय खेलप्रेमी खुशियां मना सकते हैं. कलकत्ता के 17 वर्षीय सांवले लिएंडर पाएस ने अपनी क्षमता, आलोचकों और विंबलडन के वरीयता क्रम में अपने 11वें क्रम को झुठलाते हुए विंबलडन का जूनियर खिताब जीता. ऐसा करने वाले वे तीसरे भारतीय हैं. रामनाथन कृष्णन (1954) और रमेश कृष्णन (1979) पहले यह गौरव पा चुके हैं.

जीत पर उन्हें सबसे पहली बधाई रामनाथन कृष्णन ने दी, "जूनियर विंबलडन विजेताओं की मंडली में शामिल होने पर उनका स्वागत है." डेविस कप में भारत की कप्तानी कर चुके नरेश कुमार ने, जो विंबलडन में मौजूद थे, इसे "भारतीय टेनिस की महान घटना" बताया.

पहले तो ऐसा लगा कि लिएंडर पाएस जिस तरह जनवरी में मेलबोर्न में ऑस्ट्रेलियाई ओपन जूनियर के फाइनल में हार गए थे उसी तरह विंबलडन में भी हार जाएंगे. पहले सेट में 5-0 की बढ़त लेने के बाद वे पिछड़ने लगे और दक्षिण अफ्रीका के मार्कस ओडरूस्का ने स्कोर 5-5 कर लिया. फिर लिएंडर ने कुछ शक्तिशाली फोरहैंड शॉट लगाए और 7-5 से पहला सेट जीत लिया. लेकिन दूसरा सेट वे 2-6 से हार गए. तीसरे सेट में स्कोर 3-3 हो जाने के बाद उन्हें और जोर लगाना पड़ा और इसे 6-4 से जीतने के साथ ही उन्होंने अपना पहला बड़ा खिताब जीत लिया.

छह साल की उम्र में ही लिएंडर ने अपने ओलंपियन पिता वेस पाएस की देखरेख में टेनिस रैकेट उठाया. वेस म्युनिख ओलंपिक के भारतीय हॉकी टीम के सदस्य थे. लेकिन मद्रास स्थित ब्रिटानिया-अमृतराज ट्रस्ट की टेनिस अकादमी में पिछले पांच वर्षों में प्रशिक्षण पाकर ही लिएंडर उम्दा खिलाड़ी के रूप में उभरे. उनकी जीत से निहाल इस अकादमी की निदेशक और अमृतराज बंधुओं की मां मार्गरेट अमृतराज कहती हैं, "हम बहुत खुश हैं. लिएंडर साबित कर रहा है कि देश में इस खेल को सुधारने का उपाय टेनिस स्कूल ही है."

इस अकादमी के करार पर दस्तखत करने के बाद से छरहरे लिएंडर ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. 1987 तक वे सब-जूनियर वर्ग में अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करते हुए राष्ट्रीय सब-जूनियर चैंपियन बने और ऑल इंडिया हार्ड कोर्ट प्रतियोगिता भी जीती. फिर अंतरराष्ट्रीय मैचों ने उनका खेल निखारा और अकादमी के प्रशिक्षक डेविड ओ मिएरा ने उन्हें खेल की बारीकियां समझाईं. इससे उनका फोरहैंड खेल मजबूत हुआ और वे पूरे मैदान को तेजी से कवर कर पाने में कामयाब हुए.

शक्तिशाली शॉट और नेट के पास पहुंचकर करारी वॉली लगाना लिएंडर की विशेषताएं हैं. लेकिन जैसा कि ओ मिएरा, जो विंबलडन में भी मौजूद थे, कहते हैं,

प्रमोद पुष्करणा

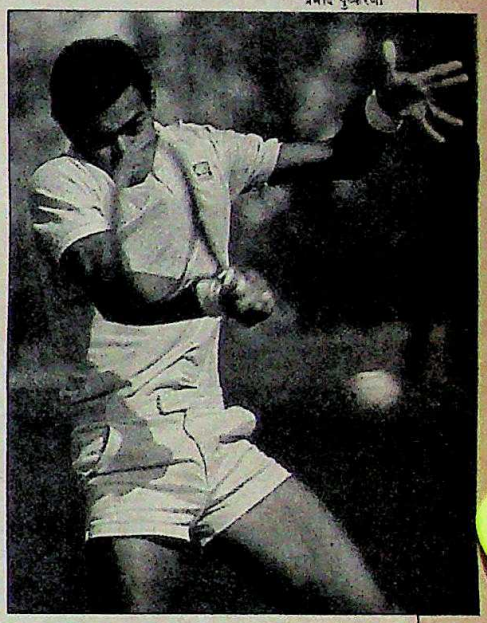

पाएसः अंतरराष्ट्रीय टेनिस टोली में

"उनके सर्विस करने के स्टाइल और लय में सुधार की जरूरत है जो सीनियर स्तर की प्रतियोगिताओं में उतरने से ही सबसे अच्छी तरह सुधर सकेगी."

वेस पाएस कहते हैं, "उसने अपने बैक हैंड खेल में सुधार किया है और यहां की परिस्थितियों को देखते हुए तो अगर वह 23 वर्ष की उम्र तक पूरे निखार पर आ जाता है तो भी अच्छा ही होगा."

फिर भी आधुनिक टेनिस नौजवानों का ही खेल है. यहां किशोर-किशोरियां कोर्ट पर धमाके करते हैं और लखपति-करोड़पति बन जाते हैं. विंबलडन जूनियर खिताब जीतकर लिएंडर भी अंतरराष्ट्रीय टेनिस की उस टोली में पहुंचेंगे जहां 'जान खपाऊ' प्रतिद्वंद्विता है और वहां वही टिक पाते हैं जिनमें सचमुच का दम होता है.

—अमरनाथ के. मेनन, ब्यूरो रिपोर्ट के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पुरस्कार

अतीत का सम्मान

उर्दू जबान को बल मिला

अस्तित्व की दौड़ में लड़खड़ाकर चलने वाली और दिन-ब-दिन अपने पाठकों से हाथ धोती चली जा रही उर्दू जबान के लिए बीता पखवाड़ा बहुत खुशकिस्मती भरा रहा. भारतीय ज्ञानपीठ ने 1989 के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार के लिए उर्दू लेखिका कुर्रतुल-ऐन-हैदर के नाम की घोषणा करके उन गैर-उर्दू भाषी साहित्य प्रेमियों की इस गलतफहमी को दूर कर दिया कि सआदत हसन मंटो, कृष्ण चंदर, राजेंद्र सिंह बेदी और फिराक गोरखपुरी जैसे दिग्गजों के बाद आधुनिक भारतीय उर्दू साहित्य का चमन शायद वीरान ही रहने जा रहा है.

1969 में फिराक गोरखपुरी को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किए जाने के बाद यह पहला मौका है जब किसी उर्दू साहित्यकार को 'भारतीय नोबेल' की हैसियत वाले पुरस्कार के लिए चुना गया है. अब तक 25 बार घोषित ज्ञानपीठ पुरस्कार हिंदी और कन्नड़ साहित्यकारों को चार-चार बार, बांग्ला और मलयालम को तीन-तीन बार, उर्दू, ओडिया, मराठी, गुजराती और तेलुगु को दो-दो बार और असमिया, तमिल और पंजाबी को एक-एक बार दिया जा चुका है. दो बार यह पुरस्कार दो-दो भाषाओं को संयुक्त रूप से दिया गया.

हैदर को यह पुरस्कार 1969 से 1983 के बीच प्रकाशित उनकी रचनाओं के लिए दिया गया है जिनमें उनके दो उपन्यास 'कारे-जहां दराज़ है' और 'आखिरे शब के हमसफर' तथा एक कहानी संग्रह 'रोशनी की रफ्तार' प्रमुख हैं. इनमें से पहले उपन्यास को उर्दू का सबसे पहला अकाल्पनिक उपन्यास माना जाता है. आत्मकथा शैली में लिखे गए इस उपन्यास में हालांकि जिला बिजनौर में रहने वाले उनके सैयद पूर्वजों की कहानी कही गई है लेकिन इस कहानी के माध्यम से असल में उन्होंने भारतीय मुस्लिम समाज के सांस्कृतिक माहौल का नक्शा खींचा है. इस उपन्यास में जहां एक ओर सामाजिक ऊहापोह, आत्मबोध के आकस्मिक स्फुरण और मानव संबंधों की अद्भुत अनंतता का चित्रण किया गया है वहां 'आखिरे शब के हमसफर' में बदलते राजनैतिक माहौल के साथ सामाजिक मूल्यों में आने वाली गिरावट के क्रम को भी बखूबी पेश किया गया है.

1967 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1969 में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और 1985 में गालिब पुरस्कार से सम्मानित हो चुकीं हैदर ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा की एक महत्वपूर्ण घोषणा 1959 में अपने उपन्यास 'आग का दरिया' के माध्यम से की थी. उस समय वे पाकिस्तान में बसी हुई थीं. प्राचीन समय से लेकर मौजूदा भारतीय उपमहाद्वीप के चारित्रिक विकास का लेखा-जोखा पेश करने वाले उनके इस उपन्यास ने सीमा के दोनों ओर के उर्दू पाठकों में उन्हें काफी लोकप्रिय बनाया. दो साल बाद भारत में आ बसने पर 1965 में उनके पहले कहानी संग्रह 'पतझड़ की आवाज़' ने उनकी लोकप्रियता में चार चांद लगा दिए. इस कहानी संग्रह को 1967 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया. 1986 में प्रकाशित उनके नए उपन्यास 'गर्दिशे रंगे चमन' में भी पिछले 200 साल के इतिहास को कहानी का आधार बनाया गया है.

हैदर और उनकी कृतियां: सम्मानित

मैं ह्यूमनिस्ट हूं. बार-बार मुझे यह सवाल सताता है कि आदमी सुकून के साथ एक-दूसरे के साथ क्यों नहीं रह पाता''

1927 में अलीगढ़ में जन्मीं हैदर ने अपनी अब तक की साहित्य यात्रा में 5 उपन्यास, 4 उपन्यासिकाएं और 4 कहानी संग्रह रचे हैं.

हालांकि भारत और पाकिस्तान में उर्दू साहित्य की संभावनाओं की तुलना करते हुए वे मानती हैं कि सरकारी प्रश्रय, सामाजिक-भाषायी वातावरण और समाचार जगत की भाषा होने के कारण पाकिस्तान में उर्दू साहित्यकार के लिए संभावनाएं बेहतर हैं. लेकिन विभाजन के बाद 1947 से 1961 तक पाकिस्तान और लंदन में रहने के बाद स्थायी तौर पर भारत लौट आने के पीछे उनका अपना ठोस तर्क भी है. 'इंडिया टुडे' के साथ बातचीत में उनका कहना था, ''भारत मेरा अपना देश है. यहां मुझे घर जैसा लगता रहा. इसलिए मैं वापस आ गई.'' रचनाओं में बार-बार इतिहास को पृष्ठभूमि की तरह इस्तेमाल करने के पीछे उनके अपने कारण हैं. वे कहती हैं, ''मैं ह्यूमनिस्ट हूं. बार-बार मुझे यह सवाल सताता है कि आदमी एक-दूसरे के साथ सुकून के साथ क्यों नहीं रह सकता? और हर बार इस सवाल का जवाब ढूंढने मैं इतिहास में चली जाती हूं. यही मुझे लिखने की प्रेरणा भी देता है.''

इस पेचीदा सवाल का जवाब हैदर को चाहे जब मिले, फिलहाल ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने से उन लोगों की आशाओं को नया जीवनदान मिला है जो उर्दू साहित्य की गिरती पाठक संख्या से चिंतित हैं.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत चालू है

सब जानते हैं. हर अच्छी चीज का अंत लाजमी है. तुगलक का राज नहीं रहा. अंग्रेजों का खत्म हो गया. राजीव का चला गया. मुल्क में मुद्दों का चौटाला है. दुनिया में साम्यवाद की घटती साख का घोटाला. हमने मन को दर्शन से बहलाया. पर उदासी कम नहीं हुई. फलसफे के फल से पेट नहीं भरता है.

"अब क्या होगा?" हमने आततायी से सवाल किया.

"क्या बात है?" हमारी परेशानी से पड़ोसी होने के नाते वे चहके.

"बिना महाभारत कैसे कटेगा इतवार, देश का क्या होगा?"

"न भारत बदला है न वक्त रुका है," उन्होंने हमें दिलासा दिया.

"क्या दिन थे! सुबह कर्मक्षेत्र का धर्मयुद्ध देखते थे. दिन. भर गीता का स्मरण कर साग-सब्जी का जुगाड़ करते थे."

"अब टीवी पर खान-पान के विज्ञापन देखकर जीवन का स्तर सुधारिए," सलाहकार सिर्फ सही सलाह देते हैं. पर एक में अनेक का सुख कहां मिलेगा? नीति के भाषण, अनीति के काम, धृतराष्ट्र का पुत्र-मोह, शकुनि की कुटिलता, भीष्म की गंभीरता, दुर्योधन की नीचता, अभिमन्यु की वीरता, युधिष्ठिर की धर्मभीरुता, कृष्ण की चंचलता, कर्ण की दानवीरता, अर्जुन का लक्ष्य, जीवन की निस्सारता का सत्य. हर इतवार, इतनी बार. अब कहां? छोटा परदा कितना भरा-भरा नजर आता था. हमने ऊबकर टीवी बंद कर दिया. बिजली ही बचा लें.

"हम बच्चों वाला सीरियल देख रहे हैं," आततायी ने शिकायत की.

"बच्चों-सी हरकतों से कब बाज आएंगे?" पत्नी ने डांटा.

"बगैर महाभारत टीवी में धरा क्या है?" हमने सफाई दी.

"महाभारत की इतनी याद आती है तो उसके कैसेट ले लो."

"क्या फायदा! वीसीआर कहां है?"

"वीसीआर उधार पर खरीद सुविधाजनक किश्तों में कीमत चुका देना," आततायी का सुझाव आया.

"संसार भर में झोला फैलाकर उधार लेना सिर्फ सरकार को शोभा देता है. हम तो व्यक्ति हैं."

"लक्ष्य-प्राप्ति के लिए युधिष्ठिर झूठ बोलते थे. तुम भी कर्मक्षेत्र में कूद पड़ो."

"उधार उतारेंगे कैसे?"

"दुनिया-जहान में लोग फ्रिज,कार, टीवी, वीसीआर सब कर्जे पर लेते हैं. नहीं चुका तो जेल हो आना."

"रिश्तेदार जानेंगे तो थू-थू करेंगे."

"कृष्ण चुराकर मक्खन खाते थे. तुम भी कर्जा खा जाना."

रेखाचित्र: अनिल शर्मा

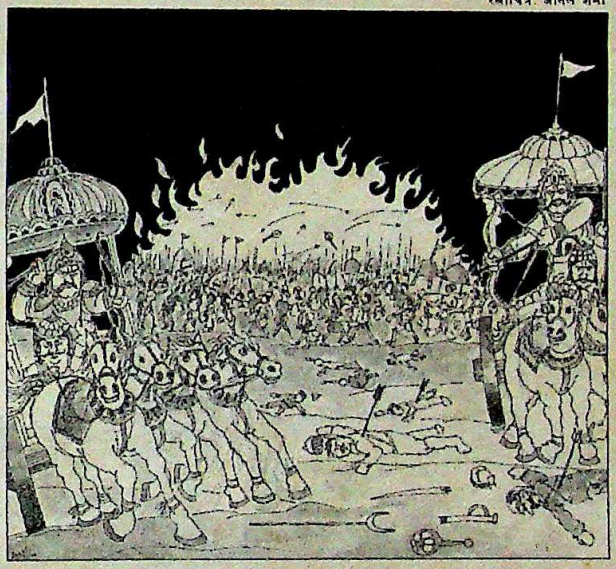

हमने किताबें चुराई हैं. उधार लेकर अखबार पढ़ा है. यह अपनी पारिवारिक परंपरा है. पर महाभारत के बावजूद हम पैसे के उधार को पाप मानने की पुश्तैनी मनोवृत्ति से नहीं उबर पाए हैं. हम पीढ़ियों की पीड़ा भुगत रहे थे कि हमारे पत्रकार मित्र आ गए—

"सुना है, टीवी पर महाभारत समाप्त होने से आप बड़े आहत हैं."

"क्या बताएं! सबेरे-सबेरे कौरव-पांडव देखने की आदत पड़ गई थी."

"किसने आपको बरगला दिया कि महाभारत जारी नहीं है."

"अभी तो आखिरी कड़ी देखी थी."

"छाया छूने के चक्कर में न पड़ें. छोटे परदे से बाहर आइए."

"वह कैसे?" हमने जानकारी चाही.

"आप अखबार पढ़ते हैं?" उन्होंने पूछा.

"मुफ्त का मिले तो जरूर पढ़ते हैं."

"फिर इस सीरियल के खत्म होने से क्यों दुखी हैं?"

हमें उनका पहेली बुझाकर अपना मजाक उड़ाना नहीं भाया. हमने झल्लाकर निवेदन किया—

"आप फालतू बातें छोड़िए. आपका समाचार पत्र महाभारत का 'शो' कर रहा है क्या?"

"आप अखबार पढ़िए तो सही. सिर्फ किरदारों के नाम का अंतर है. छोटे परदे पर महाभारत सिर्फ हर इतवार था. मुल्क के मैदान में उसका मजा हर रोज है."

हम सोचने लगे, सच ही तो है. महाभारत के काल्पनिक पात्रों को वाकई जीने के लिए नेताओं में जोरदार मार-धाड़ है. कांग्रेस के दोनों भीष्म पितामह अपने ही दल की कार्यकारिणी से गायब हैं. मामा हों न हों, शकुनि की भूमिका के एक से अधिक दावेदार हैं. एक ओर चौसर पर पांसे फेंकते बलिया के सनातन विद्रोही हैं. दूसरी ओर गांधी-नेहरू परिवार के जाने-माने वफादार. पुत्र-प्रेम की पट्टी बांधे धृतराष्ट्र का कोई प्रतियोगी नहीं है. अपने संजय हैं, अपने दुर्योधन. बयानों के तीर हैं, इस्तीफों के ब्रह्मास्त्र.

"इस भीड़ में कृष्ण कहां हैं?" हमने पत्रकार मित्र से प्रश्न किया.

"हर दल का अपना खास संपादक है. इसलिए उसे गलतफहमी है कि वही उनका कृष्ण है."

"आपके खयाल से कौरव कौन हैं और पांडव कौन?"

"गनीमत है कि वे हर पार्टी में बिखरे हुए मिलते हैं."

द्वापर हो या त्रेता या कलयुग. सियासत का महाभारत हर दौर में चालू है. जानने के लिए जरूरी है कि लोग सिर्फ देखें ही नहीं, पढ़ें भी. टीवी का कार्यक्रम फ्री है. चुराकर, उठाकर, उधार लेकर अखबार पढ़ने में भी पैसे कहां लगते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनाडा

कृपाण की लड़ाई

पारंपरिक आजादी के लिए आवाज

कनाडा में कृपाण को लेकर इन दिनों खासा बवाल मचा हुआ है. सुखदेव हुंडल नाम के एक सिख छात्र को जब 1988 में एक स्थानीय हाई स्कूल में पारंपरिक कृपाण ले जाने से रोका गया और बाद में स्कूल से निकाल दिया गया तो लोगों को अंदाज नहीं था कि यह विवाद इतना लंबा और कटु साबित होगा. बहुत जल्द इस मसले पर ओंतारियों का एक-सदस्यीय मानवाधिकार आयोग अपना निर्णय देगा. कनाडा के 2,50,000 से भी अधिक सिख एक स्वर से कृपाण रखने की आजादी के लिए आवाज उठा रहे हैं.

यह विवाद ऐसे समय में उठा है जबकि अधिकांश कनाडावासी अभी हाल के उस निर्णय को लेकर उबल रहे हैं, जिसके तहत रॉयल कनाडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) के सिख अधिकारियों को पगड़ी पहनने की छूट दी गई थी. हाल के 'गैलप' जनमत सर्वेक्षण के अनुसार करीब 68 फीसदी कनाडावासी नई नीति के खिलाफ हैं. अभी हाल में एक कनाडावासी ने टीवी खबरों में यह एलान किया था कि "अगर ये (सिख) लड़के कक्षाओं में कृपाण लेकर जाएंगे तो मैं यकीनन अपने बेटे को बंदूक देकर भेजूंगा. यही नहीं, मैं तो उसे निशाना साधना भी सिखा दूंगा ताकि कोई कसर न रहे."

दूसरी ओर सुखदेव हुंडल और 'ओंतारियो खालसा दरबार' के अध्यक्ष हरभजन सिंह पंडोरी को, जो कृपाण रखने के कारण ही स्कूल से निकाल दिए गए थे, उन स्थानीय नेताओं का समर्थन भी मिलने लगा है जो इसी साल होने वाले प्रांतीय चुनावों में सिख वोटों को अपनी ओर मोड़ने के लिए लालायित हैं. ऐसे ही एक स्थानीय नेता जिम. कैरिजिआनिस हैं, जो टोरंटो के कारबोरो-एगिनकोर्ट निर्वाचन क्षेत्र से सांसद हैं. सिख वोटों की बदौलत ही चुने गए कैरिजिआनिस उनके प्रति समर्थन जताते आए हैं. उनका मानना है कि सिख विनम्र, सहज और कानून का पालन करने वाले लोग हैं. उनके अनुसार, "कृपाण से डरने की कोई वजह नहीं है. किसी के जैकेट में छिपी बंदूक से मुझे ज्यादा डर लगेगा."

ओ' कॉनेल के मुताबिक इस विवाद का दुर्भाग्यपूर्ण अंजाम यह निकला है कि कनाडा की एकता के सामने मौजूद वास्तविक खतरों का सामना करने के बदले अनेक कनाडावासी अपनी ऊर्जा "जनसंख्या के उस गतिशील हिस्से के साथ जबान लड़ाने में गंवा रहे हैं, जो एक नए, अधिक संपन्न कनाडा की रचना में योगदान कर सकता है."

और यह सच भी है. इस विवाद के तूल पकड़ने से सिख निश्चित रूप से आहत होंगे. कनाडा में अपनी उद्यमी प्रकृति के लिए मशहूर सिखों के साथ विविध जातियों और खुले दिल वाले समाज की यह मूंछ की लड़ाई व्यर्थ सही, पर लंबी चलेगी.

—सतिंदर बिंद्रा, टोरंटो में

कुलदीप विरदी

टोरंटो के जुलूस में पंजप्यारे

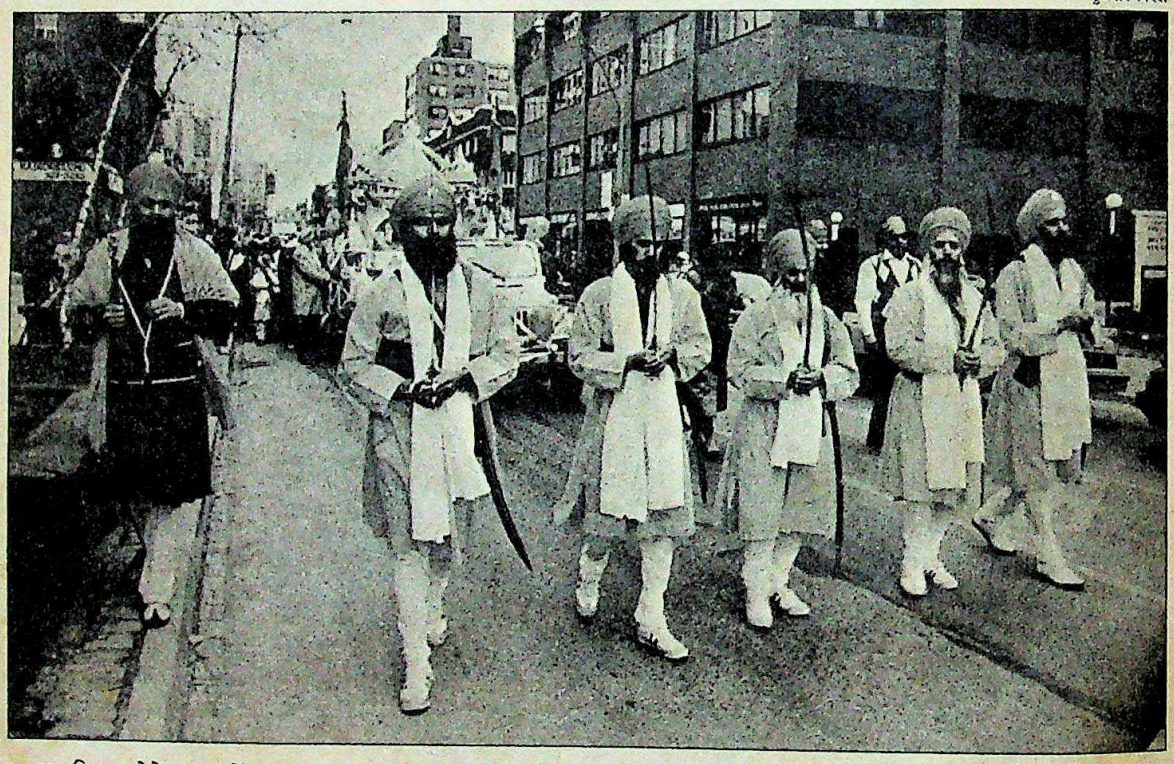

कनाडा के ढाई लाख से भी अधिक सिख कृपाण रखने की आजादी के लिए एक स्वर से आवाज उठा रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोतल में आम
माज़ा है नाम

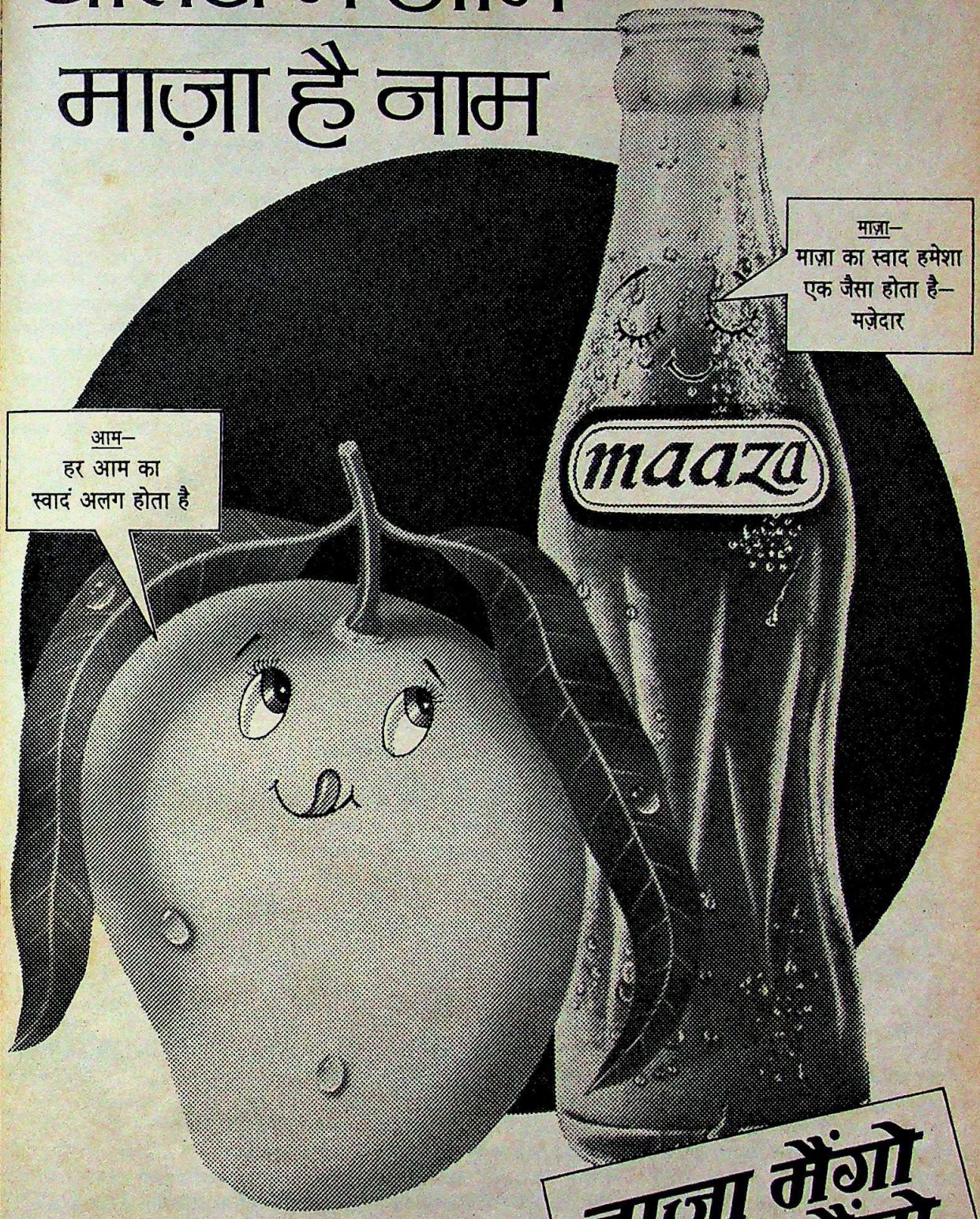

ताज़ा मैंगो माज़ा मैंगो

RADEUS/PE/MM/355/9-90-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CONTAINS MANGO PULP AND ADDED FLAVOUR

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलका पाठक

पाप

मुख्य रूप से रेडियो लेखन में संलग्न अलका पाठक का कहानी, व्यंग्य लेखन और उपन्यास में भी बराबर अधिकार है. उनकी प्रस्तुत कहानी बदलते सामाजिक वातावरण में तेजी से भोथरी होती मानवीय संवेदनाओं का बेबाक अक्स पेश करती है.

मां-----मां------मां

रात के अंधेरे को चीरती एक आवाज उभरती है दर्द भरी. कलेजे को भेद डाले ऐसी. जी एकदम धक्क! अपने बच्चे तो परमात्मा की कृपा से आंखों के सामने हैं. सुखी-स्वस्थ-सानंद. चैन की नींद सोते हुए. फिर कौन है जिसकी पुकार रातों का चैन हर लेती है. कितना ही अनजान बनूं पर सच तो यह है कि इस आवाज को भूलना संभव नहीं है. मेरा पाप है यह!

आठ बरस की वह लड़की—सांवली. बड़ी-बड़ी आंखें, सूखा कुम्हलाया चेहरा. नाप से बड़ी लटकती फ्रॉक. साफ-सुथरी. कक्षा में सबसे पीछे कोरी स्लेट लिये बैठी. अनाथालय की सुपरिंटेंडेंट बड़ी चुस्ती-फुर्ती से अपना कार्यक्षेत्र दिखा रही थी. उसी क्रम में अनाथालय के बच्चों को पढ़ाने का इंतजाम भी है, यह भी दिखाने ले आई थी.

कक्षा में एक अध्यापिका तुरंत खड़ी हुई. उनकी आंखों ने संकेत किया और क्लास के बच्चे डोर में बंधी कठपुतलियों-से खड़े हो गए—"जय हिंद!" अध्यापिका अपनी ट्रेनिंग की सफलता से जगमगा रही थी. स्लेटों पर लिखाई ए-बी-सी और पूरी कक्षा पर छाई एक सायास फुर्ती, साफ समझ में आती थी. रेडियोवाले अनाथालय पर प्रोग्राम बना रहे हैं और रिकॉर्डिंग के लिए आ रहे हैं, ऐसा जानने के बाद सही तारीख और समय पर अनाथालय को जैसा होना चाहिए था—लकदक, साफ. स्टाफ बच्चों पर ममता की बौछार करता हुआ. वैसा ही था. सच और झूठ का फैसला तो कोई भी कर सकता है पर जब उसकी दरकार न हो. कल्याणकारी शासन में सब अच्छा चल रहा है, यही वे दिखाना चाह रहे थे. हम सुनने को बेताब थे.

ऐसे में कक्षा में सबसे पीछे बैठी वह सांवली लड़की निर्लिप्त, निर्विकार, उदासीन. और बच्चे सुपरिंटेंडेंट और अध्यापिका के पूर्वाभ्यास से इस तमाशे को जान ही चुके होंगे—रिकॉर्डिंग की, तो वही रटे हुए वाक्य—"दीदी हमको बहुत प्यार करती हैं. हम बहुत खुश हैं. हम पढ़ते हैं, हम घूमते हैं." अध्यापिका बच्चों की तरक्की की बातें बता रही थीं. अधीक्षिका ने बजट बताया. बच्चों के भोजन पर व कपड़ों पर होने वाले खर्च का ब्यौरा समझाया. सुनियोजित ढंग से बच्चों को बढ़िया नाश्ता मिला—दूध-दलिया. अध्यापिका-अधीक्षिका सब बच्चों पर ध्यान रखने की सीमा के पार जा रही थीं. बच्चे एकदम मां के आंचल की छांह में हैं, यह वह करके दिखा रही थी. क्लास के सब बच्चे जब दूध-दलिया पर टूट पड़े थे तब वह दरवाजे पर खड़ी नाखून से चौखट खुरच रही थी.

"तुम नहीं खाओगी, बेटी?"—मैंने पूछा था. वह बोली नहीं. चुपचाप टुकुर-टुकुर ताकती रही. अध्यापिका ने बुलाया. वह नहीं गई. "बड़ी जिद्दी और ढीठ लड़की है जी."—वे धीमी आवाज में बोलीं.

खाने के बाद फिर बच्चों की बातचीत रिकॉर्ड की जाने लगी. अनाथालय की इंचार्ज हर बच्चे की फाइल खोले बैठी थीं—कब आया बच्चा. कहां से मिला. कितने समय से अनाथालय में है. वे बच्चे नहीं थे, केस हिस्ट्री थे. वे बच्चों से उसकी पुष्टि करा रही थी.

"हां तो कैसे मरी तुम्हारी मां?"

"बाप ने मारा."

"किससे मारा?"

"हंसिये से."

"कैसे?"

"गरदन काट दी—खच्च."

अध्यापिका बीच में पूछती है—"फिर कैसे गिरी तुम्हारी मां?"

चार साल की बच्ची किसी बाजीगर के जमूरे की तरह जमीन पर धम्म गिरी, चार पटखनी इधर-उधर खाई, हाथ-पैर पटके और शांत—अध्यापिका ने विजय गर्व से देखा. बच्ची ने आशा के अनुकूल प्रदर्शन किया. उन्होंने केस हिस्ट्री पूरी की—मां मर गई. बाप जेल में है. बच्ची को कलेक्टर साहब ने यहां भेज दिया. साल भर से अब यहीं है. बच्ची के चेहरे पर मां की याद, उदासी, डर कुछ नहीं. पत्थर-सा चेहरा. यही बात उसने सैकड़ों बार दोहराई होगी. अब केवल बात है. वह भावशून्य है.

एक-एक करके सब बच्चों की बारी में नाहक समय खर्च होगा तो तय होता है कि एक-एक तरह के बच्चों की बातचीत

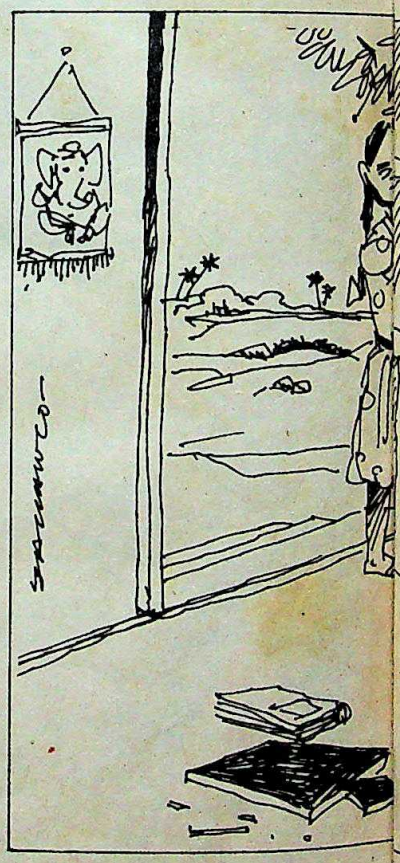

रिकॉर्ड कर ली जाए. यह जो पैदा होते ही यहां आ गया, यह जो सड़क पर मिला, यह जिसकी मां मरी, बाप जेल में है, यह जिसके बाप ने दूसरी शादी कर ली... दुखों का वर्गीकरण किया और एक-एक ढंग का एक-एक केस रिकॉर्ड किया. रेडियो के आधे घंटे के प्रोग्राम के लिए काफी सामग्री हो चली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. फिर निगाहें उसी लड़की पर पड़ीं. वह इस सबसे एकदम उदासीन, जैसे इस सबसे उसे कोई मतलब ही नहीं. मैंने अध्यापिका से कहा, "इस बच्ची से बात करें."

"मैडम, वह नहीं बोलेगी. बड़ी ढीठ लड़की है."

फिर कहा तो वे मानीं, "रमा, इधर आओ."

लड़की चुप. उसकी आवाज इस बार सख्त हुई—

"सुना नहीं इधर आओ रमा."

वह आई. पांव घसीटती. बेमन से. यह रमा है. छह महीने से यहां है. यह और इसका छह साल का भाई, दोनों द्वारिकाधीश के मंदिर के सामने मिले थे. पुलिस ने पकड़ा था और यहां भेज दिया. भाई तो ठीक है-बहन लेकिन...

"प्रॉब्लम चाइल्ड," अधीक्षिका ने तत्काल जोड़ा था.

रमा ने सुना. समझा भी, शायद. उसकी चुप्पी में कोई बदलाव नहीं आया था.

"मैडम जो पूछें सो बताना," अध्यापिका ने ताकीद की.

उसकी आंख की पुतली हिली. बोली कुछ नहीं.

"कौन-सी क्लास में पढ़ती हो बेटी?" मैंने पूछा.

"एक ही क्लास है, फर्स्ट," वह बोली.

"इसको कुछ आता-जाता ही नहीं है जी," अध्यापिका बोली.

"यहां आने से पहले भी पढ़ती थी?"

"हां."

"कहां?"

"अपने स्कूल में."

"स्कूल कहां है?"

"जहां हम रहते थे?"

"कहां रहते थे?"

"लखनऊ."

"लखनऊ से यहां कैसे आई बेटी?"

"चाचा छोड़ गया."

सभी रेखाचित्र: जयंती

रेडियो वाले अनाथालय के बारे में रिकार्डिंग करने आ रहे हैं, यह जानने के बाद उस अनाथालय को जैसा होना चाहिए था, ठीक वैसा ही था लकदक, साफ.

"पिता जी कहां हैं?"

"घर पर."

"मां कहां हैं?"

"नानी के घर."

"नानी का घर?"

"मेरी नानी का घर है—गोहाटी में सिविल लाइंस में जो बड़ा स्कूल है न, उसके इधर को जाकर थोड़ा-सा मुड़ने पर तीसरा ही मकान है—पीच कलर का. बड़ा गेट है. बोगेनबेलिया की बेल झूलती है जिसके ऊपर." उसकी आंखों में बोगेनवेलिया के बहुत सारे फूल खिल आए. नाना-नानी के घर का द्वार और उस घर बच्चों की मां.

"तो बेटा, आपके चाचा आपको गोहाटी क्यों नहीं ले गए?"

"वहीं तो ले जा रहे थे हमें. मां गई हैं न नानी के घर. हम तो थे लखनऊ में. फिर पापा ने शादी कर ली है. उनकी वाइफ है. फिर पापा ने हमें चाचा जी के घर भेजा तो हम वहां गए. वहां चाचा ने कहा कि इनको गोहाटी में छोड़ आओ—जब मां है इनकी तो... हम भी रोते थे न कि मां के पास जाना है. तो चाचा हमको ट्रेन में बिठाकर ले आए. यहां मंदिर के सामने बैठाया. कहने लगे खाने को कुछ लाते हैं, फिर आए नहीं."

"आप चले क्यों आए बेटा, आपके चाचा ने ढूंढ़ा होगा."

"नहीं आंटी, हम तो तीन दिन तक वहीं बैठे रहे, कहीं गए भी नहीं, चाचा ही नहीं आए."

"फिर?"

"फिर लोगों ने समझा कि हम ऐसे ही भिखारी हैं, भाग आए हैं. भूख लगती थी, खाना मांगा तो लोग भिखारी ही समझेंगे."

"चाचा कहां रहते हैं?"

"दिल्ली."

"पता मालूम है?"

"हां जी, चाचा का भी, पिता जी का भी लेकिन आंटी हम अपनी मम्मी के पास जाएंगे—" लड़की का कंठ भर आया. आंखों में आंसू-सा कुछ उमड़ा लेकिन अधीक्षिका और अध्यापिका पर नजर पड़ते ही कहीं लौट गया.

"पता मालूम है बेटी?"

"हां जी!"

"तो आपने इनके घर कोई खबर भेजी?" मैंने अध्यापिका से पूछा.

"हां कोई जवाब नहीं आया."

"अखबार में बच्ची का चित्र छपवाकर इश्तहार देते तो, मां-बाप ले जाते. वे अलग ढूंढ़ते होंगे."

"बाप तो क्या ढूंढ़ेगा—शादी जो कर ली है उसने."

"मां ले जाती."

"हां, पर शायद बच्ची के पास पता ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

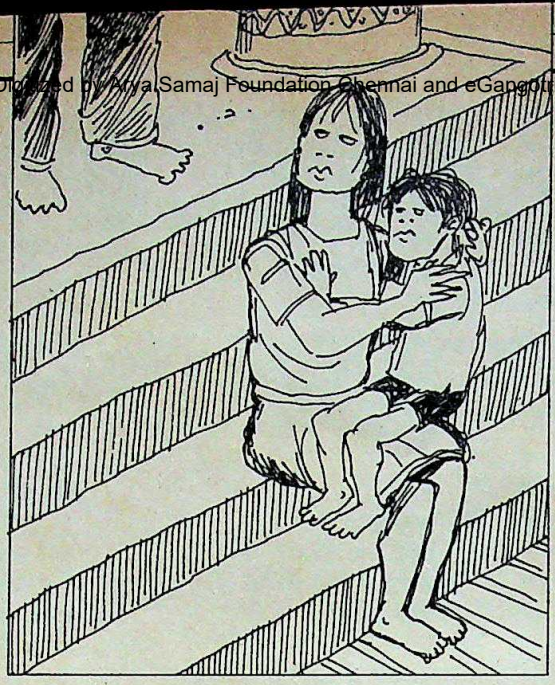

बच्चों ने आवाज लगाई—मां! दूसरी आवाज—मां! तीसरी आवाज—मां! दर्द की एक नदी थी कि उमड़ती चली गई....

नहीं है!"

"क्या आपके पास कोई व्यवस्था नहीं है कि स्वयं वहां भेज दें?"

"सोशल वेलफेयर को लिखा था पर कोई रिजल्ट नहीं निकला."

"सीधे गोहाटी ले जाते. बच्ची पहचान लेती जगह."

"नहीं, वो स्टेट दूसरी पड़ती है न. वहां का टी.ए., डी.ए. नहीं मिलता."

"बेटी आप पता दो. हम भेजेंगे," मैंने कहा. वह अपनी कॉपी में से पेज का एक टुकड़ा फाड़कर लाई—पता लिखा. सुंदर मोती जैसे दमकते अक्षर. तुम तो बहुत सुंदर और सही लिख लेती हो. कौन-सी क्लास में पढ़ती थी?"

"थर्ड में."

"अब यहां क्यों नहीं पढ़ती?"

"यहां तो ए-बी-सी पढ़ाते हैं, कभी-कभी."

"कभी-कभी?"

"जब कोई आता है तभी," कहकर उसने अध्यापिका की तरफ देखा. अजब विद्रोही-सा भाव. इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा. यह जानते हुए भी. हठी.

"नाना क्या करते हैं?"

"पढ़ाते हैं."

"मां भी काम करती हैं?"

"नहीं वो घर पर रहती हैं. मेरी मां बहुत गोरी हैं, बहुत सुंदर हैं, मेरे जैसी काली नहीं हैं. मेरे पिताजी काले हैं. मेरी मां बहुत.... वह रुकी—आंटी, आप मेरी मां को चिट्ठी लिखकर बता देंगी कि हम यहां हैं. वो आकर हमें ले जाएं."

"जरूर बेटी." उसने सच माना.

अब तक चुप बैठा उसका गोरा गुलगुथना-सा भाई बोला, "हम इसमें बोलें तो क्या हमारी मां सुन लेंगी?" उसने टेपरिकॉर्डर से जुड़े माइक की ओर इशारा किया.

"जरूर सुन पाएंगी."

दोनों भाई बहनों ने एक-दूसरे की ओर देखा. बहन बोली, "हम आवाज दें तो वहां तक पहुंचेगी."

"जरूर!" यह जानते हुए भी कि एक किलोवॉट का ट्रांसमिशन गोहाटी तक नहीं पहुंच सकता था, मैंने झूठ बोला—मुझे लगा था कि बच्चों के लिए सच से अच्छा झूठ है, इस समय.

टेपरिकॉर्डर चालू था. बच्चों ने आवाज लगाई—मां... दूसरी आवाज—मां...., तीसरी आवाज—मां.... दर्द की एक नदी थी कि उमड़ती चली गई—आंखों से आंसू बहे. आवाज में वह दर्द, वह तड़प, वह पुकार, वह मां की दूरी, पिता की शादी, चाचा का छोड़ जाना, तीन दिन भूख से बिलखते बच्चों का मंदिर के सामने भिखारी समझ पुलिस द्वारा पकड़कर अनाथालय छोड़ आना, वहां की वह साफ-सुथरी सरकारी ममता का भरम क्या अनकहा रह गया था. शब्द एक था, पुकार एक थी—मां... मेरे पास तो वह शब्द है ही नहीं कि उस एक शब्द में कही दास्तां को सुना सकूं. पर टेपरिकॉर्डर में दर्द की वह दास्तां सुरक्षित रिकॉर्ड हो चुकी थी.

बच्ची का लिखा पता तहकर जेब में रखा. जीप चली. वही बच्ची रमा और उसका भाई वहीं अनाथालय के द्वार पर खड़े थे पर मैं जानती हूं कि उनका मन उस समय मेरे साथ चला आया था. वह उम्मीद की एक डोर से बंधे चले आए थे, यह मैं महसूस कर सकती थी. उसकी मां को एक पत्र लिखना है, यह सोचा लेकिन उससे पहले इस रिकॉर्डिंग को तैयार प्रोग्राम में बदलना है.

प्रोग्राम बना. प्रसारित हुआ. "मां..." उसी आर्त पुकार से शुरुआत हुई. फिर बच्चों की बातें और तमाम चीजें जो ऐसे प्रोग्रामों में होती हैं. प्रोग्राम सुंदर बन पड़ा है, सराहना हुई. "खासकर के वो जो कोई बच्चे पुकारते हैं—मां... बड़ी मार्मिक ढंग से कहलवाया है आपने! ब्यूटीफुल!" साथियों ने तारीफ की. श्रोताओं ने सराहा. वाह-वाह! आकाशवाणी के कार्यक्रम समीक्षा के प्रेस कॉलम में भी स्थान पाया. मैंने कटिंग रखी संभालकर. वक्त जरूरत काम आएगी. अच्छा कार्यक्रम कर लेने के सृजन का सुख. मानवीय संवेदना को सुंदर अभिव्यक्ति दी है—इसको कुछ करना है. आकाशवाणी के वार्षिक पुरस्कारों की प्रतियोगिता में भेजना चाहिए. सुंदर प्रोग्राम निश्चित रूप से पुरस्कार डिजर्व करता है. प्रतियोगिता की औपचारिकताएं-ट्रांसक्राइब कराकर पांडुलिपि तैयार करना, अनुवाद करना-कराना, फिर प्रतियां तैयार कराना, फोटो, फार्म, सब फिटफाट. काम अच्छा है तो पुरस्कारों से क्या परहेज. वही यश की कामना की कहानी. पुरानी.

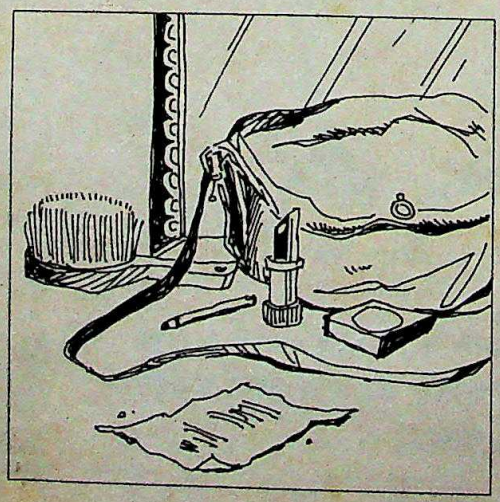

तबादलों की नौकरी. शहर बदला. घर-गृहस्थी. सत्तर बहाने. पर्स में इकट्ठे हो जाने वाले बेकार कागजों को फाड़कर फेंकते समय जाने कब का मुड़ा-तुड़ा कागज निकला. पेंसिल से लिखा वह पता पढ़ने में न आया तो मोड़कर फेंक दिया.

कान में आवाज आज भी गूंजती है—मां.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HOW TO BUY A CAR-1

Could we begin by giving you some good news?

Now, you have the choice of buying a car at an affordable price. A new generation car that's fuel efficient with low running and maintenance costs, and a performance level that's inspired householders and rally drivers alike.

A choice you didn't have in the past.
So, in deciding on which car to buy, you need to know how to buy a car that can offer you maximum benefits.

Take a look at the MONTANA - its superior economy and performance, twin features that are hall marks of a well engineered car.

Economy for instance.

MONTANA's 850 cc, 38 BHP petrol engine, the best available power pack in its class offers you 22 kms to a litre of petrol. Fuel efficiency unmatched by any other car in its class. This water-cooled 4 cylinder engine guarantees maximum output, taking you from 0 - 80 kmph in just 11 seconds ! An all synchromesh 4 speed gear box and fully floating rear axle ensure your total comfort. Replaceable liners dispense entirely with reboring costs.

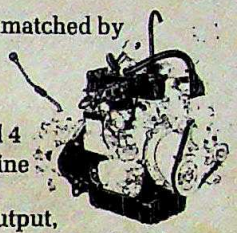

MONTANA's tough backbone is a solid steel box chassis. Its dual wish-bone suspension, shock absorbers and coil springs, make a single, finely tuned unit, that provides you with ideal driving conditions on the roughest of roads.

A perfect performer...

The MONTANA comes to you with radial tyres as standard equipment ensuring better road grip and excellent manoeuverability. With a turning radius of just 24 feet you can zip in and out of busy traffic or just squeeze into tight parking lots with ease.

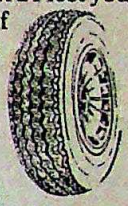

Quality Control...

At every stage of manufacture, check up points enhance the concept of quality control. And the better a car is built, the better it is likely to perform over a long period of time.

QUALITY CHECKED O-K SIPANI AUTOMOBILES LTD

After having taken a close look at its features, remember that you'll recover the cost of a MONTANA in a very short time, with the lasting pleasure of driving a fine car.

Now, do you agree that the key to buying a good car is to know all about it?

MONTANA

SIPANI AUTOMOBILES LTD.,
Tumkur Road Bangalore 560 022

* AHMEDABAD, Tel: 352738 * AURANGABAD, Tel: 25495 * ALIGARH, Tel: 29330 * AMBALA, Tel: 24056 * AGRA, Tel: 68661 * BOMBAY, Tel: 456310 * BILLIMORA, Tel: 2365 * BANGALORE, Tel: 263277 * BELLARY, Tel: 5192 * BAREILLY (UP), Tel: 73710 * BHUBANESHWAR, Tel: 50899 * BHOPAL, Tel: 35946 * CALICUT, Tel: 60117 * COIMBATORE, Tel: 24215 * CALCUTTA, Tel: 758916 * DELHI, Tel: 637400 * ERNAKULAM, Tel: 802327 * GAUHATI, Tel: 27466 * GWALIOR, Tel: 23255 * HUBLI, Tel: 62617 * INDORE, Tel: 23024 * JABALPUR (MP) Tel: 20581 * JAIPUR, Tel: 42013 * KANPUR, Tel: 240265 * KUMBAKONAM, Tel: 20938 * LUCKNOW, Tel: 246068 * MANGALORE, Tel: 24881 * MYSORE Tel: 20487 * MADRAS, TeL: 869642 & MADRAS, Tel: 831355 * MADURAI, Tel: 37451 * MORADABAD, Tel: 27250 * MATHURA, Tel: 4058 * MARGAO, Tel: 21143 * NAGPUR, Tel: 34209 * PATNA, Tel: 226944. * PUNE, Tel: 654150 * PONDICHERRY, Tel: 24310 * RAIPUR, Tel: 29634 * SRI GANGANAGAR, Tel: 22527 * SAHARANPUR, Tel: 26051 * SALEM, Tel: 77259 * SECUNDERABAD, Tel: 70971 * SRINAGAR, Tel: 74735 * THANE, Tel: 595742 * TIRUNELVELI, Tel: 73332 * VIJAYAWADA, Tel: 74334 * VARANASI, Tel: 42880.

National/BL/019/90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

अहमदस्तावेज

लापरवाही के कारण खामियां

सितंबर में महादेवी वर्मा की मृत्यु के बाद अब तक उनके संबंध में कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई. इस दृष्टि से लगभग जन्म से ही महादेवी के अत्यंत निकट रहे और उनके अंतिम वर्षों में बराबर उनके साथ रहने वाले डॉ. रामजी पांडेय द्वारा संपादित यह पुस्तक इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें अमृतलाल नागर, अमृतराय, इलाचंद जोशी, एहतेशाम हुसैन, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, नगेंद्र, राय कृष्णदास, रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर, सुमित्रानंदन पंत आदि 40 साहित्याकारों के संस्मरण हैं. इनमें से कुछ तो इस संग्रह के लिए विशेष रूप से लिखवाए गए हैं और कुछ पुरानी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि से लिये गए हैं. इन्हें एकत्र करने में संपादक ने निश्चिय ही श्रम किया है.

लेकिन जगह-जगह अर्थ का अनर्थ करने वाली प्रूफ की अशुद्धियों को यदि छोड़ भी दिया जाए तो भी जिस रूप में पुस्तक सामने आई है, उससे जान पड़ता है कि प्रकाशक और संपादक दोनों ने कुछ संस्मरण मिलते ही पुस्तक प्रकाशित करने की जल्दबाजी दिखाई है. इसका एक परिणाम यह हुआ है कि एक ही घटना या बात की कई जगह पुनरावृति हो गई है.

इसी प्रकार की और भी कई असावधानियां जगह-जगह देखने में आती हैं. जैसे पृष्ठ 210 पर महादेवी जी की बीमारी के संबंध में कहा जाना कि "गरदन करीब 24 इंच फूल गई थी." कुछ संस्मरणों में विदेशी शब्दों और नामों का भी प्रयोग हुआ है पर अधिकांश में कोई-न-कोई गलती रह गई है.

कहीं-कहीं पर संस्मरणों में कही गई बातों में विलक्षण विरोधाभास दिखाई पड़ता है. पृष्ठ 130 पर कहा गया है कि महादेवी ने "बहुत कम कविताएं लिखीं" तो पृष्ठ 154 पर "संवेदन की इस लंबी यात्रा में महादेवी द्वारा अनेक काव्य ग्रंथों की रचना की बात कही गई है."

पुस्तक की सबसे बड़ी कमी उसमें विषय सूची या अनुक्रमणिका का न होना है. कुछ महत्वपूर्ण विषयों (जैसे उर्दू विवाद) पर महादेवी के क्या विचार थे, यह पुस्तक में होने पर भी पाठक को आसानी से पता नहीं चलेगा.

भारती भंडार हिंदी की बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था है. महादेवी की अधिकांश कृतियां इसी संस्था द्वारा प्रकाशित होती रही हैं. यह देखकर निराशा के साथ ही आश्चर्य भी होता है कि महादेवी संबंधी इस पुस्तक के साथ प्रकाशकों की ओर से न्याय नहीं हो पाया. न तो कागज ही पुस्तक के अनुरूप है और न छपाई. जिल्द भी घटिया है.

परिचय इतना इतिहास यही
संपादक: डॉ. रामजी पांडेय
प्रकाशक: भारती भंडार, इलाहाबाद
कीमत: 80 रु.
पृष्ठ: 242.

संपादकीय वक्तव्य से यह जानकर प्रसन्नता होनी चाहिए कि इसी प्रकार के संस्मरणों के अभी दो या तीन खंड और निकालने की योजना है. आशा की जानी चाहिए कि आगामी खंडों में अज्ञेय, जैनेंद्र, निराला, अश्क, नरेश मेहता के संस्मरण भी पढ़ने को मिलेंगे. —महेंद्र राजा जैन

लोकगीत

अंतर की वाणी

भावनात्मक एकता की प्रतीक

जब जन साधारण के अंतर की भावनाएं संगीत को सहचरी बनाकर क्षेत्रीय भाषा के स्वर में प्रकट होती हैं तो मानव हृदय को अत्यंत आत्मीय-सी प्रतीत होती है. उन्हें ही हम लोकगीत कहते हैं. लोकगीतों में समाज की आत्मा झांकती है. वे समाज और संस्कृति के दस्तावेज हैं जो बड़ी तेजी से नष्ट होते जा रहे हैं. आधुनिकता की चकाचौंध में हम इन्हें गंवाते जा रहे हैं. इनका संकलन और संरक्षण सभ्यता का संरक्षण है. यह ग्रंथ इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति करता है.

हिंदी प्रदेश के लोकगीत
डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
साहित्य भवन, इलाहाबाद.
कीमत: 95 रु.
पृष्ठ: 386

इस संकलन में हिंदी प्रदेश की 17 बोलियों में प्राप्त लोकगीतों-लोकगाथाओं से परिचित कराया गया है. विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले इन लोकगीतों के उदाहरण भी प्रस्तुत किए गए हैं. इन बोलियों में किन-किन अवसरों पर किस प्रकार के लोकगीत गाए जाने का रिवाज है, सोदाहरण समझाने-बताने से उपयोगिता बढ़ गई है. लोकगीतों पर कार्य करने वाले छात्रों-अध्येताओं के लिए यह संकलन उपयोगी तो है ही यह उनके लिए भी गाइड का काम करने की क्षमता रखता है जो हिंदी प्रदेश के लोकगीतों के संबंध में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं.

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकगीतों के मर्म को समझा है और नागर साहित्य को रससिक्त करने, जीवन को जीने की विधि में सरसता और सहजता भरने के लिए इसे सूक्ष्म तत्व के रूप में आवश्यक मानकर सहेजा और समेटा है. उन्होंने तह तक पहुंचने का प्रयास किया है. और इन सबके बाद जो कुछ उनके हाथ लगा है उसे बड़ी ईमानदारी से परस दिया है. हिंदी प्रदेश में बोली जाने वाली जितनी भी बोलियां हैं उनका क्षेत्र विस्तार, जनसंख्या, वहां के निवासियों की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उनके साहित्य की प्रधान प्रवृत्तियों की विवेचना प्रस्तुत कर उन्होंने एक बड़े अभाव की पूर्ति की है.

यह संग्रह पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि विभिन्न भाषाओं और बोलियों में बिखरे हुए इन लोकगीतों की आत्मा एक है. इनमें एक ही विचारधारा प्रवाहित है. सभी लोकगीतों में बेटी की विदाई के दृश्य बड़े ही कारुणिक और मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित हुए हैं. ननद-भौजाई की बातचीत और भाई से अपने मन की समस्त पीड़ाओं को उड़ेल देने के बाद भी बहन का माता-पिता को न बताने की वर्जना नारी मन की सहनशीलता और उत्सर्ग को नए आयाम देती है.

इन लोकगीतों से यह बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि मानव मन समान रूप से धड़कता है, सोचता है और उनमें सुख-दुख की भावनाओं का उद्रेक होता है. भावनात्मक एकता के लिए इन लोकगीतों की संजीवनी समाज के लिए अत्यंत उपयोगी होगी. पुस्तक के अंत में उपसंहार के रूप में लोकगीतों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है. परिशिष्ट के अंतर्गत लोकगीतों के अन्य ग्रंथों की सूची से लेखक का श्रम सार्थक हो गया है. —जयनाथ त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकट में गौर

छह फुट ऊंचा और तकरीबन एक टन भार वाला गौर अद्भुत जानवर है. विस्तृत भाल, गठीला तन, मजबूत टांगें और उभरे हुए कंधे इसकी खासियतें हैं. दक्षिण के पहाड़ी इलाकों और पूर्वोत्तर में पाया जाने वाला गौर भारी-भरकम शरीर के बावजूद शांत किस्म का पशु है.

पर तमिलनाडु की पलानी पहाड़ियों पर पाए जाने वाले गौर के सिर पर आजकल एक और खतरा मंडरा रहा है. उसे यह खतरा किसी और से नहीं, वन विभाग से है. पिछले दशक से यह विभाग पलानी के घास के मैदानों को यूकलिप्टस के जंगलों में बलदता जा रहा है. ये घास के मैदान ही गौर के चारागाह हैं. यूकलिप्टस के पेड़ जमीन का जलस्तर कम करके घास के मैदानों को तबाह कर देते हैं. वन्य जीव शोधार्थी नीना सेनगुप्ता के हाल के अध्ययन के अनुसार वहां घास के ये मैदान पहले के मुकाबले दसवां हिस्सा भी नहीं रह गए. यूकलिप्टस का रोपण अगर बढ़ता जाएगा, तो पलानी पहाड़ियों में गौर की आबादी भी कम हो जाने की आशंका है. वे कुछ पेड़ों के पत्ते और छाल खाते हैं पर यूकलिप्टस के पत्ते और छाल नहीं.

बाजीव कोठारी

गौरः वन विभाग ही दुश्मन

गौर की आबादी कम नहीं हो इसके लिए पलानी पर्वत संरक्षण समिति ने व्यावसायिक वनीकरण पर रोक लगाने का सुझाव दिया है. इसने 250 वर्ग किलोमीटर के दायरे को राष्ट्रीय पार्क बना देने का भी सुझाव रखा है. पर अब तक तो इसकी कोई सुनवाई नहीं हुई.

उनकी कौन-सी राह

सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव के ग्लासनोस्त की ठंडी हवाएं पर्यावरणशास्त्रियों को भी महसूस होने लगी हैं. इसका फायदा उठाने वालों में साइबेरियाई सारस का नाम भी जुड़ गया है. सर्दियों के मौसम में राजस्थान के भरतपुर में उड़कर आने वाले इन पक्षियों की संख्या 60 के दशक में करीब 150 थी. पिछली सर्दियों में यह घटकर 17 हो गई. इसकी कई वजहें बताई जाती हैं. जैसे अफगानिस्तान की लड़ाई, पाकिस्तान में उनका अवैध शिकार वगैरह.

इसकी सही वजह पता लगाने का एक तरीका यह था कि इन पक्षियों पर ट्रांसमीटर बांध दिया जाए और साइबेरिया की ऑब नदी से भरतपुर तक की 3,000 किमी लंबी उड़ान के उनके रास्ते पर उपग्रह से नजर रखी जाए. पहले सोवियत संघ ऐसे किसी भी अध्ययन के प्रस्ताव को बड़ी बेरुखी से ठुकरा देता था. पर अब राजी हो गया है. इस परियोजना में हिस्सा लेने वाली बार्बे नेचुरल हिस्टरी सोसायटी ने इस काम का अनुभव हासिल करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष शोध संस्थान से संपर्क साधा है. सोसायटी साइबेरियाई सारसों पर यह प्रयोग करने से पहले भारत में सर्दियां बिताने वाले आम सारसों पर यह तरकीब आजमाएगी. अंतरिक्ष संस्थान ने भी पिछले पखवाड़े इसके लिए हामी भरी है.

गोपाल संवर

साइबेरियाई सारसः नाराज मेहमान

लुप्त होने की छलांग

यह ओलंपिक में भाग ले तो ट्रैक ऐंड फील्ड स्पर्धाओं के कई रिकार्ड तोड़ दे. 100 मीटर का फर्राटा सिर्फ 4 सेकेंड में पूरा करके कार्ल लेविस को फिसड्डी साबित के दे. ऊंचा कूदे तो 2.38 मीटर तक तो सहज ही उछल जाए.

पर इस हिंदुस्तानी काले हिरण की संख्या जितनी तेजी से घट रही है उतनी दूसरे किसी वन्य पशु की नहीं. एक समय यह पूरे देश में पाया जाता था. आजादी के तुरंत बाद सिर्फ सौराष्ट्र प्रायद्वीप में ही इसकी आबादी 85,000 थी. पर अब पूरे देश में महज 40,000 है.

पर्यावरण मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव डॉ. एम.के. रंजीत सिंह की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'द इंडियन ब्लैकबक' में काले हिरण की इस समस्या पर खासा ध्यान दिया गया है. यह पुस्तक इसके व्यवहार, मैथुन और जनन का एक अच्छा दस्तावेज है. इसमें काले हिरण के बारे में ये बातें बताई गई हैं—मादा जनसंख्या अधिक होने के कारण कुछ काले हिरण हरम बना लेते हैं, ग्रंथियों के स्राव और हिरणों के मल से उनके इलाके का पता चलता है. उनके प्राकृतिक वास खत्म होते जाना उनकी आबादी कम होने का प्रमुख कारण है. रंजीत सिंह ने इसके लिए कई सुझाव दिए हैं जिन्हें उन्हीं के मंत्रालय को मानने हैं. —राज चेंगप्पा

काला हिरणः घटती संख्या

डॉ. एम.के. रंजीत सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर आया भेड़िया

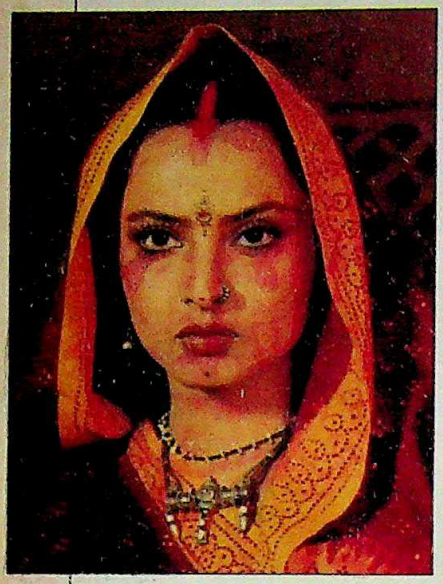

रेखाः पुराना राग

'भेड़िया आया' वाली कहानी फिर इस स्तंभ में आ रही है तो सिर्फ इसलिए कि वह आप सबकी पसंद, अभिनेत्री **रेखा** को बड़ी पसंद है.

अब आप कहेंगे, 'बेचारी रेखा को मत घसीटिए किसी किस्से में. वह बेचारी तो वैसे ही तलाक के खतरे से जूझ रही है. अभी अभी तो शादी हुई थी...'

कई लोग इस खबर से विचलित हैं. विचलित होने वालों की संख्या इस तरह बढ़ रही है कि दिल्ली में मुकेश अग्रवाल के घर मोर्चा ले जाने तक का प्रस्ताव आ चुका है. लोगों का दर्द इस बात से और बढ़ गया है कि तलाक की नौबत ने ठीक उस वक्त अपना फन फैलाया जब शादी के बाद रेखा की पहली फिल्म 'मेरा पति सिर्फ मेरा है' प्रदर्शित होने जा रही है. शादी के बाद निर्माताओं ने सबसे पहले इसी फिल्म की शूटिंग का चक्कर चलाकर उन्हें जैसे एक तोहफा दिया था. तो क्या अब वही फिल्म उनके दुर्भाग्य का कारण बनेगी?

इस दुर्भाग्य में 'भेड़िया आया' की बात भला कहां फिट हुई? समझदार समझ रहे हैं कि तलाक की अफवाह 'मेरा पति सिर्फ मेरा है' के प्रचार का वह हथकंडा है जो रेखा के दिमाग से उपजा है.

आघात से उबरी नहीं

एक लंबे अरसे के बाद **सुजाता मेहता** फिर दिखाई देने लगी हैं. लेकिन सुजाता हैं कि 'प्रतिघात' के असर से मुक्त नहीं हो पाई हैं. वे इसी इंतजार में हैं कि कल कोई निर्माता वैसा ही जबरदस्त रोल लेकर आएगा जैसा 'प्रतिघात' में था, "जिसमें मैं हीरोइन होते हुए भी फिल्म की 'हीरो' थी."

उनकी यह गर्वोक्ति उन लोगों को खूब रास आ रही है जो उनसे गुजराती नाटकों में काम करवाते हैं क्योंकि वे सुंदर हैं, जवान हैं, अपने मन की मालकिन होने की वजह से किसी बंदिश को नहीं मानतीं और आधुनिका कही जाने पर पट से पिघल भी जाती हैं. लेकिन फिल्मों में उनकी समवयस्काएं ऐसी गर्वोक्तियों को ठेंगे पर रखती हुई कहती हैं, "बरस दो बरस और बीत लेने देंगी तो मां बनाने कोई न कोई निर्माता आ ही जाएगा."

सुजाताः परवाह काहे की?

उनकी कटूक्तियों के जबाव में सुजाता कहती हैं, "जो असली जिंदगी में चोरी-छिपे मां बन गई हों वे परदे पर मां बनने से सबसे ज्यादा डरती हैं. मुझे इसमें एतराज नहीं है बशर्ते उसकी 'हीरो' यह मां ही हो."

चांदनी की चांदी

क्या किसी के चाहे से चांदनी उसके आंगन में छिटक सकती है? इसका जवाब भले ही 'नहीं' हो मगर **श्रीदेवी** ने जो चांदनी अपने आंगन में छिटकाने का प्रबंध किया है उससे जीतेंद्र जैसा व्यवसायी भी शरमा गया है, जो धूल में भी पैसे के फूल खिला लेने में माहिर है.

सुना है स्विट्जरलैंड में छुट्टियां मनाने की अभिलाषा तो श्रीदेवी के मन में बहुत दिनों से थी लेकिन काम का दबाव था कि दम भरने की फुरसत नहीं मिल रही थी.

कुछ दिन मायूस रहने के बाद श्री के दिमाग में जो आइडिया आया उसने बड़े-बड़े सूरमाओं के कान कतर दिए. उसने अपने एक बड़े निर्माता की तारीखें अचानक रद्द कर दीं. निर्माता भागा चला आया. श्री ने उन्हें साफ बता दिया कि वह तो लंबी छुट्टी में स्विट्जरलैंड जा रही हैं. इसलिए शूटिंग की नई तारीखें देने की बात लौटने के बाद ही सोच सकेंगी. और जब निर्माता ने इस वजह से लाखों के घाटे की बात कही तो काफी ना-नुकुर के बाद श्रीदेवी उस पर एक एहसान करने के लिए राजी हो गईं बशर्ते वह अपनी आउटडोर शूटिंग की लोकेशन ही स्विट्जरलैंड में कर ले.

श्रीदेवीः छुट्टी का सौदा

CC... Gurukul Kangri Collection, H...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटे से सवाई बाप

सनी देओल बेचारे एक बार फिर बुरी तरह घायल हो गए. पापा धरम ने बेटे का अक्सर घायल पड़ा रहने वाला कैरियर सुधारने के लिए फिल्म बनाई 'घायल'. ताजमहल होटल में जोरदार पार्टी हुई. और जैसा कि स्वाभाविक ही था, सारे शो के हीरो रहे सनी देओल.

लेकिन थोड़ी ही देर में पासा पलटने लगा. पार्टी में अनिल कपूर भी आ पहुंचे. अनिल के आने के साथ फोटोग्राफरों ने हर बड़ी हीरोइन को, जिनमें श्रीदेवी भी थीं, बुला-बुलाकर अनिल कपूर के बगल में खड़ा करना शुरू किया.

पापा धर्मेंद्र यह देख कि मैदान बेटे के हाथ से निकला जा रहा है, खुद बीच में कूद पड़े. और फिर हर हीरोइन उनकी बांह में बांह डाले फोटो खिचा रही थी और बेचारे सनी खड़े ताक रहे थे.

अनिल और धर्मेंद्र के साथ फोटो खिचा-खिचाकर हीरोइनें अपने-अपने घर चली गईं. केवल एक हीरोइन थी जो पार्टी के बाद, रात के सुबह में बदलने तक इन घावों पर मरहम लगाती रही. वे थीं डिंपल कापड़िया.

बोले और फंसे

नशीली गोलियों आदि ड्रग्स के खिलाफ आयोजित एक कार्यक्रम में नशाखोरी की अपनी लत की बात स्वीकार करके जब से **संजय दत्त** को वाहवाही मिली है, तब से उन्होंने इसी को प्रचार का हथियार बना लिया है.

लत के बारे में बात करने की उनकी इस लत का पूरा-पूरा फायदा उठाते हुए डायरेक्टर शेखर कपूर ने उन्हें सहज ही साइन कर लिया, 'दुश्मनी' के लिए जिसमें उन्हें भूमिका ही दी गई है ड्रग एडिक्ट यानी नशाखोर की. यह नशाखोर तब सुधरता है जब उसकी प्रेमिका के साथ कुछ गुंडे बलात्कार करते हैं और वह नशे के कारण कुछ नहीं कर पाता. उनकी यह प्रेमिका हैं नवोदिता मनीषा कोइराला.

संजय दत्त और नशाखोरी का संयोग तो कहानी में जानबूझकर ही डाला गया था लेकिन हीरोइन के साथ बलात्कार की कोशिश वाली बात सोचते ही सच हो जाएगी, भला यह किसने सोचा था? इधर, मनीषा कोइराला के लिए 'दुश्मनी' का यह सीन लिखा गया, उधर अखबार में खबर छप गई कि सचमुच ही उस दूसरी फिल्म के निर्माता ने उनके साथ जोर-जबरदस्ती की शर्मनाक कोशिश कर डाली जिसकी फिल्म की शूटिंग मनीषा मनाली में कर रही थीं. हालांकि अपनी ही हीरोइन पर हाथ डाल देने की हिम्मत कर देने वाला निर्माता कोई 'छोटा-मोटा' नहीं रहा होगा लेकिन मनीषा भी तो कम नहीं. उन्होंने मिनटों में मामला नेपाल पहुंचा दिया. राजनैतिक मुद्दा बन जाने के पहले बात को दबा देने का इंतजाम इतने बड़े स्तर पर इस तेजी से हुआ कि इसे छोटी-मोटी गलतफहमी कहकर निबटा दिया गया.

निर्माता सही ही कहते हैं, "फिल्मों के आपत्तिजनक सीन असल जिंदगी में से ही आते हैं."

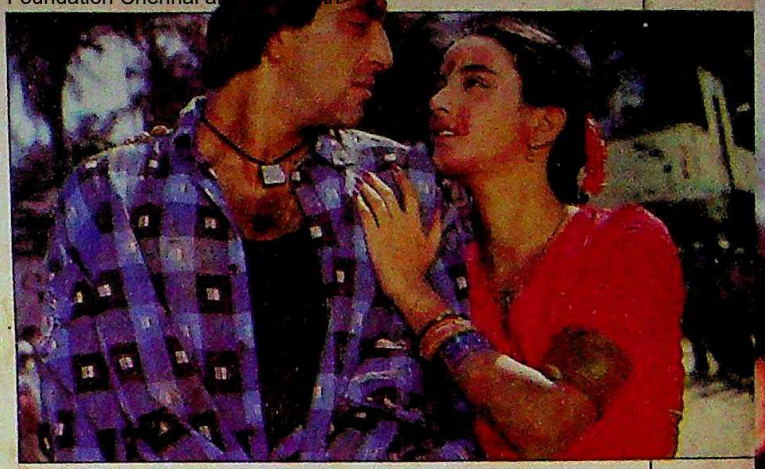

संजयः लत का लाभ

मगर एक आउटडोर शूटिंग कितने दिन चलेगी भला? चार दिन, छह दिन? और श्री महारानी का मन इतनी 'छुट्टी' से मानने वाला नहीं था. लिहाजा, उन्होंने दूसरे प्रोड्यूसर को भी छुट्टी का नोटिस दे दिया. वह भी दौड़ा आया और श्रीदेवी ने उस पर भी 'मेहरबानी' करके अपनी लंबी छुट्टी के बीच एक हफ्ता उसकी शूटिंग के लिए निकालने का एहसान उस पर कर ही दिया. फिर तीसरे निर्माता की बारी आई और वह भी श्री के एहसानों के बोझ से दब गया.

श्री की तैयारियां शुरू हो गईं, एक महीने के लिए सपरिवार स्विट्जरलैंड जाने की, जहां आने-जाने, रहने-खाने, घूमने-फिरने और देखभाल का खर्च उठाने के लिए एक नहीं, दो नहीं बल्कि तीन-तीन बड़े प्रोड्यूसर उनकी सेवा में हाथ बांधे खड़े होंगे.

परमार्थ का झगड़ा

इस झगड़े के रंग-ढंग सबसे निराले थे. इसमें कहा-सुनी तो हुई पर गाली-गलौज से परहेज बरता जाता रहा. गोली मार देने की धमकी जरूर दी गई लेकिन बंदूकें नकली थीं. असली थीं तो सिर्फ भावनाएं— वे भावनाएं जो फिल्म जगत में बहुत ही कम या यूं कहिए कि कभी-कभार ही नजर आती हैं.

नसीरुद्दीन शाह ओम पुरी पर बहुत भड़के हुए थे. गुस्से में उन्होंने दो-तीन बार ओम को फोन भी किए लेकिन ओम या तो मिलना नहीं चाह रहे थे या उन तक सही ढंग से सूचना पहुंची नहीं. नतीजा यह हुआ कि एक रोज नसीर दनदनाते हुए जा पहुंचे ओम पुरी के घर. नसीर ओम पुरी पर खूब बरसे. दबी जबान में ओम उनसे कुछ कहते रहे जिसे सुना-अनसुना करके नसीर चलते बने.

बातें छिपती तो हैं नहीं. घटना के बारे में सबको पता चल गया. और जब झगड़े का कारण पता लगाते-लगाते मूल बात तक पहुंचे तो हक्के-बक्के रह गए. नसीर ओम पुरी के घर कुछ कला फिल्म निर्माताओं की ये शिकायतें सुनकर उन्हें समझाने गए थे कि छोटे बजट में ज्यों-त्यों फिल्म पूरी करने वाले इन लोगों के साथ ओम पुरी व्यावसायिक फिल्मों के बड़े सितारों का सा व्यवहार करने लगे हैं. वे समय पर शूटिंग के लिए नहीं आते और जल्दी चले जाने की जिद करने लगते हैं. प्रोड्यूसरों को प्यार से और ओम पुरी को फटकार से समझा-बुझाकर नसीर ने यह रहस्य, रहस्य नहीं रहने दिया कि नसीरुद्दीन शाह को गुस्सा क्यों आता है?

नसीरः गुस्सा असली, औजार नकली

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालविका: कैमरे के आगे

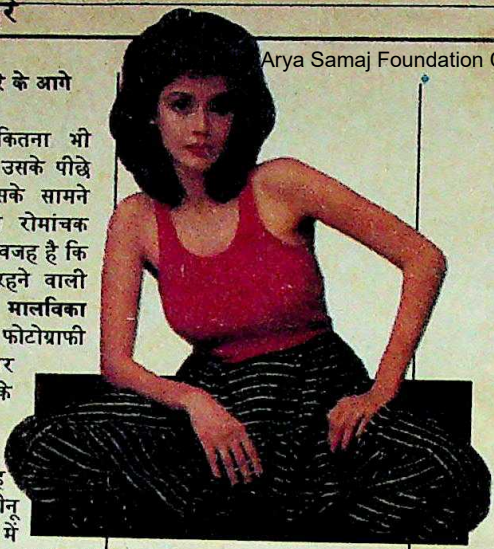

• कैमरा चाहे कितना भी नफीस क्यों न हो, उसके पीछे होने की जगह उसके सामने होना हमेशा ज्यादा रोमांचक होता है. शायद यही वजह है कि फिल्मों से दूर-दूर रहने वाली 25 वर्षीया मॉडल **मालविका तिवारी** ने पहले तो फोटोग्राफी को तरजीह दी मगर अब अंततः वे कैमरे के सामने आने वाली हैं. 'टिप्स ऐंड टोज' और 'मैंगो फ्रूटी' वाली यह मॉडल पहली बार टीनू आनंद की फिल्म में हीरोइन के रूप में आ रही है. नई भूमिका के बारे में वे कहती हैं, "मैं बहुत रोमांचित हूं. ऑस्कर पुरस्कार लाने का वादा तो नहीं करती लेकिन इसने मेरे व्यक्तित्व को नया रूप दिया है."

• जैसा बाप वैसा बेटा यह कहावत राजनीति से लेकर अभिनय के क्षेत्र तक में लागू होती है. तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि और उनके 37 वर्षीय पुत्र **एम.के.स्तालिन** पर तो यह चरितार्थ हो रही है. पिता बड़े परदे के कारण चमके, पुत्र ने छोटे परदे से शुरुआत की है. वे टीवी धारावाहिक 'कुरिनजी मलार' में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं. यह 1 सितंबर से प्रदर्शित किए जाने की उम्मीद है. स्तालिन मानते हैं कि "फिल्में महिलाओं तक पहुंचने का माध्यम नहीं रहीं. जबकि टीवी तो प्रायः घर-घर में मौजूद है. धारावाहिक से कितना पैसा मिलेगा, इसकी परवाह नहीं. इससे मेरा राजनैतिक आधार व्यापक होगा."

स्तालिन: अब छोटे परदे पर

सर्वदमन: नया अवतार

• टीवी के परदे पर मानो महाकाव्यों का टेनिस मैच खेला जा रहा है. पहली सर्विस रामानंद सागर ने की 'रामयण' के जरिए. इसका जवाब बी.आर. चोपड़ा ने 'महाभारत' से दिया. अब शॉट लगाने की बारी फिर सागर की है. सो वे वीडियो सर्किट के लिए 'कृष्ण' नाम से एक नया धारावाहिक तैयार कर रहे हैं. इसमें कृष्ण की भूमिका निभाने वाले **सर्वदमन बनर्जी** संस्कृत फिल्म 'आदि शंकराचार्य' में काम कर चुके हैं. वे कहते हैं, "कृष्ण की भूमिका इतने लोग निभा चुके हैं कि तुलनाएं अपरिहार्य हैं." उनके मुताबिक कृष्ण की भूमिका उन्होंने इसलिए मंजूर की क्योंकि "भगवान अपना संदेश फैलाने के लिए मुझे ही माध्यम बनाना चाहते हैं."

बालामूर्ति: कमउम्र डॉक्टर

• चार वर्ष की उम्र में उसने कैलकुलस में महारत हासिल कर ली थी. बारह का हुआ तो उसे वीडियो गेम की जगह एलगोरिथम में ज्यादा मजा आने लगा. अब सत्रह साल की उम्र में **बालामूर्ति कृष्णा अम्बाती** न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में मेडिकल का तृतीय वर्ष का छात्र है, और दुनिया का सबसे कमउम्र डॉक्टर बनने की राह पर है. बालामूर्ति का अपनी रफ्तार कम करने का कोई इरादा नहीं है. शुभचिंतक जब धीमा चलने की नसीहत देते हैं तो उसका जवाब होता है, "प्रशासक जमा नौकरशाह बराबर जड़ता." तेजतर्रार नई पीढ़ी का यह समीकरण है न दिलचस्प ?

• **'टीपू सुलतान'** पर बना टीवी धारावाहिक विवादों को जन्म दे रहा है, लंदन के विक्टोरिया ऐंड अलबर्ट संग्रहालय में रखा उनका 'शेर' अंतिम दहाड़ मार रहा है.

टीपू का शेर: अंतिम दहाड़

एक यूरोपियन को दबोचे दहाड़ते यांत्रिक शेर का यह मॉडल टीपू के लिए फ्रांसीसी निर्देश पर तैयार किया गया था. टीपू कहा करता था, "जिंदगी भर कायर बने रहने से एक दिन शेर की तरह जीना ज्यादा अच्छा है." अंग्रेजों ने इस शेर को श्रीरंगपत्तनम से हथियाया था. संग्रहालय के अधिकारियों का खयाल है कि 'टीपू का शेर' अब बहुत बूढ़ा हो चुका है. दो सौ साल की लंबी गौरव भरी पारी खेलने के बाद आउट होने पर मलाल कैसा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

आई टी सी लिमिटेड
का अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D—(C) 14/88

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Some moments mean so much more

CRAYONS 0507

Moments of joy.
Moments of laughter.
Moments of togetherness.
Made more tasteful with Baba.
For complete tobacco satisfaction...
without lighting up.

The unbeatable great original.

BABA®
FLAVOURED CHEWING TOBACCO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri